आसान हिन्दी तर्जुमा

हाफ़िज़ नज़र अहमद

Hindi transliteration is done by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY
Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858
Hyderabad, India

आसान तर्जुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफ़िज़ नज़र अहमद
प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी
★ मौलाना अज़ीज़ ज़ुबैदी
मुदीर मुजल्ला "अहले हदीस", लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰
(अरबी - इसलामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़ती मुहम्मद हुसैन नईमी
मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰
फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इसलामियात)

★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक
ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी
ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

"आसान तर्जुमा कुरआन मजीद" कई एतिबार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाक़िफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को बा बरकत और बाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल बिल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिऐ फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफ़िज़ नज़र अहमद
10 रबी उस्सानी 1408 हिज्री
बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह
3 दिसमबर 1987

القرآن الكريم

www.understandquran.com

آيَاتُهَا ٧ ❀ سُوۡرَةُ الۡفَاتِحَةِ (١) ❀ رُكُوۡعُهَا ١

आयात 7 — (1) सूरतुल फ़ातिहा (इफ़्तिताह) — रुकूअ़ 1

المنزل ١

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿١﴾

1	रहम करने वाला	बहुत मेह्रबान	अल्लाह	नाम से

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ﴿٢﴾ الرَّحۡمٰنِ

बहुत मेह्रबान	2	तमाम जहान	रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

الرَّحِيۡمِ ۙ﴿٣﴾ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ؕ﴿٤﴾ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ

इबादत करते हैं हम	सिर्फ़ तेरी ही	4	बदला	दिन	मालिक	3	रहम करने वाला

وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ؕ﴿٥﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ

रास्ता	हमें हिदायत दे	5	हम मदद चाहते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से

الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ۬

उन पर	तू ने इन्आम किया	उन लोगों का	रास्ता	6	सीधा

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿٧﴾ ع ١

7	जो गुमराह हुए	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	न

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है। (1)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है, (2)

बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला। (3)

बदले के दिन का मालिक। (4)

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद चाहते हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे, (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आम किया न उन का जिन पर ग़ज़ब किया गया, और न उन का जो गुमराह हुए। (7)

آيَاتُهَا ٢٨٦ ❀ (٢) سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤٠

आयात 286 | (2) सूरतुल बक़रः (गाय) | रुकूआत 40

الجـزء ١

معانقة ١ عند المتأخرين ١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

रहम करने वाला	बहुत मेहरबान	अल्लाह	नाम से

अल्लाह के नाम से
जो बहुत मेहरबान,
रहम करने वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى

हिदायत	इस में	नहीं शक	किताब	यह	1	अलिफ़-लाम-मीम

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर	ईमान लाते हैं	जो लोग	2	परहेज़गारों के लिए

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत, (2)

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करते हैं

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और क़ाइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं, (3)

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ

और जो	आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	उस पर जो	ईमान रखते हैं	और जो लोग

اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	यक़ीन रखते हैं	वह	और आख़िरत पर	आप से पहले	से	नाज़िल किया गया

और जो लोग उस पर ईमान रखते हैं जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥

5	कामयाब	वह	और वही लोग	अपना रब	से	हिदायत	पर	वही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

डराएं उन्हें	न	या	ख़्वाह आप उन्हें डराएं	उन पर	बराबर	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ٦ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى

और पर	उन के कान	और पर	उन के दिल	पर	मुहर लगा दी अल्लाह ने	6	ईमान लाएंगे	नहीं

اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ٧ ع وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और से	7	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	पर्दा	उन की आँखें

ع ١

وقف لازم

مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ٨

8	ईमान वाले	वह	और नहीं	आख़िरत	और दिन पर	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	जो

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	मगर	धोका देते	और नहीं	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	वह धोका देते हैं

وَمَا يَشْعُرُوْنَ ٩ ؕ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ

बीमारी	सो अल्लाह ने बढ़ा दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	9	समझते हैं	और नहीं

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ۬ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ١٠ وَاِذَا قِيْلَ

कहा जाता है	और जब	10	वह झूट बोलते हैं	क्योंकि	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए

لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ١١

11	इस्लाह करने वाले	हम	सिर्फ़	वह कहते हैं	ज़मीन में	न फ़साद फैलाओ	उन्हें

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ١٢ وَاِذَا

और जब	12	नही समझते	और लेकिन	फ़साद करने वाले	वही	बेशक वह	सुन रखो

قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ

ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएं	वह कहते हैं	लोग	ईमान लाए	जैसे	तुम ईमान लाओ	उन्हें	कहा जाता है

السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ١٣

13	वह जानते	नहीं	और लेकिन	बेवक़ूफ़	वही	ख़ुद वह	सुन रखो	बेवक़ूफ़

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى

पास	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	और जब मिलते हैं

شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ١٤

14	मज़ाक़ करते हैं	हम	महज़	तुम्हारे साथ	हम	कहते हैं	अपने शैतान

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ١٥

15	अन्धे हो रहे हैं	उन की सरकशी में	और बढ़ाता है उन को	उन से	मज़ाक़ करता है	अल्लाह

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन पर बराबर है आप (स) उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर मुह्र लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं। (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते। (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं। (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो बेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवक़ूफ़ ईमान लाए? सुन रखो ख़ुद वही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولٰٓـئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ

उन की तिजारत	तो न फ़ाइदा दिया	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्हों ने	यही लोग

وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ

आग	भड़काई	वह जिस ने	जैसे मिसाल	उन की मिसाल	16	वह हिदायत पाने वाले	और न थे

فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ

में	और उन्हें छोड़ दिया	उन की रौशनी	छीन ली अल्लाह ने	उस का इर्द गिर्द	रौशन कर दिया	फिर जब

ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ۙ

18	नहीं लौटेंगे	सो वह	अन्धे	गूँगे	बहरे	17	वह नहीं देखते	अन्धेरे

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ

वह ठोंस लेते हैं	और बिजली की चमक	और गरज	अन्धेरे	उस में	आस्मान	से	जैसे बारिश	या

اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ

घेरे हुए	और अल्लाह	मौत	डर	कड़क (बिजली)	सबब	अपने कान	में	अपनी उनगलियां

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ

उन पर	वह चमकी	जब भी	उन की निगाहें	उचक ले	बिजली	क़रीब है	19	काफ़िरों को

مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

छीन लेता	चाहता अल्लाह	और अगर	वह खड़े हुए	उन पर	अन्धेरा हुआ	और जब	उस में	चल पड़े

ع ١٣ ٢ ٢ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ۧ

20	क़ादिर	हर चीज़	पर	बेशक अल्लाह	और उन की आँखें	उन की शुनवाई

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	और वह लोग जो	तुम्हें पैदा किया	जिस ने	अपना रब	तुम इबादत करो	लोगो	ऐ

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ۙ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪

छत	और आस्मान	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	जिस ने	21	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ

तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से	उस के ज़रीए	फिर निकाला	पानी	आस्मान	से	और उतारा

فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ

शक	में	तुम हो	और अगर	22	जानते हो	और तुम	कोई शरीक	अल्लाह के लिए	ठहराओ	सो न

مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا

और बुला लो	इस जैसी	से	एक सूरत	तो ले आओ	अपना बन्दा	पर	हम ने उतारा	से जो

شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह	सिवा	से	अपने मददगार

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारत ने कोई फ़ाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धेरों में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह बहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धेरे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियां ठोंस लेते हैं कड़क के सबब मौत के डर से, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है। (19)

क़रीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़्क़, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا

उस का इंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर

النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	और ख़ुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	और पत्थर	इन्सान

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا

जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	कि	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ

पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़्क़	कोई फल	से	उस से	खाने को दिया जाएगा

وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا

उस में	और वह	पाकीज़ा	बीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता	उस से	हालांकि उन्हें दिया गया

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْىٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا

ख़ाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता	बेशक अल्लाह	25	हमेशा रहेंगे

فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

उन का रब	से	हक़	कि वह	वह जानते हैं	ईमान लाए	सो जो लोग	उस से ऊपर

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ وقف لازم

वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	वह कहते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِىْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	नाफ़रमान	मगर	इस से	और नहीं गुमराह करता	बहुत लोग	इस से	और हिदायत देता है	बहुत लोग	इस से

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ

और काटते हैं	पुख़्ता इक़रार	से बाद	अल्लाह से किया गया अ़हद	तोड़ते हैं	जो लोग

مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	ज़मीन	में	और वह फ़साद फैलाते हैं	वह जोड़े रखें	कि	उस से	जिस का हुक्म दिया अल्लाह ने

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا

बेजान	और तुम थे	अल्लाह का	तुम कुफ़्र करते हो	किस तरह	27	नुक़्सान उठाने वाले	वह

فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम लौटाए जाओगे	उस की तरफ़	फिर	तुम्हें जिलाएगा	फिर	तुम्हें मारेगा	फिर	तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى

तरफ़	क़सद किया	फिर	सब	ज़मीन	में	जो	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	वह

السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٩ ٣

29	जानने वाला	चीज़	हर	और वह	आस्मान	सात	फिर उन को ठीक बना दिया	आस्मान

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का इंधन इन्सान और पत्थर हैं, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। **(24)**

और उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में बीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। **(25)**

बेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो ख़ाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और इस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, **(26)**

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक्म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। **(27)**

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़्र करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। **(28)**

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़सद किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। **(29)**

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	एक नाइब	ज़मीन	में	बनाने वाला	कि मैं	फ़रिश्तों से	तुम्हारा रब	कहा	और जब

اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

बे ऐब कहते हैं	और हम	खून	और बहाएगा	उस में	फ़साद करेगा	जो	उस में	क्या तू बनाएगा

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَعَلَّمَ

और सिखाए	30	तुम नहीं जानते	जो	जानता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	तेरी	और पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी तारीफ़ के साथ

اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِئُوْنِىْ

मुझ को बतलाओ	फिर कहा	फ़रिश्ते	पर	उन्हें सामने किया	फिर	सब चीज़ें	नाम	आदम (अ)

بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ

हमें	इल्म नहीं	तू पाक है	उन्हों ने कहा	31	सच्चे	तुम हो	अगर	इन	नाम

اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ

उन्हें बता दे	ऐ आदम	उस ने फ़रमाया	32	हिक्मत वाला	जानने वाला	तू	बेशक तू	तू ने हमें सिखाया	जो	मगर

بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ

जानता हूँ	कि मैं	तुम्हें	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने फ़रमाया	उन के नाम	उस ने उन्हें बतलाए	सो जब	उन के नाम

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾

33	छुपाते हो	तुम	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	जो	और मैं जानता हूँ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	छुपी हुई बातें

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ

इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों को	हम ने कहा	और जब

اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ

तुम	तुम रहो	ऐ आदम	और हम ने कहा	34	काफ़िर	से	और हो गया	उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया

وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا

क़रीब जाना	और न	तुम चाहो	जहां	इत्मिनान से	उस से	और तुम दोंनों खाओ	जन्नत	और तुम्हारी बीवी

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ

शैतान	फिर उन दोनों को फुसलाया	35	ज़ालिम (जमा)	से	फिर तुम हो जाओगे	दरख़्त	इस

عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

तुम्हारे बाज़	तुम उतर जाओ	और हम ने कहा	उस में	वह थे	से जो	फिर उन्हें निकलवा दिया	उस से

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۶﴾ فَتَلَقّٰٓى

फिर हासिल कर लिए	36	वक़्त	तक	और सामान	ठिकाना	ज़मीन	में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़ के

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۳۷﴾

37	रहम करने वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक वह	उस की	फिर उस ने तौबा क़ुबूल की	कुछ कलिमात	अपना रब	से	आदम

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइब बनाने वाला हूँ, उन्हों ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और खून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को बे ऐब कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30)

और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ अगर तुम सच्चे हो। (31)

उन्हों ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32)

उस ने फ़रमाया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़रमाया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33)

और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दा करो तो इब्लीस के सिवाए उन्हों ने सिज्दा किया, उस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34)

और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीवी जन्नत में, और तुम दोंनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न क़रीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35)

फिर शैतान ने उन दोंनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस हालत से जिस में वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक वक़्त तक सामान (ज़िन्दगी) है। (36)

फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौबा क़ुबूल की, बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुम्हारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयात के इवज़ थोड़ी क़ीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को बातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम क़ाइम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालांकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर आ़जिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़्शी और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी का कुछ बदला न बनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआ़वज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ

चला	सो जो	कोई हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हें पहुँचे	पस जब	सब	यहां से	तुम उतर जाओ	हम ने कहा

هُدَایَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	38	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	तो न	मेरी हिदायत

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع ٤

39	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	वही	हमारी आयात	और झुटलाया

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

और पूरा करो	तुम्हें	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो	याकूब	ऐ औलाद

بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾ وَاٰمِنُوْا بِمَآ

उस पर जो	और तुम ईमान लाओ	40	डरो	और मुझ ही से	तुम्हारे साथ किया गया अ़हद	मैं पूरा करूँगा	मेरे साथ किया गया अ़हद

اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا

इवज़ लो	और न	उस के	काफ़िर	पहले	हो जाओ	और न	तुम्हारे पास	उस की जो	तसदीक़ करने वाला	मैं ने नाज़िल किया

بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۫ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ

बातिल से	हक़	मिलाओ	और न	41	डरो	और मुझ ही से	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयात

وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	42	जानते हो	जब कि तुम	हक़	और न छुपाओ

وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ

और तुम भूल जाते हो	नेकी का	लोग	क्या तुम हुक्म देते हो	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ	और रुकूअ़ करो

اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ

सब्र से	और तुम मदद हासिल करो	44	तुम समझते	क्या फिर नहीं	किताब	पढ़ते हो	हालांकि तुम	अपने आप

وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

समझते हैं	वह जो	45	आ़जिज़ी करने वाले	पर	मगर	बड़ी (दुशवार)	और वह	और नमाज़

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ع ٥ الربع

याकूब	ऐ औलादे	46	लौटने वाले	उस की तरफ़	और यह कि वह	अपना रब	रूबरू होने वाले	कि वह

اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने बख़्शी	जो	मेरी नेमत	तुम याद करो

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ

क़ुबूल की जाएगी	और न	कुछ	किसी	से	कोई शख़्स	न बदला बनेगा	उस दिन	और डरो

مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई मुआ़वज़ा	उस से	लिया जाएगा	और न	कोई सिफ़ारिश	उस से

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

अज़ाब	बुरा	वह तुम्हें दुख देते थे	आले फ़िरऔन	से	हम नें तुम्हें रिहाई दी	और जब

يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ

से	आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ देते थे	तुम्हारे बेटे	वह ज़ुबह करते थे

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ

और हम ने डुबो दिया	फिर तुम्हें बचा लिया	दर्या	तुम्हारे लिए	हम ने फाड़ दिया	और जब	49	बड़ी	तुम्हारा रब

اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً

रात	चालीस	मूसा (अ)	हम ने वादा किया	और जब	50	देख रहे थे	और तुम	आले फ़िरऔन

ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا

हम ने माफ़ कर दिया	फिर	51	ज़ालिम (जमा)	और तुम	उन के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर

عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

मूसा (अ)	हम ने दी	और जब	52	एहसान मानो	ताकि तुम	यह	उस के बाद	तुम से

الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

अपनी क़ौम से	मूसा	कहा	और जब	53	हिदायत पा लो	ताकि तुम	और कसौटी	किताब

يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا

सो तुम रुजूअ करो	बछड़ा	तुम ने बना लिया	अपने ऊपर	तुम ने ज़ुल्म किया	बेशक तुम	ऐ क़ौम

اِلٰى بَارِىِٕكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ

नज़दीक	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	अपनी जानें	सो तुम हलाक करो	पैदा करने वाला	तरफ़

بَارِىِٕكُمْ ۭ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذْ

और जब	54	रहम करने वाला	तौबा कुबूल करने वाला	वह	बेशक	तुम्हारी	उस ने तौबा कुबूल की	तुम्हारा पैदा करने वाला

قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ

फिर तुम्हें आ लिया	खुल्लम खुल्ला	हम देख लें अल्लाह को	जब तक	तुझे	हम हरगिज़ न मानेंगे	ऐ मूसा	तुम ने कहा

الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ

तुम्हारी मौत	बाद	से	हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया	फिर	55	तुम देख रहे थे	और तुम	बिजली की कड़क

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا

और हम ने उतारा	बादल	तुम पर	और हम ने साया किया	56	एहसान मानो	ताकि तुम

عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ

हम ने तुम्हें दी	जो	पाक चीज़ें	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न	तुम पर

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	वह ज़ुल्म करते थे	अपनी जानें	थे	और लेकिन	उन्हों ने ज़ुल्म किया हम पर	और नहीं

और जब हम नें तुम्हें आले फ़िरऔन से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (49)

और जब हम नें तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया और आले फ़िरऔन को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (माबूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद माफ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल के दरमियान फ़रक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! बेशक तुम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया बछड़े को (माबूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली, बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (57)

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ

तुम चाहो	जहां	उस से	फिर खाओ	बस्ती	उस	तुम दाख़िल हो	हम ने कहा	और जब

رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	हम बख़्श देंगे	बख़्शदे	और कहो	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और तुम दाख़िल हो	बाफ़राग़त

خَطٰيٰكُمْ ۭ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا

बात	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	फिर बदल डाला	58	नेकी करने वाले	और अनक़रीब ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا

अ़ज़ाब	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	पर	फिर हम ने उतारा	उन्हें	कही गई	वह जो कि	दूसरी

مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ ع ۱۳ ۶

अपनी क़ौम के लिए	मूसा (अ)	पानी मांगा	और जब	59	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	आस्मान	से

فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۭ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ

चश्मे	बारह	उस से	तो फूट पड़े	पत्थर	अपना अ़सा	मारो	फिर हम ने कहा

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ

अल्लाह के दिये हुए रिज़्क़ से	और पियो	तुम खाओ	अपना घाट	हर क़ौम	जान लिया

وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى

ऐ मूसा	तुम ने कहा	और जब	60	फ़साद मचाते	ज़मीन	में	और न फिरो

لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا

उस से जो	निकाले हमारे लिए	अपना रब	हमारे लिए	दुआ़ करें	एक	खाना	पर	हरगिज़ न सब्र करेंगे

تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّاۗىِٕهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا

और मसूर	और गन्दुम	और ककड़ी	तरकारी	से (कुछ)	ज़मीन	उगाती है

وَبَصَلِهَا ۭ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	वह	उस से जो	वह अदना	जो कि	क्या तुम बदलना चाहते हो	उस ने कहा	और प्याज़

اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ۭ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ

ज़िल्लत	उन पर	और डालदी गई	जो तुम मांगते हो	तुम्हारे लिए	पस बेशक	शहर	तुम उतरो

وَالْمَسْكَنَةُ ۤ وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि वह	यह	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ	और वह लौटे	और मोहताजी

كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतों का	वह इन्कार करते	वह थे

بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ ع ۷ ۲

61	हद से बढ़ते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	नाहक़

और जब हम ने कहा तुम दाख़िल हो जाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफ़राग़त खाओ और दरवाज़े से दाख़िल हो सिज्दा करते हुए, और कहो बख़्श दे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, और अनक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। **(58)**

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(59)**

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा, फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। **(60)**

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्र न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ़ करें कि हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी और गन्दुम और मसूर और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। **(61)**

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ

और साबी	और नसारा	यहूदी हुए	और जो लोग	ईमान लाए	बेशक जो लोग

مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ

उन का अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल करे	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا

हम ने लिया	और जब	62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास

مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ

मज़बूती से	जो हम ने तुम्हें दिया	पकड़ो	कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने उठाया	तुम से इक़रार

وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ

उस	बाद	तुम फिर गए	फिर	63	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	उस में	जो	और याद रखो

فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

64	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो तुम थे	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	पस अगर न

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ

उन से	तब हम ने कहा	हफ़्ते के दिन में	तुम से	ज़ियादती की	जिन्हों ने	तुम ने जान लिया	और अलबत्ता

كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

सामने वालों के लिए	इब्रत	फिर हम ने उसे बनाया	65	ज़लील	बन्दर	तुम हो जाओ

وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ

अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब	66	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	उस के पीछे	और जो

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ

मज़ाक़	क्या तुम करते हो हम से	वह कहने लगे	एक गाय	तुम ज़ुबह करो	कि	तुम्हें हुक्म देता है	बेशक अल्लाह

قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا

हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा	67	जाहिलों से	कि हो जाऊँ	अल्लाह की	मैं पनाह लेता हूँ	उस ने कहा

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ

गाय	कि वह	फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसी है वह	हमें	बतलाए	अपना रब

لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

68	जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है	पस करो	उस	दरमियान	जवान	छोटी उम्र	और न	न बूढ़ी

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ

फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	कैसा उस का रंग	हमें	वह बतलादे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ़ करें	उन्हों ने कहा

إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾

69	देखने वाले	अच्छी लगती	उस का रंग	गहरा	ज़र्द रंग	एक गाय	कि वह

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर और नेक अ़मल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक़रार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत तो तुम नुक़्सान उठाने वालों में से थे। (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन में ज़ियादती की, तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इब्रत बनाया और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ुबह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक़ करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्हों ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ़ करें कि वह हमें बतलाए वह कैसी है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुक्म दिया जाता है करो। (68)

उन्हों ने कहा हमारे लिए दुआ़ करें अपने रब से कि वह हमें बतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग ख़ूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

उन्हों ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इश्तिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, बे ऐब है, उस में कोई दाग़ नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्हों ने उसे ज़ुबह किया, और वह लगते न थे कि वह (ज़ुबह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को क़त्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मक़्तूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपनी निशानियां ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए या उस से ज़ियादा सख़्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तवक़्क़ो रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी ख़ातिर, और उन में से एक फ़रीक़ अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ

हम पर	इश्तिबाह हो गया	गाय	क्योंकि	वह कैसी	हमें	वह बतला दे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	उन्हों ने कहा

وَاِنَّاۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

एक गाय	कि वह	फ़रमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	70	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	अल्लाह ने चाहा	अगर	और बेशक हम

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ

उस में	कोई दाग़	नहीं	बे ऐब	खेती	पानी देती	और न	ज़मीन	जोतती	न सधी हुई

قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع ۱۰ ۸

71	वह करें	और वह लगते न थे	फिर उन्हों ने ज़ुबह किया उस को	ठीक बात	तुम लाए	अब	वह बोले

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ

जो तुम थे	ज़ाहिर करने वाला	और अल्लाह	उस में	फिर तुम झगड़ने लगे	एक आदमी	तुम ने क़त्ल किया	और जब

تَكْتُمُوْنَ ﴿۷۲﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْىِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

मुर्दे	ज़िन्दा करेगा अल्लाह	इस तरह	उस का टुकड़ा	उसे मारो	फिर हम ने कहा	72	छुपाते

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद	तुम्हारे दिल	सख़्त हो गए	फिर	73	ग़ौर करो	ताकि तुम	अपने निशान	और तुम्हें दिखाता है

ذٰلِكَ فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

पत्थर	से	और बेशक	सख़्त	उस से ज़ियादा	या	पत्थर जैसे	सो वह	उस

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ

उस से	तो निकलता है	फट जाते हैं	अलबत्ता जो	उस से (बाज़)	और बेशक	नहरें	उस से	फूट निकलती हैं	अलबत्ता

الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह का डर	से	अलबत्ता गिरता है	उस से	और बेशक	पानी

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ

और था	तुम्हारे लिए	मान लेंगे	कि	क्या फिर तुम तवक़्क़ो रखते हो	74	तुम करते हो	से जो

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	वह बदल डालते हैं उस को	फिर	अल्लाह का कलाम	वह सुनते हैं	उन से	एक फ़रीक़

مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا

वह कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	वह मिलते हैं	और जब	75	जानते हैं	और वह	जो उन्हों ने समझ लिया

اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْۤا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا

जो	क्या बतलाते हो उन्हें	कहते हैं	बाज़	पास	उन के बाज़	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए

فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۶﴾

76	तो क्या तुम नहीं समझते	तुम्हारा रब	सामने	उस के ज़रीए	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	तुम पर	ज़ाहिर किया अल्लाह ने

اَوَلَا يَعۡلَمُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿۷۷﴾

77	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	जानता है	कि अल्लाह	वह जानते	क्या नहीं

وَمِنۡهُمۡ اُمِّيُّوۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ الۡكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِىَّ وَاِنۡ هُمۡ اِلَّا

मगर	वह	और नहीं	आर्ज़ूएं	सिवाए	किताब	वह नहीं जानते	अनपढ़	और उन में

النصف

يَظُنُّوۡنَ ﴿۷۸﴾ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ يَكۡتُبُوۡنَ الۡكِتٰبَ بِاَيۡدِيۡهِمۡ ثُمَّ

फिर	अपने हाथों से	किताब	लिखते हैं	उन के लिए जो	सो ख़राबी	78	गुमान से काम लेते हैं

يَقُوۡلُوۡنَ هٰذَا مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ لِيَشۡتَرُوۡا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ؕ فَوَيۡلٌ

सो ख़राबी	थोड़ी	क़ीमत	उस से	ताकि वह हासिल करें	अल्लाह के पास	से	यह	वह कहते हैं

لَّهُمۡ مِّمَّا كَتَبَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ وَوَيۡلٌ لَّهُمۡ مِّمَّا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۷۹﴾ وَقَالُوۡا

और उन्हों ने कहा	79	वह कमाते हैं	उस से जो	उन के लिए	और ख़राबी	उन के हाथ	लिखा	उस से जो	उन के लिए

لَنۡ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدَةً ؕ قُلۡ اَتَّخَذۡتُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	क्या तुम ने लिया	कह दो	चन्द	दिन	सिवाए	आग	हरगिज़ नहीं छुएगी

عَهۡدًا فَلَنۡ يُّخۡلِفَ اللّٰهُ عَهۡدَهٗۤ اَمۡ تَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا

जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहते हो	या	अपना वादा	ख़िलाफ़ करेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	कोई वादा

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۰﴾ بَلٰى مَنۡ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتۡ بِهٖ خَطِيۡٓـــَٔتُهٗ

उस की ख़ताएं	उस को	और घेर लिया	कोई बुराई	कमाई	जिस ने	क्यों नहीं	80	तुम जानते

فَاُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِيۡنَ

और जो लोग	81	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग वाले (दोज़ख़ी)	पस यही लोग

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَـنَّةِ ۚ هُمۡ

वह	जन्नत वाले	यही लोग	अच्छे अ़मल	और उन्हों ने किए	ईमान लाए

ع ١٠ / ٩

فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۸۲﴾ وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	82	हमेशा रहेंगे	उस में

لَا تَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ اِحۡسَانًا وَّذِى الۡقُرۡبٰى

और क़राबतदार	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	सिवाए अल्लाह	तुम इबादत न करना

وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَقُوۡلُوۡا لِلنَّاسِ حُسۡنًا

अच्छी बात	लोगों से	और तुम कहना	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)

وَّاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ

फिर	ज़कात	और देना	नमाज़	और तुम क़ाइम करना

تَوَلَّيۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡكُمۡ وَاَنۡتُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۸۳﴾

83	फिर जाने वाले	और तुम	तुम में से	चन्द एक	सिवाए	तुम फिर गए

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आर्ज़ुओं के, और वह सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए ख़राबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी क़ीमत, सो उन के लिए ख़राबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए ख़राबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्हों ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की ख़ताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और क़राबतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

और फिर जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया कि तुम अपनों के खून न बहाओगे और न तुम अपनों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुम ने इक़रार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो क़त्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के वतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास क़ैदी आएं तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए इस के कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई और वह क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्हों ने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी, सो उन से अ़ज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के बाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और उस की मदद की जिब्राईल (अ) के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकब्बुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे। (87)

और उन्हों ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ

तुम निकालोगे	और न	अपनों के खून	न तुम बहाओगे	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब

اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	गवाह हो	और तुम	तुम ने इक़रार किया	फिर	अपनी बस्तियां	से	अपनों

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ

अपने से	एक फ़रीक़	और तुम निकालते हो	अपनों को	क़त्ल करते हो	वह लोग	तुम	फिर

مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ط وَاِنْ

और अगर	और सरकशी	गुनाह से	उन पर	तुम चढ़ाई करते हो	उन के वतन	से

يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ط

निकालना उन का	तुम पर	हराम किया गया	हालांकि वह	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	क़ैदी	वह आएं तुम्हारे पास

اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج فَمَا جَزَآءُ

सज़ा	सो क्या	बाज़ हिस्से	और इन्कार करते हो	किताब	बाज़ हिस्से	तो क्या तुम ईमान लाते हो

مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج

दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुसवाई	सिवाए	तुम में से	यह	करे	जो

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	सख़्त अ़ज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	और क़ियामत के दिन

تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز

आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	ख़रीद ली	वह जिन्हों ने	यही लोग	85	तुम करते हो

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ ع ١٠

86	मदद किए जाएंगे	वह	और न	अ़ज़ाब	उन से	सो हलका न किया जाएगा

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز

रसूल	उस के बाद	और हम ने पै दर पै भेजे	किताब	मूसा	और अलबत्ता हम ने दी

وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط

जिब्राईल (अ) के ज़रीए	और उस की मदद की	खुली निशानियां	मरयम का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी

اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ج

तुम ने तकब्बुर किया	तुम्हारे नफ़्स	न चाहते	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया तुम्हारे पास	क्या फिर जब

فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ز وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ط

पर्दे में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	87	तुम क़त्ल करने लगे	और एक गिरोह	तुम ने झुटलाया	सो एक गिरोह

بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	जो ईमान लाते हैं	सो थोड़े	उन के कुफ़्र के सबब	उन पर लानत अल्लाह की	बल्कि

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ

उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	अल्लाह के पास	से	किताब	उन के पास आई	और जब

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا

सो जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पर	फ़त्ह मांगते	इस से पहले	और वह थे

جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۟ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

89	काफ़िर (जमा)	पर	सो लानत अल्लाह की	उस के मुन्किर हो गए	वह पहचानते थे	जो	आया उन के पास

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا

ज़िद	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	वह मुन्किर हुए	कि	अपने आप	उस के बदले	बेच डाला उन्हों ने	बुरा है जो

اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ

अपने बन्दे	से	जो वह चाहता है	पर	अपना फ़ज़्ल	से	नाज़िल करता है अल्लाह	कि

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

अ़ज़ाब	और काफ़िरों के लिए	ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	सो वह कमा लाए

مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا

वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	उन्हें	और जब कहा जाता है	90	रुसवा करने वाला

نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ

हक़	हालांकि वह	उस के अ़लावा	उस से जो	और इन्कार करते हैं	हम पर	नाज़िल किया गया	उस पर जो	हम ईमान लाते हैं

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

अल्लाह के नबी (जमा)	तुम क़त्ल करते रहे	सो क्यों	कह दें	उन के पास	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ

तुम्हारे पास आए	और अलबत्ता	91	मोमिन (जमा)	तुम हो	अगर	इस से पहले

مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

और तुम	उस के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर	खुली निशानियों के साथ	मूसा

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ

कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	92	ज़ालिम (जमा)

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا

हम ने सुना	वह बोले	और सुनो	मज़बूती से	जो हम ने दिया तुम्हें	पकड़ो

وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ

बसबब उन के कुफ़्र	बछड़ा	उन के दिल	में	और रचा दिया गया	और नाफ़रमानी की

قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

93	मोमिन	अगर तुम हो	ईमान तुम्हारा	उस का	तुम्हें हुक्म देता है	क्या ही बुरा जो	कह दें

और जब उन के पास अल्लाह की तरफ़ से किताब आई, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है और वह इस से पहले काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (89)

बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच डालो कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अ़ज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अ़लावा है, हालांकि वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को इस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً

ख़ास तौर पर	अल्लाह के पास	आख़िरत का घर	तुम्हारे लिए	अगर है	कह दें

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

94	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम आर्ज़ू करो	लोग	सिवाए

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

जानने वाला	और अल्लाह	उन के हाथ	बसबब जो आगे भेजा	कभी	और वह हरगिज़ उस की आर्ज़ू न करेंगे

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ معانقة ٢ عند المتأخرين

ज़िन्दगी पर	लोग	ज़ियादा हरीस	और अलबत्ता तुम पाओगे उन्हें	95	ज़ालिमों को

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ

साल	हज़ार	काश वह उम्र पाए	उन का हर एक	चाहता है	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और से

وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	कि वह उम्र दिया जाए	अ़ज़ाब	से	उसे दूर करने वाला	और वह नहीं

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ ع ١١

यह नाज़िल किया	तो बेशक उस ने	जिब्रील का	दुश्मन	हो	जो	कह दें	96	वह करते हैं

عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى

और हिदायत	इस से पहले	उस की जो	तसदीक़ करने वाला	अल्लाह के हुक्म से	तेरे दिल पर

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह का	दुश्मन	हो	जो	97	ईमान वालों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	काफ़िरों का	दुश्मन	तो बेशक अल्लाह	और मिकाईल	और जिब्रील	और उस के रसूल

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ

उस का	और नहीं इन्कार करते	निशानियां वाज़ेह	आप की तरफ़	हम ने उतारी	और अलबत्ता

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ

उन में से	एक फ़रीक़	तोड़ दिया उस को	कोई अ़हद	उन्हों ने अ़हद किया	क्या जब भी	99	नाफ़रमान	मगर

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़ से	एक रसूल	आया उन के पास	और जब	100	ईमान नहीं रखते	अक्सर उन के	बल्कि

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ

किताब दी गई (अहले किताब)	जिन्हें	से	एक फ़रीक़	फेंक दिया	उन के पास	उस की जो	तसदीक़ करने वाला

كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	जानते नहीं	गोया कि वह	अपनी पीठ	पीछे	अल्लाह की किताब

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आख़िरत का घर अल्लाह के पास ख़ास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्ज़ू करो अगर तुम सच्चे हो। **(94)**

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्ज़ू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। **(95)**

और अलबत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुश्रिकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हज़ार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अ़ज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। **(96)**

कह दें जो जिब्रील (अ) का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुक्म से, उस की तसदीक़ करने वाला जो इस से पहले है, और हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। **(97)**

जो दुश्मन हो अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। **(98)**

और अलबत्ता हम ने आप (स) की तरफ़ वाज़ेह निशानियां उतारीं और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। **(99)**

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्हों ने कोई अ़हद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। **(100)**

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तसदीक़ करने वाला जो उन के पास है, तो फेंक दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। **(101)**

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ

और कुफ़्र न किया	सुलेमान (अ)	बादशाहत	में	शैतान	पढ़ते थे	जो	और उन्हों ने पैरवी की

سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ

जादू	लोग	वह सिखाते	कुफ़्र किया	शैतान (जमा)	लेकिन	सुलेमान (अ)

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ

और मारूत	हारूत	बाबिल में	दो फ़रिश्ते	पर	और जो नाज़िल किया गया

وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ

पस तू कुफ़्र न कर	आज़माइश	हम	सिर्फ़	वह कह देते	यहां तक	किसी को	और वह न सिखाते

فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ

और उस की बीवी	ख़ाविन्द	दरमियान	उस से	जिस से जुदाई डालते	उन दोनों से	सो वह सीखते

وَمَا هُمْ بِضَاۗرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह	हुक्म से	मगर	किसी को	उस से	नुक़्सान पहुँचाने वाले	और वह नहीं

وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا

और वह जान चुके	उन्हें नफ़ा दे	और न	जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए	और वह सीखते हैं

لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۣ وَلَبِئْسَ

और अलबत्ता बुरा	कोई हिस्सा	आख़िरत में	नहीं उस के लिए	यह ख़रीदा	जिस ने

مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٢ وَلَوْ اَنَّهُمْ

वह	और अगर	102	वह जानते होते	काश	अपने आप को	उस से	जो उन्हों ने बेच दिया

اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	अल्लाह के पास	से	तो ठिकाना पाते	और परहेज़गार बन जाते	वह ईमान लाते

ع ١٢ ١٢ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ١٠٣ ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا

राइना	न कहो	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	103	काश वह जानते होते

وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ١٠٤

104	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और काफ़िरों के लिए	और सुनो	उनज़ुरना	और कहो

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ

मुशरिक (जमा)	और न	अहले किताब	से	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	नहीं चाहते

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ

ख़ास कर लेता है	और अल्लाह	तुम्हारा रब	से	भलाई	से	तुम पर	नाज़िल की जाए	कि

بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ١٠٥

105	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	अपनी रहमत से

और उन्हों ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़्र नहीं किया सुलेमान (अ) ने लेकिन शैतानों ने कुफ़्र किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को यहां तक कि कह देते हम तो सिर्फ़ आज़माइश हैं पस तू कुफ़्र न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से ख़ाविन्द और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक़्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को मगर अल्लाह के हुक्म से, और वह सीखते जो उन्हें नुक़्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे, और अलबत्ता वह जान चुके थे कि जिस ने यह ख़रीदा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्हों ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। (102)

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। (103)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! राइना न कहो और उनज़ुरना (हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाइए) कहो और सुनो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (104)

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह नहीं चाहते और न मुशरिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (105)

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

या उस जैसा	उस से	बेहतर	ले आते हैं	या उसे भुला देते हैं	कोई आयत	जो हम मनसूख़ करते हैं

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू नहीं जानता	106	क़ादिर	हर शै	पर	कि अल्लाह	तू जानता	क्या नहीं

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कोई	अल्लाह के सिवा	से	तुम्हारे लिए	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत

وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا

जैसे	अपना रसूल	सवाल करो	कि	क्या तुम चाहते हो	107	और न मददगार	हामी

سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ

ईमान के बदले	कुफ़्र	इख़्तियार कर ले	और जो	इस से पहले	मूसा	सवाल किए गए

فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	बहुत	चाहा	108	रास्ता	सीधा	सो वह भटक गया

لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ

वजह से	हसद	कुफ़्र में	तुम्हारे ईमान	बाद	से	काश तुम्हें लौटा दें

اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا

पस तुम माफ़ कर दो	हक़	उन पर	वाज़ेह हो गया	जब कि	बाद	अपने दिल

وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह	अपना हुक्म	लाए अल्लाह	यहां तक	और दरगुज़र करो

قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا الثلاثة

आगे भेजोगे	और जो	ज़कात	और देते रहो	नमाज़	और तुम क़ाइम करो	109	क़ादिर

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

जो कुछ तुम करते हो	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	तुम पा लोगे उसे	भलाई	अपने लिए

بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا

यहूदी	हो	जो	सिवाए	जन्नत	हरगिज़ दाख़िल न होगा	और उन्हों ने कहा	110	देखने वाला

اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	अपनी दलील	तुम लाओ	कह दीजिए	झूटी आर्ज़ूएं	यह	या नसरानी

صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗ

तो उस के लिए	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना चेहरा	झुका दिया	जिस	क्यों नहीं	111	सच्चे

اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٣ ٩ ١٣

112	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उस का रब	पास	उस का अजर

कोई आयत जिसे हम मनसूख़ करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। **(106)**

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। **(107)**

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए इस से पहले मूसा (अ) से, और जो ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। **(108)**

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़्र में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। **(109)**

और नमाज़ क़ाइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। **(110)**

और उन्हों ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्ज़ूएं हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। **(111)**

क्यों नहीं? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। **(112)**

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَىْءٍ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى

नसारा	और कहा	किसी चीज़	पर	नसारा	नहीं	यहूद	और कहा

لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَىْءٍ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	कहा	इसी तरह	किताब	पढ़ते हैं	हालांकि वह	किसी चीज़ पर	यहूद	नहीं

لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	फ़ैसला करेगा उन के दरमियान	सो अल्लाह	उन की बात	जैसी	इल्म नहीं रखते

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ١١٣ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

रोका	से-जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	113	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	जिस में

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِىْ خَرَابِهَا

उस की वीरानी	में	और कोशिश की	उस का नाम	उस में	ज़िक्र किया जाए	कि	अल्लाह की मस्जिदें

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के लिए	डरते हुए	मगर	वहां दाख़िल होते	कि	उन के लिए	न था	यह लोग

خِزْىٌ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ١١٤ وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ

और मग़्रिब	और अल्लाह के लिए मश्रिक़	114	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	रुसवाई

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ١١٥

115	जानने वाला है	वुस्अ़त वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह का सामना	तो उस तरफ़	तुम मुँह करो	सो जिस तरफ़

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ بَلْ لَّهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों मे	जो	बल्कि उस के लिए	वह पाक है	बेटा	बना लिया अल्लाह ने	और उन्हों ने कहा

وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ١١٦ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	116	ज़ेरे फ़रमान	उस के लिए	सब	और ज़मीन

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ١١٧ وَقَالَ الَّذِيْنَ

जो लोग	और कहा	117	तो वह हो जाता है	"हो जा"	उसे	कहता है	तो यही	कोई काम	वह फ़ैसला करता है	और जब

لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ كَذٰلِكَ

इसी तरह	कोई निशानी	हमारे पास आती	या	हम से कलाम करता अल्लाह	क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते

قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	एक जैसे हो गए	इन की बात	जैसी	इन से पहले	जो लोग	कहा

قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ١١٨ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	आप को भेजा	बेशक हम	118	यक़ीन रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	हम ने वाज़ेह कर दी

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ١١٩

119	दोज़ख़ वाले	से	और न आप से पूछा जाएगा	और डराने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह की मस्जिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाख़िल होते मगर डरते हुए, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मश्रिक़ और मग़्रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़रमान हैं। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है "हो जा" तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्हों ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह इन से पहले लोगों ने इन जैसी बात कही, इन (अगले पिछले गुमराहों) के दिल एक जैसे हैं। हम ने यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

बेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! बेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं और न मददगार। (120)
हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक़ है, वह उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121)
ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)
और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख़्स बदला न हो सकेगा किसी शख़्स का कुछ भी, और न उस से कोई मुआवज़ा क़ुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)
और जब इब्राहीम (अ) को उन के रब ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्हों नें वह पूरी कर दीं, उस ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)
और जब हम नें ख़ाने कअ़बा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज्तिमाअ़) की जगह और अम्न की जगह, और "मुक़ामे इब्राहीम" को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक्म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ़ सिज्दा करने वालों के लिए। (125)
और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शहर को बना अम्न वाला, और इस के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़रमाया जिस ने कुफ़्र किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर करूँगा दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ

उन का दीन	आप पैरवी (न) करें	जब तक	नसारा	और न	यहूदी	आप से	और हरगिज़ राज़ी न होंगे

قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ

वह जो कि (जबकि)	बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें

وقف منزل

جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾

120	मददगार	और न	हिमायत करने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं आप के लिए	इल्म	से	आप के पास आगया

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ

ईमान रखते हैं उस पर	वही लोग	उस की तिलावत	हक़	उस की तिलावत करते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें	जिन्हें

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

ع ١٤ ٩ ١٤

तुम याद करो	ऐ बनी इस्राईल	121	ख़सारह पाने वाले	वह	वही	इन्कार करें उस का	और जो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

122	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने इन्आम की	जो कि	मेरी नेमत

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

उस से	और न क़ुबूल किया जाएगा	कुछ	किसी शख़्स से	कोई शख़्स	बदला न होगा	वह दिन	और डरो

عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى

आज़माया	और जब	123	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई सिफ़ारिश	उसे नफ़ा देगी	और न	कोई मुआवज़ा

اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

उस ने कहा	इमाम	लोगों का	तुम्हें बनाने वाला हूँ	बेशक मैं	उस ने फ़रमाया	तो वह पूरी कर दीं	चन्द बातों से	उन का रब	इब्राहीम (अ)

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

ख़ाने कअ़बा	बनाया हम ने	और जब	124	ज़ालिम (जमा)	मेरा अ़हद	नही पहुँचता	उस ने फ़रमाया	मेरी औलाद	और से

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ

और हम ने हुक्म दिया	नमाज़ की जगह	"मुक़ामे इब्राहीम"	से	और तुम बनाओ	और अम्न की जगह	लोगों के लिए	इज्तिमाअ़ की जगह

اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

और रुकूअ़ करने वाले	और एतिकाफ़ करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	पाक रखें	कि वह	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ) को

السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ

और रोज़ी दे	अम्न वाला	यह शहर	बना	ऐ मेरे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	125	सिज्दा करने वाले

اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ

और जो	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	उन से	ईमान लाए	जो	फल (जमा)	से	इस के रहने वाले

كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾

126	लौटने की जगह	और बुरी	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तरफ़	मजबूर करूँगा उस को	फिर	थोड़ा	उसे नफ़ा दूँगा	उस ने कुफ़्र किया

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ

कुबूल फ़रमा ले हम से	ऐ हमारे रब	और इस्माईल (अ)	ख़ाने कअ़बा	से	बुन्यादें	इब्राहीम (अ)	उठाते थे	और जब

اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

अपना	फ़रमांबरदार	और हमें बना ले	ऐ हमारे रब	127	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ

और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा	हज के तरीक़े	और हमें दिखा	अपनी	फ़रमांबरदार	उम्मत	हमारी औलाद	और से

اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	और भेज	ऐ हमारे रब	128	रहम करने वाला	तौबा कुबूल करने वाला	तू	बेशक

مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

और हिक्मत (दानाई)	"किताब"	और उन्हें तालीम दे	तेरी आयतें	उन पर	वह पढ़े	उन से

ع ۸ ۱۵ ۱۵

وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ

दीन	से	मुँह मोड़े	और कौन	129	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	बेशक	और उन्हें पाक करे

اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ

दुनिया में	हम ने उसे चुन लिया	और बेशक	अपने आप	बेवकूफ़ बनाया	जिस ने	सिवाए	इब्राहीम (अ)

وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ

सर झुका दे	उस का रब	उस को	जब कहा	130	नेकोकार (जमा)	से	आख़िरत में	और बेशक वह

قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ

अपने बेटे	इब्राहीम (अ)	उस की	और वसीयत की	131	तमाम जहान	रब के लिए	मैं ने सर झुका दिया	उस ने कहा

وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

मगर	पस तुम हरगिज़ न मरना	दीन	तुम्हारे लिए	चुन लिया	बेशक अल्लाह	मेरे बेटो	और याकूब (अ)

وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ

मौत	याकूब (अ)	आई	जब	मौजूद	क्या तुम थे	132	मुसलमान (जमा)	और तुम

اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ

हम इबादत करेंगे	उन्हों ने कहा	मेरे बाद	किस की तुम इबादत करोगे?	अपने बेटों को	जब उस ने कहा

اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ

वाहिद	माबूद	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तेरे बाप दादा	और माबूद	तेरा माबूद

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

जो उस ने कमाया	उस के लिए	गुज़र गई	एक उम्मत	यह	133	फ़रमांबरदार	उसी के	और हम

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

134	जो वह करते थे	उस के बारे में	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) ख़ाने कअ़बा की बुन्यादें (यह दुआ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से कुबूल फ़रमा ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़रमांबरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़रमांबरदार उम्मत बना और हमें हज के तरीक़े दिखा और हमारी तौबा कुबूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें "किताब" और "हिक्मत" (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और बेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याकूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने बेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद जब याकूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहा: मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्हों ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) के माबूदे वाहिद की, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ

और उन्हों ने कहा	हो जाओ	यहूदी	या	नसरानी	तुम हिदायत पा लोगे	कह दीजिए	बल्कि दीन	इब्राहीम (अ)

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ

एक अल्लाह के हो जाने वाले	और न थे	से	मुश्रिकीन	135	कह दो	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

हमारी तरफ़	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़	इब्राहीम (अ)	और इस्माईल (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और याकूब (अ)

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

और औलादे याकूब (अ)	और जो	दिया गया	मूसा (अ)	और ईसा (अ)	और जो	दिया गया	नबियों	उन के रब से

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ

हम फ़र्क़ नहीं करते	दरमियान	किसी एक	उन से	और हम	उसी के	फ़रमांबरदार	136	पस अगर

اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

वह ईमान लाएं	जैसे	तुम ईमान लाए	उस पर	तो वह हिदायत पा गए	और अगर	उन्हों ने मुँह फेरा	तो बेशक वही

هُمْ فِىْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

वह	में	ज़िद	पस अनक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा	अल्लाह	और वह	सुनने वाला	जानने वाला	137

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۡ وَّنَحْنُ لَهٗ

रंग अल्लाह का	और किस	अच्छा	से	अल्लाह	रंग	और हम	उसी की

عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ

इबादत करने वाले	138	कह दीजिए	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	अल्लाह के बारे में	हालांकि वही	हमारा रब	और तुम्हारा रब	और हमारे लिए

اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ

हमारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	तुम्हारे अ़मल	और हम	उसी के	ख़ालिस	139	क्या	तुम कहते हो

اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا

कि	इब्राहीम (अ)	और इस्माईल (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और याकूब (अ)	और औलादे याकूब (अ)	थे

هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

यहूदी	या नसरानी	कह दीजिए	क्या तुम	ज़ियादा जानने वाले	या अल्लाह	और कौन	बड़ा ज़ालिम

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

से-जिस	छुपाई	गवाही	उस के पास	अल्लाह से	और नहीं अल्लाह	बेख़बर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

उस से जो	तुम करते हो	140	यह	एक उम्मत	गुज़र चुकी	उस के लिए	जो	उस ने कमाया

وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع ١٦ ١٢ ١٦

और तुम्हारे लिए	जो तुम ने कमाया	और तुम से न पूछा जाएगा	उस से जो	वह करते थे	141

और उन्हों ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुश्रिकों में से न थे। **(135)**

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। **(136)**

पस अगर वह ईमान ले आएं जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्हों ने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में हैं, पस अनक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। **(137)**

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। **(138)**

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, और हम ख़ालिस उसी के हैं। **(139)**

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इस्हाक़ (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ़ से उस के पास थी, और अल्लाह बेख़बर नहीं उस से जो तुम करते हो। **(140)**

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिए है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। **(141)**

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ

उन का क़िबला	से	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	किस	लोग	से	बेवकूफ़	अब कहेंगे

الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ۭ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۭ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ

जिस को चाहता है	वह हिदायत देता है	और मग़रिब	मश्रिक़	अल्लाह के लिए	आप कह दें	उस पर	वह थे	वह जिस

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ

गवाह	ताकि तुम हो	मोअ़तदिल	उम्मत	हम ने तुम्हें बनाया	और उसी तरह	142	सीधा	रास्ता	तरफ़

عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۭ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ

वह जिस	क़िबला	और नहीं मुक़र्रर किया हम ने	गवाह	तुम पर	रसूल	और हो	लोग	पर

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰي عَقِبَيْهِ ۭ

अपनी एड़ियां	पर	फिर जाता है	उस से जो	रसूल (स)	पैरवी करता है	ताकि हम मालूम कर लें कौन	मगर	उस पर	आप (स) थे

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَي الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	अल्लाह	हिदायत दी	जिन्हें	पर	मगर	भारी बात	यह थी	और बेशक

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ

बार बार फिरना	हम देखते हैं	143	रहम करने वाला	बड़ा शफ़ीक़	लोगों के साथ	बेशक अल्लाह	तुम्हारा ईमान	कि वह ज़ाया करे

وَجْهِكَ فِي السَّمَاۗءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ

तरफ़	अपना मुंह	पस आप फेर लें	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	क़िबला	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	आस्मान	में (तरफ़)	आप (स) का मुंह

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْھَكُمْ شَطْرَهٗ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

जिन्हें	और बेशक	उस की तरफ़	अपने मुंह	सो फेर लिया करो	तुम हो	और जहां कहीं	मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा)

اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	उन का रब	से	हक़	कि यह	वह ज़रूर जानते हैं	दी गई किताब (अहले किताब)

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَىِٕنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا

वह पैरवी न करेंगे	निशानियां	तमाम	दी गई किताब (अहले किताब)	जिन्हें	आप (स) लाएं	और अगर	144	वह करते हैं

قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ

किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	उन से कोई	और नहीं	उन का क़िबला	पैरवी करने वाले	आप (स)	और न	आप (स) का क़िबला

وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَھْوَاۗءَھُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ

बेशक आप(स)	इल्म	कि आ चुका आप के पास	उस के बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर

وقف لازم

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰھُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ

वह पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	किताब	हम ने दी	और जिन्हें	145	बे इन्साफ़	से	अब

وقف منزل

اَبْنَاۗءَھُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

146	वह जानते हैं	हालांकि वह	हक़	वह छुपाते हैं	उन से	एक गिरोह	और बेशक	अपने बेटे

अब बेवकूफ़ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मश्रिक़ और मग़रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअ़तदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुक़र्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावँ), और बेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, बेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) की तरफ़ फेर लें, और जहां कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और बेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब बेशक आप बे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और बेशक उन में से एक गिरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

ع ١٧ — وقف النبي ﷺ

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ ع وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ

वह	एक सिम्त	और हर एक के लिए	147	शक करने वाले	से	पस आप न हो जाएं	आप का रब	से	हक़

مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ

इकट्ठा	अल्लाह	ले आएगा तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	नेकियां	पस तुम सबक़त ले जाओ	उस तरफ़ रुख़ करता है

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अपना रुख़	पस कर लें	आप (स) निकलें	जहां	और से	148	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	आप (स) के रब से	हक़	और बेशक यही	मस्जिदे हराम	तरफ़

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

मस्जिदे हराम	तरफ़	अपना रुख़	पस कर लें	आप निकलें	और जहां से	149	तुम करते हो

وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	लोगों के लिए	रहे	ताकि न	उस की तरफ़	अपने रुख़	सो कर लो	तुम हो	और जहां कहीं

حُجَّةٌ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ

ताकि मैं पूरी कर दूँ	और डरो मुझ से	सो तुम न डरो उन से	उन से	बे इन्साफ़	वह जो कि	सिवाए	कोई हुज्जत

نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ ۙ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ

तुम में से	एक रसूल	तुम में	हम ने भेजा	जैसा कि	150	हिदायत पाओ	और ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत

يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا

जो	और सिखाते हैं तुम्हें	और हिक्मत	किताब	और सिखाते हैं तुम को	और पाक करते हैं तुम्हें	हमारे हुक्म	तुम पर	वह पढ़ते हैं

ع ١٨ / ٥ / ٢ — معانقة ٣ عند المتاخرين ١٢

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ ؕ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾ ع

152	नाशुक्री करो मेरी	और न	और तुम शुक्र करो मेरा	मैं याद रखूँगा तुम्हें	सो याद करो मुझे	151	जानते	तुम न थे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और नमाज़	सब्र से	तुम मदद मांगो	ईमान लाए	जो कि	ऐ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	ज़िन्दा	बल्कि	मुर्दा	अल्लाह	रास्ता	में	मारे जाएं	उसे जो	कहो	और न

لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ

और नुक़्सान	और भूक	ख़ौफ़	से	कुछ	और ज़रूर हम आज़माएंगे तुम्हें	154	तुम शऊर नहीं रखते

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ ۙ الَّذِيْنَ اِذَآ

जब	वह जो	155	सब्र करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	और फल (जमा)	और जान (जमा)	माल (जमा)	से

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ ؕ

156	लौटने वाले	उस की तरफ़	और हम	हम अल्लाह के लिए	वह कहें	कोई मुसीबत	पहुँचे उन्हें

(यह) हक़ है आप के रब की तरफ़ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। **(147)**

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ़ वह रुख़ करता है, पस तुम नेकियों में सबक़त ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकटठा कर लेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। **(148)**

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और बेशक आप के रब (की तरफ़) से यही हक़ है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। **(149)**

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रुख़ उस की तरफ़, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इन्साफ़ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। **(150)**

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। **(151)**

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो। **(152)**

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। **(153)**

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। **(154)**

और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक़्सान से, और आप (स) ख़ुशख़बरी दें सब्र करने वालों को। **(155)**

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। **(156)**

أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ١٥٧

157	हिदायत याफ़्ता	वह	और यही लोग	और रहमत	उन का रब	से	इनायतें	उन पर	यही लोग

إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنۡ حَجَّ ٱلۡبَيۡتَ أَوِ ٱعۡتَمَرَ

उमरा करे	या	ख़ाने कअ़बा	हज करे	पस जो	अल्लाह	निशानात	से	और मरवा	सफ़ा	बेशक

فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرًا ۙ فَإِنَّ ٱللَّهَ

तो बेशक अल्लाह	कोई नेकी	ख़ुशी से करे	और जो	उन दोनों	वह तवाफ़ करे	कि	उस पर	तो नहीं कोई हर्ज

شَاكِرٌ عَلِيمٌ ١٥٨ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ

और हिदायत	खुली निशानियां	से	जो नाज़िल किया हम ने	छुपाते हैं	जो लोग	बेशक	158	जानने वाला	क़द्रदान

مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ ۙ أُولَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ

लानत करता है उन पर अल्लाह	यही लोग	किताब में	लोगों के लिए	हम ने वाज़ेह कर दिया	उस के बाद

وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ١٥٩ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ وَأَصۡلَحُوا۟ وَبَيَّنُوا۟

और वाज़ेह किया	और इस्लाह की	उन्हों ने तौबा की	वह लोग जो	सिवाए	159	लानत करने वाले	और लानत करते हैं उन पर

فَأُولَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيۡهِمۡ ۚ وَأَنَا ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ١٦٠ إِنَّ ٱلَّذِينَ

जो लोग	बेशक	160	रहम करने वाला	माफ़ करने वाला	और मैं	उन्हें	मैं माफ़ करता हूँ	पस यही लोग हैं

كَفَرُوا۟ وَمَاتُوا۟ وَهُمۡ كُفَّارٌ أُولَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ

और फ़रिश्ते	अल्लाह	लानत	उन पर	यही लोग	काफ़िर	और वह	और वह मर गए	काफ़िर हुए

وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ ١٦١ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابُ

अ़ज़ाब	उन से	न हलका होगा	उस में	हमेशा रहेंगे	161	तमाम	और लोग

وَلَا هُمۡ يُنظَرُونَ ١٦٢ وَإِلَٰهُكُمۡ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۚ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ

निहायत मेहरबान	सिवाए उस के	नहीं इबादत के लाइक़	(एक) यकता	माबूद	और माबूद तुम्हारा	162	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें

ع ١٩ ١١ ٣ ٱلرَّحِيمُ ١٦٣ إِنَّ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَٱخۡتِلَٰفِ ٱلَّيۡلِ

रात	और बदलते रहना	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश	में	बेशक	163	रहम करने वाला

وَٱلنَّهَارِ وَٱلۡفُلۡكِ ٱلَّتِي تَجۡرِي فِي ٱلۡبَحۡرِ بِمَا يَنفَعُ ٱلنَّاسَ وَمَآ

और जो कि	लोग	नफ़ा देती है	साथ जो	समन्दर	में	बहती है	जो कि	और कश्ती	और दिन

أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن مَّآءٍ فَأَحۡيَا بِهِ ٱلۡأَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا

उस के मरने के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	पानी	से	आस्मानों से	अल्लाह	उतारा

وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَتَصۡرِيفِ ٱلرِّيَٰحِ وَٱلسَّحَابِ

और बादल	हवाएं	और बदलना	हर (क़िस्म) के जानवर	से	उस में	और फैलाए

ٱلۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ لَأٓيَٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَعۡقِلُونَ ١٦٤

164	अ़क़्ल वाले	लोगों के लिए	निशानियां	और ज़मीन	आस्मान	दरमियान	ताबे

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं। (157)

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई ख़ाने कअ़बा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ़ करे, और जो ख़ुशी से कोई नेकी करे तो बेशक अल्लाह क़द्रदान, जानने वाला है। (158)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिन्हें मैं माफ़ करता हूँ, और मैं माफ़ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और वह (काफ़िर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अ़ज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, निहायत मेहरबान, रहम करने वाला। (163)

बेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कश्ती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफ़ा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अ़क़्ल वाले हैं। (164)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ

मुहब्बत करते हैं उन से	शरीक	अल्लाह	सिवाए	से	अपनाते हैं	जो	लोग	और से

كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا

ज़ुल्म किया	वह जिन्हों ने	देख लें	और अगर	अल्लाह के लिए	मुहब्बत	सब से ज़ियादा	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	जैसे मुहब्बत

اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

165	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	और यह कि	तमाम	अल्लाह के लिए	कुव्वत	कि	अज़ाब	जब देखेंगे

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ

अज़ाब	और वह देखेंगे	पैरवी की	जिन्हों ने	से	पैरवी की गई	वह लोग जो	जब बेज़ार हो जाएंगे

وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً

दोबारा	हमारे लिए	काश कि	पैरवी की	वह जिन्हों ने	और कहेंगे	166	वसाइल	उन से	और कट जाएंगे

فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ

उन के अमल	अल्लाह	उन्हें दिखाएगा	उसी तरह	हम से	उन्हों ने बेज़ारी की	जैसे	उन से	तो हम बेज़ारी करते

حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا ع ٢٠ ٤

तुम खाओ	लोग	ऐ	167	आग से	निकलने वाले	और नहीं वह	उन पर	हस्रतें

مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान	क़दमों	पैरवी करो	और न	पाक	हलाल	ज़मीन में	उस से जो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ

और यह कि	और बेहयाई	बुराई	तुम्हें हुक्म देता है	सिर्फ़	168	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

पैरवी करो	उन्हें	कहा जाता है	और जब	169	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ

हों	भला अगरचे	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	अल्लाह	जो उतारा

اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और मिसाल	170	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ	न समझते हों	उन के बाप दादा

كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ

गूँगे	बहरे	और आवाज़	पुकारना	सिवाए	नहीं सुनता	उस को जो	पुकारता है	वह जो	मानिंद हालत

عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाक	से	तुम खाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	171	नहीं समझते	पस वह	अंधे

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172	बन्दगी करते हो	सिर्फ़ उस की	अगर तुम हो	अल्लाह का	और शुक्र करो	जो हम ने तुम्हें दिया

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्हों ने ज़ुल्म किया (उस वक़्त को) जब यह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्हों ने पैरवी की थी और वह अज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्हों ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्हों ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अमल उन्हें हस्रतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के क़दमों की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़्ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन की मिसाल उस शख़्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उस की बन्दगी करते हो। (172)

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ وَالدَّمَ وَلَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ

उस पर	पुकारा गया	और जो	सुव्वर	और गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम किया	दर हक़ीक़त

لِغَيۡرِ اللّٰهِ‌ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثۡمَ عَلَيۡهِ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	उस पर	गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला	और न	न सरकशी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	अल्लाह के सिवा

غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۷۳﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ الۡكِتٰبِ

किताब	से	अल्लाह	जो उतारा	छुपाते हैं	जो लोग	बेशक	173	रह्म करने वाला	बख़्शने वाला

وَيَشۡتَرُوۡنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ۙ اُولٰٓٮِٕكَ مَا يَاۡكُلُوۡنَ فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ

अपने पेटों	में	नहीं खाते	यही लोग	थोड़ी	क़ीमत	उस से	और वसूल करते हैं

اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۖۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ

अ़ज़ाब	और उन के लिए	पाक करेगा उन्हें	और न	क़ियामत के दिन	अल्लाह	बात करेगा	और न	आग	मगर (सिर्फ़)

اَلِيۡمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓٮِٕكَ الَّذِيۡنَ اشۡتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالۡهُدٰى وَالۡعَذَابَ

और अ़ज़ाब	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्हों ने	यही लोग	174	दर्दनाक

بِالۡمَغۡفِرَةِ ۚ فَمَاۤ اَصۡبَرَهُمۡ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ

नाज़िल की	अल्लाह	इस लिए कि	यह	175	आग	पर	बहुत सब्र करने वाले वह	सो किस क़द्र	मग़्फ़िरत के बदले

الۡكِتٰبَ بِالۡحَـقِّ‌ؕ وَاِنَّ الَّذِيۡنَ اخۡتَلَفُوۡا فِى الۡكِتٰبِ لَفِىۡ

में	किताब	में	इख़्तिलाफ़ किया	जो लोग	और बेशक	हक़ के साथ	किताब

ع ٢١ ٩ ٥ شِقَاقٍ بَعِيۡدٍ ﴿۱۷۶﴾ لَيۡسَ الۡبِرَّ اَنۡ تُوَلُّوۡا وُجُوۡهَكُمۡ قِبَلَ الۡمَشۡرِقِ

मश्रिक़	तरफ़	अपने मुँह	तुम कर लो	कि	नेकी	नहीं	176	दूर	ज़िद

وَالۡمَغۡرِبِ وَلٰـكِنَّ الۡبِرَّ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَالۡمَلٰٓٮِٕكَةِ

और फ़रिश्ते	आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो	नेकी	और लेकिन	और मग़रिब

وَالۡكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ‌ۚ وَاٰتَى الۡمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الۡقُرۡبٰى

रिश्तेदार	उस की मुहब्बत पर	माल	और दे	और नबियों	और किताब

وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنَ وَابۡنَ السَّبِيۡلِۙ وَالسَّآٮِٕلِيۡنَ وَفِى الرِّقَابِ‌ۚ

और गर्दनों में	और सवाल करने वाले	और मुसाफ़िर	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)

وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّکٰوةَ‌ ۚ وَالۡمُوۡفُوۡنَ بِعَهۡدِهِمۡ

अपने अ़हद	और पूरा करने वाले	ज़कात	और अदा करे	नमाज़	और क़ाइम करे

اِذَا عٰهَدُوۡا ۚ وَالصّٰبِرِيۡنَ فِى الۡبَاۡسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيۡنَ الۡبَاۡسِ‌ؕ

जंग	और वक़्त	और तक्लीफ़	सख़्ती	में	और सब्र करने वाले	वह अ़हद करें	जब

اُولٰٓٮِٕكَ الَّذِيۡنَ صَدَقُوۡا ؕ وَاُولٰٓٮِٕكَ هُمُ الۡمُتَّقُوۡنَ ﴿۱۷۷﴾

177	परहेज़गार	वह	और यही लोग	उन्हों ने सच कहा	वह जो कि	यही लोग

दर हक़ीक़त (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रह्म करने वाला है। (173)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़्फ़िरत के बदले अ़ज़ाब, सो किस क़द्र ज़्यादा वह आग पर सब्र करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की, और बेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मश्रिक़ या मग़रिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और फ़रिश्तों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिश्तेदारों को और यतीमों और मिस्कीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अ़हद करें तो उसे पूरा करें, और सब्र करने वाले सख़्ती में और तक्लीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ

मक़्तूलों में	क़िसास	फ़र्ज़ किया गया तुम पर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ

उस का भाई	से	उस के लिए	माफ़ किया जाए	पस जिसे	औरत के बदले	और औरत	गुलाम के बदले	और गुलाम	आज़ाद के बदले	आज़ाद

شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

आसानी	यह	अच्छा तरीक़ा	उसे	और अदा करना	मुताबिक़ दस्तूर	तो पैरवी करना	कुछ

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾

178	दर्दनाक	अ़ज़ाब	तो उस के लिए	उस	बाद	ज़ियादती की	पस जो	और रहमत	तुम्हारा रब	से

وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

179	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	ऐ अ़क़्ल वालो	ज़िन्दगी	क़िसास	में	और तुम्हारे लिए

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ

वसीयत	माल	छोड़ा	अगर	मौत	तुम्हारा कोई	आए	जब	फ़र्ज़ किया गया तुम पर

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾

180	परहेज़गार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	और रिश्तेदारों	माँ बाप के लिए

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ

उसे बदला	जो लोग	पर	उस का गुनाह	तो सिर्फ़	उस को सुना	बाद जो	बदल दे उसे	फिर जो

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا

या गुनाह	तरफ़दारी	वसीयत करने वाला	से	ख़ौफ़ करे	पस जो	181	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह

فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع ٢٢ ٦ ٦

182	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस पर	तो नहीं गुनाह	उन के दरमियान	फिर सुलह करा दे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	फ़र्ज़ किए गए	जैसे	रोज़े	तुम पर	फ़र्ज़ किए गए	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ

हो	पस जो	गिनती के	चन्द दिन	183	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	तुम से पहले

مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	और पर	दूसरे (बाद) के दिन	से	तो गिनती	सफ़र	पर	या	बीमार	तुम में से

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

कोई नेकी	ख़ुशी से करे	पस जो	नादार	खाना	बदला	ताक़त रखते हों

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

184	जानते हो	तुम हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए	तुम रोज़ा रखो	और अगर	बेहतर उस के लिए	तो वह

ऐ ईमान वालो! तुम पर फ़र्ज़ किया गया क़िसास मक़्तूलों (के बारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औ़रत के बदले औ़रत, पस जिसे उस के भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीक़े से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(178)**

और तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है, ऐ अ़क़्ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। **(179)**

तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिश्तेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। **(180)**

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्हों ने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। **(181)**

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। **(182)**

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। **(183)**

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो ख़ुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। **(184)**

شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	हिदायत	कुरआन	उस में	नाज़िल किया गया	जिस	रमज़ान	महीना

وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡهُدٰی وَالۡفُرۡقَانِ ۚ فَمَنۡ شَهِدَ مِنۡكُمُ الشَّهۡرَ

महीना	तुम में से	पाए	पस जो	और फुरकान	हिदायत	से	और रौशन दलीलें

فَلۡیَصُمۡهُ ؕ وَمَنۡ كَانَ مَرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ

बाद के दिन	से	तो गिनती पूरी करले	सफ़र	पर	या	बीमार	हो	और जो	चाहिए कि रोज़े रखे

یُرِیۡدُ اللّٰهُ بِكُمُ الۡیُسۡرَ وَلَا یُرِیۡدُ بِكُمُ الۡعُسۡرَ ۫ وَلِتُكۡمِلُوا الۡعِدَّةَ

गिनती	और ताकि तुम पूरी करो	दुश्वारी	तुम्हारे लिए	और नहीं चाहता	आसानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह	चाहता है

وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰی مَا هَدٰىكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۸۵﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ

आप से पूछें	और जब	185	शुक्र अदा करो	और ताकि तुम	जो तुम्हें हिदायत दी	पर	अल्लाह	और ताकि तुम बड़ाई करो

عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

मुझ से मांगे	जब	पुकारने वाला	दुआ	मैं कुबूल करता हूँ	क़रीब	तो मैं	मेरे बारे में	मेरे बन्दे

فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَلۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّهُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ ﴿۱۸۶﴾

186	वह हिदायत पाएं	ताकि वह	मुझ पर	और ईमान लाएं	मेरा	पस चाहिए हुक्म मानें

اُحِلَّ لَكُمۡ لَیۡلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰی نِسَآئِكُمۡ ؕ هُنَّ

वह	अपनी औरतें	तरफ़ (से)	बेपर्दा होना	रोज़ा	रात	तुम्हारे लिए	जाइज़ कर दिया गया

لِبَاسٌ لَّكُمۡ وَاَنۡتُمۡ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ

तुम थे	कि तुम	जान लिया अल्लाह	उन के लिए	लिबास	और तुम	तुम्हारे लिए	लिबास

تَخۡتَانُوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ فَتَابَ عَلَیۡكُمۡ وَعَفَا عَنۡكُمۡ ۚ فَالۡـٰٔنَ

पस अब	तुम से	और दरगुज़र की	तुम को	सो माफ़ कर दिया	अपने तईं	ख़ियानत करते

بَاشِرُوۡهُنَّ وَابۡتَغُوۡا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمۡ ۪ وَكُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا حَتّٰی

यहां तक कि	और पियो	और खाओ	तुम्हारे लिए	लिख दिया अल्लाह	जो	और तलब करो	उन से मिलो

یَتَبَیَّنَ لَكُمُ الۡخَیۡطُ الۡاَبۡیَضُ مِنَ الۡخَیۡطِ الۡاَسۡوَدِ مِنَ الۡفَجۡرِ ۪

फ़ज्र	से	सियाह	धारी	से	सफ़ेद	धारी	तुम्हारे लिए	वाज़ेह हो जाए

ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّیَامَ اِلَی الَّیۡلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوۡهُنَّ وَاَنۡتُمۡ

जबकि तुम	उन से मिलो	और न	रात	तक	रोज़ा	तुम पूरा करो	फिर

عٰكِفُوۡنَ فِی الۡمَسٰجِدِ ؕ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ فَلَا تَقۡرَبُوۡهَا ؕ

उन के क़रीब जाओ	पस न	अल्लाह	हदें	यह	मस्जिदों में	एतिकाफ़ करने वाले

كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ یَتَّقُوۡنَ ﴿۱۸۷﴾

187	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने हुक्म	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों मे गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअल्लिक़ पूछें तो मैं क़रीब हूँ, मैं कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगे, पस चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से बेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तईं ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को माफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज्र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मस्जिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के क़रीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुक्म ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ

उस से	और (न) पहुँचाओ	नाहक़	आपस में	अपने माल	खाओ	और न

اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ

लोग	माल	से	कोई हिस्सा	ताकि तुम खाओ	हाकिमों तक

بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ ع ٢٣ ٧

नए चाँद	से	वह आप से पूछते हैं	188	जानते हो	और तुम	गुनाह से

قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ

यह कि	नेकी	और नहीं	और हज	लोगों के लिए	औक़ात	यह	आप कह दें

تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ

परहेज़गारी करे	जो	नेकी	और लेकिन	उन की पुश्त	से	घर (जमा)	तुम आओ

وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	अल्लाह	और तुम डरो	दरवाज़े	से	घर (जमा)	और तुम आओ

تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ

वह जो कि	अल्लाह	रास्ता	में	और तुम लड़ो	189	कामयाबी हासिल करो

يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

190	ज़ियादती करने वाले	नहीं पसन्द करता	बेशक अल्लाह	और ज़ियादती न करो	तुम से लड़ते हैं

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ

से	और उन्हें निकाल दो	तुम उन्हें पाओ	जहां	और उन्हें मार डालो

حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ

क़त्ल	से	ज़ियादा संगीन	और फ़ित्ना	उन्हों ने तुम्हें निकाला	जहां

وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ

वह तुम से लड़ें	यहां तक कि	मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा)	पास	उन से लड़ो	और न

فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

बदला	इसी तरह	तो तुम उन से लड़ो	वह तुम से लड़ें	पस अगर	उस में

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾

192	रह्म करने वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	तो बेशक	वह बाज़ आ जाएं	फिर अगर	191	काफ़िर (जमा)

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ

दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे	यहां तक कि	और तुम उन से लड़ो

لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾

193	ज़ालिम (जमा)	पर	सिवाए	ज़ियादती	तो नहीं	वह बाज़ आ जाएं	पस अगर	अल्लाह के लिए

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक़, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। **(188)**

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औक़ात लोगों और हज के लिए हैं, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। **(189)**

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! **(190)**

और उन्हें मार डालो जहां उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा) के पास न लड़ो यहां तक कि वह यहां तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! **(191)**

फिर अगर वह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रह्म करने वाला है। **(192)**

और तुम उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह बाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। **(193)**

اَلشَّهۡرُ الۡحَرَامُ بِالشَّهۡرِ الۡحَرَامِ وَالۡحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعۡتَدٰى

ज़ियादती की	पस जिस	बदला	और हुर्मतें	बदला हुर्मत वाला महीना	हुर्मत वाला महीना

عَلَيۡكُمۡ فَاعۡتَدُوۡا عَلَيۡهِ بِمِثۡلِ مَا اعۡتَدٰى عَلَيۡكُمۡ ۖ

तुम पर	उस ने ज़ियादती की	जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो	तुम पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنۡفِقُوۡا فِىۡ

में	और तुम ख़र्च करो	194	परहेज़गारों	साथ	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

ع ١ عند المتقدمين ١٢

سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَلَا تُلۡقُوۡا بِاَيۡدِيۡكُمۡ اِلَى التَّهۡلُكَةِ ۖۚ وَاَحۡسِنُوۡا ۚ

और नेकी करो	हलाकत	तरफ़	अपने हाथ	डालो	और न	अल्लाह	रास्ता

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿١٩٥﴾ وَاَتِمُّوا الۡحَجَّ وَالۡعُمۡرَةَ لِلّٰهِ ؕ

अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

فَاِنۡ اُحۡصِرۡتُمۡ فَمَا اسۡتَيۡسَرَ مِنَ الۡهَدۡىِ ۚ وَلَا تَحۡلِقُوۡا رُءُوۡسَكُمۡ حَتّٰى

यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए	तो जो	तुम रोक दिए जाओ	फिर अगर

يَبۡلُغَ الۡهَدۡىُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ مَّرِيۡضًا اَوۡ بِهٖۤ اَذًى

तक्लीफ़	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो	अपनी जगह	कुरबानी	पहुँच जाए

مِّنۡ رَّاۡسِهٖ فَفِدۡيَةٌ مِّنۡ صِيَامٍ اَوۡ صَدَقَةٍ اَوۡ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنۡتُمۡ ٝ

तुम अम्न में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदक़ा	या	रोज़ा	से	तो बदला	उस का सर	से

فَمَنۡ تَمَتَّعَ بِالۡعُمۡرَةِ اِلَى الۡحَجِّ فَمَا اسۡتَيۡسَرَ مِنَ الۡهَدۡىِ ۚ

कुरबानी से	मयस्सर आए	तो जो	हज	तक	उमरे का	फ़ाइदा उठाए	तो जो

فَمَنۡ لَّمۡ يَجِدۡ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الۡحَجِّ وَسَبۡعَةٍ اِذَا رَجَعۡتُمۡ ؕ

जब तुम वापस आजाओ	और सात	हज में	दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए	फिर जो

تِلۡكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنۡ لَّمۡ يَكُنۡ اَهۡلُهٗ حَاضِرِى

मौजूद	उस के घर वाले	न हों	लिए-जो	यह	पूरे	दस	यह

٢٤ ع ٨ ٨ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

196	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	मस्जिदे हराम

اَلۡحَجُّ اَشۡهُرٌ مَّعۡلُوۡمٰتٌ ۚ فَمَنۡ فَرَضَ فِيۡهِنَّ الۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوۡقَ

और न गाली दे	बेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने	मालूम (मुक़र्रर)	महीने	हज

وقف النبي ﷺ

وَلَا جِدَالَ فِى الۡحَجِّ ؕ وَمَا تَفۡعَلُوۡا مِنۡ خَيۡرٍ يَّعۡلَمۡهُ اللّٰهُ ؔؕ وَتَزَوَّدُوۡا

और तुम ज़ादेराह ले लिया करो	अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से	तुम करोगे	और जो	हज में	और न झगड़ा

فَاِنَّ خَيۡرَ الزَّادِ التَّقۡوٰى وَاتَّقُوۡنِ يٰۤاُولِى الۡاَلۡبَابِ ﴿١٩٧﴾

197	ऐ अ़क़्ल वालो	और मुझ से डरो	तक़्वा	ज़ादे राह	बेहतर	पस बेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तक्लीफ़ हो तो वह बदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अम्न में हो तो जो फ़ाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न बेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस बेशक बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है, और ऐ अ़क़्ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नही अगर तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो (तिजारत करो), फिर जब तुम अ़रफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअ़रे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और बेशक उस से पहले तुम नावाकिफ़ों में से थे। **(198)**

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रह्म करने वाला है **(199)**

फिर जब तुम हज के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। **(200)**

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले। **(201)**

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। **(202)**

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुक़र्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। **(203)**

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

अपना रब	से	फ़ज़्ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं

فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ

नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब

الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम थे	और बेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअ़रे हराम

مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ

से - जहां	तुम लौटो	फिर	198	नावाकिफ़	ज़रूर-से	उस से पहले

اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	बेशक	अल्लाह	और मग़्फ़िरत चाहो	लोग	लौटें

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ

हज के मरासिम	तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रह्म करने वाला	बख़्शने वाला

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ

याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا

दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस-से-आदमी

وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए	और नहीं

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

भलाई	और आख़िरत में	भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और हमें बचा

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ النصف

में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह

اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ

और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुनया	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हे भली मालूम होती है	जो	लोग	और से

عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى

दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ालू	सख़्त	हालांकि वह	उस के दिल में	जो	पर

فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ

और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ

अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह

اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206	ठिकाना	और अलबत्ता बुरा	जहन्नम	तो काफ़ी है उस को	गुनाह पर	इज़्ज़त (ग़ुरूर)	उसे आमादा करे

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	अपनी जान	बेच डालता है	जो	लोग	और से

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो जाओ	जो लोग ईमान लाए	ऐ	207	बन्दों पर	मेहरबान	और अल्लाह

فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान	क़दम	पैरवी करो	और न	पूरे पूरे	इस्लाम	में

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	तुम डगमगा गए	फिर अगर	208	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

209	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह	कि	तो जान लो	वाज़ेह अहकाम	तुम्हारे पास आए	जो

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ

सायबानों में	अल्लाह	आए उन के पास	कि	सिवाए (यही)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या

مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ

मामला	और चुका दिया जाए	और फ़रिश्ते	बादल	से

ع ٢٥ ١٢ ٩ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल	पूछो	210	तमाम मामलात	लौटेंगे	अल्लाह	और तरफ़

كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ

अल्लाह	नेमत	बदल डाले	और जो	खुली	निशानियां	से	हम ने उन्हें दीं	किस क़द्र

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

211	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	तो बेशक	आई उस के पास	जो	उस के बाद

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़्ज़त (ग़ुरूर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफ़ी है, और अलबत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मामला चुका दिया जाए, और तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियां दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है बेशुमार। **(212)**

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्हों ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास वाज़ेह अहकाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। **(213)**

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तक्लीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है। **(214)**

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानने वाला है। **(215)**

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ

आरास्ता की गई	वह लोग जो कुफ़्र किया	ज़िन्दगी	दुन्या	और वह हँसते हैं	से	जो लोग

اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

وقف لازم

ईमान लाए	और जो लोग	परहेज़गार हुए	उन से बालातर	क़ियामत के दिन	और अल्लाह	रिज़्क़ देता है

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫

जिसे	वह चाहता है	बग़ैर	हिसाब	212	थे	लोग	उम्मत	एक

فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ

फिर भेजे	अल्लाह	नबी	खुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले	और नाज़िल की

مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا

उन के साथ	किताब	बरहक़	ताकि फ़ैसला करे	दरमियान	लोग	जिस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

उस में	और नहीं	इख़्तिलाफ़ किया	उस में	मगर	जिन्हें	दी गई	बाद

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो - जब	आए उन के पास	वाज़ेह अहकाम	ज़िद	उन के दरमियान (आपस की)	पस हिदायत दी	अल्लाह	जो लोग	ईमान लाए

لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ

लिए - जो	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	उस में	से (पर)	सच	अपने इज़्न से	और अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ

तरफ़	रास्ता	सीधा	213	क्या	तुम ख़याल करते हो	कि	तुम दाख़िल हो जाओगे	जन्नत

وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ

और जब कि नहीं	आई तुम पर	जैसे	जो	गुज़रे	से	तुम से पहले

مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ

पहुँची उन्हें	सख़्ती	और तक्लीफ़	और वह हिला दिए गए	यहां तक	कहने लगे	रसूल

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ

और वह जो	ईमान लाए	उन के साथ	कब	अल्लाह की मदद	आगाह रहो	बेशक	मदद	अल्लाह

قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

क़रीब	214	वह आप से पूछते हैं	क्या कुछ	ख़र्च करें	आप कह दें	जो	तुम ख़र्च करो	से

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

माल	सो माँ बाप के लिए	और क़राबतदार (जमा)	और यतीम (जमा)	और मोहताज (जमा)

وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

और मुसाफ़िर	और जो	तुम करोगे	कोई नेकी	तो बेशक	अल्लाह	उसे	जानने वाला	215

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا

एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की गई

وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर	और वह

٣٦ ع ١٠ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ

महीना हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह

قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	उस में	जंग

وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के नज़दीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मस्जिदे हराम	उस का	और न मानना

وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	क़त्ल	से	बहुत बड़ा	और फ़ित्ना

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ

फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि

مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	तो यही लोग	काफ़िर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

दोज़ख़	वाले	और यही लोग	और आख़िरत	दुनया	में	उन के अ़मल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا

उन्हों ने हिज्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्हों ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ

और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ

बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	ओर फ़ाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनो में	आप कह दें

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

ज़ाइद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह ख़र्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फ़ाइदा	से

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۙ ﴿٢١٩﴾

219	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

तुम पर जंग फ़र्ज़ की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। **(216)**

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिदे हराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफ़िर हो तो यही लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुनया में और आख़िरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(217)**

बेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। **(218)**

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें ज़ाइद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो **(219)**

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ

इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आख़िरत	दुन्या में

لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ

ख़राबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की

مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾

220	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	ज़रूर मुशक़्क़त में डालता तुम को	चाहता अल्लाह	और अगर	इस्लाह करने वाला	से (को)

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ

से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिक औरतें	निकाह करो	और न

مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ

वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिकों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिक औरत

وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	वह भला लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिक	से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता ग़ुलाम

يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ

और बख़्शिश	जन्नत की तरफ़	बुलाता है	और अल्लाह	दोज़ख़ की तरफ़	बुलाते हैं

بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ ع ٢٧ ع ٥ ١١

221	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने अहकाम	और वाज़ेह करता है	अपने हुक्म से

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ

औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप केह दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से

فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ

तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	क़रीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़	में

مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ

और दोस्त रखता है	तौबा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	हुक्म दिया तुम्हें	जहां से

الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾ نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى

जहां से	अपनी खेती	सो तुम आओ	तुम्हारी	खेती	औरतें तुम्हारी	222	पाक रहने वाले

شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ

मिलने वाले उस से	कि तुम	और तुम जान लो	अल्लाह	और डरो	अपने लिए	और आगे भेजो	तुम चाहो

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ

कि	अपनी क़स्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले	और ख़ुशख़बरी दें

تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾

224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	और परहेज़गारी करो	तुम हुस्ने सुलूक करो

दनिया में और आख़िरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह ख़राबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़्क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(220)**

और मुश्रिक औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुश्रिक औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुश्रिकों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान ग़ुलाम बेहतर है मुश्रिक से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। **(221)**

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के क़रीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। **(222)**

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और ख़ुशख़बरी दें ईमान वालों को। **(223)**

और अपनी क़स्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से बाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(224)**

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ

पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	क़स्में तुम्हारी	में	लग़ू (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

क़स्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया	पर-जो

مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	रुजूअ़ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औ़रतें अपनी	से

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक़	उन्हों ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْۗءٍ ۭ

मुद्दते हैज़	तीन	अपने तईं	इन्तिज़ार करें	और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें	227	जानने वाला

وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ

अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह	पैदा किया	जो	वह छुपाएं	कि	उन के लिए	और जाइज़ नहीं

كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ

वापसी उन की	ज़ियादा हक़दार	और ख़ाविन्द उन के	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती हैं

فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ

औ़रतों पर (फ़र्ज़)	जो	जैसे	और औ़रतों के लिए	बेहतरी (हुस्ने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में

بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक़

ع ٢٨ ٧ ١٢ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ

या	दस्तूर के मुताबिक़	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक़	228	हिक्मत वाला

تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ

उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	रुख़सत करना

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह कि हुदूद	क़ाइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि	सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को

فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हुदूद	कि वह क़ाइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْھَا ۚ

आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हुदूद	यह	उस का	औ़रत बदला दे	उस में जो

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हुदूद	आगे बढ़ता है	और जो

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औ़रतों के (पास न जाने की) क़स्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ़ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (226)

और अगर उन्हों ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें अपने तईं इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह छुपाएं जो अल्लाह ने उन के रहमों में पैदा किया अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के ख़ाविन्द उन की वापसी के ज़ियादा हक़दार हैं उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औ़रतों के लिए (हक़) है जैसे औ़रतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़ या रुख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औ़रत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद हैं, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम हैं। (229)

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अ़लावा किसी (दूसरे) ख़ाविन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुजूअ़ कर लें, बशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद क़ाइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है। **(230)**

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और तुम उन्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा बेशक उस ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अल्लाह के अहकाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। **(231)**

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाविन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। **(232)**

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ

वह निकाह कर ले	यहां तक कि	उस के बाद	उस के लिए	तो जाइज़ नहीं	तलाक़ दी उस को	फिर अगर

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

अगर	उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	तलाक़ देदे उस को	फिर अगर	उस के अ़लावा	ख़ाविन्द

يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

और यह	अल्लाह की हुदूद	वह क़ाइम रखेंगे	कि	वह ख़याल करें	बशर्त यह कि	वह रुजूअ़ कर लें

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

तुम तलाक़ दो	और जब	230	जानने वालों के लिए	उन्हें वाज़ेह करता है	अल्लाह की हुदूद

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

दस्तूर के मुताबिक़	तो रोको उन को	अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औ़रतें

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

नुक़्सान	और तुम न रोको उन्हें	दस्तूर के मुताबिक़	रुख़सत कर दो	या

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

अपनी जान	तो बेशक उस ने ज़ुल्म किया	यह	करेगा	और जो	ताकि तुम ज़ियादती करो

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की नेमत	और याद करो	मज़ाक़	अल्लाह के अहकाम	ठहराओ	और न

عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ

और हिक्मत	किताब	से	तुम पर	उस ने उतारा	और जो	तुम पर

يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चीज़	हर	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	उस से	वह नसीहत करता है तुम्हें

عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ ع ٢٩ ٣ ١٣ الثلثة

अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औ़रतें	तुम तलाक़ दो	और जब	231	जानने वाला

فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا

वह राज़ी हों	जब	ख़ाविन्द अपने	वह निकाह करें	कि	रोको उन्हें	तो न

بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ

हो	जो	उस से	नसीहत की जाती है	यह	दस्तूर के मुताबिक़	आपस में

مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى

ज़ियादा सुथरा	यही	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान रखता	तुम में से

لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

232	जानते	नहीं	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और ज़ियादा पाकीज़ा	तुम्हारे लिए

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ

चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ

اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

दस्तूर के मुताबिक़	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ

जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुक़्सान पहुँचाया जाए	उस की वुस्अत	मगर	कोई शख़्स	नहीं तक्लीफ़ दी जाती

بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ

आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस	और पर	उस के बच्चे के सबब

مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा	दोनों से

تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ

तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद	तुम दूध पिलाओ

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾

233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और डरो	दस्तूर के मुताबिक़

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम से	वफ़ात पा जाएं	और जो लोग

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएं	फिर जब	और दस (दिन)	महीने	चार

فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾

234	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक़	अपनी जानें (अपने हक़)	में	वह करें	में-जो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ

तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैग़ामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो	तुम पर	और नहीं गुनाह

فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में

سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ

निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक़	बात	तुम कहो	मगर यह कि	छुप कर

حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ

में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत	इद्दत	पहुँच जाए	यहां तक

ع ٣٠ ١٤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾

235	तहम्मुल वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से	अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएं जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक़, और किसी को तक्लीफ़ नहीं दी जाती मगर उस की वुस्अत (बरदाश्त) के मुताबिक़, माँ को नुक़्सान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (ग़ैर औरत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक़ (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। **(233)**

और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएं और छोड़ जाएं बीवियां, वह (बेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएं (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक़ में करें दस्तूर के मुताबिक़, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(234)**

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक़ बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहां तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल वाला है। **(235)**

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुक़र्रर न किया हो, और उन्हें ख़र्च दो, ख़ुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, ख़र्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुक़र्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुक़र्रर किया सिवाए उस के कि वह माफ़ कर दें या वह माफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़्दे निकाह है, और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के क़रीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (ख़ुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांबरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अम्न पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़क़ा की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तईं दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लक़ा औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़क़ा लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ

या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह

تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ

उस की हैसियत	ख़ुशहाल	पर	और उन्हें ख़र्च दो	मेहर	उन के लिए	मुक़र्रर किया

وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	ख़र्च	उस की हैसियत	तंगदस्त	और पर

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ

और तुम मुक़र्रर कर चुके हो	उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	और अगर

لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ

या	वह माफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुक़र्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर	उन के लिए

يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ

परहेज़गारी के	ज़ियादा क़रीब	तुम माफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	माफ़ कर दे

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफ़ाज़त करो

قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	तो याद करो	तुम अम्न पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो	फिर अगर	238	फ़रमांबरदार (जमा)

كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

वफ़ात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि

مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

नान नफ़क़ा	अपनी बीवियों के लिए	वसीयत	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से

اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ

में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	बग़ैर	एक साल	तक

مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तईं	में	जो वह करें

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	नान नफ़क़ा	और मुतल्लक़ा औरतों के लिए

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ٧ ١٥

242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

मौत	डर	हज़ारों	और वह	अपने घर (जमा)	से	निकले	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ

फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	उन्हे ज़िन्दा किया	फिर	तुम मर जाओ	अल्लाह	उन्हें	सो कहा

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	और तुम लड़ो	243	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ

क़र्ज़ दे अल्लाह	जो कि	वह	कौन	244	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ

और फ़राख़ी करता है	तंगी करता है	और अल्लाह	कई गुना ज़ियादा	उस के लिए	पस वह उसे बढ़ा दे	क़र्ज़ अच्छा

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْ بَعْدِ

बाद	से	बनी इस्राईल	से	सरदारों	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	245	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़

مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

وقف لازم

अल्लाह का रास्ता	में	हम लड़ें	एक बादशाह	हमारे लिए	मुक़र्रर कर दें	अपने नबी से	उन्हों ने कहा	जब	मूसा (अ)

قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا

कि तुम न लड़ो	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	अगर	हो सकता है कि तुम	क्या	उस ने कहा

قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ

से	हम निकाले गए	और अलबत्ता	अल्लाह की राह	में	हम लड़ेंगे	कि न	और हमें क्या हुआ	वह कहने लगे

دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا

चन्द	सिवाए	वह फिर गए	जंग	उन पर फ़र्ज़ की गई	फिर जब	और अपनी आल औलाद	अपने घर

مِّنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	उन का नबी	उन्हें	और कहा	246	ज़ालिमों को	जानने वाला	और अल्लाह	उन में से

قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ

बादशाहत	उस के लिए	हो सकती है	कैसे	वह बोले	बादशाह	तालूत	तुम्हारे लिए	मुक़र्रर कर दिया है

عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ

माल	से	वुस्अत	और नहीं दी गई	उस से	बादशाहत के	ज़ियादा हक़दार	और हम	हम पर

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ

इल्म	में	वुस्अत	और उसे ज़ियादा दी	तुम पर	उसे चुन लिया	अल्लाह	बेशक	उस ने कहा

وَالْجِسْمِ وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾

247	जानने वाला है	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिसे	अपना मुल्क	देता है	और अल्लाह	और जिस्म

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राख़ी (भी) देता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ़ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्हों ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा: हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे वुस्अत नहीं दी गई माल से, उस ने कहा बेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा वुस्अत दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (247)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

उस में	ताबूत	आएगा तुम्हारे पास	कि	उस की हुकूमत	निशानी	बेशक	उन का नबी	उन्हें	और कहा

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ

और आले हारून	आले मूसा	छोड़ा	उस से जो	और बची हुई	तुम्हारा रब	से	सामाने तसकीन

تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ ع ٣٢ ١٦

248	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	निशानी	उस में	बेशक	फ़रिश्ते	उठाएंगे उसे

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ

एक नहर से	तुम्हारी आज़माइश करने वाला	बेशक अल्लाह	उस ने कहा	लश्कर के साथ	तालूत	बाहर निकला	फिर जब

فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا

सिवाए	मुझ से	तो बेशक वह	उसे न चखा	और जिस	मुझ से	तो नहीं	उस से	पी लिया	पस जिस

مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

उस के पार हुए	पस जब	उन से	चन्द एक	सिवाए	उस से	फिर उन्हों ने पी लिया	अपने हाथ से	एक चुल्लू	चुल्लू भर ले	जो

هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ

और उस का लश्कर	जालूत के साथ	आज	हमारे लिए	नहीं ताक़त	उन्हों ने कहा	उस के साथ	ईमान लाए	और वह जो	वह

قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ

छोटी	जमाअ़तें	से	बारहा	अल्लाह	मिलने वाले	कि वह	यक़ीन रखते थे	जो लोग	कहा

غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

और जब	249	सब्र करने वाले	साथ	और अल्लाह	अल्लाह के हुक्म से	बड़ी	जमाअ़तें	ग़ालिब हुईं

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

और जमादे	सब्र	हम पर	डाल दे	ऐ हमारे रब	उन्हों ने कहा	और उस का लश्कर	जालूत के	आमने सामने हुए

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۣ

अल्लाह के हुक्म से	फिर उन्हों ने शिकस्त दी उन्हें	250	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद कर	हमारे क़दम

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

और उसे सिखाया	और हिक्मत	मुल्क	अल्लाह	और उसे दिया	जालूत	दाऊद (अ)	और क़त्ल किया

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ के ज़रीए	बाज़ लोग	लोग	अल्लाह	हटाता	और अगर न	चाहा	जो

لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ

यह	251	तमाम जहान	पर	फ़ज़्ल वाला	अल्लाह	और लेकिन	ज़मीन	ज़रूर ख़राब हो जाती

اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

252	रसूल (जमा)	ज़रूर-से	और बेशक आप (स)	ठीक ठीक	आप पर	हम सुनाते हैं उन को	अल्लाह के अहकाम

और उन्हें उन के नबी ने कहा बेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फ़रिश्ते उठा लाएंगे, बेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। **(248)**

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा बेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह बेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्हों ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्हों ने कहा आज हमें ताक़त नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यक़ीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्हों ने कहा, बारहा छोटी जमाअ़तें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअ़तों पर, और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। **(249)**

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब्र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर क़ौम पर। **(250)**

फिर उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़त्ल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अ़ता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम जहानों पर फ़ज़्ल वाला है। **(251)**

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और बेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से हैं। **(252)**

الجزء ٣ وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِّنْهُمْ

उन में	बाज़	पर	उन के बाज़	हम ने फ़ज़ीलत दी	यह रसूल (जमा)

مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	दरजे	उन के बाज़	और बुलन्द किए	जिस से अल्लाह ने कलाम किया

الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ

वह जो	बाहम लड़ते	न	चाहता अल्लाह	और अगर	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ) से	और उस की ताईद की हम ने	खुली निशानियां

مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	और लेकिन	खुली निशानियां	जो (जब) आ गई उन के पास	बाद से	उन के बाद

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ قف

वह बाहम न लड़ते	चाहता अल्लाह	और अगर	कुफ़्र किया	कोई-बाज़	और उन से	ईमान लाया	जो-कोई	फिर उन से

ع ٥ ٣٣ ١

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝٢٥٣ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	253	जो वह चाहता है	करता है	और लेकिन अल्लाह

مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ

और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन	आजाए	कि	से पहले	हम ने दिया तुम्हें	से जो

وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٥٤ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

सिवाए उस के	नहीं माबूद	अल्लाह	254	ज़ालिम (जमा)	वही	और काफ़िर (जमा)	और न सिफ़ारिश

اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	उसी का है	नीन्द	और न	ऊंघ	न उसे आती है	थामने वाला	ज़िन्दा

فِى الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا

जो	वह जानता है	उस की इजाज़त से	मगर (बग़ैर)	उस के पास	सिफ़ारिश करे	वह जो	कौन जो	ज़मीन में

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا

मगर	उस का इल्म	से	किसी चीज़ का	वह अहाता करते हैं	और नहीं	उन के पीछे	और जो	उन के सामने

بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

उन की हिफ़ाज़त	थकाती उस को	और नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस की कुर्सी	समा लिया	जितना वह चाहे

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٢٥٥ لَاۤ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

हिदायत	बेशक जुदा हो गई	दीन	में	नहीं ज़बरदस्ती	255	अज़मत वाला	बुलन्द मरतबा	और वह

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

उस ने थाम लिया	पस तहक़ीक़	अल्लाह पर	और ईमान लाए	गुमराह करने वाले को	न माने	पस जो	गुमराही	से

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٥٦

256	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उस को	टूटना नहीं	मज़बूती	हलक़े को

यह रसूल हैं! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और हम ने रूहुल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगईं, लेकिन उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया और उन में से किसी ने कुफ़्र किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से ख़र्च करो इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही ज़ालिम हैं। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊंघ आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, बेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहक़ीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से रौशनी की तरफ़, और जो लोग काफ़िर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरों की तरफ़, यही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(257)**

क्या आप ने उस शख़्स की तरफ़ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक अल्लाह सूरज को मश्रिक़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मग़्रिब से, तो वह काफ़िर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नही देता। **(258)**

या उस शख़्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने फ़रमाया बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त चढ़ाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। **(259)**

اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ

रौशनी	तरफ़	अन्धेरों	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफ़िर हुए

ع ٣٤ ٢

اِلَى الظُّلُمٰتِؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ۠ ﴿۲۵۷﴾

257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ

अल्लाह ने उसे दी	कि	उस का रब	बारे (में)	इब्राहीम (अ)	झगड़ा किया	वह शख़्स जो	तरफ़	क्या नहीं देखा आप (स) ने

وقف لازم

الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُۙ قَالَ اَنَا

मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहीम	कहा	जब	बादशाहत

اُحْیٖ وَاُمِیْتُؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ

सूरज को	लाता है	बेशक अल्लाह	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ

مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَؕ

जिस ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो वह हैरान रह गया	मग़्रिब	से	पस तू उसे ले आ	मश्रिक़	से

وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَۚ ﴿۲۵۸﴾ اَوْ كَالَّذِیْ مَرَّ عَلٰى قَرْیَةٍ

एक बस्ती	पर (से)	गुज़रा	उस शख़्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह

وَّهِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَاۚ قَالَ اَنّٰى یُحْیٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी	और वह

مَوْتِهَاۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَؕ

कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	तो अल्लाह ने उस को मुर्दा रखा	इस का मरना

قَالَ لَبِثْتُ یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ

तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा

مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ یَتَسَنَّهْۚ وَانْظُرْ

और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल

اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ

हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़

كَیْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًاؕ فَلَمَّا تَبَیَّنَ

वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोश्त	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह

لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۵۹﴾

259	क़ुदरत वाला	हर चीज़	पर	कि अल्लाह	मैं जान गया	उस ने कहा	उस पर

وَاِذۡ قَالَ اِبۡرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىۡ كَيۡفَ تُحۡىِ الۡمَوۡتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمۡ

क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब

تُؤۡمِنۡ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰـكِنۡ لِّيَطۡمَٮِٕنَّ قَلۡبِىۡ ؕ قَالَ فَخُذۡ اَرۡبَعَةً

चार (4)	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	और लेकिन	क्यों नहीं	उस ने कहा	यक़ीन किया

مِّنَ الطَّيۡرِ فَصُرۡهُنَّ اِلَيۡكَ ثُمَّ اجۡعَلۡ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنۡهُنَّ

उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से

جُزۡءًا ثُمَّ ادۡعُهُنَّ يَاۡتِيۡنَكَ سَعۡيًا ؕ وَاعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ

ग़ालिब	कि अल्लाह	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े

ع ۳۵ ۳

حَكِيۡمٌ ﴿۲۶۰﴾ مَثَلُ الَّذِيۡنَ يُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَهُمۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला

كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنۡۢبَتَتۡ سَبۡعَ سَنَابِلَ فِىۡ كُلِّ سُنۡۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ

दाने	सौ (100)	हर बाल	में	बालें	सात	उगें	एक दाना	मानिंद

وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۶۱﴾ اَلَّذِيۡنَ

जो लोग	261	जानने वाला	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह

يُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَهُمۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتۡبِعُوۡنَ مَاۤ اَنۡفَقُوۡا

जो उन्हों ने ख़र्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	ख़र्च करते हैं

مَنًّا وَّلَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمۡ اَجۡرُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ

उन पर	कोई ख़ौफ़	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तक्लीफ़	और न	कोई एहसान

وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۲۶۲﴾ قَوۡلٌ مَّعۡرُوۡفٌ وَّمَغۡفِرَةٌ خَيۡرٌ مِّنۡ صَدَقَةٍ

ख़ैरात	से	बेहतर	और दरगुज़र	अच्छी	बात	262	ग़मगीन होंगे	वह	और न

يَّتۡبَعُهَاۤ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَلِيۡمٌ ﴿۲۶۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दबार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो

لَا تُبۡطِلُوۡا صَدَقٰتِكُمۡ بِالۡمَنِّ وَالۡاَذٰى ۙ كَالَّذِىۡ يُنۡفِقُ مَالَهٗ

अपना माल	ख़र्च करता	उस शख़्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने ख़ैरात	न ज़ाया करो

رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा

صَفۡوَانٍ عَلَيۡهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلۡدًا ؕ لَا يَقۡدِرُوۡنَ

वह कुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिट्टी	उस पर	चिकना पत्थर

عَلٰى شَىۡءٍ مِّمَّا كَسَبُوۡا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲۶۴﴾

264	काफ़िरों की क़ौम	राह नहीं दिखाता	और अल्लाह	उन्हों ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा क्या तू ईमान नहीं रखता? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(260)**

उन लोगों की मिसाल जो ख़र्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। **(261)**

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर नहीं रखते ख़र्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तक्लीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। **(262)**

अच्छी बात करना और दरगुज़र करना बेहतर है उस ख़ैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दबार है। **(263)**

ऐ ईमान वालो! अपने ख़ैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो उस शख़्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को ख़र्च करता है और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ कुदरत नहीं रखते जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़िरों को। **(264)**

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

अल्लाह की ख़ुशनूदी	हासिल करना	अपने माल	ख़र्च करते हैं	जो लोग	और मिसाल

وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ

तेज़ बारिश	उस पर पड़ी	बुलन्दी पर	एक बाग़	जैसे	अपने दिल (जमा)	से	और सबात ओ यक़ीन

فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	तो फुवार	तेज़ बारिश	न पड़ी	फिर अगर	दुगना	फल	तो उस ने दिया

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ

से (का)	एक बाग़	उस का	हो	कि	तुम में से कोई	क्या पसन्द करता है	265	देखने वाला	तुम करते हो	जो

نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ

से	उस में	उस के लिए	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हों	और अंगूर	खजूर

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ ۚ فَاَصَابَهَآ

तब उस पर पड़ा	बहुत कमज़ोर	बच्चे	और उस के	बुढ़ापा	और उस पर आ गया	हर क़िस्म के फल

اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ

निशानियां	तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	तो वह जल गया	आग	उस में	एक बगोला

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ ع ٣٦

से	तुम ख़र्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	266	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम

طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۠

ज़मीन	से	तुम्हारे लिए	हम ने निकाला	और से-जो	तुम कमाओ	जो	पाकीज़ा

وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ

उस को लेने वाले	जब कि तुम नहीं हो	तुम ख़र्च करते हो	से-जो	गन्दी चीज़	इरादा करो	और न

اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

267	ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	कि अल्लाह	और तुम जान लो	उस में	चश्म पोशी करो	यह कि	मगर

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	बेहयाई का	और तुम्हें हुक्म देता है	तंगदस्ती	तुम को डराता है	शैतान

يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

268	जानने वाला	वुसअ़त वाला	और अल्लाह	और फ़ज़्ल	उस से (अपनी)	बख़्शिश	तुम से वादा करता है

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ

हिक्मत	दी गई	और जिसे	वह चाहता है	जिसे	हिक्मत, दानाई	वह अ़ता करता है

فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

269	अ़क्ल वाले	सिवाए	नसीहत क़ुबूल करता	और नहीं	बहुत	भलाई	तहक़ीक़ दी गई

और (उन की) मिसाल जो अपने माल ख़र्च करते हैं ख़ुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सबात ओ क़रार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फुवार (ही काफ़ी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर क़िस्म के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो और उस के बच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ ख़र्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम ख़ुद उस को लेने वाले नहीं मगर यह कि तुम चश्म पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा करता है, और अल्लाह वुसअ़त वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अ़ता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहक़ीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अ़क्ल वालों के सिवा कोई नसीहत क़ुबूल नहीं करता। (269)

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ

और जो	तुम ख़र्च करोगे	से	कोई ख़ैरात	या	तुम नज़र मानो	कोई नज़र

فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

तो बेशक अल्लाह	उसे जानता है	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	270

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا

अगर	ज़ाहिर (अ़लानिया) दो	ख़ैरात	तो अच्छी बात	यह	और अगर	उस को छुपाओ

وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ

और वह पहुँचाओ	तंगदस्त (जमा)	तो वह	बेहतर	तुम्हारे लिए	और दूर कर देगा	तुम से

مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

से, कुछ	तुम्हारी बुराइयाँ	और अल्लाह	जो कुछ तुम करते हो	बाख़बर	271	नहीं

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا

आप पर (आप का ज़िम्मा)	उन की हिदायत	और लेकिन अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है	और जो

تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ

तुम ख़र्च करोगे	माल से	तो अपने वासते	और न	ख़र्च करो	मगर	हासिल करना

وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ

अल्लाह की रज़ा	और जो	तुम ख़र्च करोगे	माल से	पूरा मिलेगा	तुम्हें

وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا

और तुम	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	272	तंगदस्तों के लिए	जो	रुके हुए

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ز

में	अल्लाह का रास्ता	नहीं कर सकते	चलना फिरना	ज़मीन (मुल्क) में

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ

उन्हें समझे	नावाक़िफ़	मालदार	सवाल न करने से	तू पहचानता है उन्हें	उन के चहरे से

لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

वह सवाल नहीं करते	लोग	लिपट कर	और जो	तुम ख़र्च करोगे	माल से

ع ٣٧ الربع ٥

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ

तो बेशक अल्लाह	उस को	जानने वाला	273	जो लोग	ख़र्च करते हैं	अपने माल

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

रात में	और दिन	पोशीदा	और ज़ाहिर	पस उन के लिए है	उन का अजर

وقف منزل

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾

पास	उन का रब	और न	कोई ख़ौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे	274

और जो तुम ख़र्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। **(270)**

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अ़लानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(271)**

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और ख़र्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। **(272)**

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तुम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। **(273)**

जो लोग अपने माल ख़र्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। **(274)**

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख़्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्हों ने कहा तिजारत दर हक़ीक़त सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ़ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ़) लौटे तो वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(275)**

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुक्रे गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। **(276)**

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। **(277)**

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाक़ी रह गया वह छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। **(278)**

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए ख़बरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा अस्ल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम ज़ुल्म करो न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। **(279)**

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़्श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। **(280)**

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर ज़ुल्म न होगा। **(281)**

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِیْ

वह शख़्स जो	खड़ा होता है	जैसे	मगर	न खड़े होंगे	सूद	खाते हैं	जो लोग

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ

तिजारत	दर हक़ीक़त	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	छूने से	शैतान	उस को पागल बना दिया

مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ وقف لازم

पहुँचे उस को	पस जिस	सूद	और हराम किया	तिजारत	हालांकि अल्लाह ने हलाल किया	सूद	मानिंद

مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की तरफ़	और उस का मामला	जो हो चुका	तो उस के लिए	फिर वह बाज़ आ गया	उस का रब	से	नसीहत

وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾

275	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	तो वही	फिर करे	और जो

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

पसन्द नहीं करता	और अल्लाह	ख़ैरात	और बढ़ाता है	सूद	मिटाता है अल्लाह

كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	276	गुनाहगार	हर एक नाशुक्रा

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	ज़कात	और अदा की	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

तुम डरो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	277	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾

278	ईमान वाले	तुम हो	अगर	सूद	से	जो बाक़ी रह गया	और छोड़ दो	अल्लाह

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ

तुम ने तौबा कर ली	और अगर	और उस का रसूल	अल्लाह	से	जंग के लिए	तो ख़बरदार हो जाओ	तुम न छोड़ोगे	फिर अगर

فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾

279	और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा	न तुम ज़ुल्म करो	तुम्हारी अस्ल पूंजी	तो तुम्हारे लिए

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا

तुम बख़्शदो	और अगर	कुशादगी	तक	मुहलत	तंगदस्त	हो	और अगर

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ

उस में	तुम लौटाए जाओगे	वह दिन	और तुम डरो	280	जानते	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर

اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع ٣٨ ٨ ٦

281	ज़ुल्म न किये जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा दिया जाएगा	फिर	अल्लाह की तरफ़

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	उधार का	तुम मामला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ

कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ़ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो

اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ

उस पर हक़	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह ने उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ

वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रब	और अल्लाह से डरे

عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमज़ोर	या	बेअ़क्ल	उस पर हक़

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ

अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ़ से	उस का सरपरस्त

فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

तुम पसन्द करो	से-जो	और दो औरतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर

مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ

दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ

तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें

صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ

और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ़	यह	एक मीआद	तक	बड़ा	या	छोटा

لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً

हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा क़रीब	गवाही के लिए

تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ

कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो

وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ

गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़्सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो

وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

और अल्लाह से तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो बेशक यह	तुम करोगे	और अगर

وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ٢٨٢

282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	और अल्लाह सिखाता है तुम्हें

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत तक (के लिए) उधार का मामला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक़ (क़र्ज़) है वह बेअ़क्ल या कमज़ोर है या न लिखा सकता हो बोल कर तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं, और तुम लिखने में सुस्ती न करो (ख़ाह मामला) छोटा हो या बड़ा, वापस लौटाने का वक़्त, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा क़रीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़्सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह बेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (282)

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए क़ब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख़्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख़्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। **(283)**

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। **(284)**

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और उन्हों ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअ़त की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। **(285)**

अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक़), उस के लिए (अजर) है जो उस ने कमाया और उस पर (अ़ज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आक़ा है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की क़ौम पर। **(286)**

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

क़ब्ज़े में	तो गिरवी रखना	कोई लिखने वाला	तुम पाओ	और न	सफ़र	पर	तुम हो	और अगर

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अल्लाह से डरे	उस की अमानत	अमीन बनाया गया	जो शख़्स	तो चाहिए कि लौटा दे	किसी का	तुम्हारा कोई	एतिबार करे	फिर अगर

رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

उस का दिल	गुनाहगार	तो बेशक	उसे छुपाएगा	और जो	गवाही	और तुम न छुपाओ	अपना रब

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ ع ٣٩ ٧

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	अल्लाह के लिए	283	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	और अल्लाह

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उस का	तुम्हारा हिसाब लेगा	तुम उसे छुपाओ	या	तुम्हारे दिल	में	जो	तुम ज़ाहिर करो	और अगर

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

पर	और अल्लाह	वह चाहे	जिस को	वह अ़ज़ाब देगा	वह चाहे	जिस को	फिर बख़्श देगा

كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

उस का रब	से	उस की तरफ़	उतरा	जो कुछ	रसूल	मान लिया	284	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟

और उस के रसूल	और उस की किताबें	और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह पर	ईमान लाए	सब	और मोमिन (जमा)

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

और हम ने इताअ़त की	हम ने सुना	और उन्हों ने कहा	उस के रसूल के	किसी एक	दरमियान	नहीं हम फ़र्क़ करते

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

मगर	किसी पर	नहीं जिम्मेदारी का बोझ डालता अल्लाह	285	लौट कर जाना	और तेरी तरफ़	हमारे रब	तेरी बख़्शिश

وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	जो उस ने कमाया	और उस पर	उस ने कमाया	जो	उस के लिए	उस की गुनजाइश

لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ

हम पर	डाल	और न	ऐ हमारे रब	हम चूकें	या	हम भूल जाएं	अगर	तो न पकड़ हमें

اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا

हम से उठवा	और न	ऐ हमारे रब	हम से पहले	जो लोग	पर	तू ने डाला	जैसे	बोझ

مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ

और बख़्श दे हमें	और दरगुज़र कर तू हम से	उस की	हम को	न ताक़त	जो

وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع ٤٠ ٨

286	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	पस मदद कर हमारी	हमारा आक़ा	तू	और हम पर रहम कर

آيَاتُهَا ٢٠٠ ❀ سُوۡرَةُ اٰلِ عِمۡرَانَ (٣) ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٢٠

रुकुआ़त 20	(3) सूरह आले इमरान (इमरान का घराना)	आयात 200

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓـمّٓ ۚ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الۡحَىُّ الۡقَيُّوۡمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ

किताब	आप (स) पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	नहीं माबूद	अल्लाह	1	अलिफ़-लाम-मीम

بِالۡحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَاَنۡزَلَ التَّوۡرٰىةَ وَالۡاِنۡجِيۡلَ ﴿٣﴾

3	और इन्जील	तौरेत	और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तस्दीक़ करती	हक़ के साथ

مِنۡ قَبۡلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنۡزَلَ الۡفُرۡقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

इन्कार किया	जिन्हों ने	बेशक	फ़ुरक़ान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ ذُو انۡتِقَامٍ ﴿٤﴾

4	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख़्त	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह की आयतों से

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخۡفٰى عَلَيۡهِ شَىۡءٌ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿٥﴾

5	आस्मान में	और न	ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	बेशक अल्लाह

هُوَ الَّذِىۡ يُصَوِّرُكُمۡ فِى الۡاَرۡحَامِ كَيۡفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे	रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है

اِلَّا هُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٦﴾ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ مِنۡهُ

उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा

اٰيٰتٌ مُّحۡكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الۡكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ

जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की अस्ल	वह	मुहक्कम (पुख़्ता)	आयतें

فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ زَيۡغٌ فَيَتَّبِعُوۡنَ مَا تَشَابَهَ مِنۡهُ ابۡتِغَآءَ

चाहना (ग़र्ज़)	उस से	मुताशाबिहात	सो वह पैरवी करते हैं	कजी	उन के दिल	में

الۡفِتۡنَةِ وَابۡتِغَآءَ تَاۡوِيۡلِهٖ ۚ وَمَا يَعۡلَمُ تَاۡوِيۡلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ

सिवाए अल्लाह	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब	ढूंडना	फ़साद-गुमराही

وقف النبی ﷺ
وقف لازم
وقف منزل

وَالرّٰسِخُوۡنَ فِى الۡعِلۡمِ يَقُوۡلُوۡنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنۡ عِنۡدِ رَبِّنَا ۚ

हमारा रब	से-पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الۡاَلۡبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ

बाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अ़क़्ल वाले	मगर	समझते	और नहीं

اِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡوَهَّابُ ﴿٨﴾

8	सब से बड़ा देने वाला	तू	बेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फ़रमा	तू ने हमें हिदायत दी	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक़ के साथ जो उस से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है, और उस ने तौरेत और इन्जील उतारी (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, बेशक जिन्हों ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला। (4)

बेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़ ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख़्ता) आयतें हैं वह किताब की अस्ल हैं, और दूसरी मुताशाबेह (कई मअ़ने देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबिहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की ग़र्ज़ से और उस का (ग़लत) मतलब ढून्डने की ग़र्ज़ से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख़्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अ़क़्ल वाले (सिर्फ़ अ़क़्ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें इनायत फ़रमा अपने पास से रहमत, बेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ

ऐ हमारे रब	बेशक तू	जमा करने वाला	लोगों	उस दिन	नहीं शक	उस में	बेशक अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता

الْمِيْعَادَ ﴿۹﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ ع ۹

वादा	9	बेशक	वह लोग जो	उन्हों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ न	काम आएंगे	उन के	उन के माल

وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿۱۰﴾ لا

और न	उन की औलाद	अल्लाह से	कुछ	और वही	वह	ईंधन	आग (दोज़ख़)	10

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ

जैसे- मामला	फ़िरऔन वाले	और वह जो कि	उन से पहले	उन्हों ने झुटलाया	हमारी आयतें	सो उन्हें पकड़ा

اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह	उन के गुनाहों पर	और अल्लाह	सख़्त	अज़ाब	11	कह दें	वह जो कि	उन्हों ने कुफ़्र किया

سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾ قَدْ كَانَ

अनक़रीब तुम मग़लूब होगे	और तुम हांके जाओगे	तरफ़	जहन्नम	और बुरा	ठिकाना	12	अलबत्ता	है

لَكُمْ اٰيَةٌ فِىْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى

तुम्हारे लिए	एक निशानी	में	दो गिरोह	वह बाहम मुक़ाबिल हुए	एक गिरोह	लड़ता था	में	अल्लाह की राह	और दूसरा

كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ

काफ़िर	वह उन्हें दिखाई देते	उन के दो चन्द	खुली आँखें	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद

مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾

जिसे	वह चाहता है	बेशक	में	उस	एक इब्रत	देखने वालों के लिए	13

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ

खुशनुमा कर दी गई	लोगों के लिए	मुहब्बत	मरग़ूब चीज़ें	से (मसलन)	औरतें	और बेटे	और ढेर

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ

जमा किए हुए	से	सोना	और चाँदी	और घोड़े	निशान ज़दा	और मवेशी

وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

और खेती	यह	साज़ ओ सामान	ज़िन्दगी	दुनिया	और अल्लाह	उस के पास

حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

अच्छा	ठिकाना	14	कह दें	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	बेहतर	से	उस	उन लोगों के लिए जो	परहेज़गार हैं

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ

पास	उन का रब	बाग़ात	जारी हैं	से	उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और बीवियां

مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۱۵﴾ ج

पाक	और ख़ुशनूदी	से	अल्लाह	और अल्लाह	देखने वाला	बन्दों को	15

ऐ हमारे रब! बेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं जिस में, बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे और न उन की औलाद अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का इंधन हैं। (10)

जैसे फ़िरऔन वालों का मामला हुआ और वह जो उन से पहले थे, उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें कह दें तुम अनक़रीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो बाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, बेशक उस में देखने वालों (अक़्लमन्दों) के लिए एक इब्रत है। (13)

लोगों के लिए मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ख़ुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें जारी (रवां) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीवियां और अल्लाह की ख़ुशनूदी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا

और हमें बचा	हमारे गुनाह	सो बख़्शदे हमें	ईमान लाए	बेशक हम	ऐ हमारे रब	कहते हैं	जो लोग

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और ख़र्च करने वाले	और हुक्म बजा लाने वाले	और सच्चे	सब्र करने वाले	16	दोज़ख़	अ़ज़ाब

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ

नहीं माबूद	कि वह	अल्लाह ने गवाही दी	17	रात के आख़िर हिस्से में	और बख़्शिश मांगने वाले

اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ

इन्साफ़ के साथ	क़ाईम (हाकिम)	और इल्म वाले	और फ़रिश्ते	सिवाए-उस

النصف

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ

दीन	बेशक	18	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	सिवाए उस	नहीं माबूद

عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

मगर	किताब दी गई	वह जिन्हें	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	इस्लाम	अल्लाह के नज़दीक

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ

इन्कार करे	और जो	आपस में	ज़िद	इल्म	जब आ गया उन के पास	बाद से

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ

तो कह दें	वह आप (स) से झगड़ें	फिर अगर	19	हिसाब	तेज़	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह की आयात का

اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

वह जो कि	और कह दें	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	मैं ने झुका दिया

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا

तो उन्हों ने राह पा ली	वह इस्लाम लाए	पस अगर	क्या तुम इस्लाम लाए	और अनपढ़	किताब दिए गए (अहले किताब)

ع ٢/١١ ١٠

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

20	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	पहुँचा देना	आप पर	तो सिर्फ़	वह मुँह फेरें	अगर और

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

नबियों को	और क़त्ल करते हैं	अल्लाह की आयात का	इन्कार करते हैं	वह जो	बेशक

بِغَيْرِ حَقٍّ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ

लोगों से	इन्साफ़ का	हुक्म करते हैं	जो लोग	और क़त्ल करते हैं	नाहक़

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	वह जो कि	यही	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दें

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	मददगार	कोई	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	उन के अ़मल

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले और सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, ख़र्च करने वाले और बख़्शिश मांगने वाले रात के आख़िर हिस्से में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (18)

बेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अनपढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्हों ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। (20)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नबियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुनिया में और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक नहीं, और हर शख़्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (29)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى

तरफ़	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या नहीं देखा

كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

23	मुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	ता कि वह फ़ैसला करे	अल्लाह की किताब

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ

गिनती के	चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह

وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ

उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	में	और उन्हें धोके में डाल दिया

لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख़्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में	शक नहीं

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ

मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह	आप कहें

مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ

तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	तू चाहे	जिस से

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है तू	दिन में	रात	तू दाख़िल करता है	26	क़ादिर	चीज़	हर	पर	बेशक तू

فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ

जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ

मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बे हिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़्क़ देता है

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अ़लावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)

فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۭ

बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअ़ल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ اِنْ

अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	और अल्लाह की तरफ़	अपनी ज़ात	और अल्लाह डराता है तुम्हें

تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا

जो	और वह जानता है	अल्लाह उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो	छुपाओ

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

29	क़ादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में

معانقة ٢ عند المتاخرين ١٢

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ

से-कोई	उस ने की	और जो	मौजूद	नेकी	से (कोई)	उस ने की	जो	शख़्स	हर	पाएगा	दिन

سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ

और अल्लाह तुम्हें डराता है	दूर	फ़ासला	और उस के दरमियान	उस के दरमियान	काश कि	आरज़ू करेगा	बुराई

ع ١١ / ٣٠

نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ

तो मेरी पैरवी करो	अल्लाह	मुहब्बत रखते	अगर तुम हो	आप कह दें	30	बन्दों पर	शफ़क़त करने वाला	और अल्लाह	अपनी ज़ात

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

31	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	गुनाह तुम्हारे	और तुम्हें बख़्शदेगा	तुम से मुहब्बत करेगा अल्लाह

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	काफ़िर (जमा)	नहीं दोस्त रखता	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर	और रसूल	अल्लाह	तुम इताअ़त करो	आप कह दें

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ

और इमरान का घराना	और इब्राहीम (अ) का घराना	और नूह (अ)	आदम (अ)	चुन लिया	बेशक अल्लाह

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً ۢ بَعْضُهَا مِنْ ۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

34	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	दूसरे	से	वह एक	औलाद	33	सारे जहान	पर

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ

मेरे पेट में	जो	तेरे लिए	मैं ने नज़र किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	इमरान की बीवी	कहा	जब

مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا

उस ने उस को जन्म दिया	सो जब	35	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू	मुझ से	सो तू कुबूल कर ले	आज़ाद किया हुआ

قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

उस ने जना	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	लड़की	जन्म दी	मैं ने	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُهَا

पनाह में देती हूँ उस को	और मैं	मरयम	उस का नाम रखा	और मैं	मानिंद लड़की	लड़का	और नहीं

بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ

कुबूल	उस का रब	तो कुबूल किया उस को	36	मरदूद	शैतान	से	और उस की औलाद	तेरी

حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا

उस के पास	दाख़िल होता	जिस वक़्त भी	ज़करिया (अ)	और सुपुर्द किया उस को	अच्छा	बढ़ाना	और परवान चढ़ाया उस को	अच्छा

زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ

यह	तेरे लिए	कहां	ऐ मरयम	उस ने कहा	खाना	उस के पास	पाया	मेहराब (हुजरा)	ज़करिया (अ)

قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

37	बे हिसाब	चाहे	जिसे	रिज़्क़ देता है	बेशक अल्लाह	पास अल्लाह	से	यह	उस ने कहा

जिस दिन हर शख़्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरज़ू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से कुबूल कर ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह कुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़करिया (अ) उस के पास हुजरे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते, उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (37)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

औलाद	अपने पास	से	अ़ता कर मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	अपना रब	ज़करिया	दुआ़ की	वहीं

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ

खड़े हुए	और वह	फ़रिश्ते	तो आवाज़ दी उस को	38	दुआ़	सुनने वाला	बेशक तू	पाक

يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًاۢ بِكَلِمَةٍ

कलिमा	तसदीक़ करने वाला	यहया (अ)	तुम्हें ख़ुशख़बरी देता है	कि अल्लाह	मेहराब (हुजरा)	में	नमाज़ पढ़ते

مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	39	नेकोकार (जमा)	से	और नबी	और नफ़्स को क़ाबू में रखने वाला	और सरदार	अल्लाह	से

اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ

बांझ	और मेरी औरत	बुढ़ापा	जब कि मुझे पहुँच गया	लड़का	मेरे लिए	होगा	कहां

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ

कोई निशानी	मेरे लिए	मुक़र्रर फ़रमा दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	40	जो वह चाहता है	करता है	अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा

قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

अपना रब	और तू याद कर	इशारा	मगर	तीन दिन	लोग	कि न बात करेगा	तेरी निशानी	उस ने कहा

كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ ع ١١/١٢

फ़रिश्ते	कहा	और जब	41	और सुबह	शाम	और तस्बीह कर	बहुत

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰي

पर	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	और पाक किया तुझ को	चुन लिया तुझ को	बेशक अल्लाह	ऐ मरयम

نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ

और रुकूअ़ कर	और सिज्दा कर	अपने रब की	तू फ़रमांबरदारी कर	ऐ मरयम	42	तमाम जहान	औ़रतें

مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۭ

तेरी तरफ़	हम यह वहि करते हैं	ग़ैब	ख़बरें	से	यह	43	रुकूअ़ करने वाले	साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۠

मरयम	पर्वरिश करे	कौन-उन	अपने क़लम	वह डालते थे	जब	उन के पास	और तू न था

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ

ऐ मरयम	फ़रिश्ते	जब कहा	44	जब वह झगड़ते थे	उन के पास	और तू न था

اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ڰ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	ईसा	मसीह (अ)	उस का नाम	अपने	एक कलिमा की	तुझे बशारत देता है	बेशक अल्लाह

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ ۙ

45	मुक़र्रिब (जमा)	और से	और आख़िरत	दुनिया	में	बा आबरू

वहीं ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ़ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अ़ता कर, तू बेशक दुआ़ सुनने वाला है। **(38)**

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की ख़ुशख़बरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाला, सरदार, और नफ़्स को क़ाबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। **(39)**

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औ़रत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। **(40)**

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़रमा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुबह ओ शाम तस्बीह कर। **(41)**

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया और तुझ को पाक किया और तुझ को बरगुज़ीदा किया औ़रतों पर तमाम जहान की। **(42)**

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़रमांबरदारी कर और सिज्दा कर और रुकूअ़ कर रुकूअ़ करने वालों के साथ। **(43)**

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वहि करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (क़ुरआ के लिए) अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। **(44)**

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की बशारत देता है, उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुनिया और आख़िरत में बाआबरू, और मुक़र्रिबों से होगा, **(45)**

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ

वह बोली	46	नेकोकार	और से	और पुख़्ता उम्र	पालने में	लोग	और बातें करेगा

رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ

अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा	कोई मर्द	हाथ लगाया मुझे	और नहीं	बेटा	होगा मेरे हां	कैसे	ऐ मेरे रब

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

47	सो वह हो जाता है	हो जा	उस को	वह कहता है	तो	कोई काम	वह इरादा करता है	जब	जो वह चाहता है	पैदा करता है

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى

तरफ़	और एक रसूल	48	और इन्जील	और तौरेत	और दानाई	और वह सिखाएगा उस को किताब

بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ

बनाता हूँ	कि मैं	तुम्हारा रब	से	एक निशानी के साथ	आया हूँ तुम्हारी तरफ़	कि मैं	बनी इस्राईल

لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِ

हुक्म से	परिन्दा	तो वह हो जाता है	उस में	फिर फूंक मारता हूँ	परिन्दा	मानिंद-शक्ल	गारा	से	तुम्हारे लिए

اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के हुक्म से	मुर्दे	और मैं ज़िन्दा करता हूँ	और कोढ़ी को	मादरज़ाद अन्धा	और मैं अच्छा करता हूँ	अल्लाह

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

उस	में	बेशक	घरों अपने	में	तुम ज़ख़ीरा करते हो	और जो	तुम खाते हो	जो	और तुम्हें बताता हूँ

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ

अपने से पहली	जो	और तस्दीक़ करने वाला	49	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	एक निशानी

مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ

और आया हूँ तुम्हारे पास	तुम पर	हराम की गई	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए	और ता कि हलाल कर दूँ	तौरेत	से

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ

और तुम्हारा रब	मेरा रब	बेशक अल्लाह	50	और मेरा कहा मानो	सो तुम अल्लाह से डरो	तुम्हारा रब	से	एक निशानी

فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى

ईसा (अ)	महसूस किया	फिर जब	51	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम इबादत करो उस की

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारी (जमा)	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरी मदद करने वाला	कौन	उस ने कहा	कुफ़्र	उन से

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	52	फ़रमांबरदार	कि हम	तू गवाह रह	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	अल्लाह की मदद करने वाले	हम

بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	गवाही देने वाले	साथ	सो तू हमें लिख ले	रसूल	और हम ने पैरवी की	तू ने नाज़िल किया	जो

और लोगों से गहवारे में और पुख़्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को "हो जा" सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब और दानाई और तौरेत और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (उस ने कहा) कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शक्ल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़ख़ीरा करते हो, बेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरेत की तस्दीक़ करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थीं, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

बेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़्र (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फ़रमांबरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले। (53)

ع ١٣ / ١٣

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝٥٤ اِذْ قَالَ اللّٰهُ

अल्लाह ने कहा	जब	54	तदबीर करने वाले	बेहतर	और अल्लाह	और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की	और उन्हों ने मक्र किया

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और पाक कर दूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और उठा लूँगा तुझे	क़ब्ज़ कर लूँगा तुझे	मैं	ऐ ईसा (अ)

كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى

तक	कुफ़्र किया	जिन्हों ने	ऊपर	तेरी पैरवी की	वह जिन्हों ने	और रखूँगा	उन्हों ने कुफ़्र किया

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ

तुम थे	जिस में	तुम्हारे दरमियान	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	क़ियामत का दिन

فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٥٥ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

अज़ाब	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	कुफ़्र किया	जिन लोगों ने	पस	55	इख़्तिलाफ़ करते	में

شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٥٦

56	मददगार	से	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	सख़्त

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ

उन के अजर	तो पूरा देगा	नेक	और उन्हों ने काम किए	ईमान लाए	जो लोग	और जो

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٧ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ

आयतें	से	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं	यह	57	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह

وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۝٥٨ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۭ خَلَقَهٗ

उस को पैदा किया	आदम	मिसाल जैसी	अल्लाह के नज़दीक	ईसा	मिसाल	बेशक	58	हिक्मत वाली	और नसीहत

مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٥٩ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

पस न	आप का रब	से	हक़	59	सो वह हो गया	हो जा	उस को	कहा	फिर	मिट्टी	से

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝٦٠ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

जब आगया	बाद	से	इस में	आप (स) से झगड़े	सो जो	60	शक करने वाले	से	हो

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا

और अपनी औरतें	और तुम्हारे बेटे	अपने बेटे	हम बुलाएं	तुम आओ	तो कह दें	इल्म	से

وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۣ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की लानत	फिर करें (डालें)	हम इल्तिजा करें	फिर	और तुम खुद	और हम खुद	और तुम्हारी औरतें

عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۝٦١ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	सच्चा	बयान	यही	यह	बेशक	61	झूटे	पर

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦٢

62	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वही	और बेशक अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद

और उन्हों ने मक्र किया और अल्लाह ने ख़ुफ़िया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ): मैं तुझे क़ब्ज़ कर लूँगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूँगा और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, और जिन्हों ने तेरी पैरवी की उन्हें ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा उन के जिन्हों ने कुफ़्र किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

बेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को "हो जा" तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी), फिर हम सब इल्तिजा करें, फिर झूटों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

बेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

ع

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ

आप कह दें	63	फ़साद करने वालों को	जानने वाला	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ

कि न हम इबादत करें	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	बराबर	एक बात	तरफ़ (पर)	आओ	ऐ अहले किताब

اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا

रब (जमा)	किसी को	हम में से कोई	और न बनाए	कुछ	उस के साथ	और न हम शरीक करें	सिवाए अल्लाह

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	कि हम	तुम गवाह रहो	तो कह दो तुम	वह फिर जाएं	फिर अगर	अल्लाह के सिवा

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तौरेत	नाज़िल की गई	और नहीं	इब्राहीम (अ)	में	तुम झगड़ते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ

हां तुम	65	तो क्या तुम अ़क्ल नहीं रखते	उस के बाद	मगर	और इन्जील

هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ

अब क्यों	इल्म	उस का	तुम्हें	जिस में	तुम ने झगड़ा किया	वह लोग

تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

और तुम	जानता है	और अल्लाह	कुछ इल्म	उस का	तुम्हें	नहीं	उस में	तुम झगड़ते हो

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا

नसरानी	और न	यहूदी	इब्राहीम (अ)	न थे	66	जानते	नहीं

وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

67	मुश्रिक (जमा)	से	थे	और न	मुस्लिम (फ़रमांबरदार)	एक रुख़	वह थे	और लेकिन

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا

और इस	उन्हों ने पैरवी की उन की	उन लोग	इब्राहीम (अ)	लोग	सब से ज़ियादा मुनासिबत	बेशक

النَّبِىُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِىُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	मोमिनीन	कारसाज़	और अल्लाह	ईमान लाए	और वह लोग जो	नबी

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ

वह गुमराह कर दें तुम्हें	काश	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	चाहती है

وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह समझते	और नहीं	अपने आप	मगर	और नहीं वह गुमराह करते

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	गवाह हो	हालांकि तुम	अल्लाह की आयतों का	तुम इन्कार करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तो तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुस्लिम (फ़रमांबरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरेत और इन्जील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अ़क्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो कि तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख़ मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

बेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिन्हों ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअ़त चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलाते हो सच को झूट के साथ और तुम हक़ को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअ़त ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अव्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आख़िर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाएं। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया था, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्हों ने कहा हम पर उम्मियों के (बारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे और परहेज़गार रहे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़स्मों से हासिल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह उन से कलाम करेगा और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (77)

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَلۡبِسُوۡنَ الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ

हक़	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम उलझाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اٰمِنُوۡا بِالَّذِىۡۤ ع ٨ ١٥

जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअ़त	और कहा	71	जानते हो	हालांकि तुम

اُنۡزِلَ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَجۡهَ النَّهَارِ وَاكۡفُرُوۡۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمۡ

शायद	उस का आख़िर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	दिन का अव्वल हिस्सा	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)	पर	नाज़िल किया गया

يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤۡمِنُوۡۤا اِلَّا لِمَنۡ تَبِعَ دِيۡنَكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡهُدٰى

हिदायत	बेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम	और न	72	वह फिर जाएं

هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنۡ يُّؤۡتٰۤى اَحَدٌ مِّثۡلَ مَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ اَوۡ يُحَآجُّوۡكُمۡ

वह हुज्जत करें तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह की हिदायत

عِنۡدَ رَبِّكُمۡ ؕ قُلۡ اِنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़्ल	बेशक	कह दें	तुम्हारा रब	सामने

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ

वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह ख़ास कर लेता है	73	जानने वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह

وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مَنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ

अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा-बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

بِقِنۡطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اِنۡ تَاۡمَنۡهُ بِدِيۡنَارٍ

एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल

لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيۡكَ اِلَّا مَا دُمۡتَ عَلَيۡهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡا

उन्हों ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को	वह अदा न करे

لَيۡسَ عَلَيۡنَا فِى الۡاُمِّيّٖنَ سَبِيۡلٌ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर	नहीं

وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं?	75	जानते हैं	और वह

يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ وَاَيۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا

क़ीमत	और अपनी क़समें	अल्लाह का इक़रार	ख़रीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	बेशक	76	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है

قَلِيۡلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا

और न	उन से कलाम करेगा अल्लाह	और न	आख़िरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं	यही लोग	थोड़ी

يَنۡظُرُ اِلَيۡهِمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ ۪ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٧﴾

77	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ़	नज़र करेगा

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

ता कि तुम समझो	किताब में	अपनी ज़बानें	मरोड़ते हैं	एक फ़रीक़	उन से (उन में)	और बेशक

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ

से	वह	और वह कहते हैं	किताब	से	वह	और नहीं	किताब	से

عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	अल्लाह की तरफ़	से	वह	हालांकि नहीं	अल्लाह की तरफ़

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ

किताब	उसे अ़ता करे अल्लाह	कि	किसी आदमी के लिए	नहीं	78	वह जानते हैं	और वह

وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ

मेरे	बन्दे	तुम हो जाओ	लोगों को	वह कहे	फिर	और नुबूवत	और हिक्मत

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ

किताब	तुम सिखाते हो	इस लिए कि	अल्लाह वाले	तुम हो जाओ	और लेकिन	अल्लाह	सिवा (बजाए)

وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا

तुम ठहराओ	कि	हुक्म देगा तुम्हें	और न	79	तुम पढ़ते हो	और इस लिए कि

الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ

बाद	कुफ़्र का	क्या वह तुम्हें हुक्म देगा?	परवरदिगार	और नबी	फ़रिश्ते

ع ٩ ٨ ١٦

اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ

जो कुछ	नबी (जमा)	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब	80	मुसलमान	तुम	जब

اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करता हुआ	रसूल	आए तुम्हारे पास	फिर	और हिक्मत	किताब	से	मैं तुम्हें दूँ

لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ

और तुम ने कुबूल किया	क्या तुम ने इक़रार किया	उस ने फ़रमाया	और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की	उस पर	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	तुम्हारे पास	जो

عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ

तुम्हारे साथ	और मैं	पस तुम गवाह रहो	उस ने फ़रमाया	हम ने इक़रार किया	उन्हों ने कहा	मेरा अ़हद	इस	पर

مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

वह	तो वही	इस	बाद	फिर जाए	फिर जो	81	गवाह (जमा)	से

الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ

जो	फ़रमांबरदार है	और उस के लिए	वह ढून्डते हैं	अल्लाह का दीन	क्या? सिवा	82	नाफ़रमान

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

83	वह लौटाए जाएंगे	और उस की तरफ़	और नाखुशी से	खुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में

और बेशक उन में एक फ़रीक़ है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़बानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं। **(78)**

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबूवत अ़ता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यहि कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम खुद (भी) पढ़ते हो। **(79)**

और न वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुक्म देगा कुफ़्र का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फ़रमांबरदार) हो चुके। **(80)**

और जब अल्लाह ने अ़हद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए उस की तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया और तुम ने इस पर मेरा अ़हद कुबूल क्या? उन्हों ने कहा कि हम ने इक़रार किया, उस ने फ़रमाया पस तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। **(81)**

फिर जो इस के बाद फिर जाए तो वही नाफ़रमान हैं। **(82)**

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फ़रमांबरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे। **(83)**

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	पर	नाज़िल किया गया	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दें

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलाद	और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ

और हम	उन से	कोई एक	दरमियान	फ़र्क़ करते	नहीं	उन का रब	से	और नबी (जमा)	और ईसा (अ)

لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

उस से	क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	कोई दीन	इस्लाम	सिवा	चाहेगा	और जो	84	फ़रमांबरदार	उसी के

وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ

हिदायत देगा अल्लाह	क्योंकर	85	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत	में	और वह

قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

और आएं उन के पास	सच्चे	रसूल	कि	और उन्हों ने गवाही दी	उन का (अपना) ईमान	बाद	ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए

الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ

उन की सज़ा	ऐसे लोग	86	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत देता	नहीं	और अल्लाह	खुली निशानियां

اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ۙ

87	तमाम	और लोग	और फ़रिश्ते	अल्लाह की लानत	उन पर	कि

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ۙ

88	मुहलत दी जाएगी	उन्हें	और न	अज़ाब	उन से	हलका किया जाएगा	न	उस में	हमेशा रहेंगे

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	इस	बाद	तौबा की	जो लोग	मगर

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने ईमान	बाद	काफ़िर हो गए	जो लोग	बेशक	89	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

90	गुमराह	वह	और वही लोग	उन की तौबा	क़ुबूल की जाएगी	हरगिज़ न	कुफ़्र में	बढ़ते गए

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

क़ुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	हालते कुफ़्र	और वह	और वह मर गए	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ

उस को	बदला दे	अगरचे	सोना	ज़मीन	भरा हुआ	उन में कोई	से

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع ٩ ١١ ١٧

91	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इस्हाक़ (अ), याकूब (अ) और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम फ़र्क़ नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन तो उस से हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद और गवाही दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गईं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने इस के बाद तौबा की और इस्लाह की, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़ न क़ुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और वह मर गए हालते कुफ़्र में, तो हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम ख़र्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे

مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا

हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह	से (कोई) चीज़

لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कि	क़ब्ल	से	अपनी जान	पर	इस्राईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर	बनी इस्राईल के लिए

تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	फिर उस को पढ़ो	तौरेत	सो तुम लाओ	आप कह दें	तौरेत	नाज़िल की जाए (उतरे)

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

इस	से - बाद	झूट	अल्लाह पर	झूट बाँधे	फिर जो	93	सच्चे

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ قف فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	दीन	पस पैरवी करो	अल्लाह ने सच फ़रमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	मुक़र्रर किया गया	घर	पहला	बेशक	95	मुशरिक (जमा)	से	थे	और न	हनीफ़

لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ

मुक़ामे	खुली	निशानियां	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला	मक्का में	जो

اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ

ख़ानाए कअ़बा का हज करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अम्न में	हो गया	दाख़िल हुआ उस में	और जो	इब्राहीम

مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ

से	बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	कुफ़्र किया	और जो- जिस	राह	उस की तरफ़	इस्तिताअ़त रखता हो	जो

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖق وَاللّٰهُ

और अल्लाह	अल्लाह की आयतों से	तुम कुफ़्र करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97	जहान वाले

شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ

से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	जो तुम करते हो	पर	गवाह

سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूंडते हो उस में	ईमान लाए	जो	अल्लाह का रास्ता

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

एक गिरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो	से-जो	बेख़बर

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	हालते कुफ़्र	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे जब तक उस में से ख़र्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम ख़र्च करोगे कोई चीज़ तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। **(92)**

तमाम खाने हलाल थे बनी इस्राईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़ब्ल कि तौरेत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरेत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। **(93)**

फिर जो कोई अल्लाह पर इस के बाद झूट बाँधे तो वही लोग ज़ालिम हैं। **(94)**

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़रमाया, पस तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुशरिकों में से न थे। **(95)**

बेशक सब से पहले जो घर मुक़र्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। **(96)**

उस में निशानियां हैं खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाख़िल हुआ वह अम्न में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए कअ़बा का हज करना जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस्तिताअ़त रखता हो, और जिस ने कुफ़्र किया तो बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ है। **(97)**

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (बाख़बर है) जो तुम करते हो। **(98)**

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को) जो अल्लाह पर ईमान लाए, तुम उस में कजी ढूंडते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। **(99)**

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़्र में फेर देंगे। **(100)**

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ

उस का रसूल	और तुम्हारे दरमियान	अल्लाह की आयतें	तुम पर	पढ़ी जाती हैं	जबकि तुम	तुम कुफ़्र करते हो	और कैसे

وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ع ﴿١٠١﴾ ع ١٠ ١

101	सीधा रास्ता	तरफ़	तो उसे हिदायत दी गई	अल्लाह को	मज़बूत पकड़ेगा	और जो

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ

और तुम	मगर	और तुम हरगिज़ न मरना	उस से डरना	हक़	तुम डरो अल्लाह से	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ص وَاذْكُرُوْا

और याद करो	आपस में फूट डालो	और न	सब मिल कर	अल्लाह की रस्सी को	और मज़बूती से पकड़ लो	102	मुसलमान (जमा)

نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ

तो तुम हो गए	तुम्हारे दिलों में	तो उल्फ़त डाल दी	दुश्मन (जमा)	जब तुम थे	तुम पर	अल्लाह की नेमत

بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ج وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ

तो तुम्हें बचा लिया	आग	से (के)	गढ़ा	किनारा	पर	और तुम थे	भाई भाई	उस के फ़ज़्ल से

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ

और चाहिए रहे	103	हिदायत पाओ	ताकि तुम	अपनी आयात	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	उस से

مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

और वह रोके	अच्छे कामों का	और वह हुक्म दे	भलाई	तरफ़	वह बुलाए	एक जमाअ़त	तुम से (में)

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

उन की तरह जो	और न हो जाओ	104	कामयाब होने वाले	वह	और यही लोग	बुराई से

تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	और यही लोग	वाज़ेह हुक्म	उन के पास आगए	कि	उस के बाद	और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे	मुतफ़र्रिक़ हो गए

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ لا يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ج

बाज़ चेहरे	और सियाह होंगे	बाज़ चेहरे	सफ़ेद होंगे	दिन	105	बड़ा	अ़ज़ाब

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ قف اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

अपने ईमान	बाद	क्या तुम ने कुफ़्र किया	उन के चेहरे	सियाह हुए	लोग	पस जो

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ

उन के चेहरे	सफ़ेद होंगे	वह लोग जो	और अलबत्ता	106	कुफ़्र करते	तुम थे	क्यों कि	अ़ज़ाब	तो चखो

فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	यह	107	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	अल्लाह की रहमत	सो - में

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108	जहान वालों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	और नहीं अल्लाह	ठीक ठीक	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं वह

और तुम कैसे कुफ़्र करते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। **(101)**

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। **(102)**

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी तो तुम उस के फ़ज़्ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। **(103)**

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअ़त रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। **(104)**

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं जिन के लिए है अ़ज़ाब बहुत बड़ा। **(105)**

जिस दिन बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चेहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया? तो अब अ़ज़ाब चखो क्यों कि तुम कुफ़्र करते थे। **(106)**

और अलबत्ता जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद होंगे वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(107)**

यह अल्लाह की आयात हैं, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। **(108)**

ع ١١/٨ ٢

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾

109	तमाम काम	लौटाए जाएंगे	और अल्लाह की तरफ़	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

अच्छे कामों का	तुम हुक्म करते हो	लोगों के लिए	भेजी गई	उम्मत	बेहतरीन	तुम हो

وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ

ईमान ले आते	और अगर	अल्लाह पर	और ईमान लाते हो	बुरे काम	से	और मना करते हो

اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	ईमान वाले	उन से	उन के लिए	बेहतर	तो था	अहले किताब

الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ قف

पीठ (जमा)	वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे	वह तुम से लड़ेंगे	और अगर	सताना	सिवाए	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	हरगिज़ न	110	नाफ़रमान

ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا

जहां कहीं	ज़िल्लत	उन पर	चस्पां कर दी गई	111	उन की मदद न होगी	फिर

ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ

ग़ज़ब के साथ	वह लौटे	लोगों से	और उस (अ़हद)	अल्लाह से	उस (अ़हद)	सिवाए	वह पाए जाएं

مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا

थे	इस लिए कि वह	यह	मोहताजी	उन पर	और चस्पां कर दी गई	अल्लाह से (के)

يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

यह	नाहक़	नबी (जमा)	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतें से	कुफ़्र करते

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ

से (में)	बराबर	नहीं	112	हद से बढ़ जाते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए

اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

रात के औक़ात	अल्लाह की आयात	वह पढ़ते हैं	क़ाइम	एक जमाअ़त	अहले किताब

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	113	सिज्दा करते हैं	और वह

وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ

और वह दौड़ते हैं	बुरे काम	से	और मना करते हैं	अच्छी बात का	और हुक्म करते हैं

فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا

वह करेंगे	और जो	114	नेकोकार (जमा)	से	और यही लोग	नेक काम	में

مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115	परहेज़गारों को	जानने वाला	और अल्लाह	तो हरगिज़ नाक़द्री न होगी उस की	नेकी	से (कोई)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चस्पां कर दी गई जहां कहीं वह पाए जाएं सिवाए उस के कि अल्लाह के अ़हद में आ जाएं और लोगों के अ़हद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअ़त (सीधी राह पर) क़ाइम है और रात के औक़ात में अल्लाह की आयात पढ़ते हैं और वह सिज्दा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ

उन की औलाद	और न	उन के माल	उन से (के)	हरगिज़ काम न आएगा	कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक

مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۖ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ١١٦

116	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग (दोज़ख़) वाले	और यही लोग	कुछ	अल्लाह से (के आगे)

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ

हवा	ऐसी - जैसे	दुनिया	ज़िन्दगी	इस	में	ख़र्च करते हैं	जो	मिसाल

فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا

और नहीं	फिर उस को हलाक कर दे	जानें अपनी	उन्हों ने ज़ुल्म किया	क़ौम	खेती	वह जा लगे	पाला	उस में

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ١١٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	117	वह ज़ुल्म करते हैं	अपनी जानें	बल्कि	ज़ुल्म किया उन पर अल्लाह

لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ

तुम तक्लीफ़ पाओ	कि	वह चाहते हैं	ख़राबी	वह कमी नहीं करते	सिवाए- अपने	से	दोस्त (राज़दार)	न बनाओ

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۚ

बड़ा	उन के सीने	छुपा हुआ	और जो	उन के मुँह	से	दुश्मनी	अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ١١٨ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ

वह लोग	सुन लो-तुम	118	अ़क्ल रखते	तुम हो	अगर	आयात	तुम्हारे लिए	हम ने खोल कर बयान कर दिया

تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ

वह तुम से मिलते हैं	और जब	सब	किताब पर	और तुम ईमान रखते हो	वह दोस्त रखते हैं तुम्हें	और नहीं	तुम दोस्त रखते हो उन को

قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ

गुस्से	से	उंगलियां	तुम पर	वह काटते हैं	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं

قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ١١٩

119	सीने वाली (दिल की बातें)	जानने वाला	बेशक अल्लाह	अपने गुस्से में	तुम मर जाओ	कह दीजिए

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۖ

उस से	वह खुश होते हैं	कोई बुराई	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगती है	कोई भलाई	पहुँचे तुम्हें	अगर

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۗ

कुछ	उन का फ़रेब	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ١٢٠ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ ع ١٢ ١١ ٣

अपने घर	से	आप (स) सुबह सवेरे निकले	और जब	120	घेरे हुए है	वह करते हैं	जो कुछ	बेशक अल्लाह

تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ١٢١

121	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	जंग के	ठिकाने	मोमिन (जमा)	बिठाने लगे

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(116)**

उन की मिसाल जो ख़र्च करते हैं इस दुनिया में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस क़ौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर खुद ज़ुल्म करते हैं। **(117)**

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ, वह तुम्हारी ख़राबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तक्लीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अ़क्ल रखते हो। **(118)**

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। **(119)**

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, बेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। **(120)**

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। **(121)**

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللّٰهِ

और अल्लाह पर	उनका मददगार	और अल्लाह	हिम्मत हार दें	कि	तुम से	दो गिरोह	इरादा किया	जब

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

कमज़ोर	जबकि तुम	बद्र में	मदद कर चुका तुम्हारी अल्लाह	और अलबत्ता	122	मोमिन	चाहिए भरोसा करें

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों को	जब आप कहने लगे	123	शुक्रगुज़ार हो	ताकि तुम	तो डरो अल्लाह से

اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

फ़रिश्ते	से	तीन हज़ार से	तुम्हारा रब	मदद करे तुम्हारी	कि	क्या काफ़ी नहीं तुम्हारे लिए

مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

फ़ौरन-वह	से	और तुम पर आएं	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	अगर	क्यों नहीं	124	उतारे हुए

الربع
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	निशान ज़दा	फ़रिश्ते	से	पाँच हज़ार	तुम्हारा रब	मदद करेगा तुम्हारी	यह

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ

उस से	तुम्हारे दिल	और इस लिए कि इत्मीनान हो	तुम्हारे लिए	ख़ुशख़बरी	मगर (सिर्फ़)	उस को बनाया अल्लाह ने	और नहीं

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

गिरोह	ताकि काट डाले	126	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह के पास	से	मगर (सिवाए)	मदद	और नहीं

مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ

नहीं - आप (स) के लिए	127	नामुराद	तो वह लौट जाएं	उन्हें ज़लील करे	या	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	से

مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	ज़ालिम (जमा)	क्यों कि वह	उन्हें अज़ाब दे	या	उन की	ख़्वाह तौबा कुबूल कर ले	कुछ	काम (दख़्ल)	से

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

चाहे	जिस को	वह बख़्श दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

ع ١٣ ٩ ٤
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

जो	ऐ	129	मेह्रबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	चाहे	जिस	और अज़ाब दे

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ

और डरो अल्लाह से	दुगना हुआ (चौगना)	दुगना	सूद	न खाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْٓ اُعِدَّتْ

तैयार की गई	जो कि	आग	और डरो	130	फ़लाह पाओ	ताकि तुम

لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

132	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और रसूल	अल्लाह	और हुक्म मानो तुम	131	काफ़िरों के लिए

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बद्र में मदद कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, और वह (दुश्मन) तुम पर चढ़ आएं तो फ़ौरन तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ़) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्हों ने कुफ़्र किया या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएं। (127)

आप (स) का इस में दख़्ल नहीं कुछ भी, ख़्वाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद दुगना चौगना, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रह्म किया जाए। (132)

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ

आस्मान (जमा)	उस का अर्ज़	और जन्नत	अपना रब	से	बख़्शिश	तरफ़	और दौड़ो

وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ

ख़ुशी में	ख़र्च करते हैं	जो लोग	133	परहेज़गारों के लिए	तैयार की गई	और ज़मीन

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ

लोग	से	और माफ़ करते हैं	गुस्सा	और पी जाते हैं	और तक्लीफ़

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا

ज़ुल्म करें	या	कोई बेहयाई	वह करें	जब	और वह लोग जो	134	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह

اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۨ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ

गुनाह	बख़्शता है	और कौन	अपने गुनाहों के लिए	फिर बख़्शिश मांगें	वह अल्लाह को याद करें	अपने तईं

اِلَّا اللّٰهُ ۠ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

135	जानते हैं	और वह	उन्हों ने किया	जो	पर	वह अड़ें	और न	अल्लाह के सिवा

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ

और बाग़ात	उन का रब	से	बख़्शिश	उन की जज़ा	यही लोग

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ

और कैसा अच्छा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हैं

اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا

तो चलो फिरो	तरीक़े (वाक़िआत)	तुम से पहले	गुज़र चुके	136	काम करने वाले	बदला

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

138	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और हिदायत	लोगों के लिए	बयान	यह

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

139	ईमान वाले	अगर तुम हो	ग़ालिब	और तुम	और ग़म न खाओ	और सुस्त न पड़ो

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

अय्याम	और यह	उस जैसा	ज़ख़्म	क़ौम	पहुँचा	तो अलबत्ता	ज़ख़्म	तुम्हें पहुँचा	अगर

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के दरमियान	हम बारी बारी बदलते हैं इस को

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ۙ

140	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह	शहीद (जमा)	तुम से	और बनाए

और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ जिस का अर्ज़ आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो ख़र्च करते हैं ख़ुशी (ख़ुशहाली) और तक्लीफ़ में और पी जाते हैं गुस्सा और माफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तईं कोई ज़ुल्म कर बैठें तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख़्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हों ने (ग़लत) किया उस पर जानते बूझते न अड़ें। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ात हैं जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीक़े (वाक़िआत) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस क़ौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह (ख़ुशी और ग़म के) दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए और तुम में से (बाज़ को) शहीद बनाए (दरजए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

141	काफ़िर (जमा)	और मिटा दे	ईमान लाए	जो लोग	और ताकि पाक साफ़ कर दे अल्लाह

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا

जिहाद करने वाले	जो लोग	अल्लाह ने मालूम किया	और अभी नहीं	जन्नत	तुम दाख़िल होगे	कि	क्या तुम समझते हो?

مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ

से	मौत	तुम तमन्ना करते थे	और अलबत्ता	142	सब्र करने वाले	और मालूम किया	तुम में से

ع ١٤ ١٤ ٥
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

143	देखते हो	और तुम	तो अब तुम ने उसे देख लिया	तुम उस से मिलो	कि	क़ब्ल

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ

रसूल (जमा)	उन से पहले	अलबत्ता गुज़रे	एक रसूल	मगर (तो)	मुहम्मद (स)	और नहीं

اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ

फिर जाए	और जो	अपनी एड़ियों पर	तुम फिर जाओगे	क़त्ल हो जाएं	या	वह वफ़ात पा लें	क्या फिर अगर

عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْــًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

144	शुक्र करने वाले	और जल्द जज़ा देगा अल्लाह	कुछ भी	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का	अपनी एड़ियों पर

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ

मुक़र्ररा वक़्त	लिखा हुआ	अल्लाह के हुक्म से	बग़ैर	वह मरे	कि	किसी शख़्स के लिए	और नहीं

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

चाहेगा	और जो	उस से	हम देंगे उस को	दुनिया	इनआम	चाहेगा	और जो

ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145	शुक्र करने वाले	और हम जल्द जज़ा देंगे	उस से	हम देंगे उस को	आख़िरत	बदला

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا

सुस्त पड़े	पस न	बहुत	अल्लाह वाले	उन के साथ	लड़े	नबी	और बहुत से

لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ

और न दब गए	उन्हों ने कमज़ोरी की	और न	अल्लाह की राह	में	उन्हें पहुँचे	ब सबब-जो

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ

कि	सिवाए	उन का कहना	और न था	146	सब्र करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह

قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ اَمْرِنَا

हमारे काम में	और हमारी ज़ियादती	हमारे गुनाह	बख़्शदे हम को	ऐ हमारे रब	उन्हों ने दुआ की

وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

147	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद फ़रमा	हमारे क़दम	और साबित रख

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इम्तिहान नहीं लिया) कि कौन तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलबत्ता तुम मौत से मिलने से क़ब्ल उस की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलबत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफ़ात पा लें या क़त्ल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख़्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुक़र्ररा वक़्त, और जो दुनिया का इनआम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आख़िरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्हों ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्हों ने दुआ की: ऐ हमारे रब! हमें बख़्शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे क़दम और काफ़िरों की क़ौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ

इन्आम-ए-आख़िरत	और अच्छा	दुनिया	इन्आम	तो उन्हें दिया अल्लाह

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ع ١٥ ٦

ईमान लाए	लोग जो	ऐ	148	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह

اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا

फिर तुम पलट जाओगे	तुम्हारी एड़ियां	पर	वह तुम्हें फेर देंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अगर तुम कहा मानोगे

خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

150	मददगार (जमा)	बेहतर	और वह	तुम्हारा मददगार	बल्कि अल्लाह	149	घाटे में

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا

इस लिए कि उन्हों ने शरीक किया	रुअ़ब	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	दिल (जमा)	में	अ़नक़रीब हम डाल देंगे

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

दोज़ख़	और उन का ठिकाना	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी	जिस	अल्लाह का

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

अपना वादा	सच्चा कर दिया तुम से अल्लाह	और अलबत्ता	151	ज़ालिम (जमा)	ठिकाना	और बुरा

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ

और झगड़ा किया	तुम ने बुज़दिली की	जब	यहां तक कि	उस के हुक्म से	तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	जब

فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ

तुम चाहते थे	जो	जब तुम्हें दिखाया	उस के बाद	और तुम ने नाफ़रमानी की	काम में

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ

आख़िरत	जो चाहता था	और तुम से	दुनिया	जो चाहता था	तुम से

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ

तुम से (तुम्हें)	माफ़ किया	और तहक़ीक़	ताकि तुम्हें आज़माए	उन से	तुम्हें फेर दिया	फिर

وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا

और न	तुम चढ़ते थे	जब	152	मोमिन (जमा)	पर	फ़ज़्ल करने वाला	और अल्लाह

تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ

तुम्हारे पीछे से	तुम्हें पुकारते थे	और रसूल (स)	किसी को	मुड़ कर देखते थे

فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ

जो तुम से निकल गया	पर	तुम रंज करो	ताकि न	ग़म पर ग़म	फिर तुम्हें पहुँचाया

وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	तुम्हें पेश आए	जो	और न

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुनिया का और आख़िरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। **(148)**

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। **(149)**

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। **(150)**

हम अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल देंगे इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। **(151)**

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया चाहता था और तुम में से कोई आख़िरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से पस्पा कर दिया ताकि तुम्हें आज़माए, और तहक़ीक़ उस ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करने वाला है। **(152)**

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। **(153)**

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ

तुम में से	एक जमाअ़त	ढांक लिया	ऊँघ	अम्न	ग़म	बाद	तुम पर	उस ने उतारा	फिर

وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ

बे हक़ीक़त	अल्लाह के बारे में	वह गुमान करते थे	अपनी जानें	उन्हें फ़िक्र पड़ी थी	और एक जमाअ़त

ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

काम	कि	आप कह दें	कुछ	काम	से	हमारे लिए	क्या	वह कहते थे	जाहिलियत	गुमान

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

अगर होता	वह कहते हैं	आप के लिए (पर)	ज़ाहिर नहीं करते	जो	अपने दिल	में	वह छुपाते हैं	तमाम - अल्लाह के लिए

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

अपने घर (जमा)	में	अगर तुम होते	आप कह दें	यहां	हम न मारे जाते	थोड़ा सा इख़्तियार	हमारे लिए

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ

और ताकि आज़माए अल्लाह	अपनी क़त्लगाह (जमा)	तरफ़	मारा जाना	उन पर	लिखा था	ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग

مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दिल	में	जो	और ताकि साफ़ कर दे	तुम्हारे सीनों में	जो

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

आमने सामने हुई दो जमाअ़तें	दिन	तुम में से	पीठ फेरेंगे	जो लोग	बेशक	154	सीनों वाले (दिलों के भेद)

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ

उन से	माफ़ कर दिया अल्लाह	और अलबत्ता	जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	बाज़ की वजह से	शैतान	दरहक़ीक़त उन को फिसला दिया

ع ١٦ ٧ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا

न हो जाओ	ईमान वालो (ईमान लाए)	जो लोग	ऐ	155	हिल्म वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह

كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

वह सफ़र करें ज़मीन (राह) में	जब	अपने भाइयों को	और वह कहते हैं	काफ़िर	उन लोगों की तरह

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ

ताकि बना दे अल्लाह	और न मारे जाते	वह मरते	न	हमारे पास	अगर वह होते	जंग में हों	या

ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	और अल्लाह	उन के दिल	में	हस्रत	यह - उस

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह की राह	में	तुम मारे जाओ	और अलबत्ता अगर	156	देखने वाला	तुम करते हो	जो कुछ	और अल्लाह

اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और रहमत	अल्लाह (की तरफ़) से	यक़ीनन बख़्शिश	या तुम मर जाओ

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अम्न ऊंघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअ़त को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअ़त को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में बे हक़ीक़त गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की क़िस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी क़त्लगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। **(154)**

बेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए जिस दिन दो जमाअ़तें आमने सामने हुईं, दरहक़ीक़त उन्हें शैतान ने फिसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। **(155)**

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाइयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जंग में शरीक हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हस्रत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। **(156)**

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यक़ीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से, (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। **(157)**

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ इकटठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दख़ू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) माफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख़्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह ज़ुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की ख़ुशनूदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुख़्तलिफ़) दरजे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

बेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनों) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और बेशक वह उस से क़ब्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (165)

وَلَىِٕنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ

रहमत	पस - से	158	तुम इकटठे किए जाओगे	यक़ीनन अल्लाह की तरफ़	तुम मार दिए गए	या	तुम मर गए	और अगर

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۠

आप (स) के पास	से	तो वह मुन्तशिर हो जाते	सख़्त दिल	तुन्दख़ू	और अगर आप (स) होते	उन के लिए	नरम दिल	अल्लाह (की तरफ़) से

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ

काम	में	और मश्वरा करें उन से	उन के लिए	और बख़्शिश मांगें	उन से (उन्हें)	आप (स) माफ़ कर दें

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾

159	भरोसा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	तो भरोसा करें	आप (स) इरादा कर लें	फिर जब

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِىْ

जो कि	वह	तो कौन?	वह तुम्हें छोड़ दे	और अगर	तुम पर	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	अल्लाह	वह मदद करे तुम्हारी	अगर

يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ

था- है	और नहीं	160	ईमान वाले	चाहिए कि भरोसा करें	और अल्लाह पर	उस के बाद	वह तुम्हारी मदद करे

لِنَبِىٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ

क़ियामत के दिन	जो उस ने छुपाया	लाएगा	छुपाएगा	और जो	कि छुपाए	नबी के लिए

ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ

पैरवी की	तो क्या जिस	161	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा पाएगा	फिर

رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह के	गुस्से के साथ	लौटा	मानिन्द- जो	अल्लाह	रज़ा (ख़ुशनूदी)

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	अल्लाह के पास	दरजे	वह- उन	162	ठिकाना	और बुरा

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	जब भेजा	ईमान वाले (मोमिनीन)	पर	अल्लाह ने एहसान किया	अलबत्ता बेशक	163	वह करते हैं

مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

किताब	और उन्हें सिखाता है	और उन्हें पाक करता है	उस की आयतें	उन पर	वह पढ़ता है	उन की जानें (उन के दरमियान)	से

النصف

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

164	खुली	गुमराही	अलबत्ता- में	उस से क़ब्ल	वह थे	और बेशक	और हिक्मत

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ

कहां से यह?	तुम कहते हो	उस से दो चंद	अलबत्ता तुम ने पहुँचाई	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँची	क्या जब

قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

165	क़ादिर	शै	हर	पर	बेशक अल्लाह	तुम्हारी जानें (अपने पास)	पास	से	वह	आप कह दें

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿۱۶۶﴾

166	ईमान वाले	और ताकि वह मालूम कर ले	तो अल्लाह के हुक्म से	दो जमाअतें	मुडभेड़ हुई	दिन	तुम्हें पहुँचा	और जो

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا

लड़ो	आओ	उन्हें	और कहा गया	मुनाफ़िक़ हुए	वह जो कि	और ताकि जान ले

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ؕ

ज़रूर तुम्हारा साथ देते	जंग	अगर हम जानते	वह बोले	दिफ़ाअ करो	या	अल्लाह की राह	में

هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ

अपने मुँह से	वह कहते हैं	ब निसबत ईमान	उन से	ज़ियादा क़रीब	उस दिन	कुफ़्र के लिए (कुफ़्र से)	वह

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ۚ﴿۱۶۷﴾ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वह लोग जो	167	वह छुपाते हैं	जो	खूब जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिलों में	जो नहीं

لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ

से	तुम हटा दो	कह दीजिए	वह न मारे जाते	वह हमारी मानते	अगर	और वह बैठ रहे	अपने भाइयों के बारे में

اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا

मारे गए	जो लोग	हरगिज़ ख़याल करो	और न	168	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	अपनी जानें

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۙ﴿۱۶۹﴾

169	वह रिज़्क़ दिए जाते हैं	अपना रब	पास	ज़िन्दा (जमा)	बल्कि	मुर्दा (जमा)	अल्लाह का रास्ता	में

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ

नहीं	उन की तरफ़ से जो	और खुश वक़्त हैं	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें अल्लाह ने दिया	से - जो	खुश

وقف لازم

يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

170	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	यह कि नहीं	उन के पीछे	से	उन से	मिले

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ

ज़ाया नहीं करता	और यह कि अल्लाह	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत से	वह खुशियां मना रहे हैं

ع ١٧/٢٦ ٨

اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚۛ﴿۱۷۱﴾ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ

कि	बाद	और रसूल	अल्लाह का	कुबूल किया	जिन लोगों ने	171	ईमान वाले	अजर

ع ٣ م عند المتقدمين ١٢

اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۚ﴿۱۷۲﴾

172	बड़ा	अजर	और परहेज़गारी की	उन में से	उन्हों ने नेकी की	उन के लिए जो	ज़ख़्म	पहुँचा उन्हें

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

पस उन से डरो	तुम्हारे लिए	जमा किया है	लोग	कि	लोग	उन के लिए	कहा	वह लोग जो

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾

173	कारसाज़	और कैसा अच्छा	हमारे लिए काफ़ी है अल्लाह	और उन्हों ने कहा	ईमान	तो ज़ियादा हुआ उन का

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक़ हुए, और उन्हें कहा गया: आओ! अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे ब निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा और खुद बैठ रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ ख़याल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़्क़ पाते हैं। (169)

खुश हैं उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त हैं जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) कुबूल किया उस के बाद कि उन्हें ज़ख़्म पहुँचा, उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है, पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्हों ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्हों ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यक़ीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आख़िरत में कोई हिस्सा न दे, और उन के लिए अ़ज़ाब है बड़ा। (176)

बेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहक़ीक़त हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें जो उस (माल) में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए, बल्कि वह उन के लिए बुरा है, जिस (माल) में उन्हों ने बुख़्ल किया अ़नक़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا

और उन्हों ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे

رِضْوَانَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा

يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुझ से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त	डराता है

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۭ

कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यक़ीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें	और न

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

176	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	आख़िरत	में	कोई हिस्सा	उन को	दे	कि न	चाहता है अल्लाह

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـــًٔا ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	कुछ	बिगाड़ सकते अल्लाह का	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्हों ने मोल लिया	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ

बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177	दर्दनाक	अ़ज़ाब

لِّاَنْفُسِهِمْ ۭ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

178	ज़लील करने वाला	अ़ज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बढ़ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं	दरहक़ीक़त	उन के लिए

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰي مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह	नहीं है

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَي الْغَيْبِ

ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक	जुदा कर दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है	और लेकिन अल्लाह

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ

हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अजर	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ	और अगर

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىھُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ

उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें दिया अल्लाह ने	में-जो	बुख़्ल करते हैं	जो लोग

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

क़ियामत	दिन	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	जो	अ़नक़रीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा	वह	बल्कि

وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع ١٨ ٩ ٩

180	बाख़बर	जो तुम करते हो	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास

وقف لازم

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

मालदार	और हम	फ़क़ीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	क़ौल (बात)	अलबत्ता सुन लिया अल्लाह ने

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

नाहक़	नबी (जमा)	और उन का क़त्ल करना	जो उन्हों ने कहा	अब हम लिख रखेंगे

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	बदला - जो	यह	181	जलाने वाला	अ़ज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا

कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ

اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वह लाए हमारे पास	यहां तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाएं	कि न	हम से	अ़हद किया	कि अल्लाह

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	क़ुरबानी

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें क़त्ल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

वह आए	आप से पहले	बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाएं आप (स) को	फिर अगर

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ

मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफ़े	खुली निशानियों के साथ

وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ

फिर जो	क़ियामत के दिन	तुम्हारे अजर	पूरे पूरे मिलेंगे	और बेशक

زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाख़िल किया गया	दोज़ख़	से	दूर किया गया

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ قف

और अपनी जानें	अपने माल	में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिवाए

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	से	और ज़रूर सुनोगे

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ

बहुत	दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और-से

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो बेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्हों ने कहा और उन का नबियों को नाहक़ क़त्ल करना, और कहेंगेः चखो जलाने वाला अ़ज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अ़हद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं यहां तक कि वह हमारे पास क़ुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाएं तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफ़े और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख़ से दूर किया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुनिया की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (बातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो तो बेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

وَاِذۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

उसे ज़रूर बयान कर देना	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब

لِلنَّاسِ وَلَا تَكۡتُمُوۡنَهٗ ۫ فَنَبَذُوۡهُ وَرَآءَ ظُهُوۡرِهِمۡ وَاشۡتَرَوۡا بِهٖ

हासिल की उस के बदले	अपनी पीठ (जमा)	पीछे	तो उन्हों ने उसे फेंक दिया	छुपाना उसे	और न	लोगों के लिए

ثَمَنًا قَلِيۡلًا ؕ فَبِئۡسَ مَا يَشۡتَرُوۡنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ

जो लोग	आप हरगिज़ न समझें	187	वह ख़रीदते हैं	तो कितना बुरा है जो	थोड़ी	क़ीमत

يَفۡرَحُوۡنَ بِمَاۤ اَتَوۡا وَّيُحِبُّوۡنَ اَنۡ يُّحۡمَدُوۡا بِمَا

उस पर जो	उन की तारीफ़ की जाए	कि	और वह चाहते हैं	उन्हों ने किया	उस पर जो	खुश होते हैं

لَمۡ يَفۡعَلُوۡا فَلَا تَحۡسَبَنَّهُمۡ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الۡعَذَابِ ۚ وَلَهُمۡ

और उन के लिए	अ़ज़ाब	से	रिहा शुदा	समझें आप उन्हें	पस न	उन्हों ने नहीं किया

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत	188	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۸۹﴾ ع اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ع ١٩ ٩ ١٠

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदाइश	में	बेशक	189	क़ादिर	हर शै	पर

وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ﴿۱۹۰﴾

190	अ़क़्ल वालों के लिए	निशानियां हैं	और दिन	रात	और आना जाना

الَّذِيۡنَ يَذۡكُرُوۡنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوۡدًا وَّعَلٰى جُنُوۡبِهِمۡ

अपनी करवटें	और पर	और बैठे	खड़े	याद करते हैं अल्लाह को	जो लोग

وَيَتَفَكَّرُوۡنَ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ رَبَّنَا مَا

नहीं	ऐ हमारे रब	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश में	और वह ग़ौर करते हैं

خَلَقۡتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبۡحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

191	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	तू हमें बचा ले	तू पाक है	बे मक़सद	यह	तू ने पैदा किया

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنۡ تُدۡخِلِ النَّارَ فَقَدۡ اَخۡزَيۡتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	तू ने उस को रुसवा किया	तो ज़रूर	आग (दोज़ख़)	दाख़िल किया	जो-जिस	बेशक तू	ऐ हमारे रब

مِنۡ اَنۡصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعۡنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىۡ

पुकारता है	पुकारने वाला	सुना	बेशक हम ने	ऐ हमारे रब	192	मददगार	कोई

لِلۡاِيۡمَانِ اَنۡ اٰمِنُوۡا بِرَبِّكُمۡ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغۡفِرۡ لَنَا

हमें	तो बख़्श दे	ऐ हमारे रब	सो हम ईमान लाए	अपने रब पर	कि ईमान ले आओ	ईमान के लिए

ذُنُوۡبَنَا وَكَفِّرۡ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الۡاَبۡرَارِ ﴿۱۹۳﴾

193	नेकों के साथ	और हमें मौत दे	हमारी बुराइयां	और दूर कर दे हम से	हमारे गुनाह

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अ़हद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्हों ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी क़ीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह ख़रीदते हैं! **(187)**

आप हरगिज़ न समझें जो लोग खुश होते हैं जो उन्हों ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्हों ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अ़ज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(188)**

और अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। **(189)**

बेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। **(190)**

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से। **(191)**

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। **(192)**

ऐ हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़्श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। **(193)**

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط

क़ियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीआ)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ

मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस क़ुबूल की	194	वादा	नहीं ख़िलाफ़ करता	बेशक तू

عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ج بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ج

बाज़ से (आपस में)	तुम में से बाज़	या औरत	मर्द से	तुम में से	कोई मेहनत करने वाला

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ

मेरी राह में	और सताए गए	अपने शहरों	से	और निकाले गए	उन्हों ने हिज्रत की	सो लोग

وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ

और ज़रूर उन्हें दाख़िल करूँगा	उन की बुराइयां	उन से	मैं ज़रूर दूर करूँगा	और मारे गए	और लड़े

جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ج ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط

अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सवाब	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चलना फिरना	न धोका दे आप (स) को	195	सवाब	अच्छा	उस के पास	और अल्लाह

فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ ط مَتَاعٌ قَلِيْلٌ قف ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ط

दोज़ख़	उन का ठिकाना	फिर	थोड़ा	फ़ाइदा	196	शहर (जमा)	में

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ

बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	अपना रब	डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197	बिछौना (आराम गाह)	और कितना बुरा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط وَمَا

और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से

الثلثة

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ

बाज़ वह जो	अहले किताब	से	और बेशक	198	नेक लोगों के लिए	बेहतर	अल्लाह के पास

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لا

अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	उन के लिए	यही लोग	थोड़ा	मोल	अल्लाह की आयतों का	मोल नहीं लेते

عِنْدَ رَبِّهِمْ ط اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا

तुम सब्र करो	ईमान वालो	ऐ	199	हिसाब	तेज़	बेशक अल्लाह	उन का रब	पास

ع ٢٠ ١١ ١١ وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

200	मुराद को पहुँचो	ताकि तुम	और डरो अल्लाह से	और जंग की तैयारी करो	और मुक़ाबले में मज़बूत रहो

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न कर, बेशक तू नहीं ख़िलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) क़ुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो), सो जिन लोगों ने हिज्रत की और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए, मैं उन की बुराइयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा और उन्हें बाग़ात में दाख़िल करूँगा, बहती हैं जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फ़ाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आराम गाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और बेशक अहले किताब में से बाज़ वह हैं जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र करो, और मुक़ाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

آيَاتُهَا ١٧٦ ❀ سُوْرَةُ النِّسَآءِ (٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

रुकूआ़त 24 | (4) सूरतुन निसा (औरतें) | आयात 176

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ़) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औ़रतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (ख़याल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहबान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक़) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औ़रतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौंडी के तुम मालिक हो, यह उस के क़रीब है कि न झुक पड़ोगे। (3)

और औ़रतों को उन के मेहर खुशी से दे दो, फिर अगर वह खुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार खुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेअ़क्लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीआ़) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मअ़रूफ़ बात। (5)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

जान	से	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	अपना रब	डरो	लोगो	ऐ

وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا

बहुत	मर्द (जमा)	दोनों से	और फैलाए	जोड़ा उस का	उस से	और पैदा किया	एक

وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ

और रिश्ते	उस से (उस के नाम पर)	आपस में मांगते हो	वह जो	और अल्लाह से डरो	और औ़रतें

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿١﴾ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	यतीम (जमा)	और दो	1	निगहबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	खाओ	और न	पाक से	नापाक	बदलो	और न

اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿٢﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

कि न	तुम डरो	और अगर	2	बड़ा	गुनाह	है	बेशक	अपने माल	तरफ़ (साथ)

تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ

तुम्हें	पसन्द हो	जो	तो निकाह कर लो	यतीमों	में	इन्साफ़ कर सकोगे

مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا

इन्साफ़ कर सकोगे	कि न	तुम्हें अन्देशा हो	फिर अगर	और चार, चार	और तीन, तीन	दो, दो	औ़रतें	से

فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿٣﴾

3	झुक पड़ो	कि न	क़रीब तर	यह	लौंडी जिस के तुम मालिक हो	जो	या	तो एक ही

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

तुम को	खुशी से छोड़ दें	फिर अगर	खुशी से	उन के मेहर	औ़रतें	और दे दो

عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ﴿٤﴾ وَلَا تُؤْتُوا

दो	और न	4	मज़ेदार, खुशगवार	तो उसे खाओ	दिल से	उस से	कुछ

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ

और उन्हें खिलाते रहो	सहारा	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने बनाया	जो	अपने माल	बेअ़क्ल (जमा)

فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٥﴾

5	मअ़रूफ़	बात	उन से	और कहो	और उन्हें पहनाते रहो	उस में

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ

और आज़माते रहो	यतीम (जमा)	यहां तक कि	जब	वह पहुँचें	निकाह	फिर अगर	तुम पाओ

مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

उन में	सलाहियत	तो हवाले कर दो	उन के	उन के माल	और न	वह खाओ

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا

ज़रूरत से ज़ियादा	और जल्दी जल्दी	कि	वह बड़े हो जाएंगे	और जो	हो	ग़नी

فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ

बचता रहे	और जो	हो	हाजत मन्द	तो खाए	दस्तूर के मुताबिक़

فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ

फिर जब	हवाले करो	उन के	उन के माल	तो गवाह कर लो	उन पर

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٦﴾ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ

और काफ़ी	अल्लाह	हिसाब लेने वाला	6	मर्दों के लिए	हिस्सा	उस से जो	छोड़ा

الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

माँ बाप	और क़राबतदार	और औरतों के लिए	हिस्सा	उस से जो

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ

छोड़ा	माँ बाप	और क़राबतदार	उस में से	थोड़ा	उस से	या	ज़ियादा

نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿٧﴾ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ

हिस्सा	मुक़र्रर किया हुआ	7	और जब	हाज़िर हों	तक़सीम के वक़्त

اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ

रिश्तेदार	और यतीम	और मिस्कीन	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	उस से

وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ

और कहो	उन से	बात	अच्छी	8	और चाहिए कि डरें	वह लोग

لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا

अगर	छोड़ जाएं	से	अपने पीछे	औलाद	नातवां	उन्हें फ़िक्र हो

عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٩﴾

उन का	पस चाहिए कि वह डरें अल्लाह से	और चाहिए कि कहें	बात	सीधी	9

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا

बेशक	जो लोग	खाते हैं	माल	यतीमों	ज़ुल्म से	उस के सिवा कुछ नहीं

ع ١٠/١٢

يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿١٠﴾

वह भर रहे हैं	में	अपने पेट	आग	और अ़नक़रीब दाख़िल होंगे	आग (दोज़ख़)	10

और यतीमों को आज़माते रहो यहां तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदबीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो ग़नी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और क़राबतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और क़राबतदारों ने, ख़्वाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद तो उन्हें उन के तअ़ल्लुक़ से कैसा कुछ डर होता, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

बेशक जो लोग ज़ुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अ़नक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ

हों	फिर अगर	दो औरतें	हिस्सा	मानिंद (बराबर)	मर्द को	तुम्हारी औलाद	में	तुम्हें वसीयत करता है अल्लाह

نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا

तो उस के लिए	एक	हो	और अगर	जो छोड़ा (तरका)	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो	ज़ियादा	औरतें

النِّصْفُ ۗ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ

अगर हो	छोड़ा (तरका)	उस से जो	छटा हिस्सा (1/6)	उन दोनों में से	हर एक के लिए	और माँ बाप के लिए	निस्फ़ (1/2)

لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ

तिहाई (1/3)	तो उस की माँ का	माँ बाप	और उस के वारिस हों	उस की औलाद	न हो	फिर अगर	उस की औलाद

فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	छटा (1/6)	तो उस की माँ का	कई भाई बहन	उस के हों	फिर अगर

يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ ۚ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

नज़दीक तर तुम्हारे लिए	उन में से कौन	तुम को नहीं मालूम	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप	या क़र्ज़	उस की वसीयत की हो

نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

11	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह का	हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है	नफ़ा

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ

हो	फिर अगर	उन की कोई औलाद	न हो	अगर	तुम्हारी बीवियां	जो छोड़ मरें	आधा (1/2)	और तुम्हारे लिए

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

उस की	वह वसीयत कर जाएं	वसीयत	बाद	उस में से जो वह छोड़ें	चौथाई (1/4)	तो तुम्हारे लिए	उन की औलाद

اَوْ دَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	तुम्हारी औलाद	न हो	अगर	तुम छोड़ जाओ	उस में से जो	चौथाई (1/4)	और उन के लिए	या क़र्ज़

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	उस में से जो तुम छोड़ जाओ	आठवां (1/8)	तो उन के लिए	औलाद	हो तुम्हारी

تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ

या औरत	जिस का बाप बेटा न हो	मीरास हो	ऐसा मर्द	हो	और अगर	या क़र्ज़	उस की	तुम वसीयत करो

وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

ज़ियादा	हों	फिर अगर	छटा (1/6)	उन में से हर एक	तो तमाम के लिए	या बहन	भाई	और उस

مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ

जिस की वसीयत की जाए	वसीयत	उस के बाद	तिहाई (1/3) में	शरीक	तो वह सब	उस से (एक से)

اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

12	हिल्म वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अल्लाह से	हुक्म	नुक़सान दह न हो	या क़र्ज़

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निस्फ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई हिस्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) क़र्ज़, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है, यह अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (11)

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें चौथाई हिस्सा है वसीयत के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) क़र्ज़, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) क़र्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औरत की जो "कलाला" है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) क़र्ज़ (बशर्त यह कि किसी को) नुक़सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। (12)

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ

बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त करे	और जो	अल्लाह की (मुक़र्रर कर दह) हदें	यह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ

कामयाबी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ

उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफ़रमानी करे	और जो	13	बड़ी

ع ٢ ١٣ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ وَالّٰتِيْ

और जो औ़रतें	14	ज़लील करने वाला	अ़ज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा	आग	वह उसे दाख़िल करेगा

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ

उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औ़रतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों

اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ

घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार

حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

15	कोई सबील	उन के लिए	कर दे अल्लाह	या	मौत	उन्हें उठा ले	यहां तक कि

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا

और इस्लाह कर लें	फिर अगर वह तौबा करें	तो उन्हें ईज़ा दो	तुम में से	मुर्तकिब हों	और जो दो

فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

16	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	है	बेशक अल्लाह	उन का	तो पीछा छोड़ दो

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ

नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा क़ुबूल करना	उस के सिवा नहीं

ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ

तौबा क़ुबूल करता है अल्लाह	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर

عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ

तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह	उन की

لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहां तक	बुराइयां	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ

मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे	मौत

وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

18	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफ़िर	और वह

यह अल्लाह की (मुक़र्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करेगा वह उसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाख़िल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औ़रतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औ़रतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराइयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़्र में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औ़रतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औ़रतों के साथ दस्तूर के मुताबिक़ गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो ऐ़न मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक बीवी की जगह दूसरी बीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को ख़ज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहबत कर चुका), और उन्हों ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया। (21)

और उन औ़रतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था। (22)

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं, और भतीजियां और बेटियां बहन की (भांजियां), और तुम्हारी रज़ाई माएँ जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औ़रतों की माएँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियां जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन बीवियों से जिन से तुम ने सुहबत की, पस अगर तुम ने उन से सुहबत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां जो तुम्हारी पुश्त से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (23)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا

और न	ज़बरदस्ती	औ़रतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ

मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो

بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक़	और उन से गुज़रान करो	खुली हुई	बेहयाई

فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۹﴾

19	बहुत	भलाई	उस में	और रखे अल्लाह	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا

ख़ज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी बीवी	जगह (बदले)	एक बीवी	बदल लेना	तुम चाहो	और अगर

فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۲۰﴾

20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ

तुम से	और उन्हों ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۲۱﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا

मगर	औ़रतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21	पुख़्ता	अ़हद

مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۲۲﴾ ع حُرِّمَتْ ع ٣ ٨ ١٤

हराम की गईं	22	रास्ता (तरीक़ा)	और बुरा	और ग़ज़ब की बात	बेहयाई	था	बेशक वह	जो गुज़र चुका

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

और भतीजियां	और तुम्हारी ख़ालाएं	और तुम्हारी फूफियां	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियां	तुम्हारी माएँ	तुम पर

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी माएँ	और बहन कि बेटियां

وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ

जिन से	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियां	और तुम्हारी औ़रतों की माएँ

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫

तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहबत	पस अगर	उन से	तुम ने सुहबत की

وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुश्त	से	जो	तुम्हारे बेटे	और बीवियां

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۳﴾ ۙ

23	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	पहले गुज़र चुका	मगर जो

الجزء ٥

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

तुम्हारे दाहने हाथ	मालिक हो जाएं	जो - जिस	मगर	औरतें	से	और ख़ावन्द वाली औरतें

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا

तुम चाहो	कि	उन के	सिवा	तुम्हारे लिए	और हलाल की गईं	तुम पर	अल्लाह का हुक्म

بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ

तो उन को दो	उन में से	उस से	तुम नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करो	पस जो	हवसरानी को	न	क़ैदे (निकाह) में लाने को	अपने मालों से

اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उस से	तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ	उस में जो	तुम पर	गुनाह	और नहीं	उन के मेहर मुक़र्रर किए हुए

الْفَرِيْضَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ

ताक़त रखे	न	और जो	24	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	मुक़र्रर किया हुआ

مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं	जो	तो-से	मोमिन (जमा)	बीवियां	कि निकाह करे	तुम में से मक़्दूर

مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

बाज़ (एक दूसरे से)	से	तुम्हारे बाज़	तुम्हारे ईमान को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	मोमिन मुसलमान	तुम्हारी कनीज़ें	से

فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ

क़ैदे (निकाह) में आने वालियां	दस्तूर के मुताबिक़	उन के मेहर	और उन को दो	उन के मालिक	इजाज़त से	सो उन से निकाह करो

غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

वह करें	फिर अगर	निकाह में आजाएं	पस जब	चोरी छुपे	आशनाई करने वालियां	और न	मस्ती निकालने वालियां	न कि

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ

यह	(सज़ा) अ़ज़ाब	से	आज़ाद औरतें	पर	जो	निस्फ़	तो उन पर	बेहयाई

لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बेहतर	तुम सब्र करो	और अगर	तुम में से	तक्लीफ़ (ज़िना)	डरा	उस के लिए जो

ع ١

رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	वह जो कि	तरीक़े	और तुम्हें हिदायत दे	तुम्हारे लिए	ताकि बयान कर दे	चाहता है अल्लाह	25	रहम करने वाला

وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ

तवज्जुह करे	कि	चाहता है	और अल्लाह	26	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम पर	और तवज्जुह करे

عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

27	बहुत ज़ियादा	फिर जाना	फिर जाओ	कि	ख़्वाहिशात	जो लोग पैरवी करते हैं	और चाहते हैं	तुम पर

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

28	कमज़ोर	इन्सान	और पैदा किया गया	तुम से	हलका कर दे	कि	चाहता है अल्लाह

और ख़ावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं बशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से क़ैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफ़ा (लज़्ज़त) हासिल करें तो उन को उन के मुक़र्रर किए हुए मेहर देदें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़र्रर कर लेने के बाद, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़्दूर न हो कि वह (आज़ाद) मुसलमान बीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (क़ब्ज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम जिन्स हो), सो उन के मालिक की इजाज़त से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, क़ैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशनाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह बेहयाई का काम करें तो उन पर निस्फ़ सज़ा है जो आज़ाद औरतों पर है, यह उस के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक्लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सब्र करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीक़ों की, और तुम पर तवज्जुह करे (तौबा क़ुबूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तवज्जुह करे तुम पर, और जो लोग ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

ऐ मोमिनों अपने माल आपस में न खाओ नाहक़ (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की ख़ुशी से कोई तिजारत हो, और क़त्ल न करो एक दूसरे को, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है। **(29)**

और जो शख़्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और ज़ुल्म से, पस अ़नक़रीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। **(30)**

अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहे जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इ़ज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। **(31)**

और आर्ज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और औ़रतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है। **(32)**

और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन और क़राबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अ़हद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह (मुत्तला) है। **(33)**

मर्द औ़रतों पर हाकिम (निगरान) हैं इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्हों ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) ताबे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अ़दम मौजूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और तुम्हें डर हो जिन औ़रतों की बद ख़ूई का पस उन को समझाओ और ख़्वाबगाहों में उन को तन्हा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इल्ज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। बेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। **(34)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

नाहक़	आपस में	अपने माल	न खाओ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ

अपने नफ़्स (एक दूसरे)	और न क़त्ल करो	तुम से	आपस की खुशी से	कोई तिजारत	यह कि हो	मगर

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا

और ज़ुल्म से	सरकशी (ज़ोर)	यह	करेगा	और जो	29	बहुत मेहरबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ اِنْ

अगर	30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	आग	उस को डालेंगे	पस अ़नक़रीब

تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे	तुम्हारे छोटे गुनाह	तुम से	हम दूर कर देंगे	उस से	जो मना किए गए	बड़े गुनाह	तुम बचते रहो

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

बाज़	पर	तुम में से बाज़	उस से	जो बड़ाई दी अल्लाह	आर्ज़ू करो	और न	31	इ़ज़्ज़त	मुक़ाम

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	और औ़रतों के लिए	उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए

وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾ وَلِكُلٍّ

और हर एक के लिए	32	जानने वाला	चीज़	हर	है	बेशक अल्लाह	उस के फ़ज़्ल से	और अल्लाह से सवाल करो (मांगो)

جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ

बन्ध चुका	और वह जो कि	और क़राबतदार	वालिदैन	छोड़ मरें	उस से जो	वारिस	हम ने मुक़र्रर किए

اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع ٥ ٨ ٢

33	गवाह (मुत्तला)	हर चीज़	ऊपर	है	बेशक अल्लाह	उन का हिस्सा	तो उन को दे दो	तुम्हारा अ़हद

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى

उन में से बाज़ पर	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	इस लिए कि	औ़रतें	पर	हाकिम (निगरान)	मर्द

بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ

निगहबानी करने वालियां	ताबे फ़रमान	पस नेकोकार औ़रतें	अपने माल	से	उन्हों ने ख़र्च किए	और इस लिए कि	बाज़

لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ

पस उन को समझाओ	उन की बद खूई	तुम डरते हो	और वह जो	अल्लाह	हिफ़ाज़त की	उस से जो	पीठ पिछे

وَاهْجُرُوْهُنَّ فِى الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

वह तुम्हारा कहा मानें	फिर अगर	और उन को मारो	ख़्वाबगाहों में	और उन को तन्हा छोड़ दो

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

34	सब से बड़ा	सब से आला	है	बेशक अल्लाह	कोई राह	उन पर	तो न तलाश करो

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ

मर्द का ख़ानदान	से	एक मुन्सिफ़	तो मुक़र्रर करदो	उन के दरमियान	ज़िद (कशमकश)	तुम डरो	और अगर

وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ

उन दोनों में	अल्लाह	मुवाफ़क़त कर देगा	सुलह कराना	दोनों चाहेंगे	अगर	औरत का ख़ानदान	से	और एक मुन्सिफ़

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ

और न शरीक करो उस के साथ	और तुम अल्लाह की इबादत करो	35	बहुत बाख़बर	बड़ा जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

और यतीम (जमा)	और क़राबतदारों से	अच्छा सुलूक	और माँ बाप से	कुछ-किसी को

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ

अज्नबी	और हमसाया	क़राबत वाले	और हमसाया	और मोहताज (जमा)

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	तुम्हारी मिल्क (कनीज़-गुलाम)	और जो	और मुसाफ़िर	और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ﴿۳۶﴾ ۙ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ

और हुक्म करते (सिखाते) हैं	बुख़्ल करते हैं	जो लोग	36	बड़ मारने वाला	इतराने वाला	हो	जो	दोस्त नहीं रखता

النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और छुपाते हैं	बुख़्ल	लोग

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۳۷﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

ख़र्च करते हैं	और जो लोग	37	ज़िल्लत वाला	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार कर रखा है

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

आख़िरत के दिन पर	और न	अल्लाह पर	ईमान लाते	और नहीं	लोग	दिखावे को	अपने माल

وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾ وَمَاذَا

और क्या	38	साथी	तो बुरा	साथी	उस का	शैतान	हो	और जो-जिस

عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ

अल्लाह	उन्हें दिया	उस से जो	और वह ख़र्च करते	और यौमे आख़िरत पर	अल्लाह पर	अगर वह ईमान लाते	उन पर

وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ

हो	और अगर	ज़र्रा	बराबर	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	39	ख़ूब जानने वाला	उन को	अल्लाह	और है

حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيْفَ

फिर कैसा-क्या	40	बड़ा	सवाब	अपने पास से	और देता है	उस को कई गुना करता है	कोई नेकी

اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ ؕ

41	गवाह	इन के	पर	आप को	और बुलाएंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	हम बुलाएंगे	जब

وقف النبي عليه السلام

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुक़र्रर कर दो एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान मुवाफ़क़त कर देगा, बेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और क़राबतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और क़राबत वाले हमसाया से और अज्नबी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मज्लिस) से और मुसाफ़िर से और जो तुम्हारी मिल्क हों (कनीज़ गुलाम), बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़्ल करते हैं और लोगों को बुख़्ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आख़िरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़्सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और उस से ख़र्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को ख़ूब जानने वाला है। (39)

बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

يَوۡمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَعَصَوُا الرَّسُوۡلَ لَوۡ تُسَوّٰى

काश बराबर कर दी जाए	रसूल	और नाफ़रमानी की	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	आर्ज़ू करेंगे	उस दिन

بِهِمُ الۡاَرۡضُ ؕ وَلَا يَكۡتُمُوۡنَ اللّٰهَ حَدِيۡثًا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ ع ٦ ٩ ٣

वह लोग जो	ऐ	42	कोई बात	अल्लाह	छुपाएंगे	और न	ज़मीन	उन पर

اٰمَنُوۡا لَا تَقۡرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنۡتُمۡ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعۡلَمُوۡا

समझने लगो	यहां तक कि	नशे	जब कि तुम	नमाज़	न नज़दीक जाओ	ईमान लाए

مَا تَقُوۡلُوۡنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىۡ سَبِيۡلٍ حَتّٰى تَغۡتَسِلُوۡا ؕ

तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	हालते सफ़र	सिवाए	गुस्ल की हाजत में	और न	तुम कहते हो	जो

وَاِنۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ

से	तुम में	कोई	या आए	सफ़र	पर-में	या	मरीज़	तुम हो	और अगर

الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَيَمَّمُوۡا

तो तयम्मुम करो	पानी	फ़िर तुम ने न पाया	औरतें	तुम पास गए	या	जाए ज़रूर

صَعِيۡدًا طَيِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	और अपने हाथ	अपने मुँह	मसह कर लो	पाक	मिट्टी

عَفُوًّا غَفُوۡرًا ﴿۴۳﴾ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ اُوۡتُوۡا نَصِيۡبًا مِّنَ الۡكِتٰبِ

किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	43	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

يَشۡتَرُوۡنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ تَضِلُّوا السَّبِيۡلَ ﴿۴۴﴾ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	44	रास्ता	भटक जाओ	कि	और वह चाहते हैं	गुमराही	मोल लेते हैं

اَعۡلَمُ بِاَعۡدَآئِكُمۡ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيۡرًا ﴿۴۵﴾

45	मददगार	अल्लाह	और काफ़ी	हिमायती	अल्लाह	और काफ़ी	तुम्हारे दुश्मनों को	खूब जानता है

مِنَ الَّذِيۡنَ هَادُوۡا يُحَرِّفُوۡنَ الۡكَلِمَ عَنۡ مَّوَاضِعِهٖ

उस की जगह	से	कलिमात	तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं)	यहूदी हो गए	वह लोग जो	से (बाज़)

وَيَقُوۡلُوۡنَ سَمِعۡنَا وَعَصَيۡنَا وَاسۡمَعۡ غَيۡرَ مُسۡمَعٍ وَّرَاعِنَا

और राइना	सुनवाया जाए	न	और सुनो	और हम ने नाफ़रमानी की	हम ने सुना	और कहते हैं

لَيًّۢا بِاَلۡسِنَتِهِمۡ وَطَعۡنًا فِى الدِّيۡنِ ؕ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ قَالُوۡا سَمِعۡنَا

हम ने सुना	कहते	वह	और अगर	दीन में	ताने की नीयत से	अपनी ज़बानों को	मोड़ कर

وَاَطَعۡنَا وَاسۡمَعۡ وَانۡظُرۡنَا لَـكَانَ خَيۡرًا لَّهُمۡ وَاَقۡوَمَ ۙ

और ज़ियादा दुरुस्त	उन के लिए	बेहतर	तो होता	और हम पर नज़र कीजिए	और सुनिए	और हम ने इताअ़त की

وَلٰـكِنۡ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفۡرِهِمۡ فَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۴۶﴾

46	थोड़े	मगर	पस ईमान नहीं लाते	उन के कुफ़्र के सबब	अल्लाह	उन पर लानत की	और लेकिन

उस दिन आर्ज़ू करेंगे वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। **(42)**

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगो जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाजत हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आए या तुम औरतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। **(43)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। **(44)**

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफ़ी है मददगार। **(45)**

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज़ को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं "हम ने सुना" और "नाफ़रमानी की" (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए! और राइना (कहते हैं) अपनी ज़बानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीयत से, और अगर वह कहते "हम ने सुना और इताअ़त की" (और कहते) "सुनिए और हम पर नज़र कीजिए" तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। **(46)**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا

जो	तस्दीक़ करने वाला	हम ने नाज़िल किया	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	ऐ

مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ

उन की पीठ	पर	फिर उलट दें	चेहरे	हम मिटा दें	कि	इस से पहले	तुम्हारे पास

اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾

47	होकर (रहने वाला)	अल्लाह का हुक्म	और है	हफ़्ते वाले	हम ने लानत की	जैसे	हम उन पर लानत करें	या

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ

जिस को	उस के सिवा	जो	और बख़्शता है	शरीक ठहराए उस का	कि	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह

يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿۴۸﴾

48	बड़ा	गुनाह	पस उस ने बान्धा	अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जो-जिस	वह चाहे

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ

जिसे	पाक करता है	बल्कि अल्लाह	अपने आप को	पाक मुक़द्दस कहते हैं	वह जो कि	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा

يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۴۹﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	बान्धते हैं	कैसा	देखो	49	धागे के बराबर	और उन पर ज़ुल्म न होगा	वह चाहता है

ع ٨ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۰﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	50	सरीह	गुनाह	यही	और काफ़ी है	झूट

اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

और सरकश (शैतान)	बुत (जमा)	वह मानते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَاۤءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	राहे रास्त पर	यह लोग	जिन लोगों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	और कहते हैं

سَبِيْلًا ﴿۵۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ

लानत करे	और जिस पर	उन पर अल्लाह ने लानत की	वह लोग जो	यही लोग	51	राह

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿۵۲﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ

सलतनत	से	कोई हिस्सा	उन का	क्या	52	कोई मददगार	तू पाएगा उस का	तो हरगिज़ नहीं	अल्लाह

فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿۵۳﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ

लोग	वह हसद करते हैं	या	53	तिल बराबर	लोग	न दें	फिर उस वक़्त

عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ

सो हम ने दिया	अपना फ़ज़्ल	से	जो अल्लाह ने उन्हें दिया	पर

اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

54	बड़ा	मुल्क	और उन्हें दिया	और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम (अ)

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मस्ख़ करदें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे "हफ़्ते वालों" पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुक़द्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते हैं, और यही सरीह गुनाह काफ़ी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर हैं। (51)

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाएगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक़्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़्ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहन्नम काफ़ी है भड़कती हुई आग। (55) जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़्र किया बेशक उन्हें हम अ़नक़रीब आग में डाल देंगे, जिस वक़्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अ़लावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अ़ज़ाब चखें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56) और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम अ़नक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी बीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57) बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58) ऐ ईमान वालो! इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुकूमत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रुजूअ़ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहते हैं कि (अपना) मुक़दमा तागूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ

जहन्नम	और काफ़ी	उस से	रुका रहा	कोई	और उन में से	उस पर	कोई ईमान लाया	फिर उन में से

سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا

जिस वक़्त	आग	हम उन्हें डालेंगे	अ़नक़रीब	हमारी आयतों का	कुफ़्र किया	जो लोग	बेशक	55	भड़कती हुई आग

نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

अ़ज़ाब	ताकि वह चखें	उस के अ़लावा	खालें	हम बदल देंगे	उन की खालें	पक जाएंगी

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ الربع

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और वह लोग जो	56	हिक्मत वाला	ग़ालिब	है	बेशक अल्लाह

سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ

हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	अ़नक़रीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे

لَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ؗ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	57	घनी	छाऊँ	और हम उन्हें दाख़िल करेंगे	पाक सुथरी	बीवियां	उस में	उन के लिए

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ

लोग	दरमियान	तुम फ़ैसला करने लगो	और जब	अमानत वाले	तरफ़ (को)	अमानतें	पहुंचा दो	कि	तुम्हें हुक्म देता है

اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

है	बेशक अल्लाह	इस से	नसीहत करता है तुम्हें	अच्छी	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	तुम फ़ैसला करो	तो

سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا

और इताअ़त करो	इताअ़त करो अल्लाह की	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	58	देखने वाला	सुनने वाला

الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ

तो उस को रुजूअ़ करो	किसी बात में	तुम झगड़ पड़ो	फिर अगर	तुम में से	और साहिबे हुकूमत	रसूल

اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	अगर	और रसूल (स)	अल्लाह की तरफ़

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ ع ٨ ٥

दावा करते हैं	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	59	अन्जाम	और बहुत अच्छा	बेहतर	यह

اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	आप (स) से पहले	और जो नाज़िल किया गया	आप (स) की तरफ़	उस पर जो नाज़िल किया गया	ईमान लाए	कि वह

اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا

वह न मानें	कि	हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका	तागूत (सरकश)	तरफ़ (पास)	मुक़दमा ले जाएं	कि

بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا ﴿۶۰﴾

60	दूर	गुमराही	उन्हें बहका दे	कि	शैतान	और चाहता है	उस को

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ

रसूल (स)	और तरफ़	जो अल्लाह ने नाज़िल किया	तरफ़	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब

رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۚ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ اِذَآ

जब	फिर कैसी	61	रुक कर	आप से	हटते हैं	मुनाफ़िक़ीन	आप देखेंगे

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ

फिर वह आएं आप (स) के पास	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई मुसीबत	उन्हें पहुँचे

يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ

यह लोग	62	और मुवाफ़क़त	भलाई	सिवाए (सिर्फ़)	हम ने चाहा	कि	अल्लाह की	क़सम खाते हुए

الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ ۗ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ

और उन को नसीहत करें	उन से	तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें	उन के दिलों में	जो	अल्लाह जानता है	वह जो कि

وَقُلْ لَّهُمْ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا ۢ بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ

कोई रसूल	हम ने भेजा	और नहीं	63	असर कर जाने वाली बात	उन के हक़ में	उन से	और कहें

اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपनी जानों पर	जब उन्हों ने ज़ुल्म किया	यह लोग	और अगर	अल्लाह के हुक्म से	ताकि इताअ़त की जाए	मगर

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

रसूल	उन के लिए	और मग़्फ़िरत चाहता	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते वह	वह आते आप (स) के पास

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

वह मोमिन न होंगे	पस क़सम है आप के रब की	64	मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को

حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ

अपने दिलों में	वह न पाएं	फिर	उन के दरमियान	झगड़ा उठे	उस में जो	आप को मुन्सिफ़ बनाएं	जब तक

حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا

हम लिख देते (हुक्म करते)	और अगर	65	खुशी से	और तसलीम कर लें	आप (स) फ़ैसला करें	उस से जो	कोई तंगी

عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِاخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ

अपने घर	से	या निकल जाओ	अपने आप	क़त्ल करो तुम	कि	उन पर

مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ

नसीहत की जाती है	जो	करते	यह लोग	और अगर	उन से	सिवाए चन्द एक	वह यह न करते

بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ

हम उन्हें देते	और उस सूरत में	66	साबित रखने वाला	और ज़ियादा	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उस की

مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

68	सीधा	रास्ता	और हम उन्हें हिदायत देते	67	बड़ा (अ़ज़ीम)	अजर	अपने पास से

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ़ आओ और रसूल (स) की तरफ़ तो आप (स) मुनाफ़िक़ों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलु तही करते हैं)। (61)

फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की क़सम खाते हुए आएं कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफ़क़त। (62)

यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तग़ाफ़ुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक़ में असर कर जाने वाली बात कहें। (63)

और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअ़त की जाए, और यह लोग जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान। (64)

पस क़सम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुन्सिफ़ न बनाएं उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फ़ैसले से कोई तंगी न पाएं और उस को खुशी से (पूरी तरह) तसलीम करलें। (65)

और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर बार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (कभी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66)

और उस सूरत में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67)

और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

और जो इताअ़त करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आम किया (यानी) अंबिया और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। **(69)**

यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़्ल है, और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला। **(70)**

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकटठे हो कर कूच करो। **(71)**

बेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आम किया कि मैं उन के साथ न था। **(72)**

और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़ज़्ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, "ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता"। **(73)**

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (कुरबान करते) हैं आख़िरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अ़नक़रीब उसे बड़ा अजर देंगे। **(74)**

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औरतों और बच्चों (की ख़ातिर) जो दुआ़ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। **(75)**

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ

इन्आम किया	उन लोगों के साथ	तो यही लोग	और रसूल	अल्लाह	इताअ़त करे	और जो

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ

और सालिहीन	और शुहदा	और सिद्दीक़ीन	अंबिया	से (यानी)	उन पर	अल्लाह

وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝٦٩ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى

और काफ़ी	अल्लाह से	फ़ज़्ल	यह	69	साथी	यह लोग	और अच्छे

بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۝٧٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ع ١١ ٦

फिर निकलो	अपने बचाओ (हथियार)	ले लो	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	70	जानने वाला	अल्लाह

ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ۝٧١ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	ज़रूर देर लगादेगा	वह है जो	तुम में	और बेशक	71	सब	या निकलो (कूच करो)	जुदा जुदा

اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ

उन के साथ	मैं न था	जब	मुझ पर	बेशक अल्लाह ने इन्आम किया	कहे	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे

شَهِيْدًا ۝٧٢ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ

न थी	गोया	तो ज़रूर कहेगा	अल्लाह से	कोई फ़ज़्ल	तुम्हें पहुँचे	और अगर	72	हाज़िर-मौजूद

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ

तो मुराद पाता	उन के साथ	मैं होता	ऐ काश मैं	कोई दोस्ती	और उस के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧٣ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ

बेचते हैं	वह जो कि	अल्लाह का रास्ता	में	सो चाहिए कि लड़ें	73	बड़ी	मुराद

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	लड़े	और जो	आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी

فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٧٤ وَمَا لَكُمْ

तुम्हें	और क्या	74	बड़ा अजर	हम उसे देंगे	अ़नक़रीब	ग़ालिब आए	या	फिर मारा जाए

لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ

मर्द (जमा)	से	और कमज़ोर (बेबस)	अल्लाह का रास्ता	में	तुम नहीं लड़ते

وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا

हमें निकाल	ऐ हमारे रब	कहते हैं (दुआ़)	जो	और बच्चे	और औरतें

مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ

से	हमारे लिए	और बनादे	उस के रहने वाले	ज़ालिम	बस्ती	इस	से

لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝٧٥

75	मददगार	अपने पास	से	हमारे लिए	और बनादे	(हिमायती) दोस्त	अपने पास

ع ١٠ ٦

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अल्लाह का रास्ता	में	वह लड़ते हैं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ

शैतान	दोस्त (साथी)	सो तुम लड़ो	तागूत (सरकश)	रास्ता	में	वह लड़ते हैं

اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ

कहा गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	76	कमज़ोर (बोदा)	है	शैतान	चाल	बेशक

لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا

फिर जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ाइम करो	अपने हाथ	रोक लो	उन को

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ

जैसे अल्लाह का डर	लोग	डरते हैं	उन में से	एक फ़रीक़	जब	लड़ना (जिहाद)	उन पर फ़र्ज़ हुआ

اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ

लड़ना (जिहाद)	हम पर	तू ने क्यों लिखा	ऐ हमारे रब	और वह कहते हैं	डर	ज़ियादा	या

لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ

और आख़िरत	थोड़ा	दुनिया	फ़ाइदा	कह दें	थोड़ी	मुद्दत	तक	हमें ढील दी	क्यों न

خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا

तुम होगे	जहां कहीं	77	धागे बराबर	और न तुम पर ज़ुल्म होगा	परहेज़गार के लिए	बेहतर

يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

उन्हें पहुँचे	और अगर	मज़बूत	बुर्जों में	अगरचे तुम हो	मौत	तुम्हें पा लेगी

حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कुछ बुराई	उन्हें पहुँचे	और अगर	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	यह	वह कहते हैं	कोई भलाई

يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ فَمَالِ

तो क्या हुआ	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सब	कह दें	आप (स) की तरफ़ से	से	यह	वह कहते हैं

هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ

कोई भलाई	तुझे पहुँचे	जो	78	बात	कि समझें	नहीं लगते	क़ौम	इस

فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۗ وَاَرْسَلْنٰكَ

और हम ने तुम्हें भेजा	तो तेरे नफ़्स से	कोई बुराई	तुझे पहुँचे	और जो	सो अल्लाह से

لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ

रसूल (स)	इताअत की	जो-जिस	79	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	रसूल	लोगों के लिए

فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ ؕ

80	निगहबान	उन पर	हम ने आप (स) को भेजा	तो नहीं	रू गर्दानी की	और जो-जिस	अल्लाह	पस तहक़ीक़ इताअत की

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़्सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है। **(76)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और क़ाइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर ज़ुल्म न होगा धागे बराबर (भी), **(77)**

तुम जहां कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस क़ौम को (उन लोगों को) क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मअ़लूम नहीं होते) **(78)**

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफ़ी है गवाह। **(79)**

जिस ने रसूल की इताअ़त की पस तहक़ीक़ उस ने अल्लाह की इताअ़त की, और जिस ने रू गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहबान नहीं भेजा। **(80)**

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ز فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ

एक गिरोह	रात को मशवरा करता है	आप (स) के पास	से	बाहर जाते हैं	फिर जब	(हम ने) हुक्म माना	और वह कहते हैं

مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِىْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ

मुँह फेरलें	जो वह रात को मशवरे करते हैं	लिख लेता है	और अल्लाह	कहते हैं	उस के ख़िलाफ़ जो	उन से

عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

फिर क्या वह ग़ौर नहीं करते?	81	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	अल्लाह पर	और भरोसा करें	उन से

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا

इख़्तिलाफ़	उस में	ज़रूर पाते	अल्लाह के सिवा	पास	से	और अगर होता	कुरआन

كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ

उसे	मशहूर कर देते हैं	ख़ौफ़	या	अम्न	से (की)	कोई ख़बर	उन के पास आती है	और जब	82	बहुत

وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ

जो लोग	तो उस को जान लेते	अपने में से	हाकिम	और तरफ़	रसूल की तरफ़	उसे पहुँचाते	और अगर

يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ

तुम पीछे लग जाते	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	उन से	सही नतीजा निकाल लिया करते हैं

الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا

मगर	मुकल्लफ़ नहीं	अल्लाह की राह	में	पस लड़ें	83	चन्द एक	सिवाए	शैतान

نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ

जिन लोगों ने	जंग	रोक दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह	मोमिन (जमा)	और आमादा करें	अपनी ज़ात

كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	जो	84	सज़ा देना	और सब से सख़्त	जंग	सख़्त तरीन	और अल्लाह	कुफ़्र किया (काफ़िर)

حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ

होगा - उस के लिए	बुरी बात	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	और जो	उस में से	हिस्सा	होगा - उस के लिए	नेक बात

كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ

तुम्हें दुआ दे	और जब	85	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	और है	उस से	बोझ (हिस्सा)

بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

पर (का)	है	बेशक अल्लाह	या वही लौटा दो (कह दो)	उस से	बेहतर	तो तुम दुआ दो	किसी दुआ (सलाम) से

كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى النصف

तरफ़	वह तुम्हें ज़रूर इकट्ठा करेगा	उस के सिवा	नहीं इबादत के लाइक़	अल्लाह	86	हिसाब करने वाला	हर चीज़

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ ع ١١ ع ٨

87	बात में	अल्लाह से	ज़ियादा सच्चा	और कौन?	इस में	नहीं शक	रोज़े क़ियामत

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के ख़िलाफ़ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़। **(81)**

फिर क्या वह कुरआन पर ग़ौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। **(82)**

और जब उन के पास कोई अम्न की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहक़ीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। **(83)**

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमादा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। **(84)**

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का बोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। **(85)**

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। **(86)**

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह जरूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिस में कोई शक नहीं, और कौन ज़ियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। **(87)**

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ۭ

उस के सबब जो उन्हों ने कमाया (किया)	उन्हें उलट दिया (औन्धा कर दिया)	और अल्लाह	दो फ़रीक़	मुनाफ़िक़ीन के बारे में	सो क्या हुआ तुम्हें?

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	अल्लाह ने गुमराह किया	जो-जिस	कि राह पर लाओ	क्या तुम चाहते हो?

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا

वह काफ़िर हुए	जैसे	काश तुम काफ़िर हो जाओ	वह चाहते हैं	88	कोई राह	उस के लिए	पस तुम हरगिज़ न पाओगे

فَتَكُوْنُوْنَ سَوَاۗءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَاۗءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	दोस्त	उन से	पस तुम न बनाओ	बराबर	तो तुम हो जाओ

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन को पकड़ो	मुँह मोड़ें	फिर अगर	अल्लाह की राह	में

وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۠ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾ اِلَّا

मगर	89	मददगार	और न	दोस्त	उन से	बनाओ	और न	तुम उन्हें पाओ

الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ

या	अ़हद (मुआ़हदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	क़ौम	तरफ़ (से)	मिल गए हैं (तअ़ल्लुक़ रखते हैं)	जो लोग

جَاۗءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا

लड़ें	या	वह तुम से लड़ें	कि	उन के सीने (दिल)	तंग हो गए	वह तुम्हारे पास आएं

قَوْمَهُمْ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

फिर अगर	तो वह तुम से ज़रूर लड़ते	तुम पर	उन्हें मुसल्लत कर देता	चाहता अल्लाह	और अगर	अपनी क़ौम से

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ

सुलह	तुम्हारी तरफ़	और डालें	वह तुम से लड़ें	फिर न	तुम से किनारा कश हों

فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ

और लोग	अब तुम पाओगे	90	कोई राह	उन पर	तुम्हारे लिए	अल्लाह	तो नहीं दी

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ۭ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ

फ़ित्ने की तरफ़	जब कभी लौटाए (बुलाए जाते हैं)	अपनी क़ौम	और अम्न में रहें	कि तुम से अम्न में रहें	वह चाहते हैं

اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ

तुम्हारी तरफ़	और (न) डालें वह	तुम से किनारा कशी न करें	पस अगर	उस में	पलट जाते हैं

السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन्हें पकड़ो	अपने हाथ	और रोकें	सुलह

ع ١٢ ٩ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ۭ وَاُولٰۗىِٕكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾

91	खुली	सनद (हुज्जत)	उन पर	तुम्हारे लिए	हम ने दी	और यही लोग	तुम उन्हें पाओ

सो तुम्हें क्या हो गया है? मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्हों ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज़ उस के लिए कोई राह न पाओगे। (88)

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफ़िर हो जाओ जैसे वह काफ़िर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज्रत करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़त्ल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, (89)

मगर जो लोग तअ़ल्लुक़ रखते हैं (ऐसी) क़ौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआ़हदा है, या तुम्हारे पास आएं (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से ज़रूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा कश रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। (90)

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अम्न में रहें और अपनी क़ौम से (भी) अम्न में रहें, जब कभी फ़ित्ना (फ़साद) की तरफ़ बुलाए जाते हैं तो उस में पलट जाते हैं, पस अगर तुम से किनारा कशी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग हैं जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हुज्जत) दी। (91)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا

ग़लती से	किसी मुसलमान	क़त्ल करे	और जो	मगर ग़लती से	किसी मुसलमान	कि वह क़त्ल करे	किसी मुसलमान के लिए	है	और नहीं

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ

फिर अगर	वह माफ़ कर दें	यह कि	मगर	उस के वारिसों को	हवाले करना	और खून बहा	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद करे

كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ

और अगर	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद कर दे	मुसलमान	और वह	तुम्हारी	दुश्मन क़ौम	से	हो

كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

उस के वारिसों को	हवाले करना	खून बहा	अ़हद (मुआ़हदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	ऐसी क़ौम से	हो

وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ؗ

लगातार	दो माह	तो रोज़े रखे	न पाए	सो जो	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	और आज़ाद करना

تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا

दानिस्ता (क़स्दन)	किसी मुसलमान को	क़त्ल कर दे	और जो कोई	92	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह से	तौबा

فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ

उस के लिए तैयार कर रखा है	और उस की लानत	उस पर	और अल्लाह का ग़ज़ब	उस में	हमेशा रहेगा	जहन्नम	तो उस की सज़ा

عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह की राह	में	तुम सफ़र करो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	93	बड़ा	अ़ज़ाब

فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ

तुम चाहते हो	मुसलमान	तू नहीं है	सलाम	तुम्हारी तरफ़	डाले (करे)	जो कोई	तुम कहो	और न	तो तहक़ीक़ कर लो

عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؗ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ

इस से पहले	तुम थे	उसी तरह	बहुत	ग़नीमतें	फिर अल्लाह के पास	दुनिया की ज़िन्दगी	असबाब (सामान)

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾

94	खूब बाख़बर	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह	सो तहक़ीक़ कर लो	तुम पर	तो एहसान किया अल्लाह

لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ

और मुजाहिद (जमा)	उज़्र वाले (मअ़ज़ूर)	बग़ैर	मोमिनीन	से	बैठ रहने वाले	बराबर नहीं

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ

जिहाद करने वाले	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह की राह	में

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा दिया	और हर एक	दरजे	बैठ रहने वाले	पर	और अपनी जानें	अपने मालों से

الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۹۵﴾

95	अजरे अ़ज़ीम	बैठ रहने वाले	पर	मुजाहिदीन	और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	अच्छा

और नहीं किसी मुसलमान के (शायां) कि वह किसी मुसलमान को क़त्ल कर दे मगर ग़लती से। और जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे ग़लती से तो वह एक गुलाम आज़ाद करे और खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन क़ौम से हो और वह खुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान गुलाम। और अगर ऐसी क़ौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआ़हदा है तो खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(92)**

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता क़त्ल कर दे तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है **(93)**

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहक़ीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहक़ीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह खूब बाख़बर है। **(94)**

बग़ैर उज़्र बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़ज़ीलत दी है अजरे अ़ज़ीम (के एतिबार से)। **(95)**

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और रहमत	और बख़्शिश	उस की तरफ़ से	दरजे

ع ١٣ ٥ ١٠ رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ

ज़ुल्म करते थे	फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह लोग जो	बेशक	96	मेह्रबान

اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ

बेबस	वह कहते हैं हम थे	तुम थे	किस (हाल) में	वह कहते हैं	अपनी जानें

فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً

वसीअ़	अल्लाह की ज़मीन	क्या न थी	वह कहते हैं	ज़मीन (मुल्क)	में

فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾ لا

97	पहुँचने की जगह	और बुरा है	जहन्नम	उन का ठिकाना	सो यह लोग	पस तुम हिज्रत कर जाते उस में

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ

और बच्चे	और औरतें	मर्द (जमा)	से	बेबस	मगर

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ لا

98	कोई रास्ता	पाते हैं	और न	कोई तदबीर	नहीं कर सकते

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उन से (उन को)	कि माफ़ फ़रमाए	उम्मीद है कि अल्लाह	सो ऐसे लोग हैं

عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ

वह पाएगा	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत करे	और जो	99	बख़्शने वाला	माफ़ करने वाला

فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ

निकले	और जो	और कुशादगी	बहुत (वाफ़िर) जगह	ज़मीन	में

مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

आ पकड़े उस को	फिर	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	हिज्रत कर के	अपना घर	से

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह पर	उस का अजर	तो साबित हो गया	मौत

ع ١٤ ٦ ١١ رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ ع وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	पस नहीं	ज़मीन में	तुम सफ़र करो	और जब	100	मेह्रबान

جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ

तुम्हें सताएंगे	कि	तुम को डर हो	अगर	नमाज़	से	क़स्र करो	कि	कोई गुनाह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

101	दुश्मन खुले	तुम्हारे	हैं	काफ़िर (जमा)	बेशक	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख़्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख़्शने वाला मेह्रबान। (96)

बेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) ज़ुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम बेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ न थी? पस तुम उस में हिज्रत कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। (97)

मगर जो बेबस हैं मर्द और औरतें और बच्चे कि कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, (98)

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला। (99)

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज्रत करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज्रत कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह पर साबित हो गया, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (100)

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ क़स्र करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (101)

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآىِٕفَةٌ

एक जमाअ़त	तो चाहिए कि खड़ी हो	नमाज़	उन के लिए	फिर क़ाइम करें	उन में	आप हों	और जब

مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا

तो हो जाएं	वह सिज्दा कर लें	फिर जब	अपने हथियार	और चाहिए कि वह ले लें	आप (स) के साथ	उन में से

مِنْ وَّرَآىِٕكُمْ ۠ وَلْتَاْتِ طَآىِٕفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا

पस वह नमाज़ पढ़ें	नमाज़ नहीं पढ़ी	दूसरी	जमाअ़त	और चाहिए कि आए	तुम्हारे पीछे

مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ

चाहते हैं जिन लोगों ने	और अपना अस्लिहा	अपना बचाओ	और चाहिए कि लें	आप (स) के साथ

كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ

तो वह झुक पड़ें (हमला करें)	और अपने सामान	अपने हथियार (जमा)	से	कहीं तुम ग़ाफ़िल हो	कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ

तुम्हें	हो	अगर	तुम पर	गुनाह	और नहीं	एक बार (यकबारगी)	झुकना	तुम पर

اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ

अपना अस्लिहा	कि उतार रखो	बीमार	या तुम हो	बारिश से	तक्लीफ़

وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ١٠٢

102	ज़िल्लत वाला	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	तैयार किया	बेशक अल्लाह	अपना बचाओ	और ले लो

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

और बैठे	खड़े	तो अल्लाह को याद करो	नमाज़	तुम अदा कर चुको	फिर जब

وَّعَلٰي جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ

बेशक	नमाज़	तो क़ाइम करो	तुम मुत्मइन हो जाओ	फिर जब	अपनी करवटें	और पर

الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ١٠٣

103	मुक़र्ररा औक़ात में	फ़र्ज़	मोमिनीन	पर	है	नमाज़

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَاۗءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ

तो बेशक उन्हें	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	अगर	क़ौम (कुफ़्फ़ार)	पीछा करने	में	और हिम्मत न हारो

يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ

वह उम्मीद रखते	जो नहीं	अल्लाह	से	और तुम उम्मीद रखते हो	जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	तकलीफ़ पहुँचती है

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ١٠٤ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ ع ١٥ ١٢

ताकि आप फ़ैसला करें	हक़ के साथ (सच्ची)	किताब	आप (स) की तरफ़	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	104	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह

بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَاۗىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ١٠٥

105	झगड़ने वाला (तरफ़दार)	ख़ियानत करने वालों (दग़ाबाज़ों) के लिए	हों	और न	अल्लाह	जो दिखाए आप को	लोग	दरमियान

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगें) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअ़त आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आए दूसरी जमाअ़त (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लिहा, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकबारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तक्लीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लिहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। **(102)**

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए, फिर जब तुम मुत्मइन (ख़ातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ क़ाइम करो, बेशक नमाज़ मोमिनों पर (बक़ैदे वक़्त) मुक़र्ररा औक़ात में फ़र्ज़ है। **(103)**

और कुफ़्फ़ार का पीछा (तआ़क़ुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो बेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता हैं जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। **(104)**

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दग़ाबाज़ों के तरफ़दार। **(105)**

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۚ﴿۱۰۶﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ

से	और न झगड़ें	106	मेह्रबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से बख़्शिश मांगें

الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ

जो हो	दोस्त नहीं रखता	बेशक अल्लाह	अपने तईं	ख़ियानत करते हैं	जो लोग

خَوَّانًا اَثِيْمًا ۚۙ﴿۱۰۷﴾ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ

और नहीं छुपते (शर्माते)	लोग	से	वह छुपते (शर्माते) हैं	107	गुनाहगार	ख़ाइन (दग़ाबाज़)

مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى

पसन्द करता	जो नहीं	जब रातों को मशवरा करते हैं	उन के साथ	हालांकि वह	अल्लाह से

مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ

हाँ तुम	108	अहाता किए (घेरे) हुए	वह करते हैं	उसे जो	अल्लाह	और है	बात	से

هٰۤؤُلَاۤءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ

झगड़ेगा	सो - कौन	दुनियवी ज़िन्दगी	में	उन (की तरफ़) से	तुम ने झगड़ा किया	वह

اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾

109	वकील	उन पर (उन का)	होगा	कौन?	या	रोज़े क़ियामत	उन (की तरफ़) से	अल्लाह

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ

वह पाएगा	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे	अपनी जान	या ज़ुल्म करे	बुरा काम	काम करे	और जो

اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ

वह कमाता है	तो फ़क़त	गुनाह	कमाए	और जो	110	मेह्रबान	बख़्शने वाला	अल्लाह

عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً

ख़ता	कमाए	और जो	111	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	अपनी जान पर

ع ١٦ ٨ ١٣ اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۲﴾ع

112	सरीह (खुला)	और गुनाह	भारी बुहतान	तो उस ने लादा	किसी बेगुनाह	उस की तुहमत लगा दे	फिर	या गुनाह

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक जमाअ़त	तो क़स्द किया ही था	और उस की रहमत	आप पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ

और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का	अपने आप	मगर	बहका रहे हैं	और नहीं	कि आप को बहका दें

مِنْ شَىْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ

और आप को सिखाया	और हिक्मत	किताब	आप (स) पर	और अल्लाह ने नाज़िल की	कुछ भी

الثلثة مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾

113	बड़ा	आप (स) पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और है	तुम जानते	जो नहीं थे

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह है बख़्शने वाला मेह्रबान। (106)

आप उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ें जो अपने तईं ख़ियानत करते हैं, बेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो ख़ाइन (दग़ाबाज़) गुनाहगार हो। (107)

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालांकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे हुए) है। (108)

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ़) से दुनियवी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े क़ियामत उन की तरफ़ से, या कौन उन का वकील होगा? (109)

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला मेह्रबान पाएगा। (110)

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (111)

और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। (112)

और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअ़त ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिक्मत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल। (113)

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इस्लाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। (114)

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और सब मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। (115)

बेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। (116)

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परस्तिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, (117)

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुक़र्ररा। (118)

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊँगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊँगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊँगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की ख़ातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊंगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सरीह नुक़सान में पड़ गया। (119)

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) (120)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। (121)

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ

या	ख़ैरात का	हुक्म दे	मगर	उन की सरगोशियों	से	अक्सर	में	नहीं कोई भलाई

مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करे	और जो	लोगों के दरमियान	या इस्लाह कराना	अच्छी बात का

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ

और जो	114	बड़ा	सवाब	हम उसे देंगे	सो अनक़रीब	अल्लाह की रज़ा	हासिल करना

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى

हिदायत	उस के लिए	ज़ाहिर हो चुकी	जब	उस के बाद	रसूल	मुख़ालिफ़त करे

وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ

और हम उसे दाख़िल करेंगे	जो उस ने इख़्तियार किया	हम हवाले कर देंगे	मोमिनों का रास्ता	ख़िलाफ़	और चले

جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ ع ١٧ ١٤

कि शरीक ठहराया जाए	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह	115	पहुँचने (पलटने) की जगह	और बुरी जगह	जहन्नम

بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जिस	वह चाहे	जिस को	उस	सिवा	जो	और बख़्शेगा	उस का

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ

उस के सिवा	वह नहीं पुकारते	116	दूर	गुमराही	सो गुमराह हुआ

اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وقف لازم

अल्लाह ने उस पर लानत की	117	सरकश	शैतान	मगर	पुकारते हैं	और नहीं	मगर औरतें

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾

118	मुक़र्ररा	हिस्सा	तेरे बन्दे	से	मैं ज़रूर लूँगा	और उस ने कहा

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ

कान	तो वह ज़रूर चीरेंगे	और उन्हें हुक्म दुँगा	और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा	और उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा

الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ

पकड़े (बनाए)	और जो	अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें	तो वह ज़रूर बदलेंगे	और उन्हें हुक्म दुँगा	जानवर (जमा)

الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾

119	सरीह	नुक़सान	तो वह पड़ा नुक़सान में	अल्लाह के सिवा	दोस्त	शैतान

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

120	सिर्फ़ फ़रेब	मगर	शैतान	और उन्हें वादे नहीं देता	और उन्हें उम्मीद दिलाता है	वह उन को वादा देता है

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾

121	भागने की जगह	उस से	और वह न पाएंगे	जहन्नम	जिन का ठिकाना	यही लोग

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	हम अनक़रीब उन्हें दाख़िल करेंगे	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं

حَقًّا ۭ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ

तुम्हारी आर्ज़ूओं पर	न	122	बात में	अल्लाह	से	सच्चा	और कौन	सच्चा

وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ۭ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ

उस की सज़ा पाएगा	बुराई	जो करेगा	अहले किताब	आर्ज़ूएं	और न

وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ

करेगा	और जो	123	और न मददगार	कोई दोस्त	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और न पाएगा

مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَھُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ

तो ऐसे लोग	मोमिन	बशर्त यह कि वह	या औरत	मर्द	से	अच्छे काम	से

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

ज़ियादा बेहतर	और कौन	124	तिल बराबर	उन पर ज़ुल्म होगा	और न	जन्नत	दाख़िल होंगे

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَھُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ

दीन	और उस ने पैरवी की	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	झुका दिया	से- जिस	दीन

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلّٰهِ مَا

और अल्लाह के लिए जो	125	दोस्त	इब्राहीम (अ)	और अल्लाह ने बनाया	एक का हो कर रहने वाला	इब्राहीम (अ)

ع ١١ ١٨ ١٥

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

126	अहाता किए हुए	चीज़	हर	और है अल्लाह	ज़मीन	में	और जो	आस्मानों में

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَاۗءِ ۭ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا

और जो	उन के बारे में	तुम्हें हुक्म देता है	अल्लाह	आप कहदें	औरतों के बारे में	और वह आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَاۗءِ الّٰتِيْ

वह जिन्हें	औरतें	यतीम	(बारे) में	किताब (क़ुरआन) में	तुम्हें	सुनाया जाता है

لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

उन को निकाह में ले लो	कि	और नहीं चाहते हो	उन के लिए	जो लिखा गया (मुक़र्रर)	तुम उन्हें नहीं देते

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

यतीमों के बारे में	क़ाइम रहो	और यह कि	बच्चे	से (बारे में)	और बेबस

بِالْقِسْطِ ۭ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

127	उस को जानने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	कोई भलाई	और जो तुम करोगे	इन्साफ़ पर

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए हम अनक़रीब उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से ज़ियादा सच्चा बात में? (122)

(अ़ज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्ज़ूओं पर है और न अहले किताब की आर्ज़ूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। (123)

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औ़रत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर तिल बराबर ज़ुल्म न होगा। (124)

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। (125)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। (126)

आप (स) से औ़रतों के बारे में हुक्म दर्याफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें क़ुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औ़रतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुक़र्रर किया हुआ (मेह्र) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और बेबस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर क़ाइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (127)

और अगर कोई औ़रत डरे (अन्देशा करे) अपने ख़ावन्द (की तरफ़) से ज़ियादती या बेरग़बती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीअ़तों में बुख़्ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (128)

और हरगिज़ न कर सकोगे अगरचे तुम बोहतेरा चाहो कि औ़रतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ़) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज़ कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ूबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फ़ना कर दे) ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर क़ादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सवाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सवाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا

बे रग़बती	या	ज़ियादती	अपने ख़ावन्द से	डरे	कोई औ़रत	और अगर

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۭ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۭ

बेहतर	और सुलह	सुलह	आपस में	कि वह सुलह कर लें	उन दोनों पर	तो नहीं गुनाह

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ۭ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	तुम नेकी करो	और अगर	बुख़्ल	तबीअ़तें	और हाज़िर किया गया (मौजूद है)

كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ١٢٨ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا

बराबरी रखो	कि	कर सकोगे	और हरगिज़ न	128	बाख़बर	जो तुम करते हो	है

بَيْنَ النِّسَاۗءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

कि एक को डाल रखो	बिलकुल झुक जाना	पस न झुक पड़ो	बोहतेरा चाहो	अगरचे	औ़रतों के दरमियान

كَالْمُعَلَّقَةِ ۭ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

बख़्शने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	इस्लाह करते रहो	और अगर	जैसे लटकती हुई

رَّحِيْمًا ١٢٩ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۭ وَكَانَ

और है	अपनी कशाइश से	से	हर एक को	अल्लाह बेनियाज़ कर देगा	दोनों जुदा हो जाएं	और अगर	129	मेह्रबान

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ١٣٠ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	130	हिक्मत वाला	कशाइश वाला	अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ

और तुम्हें	तुम से पहले	से	जिन्हें किताब दी गई	वह लोग	और हम ने ताकीद कर दी है

اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	तो बेशक अल्लाह के लिए	तुम कुफ़्र करोगे	और अगर	कि डरते रहो अल्लाह से

فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ١٣١ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	में	और अल्लाह के लिए जो	131	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अल्लाह	और है	ज़मीन में

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ١٣٢ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	132	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	ज़मीन में	और जो

اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي ذٰلِكَ

उस पर	और है अल्लाह	दूसरों को	और ले आए	ऐ लोगो

قَدِيْرًا ١٣٣ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ

तो अल्लाह के पास	दुनिया का सवाब	चाहता है	जो	133	क़ादिर

ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ١٣٤ ع ١٩ ٨ ١٦

134	देखने वाला	सुनने वाला	और है अल्लाह	और आख़िरत	दुनिया	सवाब

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡا قَوّٰمِيۡنَ بِالۡقِسۡطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ

गवाही देने वाले अल्लाह के लिए	इन्साफ़ पर	क़ाइम रहने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وَلَوۡ عَلٰٓى اَنۡفُسِكُمۡ اَوِ الۡوَالِدَيۡنِ وَالۡاَقۡرَبِيۡنَ ۚ اِنۡ يَّكُنۡ غَنِيًّا

कोई मालदार	अगर (चाहे) हो	और क़राबतदार	माँ बाप	या	खुद तुम्हारे ऊपर (ख़िलाफ़)	अगरचे

اَوۡ فَقِيۡرًا فَاللّٰهُ اَوۡلٰى بِهِمَا قف فَلَا تَتَّبِعُوا الۡهَوٰٓى اَنۡ تَعۡدِلُوۡا ۚ

की इन्साफ़ करो	ख़्वाहिश	पैरवी करो	सो-न	उन का	ख़ैर ख़्वाह	पस अल्लाह	या मोहताज

وَاِنۡ تَلۡوٗۤا اَوۡ تُعۡرِضُوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا ﴿١٣٥﴾

135	बाख़बर	तुम करते हो	जो	है	तो बेशक अल्लाह	या पहलूतही करोगे	और अगर तुम ज़बान दबाओगे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَالۡكِتٰبِ الَّذِىۡ نَزَّلَ

जो उस ने नाज़िल की	और किताब	और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान लाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ

عَلٰى رَسُوۡلِهٖ وَالۡكِتٰبِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِاللّٰهِ

अल्लाह का	इन्कार करे	और जो	इस से क़ब्ल	जो उस ने नाज़िल की	और किताब	अपने रसूल पर

وَمَلٰٓـئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ

गुमराही	तो वह भटक गया	और रोज़े आख़िरत	और उस के रसूलों	और उस की किताबों	और उस के फ़रिश्तों

بَعِيۡدًا ﴿١٣٦﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ثُمَّ كَفَرُوۡا ثُمَّ اٰمَنُوۡا ثُمَّ كَفَرُوۡا ثُمَّ

फिर	फिर काफ़िर हुए	ईमान लाए	फिर	फिर काफ़िर हुए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	136	दूर

ازۡدَادُوۡا كُفۡرًا لَّمۡ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَـغۡفِرَ لَهُمۡ وَلَا لِيَـهۡدِيَهُمۡ سَبِيۡلًا ؕ ﴿١٣٧﴾

137	राह	और न दिखाएगा	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	बढ़ते रहे कुफ़्र में

بَشِّرِ الۡمُنٰفِقِيۡنَ بِاَنَّ لَهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمَا ۙ ﴿١٣٨﴾ اۨلَّذِيۡنَ يَتَّخِذُوۡنَ

पकड़ते हैं (बनाते हैं)	जो लोग	138	दर्दनाक अ़ज़ाब	उन के लिए	कि	मुनाफ़िक़ (जमा)	खुशख़बरी दें

الۡكٰفِرِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ اَيَبۡتَغُوۡنَ عِنۡدَهُمُ

उन के पास	क्या ढूंडते हैं?	मोमिनीन	सिवाए (छोड़ कर)	दोस्त	काफ़िर (जमा)

الۡعِزَّةَ فَاِنَّ الۡعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيۡعًا ؕ ﴿١٣٩﴾ وَقَدۡ نَزَّلَ عَلَيۡكُمۡ فِى الۡكِتٰبِ

किताब में	तुम पर	उतार चुका	और तहक़ीक़	139	सारी	अल्लाह के लिए	इज़्ज़त	बेशक	इज़्ज़त

اَنۡ اِذَا سَمِعۡتُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكۡفَرُ بِهَا وَيُسۡتَهۡزَاُ بِهَا فَلَا تَقۡعُدُوۡا

तो न बैठो	उस का	मज़ाक़ उड़ाया जाता है	उस का	इन्कार किया जाता है	अल्लाह की आयतें	जब तुम सुनो	यह कि

مَعَهُمۡ حَتّٰى يَخُوۡضُوۡا فِىۡ حَدِيۡثٍ غَيۡرِهٖ ۖ اِنَّكُمۡ اِذًا مِّثۡلُهُمۡ ؕ

उन जैसे	उस सूरत में	यक़ीनन तुम	उस के सिवा	बात	में	वह मशग़ूल हों	यहां तक कि	उन के साथ

اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡكٰفِرِيۡنَ فِىۡ جَهَنَّمَ جَمِيۡعَا ۙ ﴿١٤٠﴾

140	तमाम	जहन्नम में	और काफ़िर (जमा)	मुनाफ़िक़ (जमा)	जमा करने वाला	बेशक अल्लाह

ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर क़ाइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे ख़िलाफ़ या माँ बाप और क़राबतदारों (के ख़िलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बढ़ कर) ख़ैर ख़्वाह है, सो तुम ख़्वाहिश (नफ़्स) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़बान दबाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (135)

ऐ ईमान वालो! तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और उस किताब पर जो उस ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल की (कुरआन) और उन किताबों पर जो उस से क़ब्ल नाज़िल कीं, और जो इन्कार करे अल्लाह का, और उस के फ़रिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों और रोज़े आख़िरत का तो भटक गया दूर की गुमराही में। (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा और न उन्हें (सीधी) राह दिखाएगा। (137)

मुनाफ़िक़ों को खुशख़बरी दें कि उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्ज़त ढूंडते हैं? बेशक सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है। (139)

और तहक़ीक़ (अल्लाह) किताब (कुरआन) में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जाता है और उन का मज़ाक़ उड़ाया जाता है तो उन के साथ न बैठो यहां तक कि वह मशग़ूल हों उस के सिवा (किसी और) बात में, यक़ीनन उस सूरत में तुम उन जैसे होगे, बेशक अल्लाह जमा करने वाला है तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नम में (एक जगह)। (140)

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानो पर राह (ग़लबा)। (141)

बेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। (142)

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह। (143)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न बानओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? (144)

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (145)

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (146)

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। (147)

اَلَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا

कहते हैं	अल्लाह (की तरफ़) से	फ़तह	तुम को	फिर अगर हो	तुम्हें	तकते रहते हैं	जो लोग

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا

कहते हैं	हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे?

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा	सो अल्लाह	मोमिनीन	से	और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें	तुम पर	क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ع ١٤١ ع ٢٠ ١٧

141	राह	मोमिनों पर	काफ़िरों को	अल्लाह	और हरगिज़ न देगा	क़ियामत के दिन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا

खड़े हों	और जब	उन्हें धोका देगा	और वह	धोका देते हैं अल्लाह को	बेशक मुनाफ़िक़

اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ

याद करते	और नहीं	लोग	वह दिखाते हैं	खड़े हों सुस्ती से	नमाज़	तरफ़ (को)

اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ١٤٢ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ وَلَآ

और न	इन की तरफ़	न	उस	दरमियान	अधर में लटके हुए	142	मगर बहुत कम	अल्लाह

اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ١٤٣ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	143	कोई राह	उस के लिए	तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	उन की तरफ़

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	दोस्त	काफ़िर (जमा)	न पकड़ो (न बनाओ)	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ١٤٤

144	सरीह	इल्ज़ाम	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह का	कि तुम करो (लो)	क्या तुम चाहते हो	मोमिनीन

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

और हरगिज़ न पाएगा	दोज़ख़	से	सब से नीचे का दरजा	में	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक

لَهُمْ نَصِيْرًا ١٤٥ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह को	और मज़बूती से पकड़ा	और इस्लाह की	जिन्हों ने तौबा की	मगर	145	कोई मददगार	उन के लिए

وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ

और जल्द	मोमिनों के साथ	तो ऐसे लोग	अल्लाह के लिए	अपना दीन	और ख़ालिस कर लिया

يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ١٤٦ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

तुम्हारे अज़ाब से	अल्लाह	क्या करेगा	146	बड़ा सवाब	मोमिन (जमा)	देगा अल्लाह

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ١٤٧

147	ख़ूब जानने वाला	क़द्रदान	अल्लाह	और है	और ईमान लाओगे	अगर तुम शुक्र करोगे

الجزء ٦

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ

जुल्म हुआ हो	जो- जिस	मगर	बात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता

وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا

या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	और है

عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ

इन्कार करते हैं	जो लोग	बेशक	149	क़ुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	तो बेशक	बुराई	से

بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फ़र्क़ निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का

وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ

कि	और वह चाहते हैं	बाज़ को	और नहीं मानते	बाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं

يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ

अस्ल	काफ़िर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)

وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया है

وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

उन के अजर	उन्हें देगा	अ़नक़रीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फ़र्क़ नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर

ع ٢١ / ١

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ

उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ

उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर

فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

फिर	उन के जुल्म के बाइस	बिजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अ़लानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्हों ने कहा

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا

सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आईं	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्हों ने बना लिया

عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ

उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)

الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا

और हम ने कहा	सिज्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से	तूर

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154	मज़बूत	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो	उन से

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, क़ुदरत वाला है। (149)

बेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फ़र्क़ निकालें, और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग अस्ल काफ़िर हैं, और हम ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते यही वह लोग हैं अ़नक़रीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्हों ने कहा हमें अल्लाह को अ़लानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के ज़ुल्म के बाइस, फ़िर उन्हों ने बछड़े (गौशाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगईं, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया "तूर" पहाड़ उन से अ़हद लेने की ग़र्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अ़हद लिया। (154)

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ

नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयात	और उन का इन्कार करना	अपना अ़हद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबब

بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ

उन के कुफ़्र के सबब	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना	नाहक़

فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۪ ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ

मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़्र के सबब	155	कम	मगर	सो वह ईमान नहीं लाते

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ

रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना	156	बड़ा	बुहतान

اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और बेशक	उन के लिए	सूरत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को	अल्लाह

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ

पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में	उस में

الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि	157	यक़ीनन	और उस को क़त्ल नहीं किया	अटकल

حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ

अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से	और नहीं	158	हिक्मत वाला

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो ज़ुल्म के सबब	159	गवाह	उन पर	होगा	और क़ियामत के दिन

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर	हम ने हराम कर दिया

كَثِيْرًا ۙ ﴿۱۶۰﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ

लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना	160	बहुत

بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾ لٰكِنِ

लेकिन	161	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया	नाहक़

الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में	पुख़्ता (जमा)

وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और क़ाइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया	और जो

وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ ع ٢٢ ع ٢

162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान लाने वाले

(उन को सज़ा मिली) बसबब उन के अ़हद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबब) कि हमारे दिल पर्दे में (महफ़ूज़) हैं, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़्र के सबब मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़्र और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबब। (156)

और उन के यह कहने (के सबब) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्हों ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्हों ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूरत बना दी गई और बेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्हों ने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158)

और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ें जो उन के लिए हलाल थीं हराम कर दीं उन के ज़ुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160)

और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ क़ाइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ

उस के बाद	और नबियों	नूह (अ)	तरफ़	हम ने वहि भेजी	जैसे	आप (स) की तरफ़	हम ने वहि भेजी	बेशक हम

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याकूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَالْأَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَأَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ

और सुलैमान (अ)	और हारून (अ)	और यूनुस (अ)	और अय्यूब (अ)	और ईसा (अ)	और औलादे याकूब

وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ ١٦٣ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ

आप (स) पर (आप से)	हम ने उन का अहवाल सुनाया	और ऐसे रसूल (जमा)	163	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी

مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى

मूसा (अ)	अल्लाह	और कलाम किया	आप पर (आप को)	हम ने हाल बयान किया	नहीं	और ऐसे रसूल	इस से क़ब्ल

تَكْلِيْمًا ١٦٤ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	ताकि न रहे	और डराने वाले	खुशख़बरी सुनाने वाले	रसूल (जमा)	164	कलाम करना (खूब)

عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ١٦٥

165	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	रसूलों के बाद	हुज्जत	अल्लाह	पर

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	अपने इल्म के साथ	वह नाज़िल किया	आप (स) की तरफ़	उस ने नाज़िल किया	उस पर जो	गवाही देता है	अल्लाह	लेकिन

يَشْهَدُوْنَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ١٦٦ إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक	166	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	गवाही देते हैं

وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ١٦٧ إِنَّ

बेशक	167	दूर	गुमराही	तहक़ीक़ वह गुमराही में पड़े	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

उन्हें हिदायत दे	और न	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	और ज़ुल्म किया	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

طَرِيْقًا ١٦٨ إِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ

यह	और है	हमेशा	उस में	रहेंगे	जहन्नम	रास्ता	मगर	168	रास्ता (सीधा)

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ١٦٩ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	रसूल	तुम्हारे पास आया	लोग	ऐ	169	आसान	अल्लाह पर

مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَإِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के लिए	तो बेशक	तुम न मानोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	सो ईमान लाओ	तुम्हारा रब	से

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ١٧٠

170	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों में

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ़ और उस के बाद नबियों की तरफ़ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक़ (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ़ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनुस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ़ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से क़ब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ़ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफ़ी है। (166)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहक़ीक़ वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और ज़ुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहन्नम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो बेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ़ डाला और उस (की तरफ़) से आत्मा हैं, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (ख़ुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (बेशक) कि अल्लाह माबूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफ़ी है। **(171)**

मसीह (अ) को हरगिज़ आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुक़र्रिब फ़रिश्तों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अ़नक़रीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। **(172)**

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए वह उन्हें उन के अजर पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़्ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अ़ज़ाब देगा, दर्दनाक अ़ज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मददगार। **(173)**

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है वाज़ेह रौशनी। **(174)**

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्हों ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़्ल में, और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। **(175)**

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لَا تَغۡلُوۡا فِىۡ دِيۡنِكُمۡ وَلَا تَقُوۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ

पर (बारे में) अल्लाह	और न कहो	अपने दीन में	गुलू न करो	ऐ अहले किताब

اِلَّا الۡحَـقَّ ؕ اِنَّمَا الۡمَسِيۡحُ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ

और उस का कलिमा	अल्लाह	रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक़	सिवाए

اَلۡقٰهَاۤ اِلٰى مَرۡيَمَ وَرُوۡحٌ مِّنۡهُ فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا

और न	और उस के रसूल	अल्लाह पर	सो ईमान लाओ	उस से	और रूह	मरयम (अ)	तरफ़	उस को डाला

تَقُوۡلُوۡا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنۡتَهُوۡا خَيۡرًا لَّـكُمۡ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ؕ

माबूदे वाहिद	अल्लाह	इसके सिवा नहीं	तुम्हारे लिए	बेहतर	बाज़ रहो	तीन	कहो

سُبۡحٰنَهٗۤ اَنۡ يَّكُوۡنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا وقف لازم

और जो	आस्मानों में	जो	उस का	औलाद	उस की	हो	कि	वह पाक है

فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيۡلًا ﴿۱۷۱﴾ لَنۡ يَّسۡتَنۡكِفَ الۡمَسِيۡحُ اَنۡ ع ٢٣ ٩ ٣

कि	मसीह (अ)	हरगिज़ आर नहीं	171	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	ज़मीन में

يَّكُوۡنَ عَبۡدًا لِّلّٰهِ وَلَا الۡمَلٰۤـئِكَةُ الۡمُقَرَّبُوۡنَ ؕ وَمَنۡ يَّسۡتَنۡكِفۡ

आर करे	और जो	मुक़र्रब (जमा)	फ़रिश्ते	और न	अल्लाह का	बन्दा	हो

عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَيَسۡتَكۡبِرۡ فَسَيَحۡشُرُهُمۡ اِلَيۡهِ جَمِيۡعًا ﴿۱۷۲﴾ فَاَمَّا

फिर जो	172	सब	अपने पास	तो अ़नक़रीब उन्हें जमा करेगा	और तकब्बुर करे	उस की इबादत	से

الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيۡهِمۡ اُجُوۡرَهُمۡ

उन के अजर	उन्हें पूरा देगा	नेक	ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए	लोग

وَيَزِيۡدُهُمۡ مِّنۡ فَضۡلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ اسۡتَنۡكَفُوۡا وَاسۡتَكۡبَرُوۡا

और उन्हों ने तकब्बुर किया	उन्हों ने आर समझा	वह लोग जो	और फिर	अपना फ़ज़्ल	से	और उन्हें ज़ियादा देगा

فَيُعَذِّبُهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوۡنَ لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	से (के)	अपने लिए	और वह न पाएंगे	दर्दनाक	अ़ज़ाब	तो उन्हें अ़ज़ाब देगा

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ﴿۱۷۳﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَكُمۡ بُرۡهَانٌ

रौशन दलील	तुम्हारे पास आ चुकी	ऐ लोगो!	173	मददगार	और न	दोस्त

مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ نُوۡرًا مُّبِيۡنًا ﴿۱۷۴﴾ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

जो लोग ईमान लाए	पस	174	वाज़ेह	रौशनी	तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल किया	तुम्हारा रब	से

بِاللّٰهِ وَاعۡتَصَمُوۡا بِهٖ فَسَيُدۡخِلُهُمۡ فِىۡ رَحۡمَةٍ

रहमत में	वह उन्हें अ़नक़रीब दाख़िल करेगा	उस को	और मज़बूत पकड़ा	अल्लाह पर

مِّنۡهُ وَفَضۡلٍ ۙ وَّيَهۡدِيۡهِمۡ اِلَيۡهِ صِرَاطًا مُّسۡتَقِيۡمًا ؕ ﴿۱۷۵﴾

175	सीधा	रास्ता	अपनी तरफ़	और उन्हें हिदायत देगा	और फ़ज़्ल	उस से (अपनी)

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ

मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं

لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निस्फ़ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا

उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो	अगर

تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)

ع ٢٤ ٥ — الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾ ع

176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है	दो औरत

आप (स) से हुक्म दरयाफ़्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निस्फ़ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। **(176)**

آيَاتُهَا ١٢٠ ❀ (٥) سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

आयात **120** — **(5) सूरतुल माइदा** ख़ान — रुकुआत **16**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

المنزل الثاني ٢

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ

चौपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अ़हद-कौल	पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी

يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا

और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है

الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْىَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ

एहतराम वाला घर (ख़ाने कअ़बा)	क़सद करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाज़े कअ़बा	और न	महीने अदब वाले

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ

तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और ख़ुशनूदी	अपने रब से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिद हराम (ख़ाने कअ़बा)	से	तुम को रोकती थी	जो	क़ौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए बाइस हो	और न

وقف لازم — اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ

गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो	और तक़्वा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो

الربع — وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲﴾

2	अ़ज़ाब	सख़्त	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से	और ज़ियादती (सरकशी)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! अपने अ़हद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, बेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। **(1)**

ऐ ईमान वालो! शआ़एर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (ज़ुलक़अ़दह, ज़ुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाज़े कअ़बा (के जानवर) और न गले में (क़ुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले ख़ाने कअ़बा को जो अपने रब का फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) क़ौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) से (उस का) बाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। **(2)**

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ

पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ

और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोंटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा

اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۣ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا

तुम तक़्सीम करो	और यह कि	थानों पर	ज़ुबह किया गया	और जो	तुम ने ज़ुबह कर लिया	मगर जो	दरिन्दा	खाया

بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

तुम्हारे दीन से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ

और पूरी कर दी	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो

عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ

में	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया	अपनी नेमत	तुम पर

مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ़	माइल हो	न	भूक

مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ

शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	कह दें	उन के लिए	हलाल किया गया	क्या

مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ

तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो	तुम उन्हें सिखाते हो	शिकार पर दौड़ाए हुए

وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

4	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह	नाम	और याद करो (लो)

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ

हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं	आज

لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ

और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना	तुम्हारे लिए

مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से

مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

मुन्किर हुआ	और जो	छुपी आश्नाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	क़ैद में लाने को

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٥﴾ ع ع ١ ٥

5	नुक़्सान उठाने वाले	से	आख़िरत में	और वह	उस का अ़मल	तो ज़ाया हुआ	ईमान से

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोंटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने ज़ुबह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परस्तिश गाहों) पर ज़ुबह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तक़्सीम करो, यह गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हेसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ़ (उस के लिए गुंजाइश है) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह कर लो) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गईं, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल हैं), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (क़ैदे निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आश्नाई करने को, और जो ईमान का मुन्किर हुआ उस का अ़मल ज़ाया हुआ, और वह आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में से है। (5)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا

तो धोलो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियां	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह

اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टख़नों	तक

مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ

बैतुलख़ला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र	पर (में)	या	बीमार

اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا

मिट्टी	तो तयम्मुम कर लो	पानी	फ़िर न पाओ	औ़रतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)

طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاذْكُرُوْا

और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِىْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ

उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अ़हद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

बात	जानने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा

الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की

شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى

पर	किसी क़ौम	दुश्मनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह

اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا

और डरो	तक़्वा के	ज़ियादा क़रीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़बर	बेशक अल्लाह	अल्लाह

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٩﴾

9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टख़नों तक, और अगर तुम नापाक हो (ग़ुस्ल की हाजत हो) तो खूब पाक हो जाओ (ग़ुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई बैतुलख़ला से आए या तुम ने औ़रतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अ़हद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़्वा के ज़ियादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ١٠

10	जहन्नम वाले	यही	हमारी आयतें	और झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह	नेमत	तुम याद करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ

पस रोक दिए	अपने हाथ	तुम्हारी तरफ़	बढ़ाएं	कि	एक गिरोह	जब इरादा किया

اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

चाहिए भरोसा करें	अल्लाह	और पर	अल्लाह	और डरो	तुम से	उन के हाथ

الْمُؤْمِنُوْنَ ١١ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۚ ع ٦ ٢

बनी इस्राईल	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और अलबत्ता	11	ईमान वाले

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّىْ مَعَكُمْ ۭ

बेशक मैं तुम्हारे साथ	अल्लाह	और कहा	सरदार	बारह (12)	उन से	और हम ने मुक़र्रर किए

لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ

और ईमान लाओगे	ज़कात	और देते रहोगे	नमाज़	क़ाइम रखोगे	अगर

بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا

हसना	क़र्ज़	अल्लाह	और क़र्ज़ दोगे	और उन की मदद करोगे	मेरे रसूलों पर

لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	और ज़रूर दाख़िल कर दूँगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	तुम से	मैं ज़रूर दूर करदूँगा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ

तुम में से	उस के बाद	कुफ़्र किया	फिर जो-जिस	नहरें	उन के नीचे	से

فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۗءَ السَّبِيْلِ ١٢ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	उनका तोड़ना	सो बसबब (पर)	12	रास्ता	सीधा	बेशक गुमराह हुआ

لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ

से	कलाम	वह फेर देते हैं	सख़्त	उन के दिल (जमा)	और हम ने कर दिया	हम ने उन पर लानत की

مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ

और हमेशा	उन्हें जिस की नसीहत की गई	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	और वह भूल गए	उस के मवाक़े

تَطَّلِعُ عَلٰي خَاۗىِٕنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ

उन से	थोड़े	सिवाए	उन से	ख़ियानत	पर	आप ख़बर पाते रहते हैं

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ١٣

13	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और दरगुज़र कर	उन को	सो माफ़ कर

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्रर किए बारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़्र किया बेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उनकी ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ करदें और दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ

उन का अ़हद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगों ने कहा	और से

فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ

और जल्द	रोज़े क़ियामत	तक	और बुग़्ज़	अ़दावत

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا

बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यक़ीनन तुम्हारे पास आगए

كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ۬

बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ۙ

15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ

सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो ताबे हुआ	अल्लाह	उस से	हिदायत देता है

وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

अपने हुक्म से	नूर की तरफ़	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है

وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ़	और उन्हें हिदायत देता है

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ

इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)	बेशक अल्लाह	जिन लोगों ने कहा

قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ

हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस	कह दीजिए

الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ

सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम	मसीह (अ)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ

वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत

مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

17	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगों से जिन्हों ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अ़हद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़्ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। **(14)**

ऐ अहले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। **(15)**

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के ताबे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरों से नूर की तरफ़ अपने हुक्म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। **(16)**

तहक़ीक़ काफ़िर हो गए वह जिन लोगों ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। **(17)**

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मख़्लूक़ में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अ़ज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स)) आ गए वह नबियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहक़ीक़ तुम्हारे पास (मुहम्मद (स)) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को कहा: ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी क़ौम! अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक़्सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त क़ौम है, और हम वहां हरगिज़ दाख़िल न होंगे यहां तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाख़िल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इनआम किया था: कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाख़िल हो जाओ, जब तुम उस में दाख़िल होगे तो तुम ही ग़ालिब होगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ

और कहा	यहूद	और नसारा	हम	बेटे	अल्लाह	और उस के प्यारे	कह दीजिए	फिर क्यों

يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

तुम्हें अ़ज़ाब देता है	तुम्हारे गुनाहों पर	बल्कि	तुम	बशर	उन में से	उस ने पैदा किया (मख़्लूक़)	वह बख़्श देता है	जिस को	वह चाहता है

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

और अ़ज़ाब देता है	जिस को वह चाहता है	और अल्लाह के लिए	सल्तनत	आस्मानों	और ज़मीन	और जो

بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا

उन दोनों के दरमियान	और उसी की तरफ़	लौट कर जाना है	18	ऐ अहले किताब	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आए	हमारे रसूल

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ

वह खोल कर बयान करते हैं	तुम्हारे लिए	पर (बाद)	सिलसिला टूट जाना	से (के)	रसूल (जमा)	कि कहीं	तुम कहो	हमारे पास नहीं आया	कोई	ख़ुशख़बरी देने वाला

وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

और न	डराने वाला	तहक़ीक़ तुम्हारे पास आगए	ख़ुशख़बरी सुनाने वाले	और डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै

قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ع ۳/۸

क़ादिर	19	और जब	कहा	मूसा	अपनी क़ौम को	ऐ मेरी क़ौम	तुम याद करो	अल्लाह की नेमत

عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ

अपने ऊपर	जब	उस ने बनाया	तुम में	नबी (जमा)	और तुम्हें बनाया	बादशाह	और तुम्हें दिया

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا

जो नहीं	दिया	किसी को	से	जहानों में	20	ऐ मेरी क़ौम	दाख़िल हो जाओ

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِیْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ

अर्ज़े मुक़द्दस (उस पाक सर ज़मीन)	जो	अल्लाह ने लिख दी	तुम्हारे लिए	और न	लौटो	पर	अपनी पीठ

فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ

वरना तुम जा पड़ोगे	नुक़्सान में	21	उन्हों ने कहा	ऐ मूसा (अ)	बेशक उस में	एक क़ौम	ज़बरदस्त

وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا

और हम बेशक	हरगिज़ दाख़िल न होंगे	यहां तक कि	वह निकल जाएं	उस से	फिर अगर	वह निकले	उस से

فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

तो हम ज़रूर	दाख़िल होंगे	22	कहा	दो आदमी	उन लोगों से जो	डरने वाले	अल्लाह ने इनआम किया था

عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

उन दोनो पर	तुम दाख़िल हो उन पर (हमला कर दो)	दरवाज़ा	पस जब	तुम दाख़िल होगे उस में	तो तुम

غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾

ग़ालिब आओगे	और अल्लाह पर	भरोसा रखो	अगर तुम हो	ईमान वाले	23

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ

सो जा	उस में	जब तक वह हैं	कभी भी	हरगिज़ वहां दाख़िल न होंगे	बेशक हम	ऐ मूसा	उन्हों ने कहा

اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

मैं बेशक	ऐ मेरे रब	मूसा (अ) ने कहा	24	बैठे हैं	यहीं	हम	तुम दोनों लड़ो	और तेरा रब	तू

لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِىْ وَاَخِىْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ

क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	पस जुदाई कर दे	और अपना भाई	अपनी जान के सिवा	इख़्तियार नहीं रखता

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

साल	चालीस	उन पर	हराम करदी गई	पस यह	उस ने कहा	25	नाफ़रमान

ع ٨

يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۗ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع

26	नाफ़रमान	क़ौम	पर	तू अफ़सोस न कर	ज़मीन में	भटकते फिरेंगे

وقف لازم

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَىْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ

तो क़ुबूल कर ली गई	कुछ नियाज़	जब दोनों ने पेश की	अहवाल-ए-वाक़ई	आदम के दो बेटे	ख़बर	उन्हें	और सुना

مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۗ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ

उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा	उस ने कहा	दूसरे से	और न क़ुबूल की गई	उन में से एक	से

النصف

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَىَّ يَدَكَ

अपना हाथ	मेरी तरफ़	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	27	परहेज़गार (जमा)	से	अल्लाह	क़ुबूल करता है	बेशक सिर्फ़

لِتَقْتُلَنِىْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِىَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ

डरता हूँ	बेशक मैं	कि तुझे क़त्ल करूँ	तेरी तरफ़	अपना हाथ	बढ़ाने वाला	मैं नहीं	कि मुझे क़त्ल करे

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِىْ

मेरे गुनाह	कि तू हासिल करे	चाहता हूँ	बेशक मैं	28	परवरदिगार सारे जहान का	अल्लाह

وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ج

29	ज़ालिम (जमा)	सज़ा	और यह	जहन्नम वाले	से	फिर तू हो जाए	और अपने गुनाह

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	नुक़्सान उठाने वाले	से	तो वह हो गया	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	अपना भाई	क़त्ल	उस का नफ़्स	उस को	फिर राज़ी किया

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِىْ

वह छुपाए	कैसे	ताकि उसे दिखाए	ज़मीन में	कुरेदता था	एक कव्वा	अल्लाह	फिर भेजा

سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۗ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا

इस-यह	जैसा	कि मैं हो जाऊँ	मुझ से न हो सका	हाए अफ़सोस मुझ पर	उस ने कहा	अपना भाई	लाश

الْغُرَابِ فَاُوَارِىَ سَوْءَةَ اَخِىْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ لا ج

31	नादिम होने वाले	से	पस वह हो गया	अपना भाई	लाश	फिर छुपाऊँ	कव्वा

उन्हों ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में हैं हम वहां कभी भी हरगिज़ दाख़िल न होंगें, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं इख़्तियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फ़ैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगें, तू नाफ़रमान क़ौम पर अफ़सोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़ई सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की क़ुबूल कर ली गई और दूसरे से क़ुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूँगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ क़ुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, बेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

बेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहन्नम वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक़्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कव्वा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफ़सोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कव्वे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमां) होने वालों में से होगया। (31)

معانقة ٥ عند المتاخرين ١٢
وقف النبی ﷺ

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛۚ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ

कि जो-जिस	बनी इस्राईल	पर	हम ने लिख दिया	उस	वजह	से

مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

उस ने क़त्ल किया	तो गोया	ज़मीन (मुल्क) में	या फ़साद करना	किसी जान के बग़ैर	कोई जान	कोई क़त्ल करे

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ

तमाम	लोग	उस ने ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस को ज़िन्दा रखा	और जो-जिस	तमाम	लोग

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ؗ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उन में से	अक्सर	बेशक	फिर	रौशन दलाइल के साथ	हमारे रसूल	और उन के पास आ चुके

بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ

जंग करते हैं	जो लोग	सज़ा	यही	32	हद से बढ़ने वाले	ज़मीन (मुल्क) में	उस के बाद

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا

कि वह क़त्ल किए जाएं	फ़साद करने	जमीन (मुल्क) में	और कोशिश करते हैं	और उस का रसूल (स)	अल्लाह

اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ

एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से	से	और उन के पाऊँ	उन के हाथ	काटे जाएं	या	वह सूली दिए जाएं	या

اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى الدُّنْيَا

दुनिया में	रुसवाई	उन के लिए	यह	मुल्क से	या मुल्क बदर कर दिए जाएं

وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ لا اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली	मगर	33	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	तो जान लो	उन पर	तुम क़ाबू पाओ	कि	उस से पहले

رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا ع ٥ ٨ ٩

और तलाश करो	अल्लाह	डरो	जो लोग ईमान लाए	ऐ	34	मेहरबान

اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	उस का रास्ता	में	और जिहाद करो	क़ुर्ब	उस की तरफ़

تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا

जो	उन के लिए	यह कि	अगर	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बेशक	35	फ़लाह पाओ

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ

अज़ाब	से	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	और इतना	सब का सब	ज़मीन में

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

36	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन से	क़ुबूल किया जाएगा	न	क़ियामत का दिन

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बग़ैर या मुल्क में फ़साद करने के बग़ैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिब से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम क़ाबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) क़ुर्ब तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र क्या जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को क़ियामत के दिन अज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से क़ुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (36)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ

निकलने वाले	हालांकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे

مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا

काट दो	और चोर औरत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उस से

اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	अल्लाह	से	इब्रत	उस की जो उन्हों ने किया	सज़ा	उन दोनों के हाथ

حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और इस्लाह की	अपना ज़ुल्म	बाद	से	पस जो-जिस तौबा की	38	हिक्मत वाला

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस की तौबा कुबूल करता है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ

और बख़्शदे	जिसे चाहे	अ़ज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ

रसूल (स)	ऐ	40	क़ादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस को चाहे

لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	जो लोग	से	कुफ़्र	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन न करें

اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ

वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ

वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	क़ौम के लिए	वह जासूस हैं	झूट के लिए	जासूसी करते हैं

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ

तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को कुबूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	अल्लाह चाहे	और जो-जिस

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ

उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो	यही लोग

فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ ۖ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

41	बड़ा	अ़ज़ाब	आख़िरत	में	और उन के लिए	रुसवाई	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अ़ज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औ़रत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्हों ने किया, इब्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने ज़ुल्म के बाद और इस्लाह कर ली तो बेशक अल्लाह उस की तौबा कुबूल करता है, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिस को चाहे बख़्शदे, और अल्लाह हर शै पर क़ादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़्र में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते है हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअ़त के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को कुबूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हाँ कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है। (41)

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हराम खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आएं तो आप (स) उन के दरमियान फ़ैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फ़ैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करें, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। **(42)**

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। **(43)**

बेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांबरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहबान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। **(44)**

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़्फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। **(45)**

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

तो फ़ैसला कर दें आप (स)	आप (स) के पास आएं	पस अगर	हराम	बड़े खाने वाले	झूट के लिए	जासूसी करने वाले

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ

आप (स) का बिगाड़ सकेंगे	तो हरगिज़ न	उन से	आप (स) मुँह फेर लें	और अगर	उन से	मुँह फेर लें	या	उन के दरमियान

شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	उन के दरमियान	तो फ़ैसला करें	आप फ़ैसला करें	और अगर	कुछ

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا

उस में	तौरात	जबकि उन के पास	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	और कैसे	42	इन्साफ़ करने वाले

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ

वह लोग	और नहीं	उस	बाद	फिर जाते हैं	फिर	अल्लाह का हुक्म

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ ع ٦ ١٠

और नूर	हिदायत	उस में	तौरात	हम ने नाज़िल की	बेशक हम	43	मानने वाले

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)	जो फ़रमांबरदार थे	नबी (जमा)	उस के ज़रीआ	हुक्म देते थे

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ

अल्लाह की किताब	से (की)	वह निगहबान किए गए	इस लिए कि	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)

وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ

और डरो मुझ से	लोग	पस न डरो	निगरान (मुहाफ़िज़)	उस पर	और थे

وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ

उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला न करे	और जो	थोड़ी	क़ीमत	मेरी आयतों के बदले	और न ख़रीदो (न हासिल करो)

اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	44	काफ़िर (जमा)	वह	सो यही लोग	अल्लाह ने नाज़िल किया

فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ

और नाक	आँख के बदले	और आँख	जान के बदले	जान	कि	उस में

بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

और ज़ख़्मों	दाँत के बदले	और दाँत	कान के बदले	और कान	नाक के बदले

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ

और जो	उस के लिए	कफ़्फ़ारा	तो वह	उस को	माफ़ कर दिया	फिर जो-जिस	बदला

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	ज़ालिम (जमा)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	इब्ने मरयम	ईसा (अ)	उन के निशाने क़दम	पर	और हम ने पीछे भेजा

بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ

और नूर	हिदायत	उस में	इंजील	और हम ने उसे दी	तौरात	से	उस से पहले

وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

और नसीहत	और हिदायत	तौरात	से	उस से पहले	उस की जो	और तस्दीक़ करने वाली

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ

और जो	उस में	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के साथ जो	इंजील वाले	और फ़ैसला करें	46	परहेज़गारों के लिए

لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ

और हम ने नाज़िल की	47	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

किताब	से	उस से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाली	सच्चाई के साथ	किताब	आप की तरफ़

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ

और न पैरवी करें	अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	सो फ़ैसला करें	उस पर	और निगहबान ओ मुहाफ़िज़

اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً

दस्तूर	तुम में से	हम ने मुक़र्रर किया है	हर एक के लिए	हक़	से	तुम्हारे पास आगया	उस से	उन की ख़ाहिशात

وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	और लेकिन	वाहिदा (एक)	उम्मत	तो तुम्हें कर देता	अल्लाह चाहता	और अगर	और रास्ता

فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

वह तुम्हें बतलादेगा	सब को	तुम्हें लौटना	अल्लाह	तरफ़	नेकियां	पस सबक़त करो	उस ने तुम्हें दिया	जो	में

بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ۙ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	और फ़ैसला करें	48	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जो

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ

जो	बाज़ (किसी)	से	बहका न दें	कि	और उन से बचते रहो	उन की ख़ाहिशें	और न चलो

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ

उन्हें पहुँचादे	कि	अल्लाह	चाहता है	सिर्फ़ यही	तो जान लो	वह मुँह फेर लें	फिर अगर	आप की तरफ़	अल्लाह	नाज़िल किया

بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ

क्या हुक्म	49	नाफ़रमान	लोग	से	अक्सर	और बेशक	उन के गुनाह	बसबब बाज़

ع ٧ ١١ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

50	यक़ीन रखते हैं	लोगों के लिए	हुक्म	अल्लाह	से	बेहतर	और किस	वह चाहते हैं	जाहिलियत

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने क़दम पर भेजा, उस की तस्दीक़ करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तस्दीक़ करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली और उस पर निगहबान ओ मुहाफ़िज़, सो उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुक़र्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मते वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि ख़ाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें बहका न दें किसी ऐसे (हुक्म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह मुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के बाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक्म (रस्म ओ रिवाज) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक्म किस का है उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं? (50)

وقف غفران
وقف منزل
وقف لازم عند البعض

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ؔ

दोस्त	और नसारा	यहूद	न बनाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ

उन से	तो बेशक वह	तुम में से	उन से दोस्ती रखेगा	और जो	बाज़ (दूसरे)	दोस्त	उन में से बाज़

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ

में	वह लोग जो	पस तू देखेगा	51	ज़ालिम	लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ

कि	हमें डर है	कहते हैं	उन में (उन की तरफ़)	दौड़ते हैं	रोग	उन के दिल

تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ

अपने पास	से	या कोई हुक्म	लाए फ़तह	कि	अल्लाह	सो क़रीब है	गर्दिश	हम पर (न) आजाए

فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿ؕ۵۲﴾ وَيَقُوْلُ

और कहते हैं	52	पछताने वाले	अपने दिल (जमा)	में	वह छुपाते थे	जो	पर	तो रह जाएं

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ

कि वह	अपनी क़स्में	पक्की	अल्लाह की	क़स्में खाते थे	जो लोग	क्या यह वही हैं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)

لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

الثلثة

ऐ	53	नुक़्सान उठाने वाले	पस रह गए	उन के अ़मल	अकारत गए	तुम्हारे साथ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ

ऐसी क़ौम	लाएगा अल्लाह	तो अ़नक़रीब	अपना दीन	से	तुम से	फिरेगा	जो	जो लोग ईमान लाए (ईमाम वाले)

يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۡز

काफ़िर (जमा)	पर	ज़बरदस्त	मोमिनीन	पर	नर्म दिल	और वह उसे महबूब रखते हैं	वह उन्हें महबूब रखता है

يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ

यह	कोई मलामत करने वाला	मलामत	और नहीं डरते	अल्लाह	में रास्ता	जिहाद करते हैं

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ

तुम्हारा रफ़ीक़	उस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	54	इल्म वाला	वुस्अ़त वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	वह देता है	अल्लाह	फ़ज़्ल

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग	ओर जो लोग ईमान लाए	और उस का रसूल	अल्लाह

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ

अल्लाह	दोस्त रखते हैं	और जो	55	रुकूअ़ करने वाले	और वह	ज़कात	और देते हैं

وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع

ع ٨ / ٦ / ١٢

56	ग़ालिब (जमा)	वह	अल्लाह की जमाअ़त	तो बेशक	ओर जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और उस का रसूल

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो क़रीब है कि अल्लाह फ़तह लाए या अपने पास से कोई हुक्म (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहें गे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की क़स्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं। उन के अ़मल अकारत गए, पस वह नुक़्सान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़नक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम लाएगा जिन्हें वह महबूब रखता है और वह उसे महबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल हैं काफ़िरों पर ज़बरदस्त हैं, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअ़त ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ

ऐ	जो लोग	ईमान लाए (ईमान वाले)	न बनाओ	जो लोग ठहराते हैं	तुम्हारा दीन

هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

एक मज़ाक़	और खेल	से	वह लोग-जो	किताब दिए गए	तुम से क़ब्ल

وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

और काफ़िर	दोस्त	और डरो	अल्लाह	अगर तुम हो	ईमान वाले	57

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ

और जब	तुम पुकारते हो	तरफ़ (लिए)	नमाज़	वह उसे ठहराते हैं	एक मज़ाक़	और खेल	यह

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ

इस लिए कि वह	लोग	अक़्ल नहीं रखते हैं (बेअक़्ल)	58	आप (स) कह दें	ऐ अहले किताब	क्या ज़िद रखते हो

مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ

हम से	मगर	यह कि	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	और जो	नाज़िल किया गया	उस से क़ब्ल

وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ

और यह कि	तुम में अक्सर	नाफ़रमान	59	आप कह दें	क्या	तुम्हें बतलाऊँ	बद तर	से	उस

مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ

ठिकाना (जज़ा)	हां	अल्लाह	जो-जिस	उस पर लानत की	अल्लाह	और ग़ज़ब किया	उस पर	और बना दिया

مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ

उन से	बन्दर (जमा)	और ख़िन्ज़ीर (जमा)	और गुलामी	तागूत	वही लोग	बद तरीन

مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا

दरजे में	बहुत बहके हुए	से	सीधा	रास्ता	60	और जब	तुम्हारे पास आएं	कहते हैं

اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

हम ईमान लाए	हालांकि वह दाखिल हुए (आए)	कुफ़्र की हालत में	और वह	निकले चले गए	उस (कुफ़्र) के साथ	और अल्लाह

اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ

खूब जानता है	वह जो	थे	छुपाते	61	और तू देखेगा	बहुत	उन से	वह भाग दौड़ करते हैं

فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

में	गुनाह	और ज़ियादती	और उन का खाना	हराम	बुरा है	जो वह

يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ

कर रहे हैं	62	क्यों उन्हें मना नहीं करते	अल्लाह वाले (दर्वेश)	और उलमा	से

قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

उन की बातें गुनाह की	और उन का खाना	हराम	बुरा है	जो	वह कर रहे हैं	63

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक़ और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़्ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिक़ाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से क़ब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हां (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और ख़िन्ज़ीर, और (उन्हों ने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएं तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़्र की हालत में और निकले तो कुफ़्र के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उलमा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बख़ील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्हों ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह ख़र्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़्र, और हम ने उन के अन्दर क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। **(64)**

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बाग़ात में ज़रूर दाख़िल करते। **(65)**

और अगर वह तौरेत और इंजील क़ाइम रखते और जो उन के रब की तरफ़ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअ़त मियाना रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। **(66)**

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ़ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, बेशक अल्लाह क़ौमे कुफ़्फ़ार को हिदायत नहीं देता। **(67)**

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) क़ाइम करो तौरात और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएं) क़ौमे कुफ़्फ़ार पर। **(68)**

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا

उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)

قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا وقف لازم

बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह ख़र्च करता है	कुशादा हैं	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि	उन्हों ने कहा

مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ

उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़्र	सरकशी	आप का रब	से	आप की तरफ़	जो नाज़िल किया गया	उन से

الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا

आग	भड़काते हैं	जब कभी	क़ियामत का दिन	तक	और बुग़्ज़ (बैर)	दुश्मनी

لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की

لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا

अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले	पसन्द नहीं करता

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

क़ाइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बाग़ात	और ज़रूर हम उन्हें दाख़िल करते	उन की बुराइयां	उन से

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ

से	तो वह खाते	उन का रब	से	उन की तरफ़ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील	तौरात

فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ

और अक्सर	सीधी राह पर (मियाना रो)	एक जमाअ़त	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर

مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ ع ٩ ١٣

तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा	उन से

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ

आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैग़ाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा रब	से

مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ

आप कह दें	67	क़ौमे कुफ़्फ़ार	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	लोग	से

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ

और जो	और इंजील	तौरात	तुम क़ाइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब

اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)	नाज़िल किया गया

مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	क़ौमे कुफ़्फ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़्र	सरकशी	आप के रब की तरफ़ से

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा	और साबी	यहूदी हुए	और जो लोग	जो लोग ईमान लाए	बेशक

مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	अच्छे	और उस ने अ़मल किए	और आख़िरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो

يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	और हम ने भेजे	बनी इस्राईल	पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	बेशक	69	ग़मगीन होंगे

رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

झुटलाया	एक फ़रीक़	उन के दिल	न चाहते थे	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)

وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ

तो	और बहरे हो गए	सो वह अन्धे हुए	कोई ख़राबी	कि न होगी	और उन्हों ने गुमान किया	70	क़त्ल कर डालते	और एक फ़रीक़

تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देख रहा है	और अल्लाह	उन से	अक्सर	और बहरे होगए	अँधे होगए	फिर	उन की	अल्लाह	तौबा क़ुबूल की

يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	वही	अल्लाह	तहक़ीक़	वह जिन्हों ने कहा	बेशक काफ़िर हुए	71	वह करते हैं

وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ

बेशक वह	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	इबादत करो	ऐ बनी इस्राईल	मसीह (अ)	और कहा

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ

दोज़ख़	और उस का ठिकाना	जन्नत	उस पर	अल्लाह ने हराम कर दी	तो तहक़ीक़	अल्लाह का	शरीक ठहराए	जो

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

तीन का	बेशक अल्लाह	वह लोग जिन्हों ने कहा	अलबत्ता काफ़िर हुए	72	मददगार	कोई	ज़ालिमों के लिए	और नहीं

وقف لازم

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	उस से जो	वह बाज़ न आएं	और अगर	वाहिद	माबूद	सिवाए	माबूद	कोई	और नहीं	तीसरा (एक)

لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ

पस वह क्यों तौबा नहीं करते	73	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन से	जिन्हों ने कुफ़्र किया	ज़रूर पहुँचेगा

اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम	मसीह (अ)	नहीं	74	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	और उस से बख़्शिश मांगते	अल्लाह की तरफ़ (आगे)

اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ

खाते थे	वह दोनों	सिद्दीक़ा (सच्ची-वली)	और उस की माँ	रसूल	उस से पहले	गुज़र चुके	रसूल	मगर

الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	औन्धे जा रहे हैं	कहां (कैसे)	देखो	फिर	आयात (दलाइल)	उन के लिए	हम बयान करते हैं	कैसे	देखो	खाना

बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और अच्छे अ़मल करे तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (69)

बेशक हम ने बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद लिया और हम ने उन की तरफ़ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुक्म) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फ़रीक़ को झुटलाया और एक फ़रीक़ को क़त्ल कर डाला, (70)

और उन्हों ने गुमान किया कि कोई ख़राबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और बहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

बेशक वह काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा तहक़ीक़ अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहक़ीक़ अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफ़िर हुए जिन्हों ने कहा बेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहिद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्हों ने कुफ़्र किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शिश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ़ एक रसूल हैं) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिद्दीक़ा (सच्ची - वली) हैं, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ

और न नफ़ा	नुक़सान	तुम्हारे लिए	मालिक	जो नहीं	अल्लाह के सिवा	से	क्या तुम पूजते हो	कह दें

وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ

में	गुलू (मुबालिग़ा) न करो	ऐ अहले किताब	कह दें	76	जानने वाला	सुनने वाला	वही	और अल्लाह

دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	गुमराह हो चुके	वह लोग	ख़ाहिशात	पैरवी करो	और न	नाहक़	अपना दीन

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ ع لُعِنَ ع ١١ ١٤

लानत किए गए (मलऊन हुए)	77	रास्ता	सीधा	से	और भटक गए	बहुत से	और उन्हों ने गुमराह किया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى

और ईसा (अ)	दाऊद (अ)	ज़बान	पर	बनी इस्राईल	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया

ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ

एक दूसरे को न रोकते थे	78	हद से बढ़ते	और वह थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	इब्ने मरयम

عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	करते	जो वह थे	अलबत्ता बुरा है	वह करते थे	बुरे काम	से

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

जो आगे भेजा	अलबत्ता बुरा है	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	दोस्ती करते हैं	उन से	अक्सर	आप (स) देखेंगे

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِى الْعَذَابِ هُمْ

वह	और अ़ज़ाब में	उन पर	ग़ज़बनाक हुआ अल्लाह	कि	उन की जानें	अपने लिए

خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِىِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ

नाज़िल किया गया	और जो	और रसूल	अल्लाह	वह ईमान लाए	और अगर	80	हमेशा रहने वाले

اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

उन से	अक्सर	और लेकिन	दोस्त	उन्हें बनाते	न	उस की तरफ़

فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए	दुश्मनी	लोग	सब से ज़ियादा	तुम ज़रूर पाओगे	81	नाफ़रमान

الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً

दोस्ती	सब से ज़ियादा क़रीब	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	और जिन लोगों ने शिर्क किया	यहूद

لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ

इस लिए कि	यह	नसारा	हम	जिन लोगों ने कहा	ईमान लाए (मसलमान)	उन के लिए जो

مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	तकब्बुर नहीं करते	और यह कि वह	और दर्वेश	आ़लिम	उन से

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुक़्सान का और न नफ़ा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक़ मुबालिग़ा न करो और उन लोगों की ख़ाहिशात की पैरवी न करो जो उस से क़ब्ल गुमराह हो चुके हैं और उन्हों ने बहुत सों को गुमराह किया और (ख़ुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा ख़ुद उन्हों ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ और वह हमेशा अ़ज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुस्लमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आ़लिम और दर्वेश हैं, और यह कि वह तकब्बुर नहीं करते। (82)

الجزء ٧

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

उन की आँखें	तू देखे	रसूल	तरफ़	जो नाज़िल किया गया	सुनते हैं	और जब

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	हक़	से-को	उन्हों ने पहचान लिया	इस (वजह से)	आँसू	से	बह पड़ती हैं

فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا

हमारे पास आया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान न लाएं	हम को	और क्या	83	गवाह (जमा)	साथ	पस हमें लिख ले

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	नेक लोग	क़ौम	साथ	हमारा रब	हमें दाख़िल करे	कि	और हम तमअ़ रखते हैं	हक़	से-पर

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगें	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उस के बदले जो उन्हों ने कहा	अल्लाह	पस दिए उन को

فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

और झुटलाया	उन्हों ने कुफ़्र किया	और जो लोग	85	नेकोकार (जमा)	जज़ा	और यह	उस (उन) में

ع ١١ ٩ ١ بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	86	दोज़ख़	साथी (वाले)	यही लोग	हमारी आयात

لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	और हद से न बढ़ो	तुम्हारे लिए	हलाल कीं अल्लाह ने	जो	पाकीज़ा चीज़ें	न हराम ठहराओ

لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا

पाकीज़ा	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	और खाओ	87	हद से बढ़ने वाले	नहीं पसन्द करता

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

तुम्हारा मुआख़ज़ा करता अल्लाह	नहीं	88	मानते हो	उस को	तुम	वह जिस	और डरो अल्लाह से

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ

क़सम	मज़बूत बांधा	उस पर जो	मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	और लेकिन	तुम्हारी क़समें	में-पर	बेहूदा

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ

तुम खिलाते हो	जो	औसत	से-का	मोहताज (जमा)	दस	खाना खिलाना	सो उस का कफ़्फ़ारा

اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

तो रोज़ा रखे	न पाए	पस जो	एक गर्दन	या आज़ाद करना	या उन्हें कपड़े पहनाना	अपने घर वाले

ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا

और हिफ़ाज़त करो	तुम क़सम खाओ	जब	तुम्हारी क़समें	कफ़्फ़ारा	यह	तीन दिन

اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	शुक्र करो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	बयान करता है अल्लाह	इसी तरह	अपनी क़समें

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से वह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्हों ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। (83)

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमअ़ रखते हैं कि हमें दाख़िल करे हमारा रब नेक लोगों के साथ। (84)

पस जो उन्हों ने कहा उस के बदले अल्लाह ने उन्हें बाग़ात दिए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगें, और यह नेकोकारों की जज़ा है। (85)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (86)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए: पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। (87)

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। (88)

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी बेहूदा क़समों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस क़सम को तुम ने मज़बूत बान्धा (पुख़ता क़सम पर), सो उस का कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (ग़ुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खाओ, और अपनी क़समो की हिफ़ाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। (89)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ

ऐ	ईमान वालो	इस के सिवा नहीं कि शराब	और जुआ	और बुत	और पांसे

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا

नापाक	से	काम	शैतान	सो उन से बचो	ताकि तुम	फ़लाह पाओ	90	इस के सिवा नहीं

يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ

चाहता है	शैतान	कि डाले	तुम्हारे दरमियान	दुश्मनी	और बैर	में-से	शराब

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

और जुआ	और तुम्हें रोके	से	अल्लाह की याद	और नमाज़ से	पस क्या	तुम	बाज़ आओगे	91

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا

और इताअ़त करो	अल्लाह	और इताअ़त करो	रसूल	और बचते रहो	फिर अगर	तुम फिर जाओगे	तो जान लो	सिर्फ़

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

पर (ज़िम्मा)	हमारा रसूल (स)	पहुँचा देना	खोल कर	92	नहीं	पर	जो लोग ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

कोई गुनाह	में-जो	वह खा चुके	जब	उन्हों ने परहेज़ किया	और वह ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١٢/٢

फिर वह डरे	और ईमान लाए	फिर	वह डरे	और उन्हों ने नेकोकारी की	और अल्लाह	दोस्त रखता है	नेकोकार (जमा)	93

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ

ऐ	ईमान वालो	ज़रूर तुम्हें आज़माएगा अल्लाह	कुछ (किसी क़द्र)	से	शिकार	उस तक पहुँचते हैं	तुम्हारे हाथ

وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

और तुम्हारे नेज़े	ताकि अल्लाह मालूम करले	कौन	उस से डरता है	बिन देखे	सो जो-जिस	ज़ियादती की	इस के बाद

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ

सो उसके लिए	अ़ज़ाब	दर्दनाक	94	ऐ	ईमान वालो	न मारो	शिकार	और जब कि तुम

حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ

हालते एहराम में	और जो	उस को मारे	तुम में से	जान बूझ कर	तो बदला	बराबर	जो वह मारे	मवेशी से

يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ

फ़ैसला करें	उस का	दो मोतबर	तुम से	नियाज़	पहुँचाए	कअ़बा	या कफ़्फ़ारा	खाना

مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ

मोहताज (जमा)	या बराबर	उस	रोज़े	ताकि चखे	अपने काम (किए) की सज़ा	अल्लाह ने माफ़ किया	उस से जो	पहले हो चुका

وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

और जो	फिर करे	तो अल्लाह बदला लेगा	उस से	और अल्लाह	ग़ालिब	बदला लेने वाला	95

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक हैं, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (वाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्हों ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अ़मल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्हों ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आज़माएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने ज़ियादती की उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, ख़ाने कअ़बा नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़्फ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ

और हराम किया गया	और मुसाफ़िरों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा	और उस का खाना	दर्या का शिकार	तुम्हारे लिए	हलाल किया गया

عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	वह जो	अल्लाह	और डरो	हालते एहराम में	जब तक तुम हो	ख़ुश्की का शिकार	तुम पर

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	क़ियाम का बाइस	एहतिराम वाला घर	कअ़बा	अल्लाह	बनाया	96	तुम जमा किए जाओगे

وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	ताकि तुम जान लो	यह	और पट्टे पड़े हुए जानवर	और क़ुर्बानी	और हुर्मत वाले महीने

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चीज़	हर	और यह कि अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसे मालूम है

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और यह कि अल्लाह	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	जान लो	97	जानने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ

जो तुम ज़ाहिर करते हो	जानता है	और अल्लाह	मगर पहुँचा देना	रसूल (स) पर- रसूल के ज़िम्मे	नहीं	98	मेहरबान

وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ

ख़ाह	और पाक	नापाक	बराबर नहीं	कह दीजिए	99	तुम छुपाते हो	और जो

اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	ऐ अ़क़्ल वालो	सो डरो अल्लाह से	नापाक	कस्रत	तुम्हें अच्छी लगे

ع ١٣ ٧ ٣ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ

जो ज़ाहिर की जाएं	चीज़ें	से- मुतअ़ल्लिक़	न पूछो	ईमान वाले	ऐ	100	फ़लाह पाओ

لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْئَلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ

ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए	नाज़िल किया जा रहा है क़ुरआन	जब	उनके मुतअ़ल्लिक़	तुम पूछोगे	और अगर	तुम्हें बुरी लगें	तुम्हारे लिए

عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ

एक क़ौम	उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा	101	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	उस से	अल्लाह ने दरगुज़र की

مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ

बहीरा	अल्लाह	नहीं बनाया	102	इन्कार करने वाले (मुन्किर)	उस से	वह हो गए	फिर	तुम से क़ब्ल

وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और लेकिन	और न हाम	और न वसीला	और न साइबा

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103	नहीं रखते अ़क़्ल	और उन के अक्सर	झूटे	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धते हैं

तुम्हारे लिए हलाल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फ़ाइदे के लिए है और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम पर ख़ुश्की (जंगल) का शिकार हराम किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया कअ़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए क़ियाम का बाइस, और हुर्मत वाले महीने और क़ुर्बानी और गले में पट्टा (क़ुर्बानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (98)

रसूल (स) के जिम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, ख़ाह तुम्हें नापाक की कस्रत अच्छी लगे, सो ऐ अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम्हारे लिए ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें, और अगर उन के मुतअ़ल्लिक़ (ऐसे वक़्त) पूछोगे जब क़ुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। (101)

इसी क़िस्म के सवालात तुम से क़ब्ल एक क़ौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते हैं, और उन के अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। (103)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا

वह कहते हैं	रसूल	और तरफ़	अल्लाह ने नाज़िल किया	जो	तरफ़	आओ तुम	उन से	कहा जाए	और जब

حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

जानते	न	उन के बाप दादा	क्या ख़ाह हों	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	हमारे लिए काफ़ी

شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ

अपनी जानें	तुम पर	ईमान वाले	ऐ	104	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ

لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

फिर वह तुम्हें जतला देगा	सब	तुम्हें लौटना है	अल्लाह की तरफ़	हिदायत पर हो	जब	गुमराह हुआ	जो	न नुक्सान पहँचाएगा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا

जब	तुम्हारे दरमियान	गवाही	ईमान वाले	ऐ	105	तुम करते थे	जो

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ

तुम से	इन्साफ़ वाले (मोतबर)	दो	वसीयत	वक़्त	मौत	तुम में से किसी को	आए

اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ

फिर तुम्हें पहुँचे	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो	तुम	अगर	तुम्हारे सिवा	से	और दो	या

مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	दोनों क़सम खाएं	नमाज़	बाद	उन दोनो को रोक लो	मौत	मुसीबत

اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ

और हम नहीं छुपाते	रिश्तेदार	ख़ाह हों	कोई क़ीमत	इस के इवज़	हम मोल नहीं लेते	तुम्हें शक हो	अगर

شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ

दोनों सज़ावार हुए	कि वह दोनों	उस पर	ख़बर हो जाए	फिर अगर	106	गुनाहगारों	से	उस वक़्त	बेशक हम	अल्लाह	गवाही

اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	मुसतहिक़ (जिन का हक़ मारना चाहा)	वह लोग	से	उन की जगह	खड़े हों	तो दो और	गुनाह

الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا

उन दोनों की गवाही	से	ज़ियादा सही	कि हमारी गवाही	अल्लाह की	फिर वह क़सम खाएं	सब से ज़ियादा क़रीब

وَمَا اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ

कि	ज़ियादा क़रीब	यह	107	ज़ालिम (जमा)	अलबत्ता- से	उस सूरत में	बेशक हम	हम ने ज़ियादती की	और नहीं

يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ

उन की क़सम	बाद	क़सम	कि रद् कर दीजाएगी	वह डरें	या	उस का रुख़ (सही तरीक़ा)	पर	वह लाएं (अदा करें) गवाही

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع

108	नाफ़रमान (जमा)	क़ौम	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	और डरो अल्लाह से

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ़ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ़ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़्ता हों। **(104)**

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाज़िम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक्सान न पहँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। **(105)**

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीक़ा यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख़्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत पहुँचे, उन दोनों को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम उस के इवज़ कोई क़ीमत मोल नहीं लेते ख़ाह रिश्तेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम बेशक गुनाहगारों में से हैं। **(106)**

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) क़रीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम बेशक ज़ालिमों में से होंगे। **(107)**

यह क़रीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीक़े पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद् कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान क़ौम को। **(108)**

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ

दिन	जमा करेगा अल्लाह	रसूल (जमा)	फिर कहेगा	क्या	तुम्हें जवाब मिला	वह कहेंगे	नहीं ख़बर

لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

हमें	बेशक तू	तू	जानने वाला	छुपी बातें	109	जब	अल्लाह ने कहा	ऐ ईसा (अ)	इब्ने मरयम (अ)

وقف لازم

اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۫ قف

याद कर	मेरी नेमत	तुझ (आप) पर	और पर	तेरी (अपनी) वालिदा	जब मैं ने तेरी मदद की	रूहे पाक से

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ

तू बातें करता था	लोग	पन्घोड़े में	और बड़ी उमर	और जब	तुझे सिखाई	किताब

وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ

और हिक्मत	और तौरात	और इन्जील	और जब	तू बनाता था	से	मिट्टी

كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِيْ

परिन्दे की सूरत	मेरे हुक्म से	फिर फूंक मारता था उस में	तो वह हो जाता	उड़ने वाला	मेरे हुक्म से

وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ

और शिफ़ा देता	मादरज़ाद अन्धा	और कोढ़ी	मेरे हुक्म से	और जब	निकाल खड़ा करता	मुर्दा	मेरे हुक्म से

وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

और जब	मैं ने रोका	बनी इस्राईल	तुझ से	जब तू उन के पास आया	निशानियों के साथ

فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

तो कहा	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	उन से	नहीं	यह	मगर (सिर्फ़)	जादू	खुला	110

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا

और जब	मैं ने दिल में डाल दिया	तरफ़	हवारी (जमा)	कि	ईमान लाओ मुझ पर	और मेरे रसूल (अ) पर	उन्हों ने कहा

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हम ईमान लाए	और आप गवाह रहें	कि बेशक हम	फ़रमांबरदार	111	जब कहा	हवारी (जमा)

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

ऐ ईसा (अ)	इब्ने मरयम (अ)	क्या	कर सकता है	तुम्हारा रब	कि वह	उतारे

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

हम पर	ख़्वान	से	आस्मान	उस ने कहा	अल्लाह से डरो	अगर	तुम हो

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُنَا

मोमिन (जमा)	112	उन्हों ने कहा	हम चाहते हैं	कि	हम खाएं	उस से	और मुत्मईन हों	हमारे दिल

الربع

وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

और हम जान लें	कि	तुम ने हम से सच कहा	और हम रहें	उस पर	से	गवाह (जमा)	113

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें ख़बर नहीं, बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रूहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्घोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब मैं ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफ़ा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्हों ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें बेशक हम फ़रमांबरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इब्ने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से ख़्वान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्हों ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	ख़ान	हम पर	उतार	हमारे रब	ऐ अल्लाह	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	कहा

تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

और तू	और हमें रोज़ी दे	तुझ से	और निशानी	और हमारे पिछले	हमारे पहलों के लिए	ईद	हमारे लिए	हो

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ

बाद	नाशुक्री करेगा	फिर जो	तुम पर	वह उतारूंगा	बेशक मैं	कहा अल्लाह ने	114	रोज़ी देने वाला	बेहतर

مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۧ ﴿١١٥﴾ ع ١٥ ٥

115	जहान वाले	से	किसी को	अज़ाब दूँगा	न	उसे अज़ाब दूँगा ऐसा अज़ाब	तो मैं	तुम से

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद	और मेरी माँ

مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وقف النبي ﷺ

मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक़	मेरे लिए	नहीं

وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ

उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता

اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

उन पर	और मैं था	और तुम्हारा रब	मेरा रब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर

شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	ख़बरदार

وَاَنْتَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ

और अगर	तेरे बन्दे	तो बेशक वह	तू उन्हें अज़ाब दे	अगर	117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू

تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

नफ़ा देगा	दिन	यह	अल्लाह ने फ़रमाया	118	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	तो बेशक तू	उन को	तू बख़्शदे

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	उन का सच	सच्चे

فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

119	बड़ी	कामयाबी	यह	उस से	और वह राज़ी हुए	उन से	अल्लाह राज़ी हुआ	हमेशा	उन में

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۧ ﴿١٢٠﴾ ع ١٦ ٦

120	कुदरत वाला-क़ादिर	हर शै	पर	और वह	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों की	अल्लाह के लिए

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़ान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (114)

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो में उस को ऐसा अज़ाब दूँगा जो न अज़ाब दूँगा जहान वालों में से किसी को। (115)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़्श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (118)

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। (119)

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर क़ादिर है। (120)

آيَاتُهَا ١٦٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ (٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

आयात 165	(6) सूरतुल अनआ़म मवेशी	रुकूआ़त 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	वह जिस ने	पैदा किया	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	और बनाया	अन्धेरों

وَالنُّوْرَ ۬ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِىْ

और रौशनी	फिर	जिन्हों ने	कुफ़्र किया (काफ़िर)	अपने रब के साथ	बराबर करते हैं	1	वह	जिस ने

خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ

तुम्हें पैदा किया	से	मिट्टी	फिर	मुक़र्रर किया	एक वक़्त	और एक वक़्त	मुक़र्रर	उस के हाँ	फिर	तुम

تَمْتَرُوْنَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ

शक करते हो	2	और वह	अल्लाह	में	आस्मान (जमा)	और में	ज़मीन	वह जानता है	तुम्हारा बातिन

وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ

और तुम्हारा ज़ाहिर	और जानता है	जो तुम कमाते हो	3	और उन के पास नहीं आई	से- कोई	निशानी	से	निशानियां

رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ

उन का रब	मगर	होते हैं वह	उस से	मुँह फेरने वाले	4	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	हक़ को	जब	उन के पास आया

فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

सो जल्द	उन के पास आजाएगी	ख़बर (हक़ीक़त)	जो वह थे	उस का	मज़ाक़ उड़ाते	5	क्या उन्हों ने नहीं देखा	कितनी

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ

हम ने हलाक कर दीं	से	उन से क़ब्ल	से	उम्मतें	हम ने उन्हें जमा दिया था	ज़मीन (मुल्क) में	जो	नहीं जमाया	तुम्हें

وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ

और हम ने भेजा	बादल	उन पर	मूसलाधार	और हम ने बनाईं	नहरें	बहती हैं	से

تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾

उन के नीचे	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	उन के गुनाहों के सबब	और हम ने खड़ी कीं	से	उन के बाद	उम्मतें	दूसरी	6

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِىْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ

और अगर हम उतारें	तुम पर	कुछ लिखा हुआ	में	काग़ज़	फिर उसे छू लें	अपने हाथों से	अलबत्ता कहेंगे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	नहीं यह	मगर	जादू	खुला	7	और कहते हैं	क्यों नहीं उतारा गया

عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ﴿٨﴾

उस पर	फ़रिश्ता	और अगर	हम उतारते	फ़रिश्ता	तो तमाम हो गया होता	काम	फिर	उन्हें मोहलत न दी जाती	8

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुद्दत मुक़र्रर कि, और उस के हाँ एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा बातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं। (4)

पस बेशक उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जल्द ही उस की हक़ीक़त उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी उम्मतें हलाक कीं? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरस्ता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाईं जो उन के नीचे बहती थें, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी कीं (बदल दीं)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर काग़ज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम शुबा डालते	आदमी	तो हम उसे बनाते	फ़रिश्ता	हम उसे बनाते	और अगर

مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ

तो घेर लिया	आप (स) से पहले	से	रसूलों के साथ	हँसी की गई	और अल्बत्ता	9	जो वह शुबा करते हैं

بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ ع ١٠

आप कह दें	10	हँसी करते	उस पर	वह थे	जो- जिस	उन से	हँसी की	उन लोगों को जिन्हों ने

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	देखो	फिर	ज़मीन (मुल्क) में	सैर करो

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ

अपने (नफ़्स) आप पर	लिखी है	कह दें अल्लाह के लिए	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	किस के लिए	आप पूछें

الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	उस में	नहीं शक	क़ियामत का दिन	तुम्हें ज़रूर जमा करेगा	रहमत

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ

रात	में	बस्ता है	जो	और उस के लिए	12	ईमान नहीं लाएंगे	तो वही	अपने आप	ख़सारे में डाला

وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह	क्या सिवाए	आप (स) कह दें	13	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और दिन

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ

आप (स) कह दें	और खाता नहीं	खिलाता है	और वह	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाने वाला

اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ

से	और तू हरगिज़ न हो	हुक्म माना	जो- जिस	सब से पहला	मैं हो जाऊँ	कि	बेशक मुझ को हुक्म दिया गया

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	मैं डरता हूँ	बेशक मैं	आप (स) कह दें	14	शिर्क करने वाले

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

उस पर रहम किया	तहक़ीक़	उस दिन	उस से	फेर दिया जाए	जो- जिस	15	बड़ा दिन

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ

दूर करने वाला	तो नहीं	कोई सख़्ती	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	और अगर	16	कामयाबी खुली	और यह

لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	तो वह	कोई भलाई	वह पहुँचाए तुम्हें	और अगर	उस के सिवा	उस का

قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर	ग़ालिब	और वह	17	क़ादिर

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्बत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्में ले ली है), क़ियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) खिलाता है और वह खुद नहीं खाता। आप (स) कह दें बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुक्म माना, और तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें बेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करुं तो बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अ़ज़ाब) फेर दिया जाए, तहक़ीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर क़ादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ قُلِ اللّٰهُ ۣ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۣ

और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह	आप (स) कह दें	गवाही	सब से बड़ी	चीज़	कौन सी	आप (स) कहें

وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَىِٕنَّكُمْ

क्या तुम बेशक	पहुँचे	और जिस	इस से	ताकि मैं तुम्हें डराऊँ	कुरआन	यह	मुझ पर	और वहि किया गया

لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا

सिर्फ़	आप (स) कह दें	मैं गवाही नहीं देता	आप (स) कह दें	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ	कि	तुम गवाही देते हो

وقف لازم

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ١٩ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

हम ने दी उन्हें	वह जिन्हें	19	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	और बेशक मैं	यकता	माबूद	वह

وقف لازم

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	अपने बेटे	वह पहचानते हैं	जैसे	वह उस को पहचानते हैं	किताब

ع ٢ ٨

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ٢٠ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	20	ईमान नहीं लाते	सो वह

اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ٢١ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

सब	उन को जमा करेंगे	और जिस दिन	21	ज़ालिम (जमा)	फ़लाह नहीं पाते	बिला शुबा वह	उस की आयतें	या झुटलाए

ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَاۗؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

तुम थे	जिन का	तुम्हारे शरीक	कहाँ	शिर्क किया (मुशरिकों)	उन को जिन्हों ने	हम कहेंगे	फिर

تَزْعُمُوْنَ ٢٢ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا

न थे हम	हमारा रब	क़सम अल्लाह की	वह कहें	कि	सिवाए	उन की शरारत	न होगी- न रही	फिर	22	दावा करते

مُشْرِكِيْنَ ٢٣ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ

उन से	और खोई गईं	अपनी जानों	पर	उन्हों ने झूट बान्धा	कैसे	देखो	23	शिर्क करने वाले

مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ٢٤ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰي

पर	और हम ने डाल दिया	आप (स) की तरफ़	कान लगाता था	जो	और उन से	24	वह बातें बनाते थे	जो

قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ

तमाम	वह देखें	और अगर	बोझ	और उन के कानों में	वह (न) समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल

اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

जिन लोगों ने	कहते हैं	आप (स) से झगड़ते हैं	आप (स) के पास आते हैं	जब	यहां तक कि	न ईमान लाएंगे उस पर	निशानी

كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٢٥ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ

उस से	रोकते हैं	और वह	25	पहले लोग (जमा)	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उन्हों ने कुफ़्र किया

وَيَنْــــَٔـوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ٢٦

26	और वह शऊर नहीं रखते	अपने आप	मगर (सिर्फ़)	हलाक करते हैं	और नहीं	उस से	और भागते हैं

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह कुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाक़ई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद हैं! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता, आप (स) कह दें सिर्फ़ वह माबूद यकता है, और मैं उस से बेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने ख़सारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, बेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुश्रिकों को: कहां हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़्र) इस के सिवा कि वह कहेंगे: हमारे रब अल्लाह की क़सम हम मुश्रिक न थे। (23)

देखो! उन्हों ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गईं। (24)

और उन से (बाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालों में से। (27)

बल्कि वह उस से क़ब्ल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगें जिस से वह रोके गए और बेशक वह झूटे हैं। (28)

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। (29)

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की क़सम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अ़ज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़्र करते थे। (30)

तहक़ीक़ वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने अल्लाह के मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। (31)

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का बेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते। (32)

बेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यक़ीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (33)

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हों ने सब्र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। (34)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ

और न झुटलाएं हम	वापस भेजे जाएं	ऐ काश हम	तो कहेंगे	आग	पर	जब खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)

بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا

जो	ज़ाहिर हो गया उन पर	बल्कि	27	ईमान वाले	से	और हो जाएं हम	अपना रब	आयतों को

كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ

और बेशक वह	उस से	वही रोके गए	तो फिर करने लगें	वापस भेजे जाएं	और अगर	उस से पहले	वह छुपाते थे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	मगर (सिर्फ़)	है	नहीं	और कहते हैं	28	झूटे

بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ

क्या नहीं	वह फ़रमाएगा	अपना रब	पर (सामने)	खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)	29	उठाए जाने वाले

هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا

इस लिए कि	अ़ज़ाब	पस चखो	वह फ़रमाएगा	क़सम हमारे रब की	हां	वह कहेंगे	सच	यह

كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ ۭ حَتّٰٓى ع ١٠ ٣ ٩

यहां तक कि	अल्लाह से मिलना	वह लोग जिन्हों ने झुटलाया	घाटे में पड़े	तहक़ीक़	30	तुम कुफ़्र करते थे

اِذَا جَاۗءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ

इस में	जो हम ने कोताही की	पर	हाए हम पर अफ़सोस	वह कहने लगे	अचानक	क़ियामत	आ पहुँची उन पर	जब

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

31	जो वह उठाएंगे	बुरा	आगाह रहो	अपनी पीठ (जमा)	पर	अपने बोझ	उठाए होंगे	और वह

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

उन के लिए	बेहतर	और आख़िरत का घर	और जी का बेहलावा	खेल	मगर (सिर्फ़)	दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं

يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ

जो वह	आप को ज़रूर रंजीदा करती है	कि वह	बेशक हम जानते हैं	32	सो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते	परहेज़गारी करते हैं

يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	ज़ालिम लोग	और लेकिन (बल्कि)	नहीं झुटलाते आप (स) को	सो वह यक़ीनन	कहते हैं

يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى

पर	पस सब्र किया उन्हों ने	आप (स) से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता झुटलाए गए	33	इन्कार करते हैं

مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

और नहीं बदलने वाला	हमारी मदद	उन पर आगई	यहां तक कि	और सताए गए	जो वह झुटलाए गए

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَاۗءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	रसूल (जमा)	ख़बर	से (कुछ)	आप के पास पहुँची	और अलबत्ता	अल्लाह की बातों को

وَاِنۡ كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكَ اِعۡرَاضُهُمۡ فَاِنِ اسۡتَطَعۡتَ اَنۡ تَبۡتَغِىَ

ढूंड लो	कि	तुम से हो सके	तो अगर	उन का मुँह फेरना	आप (स) पर	गरां	है	और अगर

نَفَقًا فِى الۡاَرۡضِ اَوۡ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاۡتِيَهُمۡ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	कोई निशानी	फिर ले आओ उन के पास	आस्मान में	कोई सीढ़ी	या	ज़मीन में	कोई सुरंग

النصف

لَجَمَعَهُمۡ عَلَى الۡهُدٰى فَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا يَسۡتَجِيۡبُ

मानते हैं	सिर्फ़ वह	35	बे ख़बर (जमा)	से	सो आप (स) न हों	हिदायत पर	तो उन्हें जमा कर देता

وقف منزل
وقف غفران

الَّذِيۡنَ يَسۡمَعُوۡنَ ؕ وَالۡمَوۡتٰى يَبۡعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيۡهِ يُرۡجَعُوۡنَ ﴿٣٦﴾

36	वह लौटाए जाएंगे	उस की तरफ़	फिर	उन्हें उठाएगा अल्लाह	और मुर्दे	सुनते हैं	जो लोग

وَقَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ قُلۡ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنۡ

कि	पर	क़ादिर	बेशक अल्लाह	आप (स) कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों नहीं उतारी गई	और वह कहते हैं

يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنۡ دَآبَّةٍ فِى الۡاَرۡضِ

ज़मीन में	चलने वाला	कोई	और नहीं	37	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	निशानी	उतारे

وَلَا طٰۤئِرٍ يَّطِيۡرُ بِجَنَاحَيۡهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمۡثَالُكُمۡ ؕ مَا فَرَّطۡنَا

नहीं छोड़ी हम ने	तुम्हारी तरह	उम्मतें (जमाअ़तें)	मगर	अपने परों से	उड़ता है	परिन्दा	और न

فِى الۡكِتٰبِ مِنۡ شَىۡءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمۡ يُحۡشَرُوۡنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا

उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो कि	38	जमा किए जाएंगे	अपना रब	तरफ़	फिर	चीज़	कोई	किताब में

بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكۡمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنۡ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضۡلِلۡهُ ؕ وَمَنۡ يَّشَاۡ

और जिसे चाहे	उसे गुमराह कर दे	अल्लाह चाहे	जो-जिस	अन्धेरे	में	और गूंगे	बहरे	हमारी आयात

يَجۡعَلۡهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٣٩﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتَكُمۡ اِنۡ اَتٰٮكُمۡ عَذَابُ

अ़ज़ाब	तुम पर आए	अगर	भला देखो	आप (स) कह दें	39	सीधा	रास्ता	पर	उसे कर दे (चला दे)

اللّٰهِ اَوۡ اَتَتۡكُمُ السَّاعَةُ اَغَيۡرَ اللّٰهِ تَدۡعُوۡنَ ۚ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٤٠﴾

40	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम पुकारोगे	क्या अल्लाह के सिवा	क़ियामत	या आए तुम पर	अल्लाह

بَلۡ اِيَّاهُ تَدۡعُوۡنَ فَيَكۡشِفُ مَا تَدۡعُوۡنَ اِلَيۡهِ اِنۡ شَآءَ وَتَنۡسَوۡنَ

और तुम भूल जाते हो	वह चाहे	अगर	उस के लिए	जिसे पुकारते हो	पस खोल देता है (दूर करदेता है)	तुम पुकारते हो	उसी को	बल्कि

ع ١٦
١٠

مَا تُشۡرِكُوۡنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَاَخَذۡنٰهُمۡ بِالۡبَاۡسَآءِ

सख़्ती में	पस हम ने उन्हें पकड़ा	तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजे (रसूल)	41	तुम शरीक करते हो	जो-जिस

وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمۡ يَتَضَرَّعُوۡنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوۡلَاۤ اِذۡ جَآءَهُمۡ بَاۡسُنَا تَضَرَّعُوۡا

वह गिड़गिड़ाए	हमारा अ़ज़ाब	आया उन पर	जब	फिर क्यों न	42	गिड़गिड़ाएं	ताकि वह	और तक्लीफ़

وَلٰكِنۡ قَسَتۡ قُلُوۡبُهُمۡ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيۡطٰنُ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٤٣﴾

43	वह करते थे	जो	शैतान	उन को	आरास्ता कर दिखाया	दिल उन के	सख़्त हो गए	और लेकिन

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी ढूंड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) बे ख़बरों में से न हों। (35)

मानते सिर्फ़ वह हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36)

और वह कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर क़ादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकीन उन में अक्सर नहीं जानते। (37)

और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअ़तें हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे हैं, अन्धेरों में हैं, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39)

आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आए या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40)

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41)

तहक़ीक़ हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42)

फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो खौफ़ रखते हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ

हर चीज़	दरवाज़े	उन पर	तो हम ने खोल दिए	उस के साथ	जो नसीहत की गई	वह भूल गए	फिर जब

حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

वह	पस उस वक़्त	अचानक	हम ने पकड़ा उन को	उन्हें दी गई	उस से जो	खुश हो गए	जब	यहां तक कि

مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	क़ौम	जड़	फिर काट दी गई	44	मायूस रह गए

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ

तुम्हारे कान	ले (छीन ले) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	45	सारे जहानों का रब

وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ

देखो	यह	तुम को लादे	अल्लाह	सिवाए	माबूद	कौन	तुम्हारे दिल	पर	और मुहर लगा दे	और तुम्हारी आँखें

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ

अगर	तुम देखो तो सही	आप (स) कह दें	46	किनारा करते हैं	वह	फिर	आयतें	बदल बदल कर बयान करते हैं	कैसे

اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	सिवाए	हलाक होगा	क्या	या खुल्लम खुल्ला	अचानक	अज़ाब अल्लाह का	तुम पर आए

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ

और डर सुनाने वाले	ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और नहीं भेजते हम	47	ज़ालिम (जमा)

فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	और संवर गया	ईमान लाया	पस जो

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

इस लिए कि	अज़ाब	उन्हें पहुँचे गा	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ

मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम से	नहीं कहता मैं	आप कह दें	49	वह करते थे नाफ़रमानी

الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۭ

मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	मगर	मैं नहीं पैरवी करता	फ़रिश्ता	कि मैं	तुम से	और नहीं कहता मैं	ग़ैब

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٩ ١١

50	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते	और बीना	नाबीना	बराबर है	क्या	आप कह दें

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ

नहीं	अपना रब	तरफ़ (सामने)	वह जमा किए जाएंगे	कि	खौफ़ रखते हैं	वह लोग जो	उस से	और डरावें

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾

51	बचते रहें	ताकि वह	सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती	उस के सिवा	कोई	उन के लिए

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

और शाम	सुबह	अपना रब	पुकारते हैं	वह लोग जो	और दूर न करें आप

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

कुछ	उन का हिसाब	से	आप (स) पर	नहीं	उस का रुख़ (रज़ा)	वह चाहते हैं

وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	तो हो जाओगे	कि तुम उन्हें दूर करोगे	कुछ	उन पर	आप (स) का हिसाब	से	और नहीं

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ

क्या यही हैं	ताकि वह कहें	बाज़ से	उन के बाज़	आज़माया हम ने	और इसी तरह	52	ज़ालिम (जमा)

مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	शुक्र गुज़ार (जमा)	ख़ूब जानने वाला	क्या नहीं अल्लाह	हमारे दरमियान से	उन पर	अल्लाह ने फ़ज़्ल किया

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

लिख ली	तुम पर	सलाम	तो कह दें	हमारी आयतों पर	ईमान रखते हैं	वह लोग	आप के पास आएं	और जब

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ

नादानी से	कोई बुराई	तुम से	करे	जो	कि	रहमत	अपनी ज़ात	पर	तुम्हारा रब

ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं	54	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और नेक हो जाए	उस के बाद	तौबा कर ले	फिर

ع ٦ ٥ ١٢ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ قُلْ اِنِّيْ

बेशक मैं	कह दें	55	गुनाहगार (जमा)	रास्ता- तरीक़ा	और ताकि ज़ाहिर हो जाए	आयतें

نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ

कह दें	अल्लाह के सिवा	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	कि मैं बन्दगी करूं	मुझे रोका गया है

لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	हिदायत पाने वाले	से	और मैं नहीं	उस सूरत में	बेशक मैं बहक जाऊँगा	तुम्हारी ख़्वाहिशात	मैं पैरवी नहीं करता

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا

जिस	नहीं मेरे पास	उस को	और तुम झुटलाते हो	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	बेशक मैं	आप कह दें

تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	बयान करता है	सिर्फ़ अल्लाह के लिए	हुक्म	मगर	उस की	तुम जल्दी कर रहे हो

خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ

उस की	तुम जल्दी करते हो	जो	मेरे पास	होती	अगर	कह दें	57	फ़ैसला करने वाला	बेहतर

لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	ज़ालिमों को	ख़ूब जानने वाला	और अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	फ़ैसला	अलबत्ता हो चुका होता

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को ख़ूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करुं जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में बेशक मैं बहक जाऊँगा और हिदायत पाने वालों में से न हों गा। (56)

आप (स) कह दें बेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अ़ज़ाब) की जल्दी कर रहे हो मेरे पास नहीं। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानने वाला है। (58)

और उस के पास ग़ैब की कुनजियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो ख़ुश्की और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई ख़ुश्क, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (59)

और वही तो है जो रात मे तुम्हारी (रूह) क़ब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुद्दत मुक़र्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (60)

और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और तुम पर निगेहबान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) क़ब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। (61)

फिर लौटाए जाएंगें अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। (62)

आप (स) कह दें तुम्हें ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाले तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। (63)

आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख़्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। (64)

आप (स) कह दें वह क़ादिर है कि तुम पर भेजे अ़ज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर के भिड़ा दे, और तुम मे से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। (65)

और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोग़ा नहीं। (66)

हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मक़र्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। (67)

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

और तरी	ख़ुश्की में	जो	और जानता है	वह	सिवा	उन को जानता	नहीं	ग़ैब	कुनजियां	और उस के पास

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ

और न कोई तर	ज़मीन	अन्धेरे	में	और न कोई दाना	वह उस को जानता है	मगर	पत्ता	कोई	गिरता	और नहीं

وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ

रात में	क़ब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह)	जो कि	और वह	59	रौशन	किताब	में	मगर	ख़ुश्क	और न

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ

मुक़र्ररा	मुद्दत	ताकि पूरी हो	उस में	तुम्हें उठाता है	फिर	दिन में	जो तुम कमा चुके हो	और जानता है

ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ ع ٥ ١٣

ग़ालिब	और वही	60	तुम करते थे	जो	तुम्हें जता देगा	फिर	तुम्हारा लौटना	उस की तरफ़	फिर

فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ

तुम में से एक-किसी	आ पहुँचे	जब	यहाँ तक के	निगेहबान	तुम पर	और भेजता है	अपने बन्दे	पर

الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	लौटाए जाएंगें	फिर	61	नहीं करते कोताही	और वह	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	क़ब्ज़े में लेते हैं उस को	मौत

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ

कौन	आप कह दें	62	हिसाब लेने वाला	बहुत तेज़	और वह	हुक्म	उसी का	सुन रखो	सच्चा	उन का मौला

يُنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ

कि अगर	और चुपके से	गिड़गिड़ा कर	तुम पुकारते हो उस को	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे	से	बचाता है तुम्हें

اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ

तुम्हें बचाता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	63	शुक्र अदा करने वाले	से	तो हम हों	इस	से	हमें बचा ले

مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	आप कह दें	64	शिर्क करते हो	तुम	फिर	हर सख़्ती	और से	उस से

اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ

तुम्हारे पाऊँ	नीचे	से	या	तुम्हारे ऊपर	से	अ़ज़ाब	तुम पर	भेजे	कि

اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ

हम फेर फेर कर बयान करते हैं	किस तरह	देखो	दूसरा	लड़ाई	तुम में से एक	और चखाए	फ़िर्क़ा - फ़िर्क़ा	या भिड़ा दे तुम्हें

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ

आप कह दें	हक़	हालांकि वह	तुम्हारी क़ौम	उस को	और झुटलाया	65	समझ जाएं	ताकि वह	आयात

لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	तुम जान लोगे	और जल्द	एक ठिकाना	ख़बर	हर एक के लिए	66	दारोग़ा	तुम पर	मैं नहीं

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन से	तो किनारा कर ले	हमारी आयतें	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो कि	तू देखे	और जब

يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۚ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ

तो न बैठ	शैतान	भुलादे तुझे	और अगर	उस के अ़लावा	कोई बात	में	वह मशगूल हों

بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ

परहेज़ करते हैं	वह लोग जो	पर	और नहीं	68	ज़ालिम (जमा)	क़ौम (लोग)	साथ (पास)	याद आना	बाद

مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ

और छोड़ दे	69	डरें	ताकि वह	नसीहत करना	लेकिन	चीज़	कोई	उन का हिसाब	से

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और तमाशा	खेल	अपना दीन	उन्हों ने बना लिया	वह लोग जो

وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	उस के लिए	नहीं	उस ने किया	बसबब जो	कोई	पकड़ा (न) जाए	ताकि	इस से	और नसीहत करो

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	उस से	न लिए जाएं	मुआ़वज़े	तमाम	बदले में दे	और अगर	कोई सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती

الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

और अ़ज़ाब	गर्म	से	पीना (पानी)	उन के लिए	जो उन्हों ने कमाया (अपना लिया)	पकड़े गए	वह लोग जो

ع ١٠ ٨ ١٤ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	सिवाए अल्लाह	से	क्या हम पुकारें	कह दें	70	वह कुफ़्र करते थे	इस लिए कि	दर्दनाक

لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ

अल्लाह	जब हिदायत दी हमें	बाद	अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ)	पर	और हम फिर जाएं	और न नुक़्सान करे हमें	न हमें नफ़ा दे

كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ

साथी	उस के	हैरान	ज़मीन	में	शैतान	भुला दिया उस को	उस की तरह जो

يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ

हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें	हमारे पास आ	हिदायत	तरफ़	बुलाते हों उस को

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करो	और यह कि	71	तमाम जहान	परवरदिगार के लिए	कि फ़रमांबरदार रहें	और हुक्म दिया गया हमें

وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ

पैदा किया	वह जो-जिस	और वही	72	तुम इकटठे किए जाओगे	उस की तरफ़	वह जिस की	और वही	और उस से डरो

الثلثة السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۬ۚ

तो वह हो जाएगा	हो जा	कहेगा वह	और जिस दिन	ठीक तौर पर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं तो उन से किनारा कर ले यहां तक कि वह मशगूल हो जाएं उस के अ़लावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। (68)

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (बाज़ आजाएं)। (69)

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (क़ुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अ़मल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआ़वज़े दें तो उस से न लिए जाएं (क़ुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़्र करते थे। (70)

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक़्सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएं उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ। आप (स) कह दें बेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के फ़रमांबरदार रहें। (71)

और यह कि नमाज़ क़ाइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ़ तुम इकटठे किए जाओगे। (72)

और वही है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो वह "हो जाएगा",

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र को: क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? बेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)

और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अ़जाइबात) दिखाने लगे ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो जाए। (75)

फिर जब उस पर रात अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब ग़ाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता ग़ाइब होने वालों को। (76)

फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)

फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)

बेशक मैं ने अपना मुँह यक रुख़ हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)

और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तक्लीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)

और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अम्न (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ

ग़ैब	जानने वाला	सूर	फूँका जाएगा	जिस दिन	मुल्क	और उस का	सच्ची	उस की बात

وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ

आज़र	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	73	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वही	और ज़ाहिर

اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

74	खुली	गुमराही में	और तेरी क़ौम	तुझे देखता हूँ	बेशक मैं	माबूद	बुत (जमा)	क्या तू बनाता है

وَكَذٰلِكَ نُرِىْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ

और ताकि हो जाए वह	और ज़मीन	आस्मानों (जमा)	बादशाही	इब्राहीम (अ)	हम दिखाने लगे	और इसी तरह

مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا

यह	उस ने कहा	एक सितारा	उस ने देखा	रात	उस पर	अन्धेरा कर लिया	फिर जब	75	यक़ीन करने वाले	से

رَبِّىْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا

चमकता हुआ	चाँद	फिर जब देखा	76	ग़ाइब होने वाले	मैं दोस्त रखता	नहीं	उस ने कहा	ग़ाइब हो गया	फिर जब	मेरा रब

قَالَ هٰذَا رَبِّىْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِىْ رَبِّىْ لَاَكُوْنَنَّ

तो मैं हो जाऊँ	मेरा रब	न हिदायत दे मुझे	अगर	कहा	ग़ाइब होगया	फिर जब	मेरा रब	यह	बोले

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّىْ

मेरा रब	यह	बोले	जगमगाता हुआ	सूरज	फिर जब उस ने देखा	77	भटकने वाले	क़ौम-लोग	से

هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	कहा	वह ग़ाइब हो गया	फिर जब	सब से बड़ा	यह

اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا

और नहीं मैं	यक रुख़ हो कर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाए	उस की तरफ़ जिस	अपना मुँह	मैं ने मुँह मोड़ लिया	बेशक मैं

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۗ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّىْ فِى اللّٰهِ

अल्लाह (के बारे) में	क्या तुम मुझ से झगड़ते हो	उस ने कहा	उस की क़ौम	और उस से झगड़ा किया	79	शिर्क करने वाले	से

وَقَدْ هَدٰىنِ ۗ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّىْ شَيْـًٔا ۗ

कुछ	मेरा रब	चाहे	यह कि	मगर	उस का	जो तुम शरीक करते हो	और नहीं डरता मैं	और उस ने मुझे हिदायत दे दी है

وَسِعَ رَبِّىْ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ

मैं डरूँ	और क्योंकर	80	सो क्या तुम नहीं सोचते	इल्म	हर चीज़	मेरा रब	अहाता कर लिया

مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ

तुम पर	उस की	नहीं उतारी	जो	अल्लाह का	शरीक करते हो	कि तुम	और तुम नहीं डरते	जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक)

سُلْطٰنًا ۗ فَاَىُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ وقف لازم

81	जानते हो	तुम	अगर	अम्न का	ज़ियादा हक़दार	दोनों फ़रीक़	सो कौन	कोई दलील

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَمۡ يَلۡبِسُوۡۤا اِيۡمَانَهُمۡ بِظُلۡمٍ اُولٰٓـئِكَ لَهُمُ الۡاَمۡنُ

अम्न (दिलजमई)	उन के लिए	यही लोग	ज़ुल्म से	अपना ईमान	और न मिलाया	ईमान लाए	जो लोग

٩ ع ١٣ ١٥ وَهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلۡكَ حُجَّتُنَاۤ اٰتَيۡنٰهَاۤ اِبۡرٰهِيۡمَ عَلٰى قَوۡمِهٖ ؕ

उस की क़ौम	पर	इब्राहीम (अ)	हम ने यह दी	हमारी दलील	और यह	82	हिदायत याफ़्ता	और वही

نَرۡفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنۡ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيۡمٌ عَلِيۡمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبۡنَا

और बख़्शा हम ने	83	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	हम चाहें	जो-जिस	दरजे	हम बुलन्द करते हैं

لَهٗۤ اِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ ؕ كُلًّا هَدَيۡنَا ۚ وَنُوۡحًا هَدَيۡنَا مِنۡ قَبۡلُ

उस से क़ब्ल	हम ने हिदायत दी	और नूह (अ)	हिदायत दी हम ने	सब को	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)	उस को

وَمِنۡ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيۡمٰنَ وَاَيُّوۡبَ وَيُوۡسُفَ وَمُوۡسٰى وَهٰرُوۡنَ ؕ

और हारून (अ)	और मूसा (अ)	और यूसुफ़ (अ)	और अय्यूब (अ)	और सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	उन की औलाद	और से

وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحۡيٰى وَعِيۡسٰى وَاِلۡيَاسَ ؕ

और इलयास (अ)	और ईसा (अ)	और यहया (अ)	और ज़करिया (अ)	84	नेक काम करने वाले	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَالۡيَسَعَ وَيُوۡنُسَ وَلُوۡطًا ؕ

और लूत (अ)	और यूनुस (अ)	और अलयसअ़ (अ)	और इस्माईल (अ)	85	नेक बन्दे	से	सब

وَكُلًّا فَضَّلۡنَا عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنۡ اٰبَآئِهِمۡ وَذُرِّيّٰتِهِمۡ

और उन की औलाद	उन के बाप दादा	और से (कुछ)	86	तमाम जहान वाले	पर	हम ने फ़ज़ीलत दी	और सब

وَاِخۡوَانِهِمۡ ۚ وَاجۡتَبَيۡنٰهُمۡ وَهَدَيۡنٰهُمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٨٧﴾

87	सीधा	रास्ता	तरफ़	हम ने हिदायत दी उन्हें	और हम ने चुना उन्हें	और उन के भाई

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهۡدِىۡ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ ؕ

अपने बन्दे	से	चाहे	जिसे	इस से	हिदायत देता है	अल्लाह की रहनुमाई	यह

وَلَوۡ اَشۡرَكُوۡا لَحَبِطَ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	यह	88	वह करते थे	जो कुछ	उन से	तो ज़ाया हो जाते	वह शिर्क करते	और अगर

اٰتَيۡنٰهُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡحُكۡمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنۡ يَّكۡفُرۡ بِهَا هٰٓؤُلَاۤءِ

यह लोग	इस का	इन्कार करें	पस अगर	और नबूव्वत	और शरीअ़त	किताब	हम ने दी उन्हें

فَقَدۡ وَكَّلۡنَا بِهَا قَوۡمًا لَّيۡسُوۡا بِهَا بِكٰفِرِيۡنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓـئِكَ

यही लोग	89	इन्कार करने वाले	इस के	वह नहीं	ऐसे लोग	इन के लिए	तो हम मुक़र्रर कर देते हैं

الَّذِيۡنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰٮهُمُ اقۡتَدِهۡ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسۡـئَلُكُمۡ

नहीं मांगता मैं तुम से	आप (स) कह दें	चलो	सो उन की राह पर	अल्लाह ने हिदायत दी	वह जो

١٠ ع ٨ ١٦ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٰى لِلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٩٠﴾

90	तमाम जहान वाले	नसीहत	मगर	यह	नहीं	कोई उज्रत	इस पर

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत याफ़्ता हैं। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की क़ौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें बुलन्द करते हैं। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उन (इब्राहीम अ) को बख़्शा इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से क़ब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और यूसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और युनुॅस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो जो कुछ वह करते थे ज़ाया हो जाता। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअ़त और नबूव्वत दी, पस अगर यह लोग इस का इन्कार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुक़र्रर कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इन्कार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज्रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न की (जैसे) उस की क़द्र का हक़ था जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए रौशनी और हिदायत। तुम ने उसे वरक़ वरक़ कर दिया है, तुम उसे ज़ाहिर करते हो और अक्सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। **(91)**

और यह (कुरआन) किताब है बरकत वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तसदीक़ करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के इर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। **(92)**

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे। **(93)**

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पीछे, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी हैं, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिश्ता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। **(94)**

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ

कोई इन्सान	पर	अल्लाह ने उतारी	नहीं	जब उन्हों ने कहा	उस की क़द्र	हक़	उन्हों ने अल्लाह की क़द्र जानी	और नहीं

مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا

रौशनी	मूसा (अ)	लाए उस को	वह जो	किताब	उतारी	किस	आप (स) कह दें	कोई चीज़

وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ

अक्सर	और तुम छुपाते हो	तुम ज़ाहिर करते हो उस को	वरक़ वरक़	तुम ने कर दिया उस को	लोगों के लिए	और हिदायत

وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَلَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ

उन्हें छोड़ दें	फिर	अल्लाह	आप कह दें	तुम्हारे बाप दादा	और न	तुम	तुम न जानते थे	जो	और सिखाया तुम्हें

فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ

जो	तसदीक़ करने वाली	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	91	वह खेलते रहें	अपने बेहूदा शुग़ल	में

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

ईमान रखते हैं	और जो लोग	उस के इर्द गिर्द	और जो	अहले मक्का	और ताकि तुम डराओ	अपने से पहली (किताबें)

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ

और कौन	92	हिफ़ाज़त करते हैं	अपनी नमाज़	पर (की)	और वह	इस पर	ईमान लाते हैं	आख़िरत पर

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ

और नहीं वहि की गई	मेरी तरफ़	वहि की गई	कहे	या	झूट	अल्लाह पर	घड़े (बान्धे)	से-जो	बड़ा ज़ालिम

اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ

जब	तू देखे	और अगर	अल्लाह	जो नाज़िल किया	मिस्ल	मैं अभी उतारता हूँ	कहे	और जो	कुछ	उस की तरफ़

الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا

निकालो	अपने हाथ	फैलाए हों	और फ़रिश्ते	मौत	सख़्तियों में	ज़ालिम (जमा)

اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर (के बारे में)	तुम कहते थे	बसबब	ज़िल्लत	अज़ाब	आज तुम्हें बदला दिया जाएगा	अपनी जानें

غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

तुम आगए हमारे पास	और अलबत्ता	93	तकब्बुर करते	उस की आयतें	से	और तुम थे	झूट

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

अपनी पीठ	पीछे	हम ने दिया था तुम्हें	जो	और तुम छोड़ आए	बार	पहली	हम ने तुम्हें पैदा किया	जैसे	एक एक (अकेले)

وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ

साझी हैं	तुम में	कि वह	तुम गुमान करते थे	वह जो	सिफ़ारिश करने वाले तुम्हारे	तुम्हारे साथ	हम देखते	और नहीं

لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع ١١ ١٧

94	तुम दावा करते थे	जो	तुम से	और जाते रहे	तुम्हारे दरमियान	अलबत्ता कट गया

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ

और निकालने वाला	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और गुठली	दाना	फाड़ने वाला	बेशक अल्लाह

الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

चीर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह	95	तुम बहके जा रहे हो	पस कहां	यह है तुम्हारा अल्लाह	ज़िन्दा	से	मुर्दा

وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	अन्दाज़ा	यह	हिसाब	और चाँद	और सूरज	सुकून	रात	और उस ने बनाया

الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِىْ

में	उन से	ताकि तुम रास्ता मालूम करो	सितारे	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस	और वही	96	इल्म वाला

ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान कर दी हैं आयतें	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे

وَهُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۗ

और अमानत की जगह	फिर एक ठिकाना	एक	वजूद-शख़्स	से	पैदा किया तुम्हें	वह जो-जिस	और वही

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ مِنَ

से	उतारा	वह जो-जिस	और वही	98	जो समझते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान करदीं आयतें

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَىْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا

सबज़ी	उस से	फिर हम ने निकाली	हर चीज़	उगने वाली	उस से	फिर हम ने निकाली	पानी	आस्मान

نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ

झुके हुए	ख़ोशे	गाभा	से	खजूर	और	एक पर एक चढ़ा हुआ	दाने	उस से	हम निकालते हैं

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ

और नहीं भी मिलते	मिलते जुलते	और अनार	और ज़ैतून	अंगूर के	और बाग़ात

اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكُمْ

उस	में	बेशक	और उस का पकना	फलता है	जब	उस का फल	तरफ़	देखो

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया	जिन	शरीक	अल्लाह का	और उन्हों ने ठहराया	99	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

ع ١٢ ٦ ١٨

وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	वह बयान करते हैं	उस से जो	और बुलन्द तर	वह पाक है	इल्म के बग़ैर (जहालत से)	और बेटियां	बेटे	उस के लिए	और तराश्ते हैं

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

उस की	जबकि नहीं	बेटा	उस का	हो सकता है	क्योंकर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	नई तरह बनाने वाला

صَاحِبَةٌ ۗ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

101	जानने वाला	हर चीज़	और वह	हर चीज़	और उस ने पैदा की	बीवी

बेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां बहके जा रहे हो? (95)

(रात की तारीकी) चाक कर के सुबह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीआ़) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीआ़) हिसाब, यह अन्दाज़ा है ग़ालिब, इल्म वाले का। (96)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों में रास्ते मालूम करो, बेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (97)

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। बेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं समझ वालों के लिए। (98)

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे केत और दरख़्त निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए ख़ोशे, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ़ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (99)

और उन्हों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराश्ते हैं जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। (100)

नई तरह (नमूने के बग़ैर) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकर हो सकता है? जबकि उस की बीवी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (101)

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ

सो तुम उस की इबादत करो	हर चीज़	पैदा करने वाला	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	तुम्हारा रब	यही अल्लाह

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ

पा सकता है	और वह	आँखें	नहीं पा सकतीं उस को	102	कारसाज़-निगहबान	हर चीज़	पर	और वह

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

से	निशानियां	आ चुकीं तुम्हारे पास	103	ख़बरदार	भेद जानने वाला	और वह	आँखें

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ

तुम पर	मैं	और नहीं	तो उस की जान पर	अन्धा रहा	और जो	सो अपने वास्ते	देख लिया	सो जो-जिस	तुम्हारा रब

بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ

तू ने पढ़ा है	और ताकि वह कहें	आयतें	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	और उसी तरह	104	निगहबान

وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो वहि आए	तुम चलो	105	जानने वालों के लिए	और ताकि हम वाज़ेह कर दें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	106	मुश्रिकीन	से	और मुँह फेर लो	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

उन पर	तुम	और नहीं	निगहबान	उन पर	बनाया तुम्हें	और नहीं	न शिर्क करते वह

بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا

पस वह बुरा कहेंगें	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	वह जिन्हें	और तुम न गाली दो	107	दारोग़ा

اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ

फिर	उन का अ़मल	फ़िर्क़ा	हम ने भला दिखाया हर एक	उसी तरह	बे समझे बूझे	गुस्ताख़ी से	अल्लाह

اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا

और वह क़सम खाते थे	108	करते थे	जो वह	वह फिर उन को जता देगा	उन को लौटना	अपना रब	तरफ़

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ

आप कह दें	उस पर	तो ज़रूर ईमान लाएंगे	कोई निशानी	उन के पास आए	अलबत्ता अगर	ताकीद से	अल्लाह की

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

जब आएं	कि वह	ख़बर तुम्हें	और क्या	अल्लाह के पास	निशानियां	कि

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वह ईमान नहीं लाए	जैसे	और उन की आँखें	उन के दिल	और हम उलट देंगे	109	ईमान न लाएंगे

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع ١٣ ١٩

110	वह बहकते रहें	उन की सरकशी	में	और हम छोड़ देंगे उन्हें	पहली बार	उस पर

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहबान है। (102)

(मख़्लूक़ की) आँखें उस को नहीं पा सकतीं और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने वास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का वबाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहबान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुश्रिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोग़ा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को बे समझे बूझे गुस्ताख़ी से बुरा कहेंगें, उसी तरह हम ने हर फ़िरक़े को उस का अ़मल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या ख़बर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى

मुर्दे	और उन से बातें करते	फ़रिश्ते	उन की तरफ़	उतारते	हम	और अगर

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ

यह कि	मगर	वह ईमान लाते	न	सामने	हर शै	उन पर	और हम जमा कर देते

يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

हर नबी के लिए	हम ने बनाया	और इसी तरह	111	जाहिल (नादान) हैं	उन में अक्सर	और लेकिन	चाहे अल्लाह

عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ

बाज़	तरफ़	उन के बाज़	डालते हैं	और जिन	इन्सान	शैतान (जमा)	दुश्मन

زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ

पस छोड़ दें उन्हें	वह न करते	तुम्हारा रब	चाहता	और अगर	बहकाने के लिए	बातें	मुलम्मा की हुई

وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْئِدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	दिल (जमा)	उस की तरफ़	और ताकि माइल हो जाएं	112	वह झूट घड़ते हैं	और जो

بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ

तो क्या अल्लाह के सिवा	113	बुरे काम करते हैं	वह	जो	और ताकि वह करते रहें	और ताकि वह उस को पसन्द करलें	आख़िरत पर

اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ

मुफ़स्सिल (वाज़ेह)	किताब	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की	जो-जिस	और वह	कोई मुन्सिफ़	मैं ढूंढूँ

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ

तुम्हारा रब	से	उतारी गई है	कि यह	वह जानते हैं	किताब	हम ने उन्हें दी	और वह लोग जिन्हें

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

तेरा रब	बात	और पूरी है	114	शक करने वाले	से	सो तुम न होना	हक़ के साथ

صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

115	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	उस के कलिमात	नहीं बदलने वाला	और इन्साफ़	सच

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह का रास्ता	से	वह तुझे भटका देंगे	ज़मीन में	जो	अक्सर	तू कहा माने	और अगर

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	बेशक	116	अटकल दौड़ाते हैं	मगर	वह	और नहीं	गुमान	मगर (सिर्फ़)	पैरवी करते	नहीं

هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

117	हिदायत याफ़्ता लोगों को	ख़ूब जानता है	और वह	उस का रास्ता	से	बहकता है	जो	ख़ूब जानता है	वह

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118	ईमान वाले	उस की आयतों पर	तुम हो	अगर	उस पर	अल्लाह का नाम	लिया गया	उस से जो	सो तुम खाओ

और अगर हम उन की तरफ़ फ़रिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिनों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ़ मुलम्मा की हुई बातें बहकाने के लिए इलका करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुन्सिफ़ ढूंढूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सिल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ के ऐतिबार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन मे अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान की, और वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो बहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़्ता लोगों को ख़ूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ

हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है	उस पर	नाम अल्लाह का	लिया गया	उस से जो	कि तुम न खाओ	और क्या हुआ तुम्हें

لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا

बहुत से	और बेशक	उसकी तरफ़ (उस पर)	तुम लाचार हो जाओ	जिस	मगर	तुम पर	जो उस ने हराम किया	तुम्हारे लिए

لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

खूब जानता है	वह	तेरा रब	बेशक	इल्म के बग़ैर	अपनी ख़ाहिशात से	गुमराह करते हैं

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	और उस का छुपा हुआ	खुला गुनाह	और छोड़ दो	119	हद से बढ़ने वालों को

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

और न खाओ	120	वह बुरे काम करते	थे	उस की जो	अनक़रीब सज़ा पाएंगे	गुनाह	कमाते (करते) हैं

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	और बेशक	अलबत्ता गुनाह	और बेशक यह	उस पर	अल्लाह का नाम	नहीं लिया गया	उस से जो

لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـِٕهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ

तो बेशक तुम	तुम ने उन का कहा माना	और अगर	ताकि वह झगड़ा करें तुम से	अपने दोस्त	तरफ़ (में)	डालते हैं

لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا ع ١٤ ١١

नूर	उस के लिए	और हम ने बनाया	फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया	मुर्दा था	क्या जो	121	मुशरिक होगे

يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ

निकलने वाला	नहीं	अन्धेरे	में	उस जैसा जो	लोग	में	उस से	वह चलता है

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	122	जो वह करते थे (अमल)	जो	काफ़िरों के लिए	ज़ीनत दिए गए	इसी तरह	उस से

جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا

और नहीं	उस में	ताकि वह मकर करें	उस के मुजरिम	बड़े	बस्ती	हर	में	हम ने बनाए

يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ

उन के पास आती है	और जब	123	वह शऊर रखते	और नहीं	अपनी जानों पर	मगर	वह मकर करते

اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔۘ وقف لازم وقف منزل

अल्लाह	रसूल (जमा)	दिया गया	उस जैसा जो	हम को दिया जाए	जब तक	हम हरगिज़ न मानेंगे	कहते हैं	कोई आयत

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا

उन्हों ने जुर्म किया	वह लोग जो	अनक़रीब पहुँचेगी	अपनी रिसालत	रखे (भेजे)	कहाँ	खूब जानता है	अल्लाह

صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124	वह मक्र करते थे	उस का बदला	सख़्त	और अज़ाब	अल्लाह के हाँ	ज़िल्लत

और तुम्हें क्या हुआ कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी ख़ाहिशात से इल्म (तहक़ीक़) के बग़ैर गुमराह करते हैं, बेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (119)

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, बेशक जो लोग गुनाह करते हैं अनक़रीब उस की सज़ा पालेंगे जो वह बुरे काम करते थे। (120)

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और बेशक यह गुनाह है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों मे वस्वसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो बेशक तुम मुशरिक होगे। (121)

क्या (वह शख़्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा क्या और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरों में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरों के लिए उन के अ़मल ज़ीनत दिए गए। (122)

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुजरिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), ओर वह शऊर नहीं रखते। (123)

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह खूब जानता है कि अपनी रिसालत कहां भेजे, अनक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्हों ने जुर्म किया, अल्लाह के हाँ ज़िल्लत और सख़्त अ़ज़ाब, उस का बदला कि वह मक्र करते थे । (124)

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ

इस्लाम के लिए	उस का सीना	खोल देता है	कि उसे हिदायत दे	अल्लाह चाहता है	पस जिस

وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا

गोया कि	भींचा हुआ	तंग	उस का सीना	कर देता है	उसे गुमराह करे	कि	चाहता है	और जिस

يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	नापाकी (अ़ज़ाब)	कर देता है (डाले गा) अल्लाह	इसी तरह	आस्मानों में-आस्मान पर	ज़ोर से चढ़ता है

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا

हम ने खोल कर बयान कर दी हैं	सीधा	तुम्हारा रब	रास्ता	और यह	125	ईमान नहीं लाते

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ

उन का रब	पास-हां	सलामती का घर	उन के लिए	126	जो नसीहत पकड़ते हैं	उन लोगों के लिए	आयात

وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

वह जमा करेगा	और जिस दिन	127	वह करते थे	उसका सिला जो	दोस्त दार-कारसाज़	और वह

جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

और कहेंगे	इन्सान-आदमी	से	तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए)	ऐ जिन्नात के गिरोह	सब

اَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ

और हम पहुँचे	बाज़ से	हमारे बाज़	हम ने फ़ाइदा उठाया	ऐ हमारे रब	इन्सान	से	उन के दोस्त

اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहोगे	तुम्हारा ठिकाना	आग	फ़रमाएगा	हमारे लिए	तू ने मुक़र्रर की थी	जो	मीआ़द

فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	128	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	अल्लाह चाहे	जिसे	मगर	उस मे

ع ١٥ ٨ ٢ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع

129	जो वह करते थे (उन के आमाल)	उसके सबब	बाज़ पर	ज़ालिम (जमा)	बाज़	हम मुसल्लत कर देते हैं

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

तुम में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए तुम्हारे पास	और इन्सान	जिन्नात	ऐ गिरोह

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात (देखना)	और तुम्हें डराते थे	मेरी आयात	तुम पर	सुनाते थे (बयान करते थे)

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	अपनी जानें	पर (ख़िलाफ़)	वह कहेंगे हम गवाही देते हैं	इस

وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130	कुफ़्र करने वाले थे	कि वह	अपनी जानें (अपने)	पर (ख़िलाफ़)	और उन्हों ने गवाही दी

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह ज़ोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अ़ज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं, (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फ़रमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फ़ाइदा उठाया और हम उस मीआ़द (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मुक़र्रर की थी। फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ (अपने ख़िलाफ़) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्हों ने अपने ख़िलाफ़ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا

जब कि उन के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	हलाक कर डालने वाला	तेरा रब	नहीं है	इस लिए कि	यह

غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ

तुम्हारा रब	और नहीं	उन्हों ने किया (उन के आमाल)	उस से जो	दरजे	और हर एक के लिए	131	बेख़बर हों

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ

रहमत वाला	बेनियाज़	और तुम्हारा रब	132	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ

जैसे	जिस को चाहे	तुम्हारे बाद	और जांनशीन बनादे	तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर

اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ

तुम से वादा किया जाता है	जिस	बेशक	133	दूसरी	क़ौम	औलाद	से	उस ने तुम्हें उठाया

لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى

पर	काम करते रहो	ऐ क़ौम	फ़रमा दें	134	आजिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	ज़रूर आने वाली है

مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

उस का	होता है	किस	तुम जान लोगे	पस जल्द	काम कर रहा हूँ	मैं	अपनी जगह

عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराया अल्लाह के लिए	135	ज़ालिम	फ़लाह नहीं पाते	बेशक	घर	आख़िरत

مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا

पस उन्हों ने कहा	एक हिस्सा	और मवेशी	खेती से	उस ने पैदा किए	उस से जो

هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ

है	पस जो	हमारे शरीकों के लिए	और यह	उन के झूटे ख़याल के मुताबिक़	यह अल्लाह के लिए

لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ

तो वह	अल्लाह के लिए	है	और जो	अल्लाह	तरफ़ को	पहुँचता	तो नहीं	उन के शरीकों के लिए

يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۭ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	136	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	उन के शरीक	तरफ़ (को)	पहुँचता है

زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ

उन की औलाद	क़त्ल	मुश्रिक (जमा)	से	अकसर के लिए	अरास्ता कर दिया है

شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۭ

उन का दीन	उन पर	और गुड मड कर दें	ताकि वह उन्हें हलाक करदें	उन के शरीक

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137	वह झूट बान्धते हैं	और जो	सो तुम उन्हें छोड़ दो	वह न करते	अल्लाह	और अगर चाहता

यह इस लिए है कि तेरा रब ज़ुल्म की सज़ा में बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जांनशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी क़ौम की। (133)

बेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अनक़रीब जान लोगे किस के लिए है आक़िबत का घर। बेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते। (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्हों ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्हों ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ो और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ

जिस को	मगर	उसे न खाए	ममनूअ़ (मना किए हुए)	और खेती	मवेशी	यह	और उन्हों ने कहा

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ

और कुछ मवेशी	उन की पीठ (जमा)	हराम की गई	और कुछ मवेशी	उन के ग़लत ख़याल के मुताबिक़	हम चाहें

لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ

हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे	उस पर	झूट बान्धते हैं	उस पर	नाम अल्लाह का	वह नहीं लेते

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ

मवेशी (जमा)	इन	पेट में	जो	और उन्हों ने कहा	138	झूट बान्धते थे	उस की जो

خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓي اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ

हो	और अगर	हमारी औ़रतें	पर	और हराम	हमारे मर्दों के लिए	ख़ालिस

مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

हिक्मत वाला	बेशक वह	उन का बातें बनाना	वह जल्द उन को सज़ा देगा	शरीक	उस में	तो वह सब	मुर्दा

عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا

बेवक़ूफ़ी से	अपनी औलाद	उन्हों ने क़त्ल किया	वह लोग जिन्हों ने	अल्बत्ता घाटे में पड़े	139	जानने वाला

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ

अल्लाह पर	झूट बान्धते हुए	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और हराम ठहराया	बेख़बरी (नादानी से)

ع ١٦ ١١ ٣ الربع

قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ۧ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ

पैदा किए	जिस ने	और वह	140	हिदायत पाने वाले	और वह न थे	यक़ीनन वह गुमराह हुए

جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ

और खेती	और खजूर	और न चढ़ाए हुए	चढ़ाए हुए	बाग़ात

مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ

और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा)	मुशाबह (मिलते जुलते)	और अनार	और ज़ैतून	उस के फल	मुख़तलिफ़

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ

उस के काटने के दिन	उस का हक़	और अदा करो	वह फल लाए	जब	उस के फल	से	खाओ

وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ ۙ وَمِنَ

और से	141	बेजा ख़र्च करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

अल्लाह ने तुम्हें दिया	उस से जो	खाओ	और ज़मीन से लगे हुए	बार बरदार (बड़े बड़े)	चौपाए

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾ ۙ

142	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	क़दम (जमा)	और न पैरवी करो

और उन्हों ने कहा यह मवेशी और खेती ममनूअ़ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) ख़याल के मुताबिक़ और कुछ मवेशी हैं कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (ज़ुब्ह करते वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगे जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्हों ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औ़रतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक हैं, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह बेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने बेवक़ूफ़ी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यक़ीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक़) है जिस ने बाग़ात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुख़तलिफ़ (क़िस्म के) और ज़ैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उ़श्र) अदा कर दो, और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) बार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। **(143)**

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, बेशक अल्लाह ज़ुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। **(144)**

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो बेशक तेरा रब बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। **(145)**

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाखुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरबी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डियों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और बेशक हम सच्चे हैं। **(146)**

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ

दो (2)	बकरी	और से	दो (2)	भेड़	से	जोड़े	आठ (8)

قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ

उस पर	लिपट रहा हो	या जो	या दोनों मादा	हराम किए	क्या दोनों नर	पूछें

اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۙ ﴿١٤٣﴾

143	सच्चे	तुम	अगर	किसी इल्म से	मुझे बताओ	दोनों मादा	रहम (जमा)

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ

क्या दोनों नर	आप पूछें	दो (2)	गाय	और से	दो (2)	ऊँट	और से

حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

दोनों मादा	रहम (जमा)	उस पर	लिपट रहा हो	या जो	दोनों मादा	या	उस ने हराम किए

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	इस का	अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया	जब	मौजूद	तुम थे	क्या

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	इल्म	बग़ैर	लोग	ताकि गुमराह करे	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ ع ١٧

मुझे	जो वहि की गई	में	मैं नहीं पाता	फ़रमा दीजिए	144	ज़ुल्म करने वाले	लोग	हिदायत नहीं देता

مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا

या खून	मुर्दार	यह कि हो	मगर	इस को खाए	कोई खाने वाला	पर	हराम

مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا

या गुनाह की चीज़	नापाक	पस वह	सुव्वर	या गोश्त	बहता हुआ

اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ

तो बेशक	और न सरकश	न नाफ़रमानी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	उस पर	ग़ैर अल्लाह का नाम	पुकारा गया

رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

हम ने हराम कर दिया	यहूदी हुए	वह जो कि	और पर	145	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तेरा रब

كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ

उन की चरबियां	उन पर	हम ने हराम कर दिया	और बकरी	और गाय से	नाखुन वाला जानवर	हर एक

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ

जो मिली हो	या	या अंतड़ियां	उन की पीठ (जमा)	जो उठाती हो (लगी हो)	सिवाए

بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾

146	सच्चे हैं	और बेशक हम	उनकी सरकशी का	हम ने उन को बदला दिया	यह	हड्डी से

فَـاِنْ كَـذَّبُـوْكَ فَـقُـلْ رَّبُّـكُـمْ ذُوْ رَحْـمَـةٍ وَّاسِـعَـةٍ ۚ وَلَا يُـرَدُّ

और टाला नहीं जाता	वसीअ़	रहमत वाला	तुम्हारा रब	तो आप (स) कह दें	आप को झुटलाएं	पस अगर

بَـاْسُـهٗ عَـنِ الْـقَـوْمِ الْـمُـجْـرِمِـيْـنَ ﴿١٤٧﴾ سَـيَـقُـوْلُ الَّـذِيْـنَ اَشْـرَكُـوْا

जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	जल्द कहेंगे	147	मुज्रिमों की क़ौम	से	उस का अ़ज़ाब

لَـوْ شَـآءَ اللّٰهُ مَـآ اَشْـرَكْـنَـا وَلَآ اٰبَـآؤُنَـا وَلَا حَـرَّمْـنَـا مِـنْ شَـيْءٍ ؕ

कोई चीज़	हम हराम ठहराते	और न	हमारे बाप दादा	और न	हम शिर्क न करते	चाहता अल्लाह	अगर

كَـذٰلِـكَ كَـذَّبَ الَّـذِيْـنَ مِـنْ قَـبْـلِـهِـمْ حَـتّٰـى ذَاقُـوْا بَـاْسَـنَـا ؕ

हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने चखा	यहां तक कि	इन से पहले	जो लोग	झुटलाया	इसी तरह

قُـلْ هَـلْ عِـنْـدَكُـمْ مِّـنْ عِـلْـمٍ فَـتُـخْـرِجُـوْهُ لَـنَـا ؕ اِنْ تَـتَّـبِـعُـوْنَ

तुम पीछे चलते हो	नहीं	तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए	कोई इल्म (यक़ीनी बात)	तुम्हारे पास	क्या	फ़रमा दीजिए

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْـتُـمْ اِلَّا تَـخْـرُصُـوْنَ ﴿١٤٨﴾ قُـلْ فَلِلّٰهِ الْـحُـجَّـةُ الْـبَالِـغَـةُ ۚ

पूरी	हुज्जत	अल्लाह ही के लिए	फ़रमा दें	148	अटकल चलाते हो	सिर्फ़	तुम	और अगर (नहीं)	मगर (सिर्फ़) गुमान

فَـلَـوْ شَـآءَ لَـهَـدٰىكُـمْ اَجْـمَـعِـيْـنَ ﴿١٤٩﴾ قُـلْ هَـلُـمَّ شُـهَـدَآءَكُـمُ

अपने गवाह	लाओ	फ़रमा दें	149	सब को	तो तुम्हें हिदायत देता	पस अगर वह चाहता

الَّـذِيْـنَ يَـشْـهَـدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَـرَّمَ هٰـذَا ۚ فَـاِنْ شَـهِـدُوْا

वह गवाही दें	फिर अगर	यह	हराम किया	कि अल्लाह	गवाही दें	जो

فَـلَا تَـشْـهَـدْ مَـعَـهُـمْ ۚ وَلَا تَـتَّـبِـعْ اَهْـوَآءَ الَّـذِيْـنَ كَـذَّبُـوْا

झुटलाया	जो लोग	ख़्वाहिशात	और न पैरवी करना	उन के साथ	तो तुम गवाही न देना

بِـاٰيٰـتِـنَـا وَالَّـذِيْـنَ لَا يُـؤْمِـنُـوْنَ بِـالْاٰخِـرَةِ وَهُـمْ بِـرَبِّـهِـمْ

अपने रब के	और वह	आख़िरत पर	ईमान लाते हैं	नहीं	और जो लोग	हमारी आयतों को

ع ١٨ ٦ ٥ يَـعْـدِلُـوْنَ ﴿١٥٠﴾ قُـلْ تَـعَـالَـوْا اَتْـلُ مَـا حَـرَّمَ رَبُّـكُـمْ عَـلَـيْـكُـمْ

तुम पर	तुम्हारा रब	जो हराम किया	मैं पढ़ कर सुनाऊँ	आओ	फ़रमा दें	150	बराबर ठहराते हैं

اَلَّا تُـشْـرِكُـوْا بِـهٖ شَـيْـئًـا وَّبِـالْـوَالِـدَيْـنِ اِحْـسَـانًـا ۚ وَلَا تَـقْـتُـلُـوْٓا

और न क़त्ल करो	नेक सुलूक	और वालिदैन के साथ	कुछ-कोई	उस के साथ	कि न शरीक ठहराओ

اَوْلَادَكُـمْ مِّـنْ اِمْـلَاقٍ ؕ نَـحْـنُ نَـرْزُقُـكُـمْ وَاِيَّـاهُـمْ ۚ وَلَا تَـقْـرَبُـوا

और क़रीब न जाओ	और उन को	तुम्हें रिज़्क़ देते हैं	हम	मुफ़्लिसी	से	अपनी औलाद

الْـفَـوَاحِـشَ مَـا ظَـهَـرَ مِنْهَا وَمَـا بَـطَـنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّـفْـسَ الَّـتِـيْ

जो-जिस	जान	और न क़त्ल करो	छुपी हो	और जो	जो ज़ाहिर हो उस से (उन में)	बेहयाई (जमा)

حَـرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِـالْـحَـقِّ ؕ ذٰلِـكُـمْ وَصّٰـىكُـمْ بِـهٖ لَـعَـلَّـكُـمْ تَـعْـقِـلُـوْنَ ﴿١٥١﴾

151	अ़क़्ल से काम लो (समझो)	ताकि तुम	इस का	तुम्हें हुक्म दिया है	यह	मगर हक़ पर	अल्लाह ने हुर्मत दी

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहदें तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है, और उस का अ़ज़ाब मुज्रिमों की क़ौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चखा, आप (स) फ़रमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यक़ीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फ़रमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने बातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फ़रमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को मुफ़्लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन को (भी), और बेहयाइयों के क़रीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى

यहां तक कि	बेहतरीन	वह	ऐसे जो	मगर	यतीम	माल	और क़रीब न जाओ

يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ

हम तक्लीफ़ नहीं देते	इन्साफ़ के साथ	और तोल	माप	और पूरा करो	अपनी जवानी	पहुँच जाए

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

रिश्तेदार	ख़ाह हो	तो इन्साफ़ करो	तुम बात करो	और जब	उस की वुस्अ़त (मक्दूर)	मगर	किसी को

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾

152	नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	इस का	उस ने तुम्हें हुक्म दिया	यह	पूरा करो	और अल्लाह का अ़हद

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

रास्ते	और न चलो	पस उस पर चलो	सीधा	मेरा रास्ता	यह	और यह कि

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153	परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम्हें हुक्म दिया इस का	यह	उस का रास्ता	से	तुम्हें	पस जुदा कर दें

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا

और तफ़्सील	नेकोकार है	जो	पर	नेमत पूरी करने को	किताब	मूसा (अ)	फिर हम ने दी

لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ ع ١٩ ٦

154	ईमान लाएं	अपना रब	मुलाक़ात पर	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	हर चीज़ की

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम पर	और परहेज़गारी इख़्तियार करो	पस उसकी पैरवी करो	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह

تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ

दो गिरोह	पर	किताब	उतारी गई थी	इस के सिवा नहीं	तुम कहो	कि	155	रहम किया जाए

مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا

या तुम कहो	156	बेख़बर	उन के पढ़ने पढ़ाने	से	और यह कि हम थे	हम से पहले

لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ

पस आ गई तुम्हारे पास	उन से	ज़ियादा हिदायत पर	अलबत्ता हम होते	किताब	हम पर	उतारी जाती	अगर हम

بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

बड़ा ज़ालिम	पस कौन	और रहमत	और हिदायत	तुम्हारा रब	से	रौशन दलील

مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

उन लोगों को जो	हम जल्द सज़ा देंगे	उस से	और कतराए	अल्लाह की आयतों को	झुटलादे	उस से जो

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْۗءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157	वह कतराते थे	उस के बदले	अ़ज़ाब	बुरा	हमारी आयतें	से	कतराते हैं

और यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतरीन हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक्दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, ख़ाह रिश्तेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (152)

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। (153)

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़्सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आएं। (154)

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (155)

कि (कहें) तुम कहो कि हम से पहले दो गिरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। (156)

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलादे और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अ़ज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। (157)

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	तुम्हारा रब	या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह	मगर	क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا

किसी को	न काम आएगा	तुम्हारा रब	निशानी	कोई	आई	जिस दिन	तुम्हारा रब	निशानियां	कुछ

اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ

फ़रमा दें	कोई भलाई	अपने ईमान में	कमाई	या	उस से पहले	ईमान लाया	न था	उस का ईमान

انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا

गिरोह दर गिरोह	और हो गए	अपना दीन	तफ़रक़ा डाला	वह लोग जिन्हों ने	बेशक	158	मुन्तज़िर हैं	हम	इन्तिज़ार करो तुम

لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا

वह जो	वह जतला देगा उन्हें	फिर	अल्लाह के हवाले	उन का मामला	फ़क़त	किसी चीज़ में (कोई तअ़ल्लुक़)	उन से	नहीं आप(स)

كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ

और जो	उस के बराबर	दस	तो उस के लिए	लाए कोई नेकी	जो	159	करते थे

جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِيْ

बेशक मुझे	कह दीजिए	160	न ज़ुल्म किए जाऐंगे	और वह	मगर उस के बराबर	तो न बदला पाएगा	कोई बुराई लाए

هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	मिल्लत	दुरुस्त	दीन	सीधा	रास्ता	तरफ़	मेरा रब	राह दिखाई

حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ

मेरी क़ुरबानी	मेरी नमाज़	बेशक	आप कह दें	161	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे	एक का हो कर रहने वाला

وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

मुझे हुक्म दिया गया	और उसी का	उस का	नहीं कोई शरीक	162	सारे जहान का	रब	अल्लाह के लिए	और मेरा मरना	और मेरा जीना

وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ

हर शै	रब	और वह	कोई रब	मैं ढून्डूँ	क्या सिवाए अल्लाह	आप कह दें	163	मुसलमान (फ़रमांबरदार)	सब से पहला	और मैं

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى

तरफ़	फिर	बोझ दूसरा	उठाएगा कोई उठाने वाला	और न	उस के ज़िम्मे	मगर (सिर्फ़)	हर शख़्स	और न कमाएगा

رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

जिस ने	और वह	164	तुम इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	वह जो	पस वह तुम्हें जतला देगा	तुम्हारा लौटना	तुम्हारा (अपना) रब

جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	दरजे	बाज़	पर-ऊपर	तुम में से बाज़	और बुलन्द किए	ज़मीन	नाइब	तुम्हें बनाया

ع ٢٠ ٢١ النصف

فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

165	निहायत मेहरबान	यक़ीनन बख़्शने वाला	और बेशक वह	सज़ा देने वाला	तेज़	तुम्हारा रब	बेशक	जो उस ने तुम्हें दिया	में

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर यह कि उन के पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की बाज़ निशानी आए, जिस दिन आएगी तुम्हारे रब की बाज़ निशानी, किसी के काम न आएगा उस का ईमान लाना जो पहले से ईमान न लाया था या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी, आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158)
बेशक जिन लोगों ने तफ़रक़ा डाला अपने दीन में और गिरोह दर गिरोह हो गए, आप (स) का उन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला देगा वह जो कुछ करते थे। (159)
जो शख़्स कोई नेकी लाए तो उस के लिए उस का दस बराबर (दस गुना अजर) है, और जो कोई बुराई लाए तो वह बदला न पाएगा मगर उस के बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और वह ज़ुल्म न किए जाऐंगे। (160)
आप (स) कह दीजिए बेशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम (अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह) के हो रहने वाले थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (161)
आप (स) कह दें बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (162)
उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म दिया गया है, और मैं सब से पहला मुसलमान (फ़रमांबरदार) हूँ। (163)
आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढून्डूँ? और वही है हर शै का रब, हर शख़्स जो कुछ कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (164)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाया, और बुलन्द किए तुम में से बाज़ के दरजे बाज़ पर, ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया, बेशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह बेशक यक़ीनन बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (165)

آيَاتُهَا ٢٠٦ ❀ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ (٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

आयात 206	(7) सूरतुल आराफ़ बुलनदियां	रुकुआत 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ

कोई तंगी	तुम्हारे सीने में	सो न हो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की गई	किताब	1	अलिफ़-लाम-मीम-साद

مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ

जो नाज़िल किया गया	पैरवी करो	2	ईमान वालों के लिए	और नसीहत	इस से	ताकि तुम डराओ	इस से

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	रफ़ीक़ (जमा)	उस के सिवा	से	और पीछे न लगो	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا

रात में सोते	हमारा अ़ज़ाब	पस उन पर आया	हम ने हलाक कीं	बस्तियां	से	और कितनी ही	3	नसीहत कुबूल करते हो

اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ

मगर यह कि (तो)	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आया	जब	उन का कहना (उन की पुकार)	पस न था	4	क़ैलूला करते (दोपहर को आराम करते)	या वह

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	भेजे गए (रसूल)	उन से जो	सो हम ज़रूर पूछेंगे	5	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	उन्हों ने कहा

وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا

और हम न थे	इल्म से	उन को	अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे	6	रसूल (जमा)	और हम ज़रूर पूछेंगे

غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

मीज़ान (नेकियों के वज़न)	भारी हुए	तो जिस	बरहक़	उस दिन	और वज़न	7	ग़ाइब

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ

तो वही लोग	वज़न	हलके हुए	और जिस	8	फ़लाह पाने वाले	वह	तो वही

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ

और बेशक	9	ना इन्साफ़ी करते	हमारी आयतों से	क्यों कि थे	अपनी जानें	नुक़्सान किया	वह जिन्हों ने

مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ قَلِيْلًا

बहुत कम	ज़िन्दगी के सामान	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	ज़मीन में	हम ने तुम्हें ठिकाना दिया

مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ١ ٨

फ़रिश्तों को	फिर हम ने कहा	हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई	फिर	हम ने तुम्हें पैदा किया	और अलबत्ता	10	जो तुम शुक्र करते हो

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

11	सिज्दा करने वाले	से	वह न था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम को	सिज्दा करो

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-सॉद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीक़ों के, बहुत कम तुम नसीहत कुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बस्तियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अ़ज़ाब, तो उन्हों ने कहा कि बेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम ग़ाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इन्साफ़ी करते थे। (9)

और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम हैं जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्हों ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

तू ने मुझे पैदा किया	उस से	बेहतर	मैं	वह बोला	जब मैं ने तुझे हुक्म दिया	कि तू सिज्दा न करे	किस ने तुझे मना किया	उस ने फ़रमाया

مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

तेरे लिए	है	तो नहीं	इस (यहां) से	पस तू उतर जा	फ़रमाया	12	मिट्टी	से	और तू ने उसे पैदा किया	आग	से

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ

मुझे मोहलत दे	वह बोला	13	ज़लील (जमा)	से	बेशक तू	पस निकल जा	इस में (यहां)	तू तकब्बुर करे	कि

اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ

तू ने मुझे गुमराह किया	तो जैसे	वह बोला	15	मोहलत मिलने वाले	से	बेशक तू	फ़रमाया	14	उठाए जाएंगे	उस दिन तक

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

उन के सामने	से	मैं ज़रूर उन तक आऊंगा	फिर	16	सीधा	तेरा रास्ता	उन के लिए	मैं ज़रूर बैठूंगा

وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ

उन के अक्सर	और तू न पाएगा	उन के बाएं	और से	उन के दाएं	और से	और पीछे से उन के

شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

उन से	तेरे पीछे लगा	अलबत्ता जो	मर्दूद हो कर	ज़लील	यहां से	निकल जा	फ़रमाया	17	शुक्र करने वाले

لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

जन्नत	और तेरी बीवी	तू	रहो	और ऐ आदम (अ)	18	सब	तुम से	जहन्नम	ज़रूर भर दूंगा

فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ

से	पस हो जाओगे	दरख़्त	उस	और क़रीब न जाना	तुम चाहो	जहां से	तुम दोनों खाओ

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ

से	उन से	जो पोशीदा थीं	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे	शैतान	उन के लिए	पस वस्वसा डाला	19	ज़ालिम (जमा)

سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا

तुम हो जाओ	इस लिए कि	मगर	दरख़्त	उस	से	तुम्हारा रब	तुम्हें मना किया	नहीं	और वह बोला	उन की सत्र की चीज़ें

مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ

अलबत्ता- से	तुम्हारे लिए	मैं बेशक	और उन से क़सम खागया	20	हमेशा रहेने वाले	से	या हो जाओ	फ़रिश्ते

النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

उन की सत्र की चीज़ें	उन के लिए	खुल गईं	दरख़्त	उन दोनों ने चखा	पस जब	धोके से	पस उन को माइल कर लिया	21	ख़ैर ख़्वाह (जमा)

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا

क्या तुम्हें मना न किया था	उन का रब	और उन्हें पुकारा	जन्नत	पत्ते	से	अपने ऊपर	जोड़ जोड़ कर रखने	और लगे

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

22	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	शैतान	बेशक	तुम से	और कहा	दरख़्त	उस से मुतअ़ल्लिक़

उस ने फ़रमाया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना किया कि तू सिज्दा न करे? वह बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया। (12) फ़रमाया पस तू यहां से उतर जा, तेरे लिए (लाइक़) नहीं कि तू गुरूर ओ तकब्बुर करे यहां, पस निकल जा, बेशक तू ज़लीलों में से है। (13) वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14) फ़रमाया बेशक तू मोहलत मिलने वालों में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15) वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह (होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर बैठूँगा उन के लिए (गुमराह करने के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16) फिर मैं उन तक ज़रूर आऊँगा उन के सामने से और उन के पीछे से, और उन के दाएं से और उन के बाएं से, और तू उन में से अक्सर को शुक्र करने वाले न पाएगा। (17) फ़रमाया यहां से निकल जा ज़लील मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे लगा, अलबत्ता मैं ज़रूर जहन्नम को भर दूँगा तुम सब से। (18) ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी बीवी (हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ जहां से तुम चाहो और उस दरख़्त के क़रीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे) तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19) पस वस्वसा डाला शैतान ने उन के लिए (उन के दिल में) ताकि उन के सत्र की चीज़ें जो उन से पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया मगर इस लिए कि (कहीं) तुम फ़रिश्ते हो जाओ या हो जाओ हमेशा रहने वालों में से। (20) और उन से क़सम खागया कि मैं बेशक तुम्हारे लिए ख़ैर ख़्वाहों से हूँ। (21) पस उस ने उन को माइल कर लिया धोके से, पस जब उन्हों ने दरख़्त चखा तो उन के लिए उन की सत्र की चीज़ें खुल गईं और वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए) जन्नत के पत्ते, और उन के रब ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया था? और कहा था तुम्हें कि बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

से	हम ज़रूर हो जाएंगे	और हम पर रहम (न) किया	न बख़्शा तू ने हमें	और अगर	अपने ऊपर	हम ने ज़ुल्म किया	ऐ हमारे रब	उन दोनों ने कहा

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़	तुम में से बाज़	उतरो	फ़रमाया	23	ख़सारा पाने वाले

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا

और उस में	तुम जियोगे	उस में	फ़रमाया	24	एक वक़्त तक	और सामान	ठिकाना

تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا ع ١٥ ٢ ٩

लिबास	तुम पर	हम ने उतारा	ऐ औलादे आदम (अ)	25	तुम निकाले जाओगे	और उस से	तुम मरोगे

يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

से	यह	बेहतर	यह	परहेज़गारी	और लिबास	और ज़ीनत	तुम्हारे सत्र	ढांके

اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	न बहका दे तुम्हें	ऐ औलादे आदम (अ)	26	वह ग़ौर करें	ताकि वह	अल्लाह की निशानियां

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ

उन के सत्र	ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिबास	उन से	उतरवा दिए	जन्नत	से	तुम्हारे माँ बाप	उस ने निकाला	जैसे

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	बेशक हम ने बनाया	तुम उन्हें नहीं देखते	जहां	से	और उस का क़बीला	वह	तुम्हें देखता है वह	बेशक

اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا

हम ने पाया	कहें	कोई बेहयाई	वह करें	और जब	27	ईमान नहीं लाते	उन लोगों के लिए	दोस्त-रफ़ीक़

عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ

बेहयाई का	हुक्म नहीं देता	बेशक अल्लाह	फ़रमा दें	उस का	हमें हुक्म दिया	और अल्लाह	अपने बाप दादा	इस पर

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّىْ بِالْقِسْطِ ۗ

इन्साफ़ का	मेरा रब	हुक्म दिया	फ़रमा दें	28	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो (लगाते हो)

وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ

ख़ालिस हो कर	और पुकारो	हर मस्जिद (नमाज़)	नज़दीक (वक़्त)	अपने चहरे	और क़ाइम करो (सीधे करो)

لَهُ الدِّيْنَ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى

उस ने हिदायत दी	एक फ़रीक़	29	दोबारा (पैदा) होगे	तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया)	जैसे	दीन (हुक्म)	उस के लिए

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	उन्हों ने बना लिया	बेशक वह	गुमराही	उन पर	साबित हो गई	और एक फ़रीक़

اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

30	हिदायत पर हैं	कि वह बेशक	और समझते हैं	अल्लाह के सिवा	से	रफ़ीक़

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम जियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढांके तुम्हारे सत्र और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे माँ बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्र ज़ाहिर कर दे, बेशक तुम्हें देखता है वह और उस का क़बीला उस जगह से जहां तुम उन्हें नहीं देखते, बेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इनसाफ़ का हुक्म दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुक्म के फ़रमांबरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, बेशक उन्हों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह बेशक हिदायत पर हैं। (30)

يٰبَنِیٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا

और पियो	और खाओ	हर मस्जिद (नमाज़)	क़रीब (वक़्त)	अपनी ज़ीनत	लेलो (इख़्तियार करलो)	ऐ औलादे आदम

ع ٣ ٦ ١٠

وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

अल्लाह की ज़ीनत	हराम किया	किस	फ़रमा दें	31	फ़ुज़ूल ख़र्च करने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الَّتِیْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِیَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	यह	फ़रमा दें	रिज़्क़	से	और पाक	अपने बन्दों के लिए	उस ने निकाली	जो कि

فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

गिरोह के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	क़ियामत के दिन	ख़ालिस तौर पर	दुनिया	ज़िन्दगी में

يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

पोशीदा	और जो	उन से	ज़ाहिर हैं	जो	बेहयाई	मेरा रब	हराम किया	सिर्फ़ (तो)	फ़रमा दें	32	वह जानते हैं

وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا

कोई सनद	उस की	नहीं नाज़िल की	जो - जिस	अल्लाह के साथ	तुम शरीक करो	और यह कि	नाहक़ को	और सरकशी	और गुनाह

وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَی اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

आएगा	पस जब	एक मुद्दत मुक़र्रर	और हर उम्मत के लिए	33	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	तुम कहो (लगाओ)	और यह कि

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِیٓ اٰدَمَ اِمَّا

अगर	ऐ औलादे आदम	34	आगे बढ़ सकेंगे	और न	एक घड़ी	न वह पीछे हो सकेंगे	उन का मुक़र्रर वक़्त

يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِیْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰی وَاَصْلَحَ

और इस्लाह कर ली	डरा	तो जो	मेरी आयात	तुम पर (तुम्हें)	बयान करें (सुनाएं)	तुम में से	रसूल	तुम्हारे पास आएं

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	झुटलाया	और वह लोग जो	35	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़ नहीं

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ

पस कौन	36	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	यही लोग	उन से	और तकब्बुर किया

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	उस की आयतों को	या झुटलाया	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓی اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا

हमारे भेजे हुए	उन के पास आएंगे	जब	यहां तक कि	किताब (लिखा हुआ)	से	उन का नसीब (हिस्सा)	उन्हें पहुँचेगा

يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के सिवा	से	पुकारते	तुम थे	कहां जो	वह कहेंगे	उन की जान निकालने

قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	काफ़िर थे	कि वह	अपनी जानें	पर	और गवाही देंगे	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी ज़ीनत हर नमाज़ के वक़्त इख़्तियार करो और खाओ और पियो और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह फ़ुज़ूल ख़र्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (31)

आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की है, और पाक रिज़्क़, आप (स) फ़रमा दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए और ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन (उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उस गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32)

आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम क़रार दिया है बेहयाइयों को, उन में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा हैं, और गुनाह और सरकशी नाहक़ को, और यह कि तुम अल्लाह के साथ शरीक करो जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात) जो तुम नहीं जानते। (33)

और हर उम्मत के लिए एक मुद्दत मुक़र्रर है, पस जब उन का मुक़र्ररा वक़्त आजाएगा तो न वह पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न आगे बढ़ सकेंगे। (34)

ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे पास तुम ही से मेरे रसूल आएं, सुनाएं तुम्हें मेरी आयात तो जो डरा और उस ने इस्लाह कर ली, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (35)

और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (36)

पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा या उस की आयतों को झुटलाया, यही वह लोग हैं जिन्हें उन का हिस्सा किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ पहुँचेगा, यहां तक जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के पास उन की जान निकालने आएंगे वह कहेंगे कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह (जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम हो गए, और वह अपनी जानों पर (अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (37)

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़ब्ल, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस मे दाख़िल हो जाएंगें तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह हैं जिन्हों ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अ़ज़ाब दे। (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। (38)

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (39)

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुज्रिमों को बदला देते हैं। (40)

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है ओर उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। (41)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की बिसात के मुताबिक़, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (42)

और हम ने उन के सीनों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। (43)

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

और इन्सान	जिन्नात	से	तुम से क़ब्ल	गुज़र चुकीं	उम्मतों में (हमराह)	तुम दाख़िल हो जाओ	फ़रमाएगा

فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا

उस में	मिल जाएंगे	जब	यहां तक	अपनी साथी	लानत करेगी	कोई उम्मत	दाख़िल होगी	जब भी	आग (दोज़ख़) में

جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ

पस दे उन को	उन्हों ने हमें गुमराह किया	यह हैं	ऐ हमारे रब	अपने पहलों के बारे में	उन की पिछली क़ौम	कहेगी	सब

عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ٣٨

38	तुम जानते	नहीं	और लेकिन	दो गुना	हर एक के लिए	फ़रमाएगा	आग का	दो गुना	अ़ज़ाब

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

कोई बड़ाई	हम पर	है तुम्हें	पस नहीं	अपने पिछलों को	उन के पहले	और कहेंगे

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ٣٩ ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ٨ ١١

झुटलाया	वह लोग जो	बेशक	39	तुम कमाते थे (करते थे)	उस का बदला	अ़ज़ाब	चखो

بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۗءِ وَلَا

और न	आस्मान	दरवाज़े	उन के लिए	न खोले जाएंगे	उन से	और तकब्बुर किया उन्हों ने	हमारी आयतों को

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰي يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	सुई	नाका	में	ऊँट	दाख़िल होजाए	यहां तक (जब तक)	जन्नत	दाख़िल होंगे

نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ٤٠ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ

ओढ़ना	उन के ऊपर	और से	बिछौना	जहन्नम का	उन के लिए	40	मुज्रिम (जमा)	हम बदला देते हैं

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ٤١ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग	41	ज़ालिम (जमा)	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	उस की वुस्अ़त	मगर	किसी पर	हम बोझ नहीं डालते

خٰلِدُوْنَ ٤٢ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ

से	बहती हैं	कीने	उन के सीने	में	जो	और खींच लिए हम ने	42	हमेशा रहेंगे

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا

हम थे	और न	इस की तरफ़	हमारी रहनुमाई की	जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और वह कहेंगे	नहरें	उन के नीचे

لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ

हक़ के साथ	हमारा रब	रसूल	आए	अलबत्ता	अल्लाह	कि हमें हिदायत देता	अगर न	कि हम हिदायत पाते

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٤٣ الثلاثة

43	करते थे	तुम थे	सिले में	तुम उस के वारिस होगे	जन्नत	यह कि तुम	कि	और उन्हें निदा दी जाएगी

وَنَادٰٓى اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ اَصۡحٰبَ النَّارِ اَنۡ قَدۡ وَجَدۡنَا مَا وَعَدَنَا

और पुकारेंगे	जन्नत वाले	दोज़ख़ वालों को	कि	तहक़ीक़ हम ने पा लिया	जो	हम से वादा किया

رَبُّنَا حَقًّا فَهَلۡ وَجَدۡتُّمۡ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمۡ حَقًّا ؕ قَالُوۡا نَعَمۡ ۚ فَاَذَّنَ

हमारा रब	सच्चा	तो क्या	तुम ने पाया	जो वादा किया	तुम्हारा रब	सच्चा	वह कहेंगे	हाँ	तो पुकारेगा

مُؤَذِّنٌۢ بَيۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ۙ﴿۴۴﴾ الَّذِيۡنَ يَصُدُّوۡنَ

एक पुकारने वाला	उन के दरमियान	कि	अल्लाह की लानत	पर	ज़ालिम (जमा)	44	जो लोग	रोकते थे

وقف لازم
عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَيَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ كٰفِرُوۡنَ ﴿۴۵﴾

से	अल्लाह का रास्ता	और उस में तलाश करते थे	कजी	और वह	आख़िरत के	काफ़िर (जमा)	45

وَبَيۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ يَّعۡرِفُوۡنَ كُلًّاۢ بِسِيۡمٰٮهُمۡ ۚ وَنَادَوۡا

और उन के दरमियान	एक हिजाब	और पर	आराफ़	कुछ आदमी	पहचान लेंगे	हर एक	उन की पेशानी से	और पुकारेंगे

اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ ۣ لَمۡ يَدۡخُلُوۡهَا وَهُمۡ يَطۡمَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾

जन्नत वाले	कि	सलाम	तुम पर	वह उस में दाख़िल नहीं हुए	और वह	उम्मीदवार हैं	46

وَاِذَا صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا

और जब	फिरेंगी	उन की निगाहें	तरफ़	दोज़ख़ वाले	कहेंगे	ऐ हमारे रब	हमें न कर

٥ ع ٨ ١٢
مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۷﴾ وَنَادٰٓى اَصۡحٰبُ الۡاَعۡرَافِ رِجَالًا يَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ

साथ	लोग	ज़ालिम (जमा)	47	और पुकारेंगे	आराफ़ वाले	कुछ आदमी	वह उन्हें पहचान लेंगे

بِسِيۡمٰٮهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾

उन की पेशानी से	वह कहेंगे	न फ़ाइदा दिया	तुम्हें	तुम्हारा जत्था	और जो	तुम तकब्बुर करते थे	48

اَهٰٓؤُلَاۤءِ الَّذِيۡنَ اَقۡسَمۡتُمۡ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحۡمَةٍ ؕ

क्या अब यह वही	वह जो कि	तुम क़सम खाते थे	उन्हें न पहुँचाएगा	अल्लाह	अपनी कोई रहमत

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمۡ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿۴۹﴾ وَنَادٰٓى

तुम दाख़िल हो जाओ	जन्नत	न	कोई ख़ौफ़	तुम पर	और न	तुम	ग़मगीन होगे	49	और पुकारेंगे

اَصۡحٰبُ النَّارِ اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ اَفِيۡضُوۡا عَلَيۡنَا مِنَ الۡمَآءِ اَوۡ مِمَّا

दोज़ख़ वाले	जन्नत वाले	कि	बहाओ (पहुँचाओ)	हम पर	से	पानी	या	उस से जो

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ۙ﴿۵۰﴾ الَّذِيۡنَ

तुम्हें दिया	अल्लाह	वह कहेंगे	बेशक अल्लाह	उसे हराम कर दिया	पर	काफ़िर (जमा)	50	वह लोग जो

اتَّخَذُوۡا دِيۡنَهُمۡ لَهۡوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتۡهُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ۚ فَالۡيَوۡمَ

उन्हों ने बना लिया	अपना दीन	खेल	और कूद	और उन्हें धोके में डाल दिया	ज़िन्दगी	दुनिया	पस आज

نَنۡسٰٮهُمۡ كَمَا نَسُوۡا لِقَآءَ يَوۡمِهِمۡ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوۡا بِاٰيٰتِنَا يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۵۱﴾

हम उन्हें भुलादेंगे	जैसे उन्हों ने भुलाया	मिलना	उन का दिन	यह-इस	और जैसे-थे	हमारी आयतों से	इन्कार करते	51

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहक़ीक़ हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आख़िरत के काफ़िर (मुन्किर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाब (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार हैं। (46)

और जब उन की निगाहें फिरेंगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया तुम्हारे जत्थे ने और जिन पर तुम तकब्बुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं हैं कि तुम क़सम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम ग़मगीन होगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफ़िरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्हों ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगे जैसे उन्हों ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

और रहमत	हिदायत	इल्म	पर	हम ने उसे तफ़सील से बयान किया	एक किताब	और अलबत्ता हम लाए उन के पास

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ

आएगा	जिस दिन	उस का कहना पूरा हो जाए	मगर (यही कि)	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	क्या	52	जो ईमान लाए हैं	लोगों के लिए

تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

रसूल (जमा)	बेशक लाए	पहले से	उन्हों ने भुला दिया	वह लोग जो	कहेंगे	उस का कहा हुआ

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ

सो हम करें	या हम लौटाए जाएं	हमारी	कि सिफ़ारिश करें	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	हमारे लिए	तो क्या हैं	हक़	हमारा रब

غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا

जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानें	बेशक नुक़सान किया उन्हों ने	हम करते थे	उस के ख़िलाफ़ जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ ع ٦ ١٣

आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जो-जिस	अल्लाह	तुम्हारा रब	बेशक	53	वह इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते) थे

وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِى الَّيْلَ

रात	ढांकता है	अर्श	पर	क़रार फ़रमाया	फिर	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन

النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ

मुसख़्ख़र	और सितारे	और चाँद	और सूरज	दौड़ता हुआ	उस के पीछे आता है	दिन

بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا

पुकारो	54	तमाम जहान	रब	बरकत वाला है अल्लाह	और हुक्म देना	पैदा करना	उस के लिए	याद रखो	उस का हुक्म

رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ج وَلَا تُفْسِدُوْا

और न फ़साद मचाओ	55	हद से गुज़रने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और आहिस्ता	गिड़ गिड़ा कर	अपने रब को

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की रहमत	बेशक	और उम्मीद रखते	डरते	और उसे पुकारो	उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन में

قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	भेजता है	जो-जिस	और वह	56	एहसान (नेकी) करने वाले	से	क़रीब

بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا

भारी	बादल	उठा लाएं	जब	यहां तक कि	अपनी रहमत (बारिश)	आगे	बतौर ख़ुशख़बरी

سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ

से	उस से	फिर हम ने निकाला	पानी	उस से	फिर हम ने उतारा	मुर्दा	किसी शहर की तरफ़	हम ने उन्हें हांक दिया

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	ग़ौर करो	ताकि तुम	मुर्दे	हम निकालेंगे	इसी तरह	हर फल

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुन्याद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्हों ने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया) में लौटाए जाएं कि हम उस के ख़िलाफ़ अ़मल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्हों ने अपनी जानों का (अपना) नुक़सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर क़रार फ़रमाया अ़र्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक्म से मुसख़्ख़र हैं, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक्म देना, अल्लाह बरकत वाला है सारे जहानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत क़रीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले हवाएं बतौर ख़ुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाएं तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर क़िस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ

ना पाकीज़ा (ख़राब)	और वह जो	उस का रब	हुक्म से	उस का सबज़ह	निकलता है	पाकीज़ा	और ज़मीन

ع ٥ ١٤ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝٥٨

58	वह शुक्र अदा करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	फेर फेर कर बयान करते हैं	इसी तरह	नाक़िस	मगर	नहीं निकलता

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)	अलबत्ता हम ने भेजा

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥٩

59	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	बेशक मैं	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٠ قَالَ

उस ने कहा	60	खुली	गुमराही	में	अलबत्ता तुझे देखते हैं	बेशक हम	उस की क़ौम	से	सरदार	बोले

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦١

61	सारे जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कुछ भी गुमराही	मेरे अन्दर	नहीं	ऐ मेरी क़ौम

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٢

62	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह (की तरफ़) से	और जानता हूँ	तुम्हें	और नसीहत करता हूँ	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि	क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ

لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٦٣ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ

तो हम ने उसे बचा लिया	पस उन्हों ने उसे झुटलाया	63	रहम किया जाए	और ताकि तुम पर	और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि वह डराए तुम्हें

وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ

हमारी आयतें	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	कश्ती में	उस के साथ	और जो लोग

٨ ع ٦ ١٥ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۝٦٤ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ

उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	आ़द	और तरफ़	64	अन्धे	लोग	थे	बेशक वह

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٦٥

65	तो क्या तुम नहीं डरते	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ

में	अलबत्ता हम तुझे देखते हैं	उस की क़ौम	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	सरदार	बोले

سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٦٦ قَالَ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	66	झूटे	से	और हम बेशक तुझे गुमान करते हैं	बेवक़ूफ़ी

لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٧

67	तमाम जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कोई बेवक़ूफ़ी	मुझ में	नहीं

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक्म से (पाकीज़ा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाक़िस, उसी तरह हम शुक्र गुज़ार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (59)

उस की क़ौम के सरदार बोलेः हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रहम किया जाए। (63)

पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कश्ती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने ग़र्क़ कर दिया, बेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आ़द की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं बेवक़ूफ़ी में और हम बेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मुझ में बेवक़ूफ़ी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ	68	अमीन	ख़ैर ख़ाह	तुम्हारा	और मैं	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ

اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

ताकि वह तुम्हें डराए	तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ

और तुम्हें ज़ियादा दिया	क़ौमे नूह	बाद	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया	जब	और तुम याद करो

فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	फ़लाह (कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	फैलाओ	ख़ल्क़त (जिस्म)	में

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

पूजते थे	जो-जिस	और हम छोड़ दें	वाहिद (अकेले)	अल्लाह	कि हम इबादत करें	क्या तू हमारे पास आया	वह बोले

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

70	सच्चे लोग	से	तू है	अगर	जिस का हम से वादा करता है	तो ले आ हम पर	हमारे बाप दादा

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ

और ग़ज़ब	अज़ाब	तुम्हारा रब	से	तुम पर	अलबत्ता पड़ गया	उस ने कहा

اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا

नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तुम ने उन के रख लिए हैं	नाम (जमा)	में	क्या तुम झगड़ते हो मुझ से

نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	सनद	कोई	उस के लिए	अल्लाह ने नाज़िल की

الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

अपनी	रहमत से	उस के साथ थे	और वह लोग जो	तो हम ने उसे नजात दी (बचा लिया)	71	इन्तिज़ार करने वाले

وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ ع ٩/٨ ١٦

72	ईमान लाने वाले	और न थे	हमारी आयात	उन्हों ने झुठलाया	वह लोग जो	जड़	और हम ने काट दी

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وقف لازم

तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

तुम्हारा रब	से	निशानी	तहक़ीक़ आ चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ

में	कि खाए	सो उसे छोड़ दो	एक निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊँटनी	यह

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

73	दर्दनाक	अज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें	बुराई से	उसे हाथ लगाओ	और न	अल्लाह की ज़मीन

मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर ख़ाह, अमीन हूँ। **(68)**

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह (अ) के बाद जांनशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डेल डोल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। **(69)**

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। **(70)**

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। **(71)**

तो हम ने उस को बचा लियो और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत स, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। **(72)**

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हरा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। **(73)**

وَاذْكُــرُوْٓا اِذْ جَعَلَـكُمْ خُـلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ

और तुम्हें ठिकाना दिया	आ़द	बाद	जांनशीन	तुम्हें बनाया उस ने	जब	और तुम याद करो

فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

और तराशते हो	महल (जमा)	उस की नर्म जगह	से	बनाते हो	ज़मीन	में

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

ज़मीन (मुल्क) में	और न फिरो	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	मकानात	पहाड़

مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	से	तकब्बुर किया (मुतकब्बिर)	वह जिन्हों ने	सरदार	बोले	74	फ़साद करने वाले (फ़साद करते)

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا

सालेह (अ)	कि	क्या तुम जानते हो	उन से	ईमान लाए	उन से जो	ज़ईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए	उन लोगों से

مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	ईमान रखते हैं	उस के साथ भेजा गया	उस पर जो	बेशक हम	उन्हों ने कहा	अपना रब	से	भेजा हुआ

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

तुम ईमान लाए उस पर	वह जिस पर	हम	तकब्बुर किया	वह जिन्हों ने	बोले

كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

अपना रब	हुक्म	से	और सरकशी की	ऊँटनी	उन्हों ने कूचें काट दीं	76	कुफ़्र करने वाले (मुनकिर)

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ

से	तू है	अगर	जिस का तू हम से वादा करता है	ले आ	ऐ सालेह (अ)	और बोले

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ

अपने घर	में	तो रह गए	ज़ल्ज़ला	पस उन्हें आ पकड़ा	77	रसूल (जमा)

جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

तहक़ीक़ मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उन से	फिर मुँह फेरा	78	औन्धे

رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

79	ख़ैर ख़्वाह (जमा)	तुम पसन्द नहीं करते	और लेकिन	तुम्हारी	और ख़ैर ख़्वाही की	अपना रब	पैग़ाम

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जो तुम से पहले नहीं की	क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो)	अपनी क़ौम से	कहा	जब	और लूत (अ)

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

मर्द (जमा)	जाते हो	बेशक तुम	80	सारे जहान	से	किसी ने	ऐसी

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

81	हद से गुज़र जाने वाले	लोग	तुम	बल्कि	औरतें	अ़लावा (छोड़ कर)	शहवत से

और याद करो जब तुम्हें आ़द के बाद जांनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फिरो। **(74)**

सरदार बोले उन की क़ौम के जो मुतकब्बिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्हों ने कहा बेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। **(75)**

वह जिन्हों ने तकब्बुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुन्किर हैं। **(76)**

उन्हों ने ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। **(77)**

पस ज़ल्ज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। **(78)**

फिर (सालहे (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की, लेकिन तुम ख़ैर ख़्वाहों को पसन्द नहीं करते। **(79)**

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। **(80)**

बेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। **(81)**

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ

उन्हें निकाल दो	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	उस की क़ौम	जवाब	था	और न

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

हम ने नजात दी उस को	82	पाकीज़गी चाहते हैं	यह लोग	बेशक	अपनी बस्ती	से

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बारिश बरसाई	83	पीछे रहने वाले	से	वह थी	उस की बीवी	मगर	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع ١٠ ١٢ ١٧

84	मुज्रिमीन	अन्जाम	हुआ	कैसा हुआ	पस देखो	एक बारिश	उन पर

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	शुऐब (अ)	उन के भाई	मदयन	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ

से	एक दलील	तहक़ीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	कोई माबूद	से	नहीं तुम्हारा

رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

लोग	और न घटाओ	और तोल	नाप	पस पूरा करो	तुम्हारा रब

اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۭ

उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन (मुल्क) में	फ़साद मचाओ	और न	उन की अशिया

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ج وَلَا تَقْعُدُوْا

बैठो	और न	85	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह

بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और तुम रोको	तुम डराओ	रास्ता	हर

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ

तुम थे	जब	और याद करो	कजी	और ढूंडो उस में	उस पर	ईमान लाया	जो

قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	और देखो	तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया	थोड़े

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

ईमान लाया	तुम से	एक गिरोह	है	और अगर	86	फ़साद करने वाले

بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَاۗىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا

तुम सब्र कर लो	ईमान नहीं लाया	और एक गिरोह	जिस के साथ	मैं भेजा गया	उस पर जो

حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87	फ़ैसला करने वाला	बेहतर	और वह	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे अल्लाह	यहां तक कि

और उस की क़ौम का जवाब न था मगर यह कि उन्हों ने कहाः उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। **(82)**

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। **(83)**

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक बारिश बरसाई, पस देखो मुज्रिमों का कैसा अन्जाम हुआ? **(84)**

और हम नें मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इस्लाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। **(85)**

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कजी ढूंडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? **(86)**

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फ़ैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। **(87)**

الجزء ٩

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

हम तुझे ज़रूर निकाल देंगे	उस की क़ौम	से	तकब्बुर करते थे (बड़े बनते थे)	वह जो कि	सरदार	बोले

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन	में	या यह कि तुम लौट आओ	हमारी बस्ती	से	तेरे साथ	ईमान लाए	और वह जो	ऐ शुऐब (अ)

قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا

हम लौट आएं	अगर	झूटा	अल्लाह पर	अलबत्ता हम ने बुहतान बान्धा (बान्धेंगे)	88	नापसन्द करते हों	हम हों	क्या ख़ाह	उस ने कहा

فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ

उस में	कि हम लौट आएं	हमारे लिए	और नहीं है	उस से	हम को बचा लिया अल्लाह	जब	बाद	तुम्हारा दीन	में

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	इल्म में	हर शै	हमारा रब	अहाता कर लिया है	हमारा रब	अल्लाह	यह कि चाहे	मगर

تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ

बेहतर	और तू	हक़ के साथ	हमारी क़ौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे	हमारा रब	हम ने भरोसा किया

الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ

तुम ने पैरवी की	अगर	उस की क़ौम	से	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	सरदार	और बोले	89	फ़ैसला करने वाला

شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

सुबह के वक़्त रह गए	ज़लज़ला	तो उन्हें आ लिया	90	ख़सारे में होगे	उस सूरत में	तो तुम ज़रूर	शुऐब (अ)

ع ٤ عند المتقدمين ١٢

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا

न बस्ते थे	गोया	शुऐब (अ)	झुटलाया	वह जिन्हों ने	91	औन्धे पड़े	अपने घर	में

فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى

फिर मुहँ फेरा	92	ख़सारा पाने वाले	वही	वह हुए	शुऐब	झुटलाया	वह जिन्हों ने	उस में वहां

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ

तुम्हारी	और ख़ैर ख़ाही की	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें	अलबत्ता	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उन से

ع ١١ ١٠

فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

नबी	कोई	किसी बस्ती	में	और न भेजा हम ने	93	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	ग़म खाऊँ	तो कैसे

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	आजिज़ी करें	ताकि वह	और तक्लीफ़	सख़्ती में	वहां के लोग	हम ने पकड़ा	मगर

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ

पहुँच चुकी है	और कहने लगे	वह बढ़ गए	यहां तक कि	भलाई	बुराई	जगह	हम ने बदली	फिर

اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	बेख़बर थे	और वह	अचानक	पस हम ने उन्हें पकड़ा	और ख़ुशी	तक्लीफ़	हमारे बाप दादा

उस की क़ौम के वह सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐ शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फ़रमाया ख़ाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान बान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएं जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएं मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! फ़ैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी क़ौम के दरमियान हक़ के साथ और तू बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़्र किया उस की क़ौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सूरत में तुम ख़ुद ख़सारे में होगे। (90)

तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, पस वह सुबह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बस्ते न थे वहां। जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उन से उस ने मुहँ फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़ाही कर चुका तो (अब) काफ़िर क़ौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तक्लीफ़ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तक्लीफ़ और ख़ुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह बेख़बर थे। (95)

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

बरकतें	उन पर	तो अलबत्ता हम खोल देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	बस्तियों वाले	यह होता कि	और अगर

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

उस के नतीजे में	तो हम ने उन्हें पकड़ा	उन्हों ने झुटलाया	और लेकिन	और ज़मीन	आस्मान	से

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

उन पर आए	कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	96	जो वह करते थे

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ

कि	बस्तियों वाले	क्या बेख़ौफ़ हैं	97	सोए हुए हों	और वह	रातों रात	हमारा अ़ज़ाब

يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ

अल्लाह की तदबीर	क्या वह बेख़ौफ़ हो गए	98	खेल कूद रहे हों	और वह	दिन चढ़े	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आ जाए

فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ ع ١٢ ٦ ٢

हिदायत मिली	क्या न	99	ख़सारा उठाने वाले	लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर	बेख़ौफ़ नहीं होते

لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ

अगर हम चाहते	कि	वहां के रहने वाले	बाद	ज़मीन	वारिस हुए	वह लोग जो

اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	नहीं सुनते हैं	सो वह	उन के दिल	पर	और हम मुहर लगाते हैं	उन के गुनाहों के सबब	तो हम उन पर मुसीबत डालते

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	और अलबत्ता	उन की कुछ ख़बरें	से	तुम पर	हम बयान करते हैं	बस्तियां	यह

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ

उस से पहले	उन्हों ने झुटलाया	क्योंकि	वह ईमान लाते	सो न	निशानियां ले कर	उन के रसूल

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا

हम ने पाया	और न	101	काफ़िर (जमा)	दिल (जमा)	पर	मुहर लगाता है अल्लाह	इसी तरह

لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	नाफ़रमान- बद किर्दार	उन में अक्सर	हम ने पाए	और दरहक़ीक़त	अ़हद का पास	उन के अक्सर में

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उसके सरदार	तरफ़ फ़िरऔ़न	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर

فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	क्या	सो तुम देखो	उन का	तो उन्हों ने ज़ुल्म (इन्कार) किया

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तमाम जहान	रब	से	रसूल	बेशक मैं	ऐ फ़िरऔ़न	मूसा	और कहा

और अगर बस्तियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्हों ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब बे ख़ौफ़ हैं बस्तियों वाले कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बस्तियों वाले उस से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से बे ख़ौफ़ हो गए? सो बे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

क्या उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बस्तियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्हों ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अ़हद का कोई पास न पाया और दरहक़ीक़त हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान बद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔ़न की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने उन (निशानियों का) इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरऔ़न! बेशक मैं तमाम जहानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ

शायां	पर	कि	मैं न कहूँ	अल्लाह पर	मगर हक़	तहक़ीक़ तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां

مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ؕ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ

से	तुम्हारा रब	पस भेज दे	मेरे साथ	बनी इस्राईल	105	बोला	अगर	तू

جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ

लाया है कोई निशानी	तो वह ले आ	अगर तू है	से	सच्चे	106	पस उस ने डाला	अपना असा

فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۚ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ

पस वह अचानक	अज़्दहा	सरीह (साफ़)	107	और निकाला	अपना हाथ	पस नागाह वह	नूरानी

ع ١٣ ٩ ٣ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

नाज़िरीन के लिए	108	बोले	सरदार	से	क़ौम	फ़िरऔन	बेशक	यह जादूगर

عَلِيْمٌ ۙ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

इल्म वाला (माहिर)	109	चाहता है	कि	तुम्हें निकाल दे	से	तुम्हारी सरज़मीन	तो अब क्या	कहते हो	110

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۙ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ

वह बोले	रोक ले	और उस का भाई	और भेज	शहरों में	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	111	तेरे पास ले आएं

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا

हर	जादूगर	इल्म वाला (माहिर)	112	और आए	जादूगर (जमा)	फ़िरऔन	वह बोले	यक़ीनन	हमारे लिए	कोई अजर (इन्आम)

اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

अगर	हुए	हम	ग़ालिब (जमा)	113	उस ने कहा	हाँ	और तुम बेशक	अलबत्ता - से	मुक़र्रबीन	114

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

वह बोले	ऐ मूसा (अ)	या	यह कि	तू डाल	और या (वरना)	यह कि	हों	हम	डालने वाले	115

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ

कहा	तुम डालो	पस जब	उन्हों ने डाला	सिहर कर दिया	आँखें	लोग	और उन्हें डराया

وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ

और वह लाए जादू	बड़ा	116	और हम ने वहि भेजी	तरफ़	मूसा (अ)	कि	डालो	अपना असा

فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۚ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا

तो नागाह	वह	निगलने लगा	जो उन्हों ने ढकोस्ला बनाया था	117	पस साबित हो गया	हक़	और बातिल हो गया	जो

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۚ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۚ ﴿١١٩﴾

वह करते थे	118	पस मग़लूब हो गए	वहीं	और लौटे	ज़लील	119

وَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۖ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿١٢١﴾

और गिर गए	जादूगर	सिज्दा करने वाले	120	वह बोले	हम ईमान लाए	रब पर	तमाम जहान (जमा)	121

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक़, तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ बनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ़ अज़्दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेबान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले बेशक यह तो माहिर जादूगर है। (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नक़ीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएं। (112)

और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, वह बोले यक़ीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हाँ! तुम बेशक (मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्हों ने डाला लोगों की आँखों पर सिहर कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्हों ने बनाया था। (117)

पस हक़ साबित हो गया और वह जो करते थे बातिल हो गया। (118)

पस वह वहीं मग़लूब हो गए और लौटे ज़लील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120)

वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

कि	पहले	उस पर	क्या तुम ईमान लाए	फ़िरऔन	बोला	122	और हारून	मूसा (अ)	रब

اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

यहां से	ताकि निकाल दो	शहर	में	जो तुम ने चली	एक चाल है	यह	बेशक	मैं इजाज़त दूँ तुम्हें

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ	मैं ज़रूर काट डालूँगा	123	तुम मालूम कर लोगे	पस जल्द	उस के रहने वाले

مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

अपना रब	तरफ़	बेशक हम	वह बोले	124	सब को	मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	फिर	दूसरी तरफ़	से

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا

जब	अपना रब	निशानियां	हम ईमान लाए	यह कि	मगर	हम से	तुझ को दुश्मनी	और नहीं	125	लौटने वाले

جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ ع ١٤ ١٨ ٤

और बोले	126	मुसलमान (जमा)	और हमें मौत दे	सब्र	हम पर	दहाने खोल दे	हमारा रब	वह हमारे पास आएं

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

ताकि वह फ़साद करें	और उस की क़ौम	मूसा	क्या तू छोड़ रहा है	फ़िरऔन	क़ौम	से (के)	सरदार

فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

उन के बेटे	हम अनक़रीब क़त्ल कर देंगे	उस ने कहा	और तेरे माबूद	और वह छोड़ दे तुझे	ज़मीन	में

وَنَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	127	ज़ोर आवर (जमा)	उन पर	और हम	उन की औरतें (बेटियां)	और ज़िन्दा छोड़ देंगे

لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ قف

अल्लाह की	ज़मीन	बेशक	और सब्र करो	अल्लाह से	तुम मदद मांगो	अपनी क़ौम से

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम कार	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिस	वह उस का वारिस बनाता है

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ

आप आए हम में	और बाद	आप (अ) हम में आते	कि	क़ब्ल	से	हम अज़ीयत दिए गए	वह बोले

قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى

में	और तुम्हें ख़लीफ़ा बना दे	तुम्हारा दुश्मन	हलाक कर दे	कि	तुम्हारा रब	क़रीब है	उस ने कहा

الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ ع ١٥ ٣ ٥

हम ने पकड़ा	और अलबत्ता	129	तुम काम करते हो	कैसे	फिर देखेगा	ज़मीन

اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

130	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	फल (जमा)	से (में)	और नुक़सान	क़हतों में	फ़िरऔन वाले

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। **(122)**

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से क़ब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? बेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, तुम जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। **(123)**

मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। **(124)**

वह बोले बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। **(125)**

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गईं, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। **(126)**

और सरदार बोले फ़िरऔन की क़ौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की क़ौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अनक़रीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। **(127)**

मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। **(128)**

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से क़ब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा क़रीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (नाइब) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। **(129)**

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। **(130)**

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ

कोई बुराई	पहुँचती	और अगर	यह	हमारे लिए	वह कहने लगे	भलाई	आई उन के पास	फिर जब

يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	उन की बदनसीबी	इस के सिवा नहीं	याद रखो	और जो उन के साथ (साथी)	मूसा से	बदशगूनी लेते

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ

हम पर तू लाएगा	जो कुछ	और वह कहने लगे	131	नहीं जानते	उन के अक्सर	और लेकिन

مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ فَاَرْسَلْنَا

फिर हम ने भेजे	132	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	तो नहीं	उस से	कि हम पर जादू करे	कैसी भी निशानी

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ

निशानियां	और खून	और मेंडक	और जुएं-चच्ड़ी	और टिड्डी	तूफ़ान	उन पर

مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَلَمَّا

और जब	133	मुज्रिम (जमा)	एक क़ौम (लोग)	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	जुदा जुदा

وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

अहद	सबब-जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अज़ाब	उन पर	वाक़े हुआ

عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ

और हम ज़रूर भेज देंगे	तुझ पर	हम ज़रूर ईमान लाएंगे	अज़ाब	हम से	तू ने खोल दिया (उठा लिया)	अगर	तेरे पास

مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۴﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ

अज़ाब	उन से	हम ने खोल दिया (उठा लिया)	फिर जब	134	बनी इस्राईल	तेरे साथ

اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

उन से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	135	अहद तोड़ देते	वह	उसी वक़्त	उस तक पहुँचना था	उन्हें	एक मुद्दत तक

فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا

उन से	और वह थे	हमारी आयतों को	झुटलाया	क्योंकि उन्हों	दर्या में	पस उन्हें ग़र्क़ कर दिया

غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ

कमज़ोर समझे जाते	थे	वह जो	क़ौम	और हम ने वारिस किया	136	ग़ाफ़िल (जमा)

مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ

वादा	और पूरा हो गया	उस में	हम ने बरकत रखी	वह जिस	और उस के मग़्रिब (जमा)	ज़मीन	मश्‌रिक़ (जमा)

رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا

और हम ने बरबाद कर दिया	उन्हों ने सब्र किया	बदले में	बनी इस्राईल	पर	अच्छा	तेरा रब

مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾

137	वह ऊँचा फैलाते थे	और जो	और उस की क़ौम	फ़िरऔन	बनाते थे (बनाया था)	जो

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगूनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। (131)

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (132)

फिर हम ने उन पर भेजे तूफ़ान, और टिड्डी, और जुएं, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानीयां, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह मुज्रिम क़ौम के लोग थे। (133)

और जब उन पर अज़ाब वाक़े हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ): तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (अल्लाह के) उस अहद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। (134)

फिर जब हम ने उन से अज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आख़िर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अहद तोड़ देते। (135)

फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन्हें दर्या में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से ग़ाफ़िल थे। (136)

और हम ने उस क़ौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मश्‌रिक़ ओ मग़्रिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फ़लसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्हों ने सब्र किया, और हम ने बरबाद कर दिया जो फ़िरऔन और उस की क़ौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ बाला महल्लात)। (137)

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ

जमे बैठे थे	एक क़ौम	पर (पास)	पस वह आए	बहरे (कुलज़ुम)	बनी इस्राईल को	और हम ने पार उतारा

عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ

उन के लिए	जैसे	बुत	हमारे लिए	बना दे	ऐ मूसा (अ)	वह बोले	अपने	सनम (जमा) बुत	पर

اٰلِهَةٌ ۗ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

वह	जो	तबाह होने वाली है	यह लोग	बेशक	138	जहल करते हो	तुम लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	माबूद (जमा) बुत

فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ

तलाश करूँ तुम्हारे लिए	क्या अल्लाह के सिवा	उस ने कहा	139	वह कर रहे हैं	जो	और बातिल	उस में

اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ

से	हम ने तुम्हें नजात दी	और जब	140	सारे जहान	पर	फ़ज़ीलत दी तुम्हें	हालांकि वह	कोई माबूद

اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

तुम्हारे बेटे	मार डालते थे	अ़ज़ाब	बुरा	तुम्हें तक्लीफ़ देते थे	फ़िरऔन वाले

وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ع ١٦ ١٢ ٦

141	बड़ा-बड़ी	तुम्हारा रब	से	आज़माइश	और उस में तुम्हारे लिए	तुम्हारी औरतें (बेटियां)	और जीता छोड़ देते थे

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ

तो पूरी हुई	दस (10) से	और उस को हम ने पूरा किया	रात	तीस (30)	मूसा (अ)	और हम ने वादा किया

مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ

अपने भाई से	मूसा	और कहा	रात	चालीस (40)	उस का रब	मुद्दत

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ

रास्ता	और न पैरवी करना	और इस्लाह करना	मेरी क़ौम में	मेरा ख़लीफ़ा (नाइब) रह	हारून (अ)

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

उस ने कहा	अपना रब	और उस ने कलाम किया	हमारी वादा गाह पर	मूसा (अ)	आया	और जब	142	मुफ़्सिद (जमा)

رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى

तरफ़	तू देख	और लेकिन (अलबत्ता)	तू मुझे हरगिज़ न देखेगा	उस ने कहा	तेरी तरफ़	मैं देखूँ	मुझे दिखा	ऐ मेरे रब

الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى

तजल्ली की	पस जब	तू मुझे देख लेगा	तो तभी	अपनी जगह	वह ठहरा रहा	पस अगर	पहाड़

رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ

होश आया	फिर जब	बेहोश	मूसा (अ)	और गिरा	रेज़ा रेज़ा	उसको कर दिया	पहाड़ की तरफ़	उस का रब

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

143	ईमान लाने वाले	सब से पहला	और मैं	तेरी तरफ़	मैं ने तौबा की	तू पाक है	उस ने कहा

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (कुलज़ुम) के पार, पस वह एक ऐसी क़ौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा बेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

बेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और बातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहाः क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुद्दत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और मुफ़्सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ

अपने पैग़ामात से	लोग	पर	मैं ने तुझे चुन लिया	बेशक मैं	ऐ मूसा	कहा

وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا

और हम ने लिख दी	144	शुक्र गुज़ार (जमा)	से	और रहो	जो मैं ने तुझे दिया	पस पकड़ ले	और अपने कलाम से

لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ

हर चीज़ की	और तफ़सील	नसीहत	हर चीज़	से	तख़्तियां	में	उस के लिए

فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۭ

उस की अच्छी बातें	वह पकड़ें (इख़्तियार करें)	और हुक्म दे अपनी क़ौम	कुव्वत से	पस तू उसे पकड़ ले

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	अपनी आयात	से	मैं अ़नक़रीब फेर दूंगा	145	नाफ़रमानों का घर	अ़नक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा

يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

हर निशानी	वह देख लें	और अगर	नाहक़	ज़मीन में	तकब्बुर करते हैं

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ

रास्ता	न पकड़ें (इख़्तियार करें)	हिदायत	रास्ता	देख लें	और अगर	न ईमान लाएं उस पर

وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

इस लिए कि उन्हों ने	यह	रास्ता	इख़्तियार कर लें उसे	गुमराही	रास्ता	देख लें	और अगर

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

झुटलाया	और जो लोग	146	ग़ाफ़िल (जमा)	उस से	और थे	हमारी आयात	झुटलाया

بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ

वह बदला पाएंगे	क्या	उन के अ़मल	ज़ाया हो गए	आख़िरत	और मुलाक़ात	हमारी आयात को

ع ١٧/٦ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	मूसा	क़ौम	और बनाया	147	वह करते थे	जो	मगर

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۭ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ

नहीं कलाम करता उन से	कि वह	क्या न देखा उन्हों ने	गाय की आवाज़	उस में	एक धड़	एक बछड़ा	अपने ज़ेवर	से

وقف لازم وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا

और जब	148	और वह ज़ालिम थे	उन्हों ने बना लिया	रास्ता	और नहीं दिखाता उन्हें

سُقِطَ فِىْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह कहने लगे	तहक़ीक़ गुमराह हो गए	कि वह	और देखा उन्हों ने	गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए)

لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

149	ख़सारा पाने वाले	से	ज़रूर हो जाएंगे हम	और (न) बख़्श दिया	हमारा रब	रहम न किया हम पर

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैग़ामों और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (कुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। (144)

और हम ने उस के लिए लिख दी तख़्तियों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे कुव्वत से पकड़ ले और हुक्म दे अपनी क़ौम को कि वह उस के बेहतर मफ़हूम की पैरवी करें, अ़नक़रीब मैं तुझे नाफ़रमानों का घर (अन्जाम) दिखाऊंगा। (145)

मैं अ़नक़रीब फेर दूँगा उन लोगों को अपनी आयतों से जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख़्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख़्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से ग़ाफ़िल थे। (146)

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आख़िरत की मुलाक़ात को, उन के अ़मल ज़ाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। (147)

और मूसा (अ) की क़ौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्हों ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्हों ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। (148)

और जब वह नादिम हुए और उन्हों ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे ख़सारा पाने वालों में से। (149)

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी क़ौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस क़द्र बुरी मेरी जांनशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख़्तियाँ डाल दीं और सर (बालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को खुश न कर और मुझे ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अ़नक़रीब उन्हें उन के रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अ़मल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, बेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शने वाला, मेहरबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का गुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख़्तियों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवकूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आज़माइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज़ है, सो हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बहतरीन बख़्शने वाला है। (155)

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا

और जब	लौटा	मूसा (अ)	अपनी क़ौम की तरफ़	गुस्से में भरा हुआ	रंजीदा	उस ने कहा	क्या बुरी

خَلَفْتُمُوْنِىْ مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

तुम ने मेरी जांनशीनी की	मेरे बाद	क्या जल्दी की तुम ने	हुक्म	अपना परवरदिगार	डाल दें	तख़्तियाँ

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ

और पकड़ा	सर	अपना भाई	उसे खींचने लगा	अपनी तरफ़	वह बोला	ऐ मेरे माँ जाए	बेशक	क़ौम-लोग

اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِىْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَآءَ

कमज़ोर समझा मुझे	और क़रीब थे	मुझे क़त्ल कर डालें	पस खुश न कर	मुझ पर	दुश्मन (जमा)

وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ

और मुझे न बना (शामिल न कर)	साथ	क़ौम (लोग)	ज़ालिम (जमा)	150	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुझे बख़्श दे	और मेरा भाई

وَاَدْخِلْنَا فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا ع ١٨ ٨

और हमें दाख़िल कर	अपनी रहमत में	और तू	सब से ज़ियादा रहम करने वाला	151	बेशक	वह लोग जो	उन्हों ने बना लिया

الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ

बछड़ा	अ़नक़रीब उन्हें पहुँचेगा	ग़ज़ब	उन के रब का	और ज़िल्लत	में	ज़िन्दगी	दुनिया

وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا

और इसी तरह	हम सज़ा देते हैं	बुहतान बान्धने वाले	152	और जिन लोगों ने	अ़मल किए	बुरे	फिर	तौबा की

مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۫ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾

उस के बाद	और ईमान लाए	बेशक	तुम्हारा रब	उस के बाद	बख़्शने वाला	मेहरबान	153

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

और जब	ठहरा (फ़रू हुआ)	से-का	मूसा (अ)	गुस्सा	लिया-उठा लिया	तख़्तियाँ	और उन की तहरीर में

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ مُوْسٰى

हिदायत	और रहमत	उन लोगों के लिए जो	वह	अपने रब से	डरते हैं	154	और चुन लिए	मूसा

قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ

अपनी क़ौम	सत्तर (70)	मर्द	हमारे वादे के वक़्त के लिए	फिर जब	उन्हें पकड़ा (आ लिया)	ज़लज़ला	उस ने कहा	ऐ मेरे रब

لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ۗ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ

अगर तू चाहता	इन्हें हलाक कर देता	इस से पहले	और मुझे	क्या तू हमें हलाक करेगा	उस पर जो	किया	बेवकूफ़ (जमा)

مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۗ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِىْ مَنْ

हम में से	यह नहीं	मगर	तेरी आज़माइश	तू गुमराह करे	उस से	जिस	तू चाहे	और तू हिदायत दे	जो-जिस

تَشَآءُ ۗ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾

तू चाहे	तू	हमारा कारसाज़	सो हमें बख़्श दे	और हम पर रहम फ़रमा	और तू	बेहतरीन	बख़्शने वाला	155

وَاكْتُبْ لَنَا فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ اِنَّا

बेशक हम	और आख़िरत में	भलाई	दुनिया	इस	में	हमारे लिए	और लिख दे

هُدْنَآ اِلَیْكَ ؕ قَالَ عَذَابِیْۤ اُصِیْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِیْ

और मेरी रहमत	मैं चाहूँ	जिस	उस को	मैं पहुँचाता हूँ (दूँ)	अपना अ़ज़ाब	उस ने फ़रमाया	तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ़ किया

وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ

और देते हैं	डरते हैं	उन के लिए जो	सो मैं अ़नक़रीब वह लिख दूँगा	हर शै	वसीअ़ है

الزَّكٰوةَ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَ ۚ﴿۱۵۶﴾ اَلَّذِیْنَ

वह लोग जो	156	ईमान रखते हैं	हमारी आयात पर	वह	और वह जो	ज़कात

یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا

लिखा हुआ	उसे पाते हैं	वह जो-जिस	उम्मी	नबी	रसूल	पैरवी करते हैं

عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِیْلِ ؗ یَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ

भलाई	वह हुक्म देता है उन्हें	और इंजील	तौरेत	में	अपने पास

وَیَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَیُحِلُّ لَهُمُ الطَّیِّبٰتِ وَیُحَرِّمُ عَلَیْهِمُ

उन पर	और हराम करता है	पाकीज़ा चीज़ें	उन के लिए	और हलाल करता है	बुराई	से	और रोकता है उन्हें

الْخَبٰٓئِثَ وَیَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِیْ كَانَتْ

थे	जो	और तौक़	उन के बोझ	उन से	और उतारता है	नापाक चीज़ें

عَلَیْهِمْ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

और उस की मदद की	और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की	ईमान लाए उस पर	पस जो लोग	उन पर

١٩ ع ٦ ٩ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۠﴿۱۵۷﴾

157	फ़लाह पाने वाले	वह	वही लोग	उस के साथ	उतारा गया	जो	नूर	और पैरवी की

قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا

सब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	बेशक मैं	लोगो	ऐ	कह दें

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ

ज़िन्दा करता है	वह	मगर	माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस की	वह जो

وَیُمِیْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ

वह जो	उम्मी	नबी	और उस का रसूल	अल्लाह पर	सो तुम ईमान लाओ	और मारता है

یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

158	हिदायत पाओ	ताकि तुम	और उस की पैरवी करो	और उस के सब कलाम	अल्लाह पर	ईमान रखता है

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

159	इन्साफ़ करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ की	हिदायत देता है	एक गिरोह	क़ौमे मूसा	और से (में)

और हमारे लिए इस दुनिया में और आख़िरत में भलाई लिख दे, बेशक हम ने तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अ़ज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शै पर वसीअ़ है, सो मैं वह अ़नक़रीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरेत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है उन (के सरों) से बोझ और (उन की गर्दनों से) तौक़ जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्हों ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! बेशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की क़ौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं, (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़्सीम कर दिया) बारह क़बीले (गिरोह गिरोह की सूरत में) और जब उस की क़ौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख़्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक क़िस्म का गोन्द) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ें में से जो हम ने तुम्हें दीं और उन्हों ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। **(160)**

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और “हित्ततुन” (बख़्श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, हम अनक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। **(161)**

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह ज़ुल्म करते थे। **(162)**

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह “सब्त” (हफ़्ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सब्त (हफ़्ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजातीं और जिस दिन “सब्त” न होता न आतीं, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(163)**

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۭ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى

तरफ़	और वहि भेजी हम ने	गिरोह गिरोह	बाप दादा की औलाद (क़बीले)	बारह (12)	और हम ने जुदा कर दिया उन्हें

مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

पत्थर	अपनी लाठी	मारो	कि	उसकी क़ौम	उस ने पानी मांगा	जब	मूसा

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

शख़्स	हर	जान लिया (पहचान लिया)	चश्मे	बारह (12)	उस से	तो फूट निकले

مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

उन पर	और हम ने उतारा	अब्र	उन पर	और हम ने साया किया	अपना घाट

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ

जो हम ने तुम्हें दीं	पाकीज़ा	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न

وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قِيْلَ

कहा गया	और जब	160	ज़ुल्म करते	अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन	और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्हों ने

لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ

जैसे	इस से	और खाओ	शहर	इस	तुम रहो	उन से

شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

हम बख़्श देंगे तुम्हें	सिजदा करते हुए	दरवाज़ा	और दाख़िल हो	हित्ता (बख़्श दे)	और कहो	तुम चाहो

خَطِيْۗـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ

वह जिन्हों ने	पस बदल डाला	161	नेकी करने वाले	अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं

ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ

उन्हें	कहा गया	वह जो	सिवा	लफ़्ज़	उन से	ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۗءِ بِمَا

क्योंकि	आस्मान	से	अज़ाब	उन पर	सो हम ने भेजा

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسْـَٔـلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ ع ٢٠ ١٠

थी	वह जो कि	बस्ती	से (बारे में)	और पूछो उन से	162	वह ज़ुल्म करते थे

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ وقف لازم

उन के सामने आजातीं	जब	हफ़्ते में	हद से बढ़ने लगे	जब	दर्या	सामने (किनारे)

حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ

सब्त न होता	और जिस दिन	खुल्लम खुल्ला (सामने)	उन का सब्त	दिन	मछलियां उन की

لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾ النصف معانقة ٦ عند المتأخرين ١٢

163	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	हम उन्हें आज़माते थे	इसी तरह	वह न आती थीं

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ

या	उन्हें हलाक करने वाला	अल्लाह	ऐसी क़ौम	क्यों नसीहत करते हो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब

مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ

और शायद कि वह	तुम्हारा रब	तरफ़	माज़िरत	वह बोले	सख़्त	अ़ज़ाब	उन्हें अ़ज़ाब देने वाला

يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ

मना करते थे	वह जो कि	हम ने बचा लिया	उन्हें समझाई गई थी	जो	वह भूल गए	फिर जब	164	डरें

عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَىِٕيْسٍۭ بِمَا

क्योंकि	बुरा	अ़ज़ाब में	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और हम ने पकड़ लिया	बुराई से

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

उन को हो जाओ	हम ने हुक्म दिया	उस से	जिस से मना किए गए थे	से	सरकशी करने लगे	फिर जब	165	नाफ़रमानी करते थे

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى

तक	उन पर	अलबत्ता ज़रूर भेजता रहेगा	तुम्हारा रब	ख़बर दी	और जब	166	ज़लील ओ ख़ार	बन्दर

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	बुरा अ़ज़ाब	तक्लीफ़ दे उन्हें	जो	रोज़े क़ियामत

لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ

गिरोह दर गिरोह	ज़मीन में	और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें	167	मेह्रबान	बख़्शने वाला	और बेशक वह	जल्द अ़ज़ाब देने वाला

مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ

अच्छाइयों में	और आज़माया हम ने उन्हें	उस	सिवा	और उन से	नेकोकार	उन से

وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا

वह वारिस हुए	नाख़लफ़	उन के बाद	पीछे आए	168	रुजूअ़ करें	ताकि वह	और बुराइयों में

الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ

अब हमें बख़्श दिया जाएगा	और कहते हैं	इस अदना ज़िन्दगी	मताअ़ (असबाब)	वह लेते हैं	किताब

وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ

अ़हद	उन पर (उन से)	क्या नहीं लिया गया	उस को ले लें	उस जैसा	माल ओ असबाब	आए उन के पास	और अगर

الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ

और घर	जो उस में	और उन्हों ने पढ़ा	सच	मगर	अल्लाह पर (के बारे में)	वह न कहें	कि	किताब

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ

मज़बूत पकड़े हुए हैं	और जो लोग	169	क्या तुम समझते नहीं	परहेज़गार	उन के लिए जो	बेहतर	आख़िरत

بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

170	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करते	बेशक हम	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	किताब को

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अ़ज़ाब देने वाला है सख़्त अ़ज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। **(164)**

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। **(165)**

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुक्म दिया उन को ज़लील ओ ख़ार बन्दर हो जाओ। **(166)**

और जब तुम्हारे रब ने ख़बर दी कि अलबत्ता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े क़ियामत तक (ऐसे अफ़्राद) जो उन्हें बुरे अ़ज़ाब से तक्लीफ़ दें, बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और बेशक वह बख़्शने वाला मेह्रबान है। **(167)**

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आज़माया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ़ करें। **(168)**

पीछे आए उन के बाद नाख़लफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़्श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अ़हद (जो) किताब (तौरेत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहें मगर सच और उन्हों ने पढ़ा है जो उस (तौरेत) में है, और आख़िरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? **(169)**

और जो लोग मज़बूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ क़ाइम करते हैं, बेशक हम नेकोकारों का अजर ज़ाया नहीं करते। **(170)**

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ

उन पर	गिरने वाला	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	साइबान	गोया कि वह	उन के ऊपर	पहाड़	उठाया हम ने	और जब

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ ع

ع ۲۱ ۹ ۱۱

171	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	जो उस में	और याद करो	मज़बूती से	दिया हम ने तुम्हें	जो	तुम पकड़ो

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ

उन की औलाद	उन की पुश्त	से	बनी आदम	से (की)	तुम्हारा रब	लिया (निकाली)	और जब

وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰي ۚۛ شَهِدْنَا ۚۛ اَنْ

معانقة ٧ عند المتأخرين ١٢

कि (कभी)	हम गवाह हैं	हां, क्यों नहीं	वह बोले	तुम्हारा रब	क्या नहीं हूँ मैं	उन की जानें	पर	और गवाह बनाया उन को

تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾ ۙ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ

इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	तुम कहो	या	172	ग़ाफ़िल (जमा)	उस	से	थे	बेशक हम	क़ियामत के दिन	तुम कहो

اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا

सो क्या तू हमें हलाक करता है	उन के बाद	औलाद	और थे हम	उस से क़ब्ल	हमारे बाप दादा	शिर्क किया

بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

और ताकि वह	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	और इसी तरह	173	अहले बातिल (ग़लत कार)	किया	उस पर जो

يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

तो साफ़ निकल गया	हमारी आयतें	हम ने उस को दी	वह जो कि	ख़बर	उन पर (उन्हें)	और पढ़ (सुनाओ)	174	रुजूअ करें

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا

हम चाहते	और अगर	175	गुमराह (जमा)	से	सो हो गया	शैतान	तो उस के पीछे लगा	उस से

لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ

तो उस का हाल	अपनी ख़ाहिशात	और उस ने पैरवी की	ज़मीन की तरफ़	गिर पड़ा (माइल होगया)	और लेकिन वह	उन के ज़रीए	उसे बुलन्द करते

كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ

हांपे	या उसे छोड़ दे	वह हांपे	उस पर	तू हमला करे	अगर	कुत्ता	मानिंद-जैसा

ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

पस बयान कर दो	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया	वह जो कि	लोग	मिसाल	यह

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَاۗءَ مَثَلَا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ

वह जो	लोग	मिसाल	बुरी	176	ग़ौर करें	ताकि वह	अहवाल (क़िस्से)

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ

अल्लाह हिदायत दे	जो - जिस	177	ज़ुल्म करते	वह थे	और अपनी जानें	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया

فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

178	घाटा पाने वाले	वह	सो वही लोग	गुमराह कर दे	और जिस	हिदायत याफ़्ता	तो वही

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइबान है और उन्हों ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। **(171)**

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुश्त से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम क़ियामत के दिन कहो बेशक हम इस से ग़ाफ़िल (बेख़बर) थे। **(172)**

या तुम कहो शिर्क तो इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। **(173)**

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुजूअ करें (लौट आएं)। **(174)**

और उन्हें उस शख़्स की ख़बर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। **(175)**

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी ख़ाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। **(176)**

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। **(177)**

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़्ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। **(178)**

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ

दिल	उन के	और इन्सान	जिन	से	बहुत से	जहन्नम के लिए	और हम ने पैदा किए

لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ

नहीं सुनते	कान	और उन के लिए	उन से	नहीं देखते	आँखें	और उन के लिए	उन से	समझते नहीं

بِهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	यही लोग	बदतरीन गुमराह	वह	बल्कि	चौपायों के मानिंद	यही लोग	उन से

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ

कज रवी करते हैं	वह लोग जो	और छोड़ दो	उन से	पस उस को पुकारो	अच्छे	और अल्लाह के लिए नाम (जमा)

فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ

एक उम्मत (गिरोह)	हम ने पैदा किया	और से- जो	180	वह करते थे	जो	अनक़रीब वह बदला पाएंगे	उस के नाम	में

٢٢ ع ١٠ ١٢

يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो	181	फ़ैसला करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ के साथ (ठीक)	वह बतलाते हैं

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ

मेरी खुफ़िया तदबीर	बेशक	उन के लिए	और मैं ढील दूँगा	182	वह न जानेंगे (ख़बर न होगी)	इस तरह	आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे

مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ

डराने वाले	मगर	वह	नहीं	जुनून	से	नहीं उन के साहिब को	क्या वह ग़ौर नहीं करते	183	पुख़्ता

مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ

पैदा किया	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	में	क्या वह नहीं देखते	184	साफ़

اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

तो किस	उनकी अजल (मौत)	क़रीब आगई हो	हो	कि	शायद	और यह कि	कोई चीज़	अल्लाह

حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ

उस को	हिदायत देने वाला	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिस	185	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात

وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ

उस का क़ाइम होना	कब है	घड़ी (क़ियामत)	से (बारे में)	वह आप (स) से पूछते हैं	186	बहकते हैं	उन की सरकशी	में	वह छोड़ देता है उन्हें

وقف لازم
وقف منزل

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ڤ ثَقُلَتْ

भारी है	वह (अल्लाह)	सिवा	उस के वक़्त पर	उस को ज़ाहिर न करेगा	मेरा रब	पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

मुतलाशी	गोया कि आप	आप (स) से पूछते हैं	अचानक	मगर	आएगी तुम पर	न	और ज़मीन	आस्मानों	में

عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

187	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अल्लाह के पास	उस का इल्म	सिर्फ़	कह दें	उस के

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरीन गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (179)

और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रवी करते हैं, जो वह करते थे अनक़रीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)

और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी। (182)

और मैं उन के लिए ढील दूँगा, बेशक मेरी खुफ़िया तदबीर पुख़्ता है। (183)

क्या वह ग़ौर नहीं करते? कि उन के साहिब (मुहम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)

क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद क़रीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)

जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)

वह आप (स) से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के क़ाइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के मुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

ع ٢٣ / ١٣ معانقة ٨ عند المتأخرين ١٢

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़्सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। **(188)**

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। **(189)**

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्हों ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं। **(190)**

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक़ नहीं, मख़्लूक़ हैं)। **(191)**

और वह उन की मदद की कुदरत नहीं रखते और न ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं। **(192)**

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। **(193)**

बेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। **(194)**

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। **(195)**

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ

और अगर	अल्लाह चाहे	जो	मगर	नुक़्सान	और न	नफ़ा	अपनी ज़ात के लिए	मैं मालिक नहीं	कह दें

كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ

पहुँचती मुझे	और न	बहुत भलाई	से	मैं अलबत्ता जमा कर लेता	ग़ैब	जानता	मैं होता

السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ع ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ

जो-जिस	वह	188	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला	डराने वाला	मगर (सिर्फ़)	मैं	बस (फ़क़त)	कोई बुराई

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ

उस की तरफ़ (पास)	ताकि वह सुकून हासिल करे	उस का जोड़ा	उस से	और बनाया	एक	जान	से	पैदा किया तुम्हें

فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ

बोझल हो गई	फिर जब	उस के साथ (उसको)	फिर वह लिए फिरी	हलका सा	हमल	उसे हमल रहा	मर्द ने उस को ढांप लिया	फिर जब

دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

189	शुक्र करने वाले	से	हम ज़रूर होंगे	सालेह	तू ने हमें दिया	अगर	दोनों का (अपना) रब	दोनों ने पुकारा अल्लाह को

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ

सो अल्लाह बरतर	उन्हें दिया	उस में जो	शरीक	उस के	उन दोनों ने ठहराए	सालेह बच्चा	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۚ ﴿١٩١﴾

191	पैदा किए जाते हैं	और वह	कुछ भी	नहीं पैदा करते	जो	क्या वह शरीक ठहराते हैं	190	वह शरीक करते हैं	उस से जो

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ

और अगर	192	मदद करते हैं	ख़ुद अपनी	और न	मदद	उन की	वह कुदरत नहीं रखते

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

ख़्वाह तुम उन्हें बुलाओ	तुम पर (तुम्हारे लिए)	बराबर	न पैरवी करें तुम्हारी	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	बेशक	193	ख़ामोश रहो	या तुम

عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	तुम्हें	फिर चाहिए कि वह जवाब दें	पस पुकारो उन्हें	तुम्हारे जैसे	बन्दे

صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ

वह पकड़ते हैं	उन के हाथ	या	उन से	वह चलते हैं	क्या उन के पाऊँ	194	सच्चे

بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۫ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	कान	या उन के	उन से	देखते हैं	आँखें	उन की	या	उन से

بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

195	पस न दो मुझे मोहलत	मुझ पर दाओ चलो	फिर	अपने शरीक	पुकारो	कह दें	उन से

إِنَّ وَلِـيِّـۦَ اللّٰهُ الَّـذِىْ نَـزَّلَ الْـكِـتٰـبَ ۖ وَهُـوَ يَـتَوَلَّـى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾

196	नेक बन्दे	हिमायत करता है	और वह	किताब	नाज़िल कि	वह जिस	अल्लाह	मेरा कारसाज़	बेशक

وَالَّـذِيْـنَ تَـدْعُـوْنَ مِـنْ دُوْنِـهٖ لَا يَـسْـتَـطِـيْـعُـوْنَ نَـصْـرَكُـمْ وَلَاۤ

और न	तुम्हारी मदद	कुदरत रखते वह	नहीं	उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग

اَنْفُسَهُمْ يَـنْـصُـرُوْنَ ﴿١٩٧﴾ وَاِنْ تَـدْعُـوْهُـمْ اِلَـى الْـهُـدٰى لَا يَـسْمَعُوْا ؕ

न सुनें वह	हिदायत	तरफ़	तुम पुकारो उन्हें	और अगर	197	वह मदद करें	खुद अपनी

وَتَـرٰىـهُـمْ يَـنْـظُـرُوْنَ اِلَـيْـكَ وَهُـمْ لَا يُـبْـصِـرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُـذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ

और हुक्म दें	दरगुज़र	पकड़ें (करें)	198	नहीं देखते हैं	हालांकि	तेरी तरफ़	वह तकते हैं	और तू उन्हें देखता है

بِـالْـعُـرْفِ وَاَعْـرِضْ عَـنِ الْـجٰـهِـلِـيْـنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّـا يَـنْـزَغَـنَّـكَ مِـنَ

से	तुझे उभारे	और अगर	199	जाहिल (जमा)	से	और मुँह फेर लें	भलाई का

الشَّيْطٰنِ نَـزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِـاللّٰهِ ؕ اِنَّـهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ

जो लोग	बेशक	200	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह में आजा	कोई छेड़	शैतान

اتَّـقَـوْا اِذَا مَـسَّـهُـمْ طٰٓـىِٕـفٌ مِّـنَ الشَّـيْـطٰنِ تَـذَكَّـرُوْا فَـاِذَا هُـمْ

वह	तो फ़ौरन	वह याद करते हैं	शैतान	से	कोई गुज़रने वाला (वस्वसा)	उन्हें छूता है (पहुँचता है)	जब	डरते हैं

مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

202	वह कमी नहीं करते	फिर	गुमराही	में	वह उन्हें खींचते हैं	और उन के भाई	201	देख लेते हैं

وَاِذَا لَـمْ تَـاْتِـهِـمْ بِـاٰيَـةٍ قَـالُـوْا لَـوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُـلْ اِنَّـمَـاۤ اَتَّـبِـعُ

मैं पैरवी करता हूँ	सिर्फ़	कह दें	उसे घड़ लिया	क्यों नहीं	कहते हैं	कोई आयत	तुम न लाओ उन के पास	और जब

مَـا يُـوْحٰـۤى اِلَـىَّ مِـنْ رَّبِّـىْ ؕ هٰـذَا بَـصَـآئِـرُ مِـنْ رَّبِّـكُـمْ وَهُـدًى

और हिदायत	तुम्हारा रब	से	सूझ की बातें	यह	मेरा रब	से	मेरी तरफ़	जो वहि की जाती है

وَّرَحْـمَـةٌ لِّـقَـوْمٍ يُّـؤْمِـنُـوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُـرِئَ الْـقُـرْاٰنُ فَـاسْـتَـمِـعُـوْا

तो सुनो	कुरआन	पढ़ा जाए	और जब	203	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और रहमत

لَـهٗ وَاَنْـصِـتُـوْا لَـعَـلَّـكُـمْ تُـرْحَـمُـوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُـرْ رَّبَّـكَ فِـىْ نَفْسِكَ

अपना दिल	में	अपना रब	और याद करो	204	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और चुप रहो	उस को

تَـضَـرُّعًـا وَّخِـيْـفَـةً وَّدُوْنَ الْـجَـهْـرِ مِـنَ الْـقَـوْلِ بِـالْـغُـدُوِّ

सुबह	आवाज़	से	बुलन्द	और बग़ैर	और डरते हुए	आजिज़ी से

وَالْاٰصَـالِ وَلَا تَـكُـنْ مِّـنَ الْـغٰـفِـلِـيْـنَ ﴿٢٠٥﴾ اِنَّ الَّـذِيْـنَ عِـنْـدَ رَبِّـكَ

तेरा रब	नज़दीक	जो लोग	बेशक	205	बेख़बर (जमा)	से	और न हो	और शाम

لَا يَـسْـتَـكْـبِـرُوْنَ عَـنْ عِـبَـادَتِـهٖ وَيُـسَـبِّـحُـوْنَـهٗ وَلَـهٗ يَـسْـجُـدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

ع ٢٤ ٨ ١٤ السجدة الثلثة

206	सिजदा करते हैं	और उसी को	और उस की तस्बीह करते हैं	उस की इबादत	से	तकब्बुर नहीं करते

बेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाज़िल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फ़ौरन (राहे सवाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं: तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज्जुह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुबह ओ शाम, और बेख़बरों से न हो। (205)

बेशक जो लोग तेरे रब के नज़दीक हैं, वह उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सिजदा करते हैं। (206)

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ (٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआ़त 10 | (8) सूरतुल अंफ़ाल (ग़नाइम) | आयात 75

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا

पस डरो	और रसूल	अल्लाह के लिए	ग़नीमत	कह दें	ग़नीमत	से (बारे में)	आप (स) से पूछते हैं

اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	और उस का रसूल	और अल्लाह की इताअ़त करो	आपस में	अपने तईं	और दुरुस्त करो	अल्लाह

مُّؤْمِنِيْنَ ① اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ

डर जाएं	ज़िक्र किया जाए अल्लाह का	जब	वह लोग	मोमिन (जमा)	दरहक़ीक़त	1	मोमिन (जमा)

قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا

ईमान	वह ज़ियादा करें	उस की आयात	उन पर	पढ़ी जाएं	और जब	उन के दिल

وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ② الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

और उस से जो	नमाज़	क़ाइम करते हैं	वह लोग जो	2	भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ③ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

उन के लिए	सच्चे	मोमिन (जमा)	वह	यही लोग	3	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ كَمَاۤ

जैसा कि	4	इ़ज़्ज़त वाला	और रिज़्क़	और बख़्शिश	उन का रब	पास	दरजे

اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

अहले ईमान	से (का)	एक जमाअ़त	और बेशक	हक़ के साथ	आप का घर	से	आप का रब	आप (स) को निकाला

لَكٰرِهُوْنَ ⑤ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ

हांके जा रहे हैं	गोया कि वह	वह ज़ाहिर हो चुका	जबकि	बाद	हक़	में	वह आप (स) से झगड़ते थे	5	नाख़ुश

اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ⑥ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

एक का	अल्लाह	तुम्हें वादा देता था	और जब	6	देख रहे हैं	और वह	मौत	तरफ़

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

बग़ैर कांटे वाला	कि	और चाहते थे	तुम्हारे लिए	कि वह	दो गिरोह

تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ

जड़	और काट दे	अपने कलिमात से	हक़	साबित कर दे	कि	और चाहता था अल्लाह	तुम्हारे लिए	हो

الْكٰفِرِيْنَ ⑦ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ⑧

8	मुज्रिम (जमा)	नापसन्द करें	ख़्वाह	बातिल	और बातिल साबित करदे	हक़	ताकि हक़ साबित करदे	7	काफ़िर (जमा)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

आप (स) से ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें ग़नीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअ़ल्लुक़ात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहक़ीक़त मोमिन वह लोग हैं जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से ख़र्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख़्शिश और रिज़्क़ इ़ज़्ज़त वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ निकाला, और बेशक अहले ईमान की एक जमाअ़त नाख़ुश थी। (5)

वह आप (स) से हक़ के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हांके जा रहे हैं मौत की तरफ़, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जह्ल और अबू सुफ़ियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक़ अपने कलिमात से, और काफ़िरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक़ को हक़ साबित कर दे और बातिल को बातिल, ख़्वाह मुज्रिम नापसन्द करें। (8)

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ

एक हज़ार	मदद करूँगा तुम्हारी	कि मैं	तुम्हारी	तो उस ने क़बूल करली	अपना रब	तुम फ़र्याद करते थे	जब

مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ

और ताकि मुत्मइन हों	ख़ुशख़बरी	मगर	अल्लाह ने बनाया उसे	और नहीं	9	एक दूसरे के पीछे (लगातार)	फ़रिश्ते	से

بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ

ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	से	मगर	मदद	और नहीं	तुम्हारे दिल	उस से

ع ١٠ ١٥ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ

तुम पर	और उतारा उस ने	उस से	तस्कीन	ऊँघ	तुम्हें ढांप लिया (तारी कर दी)	जब	10	हिक्मत वाला

مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ

पलीदी (नापाकी)	तुम से	और दूर कर दे	उस से	ताकि पाक कर दे तुम्हें	पानी	आस्मान	से

الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

11	क़दम	उस से	और जमा दे	तुम्हारे दिल	पर	और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे)	शैतान

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ

ईमान लाए (मोमिन)	जो लोग	तुम साबित रखो	तुम्हारे साथ	कि मैं	फ़रिश्ते	तरफ़ (को)	तेरा रब	जब वहि भेजी

سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ

ऊपर	सो तुम ज़र्ब लगाओ	रुअ़ब	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	दिल (जमा)	में	अनक़रीब डाल दूँगा

الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ

कि वह	यह इस लिए	12	पूर	हर	उन से (उन की)	और ज़र्ब लगाओ	गर्दनें

شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ

तो बेशक	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ होगा	और जो	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ हुए

اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ

काफ़िरों के लिए	और यक़ीनन	पस चखो	तो तुम	13	अ़ज़ाब (मार)	सख़्त	अल्लाह

عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ

उन लोगों से	तुम्हारी मुडभेड़ हो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	14	दोज़ख़	अ़ज़ाब

كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	उन से फेरे	और जो कोई	15	पीठ (जमा)	तो उन से न फेरो	(मैदाने जंग में) लड़ने को	कुफ़्र किया

دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ

पस वह लौटा	अपनी जमाअ़त	तरफ़	या जा मिलने को	जंग के लिए	घात लगाता हुआ	सिवाए	अपनी पीठ

بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

16	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी	जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ

(याद करो) जब तुम अपने रब से फ़र्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ) क़बूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार लगातार आने वाले फ़रिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर ख़ुशख़बरी, और ताकि उस से मुत्मइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ़ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम साबित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अनक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्ब लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्ब लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) बेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यक़ीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्हों ने कुफ़्र किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअ़त की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहन्नम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ

आप ने फेंकी	जब	और आप (स) ने न फेंकी थी	उन्हें क़त्ल किया	अल्लाह	बल्कि	सो तुम ने नहीं क़त्ल किया उन्हें

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	अच्छा	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिन (जमा)	और ताकि आज़माए	फेंकी	अल्लाह	बल्कि

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ

अगर	18	काफ़िर (जमा)	मक्र-दाओ	सुस्त करने वाला	और यह कि अल्लाह	यह तो हुआ	17	जानने वाला	सुनने वाला

تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ

तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तुम बाज़ आजाओ	और अगर	फ़ैसला	आगया तुम्हारे पास	तो अलबत्ता	तुम फ़ैसला चाहते हो

وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ

और ख़्वाह कस्रत हो	कुछ	तुम्हारा जत्था	तुम्हारे	काम आएगा	और हरगिज़ न	हम फिर करेंगे	फिर करोगे	और अगर

وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا ع ٢ ٩ ١٦

हुक्म मानो	ईमान लाए	वह लाग जो	ऐ	19	मोमिन (जमा)	साथ	और बेशक अल्लाह

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाओ	20	सुनते हो	जबकि तुम	उस से	और मत फिरो	अल्लाह और उस का रसूल

كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ

बेशक	21	वह नहीं सुनते	हालांकि	हम ने सुना	उन्हों ने कहा	उन लोगों की तरह जो

شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ

जो कि	गूंगे	बहरे	अल्लाह के नज़्दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ

और अगर	तो ज़रूर सुना देता उन को	कोई भलाई	उन में	जानता अल्लाह	और अगर	22	समझते नहीं

اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	23	मुंह फेरने वाले	और वह	वह ज़रूर फिर जाएं	उन्हें सुना दे

اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें	वह बुलाएं तुम्हें	जब	और उसके रसूल का	अल्लाह का	क़ुबूल कर लो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	और यह कि	और उस का दिल	आदमी	दरमियान	हाइल हो जाता है	कि अल्लाह	और जान लो

تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	न पहुँचेगा	वह फ़ित्ना	और डरो	24	तुम उठाए जाओगे

مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

25	अज़ाब	शदीद	कि अल्लाह	और जान लो	ख़ास तौर पर	तुम में से

सो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया, और आप (स) ने (मुटठी भर ख़ाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (17)

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। (18)

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़त्ह की सूरत में) आगया है, और अगर तुम बाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा जत्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा ख़्वाह उस की कस्रत हो और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। (19)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। (20)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। (21)

बेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़्दीक (वह हैं जो) बहरे गूंगे हैं, जो समझते नहीं। (22)

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) क़ुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हश्र) उठाए जाओगे। (24)

और उस फ़ित्ने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से ख़ास तौर पर उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। (25)

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

तुम डरते थे	ज़मीन	में	ज़ईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे	थोड़े	तुम	जब	और याद करो

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ

और तुम्हें रिज़्क़ दिया	अपनी मदद से	और तुम्हें कुव्वत दी	पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें	लोग	उचक ले जाएं तुम्हें	कि

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	26	शुक्र गुज़ार हो जाओ	ताकि तुम	पाकीज़ा चीज़ें	से

لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	जानते हो	जब कि तुम	अपनी अमानतें	और न ख़ियानत करो	और रसूल	अल्लाह	ख़ियानत न करो

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	बड़ी आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	दरहक़ीक़त	और जान लो

ع ٩ ١٧ ٣
عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ

तुम अल्लाह से डरोगे	अगर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	28	बड़ा	अजर	पास

يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

और बख़्श देगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां	तुम से	और दूर कर देगा	फ़ुरक़ान	तुम्हारे लिए	वह बना देगा

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह लोग जिन्हों ने	ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	और जब	29	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह

لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ

और ख़ुफ़िया तदबीर करता है अल्लाह	और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे	या निकाल दें तुम्हें	या क़त्ल कर दें तुम्हें	तुम्हें क़ैद कर लें

وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

वह कहते हैं	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	30	तदबीर करने वाला	बेहतरीन	और अल्लाह

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उस	मिस्ल	कि हम कह लें	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम ने सुन लिया

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا

यह	है	अगर	ऐ अल्लाह	वह कहने लगे	और जब	31	पहले (अगले)	क़िस्से कहानियां

هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	पत्थर	हम पर	तो बरसा	तेरी तरफ़	से	हक़	वह

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ

जबकि आप (स)	कि उन्हें अज़ाब दे	अल्लाह	और नहीं है	32	दर्दनाक	अज़ाब	या ले आ हम पर

فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	बख़्शिश मांगते हों	जबकि वह	उन्हें अज़ाब देने वाला	अल्लाह	है	और नहीं	उन में

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़्क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहक़ीक़त तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फ़ुरक़ान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे कि आप (स) को क़ैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह ख़ुफ़िया तदबीरें करते थे और अल्लाह (भी) ख़ुफ़िया तदबीर करता है, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ क़िस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांग रहे हों। (33)

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं हैं उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तक़ी हैं, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। **(34)**

और ख़ाने कअ्बा के नज़्दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियां और तालियां, पस अ़ज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़्र करते थे। **(35)**

बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं ताकि रोकें अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह ख़र्च करेंगे, फिर उन पर हस्रत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकटठे किए जाएंगे। **(36)**

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। **(37)**

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएं तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहक़ीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। **(38)**

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएं तो बेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। **(39)**

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या ख़ूब साथी और क्या ख़ूब मददगार है! **(40)**

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

मस्जिदे हराम	से	रोकते हैं	जबकि वह	अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे	कि न	उन के लिए (उन में)	और क्या

وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

मुत्तक़ी (जमा)	मगर (सिर्फ़)	उस के मुतवल्ली	नहीं	उस के मुतवल्ली	वह हैं	और नहीं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ

उन की नमाज़	थी	और नहीं	34	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन

عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ

अ़ज़ाब	पस चखो	और तालियां	सीटियां	मगर	ख़ाने कअ्बा	नज़्दीक

بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ

ख़र्च करते हैं	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	बेशक	35	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो

اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ

फिर	सो अब ख़र्च करेंगे	रास्ता अल्लाह का	से	ताकि रोकें	अपने माल

تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

कुफ़्र किया (काफ़िर)	और जिन लोगों ने	वह मग़लूब होंगे	फिर	हस्रत	उन पर	होगा

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ

पाक	से	गन्दा	ताकि अल्लाह जुदा करदे	36	इकटठे किए जाएंगे	जहन्नम	तरफ़

وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا

सब	फिर ढेर कर दे	दूसरे	पर	उस के एक	गन्दा	और रखे

فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ ع ٩ ١٨

उन से जो	कहदें	37	ख़सारा पाने वाले	वह	यही लोग	जहन्नम	में	फिर डाल दे उस को

كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

फिर वही करें	और अगर	गुज़र चुका	जो	उन्हें	माफ़ कर दिया जाए	वह बाज़ आजाएं	अगर	उन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	और उन से जंग करो	38	पहले लोग	सुन्नत (रविश)	गुज़र चुकी है	तो तहक़ीक़

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا

वह बाज़ आजाएं	फिर अगर	अल्लाह का	सब	दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे

فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا

तो जान लो	वह मुँह मोड़ लें	और अगर	39	देखने वाला	वह करते हैं	जो वह	तो बेशक अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

40	मददगार	और ख़ूब	साथी	ख़ूब	तुम्हारा साथी	कि अल्लाह

الجزء ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

उस का पांचवा हिस्सा	अल्लाह के वास्ते	सो	किसी चीज़	से	तुम ग़नीमत लो	जो कुछ	और तुम जान लो

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ

और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए	और रसूल के लिए

اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ

फ़ैसले के दिन	अपना बन्दा	पर	हम ने नाज़िल किया	और जो	अल्लाह पर	ईमान रखते	तुम हो	अगर

يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

41	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	और अल्लाह	दोनों फ़ौजें भिड़ गईं	जिस दिन

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى

परला	किनारे पर	और वह	इधर वाला	किनारे पर	तुम	जब

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ

वादे में	अलबत्ता तुम इख़्तिलाफ़ करते	तुम बाहम वादा करते	और अगर	तुम से	नीचे	और क़ाफ़िला

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّيَهْلِكَ

ताकि हलाक हो	हो कर रहने वाला	था	जो काम	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे	और लेकिन

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ

और बेशक	दलील	से	ज़िन्दा रहना है	जिस	और ज़िन्दा रहे	दलील	से	हलाक हो	जो

اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ۙ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ

थोड़ा	तुम्हारी ख़ाब	में	अल्लाह	तुम्हें दिखाया उन्हें	जब	42	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह

وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

मामले में	और तुम झगड़ते	तो तुम बुज़दिली करते	बहुत ज़ियादा	तुम्हें दिखाता उन्हें	और अगर

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

43	दिलों की बात	जानने वाला	बेशक वह	बचा लिया	अल्लाह	और लेकिन

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ

और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए	थोड़ा	तुम्हारी आँखें	में	तुम आमने सामने हुए	जब-तो	वह तुम्हें दिखलाए	और जब

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

और अल्लाह की तरफ़	हो कर रहने वाला	था	काम	ताकि पूरा कर दे अल्लाह	उन की आँखें	में

ع ٥ ١ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

कोई जमाअत	तुम्हारा आमना सामना हो	जब	ईमान वाले	ऐ	44	काम (जमा)	लौटना (बाज़गश्त)

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾ۚ

45	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकस्रत	और अल्लाह को याद करो	तो साबित क़दम रहो

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से ग़नीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसला (बद्र) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़्र ओ इस्लाम की) दोनों फ़ौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) बाहम ते करलेते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़्तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी ख़ाब में उन (काफ़िरों) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम बुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालों! जब किसी जमाअते (कुफ़्फ़ार) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ। (45)

और इताअ़त करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सब्र करो, बेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। (46)

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखावे को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। (47)

और जब शैतान ने उन के काम ख़ुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअ़ल्लुक़ हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (48)

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़ब्त में मुब्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (49)

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो। (50)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (51)

जैसा कि फ़िरऔ़न वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (52)

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

और जाती रहेगी	पस बुज़दिल हो जाओगे	और आपस में झगड़ा न करो	और उस का रसूल	अल्लाह	और इताअ़त करो

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाना	46	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और सब्र करो	तुम्हारी हवा

كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ

लोग	और दिखावा	इतराते	अपने घर	से	निकले	उन की तरह जो

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

47	अहाता किए हुए	वह करते हैं	से-जो	और अल्लाह	अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

तुम्हारे लिए (तुम पर)	कोई ग़ालिब नहीं	और कहा	उन के काम	शैतान	उन के लिए	ख़ुशनुमा कर दिया	और जब

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

दोनों लशकर	आमने सामने हुए	फिर जब	तुम्हारा	रफ़ीक़	और बेशक मैं	लोग	से	आज

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا

नहीं	जो	देखता हूँ	मैं बेशक	तुम से	जुदा, ला तअ़ल्लुक़	बेशक मैं	और बोला	अपनी एड़ियां	पर	उलटा फिर गया

تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ ع ٦ ٢

कहने लगे	जब	48	अ़ज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	अल्लाह से डरता हूँ	मैं बेशक	तुम देखते

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

उन का दीन	उन्हें	धोका दे दिया	मरज़	उन के दिलों में	और वह जो कि	मुनाफ़िक़ (जमा)

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

49	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	भरोसा करे	और जो

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ

मारते हैं	फ़रिश्ते	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	जान निकालते हैं	जब	तू देखे	और अगर

وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ

यह	50	भड़कता हुआ (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और चखो	और उन की पीठ (जमा)	उन के चहरे

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ ۙ

51	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ	आगे भेजे	बदला जो

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	उन से पहले	और जो लोग	फ़िरऔ़न वाले	जैसा कि दस्तूर

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

52	अ़ज़ाब	सख़्त	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उनके गुनाहों पर	तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى

जब तक	किसी क़ौम को	उसे दी	कोई नेमत	बदलने वाला	नहीं है	इस लिए कि अल्लाह	यह

يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ

जैसा कि दस्तूर	53	जानने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	उन के दिलों में	जो	वह बदलें

اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया	अपना रब	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	उन से पहले	और वह लोग जो	फ़िरऔन वाले

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

54	ज़ालिम	थे	और सब	फ़िरऔन वाले	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	उन के गुनाहों के सबब

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ ۖۚ

55	ईमान नहीं लाते	सो वह	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन	बेशक

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ

हर बार	में	अपना मुआहदा	तोड़ देते हैं	फिर	उन से	तुम ने मुआहदा किया	वह लोग जो

وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ

उन के ज़रीए	तो भगा दो	जंग में	तुम उन्हें पाओ	पस अगर	56	डरते नहीं	और वह

مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ

किसी क़ौम	से	तुम्हें ख़ौफ़ हो	और अगर	57	इब्रत पकड़ें	अ़जब नहीं कि वह	उन के पीछे	जो

ع ١٠ ٣ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآىِٕنِيْنَ ﴿٥٨﴾ ع

58	दग़ाबाज़ (जमा)	पसन्द नहीं करता	बेशक अल्लाह	बराबरी	पर	उन की तरफ़	तो फेंक दो	ख़ियानत (दग़ाबाज़ी)

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	वह आजिज़ न कर सकेंगे	बेशक वह	बाज़ी ले गए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और हरगिज़ ख़याल न करें

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ

पले हुए घोड़े	और से	कुव्वत	से	तुम से हो सके	जो	उन के लिए	और तैयार रखो

تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ

उन के सिवा	से	और दूसरे	और तुम्हारे (अपने) दुश्मन	अल्लाह के दुश्मन	उस से	धाक बिठाओ

لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	कुछ	तुम ख़र्च करोगे	और जो	अल्लाह जानता है उन्हें	तुम उन्हें नहीं जानते

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ

सुलह की तरफ़	वह झुकें	और अगर	60	तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा	और तुम	तुम्हें	पूरा पूरा दिया जाएगा

فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

61	जानने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक	अल्लाह पर	और भरोसा रखो	उस की तरफ़	तो सुलह कर लो

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी क़ौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अक़ीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फ़िरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्हों ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

बेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के ज़रीए भगा दो उन को जो उन के पीछे हैं, अ़जब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी क़ौम से दग़ा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), बेशक अल्लाह दग़ाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाज़ी ले गए, बेशक वह आजिज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ

जिस ने	वह	तुम्हारे लिए काफ़ी है अल्लाह	तो बेशक	तुम्हें धोका दें	कि	वह चाहें	और अगर

اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ

तुम ख़र्च करते	अगर	उन के दिल	दरमियान (में)	और उल्फ़त डाल दी	62	और मुसलमानों से	अपनी मदद से	तुम्हें ज़ोर दिया

مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۙ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	और लेकिन	उन के दिल	में	उल्फ़त डाल सकते	न	सब कुछ	ज़मीन	में	जो

اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ

अल्लाह	काफ़ी है तुम्हें	नबी (स)	ऐ	63	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक वह	उन के दरमियान	उल्फ़त डाल दी

وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ع يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع ٨/٦

मोमिन (जमा)	तरग़ीब दो	नबी (स)	ऐ	64	मोमिन (जमा)	से	तुम्हारे पैरू हैं	और जो

عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا

ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	बीस (20)	तुम में से	हों	अगर	क़िताल (जिहाद)	पर

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ

से	एक हज़ार (1000)	वह ग़ालिब आएंगे	एक सो (100)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ

तुम से	अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी	अब	65	समझ नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

वह ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	एक सो (100)	तुम में से	पस अगर हों	कमज़ोरी	तुम में	कि	और मालूम कर लिया

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के हुक्म से	दो हज़ार (2000)	वह ग़ालिब रहेंगे	एक हज़ार (1000)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى

जब तक	क़ैदी	उस के	हों	कि	किसी नबी के लिए	नहीं है	66	सब्र वाले	साथ	और अल्लाह

يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ

चाहता है	और अल्लाह	दुनिया	माल	तुम चाहते हो	ज़मीन	में	ख़ूनरेज़ी कर ले

الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ

पहले ही	अल्लाह से	लिखा हुआ	अगर न	67	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	आख़िरत

لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ

तुम्हें ग़नीमत में मिला	उस से जो	पस खाओ	68	बड़ा	अज़ाब	तुम ने लिया	उस में जो	तुम्हें पहुँचता

حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ع ع ٩/٥

69	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	पाक	हलाल

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ ख़र्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफ़ी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरग़ीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सब्र वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सो (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सो (100) सब्र वाले हों तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक़) नहीं कि उस के (क़ब्ज़े में) क़ैदी हूँ जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अच्छी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हुआ न होता तो उस (फ़िदया) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ

में	मालूम कर लेगा अल्लाह	अगर	क़ैदी	से	तुम्हारे हाथ	में	उन से जो	कह दें	नबी	ऐ

قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	और बख़्शदेगा	तुम से	लिया गया	उस से जो	तुम्हें देगा बेहतर	कोई भलाई	तुम्हारे दिल

رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	तो उन्हों ने ख़ियानत की अल्लाह से	आप (स) से ख़ियानत का	वह इरादा करेंगे	और अगर	70	निहायत मेहरबान

فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا

और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	71	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन से (उन्हें)	तो क़ब्ज़े में दे दिया

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता	में	और अपनी जानें	अपने मालों से	और जिहाद किया

وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	और वह लोग जो	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	वही लोग	और मदद की

وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	कुछ शै (सरोकार)	उन की रफ़ाक़त	से	तुम्हें नहीं	और उन्हों ने हिज्रत न की

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ

वह क़ौम	पर (ख़िलाफ़)	मगर	मदद	तो तुम पर (लाज़िम है)	दीन में	वह तुम से मदद मांगें	और अगर

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग	72	देखने वाला	तुम करते हो	जो	और अल्लाह	मुआहदा	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	फ़ित्ना	होगा	अगर तुम ऐसा न करोगे	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ

में	और जिहाद किया उन्हों ने	और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	और वह लोग जो	73	बड़ा	और फ़साद

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ

मोमिन (जमा)	वह	वही लोग	और मदद की	ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता

حَقًّا ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ

उस के बाद	ईमान लाए	और वह लोग जो	74	इज़्ज़त	और रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	सच्चे

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ۗ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

और क़राबतदार	तुम में से	पस वही लोग	तुम्हारे साथ	और उन्हों ने जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾ ع ١٠ ٦

75	जानने वाला	हर चीज़	बेशक अल्लाह	अल्लाह का हुक्म	में (रू से)	बाज़ (दूसरे) के	क़रीब (ज़ियादा हक़ दार)	उन के बाज़

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (क़ब्ज़े) में जो क़ैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और अगर आप (स) से ख़ियानत का इरादा करेंगे तो उन्हों ने उस से क़ब्ल अल्लाह से ख़ियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) क़ब्ज़े में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस क़ौम के ख़िलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और क़राबतदार (आपस में) एक दूसरे के ज़ियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ़) से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है उन मुश्रिकों से जिन्हों ने तुम से अ़हद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिको) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ़) से हज-ए-अक्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया अ़ज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया था, फिर उन्हों ने तुम से (अ़हद में) कुछ भी कमी न की और न उन्हों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अ़हद उन की (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहां तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहां तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान हैं)। (6)

آيَاتُهَا ١٢٩ ❀ سُوْرَةُ التَّوْبَةِ (٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकूआ़त 16 | (9) सूरतुत तौबा | आयात 129

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ؕ ١

1	मुश्रिकीन	से	तुम से अ़हद किया	वह लोग जिन्हों ने	तरफ़	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	से	एलान-ए-बरात

فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ

अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले	नहीं	कि तुम	और जान लो	महीने	चार	ज़मीन में	पस चल फिर लो

وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ٢ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى

तरफ़ (लिए)	और उस का रसूल	अल्लाह से	और एलान	2	काफ़िर (जमा)	रुस्वा करने वाला	और यह कि अल्लाह

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ

मुश्रिक (जमा)	से	क़तअ़ तअ़ल्लुक़	कि अल्लाह	हज-ए-अक्बर	दिन	लोग

وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

कि तुम	तो जान लो	तुम ने मुँह फेर लिया	और अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	तो यह	तुम तौबा करो	पस अगर	और उस का रसूल

غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ٣ اِلَّا

सिवाए	3	दर्दनाक	अ़ज़ाब से	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	और ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)	अल्लाह	आ़जिज़ करने वाले	न

الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ

और न	कुछ भी	उन्हों ने तुम से कमी न की	फिर	मुश्रिक (जमा)	से	तुम ने अ़हद किया था	वह लोग जो

يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ

उन की मुद्दत	तक	उन का अ़हद	उन से	तो पूरा करो	किसी की	तुम्हारे ख़िलाफ़	उन्हों ने मदद की

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ٤ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

तो क़त्ल करो	हुर्मत वाले	महीने	गुज़र जाएं	फिर जब	4	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ

और उन्हें घेर लो	और उन्हें पकड़ो	तुम उन्हें पाओ	जहां	मुश्रिक (जमा)

وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और क़ाइम करें	वह तौबा कर लें	फिर अगर	हर घात	उन के लिए	और बैठो

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٥ وَاِنْ

और अगर	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन का रास्ता	तो छोड़ दो	और ज़कात अदा करें

اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ

अल्लाह का कलाम	वह सुन ले	यहां तक कि	तो उसे पनाह दे दो	आप से पनाह मांगे	मुश्रिकीन	से	कोई

ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ٦ ع

6	इल्म नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	यह	उस की अम्न की जगह	उसे पहुँचा दें	फिर

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ

और उस के रसूल के पास	अल्लाह के पास	अ़हद	मुश्रिकों के लिए	हो	क्यों कर

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا

वह क़ाइम रहें	सो जब तक	मस्जिदे हराम	पास	तुम ने अ़हद किया	वह लोग जो	सिवाए

لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَاِنْ

और अगर	कैसे	7	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	तो तुम क़ाइम रहो	तुम्हारे लिए

يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ

वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं	और न अ़हद	क़राबत	तुम्हारी	न लिहाज़ करें	तुम पर	वह ग़ालिब आजाएं

بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨﴾ ۚ

8	नाफ़रमान	और उन के अक्सर	उन के दिल	लेकिन नहीं मानते	अपने मुहँ (जमा) से

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ

उस का रास्ता	से	फिर उन्हों ने रोका	थोड़ी	क़ीमत	अल्लाह की आयात से	उन्हों ने ख़रीद ली

اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا

क़राबत	किसी मोमिन	(बारे) में	लिहाज़ नहीं करते	9	वह करते हैं	जो	बुरा	बेशक वह

وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا

और क़ाइम करें	तौबा कर लें	फिर अगर वह	10	हद से बढ़ने वाले	वह	और वही लोग	अ़हद	और न

الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ

और खोल कर बयान करते हैं	दीन	में	तो तुम्हारे भाई	और अदा करें ज़कात	नमाज़

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ

अपनी क़स्में	वह तोड़ दें	और अगर	11	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	आयात

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا

तो जंग करो	तुम्हारा दीन	में	और ऐब निकालें	अपना अ़हद	के बाद से

اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	उन की	नहीं क़स्म	बेशक वह	कुफ़्र के सरदार

يَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ

अपना अ़हद	उन्हों ने तोड़ डाला	ऐसी क़ौम	क्या तुम न लड़ोगे?	12	बाज़ आजाएं

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

पहली बार	तुम से पहल की	और वह	रसूल (स)	निकालने का	और इरादा किया

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾

13	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	तो अल्लाह	क्या तुम उन से डरते हो?

क्यों कर हो मुश्रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अ़हद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम (भी) उन के लिए क़ाइम रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएं तो न लिहाज़ करें तुम्हारी क़राबत का और न अ़हद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महेज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्हों ने अल्लाह की आयात से थोड़ी क़ीमत ख़रीद ली, फिर उन्हों ने उस के रास्ते से रोका, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न क़राबत का लिहाज़ करते हैं न अ़हद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी क़स्में तोड़ दें अपने अ़हद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐब निकालें, तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो, बेशक उन की क़स्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएं। (12)

क्या तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे? जिन्हों ने अपना अ़हद तोड़ डाला और उन्हों ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्हों ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (13)

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ

उन पर	और तुम्हें ग़ालिब करे	और उन्हें रुस्वा करे	तुम्हारे हाथों से	उन्हें अ़ज़ाब दे अल्लाह	तुम उन से लड़ो

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ

उन के दिल (जमा)	गुस्सा	और दूर कर दे	14	मोमिनीन	लोग	सीने (दिल)	और शिफ़ा बख़्शे (ठन्डे करे)

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ

कि	क्या तुम समझते हो	15	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	जिसे चाहे	पर	और अल्लाह तौबा कुबूल करता है

تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا

और उन्हों ने नहीं बनाया	तुम में से	उन्हों ने जिहाद किया	वह लोग जो	मालूम किया अल्लाह	और अभी नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ ۢ

बाख़बर	और अल्लाह	राज़दार	और न मोमिनीन	और न उस का रसूल (स)	अल्लाह	सिवा

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ ع مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ ع ١٠ ٢ ٨

अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करें	कि	मुश्रिकों के लिए	नहीं है	16	उस से जो तुम करते हो

شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ

उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	कुफ़्र को	अपनी जानें (अपने ऊपर)	पर	तसलीम करते हों

وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान लाया	जो	अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करता है	सिर्फ़	17	हमेशा रहेंगे	वह	और जहन्नम में

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ ۫

अल्लाह	सिवाए	और वह न डरा	और ज़कात अदा की	और उस ने नमाज़ क़ाइम की	और आख़िरत का दिन

فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ

पानी पिलाना	क्या तुम ने बनाया (ठहराया)	18	हिदायत पाने वाले	से	हों	कि	वही लोग	सो उम्मीद है

الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाया	उस के मानिंद	मस्जिदे हराम	और आबाद करना	हाजी (जमा)

وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के नज़दीक	वह बराबर नहीं	अल्लाह की राह	में	और उस ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وقف لازم

ईमान लाए	जो लोग	19	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ

और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में	और जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह के हां	दरजे	बहुत बड़े

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रुस्वा करे और तुम्हें उन पर ग़ालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, **(14)**

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। **(15)**

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्हों ने जिहाद किया, और उन्हों ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार। और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। **(16)**

मुश्‌रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़्र को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अ़मल अकारत गए, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे। **(17)**

अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। **(18)**

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद हराम (ख़ाना कअ़बा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं हैं अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। **(19)**

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। **(20)**

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا

उन में	उन के लिए	और बाग़ात	और ख़ुशनूदी	अपनी तरफ़ से	रहमत की	उन का रब	उन्हें ख़ुशख़बरी देता है

نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

उस के हां	बेशक अल्लाह	हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	21	दाइमी	नेमत

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ

अपने बाप दादा	तुम न बनाओ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	22	अज़ीम	अजर

وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ

और जो	ईमान पर (ईमान के मुक़ाबिल)	कुफ़्र	अगर वह पसन्द करें	रफ़ीक़	और अपने भाई

يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

हों	अगर	कहे दें	23	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	तुम में से	दोस्ती करेगा उन से

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ

और तुम्हारे कुंबे	और तुम्हारी बीवियां	और तुम्हारे भाई	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप दादा

وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

उस का नुक़्सान	तुम डरते हो	और तिजारत	जो तुम ने कमाए	और माल

وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह से	तुम्हारे लिए (तुम्हें)	ज़ियादा प्यारे	जो तुम पसन्द करते हो	और घर

وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उस का हुक्म	ले आए अल्लाह	यहां तक कि	इन्तिज़ार करो	उस की राह में	और जिहाद

ع ٣ ٨ ٩ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ

में	अल्लाह ने तुम्हारी मदद की	अलबत्ता	24	नाफ़रमान	लोग	हिदायत नहीं देता

مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ

अपनी कस्रत	तुम ख़ुश हुए (इतरा गए)	जब	और हुनैन के दिन	बहुत से	मैदान (जमा)

فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

फ़राख़ी के बावजूद	ज़मीन	तुम पर	और तंग हो गई	कुछ	तुम्हें	तो न फ़ाइदा दिया

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तस्कीन	अल्लाह ने नाज़िल की	फिर	25	पीठ दे कर	तुम फिर गए	फिर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ

वह तुम ने न देखे	लशकर	और उतारे उस ने	मोमिनीन	और पर	अपने रसूल (स)	पर

وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	काफ़िर (जमा)	सज़ा	और यही	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और अज़ाब दिया

उन का रब उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत और ख़ुशनूदी और बाग़ात की ख़ुशख़बरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह के (हां) अजरे अज़ीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक़ न बनाओ अगर वह लोग ईमान के ख़िलाफ कुफ़्र को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवियां, और तुम्हारे कुंबे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारत जिस के नुक़्सान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कस्रत पर इतरागए तो उस (कस्रत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिरगए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	जिस की चाहे	पर	इस	बाद	तौबा कुबूल करेगा अल्लाह	फिर

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ

मुश्रिक (जमा)	इस के सिवा नहीं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	27	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ

इस	साल	बाद	मस्जिदे हराम	लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं	पलीद

وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ

अगर वह चाहे	अपना फ़ज़्ल	से	तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह	तो जल्द	मोहताजी	तुम्हें डर हो	और अगर

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान नहीं लाए	वह लोग जो	तुम लड़ो	28	हिक्मत वाला	जानने वाला	बेशक अल्लाह

وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ

जो हराम ठहराया अल्लाह ने	और न हराम जानते हैं	यौमे आख़िरत पर	और न

وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	दीने हक़	और न कुबूल करते हैं	और उस का रसूल (स)

اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ

और वह	हाथ	से	जिज़्या	दें	यहां तक	किताब दिए गए (अहले किताब)

صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ ع ٥ ١٠

और कहा	अल्लाह का बेटा	ऊज़ैर	यहूद	और कहा	29	ज़लील हो कर

النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ

उन के मुँह की	उन की बातें	यह	अल्लाह का बेटा	मसीह (अ)	नसारा

يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

पहले	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बात	वह रीस करते हैं

قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ

अपने एहबार (उल्मा)	उन्हों ने बना लिया	30	बहके जाते हैं	कहां	हलाक करे उन्हें अल्लाह

وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ

और मसीह (अ)	अल्लाह के सिवा	से	रब (जमा)	और अपने राहेब (दर्वेश)

ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

माबूदे वाहिद	यह कि वह इबादत करें	मगर	उन्हें हुक्म दिया गया	और नहीं	इब्ने मरयम

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

31	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	वह पाक है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। **(27)**

ऐ मोमिनों! इस के सिवा नहीं कि मुश्रिक पलीद हैं, लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं उस साल के बाद मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(28)**

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को कुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़्या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। **(29)**

यहूद ने कहा ऊज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें है उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहां बहके जा रहे हैं? **(30)**

उन्हों ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को रब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। **(31)**

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

और न मानेगा अल्लाह	अपने मुँह से (जमा)	अल्लाह का नूर	वह बुझा दें	कि	वह चाहते हैं

اِلَّاۤ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾ هُوَ

वह	32	काफ़िर (जमा)	पसन्द न करें	ख़्वाह	अपना नूर	पूरा करे	यह कि	मगर

الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

ताकि उसे ग़ल्बा दे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल	भेजा	वह जिस ने

النصف

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

वह लोग जो	ऐ	33	मुश्रिक (जमा)	पसन्द न करें	ख़्वाह	तमाम पर	दीन	पर

اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ

खाते हैं	और राहेब (दर्वेश)	उल्मा	से	बहुत	बेशक	ईमान लाए

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते हैं	नाहक़ तौर पर	लोग (जमा)	माल (जमा)

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ

में	और वह उसे ख़र्च नहीं करते	और चाँदी	सोना	जमा कर के रखते हैं	और वह लोग जो

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ۙ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

उस पर	दहकाएंगे	जिस दिन	34	दर्दनाक	अज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दो	अल्लाह की राह

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ

और उन की पीठ (जमा)	और उनके पहलू (जमा)	उन की पेशानी	उस से	फिर दाग़ा जाएगा	जहन्नम की आग	में

هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	जो तुम जमा कर के रखते थे	जो	पस मज़ा चखो	अपने लिए	तुम ने जमा कर के रखा	जो	यह है

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ

में	महीने	बारह (12)	अल्लाह के नज़दीक	महीनें	तादाद	बेशक

كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَاۤ

उन से (उन में)	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	जिस दिन	अल्लाह का हुक्म

اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا

फिर न ज़ुल्म करो	सीधा (दुरुस्त) दीन	यह	हुर्मत वाले	चार (4)

فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ ۣ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۤفَّةً كَمَا

जैसे	सब के सब	मुश्रिकों	और लड़ो	अपने ऊपर	उन में

يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۤفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	परहेज़गार (जमा)	साथ	कि अल्लाह	और जान लो	सब के सब	वह तुम से लड़ते हैं

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूंकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, ख़ाह काफ़िर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ल्बा दे, ख़ाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! बेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगों के माल नाहक़ तौर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियाँ और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दाग़ा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

बेशक महिनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दीन, पस तुम उन में अपने ऊपर ज़ुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْکُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	इस से	गुमराह होते हैं	कुफ़्र में	इज़ाफ़ा	महीने का हटा देना	यह जो

یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ

हराम किया	जो	गिनती	ताकि वह पूरी कर लें	एक साल	और उस को हराम कर लेते हैं	एक साल	वह उस को हलाल करते हैं

اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उन के आमाल	बुरे	उन्हें	मुज़ैयन करदिए गए	अल्लाह ने हराम किया	जो	तो वह हलाल करते हैं	अल्लाह

لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْکٰفِرِیْنَ ۝۳۷ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَا لَکُمْ ع ٨ ١١

तुम्हें किया हुआ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	37	काफ़िर (जमा)	क़ौम	हिदायत नहीं देता

اِذَا قِیْلَ لَکُمُ انْفِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَی الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन	तरफ़ (पर)	तुम गिरे जाते हो	अल्लाह की राह	में	कूच करो	तुम्हें	कहा जाता है	जब

اَرَضِیْتُمْ بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا

दुनिया	ज़िन्दगी	सामान	सो नहीं	आख़िरत	से (मुक़ाबला)	दुनिया	ज़िन्दगी को	क्या तुम ने पसन्द कर लिया

فِی الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِیْلٌ ۝۳۸ اِلَّا تَنْفِرُوْا یُعَذِّبْکُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۙ

दर्दनाक	अज़ाब	तुम्हें अज़ाब देगा	अगर न निकलोगे	38	थोड़ा	मगर	आख़िरत	में

وَّیَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَیْرَکُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَیْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی

पर	और अल्लाह	कुछ भी	और न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	और क़ौम	और बदले में ले आएगा

کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝۳۹ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ

उस को निकाला	जब	तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है	अगर तुम मदद न करोगे उस की	39	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़

الَّذِیْنَ کَفَرُوْا ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ یَقُوْلُ

वह कहते थे	जब	ग़ार	में	जब वह दोनों	दो में	दूसरा	जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	वह लोग

لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَکِیْنَتَهٗ

अपनी तस्कीन	तो अल्लाह ने नाज़िल की	हमारे साथ	यक़ीनन अल्लाह	घबराओ नहीं	अपने साथी से

عَلَیْهِ وَاَیَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ کَلِمَةَ الَّذِیْنَ کَفَرُوا

उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बात	और कर दी	जो तुम ने नहीं देखे	ऐसे लशकरों से	और उस की मदद की	उस पर

السُّفْلٰی ؕ وَکَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الْعُلْیَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِیْزٌ حَکِیْمٌ ۝۴۰

40	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	बाला	वह	और अल्लाह का कलिमा (बोल)	पस्त (नीची)

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِکُمْ وَاَنْفُسِکُمْ

और अपनी जानों	अपने मालों से	और जिहाद करो	और भारी	हलका-हलके	तुम निकलो

فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِکُمْ خَیْرٌ لَّکُمْ اِنْ کُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۴۱

41	जानते हो	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह तुम्हारे लिए	अल्लाह की राह	में

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किए। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अ़मल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। (37)

ऐ मोमिनों! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में मगर थोड़ा। (38)

अगर तुम (राहे ख़ुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अ़ज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और क़ौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (39)

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों ग़ारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक़) से कहते थे, घबराओ नहीं, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तस्कीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की बात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) बाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (40)

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से जिहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (41)

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ

तो आप (स) के पीछे हो लेते	आसान	और सफ़र	क़रीब	माल (ग़नीमत)	होता	अगर

وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	और अब क़स्में खाएंगे	रास्ता	उन पर	दूर नज़र आया	और लेकिन

لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ

अपने आप	वह हलाक कर रहे हैं	तुम्हारे साथ	हम ज़रूर निकलते	अगर हम से हो सकता

ع ٥ ٦ ١٢ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ

क्यों	तुम्हें	माफ़ करे अल्लाह	42	यक़ीनन झूटे हैं	कि वह	जानता है	और अल्लाह

اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

और आप जान लेते	सच्चे	वह लोग जो	आप पर	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक कि	उन्हें	तुम ने इजाज़त दी

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	जो ईमान रखते हैं	वह लोग	नहीं मांगते आप से रुख़सत	43	झूटे

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ

और अपनी जान (जमा)	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और यौमे आख़िरत पर

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	आप से रुख़सत मांगते हैं	वही सिर्फ़	44	मुत्तक़ियों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	और शक में पड़े हैं	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान नहीं रखते

فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

निकलने का	वह इरादा करते	और अगर	45	भटक रहे हैं	अपने शक	में	सो वह

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

उन का उठना	अल्लाह ने नापसन्द किया	और लेकिन	कुछ सामान	उस के लिए	ज़रूर तैयार करते

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

46	बैठने वाले	साथ	बैठ जाओ	और कहा गया	सो उन को रोक दिया

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

ख़राबी	मगर (सिवाए)	तुम्हें बढ़ाते	न	तुम में	वह निकलते	अगर

وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ

बिगाड़	तुम्हारे लिए चाहते हैं	तुम्हारे दरमियान	और दौड़े फिरते

وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के	सुनने वाले	और तुम में

अगर माले ग़नीमत क़रीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की क़स्में खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहें हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यक़ीनन झूटे हैं। (42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। (43)

आप (स) से वह लोग रुख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह जिहाद करें अपने मालों से अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तक़ियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को ख़ूब जानता है। (44)

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रुख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। (45)

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। (46)

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुन्ने वाले मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (47)

अलबत्ता उन्हों ने चाहा था इस से क़ब्ल भी बिगाड़, और उन्हों ने तुम्हारे लिए तद्बीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक़ आगया, और ग़ालिब आगया अम्रे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना खुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आज़माइश में न डालें, याद रखो वह आज़माइश में पड़ चुके हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह खुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो ख़ूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अ़ज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम खुशी से ख़र्च करो या नाखुशी से, हरगिज़ तुम से कुबूल न किया जाएगा, बेशक तुम हो क़ौमे-फ़ासिक़ीन (नाफ़रमानों की क़ौम)। (53)

और उन के ख़र्च कुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्हों ने अल्लाह और रसूल से कुफ़्र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह ख़र्च नहीं करते मगर नाखुशी से। (54)

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

तद्बीरें	तुम्हारे लिए	उन्हों ने उलट पलट कीं	इस से क़ब्ल	बिगाड़	अलबत्ता चाहा था उन्हों ने

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	पसन्द न करने वाले	और वह	अम्रे इलाही	और ग़ालिब आगया	हक़	आगया	यहां तक कि

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ اَلَا فِي

में	याद रखो	और न डाले मुझे आज़माइश में	मुझे	इजाज़त दें	कहता है	जो कोई	और उन में से

الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	काफ़िरों को	घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक	वह पड़ चुके हैं	आज़माइश

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगे	कोई भलाई	तुम्हें पहुँचे	अगर

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

और वह	और वह लौट जाते हैं	इस से पहले	अपना काम	हम ने पकड़ लिया (संभाल लिया) था	तो वह कहें

فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ

हमारे लिए	अल्लाह ने लिख दिया	जो	मगर	हरगिज़ न पहुँचेगा हमें	आप कह दें	50	वह खुशियां मनाते

هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

51	मोमिन (जमा)	भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	हमारा मौला	वही

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ

दो ख़ूबियों	एक का	मगर	हम पर	क्या तुम इन्तिज़ार करते हो	आप (स) कह दें

وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ

उस के पास	से	कोई अ़ज़ाब	अल्लाह	तुम्हें पहुँचे	कि	तुम्हारे लिए	और हम इन्तिज़ार करते हैं

اَوْ بِاَيْدِيْنَا ڮ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	इन्तिज़ार करने वाले	तुम्हारे साथ	हम	सो तुम इन्तिज़ार करो	हमारे हाथों से	या

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ

तुम हो	बेशक तुम	तुम से	हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम ख़र्च करो	आप (स) कह दें

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ

मगर	उन का ख़र्च	उन से	कुबूल किया जाए	कि	उन के लिए रुकावट बना	और न	53	फ़ासिक़ (जमा)	क़ौम

اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	और वह नहीं आते	और उस के रसूल के	अल्लाह के	मुन्किर हुए	यह कि वह

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

54	नाखुशी से	और वह	मगर	और वह ख़र्च नहीं करते	सुस्त	और वह	मगर

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ

कि अ़ज़ाब दे उन्हें	चाहता है अल्लाह	यही	उन की औलाद	और न	उन के माल	सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो

بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝۵۵

55	काफ़िर हों	और वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	उस से

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	और लेकिन वह	तुम में से	वह	हालांकि नहीं	अलबत्ता तुम में से	बेशक वह	अल्लाह की	और क़स्में खाते हैं

يَّفْرَقُوْنَ ۝۵۶ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا

घुसने की जगह	या	ग़ार (जमा)	या	पनाह की जगह	वह पाएं	अगर	56	डरते हैं

لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝۵۷ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ

तअ़न करते हैं आप पर	जो (बाज़)	और उन में से	57	रस्सियां तुड़ाते हैं	और वह	उस की तरफ़	तो वह फिर जाएं

فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا

उन्हें न दिया जाए	और अगर	वह राज़ी हो जाएं	उस से	उन्हें दे दिया जाए	सो अगर	सदक़ात	में

مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝۵۸ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ

अल्लाह	उन्हें दिया	जो	राज़ी हो जाते	अगर वह	क्या अच्छा होता	58	नाराज़ हो जाते हैं	वह	उसी वक़्त	उस से

وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह	अब हमें देगा	हमें काफ़ी है अल्लाह	और वह कहते	और उस का रसूल

ع ١٧/١٣ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝۵۹ ۧ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاۗءِ

मुफ़लिस (जमा)	ज़कात	सिर्फ़	59	रग़बत रखते हैं	अल्लाह की तरफ़	बेशक हम	और उस का रसूल

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي

और में	उन के दिल	और उल्फ़त दी जाए	उस पर	और काम करने वाले	मिस्कीन (जमा) मोहताज

الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً

फ़रीज़ा (ठहराया हुआ)	और मुसाफ़िर	अल्लाह की राह	और में	तावान भरने वाले, क़र्ज़दार	गर्दनों (के छुड़ाने)

مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۶۰ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ

ईज़ा देते (सताते) हैं	जो लोग	और उन में से	60	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	अल्लाह	से

النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ

वह ईमान लाते हैं	भलाई तुम्हारे लिए	कान	आप कह दें	कान	वह (यह)	और कहते हैं	नबी

بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ

तुम में	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	मोमिनों पर	और यक़ीन रखते हैं	अल्लाह पर

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۶۱

61	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रसूल	सताते हैं	और जो लोग

सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि बेशक वह तुम में से हैं, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदक़ात (की तक़सीम में) तअ़न करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल, बेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़बत रखते हैं। (59)

ज़कात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उल्फ़त दी जाए, और गर्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और क़र्ज़दारों (का क़र्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज़ लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) एसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यक़ीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत हैं जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें ख़ुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक़ है कि वह उन्हें ख़ुश करें अगर वह ईमान वाले हैं। (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुक़ाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो बेशक उस के लिए दोज़ख़ की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक़) करते रहो, बेशक तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

बहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुजरिम हैं। (66)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिन्स) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठियां ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है। (68)

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ

और उस का रसूल	और अल्लाह	ताकि तुम्हें ख़ुश करें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	वह क़स्में खाते हैं

اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا الثلثة

क्या वह नहीं जानते	62	वह ईमान वाले हैं	अगर	वह उन को ख़ुश करें	कि	ज़ियादा हक़

اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ

दोज़ख़ की आग	उस के लिए	तो बेशक	और उस के रसूल	अल्लाह	मुक़ाबला करेगा	जो	कि वह

خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	डरते हैं	63	बड़ी	रुसवाई	यह	उस में	हमेशा रहेंगे

اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ

उन के दिल (जमा)	में	वह जो	उन्हें जता दे	सूरत	उन (मुसलमानों) पर	कि नाज़िल हो

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَىِٕنْ

और अगर	64	जिस से तुम डरते हो	खोलने वाला	बेशक अल्लाह	ठठे करते रहो	आप कह दें

سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ

क्या अल्लाह के	आप (स) कह दें	और खेल करते	दिल्लगी करते	हम थे	कुछ नहीं (सिर्फ़)	तो वह ज़रूर कहेंगे	तुम उन से पूछो

وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ

तुम काफ़िर हो गए हो	न बनाओ बहाने	65	हँसी करते	तुम थे	और उस के रसूल	और उस की आयात

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक गिरोह	से (को)	हम माफ़ कर दें	अगर	तुम्हारा (अपना) ईमान	बाद

نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ ع ٨ ١٤

मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)	66	मुजरिम (जमा)	थे	इस लिए कि वह	एक (दूसरा) गिरोह	हम अज़ाब दें

وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وقف لازم

बुराई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़ के	से	उन में से बाज़	और मुनाफ़िक़ औरतें

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا

वह भूल बैठे	अपने हाथ	और बन्द रखते हैं	नेकी	से	और मना करते हैं

اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा किया	67	नाफ़रमान (जमा)	वह (ही)	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	तो उस ने उन्हें भुला दिया	अल्लाह

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	और काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

هِىَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ۙ

68	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	और अल्लाह ने उन पर लानत की	उन के लिए काफ़ी	वही

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ

और ज़ियादा	कुव्वत	तुम से	बहुत ज़ोर वाले	वह थे	तुम से क़ब्ल	जिस तरह वह लोग जो

اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ

सो तुम फ़ाइदा उठा लो	अपने हिस्से से	सो उन्हों ने फ़ाइदा उठाया	और औलाद	माल में

بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

अपने हिस्से से	तुम से पहले	वह लोग जो	फ़ाइदा उठाया	जैसे	अपने हिस्से से

وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	घुसे	जैसे वह	और तुम घुसे (बुरी बातों में)

وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ

क्या इन तक न आई	69	ख़सारा उठाने वाले	वह	और वही लोग	और आख़िरत

نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۬ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

और क़ौमे इब्राहीम (अ)	और समूद	और आद	क़ौमे नूह	इन से पहले	वह लोग जो	ख़बर

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ

वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ	उन के रसूल (जमा)	उन के पास आए	और उलटी हुई बस्तियां	और मदयन वाले

فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने ऊपर	वह थे	लेकिन	कि वह उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	था	सो नहीं

يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ

रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़	और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द (जमा)	70	ज़ुल्म करते

وقف لازم بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

बुराई	से	और रोकते हैं	भलाई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ

अल्लाह	और इताअत करते हैं	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	और वह क़ाइम करते हैं

وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

71	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	कि उन पर अल्लाह रहम करेगा	वही लोग	और उस का रसूल

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	जन्नतें	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्द (जमा)	वादा किया अल्लाह

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ

हमेशा रहने के बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें

ع ٩ ١٥ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

72	बड़ी	कामयाबी	वह	यह	सब से बड़ी	अल्लाह	से	और ख़ुशनूदी

जिस तरह वह लोग जो तुम से क़ब्ल थे, वह तुम से बहुत ज़ोर वाले थे कुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फ़ाइदा उठा लो जैसे उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे, वही लोग हैं जिन के अ़मल दुनिया और आख़िरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहुँची) जो इन से पहले थे, क़ौमे नूह और आ़द और समूद, और क़ौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बाग़ात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की ख़ुशनूदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयाबी है। (72)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर	और सख़्ती करें	और मुनाफ़िक़ीन	काफ़िर (जमा)	जिहाद करें	नबी (स)	ऐ

وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ

नहीं उन्हों ने कहा	अल्लाह की	वह क़स्में खाते हैं	73	पलटने की जगह	और बुरी	जहन्नम	और उन का ठिकाना

وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا

और क़सद किया उन्हों ने	उन का (अपना) इस्लाम	बाद	और उन्हों ने कुफ़्र किया	कुफ़्र का	कलिमा	हालांकि ज़रूर उन्हों ने कहा

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल	उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह	यह कि	मगर	और उन्हों ने बदला न दिया	उन्हें न मिली	उस का जो

مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا

वह फिर जाएं	और अगर	उन के लिए	बेहतर	होगा	वह तौबा कर लें	सो अगर	अपना फ़ज़्ल	से

يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब	अ़ज़ाब देगा उन्हें अल्लाह

فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ

अलबत्ता-अगर	अ़हद किया अल्लाह से	जो	और उन से	74	कोई मददगार	और न	हिमायती	कोई	ज़मीन में

اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	सालिहीन	से	और हम ज़रूर हो जाएंगे	ज़रूर सदक़ा दें हम	अपना फ़ज़्ल	से	हमें दे वह

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

76	रूगर्दानी करने वाले हैं	और वह	और फिर गए	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	अपना फ़ज़्ल	से	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا

उन्हों ने ख़िलाफ़ किया	क्यों कि	वह उस से मिलेंगे	उस रोज़	तक	उन के दिल	में	निफ़ाक़	तो उस ने उन का अन्जाम कार किया

اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

वह जानते	क्या नहीं	77	वह झूट बोलते थे	और क्यों कि	उस से उन्हों ने वादा किया	जो	अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ

ख़ूब जानने वाला	और यह कि अल्लाह	और उन की सरगोशियां	उन के भेद	जानता है	कि अल्लाह

الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिन (जमा)	से (जो)	ख़ुशी से करते हैं	ऐब लगाते हैं	वह लोग जो	78	ग़ैब की बातें

فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

अपनी मेहनत	मगर	जो वह नहीं पाते	और वह लोग जो	और सदक़ा (जमा) ख़ैरात	में

فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

79	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन से	अल्लाह ने मज़ाक़ (का जवाब) दिया	उन से	वह मज़ाक़ करते हैं

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्हों ने नहीं कहा, हालांकि उन्हों ने ज़रूर कुफ़्र का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्हों ने कुफ़्र किया, और उन्हों ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्हों ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह हैं) जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से दे तो हम ज़रूर सदक़ा देंगे और हम ज़रूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख़्ल किया और वह फिर गए, वह रूगर्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्हों ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और क्यों कि वह झूट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो ख़ुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मज़ाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (79)

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

बार	सत्तर (70)	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	अगर	उन के लिए	बख़्शिश न मांग	या	उन के लिए	तू बख़्शिश मांग

فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ

और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	क्योंकि वह	यह	उन को	बख़्शेगा अल्लाह	तो हरगिज़ न

ع ١٠ ٨ ١٦ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ

अपने बैठ रहने से	पीछे रहने वाले	खुश हुए	80	नाफ़रमान (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

और अपनी जानें	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और उन्हों ने नापसन्द किया	अल्लाह का रसूल	पीछे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ

सब से ज़ियादा	जहन्नम की आग	आप कह दें	गर्मी	में	ना कूच करो	और उन्हों ने कहा	अल्लाह की राह	में

حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

ज़ियादा	और रोएं	थोड़ा	चाहिए वह हसें	81	वह समझ रखते	काश	गर्मी में

جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ

किसी गिरोह	तरफ़	अल्लाह आप को वापस ले जाए	फिर अगर	82	वह कमाते थे	उस का जो	बदला

مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا

कभी भी	मेरे साथ	तुम हरगिज़ न निकलोगे	तो आप कह दें	निकलने के लिए	फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें	उन से

وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ

बार	पहली	बैठ रहने को	तुम ने पसन्द किया	बेशक तुम	दुश्मन	मेरे साथ	और हरगिज़ न लड़ोगे

فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓي اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

मर गया	उन से	कोई	पर	और न पढ़ना नमाज़	83	पीछे रह जाने वाले	साथ	सो तुम बैठो

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰي قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا

और वह मरे	और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	बेशक वह	उस की क़ब्र	पर	और न खड़े होना	कभी

وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ

चाहता है	सिर्फ़	और उन की औलाद	उन के माल	और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें	84	नाफ़रमान	जब कि वह

اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	काफ़िर हों	जब कि वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया में	उस से	उन्हें अ़ज़ाब दे	कि	अल्लाह

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ

उस का रसूल	साथ	और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	नाज़िल की जाती है	और जब

اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

86	बैठ रह जाने वाले	साथ	हम हो जाएं	छोड़ दे हमें	और कहते हैं	उन से	मक्दूर वाले (मालदार)	आप से इजाज़त चाहते हैं

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार (भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। **(80)**

पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्हों ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्हों ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहन्नम की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। **(81)**

चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का बदला है जो वह कमाते थे। **(82)**

फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें: तुम मेरे साथ कहीं भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), बेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। **(83)**

उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़े (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि क़ब्र पर खड़े होना, बेशक उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। **(84)**

और आप (स) को तअ़ज्जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अ़ज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। **(85)**

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक्दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। **(86)**

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं। (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रुख़्सत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अ़नक़रीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब जिन्हों ने कुफ़्र किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ों पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह ख़र्च करें, जब कि वह ख़ैर ख़्वाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूं, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह ख़र्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इजाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से ख़ुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन के दिल	पर	और मुहर लग गई	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ	हो जाएं	कि वह	वह राज़ी हुए

فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	और वह लोग जो	रसूल	लेकिन	87	समझते नहीं	सो वह

جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫

भलाइयां	उन के लिए	और यही लोग	और अपनी जानें	अपने मालों से	उन्हों ने जिहाद किया

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

जारी हैं	बाग़ात	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	88	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع ١١ ٩ ١٧

89	बड़ी	कामयाबी	यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बैठ रहे	उन को	कि रुख़्सत दी जाए	देहाती (जमा)	से	बहाना बनाने वाले	और आए

كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

उन से	उन्हो ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगा	और उस का रसूल	अल्लाह	झूट बोला

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا

और न	मरीज़ (जमा)	पर	और न	ज़ईफ़ (जमा)	पर	नहीं	90	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	वह ख़ैर ख़्वाह हों	जब	कोई हर्ज	वह ख़र्च करें	जो	नहीं पाते	वह लोग जो	पर

وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ ۙ

91	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कोई राह (इल्ज़ाम)	नेकी करने वाले	पर	नहीं	और उस के रसूल

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

मैं नहीं पाता	आप ने कहा	ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें	आप के पास आए	जब	वह लोग जो	पर	और न

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

आँसू (जमा)	से	बह रहे थे	और उन की आँखें	वह लौटे	उस पर	तुम्हें सवार करूं

حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ ؕ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	रास्ता (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	92	वह ख़र्च करें	जो	कि वह नहीं पाते	ग़म से

يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

वह हो जाएं	कि	वह ख़ुश हुए	ग़नी (जमा)	और वह	आप (स) से इजाज़त चाहते हैं

مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	नहीं जानते	सो वह	उन के दिल	पर	और अल्लाह ने मुहर लगादी	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ

الجزء ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ

उन की तरफ़	तुम लौट कर जाओगे	जब	तुम्हारे पास	उज़्र लाएंगे

قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)	अल्लाह	हमें बता चुका है	तुम्हारा	हरगिज़ हम यक़ीन न करेंगे	उज़्र न करो	आप (स) कह दें

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

पोशीदा	जानने वाले	तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल	तुम्हारे अ़मल	अल्लाह	और अभी देखेगा

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	अब क़स्में खाएंगे	94	तुम करते थे	वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ

उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो	उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो	उन की तरफ़	वापस जाओगे तुम	जब	तुम्हारे आगे

اِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	वह कमाते	थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना	पलीद	बेशक वह

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ	तुम्हारे आगे	वह क़स्में खाते हैं

لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا

कुफ़्र में	बहुत सख़्त	देहाती	96	नाफ़रमान	लोग	से	राज़ी नहीं होता

وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम	कि वह न जानें	और ज़ियादा लाइक़	और निफ़ाक़ में

رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ

लेते हैं (समझते हैं)	जो	देहाती	और से (बाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)

مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ

उन पर	गर्दिशें	तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं	तावान	जो वह ख़र्च करते हैं

دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ

जो	देहाती	और से (बाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ

नज़्दीकियां	जो वह ख़र्च करें	और समझते हैं	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं

عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ

उन के लिए	नज़्दीकी	यक़ीनन वह	हां हां	रसूल	और दुआएं	अल्लाह से

ع ١٠ ١٢ ١ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

99	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	अपनी रहमत	में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़्र लाएंगे। कह दो कि उज़्र न करो, हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अ़मल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़स्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, बेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे क़स्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो बेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो ख़र्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियों और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ़) समझते हैं, हां हां! यक़ीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ़) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अन्सार में से, और जिन्हों ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। **(100)**

और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ हैं, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अ़ज़ाब देंगे, फिर वह अ़ज़ाबे अ़ज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। **(101)**

और कुछ और हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्हों ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अ़मल मिला लिया, क़रीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(102)**

आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआ़एं (ख़ैर) करें, बेशक आप(स) की दुआ़ उन के लिए (बाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला,जानने वाला है। **(103)**

क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है, और क़ुबूल करता है सदक़ात और यह कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(104)**

और आप (स) कहदें तुम अ़मल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अ़मल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। **(105)**

और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौक़ूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अ़ज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(106)**

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ

और जिन लोगों	और अन्सार	मुहाजरीन	से	सब से पहले	और सबक़त करने वाले

اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ

उन के लिए	और तैयार किया उस ने	उस से	और वह राज़ी हुए	राज़ी हुआ अल्लाह उन से	नेकी के साथ	उस की पैरवी की

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ

यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ١٠٠ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛ وَمِنْ

और से (बाज़)	मुनाफ़िक़ (जमा)	देहाती	से बाज़	तुम्हारे इर्द गिर्द	और उन में जो	100	कामयाबी बड़ी

اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۣ لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ نَحْنُ

हम	तुम नहीं जानते उन को	निफ़ाक़	पर	अड़े हुए हैं	मदीने वाले

نَعْلَمُهُمْ ۭ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ١٠١ ع

101	अज़ीम	अ़ज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	फिर	दो बार	जल्द हम उन्हें अ़ज़ाब देंगे	जानते हैं उन्हें

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ

बुरा	और दूसरा	एक अ़मल अच्छा	उन्हों ने मिलाया	अपने गुनाहों का	उन्हों ने एतराफ़ किया	और कुछ और

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٠٢ خُذْ

लेलें आप (स)	102	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	माफ़ कर दे उन्हें	कि	अल्लाह	क़रीब है

مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	और दुआ़ करो	उस से	और साफ़ कर दो	तुम पाक कर दो	ज़कात	उनके माल (जमा)	से

اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ١٠٣ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ

कि	क्या उन्हें इल्म नहीं	103	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	सुकून	आप (स) की दुआ़	बेशक

اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

सदक़ात	और क़ुबूल करता है	अपने बन्दे	से-की	तौबा	क़ुबूल करता है	वह	अल्लाह

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ١٠٤ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ

अल्लाह	पस अब देखेगा	तुम किए जाओ अ़मल	और कह दें आप (स)	104	निहायत मेह्रबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	और यह कि अल्लाह

عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

जानने वाला पोशीदा	तरफ़	और जल्द लैटाए जाओग	और मोमिन (जमा)	और उसका रसूल (स)	तुम्हारे अ़मल

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ١٠٥ ع وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ

मौक़ूफ़ रखे गए	और कुछ और	105	तुम करते थे	वह जो	सो वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ١٠٦

106	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तौबा क़ुबूल कर ले उन की	और ख़्वाह	वह उन्हें अ़ज़ाब दे	ख़्वाह	अल्लाह के हुक्म पर

ع ٥ عند المتقدمين ١٢ وقف منزل

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا ۢ بَيْنَ

दरमियान	और फूट डालने को	और कुफ़्र के लिए	नुक़्सान पहुँचाने को	मस्जिद	उन्हों ने बनाई	और वह लोग जो

الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ

पहले	से	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	उस ने जंग की	उस के वासते जो	और घात की जगह बनाने के लिए	मोमिनों (जमा)

وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ

वह यक़ीनन	गवाही देता है	और अल्लाह	भलाई	मगर (सिर्फ़)	हम ने चाहा	नहीं	और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى

तक़्वा	पर	बुन्याद रखी गई	बेशक वह मस्जिद	कभी	उस में	आप (स) न खड़े होना	107	झूटे हैं

مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ

कि	वह चाहते हैं	ऐसे लोग	उस में	आप (स) खड़े हों उस में	कि	ज़ियादा लाइक़	दिन	पहले	से

يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	सो क्या वह जो	108	पाक रहने वाले	महबूब रखता है	और अल्लाह	वह पाक रहें

عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	जो-जिस	या	बेहतर	और ख़ुशनूदी	अल्लाह से	तक़्वा (ख़ौफ़)	पर

عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	दोज़ख़ की आग	में	उस को लेकर	सो गिर पड़ी	गिरने वाला	खाई	किनारा	पर

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا

बुन्याद रखी	जो कि	उन की इमारत	हमेशा रहेगी	109	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता

ع ۱۳ / ۱۱ / ۲
رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ ع

110	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिल	यह कि टुकड़े हो जाएं	मगर	उन के दिल	में	शक

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ

और उन के माल	उन की जानें	मोमिन (जमा)	से	ख़रीद लिए	बेशक अल्लाह

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

सो वह मारते हैं	अल्लाह की राह	में	वह लड़ते हैं	जन्नत	उन के लिए	उस के बदले

وَيُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और इंजील	तौरात में	सच्चा	उस पर	वादा	और मारे जाते हैं

وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

पस ख़ुशियां मनाओ	अल्लाह से	अपना वादा	ज़ियादा पूरा करने वाला	और कौन	और क़ुरआन

بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۱﴾

111	अज़ीम	कामयाबी	वह	और यह	उस से	तुम ने सौदा किया	जो कि	सो अपने सौदे पर

और वह लोग जिन्हों ने मस्जिद ज़रार (नुक़्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़्र करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अल्बत्ता क़स्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यक़ीनन झूटे हैं। (107)
आप (स) उस में कभी न खड़े होना, बेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक़्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक़ है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)
सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के ख़ौफ़ और (उस की) ख़ुशनूदी पर रखी, वह बेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)
वह इमारत जिस की उन्हों ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (110)
बेशक अल्लाह ने ख़रीद लीं मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और क़ुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर ख़ुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (क़ाइम करदा) हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो। **(112)**
नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायां) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के क़राबतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। **(113)**
और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस (बाप) से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दबार थे। **(114)**
और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। **(115)**
बेशक अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। **(116)**
अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अन्सार पर, वह जिन्हों ने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि क़रीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। **(117)**

التَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ

रुकूअ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले

السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

बुराई	से	और रोकने वाले	नेकी का	हुक्म देने वाले	सिजदा करने वाले

وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ

नहीं है	112	मोमिन (जमा)	और ख़ुशख़बरी दो	अल्लाह की हुदूद की	और हिफ़ाज़त करने वाले

لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ

मुश्रिकों के लिए	वह बख़्शिश चाहें	कि	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	नबी के लिए

وَلَوْ كَانُوْۤا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ

कि वह	उन पर	जब ज़ाहिर हो गया	उस के बाद	क़राबतदार	वह हों	ख़्वाह

اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

अपने बाप के लिए	इब्राहीम (अ)	बख़्शिश चाहना	और न था	113	दोज़ख़ वाले

اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ

कि वह	उस पर	ज़ाहिर हो गया	फिर जब	उस से	जो उस ने वादा किया	एक वादे के सबब	मगर

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं है	114	बुर्दबार	नर्म दिल	इब्राहीम (अ)	बेशक	उस से	वह बेज़ार हो गया	अल्लाह का दुश्मन

لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ

उन पर	वाज़ेह करदे	जब तक	जब उन्हें हिदायत दे दी	बाद	कोई क़ौम	कि वह गुमराह करे

مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ

बादशाहत	उस के लिए	बेशक अल्लाह	115	जानने वाला	हर शै का	बेशक अल्लाह	वह परहेज़ करें	जिस

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए नहीं	और वह मारता है	वही ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى

पर	अल्लाह	अल्बत्ता तवज्जुह फ़रमाई	116	और न मददगार	कोई हिमायती	से	अल्लाह के सिवा	कोई

النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ

में	उस की पैरवी की	वह जिन्हों ने	और अन्सार	और मुहाजरीन	नबी (स)

سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ

एक फ़रीक़	दिल (जमा)	फिर जाएं	जब क़रीब था	उस के बाद	तंगी	घड़ी

مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

117	निहायत मेहरबान	इन्तिहाई शफ़ीक़	उन पर	बेशक वह	उन पर	फिर वह मुतवज्जुह हुआ	उन से

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ

उन पर	तंग होगई	जब	यहां तक कि	पीछे रखा गया	वह जो	वह तीन	और पर

الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ

कि	और उन्हों ने जान लिया	उन की जानें	उन पर	और वह तंग हो गई	बावजूद कुशादगी	ज़मीन

لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ

ताकि वह तौबा करें	वह मुतवज्जुह हुआ उन पर	फिर	उस की तरफ़	मगर	अल्लाह	से	नहीं पनाह

ع ١٤ ٨ ٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

डरो अल्लाह से	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	118	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक अल्लाह

وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ

और जो	मदीने वालों को	न था	119	सच्चे लोग	साथ	और हो जाओ

حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

अल्लाह के रसूल (स)	से	कि वह पीछे रहजाते	देहातियों में से	उन के इर्द गिर्द

وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ

नहीं पहुँचती उन को	इस लिए कि वह	यह	उन की जान	से	अपनी जानों को	और यह कि ज़ियादा चाहें वह

ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

और न वह क़दम रखते हैं	अल्लाह की राह	में	कोई भूख	और न	और न कोई मुशक़्क़त	कोई पयास

مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا

मगर	कोई चीज़	दुश्मन	से	और न वह छीनते हैं	काफ़िर (जमा)	गुस्सा हों	ऐसा क़दम

كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ لا

120	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करता	बेशक अल्लाह	नेक अ़मल	उस से	लिखा जाता है उन के लिए

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ

और न तै करते हैं	और न बड़ा	छोटा	ख़र्च	वह ख़र्च करते हैं	और न

وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا

जो	बेहतरीन	अल्लाह	ताकि जज़ा दे उन्हें	लिखा जाता है उन के लिए	मगर	कोई वादी (मैदान)

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

पस क्यों न कूच करे	सब के सब	कि वह कूच करें	मोमिन (जमा)	और नहीं है	121	वह करते थे (उन के आमाल)

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ

दीन में	ताकि वह समझ हसिल करें	एक जमाअ़त	उन से (उन की)	हर गिरोह	से

ع ١٥ ٤ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ع

122	बचते रहें	ताकि वह (अ़जब नहीं)	उन की तरफ़	वह लौटें	जब	अपनी क़ौम	और ताकि वह डर सुनाएं

और उन तीन पर (जिन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गईं (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतवज्जुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। **(118)**

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। **(119)**

(लाइक़) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह ज़ियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुँचती कोई प्यास, और न कोई मुशक़्क़त, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा क़दम रखते हों कि काफ़िर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अ़मल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। **(120)**

और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या ज़ियादा) ख़र्च नहीं करते और न वह तै करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन के आमाल की उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। **(121)**

और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअ़त कूच करे ताकि वह समझ हासिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी क़ौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अ़जब नहीं कि वह बचते रहें। **(122)**

ऐ मोमिनों! अपने नज़्दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहीए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएं सख़्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे उस पर गरां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है, मोमिनों पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। (129)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ

नज़्दीक तुम्हारे	वह जो	लड़ो	वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	और जान लो	सख़्ती	तुम्हारे अन्दर	और चाहिए कि वह पाएं	कुफ़्फ़ार से (काफ़िर)

مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ الربع

कहते हैं	बाज़	तो उन में से	कोई सूरत	नाज़िल की जाती	और जब	123	परहेज़गारों के साथ

اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह लोग जो ईमान लाए	सो जो	ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस

فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا

और जो	124	खुशियां मनाते हैं	और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	वह लोग जो

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

क्या नहीं वह देखते	125	काफ़िर (जमा)	और वह	और वह मरे	उन की गन्दगी

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

फिर	दो बार	या	एक बार	हर साल में	आज़माए जाते हैं	कि वह

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

कोई सूरत	और उतारी जाती है	और जब	126	नसीहत पकड़ते हैं	वह	और न	न वह तौबा करते हैं

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ

फिर	कोई	देखता है तुम्हें	क्या	बाज़ (दूसरे)	को	उन में से (कोई एक)	देखता है

انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	क्योंकि वह	उन के दिल	अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

गरां	तुम्हारी जानें (तुम)	से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया	127	समझ नहीं रखते

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

इन्तिहाई शफ़ीक़	मोमिनों पर	तुम पर	हरीस (बहुत ख़ाहिशमन्द)	तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे	जो	उस पर

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है	तो कह दें	फिर अगर वह मुंह मोड़ें	128	निहायत मेहरबान

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ع ١٦ ٧ ٥

129	अज़ीम	अर्श	मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया	उस पर

المنزل ۳

آیَاتُهَا ۱۰۹ ❀ سُوْرَةُ یُوْنُس (۱۰) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ۱۱

रुकूआत 11	(10) सूरह यूनुस यूनुस (अ)	आयात 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۱﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि भेजी	कि	तअ़ज्जुब	लोगों को	क्या हुआ	1	हिक्मत वाली	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	कि	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और खुशख़बरी दे	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक आदमी	तरफ़- पर

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲﴾

وقف النبي عليه السلام

2	खुला	जादूगर	यह	बेशक	काफ़िर (जमा)	बोले	उन का रब	पास	सच्चा	पाया

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस ने	अल्लाह	बेशक तुम्हारा रब

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا

मगर	सिफ़ारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर करता है	अर्श पर	क़ाइम हुआ	फिर

مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾ اِلَيْهِ

उसी की तरफ़	3	सो क्या तुम ध्यान नहीं करते	पस उस की बन्दगी करो	तुम्हारा रब	अल्लाह	वह है	उस की इजाज़त	बाद

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

दोबारा पैदा करेगा	फिर	पहली बार पैदा करता है	बेशक वही	सच्चा	अल्लाह	वादा	सब	तुम्हारा लौट कर जाना

لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह लोग जो	इन्साफ़ के साथ	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	वह लोग जो	ताकि जज़ा दे

لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿۴﴾

4	वह कुफ़्र करते थे	क्यों कि	दर्दनाक	और अ़ज़ाब	खौलता हुआ	से	पीना है (पानी)	उन के लिए

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ

मन्ज़िलें	और मुक़र्रर कर दीं उस की	नूर (चमकता)	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ

हक़ (दुरुस्त तदबीर) से	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा किया	और हिसाब	बरस (जमा)	गिनती	ताकि तुम जान लो

يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵﴾ اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

और दिन	रात	बदलना	में	बेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियां	वह खोल कर बयान करता है

وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ﴿۶﴾

6	परहेज़गारों के लिए	निशानियां हैं	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने पैदा किया	और जो

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअ़ज्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को खुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छः (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर क़ाइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम ध्यान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अ़ज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़्र करते थे। (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5) बेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

बेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर मुत्मइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)
यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बाग़ात में। (9)
उस में उन की दुआ़ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाक़ात की दुआ़ "सलाम" है, और उन की दुआ़ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है। (10)
और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीआ़द, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)
और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तक्लीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)
और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्हों ने ज़ुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)
फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी पर	और वह राज़ी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	बेशक

وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	7	ग़ाफ़िल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर	और वह मुत्मइन हो गए

مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहन्नम	उन का ठिकाना

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ

उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٩﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ

ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ़	9	नेमत	बाग़ात	में	नहरें

وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ़	और ख़ातिमा	सलाम	उस में	और मुलाक़ात के वक़्त की दुआ़

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ ع ١٠ ٦

भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10	सारे जहान

لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ

में	हमारी मुलाक़ात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीआ़द	उन की तरफ़	तो फिर हो चुकी होती

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا

वह हमें पुकारता है	कोई तक्लीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी

لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ

चल पड़ा	उस की तक्लीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या (और)	बैठा हुआ	या (और)	अपने पहलू पर (लेटा हुआ)

كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ

हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तक्लीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो

لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا

और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ

हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुज्रिमों की	क़ौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे

خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर (उन के सामने)	पढ़ी जाती हैं	और जब

لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ

मेरे लिए	नहीं है	आप कह दें	बदलदो इसे	या	इस के अ़लावा	कोई क़ुरआन	तुम ले आओ	हम से मिलने की

اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ

मेरी तरफ़	वहि की जाती है	मगर जो	मैं नहीं पैरवी करता	अपनी	जानिब	से	उसे बदलूं	कि

اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ

आप कह दें	15	बड़ा	दिन	अ़ज़ाब	अपना रब	मैं ने नाफ़रमानी की	अगर	डरता हूँ	बेशक मैं

لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۫ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ

तहक़ीक़ मैं रह चुका हूँ	उस की	और न ख़बर देता तुम्हें	तुम पर	न पढ़ता मैं उसे	अगर चाहता अल्लाह

فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

उस से जो	बड़ा ज़ालिम	सो कौन	16	अ़क्ल से काम लेते तुम	सो क्या न	इस से पहले	एक उम्र	तुम में

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

फ़लाह नहीं पाते	बेशक वह	उस की आयतों को	या झुटलाए	झूट	अल्लाह पर	बान्धे

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ

न ज़रर पहुंचा सके उन्हें	जो	अल्लाह के सिवा	से	और वह पूजते हैं	17	मुज्रिम (जमा)

وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के पास	हमारे सिफ़ारिशी	यह सब	और वह कहते हैं	और न नफ़ा दे सके उन्हें

قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन	में	और न	आस्मानों में	वह नहीं जानता	उस की जो	अल्लाह	क्या तुम ख़बर देते हो	आप (स) कह दें

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ

लोग	और न थे	18	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बालातर	वह पाक है

اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

से	पहले हो चुकी	बात	और अगर न	फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	उम्मते वाहिद	मगर

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	19	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	उस में जो	उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	तेरा रब

لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	तो कह दें	उस के रब से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी

ع ٢ ١٠ ٧ الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	अल्लाह के लिए	ग़ैब

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अ़लावा तुम कोई और क़ुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिब से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, बेशक मुजरिम फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रर पहुँचा सकें और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं। आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मते वाहिद, फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तक्लीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगें) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ ख़ुफ़िया तदबीर (बना सकता है), बेशक तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)
वही है जो तुम्हें चलाता है ख़ुश्की में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से ख़ुश हुए, उस (कश्ती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगईं, और उन्हों ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)
फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का वबाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा हैं) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)
इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ह मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन वालों ने ख़याल किया कि वह उस पर क़ुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (24)
और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ

हीला	उन के लिए	उसी वक़्त	उन्हें पहुँची	तक्लीफ़	बाद	रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब

فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	जो तुम हीले साज़ी करते हो	वह लिखते हैं	हमारे फ़रिश्ते	बेशक	ख़ुफ़िया तदबीर	सब से जल्द	अल्लाह	आप (स) कह दें	हमारी आयात	में

هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ

कश्ती में	तुम हो	जब	यहां तक	और दर्या	ख़ुश्की में	तुम्हें चलाता है	जो कि	वही

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ

तुन्द ओ तेज़	एक हवा	उस पर आई	उस से	और वह ख़ुश हुए	पाकीज़ा	हवा के साथ	उन के साथ	और वह चलें

وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا

वह पुकारने लगे	उन्हें	घेर लिया गया	कि वह	और उन्हों ने जान लिया	हर जगह (हर तरफ़)	से	मौज	और उन पर आई

اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ

तो हम ज़रूर होंगे	उस	से	तू नजात दे हमें	अलबत्ता अगर	दीन (बन्दगी)	उस के	ख़ालिस हो कर	अल्लाह

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ

नाहक़	ज़मीन	में	सरकशी करने लगे	वह	उस वक़्त	उन्हें नजात दे दी	फिर जब	22	शुक्रगुज़ार (जमा)	से

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫

दुनिया	ज़िन्दगी	फ़ाइदे	तुम्हारी जानों	पर	तुम्हारी शरारत	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ

मिसाल	इस के सिवा नहीं	23	तुम करते थे	वह जो	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	तुम्हें लौटना	हमारी तरफ़	फिर

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

ज़मीन का सब्ज़ा	उस से	तो मिला जुला निकला	आस्मान से	हम ने उसे उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी

مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	पकड़ ली	जब	यहां तक कि	और चौपाए	लोग	खाते हैं	जिस से

زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ

आया	उस पर	क़ुदरत रखते हैं	कि वह	ज़मीन वाले	और ख़याल किया	और मुज़ैयन हो गई	अपनी रौनक़

اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ

वह न थी	गोया कि	कटा हुआ ढेर	तो हम ने कर दिया	या दिन के वक़्त	रात में	हमारा हुक्म

بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	24	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	कल

يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहे	और हिदायत देता है	सलामती का घर	तरफ़	बुलाता है

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ

और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्हों ने भलाई की	वह लोग जो कि

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا

उन्हों ने कमाईं	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग

السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۢبِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह	से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराइयां

مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ

तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला	कोई

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ

हम इकटठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग

جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ

और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्हों ने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब

فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह	पस काफ़ी

لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29	अलबत्ता बेख़बर (जमा)

ع ۳ ۱۰ النصف ۸

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ

कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	सच्चा	उन का (अपना) मौला

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़्क़ देता है तुम्हें

وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ

तदबीर करता है काम	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और कौन

فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ

सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	अल्लाह	सो वह बोल उठेंगे

فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	32	तुम फिरे जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया

حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्हों ने नाफ़रमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	बात	सच्ची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26)

और जिन लोगों ने बुराइयां कमाईं (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27)

और जिस दिन हम उन सब को इकटठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28)

पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29)

वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30)

आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़्क़ देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहदें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31)

पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32)

उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्हों ने नाफ़रमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

अल्लाह	आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप(स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करता है

مَّنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْۤ

राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कहदें	हक़ की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ قف

सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक़ दार	हक़ की तरफ़ (सही)

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ

नहीं काम देता	गुमान	बेशक	मगर गुमान	उन के अक्सर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा

مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا

यह- इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	ख़ूब जानता है	बेशक अल्लाह	कुछ भी	हक़	से (का)

الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ

उस की जो	तस्दीक़	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	क़ुरआन

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ قف

37	तमाम जहानों	रब	से	उस में	कोई शक नहीं	किताब	और तफ़्सील	उस से पहले

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ

जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या

اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको

بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ

झुटलाया	उसी तरह	उस की हक़ीक़त	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं क़ाबू पाया	वह जो

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ

ख़ूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ ع ٩

तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	मेरे अ़मल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर	40	फ़साद करने वालों को

اَنْتُمْ بَرِيْٓــُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदेह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदेह नहीं	तुम

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप(स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? **(34)** आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हक़दार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (ख़ुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? **(35)** और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, बेशक गुमान हक़ (की मुआ़रिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह करते हैं। **(36)** और यह क़ुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुक्म के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तस्दीक़ करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़्सील है, उस में कोई शक नहीं कि यह तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से है। **(37)** क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। **(38)** बल्कि उन्हों ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्हों ने क़ाबू नहीं पाया, और उस की हक़ीक़त अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? **(39)** और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को ख़ूब जानता है। **(40)** और अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अ़मल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। **(41)**

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

ख़्वाह	बहरे	सुनाओगे	तो क्या तुम	आप (स) की तरफ़	कान लगाते हैं	जो (बाज़)	और उन में से

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ

अन्धे	राह दिखा दोगे	पस क्या तुम	आप (स) की तरफ़	देखते हैं	जो (बाज़)	और उन से	42	वह अक़्ल न रखते हों

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	कुछ भी	लोग	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	43	वह देखते न हों	ख़्वाह

النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا

मगर	वह न रहे थे	गोया	जमा करेगा उन्हें	और जिस दिन	44	ज़ुल्म करते हैं	अपने आप पर	लोग

سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	वह लोग	अलबत्ता ख़सारे में रहे	आपस में	वह पहचानेंगे	दिन से (की)	एक घड़ी

بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

वह जो	बाज़ (कुछ)	हम तुझे दिखा दें	और अगर	45	हिदायत पाने वाले	वह न थे	अल्लाह से मिलने को

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى

पर	गवाह	अल्लाह	फिर	उन का लौटना	पस हमारी तरफ़	हम तुम्हें उठालें	या	वादा करते हैं हम उन से

مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला कर दिया गया	उन का रसूल	आगया	पस जब	रसूल	उम्मत	और हर एक के लिए	46	जो वह करते हैं

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं	47	ज़ुल्म नहीं किए जाते	और वह	इन्साफ़ के साथ

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا

जो	मगर	और न नफ़ा	किसी नुक़्सान	अपनी जान के लिए	नहीं मालिक हूँ मैं	आप कह दें	48	सच्चे	तुम हो

شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً

एक घड़ी	पस न ताख़ीर करेंगे वह	उन का वक़्त	आजाएगा	जब	एक वक़्त मुक़र्रर	हर एक उम्मत के लिए	चाहे अल्लाह

وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

या दिन के वक़्त	रात को	उस का अज़ाब	अगर तुम पर आए	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	49	जल्दी करेंगे वह	और न

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

उस पर	तुम ईमान लाओगे	वाक़े होगा	जब	क्या फिर	50	मुजरिम (जमा)	उस से - उस की	जल्दी करते हैं	क्या है वह

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	उन लोगों को जो	कहा जाएगा	फिर	51	तुम जल्दी मचाते	उस की	और अलबत्ता तुम थे	अब

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	तुम कमाते थे	वह जो	मगर	तुम्हें बदला दिया जाता	क्या नहीं	हमेशगी	अज़ाब	तुम चखो

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक़्ल न रखते हों। (42)
और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43)
बेशक अल्लाह ज़ुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं। (44)
और जिस दिन (योमे हश्र) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45)
और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46)
हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (47)
और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48)
आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़्सान का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताख़ीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49)
आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस की मुजरिम जल्दी कर रहे हैं? (50)
क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक़्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51)
फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अज़ाब चखो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

ع ١٣ ١٠ وقف النبی

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ۟ ٥٣

53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	बेशक वह	मेरे रब की क़सम	हां	आप कह दें	वह	क्या सच है	और आप (स) से पूछते हैं

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِی الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

पशेमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फ़िदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ	उस ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	हर एक शख़्स के लिए	हो	और अगर

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ٥٤

54	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला होगा	अज़ाब	वह देखेंगे	जब

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	बेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	बेशक	याद रखो

اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ٥٥ هُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ٥٦

56	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ

सीनों (दिलों) में	उस के लिए जो	और शिफ़ा	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तहक़ीक़ आगई तुम्हारे पास	लोगो	ऐ

وَهُدًی وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ٥٧ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ

और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़्ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत

فَبِذٰلِكَ فَلْیَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ٥٨ قُلْ اَرَءَیْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ

जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह-यह	वह ख़ुशी मनाएं	सो उस पर

اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ

हुक्म दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़्क़	से	तुम्हारे लिए	अल्लाह

لَكُمْ اَمْ عَلَی اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ٥٩ وَمَا ظَنُّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللّٰهِ

अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	ख़याल	और क्या	59	तुम झूट बान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें

الْكَذِبَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَی النَّاسِ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़्ल करने वाला	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट

اَكْثَرَهُمْ لَا یَشْكُرُوْنَ ٦٠ وَمَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ ع ٦ ١١

से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर

قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَیْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِیْضُوْنَ

जब तुम मशग़ूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अ़मल	और नहीं करते	क़ुरआन

فِیْهِ ؕ وَمَا یَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا

और न	ज़मीन में	एक ज़र्रा	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	ग़ाइब	और नहीं	उस में

فِی السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ٦١

61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस	से	छोटा	और न	आस्मान	में

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहदें हां! मेरे रब की क़सम! बेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)

और अगर हर ज़ालिम शख़्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फ़िदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (54)

याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! बेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)

वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)

ऐ लोगो! तहक़ीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57)

आप (स) कहदें, अल्लाह के फ़ज़्ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर ख़ुशी मनाएं, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)

आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हराम बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)

और उन लोगों का क्या ख़याल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)

और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ क़ुरआन पढ़ते हो, और न कोई अ़मल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़बर) होते हैं जब तुम उस में मशग़ूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़र्रा बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ ج

62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	न कोई ख़ौफ़	अल्लाह के दोस्त	बेशक	याद रखो

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ط لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	में	बशारत	उन के लिए	63	और वह तक़्वा करते रहे	ईमान लाए	वह लोग जो

وَفِى الْاٰخِرَةِ ط لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ط ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह	अल्लाह	बातों में	तबदीली नहीं	आख़िरत	और में

وقف لازم

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ ط وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	ग़लबा	बेशक	उन की बात	तुम्हें ग़मगीन करे	और न	64	बड़ी	कामयाबी

جَمِيْعًا ط هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कुछ	अल्लाह के लिए	बेशक	याद रखो	65	जानने वाला	सुनने वाला	वह	तमाम

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ط وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	पुकारते हैं	वह लोग जो	पैरवी करते हैं	क्या - किस	ज़मीन में	और जो

اللّٰهِ شُرَكَآءَ ط اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	वह	और नहीं	गुमान	मगर	वह नहीं पैरवी करते	शरीक (जमा)	अल्लाह

يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाया	जो - जिस	वही	66	अटकलें दौड़ाते हैं

فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	सुनने वाले लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	दिखाने वाला (रौशन)	और दिन	उस में

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ط هُوَ الْغَنِىُّ ط لَهٗ مَا

जो	उस के लिए	बेनियाज़	वह	वह पाक है	बेटा	अल्लाह	बना लिया	वह कहते हैं

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ط اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ

कोई	तुम्हारे पास	नहीं	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ط اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो	उस के लिए	दलील

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	आप (स) कह दें

لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ ط مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

फिर	उन को लौटना	हमारी तरफ़	फिर	दुनिया में	कुछ फ़ाइदा	69	वह फ़लाह नहीं पाएंगे

ع ۲ الثلثة

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع

70	वह कुफ़्र करते थे	उस के बदले	शदीद	अज़ाब	हम चखाएंगे उन्हें

याद रखो! बेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक़्वा (ख़ौफ़े ख़ुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए बशारत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। बेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! बेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ़) गुमान की पैरवी करते हैं, ओर वह सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिम करो और दिन रौशन, बेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह बेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, बेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़्र करते थे। (70)

وقف لازم

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का क़िस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गरां है मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुक़र्रर (पक्का) कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71)

फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फ़रमांबरदारों में से। (72)

तो उन्हों ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जाँनशीन बनाया, और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73)

फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएं उस (बात) पर जिसे वह उस से क़ब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74)

फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75)

तो जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76)

मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक़ की निस्बत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77)

वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	ख़बर (क़िस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो

مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

पस तुम मुक़र्रर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क़ियाम

اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ

मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुबाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम

وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ

मेरा अजर	तो - सिर्फ़	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो

اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने उसे झुटलाया	72	फ़रमांबरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ़)

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

और हम ने ग़र्क़ कर दिया	जांशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कश्ती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की क़ौम	तरफ़	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर

فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى

पर	हम मुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से क़ब्ल	उस को	उन्हों ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएं

قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى

तरफ़	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)

فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	अपनी निशानियाँ के साथ	उस के सरदार	फ़िरऔन

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

76	खुला	अलबत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ़	से	हक़	आया उन के पास	तो जब

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक़ के लिए (निस्बत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर

وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ

जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फ़िरऔन	और कहा

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى

मूसा (अ)	कहा	उन्हों ने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा

مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ

काम	नहीं दुरुस्त करता	बेशक अल्लाह	अभी बातिल कर देगा उसे	बेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो

ع ۸ ۱۲ ۱۳ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	मुज्रिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख़्वाह	अपने हुक्म से	हक़	अल्लाह	और हक़ कर देगा	81	फ़साद करने वाले

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	से (के)	ख़ौफ़ की वजह से	उस की क़ौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न

وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ

और बेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फ़िरऔन	और बेशक	वह आफ़त में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार

لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी क़ौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता- से

فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्हों ने कहा	84	फ़रमांबरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ۙ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ

से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	क़ौम का	तख़्ता-ए-मशक़	न बना हमें	ऐ हमारे रब

الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ

कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	86	काफ़िर (जमा)	क़ौम

لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا

और क़ाइम करो	क़िबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी क़ौम के लिए

الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ

बेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और ख़ुशख़बरी दो	नमाज़

اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ

दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फ़िरऔन	तू ने दिए

رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर

और फ़िरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79)

फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80)

फिर उन्हों ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे बातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81)

और अल्लाह हक़ को अपने हुक्म से हक़ (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82)

सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम के चन्द लड़के ख़ौफ़ की वजह से फ़िरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फ़िरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83)

और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। (84)

तो उन्हों ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की क़ौम का तख़्ता-ए-मशक़। (85)

और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से छुड़ादे। (86)

और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी क़ौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर क़िब्ला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ क़ाइम करो, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो। (87)

और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

राह	और न चलना	सो तुम दोनों साबित क़दम रहो	तुम्हारी दुआ	क़ुबूल हो चुकी	उस ने फ़रमाया

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ

पस पीछा किया उन का	दर्या	बनी इस्राईल को	और हम ने पार कर दिया	89	नावाक़िफ़ हैं	उन लोगों की जो

فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ

वह कहने लगा	ग़रक़ाबी	जब उसे आ पकड़ा	यहां तक कि	और ज़ियादती	सरकशी	और उस का लशकर	फ़िरऔन

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल	उस पर	वह जिस पर ईमान लाए	सिवाए	माबूद	नहीं	कि वह	मैं ईमान लाया

وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ

से	और तू रहा	पहले	और अलबत्ता तू नाफ़रमानी करता रहा	क्या अब	90	फ़रमांबरदार (जमा)	से	और मैं

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

तेरे बाद आएं	उन के लिए जो	ताकि तू रहे	तेरे बदन से	हम तुझे बचा लेंगे	सो आज	91	फ़साद करने वाले

اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ع وَلَقَدْ بَوَّاْنَا ع ٩ ١٤

और अलबत्ता हम ने ठिकाना दिया	92	ग़ाफ़िल हैं	हमारी निशानियां	से	लोगों में से	अक्सर	और बेशक	एक निशानी

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ

पाकीज़ा चीज़ें	से	और हम ने रिज़्क़ दिया उन्हें	अच्छा	ठिकाना	बनी इस्राईल

فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	बेशक	इल्म	आगया उन के पास	यहां तक कि	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ

में शक में	तू है	पस अगर	93	वह इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में जो	रोज़े क़ियामत

مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْــَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

तुम से पहले	किताब	पढ़ते हैं	वह लोग जो	तो पूछ लें	तेरी तरफ़	हम ने उतारा	उस से जो

لَقَدْ جَاۗءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾ۙ

94	शक करने वाले	से	पस न होना	तेरा रब	से	हक़	तहक़ीक़ आगया तेरे पास

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	फिर तू हो जाए	अल्लाह	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	से	और न होना

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

तेरा रब	बात	उन पर	साबित हो गई	बेशक वह लोग जो	95	ख़सारा पाने वाले

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ۙ وَلَوْ جَاۗءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

97	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	हर निशानी	आजाए उन के पास	ख़्वाह	96	वह ईमान न लाएंगे

उस ने फ़रमाया तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो चुकी है सो तुम दोनो साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो नावाक़िफ़ हैं। (89)
और हम ने बनी इस्राईल को पार कर दिया दर्या से, पस फ़िरऔन और उस के लशकर ने सरकशी और ज़ियादती से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उसको ग़रक़ाबी ने आ पकड़ा वह कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं हूँ फ़रमांबरदारों में से। (90)
क्या अब? (ईमान की बात करता है) और अलबत्ता पहले तो नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से रहा। (91)
सो आज हम तुझे तेरे बदन से बचाएंगे (ग़रक़ नहीं करेंगे) ताकि तू (तेरी लाश) उन के लिए जो तेरे बाद आएं (इब्रत की) एक निशानी रहे, और बेशक लोगों में से अक्सर हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं। (92)
और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया, और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया पाकीज़ा चीज़ों से, सो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उन के पास इल्म आगया, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला करेगा रोज़े क़ियामत जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (93)
पस अगर तू उस (के बारे) में शक में हो तो हम ने उतारा तेरी तरफ़, तो उन लोगों से पूछ जो तुझ से पहले किताब पढ़ते हैं, तहक़ीक़ तेरे पास हक़ आगया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस शक करने वालों से न होना। (94)
और न उन लोगों से होना जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह की आयतों को, फिर तुम ख़सारा पाने वालों से हो जाओ। (95)
बेशक जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गई वह ईमान न लाएंगे। (96)
अगरचे उन के पास हर निशानी आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें। (97)

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ

जब	क़ौम यूनुस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न

اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ

और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अ़ज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए

اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ

वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक मुद्दत तक

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाएं	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू

اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्मे इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي

और नहीं फ़ाइदा देतीं	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अ़क्ल नहीं रखते

الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا

मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियां

مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाक़िआत)	जैसे

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से

ع ۱۰ ۱۱ ۱۵ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक़ हम पर

فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दीन	से	किसी शक में

وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठालेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और हरगिज़ न होना	सब से मुँह मोड़ कर	दीन के लिए	अपना मुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ

न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुशरिकीन	से

وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक़्सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनुस (अ) की क़ौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अ़ज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक मुद्दत तक नफ़ा पहुँचाया। (98)

और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में हैं सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाएं। (99)

और किसी शख़्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़्र की) गन्दगी उन लोगों पर जो अ़क़्ल नहीं रखते। (100)

आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियां और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फ़ाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101)

तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाक़िआत का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102)

फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन (के मुतअ़ल्लिक़) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104)

और यह कि अपना मुँह सब से मोड़ कर दीन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुशरिकों में से न होना। (105)

और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़्सान पहुँचा सके, फ़िर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ

तेरा चाहे	और अगर	उस के सिवा	उस का	तो नहीं हटाने वाला	कोई नुक़सान	अल्लाह	पहुँचाए तुझे	और अगर

بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ

और वह	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिसे	उस को	वह पहुँचाता है	उस के फ़ज़्ल को	तो नहीं कोई रोकने वाला	भला

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

से	हक़	पहुँच चुका तुम्हारे पास	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	107	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपनी जान के लिए	उस ने हिदायत पाई	तो सिर्फ़	हिदायत पाई	तो जो	तुम्हारा रब

يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى

वहि होती है	जो	और पैरवी करो	108	मुख़्तार	तुम पर	मैं	और नहीं	उस पर (बुरे को)	वह गुमराह हुआ

اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع ١١ ١٦

109	फ़ैसला करने वाला	बेहतरीन	और वह	अल्लाह	फ़ैसला कर दे	यहां तक कि	और सबर करो	तुम्हारी तरफ़

آيَاتُهَا ١٢٣ ❀ سُوْرَةُ هُوْدٍ (١١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकुआत 10 — (11) सूरह हूद / हूद (अ) — आयात 123

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

1	ख़बरदार	हिक्मत वाले	पास	से	तफ़्सील की गई	फिर	इस की आयात	मज़बूत की गई	यह किताब	अलिफ़ लाम रा

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا

मग़फ़िरत तलब करो	और यह कि	2	और ख़ुशख़बरी देने वाला	डराने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह के सिवा	इबादत करो	यह कि न

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्रर	वक़्त	तक	अच्छी	मताअ़	वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें	उस की तरफ़ रुजुअ़ करो	फिर	अपना रब

وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	तो बेशक मैं	फिर जाओ	और अगर तुम	अपना फ़ज़्ल	फ़ज़्ल वाला	हर	और देगा

يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾ اَلَآ

याद रखो	4	कुदरत वाला	हर शै	पर	और वह	लौटना है तुम्हें	अल्लाह की तरफ़	3	बड़ा	एक दिन

اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۭ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ

अपने कपड़े	पहनते हैं	जब	याद रखो	उस से	ताकि छुपालें	अपने सीने	दोहरे करते हैं	बेशक वह

يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

5	दिलों के भेद	जानने वाला	बेशक वह	और जो वह ज़ाहिर करते हैं	जो वह छुपाते हैं	वह जानता है

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुक़सान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख़्तार नहीं हूँ, (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ वहि हुई है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गईं, फिर तफ़सील की गईं हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्ररा वक़्त तक, और देगा हर फ़ज़्ल वाले को अपना फ़ज़्ल, और अगर तुम फिर जाओ तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (4)

याद रखो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

الجزء ١٢

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

उस का रिज़्क़	अल्लाह	पर	मगर	ज़मीन	में (पर)	चलने वाला	से (कोई)	और नहीं

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾

6	रौशन किताब	में	सब कुछ	और उस के सोंपे जाने की जगह	उस का ठिकाना	और वह जानता है

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ

और था	छः (6) दिन	में	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जो - जिस	और वही

عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ

आप कहें	और अगर	अ़मल में	बेहतर	तुम में कौन	ताकि तुम्हें आज़माए	पानी पर	उस का अर्श

اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَآ

नहीं यह	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	तो ज़रूर कहेंगे वह	मौत - मरना	बाद	उठाए जाओगे	कि तुम

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ

एक मुद्दत	तक	अ़ज़ाब	उन से	हम रोक रखें	और अगर	7	खुला	जादू	मगर (सिर्फ़)

مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا

टाला जाएगा	न	उन पर आएगा	जिस दिन	याद रखो	क्या रोक रही है उसे	तो वह ज़रूर कहेंगे	गिनी हुई - मुऐयन

ع ٨/١ عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنَا

हम चखादें	और अगर	8	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जिस	उन्हें	और घेरलेगा	उन से

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾

9	नाशुक्रा	अलबत्ता मायूस	बेशक वह	उस से	हम छीन लें वह	फिर	कोई रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान को

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

जाती रहीं	तो वह ज़रूर कहेगा	उसे पहुँची	सख़्ती के बाद	नेमत (आराम)	उसे चखादें	और अगर

السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا

जिन लोगों ने सब्र किया	मगर	10	शेख़ीख़ोर	इतराने वाला	बेशक वह	मुझ से	बुराइयां

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11	बड़ा	और सवाब	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक	और अ़मल किए

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ

उस से	और तंग होगा	तेरी तरफ़	वहि किया गया	जो	कुछ हिस्सा	छोड़ दोगे	तो शायद (क्या) तुम

صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ

उस के साथ	आया	या	ख़ज़ाना	उस पर	उतरा	क्यों न	कि वह कहते हैं	तेरा सीना (दिल)

مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾

12	इख़्तियार रखने वाला	हर शै	पर	और अल्लाह	डराने वाले	कि तुम	इसके सिवा नहीं	फ़रिश्ता

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़्क़ अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सोंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (6)

और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्श पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आज़माए कि तुम में कौन बेहतर है अ़मल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग ज़रूर कहेंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7)

और अगर हम उन से अ़ज़ाब रोक रखें एक मुद्दते मुऐयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अ़ज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (8)

और अगर हम इन्सान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा चखादें फिर वह उस से छीन लें, तो बेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9)

और अगर हम उसे सख़्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयां जाती रहीं, बेशक वह इतराने वाला शेख़ी ख़ोर है। (10)

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अ़मल किए यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (11)

तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ वहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई ख़ज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहदें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सको	और तुम बुला लो

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّاۤ اِلٰهَ

कोई माबूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें

اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा

وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

15	कमी किए जाएंगे (नुक़सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अ़मल	उन के लिए	हम पूरा कर देंगे	और उस की ज़ीनत

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا

जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आख़िरत में	उन के लिए	वह जो कि	यही लोग

صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नाबूद हुए	उस में	उन्हों ने किया

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى

मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता

اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ

से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम

الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ

बेशक वह हक़	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना	गिरोहों में

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो

وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا

याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्हों ने	यही हैं	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	मुन्किर (जमा)	वह	आख़िरत से	और वह	कजी	और उस मे ढून्डते हैं

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (क़ुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुई ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)

फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14)

जो कोई चाहता है दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अ़मल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15)

यही लोग हैं जिन के लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्हों ने किया और जो वह करते थे नाबूद हुए। (16)

पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, बेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17)

और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (19)

أُولَٰٓئِكَ لَمْ يَكُونُوا۟ مُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم

उन के लिए	और नहीं है	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं हैं	यह लोग

وقف لازم
مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۘ يُضَٰعَفُ لَهُمُ ٱلْعَذَابُ ۚ مَا

न	अ़ज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा	से

كَانُوا۟ يَسْتَطِيعُونَ ٱلسَّمْعَ وَمَا كَانُوا۟ يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ

वह जिन्हों ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताक़त रखते थे

خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ

शक नहीं	21	वह इफ़तिरा करते थे (झूट बान्धते थे)	जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक़्सान किया

أَنَّهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ هُمُ ٱلْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟

और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	22	सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले	वह	आख़िरत में	कि वह

ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَأَخْبَتُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۙ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ هُمْ

उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे	और आजिज़ी की	नेक

فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ ٱلْفَرِيقَيْنِ كَٱلْأَعْمَىٰ وَٱلْأَصَمِّ وَٱلْبَصِيرِ

और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा	दोनों फ़रीक़	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे

ع ۱۶ ۲ ۲
وَٱلسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا

और हम ने भेजा	24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते	मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं	और सुनता

نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا

सिवाए	न परस्तिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)

ٱللَّهَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ ٱلْمَلَأُ

सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह

ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ مَا نَرَىٰكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَىٰكَ

और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की क़ौम के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

ٱتَّبَعَكَ إِلَّا ٱلَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِىَ ٱلرَّأْىِ ۚ وَمَا نَرَىٰ

हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से	नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए	तेरी पैरवी करें

لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ

तुम देखो तो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम ख़याल करते हैं तुम्हें	फ़ज़ीलत	कोई	हम पर	तुम्हारे लिए

إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَءَاتَىٰنِى رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِۦ

अपने पास से	रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से	वाज़ेह दलील	पर	मैं हूँ	अगर

فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَٰرِهُونَ ﴿٢٨﴾

28	बेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं	तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अ़ज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आख़िरत में सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले हैं। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक़ की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परस्तिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (बे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा ख़याल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ेह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ़) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएं? और तुम उस से बेज़ार हो। (28)

وَيٰقَوْمِ لَاۤ اَسْــَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ

और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी क़ौम

اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّىْۤ اَرٰٮكُمْ قَوْمًا

एक क़ौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	बेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ

मैं हांक दूँ उन्हें	अगर	अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी क़ौम	29	जहालत करते हो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَـكُمْ عِنْدِىْ خَزَآٮِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम ग़ौर नहीं करते

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ

तुम्हारी आँखें	हक़ीर समझती हैं	उन लागों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ ۖۚ اِنِّىْۤ

बेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	खूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त

فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ

सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ

بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِىْۤ اِنْ

अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को

اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَـكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۚ قف

तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ

وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰٮهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़

فَعَلَىَّ اِجْرَامِىْ وَاَنَا بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاُوْحِىَ اِلٰى نُوْحٍ ٣ ع ١١ ٣

नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर

اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَٮِٕسْ

पस तू ग़मगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी क़ौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह

بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कश्ती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो

وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	डूबने वाले	बेशक वह	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक क़ौम हो कि जहालत करते हो। (29)
और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (30)
और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हक़ीर समझती हैं (तुम हक़ीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह खूब जानता है (अगर एसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से हूंगा। (31)
वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अ़ज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चों में से है। (32)
उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अ़ज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33)
और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34)
क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35)
और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी क़ौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर ग़मगीन न हो जो वह करते हैं। (36)
और तू हमारे सामने कश्ती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक़) में मुझ से बात न करना, बेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَصۡنَعُ الۡفُلۡكَ ۚ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيۡهِ مَلَاٌ مِّنۡ قَوۡمِهٖ سَخِرُوۡا مِنۡهُ ؕ

उस से (पर)	वह हँसते	उस की क़ौम	से (के)	सरदार	उस पर	गुज़रते	और जब भी	कश्ती	और वह बनाता था

قَالَ اِنۡ تَسۡخَرُوۡا مِنَّا فَاِنَّا نَسۡخَرُ مِنۡكُمۡ كَمَا تَسۡخَرُوۡنَ ؕ ﴿۳۸﴾ فَسَوۡفَ

सो अ़नक़रीब	38	तुम हंसते हो	जैसे	तुम से (पर)	हसेंगे	तो बेशक हम	हम से (पर)	तुम हँस्ते हो	अगर	उस ने कहा

تَعۡلَمُوۡنَ ۙ مَنۡ يَّاۡتِيۡهِ عَذَابٌ يُّخۡزِيۡهِ وَيَحِلُّ عَلَيۡهِ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ﴿۳۹﴾

39	दाइमी	अ़ज़ाब	उस पर	और उतरता है	उस को रुस्वा करे	ऐसा अ़ज़ाब	किस पर आता है	तुम जान लोगे

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا وَفَارَ التَّنُّوۡرُ ۙ قُلۡنَا احۡمِلۡ فِيۡهَا مِنۡ

से	उस में	चढ़ा ले	हम ने कहा	तन्नूर	और जोश मारा	हमारा हुक्म	जब आया	यहां तक कि

كُلٍّ زَوۡجَيۡنِ اثۡنَيۡنِ وَاَهۡلَكَ اِلَّا مَنۡ سَبَقَ عَلَيۡهِ الۡقَوۡلُ

हुक्म	उस पर	हो चुका	जो	मगर	और अपने घर वाले	दो (नर मादा)	हर एक जोड़ा

وَمَنۡ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيۡلٌ ﴿۴۰﴾ وَقَالَ ارۡكَبُوۡا فِيۡهَا

इस में	सवार हो जाओ	और उस ने कहा	40	मगर थोड़े	उस पर	ईमान लाए	और न	ईमान लाया	और जो

بِسۡمِ اللّٰهِ مَجۡرٖٮهَا وَمُرۡسٰٮهَا ؕ اِنَّ رَبِّىۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۴۱﴾ وَهِىَ تَجۡرِىۡ

चली	और वह	41	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला	मेरा रब	बेशक	और उसका ठहरना	उस का चलना	अल्लाह के नाम से

بِهِمۡ فِىۡ مَوۡجٍ كَالۡجِبَالِ ۚ وَنَادٰى نُوۡحُ ۨابۡنَهٗ وَكَانَ فِىۡ مَعۡزِلٍ

किनारे में	और था	अपना बेटा	नूह (अ)	और पुकारा	पहाड़ जैसी	लहरों में	उन को ले कर

يّٰبُنَىَّ ارۡكَبۡ مَّعَنَا وَلَا تَكُنۡ مَّعَ الۡـكٰفِرِيۡنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ سَاٰوِىۡۤ

मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ	उस ने कहा	42	काफ़िरों के साथ	और न रहो	हमारे साथ	सवार हो जा	ऐ मेरे बेटे

اِلٰى جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِىۡ مِنَ الۡمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الۡيَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ

अल्लाह का हुक्म	से	आज	कोई बचाने वाला नहीं	उस ने कहा	पानी से	वह बचा लेगा मुझे	किसी पहाड़ की तरफ़

اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيۡنَهُمَا الۡمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِيۡنَ ﴿۴۳﴾

43	डूबने वाले	से	तो वह हो गया	मौज	उन के दरमियान	और आगई	जिस पर वह रहम करे	सिवाए

وَقِيۡلَ يٰۤاَرۡضُ ابۡلَعِىۡ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقۡلِعِىۡ وَغِيۡضَ الۡمَآءُ

पानी	और खुश्क कर दिया गया	थम जा	और ऐ आस्मान	अपना पानी	निगल ले	ऐ ज़मीन	और कहा गया

وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَى الۡجُوۡدِىِّ وَقِيۡلَ بُعۡدًا لِّلۡقَوۡمِ

लोगों के लिए	दूरी	और कहा गया	जूदी पहाड़ पर	और जा लगी	काम	और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)

الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۴﴾ وَنَادٰى نُوۡحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابۡنِىۡ

मेरा बेटा	बेशक	ऐ मेरे रब	पस उस ने कहा	अपना रब	नूह (अ)	और पुकारा	44	ज़ालिम (जमा)

مِنۡ اَهۡلِىۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الۡحَـقُّ وَاَنۡتَ اَحۡكَمُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۴۵﴾

45	हाकिम (जमा)	सब से बड़ा हाकिम	और तू	सच्चा	तेरा वादा	और बेशक	मेरे घर वालों में से

और वह (नूह अ) कश्ती बनाता था और जब भी उस की क़ौम के सरदार उस (के पास) से गुज़रते तो वह उस पर हँस्ते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हँस्ते हो तो बेशक हम (भी) तुम पर हँसेंगे जैसे तुम हँस्ते हो। (38)
सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अ़ज़ाब आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अ़ज़ाब। (39)
यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कश्ती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (ग़र्क़ाबी का) हुक्म हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)
और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, बेशक अलबत्ता मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (41)
और वह (कश्ती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)
उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ़ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुक्म से, सिवाए उस के जिस पर वह रहम करे, और उन के दरमियान मोज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शमिल) हो गया। (43)
और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को ख़ुश्क कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कश्ती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)
और पुकारा नूह (अ) ने अपने रब को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

قرأ حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

الربع

उस ने फ़रमाया, ऐ नूह (अ)! बेशक वह तेरे घर वालों में से नहीं, बेशक उस के अ़मल नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात का सवाल न कर जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू नादानों में से (न) हो जाए, (46)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे न बख़्शे और मुझ पर रह्म न करे तो मैं नुक़्सान पाने वालों में से हो जाऊं। (47)
कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी तरफ़ से सलामती के साथ उतर जाओ और बरकतें हों तुझ पर, और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ हैं और कुछ गिरोह हैं कि हम उन्हें जल्द (दुनिया में) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अ़ज़ाब दर्दनाक। (48)
यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन को जानते थे इस से पहले और न तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस सब्र करो, बेशक परहेज़गारों का अन्जाम अच्छा है। (49)
क़ौमे आ़द की तरफ़ उन के भाई हूद (अ) (आए), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट बान्धते हो (इफ़तिरा करते हो) (50)
ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे पैदा किया, फिर क्या तुम समझते नहीं? (51)
और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो (तौबा करो), वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की बारिश भेजेगा, और तुम्हें कुव्वत पर कुव्वत बढ़ाएगा और मुज्रिम हो कर रूगर्दानी न करो। (52)
वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास कोई सनद ले कर नहीं आया, और हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों को तेरे कहने से, और हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (53)

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ

नाशाइस्ता	अ़मल	बेशक वह	तेरे घर वाले	से	नहीं	बेशक वह	ऐ नूह (अ)	उस ने फ़रमाया

فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ

से	तू हो जाए	कि	बेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	इल्म	उस का	तुझ को	ऐसी बात कि नहीं	सो मुझ से सवाल न कर

الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ

मुझे	ऐसी बात कि नहीं	मैं सवाल करूँ तुझ से	कि	तुझ से	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	46	नादान (जमा)

بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	नुक़्सान पाने वाले	से	हो जाऊं	और तू मुझ पर रह्म न करे	और अगर तू न बख़्शे मुझे	इल्म	उस का

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓي اُمَمٍ

और गिरोह पर	तुझ पर	और बरकतें	हमारी तरफ़ से	सलामती के साथ	उतर जाओ तुम	ऐ नूह (अ)	कहा गया

مِّمَّنْ مَّعَكَ ۭ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾

48	दर्दनाक	अ़ज़ाब	हम से	उन्हें पहुँचेगा	फिर	हम उन्हें जल्द फ़ाइदा देंगे	और कुछ गिरोह	तेरे साथ	से - जो

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

तुम	तुम उन को जानते थे	न	तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं उसे	ग़ैब की ख़बरें	से	यह

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ ع

49	परहेज़गारों के लिए	अच्छा अन्जाम	बेशक	पस सब्र करो	इस से पहले	से	तुम्हारी क़ौम	और न

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

कोई माबूद	तुम्हारा नहीं	अल्लाह	तुम इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	क़ौमे आ़द	और तरफ़

غَيْرُهٗ ۭ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

उस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	ऐ मेरी क़ौम	50	झूट बान्धते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम	नहीं	उस के सिवा

اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾

51	क्या फिर तुम समझते नहीं	जिस ने मुझे पैदा किया	पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा सिला	नहीं	कोई अजर (सिला)

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ

आस्मान	वह भेजेगा	उसी की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	और ऐ मेरी क़ौम

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

और रूगर्दानी न करो	तुम्हारि कुव्वत	तरफ़ (पर)	कुव्वत	और तुम्हें बढ़ाएगा	ज़ोर की बारिश	तुम पर

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	कोई दलील (सनद) ले कर	तू नहीं आया हमारे पास	ऐ हूद (अ)	वह बोले	52	मुज्रिम हो कर

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	ईमान लाने वाले	तेरे लिए (तुझ पर)	हम	और नहीं	तेरे कहने से	अपने माबूद	छोड़ने वाले

ع ٩

معانقة ٩ عند المتأخرين ١٢
الوقف على فاصبر احسن واليق ١٢

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّیْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ

नहीं	हम कहते हैं	मगर	तुझे आसेब पहुँचाया है	किसी	हमारा माबूद	बुरी तरह	उस ने कहा	बेशक मैं	गवाह करता हूँ	अल्लाह

وَاشْهَدُوْٓا اَنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِیْدُوْنِیْ جَمِیْعًا

और तुम गवाह रहो	बेशक मैं	बेज़ार हूँ	उन से	तुम शरीक करते हो	54	उस के सिवा	सो मक्र (बुरी तदबीर) करो मेरे बारे में	सब

ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾ اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَی اللّٰهِ رَبِّیْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ

फिर	मुझे मोहलत न दो	55	बेशक मैं	मैं ने भरोसा किया	अल्लाह पर	मेरा रब	और तुम्हारा रब	नहीं	चलने वाला	कोई

اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِیَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۵۶﴾ فَاِنْ

मगर	वह	पकड़ने वाला	उस को चोटी से	बेशक	मेरा रब	पर	रास्ता	सीधा	56	फिर अगर

تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَیْكُمْ ؕ وَیَسْتَخْلِفُ رَبِّیْ قَوْمًا

तुम रूगर्दानी करोगे	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	जो मुझे भेजा गया	उस के साथ	तुम्हारी तरफ़	और क़ाइम मुक़ाम कर देगा	मेरा रब	कोई और क़ौम

غَیْرَكُمْ ؕ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَیْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَفِیْظٌ ﴿۵۷﴾

तुम्हारे सिवा	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	कुछ	बेशक	मेरा रब	पर	हर शै	निगहबान	57

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا هُوْدًا وَّالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ

और जब	आया	हमारा हुक्म	हम ने बचा लिया	हूद (अ)	और वह लोग जो ईमान लाए	उस के साथ	रहमत से	अपनी

وَنَجَّیْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِیْظٍ ﴿۵۸﴾ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ

और हम ने उन्हें बचा लिया	से	अज़ाब	सख़्त	58	और यह	आद	उन्हों ने इन्कार किया	आयतों का	अपना रब

وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ ﴿۵۹﴾ وَاُتْبِعُوْا فِیْ

और उन्हों ने नाफ़रमानी की	अपने रसूल	और पैरवी की	हुक्म	हर सरकश	ज़िद्दी	59	और उन के पीछे लगादी गई	में

هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةً وَّیَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ

इस दुनिया	लानत	और रोज़े क़ियामत	याद रखो	बेशक	आद	वह मुन्किर हुए	अपना रब

وقف لازم ع ٥

اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ وَاِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ یٰقَوْمِ

याद रखो	फटकार	आद के लिए	हूद की क़ौम	60	और समूद की तरफ़	उन का भाई	सालेह (अ)	उस ने कहा	ऐ मेरी क़ौम

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

अल्लाह की इबादत करो	नहीं	तुम्हारे लिए	कोई माबूद	उस के सिवा	वह - उस	पैदा किया तुम्हें	ज़मीन से

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِیْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَیْهِ ؕ اِنَّ رَبِّیْ قَرِیْبٌ

और बसाया तुम्हें उस ने	उस में	सो उस से बख़्शिश मांगो	फिर	रुजूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	बेशक	मेरा रब	नज़्दीक

مُّجِیْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا یٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِیْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ

क़ुबूल करने वाला	61	वह बोले	ऐ सालेह (अ)	तू था	हम में (हमारे दरमियान)	मरकज़े उम्मीद	इस से क़ब्ल	क्या तू हमें मना करता है

اَنْ نَّعْبُدَ مَا یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِیْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَیْهِ مُرِیْبٍ ﴿۶۲﴾

कि हम परस्तिश करें	उसे जिस की परस्तिश करते थे	हमारे बाप दादा	और बेशक हम	शक में हैं	उस से जो	तू हमें बुलाता है	उस की तरफ़	क़वी शुबाह में	62

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेब पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा बेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे बारे में सब मक्र (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (क़ब्ज़े में लिए हुए है) बेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और क़ाइम मुक़ाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर शै पर निगहबान है। (57) और जब हमारा हुक्म आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख़्त अज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्हों ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफ़रमानी की, और हर सरकश ज़िद्दी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े क़ियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की क़ौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख़्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, बेशक मेरा रब नज़्दीक है, क़ुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से क़ब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थीं) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम क़वी शुबाह में हैं। (62)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ غَيْرَ

सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन	रहमत

تَخْسِيْرٍ ٦٣ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِىْٓ

में	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी क़ौम	63	नुक़्सान

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ٦٤

64	क़रीब (बहुत जल्द)	अ़ज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ

वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं

غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ٦٥ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला

مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْىِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ٦٦

66	ग़ालिब	क़वी	वह	तुम्हारा रब	बेशक	उस दिन की	और रुस्वाई से	अपनी रहमत से	उस के साथ

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ٦٧ لا

67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्हों ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا

फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्किर हुए	समूद	बेशक	याद रखो	उस में	न बसे थे	गोया

لِّثَمُوْدَ ٦٨ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ ع ٦ ٨ ٦

सलाम	वह बोले	ख़ुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर

قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ٦٩ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ

उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम	उस ने कहा

لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ

तुम डरो मत	वह बोले	ख़ौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते

اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ٧٠ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	क़ौमे लूत	तरफ़	बेशक हम भेजे गए हैं

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ٧١ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ

क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याक़ूब (अ)	इसहाक़ (अ)	और से (के) बाद	इसहाक़ (अ) की

وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ٧٢

72	अ़जीब	एक चीज़ (बात)	यह	बेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	और यह	बुढ़या	हालांकि मैं

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़्सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)

और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़्सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अ़ज़ाब पकड़लेगा। (64)

फिर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)

फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रुस्वाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66)

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)

गोया वह कभी यहां बसे ही न थे, याद रखो! बेशक क़ौमे समूद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)

और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)

फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से ख़ौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, बेशक हम क़ौमे लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)

और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे ख़ुशख़बरी दी इसहाक़ (अ), और इसहाक़ (अ) के बाद याक़ूब (अ) की। (71)

वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालांकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, बेशक यह एक अ़जीब बात है। (72)

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ

वह बोले	क्या तू तअज्जुब करती है	से	अल्लाह का हुक्म	अल्लाह की रहमत	और उस की बरकतें	तुम पर

اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ

ऐ घर वालो	बेशक वह	खूबियों वाला	बुज़ुर्गी वाला	73	फिर जब	जाता रहा	से (का)	इब्राहीम (अ)	ख़ौफ़

وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ

और उस के पास आगई	खुशख़बरी	हम से झगड़ने लगा	में	क़ौमे लूत	74	बेशक	इब्राहीम (अ)

لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿۷۵﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ

बुर्दबार	नर्म दिल	रुजूअ करने वाला	75	ऐ इब्राहीम (अ)	ऐराज़ कर	इस से	बेशक यह	आचुका

اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿۷۶﴾ وَلَمَّا

तेरे रब का हुक्म	और बेशक उन	उन पर आगया	अज़ाब	न टलाया जाने वाला	76	और जब

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا

आए	हमारे फ़रिश्ते	लूत (अ) के पास	वह ग़मगीन हुआ	उन से	और तंग हुआ	उन से	दिल में	और बोला	यह

يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿۷۷﴾ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا

बड़ा सख़्ती का दिन	77	और उस के पास आई	उस की क़ौम	दौड़ती हुई	उस की तरफ़	और उस से क़ब्ल

يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ

वह करते थे	बुरे काम	उस ने कहा	ऐ मेरी क़ौम	यह	मेरी बेटियां	यह	निहायत पाकीज़ा

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِىْ ضَيْفِىْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिए	पस डरो	अल्लाह	और न रुस्वा करो मुझे	मेरे मेहमानों में	क्या नहीं	तुम से (तुम में)	एक आदमी

رَّشِيْدٌ ﴿۷۸﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِىْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ

नेक चलन	78	वह बोले	तू तो जानता है	नहीं	हमारे लिए	तेरी बेटियों में	कोई	हक़

وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿۷۹﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً

और बेशक तू	खूब जानता है	हम क्या	चाहते हैं?	79	उस ने कहा	काश कि	मेरे लिए (मेरा)	तुम पर	कोई ज़ोर

اَوْ اٰوِىْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿۸۰﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

या मैं पनाह लेता	तरफ़	मज़बूत पाया	80	वह बोले	ऐ लूत (अ)	बेशक हम	भेजे हुए	तुम्हारा रब

لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे	तुम तक	सो ले निकल	अपने घर वालों के साथ	कोई हिस्सा	से (का)	रात	और न मुड़ कर देखे

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ

तुम में से	कोई	सिवा	तुम्हारी बीवी	बेशक वह	उस को पहुँचने वाला	जो	उन को पहुँचेगा

اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾

बेशक	उन का वादा	सुबह	क्या नहीं	सुबह	नज़दीक	81

वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की क़ुदरत पर) तअज्जुब करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें ऐ घर वालो! बेशक वह खूबियों वाला, बुज़ुर्गी वाला है। (73)
फिर जब इब्राहीम (अ) का ख़ौफ़ जाता रहा, और उस के पास खुशख़बरी आगई, वह हम से क़ौमे लूत (अ) (के बारे) में झगड़ने लगा। (74)
बेशक इब्राहीम (अ) बुर्दबार, नर्म दिल रुजूअ करने वाला। (75)
ऐ इब्राहीम (अ)! उस से एराज़ कर (यह ख़याल छोड़ दे) बेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और बेशक उन पर न टलाया जाने वाला अज़ाब आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76)
और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उस से ग़मगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख़्ती का दिन है। (77)
और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती हुई आई, ओर वह उस से क़ब्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78)
वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (ग़र्ज़) नहीं, और बेशक तू खूब जानता है हम किया चाहते हैं? (79)
उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई ज़ोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80)
वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! बेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगा, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी बीवी के सिवा कोई, बेशक जो उन को पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), बेशक उन पर (अज़ाब के) वादे का वक़्त सुबह है, क्या सुबह नज़दीक नहीं? (81)

فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا جَعَلۡنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهَا

उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (बुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब

حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۙ مَّنۡضُوۡدٍ ﴿۸۲﴾ مُّسَوَّمَةً عِنۡدَ رَبِّكَ ؕ

तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह ब तह	कंकर (संगरेज़े)	पत्थर

وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ بِبَعِيۡدٍ ﴿۸۳﴾ وَاِلٰى مَدۡيَنَ اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ؕ ع ١٥ النصف

शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह	और नहीं

قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ

उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा

وَلَا تَنۡقُصُوا الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ اِنِّىۡۤ اَرٰىكُمۡ بِخَيۡرٍ وَّاِنِّىۡۤ

और बेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	बेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो

اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ مُّحِيۡطٍ ﴿۸۴﴾ وَيٰقَوۡمِ اَوۡفُوا

पूरा करो	और ऐ मेरी क़ौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ

الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ

उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप

وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ ﴿۸۵﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ

अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में	और न फिरो

كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيۡكُمۡ بِحَفِيۡظٍ ﴿۸۶﴾ قَالُوۡا يٰشُعَيۡبُ

ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहबान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले	तुम हो

اَصَلٰوتُكَ تَاۡمُرُكَ اَنۡ نَّتۡرُكَ مَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوۡ اَنۡ نَّفۡعَلَ

हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परस्तिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़

فِىۡۤ اَمۡوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنۡتَ الۡحَلِيۡمُ الرَّشِيۡدُ ﴿۸۷﴾ قَالَ

उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दबार (बाविक़ार)	अलबत्ता तू	बेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में

يٰقَوۡمِ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كُنۡتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّىۡ وَرَزَقَنِىۡ مِنۡهُ

अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर	क्या तुम देखते हो (क्या ख़याल है)	ऐ मेरी क़ौम

رِزۡقًا حَسَنًا ؕ وَمَاۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اُخَالِفَكُمۡ اِلٰى مَاۤ اَنۡهٰكُمۡ

जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के ख़िलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी

عَنۡهُ ؕ اِنۡ اُرِيۡدُ اِلَّا الۡاِصۡلَاحَ مَا اسۡتَطَعۡتُ ؕ وَمَا

और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस क़द्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से

تَوۡفِيۡقِىۡۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَاِلَيۡهِ اُنِيۡبُ ﴿۸۸﴾

88	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का बुलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (बस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह ब तह (लगातार)। **(82)** तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। **(83)** और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और बेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। **(84)** और ऐ मेरी क़ौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो। **(85)** अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहबान नहीं हूँ। **(86)** वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) बेशक तुम ही बाविक़ार, नेक चलन हो? **(87)** उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारा क्या ख़याल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (खुद) उस के ख़िलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस क़द्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूँ। **(88)**

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ

जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी क़ौम

قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ

तुम से	क़ौमे लूत	और नहीं	क़ौमे सालेह	या	क़ौमे हूद	या	क़ौमे नूह (अ)

بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ

निहायत मेहरबान	मेरा रब	बेशक	उस की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	और बख़्शिश मांगो	89	कुछ दूर

وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا

और बेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्हों ने कहा	90	मुहब्बत वाला

لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا

हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	ज़ईफ़ (कमज़ोर)	अपने दरमियान	तुझे देखते हैं

بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	91	ग़ालिब

وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾

92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	बेशक	पीठ पीछे	अपने से परे	और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	बेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम करते रहो	ऐ मेरी क़ौम

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا

और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अ़ज़ाब	उस पर आता है	कौन - किस?

اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا

शुऐब (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	और जब आया	93	इन्तिज़ार	तुम्हारे साथ	मैं बेशक

وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

कड़क (चिंघाड़)	उन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से	अपनी रहमत से	उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۴﴾ ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا

याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए	अपने घरों में	सो सुबह की उन्हों ने

ع ۱۲ ۸ ۸ بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए	दूरी है

بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۶﴾ ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ

فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾

97	दुरुस्त	फ़िरऔन का हुक्म	और न	फ़िरऔन का हुक्म	तो उन्हों ने पैरवी की

और ऐ मेरी क़ौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अ़ज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो क़ौमे नूह (अ) या क़ौमे हूद (अ) या क़ौमे सालेह (अ) को, और क़ौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। **(89)**
और अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो, बेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, मुहब्बत वाला है। **(90)**
उन्हों ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और बेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिब नहीं। **(91)**
उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, बेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे अहाता (क़ाबू) किए हुए है। **(92)**
और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अ़ज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। **(93)**
और जब हमारा हुक्म आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्हों ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। **(94)**
गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। **(95)**
और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, **(96)**
फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्हों ने फ़िरऔन के हुक्म की पैरवी की और फ़िरऔन का हुक्म दुरुस्त न था। **(97)**

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ

और बुरा	दोज़ख़	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी क़ौम	आगे होगा

الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ

बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)

الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا

उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बस्तियों की ख़बरें	से	यह	99	उन्हें इनआम दिया गया	इनआम

قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपनी जानों पर	उन्हों ने ज़ुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकीं	क़ाइम (मौजूद)

فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए

مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾

101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुक्म	आया	जब	कुछ भी

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

उस की पकड़	बेशक	ज़ुल्म करते हों	और वह	बस्तियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब	पकड़	और ऐसी ही

اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ

आख़िरत का अज़ाब	उस के लिए है जो डरा	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	102	दर्दनाक सख़्त

ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾

103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे	एक दिन	यह

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ ؕ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا

मगर	कोई शख़्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)	एक मुद्दत के लिए	मगर	और हम नहीं हटाते पीछे

بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ

दोज़ख़	सो में	बदबख़्त	जो लोग	पस	105	और कोई ख़ुश बख़्त	कोई बदबख़्त	सो उन में	उस की इजाज़त से

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

आस्मान (जमा)	जब तक हैं	उस मे	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीख़ना	उस में	उन के लिए

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾

107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	बेशक	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

जब तक हैं	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	ख़ुश बख़्त हुए	वह लोग जो	और जो

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98)

और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इनआम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बस्तियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद हैं और (कुछ की जड़ें) कट चुकीं हैं। (100)

और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुक्म आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्हों ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बस्तियों को पकड़ता है और वह ज़ुल्म करते हों, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख़्त है। (102)

बेशक इस में अलबत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104)

जब वह दिन आएगा कोई शख़्स बात न कर सकेगा, मगर उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख़्त है और कोई ख़ुश बख़्त। (105)

पस जो बदबख़्त हुए वह दोज़ख़ में हैं, उन के लिए उस में चीख़ना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, बेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग ख़ुश बख़्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا

जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में	पस तू न रह

يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ

उन का हिस्सा	उन्हें पूरा फेर देंगे	और बेशक हम	उस से क़ब्ल	उन के बाप दादा	पूजते थे

ع ٩ ١٤ ٩ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ

उस में	सो इख़तिलाफ़ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	109	घटाए बग़ैर

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ

अलबत्ता शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी	एक बात	और अगर न

مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ

उन के अमल	तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और बेशक	110	धोके में डालने वाला	उस से

اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ

तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम क़ाइम रहो	111	बाख़बर	जो वह करते हैं	बेशक वह

مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى

तरफ़	और न झुको	112	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक वह	और सरकशी न करो	तुम्हारे साथ

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी	ज़ुल्म किया उन्हों ने	वह जिन्हों ने

اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا

कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ़	नमाज़	और क़ाइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे	फिर	मददगार - हिमायती

مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى

नसीहत	यह	बुराइयां	मिटा देती हैं	नेकियां	बेशक	रात	से (के)

لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾

115	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाया नहीं करता	अल्लाह	बेशक	और सब्र करो	114	नसीहत मानने वालों के लिए

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ

से	रोकते	साहबे ख़ैर	तुम से पहले	से	क़ौमें	से	पस क्यों न हुए

الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ

और पीछे रहे	उन से	हम ने बचा लिया	से - जो	थोड़े	मगर	ज़मीन में	फ़साद

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾

116	गुनाहगार	और वह थे	उस में	जो उन्हें दी गई	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

117	नेकोकार	जब कि वहां के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	कि हलाक कर दे	तेरा रब	और नहीं है

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफ़िर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से क़ब्ल उन के बाप दादा पूजते थे, और बेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बग़ैर पूरा फेर देंगे। (109)

और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख़तिलाफ़ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (क़ुरआन की तरफ़) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110)

और बेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, बेशक जो वह करते हैं वह उस से बाख़बर है। (111)

सो तुम क़ाइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, बेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112)

और उन की तरफ़ न झुको जिन्हों ने ज़ुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113)

और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों तरफ़ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, बेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114)

और सब्र करो, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115)

पस तुम से पहले जो क़ौमें हुईं उन में साहबाने ख़ैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़्ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थीं, और वह गुनाहगार थे। (116)

और तेरा रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे जबकि वहां के लोग नेकोकार हों। (117)

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

और वह हमेशा रहेंगे	एक	उम्मत	लोग (जमा)	तो कर देता	तेरा रब	चाहता	और अगर

مُخْتَلِفِيْنَ ۝١١٨ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ

बात	और पूरी हुई	पैदा किया उन्हें	और उसी लिए	तेरा रब	रहम किया	जो - जिस	मगर	118	इख़्तिलाफ़ करते हुए

رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝١١٩ وَكُلًّا

और हर बात	119	इकट्ठे	और इन्सान	जिन (जमा)	से	जहन्नम	अलबत्ता भर दूँगा	तेरा रब

نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ

और तेरे पास आया	तेरा दिल	उस से	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	रसूल (जमा)	ख़बरें (अहवाल)	से	तुझ पर	हम बयान करते हैं

فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٢٠ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ

वह लोग जो	और कह दें	120	मोमिनों के लिए	और याद दिहानी	और नसीहत	हक़	इस	में

لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝١٢١ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا

हम भी	और तुम इन्तिज़ार करो	121	काम करते हैं	हम	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ	ईमान नहीं लाते

مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٢٢ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ

काम	बाज़गश्त	और उसी की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	और अल्लाह के पास	122	मुन्तज़िर (जमा)

كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٣ ع ١٠ ١٤ ١٠

123	तुम करते हो	उस से जो	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	उस पर	और भरोसा करो	सो उस की इबादत करो	तमाम

آيَاتُهَا ١١١ ❀ سُوْرَةُ يُوْسُفَ (١٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12 — (12) सूरह यूसुफ़ / यूसुफ़ (अ) — आयात 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا

अ़रबी	कुरआन	उसे नाज़िल किया	बेशक हम ने	1	रौशन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ

इस लिए कि	क़िस्सा	बहुत अच्छा	तुम पर	बयान करते हैं	हम	2	समझो	ताकि तुम

اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ

अलबत्ता-से	इस से क़ब्ल	तू था	और तहक़ीक़	कुरआन	यह	तुम्हारी तरफ़	हम ने भेजा

الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ

मैं ने देखा	बेशक मैं	ऐ मेरे बाप	अपने बाप से	यूसुफ़ (अ)	कहा	जब	3	बेख़बर (जमा)

اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤

4	सिजदा करते	अपने लिए	मैं ने उन्हें देखा	और चाँद	और सूरज	सितारे	ग्यारह (11)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118) मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूँगा जिन्नों और इन्सानों से इकट्ठे। (119) और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक़, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120) और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121) और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122) और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़गश्त है, सो उस की इबादत करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1) बेशक हम ने उसे कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2) हम तुम पर बहुत अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहक़ीक़ तुम उस से क़ब्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3) (याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! बेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए सिजदा करते देखा। (4)

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ

तेरे लिए	वह चाल चलेंगे	अपने भाई	पर (से)	अपना ख़्वाब	न बयान करना	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा

كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥ وَكَذٰلِكَ

और उसी तरह	5	खुला	दुश्मन	इन्सान के लिए (का)	शैतान	बेशक	कोई चाल

يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ

अपनी नेमत	और मुकम्मल करेगा	बातों	अन्जाम निकालना	से	और सिखाएगा तुझे	तेरा रब	चुन लेगा तुझे

عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ

इस से पहले	तेरे बाप दादा	पर	उस ने उसे पूरा किया	जैसे	याक़ूब (अ) के घर वाले	और पर	तुझ पर

ع ٦/١١ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦ ع لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ

युसुफ़ (अ)	में	बेशक हैं	6	हिक्मत वाला	इल्म वाला	तेरा रब	बेशक	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)

وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٧ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ

ज़ियादा प्यारा	और उस का भाई	ज़रूर यूसुफ़ (अ)	उन्हों ने कहा	जब	7	पूछने वालों के लिए	निशानियां	और उस के भाई

اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٨ ۙ

8	सरीह	अलबत्ता ग़लती में	हमारा बाप	बेशक	एक जमाअ़त	जब कि हम	हम से	हमारा बाप	तरफ़ (को)

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	मुँह (तवज्जुह)	तुम्हारे लिए	ख़ाली हो जाए	किसी सर ज़मीन	उसे डाल आओ	या	युसुफ़ (अ)	मार डालो

وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا

न क़त्ल करो	उन से	एक कहने वाला	कहा	9	नेक (जमा)	लोग	उस के बाद	से	और तुम हो जाओ

يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

चलता (मुसाफ़िर)	कोई	उठाले उस को	कुआं	अन्धा (गहरा)	में	और उसे डाल आओ	युसुफ़ (अ)

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

युसुफ़ (अ)	पर (बारे में)	तू हमारा भरोसा नहीं करता	क्या हुआ तुझे	ऐ हमारे अब्बा	कहने लगे	10	तुम करने वाले हो (करना ही है)	अगर

وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝١١ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا

और बेशक हम	और खेले कूदे	वह खाए	कल	हमारे साथ	उसे भेज दे	11	अलबत्ता ख़ैर ख़्वाह	उस के	और बेशक हम

لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ

और मैं डरता हूँ	उसे	तुम लेजाओ	कि	ग़मगीन करता है	बेशक मुझे	उस ने कहा	12	अलबत्ता मुहाफ़िज़	उस के

اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا لَئِنْ

अगर	वह बोले	13	बेख़बर (जमा)	उस से	और तुम	भेड़िया	उसे खाजाए	कि

اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤

14	ज़ियांकार	उस सूरत में	बेशक हम	एक जमाअ़त	और हम	भेड़िया	उसे खा जाए

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)
और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करेगा, और याक़ूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक़ (अ) पर उसे पूरा किया, बेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)
बेशक युसुफ़ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)
जब उन्हों ने कहा ज़रूर यूसुफ़ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअ़त (क़वी) हैं, बेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)
युसुफ़ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तवज्जुह तुम्हारे लिए ख़ाली (ख़ास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)
उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)
कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू युसुफ़ (अ) के बारे में हमारा एतिबार नहीं करता, और बेशक हम तो उस के ख़ैर ख़ाह हैं। (11)
कल उसे हमारे साथ भेजदे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और बेशक हम उस के मुहाफ़िज़ हैं। (12)
उस ने कहा बेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से बेख़बर रहो। (13)
वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़वी जमाअ़त हैं, उस सूरत में बेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِىْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

कुआं	अन्धा	में	उसे डालदें	कि	और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	वह उस को ले गए	फिर जब

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

15	न जानते होंगे	और वह	उस	उन का काम	कि तू उन्हें ज़रूर जताएगा	उस की तरफ़	और हम ने वहि भेजी

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا

दौड़ने गए	हम	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	16	रोते हुए	अन्धेरा पड़े	अपने बाप के पास	और वह आए

نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ

और नहीं	भेड़िया	तो उसे खागया	अपना असबाब	पास	यूसुफ़ (अ)	और हम ने छोड़ दिया	आगे निकलने

اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ الثلثة

उस की क़मीस़	पर	और वह आए (लाए)	17	सच्चे	और ख़्वाह हों हम	हम पर	बावर करने वाला	तू

بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ

पस सब्र	एक बात	तुम्हारे दिल	तुम्हारे लिए	बना ली	बल्कि	उस ने कहा	झूटा	ख़ून के साथ

جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ

एक क़ाफ़िला	और आया	18	जो तुम बयान करते हो	पर	मदद चाहता हूँ	और अल्लाह	अच्छा

فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ

एक लड़का	यह	आहा - ख़ुशी की बात	उस ने कहा	अपना डोल	पस उस ने डाला	अपना पानी भरने वाला	पस उन्हों ने भेजा

وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ

और उन्हों ने उसे बेच दिया	19	वह करते थे	उसे जो	जानने वाला	और अल्लाह	माले तिजारत समझ कर	और उसे छुपा लिया

بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزَّاهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع ٢/١٢

20	बेरग़बत, बेज़ार	से	उस में	और वह थे	गिनती के	दिरहम	खोटे	दाम

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ

उसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख	अपनी औरत को	मिसर	से	उसे ख़रीदा	वह जो, जिस	और बोला

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ۭ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ

यूसुफ़ (अ) को	हम ने जगह दी	और इस तरह	बेटा	हम उसे बना लें	या	हम को नफ़ा पहुँचाए	कि	शायद

فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۭ وَاللّٰهُ غَالِبٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	बातें	अन्जाम निकालना	से	और ताकि उसे सिखाएं	ज़मीन (मुल्क)	में

عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

पहुँचे गया	और जब	21	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अपने काम पर

اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

22	नेकी करने वाले	हम जज़ा देते हैं	और उसी तरह	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे अ़ता किया	अपनी क़ुव्वत

फिर जब वह उसे लेगए और उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डालदें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। **(15)**

और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। **(16)**

बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खागया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। **(17)**

और वह उस की क़मीस़ पर झूटा ख़ून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। **(18)**

और (उधर) एक क़ाफ़िला आया, पस उन्हों ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा ख़ुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्हों ने उसे माले तिजारत समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह करते थे। **(19)**

और उन्हों ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। **(20)**

और मिसर के जिस शख़्स ने उस को ख़रीदा उस ने कहा अपनी औरत कोः इसे इज़्ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की ताबीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। **(21)**

और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी क़ुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। **(22)**

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ

दरवाज़े	और बन्द कर दिए	अपने आप को रोकने से	उस का घर	में	उस	वह औरत जो	और उसे फुसलाया

وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ

और रहना सहना	बहुत अच्छा	मेरा मालिक	बेशक वह	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा	आजा जल्दी कर	और बोली

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَآ اَنْ

कि	अगर न होता	उस का	और वह इरादा करते	उस का	और बेशक उस औरत ने इरादा किया	23	ज़ालिम (जमा)	भलाई नहीं पाते	बेशक

رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

और बेहयाई	बुराई	उस से	हम ने फेर दिया	उसी तरह	अपना रब	दलील	वह देखे

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ

और औरत ने फाड़ दी	दरवाज़ा	और दानों दौड़े	24	बरगुज़ीदा	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

क्या सज़ा?	वह कहने लगी	दरवाज़े के पास	औरत का ख़ावन्द	और दोनों को मिला	पीछे से	उस की क़मीस

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

25	दर्दनाक अ़ज़ाब	या	क़ैद किया जाए	यह कि	सिवाए	बुराई	तेरी बीवी से	इरादा किया	जो - जिस

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ

उस के लोग	से	एक गवाह	और गवाही दी	मेरा नफ़्स	से	मुझे फुसलाया	उस	उस ने कहा

اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	झूटे	से	और वह	तो वह सच्ची	आगे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	अगर

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ

से	और वह	तो वह झूटी	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस	है	और अगर

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक यह	उस ने कहा	पीछे से	फटी हुई	उस की क़मीस़	देखा	तो जब	27	सच्चे

كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ

उस	से - को	जाने दे	यूसुफ़ (अ)	28	बड़ा	तुम्हारा फ़रेब	बेशक	तुम औरतों का फ़रेब

٣ ع ٩ ١٣ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

और कहा	29	ख़ताकार (जमा)	से	तू है	बेशक तू	अपने गुनाह की	और ऐ औरत बख़्शिश मांग

نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ

से	अपना गुलाम	फुसला रही है	अ़ज़ीज़ की बीवी	शहर में	औरतें

نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

30	खुली	गुमराही	में	बेशक हम उसे देखती हैं	उस की मुहब्बत	जगह पकड़ गई है	उस का नफ़्स

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औ़रत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (क़ाबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आजा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! बेशक वह (अज़ीज़े मिस्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), बेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और बेशक उस औ़रत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, बेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, और उस औ़रत ने उस की क़मीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का ख़ाविन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीवी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह क़ैद किया जाए या दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की क़मीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है। (26)

और अगर उस की क़मीस़ पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की क़मीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औ़रतों का फ़रेब है, बेशक तुम्हारा फ़रेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औ़रत! अपने गुनाह की बख़्शिश मांग, बेशक तू ही ख़ताकारों में से है। (29)

और शहर में औ़रतों ने कहा, अ़ज़ीज़ की बीवी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, बेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फ़रेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्हों ने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुअ़ब (हुस्न) छागया और उन्हों ने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। **(31)**
वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह क़ैद कर दिया जाएगा और बेइज़्ज़त लोगों मे से होगा। **(32)**
उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे क़ैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती हैं, अगर तू ने मुझ से उन का फ़रेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से होंगा। **(33)**
सो उस के रब ने उस की दुआ क़ुबूल करली, पस उस से उन का फ़रेब फेर दिया, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। **(34)**
फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर क़ैद में डाल दें एक मुद्दत तक। **(35)**
और उस के साथ दो जवान क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए, उन में से एक ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की ताबीर बतलाइए, बेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। **(36)**
उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, बेशक मैं ने उस क़ौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। **(37)**

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً

एक महफ़िल	उन के लिए	और तैयार की	उन की तरफ़	दावत भेजी	उन का फ़रेब	उस ने सुना	फिर जब

وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا

फिर जब	उन पर (उनके सामने)	निकल आ	और कहा	एक एक छुरी	उन में से	हर एक को	और दी

رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ز وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ

बशर	नहीं यह	अल्लाह की	पनाह	और कहने लगीं	अपने हाथ	और उन्हों ने काट लिए	उन पर उस का रुअ़ब छागया	उन्हों ने उसे देखा

اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ

उस में	तुम ने मलामत की मुझे	जो कि	सो यह वही है	वह बोली	31	बुज़ुर्ग	फ़रिश्ता	मगर	यह	नहीं

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ

मैं कहती हूँ उसे	जो	उस ने न किया	और अगर	तो उस ने बचा लिया	उस का नफ़्स	से	और मैं ने उसे फुसलाया

لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

ज़ियादा पसन्द	क़ैद	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	32	बेइज़्ज़त (जमा)	से	और अलबत्ता होजाएगा	अलबत्ता क़ैद कर दिया जाएगा

اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ

माइल हो जाऊंगा	उन का फ़रेब	मुझ से	और अगर न फेरा	उस की तरफ़	मुझे बुलाती हैं	उस से जो	मुझ को

اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ

उस से	पस फेर दिया	उस का रब	उस की (दुआ)	सो क़ुबूल कर ली	33	जाहिल (जमा)	से	और मैं होंगा	उन की तरफ़

كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا

उन्हों ने देखीं	जब	बाद	उस के	उन्हें सूझा	फिर	34	जानने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक वह	उन का फ़रेब

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ع وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۭ قَالَ ع ٦ ١٤

कहा	दो जवान	क़ैद ख़ाना	उस के साथ	और दाख़िल हुए	35	एक मुद्दत तक	उसे ज़रूर क़ैद में डालें	निशानियां

اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ

ऊपर	उठाए हुए हूँ	मैं देखता हूँ	दूसरा	और कहा	शराब	निचोड़ रहा हूँ	बेशक मैं देखता हूँ	उन में से एक

رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۭ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

से	बेशक हम तुझे देखते हैं	उस की ताबीर	हमें बतलाइए	उस से	परिन्दे	खा रहे हैं	रोटी	अपना सर

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا

मैं तुम्हें बतलादूंगा	मगर	जो तुम्हें दिया जाता है	खाना	तुम्हारे पास नहीं आएगा	उस ने कहा	36	नेकोकार (जमा)

بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۭ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۭ اِنِّيْ تَرَكْتُ

मैं ने छोड़ा	बेशक मैं	मेरा रब	मुझे सिखाया	उस से जो	यह	वह आए तुम्हारे पास	कि	क़ब्ल	उस की ताबीर

مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	इन्कार करते हैं	वह	आख़िरत से	और वह	अल्लाह पर	जो ईमान नहीं लाते	वह क़ौम	दीन

وَاتَّبَعۡتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیۡۤ اِبۡرٰهِیۡمَ وَاِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ ؕ مَا كَانَ

नहीं है	और याकूब (अ)	और इसहाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की

لَنَاۤ اَنۡ نُّشۡرِكَ بِاللّٰهِ مِنۡ شَیۡءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ عَلَیۡنَا

हम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं	कि	हमारे लिए

وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا یَشۡكُرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ

ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर

السِّجۡنِ ءَاَرۡبَابٌ مُّتَفَرِّقُوۡنَ خَیۡرٌ اَمِ اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿۳۹﴾

39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद	क़ैद खाना

مَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسۡمَآءً سَمَّیۡتُمُوۡهَاۤ اَنۡتُمۡ

तुम	तुम ने रख लिए हैं	नाम	मगर	उस के सिवा	तुम पूजते	नहीं

وَاٰبَآؤُكُمۡ مَّاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنۡ سُلۡطٰنٍ ؕ اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

अल्लाह का	मगर	हुक्म	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी	नहीं	और तुम्हारे बाप दादा

اَمَرَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیۡنُ الۡقَیِّمُ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	सीधा दीन	यह	सिर्फ़ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न	उस ने हुक्म दिया

اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۰﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجۡنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا

तुम में से एक	जो	क़ैद ख़ाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते	अक्सर लोग

فَیَسۡقِیۡ رَبَّهٗ خَمۡرًا ۚ وَاَمَّا الۡاٰخَرُ فَیُصۡلَبُ فَتَاۡكُلُ الطَّیۡرُ

परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक	सो वह पिलाएगा

مِنۡ رَّاۡسِهٖ ؕ قُضِیَ الۡاَمۡرُ الَّذِیۡ فِیۡهِ تَسۡتَفۡتِیٰنِ ﴿۴۱﴾ وَقَالَ

और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फ़ैसला हो चुका	उस के सर से

لِلَّذِیۡ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنۡهُمَا اذۡكُرۡنِیۡ عِنۡدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنۡسٰهُ

पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह	उस ने गुमान किया	उस से जिस

ع ٥ ٧ ١٥ الشَّیۡطٰنُ ذِكۡرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجۡنِ بِضۡعَ سِنِیۡنَ ﴿۴۲﴾ ع

42	चन्द बरस	क़ैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना	शैतान

وَقَالَ الۡمَلِكُ اِنِّیۡۤ اَرٰی سَبۡعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاۡكُلُهُنَّ

वह खाती हैं	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह	और कहा

سَبۡعٌ عِجَافٌ وَّسَبۡعَ سُنۡۢبُلٰتٍ خُضۡرٍ وَّاُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا الۡمَلَاُ

ऐ मेरे सरदारो	खुश्क	और दूसरे	सब्ज़	खोशे	और सात	दुबली पतली	सात

اَفۡتُوۡنِیۡ فِیۡ رُءۡیَایَ اِنۡ كُنۡتُمۡ لِلرُّءۡیَا تَعۡبُرُوۡنَ ﴿۴۳﴾

43	ताबीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	में (की)	बतलाओ मुझे ताबीर

और मैं ने अपने बाप दादा
इब्राहीम (अ), और इसहाक़ (अ)
और याकूब (अ) के दीन की पैरवी
की, हमारा (काम) नहीं कि हम
शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी
शै को, यह हम पर और लोगों
पर अल्लाह का फ़ज़्ल है, लेकिन
अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं
करते। (38)
ऐ मेरे क़ैद के साथियो! क्या जुदा
जुदा कई माबूद बेहतर हैं? या एक
अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)
उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते
मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए
(तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप
दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई
सनद नहीं उतारी, हुक्म सिर्फ़
अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया
कि उस के सिवा किसी की इबादत
न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन
अक्सर लोग नहीं जानते। (40)
ऐ मेरे क़ैद ख़ाने के साथियो! तुम
में से एक अपने मालिक को शराब
पिलाएगा, और जो दूसरा है तो
सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस
के सर से खाएंगे। उस बात का
फ़ैसला हो चुका जिस (के बारे) में
तुम पूछते थे। (41)
और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से
जिस (के मुतअल्लिक़) गुमान किया
कि वह बचेगा, उस से कहा अपने
मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना,
पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने
मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो
वह क़ैद में चन्द बरस रहा। (42)
और बादशाह ने कहा कि मैं देखता
हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात
दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और
सात सब्ज़ ख़ोशे और दूसरे ख़ुश्क,
ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की
ताबीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब
की ताबीर देने वाले हो (ताबीर देना
जानते हो)। (43)

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

44	जानने वाले	ख़्वाब (जमा)	ताबीर देना	हम	और नहीं	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ

उस की ताबीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा

فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ

गाएं	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ

और दूसरे	सब्ज़	ख़ोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही हैं	मोटी ताज़ी

يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ

खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	ख़ुश्क

سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا

थोड़ा जितना	मगर	उस के ख़ोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا

जो	खाजाएंगे	सख़्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो	से - जो

قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए	तुम ने रखा

عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ ع ٦ ١٦

मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में	एक साल

بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ

क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	क़ासिद	उस के पास आया	पस जब	उसे

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

50	वाक़िफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	बेशक	अपने हाथ	उन्हों ने काटे	वह जो	औरतें

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ

पनाह	वह बोलीं	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा

لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ۭ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ

ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हम ने मालूम की	नहीं	अल्लाह की

الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ

ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह बेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने	मैं	हक़ीक़त

اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	दग़ाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और बेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	बेशक मैं

उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं जानते)। (44)

और वह जो उन दोनों (में) से बचा था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45)

ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें (ख़्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी ताज़ी गायों को खा रही हैं सात दुबली पतली गाएं, और सात ख़ोशे सब्ज़ हैं और दूसरे ख़ुश्क, ताकि मैं लोगों के पास लौट कर जाऊं शायद वह आगाह हों। (46)

उस ने कहा तुम सात साल लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर जो तुम काटो तो उसे उस के खोशे में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो तुम उस में से खालो। (47)

फिर उस के बाद आएंगे सात (7) सख़्त साल, खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिए (बचा) रखा, सिवाए उस के जो तुम थोड़ा बचाओगे। (48)

फिर उस के बाद एक साल आएगा उस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी और वह उस में (रस) निचोड़ेंगे। (49)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ, पस जब क़ासिद उस के पास आया तो उस ने कहा अपने मालिक के पास लौट जाओ और उस से पूछो उन औरतों का क्या हाल है? जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे, बेशक मेरा रब उन के फ़रेब से खूब वाक़िफ़ है। (50)

बादशाह ने (उन औरतों से) कहा तुम्हारा क्या हाले (वाक़ी) था जब तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया वह बोलीं अल्लाह की पनाह! हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की (नहीं पाई) अज़ीज़ (मिस्र) की औरत बोली अब हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया और वह बेशक सच्चों में से है (सच्चा है)। (51)

(यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए था) ताकि वह जान ले कि मैं ने पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं की, और बेशक अल्लाह चलने नहीं देता दग़ाबाज़ों का फ़रेब। (52)

الجزء ١٣

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِىْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا

मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ़्स	बेशक	अपना नफ़्स	और पाक (बेकुसूर) नहीं कहता

مَا رَحِمَ رَبِّىْ ؕ اِنَّ رَبِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ

ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	मेरा रब	बेशक	मेरा रब	जिस पर रहम किया

بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِىْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا

हमारे पास	आज	बेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब	अपनी ज़ात के लिए	उस को ख़ास करूँ	उस को

مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّىْ حَفِيْظٌ

हिफ़ाज़त करने वाला	बेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	ख़ज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा	54	अमीन	बाविकार

عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ

जहां	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ़ (अ) को	हम ने कुदरत दी	और उसी तरह	55	इल्म वाला

يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं	चाहते वह

ع ٨ ١ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ ۧ وَجَآءَ

और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	बेहतर	और आख़िरत का बदला अलबत्ता

اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाख़िल हुए	यूसुफ़ (अ)	भाई

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِىْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ

क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उस ने	उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया	और जब

اَنِّىْٓ اُوْفِى الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِىْ

मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरीन	और मैं	पैमाना	पूरा करता हूँ	कि मैं

بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ

उस के मुतअ़ल्लिक़	हम ख़ाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास	तुम्हारे लिए	तो कोई नाप नहीं	उस को

اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ

उन की पूंजी	और तुम रख दो	अपने ख़िदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम	उस का बाप

فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	अपने लोग	तरफ़	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا

हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप	तरफ़	वह लौटे	पस जब	62	फिर आजाएं

الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	निगहबान हैं	उस के	और बेशक हम	नाप (ग़ल्ला) लाएं	हमारा भाई	हमारे साथ	पस भेज दें	नाप

और मैं अपने नफ़्स को पाक नहीं कहता, बेशक नफ़्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53)
और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (ख़िदमत) के लिए ख़ास करूँ, फिर जब (मलिक) ने उस से बात की कहा बेशक तुम आज हमारे पास बाविक़ार, अमीन (साहबे एतिबार) हो। (54)
उस ने कहा मुझे (मुक़र्रर) कर दे मुल्क के ख़ज़ानों पर, बेशक मैं हिफ़ाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55)
और उसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क पर क़ुदरत दी, वह उस में जहां चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56)
और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आख़िरत का बदला बेहतर है। (57)
और यूसुफ़ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाख़िल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58)
और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ़) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ। (59)
फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (ग़ल्ला) नहीं मेरे पास,और न मेरे पास आना। (60)
वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से ख़ाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61)
और उस ने अपने ख़िदमतगारों को कहा उन की पूंजी (ग़ल्ले की क़ीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ़, शायद वह फिर आजाएं। (62)
पस जब वह अपने बाप की तरफ़ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (ग़ल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेजदें कि हम ग़ल्ला लाएं, और बेशक उसके निगहबान हैं। (63)

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

इस से पहले	उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़	मैं ने तुम्हारा एतिबार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअ़ल्लिक़	क्या मैं तुम्हारा एतिबार करूँ	उस ने कहा

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا

उन्हों ने खोला	और जब	64	तमाम मेहरबानों से बड़ा मेहरबानी करने वाला	और वह	निगहबान	बेहतर	सो अल्लाह

مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا

ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्हों ने पाई	अपना सामान

مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا

अपना भाई	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने घर	और हम ग़ल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह	क्या चाहते हैं हम

وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ

हरगिज़ न भेजूँगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (ग़ल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ	और ज़ियादा लेंगे

مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

66	निगहबान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह	कहा उस ने	अपना पुख़्ता अ़हद	उन्हों ने उसे दिया	फिर जब	तुम्हें	घेर लिया जाए

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ

से	और दाख़िल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाख़िल होना	ऐ मेरे बेटो	और उस ने कहा

اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह	से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का	सिवा	हुक्म	नहीं

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक्म दिया	जहां से	वह दाख़िल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ

दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह	से (की)	उन से (उन्हें)	वह बचा सकता

يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और बेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याकूब (अ)

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ ع وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ ع ٨ ١١ ٢

अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाख़िल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग

اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	बेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

उस ने कहा मैं उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या एतिबार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा एतिबार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहबान है, और वह तमाम मेहरबानों से बड़ा मेहरबानी करने वाला है। (64)

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो उन्हों ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाएं हैं) थोड़ा ग़ल्ला है। (65)

उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तमु मुझे अल्लाह का पुख़्ता अ़हद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्हों ने उसे (याकूब अ) को पुख़्ता अ़हद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66)

और कहा ऐ मेरे बेटो! तुम सब दाख़िल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बल्कि) जुदा जुदा दरवाजों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक्म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67)

और जब वह दाख़िल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक्म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याकूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और बेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68)

और जब वह यूसुफ़ के पास दाख़िल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा बेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ

अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब

ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	अलबत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ क़ाफ़ले वालो	मुनादी करने वाला	एलान किया	फिर

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ

पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्हों ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्हों ने मुँह किया	वह बोले

الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए	बादशाह

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम खूब जानते हो	अल्लाह की क़सम	वह बोले

وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्हों ने कहा	73	चोर (जमा)	और हम नहीं

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा	कहने लगे वह

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ

फिर	अपना भाई	ख़ुरजी (बोरा)	पहले	उन की ख़ुरजियों (बोरों) से	पस शुरूअ किया	75	ज़ालिमों को

اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ مَا كَانَ

न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला

لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ نَرْفَعُ

हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता

دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْٓا اِنْ

अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम	जो - जिस	दरजे

يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ

अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से क़ब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया

وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

खूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया

بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا

बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77	जो तुम बयान करते हो

كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ क़ाफ़ले वालो! तुम अलबत्ता चोर हो। (70)
वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)
उन्हों ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम खूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)
फिर उन्हों ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)
कहने लगे उस की सज़ा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को साज़ा देते हैं। (75)
पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरूअ किया अपने भाई के बोरे से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरे से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक़) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशिय्यत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)
बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से क़ब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह खूब जानता है। (77)
कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ

उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा

اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا اسْتَيْــَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ع ۹ ۱۱ ۳

मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	बेशक हम जब

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ

तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा

مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ

पस हरगिज़ न	यूसुफ़ (अ)	बारे में	जो तक़्सीर की तुम ने	और उस से क़ब्ल	अल्लाह	से (का)	पुख़्ता अ़हद

اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ

और वह	हुक्म दे (तदबीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन	टलूँगा

خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ

बेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला

ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا

और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा

لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَسْــَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا

उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहबान	ग़ैब के

وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ قَالَ بَلْ

बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और बेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस	और क़ाफ़ला

سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ

अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है

اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۸۳﴾ وَتَوَلّٰى

और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह	सब को	उन्हें	कि मेरे पास ले आए

عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ

से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से

الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۸۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى

यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की क़सम	वह बोले	84	घुट रहा था	पस वह	ग़म

تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿۸۵﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا

बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ़	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार	तुम हो जाओ

بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾

86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म	अपनी बेक़रारी

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूरत में) हम ज़ालिमों से होंगे, (79)
फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख़्ता अ़हद लिया, और उस से क़ब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक़्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूँगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदबीर निकाले, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (80)
अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ़ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहबान (बाख़बर) न थे। (81)
और पूछ लें उस बस्ति से जिस में हम थे, और उस क़ाफ़ले से जिस में हम आए हैं, और बेशक हम सच्चे हैं। (82)
उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। (83)
और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़ब्त कर रहा था)। (84)
वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। (85)
उस ने कहा मैं तो अपनी बेक़रारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ़ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (86)

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْئَسُوْا

और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो

مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	बेशक वह	अल्लाह की रहमत	से

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا

हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्हों ने कहा	उस पर - सामने	वह दाख़िल हुए	फिर जब	87	काफ़िर (जमा)

وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

नाप (ग़ल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाक़िस)	पूंजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख़्ती	और हमारे घर

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَالَ

कहा	88	सदक़ा करने वाले	जज़ा देता है	बेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदक़ा करें

هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें ख़बर है

قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِىْ ز

मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ़ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ़ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले

قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	बेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है

لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

तुझे पसन्द किया (फ़ज़ीलत दी)	अल्लाह की क़सम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ

तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और बेशक	हम पर	अल्लाह

الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا

तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे	आज

بِقَمِيْصِىْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِىْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج

बीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी क़मीस ले कर

ع وَاْتُوْنِىْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ

क़ाफ़िला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)

قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَاۤ اَنْ

कि	अगर न	यूसुफ़	हवा (ख़ुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	बेशक मैं	उन का बाप	कहा

تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

95	पुराना	अपना वहम	में	बेशक तू	अल्लाह की क़सम	वह कहने लगे	94	मुझे बहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ़ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87)

फिर जब वह उस के सामने दाख़िल हुए उन्हों ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख़्ती, और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (ग़ल्ला) दें, और हम पर सदक़ा करें, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को जज़ा देता है। (88)

(यूसुफ़ अ) ने कहा क्या तुम्हें ख़बर है? तुम ने यूसुफ़ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89)

वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ़ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, बेशक जो डरता है और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90)

कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत दी है और हम बेशक ख़ताकार थे। (91)

उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इल्ज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। (92)

तुम मेरी यह क़मीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह बीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93)

और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, बेशक मैं यूसुफ़ (अ) की ख़ुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा बहक गया है। (94)

वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! बेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कुर्ता) डाला	ख़ुशख़बरी देने वाला	आया	कि	फिर जब

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह	(तरफ़) से	बेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	बोला

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ﴿٩٧﴾

97	ख़ताकार (जमा)	थे	बेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख़्शिश मांग	ऐ हमारे बाप	वह बोले

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

98	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वह	बेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए	मैं बख़्शिश मांगूंगा	जल्द	उस ने कहा

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो	और कहा	अपने माँ बाप	उस ने ठिकाना दिया अपने पास	यूसुफ़ (अ) पर (पास)	वह दाख़िल हुए	फिर जब

مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ۭ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ

तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊंचा बिठाया	99	अम्न (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्र

وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَاىَ

मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए

مِنْ قَبْلُ ۡ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّىْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِىْٓ اِذْ اَخْرَجَنِىْ

मुझे निकाला	जब	मुझ पर	और बेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले

مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ

झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊं	से	तुम सब को	और ले आया	क़ैद ख़ाना	से

الشَّيْطٰنُ بَيْنِىْ وَبَيْنَ اِخْوَتِىْ ۭ اِنَّ رَبِّىْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۭ

जिस के लिए चाहे	उमदा तदबीर करता है	मेरा रब	बेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِىْ مِنَ الْمُلْكِ

मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अ़ता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	बेशक वह

وَعَلَّمْتَنِىْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया

اَنْتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ

और मुझे मिला	फ़रमांबरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आख़िरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ

तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्हों ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे

फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया और उस ने कुर्ता उस (याक़ूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (बीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ़ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)
वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख़्शिश मांगिए हमारे गुनाहों की, बेशक हम ख़ताकार थे। (97)
उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश मांगूंगा, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)
फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाख़िल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्र में दिलजमई के साथ दाख़िल हो। (99)
और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊंचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबीर, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया जब मुझे क़ैद ख़ाने से निकाला, और तुम सब को गाऊं से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदबीर करने वाला है, बेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)
ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अ़ता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आख़िरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमांबरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)
यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्हों ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

وَمَآ اَكۡثَرُ النَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ

उस पर	और तुम नहीं मांगते उन से	103	ईमान लाने वाले	तुम चाहो	अगरचे	अक्सर लोग	और नहीं

ع ١١/١١ ٥ مِنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۰۴﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ اٰيَةٍ

निशानियां	और कितनी ही	104	सारे जहानों के लिए	नसीहत	मगर	यह नहीं	कोई अजर

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ يَمُرُّوۡنَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ عَنۡهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾

105	मुँह फेरने वाले	उन से	लेकिन वह	उन पर	वह गुज़रते हैं	और ज़मीन	आस्मानों में

وَمَا يُؤۡمِنُ اَكۡثَرُهُمۡ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمۡ مُّشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۰۶﴾ اَفَاَمِنُوۡۤا

पस किया वह बेख़ौफ़ हो गए	106	मुश्‌रिक (जमा)	और वह	मगर	अल्लाह पर	उन में अक्सर	और ईमान नहीं लाते

اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ غَاشِيَةٌ مِّنۡ عَذَابِ اللّٰهِ اَوۡ تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً

अचानक	घड़ी (क़ियामत)	उन पर आजाए	या	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	छा जाने वाली (आफ़त)	कि उन पर आए

وقف النبي ﷺ

وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلۡ هٰذِهٖ سَبِيۡلِىۡۤ اَدۡعُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ۚ قف

अल्लाह की तरफ़	मैं बुलाता हूँ	मेरा रास्ता	यह	आप कह दें	107	उन्हें ख़बर न हो	और वह

عَلٰى بَصِيۡرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىۡ ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾

108	मुश्‌रिक (जमा)	से	और मैं नहीं	और अल्लाह पाक है	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	मैं	दानाई पर (समझ बूझ के मुताबिक़)

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰى ؕ

बस्तियों वाले	से	उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर-सिर्फ़	तुम से पहले	और हम ने नहीं भेजा

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	अन्जाम	हुआ	कैसा - क्या	पस वह देखते	ज़मीन (मुल्क) में	क्या पस उन्हों ने सैर नहीं की

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۰۹﴾

109	पस क्या तुम समझते नहीं	जिन्हों ने परहेज़ किया	उन के लिए जो	बेहतर	और अलबत्ता आख़िरत का घर	उन से पहले

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ

उन के पास आई	उन से झूट कहा गया	कि वह	और उन्हों ने गुमान किया	रसूल (जमा)	मायूस होने लगे	जब	यहां तक

نَصۡرُنَا ۙ فَنُجِّىَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۱۰﴾

110	मुज्‌रिम (जमा)	क़ौम	से	हमारा अ़ज़ाब	और नहीं फेरा जाता	हम ने जिन्हें चाहा	पस बचा दिए गए	हमारी मदद

لَقَدۡ كَانَ فِىۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِى الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ

नहीं है	अक़्लमन्दों के लिए	इब्‌रत (नसीहत)	उन के क़िस्से	में	है	अलबत्ता

حَدِيۡثًا يُّفۡتَرٰى وَلٰـكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ

उस से (अपने से) पहली	वह जो	तसदीक़	और लेकिन (बल्कि)	बनाई हुई	बात

ع ١٢/٧ ٦ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

111	जो ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	हर बात	और तफ़सील (बयान)

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्‌रिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेख़ौफ़ हो गए कि उन पर अल्लाह के अ़ज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक क़ियामत, और उन्हें ख़बर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, समझ बूझ के मुताबिक़, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्‌रिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले बस्तियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ़ मर्द (नबी) भेजे जिन की तरफ़ हम वही भजते थे, पस क्या उन्हों ने सैर नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अन्जाम क्या हुआ? और अलबत्ता आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्हों ने परहेज़ किया, पस क्या तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और उन्हों ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अ़ज़ाब नहीं फेरा जाता मुज्‌रिमों की क़ौम से। (110)

अलबत्ता उन के क़िस्सों में अक़्लमन्दों के लिए इब्‌रत है यह बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक़ है अपने से पहलों की, और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम-रा - यह किताब (क़ुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ उतारा गया हक़ है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1)
अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बग़ैर तुम देखते हो उसे, फिर अ़र्श पर क़रार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुद्दत मुक़र्ररा तक, अल्लाह काम की तदबीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लो। (2)
और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाईं) और हर क़िस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो क़िस्म के (तल्ख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3)
और ज़मीन में पास पास क़त्आ़त हैं, और बाग़ात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाख़ों वाली और बग़ैर दो शाख़ों की, एक ही पानी से (हालांकि) सैराब की जाती हैं, और हम बेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाइक़े में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (4)
और अगर तुम तअ़ज्जुब करो तो उन का यह कहना अ़जब हैः जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनों में तौक़ होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

آيَاتُهَا ٤٣ ❀ سُوْرَةُ الرَّعْدِ (١٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआ़त 6 | (13) सूरतुर रअ़्द गरज | आयात 43

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ

हक़	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम मीम रा

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)

بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अ़र्श पर	क़रार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बग़ैर

كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदबीर करता है	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	चलता है	हर एक

بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ﴿۲﴾ وَهُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا

उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यक़ीन कर लो	अपना रब	मिलने का

رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ

दो, दो क़िस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)

یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾

3	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है

وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِیْلٌ

और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बाग़ात	पास पास	क़ित्आ़त	ज़मीन	और में

صِنْوَانٌ وَّغَیْرُ صِنْوَانٍ یُّسْقٰی بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۟ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا

उन का एक	और हम फ़ज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाख़ों वाली	और बग़ैर	एक जड़ से दो शाख़ों वाली

عَلٰی بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾

4	अ़क़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	ज़ाइक़ा	में	दूसरा	पर

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ

ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अ़जब	तुम तअ़ज्जुब करो	और अगर

جَدِیْدٍ ۬ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ

में	तौक़ (जमा)	और वही हैं	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई

اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾

5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही हैं	उन की गर्दनों

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ

से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى

पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	सज़ाएं	उन से क़ब्ल

ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और बेशक	उन का ज़ुल्म

لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرٌ

डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी

وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ ع

सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7	हादी	और हर क़ौम के लिए

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ

जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है	और जो	रहम (जमा)

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ

बात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतबा	सब से बड़ा	और ज़ाहिर

وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾

10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो	पुकार कर - उस को	और जो

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ

वह उसकी हिफ़ाज़त करते हैं	और उस के पीछे	उस (इन्सान) के आगे से	पहरेदार	उस के

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا

जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी क़ौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह	बेशक	अल्लाह का हुक्म	से

بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी क़ौम से	इरादा करता है अल्लाह	और जब	अपने दिलों में (अपनी हालत)

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا

उम्मीद दिलाने को	डराने को	बिजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11	कोई मददगार	उस के सिवा

وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	उस की तारीफ़ के साथ	गरज	और पाकीज़गी बयान करती है	12	बोझल	बादल	और उठाता है

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ

जिस	उसे	फिर गिराता है	गरजने वाली बिजलियां	और वह भेजता है	उस के डर से	से

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ते हैं	और वह	वह चाहता है

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल (इब्रत नाक) सज़ाएं, और बेशक तुम्हारा रब उनके ज़ुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और बेशक तुम्हारा रब सख़्त अज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतबा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता बात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, बेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह खुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते उस के डर से (उस की तस्बीह करते हैं) और वह गरजने वाली बिजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ

वह जवाब नहीं देते	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	और जिन को	हक़	पुकारना	उस को

لَهُمْ بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ

वह	और नहीं	उस के मुँह तक	ताकि पहुँच जाए	पानी की तरफ़	अपनी हथेलियां	जैसे फैला दे	मगर	कुछ भी	उन को

بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ

और अल्लाह ही को सिज्दा करता है	14	गुमराही	में	सिवाए	काफ़िर (जमा)	पुकार	और नहीं	उस तक पहुँचने वाला

مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ

सुब्ह	और उन के साए	या नाख़ुशी से	ख़ुशी से	और ज़मीन	आस्मानों	में	जो

وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ السّجدة ٢

अल्लाह	कह दें	और ज़मीन	आस्मानों का रब	कौन	पूछें	15	और शाम

قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا

कुछ नफ़ा	अपनी जानों के लिए	वह बस नहीं रखते	हिमायती	उस के सिवा	तो क्या तुम बनाते हो	कह दें

وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَالْبَصِيْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ

क्या	या	और बीना (देखने वाला)	नाबीना (अन्धा)	बराबर होता है	क्या	कह दें	और न नुक़्सान

تَسْتَوِی الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ۬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا

उन्हों ने पैदा किया है	शरीक	अल्लाह के लिए	वह बनाते हैं	क्या	और उजाला	अन्धेरे (जमा)	बराबर हो जाएगा

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	कह दें	उन पर	पैदाइश	तो मुशतबह होगई	उस के पैदा करने की तरह

وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ

सो बह निकले	पानी	आस्मानों से	उस ने उतारा	16	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	यकता	और वह

اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا

और उस से जो	फूला हुआ	झाग	नाला	फिर उठा लाया	अपने अपने अन्दाज़े से	नदी नाले

يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ

झाग	असबाब	या	ज़ेवर	हासिल करने (बनाने) को	आग में	उस पर	तपाए हैं

مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا

सो	और बातिल	हक़	अल्लाह	बयान करता है	उसी तरह	उसी जैसा

الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ

लोग	जो नफ़ा पहुँचाता है	और लेकिन	सूख कर	दूर हो जाता है	झाग

فَيَمْكُثُ فِی الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ؕ ﴿١٧﴾

17	मिसालें	अल्लाह	बयान करता है	इसी तरह	ज़मीन में	तो ठहरा रहता है

उस को पुकारना हक़ है, और उस
के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह
उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर
जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां
पानी की तरफ़ फैलादे ताकि (पानी)
उस के मुँह तक पहुँच जाए, और
वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला
नहीं, और काफ़िरों की पुकार
गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14)
और अल्लाह ही को सिज्दा करता
है जो आस्मानों और ज़मीन में है,
ख़ुशी से या न ख़ुशी से, और सुब्ह
ओ शाम उन के साए (भी)। (15)
आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन
का रब कौन है? कह दें, अल्लाह
है, कह दें तो क्या तुम उस के
सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी
जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते
कुछ नफ़ा का और न नुक़्सान का,
कह दें क्या बराबर होता है अन्धा
और देखने वाला? या क्या उजाला
और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या
वह अल्लाह के लिए जो शरीक
बनालेते हैं उन्हों ने (मख़लूक़) पैदा
की है उस के पैदा करने की तरह?
सो पैदाइश उन पर मुशतबह
हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का
पैदा करने वाला है और वह यकता
ग़ालिब है। (16)
उस ने आस्मानों से पानी उतारा,
सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े
से वह निकले, फिर उठा लाया
(ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ
झाग, और जो आग में तपाते हैं
ज़ेवर बनाने को या और असबाब
बनाने को, (उस में भी) उस जैसा
झाग (मैल) होता है, उसी तरह
अल्लाह हक़ और बातिल को बयान
करता है, सो झाग दूर हो जाता
है (ज़ाया हो जाता है) सूख कर,
लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता
है वह ज़मीन में ठहरा रहता है
(बाक़ी रहता है) इसी तरह अल्लाह
मिसालें बयान करता है। (17)

وقف النبي عليه السلام

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ

यह कि	अगर	उस का (हुक्म)	न माना	और जिन लोगों ने	भलाई	अपने रब (का हुक्म)	उन्हों ने मान लिया	उन के लिए जिन्हों ने

لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	वही हैं	उस को	कि फ़िदये में दें	उस के साथ	और उस जैसा	सब	जो कुछ ज़मीन में	उन के लिए (उन का)

ع ٢/١ ٨ النصف

سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

जानता है	पस क्या जो	18	बिछाना (जगह)	और बुरा	जहन्नम	और उन का ठिकाना	हिसाब	बुरा

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

समझते हैं	इस के सिवा नहीं	अन्धा	वह	उस जैसा	हक़	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	कि जो

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾

20	पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार	और वह नहीं तोड़ते	अल्लाह का अ़हद	पूरा करते हैं	और वह जो कि	19	अ़क़्ल वाले

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

अपना रब	और वह डरते हैं	जोड़ा जाए	कि	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	जोड़े रखते हैं	और वह जो कि

وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ

अपना रब	ख़ुशी	हासिल करने के लिए	उन्हों ने सब्र किया	और वह लोग जो	21	हिसाब	बुरा	और ख़ौफ़ खाते हैं

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

और टाल देते हैं	और ज़ाहिर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च किया	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ

हमेशगी	बाग़ात	22	आख़िरत का घर	उन के लिए	वही हैं	बुराई	नेकी से

يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से (में)	नेक हुए	और जो	वह उस में दाख़िल होंगे

يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

पस ख़ूब	तुम ने सब्र किया	इस लिए कि	तुम पर	सलामती	23	हर दरवाज़ा	से	उन पर	दाख़िल होंगे

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ

उस को पुख़्ता करना	उस के बाद	अल्लाह का अ़हद	तोड़ते हैं	और वह लोग जो	24	आख़िरत का घर

وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ

यही हैं	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं	कि वह जोड़ा जाए	उस का	अल्लाह ने हुक्म दिया	जो	और वह काटते हैं

لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

और तंग करता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	कुशादा करता है	अल्लाह	25	बुरा घर	और उनके लिए	लानत	उन के लिए

ع ٣/٨ ٩

وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

26	मताअ़ हक़ीर	मगर (सिर्फ़)	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	दुनिया	ज़िन्दगी से	और वह ख़ुश हैं

जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फ़िदये में देदें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18)

क्या जो शख़्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, वह हक़ है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अ़क़्ल वाले ही समझते हैं। (19)

वह जो कि अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं, और पुख़्ता क़ौल ओ इक़रार नहीं तोड़ते। (20)

और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का ख़ौफ़ खाते हैं। (21)

और जिन लोगों ने अपने रब की ख़ुशी हासिल करने के लिए सब्र किया, और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से ख़र्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही हैं जिन के लिए आख़िरत का घर है। (22)

हमेशगी के बाग़ात (हैं) उन में वह दाख़िल होंगे, और वह जो उन के बाप दादा, और उन की बीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फ़रिश्ते दाख़िल होंगे, (23)

(यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हो इस लिए कि तुम ने सब्र किया पस ख़ूब है आख़िरत का घर। (24)

और जो लोग अल्लाह का अ़हद उस को पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुक्म दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25)

अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में मताअ़ हक़ीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रुजूअ़ करे। **(27)** जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। **(28)** जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, उन के लिए ख़ुशहाली है और अच्छा ठिकाना। **(29)** इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहदें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ़ है (रुजूअ़ करता हूँ)। **(30)** और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे बात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख़्त मुसीबत पहुंचती रहेगी, या उतरेगी क़रीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। **(31)** और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अ़ज़ाब) कैसा था? **(32)** पस क्या जो हर शख़्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स) कहदें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी) बात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के फ़रेब ख़ुशनुमा बना दिए गए और वह राहे (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। **(33)**

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आप कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	उतारी गई	क्यों न	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝٢٧ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ

और इत्मीनान पाते हैं	ईमान लाए	जो लोग	27	रुजूअ़ करे	जो	अपनी तरफ़	और राह दिखाता है	जिस को चाहता है	गुमराह करता है

قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ۝٢٨ۭ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	28	दिल (जमा)	इत्मीनान पाते हैं	अल्लाह के ज़िक्र से	याद रखो	अल्लाह के ज़िक्र से	जिन के दिल

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝٢٩ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ

में	हम ने तुम्हें भेजा	इसी तरह	29	ठिकाना	और अच्छा	उन के लिए	ख़ुशहाली	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए

اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	वह जो कि	उन पर (उन को)	ताकि तुम पढ़ो	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी हैं	उस उम्मत

وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

और उस की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	मेरा रब	वह	कह दें	रहमान के	मुन्किर होते हैं	और वह

مَتَابِ ۝٣٠ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ

ज़मीन	उस से	फट जाती	या	पहाड़	उस से	चलाए जाते	ऐसा कुरआन	यह के (होता)	और अगर	30	मेरा रुजूअ़

اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ۭ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ۭ اَفَلَمْ يَايْــــَٔـسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

कि	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	तो क्या इत्मीनान नहीं हुआ	तमाम	काम	अल्लाह के लिए	बल्कि	मुर्दे	उस से	या बात करने लगते

لَّوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۭ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ

उन्हें पहुँचेगी	वह लोग जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	और हमेशा	सब	लोग	तो हिदायत दे देता	अगर अल्लाह चाहता

بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का वादा	आजाए	यहां तक	उन के घर	से (के)	क़रीब	या उतरेगी	सख़्त मुसीबत	उस के बदले जो उन्हों ने किया (आमाल)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٣١ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ ع ٥ ١٠

तो मैं ने ढील दी	तुम से पहले	रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता	31	वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता	बेशक अल्लाह

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٣٢ اَفَمَنْ هُوَ قَاۗىِٕمٌ

निगरान	वह	पस क्या जो	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की पकड़ की	फिर	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلٰي كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۭ اَمْ تُنَبِّـــــُٔـوْنَهٗ

तुम उसे बतलाते हो	या	उन के नाम लो	आप कहदें	शरीक (जमा)	अल्लाह के	और उन्हों ने बना लिए	जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	पर

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۭ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया	बल्कि ख़ुशनुमा बना दिए गए	बात	से	महज़ ज़ाहिरी	या	ज़मीन में	उस के इल्म में नहीं	वह जो

مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣

33	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	और जो - जिस	राह	से	और वह रोक दिए गए	उन के फ़रेब

لَهُمْ عَذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا

और नहीं	निहायत तक्लीफ़दह	और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	अ़ज़ाब	उन के लिए

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ

परहेज़गार (जमा)	वादा किया गया	और जो कि	जन्नत	कैफ़ियत	34	कोई बचाने वाला	अल्लाह से	उन के लिए

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى

अन्जाम	यह	और उस का साया	दाइम	उस के फल	नहरें	उस के नीचे	बहती हैं

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

हम ने उन्हें दी	और वह लोग जो	35	जहन्नम	काफ़िरों	और अन्जाम	परहेज़गारों (जमा)

الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ

इन्कार करते हैं	जो	गिरोह	और बाज़	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	उस से जो	वह ख़ुश होते हैं	किताब

بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और न शरीक ठहराऊं	अल्लाह	मैं इबादत करूँ	कि	मुझे हुक्म दिया गया	इस के सिवा नहीं	आप कहदें	उस की बाज़

اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ

और अगर	अरबी ज़बान में	हुक्म	हम ने उस को नाज़िल किया	और उसी तरह	36	मेरा ठिकाना	और उसी की तरफ़	मैं बुलाता हूँ

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	तेरे लिए नहीं	इल्म (वहि)	जब कि तेरे पास आगया	बाद	उन की ख़्वाहिशात	तू ने पैरवी की

ع ٥/٦ ١١ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता हम ने भेजे	37	और न कोई बचाने वाला	कोई हिमायती

وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ

लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और नहीं हुआ	और औलाद	बीवियां	उन को	और हम ने दी

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ

जो वह चाहता है	मिटा देता है अल्लाह	38	एक तहरीर	हर वादे के लिए	अल्लाह की इजाज़त से	बग़ैर	कोई निशानी

وَيُثْبِتُ ۖۚ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

कुछ हिस्सा	तुम्हें दिखा दें हम	और अगर	39	अस्ल किताब (लौहे महफ़ूज़)	उस के पास	और बाक़ी रखता है

الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

और हम पर (हमारा काम)	पहुँचाना	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	तो इस के सिवा नहीं	हम तुम्हें वफ़ात दें	या	हम ने उन से वादा किया	वह जो कि

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ

उस के किनारे	से	उस को घटाते	ज़मीन	कि हम चले आते हैं	क्या वह नहीं देखते	40	हिसाब लेना

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

41	हिसाब लेने वाला	जल्द	और वह	उस के हुक्म को	कोई पीछे डालने वाला नहीं	हुक्म फ़रमाता है	और अल्लाह

उन के लिए दुनिया की जिन्दगी में अ़ज़ाब है, अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब निहायत तक्लीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)
और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अन्जाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। (35)
और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से ख़ुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज़ (बातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहदें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊं, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)
और उसी तरह हम ने इस (क़ुरआन) को अरबी ज़बान में हुक्म नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)
और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियां और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)
और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाक़ी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफ़ूज़ है। (39)
और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अ़ज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)
क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है, कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

और जो उन से पहले थे उन्हों ने चालें चलीं तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख़्स, और अनक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िबत का घर किस के लिए है। **(42)** और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफ़ी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। **(43)**

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरों से नूर की तरफ़, ग़ालिब, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, **(1)** उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब से ख़राबी है। **(2)** जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं आख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कजी ढून्डते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। **(3)** और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहकाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(4)** और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िआत के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। **(5)**

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ

वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चलीं

مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

42	आक़िबत का घर	किस के लिए	काफ़िर	और अनक़रीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख़्स)	जो कमाता है

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ

गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहदें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع ٦ ١٢

43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान

رُكُوْعَاتُهَا ٧ ❀ سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ (١٤) ❀ اٰيَاتُهَا ٥٢

रुकुआत 7 — (14) सूरह इब्राहीम — आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब	अलिफ़ लाम रा

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا

जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	ख़ूबियों वाला	ज़बरदस्त	रास्ता	तरफ़	उन का रब	हुक्म से

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿٢﴾

2	सख़्त	अ़ज़ाब	से	काफ़िरों के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

اِلَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

से	और रोकते हैं	आख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾

3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कजी	और उस में ढून्डते हैं	अल्लाह का रास्ता

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ

फिर गुमराह करता है अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर	कोई रसूल	और हम ने नहीं भेजा

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

नूर की तरफ़	अन्धेरों से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾

5	शुकर गुज़ार	हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह के दिन	और याद दिला उन्हें

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी क़ौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब

اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अ़ज़ाब	वह तुम्हें पहुँचाते थे	फ़िरऔ़न की क़ौम	से	जब उस ने नजात दी तुम्हें

وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और ज़ुबह करते थे

ع ٦ / ١٣
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ؑ ﴿٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

तुम शुक्र करोगे	अलबत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब	से

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ

और कहा	7	बड़ा सख़्त	मेरा अ़ज़ाब	बेशक	तुम ने नाशुक्री की	और अलबत्ता अगर	तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा

مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुक्री करोगे	अगर	मूसा (अ)

عند المتقدمين ١٢ / ع ٦
لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٨﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब ख़ूबियों वाला	बेनियाज़

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ

उन की ख़बर नहीं	उन के बाद	और वह जो	और समूद	और आ़द	नूह (अ) की क़ौम

اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ

अपने हाथ	तो उन्हों ने लौटाए	निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए

فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	बेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में

الثلثة
وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ

उन के रसूल	कहा	9	तरद्दुद में डालते हुए	उस की तरफ़	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो	शक	अलबत्ता में	और बेशक हम

اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाता है	और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुबाह - शक	क्या अल्लाह में

لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

एक मुद्दत मुक़र्ररा	तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़्शदे तुम्हें

قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	बशर	सिर्फ़	तुम	नहीं	वह बोले

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

10	रौशन	दलील, मोजिज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे	उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी क़ौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न की क़ौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अ़ज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ुबह करते थे, और तुम्हारी औ़रतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (6)

और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलबत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलबत्ता अगर तुम ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा अ़ज़ाब बड़ा सख़्त है। (7)

और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुक्री करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सब ख़ूबियों वाला है। (8)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिऐ) क़ौमे नूह (अ), आ़द और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलबत्ता तुम हमें जिस की तरफ़ बुलाते हो हम शक में हैं तरद्दुद में डालते हुए। (9)

उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे, और एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ़ हम जैसे बशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ

एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	बशर	सिर्फ़	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ

कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَآ

हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (बग़ैर)

اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ

जो	पर	और हम ज़रूर सब्र करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दीं	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें

اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٢ ١٤

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमे ईज़ा देते हो

لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ

हमारे दीन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ

ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद करदेंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ़	तो वहि भेजी

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا

और उन्हों ने फ़तह मांगी	14	वईद (एलाने अ़ज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के बाद

وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहन्नम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूंट घूंट पिएगा	16	पीप वाला

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ

मिसाल	17	सख़्त	अ़ज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ़

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ

आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अ़मल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए

لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्हों ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें लेजाए	वह चाहे	अगर	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मख़्लूक़	और लाए

उन के रसूलों ने उन से कहा (बेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे बशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के बग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोजिज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11)

और हमे किया हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12)

और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दीन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13)

और अलबत्ता हम तुम्हें उन के बाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अ़ज़ाब से। (14)

और उन्हों ने (अंबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15)

उस के पीछे जहन्नम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16)

वह उसे घूंट घूंट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अ़ज़ाब है। (17)

उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अ़मल राख की तरह हैं कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा लेगई) जो उन्हों ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ (ठकि ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़्लूक़। (19)

और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

وَبَـرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا

बेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किसी क़द्र	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे	तुम्हारे

قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ

या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर	वह कहेंगे

ع ٣ ٩ ١٥ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ

अमर	फ़ैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	नहीं हमारे लिए	हम सब्र करें

اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ

था	और न	फिर मैं ने उस के ख़िलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	बेशक अल्लाह

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ج

मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि	मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा

فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ

फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम

اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	बेशक	उस से क़ब्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	बेशक मैं इन्कार करता हूँ

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अ़ज़ाब

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ

अपना रब	हुक्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا

मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुह्फ़ा-ए-मुलाक़ात

كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾ لا

24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	पाकीज़ा	जैसे दरख़्त	कलिमाए तय्यबा (पाक बात)

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ

मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रब	हुक्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ

नापाक बात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

26	कुछ भी क़रार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, बेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी क़द्र अल्लाह का अ़ज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सब्र करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21)

और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फ़ैसला हो गया शैतान बोला बेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के ख़िलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, बेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़ब्ल मुझे शरीक बनाया, बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (22)

और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रब के हुक्म से, उस में उन का तुह्फ़ाए मुलाक़ात "सलाम" है। (23)

क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक बात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24)

वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रब के हुक्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (25)

और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी क़रार नहीं। (26)

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। **(27)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल दिया, और अपनी क़ौम को उतारा तबाही के घर में। **(28)**

वह जहन्नम है वह उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। **(29)**

और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम्हारा लौटना (बाज़गश्त) जहन्नम की तरफ़ है। **(30)**

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ क़ाइम करें और उस में से ख़र्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। **(31)**

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क़, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से दर्या में चले और मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए नहरों को। **(32)**

और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, **(33)**

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगो तुम उसे शुमार में न लासकोगे, बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। **(34)**

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अम्न की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगें। **(35)**

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है

وَفِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۫ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ٢٧ ع ٦ ١٦

27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आख़िरत में

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ

अपनी क़ौम	और उतारा	नाशुक्री से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्हों ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा

دَارَ الْبَوَارِ ٢٨ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ٢٩ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	28	तबाही का घर

اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ

तुम्हारा लौटना	फिर बेशक	फ़ाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शरीक

اِلَى النَّارِ ٣٠ قُلْ لِّعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहन्नम	तरफ़

وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ

कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिर	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और ख़र्च करें

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ٣١ اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ

उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ

दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क़	फल (जमा)	से

بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ٣٢ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	32	नहरें (नदियां)	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	उस के हुक्म से

دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ٣٣ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا

जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए	और मुसख़्ख़र किया	एक दस्तूर पर चलने वाले

سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ

इन्सान	बेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगो तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी

لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ٣٤ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ ع ٥ ١٧

बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	बेशक बड़ा ज़ालिम

هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ٣٥

35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अम्न की जगह	यह शहर

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ

पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	बेशक वह	ऐ मेरे रब

تَبِعَنِىْ فَاِنَّهٗ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ عَصَانِىْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	तो बेशक तू	मेरी नाफ़रमानी की	और जो - जिस	मुझ से	बेशक वह	मेरी पैरवी की

رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَآ اِنِّىْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِىْ بِوَادٍ غَيْرِ

बग़ैर	मैदान	अपनी ओलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	बेशक मैं	ऐ हमारे रब	36	निहायत मेहरबान

ذِىْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

ताकि क़ाइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नज़दीक	खेती वाली

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىْٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़

وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिज़्क़ दे

اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِىْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है	बेशक तू

مِنْ شَىْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	38	आस्मान	में	और न	ज़मीन मे	चीज़	से - कोई

وَهَبَ لِىْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ رَبِّىْ لَسَمِيْعُ

अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	बेशक	और इस्हाक़ (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - में	बख़्शा मुझे

الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ۖ

मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	क़ाइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब	39	दुआ

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ

और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और क़ुबूल फ़रमा	ऐ हमारे रब

ع ٦ ١٨ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ

तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	क़ाइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को

اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ

उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ़	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर	अल्लाह

لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِىْ

उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक

رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ़	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, बेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की तो बेशक तू बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (36) ऐ हमारे रब! बेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बग़ैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नज़्दीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ क़ाइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिज़्क़ दे, ताकि वह शुक्र करें। (37) ऐ हमरे रब! बेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38) तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापे में बख़्शा इस्माइल (अ) और इसहाक़ (अ), बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39) ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ क़ाइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा ले। (40) ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को बख़्शदे। (41) और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेख़बर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42) वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो	तो कहेंगे	अ़ज़ाब	उन पर आएगा	वह दिन	लोग	और डराओ

رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ

रसूल (जमा)	और हम पैरवी करें	तेरी दावत	हम कुबूल करलें	थोड़ी	एक मुद्दत	तरफ़	हमें मोहलत दे	ऐ हमारे रब

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ﴿٤٤﴾ وَّسَكَنْتُمْ

और तुम रहे थे	44	कोई ज़वाल	तुम्हारे लिए नहीं	इस से क़ब्ल	तुम क़स्में खाते	तुम थे	या-क्या न

فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ

उन से	हम ने (सुलूक) किया	कैसा	तुम पर	और ज़ाहिर हो गया	अपनी जानों पर	ने ज़ुल्म किया	जिन लोगों	घर (जमा)	में

وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ

उन के दाओ	और अल्लाह के आगे	अपने दाओ	और उन्हों ने दाओ चले	45	मिसालें	तुम्हारे लिए	और हम ने बयान की

وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

ख़िलाफ़ करेगा	अल्लाह	पस तू हरगिज़ ख़याल न कर	46	पहाड़	उस से	कि टल जाए	उन का दाओ	था	और अगरचे

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ

ज़मीन	बदल दी जाएगी	जिस दिन	47	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	बेशक अल्लाह	अपने रसूल	अपना वादा

غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى

और तू देखेगा	48	सख़्त क़हर वाला	यकता	अल्लाह के आगे	वह निकल खड़े होंगे	और आस्मान (जमा)	मुख़्तलिफ़ ज़मीन

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ

से - के	उन के कुर्ते	49	ज़न्जीरें	में	बाहम जकड़े हुए	उस दिन	मुज्रिम (जमा)

قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِىَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا

जो	हर जान	अल्लाह	ताकि बदला दे	50	आग	उन के चहरे	और ढांप लेगी	गन्धक

كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا

और ताकि वह डराए जाएं	लोगों के लिए	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	51	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	उस ने कमाया (कमाई)

بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾ ع ١١ ١٩

52	अ़क्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	यकता	वह माबूद	उस के सिवा नहीं	और ताकि वह जान लें	उस से

آيَاتُهَا ٩٩ ❀ سُوْرَةُ الْحِجْرِ (١٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6　　(15) सूरतुल हिज्र
पत्थर　　आयात 99

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

1	वाज़ेह - रौशन	और क़ुरआन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अ़ज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुद्दत के लिए मोहलत देदे कि हम तेरी दावत कुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़ब्ल क़स्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44) और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45) और उन्हों नें अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे हैं उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46) पस तू हरगिज़ ख़याल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48) और तू देखेगा मुज्रिम उस दिन बाहम ज़न्जीरों में जकड़े होंगे। (49) उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50) ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, बेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51) यह (कुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही माबूद यकता है, और ताकि अ़क्ल वाले नसीहत पकड़ें। (52)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लााम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) कुरआन की। (1)

الجزء ١٤

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफ़िर हुए	आर्ज़ू करेंगे	बसा औक़ात

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

पस अ़नक़रीब	उम्मीद	और ग़फ़लत में रखे उन्हें	और फ़ाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ

एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया	और नहीं	3	वह जान लेंगे

مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुक़र्ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है	4	मुक़र्ररा वक़्त

وَقَالُوْا يٰاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾ط

6	दीवाना	बेशक तू	याद दिहानी (क़ुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया	ऐ वह	और वह बोले

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ

हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर	फ़रिश्तों को	हमारे पास तू नहीं ले आता	क्यों

الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّا نَحْنُ

हम	बेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे	हक़ के साथ	मगर	फ़रिश्ते

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ

से	और यक़ीनन हम ने भेजे	9	निगहबान	उस के	और बेशक हम	याद दिहानी (क़ुरआन)	हम ने नाज़िल किया

قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह	में	तुम से पहले

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٢﴾لا

12	मुज्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह	11	इस्तिहज़ा करते	उस से	वह थे

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا

हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है	उस पर	वह ईमान नहीं लाएंगे

عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾لا لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

बान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में	वह रहें	आस्मान	से	कोई दरवाज़ा	उन पर

ع ١٥ ١

اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾ع وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ

आस्मान	में	और यक़ीनन हम ने बनाए	15	सिह्‌र ज़दह	लोग	हम	बल्कि	हमारी आँखें

بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾لا وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए	और उसे ज़ीनत दी	बुर्ज (जमा)

رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾لا اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे	जो	मगर	17	मर्दूद

बाज़ औक़ात काफ़िर आर्ज़ू करेंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फ़ाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें ग़फ़लत में डाले रखे, पस अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुक़र्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुक़र्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफ़िर) बोले ऐ वह शख़्स जिस पर क़ुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फ़रिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने क़ुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहबान हैं। (9) और यक़ीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिह्‌र ज़दह हैं। (15) और यक़ीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19)
और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं। (20)
और कोई चीज़ नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21)
और हम ने हवाएं भेजीं (पानी से) भरी हुईं, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के ख़ज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22)
और बेशक हम (ही) ज़िन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23)
और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं तुम में से आगे गुज़र जाने वाले, और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं पीछे रह जाने वाले। (24)
और बेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े क़ियामत) जमा करेगा, बेशक वह हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (25)
और तहक़ीक़ हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26)
और जिनों को उस से पहले हम ने बे धुएं की आग से पैदा किया। (27)
और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28)
फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29)
पस सिज्दा किया सब के सब फ़रिश्तों ने, (30)
इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31)
अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32)
उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا

उस में	और हम ने उगाई	पहाड़	उस में (पर)	और हम ने रखे	हम ने उस को फैला दिया	और ज़मीन

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ١٩ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

और जो- जिस	सामाने मईशत	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	19	मौज़ूं	हर शै	से

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ٢٠ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا

और नहीं	उस के ख़ज़ाने	हमारे पास	मगर	कोई चीज़	और नहीं	20	रिज़्क़ देने वाले	उस के लिए	तुम नहीं

نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٢١ وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا

फिर हम ने उतारा	भरी हुई	हवाएं	और हम ने भेजी	21	मालूम - मुनासिब	अन्दाज़े से	मगर	हम उस को उतारते

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ٢٢

22	ख़ज़ाने करने वाले	उस के	तुम	और नहीं	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	पानी	आस्मान	से

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ٢٣ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	23	वारिस (जमा)	और हम	और हम मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	अलबत्ता हम	और बेशक हम

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ٢٤ وَاِنَّ

और बेशक	24	पीछे रह जाने वाले	और तहक़ीक़ हमें मालूम हैं	तुम में से	आगे गुज़रने वाले

رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ٢٥ ۧ وَلَقَدْ خَلَقْنَا ع ٢ ١٠ ٢

और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	25	इल्म वाला	हिक्मत वाला	बेशक वह	उन्हें जमा करेगा	वह	तेरा रब

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٢٦ ۚ وَالْجَآنَّ

और जिन (जमा)	26	सड़ा हुआ	सियाह गारे से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ٢٧ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

तेरा रब	कहा	और जब	27	आग बे धुएं की	से	उस से पहले	हम ने उसे पैदा किया

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٢٨

28	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान	बनाने वाला	बेशक मैं	फ़रिश्तों को

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ٢٩

29	सिज्दा करते हुए	उस के लिए	तो गिर पड़ो	अपनी रूह से	उस में	और फूंकूं	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	फिर जब

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ٣٠ ۙ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ

साथ	वह हो	उस ने इन्कार किया कि	इब्लीस	सिवाए	30	सब के सब	वह सब	फ़रिश्तों	पस सिज्दा किया

السّٰجِدِيْنَ ٣١ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ ٣٢ قَالَ

उस ने कहा	32	सिज्दा करने वाले	साथ	कि तू न हुआ	तुझे क्या हुआ	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	31	सिज्दा करने वाले

لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ٣٣

33	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	तू ने उस को पैदा किया	इन्सान को	कि सिज्दा करूँ	मैं नहीं हूँ

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ ۙ ﴿٣٤﴾ وَّإِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	34	मर्दूद	बेशक तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने कहा

اللَّعْنَةَ إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى

तक	मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	35	रोज़े इन्साफ़	तक	लानत

يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۙ ﴿٣٧﴾ إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ

वक़्त	दिन	तक	37	मोहलत दिए जाने वाले	से	बेशक तू	उस ने कहा	36	जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे

الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِيْ لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	तू ने मुझे गुमराह किया	जैसा कि	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	38	मालूम (मुक़र्रर)

فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

उन में से	तेरे बन्दे	सिवाए	39	सब	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	ज़मीन में

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ

बेशक	41	सीधा	मुझ तक	रास्ता	यह	उस ने फ़रमाया	40	मुख़्लिस (जमा)

عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ

तेरी पैरवी की	जो - जिस	मगर	कोई ज़ोर	उन पर	तेरे लिए (तेरा)	नहीं	मेरे बन्दे

مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿٤٣﴾

43	सब	उन के लिए वादा गाह	जहन्नम	और बेशक	42	बहके हुए (गुमराह)	से

ع ١٩ ٣
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۭ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾

44	तक़्सीम शुदह	एक हिस्सा	उन से	हर दरवाज़े के लिए	दरवाज़े	सात	उस के लिए

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۭ ﴿٤٥﴾ أُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ

सलामती के साथ	तुम उन में दाख़िल हो जाओ	45	और चश्मे	बाग़ात	में	परहेज़गार	बेशक

اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلٰى

पर	भाई भाई	कीना	से	उन के सीने	में	जो	और हम ने खींच लिया	46	बेख़ौफ़ ओ ख़तर

سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا

उस से	वह	और न	कोई तक्लीफ़	उस में	उन्हें न छुएगी	47	आमने सामने	तख़्त (जमा)

بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ أَنِّيْٓ أَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۙ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ

और यह कि	49	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	मैं	कि बेशक	मेरे बन्दों	ख़बर दे दो	48	निकाले जाएंगे

وقف لازم
عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾

51	इब्राहीम (अ)	मेहमान	से - का	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	50	दर्दनाक	अज़ाब	वह (ही)	मेरा अज़ाब

إِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	डरने वाले (डरते हैं)	तुम से	हम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस पर (पास)	वह दाख़िल हुए (आए)	जब

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्नत) से निकल जा बेशक तू मर्दूद है। (34)
और बेशक तुझ पर रोज़े इन्साफ़ (क़ियामत) तक लानत है। (35)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगें। (36)
उस ने फ़रमाया बेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37)
उस दिन तक जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (38)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39)
सिवाए उन में से जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं। (40)
उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41)
बेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42)
और बेशक उन सब के लिए जहन्नम वादागाह है। (43)
उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44)
बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में (होंगे)। (45)
तुम उन में सलामती के साथ बेख़ौफ़ ओ ख़तर दाख़िल हो जाओ। (46)
और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47)
उस में उन्हें कोई तक्लीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48)
मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (49)
और यह कि मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है। (50)
और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ

क्या तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो	उस ने कहा	53	इल्म वाला	एक लड़का	बेशक हम तुम्हें ख़ुशख़बरी देते हैं	डरो नहीं	उन्हों ने कहा

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِىَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

हम ने तुम्हें ख़ुशख़बरी दी	वह बोले	54	तुम ख़ुशख़बरी देते हो	सो किस बात	बुढ़ापा	मुझे पहुँच गया	कि	पर - में

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ

से	मायूस होगा	और कौन	उस ने कहा	55	मायूस होने वाले	से	आप न हों	सच्चाई के साथ

رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا

ऐ	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	उस ने कहा	56	गुमराह (जमा)	सिवाए	अपना रब	रहमत

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ

सिवाए	58	मुज्रिम (जमा)	एक क़ौम	तरफ़	भेजे गए	हम बेशक	वह बोले	57	भेजे हुए (फ़रिश्तो)

اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ

से	बेशक वह	हम ने फ़ैसला कर लिया है	उस की औरत	सिवाए	59	सब	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	हम	घर वाले लूत के

الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ ع ١٦ ٦

लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	61	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	लूत (अ) के घर वाले	आए	पस जब	60	पीछे रह जाने वाले

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	शक करते	उस में	वह थे	उस के साथ जो	हम आए हैं तुम्हारे पास	बल्कि	वह बोले	62	ऊपरे (ना आशना)

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ

से	एक हिस्सा	अपने घर वालों को	पस ले निकलें आप	64	अलबत्ता सच्चे	और बेशक हम	हक़ के साथ	और हम तुम्हारे पास आए हैं

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا

और चले जाओ	कोई	तुम में से	पीछे मुड़ कर देखे	और न	उन के पीछे	और ख़ुद चलें	रात

حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

यह लोग	जड़	कि	बात	उस	उस की तरफ़	और हम ने फ़ैसला भेजा	65	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	ख़ुशियां मनाते	शहर वाले	और आए	66	सुबह होते	कटी हुई

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

69	और मुझे ख़्वार न करो	अल्लाह	और डरो	68	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	मेरे मेहमान	यह लोग	कि	उस ने कहा

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ

अगर	मेरी बेटियां	यह	उस ने कहा	70	सारे जहान	से	हम ने तुझे मना किया	क्या नहीं	वह बोले

كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	मदहोश थे	अपने नशे	अलबत्ता में	बेशक वह	तुम्हारी जान की क़सम	71	करने वाले (करना है)	तुम हो

उन्हों ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं इल्म वाले की। (53)
उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में ख़ुशख़बरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की ख़ुशख़बरी देते हो? (54)
वह बोले हम ने तुम्हें ख़ुशख़बरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)
उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)
उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)
वह बोले बेशक हम भेजे गए हैं मुज्रिमों की एक क़ौम की तरफ़, (58)
सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)
सिवाए उस की औरत के, हम ने फ़ैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)
पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)
उस ने कहा बेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)
वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अ़ज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)
और हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए हैं और बेशक हम सच्चे हैं। (64)
पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले निकलें और ख़ुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)
और हम ने उस की तरफ़ उस बात का फ़ैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)
और शहर वाले ख़ुशियां मनाते आए। (67)
उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)
और अल्लाह से डरो और मुझे ख़्वार न करो। (69)
वह बोले क्या हम ने तुझे सारे जहान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70)
उस ने कहा यह मेरी बेटियां हैं (इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)
(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की क़सम यह लोग बेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُشۡرِقِيۡنَ ۙ﴿۷۳﴾ فَجَعَلۡنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ؕ﴿۷۴﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस	में	बेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से	पत्थर	उन पर	और हम ने बरसाए

لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

निशानी	उस	में	बेशक	76	सीधा	रास्ते पर	और बेशक वह	75	ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए

لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ﴿۷۷﴾ وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ۙ﴿۷۸﴾ فَانۡتَقَمۡنَا

हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	एयका (बन) वाले (क़ौमे शुऐब)	थे	और तहक़ीक़	77	ईमान वालों के लिए

مِنۡهُمۡ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ؕ﴿۷۹﴾ وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ

ع ١٩ ٥
وقف لازم

हिज्र वाले	और अलबत्ता झुटलाया	79	खुले	रास्ते पर	और बेशक वह दोनों	उन से

الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ﴿۸۰﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ۙ﴿۸۱﴾

81	मुँह फेरने वाले	उस से	पस वह थे	अपनी निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	80	रसूल (जमा)

وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا اٰمِنِيۡنَ ﴿۸۲﴾

82	बेख़ौफ़ ओ ख़तर	घर	पहाड़ (जमा)	से	और वह तराशते थे

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ۙ﴿۸۳﴾ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا

जो	उन के	तो न काम आया	83	सुबह होते	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया

كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ؕ﴿۸۴﴾ وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا

और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया हम ने	और नहीं	84	वह कमाया करते थे

بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَـقِّؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ

दरगुज़र करना	पस दरगुज़र करो	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	और बेशक	हक़ के साथ	मगर	उन के दरमियान

الۡجَمِيۡلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الۡخَـلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنٰكَ

हम ने तुम्हें दीं	और तहक़ीक़	86	जानने वाला	पैदा करने वाला	वह	तुम्हारा रब	बेशक	85	अच्छा

سَبۡعًا مِّنَ الۡمَثَانِىۡ وَالۡقُرۡاٰنَ الۡعَظِيۡمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ

हरगिज़ न बढ़ाएं आप	87	अज़मत वाला	और क़ुरआन	बार बार दोहराई जाने वाली	से	सात

عَيۡنَيۡكَ اِلٰى مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ وَلَا تَحۡزَنۡ

और न ग़म खाएं	उन के	कई जोड़े	उस को	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें

عَلَيۡهِمۡ وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۸۸﴾ وَقُلۡ اِنِّىۡۤ اَنَا

मैं	बेशक मैं	और कह दें	88	मोमिनों के लिए	अपने बाज़ू	और झुका दें	उन पर

النَّذِيۡرُ الۡمُبِيۡنُ ۚ﴿۸۹﴾ كَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَى الۡمُقۡتَسِمِيۡنَ ۙ﴿۹۰﴾

90	तक़सीम करने वाले	पर	हम ने नाज़िल किया	जैसे	89	डराने वाला अ़लानिया

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73)
पस हम ने उस (बस्ती) का ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74)
बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (75)
और बेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते पर (वाक़े) है। (76)
बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77)
और तहक़ीक़ क़ौमे शुऐब (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78)
और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बस्तियां वाक़े हैं) एक खुले रास्ते पर। (79)
और अलबत्ता "हिज्र" के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80)
और हम ने उन्हें अपनी निशानियां दीं पस वह उन से मुँह फेरने वाले थे। (81)
और वह पहाड़ों से बेख़ौफ़ ओ ख़तर घर तराशते थे। (82)
पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83)
तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84)
और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85)
बेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86)
और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दीं और अज़्मत वाला क़ुरआन। (87)
आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दीं, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाज़ू झुका दें मोमिनों के लिए। (88)
और कह दें बेशक मैं अ़लानिया डराने वाला हूँ। (89)
जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़्रिक़ा परदाज़ों) पर अ़ज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने क़ुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)
सो तेरे रब की क़सम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)
उस की बाबत जो वह करते थे। (93)
पस जिस बात का आप (स) को हुक्म दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94)
बेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के ख़िलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफ़ी हैं। (95)
जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह अनक़रीब जान लेंगे। (96)
और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)
तो तस्बीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हम्द के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98)
और अपने रब की इबादत करते रहें यहां तक कि आप (स) के पास यक़ीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुक्म सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)
वह फ़रिश्ते अपने हुक्म से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)
उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)
उस ने इन्सान को पैदा किया नुत्फ़े से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)
और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (5)
और तुम्हारे लिए उन में खूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْــَٔلَنَّهُمْ

हम ज़रूर पूछेंगे उन से	सो तेरे रब की क़सम	91	टुकड़े टुकड़े	क़ुरआन	उन्हों ने कर दिया	वह लोग जो

اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ
الربع

तुम्हें हुक्म दिया गया	जिस का	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	93	वह करते थे	उस की बाबत जो	92	सब

وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ

जो लोग	95	मज़ाक़ उड़ाने वाले	काफ़ी हैं तुम्हारे लिए	बेशक हम	94	मुश्रिक (जमा)	से	और एराज़ करें

يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

हम जानते हैं	और अलबत्ता	96	वह जान लेंगे	पस अनक़रीब	कोई दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	बनाते हैं

اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

और हो	अपना रब	हम्द के साथ	तो तस्बीह करें	97	जो वह कहते हैं	उस से	तुम्हारा सीना (दिल)	तंग होता है	बेशक तुम

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع ٦ ٦

99	यक़ीनी बात	आए आप (स) के पास	यहां तक कि	अपना रब	और इबादत करें	98	सिज्दा करने वाले	से

اٰيَاتُهَا ١٢٨ ❀ سُوْرَةُ النَّحْلِ (١٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकुआत 16	(16) सूरतुन नहल शहद की मक्खी	आयात 128

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	सो उस की जल्दी न करो	आ पहुँचा अल्लाह का हुक्म

يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

जिसे चाहता है	पर	अपने हुक्म	से	वहि के साथ	फ़रिश्ते	वह नाज़िल करता है	1	वह शरीक बनाते हैं

مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ

उस ने पैदा किए	2	पस मुझ से डरो	मेरे	सिवाए	कोई माबूद	नहीं	कि वह	तुम डराओ	कि	अपने बन्दे	से

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

पैदा किया उस ने	3	वह शरीक करते हैं	उस से जो	बरतर	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾ وَالْاَنْعَامَ

और चौपाए	4	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुत्फ़ा	से	इन्सान

خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

5	तुम खाते हो	उन में से	और फ़ाइदे (जमा)	गर्म सामान	उन में	तुम्हारे लिए	उस ने उन को पैदा किए

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿٦﴾

6	सुबह को चराने ले जाते हो	और जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	जिस वक़्त	खूबसूरती-शान	उन में	और तुम्हारे लिए

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ

हलकान कर के	बग़ैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ़	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते हैं

الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۙ ﴿۷﴾ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ

और ख़च्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़	तुम्हारा रब	बेशक	जानें

وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर

ع ٩

اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ

उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही	9	सब

شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से	पीना

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ

हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और ज़ैतून	खेती

الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَسَخَّرَ

और मुसख़्ख़र किया	11	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	फल (जमा)

لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए

مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ ﴿۱۲﴾

12	वह अक़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	उस के हुक्म से	मुसख़्ख़र

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

बेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

जो - जिस	और वही	13	वह सोचते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا

और तुम निकालो	ताज़ा	गोश्त	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़्ख़र किया

مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ

पानी चीरने वाली	कश्ती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहां जानें हलकान किए बग़ैर तुम पहुँचने वाले न थे। बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और ख़च्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराब होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और ज़ैतून, और खजूर, और अंगूर और हर क़िस्म के फल, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़्ख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक्म से, बेशक उस में अ़क्ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कीं मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग ब रंग की, बेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोश्त खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कश्तियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए) ताकि तुम राह पाओ। (15)
और अ़लामतें (बनाईं) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। (16)
क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (17)
और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (18)
और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19)
और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह ख़ुद पैदा किए गए हैं। (20)
मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21)
तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आख़िरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मग़रूर हैं। (22)
यक़ीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (23)
और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। (24)
अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, ख़ूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। (25)
जो उन से पहले थे उन्हों ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अ़ज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। (26)

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا

और रास्ते	और नहरें - दर्या	तुम्हें ले कर	कि झुक न पड़े	पहाड़	ज़मीन में - पर	और डाले (रखे)

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَعَلٰمٰتٍ ۭ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ

क्या - पस जो	16	रास्ता पाते हैं	वह	और सितारा	और अ़लामतें	15	राह पाओ	ताकि तुम

يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ

अल्लाह की नेमत	तुम शुमार करो	और अगर	17	क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते	पैदा नहीं करता	उस जैसा जो	पैदा करे

لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

जो तुम छुपाते हो	जानता है	और अल्लाह	18	निहायत मेह्रबान	अलबत्ता बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस को पूरा न गिन सकोगे

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ

वह पैदा नहीं करते	अल्लाह	सिवाए	वह पुकारते हैं	और जिन्हें	19	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो

شَيْــــًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ۭ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاۗءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ

और वह नहीं जानते	ज़िन्दा	नहीं	मुर्दे	20	पैदा किए गए	और वह (ख़ुद)	कुछ भी

اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ۧ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ع ١٢ ٢ ٨

ईमान नहीं रखते	पस जो लोग	एक (यकता)	माबूद	तुम्हारा माबूद	21	वह उठाए जाएंगे	कब

بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ

कि	यक़ीनी बात	22	तकब्बुर करने वाले (मग़रूर)	और वह	मुन्किर (इन्कार करने वाले)	उन के दिल	आख़िरत पर

اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

23	तकब्बुर करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	वह छुपाते हैं	जो	जानता है	अल्लाह

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ

कहानियां	वह कहते हैं	तुम्हारा रब	नाज़िल किया	क्या	उन से	कहा जाए	और जब

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ۙ لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ

क़ियामत के दिन	पूरे	अपने बोझ (गुनाह)	अन्जामे कार वह उठाएंगे	24	पहले लोग

وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اَلَا سَاۗءَ

बुरा	ख़ूब सुन लो	इल्म के बग़ैर	वह गुमराह करते हैं	उन के जिन्हें	बोझ	और कुछ

مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ۧ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى ع ٣ ٩

पस आया	उन से पहले	वह लोग जो	तहक़ीक़ मक्कारी की	25	जो वह लादते हैं

اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

से	छत	उन पर	पस गिर पड़ी	बुन्याद (जमा)	से	उन की इमारत	अल्लाह

فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	उन्हें ख़याल न था	जहां से	से	अ़ज़ाब	और आया उन पर	उन के ऊपर

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

वह जो कि	मेरे शरीक	कहां	और कहेगा	वह उन्हें रुस्वा करेगा	क़ियामत के दिन	फिर

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ

रुस्वाई	बेशक	इल्म (इल्म वाले)	दिए गए	वह लोग जो	कहेंगे	उन (के बारे) में	झगड़ते	तुम थे

الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़रिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	27	काफ़िर (जमा)	पर	और बुराई	आज

ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ

बेशक	हां हां	कोई बुराई	हम न करते थे	पैग़ामे इताअ़त	पस डालेंगे	अपने ऊपर	ज़ुल्म करते हुए

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	दरवाज़े	सो तुम दाख़िल हो	28	तुम करते थे	वह जो	जानने वाला	अल्लाह

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا

उन लोगों से जिन्हों ने परहेज़गारी की	और कहा गया	29	तकब्बुर करने वाले	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	उस में	हमेशा रहोगे

مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ

में	भलाई की	उन के लिए जो लोग	बहतरीन	वह बोले	तुम्हारा रब	उतारा	क्या

هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	परहेज़गारों का घर	और क्या ख़ूब	बेहतर	और आख़िरत का घर	भलाई	दुनिया	इस

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उन के लिए	नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	वह उन में दाख़िल होंगे	हमेशगी	बाग़ात

مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ

उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	31	परहेज़गार (जमा)	अल्लाह	जज़ा देता है	ऐसी ही	जो वह चाहेंगे

الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا

उस के बदले जो	जन्नत	तुम दाख़िल हो	सलामती तुम पर	वह कहते हैं	पाक होते हैं	फ़रिश्ते

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह कि	मगर (सिर्फ़)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	32	तुम करते थे (आमाल)

اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ

और नहीं ज़ुल्म किया उन पर	उन से पहले	वह लोग जो	किया	ऐसा ही	तेरा रब	हुक्म

اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचीं	33	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और बल्कि	अल्लाह

ع ٩ ١٠ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع

34	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लिया	जो उन्हों ने किया (आमाल)

फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे बेशक आज के दिन रुस्वाई और बुराई है काफ़िरों पर। (27)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, फिर वह इताअ़त का पैग़ाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (28)

सो तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)

और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आख़िरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या ख़ूब है! परहेज़गारों का घर। (30)

हमेशगी के बाग़ात, जिन में वह दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)

वह जिन की जान फ़रिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)

अपने आमाल के बदले जन्नत में दाख़िल हो। क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं, या तेरे रब का हुक्म आए, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (ख़ुद) ज़ुल्म करते थे। (33)

पस उन्हें पहुँचीं उन के आमाल की बुराइयां, और उन्हें घेर लिया उस (अ़ज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (34)

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परस्तिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)
और तहक़ीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)
अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)
और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) क़सम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े क़ियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)
ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)
जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि “हो जा” तो वह हो जाता है। (40)
और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज्रत कि उस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बड़ा है, काश वह (हिज्रत से रह जाने वाले) जानते। (41)
जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवाए	हम परस्तिश करते	न	चाहता अल्लाह	अगर	उन्हों ने शिर्क किया	वह लोग जो	और कहा

مِنْ شَیْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ ؕ

कोई शै	उस के (हुक्म के) सिवा	और न हराम ठहराते हम	हमारे बाप दादा	और न	हम	कोई - किसी शै

كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا

मगर	रसूल (जमा)	पर (ज़िम्मे)	पस क्या है	उन से पहले	वह लोग जो	किया	उसी तरह

الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ

कि	रसूल	हर उम्मत	में	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	35	साफ़ साफ़	पहुँचा देना

اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ

अल्लाह	जिसे हिदायत दी	सो उन में से बाज़	तागूत (सरकश)	और बचो	अल्लाह	इबादत करो तुम

وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا

फिर देखो	ज़मीन में	पस चलो फिरो	गुमराही	उस पर	साबित हो गई	बाज़	और उन में से

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰی هُدٰىهُمْ

उन की हिदायत के लिए	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	अगर	36	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِیْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	वह गुमराह करता है	जिसे	हिदायत नहीं देता	तो बेशक अल्लाह

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ

जो मर जाता है	अल्लाह	नहीं उठाएगा	अपनी क़सम	अपनी सख़्त	अल्लाह की	और उन्हों ने क़सम खाई

بَلٰی وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

38	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	सच्चा	उस पर	वादा	क्यों नहीं

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِیْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और ताकि जान लें	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हैं	जो	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे

اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَیْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ

कि हम कहते हैं	जब हम उस का इरादा करें	किसी चीज़ को	हमारा फ़रमाना	उस के सिवा नहीं	39	झूटे थे	कि वह

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِی اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ ع ٥ ١١

उस के बाद	अल्लाह के लिए	उन्हों ने हिज्रत कि	और वह लोग जो	40	तो वह हो जाता है	हो जा	उस को

مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ وقف لازم

काश	बहुत बड़ा	आख़िरत	और बेशक अजर	अच्छी	दुनिया में	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	कि उन पर ज़ुल्म किया गया

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰی رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	भरोसा करते हैं	और अपने रब पर	उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	41	वह जानते

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ

याद रखने वाले	पस पूछो	उन की तरफ़	हम वहि करते हैं	मर्दों के सिवा	तुम से पहले	हम ने भेजे	और नहीं

اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٤٣﴾ بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ

तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल की	और किताबें	निशानियों के साथ	43	नहीं जानते	तुम हो	अगर

النصف

الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿٤٤﴾

44	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें	और ताकि वह	उन की तरफ़	जो नाज़िल किया गया	लोगों के लिए	ताकि वाज़ेह कर दो	याददाश्त (किताब)

اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الۡاَرۡضَ

ज़मीन	उन को	अल्लाह	धंसादे	कि	बुरे	दाओ किए	जिन लोगों ने	क्या बेख़ौफ़ हो गए हैं

اَوۡ يَاۡتِيَهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٤٥﴾ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ

उन्हें पकड़ ले	या	45	वह ख़बर नहीं रखते	उस जगह से	अ़ज़ाब	उन पर आए	या

فِىۡ تَقَلُّبِهِمۡ فَمَا هُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ﴿٤٦﴾ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ

पस बेशक	डराना	पर (बाद)	उन्हें पकड़ ले	या	46	आजिज़ करने वाले	वह	पस नहीं	उन को चलते फिरते	में

رَبَّكُمۡ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنۡ شَىۡءٍ

जो चीज़	अल्लाह	जो पैदा किया	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा	47	निहायत रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़	तुम्हारा रब

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الۡيَمِيۡنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمۡ

और वह	अल्लाह के लिए	सिज्दा करते हुए	और बाएं	दाएं	से	उस के साए	ढलते हैं

دٰخِرُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ مِنۡ

से	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	और अल्लाह के लिए सिज्दा करता है	48	आजिज़ी करने वाले

دَآبَّةٍ وَّالۡمَلٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوۡنَ رَبَّهُمۡ مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ

उन के ऊपर	से	अपना रब	वह डरते हैं	49	तकब्बुर नहीं करते	और वह	और फ़रिश्ते	जानदार

ع ٦ ١٢ السجدة ٣

وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۩ ﴿٥٠﴾ وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوۡۤا اِلٰهَيۡنِ اثۡنَيۡنِ ۚ

दो	दो माबूद	तुम बनाओ	न	अल्लाह	और कहा	50	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह (वही) करते हैं

اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	51	तुम मुझ से डरो	पस मुझ ही से	यकता	माबूद	वह	इस के सिवा नहीं

وَالۡاَرۡضِ وَلَهُ الدِّيۡنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ تَتَّقُوۡنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمۡ

तुम्हारे पास	और जो	52	तुम डरते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा	लाज़िम	इताअ़त ओ इबादत	और उसी के लिए	और ज़मीन

مِّنۡ نِّعۡمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيۡهِ تَجۡـَٔرُوۡنَ ﴿٥٣﴾

53	तुम रोते (चिल्लाते) हो	तो उस की तरफ़	तक्लीफ़	तुम्हें पहुँचती है	जब	फिर	अल्लाह की तरफ़ से	कोई नेमत

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنۡكُمۡ اِذَا فَرِيۡقٌ مِّنۡكُمۡ بِرَبِّهِمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٥٤﴾

54	वह शरीक करता है	अपने रब के साथ	तुम में से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़	तुम से	सख़्ती	खोलदे (दूर कर देता है)	जब	फिर

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भेजे, हम वहि करते हैं उन की तरफ़, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43) निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (44) जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अ़ज़ाब आजाए जहां से उन को ख़बर ही न हो, (45) या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46) या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस बेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रहम करने वाला है। (47) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते हैं, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिज्दा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48) और अल्लाह को सिज्दा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर नहीं करते। (49) वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (50) और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51) और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताअ़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचती है तो उसी की तरफ़ तुम रोते चिल्लाते हो। (53) फिर वह जब तुम से सख़्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ٥٥ وَيَجْعَلُوْنَ

और वह मुक़र्रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुक्री करें

لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ۭ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا

उस से जो	तुम से ज़रूर पुछा जाएगा	अल्लाह की क़सम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो

كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ٥٦ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ٥٧

57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56	तुम झूट बान्धते थे

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ٥٨

58	गुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को	ख़ुशख़बरी दी जाए	और जब

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْۗءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۭ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰي هُوْنٍ اَمْ

या	रुस्वाई के साथ	या उस को रखे	ख़ुशख़बरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	क़ौम (लोग)	से	छुपता फिरता है

يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ٥٩ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दबादे (दफ़्न करदे)

بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٦٠ ع ١٠ ١٣

60	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	शान बुलन्द	और अल्लाह के लिए	बुरा	हाल	आख़िरत पर

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के ज़ुल्म के सब्ब	लोग	अल्लाह	गिरिफ़्त करे	और अगर

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ

न पीछे हटेंगे	उन का वक़्त	आगया	फिर जब	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	तक	वह ढील देता है उन्हें

سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ٦١ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ

और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी

اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ

जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट	उन की ज़बानें

وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ٦٢ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहक़ीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की क़सम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ

और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ٦٣ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي

जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं	63	दर्दनाक अ़ज़ाब

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ٦٤

64	वह ईमान लाए हैं	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

ताकि वह उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठालो, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (55) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मक़र्रर करते हैं, जिन (माबूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56) और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57) और जब उन में से किसी को लड़की की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58) लोगों से छुपता फिरता है उस "बुराई" की ख़ुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो! बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (59) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (60) और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के ज़ुल्म के सब्ब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दते मुक़र्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61) और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62) अल्लाह की क़सम! तहक़ीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (63) और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

وَاللّٰهُ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِىۡ

में	बेशक	उस की मौत	बाद	ज़मीन	उस से	फिर जिन्दा किया	पानी	आस्मान	से	उतारा	और अल्लाह

ع ٨ ٥ ١٤ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمۡ فِى الۡاَنۡعَامِ لَعِبۡرَةً ؕ نُسۡقِيۡكُمۡ

हम पिलाते हैं तुम को	अलबत्ता इब्रत	चौपाए	में	तुम्हारे लिए	और बेशक	65	वह सुनते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस

مِّمَّا فِىۡ بُطُوۡنِهٖ مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيۡنَ ﴿٦٦﴾

66	पीने वालों के लिए	ख़ुशगवार	ख़ालिस	दूध	और खून	गोबर	दरमियान	से	उन के पेट (जमा)	में	उस से जो

وَمِنۡ ثَمَرٰتِ النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا وَّرِزۡقًا

और रिज़्क़	शराब	उस से	तुम बनाते हो	और अंगूर	खजूर	फल (जमा)	और से

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿٦٧﴾ وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى

तरफ़ - को	तुम्हारा रब	और इल्हाम किया	67	अक़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	निशानी	उस	में	बेशक	अच्छा

النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ﴿٦٨﴾

68	छतरियां बनाते हैं	और उस से जो	दरख़्त	और से - में	घर (जमा)	पहाड़ (जमा)	से - में	तू बनाले	कि	शहद की मक्खी

ثُمَّ كُلِىۡ مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخۡرُجُ مِنۡۢ

से	निक्लती है	नर्म ओ हमवार	अपना रब	रस्ते	फिर चल	हर क़िस्म के फल	से - के	खा	फिर

بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ فِيۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ

इस	में	बेशक	लोगों के लिए	शिफ़ा	उस में	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	पीने की एक चीज़	उन के पेट (जमा)

لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ يَتَوَفّٰٮكُمۡ وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ

जो	और तुम में से बाज़	वह मौत देता है तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	69	सोचते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ لِكَىۡ لَا يَعۡلَمَ بَعۡدَ عِلۡمٍ شَيۡـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ

जानने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ	इल्म	बाद	वह बे इल्म हो जाए	ताकि	नाकारा - नाक़िस उम्र	लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ़

ع ٩ ٥ ١٥ قَدِيۡرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ ۚ فَمَا الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	पस नहीं	रिज़्क़	में	बाज़	पर	तुम में से बाज़	फ़ज़ीलत दी	और अल्लाह	70	कुदरत वाला

فُضِّلُوۡا بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ ؕ

बराबर	उस में	पस वह	उन के हाथ	जो मालिक हुए	पर - को	अपना रिज़्क़	लौटा देने वाले	फ़ज़ीलत दिए गए

اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا

बीवियां	तुम में से	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	71	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह	पस क्या नेमत से

وَّجَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمۡ مِّنَ

से	और तुम्हें अ़ता की	और पोते	बेटे	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारे लिए	और बनाया (पैदा किया)

الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ يُؤۡمِنُوۡنَ وَبِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ ﴿٧٢﴾

72	इन्कार करते हैं	वह	और अल्लाह की नेमत	वह मानते हैं	तो क्या बातिल को	पाक चीज़

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65) और बेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुक़ामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध ख़ालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए ख़ुशगवार। (66) और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज़्क़ (हासिल करते हो) बेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल रखते हैं। (67) और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख़्तों में, और उस जगह जहां वह छतरियां बनाते हैं। (68) फिर खा हर क़िस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रस्तों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) उस के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, उस में लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ़ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद बेइल्म हो जाए, बेशक अल्लाह जानने वाला, कुदरत वाला है। (70) और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में, पस जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई वह अपना रिज़्क़ लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71) और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अ़ता कीं, तो क्या वह बातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख़्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क़ का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्पां न करो अल्लाह पर मिसालें, बेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शै पर इख़्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क़ दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर हैं? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं,बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख़्तियार नहीं रखता किसी शै पर, और वह अपने आक़ा पर बोझ है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अ़द्ल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा क़रीब है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्हों ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, बेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां है। (79)

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ

से	रिज़्क़	उन के लिए	इख़्तियार नहीं	जो	अल्लाह	सिवाए	से	और परस्तिश करते हैं

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا

पस न चस्पां करो	73	और न वह कुदरत रखते हैं	कुछ	और ज़मीन	आस्मानों

لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ

बयान किया	74	नहीं जानते	और तुम	जानता है	अल्लाह	बेशक	मिसालें	अल्लाह के लिए

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَىْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ

हम ने उसे रिज़्क़ दिया	और जो	किसी शै	पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	मिल्क में आया हुआ	एक गुलाम	एक मिसाल	अल्लाह

مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ

क्या	और ज़ाहिर	पोशीदा	उस से	ख़र्च करता है	सो वह	अचछा	रिज़्क़	अपनी तरफ़ से

يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ

और बयान किया	75	नहीं जानते	उन में से अक्सर	बल्कि	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़	वह बराबर हैं

اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَىْءٍ وَّهُوَ

और वह	किसी शै पर	वह इख़्तियार नहीं रखता	गूंगा	उन में से एक	दो आदमी	एक मिसाल	अल्लाह

كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِىْ

बराबर	क्या	कोई भलाई	वह न लाए	वह भेजे उस को	जहां कहीं	अपना आक़ा	पर	बोझ

هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ ع ١٠ ع ٦ ١٦

76	सीधी	राह	पर	और वह	अ़द्ल के साथ	हुक्म देता है	और जो	वह - यह

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	काम (आना) क़ियामत	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें

كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

77	कुदरत वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	उस से भी क़रीब	वह	या	जैसे झपकना आँख

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ

कुछ भी	तुम न जानते थे	तुम्हारी माँएं	पेट (जमा)	से	तुम्हें निकाला	और अल्लाह

وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाया

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ

थामता उन्हें	नहीं	आस्मान की फ़िज़ा	में	हुक्म के पाबन्द	परिन्दा	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा

اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह	सिवाए

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ

खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह

الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ

अपना क़ियाम	और दिन	अपने कूच के दिन	तुम हल्का पाते हो उन्हें	घर (डेरे)	चौपाए

وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا

और बरतने की चीज़े	सामान	और उन के बाल	और उन की पशम	उन की ऊन	और से

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	और बनाया	साए	उस ने पैदा किया	उस से जो	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	80	एक वक़्त (मुद्दत)	तक

مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ

गर्मी	बचाते है तुम्हें	कुर्ते	तुम्हारे लिए	और बनाया	पनाह गाहें	पहाड़ों	से

وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अपनी नेमत	वह मुकम्मिल करता है	उसी तरह	तुम्हारी लड़ाई	बचाते हैं तुम्हें	और कुर्ते

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ

पहुँचा देना	तुम पर	तो इस के सिवा नहीं	वह फिर जाएं	फिर अगर	81	फ़रमांबरदार बनो	ताकि तुम

الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	मुनकिर हो जाते हैं उस के	फिर	अल्लाह	नेमत	वह पहचानते हैं	82	खोल कर (साफ़ साफ़)

١١ ع ١٧ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ

न इजाज़त दी जाएगी	फिर	एक गवाह	उम्मत	हर	से	हम उठाएंगे	और जिस दिन	83	काफ़िर (जमा) नाशुक्रे

لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	देखेंगे	और जब	84	उज़्र कुबूल किए जाएंगे	और न वह	उन्हों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	वह लोग

ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	मोहलत दी जाएगी	वह	और न	उन से	फिर न हल्का किया जाएगा	अज़ाब	उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ

यह हैं	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	अपने शरीक	उन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	वह लोग जो	देखेंगे	और जब

شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا

फिर वह डालेंगे	तेरे सिवा	हम पुकारते थे	वह जो कि	हमारे शरीक

الثلثة اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह	तरफ़ (सामने)	और वह डालेंगे	86	अलबत्ता तुम झूटे	बेशक तुम	क़ौल	उन की तरफ़

يَوْمَىِٕذِ ِۨ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

87	इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते थे)	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	आजिज़ी	उस दिन

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया
तुम्हारे घरों को रहने की जगह,
और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों
से डेरे बनाए, जिन्हें तुम हल्का
फुलका पाते हो अपने कूच के दिन
और अपने क़याम के दिन, और
उन की ऊन, और पशम, और
उन के बालों से (बनाए) सामान
और बरतने की चीज़ें एक मुद्दते
मुक़र्ररा तक। (80)
और अल्लाह ने जो पैदा किया
उस से तुम्हारे लिए साये बनाए,
और तुम्हारे लिए बनाईं पहाड़ों से
पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए
कुर्ते बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का
बचाओ हैं और कुर्ते (जिरहें है) जो
तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी
लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर
अपनी नेमत मुकम्मिल करता है
ताकि तुम फ़रमांबरदार बनो। (81)
फिर अगर वह फिर जाएं तो उस
के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा
ज़िम्मा) सिर्फ़ खोल कर पहुँचा देना
है। (82)
वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं,
फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और
उन में से अक्सर नाशुक्रे हैं। (83)
और जिस दिन हर उम्मत से हम
एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त
दी जाएगी काफ़िरों को और न उन
से उज़्र कुबूल किए जाएंगे। (84)
और (याद करो) जब ज़ालिम
अज़ाब देखेंगे फिर न उन से
(अज़ाब) हल्का किया जाएगा और
न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85)
और (याद करो) जब मुश्रिक
अपने शरीकों को देखेंगे तो वह
कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे
शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते
थे, फिर वह (उन के शरीक) उन
की तरफ़ डालेंगे क़ौल (जवाब देंगे
कि) बेशक तुम झूटे हो। (86)
और वह उस दिन अल्लाह के सामने
आजिज़ी (का पैग़ाम) डालेंगे और
उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे)
जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ादेंगे, क्यों कि वह फ़साद करते थे। (88) और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर क़ुरआन नाज़िल किया, हर शै का मुफ़स्सिल बयान, और हिदायत ओ रहमत, और ख़ुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89) बेशक अल्लाह अ़दल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिशते दारों को (उन के हुक़ूक़) देने का और मना करता है बेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90) और जब तुम (पुख़्ता) अ़हद करलो तो अल्लाह का अ़हद पूरा करो, और क़स्में पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहक़ीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, बेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91) और तुम उस औ़रत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी क़समों को अपने दरमियान दख़ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आज़माता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (92) और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की बाबत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो

فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

में	हम उठाएंगे	और जिस दिन	88	वह फ़साद करते थे	क्योंकि	अ़ज़ाब	पर

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا

गवाह	आप (स) को	और हम लाएंगे	उन ही में से	उन पर	एक गवाह	हर उम्मत

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	(मुफ़स्सिल) बयान	किताब (क़ुरआन)	आप पर	और हम ने नाज़िल की	इन सब पर

وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ ع ١٢ ٦ ١٨

हुक्म देता है	बेशक अल्लाह	89	मुसलमानों के लिए	और ख़ुशख़बरी	और रहमत	और हिदायत

بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ

से	और मना करता है	रिशते दार	और देना	और एहसान	अ़दल का

الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

90	ध्यान करो	ताकि तुम	तुम्हें नसीहत करता है	और सरकशी	और नाशाइस्ता	बेहयाई

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ

क़स्में	और न तोड़ो	तुम अ़हद करो	जब	अल्लाह का अ़हद	और पूरा करो

بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	ज़ामिन	अपने ऊपर	अल्लाह	और तहक़ीक़ तुम ने बनाया	उन को पुख़्ता करना	बाद

يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

अपना सूत	उस ने तोड़ा	उस औ़रत की तरह	और तुम न हो जाओ	91	जो तुम करते हो	जानता है

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ

कि	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी क़समें	तुम बनाते हो	टुकड़े टुकड़े	कुव्वत (मज़बूती)	बाद

تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ

और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा	उस से	अल्लाह	आज़माता है तुम्हें	उस के सिवा नहीं	दूसरा गिरोह	से	बड़ा हुआ (ग़ालिब)	वह	एक गिरोह	हो जाए

لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	92	इख़्तिलाफ़ करते थे तुम	उस में	तुम थे	जो	रोज़े क़ियामत	तुम पर

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

जिसे वह चाहता है	गुमराह करता है	और लेकिन	एक उम्मत	तो अलबत्ता बना देता तुम्हें

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	तुम करते थे	उस की बाबत	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ

कोई क़दम	कि फिसले	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी क़स्में	और तुम न बनाओ

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (वबाल)	और तुम चखो	अपने जम जाने के बाद

وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ

थोड़ा	मोल	अल्लाह के अ़हद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा	अ़ज़ाब	और तुम्हारे लिए

اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ

जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	वही	अल्लाह के हां	बेशक जो

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا

उन्हों ने सब्र किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाक़ी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो	ख़तम हो जोता है

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

कोई नेक	अ़मल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो	उस से बेहतर	उन का अजर

مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर ज़िंदगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औरत	या	मर्द हो

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا

पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर	और हम ज़रूर उन्हें देंगे

قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो	कुरआन	तुम पढ़ो

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ

और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए	नहीं	बेशक वह

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं	99	वह भरोसा करते हैं

ع ١٣ ٢١ ١٩

هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ

और अल्लाह	दूसरा हुक्म	जगह	कोई हुक्म	हम बदलते हैं	और जब	100	शरीक ठहराते हैं	उस (अल्लाह) के साथ	वह

اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	वह नाज़िल करता है	उस को जो	ख़ूब जानता है

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	तुम्हारा रब	से	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहदें	101	इल्म नहीं रखते

لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मुसलमानों के लिए	और ख़ुशख़बरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो	ताकि साबित क़दम करे

और अपनी क़समों को न बनाओ अपने दरमियान दख़ल का बहाना कि कोई क़दम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में वबाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (94)
और तुम अल्लाह के अ़हद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) बेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95)
जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96)
जिस ने कोई नेक अ़मल किया वह मर्द हो या औ़रत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आख़िरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97)
पस जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98)
बेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99)
इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100)
और जब हम कोई हुक्म किसी दूसरे हुक्म की जगह बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (ख़ुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101)
आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक़ के साथ ताकि मोमिनों को साबित क़दम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ ख़ुशख़बरी है। (102)

और हम खूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ़ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अ़जमी (ग़ैर अ़रबी) है, और यह वाज़ेह अ़रबी ज़बान है। (103)
बेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (104)
इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105)
जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुत्मइन हो, बल्कि जो कुफ़्र के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़्र करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (106)
यह इस लिए है कि उन्हों ने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107)
यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (108)
कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ख़सरा (नुक़्सान) उठाने वाले हैं। (109)
फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने हिज्रत की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्हों ने जिहाद किया, और सब्र किया, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (110)
जिस दिन हर शख़्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख़्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (111)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ

वह जो कि	ज़बान	एक आदमी	उस को सिखाता है	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	कि वह	और हम खूब जानते हैं

يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

103	वाज़ेह	अ़रबी	ज़बान	और यह	अ़जमी	उस की तरफ़	कजराही (निस्बत) करते हैं

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह	हिदायत नहीं देता	अल्लाह की आयतों पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

जो ईमान नहीं लाते	वह लोग	झूट	बुहतान बान्धता है	इस के सिवा नहीं	104	दर्दनाक अ़ज़ाब

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	अल्लाह का	मुन्किर हुआ	जो	105	झूटे	वह	और यही लोग	अल्लाह की आयतों पर

اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ

और लेकिन (बल्कि)	ईमान पर	मुत्मइन	जब कि उस का दिल	मजबूर किया गया	जो	सिवाए	उस के ईमान

مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अल्लाह का	ग़ज़ब	तो उन पर	सीना	कुफ़्र के लिए	कुशादा करे	जो

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	उन्हों ने पसन्द किया	इस लिए कि वह	यह	106	बड़ा अ़ज़ाब

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107	काफ़िर (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	अल्लाह	और यह कि	आख़िरत	पर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ

और उन की आँख	और उन के कान	उन के दिल	पर	अल्लाह ने मुहर लगादी	वह जो कि	यही लोग

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ

वह	आख़िरत में	कि वह	कुछ शक नहीं	108	ग़ाफ़िल (जमा)	वह	और यही लोग

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	उन्हों ने हिज्रत की	उन लोगों के लिए	तुम्हारा रब	बेशक	फिर	109	ख़सारा उठाने वाले

مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا

उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	उन्हों ने सब्र किया	उन्हों ने जिहाद किया	फिर	सताए गए	कि

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ ع ١٤ ٢٠

से	झगड़ा करता	शख़्स	हर	आएगा	जिस दिन	110	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़्शने वाला

نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

111	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने किया	जो	शख़्स	हर	और पूरा दिया जाएगा	अपनी तरफ़

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً

मुत्मइन	बेख़ौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने

يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ

नेमतों से	फिर उस ने नाशुक्री की	हर जगह	से	बाफ़राग़त	उस का रिज़्क़	उस के पास आता था

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا

उस के बदले जो	और ख़ौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को	अल्लाह

كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ

सो उन्हों ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और बेशक उन के पास आया	112	वह करते थे

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوْا مِمَّا

उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अ़ज़ाब	तो उन्हें आ पकड़ा

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ

मुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो	सिर्फ़ उस की	तुम हो

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ

पस जो	उस पर	अल्लाह के अ़लावा	पुकारा जाए	और जो	और ख़िनज़ीर का गोश्त	और ख़ून

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला	लाचार हुआ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती हैं	वह जो	और तुम न कहो

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ

बेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम	और यह	हलाल

الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ ؕ

116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं	वह लोग जो

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى

और पर	117	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा	फ़ाइदा

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

118	ज़ुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने ज़ुल्म किया उन पर

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन बेख़ौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़्क़ बाफ़राग़त आ जाता था, फिर उस ने नाशुक्री की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और ख़ौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और ख़ौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112)

और बेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्हों ने उसे झुटलाया, तो अ़ज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113)

पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114)

उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है मुर्दार और ख़ून, और ख़िनज़ीर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के अ़लावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (115)

और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, बेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) न पाएंगे। (116)

(उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अ़ज़ाब दर्दनाक है। (117)

और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से क़ब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (118)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا

उन्हों ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अमल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	बेशक	फिर

ع ١٥ ٢١
مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

119	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	बेशक	और उन्हों ने इस्लाह की	उस के बाद

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ

से	और न थे	यक रुख़	अल्लाह के	फ़रमांबरदार	एक जमाअत (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	बेशक

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

121	सीधी राह	तरफ़	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ

अलबत्ता - से	आख़िरत में	और बेशक वह	भलाई	दुनिया में	और उस को दी हम ने

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ

यक रुख़	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ़	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	हफ़्ते का दिन	मुक़र्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

उस में जो	रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और बेशक	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ

हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ़	तुम बुलाओ	124	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ

बेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और बहस करो उन से	अच्छी	और नसीहत

رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	राह पाने वालों को	ख़ूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	ख़ूब जानने वाला	वह	तुम्हारा रब

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ

और अगर	उस से	जो तुम्हें तक्लीफ़ दी गई	ऐसी ही	तो उन्हें तक्लीफ़ दो	तुम तक्लीफ़ दो	और अगर

صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ

अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127	वह फ़रेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और ग़म न खाओ

ع ١٦ ٢٢
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्हों ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	बेशक अल्लाह

फिर बेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्हों ने नादानी से बुरे अ़मल किए, फिर उस के बाद उन्हों ने तौबा की और इस्लाह कर ली, बेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (119)

बेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फ़रमांबरदार, यक रुख़ (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ़। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और बेशक वह आख़िरत में नेकोकारों में से हैं, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रुख़) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़्ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुक़र्रर किया गया जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया था, और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता क़ियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे बहस करो जो सब से बेहतर हो, बेशक तुम्हारा रब उस को ख़ूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को ख़ूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तक्लीफ़ दो तो ऐसी ही तक्लीफ़ दो, जैसी तुम्हें तक्लीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और ग़म न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जिन्हों ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

آيَاتُهَا ١١١ ❀ (١٧) سُوْرَةُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْل ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

आयात 111 — (17) सूरह बनी इस्राईल / औलादे याकूब (अ) — रुकुआत 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ

मस्जिद	से	रातों रात	अपने बन्दे को	ले गया	वह जो	पाक

الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ

से	ताकि दिखा दें हम उसको	उस के इर्द गिर्द	बरकत दी हम ने	जिस को	मस्जिदे अक़्सा	तक	हराम

اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ (١) وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब	मूसा	और हम ने दी	1	देखने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक वह	अपनी निशानियां

وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۭ (٢)

2	कारसाज़	मेरे सिवा	कि न ठहराओ तुम	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا (٣)

3	शुक्र गुज़ार	बन्दा	था	बेशक वह	नूह (अ) के साथ	हम ने सवार किया	जो - जिस	औलाद

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन	में	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	किताब	बनी इस्राईल	तरफ़ - को	साफ़ कह दिया हम ने

مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا (٤) فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا

हम ने भेजे	दो में से पहला	वादा	आया	पस जब	4	बड़ा ज़ोर	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	दो मरतबा

عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ

शहरों के अन्दर	तो वह घुस पड़े	सख़्त	लड़ाई वाले	अपने बन्दे	तुम पर

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا (٥) ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ

उन पर	बारी	तुम्हारे लिए	हम ने फेर दी	फिर	5	पूरा होने वाला	एक वादा	और था

وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا (٦)

6	जत्था (लशकर)	ज़ियादा	और हम ने तुम्हें कर दिया	और बेटे	मालों से	और हम ने तुम्हें मदद दी

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۣ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۭ

तो उन के लिए	तुम ने बुराई की	और अगर	अपनी जानों के लिए	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अगर

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْۗءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا

और वह घुस जाएं	तुम्हारे चहरे	कि वह बिगाड़ दें	दूसरा वादा	आया	फिर जब

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا (٧)

7	पूरी तरह बरबाद	जहां ग़ल्बा पाएं वह	और बरबाद कर डालें	पहली बार	वह घुसे उस में	जैसे	मस्जिद

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (ख़ाना कअ़बा से) मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, बेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़ल्बा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़्सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़ल्बा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

وقف لازم

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ

जहन्नम	और हम ने बनाया	हम वही करेंगे	तुम फिर (वही) करोगे	और अगर	वह तुम पर रहम करे	कि	तुम्हारा रब	उम्मीद है

لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ

सब से सीधी	वह	उस के लिए जो	रहनुमाई करता है	यह कुरआन	बेशक	8	क़ैद ख़ाना	काफ़िरों के लिए

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۙ ﴿٩﴾

9	बड़ा अजर	उन के लिए	कि	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह लोग जो	मोमिन (जमा)	और बशारत देता है

ع ١

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۧ ﴿١٠﴾

10	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और यह कि

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

11	जल्द बाज़	इन्सान	और है	भलाई की	उस की दुआ	बुराई की	इन्सान	और दुआ करता है

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ

दिन की निशानी	और हम ने बनाया	रात की निशानी	फिर हम ने मिटा दिया	दो निशानियां	और दिन	रात	और हम ने बनाया

مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

बरस (जमा)	गिनती	और ताकि तुम मालूम करो	अपने रब से (का)	फ़ज़्ल	ताकि तुम तलाश करो	दिखाने वाली

وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ

उसको लगा दी (लटका दी)	और हर इन्सान	12	तफ़्सील के साथ	हम ने बयान किया है	और हर चीज़	और हिसाब

طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾

13	खुला हुआ	और उसे पाएगा	एक किताब	रोज़े क़ियामत	उस के लिए	और हम निकालेंगे	उसकी गर्दन में	इस की क़िस्मत

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ۭ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	हिदायत पाई	जिस	14	हिसाब लेने वाला	अपने ऊपर	आज	तू खुद	काफ़ी है	अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	पढ़ ले

يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

कोई उठाने वाला	और बोझ नहीं उठाता	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपने लिए	उस ने हिदायत पाई

وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ وَاِذَآ اَرَدْنَآ

हम ने चाहा	और जब	15	कोई रसूल	हम (न) भेजे	जब तक	अ़ज़ाब देने वाले	और हम नहीं	दूसरे का बोझ

اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا

उन पर	फिर पूरी हो गई	उस में	तो उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस के खुश हाल लोग	हम ने हुक्म भेजा	कोई बस्ती	कि हम हलाक करें

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	बस्तियां	से	हम ने हलाक कर दीं	और कितनी	16	पूरी तरह हलाक	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	बात

نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दे	गुनाहों को	तेरा रब	और काफ़ी	नूह (अ)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रह्म करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहन्नम काफ़िरों के लिए क़ैद ख़ाना बनाया है। (8) बेशक यह कुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9) और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अ़ज़ाब दर्दनाक। (10) और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11) और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालुम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12) और हम ने हर इन्सान की क़िस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े क़ियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13) अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू खुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14) जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अ़ज़ाब देने वाले नहीं। (15) और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के खुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्हों ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16) और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दो के गुनाहों की ख़बर रखने वाला देखने वाला। (17)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا

हम ने बना दिया है	फिर	हम चाहें	जिस को	जितना हम चाहें	उस को इस (दुनिया) में	हम जल्दी दे देंगे	जल्दी	चाहता है	जो कोई

لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا

उस के लिए	और कोशिश की उस ने	आख़िरत	चाहे	जो और	18	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	मज़म्मत किया हुआ	वह दाख़िल होगा इस में	जहन्नम	उस के लिए

سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

इन को भी	हम देते हैं	हर एक	19	क़द्र की हुई (मक़्बूल)	उन की कोशिश	है - हुई	पस यही लोग	और (बशर्त यह कि) हो वह मोमिन	उस की सी कोशिश

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ

किस तरह	देखो	20	रोकी जाने वाली	तेरा रब	बख़्शिश	और नहीं है	तेरा रब	बख़्शिश	से	और उन को भी

فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾

21	फ़ज़ीलत में	और सब से बरतर	सब से बड़े दरजे	और अलबत्ता आख़िरत	बाज़ (दूसरा)	पर	उन के बाज़ (एक)	हम ने फ़ज़ीलत दी

ع ١٢/٢ ٢ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾ ۧ وَقَضٰى رَبُّكَ

तेरा रब	और हुक्म फ़रमा दिया	22	बेबस हो कर	मज़म्मत किया हुआ	पस तू बैठ रहेगा	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	तू न ठहरा

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ

बुढ़ापा	तेरे सामने	अगर वह पहुँच जाएं	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	उस के सिवा	कि न इबादत करो

اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا

बात	उन दोनों से	और कहो	और न झिड़को उन्हें	उफ़	उन्हें	तो न कह	वह दोनों	या	उन में से एक

كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا

उन दोनों पर रहम फ़रमा	ऐ मेरे रब	और कहो	मेह्रबानी	से	आजिज़ी	बाज़ू	उन दोनों के लिए	और झुका दे	23	अदब के साथ

كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ

नेक (जमा)	तुम होगे	अगर	तुम्हारे दिलों में	जो	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	24	बचपन	उन्हों ने मेरी पर्वरिश की	जैसे

فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ

और मिस्कीन	उस का हक़	क़राबतदार	और दो तुम	25	बख़्शने वाला	रुजूअ करने वालों के लिए	है	तो बेशक वह

وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ

भाई (जमा)	हैं	फ़ुज़ूल ख़र्च (जमा)	बेशक	26	अन्धा धुन्द	और न फ़ुज़ूल ख़र्ची करो	और मुसाफ़िर

الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ

इन्तिज़ार में	उन से	तू मुँह फेर ले	और अगर	27	नाशुक्रा	अपने रब का	शैतान	और है	शैतान (जमा)

رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ

अपना हाथ	और न रख	28	नर्मी की बात	उन से	तो कह	तू उस की उम्मीद रखता है	अपना रब	से	रहमत

مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

29	थका हुआ	मलामत ज़दा	फिर तू बैठा रह जाए	पूरी तरह खोलना	और न उसे खोल	अपनी गर्दन	तक - से	बन्धा हुआ

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाख़िल होगा मज़म्मत किया हुआ धकेला हुआ। **(18)**
और जो कोई आख़िरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मक़्बूल हुई। **(19)**
हम तेरे रब की बख़्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख़्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। **(20)**
देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और अलबत्ता आख़िरत के दरजे सब से बड़े, और फ़ज़ीलत में सब से बरतर हैं। **(21)**
अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया हुआ, बेबस हो कर। **(22)**
और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। **(23)**
और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाज़ू झुका दो मेह्रबानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्हों ने बचपन में मेरी पर्वरिश की। **(24)**
तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो बेशक वह रुजूअ करने वालों को बख़्शने वाला है। **(25)**
और दो तुम क़राबतदार को उस का हक़, और मिस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। **(26)**
बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। **(27)**
और अगर तू अपने रब की रहमत (फ़राख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्मी की बात। **(28)**
और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (बिलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। **(29)**

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

अपने बन्दों से	है	बेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	बेशक

خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٣٠﴾ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ ٣ ع ٨ ٣

हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लिसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला

وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ

है	बेशक यह	ज़िना	और न क़रीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	बेशक	और तुम को

فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا

मगर	अल्लाह ने हराम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई

بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ

पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहक़ीक़ हम ने कर दिया	मज़लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ

فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ

इस तरीक़े से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	बेशक वह	क़त्ल में

هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ

है	अ़हद	बेशक	अ़हद को	और पूरा करो	अपनी जवानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर	वह

مَسْــُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ

सीधी	तराज़ू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुर्सिश किया जाने वाला

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ

बेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिबार से	और सब से अच्छा	बेहतर	यह

السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْــُٔوْلًا ﴿٣٦﴾

36	पुर्सिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ

पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	बेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल

طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ مِمَّآ

उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह	तमाम	37	बुलन्दी

اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की

فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ

बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए

وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ ع ٤ ع ١٠ ٤

40	बड़ा बोल	अलबत्ता कहते हो (बोलते हो)	बेशक तुम	बेटियां	फ़रिश्ते	से - को	और बना लिया

बेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। **(30)** और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), बेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। **(31)** और ज़िना के क़रीब न जाओ, बेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। **(32)** और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़लूम मारा गया तो तहक़ीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, बेशक वह मदद दिया गया है। **(33)** और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्रुफ़) न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अ़हद को पूरा करो, बेशक अ़हद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। **(34)** और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराज़ू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिबार से। **(35)** और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी)। **(36)** और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। **(37)** यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। **(38)** यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। **(39)** क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियां बना लिया, बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। **(40)**

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ

कह दें आप (स)	41	नफ़्रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस कुरआन	में	और अलबत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया

لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ़	वह ज़रूर ढून्डते	उस सूरत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ	अगर होते

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ

सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	बरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है

وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ

और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन

لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ

कुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बख़्शने वाला	बुर्दबार	है	बेशक वह	उन की तस्बीह	तुम नहीं समझते

جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِىْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا

और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए

ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ

हम	46	नफ़्रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	कुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो

اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ

जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ़	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस ग़र्ज़ से	ख़ूब जानते हैं

الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا

कैसी उन्हों ने चस्पां कीं	तुम देखो	47	सिहूरज़दा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)

الرّبع

لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا

हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधी) राह	पस वह इस्तिताअ़त नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए

عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً

पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यक़ीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां

اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِىْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ

कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (ख़याल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़्लूक़	या	50	लोहा	या

يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِىْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे)	बार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फ़रमा दें	हमे लौटाएगा

رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

51	क़रीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

और हम ने इस कुरआन में तरह
तरह से बयान किया है ताकि वह
नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें
नहीं बढ़ती मगर नफ़्रत। (41)
आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहते
हैं उस के साथ और माबूद होते तो
उस सूरत में वह अर्श वाले की तरफ़
ज़रूर ढून्डते कोई रास्ता। (42)
वह उस से निहायत पाक है और
बरतर जो वह कहते हैं। (43)
उस की पाकीज़गी बयान करते हैं
सातों आस्मान और ज़मीन, और जो
उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर
शै) पाकीज़गी बयान करती है उस
की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन
की तस्बीह नहीं समझते, बेशक वह
बुर्दबार, बख़्शने वाला है। (44)
और जब तुम कुरआन पढ़ते हो,
हम तुम्हारे और उन के दरमियान
जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते
कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा
हुआ (दबीज़) पर्दा। (45)
और हम ने उन के दिलों पर पर्दे
डाल दिए के वह इसे न समझें,
और उन के कानों में गिरानी है
और जब तुम कुरआन में अपने
यकता रब का ज़िक्र करते हो तो
वह पीठ फेर कर नफ़्रत करते हुए
भाग जाते हैं। (46)
हम ख़ूब जानते हैं कि वह उस को
किस ग़र्ज़ से सुनते हैं जब वह तुम्हारी
तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह
सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं
ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर
एक सिहूरज़दा आदमी की। (47)
तुम देखो! उन्हों ने तुम पर कैसी
मिसालें चस्पां कीं, सो वह गुमराह
हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की
इस्तिताअ़त नहीं पाते। (48)
और वह कहते हैं कि क्या जब हम
हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए,
क्या हम यक़ीनन फिर नई पैदाइश
(अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49)
कह दें तुम पत्थर या लोहा
हो जाओ, (50)
या कोई और मख़्लूक़ जो तुम्हारे
ख़यालों में उस से भी बड़ी हो।
फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा।
आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने
तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह
तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटकाएंगे
और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत
कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें,
शायद कि क़रीब ही हो। (51)

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا

सिर्फ़	तुम रहे	कि	और तुम ख़याल करोगे	उस की तारीफ़ के साथ	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	वह पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन

قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ ع ۱۲ ۵

फ़साद डालता है	शैतान	बेशक	सब से अच्छी	वह	वह जो	वह कहें	मेरे बन्दों को	और फ़रमा दें	52	थोड़ी देर

بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ

तुम्हें	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	53	खुला	दुश्मन	इन्सान का	है	शैतान	बेशक	उन के दरमियान

اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

54	दारोग़ा	उन पर	हम ने तुम्हें भेजा	और नहीं	तुम्हें अ़ज़ाब दे	वह चाहे	अगर	या	तुम पर रहम करे वह	वह चाहे	अगर

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ

बाज़	और तहक़ीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	में	जो कोई	ख़ूब जानता है	और तुम्हारा रब

النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

तुम गुमान करते हो	वह जिन को	पुकारो तुम	कह दें	55	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी	बाज़ पर	नबी (जमा)

مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰۗىِٕكَ

वह लोग	56	बदलना	और न	तुम से	तकलीफ़	दूर करना	पस वह इख़्तियार नहीं रखते	उस के सिवा

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ

और वह उम्मीद रखते हैं	ज़ियादा क़रीब	उन से कौन	वसीला	अपना रब	तरफ़	ढून्डते हैं	वह पुकारते हैं	जिन्हें

رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَاِنْ

और नहीं	57	डर की बात	है	तेरा रब	अ़ज़ाब	बेशक	उस का अ़ज़ाब	और वह डरते हैं	उस की रहमत

مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا

अ़ज़ाब	उसे अ़ज़ाब देने वाले	या	क़ियामत का दिन	पहले	उसे हलाक करने वाले	हम	मगर	कोई बस्ती

شَدِيْدًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ

हम भेजें	कि	और नहीं हमें रोका	58	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	सख़्त

بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً

दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	ऊँटनी	समूद	और हम ने दी	अगले लोग (जमा)	उन को	झुटलाया	यह कि	मगर	निशानियां

فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	तुम से	हम ने कहा	और जब	59	डराने को	मगर	निशानियां	और हम नहीं भेजते	उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया

اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ

और (थोहर का) दरख़्त	लोगों के लिए	आज़माइश	मगर	हम ने तुम्हें दिखाई	वह जो कि	नुमाइश	और हम ने नहीं किया	लोगों को	अहाता किए हुए

الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾ ع ۸ ۶

60	बड़ी	सरकशी	मगर (सिर्फ़)	तो नहीं बढ़ती उन्हें	और हम डराते हैं उन्हें	कुरआन में	जिस पर लानत की गई

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ़ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम ख़याल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ़ थोड़ी देर। (52) और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (53) तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। (54) और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहक़ीक़ हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55) आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने का, और न (तकलीफ़) बदलने का। (56) वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (ख़ुद) ढून्डते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा क़रीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अ़ज़ाब से डरते हैं, बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब डर (ही) की बात है। (57) और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अ़ज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। (58) और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़री-ए-बसीरत ओ इब्रत, उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59) और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) क़ाबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आज़माइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर कुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

और जब	हम ने कहा	फ़रिश्तों से	तुम सिज्दा करो	आदम (अ) को	तो उन्हों ने सिज्दा किया	सिवाए	इब्लीस	उस ने कहा

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۚ﴿٦١﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ كَرَّمْتَ

क्या मैं सिज्दा करूँ	उस को जिसे	तू ने पैदा किया	मिट्टी से	61	उस ने कहा	भला तू देख	यह	वह जिसे	तू ने इज़्ज़त दी

عَلَىَّ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا

मुझ पर	अलबत्ता अगर	तू मुझे ढील दे	तक	रोज़े क़ियामत	जड़ से उखाड़ दूँगा ज़रूर	उस की औलाद	सिवाए

قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ

चन्द एक	62	उस ने फ़रमाया	तू जा	पस जिस	तेरी पैरवी की	उन में से	तो बेशक	जहन्नम	तुम्हारी सज़ा

جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ

सज़ा	भरपूर	63	और फुसला ले	जो - जिस	तेरा बस चले	उन में से	अपनी आवाज़ से

وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ

और चढ़ा ला	उन पर	अपने सवार	और पयादे	और उन से साझा कर ले	में	माल (जमा)

وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِىْ

और औलाद	और वादे कर उन से	और नहीं उन से वादा करता	शैतान	मगर (सिर्फ़)	धोका	64	बेशक	मेरे बन्दे

لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىْ

नहीं	तेरा	उन पर	ज़ोर - ग़ल्बा	और काफ़ी	तेरा रब	कारसाज़	65	तुम्हारा रब	वह जो कि

يُزْجِىْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ

चलाता है	तुम्हारे लिए	कश्ती	दर्या में	ताकि तुम तलाश करो	से	उस का फ़ज़्ल	बेशक वह	है	तुम पर

رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ

निहायत मेह्रबान	66	और जब	तुम्हें छूती (पहुँचती) है	तक्लीफ़	दर्या में	गुम हो जाते हैं	जो	तुम पुकारते थे

اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ

उस के सिवा	फिर जब	वह तुम्हें बचा लाया	ख़ुश्की की तरफ़	तुम फिर जाते हो	और है	इन्सान

كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ

बड़ा नाशुक्रा	67	सो क्या तुम निडर हो गए हो	कि	धंसा दे	तुम्हें	ख़ुश्की की तरफ़	या	वह भेजे

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ

तुम पर	पत्थर बरसाने वाली हवा	फिर	तुम न पाओ	अपने लिए	कोई कारसाज़	68	या	तुम बेफ़िक्र हो गए	कि

يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ

वह तुम्हें ले जाए	उस में	दोबारा	फिर भेज दे वह	तुम पर	सख़्त झोंका	से - का

الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

हवा	फिर तुम्हें ग़र्क़ कर दे	बदले में	तुम ने नाशुक्री की	फिर	तुम न पाओ	अपने लिए	हम पर (हमारा)	उस पर	पीछा करने वाला	69

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा
कि आदम (अ) को सिज्दा करो,
तो इब्लीस के सिवा उन सब ने
सिज्दा किया, उस ने कहा क्या
मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने
मिट्टी से पैदा किया। (61)
उस ने कहा भला देख तो यह है
वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी,
अलबत्ता अगर तू मुझे रोज़े
क़ियामत तक ढील दे तो मैं चन्द
एक के सिवा उस की औलाद को
ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62)
उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन
में से जिस ने तेरी पैरवी की तो
बेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है,
सज़ा भी भरपूर। (63)
और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले
उन में से अपनी आवाज़ से, और उन
पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला,
और उन से साझा कर ले माल और
औलाद में, और उन से वादे कर,
और उन से शैतान का वादा करना
सिर्फ़ धोका है।। (64)
बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं,
और तेरा रब काफ़ी है कारसाज़। (65)
तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे
लिए दर्या में किश्ती चलाता है
ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़)
तलाश करो, बेशक वह तुम पर
निहायत मेह्रबान है। (66)
और जब तुम्हें दर्या में तक्लीफ़
पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल
जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम
पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें
बचा लाया, ख़ुश्की की तरफ़, तो
तुम फिर जाते हो, और इन्सान
बड़ा नाशुक्रा है। (67)
सो क्या तुम निडर हो गए हो कि
वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें ख़ुश्की
की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर
पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम
अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68)
या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह
तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए,
फिर तुम पर हवा का सख़्त झोंका
(तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्री
के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम
अपने लिए उस पर हमारा कोई
पीछा करने वाला न पाओ। (69)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

से	और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया	और दर्या	खुश्की में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज़्ज़त बख़्शी	और तहक़ीक़

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ ع ٧ ١٠ ٧

जिस दिन	70	बड़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख़्लूक़)	उस से जो	बहुत सी	पर	और हम ने उन्हें फ़ज़ीलत दी	पाकीज़ा चीज़ें

نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ

तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेशवाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे

يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ

इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह ज़ुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे

اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ

कि तुम्हें बिचला दें	वह क़रीब था	और तहक़ीक़	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	आख़िरत में	पस वह	अन्धा

عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ

अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट बान्धो	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो	से

خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ़	अलबत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित क़दम रखते	यह कि	और अगर न	73	दोस्त

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ

अपने लिए	तुम न पाते	फिर	मौत	और दुगनी	ज़िन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते

عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ

ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	क़रीब था	और तहक़ीक़	75	कोई मददगार	हम पर (हमारे मुक़ाबले में)

مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते	और उस सूरत में	यहां से

قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ ع ٨ ٧ ٨

ढलने से	नमाज़	क़ाइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम न पाओगे	अपने रसूल (जमा)	से	आप से पहले

الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ

है	सुबह का कुरआन	बेशक	सुबह (फ़ज्र)	और कुरआन	रात	अन्धेरा	तक	सूरज

مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

कि तुम्हें खड़ा करे	क़रीब	तुम्हारे लिए	नफ़िल (ज़ाइद)	इस (कुरआन) के साथ	सो बेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा	78	हाज़िर किया गया (फ़िरिश्तों को)

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ

सच्चा	दाख़िल करना	मुझे दाख़िल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुक़ामे महमूद	तुम्हारा रब

وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

80	मदद देने वाला	ग़ल्बा	अपनी तरफ़ से	मेरे लिए	और अ़ता कर	सच्चा	निकालना	और मुझे निकाल

और तहक़ीक़ हम ने औलादे आदम (अ) को इज़्ज़त बख़्शी, और हम ने उन्हें खुश्की और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बड़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। (70)
जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह ज़ुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)
और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)
और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है क़रीब था कि वह तुम्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)
और अगर हम तुम्हें साबित क़दम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)
उस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार। (75)
और तहक़ीक़ क़रीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)
आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)
सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ क़ाइम करें, और सुबह का कुरआन, बेशक सुबह का कुरआन (पढ़ने में फ़िरिश्ते) हाज़िर होते हैं। (78)
और रात का कुछ हिस्सा कुरआन की तिलावत के साथ बेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)
और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अ़ता कर ग़ल्बा, मदद देने वाला। (80)

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

81	है ही मिटने वाला	बातिल	बेशक	बातिल	और नाबूद हो गया	आया हक़	और कह दें आप (स)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

और नहीं ज़ियादा होता	मोमिनों के लिए	और रहमत	वह शिफ़ा	जो	कुरआन	से	और हम नाज़िल करते हैं

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ

वह रूगर्दान हो जाता है	इन्सान	पर - को	हम नेमत बख़्शते हैं	और जब	82	घाटा	सिवाए	ज़ालिम (जमा)

وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى

पर	काम करता है	कह दें हर एक	83	मायूस	वह हो जाता	बुराई	उसे पहुँचती है	और जब	और पहलू फेर लेता है

ع ٩ ٩ شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ

और आप (स) से पूछते हैं	84	रास्ता	ज़ियादा सहीह	कि वह कौन	खूब जानता है	सो तुम्हारा परवरदिगार	अपना तरीक़ा

عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	तुम्हें दिया गया	और नहीं	मेरा रब	हुक्म से	रूह	कह दें	रूह	से - के बारे में

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾ وَلَىِٕنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो कि	तो अलबत्ता हम ले जाएं	हम चाहें	और अगर	85	थोड़ा सा	मगर

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ

बेशक उस का फ़ज़्ल	तुम्हारे रब से	रहमत	मगर	86	कोई मददगार	हमारे (मुक़ाबले) पर	उस के लिए	अपने वास्ते	फिर तुम न पाओ

كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓي

पर	और जिन	तमाम इन्सान	जमा हो जाएं	अगर	कह दें	87	बड़ा	तुम पर	है

اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ

उन के बाज़	और अगरचे हो जाएं	इस के मानिंद	न ला सकेंगे	इस कुरआन	मानिंद	वह लाएं	कि

لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ

से	इस कुरआन	में	लोगों के लिए	और हम ने तरह तरह से बयान किया है	88	मददगार	बाज़ के लिए

كُلِّ مَثَلٍ ۡ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

तुझ पर	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे	और वह बोले	89	नाशुक्री	सिवाए	अक्सर लोग	पस कुबूल न किया	हर मिसाल

حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ

से - का	एक बाग़	तेरे लिए	या हो जाए	90	कोई चश्मा	ज़मीन से	हमारे लिए	तू रवां कर दे	यहां तक कि

نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

आस्मान	तू गिरा दे	या	91	बहती हुई	उस के दरमियान	नहरें	पस तू रवां कर दे	और अंगूर	खजूर (जमा)

كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾

92	रूबरू	और फ़रिश्ते	अल्लाह को	या तू ले आ	टुकड़े	हम पर	जैसा कि तू कहा करता है

और कह दें हक़ आया और बातिल नाबूद हो गया, बेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81) और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82) और जब हम इन्सान को नेमत बख़्शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83) कह दें हर एक अपने तरीक़े पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84) और वह आप (स) से रूह के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85) और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्ब कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे मुक़ाबले पर कोई मददगार। (86) मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (87) आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आएं तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के बाज़, बाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88) और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुबूल न किया। (89) और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90) या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान बहती नहरें रवां कर दे। (91) या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ़ एक बशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। **(93)**
और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएं जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्हों न कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल (बना कर) भेजा है? **(94)**
आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल (बना कर) उतारते। **(95)**
आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है, बेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। **(96)**
और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के चहरों के बल अन्धे और गूंगे और बहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। **(97)**
यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्हों ने कहा क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? **(98)**
क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर क़ादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुक्री के सिवा क़ुबूल न किया। **(99)**
आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। **(100)**

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ

और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या

لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ۭ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ

नहीं हूं मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहां तक कि	तेरे चढ़ने को

اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ ع ٩ ١٠

उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएं	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक बशर	मगर- सिर्फ़

الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ

अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक बशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	हिदायत

فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फ़रिश्ते	ज़मीन में

مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ

है	बेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफ़ी है	कह दें	95	रसूल	फ़रिश्ता

بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का

يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे

عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ

बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और बहरे	और गूंगे	अन्धे	उन के चेहरे	पर - बल

زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا النصف

और उन्हों ने कहा	हमारी आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां	हो जाएंगे हम	क्या जब

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्हों ने देखा	क्या नहीं

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम (जमा)	तो क़ुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे

اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا

जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्री के सिवा

لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾ ع ١١ ١١

100	तंग दिल	इन्सान	और है	ख़र्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ

उन के पास आया	जब	बनी इस्राईल	पस पूछ तू	खुली निशानियां	नौ (9)	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दीं

فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ

अलबत्ता तू ने जान लिया	उस ने कहा	101	जादू किया गया	ऐ मूसा	तुझ पर गुमान करता हूँ	बेशक मैं	फ़िरऔन	उस को	तो कहा

مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ

तुझ पर गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	बसीरत (जमा)	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	मगर	इस को	नहीं नाज़िल किया

يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ

तो हम ने उसे ग़र्क़ कर दिया	ज़मीन से	उन्हें निकाल दे	कि	पस उस ने इरादा किया	102	हलाक शुदा	ऐ फ़िरऔन

وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾ لا وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا

तुम रहो	बनी इस्राईल को	उस के बाद	और हम ने कहा	103	सब	उसके साथ	और जो

الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ

हम ने इसे नाज़िल किया	और हक़ के साथ	104	जमा कर के	तुम को	हम ले आएंगे	आख़िरत का वादा	आएगा	फिर जब	ज़मीन (मुल्क)

وقف لازم

وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ

हम ने जुदा जुदा किया	और कुरआन	105	और डर सुनाने वाला	मगर ख़ुशख़बरी देने वाला	हम ने आप (स) को भेजा	और नहीं	नाज़िल हुआ	और सच्चाई के साथ

لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ

या	तुम इस पर ईमान लाओ	आप कह दें	106	आहिस्ता आहिस्ता	और हम ने उसे नाज़िल किया	ठहर ठहर कर	लोग	पर	ताकि तुम उसे पढ़ो

لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन के सामने	वह पढ़ा जाता है	जब	इस से क़ब्ल	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	बेशक	तुम ईमान न लाओ

يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ لا وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ

है	बेशक	हमारा रब	पाक है	और वह कहते हैं	107	सिजदा करते हुए	ठोड़ियों के बल	वह गिर पड़ते हैं

وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ

और उन में ज़ियादा करता है	रोते हुए	ठोड़ियों के बल	और वह गिर पड़ते हैं	108	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	हमारा रब	वादा

السجدة ٤

خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ

सो उसी के लिए	तुम पुकारोगे	जो कुछ भी	रहमान	या तुम पुकारो	अल्लाह	तुम पुकारो	आप कहदें	109	आजिज़ी

الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ

उस के दरमियान	और ढूंडो	उस में	और न बिलकुल पस्त करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न बुलन्द करो तुम	सब से अच्छे नाम

سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

उस के लिए	और नहीं है	कोई औलाद	नहीं बनाई	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और कह दें	110	रास्ता

ع ١١ ١٢ ١٢ شَرِيْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

111	ख़ूब बड़ाई	और उस की बड़ाई करो	नातवानी	से, सबब	कोई मददगार	उस का	और नहीं है	सलतनत में	कोई शरीक

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने उस को कहा बेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने बसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आख़िरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (कुरआन को) हक़ के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतद्रीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, बेशक जिन्हें इस से क़ब्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिज़ी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहुत) बुलन्द करो और न उस में बिलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढूंडो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और ख़ूब उस की बड़ाई (बयान) करो। (111)

آيَاتُهَا ١١٠ ❀ سُوْرَةُ الْكَهْفِ (١٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

आयात 110 — (18) सूरतुल कहफ़ — ग़ार — रुकुआ़त 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ

और न रखी	किताब (कुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

لَّهٗ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ

और ख़ुशख़बरी दे	उस की तरफ़ से	सख़्त	अ़ज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में

الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ﴿٢﴾

2	अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह जो	मोमिनों

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ ﴿٣﴾ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे

وَلَدًا ۖ ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً

बात	बड़ी है	उन के बाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा

تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ

तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

बात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला

اَسَفًا ﴿٦﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ

कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे

اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۭ ﴿٨﴾

8	बंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अ़मल में	बेहतर

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ

से	वह थे	और रक़ीम	असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?

اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	तो उन्हों ने कहा	ग़ार	तरफ़- में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अ़जीब

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

10	दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ़ से	हमें दे

فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ ﴿١١﴾

11	कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1) (बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ़ से सख़्त अ़ज़ाब से, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे, जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2) वह उस में हमेशा रहेंगे। (3) और वह उन लोगों को डराए जिन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4) उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5) तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6) जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अ़मल में बेहतर। (7) और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8) क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अ़जीब थे। (9) जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली तो उन्हों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10) पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल (सुलाया)। (11)

ع ١٢ ١٣

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

12	मुद्दत	कितनी देर रहे	हिसाब रखा	दोनों गिरोह	कौन-किस	ताकि हम देखें	हम ने उन्हें उठाया	फिर

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

अपने रब पर	वह ईमान लाए	चन्द नौजवान	बेशक वह	ठीक ठीक	उनका हाल	तुझ से	बयान करते हैं	हम

وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ۖ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا

तो उन्हों ने कहा	वह खड़े हुए	जब	उन के दिल	पर	और हम ने गिरह लगादी	13	हिदायत	और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ

अलबत्ता हम ने कही	कोई माबूद	उस के सिवा	हम पुकारेंगे	हरगिज़ न	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हमारा रब

اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ

और माबूद	उस के सिवा	उन्हों ने बना लिए	हमारी क़ौम	यह है	14	बेजा बात	उस वक़्त

لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی

इफ़्तिरा करे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	वाज़ेह	कोई दलील	उन पर	क्यों वह नहीं लाते

عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ؕ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ

अल्लाह के सिवा	और जो वह पूजते हैं	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जब	15	झूट	अल्लाह	पर

فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	मुहैया करेगा	अपनी रहमत	से	तुम्हारा रब	फैला देगा तुम्हें	ग़ार	तरफ़-में	तो पनाह लो

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ

से	बच कर जाती है	वह निकलती है	जब	सूरज (धूप)	और तुम देखोगे	16	सहूलत	तुम्हारे काम	से

كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

बाएं तरफ़	उन से कतरा जाती है	वह ढल जाती है	और जब	दाएं तरफ़	उन का ग़ार

وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ

हिदायत दे अल्लाह	जो - जिसे	अल्लाह की निशानियां	से	यह	उस (ग़ार) की	खुली जगह	में	और वह

ع ٥ ٢ ١٤

فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾

17	सीधी राह दिखाने वाला	कोई रफ़ीक़	उस के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	वह गुमराह करे	और जो-जिस	पस वह हिदायत याफ़्ता

وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ

दाएं तरफ़	और हम बदलवाते हैं उन्हें	सोए हुए	हालांकि वह	बेदार	और तू उन्हें समझे

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

अगर तू झांकता	देहलीज़ पर	दोनों हाथ	फैलाए हुए	और उन का कुत्ता	और बाएं तरफ़

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

18	दहशत में	उन से	और तू भर जाता	भागता हुआ	उन से	तो पीठ फेरता	उन पर

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख़्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्हों ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14)

यह है हमारी क़ौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़्तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ बच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक कहने वाला	कहा	आपस में	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	हम ने उन्हें उठाया	और उसी तरह

كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ

तुम्हारा रब	उन्हों ने कहा	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	उन्हों ने कहा	तुम कितनी देर रहे

اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ

यह	अपना रुपया दे कर	अपने में से एक	पस भेजो तुम	जितनी मुद्दत तुम रहे	खूब जानता है

اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ

खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना	पाकीज़ा तर	कौन सा	पस वह देखे	शहर	तरफ़

مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ١٩

19	किसी को	तुम्हारी	और वह ख़बर न दे बैठे	और नर्मी करे	उस से

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ

तुम्हें लौटा लेंगे	या	तुम्हें संगसार कर देंगे	तुम्हारी	अगर वह ख़बर पा लेंगे	बेशक वह

فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ٢٠ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا

हम ने ख़बरदार कर दिया	और उसी तरह	20	उस सूरत में कभी	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	अपनी मिल्लत	में

عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ

कोई शक नहीं	क़ियामत	और यह कि	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	ताकि वह जान लें	उन पर

فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا

बनाओ	तो उन्हों ने कहा	उन का मामला	आपस में	वह झगड़ते थे	जब	उस में

عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا

वह लोग जो ग़ालिब थे	कहा	खूब जानता है उन्हें	उनका रब	एक इमारत	उन पर

عَلٰٓي اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ٢١ سَيَقُوْلُوْنَ

अब वह कहेंगे	21	एक मस्जिद	उन पर	हम ज़रूर बनाएंगे	अपने काम	पर

ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

उन का कुत्ता	उन का छटा	पाँच	और वह कहेंगे	उन का कुत्ता	उन का चौथा	तीन

رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ

कह दें आप (स)	उन का कुत्ता	और उन का आठवां	सात	और कहेंगे वह	बिन देखे	बात फैंकना

رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ڛ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ

उन में	पस न झगड़ो	थोड़े	मगर सिर्फ़	उन्हें नहीं जानते हैं	उन की गिनती (तेदाद)	खूब जानता है	मेरा रब

اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ٢٢

22	किसी	उन में से	उनके (बारे में)	पूछ	और न	ज़ाहिरी (सरसरी)	बहस	सिवाए

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التّاء بعد الياء من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع ٣ ١٥

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्हों ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ़, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। **(19)** बेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। **(20)** और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्हों ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मस्जिद (इबादतगाह)। **(21)** अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है उन का कुत्ता, बिन देखे फैंकते हैं (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। **(22)**

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह	तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह

رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ

अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा क़रीब की	मेरा रब

ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

कितनी मुद्दत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ

और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं

وَاتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ

उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें

وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ

साथ	अपना नफ़्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

उस का चेहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं

وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरें)

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ

और है	अपनी ख़्वाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो

اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ

सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	उस का काम

وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا

आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़्र करे (न माने)	चाहे	और जो

اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ

पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की क़न्नातें	उन्हें	घेर लेंगी

كَالْمُهْلِ يَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	मुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए तांम्बे की मानिंद

और हरगिज़ किसी काम को न कहना "कि मैं कल करने वाला हूँ" (कल कर दूँगा), (23) मगर "यह कि अल्लाह चाहे" (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा क़रीब की भलाई की। (24) और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25) आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुद्दत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26) और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28) और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़न्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहन्नम)। (29)

إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ

जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यक़ीनन हम	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي

बहती हैं	हमेशगी	बाग़ात	उन के लिए	यही लोग	30	अ़मल	अच्छा किया

مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे

وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔينَ

तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे

فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ ع ٩ ١٦

और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख़्तों (मसहरियों) पर	उस में

لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ

अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग़	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए

وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ

दोनों बाग़	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख़्त	और हम ने उन्हें घेर लिया

اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल	लाए

وَّكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ

मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था

مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ

और वह	अपना बाग़	और वह दाख़िल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा बाइज़्ज़त	माल में	तुझ से

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَآ أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

35	कभी	यह	बरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर	ज़ुल्म कर रहा था

وَّمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّي لَأَجِدَنَّ

मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ़	मैं लौटाया गया	और अगर	क़ाइम (बरपा)	क़ियामत	और मैं गुमान नहीं करता

خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُٓ

उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से	बेहतर

أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ

फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़्र करता है

سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّي وَلَآ أُشْرِكُ بِرَبِّيٓ أَحَدًا ﴿٣٨﴾

38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37	मर्द	तुझे पूरा बनाया

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यक़ीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अ़मल किया। (30)

यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बाग़ात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31)

और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग़ बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख़्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32)

दोनों बाग़ अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33)

और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़्ज़त हूँ। (34)

और वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35)

और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36)

उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37)

लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ

अल्लाह की	मगर	नहीं कुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाख़िल हुआ	जब	और क्यों न

اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۚ ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ

कि	मेरा रब	तो क़रीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۙ ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ

फिर तू हरगिज़ न कर सके	ख़ुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए

لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى

पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलब (तलाश)	उस को

مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ

ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने ख़र्च किया

لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

उस की मदद करती वह	कोई जमाअ़त	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ؕ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

इख़्तियार	यहां	43	बदला लेने के क़ाबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से

ع ١٣ ٥ ١٧ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ۧ وَاضْرِبْ لَهُمْ

उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक़

مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल

فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ

उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नबातात (सब्ज़ा)	उस से - ज़रीए	पस मिल जुल गया

الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ

माल	45	बड़ी कुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ

बेहतर	नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे

عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ

पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आर्ज़ू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक

وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ۚ

47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा "माशा अल्लाह" (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39)
तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40)
या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41)
और उस के फल (अ़ज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने ख़र्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42)
और उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के क़ाबिल न था। (43)
यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक़ के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44)
और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (ख़ूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी कुदरत रखने वाला है। (45)
माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आर्ज़ू में। (46)
और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ बस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे

اَوَّلَ مَرَّةٍۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ

और रखी जाएगी	48	कोई वक़्ते मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार

الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

उस में	उस से जो	डरते हुए	मुज्रिम (जमा)	सो तुम देखोगे	किताब

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً

छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)	कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे

وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ

सामने	जो उन्हों ने किया	और वह पालेंगे	वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا ٦ ع ٥ ١٨

तुम सिजदा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और ज़ुल्म नहीं करेगा

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ

से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिजदा किया	आदम (अ) को

اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِیْ وَهُمْ

और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)	और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो	अपने रब का हुक्म

لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ

पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

बनाने वाला	और मैं नहीं	उन की जानें (ख़ुद वह)	और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِیَ الَّذِيْنَ

और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाज़ू	गुमराह करने वाले

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया

مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا

गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुज्रिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह

وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ ٧ ع ٦ ١٩

क़ुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

54	झगड़ालू	हर शै से ज़ियादा	इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

और वह तेरे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश किए जाएंगे, (आख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्ते मौऊद न ठहराएंगे। (48)

और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुज्रिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्हों ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (49)

और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिज्दा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह (क़ौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुक्म से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)

मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न ख़ुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाज़ू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)

और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)

और देखेंगे मुज्रिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)

और हम ने अलबत्ता इस क़ुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ालू है। (54)

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

और वह बख़्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब

الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ

ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अ़ज़ाब

وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا

ताकि वह फुसला दें	नाहक़ (की बातों से)	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ

और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो-जिस	मेरी आयात	और उन्हों ने बनाया	हक़	उस से

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ

जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ

और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	बेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ

اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا

पाएं हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान

اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़्शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी	जब भी

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا

वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अ़ज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्हों ने किया

مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

और हम ने मुक़र्रर किया	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	बस्तियां	और यह (उन)	58	पनाह की जगह	उस से वरे

ع ٨ ٦ ٢٠ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ۧ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓي

यहां तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त	उन की तबाही के लिए

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह	मैं पहुँच जाऊँ

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا

फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह भूल गए	दोनों के दरमियान

جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुब्ह का खाना	हमारे पास लाओ	अपने शागिर्द को	उस ने कहा	वह आगे चले

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएं जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख़्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अ़ज़ाब। (55)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्हों ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, बेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस क़ुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अ़ज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के वरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58)

और उन बस्तियों को जब उन्हों ने ज़ुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59)

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहां तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूँगा। (60)

फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61)

फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुब्ह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ

मछली	भूल गया	तो बेशक मैं	पत्थर	तरफ़-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ

दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं

عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا

अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अ़जीब तरह

قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64	देखते हुए

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى

पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से	और हम ने इल्म दिया उसे

اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि

مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68	वाक़फ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सब्र करेगा	और कैसे	67	सब्र	मेरे साथ

قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सब्र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ

मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ ع ٩ ١١ ٢١

उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कश्ती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का	तुझ से

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम ग़र्क़ कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	72	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा

لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73	मुशकिल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	बग़ैर	पाक	एक जान

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अ़जीब तरह से। **(63)**
मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। **(64)**
फिर उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। **(65)**
मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। **(66)**
उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। **(67)**
और तू उस पर कैसे सब्र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। **(68)**
मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सब्र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। **(69)**
ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअ़ल्लिक़, यहां तक कि मैं खुद तुझ से ज़िक्र करूँ। **(70)**
फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कश्ती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को ग़र्क़ कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। **(71)**
ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। **(72)**
मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालें। **(73)**
फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। **(74)**

الجزء ١٦

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	बेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ

अलबत्ता तुम पहुँच गए	तो मुझे अपने साथ न रखना	इस के बाद	किसी चीज़ से	मैं तुम से पूछूँ	उस (मूसा अ) ने कहा अगर

مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨ اسْتَطْعَمَآ

दोनों ने खाना मांगा	एक गावँ वालों के पास	जब वह दोनों आए	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	76	उज़्र को	मेरी तरफ़ से

اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ

वह चाहती थी	उस में (वहां) एक दीवार	फिर उन्हों ने पाई (देखी)	वह उन की ज़ियाफ़त करें	तो उन्हों ने इन्कार कर दिया कि	उस के बाशिन्दे

اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	77	उज्रत	उस पर	ले लते	अगर तुम चाहते	उस ने कहा	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	कि वह गिर पड़े

هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ

उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर	अब तुम्हें बताए देता हूँ	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	जुदाई	यह

صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ

दर्या में	वह काम करते थे	ग़रीब लोगों की	सो वह थी	कश्ती	रही	78	सब्र

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

हर कश्ती	वह पकड़ लेता	एक बादशाह	उन के आगे	और था	मैं उसे ऐबदार कर दूँ	कि	सो मैं ने चाहा

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا

कि उन्हें फंसादे	सो हमें अन्देशा हुआ	दोनों मोमिन	उस के माँ बाप	तो थे	लड़का	और रहा	79	ज़बरदस्ती

طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ ۚ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

पाकीज़गी	उस से	बेहतर	उन का रब	कि बदला दे उन दोनों को	पस हम ने इरादा किया	80	और कुफ़्र में	सरकशी में

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ

दो यतीम	दो (2) बच्चों की	सो वह थी	दीवार	और रही	81	शफ़क़त	और ज़ियादा क़रीब

فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ

सो चाहा कि	नेक	उन का बाप	और था	उन दोनों के लिए	ख़ज़ाना	उस के नीचे	और था	शहर में - के

رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ

से तुम्हारा रब	मेहरबानी	अपना ख़ज़ाना	और वह दोनों निकालें	अपनी जवानी	कि वह पहुँचें	तुम्हारा रब

ع ١٠ / ١٢

وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

82	सब्र	उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर (हक़ीक़त)	यह	अपना हुक्म (मरज़ी)	से	और यह मैं ने नहीं किया

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

83	कुछ हाल	उस से - का	तुम पर - सामने	अभी पढ़ता हूँ	फ़रमा दें	ज़ुलक़रनैन	से (बाबत)	और आप (स) पूछते हैं

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75)
मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअ़ल्लिक़) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलबत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़्र को। (76)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्हों ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज्रत ले लते। (77)
उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें ताबीर (हक़ीक़ते हाल) बताए देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78)
रही कश्ती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ। (79)
और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र में न फंसादे। (80)
बस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा क़रीब हो। (81)
और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए ख़ज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हक़ीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82)
और वह आप (स) से पूछते हैं ज़ुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

बेशक हम ने उस को ज़मीन में क़ुदरत दी और हम ने उसे हर शै का सामान दिया था। (84)
सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)
यहां तक कि वह सूरज के ग़ुरूब होने के मुक़ाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक क़ौम पाई, हम ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86)
उस ने कहा, अच्छा! जिस ने ज़ुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अ़ज़ाब देगा। (87)
और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अ़मल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अ़नक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)
फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)
यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ़ होने के मुक़ाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ़ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)
यह है (हक़ीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-(इल्म) में है। (91)
फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)
याहं तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक क़ौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)
अन्हों ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी हैं तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)
उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो क़ुव्वत (बाज़ू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)
मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाडों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धौंको, यहां तक कि जब (धौंक कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ

सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शै	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	बेशक हम ने क़ुदरत दी

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ

चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	ग़ुरूब होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान

حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ

यह कि	या-चाहे	ऐ ज़ुलक़रनैन	हम ने कहा	एक क़ौम	उस के नज़्दीक	और उस ने पाया	दलदल

تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

जिस ने ज़ुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो	और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अ़ज़ाब	तो वह उसे अ़ज़ाब देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द

اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا

अपना काम	मुतअ़ल्लिक़	उस के लिए	और अ़नक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

तुलूअ़ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ़ होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	88	आसानी

عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا

और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक क़ौम पर

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

दो दीवारें (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूए ख़बर	जो कुछ उस के पास

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا

अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक क़ौम	दोनों के बीच	उस ने पाया

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ

तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	बेशक	ऐ ज़ुलक़रनैन

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें

مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	क़ुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर क़ुदरत दी मुझे

رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़

انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْۤ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	यहां तक कि	धौंको

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	97	नक़्ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे

هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ

और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह

وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के बाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा

وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूंका जाएगा सूर

عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ اِلَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थीं	वह जो कि	100	बिलकुल सामने

ع ١١ ١٩ ٢ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا

कि वह बना लेंगे	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते

عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	बेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ

उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएं	क्या	फ़रमा दें

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहें हैं	कि वह	ख़याल करते हैं	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ

पस हम क़ाइम न करेंगे	उन के अमल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

उन्हों ने कुफ़्र किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	क़ियामत के दिन	उन के लिए

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के बाग़ात	उन के लिए	हैं	और उन्हों ने नेक अ़मल किए

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ

मेरा रब	बातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फ़रमा दें	108	जगह बदलना	वहां से	वह न चाहेंगे

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएं	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़्ब लगा सकेंगे। (97)
उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़र्ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98)
और हम छोड़ देंगे उन के बाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99)
और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100)
और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(ग़फ़्लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101)
जिन लोगों ने कुफ़्र किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। बेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102)
फ़रमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएं आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)! (103)
वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104)
यही लोग हैं जन्हों ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ाइम न करेंगे (उन के अ़मल बे वज़न होंगे)। (105)
यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हँसी मज़ाक़ ठहराया। (106)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बाग़ात। (107)
उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108)
फ़रमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएं। (109)

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ

हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फ़क़त	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फ़रमा दें

ع ١٢ ٩ ٣

يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۧ (١١٠)

110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अ़मल	तो उसे चाहिए कि वह अ़मल करे	अपना रब	मुलाक़ात	उम्मीद रखता है

آيَاتُهَا ٩٨ ❀ سُوْرَةُ مَرْيَمَ (١٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआत 6 — (19) सूरह मरयम — आयात 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ (١) ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا (٢) اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़करिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़्किरा	1	काफ़ हा या ऐन साद

نِدَآءً خَفِيًّا (٣) قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ

सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना

شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا (٤) وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا (٥) يَّرِثُنِيْ

मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बांझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद

وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا (٦) يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

तुझे बशारत देते हैं	बेशक हम	ऐ ज़करिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याकूब (अ)	से-का	और वारिस हो

بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا (٧) قَالَ رَبِّ اَنّٰى

कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का

يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ

बुढ़ापा	से-की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बांझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह

عِتِيًّا (٨) قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ

तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फ़रमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद

مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا (٩) قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ

फ़रमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से

اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا (١٠) فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी

مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا (١١)

11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ़	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अ़मल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1)
यह तज़्किरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़करिया (अ) पर। (2)
(याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद बालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4)
और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5)
वह वारिस हो मेरा और औलादे याकूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6)
(इरशाद हुआ) ऐ ज़करिया (अ)! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7)
उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी बीवी बांझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8)
उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मुक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10)
फिर वह मेहराबे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ﴿۱۲﴾ وَّحَنَانًا

और शफ़क़त	12	बचपन से	नबूव्वत- दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)	ऐ यहया (अ)

مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ﴿۱۳﴾ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ

और न था वह	अपने माँ बाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से

جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿۱۴﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

और जिस दिन	वह फ़ौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14	नाफ़रमान	गर्दन कश

ع ٢٥ وقف لازم

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿۱۵﴾ ع وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा

مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ﴿۱۶﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَا

फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिक़ी	मकान

اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿۱۷﴾ قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ

पनाह में आती हूँ	बेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शक्ल बन गया	अपनी रूह (फ़रिश्ता)	उस की तरफ़

بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿۱۸﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ

तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है	तुझ से	अल्लाह की

لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿۱۹﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّلَمْ

जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा	एक लड़का	तुझ को	ताकि अ़ता करूँ

الربع

يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿۲۰﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ

तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी बशर ने	मुझे छुआ

هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ

और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएं	आसान	मुझ पर	वह- यह

اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿۲۱﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿۲۲﴾

22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हम्ल रह गया	21	तै शुदा	एक अम्र

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ

मर चुकी होती	अए काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया

قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿۲۳﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ

उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से क़ब्ल

اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿۲۴﴾ وَهُزِّىْٓ

और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू

اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿۲۵﴾ ز

25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे बचपन (ही) से नबूव्वत ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अ़ता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (क़ुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिक़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फ़रिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक्ल बन कर आया। (17) वह बोली बेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अ़ता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी बशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अम्र। (21) फिर उसे हम्ल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्दे ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़ब्ल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फ़रिश्ते ने) आवाज़ दी: तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर
अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे
कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र
मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी
से कलाम न करूँगी। (26)
फिर वह उसे उठा कर अपनी क़ौम के
पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)!
तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)
ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप
बुरा आदमी न था और न तेरी माँ
ही थी बदकार। (28)
तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़
इशारा किया, वह बोलेः हम गहवारे
(गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)
बच्चे ने कहाः बेशक मैं अल्लाह का
बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)
और मुझे नबी बनाया, और जहां
कहीं मैं हूँ मुझे बाबरकत बनाया
है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ
मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और
ज़कात का, (31)
और अपनी माँ से अच्छा सुलूक
करने का, और उस ने मुझे नहीं
बनाया सरकश, बदनसीब। (32)
और सलामती हो मुझ पर जिस
दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन
मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा
करके उठाया जाऊँगा। (33)
यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ),
सच्ची बात जिस में वह (लोग)
शक करते हैं। (34)
अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है
कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक
है, जब वह किसी काम का फ़ैसला
करता है तो उस के सिवा नहीं कि
वह कहता है "हो जा" पस वह
हो जाता है। (35)
और बेशक अल्लाह मेरा और
तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत
करो, यह सीधा रास्ता है। (36)
(फिर अहले किताब के) फ़िरक़ों ने
इख़तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी
है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के)
बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)
क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ
देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने
आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम
खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ

कोई	आदमी	से	फिर अगर तू देखे	आँखें	और ठंडी कर	और पी	तू खा

فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ ٢٦

26	किसी आदमी	आज	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	रोज़ा	रहमान के लिए	कि मैं ने नज़्र मानी है	तो कह दे

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ٢٧

27	बुरी (ग़ज़ब की)	शै	तू लाई है	ऐ मरयम	वह बोले	उसे उठाए हुए	अपनी क़ौम	फिर वह उसे ले कर आई

يٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۖۚ ٢٨

28	बदकार	तेरी माँ	और न थी	बुरा	आदमी	तेरा बाप	था	न	ऐ हारून (अ) की बहन

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا ٢٩

29	बच्चा	गहवारे में	जो है	कैसे हम बात करें	वह बोले	उस की तरफ़	तो मरयम ने इशारा किया

قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰنِىَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِىْ نَبِيًّا ۙ ٣٠ وَّجَعَلَنِىْ

और मुझे बनाया है	30	नबी	और मुझे बनाया है	किताब	उस ने मुझे दी है	अल्लाह का बन्दा	बच्चे ने कहा बेशक मैं

مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَاَوْصٰنِىْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ

जब तक मैं रहूँ	और ज़कात का	नमाज़ का	और मुझे हुक्म दिया है उस ने	मैं हूँ	जहां कहीं	बाबरकत

حَيًّا ۙ ٣١ وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَتِىْ ۫ وَلَمْ يَجْعَلْنِىْ جَبَّارًا شَقِيًّا ٣٢ وَالسَّلٰمُ

और सलामती	32	बदनसीब	सरकश	और उस ने मुझे नहीं बनाया	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	31	ज़िन्दा

عَلَىَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ٣٣ ذٰلِكَ

यह	33	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाऊँगा	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	मैं पैदा हुआ	जिस दिन	मुझ पर

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِىْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ٣٤ مَا كَانَ لِلّٰهِ

नहीं है अल्लाह के लिए	34	वह शक करते हैं	वह जिस में	सच्ची	बात	इब्ने मरयम	ईसा (अ)

اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

वह कहता है	तो इस के सिवा नहीं	किसी काम	जब वह फ़ैसला करता है	वह पाक है	बेटा	कोई	वह बनाए	कि

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ٣٥ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا

यह	पस उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	और बेशक	35	पस वह हो जाता है	हो जा	उस को

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ٣٦ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ

पस ख़राबी	आपस में (बाहम)	फ़िर्क़े	फिर इख़तिलाफ़ किया	36	सीधा	रास्ता

لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ٣٧ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ

और देखेंगे	क्या कुछ	सुनेंगे	37	बड़ा दिन	हाज़िरी	से	काफ़िरों के लिए

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ٣٨

38	खुली गुमराही	में	आज के दिन	ज़ालिम (जमा)	लेकिन	वह हमारे सामने आएंगे	जिस दिन

وقف لازم

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ

और वह	ग़फ़लत में हैं	लेकिन वह	काम	जब फ़ैसला कर दिया जाएगा	हसरत का दिन	और उन को डरावें आप (स)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا

और हमारी तरफ़	उस पर	और जो	ज़मीन	वारिस होंगे	बेशक हम	39	ईमान नहीं लाते

ع ٢٥ ٥

يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

सच्चे	बेशक वह थे	इब्राहीम (अ)	किताब में	और याद करो	40	वह लौटाए जाएंगे

نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

और न देखे	जो न सुने	तुम क्यों परस्तिश करते हो	ऐ मेरे अब्बा	अपने बाप को	जब उस ने कहा	41	नबी

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا

जो	वह इल्म	बेशक मेरे पास आया है	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	42	कुछ	तुम्हारे	और न काम आए

لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ

शैतान	परस्तिश न कर	ऐ मेरे अब्बा	43	सीधा	रास्ता	मैं तुम्हें दिखाऊँगा	पस मेरी बात मानो	तुम्हारे पास नहीं आया

اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ

कि	डरता हूँ	बेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	44	नाफ़रमान	रहमान का	है	शैतान	बेशक

يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ

क्या रूगर्दां	उस ने कहा	45	साथी	शैतान का	फिर तू हो जाए	रहमान	से - का	अ़ज़ाब	तुझे आपकड़े

اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

46	एक मुद्दत के लिए	और मुझे छोड़ दे	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा	तू बाज़ न आया	अगर	ऐ इब्राहीम (अ)	मेरे माबूद (जमा)	से	तू

قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

47	मेहरबान	मुझ पर	है	बेशक वह	अपना रब	तेरे लिए	मैं अभी बख़्शिश मांगूँगा	तुझ पर	सलाम	उस ने कहा

وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى

उम्मीद है	अपना रब	और मैं इबादत करूँगा	अल्लाह	सिवाए	तुम परस्तिश करते हो	और जो	और किनारा कशी करता हूँ तुम से

اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	और जो	वह किनारा कश होगए उन से	फिर जब	48	महरूम	अपना रब	इबादत से	कि न रहूँगा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

49	नबी	हम ने बनाया	और सब को	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)	उस को	हम ने अ़ता किया	अल्लाह	सिवाए

ع ٣ ١٠ ٦

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

50	निहायत बुलन्द	सच्चा - जमील	ज़िक्र	उन का	और हम ने किया	अपनी रहमत	से	उन्हें	और हम ने अ़ता किया

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

51	नबी	रसूल	और था	बरगुज़ीदा	था	बेशक वह	मूसा (अ)	किताब में	और याद करो

और आप (स) उन्हें हस्रत के दिन से डरावें जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह ग़फ़्लत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते। (39)
बेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40)
और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (41)
जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बाः तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मेरे पास वह इल्मे (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43)
ऐ मेरे अबबा! शैतान की परस्तिश न कर, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (44)
ऐ मेरे अबबा! बेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अ़ज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45)
उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगर्दां है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और मुझे एक मुद्दत के लिए छोड़ दे। (46)
इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूँगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है, (47)
और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48)
फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इसहाक़ (अ) और याकूब (अ) अ़ता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49)
और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अ़ता किया और हम ने उन का ज़िक्रे जमील निहायत बुलन्द किया। (50)
और किताब में मूसा (अ) को याद करो, बेशक वह बरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिब से पुकारा, और हम ने उसे राज़ बतलाने को नज़्दीक बुलाया। (52)

और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अ़ता किया। (53)

और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, बेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54)

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)

और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (56)

और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57)

यह हैं नबियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (कश्ती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याक़ूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज्दा करते और रोते हुए। (58)

फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जांनशीन हुए, उन्हों ने नमाज़ गंवादी, और ख़ाहिशाते (नफ़सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)

मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़र्रा भर भी उन का नुक़्सान न किया जाएगा, (60)

हमेशगी के बाग़ात में जिन का वादा रहमान ने ग़ाइबाना अपने बन्दों से किया, बेशक उस का वादा आने वाला है। (61)

और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुब्ह ओ शाम उन का रिज़्क़ है। (62)

यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ٥٢

52	राज़ बताने को	और उसे नज़्दीक बुलाया	दाहिनी	कोहे तूर	जानिब	से	और हम ने उसे पुकारा

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ٥٣ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ

किताब में	और याद करो	53	नबी	हारून (अ)	उस का भाई	अपनी रहमत से	उसे	और हम ने अ़ता किया

اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ٥٤

54	नबी	रसूल	और थे	वादे का सच्चा	थे	बेशक वह	इस्माईल (अ)

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ٥٥

55	पसन्दीदा	अपने रब के हां	और वह थे	और ज़कात	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म देते थे

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ٥٦ وَّرَفَعْنٰهُ

और हम ने उसे उठा लिया	56	नबी	सच्चे	थे	बेशक वह	इदरीस (अ)	किताब में	और याद करो

مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	से	उन पर	अल्लाह ने इन्आ़म किया	वह जिन्हें	यह वह लोग	57	बुलन्द	एक मुक़ाम

مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ

औलाद	और से	नूह (अ)	साथ	सवार किया हम ने	और उन से जिन्हें	औलादे आदम	से

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	जब पढ़ी जातीं	और हम ने चुना	हम ने हिदायत दी	और उन से जिन्हें	इब्राहीम (अ) और याक़ूब (अ)

اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ٥٨ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

السجدة ٥

चन्द जांनशीन (ना ख़लफ़)	उन के बाद	फिर जांनशीन हुए	58	और रोते हुए	सिज्दा करते हुए	वह गिर पड़ते	रहमान की आयतें

اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ٥٩

59	गुमराही	उन्हें मिलेगी	पस अ़नक़रीब	ख़ाहिशात	और पैरवी की	नमाज़	उन्हों ने गंवादी

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ

वह दाख़िल होंगे	पस यही लोग	नेक	और अ़मल किए	और ईमान लाया	तौबा की	जो-जिस	मगर

الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ٦٠ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ

वादा किया	वह जो	हमेशगी के बाग़ात	60	कुछ-ज़रा	और उन का न नुक़्सान किया जाएगा	जन्नत

الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ٦١ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	61	आने वाला	उस का वादा	है	बेशक वह	ग़ाइबाना	अपने बन्दे (जमा)	रहमान

فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ٦٢

62	और शाम	सुबह	उस में	उन का रिज़्क़	और उन के लिए	सिवा सलाम	बेहूदा	उस में

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ٦٣

63	परहेज़गार	होंगे	जो	अपने बन्दे	से-को	हम वारिस बनाएंगे	वह जो कि	जन्नत	यह

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا

हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुक्म से	मगर	हम उतरते	और नहीं

وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ

तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित क़दम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन

ع ١٥ ٧

لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

66	ज़िन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	तो फिर	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है	65	हम नाम कोई	उस का

اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾

67	कुछ भी	जब कि वह न था	इस से क़ब्ल	हम ने उसे पैदा किया	बेशक हम	इन्सान	याद करता	क्या नहीं

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	इर्द गिर्द	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	फिर	शैतान (जमा)	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	सो तुम्हारे रब की क़सम

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ

अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे	फिर	68	घुटनों के बल गिरे हुए

عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ

और नहीं	70	दाख़िल होना	ज़ियादा मुस्तहिक़ उस में	वह	उन से जो	ख़ूब वाक़िफ़	अलबत्ता	फिर	69	सरकशी करने वाला

مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّى

हम नजात देंगे	फिर	71	मुक़र्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है	यहां से गुज़रना होगा	मगर	तुम में से

الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)	और हम छोड़ देंगे	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ۙ اَىُّ الْفَرِيْقَيْنِ

दोनों फ़रीक़	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयतें

خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ

वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मज्लिस	और अच्छी	बेहतर मुक़ाम

اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ

उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान	बहुत अच्छे

الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا

और ख़्वाह	अज़ाब	ख़्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	ख़ूब ढील	रहमान

السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

75	लशकर	और कमज़ोर तर	बदतर मुक़ाम	वह	कौन	पस अब वह जान लेंगे	क़ियामत

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64)

वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65)

और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66)

क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67)

सो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68)

फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69)

फिर अलबत्ता हम उन से ख़ूब वाक़िफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाख़िल होने के ज़ियादा मुस्तहिक़ हैं। (70)

और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71)

फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्हों ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्हों ने कुफ़्र किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मज्लिस अच्छी है? (73)

और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74)

कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और ख़ूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	हिदायत	हिदायत हासिल की	जिन लोगों ने	अल्लाह	और ज़ियादा देता है

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ

इन्कार किया	वह जिस ने	पस क्या तू ने देखा	76	ब एतिबारे अन्जाम	और बेहतर	ब एतिबारे सवाब	तुम्हारे रब के नज़्दीक	बेहतर

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ ؕ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ

उस ने ले लिया है	या	ग़ैब	क्या वह मुत्तला हो गया है	77	और औलाद	माल	मैं ज़रूर दिया जाऊँगा	और उस ने कहा	हमारे हुक्मों का

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ ۙ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ

उस को	और हम बढ़ा देंगे	वह जो कहता है	अब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	78	कोई अ़हद	अल्लाह रहमान से

مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ ۙ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا

और उन्हों ने बना लिया	80	अकेला	और वह हमारे पास आएगा	जो वह कहता है	और हम वारिस होंगे	79	और लंबा	अ़ज़ाब से

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ ۙ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ

जल्द ही वह इन्कार करेंगे	हरगिज़ नहीं	81	मोजिबे इ़ज़्ज़त	उन के लिए	ताकि वह हो	माबूद	अल्लाह के सिवा

بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ ع ١٧ ٨

शैतान (जमा)	बेशक हम ने भेजे	क्या तुम ने नहीं देखा	82	मुख़ालिफ़	उन के	और हो जाएंगे	उन की बन्दगी से

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ ۙ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ ؕ

84	गिनती	उन की	सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं	उन पर	सो तुम जल्दी न करो	83	उकसाते हैं उन्हें ख़ूब उकसाना	काफ़िर (जमा)	पर

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ ۙ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ

गुनाहगार (जमा)	और हांक कर ले जाएंगे	85	मेहमान बना कर	रहमान की तरफ़	परहेज़गार (जमा)	हम जमा कर लेंगे	जिस दिन

اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ وقف لازم

रहमान के पास	जिस ने लिया हो	सिवाए	शफ़ाअ़त	वह इख़्तियार नहीं रखते	86	प्यासे	जहन्नम	तरफ़

عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ ؕ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ ۙ وقف لازم

89	बुरी	एक बात	तहक़ीक़ तुम लाए हो	88	बेटा	रहमान	बना लिया है	और वह कहते हैं	87	इक़रार

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ ۙ

90	पारा पारा	पहाड़	और गिर पड़े	ज़मीन	और टुकड़े टुकड़े हो जाए	उस से	फट पड़े	आस्मान	क़रीब है

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ ۚ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ ؕ

92	बेटा	कि वह बनाए	रहमान के लिए	शायान	जब कि नहीं	91	बेटा	रहमान के लिए	कि उन्हों ने पुकारा (मन्सूब किया)

اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ ؕ

93	बन्दा	रहमान	मगर आता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं तमाम (कोई)

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ ؕ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

95	अकेला	आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन	और उन में से हर एक	94	और उन का शुमार कर लिया है गिन कर	उस ने उन को घेर लिया है

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक बाक़ी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सवाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम। (76)
पस क्या तू ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊँगा। (77)
क्या वह ग़ैब पर मत्तला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अ़हद। (78)
हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अ़ज़ाब लंबा बढ़ादेंगे। (79)
और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80)
और उन्हों ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोजिबे इ़ज़्ज़त हों। (81)
हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुख़ालिफ़ हो जाएंगे। (82)
क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें ख़ूब उकसाते रहते हैं। (83)
सो तुम उन पर (नुज़ूले अ़ज़ाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84)
(याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85)
और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86)
वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़रार। (87)
और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88)
तहक़ीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89)
क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90)
कि उन्हों ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91)
जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92)
नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93)
उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94)
और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

रहमान	उन के लिए	पैदा कर देगा	नेक	और उन्हों ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ

और डराएं उस से	परहेज़गारों	ताकि आप ख़ुशख़बरी दें उस से	आप की ज़बान में	हम ने इसे आसान कर दिया है	पस उस के सिवा नहीं	96	मुहब्बत

قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ هَلْ تُحِسُّ

तुम देखते हो	क्या	गिरोह	से	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दिए	और कितने ही	97	झगड़ालू लोग

مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾ ع

98	आहट	उन की	या तुम सुनते हो	कोई किसी को	उन से

اٰيَاتُهَا ١٣٥ ❀ (٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٨

रुकुआत 8 — (20) सूरह ता हा — आयात 135

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

उस के लिए जो	याद दिहानी	मगर	2	ताकि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ	क़ुरआन	तुम पर	हम ने नाज़िल नहीं किया	1	ता हा

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾

4	ऊंचे	और आस्मान (जमा)	ज़मीन	बनाया	से-जिस	नाज़िल किया हुआ	3	डरता है

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	उस के लिए जो	5	क़ाइम	अर्श पर	रहमान

فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ

बात	तू पुकार कर कहे	और अगर	6	गीली मिट्टी	नीचे	और जो	उन दोनों के दरमियान	और जो	ज़मीन में

فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ

सब नाम	उसी के लिए	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	7	और निहायत पोशीदा	भेद	जानता है	तो बेशक वह

الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ

तो कहा	आग	जब उस ने देखी	9	मूसा (अ)	कोई ख़बर	तुम्हारे पास आई	और क्या	8	अच्छे

لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ

या	चिंगारी	उस से	तुम्हारे पास लाऊँ	शायद मैं	आग	देखी है	बेशक मैं ने	तुम ठहरो	अपने घर वालों को

اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّآ اَتٰهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّىْٓ اَنَا

मैं	बेशक मैं	11	ऐ मूसा (अ)	आवाज़ आई	वह वहां आए	जब पस	10	रास्ता	आग पर-के	मैं पाऊँ

رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

12	तुवा	पाक मैदान	बेशक तुम	अपनी जूतियां	सो उतार लो	तुम्हारा रब

बेशक जो लोग ईमान लाए और
उन्हों ने किए अमल नेक उन के
लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों
में) मुहब्बत। (96)
पस उस के सिवा नहीं कि हम ने
(क़ुरआन) को आप (स) की ज़बान में
आसान कर दिया ताकि उस से आप (स)
परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दें और
झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)
और इन से क़ब्ल हम ने हलाक
कर दिए कितने ही गिरोह, क्या
तुम उन में से किसी को देखते हो?
या उन की आहट सुनते हो? (98)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
ता-हा। (1)
हम ने क़ुरआन तुम पर इस
लिए नाज़िल नहीं किया कि तुम
मुशक़्क़त में पड़ जाओ। (2)
मगर उस के लिए नसीहत है जो
डरता है। (3)
नाज़िल किया हुआ है (उस की
तरफ़ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे
आस्मान बनाए। (4)
रहमान अर्श पर क़ाइम है। (5)
उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों
में है और जो कुछ ज़मीन में है,
और जो उन दोनों के दरमियान है,
और जो ज़मीन के नीचे है। (6)
और अगर तू पुकार कर कहे बात
तो बेशक वह भेद जानता है और
निहायत पोशीदा (बात को भी)। (7)
अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं,
उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)
और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की
ख़बर आई? (9)
जब उस ने आग देखी तो अपने घर
वालों से कहा कि तुम ठहरो, बेशक मैं
ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास
उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर
रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)
पस जब वह वहां आए, तो आवाज़
आई ऐ मूसा (अ)! (11)
बेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो
अपनी जूतियां उतार लो, बेशक तुम
तुवा के पाक वादी में हो। (12)

ركوع ٦ / ٩ النصف

وقف لازم

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	अल्लाह	मैं	बेशक मैं	13	उस की तरफ़ जो वहि की जाए	पस कान लगा कर सुनो	तुम्हें पसन्द किया	और मैं

اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

आने वाली	क़ियामत	बेशक	14	मेरी याद के लिए	नमाज़	और क़ाइम करो	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा

اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

उस से जो	पस तुझे रोक न दे	15	उस का जो वह कोशिश करे	शख़्स	हर	ताकि बदला दिया जाए	मैं उसे पोशीदा रखूँ	मैं चाहता हूँ

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾

17	ऐ मूसा (अ)	तेरे दाहने हाथ में	यह	और क्या	16	फिर तू हलाक हो जाए	अपनी ख़ाहिश	और वह पीछे पड़ा	उस पर	ईमान नहीं रखता	जो

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا

इस में	और मेरे लिए	अपनी बकरियां	पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	इस पर	मैं टेक लगाता हूँ	मेरा असा	यह	उस ने कहा

مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

सांप	तो नागाह वह	पस उस ने डाल दिया	19	ऐ मूसा (अ)	उसे डाल दे	उस ने फ़रमाया	18	और भी	(ज़रूरतें) फ़ाइदे

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۥ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾

21	पहली	उस की हालत	हम जल्द उसे लौटा देंगे	और न डर	उसे पकड़ ले	फ़रमाया	20	दौड़ता हुआ

وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً

निशानी	ऐब	बग़ैर किसी	सफ़ेद	वह निकलेगा	अपनी बग़ल	तक- से	अपना हाथ	और (मिला) लगा

اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ

बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़	तू जा	23	बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम तुझे दिखाएं	22	दूसरी

طَغٰى ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ ع ١٠

और खोल दे	26	मेरा काम	और मेरे लिए आसान कर दे	25	मेरा सीना	मेरे लिए	कुशादा कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	24	सरशक हो गया

عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ

से	मेरा वज़ीर	मेरे लिए	और बना दे	28	मेरी बात	वह समझ लें	27	मेरी ज़बान	से- की	गिरह

اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

32	मेरे काम में	और शरीक कर दे	31	मेरी कुव्वत	मज़बूत कर उस से	30	मेरा भाई	हारून (अ)	29	ख़ानदान

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ

तू है	बेशक तू	34	कसरत से	और तुझे याद करें	33	कसरत से	हम तेरी तस्बीह करें	ताकि

بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और तहक़ीक़ हम ने एहसान किया	36	ऐ मूसा (अ)	जो तू ने मांगा	तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया	अल्लाह ने फ़रमाया	35	हमें ख़ूब देखता है

عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

38	जो इल्हाम करना था	तेरी वालिदा	तरफ़- को	हम ने इल्हाम किया	जब	37	और भी	एक बार	तुझ पर

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13) बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और क़ाइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14) बेशक क़ियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख़्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15) पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16) और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17) उस ने कहा यह मेरा असा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फ़ाइदे हैं। (18) उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19) पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20) (अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21) अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22) ताकि हम तुझे दिखाएं अपनी बड़ी निशानियों में से। (23) तू फ़िरऔन की तरफ़ जा, बेशक वह सरशक हो गया है। (24) मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27) कि वह मेरी बात समझ लें। (28) और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे ख़ानदान से, (29) मेरा भाई हारून (अ)। (30) उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31) और उसे शरीक कर दे मेरे काम में। (32) ताकि हम कसरत से तेरी तस्बीह करें, (33) और कसरत से तुझे याद करें। (34) बेशक तू हमें ख़ूब देखता है। (35) अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहक़ीक़ तुझे दे दिया गया। (36) और तहक़ीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37) जब हम ने तेरी वालिदा को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था। (38)

وقف لازم

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ

दर्या	फिर उसे डाल देगा	दर्या में	फिर उसे डाल दे	सन्दूक़ में	कि तू उसे डाल

بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً

मुहब्बत	तुझ पर	और मैं ने डाल दी	और उस का दुश्मन	मेरा दुश्मन	उसे ले लेगा	साहिल पर

مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِىْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ

तो वह कह रही थी	तरी बहन	जा रही थी	जब	39	मेरी आँखो पर (मेरे सामने)	ताकि तू पर्वरिश पाए	अपनी तरफ़ से

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

उस की आँख	ताकि ठंडी हो	तेरी माँ	तरफ़	पस हम ने तुझे लौटा दिया	उस की पर्वरिश करे	जो	पर	क्या मैं तुम्हें बताऊँ

وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

और तुझे आज़माया	ग़म से	तो हम ने तुझे नजात दी	एक शख़्स	और तू ने क़त्ल करदिया	और वह ग़म न करे

فُتُوْنًا ۣ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ

वक़्ते मुक़र्रर पर	तू आया	फिर	मदयन वाले	में	कई साल	फिर तू ठहरा रहा	कई आज़माइशें

يٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ

मेरी निशानियों के साथ	और तेरा भाई	तू	तू जा	41	ख़ास अपने लिए	और हम ने तुझे बनाया	40	ऐ मूसा (अ)

وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ

उस को	तुम कहो	43	सरकश हो गया	बेशक वह	फ़िरऔन	तरफ़-पास	तुम दोनों जाओ	42	मेरी याद में	और सुस्ती न करना

قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	ऐ हमारे रब	दोनों बोले	44	वह डर जाए	या	नसीहत पकड़ ले	शायद वह	नर्म बात

اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَاۤ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَاۤ اِنَّنِىْ مَعَكُمَاۤ اَسْمَعُ

मैं सुनता हूँ	तुम्हारे साथ हूँ	बेशक मैं	तुम डरो नहीं	उस ने फ़रमाया	45	वह हद स बढ़े	या	हम पर	कि वह ज़ियादती करे

وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ

बनी इस्राईल	हमारे साथ	पस भेज दे	तेरा रब	बेशक हम दोनों भेजे हुए	और तुम कहो	पस जाओ उस के पास	46	और मैं देखता हूँ

وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ

और सलाम	तेरा रब	से	निशानी के साथ	हम तेरे पास आए हैं	और उन्हें अ़ज़ाब न दे

عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَاۤ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى

पर	अ़ज़ाब	कि	हमारी तरफ़	वहि की गई	बेशक	47	हिदायत	उस ने पैरवी की	जो-जिस	पर

مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْۤ اَعْطٰى

अ़ता की	जिस ने	हमारा रब	उस ने कहा	49	ऐ मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पस कौन	उस ने कहा	48	और मुंह फेरा	जिस ने झुटलाया

كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

51	पहली	जमाअ़तें	हाल	फिर क्या	उस ने कहा	50	रहनुमाई की	फिर	उस की शक्ल ओ सूरत	हर चीज़

कि तू उसे सन्दूक़ में डाल, फिर सन्दूक़ दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ़ से (मख़्लूक़ तुझ से मुहब्बत करे) ताकि तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39)
और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही थी तो (आले फ़िरऔन से) कह रही थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता) बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे? पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि उस की आँखें ठंडी हों, और वह ग़म न करे, और तू ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों से आज़माया, फिर कई साल मदयन वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ) (मुताबिक़ तक़्दीरे इलाही)। (40)
और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिए बनाया। (41)
तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती न करना मेरी याद में। (42)
तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक वह सरकश हो गया है। (43)
तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44)
वह बोले, ऐ हमारे रब! बेशक हम डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती (न) करे या हद से (न) बढ़े। (45)
उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं, बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ। (46)
पस उस के पास जाओ और कहो बेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें अ़ज़ाब न दे, हम तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। (47)
बेशक हमारी तरफ़ वहि की गई है कि अ़ज़ाब है उस पर जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा। (48)
उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस तुम्हारा रब कौन है? (49)
मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल ओ सूरत अ़ता की फिर उस की रहनुमाई की। (50)
उस ने कहा फिर पहली जमाअ़तों का क्या हाल है? (51)

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ فِیْ كِتٰبٍ ۚ لَا یَضِلُّ رَبِّیْ وَلَا یَنْسَی ﴿۵۲﴾

52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न ग़लती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا

राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाईं	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰی ﴿۵۳﴾

53	मुख़्तलिफ़	सब्ज़ी	से	जोड़े (अक़्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान	से	और उतारा

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰی ﴿۵۴﴾ مِنْهَا ع ١١

उस से	54	अक़्ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ

خَلَقْنٰكُمْ وَفِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰی ﴿۵۵﴾ وَلَقَدْ اَرَیْنٰهُ

और हम ने उसे दिखाईं	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया

اٰیٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰی ﴿۵۶﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

हमारी ज़मीन से	कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां

بِسِحْرِكَ یٰمُوْسٰی ﴿۵۷﴾ فَلَنَاْتِیَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَیْنَنَا وَبَیْنَكَ

और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًی ﴿۵۸﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के ख़िलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)

یَوْمُ الزِّیْنَةِ وَاَنْ یُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًی ﴿۵۹﴾ فَتَوَلّٰی فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ

उस ने जमा किया	फ़िरऔन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन

كَیْدَهٗ ثُمَّ اَتٰی ﴿۶۰﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰی وَیْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	ख़राबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया	अपना दाओ

فَیُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰی ﴿۶۱﴾ فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ

अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें

بَیْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰی ﴿۶۲﴾ قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ یُرِیْدٰنِ

यह चाहते हैं	अलबत्ता जादूगर	यह दोनों	तहक़ीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्हों ने छुप कर किया	बाहम

اَنْ یُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَیَذْهَبَا بِطَرِیْقَتِكُمُ الْمُثْلٰی ﴿۶۳﴾

63	अच्छा	तुम्हारा तरीक़ा	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें

فَاَجْمِعُوْا كَیْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْیَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰی ﴿۶۴﴾

64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहक़ीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤی اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِیَ وَاِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰی ﴿۶۵﴾

65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ)	वह बोले

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52) वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाईं उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सबज़ी की मुख़्तलिफ़ अक़्साम निकालीं। (53) तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54) उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55) और हम ने उसे (फ़िरऔन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाईं तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57) पस हम तेरे मुक़ाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58) मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59) फिर लौट गया फ़िरऔन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60) मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61) तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्हों ने छुप कर मशवरा किया। (62) वह कहने लगे तहक़ीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीक़ा ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63) लिहाज़ा अपने दाओ इकटठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहक़ीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64) वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ بَلۡ اَلۡقُوۡا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمۡ وَعِصِيُّهُمۡ يُخَيَّلُ اِلَيۡهِ مِنۡ سِحۡرِهِمۡ

उन का जादू	से	उस के	ख़याल में आईं	और उन की लाठियां	उन की रस्सियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा

اَنَّهَا تَسۡعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوۡجَسَ فِىۡ نَفۡسِهٖ خِيۡفَةً مُّوۡسٰى ﴿٦٧﴾ قُلۡنَا لَا تَخَفۡ

तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ ख़ौफ़	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही हैं	कि वह

اِنَّكَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلۡقِ مَا فِىۡ يَمِيۡنِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوۡا ؕ اِنَّمَا

बेशक	जो उन्हों ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	ग़ालिब	तुम ही	बेशक तुम

صَنَعُوۡا كَيۡدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفۡلِحُ السّٰحِرُ حَيۡثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلۡقِىَ السَّحَرَةُ

जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फ़रेब	उन्हों ने बनाया

سُجَّدًا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوۡنَ وَمُوۡسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنۡتُمۡ لَهٗ قَبۡلَ

पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	सिज्दे में

اَنۡ اٰذَنَ لَـكُمۡ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيۡرُكُمُ الَّذِىۡ عَلَّمَكُمُ السِّحۡرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ

पस मैं ज़रूर काटूँगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	बेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ

اَيۡدِيَكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمۡ فِىۡ جُذُوۡعِ النَّخۡلِ ۫

खजूर के तने	में - पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ़ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ

وَلَتَعۡلَمُنَّ اَيُّنَاۤ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبۡقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡثِرَكَ عَلٰى

पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्हों ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अ़ज़ाब में	ज़ियादा सख़्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे

مَا جَآءَنَا مِنَ الۡبَيِّنٰتِ وَالَّذِىۡ فَطَرَنَا فَاقۡضِ مَاۤ اَنۡتَ قَاضٍ ؕ

करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए

اِنَّمَا تَقۡضِىۡ هٰذِهِ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ؕ ﴿٧٢﴾ اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغۡفِرَ لَنَا

कि वह बख़्शदे हमें	अपने रब पर	बेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं

الثلثة

خَطٰيٰنَا وَمَاۤ اَكۡرَهۡتَنَا عَلَيۡهِ مِنَ السِّحۡرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى ﴿٧٣﴾

73	बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं

اِنَّهٗ مَنۡ يَّاۡتِ رَبَّهٗ مُجۡرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوۡتُ فِيۡهَا

उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो बेशक	मुज्रिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	बेशक वह

وَلَا يَحۡيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنۡ يَّاۡتِهٖ مُؤۡمِنًا قَدۡ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰۤٮِٕكَ

पस यही लोग	अच्छे	उस ने अ़मल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा

لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الۡعُلٰى ۙ ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	हमेशा रहने वाले	बाग़ात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए

ع ٣ ٢٢ ١٢

الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنۡ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रस्सियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के ख़याल में आईं (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही हैं। (66)
तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ ख़ौफ़ महसूस किया। (67)
हम ने कहा तुम डरो नहीं, बेशक तुम ही ग़ालिब रहोगे। (68)
और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है, बेशक (जो कुछ) उन्हों ने बनाया है वह जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)
पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूँगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिब) ख़िलाफ़ से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अ़ज़ाब ज़ियादा सख़्त और देर पा है। (71)
उन्हों ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ़) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)
बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख़्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है। (73)
बेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज्रिम बन कर तो बेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)
और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अ़मल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)
हमेशा रहने वाले बाग़ात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ

पस बना लेना	मेरे बन्दे	कि रातों रात लेजा	मूसा (अ)	तरफ़-को	और तहक़ीक़ हम ने वहि की

لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

77	और न डर	पकड़ना	ख़ौफ़ होगा	न	ख़ुश्क	दर्या में	रास्ता	उन के लिए

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ ط

78	जैसा कि उन को ढांप लिया	दर्या से	उन्हें ढांप लिया	अपने लशकर के साथ	फ़िरऔन	फिर उन का पीछा किया

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ

तहक़ीक़	ऐ बनी इस्राईल	79	और न हिदायत दी	अपनी क़ौम	फ़िरऔन	और गुमराह किया

اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ

दाएं	कोहे तूर	जानिब	और हम ने तुम से वादा किया	तुम्हारा दुश्मन	से	हम ने तुम्हें नजात दी

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	से	तुम खाओ	80	और सलवा	मन्न	तुम पर	और हम ने उतारा

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ

और जो	मेरा ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरेगा	उस में	और न सरकशी करो	जो हम ने तुम्हें दिया

يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ

उस को जो	बड़ा बख़्शने वाला	और बेशक मैं	81	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	मेरा ग़ज़ब	उस पर	उतरा

تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ

तुझे जल्द लाई	और क्या (चीज़)	82	हिदायत पर रहा	फिर	नेक	और उस ने अ़मल किया	और वह ईमान लाया	तौबा की

عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ

मेरे पीछे	यह हैं	वह	उस ने कहा	83	ऐ मूसा (अ)	अपनी क़ौम से

وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا

आज़माइश में डाला	तहक़ीक़	पस हम ने	उस ने कहा	84	ताकि तू राज़ी हो	ऐ मेरे रब	तेरी तरफ़	और मैं ने जल्दी की

قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

पस लौटा	85	सामरी	और उन्हें गुमराह किया	तेरे बाद	तेरी क़ौम

مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ

क्या तुम से वादा नहीं किया था	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	अफ़सोस करता	गुस्से में भरा हुआ	अपनी क़ौम की तरफ़	मूसा (अ)

رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

या तुम ने चाहा	मुद्दत	तुम पर	क्या तवील हो गई	अच्छा वादा	तुम्हारा रब

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾

86	मेरा वादा	फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया	तुम्हारा रब	से-का	ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरे

और तहक़ीक़ हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) ख़ुश्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का ख़ौफ़ होगा और न (ग़र्क़ होने का) डर होगा। **(77)**
फिर फ़िरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (बिलकुल ग़र्क़ कर दिया)। **(78)**
और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। **(79)**
ऐ बनी इस्राईल (औलादे याक़ूब)! तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अ़ता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा "मन्न" और "सलवा"। **(80)**
जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। **(81)**
और बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अ़मल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। **(82)**
और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी क़ौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? **(83)**
उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। **(84)**
उस ने कहा पस हम ने तहक़ीक़ तेरी क़ौम को आज़माइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। **(85)**
पस मूसा (अ) अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तवील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुद्दत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने ख़िलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा ख़िलाफ़ी की)। **(86)**

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ

से-का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बल्कि)	अपने इख़्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने ख़िलाफ़ नहीं किया	वह बोले

زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا

एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया	क़ौम का ज़ेवर

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्हों ने कहा	गाय की आवाज़	उस के लिए	एक क़ालिब

ع ١٣ ١٣
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۬ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

89	और न नफ़ा	नुक़्सान	उन के	और इख़्तियार नहीं रखता	बात (जवाब)	उन की तरफ़	कि वह नहीं फेरता	पस क्या वह नहीं देखते

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ

और बेशक	इस से	तुम आज़माए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से	कहा	और तहक़ीक़

رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ

हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्हों ने कहा	90	मेरी बात	और इताअ़त करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रब

عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ

ऐ हारून (अ)	उस ने कहा	91	मूसा (अ)	हमारी तरफ़	लौटे	यहां तक कि	जमे हुए	उस पर

مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

93	मेरा यह हुक्म	तो क्या तू ने नाफ़रमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब	तुझे किस चीज़ ने रोका

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ

डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा

اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	मेरी बात	और न ख़याल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़्रिक़ा डाल दिया	कि तुम कहोगे

فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ

उस को	उन्हों ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल	पस क्या

فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ

फुसलाया	और इसी तरह	तो मैं ने वह डालदी	रसूल का नक़्शे क़दम	से	एक मुट्ठी	पस मैं ने मुट्ठी भर ली

لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96	मेरा नफ़्स	मुझे

مِسَاسَ ۠ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ

वह जिस	अपने माबूद	तरफ़	और देख	हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक	छूना (हाथ लगाना)

ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख़्तियार से तुम्हारे वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया क़ौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87)

फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्हों ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88)

भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ बात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक़्सान का इख़्तियार रखता है और न नफ़ा का। (89)

और तहक़ीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आज़माए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90)

उन्हों ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटें। (91)

उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफ़रमानी की मेरे हुक्म की? (93)

उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का ख़याल न रखा। (94)

(फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95)

वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्हों ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96)

मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिरेः न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्ते मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से ख़िलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

98	इल्म	हर शै	वसीअ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا

अपने पास से	और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	ख़बरें अहवाल	से	तुझ पर- से	हम बयान करते हैं	इसी तरह

ذِكْرًا ۚ ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ

वह हमेशा रहेंगे	100	(भारी) बोझ	क़ियामत के दिन	लादेगा	तो बेशक वह	उस से	मुंह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत

فِيْهِ ۭ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	क़ियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को

عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ

नहीं	राह	सब से अच्छी	जब कहेगा	वह कहते हैं	वह जो	ख़ूब जानते हैं	हम	103	दस दिन

لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّىْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ ع ١٥ ١٤

105	उड़ा कर	मेरा रब	उन्हें बिखेर देगा	तो कह दें	पहाड़ के बारे में	और वह आप से दर्याफ़्त करेंगे	104	एक दिन	मगर	रहे तुम

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَىِٕذٍ

उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा

يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِىَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ

रहमान के लिए (सामने)	आवाज़े	और पस्त होजाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे

فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَىِٕذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ

इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअत	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ़)	बस तू न सुनेगा

الرَّحْمٰنُ وَرَضِىَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	बात	उस की	और पसन्द करे	रहमान

وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَىِّ الْقَيُّوْمِ ۭ

"क़य्यूम"	सामने "हैय"	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते

وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

मोमिन	और वह	नेकी	से- कोई	करे	और जो	111	ज़ुल्म	बोझ उठाया	जो- जिस	और नामुराद हुआ

فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़्सान का	किसी ज़ुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा

وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शै पर मुहीत है। (98)
उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहक़ीक़ हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (कुरआन) दिया। (99)
जिस ने उस से मुँह फेरा वह बेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100)
वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101)
जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (बे नूर होंगी)। (102)
आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे हो। (103)
वह जो कहते हैं हम ख़ूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ़ एक दिन रहे हो। (104)
और वह आप (स) से पहाड़ो के बारे में दर्याफ़्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105)
फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106)
और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107)
उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, बस तू सिर्फ़ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108)
उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109)
वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का अहाता नहीं कर सकते। (110)
और चेहरे झुक जाएंगे "हैय ओ क़य्यूम" (ज़िन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया। (111)
और जो कोई नेकी करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी ज़ुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़्सान का। (112)
और उसी तरह हम ने उस पर कुरआन नाज़िल किया अ़रबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ

सो बुलन्द ओ बरतर है अल्लाह	बादशाह	सच्चा	और न	जल्दी करो	क़ुरआन में	इस से क़ब्ल	कि

يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ

पूरी की जाए	तुम्हारी तरफ़	उस की वहि	और कहिए	ऐ मेरे रब	ज़ियादा दे मुझे	इल्म	114	और हम ने हुक्म भेजा

ع ٦ ١١ ١٥

اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ

आदम की तरफ़	उस से क़ब्ल	तो वह भूल गया	और हम ने न पाया	उस में	पुख़्ता इरादा	115	और (याद करो) जब हम ने कहा	फ़रिश्तों को

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا

तुम सिज्दा करो	आदम को	तो सब ने सिज्दा किया	सिवाए	इब्लीस	उस ने इन्कार किया	116	पस हम ने कहा	ऐ आदम (अ)	बेशक यह

عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ

दुश्मन	तुम्हारा	और तुम्हारी बीवी का	सो तुम्हें	न निकलवा दे	जन्नत से	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	117	बेशक

لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

तुम्हारे लिए	यह कि न भूके रहो	इस में	और न	नंगे	118	और यह कि तुम	न	प्यासे रहोगे	इस में	और न धूप में रहोगे	119

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

फिर वस्वसा डाला	उस की तरफ़ (दिल में)	शैतान	उस ने कहा	ऐ आदम (अ)	क्या	मैं तेरी रहनुमाई करूं	पर	दरख़्त

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

हमेशगी	और बादशाहत	न पुरानी हो (ज़वाल पज़ीर न हो)	120	पस दोनों ने खाया	उस से	तो ज़ाहिर होगईं	उन पर	उन की शर्मगाहें

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ

और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)	अपने ऊपर	से	जन्नत के पत्ते	और नाफ़रमानी की	आदम (अ)	अपना रब

فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا

तो वह बहक गया	121	फिर	उस को चुन लिया	उस का रब	तवज्जुह फ़रमाई	उस पर	और उसे राह दिखाई	122	फ़रमाया	तुम दोनों उतर जाओ

مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى ۙ۬

यहां से	सब	तुम में से बाज़	बाज़ के	दुश्मन	पस अगर	तुम्हारे पास आए	मेरी तरफ़ से	हिदायत

فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ

तो जिस ने	पैरवी की	मेरी हिदायत	तो न वह गुमराह होगा	और न	बदबख़्त होगा	123	और जिस	मुँह मोड़ा

عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

से	मेरे ज़िक्र-नसीहत	तो बेशक	उस के लिए	गुज़रान	तंग	और हम उसे उठाएंगे	क़ियामत के दिन

اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

अन्धा	124	वह कहेगा	ऐ मेरे रब	तू ने मुझे क्यों उठाया	अन्धा	और मैं तो था	बीना-देखता	125

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

वह फ़रमाएगा	इसी तरह	तेरे पास आईं	हमारी आयात	तो तू ने उन्हें भुला दिया	और इसी तरह	आज	हम तुझे भुला देंगे	126

सो अल्लाह बुलन्द ओ बरतर है सच्चा बादशाह, और तुम क़ुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से क़ब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114)

और हम ने उस से क़ब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115)

और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, उस ने इन्कार किया। (116)

पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! बेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (117)

बेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118)

और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119)

फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूं हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पज़ीर न हो? (120)

पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121)

फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तवज्जुह फ़रमाई (तौबा क़ुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122)

फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123)

और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो बेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124)

वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) बीना (देखता) था। (125)

वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आईं तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ

और अलबत्ता अ़ज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	शदीद तरीन	आख़िरत

مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع ١٣ ١٦

128	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं	क़ौमें-जमाअ़तें

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

129	मुक़र्रर	और मीआ़द	अ़ज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी	एक बात	और अगर न

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

तुलूअ़े आफ़्ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्बीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करें

وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ

दिन	और किनारे	पस तस्बीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के गुरूब	और पहले

لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا

जोड़े	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फैलाना	130	खुश हो जाओ	ताकि तुम

مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ

तेरा रब	और अ़तिया	उस में	ताकि हम उन्हें आज़माएं	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ

उस पर	और क़ाइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर

لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا

और वह कहते हैं	132	अहले तक़्वा के लिए	और अन्जाम	तुझे रिज़्क़ देते हैं	हम	रिज़्क़	हम तुझ से नहीं मांगते

لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ

सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से	कोई निशानी	क्यों नहीं लाते

الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

तो वह कहते	इस से क़ब्ल	किसी अ़ज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले

رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

इस से क़ब्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब

اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ

पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर हैं	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع ٨ ١٧

135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127)
क्या (उस हक़ीक़त ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़ब्ल हम ने कितनी ही जमाअ़तें हलाक कर दीं, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128)
और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीआ़द मुक़र्रर (न होती) तो अ़ज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129)
पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्बीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ़-ए-आफ़ताब से पहले, और गुरुबे आफ़्ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्बीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर ज़ुहर के वक़्त) ताकि तुम खुश हो जाओ। (130)
और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आज़माएं, और तेरे रब का अ़तिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131)
और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर क़ाइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क़ (बल्कि) हम तुझे रिज़्क़ देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक़्वा के लिए है। (132)
और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133)
और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़ब्ल किसी अ़ज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़ब्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134)
आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अ़नक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

آيَاتُهَا ١١٢ ❀ سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ (٢١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7	(21) सूरतुल अम्बिया रसूल (जमा)	आयात 112

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत में	और वह	उन का हिसाब	लोगों के लिए	क़रीब आ गया

مُّعْرِضُوْنَ ۚ ﴿١﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

वह उसे सुनते हैं	मगर	नई	उन के रब से	कोई नसीहत	उन के पास नहीं आती	1	मुँह फेर रहे हैं

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ

और वह लोग जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	सरगोशी	और चुपके चुपके बात की	उन के दिल	ग़फ़्लत में हैं	2	खेलते हैं (खेलते हुए)	और वह

هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾

3	देखते हो	और (जबकि) तुम	जादू	क्या पस तुम आओगे	तुम ही जैसा	एक बशर	मगर	यह	क्या

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۫ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾

4	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	बात	जानता है	मेरा रब	आप ने फ़रमाया

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْيَاْتِنَا

पस वह हमारे पास ले आए	एक शायर	बल्कि वह	उस ने घड़ लिया	बल्कि	ख़्वाब	परेशान	उन्हों ने कहा	बल्कि

بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٥﴾ مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ

हम ने उसे हलाक किया	कोई बस्ती	उन से क़ब्ल	न ईमान लाई	5	पहले	भेजे गए	जैसे	कोई निशानी

اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	हम वहि भेजते थे	मर्द	मगर	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं	6	ईमान लाएंगे	और क्या वह (यह)

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ

और हम ने नहीं बनाए उन के	7	तुम नहीं जानते	तुम हो	अगर	याद रखने वाले	पस पूछ लो

جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ

हम ने सच्चा कर दिया उन से	फिर	8	हमेशा रहने वाले	और वह न थे	खाना	न खाते हों	ऐसे जिस्म

الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	9	हद से बढ़ने वाले	और हम ने हलाक कर दिया	और जिस को हम ने चाहा	पस हम ने बचा लिया उन्हें	वादा

ع ١٠/١

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا

और हम ने कितनी हलाक कर दीं	10	तो क्या तुम समझते नहीं	तुम्हारा ज़िक्र	उस में	एक किताब	तुम्हारी तरफ़

مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾

11	दूसरे	गिरोह - लोग	उन के बाद	और पैदा किए हम ने	ज़ालिम	वह थीं	बस्तियां	से

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त) क़रीब आ गया, और वह ग़फ़्लत में (उस से) मुँह फेर रहे हैं। (1) उन के पास उन के रब (की तरफ़) से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उसे खेलते हुए (बे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2) उन के दिल ग़फ़्लत में हैं और ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी की कि यह (मुहम्मद रसूलुल्लाह) क्या है! मगर एक बशर तुम ही जैसे, क्या (फिर भी) तुम जादू के पास आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3) आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4) बल्कि उन्हों ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब हैं, बल्कि उस ने घड़ लिया है, बल्कि वह तो एक शायर है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे कर) भेजे गए थे। (5) उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियां देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6) और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़ वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7) और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए कि वह खाना न खाते हों, और वह न थे हमेशा रहने वाले। (8) फिर हम ने उन से अपना वादा सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें बचा लिया और जिस को हम ने चाहा, और हम ने हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया। (9) तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10) और हम ने हलाक कर दीं कितनी ही बस्तियां, कि वह ज़ालिम थीं, और हम ने उन के बाद दूसरे गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

फिर जब उन्हों ने हमारे अ़ज़ाब की आहट पाई तो उस वक़्त उस से भागने लगे। (12) तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहां तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13) वह कहने लगे हाए हमारी शामत! बेशक हम ज़ालिम थे। (14) पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहां तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15) और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16) अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17) बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को बातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से ख़राबी है जो तुम बनाते हो। (18) और उसी के लिए है जो आस्मानो में और ज़मीन में है और जो उस के पास हैं वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19) और रात दिन तस्बीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20) क्या उन्हों ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21) अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अर्श अज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22) वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23) क्या उन्हों ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ हैं, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई हैं, अलबत्ता उन में अक्सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूगर्दानी करते हैं। (24)

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا

तुम मत भागो	12	भागने लगे	उस से	उस वक़्त वह	हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने आहट पाई	फिर जब

وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	तुम्हारी पूछ गछ हो	ताकि तुम	और अपने घर (जमा)	उस में	तुम आसाइश दिए गए	जो	तरफ़	और लौट जाओ

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन की पुकार	यह	पस रही	14	ज़ालिम	हम बेशक थे	हाए हमारी शामत	वह कहने लगे

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	और हम ने नहीं पैदा किया	15	बुझी हुई आग	कटी हुई खेती	हम ने उन्हें कर दिया

وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ

तो हम उस को बना लेते	कोई खिलौना	हम बनाएं	कि	अगर हम चाहते	16	खेलते हुए	उन के दरमियान	और जो

مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ

बातिल	पर	हक़ को	हम फेंक मारते हैं	बल्कि	17	करने वाले	अगर हम होते	अपने पास से

فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

18	तुम बनाते हो	उस से जो	ख़राबी	और तुम्हारे लिए	नाबूद हो जाता है	वह	तो उस वक़्त	पस वह उस का भेजा निकाल देता है

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

वह तकब्बुर (सरकशी) नहीं करते	उस के पास	और जो	और ज़मीन में	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और दिन	रात	वह तस्बीह करते हैं	19	और न वह थकते हैं	उस की इबादत	से

لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	उन्हें उठा खड़ा करेंगे	वह	ज़मीन से	कोई माबूद	उन्हों ने बना लिया	क्या	20	वह सुस्ती नहीं करते

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ

अल्लाह	पस पाक है	अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते	अल्लाह	सिवाए	माबूद	उन दोनों में	अगर होते

رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ

और (बल्कि) वह	वह करता है	उस से जो	उस से बाज़ पुर्स नहीं करते	22	वह बयान करते हैं	उस से जो	अ़र्श	रब

يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا

लाओ (पेश करो)	फ़रमा दें	और माबूद	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिए हैं	क्या	23	बाज़ पुर्स किए जाएंगे

بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِىَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِىْ ۭ

जो मुझ से पहले	और किताब	मेरे साथ	जो	यह किताब	अपनी दलील

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	रूगर्दानी करते हैं	पस वह	हक़	नहीं जानते	उन में अक्सर	बल्कि (अलबत्ता)

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا نُوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِ اَنَّهٗ

कि बेशक वह	उस की तरफ़	हम ने वहि भेजी	मगर	कोई रसूल	आप से पहले	और नहीं भेजा हम ने

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدُوۡنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحۡمٰنُ وَلَدًا

एक बेटा	अल्लाह	बना लिया	और उन्हों ने कहा	25	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा	नहीं कोई माबूद

سُبۡحٰنَهٗ ؕ بَلۡ عِبَادٌ مُّكۡرَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسۡبِقُوۡنَهٗ بِالۡقَوۡلِ وَهُمۡ

और वह	बात में	वह उस से सबक़त नहीं करते	26	मुअ़ज़्ज़ज़	बन्दे	बल्कि	वह पाक है

بِاَمۡرِهٖ يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٢٧﴾ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ

और जो उन के पीछे	उन के हाथों में (सामने)	जो	वह जानता है	27	अ़मल करते	उस के हुक्म पर

وَلَا يَشۡفَعُوۡنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارۡتَضٰى وَهُمۡ مِّنۡ خَشۡيَتِهٖ مُشۡفِقُوۡنَ ﴿٢٨﴾

28	डरते रहते हैं	उस के ख़ौफ़ से	और वह	उस की रज़ा हो	जिस के लिए	मगर	और वह सिफ़ारिश नहीं करते

وَمَنۡ يَّقُلۡ مِنۡهُمۡ اِنِّىۡۤ اِلٰهٌ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَذٰلِكَ نَجۡزِيۡهِ جَهَنَّمَ ؕ

जहन्नम	हम उसे सज़ा देंगे	पस वह शख़्स	उस के सिवा	माबूद	बेशक मैं	उन में से	कहे	और जो

ع ١٩ ٢ ٢

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٢٩﴾ اَوَلَمۡ يَرَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّ

कि	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	क्या नहीं देखा	29	ज़ालिम (जमा)	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ كَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ

पानी से	और हम ने किया	पस हम ने दोनों को खोल दिया	बन्द	दोनों थे	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

كُلَّ شَىۡءٍ حَىٍّ ؕ اَفَلَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلۡنَا فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ

पहाड़	ज़मीन में	और हम ने बनाए	30	क्या पस वह ईमान नहीं लाते हैं	ज़िन्दा	हर शै

اَنۡ تَمِيۡدَ بِهِمۡ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمۡ يَهۡتَدُوۡنَ ﴿٣١﴾

31	राह पाएं	ताकि वह	रास्ते	कुशादा	उस में	और हम ने बनाए	कि झुक न पड़े उन के साथ

وَجَعَلۡنَا السَّمَآءَ سَقۡفًا مَّحۡفُوۡظًا ۖۚ وَّهُمۡ عَنۡ اٰيٰتِهَا مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٣٢﴾

32	रूगर्दानी करते हैं	उस की निशानियां	से	और वह	महफ़ूज़	एक छत	आस्मान	और हम ने बनाए

وَهُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ

सब	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	पैदा किया	जिस ने	और वह

فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ ؕ

हमेशा रहना	आप (स) से क़ब्ल	किसी बशर के लिए	और हम ने नहीं किया	33	तैर रहे हैं	दाइरा (मदार) में

اَفَا۟ئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ

चखना	हर जी	34	हमेशा रहेंगे	पस वह	आप इन्तिक़ाल कर गए	क्या पस अगर

الۡمَوۡتِ ؕ وَنَبۡلُوۡكُمۡ بِالشَّرِّ وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً ؕ وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٣٥﴾

35	तुम लौट कर आओगे	और हमारी ही तरफ़	आज़माइश	और भलाई	बुराई से	और हम तुम्हें मुब्तला करेंगे	मौत

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ़ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25) उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। (26) वह बात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक्म पर अ़मल करते हैं। (27) वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रज़ा हो, और वह उस के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं। (28) और उन में से जो कोई यह कहे कि बेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख़्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (29) क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शै को ज़िन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31) और हम ने बनाया आस्मान एक महफ़ूज़ छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32) और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33) और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिक़ाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34) हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश में मुब्तला करेंगे, और हमारी तरफ़ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّتَّخِذُوۡنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

क्या यह है	एक हँसी मज़ाक़	मगर (सिर्फ़)	ठहराते तुम्हें	नहीं	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम्हें देखते हैं	और जब

الَّذِىۡ يَذۡكُرُ اٰلِهَتَكُمۡ ۚ وَهُمۡ بِذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۶﴾

36	मुन्किर (जमा)	वह	रहमान (अल्लाह)	ज़िक्र से	और वह	तुम्हारे माबूद	याद करता है	वह जो

خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيۡكُمۡ اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ﴿۳۷﴾

37	तुम जल्दी न करो	अपनी निशानियां	अ़नक़रीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें	जल्दी (जल्द बाज़)	से	इन्सान	पैदा किया गया

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۳۸﴾ لَوۡ يَعۡلَمُ

काश वह जान लेते	38	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا حِيۡنَ لَا يَكُفُّوۡنَ عَنۡ وُّجُوۡهِهِمُ النَّارَ وَلَا

और न	आग	अपने चेहरे	से	वह न रोक सकेंगे	वह घड़ी	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنۡ ظُهُوۡرِهِمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ بَلۡ تَاۡتِيۡهِمۡ بَغۡتَةً

अचानक	आएगी उन पर	बल्कि	39	मदद किए जाएंगे	और न वह	उन की पीठ (जमा)	से

فَتَبۡهَتُهُمۡ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ رَدَّهَا وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۴۰﴾

40	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	उस को लौटाना	पस न उन्हें सकत होगी	तो हैरान कर देगी उन्हें

وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيۡنَ سَخِرُوۡا

मज़ाक़ उड़ाया	उन को जिन्हों ने	आ घेरा (पकड़ लिया)	आप (स) से पहले	रसूलों की	और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाया गई

مِنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۴۱﴾ ع قُلۡ مَنۡ يَّكۡلَـُٔكُمۡ بِالَّيۡلِ ٣ ع ١٢ ٣

रात में	तुम्हारी निगहबानी करता है	कौन	फ़रमा दें	41	मज़ाक़ उड़ाते थे	उस के साथ (का)	थे	जो	उन में से

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحۡمٰنِ ؕ بَلۡ هُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ رَبِّهِمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۴۲﴾

42	रूगर्दानी करते हैं	अपना रब	याद से	बल्कि वह	रहमान से	और दिन

اَمۡ لَهُمۡ اٰلِهَةٌ تَمۡنَعُهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِنَا ؕ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَ

मदद	वह सकत नहीं रखते	हमारे सिवा	उन्हें बचाते हैं	कुछ माबूद	उन के लिए	क्या

اَنۡفُسِهِمۡ وَلَا هُمۡ مِّنَّا يُصۡحَبُوۡنَ ﴿۴۳﴾ بَلۡ مَتَّعۡنَا هٰۤؤُلَآءِ

उन को	हम ने साज़ ओ सामान दिया	बल्कि	43	वह साथी पाएंगे	हम से	और न वह	अपने आप

وَاٰبَآءَهُمۡ حَتّٰى طَالَ عَلَيۡهِمُ الۡعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوۡنَ اَنَّا نَاۡتِى

कि हम आ रहे हैं	क्या पस वह नहीं देखते	उम्र	उन पर- की	दराज़ हो गई	यहां तक कि	और उन के बाप दादा को

الۡاَرۡضَ نَـنۡقُصُهَا مِنۡ اَطۡرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الۡغٰلِبُوۡنَ ﴿۴۴﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ

इस के सिवा नहीं कि	फ़रमा दें	44	ग़ालिब आने वाले	क्या फिर वह	उस के किनारे (जमा)	से	उस को घटाते हुए	ज़मीन

اُنۡذِرُكُمۡ بِالۡوَحۡىِ ۖ وَلَا يَسۡمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنۡذَرُوۡنَ ﴿۴۵﴾

45	उन्हें डराया जाए	भी	जब	पुकार	बहरे	और नहीं सुनते हैं	वहि से	मैं तुम्हें डराता हूँ

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे माबूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुन्किर हैं। (36)
इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अ़नक़रीब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37)
और वह कहते हैं कि यह वादाए (अ़ज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38)
काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख़ की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39)
बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40)
और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्हों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41)
फ़रमा दें, रहमान (के अ़ज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42)
क्या हमारे सिवा उन के कुछ और माबूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43)
बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ ओ सामान दिया यहांतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुन्किरों पर तंग करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44)
आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَلَـئِـنْ مَّسَّـتْـهُمْ نَـفْـحَـةٌ مِّـنْ عَـذَابِ رَبِّـكَ لَـيَـقُـوْلُـنَّ يٰـوَيْـلَـنَـآ

हाए हमारी शामत	वह ज़रूर कहेंगे	तेरा रब	अ़ज़ाब से	एक लपट	उन्हें छुए	और अगर

اِنَّـا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَـضَـعُ الْـمَـوَازِيْـنَ الْـقِـسْـطَ لِـيَـوْمِ الْقِيٰمَةِ

क़ियामत	दिन	इंसाफ़	तराज़ू-मीज़ान	और हम रखेंगे (क़ाइम करेंगे)	46	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे

فَـلَا تُـظْـلَـمُ نَـفْـسٌ شَـيْـــًٔـا ؕ وَاِنْ كَانَ مِـثْـقَـالَ حَـبَّـةٍ

एक दाना	वज़्न बराबर	होगा	और अगर	कुछ भी	किसी शख़्स पर	तो न ज़ुल्म किया जाएगा

مِّـنْ خَـرْدَلٍ اَتَـيْـنَـا بِـهَا ؕ وَكَـفٰى بِـنَـا حٰـسِـبِـيْـنَ ﴿٤٧﴾ وَلَـقَـدْ اٰتَـيْـنَا

और अलबत्ता हम ने अ़ता की	47	हिसाब लेने वाले	हम	और काफ़ी	हम उसे ले आएंगे	राई से - का

مُـوْسٰـى وَهٰـــرُوْنَ الْـفُـرْقَـانَ وَضِـيَـــآءً وَّذِكْـــرًا لِّـلْـمُـتَّـقِـيْـنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और रोशनी	फ़र्क़ करने वाली (किताब)	और हारून (अ)	मूसा (अ)

الَّـذِيْـنَ يَـخْـشَـوْنَ رَبَّـهُـمْ بِـالْـغَـيْـبِ وَهُـــمْ مِّـــنَ الـسَّـاعَـةِ

क़ियामत	से	और वह	बग़ैर देखे	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

مُـشْـفِـقُـوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰـــذَا ذِكْـــرٌ مُّـبٰـرَكٌ اَنْـزَلْـنٰـهُ ؕ اَفَـاَنْـتُـمْ لَـهٗ

इस के	तो क्या तुम	हम ने इसे नाज़िल किया	बाबरकत	नसीहत	और यह	49	ख़ौफ़ खाते हैं

الربع ع ٤ ٩ ٤

مُـنْـكِـرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَلَـقَـدْ اٰتَـيْـنَـآ اِبْـرٰهِـيْـمَ رُشْـــدَهٗ مِـــنْ قَـبْـلُ

उस से क़ब्ल	हिदायत याबी (फ़हमे सलीम)	इब्राहीम (अ)	और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने दी	50	मुन्किर (जमा)

وَكُـنَّـا بِـهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَـالَ لِاَبِـيْـهِ وَقَـوْمِـهٖ مَا هٰـذِهِ التَّمَاثِيْلُ

मूर्तियाँ	क्या है यह	और अपनी क़ौम	अपने बाप से	जब उस ने कहा	51	जानने वाले	उस के	और हम थे

الَّـتِـيْٓ اَنْـتُـمْ لَـهَـا عٰـكِـفُـوْنَ ﴿٥٢﴾ قَـالُـوْا وَجَـدْنَـآ اٰبَـآءَنَـا لَـهَـا

उन के लिए	अपने बाप दादा को	हम ने पाया	वह बोले	52	जमे बैठे हो	उन के लिए	तुम	जो कि

عٰـبِـدِيْـنَ ﴿٥٣﴾ قَـالَ لَـقَـدْ كُـنْـتُـمْ اَنْـتُـمْ وَاٰبَـآؤُكُـمْ فِـىْ ضَـلٰلٍ

गुमराही में	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तहक़ीक़ तुम रहे	उस ने कहा	53	पूजा करने वाले

مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَـنَـا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْـتَ مِنَ الـلّٰـعِـبِـيْـنَ ﴿٥٥﴾

55	खेलने वाले (दिल लगी करने वाले)	से	तुम	या	हक़ को	क्या तुम लाए हो हमारे पास	वह बोले	54	सरीह

قَـــالَ بَـــلْ رَّبُّـــكُـــمْ رَبُّ الـــسَّـــمٰـــوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّـــذِىْ

वह जिस ने	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	रब (मालिक)	तुम्हारा रब	बल्कि	उस ने कहा

فَـطَـرَهُـنَّ ۖ وَاَنَـــا عَـــلٰى ذٰلِـكُـمْ مِّـــنَ الـشّٰـهِـدِيْـنَ ﴿٥٦﴾

56	गवाह (जमा)	से	इस बात पर	और मैं	उन्हें पैदा किया

وَتَـاللّٰهِ لَاَكِـيْـدَنَّ اَصْـنَـامَـكُـمْ بَـعْـدَ اَنْ تُـوَلُّـوْا مُـدْبِـرِيْـنَ ﴿٥٧﴾

57	पीठ फेर कर	तुम जाओगे	कि	बाद	तुम्हारे बुत (जमा)	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा	और अल्लाह की क़सम

और अगर उन्हें तेरे रब के अ़ज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम ज़ालिम थे। (46) और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अ़दल क़ाइम करेंगे तो किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अ़मल) राई के एक दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ले आएंगे, और काफ़ी हैं हम हिसाब लेने वाले। (47) और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) को (हक़ ओ बातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अ़ता की, और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48) जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से ख़ौफ़ खाते हैं। (49) और यह बाबरकत नसीहत है (जो) हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम उस के मुन्किर हो? (50) और तहक़ीक़ अलबत्ता हम ने उस से क़ब्ल इब्राहीम (अ) को फ़हम सलिम दी थी और हम उस के जानने वाले थे। (51) जब उस ने कहा अपने बाप से और अपनी क़ौम से, क्या हैं यह मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे हो। (52) वह बोले हम ने पाया अपने बाप दादा को उन की पूजा करते। (53) उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहक़ीक़ तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह गुमराही में रहे। (54) वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो? या दिल लगी करने वालों में से हो। (55) उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब मालिक है आस्मानों और ज़मीन का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया और उस बात पर मैं गवाहों में से (गवाह) हूँ। (56) और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ٥٨

58	रुजूअ़ करें	उस की तरफ़	ताकि वह	उन का	एक बड़ा	सिवाए	रेज़ा रेज़ा	उस ने उन्हें कर डाला

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ٥٩

59	ज़ालिम (जमा)	से	बेशक वह	यह हमारे माबूदों के साथ	किया	कौन - किस	कहने लगे

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ٦٠ قَالُوْا

बोले	60	इब्राहीम (अ)	उस को	कहा जाता है	वह उन के बारे में बातें करता है	एक जवान	हम ने सुना है	वह बोले

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ٦١

61	वह देखें	ताकि वह	लोग	आँखें	सामने	उसे	तुम ले आओ

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ٦٢ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ

उस ने किया है	बल्कि	उस ने कहा	62	ऐ इब्राहीम (अ)	हमारे माबूदों के साथ	यह	तू ने किया	क्या तू	उन्हों ने कहा

كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْئَلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ٦٣ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى

तरफ़	पस वह लौटे (सोच में पड़ गए)	63	वह बोलते हैं	अगर	तो उन से पूछ लो	यह	उन का बड़ा

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ٦٤ ثُمَّ نُكِسُوْا

फिर वह औन्धे किए गए	64	ज़ालिम (जमा)	तुम ही	बेशक तुम	फिर उन्हों ने कहा	अपने दिल

عَلٰى رُءُوْسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ٦٥ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

क्या फिर तुम परस्तिश करते हो	उस ने कहा	65	बोलते हैं	यह	नहीं	तू खूब जानता है	अपने सरों पर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ٦٦ اُفٍّ

तुफ़	66	और न नुक़सान पहुँचा सके तुम्हें	कुछ	न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सके	जा	अल्लाह के सिवा

لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ٦٧

67	फिर तुम नहीं समझते	क्या	अल्लाह के सिवा	परस्तिश करते हो तुम	और उस पर जिसे	तुम पर

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ٦٨

68	तुम हो करने वाले (कुछ करना है)	अगर	अपने माबूदों	और तुम मदद करो	तुम इसे जला डालो	वह कहने लगे

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ٦٩ وَاَرَادُوْا

और उन्हों ने इरादा किया	69	इब्राहीम (अ)	पर	और सलामती	ठंडी	ऐ आग तू हो जा	हम ने हुक्म दिया

بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ٧٠ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

और लूत (अ)	और हम ने उसे बचा लिया	70	बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियांकार)	तो हम ने उन्हें कर दिया	फ़रेब	उस के साथ

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ٧١ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	71	जहानों के लिए	उस में	वह जिस में हम ने बरकत रखी	सर ज़मीन	तरफ़

اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ٧٢

72	सालेह (नेकोकार)	हम ने बनाया	और सब	पोता	और याक़ूब (अ)	इसहाक़ (अ)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा
सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि
वह उस की तरफ़ रुजूअ़ करें। (58)
कहने लगे कौन है जिस ने हमारे
माबूदों के साथ यह किया? बेशक
वह तो ज़ालिमों में से है। (59)
बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन
(बुतों) के बारे में बातें करता है, उस
को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60)
बोले तो उसे लोगों की आँखों के
सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61)
उन्हों ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)!
क्या यह तू ने हमारे माबूदों के
साथ किया है? (62)
उस ने कहा बल्कि यह उन के बड़े
ने किया है तो उन (ही) से पूछ लो
अगर वह बोलते हैं। (63)
पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों
में, फिर उन्हों ने कहा बेशक तुम ही
ज़ालिम हो (नाहक़ पर हो)। (64)
फिर वह अपने सरों पर औन्धे किए गए
(उन की मत पलट गयी), तू खूब
जानता है कि यह नहीं बोलते। (65)
उस ने कहा क्या तुम फिर अल्लाह
के सिवा उन की परस्तिश करते हो?
जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचा सकें
और न नुक़सान पहुँचा सकें। (66)
तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों
पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा
परस्तिश करते हो? क्या तुम फिर
भी नहीं समझते? (67)
वह कहने लगे उसे जला डालो और
अपने माबूदों की मदद करो अगर
तुम्हें कुछ करना है। (68)
हम ने हुक्म दिया, ऐ आग!
तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा
और सलामती। (69)
और उन्हों ने उस के साथ फ़रेब
का इरादा किया तो हम ने उन्हें
कर दिया इन्तिहाई ज़ियांकार। (70)
और हम ने उसे और लूत (अ) को
उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर)
बचा लिया, जिस में हम ने जहानों
के लिए बरकत रखी। (71)
और उस को अ़ता किया इसहाक़ (अ)
(बेटा), और याक़ूब (अ) पोता, और हम
ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ

नेक काम करना	उन की तरफ़	और हम ने वहि भेजी	हमारे हुक्म से	वह हिदायत देते थे	(जमा) इमाम (पेश्वा)	और हम ने उन्हें बनाया

وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۙ ﴿٧٣﴾

73	इबादत करने वाले	हमारे ही	और वह थे	ज़कात	और अदा करना	नमाज़	और क़ाइम करना

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ

जो	बस्ती से	और हम ने उसे बचा लिया	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे दिया	और लूत (अ)

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ ﴿٧٤﴾

74	बदकार	बुरे लोग	थे	बेशक वह	गन्दे काम	करती थी

ع ٢٥ وَاَدْخَلْنٰهُ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ ۧ وَنُوْحًا

और नूह (अ)	75	(जमा) सालेह (नेकोकार)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उसे

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

बेचैनी	से	और उस के लोग	फिर हम ने उसे नजात दी	उस की	तो हम ने क़ुबूल कर ली	उस से पहले	जब पुकारा

الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ ۚ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ

हमारी आयातों को	झुटलाया	जिन्हों ने	लोग	से- पर	और हम ने उस को मदद दी	76	बड़ी

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ

और दाऊद (अ)	77	सब	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	बुरे	लोग	वह थे	बेशक वह

وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ

उस में	रात में चर गईं	जब	खेती के बारे में	फ़ैस्ला कर रहे थे	जब	और सुलेमान (अ)

غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۙ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ

सुलेमान (अ)	पस हम ने उस को फ़हम दी	78	मौजूद	उनके फ़ैसले (के वक़्त)	और हम थे	एक क़ौम की बकरियां

وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

पहाड़ (जमा)	दाऊद (अ)	साथ- का	और हम ने मुसख़्ख़र कर दिया	और इल्म	हुक्म	हम ने दिया	और हर एक

يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ

सन्अ़त (कारीगरी)	और हम ने उसे सिखाई	79	करने वाले	और हम थे	और परिन्दे	वह तस्बीह करते थे

لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	तुम्हारी लड़ाई	से	ताकि वह तुम्हें बचाए	तुम्हारे लिए	एक लिबास

شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖٓ

उस के हुक्म से	चलती	तेज़ चलने वाली	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	80	शुक्र करने वाले

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

81	जानने वाले	हर शै	और हम हैं	उस में	जिस को हम ने बरकत दी है	सरज़मीन	तरफ़

और हम ने उन्हें पेश्वा बनाया, वह हमारे हुक्म से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी नेक काम करने की, और नमाज़ क़ाइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73)

और हम ने लूत (अ) को हुक्म दिया (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग। (74)

और हम ने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75)

और (याद करो) जब उस से क़ब्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ क़ुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को नजात दी बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से। (76)

और हम ने उस को मदद दी उन लोगों पर जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (77)

और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक क़ौम की बकरियां चर गईं, और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे। (78)

पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फ़ैसले की) फ़हम दी और हर एक को हम ने हुक्म (हिक्मत ओ नबुव्वत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्ख़र कर दिया, वह तस्बीह करते थे और परिन्दे (भी मुसख़्ख़र किए) और करने वाले हम थे। (79)

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80)

और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्ख़र की) वह उस के हुक्म से उस सरज़मीन में (शाम) की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरकत दी, और हम हर शै को जानने वाले हैं। (81)

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

काम	और करते थे	उस के लिए	जो ग़ोता लगाते थे	शैतान (जमा)	और से

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ﴿۸۲﴾ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى

जब उस ने पुकारा	और अय्यूब (अ)	82	संभालने वाले	उन के लिए	और हम थे	उस के सिवा

رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ﴿۸۳﴾

83	रहम करने वाले	सब से बड़ा रहम करनेवाला	और तू	तक्लीफ़	मुझे पहुँची है	कि मैं	अपना रब

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ

उस के घर वाले	और हम ने दिए उसे	तक्लीफ़	उस को	जो	पस हम ने खोल दी	उस की	तो हम ने कुबूल कर ली

وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾

84	इबादत करने वालों के लिए	और नसीहत	अपने पास	से	रहमत फ़रमा कर	उन के साथ	और उन जैसे

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿۸۵﴾

85	सब्र करने वाले	से	यह सब	और ज़ुल किफ़्ल	और इदरीस (अ)	और इस्माईल (अ)

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾

86	नेकोकार (जमा)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उन्हें

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ

उस पर	कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे	पस गुमान किया उस ने	गुस्से में भर कर	चला गया	जब	और ज़ुन नून (मच्छली वाला)

فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ

तू पाक है	तेरे सिवा	कोई माबूद	कि नहीं	अन्धेरों में	तो उस ने पुकारा

اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ﴿۸۷﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ

और हम ने उसे नजात दी	उस की	फिर हम ने कुबूल कर ली	87	ज़ालिम (जमा)	से	मैं था	बेशक मैं

مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُــْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَزَكَرِيَّاۤ

और ज़करिया (अ)	88	मोमिन (जमा)	हम नजात देते हैं	और इसी तरह	ग़म से

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ

और तू	अकेला	न छोड़ मुझे	ऐ मेरे रब	अपना रब	जब उस ने पुकारा

خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۚ﴿۸۹﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا

और हम ने दुरुस्त कर दिया	यहिया (अ)	उसे	और हम ने अ़ता किया	उस की	फिर हम ने कुबूल कर ली	89	वारिस (जमा)	बेहतर

لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

नेक काम (जमा)	में	वह जल्दी करते थे	बेशक वह सब	उस की बीवी	उस के लिए

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿۹۰﴾

90	आजिज़ी करने वाले	हमारे लिए (सामने)	और वह थे	और ख़ौफ़	उम्मीद	और वह हमें पुकारते थे

और शैतानों में से (मुसख़्ख़र किए) जो ग़ोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। **(82)**
और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तक्लीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। **(83)**
तो हम ने कुबूल कर ली उस की (दुआ़), पस उसे जो तक्लीफ़ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। **(84)**
और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और ज़ुलकिफ़्ल (अ), यह सब सब्र करने वालों में से थे। **(85)**
और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह नेकोकारों में से थे। **(86)**
और (याद करो) जब मछली वाले (यूनुस अ अपनी क़ौम से) गुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरों में पुकारा कि
(ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों (कुसूरवारों) में से था। **(87)**
फिर हम ने उस की (दुआ़) कुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। **(88)**
और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। **(89)**
फिर हम ने उस की (दुआ़) कुबूल कर ली और हम ने उसे अ़ता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की बीवी को दुरुस्त (औलाद के क़ाबिल) कर दिया
बेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। **(90)**

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

अपनी रूह	उस में	फिर हम ने फूंक दी	अपनी शर्मगाह (इफ़्फ़त की)	उस ने हिफ़ाज़त की	और (औरत) जो

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह है	बेशक	91	जहानों के लिए	निशानी	और उस का बेटा	और हम ने उसे बनाया

اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ

अपना काम (दीन)	और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्हों ने	92	पस मेरी इबादत करो	तुम्हारा रब	और मैं	एक (यकता)	उम्मत

ع ١٨ ٦ ٦

بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ

नेक काम	कुछ	करे	पस जो	93	रुजूअ़ करने वाले	हमारी तरफ़	सब	बाहम

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

94	लिख लेने वाले	उस के	और बेशक हम	उस की कोशिश	तो नाक़द्री (अकारत) नहीं	ईमान वाला	और वह

وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓي اِذَا

जब	यहां तक कि	95	लौट कर नहीं आएंगे	कि वह	जिसे हम ने हलाक कर दिया	बस्ती पर	और हराम

فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	फिसलते (दौड़ते) आएंगे	बुलन्दी (टीले)	हर	से	और वह	और माजूज	याजूज	खोल दिए जाएंगे

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ

आँखें	ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी	वह	तो अचानक	सच्चा	वादा	और क़रीब आजाएगा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا

बल्कि हम थे	इस से	ग़फ़लत में	तहक़ीक़ हम थे	हाए हमारी शामत	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	से	तुम परस्तिश करते हो	और जो	बेशक तुम	97	ज़ालिम (जमा)

حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ

यह	अगर होते	98	दाख़िल होने वाले	तुम उस में	जहन्नम	ईंधन

اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا

वहां	उनके लिए	99	सदा रहेंगे	उस में	और सब	उस में दाख़िल न होते	माबूद

زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ

पहले ठहर चुकी	जो लोग	बेशक	100	(कुछ) न सुन सकेंगे	उस में	और वह	चीख़ ओ पुकार

لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰۗىِٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

वह न सुनेंगे	101	दूर रखे जाएंगे	उस से	वह लोग	भलाई	हमारी (तरफ़) से	उन के लिए

حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾ ۚ

102	वह हमेशा रहेंगे	उन के दिल	जो चाहेंगे	में	और वह	उस की आहट

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91)

बेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूं, पस मेरी इबादत करो। (92)

और उन्हों ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93)

पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और बेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94)

उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95)

यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96)

और सच्चा वादा क़रीब आजाएगा तो अचानक मुन्किरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहक़ीक़ हम इस से ग़फ़लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97)

बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहन्नम का ईंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98)

अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99)

उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100)

बेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101)

वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ

तुम्हारा दिन	यह है	फ़रिश्ते	और लेने आएंगे उन्हें	बड़ी	घबराहट	ग़मगीन न करेगी उन्हें

الَّذِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ

तुमार	जैसे लपेटा जाता है	आस्मान	हम लपेट लेंगे	जिस दिन	103	तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था)	वह जो

لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

बेशक हम हैं	हम पर	वादा	हम उसे लौटा देंगे	पैदाइश	पहली	जैसे हम ने इब्तिदा की	तहरीर का काग़ज़

فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

कि	नसीहत के बाद	ज़बूर में	और तहक़ीक़ हम ने लिखा	104	(पूरा) करने वाले

الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا

एक बड़ी ख़बर	इस में	बेशक	105	नेक (जमा)	मेरे बन्दे	उस के वारिस	ज़मीन

لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

107	तमाम जहानों के लिए	रहमत	मगर	हम ने भेजा आप (स) को	और नहीं	106	इबादत गुज़ार (जमा)	लोगों के लिए

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

तुम	पस क्या	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	कि बस	मेरी तरफ़	वहि की गई	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْۤ

जानता मैं	और नहीं	बराबरी पर	मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया	तो कह दो	वह रूगर्दानी करें	फिर अगर	108	हुक्म बरदार (जमा)

اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ

से कही गयी बात	बुलंद आवाज़	वह जानता है	बेशक वह	109	जो तुम से वादा किया गया	या दूर	क्या क़रीब?

وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾ وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ

तुम्हारे लिए	आज़माइश	शायद वह	और मैं नहीं जानता	110	जो तुम छुपाते हो	और जानता है

وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا

और हमारा रब	हक़ के साथ	तू फ़ैसला फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस (नबी) ने कहा	111	एक मुद्दत तक	और फ़ाइदा पहुँचाना

الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ع ع ١٩ ٧ النصف

112	जो तुम बयान करते हो	पर	जिस से मदद तलब की जाती है	निहायत मेहरबान

اٰيَاتُهَا ٧٨ ❀ سُوْرَةُ الْحَجِّ (٢٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10 (22) सूरतुल हज आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾

1	बड़ी भारी	चीज़	क़ियामत	ज़लज़ला	बेशक	अपना रब	डरो	ऐ लोगो!

उन्हें ग़मगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। (103)

जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के काग़ज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, बेशक हम पूरा करने वाले हैं। (104)

और तहक़ीक़ हम ने ज़बूर में नसीहत के बाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। (105)

बेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (बशारत) एक बड़ी ख़बर है। (106)

और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम जहानों के लिए रहमत। (107)

आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? (108)

फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यकसां तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? (109)

बेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई बात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। (110)

और मैं नहीं जानता शायद (अ़ज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। (111)

नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। (112)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। (1)

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ

वह दूध पिलाती है	जिस को	हर दूध पिलाने वाली	भूल जाएगी	तुम देखोगे उसे	जिस दिन

وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى

नशे में	लोग	और तू देखेगा	अपना हम्ल	हर हम्ल वाली (हामिला)	और गिरा देगी

وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ

और कुछ लोग जो	2	सख़्त	अल्लाह का अ़ज़ाब	और लेकिन	नशे में	और हालांकि नहीं

مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ

हर शैतान	और पैरवी करते हैं	बे जाने बूझे	अल्लाह के (बारे) में	झगड़ा करते हैं	जो

مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

उसे गुमराह करेगा	तो वह बेशक	जो दोस्ती करेगा उस से	कि वह	उस पर (उस की) निस्बत लिख दिया गया	3	सरकश

وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	4	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	और राह दिखाएगा उसे

فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ

फिर	मिट्टी से	हम ने पैदा किया तुम्हें	तो बेशक हम	जी उठना	से	शक में

مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ

और बग़ैर सूरत बनी	सूरत बनी हुई	गोश्त की बोटी से	फिर	जमे हुए खून से	फिर	नुत्फ़े से

لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۭ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى

तक	जो हम चाहें	रहमों में	और हम ठहराते हैं	तुम्हारे लिए	ताकि हम ज़ाहिर कर दें

اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ

अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा	हम निकालते हैं तुम्हें	फिर	एक मुद्दते मुक़र्ररा

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ

निकम्मी उम्र	तक	पहुँचता है	कोई	और तुम में से	फ़ौत हो जाता है	कोई	और तुम में से

لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ وَتَرَى الْاَرْضَ

ज़मीन	और तू देखता है	कुछ	इल्म (जानना)	बाद	ताकि वह न जाने

هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ

और उभर आई	वह तरोताज़ा हो गई	पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	ख़ुश्क पड़ी हुई

وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	इस लिए कि	यह	5	रौनक़दार	हर जोड़ा	से	और उगा लाई

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

6	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और यह कि वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और यह कि वह	वही बरहक़

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हम्ल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसबत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह बेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रहमों में से जो चाहें एक मुद्दत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे (की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तबई से क़ब्ल) फ़ौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है ख़ुश्क पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताज़ा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनक़दार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है, और यह कि वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (6)

और यह कि क़ियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो क़ब्रों में हैं। (7) और लोगों में कोई (ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। (8) (तकब्बुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रुसवाई है और हम उसे रोज़े क़ियामत जलती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे। (9) यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (10) और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इत्मिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आज़माइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आख़िरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। (11) वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़्सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। (12) वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा क़रीब है, बेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। (13) जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए बेशक अल्लाह उन्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (14) जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आख़िरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे क्या उस की यह तदबीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। (15)

وَاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ

जो	उठाएगा	अल्लाह	और यह कि	उस में	नहीं शक	आने वाली	घड़ी (क़ियामत)	और यह कि

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

बग़ैर किसी इल्म	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से	7	क़ब्रों में

وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ

से	ताकि गुमराह करे	अपनी गर्दन	मोड़े हुए	8	रोशन	और बग़ैर किसी किताब	और बग़ैर किसी दलील

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

रोज़े क़ियामत	और हम उसे चखाएंगे	रुसवाई	दुनिया में	उस के लिए	अल्लाह	रास्ता

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ

नहीं	और यह कि अल्लाह	तेरे हाथ	आगे भेजा	यह उस सबब जो	9	जलती आग	अ़ज़ाब

بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ ع ١٠ / ٨

एक किनारा	पर	अल्लाह	बन्दगी करता है	जो	लोग	और से	10	अपने बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला

فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ انْقَلَبَ عَلٰى

पर-बल	तो पलट गया	कोई आज़माइश	उसे पहुँची	और अगर	उस से	तो इत्मिनान पा लिया	भलाई	उसे पहुँच गई	फिर अगर

وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

11	खुला	वह घाटा	यह है	और आख़िरत	दुनिया में घाटा	अपना मुँह

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह है	न उसे नफ़ा पहुँचाए	और जो	न उसे नुक़्सान पहुँचाए	जो	अल्लाह के सिवा	से	पुकारता है वह

الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ

उस के नफ़ा से	ज़ियादा क़रीब	उस का ज़रर	उस को जो	वह पुकारता है	12	दूर-इन्तिहा दर्जा	गुमराही

لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह	13	रफ़ीक़	और बेशक बुरा	दोस्त	बेशक बुरा

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने दुरुस्त अ़मल किए

اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ

हरगिज़ उस की मदद न करेगा	कि	गुमान करता है	जो	14	जो वह चाहता है	करता है	बेशक अल्लाह

اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ

आस्मान की तरफ़	एक रस्सी	तो उसे चाहिए कि ताने	और आख़िरत	दुनिया में	अल्लाह

ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

15	जो गुस्सा दिला रही है	उस की तदबीर	दूर कर देती है	क्या	फिर देखे	उसे काट डाले	फिर

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

16	वह चाहता है	जिस को	हिदायत देता है	और यह कि अल्लाह	रोशन	आयतें	हम ने इस को नाज़िल किया	और इसी तरह

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى

और नसारा (मसीही)	और साबी (सितारा परस्त)	यहूदी हुए	और जो	जो लोग ईमान लाए	बेशक

وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

रोज़े क़ियामत	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	और वह जिन्हों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और आतिश परस्त

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ

जो	सिज्दा करता है उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा?	17	मुत्तला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ

और सितारे	और चाँद	और सूरज	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ

साबित हो गया	और बहुत से	इन्सान (जमा)	से	और बहुत	और चौपाए	और दरख़्त	और पहाड़

عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	कोई इज़्ज़त देने वाला	तो नहीं उस के लिए	ज़लील करे अल्लाह	और जिसे	अज़ाब	उस पर

السجدة ٦

يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ﴿١٨﴾ السجدة هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ

अपने रब (के बारे) में	वह झगड़े	दो फ़रीक़	यह दो	18	जो वह चाहता है	करता है

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ

ऊपर	डाला जाएगा	आग के	कपड़े	उन के लिए	काटे गए	कुफ़्र किया	पस वह जिन्हों ने

رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ ج يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ ط

20	और जिल्द (खालें)	उन के पेटों में	जो	उस से	पिघल जाएगा	19	खौलता हुआ पानी	उन के सर (जमा)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا

कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	21	लोहे के	गुर्ज़	और उन के लिए

ع ١٢/٢ ٩

مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۤ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع

22	जलने का अज़ाब	और चखो	उस में	लौटा दिए जाएंगे	ग़म से (ग़म के मारे)	उस से

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

बाग़ात	नेक	और उन्हों ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ

कंगन	वह पहनाए जाएंगे उस में	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोने के

और इसी तरह हम ने इस (कुरआन) को उतारा, रोशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। (16)
बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुश्रिक, बेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े क़ियामत उन के दरमियान, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। (17)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख़्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, और बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)
यह दो फ़रीक़ अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्हों ने कुफ़्र किया, उन के लिए आग के कपड़े काटे जा चुके हैं, उन के सरों के ऊपर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। (19)
उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) (20)
और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। (21)
जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अज़ाब चखो। (22)
जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए, बेशक अल्लाह उन्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। (23)

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚۖ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ

राह	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई	बात	से - की	पाकीज़ा	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई

الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और वह रोकते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	24	तारीफ़ों का लाइक़

وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨ الْعَاكِفُ

रहने वाला	बराबर	लोगों के लिए	हम ने मुक़र्रर किया	वह जिसे	मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह)

فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ

से	हम उसे चखाएंगे	ज़ुल्म से	गुमराही का	उस में	इरादा करे	और जो	और परदेसी	उस में

عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ ع ٣ ١٠

कि	ख़ाने कअ़बा की जगह	इब्राहीम के लिए	हम ने ठीक कर दी	और जब	25	दर्दनाक	अ़ज़ाब

لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ

और क़ियाम करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	और पाक रखना	किसी शै	मेरे साथ	न शरीक करना

وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا

पैदल	वह तेरे पास आएं	हज का	लोगों में	और एलान कर दो	26	सिजदा करने वाले	और रुकूअ़ करने वाले

وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا

ताकि वह देखें	27	दूर दराज़	हर रास्ता	से	वह आती हैं	हर दुबली ऊँटनी	और पर

مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ

जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन	में	अल्लाह का नाम	वह याद करें (करलें)	अपने	फ़ाइदे

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا

उस से	पस तुम खाओ	मवेशी	चौपाए	से	हम ने उन्हें दिया	जो	पर

وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ

अपना मैल कुचैल	चाहिए कि दूर करें	फिर	28	मोहताज	बदहाल	और खिलाओ

وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

29	क़दीम घर	और तवाफ़ करें	अपनी नज़्रें	और पूरी करें

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ

उसके रब के नज़्दीक	उसके लिए	बेहतर	पस वह	शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां)	ताज़ीम करे	और जो	यह

وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا

पस तुम बचो	तुम पर - तुम को	जो पढ़ दिए गए	सिवाए	मवेशी	तुम्हारे लिए	और हलाल क़रार दिए गए

الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

30	झूटी	बात	और बचो	बुत (जमा)	से	गन्दगी

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा बात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक़ (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। **(24)**

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुक़ूक़ में) और जो उस में ज़ुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। **(25)**

और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने कअ़बा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक्म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ सिज्दा करने वालों के लिए। **(26)**

और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएं, वह आती हैं हर दूर दराज़ रास्ते से। **(27)**

ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (ख़ुद भी) खाओ और बदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। **(28)**

फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। **(29)**

यह (है हुक्म) और जो अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उस के रब के नज़्दीक उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल क़रार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) बुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी बात से। **(30)**

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا

तो गोया	अल्लाह का	शरीक करेगा	और जो	उस के साथ	शरीक करने वाले	न	अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर

خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ

में	हवा	उस को	फेंक देती है	या	परिन्दे	पस उसे उचक ले जाते हैं	आस्मान से	वह गिरा

مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ

से	तो बेशक यह	शआइरे अल्लाह	ताज़ीम करेगा	और जो	यह	31	दूर दराज़	किसी जगह

تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ

फिर	एक मुद्दते मुक़र्रर	तक	नफ़ा (फ़ाइदे)	उस में	तुम्हारे लिए	32	(जमा) क़ल्ब (दिल)	परहेज़गारी

ع ٨ ١١ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا

क़ुरबानी	हम ने मुक़र्रर की	और हर उम्मत के लिए	33	बैते क़दीम (बैतुल्लाह)	तक	उन के पहुँचने का मुक़ाम

لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ

मवेशी	चौपाए	से	जो हम ने दिए उन्हें	पर	अल्लाह का नाम	ताकि वह लें

فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾

34	आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	फ़रमाबरदार हो जाओ	पस उस के	माबूदे यकता	पस तुम्हारा माबूद

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى

पर	और सब्र करने वाले	उन के दिल	डर जाते हैं	अल्लाह का नाम लिया जाए	जब	वह जो

مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

35	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और क़ाइम करने वाले	जो उन्हें पहुँचे

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ

भलाई	उस में	तुम्हारे लिए	शआइरे अल्लाह	से	तुम्हारे लिए	हम ने मुक़र्रर किए	और क़ुरबानी के ऊँट

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا

उन के पहलू	गिर जाएं	फिर जब	क़तार बान्ध कर	उन पर	अल्लाह का नाम	पस लो तुम

فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	और सवाल करने वाले	सवाल न करने वाले	और खिलाओ	उन से	तो खाओ

لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا

और न	उन का गोश्त	हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को	36	शुक्र करो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए

دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا

हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	तुम से	तक़्वा	उस को पहुँचता	और लेकिन (बल्कि)	उन का ख़ून

لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾

37	नेकी करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	जो उस ने हिदायत दी तुम्हें	पर	अल्लाह	ताकि तुम बड़ाई से याद करो	तुम्हारे लिए

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए यक रुख़ हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31) यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32) तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुद्दते मुक़र्रर तक फ़ाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम बैते क़दीम (बैतुल्लाह) के पास है। (33) और हम ने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (ज़ुबह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (34) वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ क़ाइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (35) और क़ुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) मुक़र्रर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (ज़ुबह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (ज़ुबह हो जाएं) तो उन में से (ख़ुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36) अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोश्त और न उन का ख़ून, बल्कि उस को पहुँचता है तक़्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दें। (37)

بेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के ज़रर), बेशक अल्लाह किसी भी दग़ाबाज़ (ख़ाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (38)

इज़्न (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफ़िर) लड़ते हैं, क्यों कि उन पर ज़ुल्म किया गया, और अल्लाह बेशक उन की मदद पर ज़रूर कुदरत रखता है। (39)

जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक़, सिर्फ़ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहिबों के ख़िल्वत ख़ाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत ख़ाने और (मुसलमानों की) मस्जिदें ढा दी जातीं जिन में अल्लाह का नाम बकस्रत लिया जाता है, और अलबत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, बेशक अल्लाह तवाना, ग़ालिब है। (40)

वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो मनाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अन्जाम अल्लाह ही के लिए है। (41)

और अगर यह तुम्हें झुटलाएं तो इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम ने, और आद और समूद ने, (42) और इब्राहीम (अ) की क़ौम ने, और क़ौमे लूत (अ), (43) और मदयन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अन्जाम)! (44)

सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थीं, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं, और (कितने ही) कुंएं बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। (45)

पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहक़ीक़त अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

ع ٥ / ١٢ الثلثة

إِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

किसी-तमाम	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	बचाव करता है	बेशक अल्लाह

خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ

और बेशक अल्लाह	उन पर ज़ुल्म किया गया	क्योंकि वह	जिन से लड़ते हैं	उन लोगों को	इज़्न दिया गया	38	नाशुक्रा	दग़ाबाज़

عَلٰي نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُۨ ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ

नाहक़	अपने घर (जमा) शहरों	से	निकाले गए	जो लोग	39	ज़रूर कुदरत रखता है	उन की मदद पर

اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

उन के बाज़ (एक को)	लोग	अल्लाह	दफ़अ करता	और अगर न	हमारा रब अल्लाह	वह कहते हैं	मगर (सिर्फ़) यह कि

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ

ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है)	और मस्जिदें	और इबादत ख़ाने	और गिरजे	सोमए	तो ढा दिए जाते	बाज़ से (दूसरे)

فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

ताक़त वाला (तवाना)	बेशक अल्लाह	उस की मदद करता है	जो	और अलबत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह	बहुत-बकस्रत	अल्लाह	नाम	उन में

عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا

और अदा करें	मनाज़	वह क़ाइम करें	ज़मीन (मुल्क) में	हम दस्तरस दें उन्हें	अगर	वह लोग जो	40	ग़ालिब

الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

और अल्लाह के लिए अन्जाम कार	बुराई से	और वह रोकें	नेक कामों का	और हुक्म दें	ज़कात

الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ

और आद	नूह की क़ौम	इन से क़ब्ल	तो झुटलाया	तुम्हें झुटलाएं	और अगर	41	तमाम काम

وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

और झुटलाया गया	और मदयन वाले	43	और क़ौमे लूत (अ)	और इब्राहीम (अ) की क़ौम	42	और समूद

مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

44	मेरा इन्कार	हुआ	तो कैसा	मैं ने उन्हें पकड़ लिया	फिर	काफ़िरों को	पस मैं ने ढील दी	मूसा (अ)

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا

अपनी छतें	पर	गिरी पड़ी	कि वह-यह	ज़ालिम	और यह (वह)	हम ने हलाक किया उन्हें	बस्तियां	तो कितनी

وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ

जो हो जाते	ज़मीन में	पस क्या वह चलते फिरते नहीं	45	गचकारी के	और बहुत महल	बेकार	और कुएं

لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا

क्यों कि दरहक़ीक़त	उन से	सुनने लगते	या कान (जमा)	उन से	वह समझने लगते	दिल	उन के

لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

46	सीनों में	वह जो	दिल (जमा)	अन्धे हो जाते हैं	और लेकिन (बल्कि)	आँखें	अन्धी नहीं होतीं

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۭ وَاِنَّ يَوْمًا

एक दिन	और बेशक	अपना वादा	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा	और हरगिज़ नहीं	अज़ाब	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं

عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

बस्तियां	और कितनी ही	47	तुम गिनते हो	उस से जो	हज़ार साल के मानिंद	तुम्हारे रब के हां

ع١٠ ١٣ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ

फ़रमा दें	48	लौट कर आना	और मेरी तरफ़	मैं ने पकड़ा उन्हें	फिर	ज़ालिम	और वह	उन को	मैं ने ढील दी

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	49	डराने वाला आश्कारा	तुम्हारे लिए	मैं	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो!

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا

जिन लोगों ने कोशिश की	50	बाइज़्ज़त	और रिज़्क़	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

और नहीं भेजा हम ने	51	दोज़ख़ वाले	वही हैं	आजिज़ करने (हराने)	हमारी आयात	में

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ

शैतान	डाला	उस ने आर्ज़ू की	जब	मगर	नबी	और न	रसूल	से - कोई	तुम से पहले

فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ

अल्लाह मज़बूत कर देता है	फिर	शैतान	जो डालता है	अल्लाह	पस मिटा देता है	उस की आर्ज़ू	में

اٰيٰتِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ

शैतान	जो डाला	ताकि बनाए वह	52	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपनी आयात

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۭ

उन के दिल	और सख़्त	मरज़	उन के दिलों में	उन लोगों के लिए	एक आज़माइश

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और ताकि जान लें	53	दूर - बड़ी	अलबत्ता सख़्त ज़िद में	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ

उस के लिए	तो झुक जाएं	उस पर	तो वह ईमान ले आएं	तुम्हारे रब से	हक़	कि यह	इल्म दिया गया

قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

54	सीधा	रास्ता	तरफ़	वह लोग जो ईमान लाए	हिदायत देने वाला	और बेशक अल्लाह	उन के दिल

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

आए उन पर	यहां तक कि	उस से	शक	में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और हमेशा रहेंगे

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

55	मनहूस दिन	अज़ाब	या आ जाए उन पर	अचानक	क़ियामत

और तुम से अ़ज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ करेगा, और बेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47)

और कितनी ही बस्तियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48)

फ़रमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आश्कारा डराने वाला हूँ। (49)

पस जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है। (50)

और जिन लोगों ने कोशिश की (अपने ज़अ़म में) हमारी आयात को हराने में, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51)

और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्ज़ू की तो शैतान ने उस की आर्ज़ू में (वस्वसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52)

ताकि (उस वस्वसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और बेशक ज़ालिम अलबत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53)

और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आएं और उस के लिए झुक जाएं उन के दिल, और बेशक अल्लाह उन लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54)

और वह हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगों ने कुफ़्र किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अ़ज़ाब। (55)

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	अल्लाह के लिए	उस दिन	बादशाही

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	56	नेमतों के बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ ع وَالَّذِيْنَ ع ٩ ١٤

और जिन लोगों ने	57	अ़ज़ाबे ज़िल्लत	उन के लिए	पस वही लोग	हमारी आयात को	और झुटलाया

هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ

अलबत्ता वह उन्हें रिज़्क़ देगा	वह मर गए	या	मारे गए	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	हिज्रत की

اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	रिज़्क़ देने वाला	सब से बेहतर	अलबत्ता वह	और बेशक अल्लाह	अच्छा	रिज़्क़	अल्लाह

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ

अलबत्ता इल्म वाला	और बेशक अल्लाह	वह उसे पसंद करेंगे	ऐसे मुक़ाम में	वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा

حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ

उस से	उसे सताया गया	जैसे	सताया	और जो-जिस	यह	59	हिल्म वाला

ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

60	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	ज़रूर मदद करेगा उस की	ज़ियादती की गई उस पर	फिर

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	इस लिए कि अल्लाह	यह

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

इस लिए कि अल्लाह	यह	61	देखने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	रात में

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ

और यह कि	बातिल	वह	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	जो-जिसे	और यह कि	वही हक़

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ

उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	62	बड़ा	बुलन्द मरतबा	वह	अल्लाह

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ

बेशक	सरसब्ज़	ज़मीन	तो हो गई	पानी	आस्मान	से

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ ج لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	उसी के लिए	63	ख़बर रखने वाला	निहायत मेहरबान	अल्लाह

فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ ع ٨ ١٥

64	तमाम ख़ूबियों वाला	बेनियाज़	अलबत्ता वही	और बेशक अल्लाह	ज़मीन में

उस दिन बादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फ़ैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह नेमतों के बाग़ात में होंगे। (56)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अ़ज़ाब। (57)

और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क़ देगा, और अल्लाह बेशक सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (58)

वह अलबत्तता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह बेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59)

यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, बेशक अल्लाह अलबत्तता माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (60)

यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, बेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63)

उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ूबियों वाला है। (64)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِیْ

चलती है	और कश्ती	ज़मीन में	जो	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

فِی الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَیُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَی الْاَرْضِ

ज़मीन पर	कि वह गिर पड़े	आस्मान	और वह रोके हुए है	उस के हुक्म से	दर्या में

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِیْۤ

जिस ने	और वही	65	निहायत मेहरबान	बड़ा शफ़क़त करने वाला	लोगों पर	बेशक अल्लाह	उस के हुक्म से	मगर

اَحْیَاكُمْ ز ثُمَّ یُمِیْتُكُمْ ثُمَّ یُحْیِیْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

66	बड़ा नाशुक्रा	इन्सान	बेशक	तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	मारेगा तुम्हें	फिर	तुम्हें ज़िन्दा किया

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا یُنَازِعُنَّكَ

सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें	उस पर बन्दगी करते हैं	वह	एक तरीक़े इबादत	हम ने मुक़र्रर किया	हर उम्मत के लिए

فِی الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰی رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰی هُدًی مُّسْتَقِیْمٍ ﴿٦٧﴾

67	सीधी	राह	पर	बेशक तुम	अपने रब की तरफ़	और बुलाओ	उस मामले में

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	68	जो तुम करते हो	खूब जानता है	अल्लाह	तो आप कह दें	वह तुम से झगड़ें	और अगर

یَحْكُمُ بَیْنَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जिस में	रोज़े क़ियामत	तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِیْ كِتٰبٍ ؕ

किताब में	यह	बेशक	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	जानता है	कि अल्लाह	क्या तुझे मालूम नहीं?

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَی اللّٰهِ یَسِیْرٌ ﴿٧٠﴾ وَیَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	70	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَیْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	कोई इल्म	उस का	उन के लिए (उन्हें)	नहीं	और जो-जिस	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी उस ने

مِنْ نَّصِیْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِیْ

में-पर	तुम पहचानोगे	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	71	कोई मददगार

وُجُوْهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ یَكَادُوْنَ یَسْطُوْنَ بِالَّذِیْنَ

उन पर जो	वह हमला कर दें	क़रीब है	नाखुशी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चेहरे

یَتْلُوْنَ عَلَیْهِمْ اٰیٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ

इस	से	बदतर	क्या मैं तुम्हें बतला दूँ?	फ़रमा दें	हमारी आयात	उन पर	पढ़ते हैं

ع ٩ ٨ ١٦
اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿٧٢﴾

72	ठिकाना	और बुरा	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	अल्लाह	जिस का वादा किया	दोज़ख़

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया जो कुछ ज़मीन में है, और कश्ती उस के हुक्म से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला निहायत मेहरबान है। (65)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66)

हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीक़े इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक़) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, बेशक तुम हो सीधी राह पर। (67)

और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है जो तुम करते हो। (68)

अल्लाह रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (69)

क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, बेशक यह किताब में है, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70)

वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (खुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फ़रमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

बेशक वह जिन्हें	उस को	पस तुम सुनो	एक मिसाल	बयान की जाती है	ऐ लोगो!

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ

अगरचे	एक मक्खी	पैदा कर सकेंगे	हरगिज़ न	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो

اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ

न छुड़ा सकेंगे उसे	कुछ	मक्खी	उन से छीन ले	और अगर	उस के लिए	वह जमा हो जाएं

مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	न क़द्र जानी उन्हों ने	73	और जिस को चाहा	चाहने वाला	कमज़ोर (बोदा है)	उस से

حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾ اَللّٰهُ يَصْطَفِىْ

चुन लेता है	अल्लाह	74	ग़ालिब	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उस के क़द्र करने का हक़

مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾ ع

75	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और आदमियों में से	पैग़ाम पहुँचाने वाले	फ़रिश्तों में से

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना (बाज़गश्त)	अल्लाह	और तरफ़	और जो उन के पीछे	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है

الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا

और सिज्दा करो	तुम रुकूअ करो	वह लोग जो ईमान लाए	ऐ	76	सारे काम

وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ ع السجدة عند الشافعي

77	फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अच्छे काम	और करो	अपना रब	और इबादत करो

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا

और न	उस ने तुम्हें चुना	वह-उस	उस की कोशिश करना	हक़	अल्लाह (की राह) में	और कोशिश करो

جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

तुम्हारे बाप	दीन	कोई तंगी	दीन में	तुम पर	डाली

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا

और इस में	इस से क़ब्ल	मुसलिम (जमा)	तुम्हारा नाम रखा	वह-उस	इब्राहीम (अ)

لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

गवाह-निगरान	और तुम हो	तुम पर	तुम्हारा गवाह (निगरान)	रसूल (स)	ताकि हो

عَلَى النَّاسِ ۖۚ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا

और मज़बूती से थाम लो	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	पस क़ाइम करो	लोगों पर

بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾ ع ١٠/٦ ١٧

78	मददगार	और अच्छा है	मौला	सो अच्छा है	तुम्हारा मौला (कारसाज़)	वह	अल्लाह को

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। (73)

उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न जानी (जैसे) उस की क़द्र करने का हक़ था, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है। (74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (75)

वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की बाज़गश्त है। (76)

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो जहान में कामयाबी पाओ। (77)

और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़ब्ल (भी) और इस (क़ुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! (78)

آياتها ١١٨ ❀ سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ (٢٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

आयात 118 — (23) सूरतुल मोमिनून — रुकूआत 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

फ़लाह पाई (कामयाब हुए)	मोमिन (जमा)	1	वह जो	अपनी नमाज़ों में

خٰشِعُوْنَ ﴿٢﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ

खुशूअ़ (आजिज़ी) करने वाले	2	और जो	वह	लग़्व (बेहूदा बातों) से	मुँह फेरने वाले	3	और जो

هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿٤﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٥﴾

वह	ज़कात (को)	अदा करने वाले	4	और जो	वह	अपनी शर्मगाहों की	हिफ़ाज़त करने वाले	5

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٦﴾

मगर	पर-से	अपनी बीवियां	या	जो मालिक हुए	उन के दाएं हाथ	पस बेशक वह	कोई मलामत नहीं	6

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ

पस जो	चाहे	सिवा	उस	तो वही	वह	हद से बढ़ने वाले	7	और जो	वह

لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩﴾

وقف لازم

अपनी अमानतें	और अपने अ़हद	देख भाल करने वाले	8	और जो	वह	पर-की	अपनी नमाज़ें	हिफ़ाज़त करने वाले	9

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا

यही लोग	वह	वारिस (जमा)	10	जो	वारिस होंगे	जन्नत	वह	उस में

خٰلِدُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

हमेशा रहेंगे	11	और अलबत्ता हम ने पैदा किया	इन्सान	से	खुलासा (चुनी हुई)	मिट्टी से	12

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

फिर	हम ने उसे ठहराया	नुत्फ़ा	में	मज़बूत जगह	13	फिर	हम ने बनाया	नुत्फ़ा	जमा हुआ खून

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

पस हम ने बनाया	जमा हुआ खून	बोटी	फिर हम ने बनाया	बोटी	हड्डियां	फिर हम ने पहनाया	हड्डियां

لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾

गोश्त	फिर	हम ने उसे उठाया	सूरत	नई	पस बरकत वाला	अल्लाह	बेहतरीन	पैदा करने वाला	14

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

फिर	बेशक तुम	उस के बाद	ज़रूर मरने वाले	15	फिर	बेशक तुम	रोज़े क़ियामत	उठाए जाओगे	16

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾

और तहक़ीक़ हम ने बनाए	तुम्हारे ऊपर	सात	रास्ते	और हम नहीं	से	ख़ल्क़ (पैदाइश)	ग़ाफ़िल	17

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

(दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन। (1) जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं। (2) और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3) और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5) मगर अपनी बीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएं हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6) पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7) और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद का पास रखते हैं। (8) और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (9) यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10) (जन्नत) फ़िरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11) और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12) फिर हम ने उसे मज़बूत जगह में नुत्फ़ा ठहराया। (13) फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुआ खून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए खून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियां बनाईं, फिर हम ने हड्डियों को गोश्त पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14) फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15) फिर बेशक तुम रोज़े क़ियामत उठाए जाओगे। (16) और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से ग़ाफ़िल नहीं। (17)

और हम ने आस्मानों से पानी उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर उस को हम ने ज़मीन में ठहराया, और बेशक हम उस को ले जाने पर (भी) क़ादिर हैं। **(18)** पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात, तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं, और उस से तुम खाते हो। **(19)** और दरख़्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से निकलता है, वह उगता है तेल और सालन लिए हुए खाने वालों के लिए। **(20)** और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में मुक़ामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में है, और तुम्हारे लिए उन में (और) बहुत से फ़ाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। **(21)** और उन पर और कश्ती पर सवार किए जाते हो। **(22)** और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? **(23)** तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं मगर तुम जैसा एक बशर है, वह चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे, और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप दादा से यह (कभी) नहीं सुना। **(24)** वह (कुछ भी) नहीं मगर एक आदमी है जिस को जुनून हो गया है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करो। **(25)** उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। **(26)** तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़ कि हमारी आँखों के सामने हमारे हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म आए और तन्नूर उबलने लगे, तो उस (कश्ती) में हर क़िस्म के जोड़ों में से दो (एक नर एक मादा) रख लो और अपने घर वाले (भी सवार कर लो) उस के सिवा (जिस के ग़र्क़ होने पर) हुक्म हो चुका है उन में से, और मुझ से उन के बारे में बात न करना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है, बेशक वह ग़र्क़ किए जाने वाले हैं। **(27)**

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى

पर	और बेशक हम	ज़मीन में	हम ने उसे ठहराया	अन्दाज़े के साथ	पानी	आस्मानों से	और हम ने उतारा

ذَهَابٍ ۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

खजूर (जमा)	से-के	बाग़ात	उस से	तुम्हारे लिए	पस हम ने पैदा किए	18	अलबत्ता क़ादिर	उस का	ले जाना

وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً

وقف لازم

और दरख़्त	19	तुम खाते हो	और उस से	बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	और अंगूर (जमा)

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	खाने वालों के लिए	और सालन	तेल के साथ-लिए	उगता है	तूरे सीना	से	निकलता है

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا

उन में	और तुम्हारे लिए	उन के पेटों में	उस से जो	हम तुम्हें पिलाते हैं	इब्रत-ग़ौर का मुक़ाम	चौपायों में	तुम्हारे लिए	और बेशक

مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

ع ٢/٢

22	सवार किए जाते हो	और कश्ती पर	और उन पर	21	तुम खाते हो	और उन से	बहुत	फ़ाइदे

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

तुम्हारे लिए नहीं	तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	से-के	जिन्हों ने कुफ़्र किया	सरदार	तो वह बोले	23	क्या तो तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद

مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह चाहता	और अगर	तुम पर	कि बड़ा बन बैठे वह	वह चाहता है	तुम जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं

لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ

नहीं वह-यह	24	पहले	अपने बाप दादा से	यह	नहीं सुना हम ने	फ़रिश्ते	तो उतारता

اِلَّا رَجُلٌ ۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ

मेरी मदद फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	25	एक मुद्दत तक	उस का	सो तुम इन्तिज़ार करो	जुनून	जिस को	एक आदमी	मगर

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

हमारी आँखों के सामने	कश्ती	तुम बनाओ	कि	उस की तरफ़	तो हम ने वहि भेजी	26	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ

हर (क़िस्म) से	उस में	तो चला ले (रख ले)	और तन्नूर उबलने लगे	हमारा हुक्म	आजाए	फिर जब	और हमारा हुक्म

زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

हुक्म	उस पर	पहले हो चुका	जो-जिस	सिवा	और अपने घर वाले	दो	जोड़ा

مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	ग़र्क़ किए जाने वाले	बेशक वह	वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया	में-बारे में	और न करना मुझ से बात	उन में से

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	तो कहना	कश्ती	पर	तेरे साथ (साथी)	और जो	तुम	बैठ जाओ	फिर जब

الَّذِىْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا

मुबारक	मन्ज़िल	मुझे उतार	ऐ मेरे रब	और कहो	28	ज़ालिम (जमा)	क़ौम	से	हमें नजात दी	वह जिस ने

وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	आज़माइश करने वाले	और बेशक हम हैं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	29	उतारने वाले	बेहतरीन	और तू

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا

रसूल (जमा)	उन के दरमियान	फिर भेजे हम ने	31	दूसरा	गिरोह	उन के बाद	हम ने पैदा किया	फिर

ع ١٠ مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ

और कहा	32	क्या फिर तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं तुम्हारे लिए	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उन में से

الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

और हम ने उन्हें ऐश दिया	आख़िरत	हाज़िरी को	और झुटलाया	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	उस की क़ौम के	सरदारों

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ

उस से	तुम खाते हो	उस से जो	वह खाता है	तुम्हीं जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	में

وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا

उस वक़्त	बेशक तुम	अपने जैसा	एक बशर	तुम ने इताअ़त की	और अगर	33	तुम पीते हो	उस से जो	और पीता है

لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ

तो तुम	और हडि्डयां	मिट्टी	और तुम हो गए	मर गए	जब	कि तुम	क्या वह वादा देता है तुम्हें	34	घाटे में रहोगे

مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا

मगर	नहीं	36	तुम्हें वादा दिया जाता है	वह जो	बईद है	बईद है	35	निकाले जाओगे

حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ

वह	नहीं	37	फिर उठाए जाने वाले	हम	और नहीं	और हम जीते हैं	और हम मरते हैं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी

اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

उस ने अर्ज़ किया	38	ईमान लाने वाले	उस पर	हम	और नहीं	झूट	अल्लाह पर	उस ने झूट बान्धा	एक आदमी	मगर

رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40	पछताने वाले	वह ज़रूर रह जाएंगे	बहुत जल्द	उस ने फ़रमाया	39	उन्हों ने मुझे झुटलाया	उस पर जो	मेरी मदद फ़रमा	मेरे रब

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ

क़ौम के लिए	दूरी (मार)	ख़स ओ ख़ाशाक	सो हम ने उन्हें कर दिया	(वादाए) हक़ के मुताबिक़	चिंघाड़	पस उन्हें आ पकड़ा

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

42	दूसरी - और उम्मतें	उन के बाद	हम ने पैदा की	फिर	41	ज़ालिम (जमा)

फिर तुम जब बैठ जाओ कश्ती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की क़ौम से। (28)

और कहो ऐ मेरे रब! मुझे मुबारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29)

बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आज़माइश करने वाले हैं। (30)

फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31)

फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32)

और उस की क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़री को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33)

और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअ़त की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34)

क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हडि्डयां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35)

बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36)

(और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले। (37)

वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले। (38)

उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हों ने मुझे झुटलाया। (39)

उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40)

पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ ख़ाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की क़ौम के लिए। (41)

फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

कोई उम्मत अपनी (मुक़र्रर) मीआ़द से न सबक़त करती है और न पीछे रह जाती है। (43)
फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लाए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफ़्साने (भूली बिसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)
फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)
फ़िरऔ़न और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)
पस उन्हों ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएं? और उन की क़ौम (के लोग) हमारी ख़िद्मत करने वाले। (47)
पस उन्हों ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)
और हम ने मरयम (अ) के बेटे (इसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुक़ाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)
ऐ रसूलो! तुम पाक चीज़ों में से खाओ और अ़मल करो नेक, बेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)
और बेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)
फिर उन्हों ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है खुश हैं। (53)
पस उन्हें उन की ग़फ़्लत में एक मुद्दते मुक़र्ररा तक छोड़ दो। (54)
क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)
हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)
बेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57)
और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	फिर	43	पीछे रह जाती है	और न	अपनी मीआ़द	कोई उम्मत	सबक़त करती है	नहीं

رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ

उन में से एक	तो हम पीछे लाए	उन्हों ने उसे झुटलाया	उस का रसूल	किसी उम्मत में	आया	जब भी	पै दर पै	रसूल (जमा)

بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

44	जो ईमान नहीं लाए	लोगों के लिए	सो दूरी (मार)	अफ़्साने	और उन्हें बना दिया हम ने	दूसरे

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾

45	खुले	और दलाइल	साथ (हमारी) अपनी निशानियां	हारून (अ)	और उन का भाई	मूसा (अ)	हम ने भेजा	फिर

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا

पस उन्हों ने कहा	46	सरकश	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	और उस के सरदार	फ़िरऔ़न	तरफ़

اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا

पस उन्हों ने झुटलाया दोनों को	47	बन्दगी (ख़िदमत) करने वाले	हमारी	और उनकी क़ौम	अपने जैसे	दो (2) आदमियों पर	क्या हम ईमान ले आएं

فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ

ताकि वह लोग	किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	48	हलाक होने वाले	से	तो वह हो गए

يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى

तरफ़ (पर)	और हम ने उन्हें ठिकाना दिया	एक निशानी	और उस की माँ	मरयम का बेटा (ईसा अ)	और हम ने बनाया	49	हिदायत पा लें

رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ ع ١٨ ٣ ٣

पाकीज़ा चीज़ें	से	खाओ	रसूल (जमा)	ऐ	50	और बहता हुआ पानी	ठहरने का मुक़ाम	एक बुलन्द टीला

وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ

तुम्हारी उम्मत	यह	और बेशक	51	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	बेशक मैं	नेक	और अ़मल करो

اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ

टुकड़े टुकड़े	आपस में	अपना काम	फिर उन्हों ने काट लिया	52	पस मुझ से डरो	तुम्हारा रब	और मैं	एक उम्मत, उम्मते वाहिदा

كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى

तक	उन की ग़फ़्लत में	पस छोड़ दे उन्हें	53	खुश	उन के पास	उस पर जो	हर गिरोह

حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ

हम जल्दी कर रहे हैं	55	और औलाद	माल	से	उस के साथ	हम मदद कर रहे हैं उन की	कि जो कुछ	क्या वह गुमान करते हैं	54	एक मुद्दत मुक़र्रर

لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ

डर	से	वह	जो लोग	बेशक	56	वह शऊर (समझ) नहीं रखते	बल्कि	भलाई में	उन के लिए

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	ईमान रखते हैं	अपना रब	आयतों पर	वह	और जो लोग	57	डरने वाले (सहमे हुए)	अपना रब

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا

जो वह देते हैं	देते हैं	और जो लोग	59	शरीक नहीं करते	अपने रब के साथ	वह	और जो लोग

وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ

जल्दी करते हैं	यही लोग	60	लौटने वाले	अपना रब	तरफ़	कि वह	डरते हैं	और उन के दिल

فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

उस की ताक़त के मुताबिक़	मगर	किसी को	और हम तक्लीफ़ नहीं देते	61	सबक़त ले जाने वाले हैं	उन की तरफ़	और वह	भलाइयों में

وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	बल्कि	62	ज़ुल्म न किए जाएंगे (ज़ुल्म न होगा)	और वह (उन)	ठीक ठीक	वह बतलाता है	एक किताब (रजिस्टर)	और हमारे पास

فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

63	करते रहते हैं	वह उन्हें	उस	अ़लावा	आमाल (जमा)	और उन के	उस से	ग़फ़्लत

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْـَٔرُوا

तुम फ़र्याद न करो	64	फ़र्याद करने लगे	उस वक़्त वह	अ़ज़ाब में	उन के ख़ुशहाल लोग	हम ने पकड़ा	यहां तक कि जब

الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ

तो तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती थीं	मेरी आयतें	अलबत्ता तुम्हें	65	तुम मदद न दिए जाओगे	हम से	बेशक तुम	आज

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	बेहूदा बकवास करते हुए	अफ़्साना गोई करते हुए	उस के साथ	तकब्बुर करते हुए	66	फिर जाते	अपनी एड़ियों के बल

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	पहले	उन के बाप दादा	नहीं आया	जो	उन के पास आया	या	कलाम	पस क्या उन्हों ने ग़ौर नहीं किया

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ

दीवानगी	उस को	वह कहते हैं	या	69	मुन्किर हैं	उस के	तो वह	अपने रसूल	उन्हों ने नहीं पहचाना	या

بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

उन की ख़्वाहिशात	हक़ (अल्लाह)	पैरवी करता	और अगर	70	नफ़्रत रखने वाले	हक़ से	और उन में से अक्सर	साथ हक़ बात	वह आया उन के पास	बल्कि

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ

फिर वह	उन की नसीहत	हम लाए हैं उन के पास	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	अलबत्ता दरहम बरहम हो जाता

عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ

बेहतर	तुम्हारा रब	तो अजर	अजर	क्या तुम उन से मांगते हो	71	रूगर्दानी करने वाले हैं	अपनी नसीहत से

الربع

وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

73	सीधा रास्ता	तरफ़	उन्हें बुलाते हो	और बेशक तुम	72	बेहतरीन रोज़ी दहिन्दा है	और वह

وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	अलबत्ता हटे हुए हैं	राहे हक़	से	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और बेशक

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59) और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (60) यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हैं। (61) और हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर ज़ुल्म न होगा। (62) बल्कि उन के दिल इस (हक़ीक़त) से ग़फ़्लत में हैं और उन के (बुरे) आमाल उस के अ़लावा जो वह करते रहते हैं। (63) यहां तक कि जब हम ने उन के ख़ुशहाल लोगों को पकड़ा अ़ज़ाब में, तो उस वक़्त वह फ़र्याद करने लगे। (64) आज फ़र्याद न करो तुम, हमारी (तरफ़) से मदद न दिए जाओगे (मुतलक़ मदद न पाओगे)। (65) अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66) तकब्बुर करते हुए, उस के साथ अफ़्साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67) पस क्या उन्हों ने (इस) कलामे (हक़) पर ग़ौर नहीं क्या? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68) या उन्हों ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69) या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक़ बात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक़ बात से नफ़्रत रखने वाले हैं। (70) और अगर अल्लाह तआ़ला उन की ख़्वाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम बरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की बात से) रूगर्दानी कर रहे हैं। (71) क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72) और बेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ़। (73) और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, बेशक वह राहे हक़ से हटे हुए हैं। (74)

और अगर हम उन पर रहम करें, और जो उन पर तक्लीफ़ है वह दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी पर अड़े रहें, भटकते फिरें। (75)
और अलबत्ता हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्हों ने आजिज़ी की, और न वह गिड़गिड़ाए। (76)
यहां तक कि जब हम ने उन पर सख़्त अ़ज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77)
और वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (79)
और वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, और उसी के लिए है रात और दिन का आना जाना, पस क्या तुम समझते नहीं? (80)
बल्कि उन्हों ने (वही) कहा जैसे (उन से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81)
वह बोले, क्या जब हम मर गए, और हम मिट्टी और हडिड्यां हो गए, क्या हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82)
अलबत्ता हम से वादा किया गया और इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा से यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़ पहले लोगो की कहानियां हैं। (83)
आप (स) फ़रमां दें किस के लिए हैं ज़मीन और जो कुछ उस में है? अगर तुम जानते हो। (84)
वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए हैं, आप (स) फ़रमां दें पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (85)
आप (स) फ़रमां दें कौन है सात आस्मानों का रब और अ़र्शे अ़ज़ीम का रब? (86)
वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह का है, आप (स) फ़रमां दें पस क्या तुम नहीं डरते? (87)
आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ में है हर चीज़ का इख़्तियार? और वह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो। (88)
वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह के लिए, आप (स) फ़रमां दें फिर तुम कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِىْ طُغْيَانِهِمْ

अपनी सरकशी	में - पर	अड़े रहें	जो तक्लीफ़	जो उन पर	और हम दूर कर दें	हम उन पर रहम करें	और अगर

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	फिर उन्हों ने आजिज़ी न की	अ़ज़ाब में	और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा	75	भटकते रहें

وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ

सख़्त	अ़ज़ाब वाला	दरवाज़ा	उन पर	हम ने खोल दिया	जब	यहां तक कि	76	और वह न गिड़गिड़ाए

اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ ع ٢٧

और आँखें	कान	बनाए तुम्हारे लिए	जिस ने	और वह	77	मायूस हुए	उस में	तो उस वक़्त वह

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ

फैलाया तुम्हें	वही जिस ने	और वह	78	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत ही कम	और दिल (जमा)

فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	वही जो	और वह	79	तुम जमा हो कर जाओगे	और उस की तरफ़	ज़मीन में

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا

बल्कि उन्हों ने कहा	80	क्या पस तुम समझते नहीं?	और दिन	रात	आना जाना	और उसी के लिए

مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

और हम हो गए मिट्टी	हम मर गए	क्या जब	वह बोले	81	पहलों ने	जो कहा	जैसे

وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا

यह	और हमारे बाप दादा	हम	अलबत्ता हम से वादा किया गया	82	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां

مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ

ज़मीन	किस के लिए	फ़रमा दें	83	पहले लोग	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह नहीं	इस से क़ब्ल

وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए	84	तुम जानते हो	अगर	उस में	और जो

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ

और रब	सात	आस्मान (जमा)	रब	कौन	फ़रमा दें	85	क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते?

الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ

कौन	फ़रमा दें	87	क्या पस तुम नहीं डरते?	फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का	86	अ़र्शे अ़ज़ीम

بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ

अगर	उस के ख़िलाफ़	और पनाह नहीं दिया जाता	पनाह देता है	और वह	हर चीज़	बादशाहत (इख़्तियार)	उस के हाथ में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	तुम जादू में फँस गए हो	फिर कहां से	फ़रमा दें	जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए	88	तुम जानते हो

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ

नहीं अपनाया अल्लाह	90	अलबत्ता झूटे हैं	और बेशक वह	सच्ची बात	हम लाए हैं उन के पास	बल्कि

مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

जो उस ने पैदा किया	माबूद	हर	ले जाता	उस सूरत में	कोई और माबूद	उस के साथ	और नहीं है	किसी को बेटा

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

91	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह	दूसरे पर	उन का एक	और चढ़ाई करता

ع ١٥ ٥

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ

ऐ मेरे रब	फ़रमा दें	92	वह शरीक समझते हैं	उस से जो	पस बरतर	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा

اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي

में	पस तू मुझे न करना	ऐ मेरे रब	93	जो उन से वादा किया जाता है	अगर तू मुझे दिखा दे

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	अलबत्ता क़ादिर हैं	जो हम वादा कर रहे हैं उन से	कि हम तुम्हें दिखा दें	पर	और बेशक हम	94	ज़ालिम लोग

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

96	वह बयान करते हैं	उस को जो	ख़ूब जानते हैं	हम	बुराई	सब से अच्छी भलाई	वह	उस से जो	दफ़अ करो

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ

तेरी	और मैं पनाह चाहता हूँ	97	शैतान (जमा)	वस्वसे से	से	तेरी	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	और आप (स) फ़रमा दें

رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहता है	मौत	उन में किसी को	जब आए	यहां तक कि	98	कि वह आएं मेरे पास	ऐ मेरे रब

ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ

वह	एक बात	यह तो	हरगिज़ नहीं	मैं छोड़ आया हूँ	उस में	कोई अच्छा काम	काम कर लूँ	शायद मैं	99	मुझे वापस भेज दे

قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ

फूंका जाएगा	फिर जब	100	वह उठाए जाएंगे	उस दिन तक	एक बरज़ख़	और उन के आगे	कह रहा है

فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

101	और न वह एक दूसरे को पूछेंगे	उस दिन	उन के दरमियान	तो न रिश्ते	सूर में

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

हल्का हुआ	और जो	102	फ़लाह पाने वाले	वह	पस वह लोग	उस का तोल (पल्ला)	भारी हुई	पस-जो-जिस

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ

जहन्नम में	अपनी जानें	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	तो वही लोग	उस का तोल (पल्ला)

خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

104	तेवरी चढ़ाए हुए	उस में	और वह	आग	उन के चेहरे	झुलस देगी	103	हमेशा रहेंगे

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची बात, और बेशक वह झूटे हैं। (90) अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया, और नहीं है उस के साथ कोई और माबूद, उस सूरत में हर माबूद ले जाता जो उस ने पैदा किया होता, और उन में से एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक है अल्लाह उन (बातों) से जो वह बयान करते हैं। (91) वह जानने वाला है पोशीदा और आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92) आप (स) सफ़रमां दें ऐ मेरे रब! जो उन से वादा किया जाता है अगर तू मुझे दिखादे। (93) ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम लोगों में (शामील) न करना। (94) और बेशक हम उस पर क़ादिर हैं कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं तुम्हें दिखा दें। (95) सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ करो, हम ख़ूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं। (96) और आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आएं। (98) (वह ग़फ़्लत में रहते हैं) यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर दुनिया में) वापस भेज दे। (99) शायद मैं उस में कोई अच्छा काम कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज़ नहीं, यह तो एक बात है जो वह कह रहा है, और उन के आगे एक बरज़ख़ (आड़) है उस दिन (क़ियामत) तक कि वह उठाए जाएं। (100) फिर जब सूर फूंका जाएगा तो न रिश्ते रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101) पस जिस (के आमाल) का पल्ला भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह (नजात) पाने वाले होंगे। (102) और जिस (के आमाल) का पल्ला हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को ख़सारे में डाला, वह जहन्नम में हमेशा रहेंगे। (103) आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105) वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106) ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (107) वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108) बेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (109) पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक़, यहां तक कि उन्हों ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110) बेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्हों ने सब्र किया, बेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111) (अल्लाह तआला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुद्दत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112) वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113) फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हक़ीक़त दुनिया में) जानते होते। (114) क्या तुम ख़याल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115) पस बुलन्द तर है अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अर्श का मालिक। (116) और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, बेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117) और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (118)

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا

वह कहेंगे	105	तुम झुटलाते थे	उन्हें	पस तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयतें	क्या न थी

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	106	रास्ते से भटके हुए	लोग	और हम थे	हमारी बद बख़्ती	हम पर	ग़ालिब आ गई	ऐ हमारे रब

اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا

उस में	फिटकारे हुए पड़े रहो	फ़रमाएगा	107	ज़ालिम (जमा)	तो बेशक हम	दोबारा किया	फिर अगर	इस से	हमें निकाल ले

وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते थे	हमारे बन्दों का	एक गिरोह	था	बेशक वह	108	और कलाम न करो मुझ से

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

109	रहम करने वाले	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्शदे	हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ

उन से	और तुम थे	मेरी याद	उन्हों ने भुला दिया तुम्हें	यहां तक कि	मज़ाक़	पस तुम ने उन्हें बना लिया

تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ

वही	बेशक वह	उन्हों ने सब्र किया	उस के बदले	आज	मैं ने जज़ा दी उन्हें	बेशक मैं	110	हँसी किया करते

الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

112	साल (जमा)	शुमार (हिसाब)	ज़मीन (दुनिया) में	कितनी मुद्दत रहे तुम	फ़रमाएगा	111	मुराद को पहुँचने वाले

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾

113	शुमार करने वाले	पस पूछ लें	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	वह कहेंगे

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

114	जानते होते	तुम	काश	थोड़ा (अर्सा)	मगर (सिर्फ़)	नहीं तुम रहे	फ़रमाएगा

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

115	नहीं लौटाए जाओगे	हमारी तरफ़	और यह कि तुम	(अब्स) बेकार	हम ने तुम्हें पैदा किया	कि	क्या तुम ख़याल करते हो

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ

मालिक	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हक़ीक़ी	बादशाह	अल्लाह	पस बुलन्द तर

الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ

नहीं कोई सनद	कोई और माबूद	अल्लाह के साथ	और जो पुकारे	116	इज़्ज़त वाला अर्श

لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

117	काफ़िर (जमा)	फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे	बेशक वह	उस के रब के पास	उसका हिसाब	सो, तहक़ीक़	उस के लिए	उस के पास

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ٦ ع ٦

118	बेहतरीन रहम करने वाला है	और तू	और रहम फ़रमा	बख़्शदे	ऐ मेरे रब	और आप (स) कहें

آيَاتُهَا ٦٤ ❀ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9	(24) सूरतुन नूर रोशनी	आयात 64

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

ताकि तुम	वाज़ेह आयतें	उस में	और हम ने नाज़िल की	और लाज़िम किया उस को	जो हम ने नाज़िल की	एक सूरत

تَذَكَّرُوْنَ (١) اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

उन दोनो में से	हर एक को	तो तुम कोड़े मारो	और बदकार मर्द	बदकार औरत	1	तुम याद रखो

مِائَةَ جَلْدَةٍ ۠ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह का हुक्म	में	मेहरबानी (तरस)	उन पर	और न पकड़े (न खाओ)	कोड़े	सौ (100)

كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ

एक जमाअत	उन की सज़ा	और चाहिए कि मौजूद हो	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢) اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً

या मुश्‍रिका	बदकार औरत	सिवा	निकाह नहीं करता	बदकार मर्द	2	मोमिनीन	से-कि

وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى

पर	यह	और हराम किया गया	या शिर्क करने वाला मर्द	सिवा बदकार मर्द	निकाह नहीं करती	और बदकार (औरत)

الْمُؤْمِنِيْنَ (٣) وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا

फिर वह न लाएं	पाक दामन औरतें	तुहमत लगाएं	और जो लोग	3	मोमिनीन

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

उन की	और तुम न कुबूल करो	कोड़े	अस्सी (80)	तो तुम उन्हें कोड़े मारो	गवाह	चार (4)

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٤) اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

जिन लोगो ने तौबा कर ली	मगर	4	नाफ़रमान	वह	यही लोग	कभी	गवाही

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥) وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और उन्हों ने इस्लाह कर ली	उस के बाद

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ

उनकी जानें (खुद)	सिवा	गवाह	उन के	और न हों	अपनी बीवियां	तुहमत लगाएं

فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٦)

6	सच बोलने वाले	कि वह बेशक से	अल्लाह की कसम	गवाहियाँ	चार (4)	उन में से एक	पस गवाही

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٧)

7	झूट बोलने वाले	से	अगर है वह	उस पर	अल्लाह की लानत	यह कि	और पाँचवी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फ़र्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1) बदकार औरत और बदकार मर्द दोनों में से हर एक को सो (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सज़ा (के वक़्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअत। (2) बदकार मर्द बदकार औरत या मुश्‍रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और बदकार औरत (भी) बदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनों पर हराम किया गया है। (3) और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औरतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कुबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफ़रमान लोग हैं। (4) मगर जिन लोगों न उस के बाद तौबा कर ली और उन्हों ने इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5) और जो लोग अपनी बीवियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की क़सम के साथ चार बार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से हैं (सच्चा है)। (6) और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

कि वह	अल्लाह की क़सम	चार बार गवाही	गवाही दे	अगर	सज़ा	उस औ़रत से	और टल जाएगी

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ

वह है	अगर	उस पर	अल्लाह का ग़ज़ब	यह कि	और पाँचवीं बार	8	झूटे लोग	अलबत्ता- से

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	9	सच्चे लोग	से

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ

तुम में से	एक जमाअ़त	बड़ा बुहतान लाए	बेशक जो लोग	10	हिक्मत वाला	तौबा क़ुबूल करने वाला

لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ

जो उस ने कमाया (किया)	उन में से	हर एक आदमी के लिए	बेहतर है तुम्हारे लिए	बल्कि वह	अपने लिए	बुरा	तुम उसे गुमान न करो

مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾ لَوْلَآ

क्यों न	11	बड़ा	अ़ज़ाब	उस के लिए	उन में से	बड़ा उस का	उठाया	और वह जिस	गुनाह से

اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	नेक	अपनों के बारे में	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	गुमान किया	तुम ने वह सुना	जब

هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا

वह न लाए	पस जब	गवाह	चार (4)	उस पर	वह लाए	क्यों न	12	नुमायान	बुहतान	यह

بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	13	वही झूटे	अल्लाह के नज़्दीक	तो वही लोग	गवाह

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ

उस में	तुम पड़े	उस में जो	ज़रूर तुम पर पड़ता	और आख़िरत	दुनिया में	और उस की रहमत	तुम पर

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ

अपने मुँह से	और तुम कहते थे	अपनी ज़बानों पर	जब तुम लाते थे उसे	14	बड़ा	अ़ज़ाब

مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

15	बहुत बड़ी (बात)	अल्लाह के नज़्दीक	हालांकि वह	हलकी बात	और तुम उसे गुमान करते थे	कोई इल्म	उस का	तुम्हें	जो नहीं

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ

तू पाक है	ऐसी बात	कि हम कहें	हमारे लिए	नहीं है	तुम ने कहा	तुम ने वह सुना	जब	और क्यों न

هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا

कभी भी	ऐसा काम	तुम फिर करो	कि	तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह	16	बड़ा	बुहतान	यह

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

18	हिक्मत वाला	बड़ा जानने वाला	और अल्लाह	आयतें (अहकाम)	तुम्हारे लिए	और बयान करता है अल्लाह	17	ईमान वाले	अगर तुम हो

और उस औ़रत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की क़सम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलबत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8)
और पाँचवी बार यह कि उस औरत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सच्चों में से है (सच्चा है)। (9)
और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, हिक्मत वाला है। (10)
बेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअ़त हैं, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (11)
जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्हों ने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12)
वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे हैं। (13)
और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुग़ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अ़ज़ाब। (14)
जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15)
जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16)
अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17)
और अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ

उन के लिए	ईमान लाए (मोमिन)	में जो	बेहयाई	फैले	कि	पसंद करते हैं	जो लोग	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

19	तुम नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और आख़िरत में	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब

ع ٢ / ٨ النصف

وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع

20	निहायत मेह्रबान	शफ़क़त करने वाला	और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ

क़दम (जमा)	पैरवी करता है	और जो	शैतान	क़दम (जमा)	तुम न पैरवी करो	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	अल्लाह का फ़ज़्ल	और अगर न	और बुरी बात	बेहयाई का	हुक्म देता है	तो बेशक वह	शैतान

وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

जिसे वह चाहता है	पाक करता है	और लेकिन अल्लाह	कभी भी	कोई आदमी	तुम से	न पाक होता	और उस की रहमत

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

और वस्अ़त वाले	तुम में से	फ़ज़ीलत वाले	और क़सम न खाएं	21	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह

اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

अल्लाह की राह में	और हिज्रत करने वाले	और मिस्कीनों	क़राबत दार	कि (न) दें

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	अल्लाह बख़्शदे	कि	क्या तुम नहीं चाहते	और वह दरगुज़र करें	और चाहिए कि वह माफ़ कर दें

رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا

लानत है उन पर	मोमिन औरतें	भोली भाली अन्जान	पाक दामन (जमा)	जो लोग तुहमत लगाते हैं	बेशक	22	निहायत मेह्रबान

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ ۙ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ

उन पर (ख़िलाफ़)	गवाही देंगे	दिन	23	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए	और आख़िरत	दुनिया में

اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ

पूरा देगा उन्हें	उस दिन	24	वह करते थे	उस की जो	और उन के पैर	और उन के हाथ	उन की ज़बानें

اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ

नापाक (गन्दी) औरतें	25	ज़ाहिर करने वाला	बरहक़	वही	कि अल्लाह	और वह जान लेंगे	सच (ठीक ठीक)	उन का बदला	अल्लाह

لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ

और पाक मर्द (जमा)	पाक मर्दों के लिए	और पाक औरतें	गन्दी औरतों के लिए	और गन्दे मर्द	गन्दे मर्दों के लिए

ع ٣ / ٩

لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾ ع

26	इ़ज़्ज़त की	और रोज़ी	मग़फ़िरत	उन के लिए	वह कहते हैं	उस से जो	पाक दामन हैं	यह लोग	पाक औरतों के लिए

बेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनों में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते। (19) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़क़त करने वाला, निहायत मेह्रबान है। (20) ऐ मोमिनो! तुम शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के क़दमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक्म देता है बेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21) और क़सम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वस्अ़त वाले कि वह क़राबतदारों को, मिस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिज्रत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (22) बेशक जो लोग पाक दामन, अन्जान मोमिन औ़रतों पर तुहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (23) जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24) उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25) गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लिए हैं, और गन्दे मर्द गन्दी औ़रतों के लिए हैं, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औ़रतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मग़फ़िरत और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ मोमिनों! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाख़िल न हो, यहां तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27)
फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाख़िल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28)
तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाख़िल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (ख़ूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29)
आप (स) फ़रमां दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से बाख़बर है जो वह करते हैं। (30)
और आप (स) फ़रमां दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने ख़ावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने ख़ुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह ख़िद्मतगार मर्द जो (औरतों से) ग़रज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाक़िफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊँ (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वालो! ताकि तुम दो जहान की कामयाबी पाओ। (31)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا

तुम इजाज़त ले लो	यहां तक कि	अपने घरों के सिवा	घर (जमा)	तुम न दाख़िल हो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ

फिर अगर	27	तुम नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	बेहतर है	यह	उन के (रहने) वाले	पर- को	और तुम सलाम कर लो

لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

तुम्हें कहा जाए	और अगर	तुम्हें	इजाज़त दी जाए	यहां तक कि	तो तुम न दाख़िल हो उस में	किसी को	उस में	तुम न पाओ

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ

नहीं	28	जानने वाला	तुम करते हो	वह जो	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	ज़ियादा पाकीज़ा	यही	तो तुम लौट जाया करो	तुम लौट जाओ

عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

जानता है	और अल्लाह	तुम्हारी	कोई चीज़	जिन में	ग़ैर आबाद	उन घरों में	तुम दाख़िल हो	अगर	कोई गुनाह	तुम पर

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا

और वह हिफ़ाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन मर्दों को	आप फ़रमा दें	29	तुम छुपाते हो	और जो	जो तुम ज़ाहिर करते हो

فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ

और फ़रमा दें	30	वह करते हैं	उस से जो	बाख़बर है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	ज़ियादा सुथरा	यह	अपनी शर्मगाहें

لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ

और वह ज़ाहिर न करें	अपनी शर्मगाहें	और वह हिफ़ाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन औरतों को

زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰي جُيُوْبِهِنَّ ۠

अपने सीने (गिरेबानों)	पर	अपनी ओढ़नियां	और डाले रहें	उस में से ज़ाहिर हुआ	जो	मगर	अपनी ज़ीनत

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اٰبَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

या	अपने शौहरों के बाप (ख़ुसर)	या	बाप (जमा)	या	अपने ख़ावन्दों पर	सिवाए	अपनी ज़ीनत	और वह ज़ाहिर न करें

اَبْنَاۗىِٕهِنَّ اَوْ اَبْنَاۗءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ

या	अपने भाई के बेटे (भतीजे)	या	अपने भाई	या	अपने शौहरों के बेटे	या	अपने बेटे

بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَاۗىِٕهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ

या ख़िद्मतगार मर्द	उन के दाएं हाथ (कनीज़ें)	या जिन के मालिक हुए	या अपनी (मुसलमान) औरतें	अपनी बहनों के बेटे (भान्जे)

غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰي

पर	वह वाक़िफ़ नहीं हुए	वह जो कि	या लड़के	मर्द	से	न ग़रज़ रखने वाले

عَوْرٰتِ النِّسَاۗءِ ۠ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ

से	जो छुपाए हुए हैं	कि वह जान (पहचान) लिया जाए	अपने पाऊँ	और वह न मारें	औरतों के पर्दे

زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

31	फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	ऐ ईमान वालो	सब	अल्लाह की तरफ़	और तुम तौबा करो	अपनी ज़ीनत

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ط

और अपनी कनीज़ें	अपने गुलाम	से	और नेक	अपने में से (अपनी)	बेवा औरतें	और तुम निकाह करो

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾

32	इल्म वाला	वस्अत वाला	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर देगा	तंग दस्त (जमा)	अगर वह हों

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ط

अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर दे	यहां तक कि	निकाह	नहीं पाते	वह लोग जो	और चाहिए कि बचे रहें

وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ

तो तुम उन से मकातिबत (आज़ादी की तहरीर) करलो	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	मालिक हों	उन में से जो	मकातिबत	चाहते हों	और जो लोग

اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ق وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ط

जो उस ने तुम्हें दिया	अल्लाह का माल	से	और तुम उनको दो	बेहतरी	उन में	अगर तुम जानो (पाओ)

وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ

सामान	ताकि तुम हासिल कर लो	पाक दामन रहना	अगर वह चाहें	बदकारी पर	अपनी कनीज़ें	और तुम न मजबूर करो

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ط وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	उन की मजबूरी	बाद	तो बेशक अल्लाह	उन्हें मजबूर करेगा	और जो	दुनिया	ज़िन्दगी

رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	से	और मिसालें	वाज़ेह	अहकाम	तुम्हारी तरफ़	हम ने नाज़िल किए	और तहक़ीक़	33	निहायत मेहरबान

ع ٨ ١٠ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ ع اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	नूर	अल्लाह	34	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	तुम से पहले	गुज़रे

وَالْاَرْضِ ط مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ط اَلْمِصْبَاحُ

चिराग़	एक चिराग़	उस में	जैसे एक ताक़	उस का नूर	मिसाल	और ज़मीन

فِيْ زُجَاجَةٍ ط اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ

दरख़्त	से	रोशन किया जाता है	एक सितारा चमकदार	गोया वह	वह शीशा	एक शीशे में

مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ لا يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ

ख़्वाह	रोशन हो जाए	उस का तेल	क़रीब है	और न मग़रिब का	न मशरिक़ का	ज़ैतून	मुबारक

لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ط نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ط يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط

वह जिस को चाहता है	अपने नूर की तरफ़	रहनुमाई करता है अल्लाह	रोशनी पर रोशनी	आग	उसे न छुए

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ط وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾ لا فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ

हुक्म दिया	उन घरों में	35	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	लोगों के लिए	मिसालें	और बयान करता है अल्लाह

اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ لا يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ لا

36	और शाम	सुबह	उन में	उस की	तस्बीह करते हैं	उस का नाम	उन में	और लिया जाए	कि बुलन्द किया जाए	अल्लाह

और तुम निकाह करो अपनी बेवा औरतों का और अपने नेक गुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से, और अल्लाह वस्अत वाला, इल्म वाला है। (32)

और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़्दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे गुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज़ इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (33)

और तहक़ीक़ हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किए वाज़े अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34)

अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक़ हो, उस में एक चिराग़ हो, चिराग़ एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है, वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शर्क़ी है न गरबी, क़रीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35)

(यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्बत) अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुबह शाम उस की तस्बीह करते हैं। (36)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ

नमाज़	और क़ाइम रखना	अल्लाह की याद	से	और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	तिजारत	उन्हें ग़ाफ़िल नहीं करती	वह लोग

وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ ﴿٣٧﴾

37	और आँखें	दिल (जमा)	उस में	उलट जाएंगे	उस दिन से	और डरते हैं	ज़कात	और अदा करना

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

रिज़्क़ देता है	और अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	जो उन्हों ने किया (आमाल)	बेहतर से बेहतर	ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ

सुराब की तरह	उन के अ़मल	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	38	बेहिसाब	जिसे चाहता है

بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا

कुछ भी	उस को नहीं पाता	जब वह वहां आता है	यहां तक कि	पानी	प्यासा	गुमान करता है	चटियल मैदान में

وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ ﴿٣٩﴾

39	तेज़ हिसाब करने वाला	और अल्लाह	उस का हिसाब	तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया	अपने पास	अल्लाह	और उस ने पाया

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

उस के ऊपर से	एक (दूसरी) मौज	उस के ऊपर से	मौज	उसे ढांप लेती है	गहरा पानी	दर्या में	या जैसे अन्धेरे

سَحَابٌ ۭ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۭ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ

तवक़्क़ो नहीं	अपना हाथ	वह निकाले	जब	बाज़ (दूसरे) के ऊपर	उस के बाज़ (एक)	अन्धेरे	बादल

يَرٰىهَا ۭ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ ع ٦ ١١

क्या तू ने नहीं देखा	40	कोई नूर	तो नहीं उस के लिए	नूर	उस के लिए	न बनाए (न दे) अल्लाह	और जिसे	तू उसे देख सके

اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۭ كُلٌّ

हर एक	पर फैलाए हुए	और परिन्दे	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	उस की	पाकीज़गी बयान करता है	कि अल्लाह

قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

और अल्लाह के लिए बादशाहत	41	वह करते हैं	वह जो	जानता है	और अल्लाह	अपनी तस्बीह	अपनी दुआ़	जान ली

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ

फिर	बादल (जमा)	चलाता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	42	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों

يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

और वह उतारता है	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश	फिर तू देखे	तह ब तह	वह उस को करता है	फिर	आपस में	मिलाता है वह

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ

जिस पर चाहे	उसे	फिर वह डाल देता है	ओले	से	उस में	पहाड़	से	आस्मानों से

وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

43	आँखों को	ले जाए	उस की बिजली	चमक	क़रीब है	जिस से चाहे	से	और उसे फेर देता है

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37)

ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़ियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39)

(या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तवक़्क़ो नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ़ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41)

और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह ब तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से बारिश निकलती है, और वह आस्मानो (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, क़रीब है कि उस की बिजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

44	आँखों वाले (अ़क़्ल मन्द)	इब्रत है	इस में	बेशक	और दिन	रात	बदलता है अल्लाह

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَاۗبَّةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ

और उन में से	अपने पेट पर	कोई चलता है	पस उन में से	पानी से	हर जानदार	पैदा किया	और अल्लाह

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰي رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓي اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ

अल्लाह पैदा करता है	चार पर	कोई चलता है	और उन में से	दो पाऊँ पर	कोई चलता है

مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ

वाज़ेह	आयतें	तहक़ीक़ हम ने नाज़िल की	45	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	जो वह चाहता है

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	और वह कहते हैं	46	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है	और अल्लाह

بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ

उस के बाद	उस में से	एक फ़रीक़	फिर गया	फिर	और हम ने हुक्म माना	और रसूल पर	अल्लाह पर

وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	वह बुलाए जाते हैं	और जब	47	ईमान वाले	और वह नहीं

لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

हक़	उन के लिए	हो	और अगर	48	मुँह फेर लेता है	उन में से	एक फ़रिक़	नागहां	उन के दरमियान	ताकि वह फ़ैसला कर दे

يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ ۭ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ

या	वह शक में पड़े हैं	या	कोई रोग	क्या उन के दिलों में	49	गर्दन झुकाए	वह आते हैं उस की तरफ़

ع ١٠ ١٢ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع

50	ज़ालिम (जमा)	वही	वह	बल्कि	और उस का रसूल	उन पर	ज़ुल्म करेगा अल्लाह	कि	वह डरते हैं

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ

ताकि वह फ़ैसला कर दें	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	वह बुलाए जाते हैं	जब	मोमिन (जमा)	बात	इस के सिवा नहीं है

بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ

और जो	51	फ़लाह पाने वाले	वही	और वह	और हम ने इताअ़त की	हम ने सुना	वह कहते हैं	कि- तो	उन के दरमियान

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	कामयाब होने वाले	वही	पस वह	और परहेज़गारी करे	अल्लाह	और डरे	और उस का रसूल	इताअ़त करे अल्लाह की

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ

फ़रमा दें	तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे	आप हुक्म दें उन्हें	अलबत्ता अगर	और ज़ोरदार क़समें	अल्लाह की	और उन्हों ने क़समें खाईं

لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	तुम करते हो	वह जो	ख़बर रखता है	बेशक अल्लाह	पसंदीदा	इताअ़त	तुम क़समें न खाओ

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, बेशक उस में इब्रत है अ़क़्ल मन्दों के लिए। (44) और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (45) तहक़ीक़ हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल कीं, और अल्लाह जिसे चहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46) और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुक्म माना, फिर उस के बाद उस में से एक फ़रीक़ फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47) और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दे तो नागहां उन में से एक फ़रीक़ मुँह फेर लेता है। (48) और अगर उन के लिए हक़ (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (ख़ुशी से) चले आते हैं। (49) क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50) मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दें, तो वह कहते है हम ने सुना और हम ने इताअ़त की और वही हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले। (51) और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52) और उन्हों ने अल्लाह की ज़ोरदार क़समें खाईं कि अगर आप (स) उन्हें हुक्म दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फ़रमां दें तुम क़समें न खाओ, पसंदीदा इताअ़त (मतलूब है), बेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ

उस पर	तो इस के सिवा नहीं	फिर अगर तुम फिर गए	रसूल की	और इताअ़त करो	तुम इताअ़त करो अल्लाह की	फ़रमा दें

مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى

पर	और नहीं	तुम हिदायत पालोगे	तुम इताअ़त करोगे	और अगर	जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे)	और तुम पर	जो बोझ डाला गया (ज़िम्मे)

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا

और काम किए	तुम में से	उन लोगों से जो ईमान लाए	अल्लाह ने वादा किया	54	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर-सिर्फ़	रसूल

الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	उस ने ख़िलाफ़त दी	जैसे	ज़मीन में	वह ज़रूर उन्हें ख़िलाफ़त देगा	नेक

مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ

और अलबत्ता वह ज़रूर बदल देगा उन के लिए	उन के लिए	उस ने पसंद किया	जो	उन का दीन	उन के लिए	और ज़रूर कुव्वत देगा	उन से पहले

مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ

और जिस	कोई शै	मेरा	वह शरीक न करेंगे	वह मेरी इबादत करेंगे	अम्न	उन का ख़ौफ़	बाद

كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और तुम क़ाइम करो	55	नाफ़रमान (जमा)	पस वही लोग	उस के बाद	नाशुक्री की

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

हरगिज़ गुमान न करें	56	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	रसूल	और इताअ़त करो	ज़कात	और अदा करो तुम

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ

और अलबत्ता बुरा	दोज़ख़	उन का ठिकाना	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले हैं	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ ع ٧ ١٣

मालिक हुए	वह जो कि	चाहिए कि इजाज़त लें तुम से	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	57	ठिकाना

اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ

बार-वक़्त	तीन	तुम में से	एहतिलाम-शुऊर	नहीं पहुँचे	और वह लोग जो	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)

مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ

दोपहर	से-को	अपने कपड़े	उतार कर रख देते हो	और जब	नमाज़े फ़ज्र	पहले

وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۛ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ

नहीं तुम पर	तुम्हारे लिए	पर्दा	तीन	नमाज़े इशा	और बाद

وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى

पर-पास	तुम में से बाज़ (एक)	तुम्हारे पास	फेरा करने वाले	उन के बाद-अ़लावा	कोई गुनाह	और न उन पर

بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

58	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अहकाम	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	बाज़ (दूसरे)

आप (स) फ़रमां दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअ़त करो, फिर आगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी क़दर है जो उस के ज़िम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे ज़िम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअ़त करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (54)

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्हों ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर ख़िलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को ख़िलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इस्तेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए ख़ौफ़ के बाद ज़रूर अम्न से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुक्री की, पस वही लोग नाफ़रमान हैं। (55)

और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो, और रसूल की इताअ़त करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (56)

हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (57)

ऐ ईमान वालो! चाहिए कि तुम्हारे गुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाज़े फ़ज्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाज़े इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औक़ात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अ़लावा (औक़ात में), तुम में से बाज़, बाज़ के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (58)

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا

जैसे	पस चाहिए कि वह इजाज़त लें	(हदे) शऊर को	तुम में से	बच्चे	पहुँचें	और जब

اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	उन से पहले	वह जो	इजाज़त लेते थे

اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ

वह जो	औरतों में से	और ख़ाना नशीन बूढ़ी	59	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपने अहकाम

لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ

कि वह उतार रखें	कोई गुनाह	उन पर	तो नहीं	निकाह	आरज़ू नहीं रखती हैं

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ

वह बचें	और अगर	ज़ीनत को	न ज़ाहिर करते हुए	अपने कपड़े

خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى

नाबीना पर	नहीं	60	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ

कोई गुनाह	बीमार पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और न	कोई गुनाह

وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ

अपने घरों से	कि तुम खाओ	ख़ुद तुम पर	और न

اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ

या अपने भाइयों के घरों से	या अपनी माँओ के घरों से	या अपने बापों के घरो से

اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ

या अपनी फूफियों के घरों से	या अपने ताए चचाओं के घरों से	या अपनी बहनों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ

जिस (घर) की तुम्हारे क़ब्ज़े में हों	या	या अपनी ख़ालाओं के घरों से	या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से

مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ

कि	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं	या अपने दोस्त (के घर से)	उस की कुन्जियां

تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا

तुम दाख़िल हो घरों में	फिर जब	जुदा जुदा	या	साथ साथ	तुम खाओ

فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً

बाबरकत	अल्लाह के हां	से	दुआए ख़ैर	अपने लोगों को	तो सलाम करो

ع ٨ ١٤ طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۱﴾

61	समझो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	पाकीज़ा

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59) और जो ख़ाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरज़ू नहीं रखतीं, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60) कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न ख़ुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरो से, या अपनी माँओ के घरों से, या अपने भाइयों के घरो से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फुफियों के घरों से, या अपने ख़ालू, मामूओं के घरों से, या अपनी ख़लाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियां तुम्हारे क़बज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकटठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए ख़ैर अल्लाह के हां से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا

वह होते हैं	और जब	और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	जो ईमान लाए (यक़ीन किया)	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं

مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ

बेशक	वह उस से इजाज़त लें	जब तक	वह नहीं जाते	सब मिल कर करने का काम	पर-में	उस के साथ

الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ

और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वह जो	यही लोग	इजाज़त मांगते हैं आप (स) से	जो लोग

فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ

उन में से	आप चाहें	जिस को	तो इजाज़त दे दें	अपने काम	किसी के लिए	वह तुम से इजाज़त मांगें	पस जब

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (٦٢) لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ

बुलाना	तुम न बना लो	62	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह (से)	और बख़्शिश मांगें

الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ

जो लोग	अल्लाह	तहक़ीक़ जानता है	बाज़ (दूसरे) को	अपने बाज़ (एक)	जैसे बुलाना	अपने दरमियान	रसूल को

يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ

उस के हुक्म से	ख़िलाफ़ करते हैं	जो लोग	पस चाहिए कि वह डरें	नज़र बचा कर	तुम में से	चुपके से खिसक जाते हैं

أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (٦٣) أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا

जो	याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए	63	दर्दनाक	अ़ज़ाब	या पहुँचे उन को	कोई आफ़त	पहुँचे उन पर	कि

فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ

और जिस दिन	उस पर	तुम	जो-जिस	तहक़ीक़ वह जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में

يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (٦٤) ع ٩ ٣ ١٥

64	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उन्हों ने किया	जो-जिस	फिर वह उन्हें बताएगा	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे

آيَاتُهَا ٧٧ ❀ سُورَةُ الْفُرْقَانِ (٢٥) ❀ رُكُوعَاتُهَا ٦

आयात 77 — (25) सूरतुल फ़ुरक़ान — कसौटी — रुकूआत 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا (١)

1	डराने वाला	सारे जहानों के लिए	ताकि वह हो	अपने बन्दे पर	नाज़िल किया फ़र्क़ करने वाली किताब (क़ुरआन)	वह जो-जिस	बड़ी बरकत वाला

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن

और नहीं है	कोई बेटा	और उस ने नहीं बनाया	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	वह जिस के लिए

لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا (٢)

2	एक अन्दाज़ा	फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया	हर शै	और उस ने पैदा किया	सलतनत में	कोई शरीक	उस का

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यक़ीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें, बेशक जो लोग आप (स) से इजाज़त मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (62)

तुम न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहक़ीक़ अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुँचे। (63)

याद रखो! बेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहक़ीक़ वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्हों ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (64)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर "फ़ुरक़ान" (अच्छे बुरे में फ़र्क़ और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे जहानों के लिए डराने वाला हो। (1)

वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। (2)

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

पैदा किए गए हैं	बल्कि वह	कुछ	वह नहीं पैदा करते	माबूद	उस के अ़लावा	और उन्हों ने बना लिए

وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا

किसी मौत का	और न वह इख़्तियार रखते हैं	और न किसी नफ़ा का	किसी नुक़्सान का	अपने लिए	और वह इख़्तियार नहीं रखते

وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

मगर-सिर्फ़	नहीं यह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	3	और न फिर उठने का	और न किसी ज़िन्दगी का

معانقة ١٠ عند المتاخرين ١٢

اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ

तहक़ीक़ वह आगए	दूसरे लोग (जमा)	उस पर	उस की मदद की	उस ने उसे घड़ लिया है	बहुतान-मन घड़त

ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿٤﴾ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى

पस वह पढ़ी जाती हैं	उस ने उन्हें लिख लिया है	पहले लोग	कहानियाँ	और उन्हों ने कहा	4	और झूट	ज़ुल्म

عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

राज़	जानता है	वह जो	उस को नाज़िल किया है	फ़रमा दें	5	और शाम	सुबह	उस पर

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوْا

और उन्हों ने कहा	6	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक वह है	और ज़मीन	आस्मानों में

مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ

बाज़ार (जमा)	में	चलता (फिरता) है	खाना	वह खाता है	यह रसूल	कैसा है

لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿٧﴾ اَوْ يُلْقٰٓى

या डाला (उतारा) जाता	7	डराने वाला	उस के साथ	कि होता वह	कोई फ़रिश्ता	उस के साथ	उतारा गया	क्यों न

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम (जमा)	और कहा	उस से	वह खाता	उस के लिए कोई बाग़	या होता	कोई ख़ज़ाना	उस की तरफ़

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٨﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ

तुम्हारे लिए	उन्हों ने बयान कीं	कैसी	देखो	8	जादू का मारा हुआ	एक आदमी	मगर-सिर्फ़	नहीं तुम पैरवी करते

ع ٩ ١٦

الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ

वह जो	बड़ी बरकत वाला	9	रास्ता (सीधा)	लिहाज़ा न पा सकते हैं	सो वह बहक गए	मिसालें (बातें)

اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	बाग़ात	उस से	बेहतर	तुम्हारे लिए	वह बना दे	अगर चाहे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	10	महल (जमा)	तुम्हारे लिए	और बना दे	नहरें	जिन के नीचे

بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾

11	दोज़ख़	क़ियामत को	उस के लिए जिस ने झुटलाया	और हम ने तैयार किया	क़ियामत को

और उन्हों ने उस के अ़लावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (ख़ुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख़्तियार नहीं रखते किसी नुक़्सान का, और न किसी नफ़ा का, और न वह इख़्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3)
और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बहुतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहक़ीक़ वह आगए (उतर आए) हैं ज़ुल्म और झूट पर। (4)
और उन्हों ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती हैं (सुनाई जाती हैं) सुब्ह और शाम। (5)
आप (स) फ़रमां दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, बेशक वह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (6)
और उन्हों ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7)
या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई ख़ज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8)
ऐ नबी (स)! देखो तो उन्हों ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान कीं हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9)
बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बाग़ात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10)
बल्कि उन्हों ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख़) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)
और जब वह उस (दोज़ख़) की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़न्जीरों से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)
(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)
आप (स) फ़रमां दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग़, जिन का वादा परहेज़गारों से किया गया है, वह उन के लिए जज़ा और लौट कर जाने की जगह है। (15)
उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)
और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह खुद रास्ते से भटक गए? (17)
वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के बाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)
पस उन्हों (तुम्हारे माबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अ़ज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे। (19)
और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यक़ीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आज़माइश, क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾

12	और चिंघाड़ती	जोश मारती	उसे	वह सुनेंगे	दूर	जगह	से	वह देखेगी उन्हें	जब

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ

वहां	वह पुकारेंगे	जकड़े हुए	तंग	किसी जगह	उस से-की	वह डाले जाएंगे	और जब

ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا

मौतें	बल्कि पुकारो	एक	मौत को	आज	तुम न पुकारो	13	मौत

كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ

वादा किया गया	जो-जिस	हमेशगी के बाग़	या	बेहतर	क्या यह	फ़रमा दें	14	बहुत सी

الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

जो वह चाहेंगे	उस में	उन के लिए	15	लौट कर जाने की जगह	जज़ा (बदला)	उन के लिए	वह है	परहेज़गार (जमा)

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

वह उन्हें जमा करेगा	और जिस दिन	16	ज़िम्मेदाराना	एक वादा	तुम्हारे रब के ज़िम्मे	है	हमेशा रहेंगे

وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ

तुम ने गुमराह किया	क्या तुम	तो वह कहेगा	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	और जिन्हें

عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ

तू पाक है	वह कहेंगे	17	रास्ता	भटक गए	या वह	यह हैं-उन	मेरे बन्दे

مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ

मददगार	कोई	तेरे सिवा	हम बनाएं	कि	हमारे लिए	सज़ावार-लाइक़	न था

وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا

और वह थे	याद	वह भूल गए	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	तू ने आसूदगी दी उन्हें	और लेकिन

قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا

फेरना	पस अब तुम नहीं कर सकते हो	वह जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात)	पस उन्हों ने तुम्हें झुटला दिया	18	हलाक होने वाले लोग

وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

19	बड़ा	अ़ज़ाब	हम चखाएंगे उसे	तुम में से	वह ज़ुल्म करेगा	और जो	और न मदद करना

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ

अलबत्ता खाते थे	वह यक़ीनन	मगर	रसूल (जमा)	से	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं

الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ

तुम में से बाज़ को (किसी को)	और हम ने किया (बनाया)	बाज़ारों में	और चलते फिरते थे	खाना

لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع ٢ ٢١ ١٧

20	देखने वाला	तुम्हारा रब	और है	क्या तुम सब्र करोगे	आज़माइश	बाज़ (दूसरों के लिए)

الجزء ١٩

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

हम पर	उतारे गए	क्यों न	हम से मिलना	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	और कहा

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا

और उन्हों ने सरकशी की	अपने दिलों में	तहक़ीक़ उन्हों ने तकब्बुर किया	अपना रब	या हम देख लेते	फ़रिश्ते

عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ

मुज्‌रिमों के लिए	उस दिन	नहीं ख़ुशख़बरी	फ़रिश्ते	वह देखेंगे	जिस दिन	21	बड़ी सरकशी

وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ

कोई काम	जो उन्हों ने किए	तरफ़	और हम आए (मुतवज्जुह होंगे)	22	रोकी हुई	कोई आड़ हो	और वह कहेंगे

فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا

ठिकाना	बहुत अच्छा	उस दिन	जन्नत वाले	23	बिखरा हुआ (परागन्दा)	गुबार	तो हम करदेंगे उन्हें

وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़रिश्ते	और उतारे जाएंगे	बादल से	आस्मान	फट जाएगा	और जिस दिन	24	आराम गाह	और बेहतरीन

تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا

वह दिन	और है-होगा	रहमान के लिए	सच्ची	उस दिन	बादशाहत	25	बकस्‌रत उतरना

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ

वह कहेगा	अपने हाथों को	ज़ालिम	काट खाएगा	और जिस दिन	26	सख़्त	काफ़िरों पर

يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ

काश मैं	हाए मेरी शामत	27	रास्ता	रसूल के साथ	पकड़ लेता	ऐ काश! मैं

لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ؕ

मेरे पास पहुँच गई	उस के बाद जब	नसीहत से	अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया	28	दोस्त	फ़लां को	न बनाता

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ

बेशक	ऐ मेरे रब	रसूल (स)	और कहेगा	29	खुला छोड़ जाने वाला	इन्सान को	शैतान	और है

قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

हर नबी के लिए	हम ने बनाए	और इसी तरह	30	मतरूक (छोड़ने के क़ाबिल)	इस कुरआन को	ठहरा लिया उन्हों ने	मेरी क़ौम

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

31	और मददगार	हिदायत करने वाला	तुम्हारा रब	और काफ़ी है	गुनाहगारों (मुज्‌रिमीन)	से	दुश्मन

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ

एक ही बार	कुरआन	उस पर	नाज़िल किया गया	क्यों न	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

32	ठहर ठहर कर	और हम ने उस को पढ़ा	तुम्हारा दिल	उस से	ताकि हम क़व्वी करें	इसी तरह

ع ٧ عند المتقدمين ١٢

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्हों ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहक़ीक़ उन्हों ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)
जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुज्‌रिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आड़ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)
और हम मुतवज्जुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ़ तो हम उन्हें परागन्दा गुबार की तरह करदेंगे। (23)
उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)
और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे बकस्‌रत। (25)
उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त होगा। (26)
और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)
हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)
अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तन्हा छोड़ जाने वाला है। (29)
और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया (मतरूक कर रखा)। (30)
और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)
और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर कुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने बतद्‌रीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया) ठहर ठहर कर। (32)

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33) जो लोग अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34) और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुआविन बनाया। (35) पस हम ने कहा तुम दोनों उस क़ौम की तरफ़ जाओ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36) और क़ौमे नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें ग़र्क़ कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इब्रत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अज़ाब। (37) और आद और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नस्लें। (38) और हम ने हर एक के लिए मिसालें बयान कीं (मगर उन्हों ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39) तहक़ीक़ वह आए उस (क़ौमे लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40) और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ़ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41) क़रीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42) क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी ख़ाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो जाओगे? (43) क्या तुम समझते हो कि उन में से अक्सर सुनते या अक़्ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	33	वज़ाहत	और बहतरीन	ठीक (जवाब)	हम पहुँचा देते हैं तुम्हें	मगर	कोई बात	और वह नहीं लाते तुम्हारे पास

يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ

और बहुत बहके हुए	मुक़ाम	बदतरीन	वही लोग	जहन्नम की तरफ़	अपने मुँह	पर-बल	जमा किए जाएंगे

سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ع ٣ ١٤ ١

हारून (अ)	उस का भाई	उस के साथ	और हम ने बनाया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	34	रास्ते से

وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ

तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें	हमारी आयतें	जिन्हों ने झुटलाया	क़ौम की तरफ़	तुम दोनों जाओ	पस हम ने कहा	35	वज़ीर (मुआविन)

تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	और हम ने बनाया उन्हें	हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	रसूल (जमा)	जब उन्हों ने झुटलाया	और क़ौमे नूह (अ)	36	बुरी तरह हलाक

اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟

और समूद	और आद	37	दर्दनाक	एक अज़ाब	ज़ालिमों के लिए	और तैयार किया हम ने	एक निशानी

وَّاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस को	हम ने बयान कीं	और हर एक को	38	बहुत सी	उन के दरमियान	और नस्लें	और कुएं वाले

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ

बरसाई गई	वह जिस पर	बस्ती	पर	और तहक़ीक़ वह आए	39	तबाह कर के	हम ने मिटा दिया	और हर एक को	मिसालें

مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

वह उम्मीद नहीं रखते	बल्कि	उस को देखते	तो क्या वह न थे	बुरी बारिश

نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا

क्या यह	तमसख़ुर (ठट्ठा)	मगर (सिर्फ़)	वह बनाते तुम्हें	नहीं	देखते हैं तुम्हें वह	और जब	40	जी उठना

الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ

अगर न	हमारे माबूदों से	कि वह हमें बहका देता	क़रीब था	41	रसूल	भेजा अल्लाह ने	वह जिसे

اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ

अज़ाब	वह देखेंगे	जिस वक़्त	वह जान लेंगे	और जल्द	उस पर	हम जमे रहते

مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ

तो क्या तु	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	जिस ने बनाया	क्या तुम ने देखा?	42	रास्ते से	कौन बदतरीन गुमराह

تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ

सुनते हैं	उन के अक्सर	कि	क्या तुम समझते हो?	43	निगहबान	उस पर	हो जाएगा

اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ ع ٤ ٢

44	राह से	बदतरीन गुमराह	बल्कि वह	चौपायों जैसे	मगर	नहीं वह	या अक़्ल से काम लेते हैं

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ

फिर	साकिन	तो उसे बनादेता	और अगर वह चाहता	दराज़ किया साया	कैसे	अपना रब	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾

46	आहिस्ता आहिस्ता	खींचना	अपनी तरफ़	हम ने समेटा उस को	फिर	45	एक दलील	उस पर	सूरज	हम ने बनाया

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ

और बनाया	राहत	और नीन्द	पर्दा	रात	तुम्हारे लिए	जिस ने बनाया	और वह

النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ

आगे	ख़ुशख़बरी	भेजीं हवाएं	जिस ने	और वही	47	उठने का वक़्त	दिन

يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ

ताकि हम ज़िन्दा कर दें उस से	48	पानी पाक	आस्मान से	और हम ने उतारा	अपनी रहमत

بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

49	बहुत से	और आदमी	चौपाए	हम ने पैदा किया	उस से जो	और हम पिलाएं उसे	शहर मुर्दा

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

50	नाशुक्री	मगर	अक्सर लोग	पस क़ुबूल न किया	ताकि वह नसीहत पकड़ें	उन के दरमियान	और तहक़ीक़ हम ने उसे तक़सीम किया

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों	पस न कहा मानें आप (स)	51	एक डराने वाला	हर बस्ती	में	तो हम भेज देते	हम चाहते	और अगर

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا

यह	दो दर्या	मिलाया	जिस ने	और वही	52	बड़ा जिहाद	इस के साथ	और जिहाद करें उन से

عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا

और आड़	एक पर्दा	उन दोनों के दरमियान	और उस ने बनाया	तल्ख़ बदमज़ा	और यह	ख़ुशगवार	शीरीं

مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا

नसब	फिर बनाए उस के	बशर	पानी से	पैदा किया	जिस ने	और वही	53	मज़बूत आड़

وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	54	क़ुदरत वाला	तेरा रब	और है	और सुस्राल

مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ

अपना रब	पर-ख़िलाफ़	काफ़िर	और है	और न उन का नुक़्सान कर सके	न नफ़ा पहुँचाए	जो

ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ

नहीं मांगता तुम से	फ़रमा दें	56	और डराने वाला	मगर ख़ुशख़बरी देने वाला	भेजा हम ने आप को	और नहीं	55	पुश्त पनाही करने वाला

عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

57	रास्ता	अपने रब तक	कि इख़्तियार करले	जो चाहे	मगर	अजर	कोई	इस पर

क्या तुम ने अपने रब की (क़ुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45)

फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर। (46)

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक़्त बनाया। (47)

और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं ख़ुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजीं, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48)

ताकि उस में से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49)

और तहक़ीक़ हम ने उसे उन के दरमियान तक़सीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक्सर लोगों ने क़ुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50)

और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51)

पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा जिहाद करें। (52)

और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ़ का पानी) ख़ुशगवार शीरीं है और यह (दूसरा) तल्ख़ बदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक ग़ैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53)

और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्राल, और तेरा रब क़ुदरत वाला है। (54)

और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक़्सान कर सके, और काफ़िर अपने रब के ख़िलाफ़ पुश्त पनाही करने वाला है। (55)

और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56)

आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख़्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ

और काफ़ी है वह	उस की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान कर	जिसे मौत नहीं	हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर	और भरोसा कर

بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۚ ۛ ٥٨ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	58	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों की	गुनाहों से

وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ

तो पूछो	जो रहम करने वाला	अ़र्श पर	फिर क़ाइम हुआ	छः (6) दिन	में	और जो उन दोनों के दरमियान

ع ٨
عدد المتقدمين ١٢

بِهٖ خَبِيْرًا ٥٩ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ

और क्या है रहमान	वह कहते हैं	रहमान को	तुम सिज्दा करो	उन से	कहा जाए	और जब	59	किसी बाख़बर	उस के मुतअ़ल्लिक़

اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ٦٠ السجدة تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ

बनाए	वह जिस ने	बड़ी बरकत वाला है	60	बिदकना	उस ने बढ़ा दिया उन का	जिसे तू सिज्दा करने को कहे	क्या हम सिज्दा करें

السجدة ٧
ع ١٦
٣

فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ٦١

61	रोशन	और चाँद	चिराग़ (सूरज)	उस में	और बनाया	बुर्ज (जमा)	आस्मानों में

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ

कि वह नसीहत पकड़े	उस के लिए जो चाहे	एक दूसरे के पीछे आने वाला	और दिन	रात	जिस ने बनाया	और वही

اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ٦٢ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ

ज़मीन पर	चलते हैं	वह कि	और रहमान के बन्दे	62	शुक्र गुज़ार बनना	या चाहे

هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ٦٣ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ

रात काटते हैं	और वह जो	63	सलाम	कहते हैं वह	जाहिल (जमा)	उन से बात करते हैं	और जब	नरम चाल

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ٦٤ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

हम से	फेर दे	ऐ हमारे रब	कहते हैं	और वह जो	64	और क़ियाम करते	सिज्दा करते	अपने रब के लिए

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۖ ٦٥ اِنَّهَا سَآءَتْ

बुरी	बेशक वह	65	लाज़िम हो जाने वाला है	उस का अ़ज़ाब	बेशक	जहन्नम का अ़ज़ाब

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ٦٦ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ

और न	न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं	जब वह ख़र्च करते हैं	और वह लोग जो	66	और (बुरा) मुक़ाम	ठहरने की जगह

يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ٦٧ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ

नहीं पुकारते	और वह जो	67	एतिदाल	उस के दरमियान	और है	तंगी करते हैं

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ

हराम किया अल्लाह ने	जिसे	जान	और वह क़त्ल नहीं करते	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ

اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۙ ٦٨

68	वह दो चार होगा बड़ी सज़ा	यह	करेगा	और जो	और वह ज़िना नहीं करते	मगर जहां हक़ हो

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफ़ी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। **(58)**

वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अ़र्श पर क़ाइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअ़ल्लिक़ किसी बाख़बर से पूछो। **(59)**

और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का बिदकना और बढ़ा दिया। **(60)**

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। **(61)**

और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। **(62)**

और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। **(63)**

और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। **(64)**

और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का अ़ज़ाब फेर दे, बेशक उस का अ़ज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। **(65)**

बेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। **(66)**

और वह लोग कि जब वह ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतिदाल की है। **(67)**

और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) माबूद, और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है, मगर जहां हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। **(68)**

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا

सिवाए	69	ख़ार हो कर	उस में	और वह हमेशा रहेगा	रोज़े क़ियामत	अज़ाब	उस के लिए	दोचन्द कर दिया जाएगा

مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ

उन की बुराइयां	अल्लाह बदल देगा	पस यह लोग	नेक अ़मल	और अ़मल किए उस ने	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की

حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا

नेक	और अ़मल किए	और जिस ने तौबा की	70	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	और है अल्लाह	भलाइयों से

فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ

झूट	गवाही नहीं देते	और वह लोग जो	71	रुजूअ़ करने का मुक़ाम	अल्लाह की तरफ़	रुजूअ़ करता है	तो बेशक वह

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

उन के रब के अहकाम से	जब उन्हें नसीहत की जाती है	और वह लोग जो	72	बुज़ुरगाना	गुज़रते हैं	बेहूदा से	वह गुज़रें	और जब

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا

ऐ हमारे रब अ़ता फ़रमा हमें	कहते हैं वह	और वह लोग जो	73	और अँधों की तरह	बहरों की तरह	उन पर	नहीं गिर पड़ते

مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

74	इमाम (पेश्वा)	परहेज़गारों का	और बना दे हमें	ठंडक आँखों की	और हमारी औलाद	हमारी बीवियां	से

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ ۙ

75	और सलाम	दुआए ख़ैर	और पेशवाई किए जाएंगे उस में	उन के सब्र की बदौलत	बाला ख़ाने	इन्आम दिए जाएंगे	यह लोग

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

तुम्हारी	परवाह नहीं रखता	फ़रमा दें	76	और मस्कन	आरामगाह	अच्छी है	उस में	वह हमेशा रहेंगे

الربع ١٧ — رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77	लाज़मी	होगी	पस अनक़रीब	झुटलाया तुम ने	अगर न पुकारो तुम	मेरा रब

آيَاتُهَا ٢٢٧ ❀ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ (٢٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

आयात 227 — (26) सूरतुश शुअ़रा / शायर (जमा) — रुकुआत 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

المنزل ٥ — طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

हलाक कर लोगे	शायद तुम	2	रोशन किताब	आयतें	यह	1	ता सीन मीम

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

उन पर	हम उतार दें	अगर हम चाहें	3	ईमान लाते	कि वह नहीं	अपने तईं

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

4	पस्त	उस के आगे	उन की गर्दनें	तो हो जाएं	कोई निशानी	आस्मान से

रोज़े क़ियामत उस के लिए अ़ज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, ख़ार हो कर। (69)

सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अ़मल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और जिस ने तौबा की और नेक अ़मल किए तो बेशक वह रुजूअ़ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ़ करने का मुक़ाम (हक़) है। (71)

और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुज़ुर्गाना (सन्जीदगी के अन्दाज़ से)। (72)

और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अँधों की तरह। (73)

और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्वा। (74)

उन लोगों को उन के सब्र की बदौलत (जन्नत के) बाला ख़ाने इन्आम दिए जाएंगे और वह उस में दुआए ख़ैर और सलाम से पेश्वाई किए जाएंगे। (75)

वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्कन। (76)

आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अ़नक़रीब (उस की सज़ा) लाज़िमी होगी। (77)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ता-सीन-मीम। (1)

यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2)

शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तईं हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3)

अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दनें पस्त हो जाएं। (4)

और उन के पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5) पस बेशक उन्हों ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की ख़बरें आएंगी (हक़ीक़त मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (6) क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस क़द्र उम्दा उम्दा हर क़िस्म की चीज़ें जोड़ा जोड़ा उगाई हैं। (7) बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं हैं ईमान लाने वाले। (8) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9) और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10) (यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11) उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देशह है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12) और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी ज़बान (ख़ूब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ़ पैग़ाम भेज। (13) और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल न कर दें। (14) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15) पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम जहानों के रब के रसूल हैं। (16) कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17) फ़िरऔन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18) और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़िबती का क़त्ल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19) मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20) जब मैं तुम से ड़रा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूव्वत दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21) और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को गुलाम बनाया। (22) फ़िरऔन ने कहा, और क्या है सारे जहान का रब! (23)

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

उस से	हो जाते हैं वह	मगर	नई	रहमान	(तरफ़) से	कोई नसीहत	और नहीं आती उन के पास

مُعْرِضِيْنَ ۵ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	ख़बरें	तो जल्द आएंगी उन के पास	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	5	रूगरदान

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۶ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ

हर क़िस्म	उस में	उगाई हम ने	किस क़द्र	ज़मीन की तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	6	मज़ाक़ उड़ाते

زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۷ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۸

8	ईमान लाने वाले	उन में अक्सर	और नहीं हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	7	उम्दा	जोड़ा जोड़ा

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۹ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰۤى اَنِ ائْتِ ع ۹ ۵

कि तू जा	मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पुकारा (फ़रमाया)	और जब	9	रहम करने वाला	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۱۰ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۱۱ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	11	क्या वह मुझ से नहीं डरते	क़ौमे फ़िरऔन	10	ज़ालिम लोग

اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۱۲ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ

मेरी ज़बान	और नहीं चलती	मेरा सीना (दिल)	और तंग होता है	12	वह मुझे झुटलाएंगे	कि	बेशक मैं डरता हूँ

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۱۳ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۱۴

14	कि वह मुझे क़त्ल (न) कर दें	पस मैं डरता हूँ	एक इल्ज़ाम	मुझ पर	और उनका	13	हारून	तरफ़	पस पैग़ाम भेज

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۱۵ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	पस तुम दोनों जाओ	15	सुनने वाले	तुम्हारे साथ	बेशक हम	पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ	हरगिज़ नहीं	फ़रमाया

فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۱۶ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۱۷

17	बनी इस्राईल	हमारे साथ	तू भेज दे	कि	16	तमाम जहानों का रब	बेशक हम रसूल	तो उसे कहो

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۱۸

18	कई बरस	अपनी उम्र के	हमारे दरमियान	और तू रहा	बचपन में	अपने दरमियान	क्या हम ने तुझे नहीं पाला	फ़िरऔन ने कहा

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۱۹ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ

मैं ने वह किया था	मूसा (अ) ने कहा	19	नाशुक्रे	से	और तू	जो तू ने किया	अपना (वह) काम	और तू ने किया

اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۲۰ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ

पस अ़ता किया मुझे	जब मैं डरा तुम से	तुम से	तो मैं भाग गया	20	राह से बेख़बर (जमा)	से	और मैं	जब

رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۲۱ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ

तू उस का एहसान रखता है मुझ पर	नेमत	और यह	21	रसूल (जमा)	से	और मुझे बनाया	हुक्म	मेरा रब

اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۲۲ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۲۳

23	सारे जहान	रब	और क्या है	फ़िरऔन ने कहा	22	बनी इस्राईल	कि तू ने गुलाम बनाया

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَاؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

24	यक़ीन करने वाले	तुम हो	अगर	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	रब है आस्मानों का	उस ने कहा

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	(मूसा अ) ने कहा	25	क्या तुम सुनते नहीं	उस के इर्द गिर्द	उन्हें जो	उस से कहा

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

27	अलबत्ता दीवाना	तुम्हारी तरफ़	भेजा गया	वह जो	तुम्हारा रसूल	बेशक	फ़िरऔन बोला	26	पहले

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَاؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	तुम समझते हो	अगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और मग़्रिब	मश्‌रिक़	रब	मूसा (अ) ने कहा

قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	क़ैदी (जमा)	से	तो मैं ज़रूर करदूँगा तुझे	मेरे सिवा	कोई माबूद	तू ने बनाया	अलबत्ता अगर	वह बोला

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ

से	अगर तू है	तू ले आ उसे	वह बोला	30	वाज़ेह	एक शै (मोजिज़ा)	अगरचे में लाऊँ तेरे पास	(मूसा अ) ने कहा

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

अपना हाथ	और उस ने खींचा (निकाला)	32	खुला (नुमायां)	अज़्दहा	तो अचानक वह	अपना अ़सा	पस मूसा (अ) ने डाला	31	सच्चे

ع ٢ ٢٩ ٦

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ

जादूगर	बेशक यह	अपने गिर्द	सरदारों से	फ़िरऔन ने कहा	33	देखने वालों के लिए	चमकता हुआ	तो यकायक वह

عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	तो क्या तुम हुक्म (मश्‌वरा) देते हो	अपने जादू से	तुम्हारी सर ज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	यह चाहता है	34	दाना, माहिर

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ

ले आएं तेरे पास	36	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों	में	और भेज	और उस के भाई को	मोहलत दे उसे	वह बोले

بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

38	जाने पहचाने (मुअ़य्यन)	एक दिन	मुक़र्ररा वक़्त पर	जादूगर	पस जमा किए गए	37	माहिर	तमाम बड़े जादूगर

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ

अगर	जादूगर (जमा)	पैरवी करें	ताकि हम	39	जमा होने वाले हो (जमा होगे)	तुम	क्या	लोगों से	और कहा गया

كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَىِٕنَّ لَنَا

क्या यक़ीनन हमारे लिए	फ़िरऔन से	उन्हों ने कहा	जादूगर	आए	पस जब	40	ग़ालिब (जमा)	हों वह

لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

अलबत्ता-से	उस वक़्त	और बेशक तुम	हां	उस ने कहा	41	ग़ालिब (जमा)	हम	हम हुए	अगर	कुछ इन्आ़म

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	डालने वाले	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा	42	मुक़र्रबीन

मूसा (अ) ने कहाः रब है आस्मानों
का और ज़मीन का, और जो उन
के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन
करने वाले हो। (24)
उस ने अपने इर्द गिर्द वालों से
कहा, क्या तुम सुनते नहीं! (25)
मूसा (अ) ने कहाः रब है तुम्हारा
और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा
का। (26)
फ़िरऔन बोला, बेशक तुम्हारा
रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया
है अलबत्ता दीवाना है। (27)
मूसा (अ) ने कहाः रब है मश्‌रिक़
का और मग़्रिब का, और जो उन
दोनों के दरमियान है, अगर तुम
समझते हो। (28)
वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई
और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं
ज़रूर तुझे क़ैद करदूँगा। (29)
मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास
एक वाज़ेह मोजिज़ा लाऊँ? (30)
वह बोला तू उसे ले आ अगर तू
सच्चों में से है (सच्चा है)। (31)
पस मूसा (अ) ने अपना अ़सा डाला
तो वह अचानक नुमायां अज़्दहा
बन गया। (32)
और उस ने अपना हाथ (गरेबान से)
निकाला तो नागाह वह देखने वालों के
लिए चमकता दिखाई देने लगा। (33)
फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के
सरदारों से कहा बेशक यह माहिर
जादूगर है। (34)
वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के
ज़ोर) से तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल
दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? (35)
वह बोले उसे और उस के भाई को
मोहलत दे, और शहरों में नक़ीब
भेज। (36)
कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर
जादूगर ले आएं। (37)
पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअ़य्यन
दिन, वक़्त मुक़र्ररा पर। (38)
और लोगों से कहा गया क्या तुम
जमा होगे? (39)
ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की,
अगर वह ग़ालिब हूँ। (40)
जब जादूगर आए तो उन्हों ने
फ़िरऔन से कहा क्या हमारे लिए
यक़ीनी तौर पर कुछ इन्आ़म होगा?
अगर हम ग़ालिब आए। (41)
उस ने कहा हां! तुम उस वक़्त बेशक
(मेरे) मुक़र्रबीन में से होगे। (42)
कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ)
डालो जो तुम डालने वाले हो। (43)

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ

बेशक अलबत्ता हम	फ़िरऔन	इक़्बाल से	और बोले वह	और अपनी लाठियां	अपनी रस्सियां	पस उन्हों ने डाले

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	जो उन्हों ने ढकोसला बनाया	निगलने लगा	तो यकायक वह	अपना असा	मूसा (अ)	पस डाला	44	ग़ालिब आने वाले

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى

मूसा (अ)	रब	47	सारे जहानों के रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	46	सिज्दा करते हुए	पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर

وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ

जिस ने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	बेशक वह	तुम्हें	इजाज़त दूँ	कि मैं	पहले	तुम ईमान लाए उस पर	(फ़िरऔन) ने कहा	48	और हारून (अ)

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पैर	तुम्हारे हाथ	अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम जान लोगे	पस जल्द	जादू	सिखाया तुम्हें

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا

अपने रब की तरफ़	बेशक हम	कुछ नुक़्सान (हर्ज) नहीं	वह बोले	49	सब को	और ज़रूर तुम्हें सूली दूँगा	एक दूसरे के ख़िलाफ़ का	से - कि

مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ

पहले	कि हम हैं	हमारी ख़ताएं	हमारा रब	हमें	बख़्शदे	कि	बेशक हम उम्मीद रखते हैं	50	लौट कर जाने वाले हैं

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع ١٨ ٣

52	पीछा किए जाओगे	बेशक तुम	मेरे बन्दों को	कि तू रातों रात ले निकल	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि की	51	ईमान लाने वाले

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ

एक जमाअ़त	यह लोग हैं	बेशक	53	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	फ़िरऔन	पस भेजा

قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾

56	मुसल्लह - मोहतात	एक जमाअ़त	और बेशक हम	55	गुस्से में लाने वाले	हमें	और बेशक वह	54	थोड़ी सी

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	58	उम्दा	और ठिकाने	और ख़ज़ाने	57	और चश्मे	बाग़ात	से	पस हम ने उन्हें निकाला

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ

देखा एक दूसरे को	पस जब	60	सूरज निकलते	पस उन्हों ने पीछा किया उन का	59	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया उन का

الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ

मेरे साथ	बेशक	उस ने कहा हरगिज़ नहीं	61	पकड़ लिए गए	यक़ीनन हम	मूसा (अ) के साथी	कहा (कहने लगे)	दोनों जमाअ़तें

رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ

दर्या	अपना असा	तू मार	कि	मूसा (अ)	तरफ़	पस हम ने वहि भेजी	62	वह जल्द मुझे राह दिखाएगा	मेरा रब

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	दूसरों को	उस जगह	फिर हम ने क़रीब कर दिया	63	बड़े	पहाड़ की तरह	हर हिस्सा	पस हो गया	तो वह फट गया

पस उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि बेशक फ़िरऔन के इक़्बाल से हम ही ग़ालिब आने वाले हैं। **(44)**
पस मूसा (अ) ने अपना अ़सा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्हों ने ढकोसला बनाया था। **(45)**
पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। **(46)**
वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। **(47)**
(जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। **(48)**
फ़िरऔन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊँ काट डालूँगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम सब को सूली दूँगा। **(49)**
वह बोले कुछ हर्ज नहीं बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। **(50)**
हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। **(51)**
और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, बेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तआ़क़ुब होगा)। **(52)**
पस भेजा फ़िरऔन ने शहरों में नक़ीब। **(53)**
बेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअ़त हैं। **(54)**
और वह बेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। **(55)**
और बेशक हम एक जमाअ़त हैं मुसल्लह, मोहतात। **(56)**
(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बाग़ात और चश्मों से निकाला। **(57)**
और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। **(58)**
इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। **(59)**
पस उन्हों ने सूरज निकलते (सुबह सवेरे) उन का पीछा किया। **(60)**
पस जब दोनों जमाअ़तों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यक़ीनन हम पकड़ लिए गए। **(61)**
मूसा (अ) ने कहा, हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। **(62)**
पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना अ़सा दर्या पर मार (उन्हों ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। **(63)**
और हम ने उस जगह दूसरों (फ़िरऔनियों) को क़रीब कर दिया। **(64)**

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	दूसरों को	हम ने ग़र्क़ कर दिया	फिर	65	सब	उस के साथ	और जो	मूसा (अ)	और हम ने बचा लिया

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और बेशक	67	ईमान लाने वाले	उन से अक्सर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक

लَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ

ع ١٧/٨ وقف لازم

अपने बाप को	उस ने कहा	जब	69	इब्राहीम (अ)	ख़बर-वाक़िआ	उन पर-उन्हें	और आप पढ़ें	68	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾

71	जमे हुए	पस हम बैठे रहते हैं उन के पास	बुतों की	हम परस्तिश करते हैं	उन्हों ने कहा	70	तुम परस्तिश करते हो	क्या-किस	और अपनी क़ौम

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

73	या वह नुक़्सान पहुँचाते हैं	या वह नफ़ा पहुँचाते हैं तुम्हें	72	तुम पुकारते हो	जब	वह सुनते हैं तुम्हारी	क्या	उस ने कहा

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا

किस	क्या पस तुम ने देखा	इब्राहीम (अ) ने कहा	74	वह करते	इसी तरह	अपने बाप दादा	हम ने पाया	बल्कि	वह बोले

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ

मेरे दुश्मन	तो बेशक वह	76	पहले	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	75	तुम परस्तिश करते हो

اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ

वह	और वह जो	78	मुझे राह दिखाता है	पस वह	मुझे पैदा किया	वह जिस ने	77	सारे जहानों का रब	मगर

يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ

और वह जो	80	मुझे शिफ़ा देता है	तो वह	मैं बीमार होता हूँ	और जब	79	और मुझे पिलाता है	मुझे खिलाता है

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ

मेरी ख़ताएं	कि मुझे बख़्श देगा	मैं उम्मीद रखता हूँ	और वह जिस से	81	मुझे ज़िन्दा करेगा	फिर	मौत देगा

يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

83	नेक बन्दों के साथ	और मुझे मिलादे	हुक्म-हिक्मत	मुझे अ़ता कर	ऐ मेरे रब	82	बदले के दिन

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ

वारिसों में से	और तू मुझे बना दे	84	बाद में आने वालों में	अच्छा-ख़ैर	मेरे लिए-मेरा ज़िक्र	और कर

جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

86	गुमराह (जमा)	से	वह है	बेशक वह	मेरे बाप को	और बख़्शदे	85	नेमतों वाली	जन्नत

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	बेटे	और न	माल	न काम आएगा	जिस दिन	87	जिस दिन सब उठाए जाएंगे	और मुझे रुस्वा न करना

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

90	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़्दीक कर दी जाएगी	89	पाक	दिल	अल्लाह के पास आया	जो	मगर

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65) फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (66) बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (67) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (68) और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाक़िआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69) जब उन्हों ने कहा अपने बाप और अपनी क़ौम को, तुम किस की परस्तिश करते हो? (70) उन्हों ने कहा बुतों की परस्तिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71) उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72) या वह तुम्हें नफ़ा पहुँचाते हैं? या नुक़्सान पहुँचा सकते हैं? (73) वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74) इब्राहीम (अ) ने कहा: पस क्या तुम ने देखा (ग़ौर भी किया) कि तुम किस की परस्तिश करते हो? (75) और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76) तो बेशक वह मेरे दुश्मन हैं सिवाए सारे जहानों के रब के। (77) वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78) और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफ़ा देता है। (80) और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। (81) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे बदले के दिन मेरी ख़ताएं बख़्श देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म और हिक्मत अ़ता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्रे ख़ैर (जारी) रख बाद में आने वालों में। (84) और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे बाप को बख़्शदे, बेशक वह गुमराहों में से है। (86) और मुझे उस दिन रुस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87) जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88) मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐब) दिल ले कर आया। (89) और जन्नत परहेज़गारों के नज़्दीक कर दी जाएगी। (90)

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

92	तुम परस्तिश करते थे	कहां हैं वह जो	उन्हें	और कहा जाएगा	91	गुमराहों के लिए	दोज़ख़	और ज़ाहिर कर दी जाएगी

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا

पस औन्धे मुँह डाले जाएंगे उस में	93	या बदला ले सकते हैं	वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं	क्या	अल्लाह के सिवा

هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا

उस (जहन्नम) में	और वह	वह कहेंगे	95	सब के सब	इब्लीस	और लशकर (जमा)	94	और गुमराह	वह

يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ

हम बराबर ठहराते थे तुम्हें	जब	97	खुली	गुमराही	अलबत्ता में	बेशक हम थे	क़सम अल्लाह की	96	झगड़ते होंगे

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	पस नहीं हमारे लिए	99	मुज्रिम (जमा)	मगर (सिर्फ़)	और नहीं गुमराह किया हमें	98	सारे जहानों के रब के साथ

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102	मोमिन (जमा)	से	तो हम होते	लौटना	कि हमारे लिए	पस काश	101	ग़म ख़ार	कोई दोस्त	और न

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	और बेशक	103	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं है	अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۣالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ ع ٥ ٣٦ ٩

उन से	जब कहा	105	रसूलों को	नूह (अ) की क़ौम	झुटलाया	104	निहायत मेह्रबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह

اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

पस डरो अल्लाह से	107	रसूल अमानत दार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	106	तुम डरते	क्या नहीं	नूह (अ)	उन के भाई

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى

पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा अजर	नहीं	अजर	कोई	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	108	और मेरी इताअ़त करो

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

जब कि तेरी पैरवी की	तुझ पर	क्या हम ईमान ले आएं	वह बोले	110	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	109	सारे जहां का पालने वाला

الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾ اِنْ حِسَابُهُمْ

उन का हिसाब	नहीं	112	वह करते थे	उस की जो	और मुझे क्या इल्म	कहा (नूह अ) ने	111	रज़ीलों ने

اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا

नहीं मैं	114	मोमिन (जमा)	हांकने वाला (दूर करने वाला)	मैं	और नहीं	113	तुम समझो	अगर	मेरे रब पर	मगर (सिर्फ़)

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ

तो ज़रूर होंगे	ऐ नूह (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह	115	साफ़ तौर पर	डराने वाला	मगर-सिर्फ़

مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

117	मुझे झुटलाया	मेरी क़ौम	बेशक	ऐ मेरे रब	(नूह अ ने) कहा	116	संगसार किए जाने वाले	से

और दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी गुमराहों के लिए। (91) और उन्हें कहा जाएगा कहां हैं वह जिन की तुम परस्तिश करते थे। (92) अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या (खुद) बदला ले सकते हैं? (93) पस वह और गुमराह उस (जहन्नम) में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। (94) और इब्लीस के लशकर सब के सब। (95) वह कहेंगे जब कि वह जहन्नम में (बाहम) झगड़ते होंगे। (96) अल्लाह की क़सम! बेशक हम खुली गुमराही में थे। (97) जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब के साथ बराबर ठहराते थे। (98) और हमें सिर्फ़ मुज्रिमों ने गुमराह किया। (99) पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (100) और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। (101) पस काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में) लौटना होता तो हम मोमिनों में से होते। (102) बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और नहीं हैं उन में अक्सर ईमान लाने वाले। (103) और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेह्रबान। (104) नूह (अ) की क़ौम ने झुटलाया रसूलों को। (105) (याद करो) जब उन के भाई नूह (अ) ने उन से कहा तुम डरते नहीं? (106) बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (107) पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (108) मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (109) पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (110) वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान ले आएं? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों ने की है। (111) नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह क्या (काम काज) करते थे। (112) उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर है, अगर तुम समझो। (113) और मैं मोमिनों को (अपने पास से) दूर करने वाला नहीं। (114) मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। (115) बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116) नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया। (117)

النصف فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118	ईमान वाले	से	मेरे साथी	और जो	और नजात दे मुझे	एक खुला फ़ैसला	और उन के दरमियान	मेरे दरमियान	पस फ़ैसला कर दे

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

उस के बाद	ग़र्क़ कर दिया हम ने	फिर	119	भरी हुई	कश्ती में	उस के साथ	और जो	तो हम ने नजात दी उसे

الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	120	बाक़ियों को

ع ١٨ ٦ ١٠ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادُ ۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

123	रसूल (जमा)	आद	झुटलाया	122	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

125	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	124	क्या तुम डरते नहीं	हूद (अ)	उन के भाई	उन से	जब कहा

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	उस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	126	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से

اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	खेलने को (बिला ज़रूरत)	एक निशानी	हर बुलन्दी पर	क्या तुम तामीर करते हो	127	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर (सिर्फ़)

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ

गिरिफ़्त करते हो तुम	तुम गिरिफ़्त करते हो	और जब	129	तुम हमेशा रहोगे	शायद तुम	मज़बूत शानदार महल	और तुम बनाते हो

جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ

मदद की तुम्हारी	वह जिस ने	और डरो	131	और मेरी इताअ़त करो	पस डरो अल्लाह से	130	जाबिर बन कर

بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

134	और चश्मे	और बाग़ात	133	और बेटों	मवेशियों से	तुम्हारी मदद की	132	उस से जो तुम जानते हो

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَاۗءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ

ख़ाह तुम नसीहत करो	हम पर	बराबर	वह बोले	135	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ

اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	137	अगले लोग	आदत	मगर	नहीं है	136	नसीहत करने वाले	से	या न हो तुम

نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ

अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें	पस उन्हों ने झुटलाया उसे	138	अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से	हम

ع ١٨ ٧ ١١ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

140	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	139	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं थे

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

142	क्या तुम डरते नहीं	सालेह (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब	141	रसूल (जमा)	समूद	झुटलाया

पस मेरे और उन के दरमियान एक खुला फ़ैसला फ़रमा दे, और मुझे नजात दे, और (उन्हें) जो मेरे साथी ईमान वाले हैं। (118)
तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई कश्ती में सवार थे (उन्हें) नजात दी। (119)
फिर उस के बाद हम ने बाक़ियों को ग़र्क़ कर दिया। (120)
बेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (122)
(क़ौमे) आद ने रसूलों को झुटलाया। (123)
जब उन से उन के भाई हूद (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (124)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (125)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (126)
और मैं तुम से कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (127)
क्या तुम हर बुलन्दी पर बिला ज़रूरत एक निशानी तामीर करते हो? (128)
और तुम बनाते हो मज़बूत, शानदार महल कि शायद तुम हमेशा रहोगे। (129)
और जब तुम (किसी पर) गिरिफ़्त करते हो तो जाबिर (ज़ालिम) बन कर गिरिफ़्त करते हो। (130)
पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (131)
और उस से डरो जिस ने उस से तुम्हारी मदद की जो तुम जानते हो। (132)
(यानी) मवेशियों और बेटों से तुम्हारी मदद की। (133)
और बाग़ात और चश्मों से। (134)
बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डराता हूँ। (135)
वह बोले, बराबर है हम पर ख़ाह तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न हो। (136)
(कुछ भी) नहीं है, मगर आदत है अगले लोगों की। (137)
और हम अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से नहीं। (138)
फिर उन्हों ने उसे झुटलाया और हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है और न थे उन के अक्सर ईमान लाने वाले। (139)
और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (140)
(क़ौमे) समूद ने रसूलों को झुटलाया। (141)
जब उन में से उन के भाई सालेह (अ) ने कहा क्या तुम डरते नहीं? (142)

बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (143)
सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (144)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आ़लमीन पर है। (145)
क्या तुम यहां की चीज़ों (नेमतों) में बेफ़िक्र छोड़ दिए जाओगे? (146)
बाग़ात और चश्मों में। (147)
और खेतियों और नख़्लिस्तानों में जिन के ख़ोशे रस भरे हैं। (148)
और तुम ख़ुश हो कर पहाड़ों से घर तराशते हो। (149)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (150)
और तुम हद से बढ़ जाने वालों का कहा न मानो। (151)
वह जो फ़साद करते हैं ज़मीन में, और इस्लाह नहीं करते। (152)
उन्हों ने कहा इस के सिवा नहीं कि तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)
तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक बशर हो, पस अगर तुम सच्चे लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई निशानी ले आओ। (154)
सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है, एक मुअ़य्यन दिन उस के पानी पीने की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे लिए पानी पीने की बारी है। (155)
और उसे बुराई से हाथ न लगाना वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े दिन का अ़ज़ाब। (156)
फिर उन्हों ने उस की कूचें काट दीं पस पशेमान रह गए। (157)
फिर उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक उस (वाक़े) में अलबत्ता निशानी (बड़ी इब्रत) है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (158)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (159)
क़ौमे लूत (अ) ने रसूलों को झुटलाया। (160)
(याद करो) जब उन के भाई लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (161)
बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। (162)
पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअ़त करो। (163)
और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (164)
क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ेली) के लिए आते हो? दुनिया जहानों में से। (165)
और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ

इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	144	और मेरी इताअ़त करो	सो तुम डरो अल्लाह से	143	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِىْ مَا هٰهُنَاۤ

जो यहां है	में	क्या छोड़ दिए जाओगे तुम?	145	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर

اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾

148	नर्म ओ नाज़ुक	उन के ख़ोशे	और खजूरें	और खेतियां	147	और चश्मे	बाग़ात में	146	बेफ़िक्र

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

150	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो अल्लाह से	149	ख़ुश हो कर	घर	पहाड़ों से	और तुम तराशते हो

وَلَا تُطِيْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन	में	फ़साद करते हैं	जो लोग	151	हद से बढ़ जाने वाले	हुक्म	और न कहा मानो

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ

मगर (सिर्फ़) एक बशर	तुम नहीं	153	सिहरज़दा लोग	से	तुम	इस के सिवा नहीं	उन्हों ने कहा	152	और इस्लाह नहीं करते

مِّثْلُنَا ۖۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا

उस के लिए	ऊँटनी	यह	उस ने कहा	154	सच्चे लोग से	तू	अगर	कोई निशानी	पस लाओ	हम जैसा

شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ

सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा	बुराई से	और उसे हाथ न लगाना	155	दिन मालूम	एक बारी पानी पीने की	और तुम्हारे लिए	पानी पीने की बारी

عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ

फिर उन्हें आ पकड़ा	157	पशेमान	पस रह गए	फिर उन्हों ने कूचें काट दीं उस की	156	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

158	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	है	और नहीं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	अ़ज़ाब

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ ع ١٩ ٨ ١٢

160	रसूलों को	क़ौमे लूत (अ)	झुटलाया	159	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾

162	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	161	क्या तुम डरते नहीं	लूत (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	163	और मेरी इताअ़त करो	पस तुम डरो अल्लाह से

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

165	तमाम जहानों	से	मर्दों के पास	क्या तुम आते हो	164	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

166	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारा रब	तुम्हारे लिए	जो उस ने पैदा किया	और तुम छोड़ते हो

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّیْ

बेशक मैं	उस ने कहा	167	मुख़्रिज (बाहर निकाले जाने वाले)	से	अलबत्ता तुम ज़रूर होगे	ऐ लूत (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह

لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِیْ وَاَهْلِیْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ

तो हम ने नजात दी उसे	169	वह करते हैं	उस से जो	और मेरे घर वालों	मुझे नजात दे	ऐ मेरे रब	168	नफ़्रत करने वाले	से	तुम्हारे अ़मल से

وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

172	दूसरे	फिर हम ने हलाक कर दिया	171	पीछे रह जाने वालों में	एक बुढ़िया	सिवाए	170	सब	और उस के घर वाले

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

अलबत्ता एक निशानी	उस में	बेशक	173	डराए गए	बारिश	पस बुरी	एक बारिश	उन पर	और हम ने बारिश बरसाई

ع ١٦ ٩ ١٣ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾

175	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और बेशक	174	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे	और न

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ

शुऐब (अ)	उन्हें	जब कहा	176	रसूल (जमा)	एयका (बन) वाले	झुटलाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

179	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो तुम अल्लाह से	178	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	177	क्या तुम डरते नहीं

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾

180	सारे जहां का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

तराज़ू से	और वज़न करो	181	नुक़्सान देने वाले	से	और न हो तुम	माप	तुम पूरा करो

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ

ज़मीन में	और न फिरो	उन की चीज़ें	लोग	और न घटाओ	182	ठीक सीधी

مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾

184	पहली	और मख़्लूक़	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	और डरो	183	फ़साद मचाते हुए

قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

हम जैसा	एक बशर	मगर-सिर्फ़	और नहीं तू	185	सिहरज़दा (जमा)	से	तू	इस के सिवा नहीं	वह बोले (कहने लगे)

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से-का	एक टुकड़ा	हम पर	सो तू गिरा	186	झूटे	अलबत्ता-से	और अलबत्ता हम गुमान करते हैं तुझे

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने झुटलाया उसे	188	तुम करते हो	जो कुछ	ख़ूब जानता है	मेरा रब	कहा	187	सच्चे	से	अगर तू है

فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

189	बड़ा (सख़्त) दिन	अ़ज़ाब	था	बेशक वह	साइबान वाला दिन	अ़ज़ाब	पस पकड़ा उन्हें

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167)
उस ने कहा बेशक मैं तुम्हारे फ़ेले (बद) से नफ़्रत करने वालों में से हूँ। (168)
ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के वबाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169)
तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170)
सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171)
फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172)
और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई। पस किया ही बुरी बारिश (उन पर जिन्हें अ़ज़ाब से) डराया गया। (173)
बेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (175)
झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176)
(याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177)
बेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178)
सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (179)
और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आ़लमीन पर है। (180)
तुम माप पूरा करो, और नुक़्सान देने वालों में से न हो। (181)
और वज़न करो ठीक सीधी तराज़ू से। (182)
और लोगों को उन की चीज़े घटा कर न दो, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183)
और डरो उस (ज़ाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख़्लूक़ को। (184)
कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिहरज़दा लोगों में से है। (185)
और तू सिर्फ़ हम जैसा एक बशर है, और अलबत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186)
सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187)
शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188)
तो उन्हों ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइबान वाले दिन अ़ज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक वह बडे सख़्त दिन का अ़ज़ाब था। (189)

बेशक उस में निशानी है, और उन के अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190)
और बेशक तेरा रब ग़ालिब है, निहायत मेह्रबान। (191)
और बेशक यह (क़ुरआन) सारे जहानों के रब का उतारा हुआ है। (192)
उस को ले कर उतरा है जिब्रील अमीन (अ)। (193)
तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर सुनाने वालों में से हो। (194)
रोशन वाज़ेह अ़रबी ज़बान में। (195)
और बेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले पैग़म्बरों के सहीफ़ों में है। (196)
क्या यह उन के लिए एक निशानी नहीं? कि इसे जानते हैं उल्माए बनी इस्राईल। (197)
और अगर हम इसे किसी ग़ैर अ़रबी (ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198)
फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता (फिर भी) वह इस पर ईमान लाने वाले न होते (ईमान न लाते)। (199)
इसी तरह हम ने मुज्रिमों के दिलों में इन्कार दाख़िल कर दिया है। (200)
वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि वह दर्दनाक अ़ज़ाब (न) देख लें। (201)
तो वह उन पर अचानक आजाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202)
फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी जाएगी। (203)
पस क्या वह हमारे अ़ज़ाब को जल्दी चाहते हैं? (204)
क्या तुम ने देखा (ज़रा देखो)? अगर हम उन्हें बरसों फ़ाइदा पहुँचाएं। (205)
फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें वईद की जाती थी। (206)
जिस से वह फ़ाइदा उठाते थे उन के क्या काम आएगा? (207)
और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उस के लिए डराने वाले। (208)
नसीहत के लिए (पहले भेजे) और हम ज़ुल्म करने वाले न थे। (209)
और इस (क़ुरआन) को शैतान ले कर नहीं उतरे। (210)
और उन को सज़ावार नहीं (वह उस के क़ाबिल नहीं) और न वह (ऐसा) कर सकते हैं। (211)
बेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर कर दिए गए हैं। (212)
पस अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न पुकारो कि मुब्तिलाए अ़ज़ाब लोगों में से हो जाओ। (213)
और तुम अपने क़रीब तरीन रिश्तेदारों को डराओ। (214)
और उस के लिए अपने बाज़ू झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की मोमिनों में से। (215)

إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	और बेशक	190	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और न थे	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक

لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ　ع ١٠ ١٦ ١٤

इस के साथ (ले कर) उतरा	192	सारे जहानों का रब	अलबत्ता उतारा हुआ	और बेशक यह	191	निहायत मेह्रबान	ग़ालिब	वह

الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ

ज़बान में	194	डर सुनाने वालों में से	ताकि तुम हो	तुम्हारे दिल	पर	193	जिब्रील अमीन (अ)

عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةً

एक निशानी	उन के लिए	क्या नहीं है	196	पहले (पैग़म्बर)	सहीफ़े	में	और बेशक यह	195	रोशन (वाज़ेह)	अ़रबी

أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمٰٓؤُا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

198	अ़जमी (ग़ैर अ़रबी)	किसी पर	हम नाज़िल करते इसे	और अगर	197	बनी इस्राईल	उल्मा	कि जानते हैं इस को

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِي قُلُوبِ

यह चलाया है (इन्कार दाख़िल कर दिया है) दिलों में	इसी तरह	199	ईमान लाने वाले	इस पर	वह होते	न	उन के सामने	फिर वह पढ़ता इसे

الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُمْ

तो वह आजाएगा उन पर	201	दर्दनाक अ़ज़ाब	वह देख लेंगे	यहां तक कि	इस पर	वह ईमान न लाएंगे	200	मुज्रिमीन

بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

203	मोहलत दी जाएगी	हम - हमें	क्या	फिर वह कहेंगे	202	ख़बर (भी) न होगी	और उन्हें	अचानक

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَءَيْتَ إِنْ مَتَّعْنٰهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ

फिर	205	कई बरसों	हम उन्हें फ़ाइदा पहुँचाएं	अगर	क्या तुम ने देखा?	204	वह जल्दी चाहते हैं	क्या पस हमारे अ़ज़ाब को

جَآءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾

207	वह फ़ाइदा उठाते थे	जो (जिस से)	उन के	क्या काम आएगा?	206	उन्हें वईद की जाती थी	जो	पहुँचे उन पर

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا　عند المتقدمين ٩ ١٢

और न थे हम	नसीहत के लिए	208	डराने वाले	उस के लिए	मगर	किसी बस्ती को	और नहीं हलाक किया हम ने

ظٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ

उन को	और सज़ा वार नहीं	210	शैतान (जमा)	इसे ले कर	और नहीं उतरे	209	ज़ुल्म करने वाले

وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ

पस न पुकारो	212	दूर कर दिए गए हैं	सुनना	से	बेशक वह	211	और न वह कर सकते हैं

مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ

अपने रिश्तेदार	और तुम डराओ	213	मुब्तिलाए अ़ज़ाब	से	कि हो जाओ	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ

الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

215	मोमिनीन	से	तुम्हारी पैरवी की	उस के लिए जिस ने	अपना बाज़ू	और झुकाओ	214	क़रीब तरीन

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّىْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	पर	और भरोसा करो	216	तुम करते हो	उस से जो	बेशक मैं बेज़ार हूँ	तो कह दें	वह तुम्हारी नाफ़रमानी करें	फिर अगर

الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِىْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾

219	सिजदा करने वाले (नमाज़ी)	में	और तुम्हारा फिरना	218	तुम खड़े होते हो	जब	तुम्हें देखता है	वह जो	217	निहायत मेहरबान

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾

221	शैतान (जमा)	उतरते हैं	किस पर	मैं तुम्हें बताऊँ	क्या	220	जानने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक वह

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾

223	झूटे	और उन में अक्सर	सुनी सुनाई बात	डाल दिए हैं	222	गुनाहगार	बुहतान लगाने वाला	हर	पर	वह उतरते हैं

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِىْ كُلِّ وَادٍ

हर वादी में	कि वह	क्या तुम ने नहीं देखा	224	गुमराह लोग	उन की पैरवी करते हैं	और शायर (जमा)

يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	मगर	226	वह करते नहीं	जो	वह कहते हैं	और यह कि वह	225	सरगर्दां फिरते हैं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	और उन्हों ने बदला लिया	बकसरत	और अल्लाह को याद किया	अच्छे	और उन्हों ने अमल किए

ع ١١ ٣٦ ١٥ مَا ظُلِمُوْا ۭ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

227	वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है)	लौटने की जगह (करवट)	किस	ज़ुल्म किया	वह लोग जिन्हों ने	और अनक़रीब जान लेंगे	कि उन पर ज़ुल्म हुआ

آيَاتُهَا ٩٣ ❀ (٢٧) سُوْرَةُ النَّمْلِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकुआत 7 — (27) सूरतुन नमल — चींटीयाँ — आयात 93

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ هُدًى

हिदायत	1	रोशन, वाज़ेह	और किताब	क़ुरआन	आयतें	यह	ता सीन

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम रखते हैं	जो लोग	2	मोमिनों के लिए	और ख़ुशख़बरी

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	बेशक	3	यक़ीन रखते हैं	वह	आख़िरत पर	और वह

زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	यही लोग	4	भटकते फिरते हैं	पस वह	उन के अमल	आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए

لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾

5	सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले	वह	आख़िरत में	और वह	अज़ाब	बुरा	उन के लिए

फिर अगर तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दें जो तुम करते हो बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ। (216) और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेहरबान पर। (217) जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218) और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219) बेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220) क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221) वह उतरते हैं बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222) (शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223) और (रहे) शायर उन की पैरवी गुमराह लोग करते हैं। (224) क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दां फिरते हैं। (225) और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226) सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अमल किए, और अल्लाह को याद किया बकसरत, और उन्हों ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर ज़ुल्म हुआ, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया वह अनक़रीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तासीन - यह आयतें हैं क़ुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1) हिदायत और ख़ुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2) जो लोग नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (3) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अमल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4) यही हैं वह लोग जिन के लिए बुरा अज़ाब है, और वह आख़िरत में सब से बढ़ कर ख़सारा उठाने वाले हैं। (5)

الثلثة

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى

और बेशक तुम	दिया जाता है	कुरआन	नज़्दीक (जानिब) से	हिक्मत वाला	इल्म वाला	6	जब	कहा	मूसा (अ)

لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ

अपने घर वालों से	बेशक मैं	मैं ने देखी है	एक आग	मैं अभी लाता हूँ	उस की	कोई ख़बर	या लाता हूँ तुम्हारे पास	शोला	अंगारा

لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ

ताकि तुम	तुम सेंको	7	पस जब	उस (आग) के पास आया	आवाज़ दी गई	कि बरकत दिया गया	जो	आग में

وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ

और जो	उस के आस पास	और पाक है अल्लाह	परवरदिगार सारे जहानों का	8	ऐ मूसा (अ)	हक़ीक़त यह	मैं अल्लाह

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ۙ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ

ग़ालिब	हिक्मत वाला	9	और तू डाल	अपना असा	पस जब उस ने	उसे देखा	लहराता हुआ	गोया कि वह	सांप

وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ

वह लौट गया पीठ फेर कर	और मुड़ कर न देखा	ऐ मूसा (अ)	तू ख़ौफ़ न खा	बेशक मैं	ख़ौफ़ नहीं खाते	मेरे पास

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾ۖ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ

रसूल (जमा)	10	मगर	जो-जिस	ज़ुल्म किया	फिर उस ने बदल डाला	भलाई	बाद	बुराई	तो बेशक मैं

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

बख़्शने वाला	निहायत मेहरबान	11	और दाख़िल कर (डाल)	अपना हाथ	अपने गरेबान में	वह निकलेगा	सफ़ेद-रोशन	से-के

غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

किसी ऐब के बग़ैर	में	नौ (9) निशानियां	तरफ़	फ़िरऔन	और उस की क़ौम	बेशक वह	हैं

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

क़ौम	नाफ़रमान	12	फिर जब	आईं उन के पास	हमारी निशानियां	आँखें खोलने वाली	वह बोले	यह

سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ۚ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ

जादू खुला	13	और उन्हों ने इन्कार किया	उस का	हालांकि उस का यक़ीन था	उन के दिल	ज़ुल्म से	और तकब्बुर से

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع ١٤ ١٦

तो देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम	फ़साद करने वाले	14	और तहक़ीक़ दिया हम ने	दाऊद (अ)

وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

और सुलेमान (अ)	बड़ा इल्म	और उन्हों ने कहा	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	वह जिस ने	फ़ज़ीलत दी हमें	पर	अक्सर	से	अपने बन्दे

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا

मोमिनीन	15	और वारिस हुआ	सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	और उस ने कहा	ऐ लोगो	हमें सिखाई गई

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

बोली	परिन्दे (जमा)	और हमें दी गई	से	हर चीज़ से	बेशक	यह	अलबत्ता वही	फ़ज़्ल	खुला	16

और बेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ़ से दिया जाता है। (6)
(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा बेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई ख़बर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)
पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआला की तरफ़ से) निदा दी गई कि बरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफ़रोज़ है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)
ऐ मूसा (अ) हक़ीक़त यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला हूँ। (9)
और तू अपना असा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू ख़ौफ़ न खा, बेशक मेरे पास रसूल ख़ौफ़ नहीं खाते। (10)
मगर जिस ने ज़ुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो बेशक मैं बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (11)
और अपना हाथ अपने गरेबान में डाल वह किसी ऐब के बग़ैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशायिँन में से (यह दो मोजिज़े ले कर) फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़ (जा), बेशक वह नाफ़रमान क़ौम हैं। (12)
फिर जब उन के पास आईं हमारी निशानियां आँखे खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13)
हालांकि उन के दिलों को उस का यक़ीन था, उन्हों ने उस का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14)
और तहक़ीक़ हम ने दिया दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्हों ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर। (15)
और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, बेशक यह खुला फ़ज़्ल है। (16)

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

17	तरतीब में रखे जाते थे	पस वह	और परिन्दे	और इन्सान	जिन्न	से	उस का लशकर	सुलेमान (अ) के लिए	और जमा किया गया

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो	ऐ चींटियों	एक चींटी	कहा	चींटियों का मैदान	पर	आए	जब वह	यहां तक कि

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

18	न जानते हों (उन्हें मालूम न हो)	और वह	और उस का लशकर	सुलेमान (अ)	न रौन्द डाले तुम्हें	अपने घरों (बिलों) में

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ

कि मैं शुक्र अदा करूँ	मुझे तौफ़ीक़ दे	ऐ मेरे रब	और कहा	उस की बात	से	हँसते हुए	तो वह मुसकुराया

نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا

मैं नेक काम करूँ	और यह कि	मेरे माँ बाप	और पर	मुझ पर	तू ने इन्आम फ़रमाई	वह जो	तेरी नेमत

تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

और उस ने ख़बर ली (जाइज़ा लिया)	19	नेक (जमा)	अपने बन्दे	में	अपनी रहमत से	और मुझे दाख़िल फ़रमा	तू वह पसंद करे

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	ग़ाइब हाने वाले	से	क्या वह है	हुद हुद	मैं नहीं देखता	क्या है	तो उस ने कहा	परिन्दे

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ

सनद (कोई वजह)	या उसे ज़रूर लानी चाहिए	या उसे ज़ुबह कर डालूँगा	सख़्त	सज़ा	अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा

مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ

तुम को मालूम नहीं वह	वह जो	मैं ने मालूम किया है	फिर कहा	थोड़ी सी	सो उस ने देर की	21	वाज़ेह (माक़ूल)

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ

वह बादशाहत करती है उन पर	एक औरत	पाया (देखा)	बेशक मैं ने	22	यक़ीनी	एक ख़बर	सबा	से	और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ

وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

और उस की क़ौम	मैं ने पाया है उसे	23	बड़ा	एक तख़्त	और उस के लिए	हर शै	और दी गई है

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ

उन के आमाल	शैतान	उन्हें	और आरास्ता कर दिखाए हैं	अल्लाह के सिवा	सूरज को	वह सिज्दा करते हैं

فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ

वह सिज्दा करते अल्लाह को	कि नहीं	24	राह नहीं पाते	सो वह	रास्ते से	पस रोक दिया उन्हें

الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ

जो तुम छुपाते हो	और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	छुपी हुई	निकालता है	वह जो

السجدة ٨
وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

26	अर्शे अ़ज़ीम	रब	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	25	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो

और सुलेमान (अ) के लिए उस
का लशकर जिन्नों, इन्सानों और
परीन्दों का जमा किया गया, पस
वह तरतीब में रखे जाते थे। (17)
यहां तक कि वह चींटियों के मैदान
में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ
चीटियों! तुम अपने बिलों में दाख़िल
हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और
उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले
और उन्हें ख़बर भी न हो। (18)
तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस
की बात से, और कहा ऐ मेरे रब!
मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत
का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ
पर इन्आ़म फ़रमाई है, और मेरे
माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक
काम करूँ जो तू पसंद करे और
अपनी रहमत से मुझे अपने नेक
बन्दों में दाख़िल फ़रमा ले। (19)
और उस ने परिन्दों का जाइज़ा
लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद
हुद को नहीं देखता, क्या वह ग़ाइब
हो जाने वालों में से है? (20)
अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख़्त सज़ा
दूँगा या उसे ज़ुबह कर डालूँगा, या
उसे ज़रूर कोई माक़ूल वजह मेरे पास
लानी (पेश करनी) चाहिए। (21)
सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर
की, फिर कहा मैं ने मालूम किया
है वह जो तुम को मालूम नहीं,
और मैं तुम्हारे पास सबा से एक
यक़ीनी ख़बर लाया हूँ। (22)
बेशक मैं ने एक औ़रत को देखा है,
वह उन पर बादशाहत करती है, और
(उसे) हर शै दी गई है, और उस के
लिए एक बड़ा तख़्त है। (23)
मैं ने उसे और उस की क़ौम को
अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़
कर) सूरज को सिज्दा करते पाया
है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता
कर दिखाया है उन के अ़मल, पस
उन्हें (सीधे) रास्ते से रोक दिया है
सो वह राह नहीं पाते। (24)
और अल्लाह को (क्यों) सिज्दा नहीं
करते? वह जो आस्मानों में और ज़मीन
में छुपी हुई (चीज़ों को) निकालता है,
और जानता है जो तुम छुपाते हो और
जो तुम ज़ाहिर करते हो। (25)
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,
वह अर्शे अ़ज़ीम का मालिक है। (26)

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِىْ

मेरा ख़त	ले जा	27	झूटे	से	तू है	या	क्या तू ने सच कहा	उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ

वह कहने लगी	28	वह जवाब देते हैं	क्या	फिर देख	उन से	फिर लौट आ	उन की तरफ़	पस उसे डाल दे	यह

يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّىْۤ اُلْقِىَ اِلَىَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ

और बेशक वह	सुलेमान (अ)	से	बेशक वह	29	बा वक़्अत	ख़त	मेरी तरफ़	डाला गया	बेशक मेरी तरफ़	ऐ सरदारो!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَىَّ وَاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ع ٢ ١٧ ١٧

31	फ़रमांबरदार हो कर	और मेरे पास आओ	मुझ पर	यह कि तुम सरकशी न करो	30	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	नाम से अल्लाह के

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِىْ فِىْۤ اَمْرِىْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا

किसी मामला	फ़ैसला करने वाली	मैं नहीं हूँ	मेरे मामले में	मुझे राए दो	ऐ सरदारो!	वह बोली

حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ

और बड़े लड़ने वाले	कुव्वत वाले	हम	वह बोले	32	तुम मौजूद हो	जब तक

وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِىْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

बादशाह (जमा)	बेशक	वह बोली	33	तुझे हुक्म करना है	क्या	तू देख ले	और फ़ैसला तेरी तरफ़ (तेरे इख़्तियार में)

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً

ज़लील	वहां के	मुअ़ज़्ज़िज़ीन	और कर दिया करते हैं	उसे तबाह कर देते हैं	कोई बस्ती	जब दाख़िल होते हैं

وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّىْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

क्या (जवाब) ले कर लौटते हैं	फिर देखती हूँ	एक तोहफ़ा	उन की तरफ़	भेजने वाली	और बेशक मैं	34	वह करते हैं	और उसी तरह

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ

पस जो	माल से	क्या तुम मेरी मदद करते हो	उस ने कहा	सुलेमान (अ)	आया	पस जब	35	क़ासिद

اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ

तू लौट जा	36	ख़ुश होते हो	अपने तोहफ़े से	तुम	बल्कि	उस ने तुम्हें दिया	उस से जो	बेहतर	मुझे दिया अल्लाह ने

اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ

वहां से	और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उस की	उन को	न ताक़त होगी	ऐसा लशकर	हम ज़रूर लाएंगे उन पर	उन की तरफ़

اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِىْ بِعَرْشِهَا

उस का तख़्त	मेरे पास लाएगा	तुम में से कौन	उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो!	37	ख़्वार होंगे	और वह	ज़लील कर के

قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ

मैं आप के पास ले आऊंगा	जिन्नात से	एक क़वी हैकल	कहा	38	फ़रमांबरदार हो कर	वह आए मेरे पास	कि	इस से क़ब्ल

بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ وَاِنِّىْ عَلَيْهِ لَقَوِىٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

39	अमानतदार	अलबत्ता कुव्वत वाला	उस पर	और बेशक मैं	अपनी जगह से	कि आप खड़े हों	इस से क़ब्ल	उस को

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27)
मेरा यह ख़त ले जा, पस यह उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं! (28)
वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! बेशक मेरी तरफ़ एक बा वक़्अत ख़त डाला गया है। (29)
बेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ़) से है और बेशक वह (यूँ है) "अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला निहायत मेहरबान है"। (30)
यह कि मुझ पर (मेरे मुक़ाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फ़रमांबरदार हो कर। (31)
वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैस्ला करने वाली नहीं (फ़ैस्ला नहीं करती) जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32)
वह बोले हम कुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख़्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33)
वह बोली, बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं, और वहां के मुअ़ज़्ज़िज़ीन को ज़लील कर दिया करते हैं, और वह उड़ी तरह करते हैं। (34)
और बेशक मैं उन की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते हैं क़ासिद। (35)
पस जब सुलेमान (अ) के पास क़ासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो? पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफ़े से ख़ुश होते हो। (36)
तू उन की तरफ़ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुक़ाबले) की उन्हें ताक़त न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे। और वह ख़्वार होंगे। (37)
सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख़्त मेरे पास लाएगा? इस से क़ब्ल कि वह मेरे पास फ़रमांबरदार हो कर आएं। (38)
कहा जिन्नात में से एक क़वी हैकल ने, बेशक मैं उस को आप के पास इस से क़ब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं बेशक उस पर अलबत्ता कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ الَّذِىۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمٌ مِّنَ الۡكِتٰبِ اَنَا اٰتِيۡكَ بِهٖ قَبۡلَ

क़ब्ल	मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा	मैं	किताब	से-का	इल्म	उस के पास	उस ने जो	कहा

اَنۡ يَّرۡتَدَّ اِلَيۡكَ طَرۡفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسۡتَقِرًّا عِنۡدَهٗ قَالَ

उस ने कहा	अपने पास	रखा हुआ	पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा	तुम्हारी निगाह (पलक झपके)	तुम्हारी तरफ़	कि फिर आए

هٰذَا مِنۡ فَضۡلِ رَبِّىۡ ۖ لِيَبۡلُوَنِىۡۤ ءَاَشۡكُرُ اَمۡ اَكۡفُرُ ؕ وَمَنۡ

और जिस	या नाशुक्री करता हूँ	आया मैं शुक्र करता हूँ	ताकि मुझे आज़माए	मेरे रब का फ़ज़्ल	से	यह

شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشۡكُرُ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّىۡ غَنِىٌّ

बेनियाज़	मेरा रब	तो बेशक	नाशुक्री की	और जिस	अपनी ज़ात के लिए	शुक्र करता है	तो पस वह	शुक्र किया

كَرِيۡمٌ ﴿۴۰﴾ قَالَ نَكِّرُوۡا لَهَا عَرۡشَهَا نَنۡظُرۡ اَتَهۡتَدِىۡۤ اَمۡ تَكُوۡنُ

या होती है	आया वह राह पाती (समझ जाती) है	हम देखें	उस का तख़्त	उस के लिए	शकल बदल दो	उस ने कहा	40	करम करने वाला

مِنَ الَّذِيۡنَ لَا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿۴۱﴾ فَلَمَّا جَآءَتۡ قِيۡلَ اَهٰكَذَا

क्या ऐसा ही है	कहा गया	वह आई	पस जब	41	राह नहीं पाते	जो लोग	से

عَرۡشُكِ ؕ قَالَتۡ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوۡتِيۡنَا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِهَا

इस से क़ब्ल	इल्म	और हमें दिया गया	वही	गोया कि यह	वह बोली	तेरा तख़्त

وَكُنَّا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۴۲﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتۡ تَّعۡبُدُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के सिवा	वह परस्तिश करती थी	जो	और उस ने उस को रोका	42	मुसलमान-फ़रमांबरदार	और हम हैं

اِنَّهَا كَانَتۡ مِنۡ قَوۡمٍ كٰفِرِيۡنَ ﴿۴۳﴾ قِيۡلَ لَهَا ادۡخُلِى الصَّرۡحَ ۚ

महल	तू दाख़िल हो	उस से	कहा गया	43	काफ़िरों	क़ौम से	थी	बेशक वह

فَلَمَّا رَاَتۡهُ حَسِبَتۡهُ لُـجَّةً وَّكَشَفَتۡ عَنۡ سَاقَيۡهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ

बेशक यह	उस ने कहा	अपनी पिंडलियाँ	से	और खोल दी	गहरा पानी	उसे समझा	उस ने उस को देखा	पस जब

صَرۡحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنۡ قَوَارِيۡرَ ؕ قَالَتۡ رَبِّ اِنِّىۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِىۡ

अपनी जान	बेशक मैं ने ज़ुल्म किया	ऐ मेरे रब	वह बोली	शीशे (जमा)	से	जुड़ा हुआ	महल

٣ ع ١٣ ١٨ وَاَسۡلَمۡتُ مَعَ سُلَيۡمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۴۴﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى

तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	44	तमाम जहानों का रब	अल्लाह के लिए	सुलेमान (अ)	साथ	और मैं ईमान लाई

ثَمُوۡدَ اَخَاهُمۡ صٰلِحًا اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمۡ فَرِيۡقٰنِ

दो फ़रीक़ हो गए	वह	पस नागहां	अल्लाह की इबादत करो	कि	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद

يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ يٰقَوۡمِ لِمَ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبۡلَ

पहले	बुराई के लिए	तुम जल्दी करते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	45	बाहम झगड़ने लगे

الۡحَسَنَةِ ۚ لَوۡلَا تَسۡتَغۡفِرُوۡنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۴۶﴾

46	तुम पर रहम किया जाए	ताकि तुम	तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से	क्यों नहीं	भलाई

उस शख़्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से क़ब्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है, ताकि वह मुझे आज़माए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम करने वाला है। (40) उस ने कहा उस (मलिका के इम्तिहान के लिए) उस के तख़्त की शकल बदल दो, हम देखें कि आया वह समझ जाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41) पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांबरदार)। (42) और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43) उस से कहा गया कि महल में दाख़िल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएंचे उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं, उस (सुलेमान अ) ने कहा बेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीक़े पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44) और तहक़ीक़ हम ने (क़ौम) समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक़ हो गए बाहम झगड़ने लगे। (45) उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ़ से) है बल्कि तुम एक क़ौम हो (जो) आज़माए जाते हो। (47)

और शहर में थे नौ (9) शख़्स वह मुल्क में फ़साद करते थे, और इस्लाह न करते थे। (48)

वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की क़सम खाओ अलबत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबखून मारेंगे और फिर उस के वारिसों को कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे, और बेशक हम अलबत्ता सच्चे हैं। (49)

और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने (भी) एक खुफ़िया तदबीर की और वह न जानते थे (बेख़बर) थे। (50)

पस देखो उन के मक्र का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की क़ौम सब को हलाक कर डाला। (51)

अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के ज़ुल्म के सबब, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52)

और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53)

और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54)

क्या तुम औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55)

पस उस की क़ौम का जवाब सिर्फ़ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, बेशक यह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56)

सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57)

और हम ने उन पर एक बारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी बारिश थी डराए गए लोगों पर। (58)

आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ

बल्कि	अल्लाह के पास	तुम्हारी बदशगुनी	उस ने कहा	तेरे साथ (साथी)	और वह जो	तुझ से	बुरा शगुन	वह बोले

اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ

वह फ़साद करते थे	शख़्स	नौ (9)	शहर में	और थे	47	आज़माए जाते हो	एक क़ौम	तुम

فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

अलबत्ता हम ज़रूर शबखून मारेंगे उस पर	अल्लाह की	तुम बाहम क़सम खाओ	वह कहने लगे	48	और इस्लाह नहीं करते थे	ज़मीन (मुल्क) में

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता सच्चे हैं	और बेशक हम	उस के घर वाले	हलाकत के वक़्त	हम मौजूद न थे	उस के वारिसों से	फिर ज़रूर हम कह देंगे	और उस के घर वाले

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ

कैसा	पस देखो	50	न जानते थे	और वह	एक तदबीर	और हम ने खुफ़िया तदबीर की	एक तदबीर	और उन्हों ने मक्र किया

كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ

अब यह	51	सब को	और उन की क़ौम	हम ने तबाह करदिया उन्हें	कि हम	उन का मक्र	अन्जाम	हुआ

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	लोगों के लिए जो जानते हैं	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	उन के ज़ुल्म के सबब	गिरे पड़े	उन के घर

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ

जब उस ने कहा	और लूत (अ)	53	और वह परहेज़गारी करते थे	वह ईमान लाए	वह लोग जो	और हम ने नजात दी

لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम	54	देखते हो	और तुम	बेहयाई	क्या तुम आगए	अपनी क़ौम से

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

लोग	तुम	बल्कि	औरतों के सिवा (औरतों को छोड़ कर)	शहवत रानी के लिए?	मर्दों के पास	आते हो

تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا

निकाल दो	उन्हों ने कहा	मगर-सिर्फ़ यह कि	उस की क़ौम	जवाब	था	पस न	55	जहालत करते हो

اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

सो हम ने उसे बचा लिया	56	पाकीज़गी पसंद करते हैं	लोग	बेशक वह	अपना शहर	से	लूत (अ) के साथी

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बरसाई	57	पीछे रह जाने वाले	से	हम ने उसे ठहरा दिया था	उस की बीवी	सिवाए	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ ع ١٤/٤ ١٩

और सलाम	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	58	डराए गए	बारिश	सो क्या ही बुरा	एक बारिश	उन पर

عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	वह शरीक ठहराते हैं	या जो	बेहतर	क्या अल्लाह	चुन लिया	वह जिन्हें	उस के बन्दों पर

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे लिए	और उतारा	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	भला कौन?

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

न था	बा रौनक़	बाग़ात	उस से	पस उगाए हम ने	पानी	आस्मान

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

60	कज रवी करते हैं	लोग	वह	बल्कि	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	उन के दरख़्त	कि तुम उगाओ	तुम्हारे लिए

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ

और (पैदा) किए	नदी नाले	उस के दरमियान	और (जारी) किया	क़रारगाह	ज़मीन	बनाया	भला कौन-किस

لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	आड़ (हदे फ़ासिल)	दो दर्या	दरमियान	और बनाया	पहाड़ (जमा)	उस के लिए

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ

वह उसे पुकारता है	जब	बेक़रार	क़ुबूल करता है	भला कौन	61	नहीं जानते	उन के अक्सर	बल्कि

وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ

अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	ज़मीन	नाइब (जमा)	और तुम्हें बनाता है	बुराई	और दूर करता है

قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ

ख़ुश्की	अन्धेरों में	तुम्हें राह दिखाता है	भला कौन	62	नसीहत पकड़ते हैं	जो	थोड़े

وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ

उस की रहमत	पहले	ख़ुशख़बरी देने वाली	हवाएं	चलाता है	और कौन	और समुन्दर

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

पहली बार पैदा करता है मख़्लूक़	भला कौन	63	यह शरीक ठहराते हैं	उस से जो	बरतर है अल्लाह	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۗ

और ज़मीन	आस्मान से	तुम्हें रिज़्क़ देता है	और कौन	फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

64	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी दलील	ले आओ तुम	फ़रमा दें	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ

ग़ैब	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं जानता	फ़रमा दें

اِلَّا اللّٰهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

उन का इल्म	बल्कि थक कर रह गया	65	वह उठाए जाएंगे	कब	और वह नहीं जानते	सिवाए अल्लाह के

ع ٥ ٨ ١

فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66	अन्धे	उस से	वह	बल्कि	उस से	शक में	बल्कि वह	आख़िरत (के बारे) में

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से बा रौनक़ बाग़ उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख़्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रवी करते हैं। (60)

भला कौन है? जिस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हदे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (61)

भला कौन है? जो बेक़रार (की दुआ) क़ुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े हैं जो नसीहत पकड़ते हैं। (62)

भला कौन है जो ख़ुश्की (जंगल) और समुन्दर के अन्धेरों में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (बारिश) से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह बरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते है? (63)

भला कौन है जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64)

आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा ग़ैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आख़िरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65) (कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में हैं, बल्कि वह उस से अन्धे हैं। (66)

और काफ़िरों ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम (क़ब्रों से) निकाले जाएंगे? (67)
तहक़ीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से क़ब्ल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहानियां हैं। (68)
आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुज्रिमों का! (69)
और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मक्र ओ फ़रेब करते हैं। (70)
और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। (71)
आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए क़रीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। (72)
और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। (73)
और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते है। (74)
और कुछ ग़ाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। (75)
बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (76)
और बेशक यह (क़ुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। (77)
बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। (78)
पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। (79)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَىِٕنَّا

क्या हम	और हमारे बाप दादा	मिट्टी	हम हो जाएंगे	क्या जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا

और हमारे बाप दादा	हम	यह-यही	तहक़ीक़ वादा किया गया हम से	67	निकाले जाएंगे अलबत्ता

مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا

चलो फिरो तुम	फ़रमा दें	68	अगले	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	इस से क़ब्ल

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	मुज्रिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	वह मक्र करते हैं	उस से जो	तंगी में	और आप (स) न हों	उन पर	और तुम ग़म न खाओ

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

फ़रमा दें	71	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं

عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72	तुम जल्दी करते हो	वह जो-जिस	कुछ	तुम्हारे लिए	क़रीब	हो गया हो	कि	शायद

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	अलबत्ता फ़ज़्ल वाला	तुम्हारा रब	और बेशक

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا

और जो	उन के दिल	जो छुपी हुई है	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	और बेशक	73	शुक्र नहीं करते

يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ

में	मगर	और ज़मीन	आस्मानों में	ग़ाइब	कुछ	और नहीं	74	वह ज़ाहिर करते हैं

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल पर	बयान करता है	क़ुरआन	यह	बेशक	75	किताबे रोशन

اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ

और बेशक यह	76	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में	वह	वह जो	अक्सर

لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	77	ईमान वालों के लिए	और रहमत	अलबत्ता हिदायत

يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾ ع

78	इल्म वाला	ग़ालिब	और वह	अपने हुक्म से	उन के दरमियान	फ़ैसला करता है

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

79	वाज़ेह हक़	पर	बेशक तुम	अल्लाह पर	पस भरोसा करो

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ

पुकार	बहरों को	और तुम नहीं सुना सकते	मुर्दों को	तुम नहीं सुना सकते	बेशक तुम

إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ

उन की गुमराही	से	अन्धों को	हिदायत देने वाले	और तुम नहीं	80	पीठ फेर कर	जब वह मुड़ जाएं

اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

81	फ़रमांबरदार	पस वह	हमारी आयतों पर	ईमान लाता है	जो	मगर-सिर्फ़	तुम सुनाते	नहीं

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	एक जानवर	उन के लिए	हम निकालेंगे	उन पर	वाक़े (पूरा) हो जाएगा वादा (अ़ज़ाब)	और जब

ع ٦ ١٦ ٢ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	यक़ीन न करते	हमारी आयात पर	थे	क्यों कि लोग	वह उन से बातें करेगा

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ

झुटलाते थे	से जो	एक गिरोह	हर उम्मत	से	हम जमा करेंगे	और जिस दिन

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ

क्या तुम ने झुटलाया	फ़रमाएगा	जब वह आजाएं	यहां तक	83	उन की जमाअ़त बन्दी की जाएगी	फिर वह	हमारी आयतों को

بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

84	तुम करते थे	या क्या	इल्म के	उन को	हालांकि अहाता में नहीं लाए थे	मेरी आयात को

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	न बोल सकेंगे वह	पस वह	इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म किया	उन पर	वादा (अ़ज़ाब)	और वाक़े (पूरा) हो गया

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا

देखने को	और दिन	उस में	कि आराम हासिल करें	रात	हम ने बनाया	कि हम	क्या वह नहीं देखते

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ

फूंक मारी जाएगी	और जिस दिन	86	ईमान रखते हैं	उन लगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक

فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो घबरा जाएगा	सूर में

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ

पहाड़ (जमा)	और तू देखता है	87	आ़जिज़ हो कर	उस के आगे आएंगे	और सब	अल्लाह चाहे	जिसे	सिवा

تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ

अल्लाह की कारीगरी	बादलों की तरह चलना	चलेंगे	और वह	जमा हुआ	तो ख़याल करता है उन्हें

الَّذِىْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	बेशक वह	हर शै	ख़ूबी से बनाया	वह जिस ने

बेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना
सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार
सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह
पीठ फेर कर मुड़ जाएं। (80)
और तुम अन्धों को उन की
गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं।
तुम सिर्फ़ (उस को) सुना सकते हो
जो ईमान लाता है हमारी आयतों
पर, पस वह फ़रमांबरदार हैं। (81)
और जब उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब
पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए
निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर,
वह उन से बातें करेगा क्यों कि
लोग हमारी आयतों पर यक़ीन न
करते थे। (82)
और जिस दिन हम हर उम्मत में
से एक गिरोह जमा करेंगे उन में
से जो हमारी आयतों को झुटलाते
थे, फिर उन की जमाअ़त बन्दी की
जाएगी। (83)
यहां तक कि जब वह आजाएंगे
(अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा क्या
तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया
था हालांकि तुम उन को (अपने)
अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे
(या बतलाओ) तुम क्या करते थे? (84)
और उन पर वादा-ए-अ़ज़ाब पूरा
हो गया, इस लिए कि उन्हों ने
ज़ुल्म किया था, पस वह बोल न
सकेंगे। (85)
क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात
को इस लिए बनाया कि वह उस में
आराम हासिल करें और दिन देखने
को (रोशन बनाया) बेशक उस में
अलबत्ता उन लगों के लिए निशानियां
हैं जो ईमान रखते हैं। (86)
और जिस दिन सूर में फूंक मारी
जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी
आस्मानों में है और जो ज़मीन में
हैं, सिवाए उस के जिसे अल्लाह
चाहे और वह सब उस के आगे
आ़जिज़ हो कर आएंगे। (87)
और तू पहाड़ों को देखता है
तो उन्हें (अपनी जगह) जमा
हुआ ख़याल करता है, और वह
(क़ियामत के दिन) बादलों की तरह
चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की
कारीगरी है जिस ने हर शै को ख़ूबी
से बनाया है बेशक वह उस से
बाख़बर है जो तुम करते हो। (88)

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे। (89) और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ़ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90) (आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शै, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91) और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूँ। (92) और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियां, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ता-सीम-मीम। (1) यह वाज़ेह किताब (कुरआन) की आयतें है। (2) हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरऔन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3) बेशक फ़िरऔन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग (बनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को ज़ुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, बेशक वह मुफ़्सिदों में से (फ़सादी) था। (4) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेशवा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ

उस दिन	घबराहट से	और वह	उस से	बेहतर	तो उस के लिए	किसी नेकी के साथ	जो आया

اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ ۭ هَلْ

क्या नहीं	आग में	उन के मुंह	औन्धे डाले जाएंगे	बुराई के साथ	आया	और जो	89	महफ़ूज़ होंगे

تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ

इस	रब	इबादत करूँ	कि	इसके सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया	90	तुम करते थे	जो	मगर-सिर्फ़	बदला दिए जाओगे

الْبَلْدَةِ الَّذِىْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَىْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	हर शै	और उसी के लिए	उस ने मोहतरम बनाया	वह जिसे	शहर

الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ

अपनी ज़ात के लिए	वह हिदायत पाता है	तो इस के सिवा नहीं	हिदायत पाई	पस जो	मैं तिलावत करूँ कुरआन	और यह कि	91	मुस्लिमीन-फ़रमांबरदारों

وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और फ़रमा दें	92	डराने वालों में से (डराने वाला हूँ)	मैं	इस के सिवा नहीं	तो फ़रमा दें	गुमराह हुआ	और जो

سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١١ ٣

93	तुम करते हो	उस से जो	ग़ाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	पस तुम पहचान लोगे उन्हें	अपनी निशानियां	वह जल्द दिखादेगा तुम्हें

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ سُوْرَةُ الْقَصَصِ (٢٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (28) सूरतुल क़सस — क़िस्से — आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَا

कुछ ख़बर (अहवाल)	तुम पर	हम पढ़ते हैं	2	वाज़ेह किताब	आयतें	यह	1	ता सीम मीम

مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	बेशक	3	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	ठीक ठीक	और फ़िरऔन	मूसा (अ)

عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً

एक गिरोह	कमज़ोर कर रखा था	अलग अलग गिरोह	उस के बाशिन्दे	और उस ने कर दिया	ज़मीन (मुल्क) में	सरकशी कर रहा था

مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

से	था	बेशक वह	उन की औरतों को	और ज़िन्दा छोड़ देता था	उन के बेटों को	ज़ुबह करता था	उन में से

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

कमज़ोर कर दिए गए थे	उन लोगों पर जो	हम एहसान करें	कि	और हम चाहते थे	4	मुफ़्सिद (जमा)

فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَىِٕمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾

5	वारिस (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	पेशवा (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	ज़मीन (मुल्क) में

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन	और हम दिखा दें	ज़मीन (मुल्क) में	उन्हें	और हम क़ुदरत (हुकूमत) दें

مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى

मूसा की माँ	तरफ़-को	और हम ने इलहाम किया	6	वह डरते थे	जिस चीज़	उन से

اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ

और न डर	दर्या में	तो डालदे उसे	तू उस पर डरे	फिर जब	कि तू दूध पिलाती रह उसे

وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾

7	रसूलों	से	और उसे बना देंगे	तेरी तरफ़	उसे लौटा देंगे	बेशक हम	और न ग़म खा

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ

बेशक	और ग़म का बाइस	दुश्मन	उन के लिए	ताकि वह हो	फ़िरऔन के घर वाले	फिर उठा लिया उसे

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٨﴾ وَقَالَتِ

और कहा	8	ख़ताकार (जमा)	थे	और उन के लशकर	और हामान	फ़िरऔन

امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ڰ

तू क़त्ल न कर इसे	और तेरे लिए	मेरी आँखों के लिए	ठंडक	फ़िरऔन	बीवी

عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾

9	(हक़ीक़ते हाल) नहीं जानते थे	और वह	बेटा	हम बना लें इसे	या	कि नफ़ा पहुँचाए हमें	शायद

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ

उस को	कि ज़ाहिर कर देती	तहक़ीक़ क़रीब था	सब्र से ख़ाली (बेक़रार)	मूसा (अ) की माँ	दिल	और हो गया

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾

10	यक़ीन करने वाले	से	कि वह रहे	उस के दिल पर	कि गिरह लगाते हम	अगर न होता

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और वह	दूर से	उस को	फिर देखती रह	उस के पीछे जा	उस की बहन को	और उस (मूसा अ की वालिदा) ने कहा

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ

वह (मूसा की बहन) बोली	पहले से	दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयां)	उस से	और हम ने रोक रखा	11	(हक़ीक़ते हाल) न जानते थे

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ

उस के लिए	और वह	तुम्हारे लिए	वह उस की पर्वरिश करें	एक घर वाले	क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें

نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ

और वह ग़मगीन न हो	उस की आँख	ताकि ठंडी रहे	उसकी माँ की तरफ़	तो हम ने लौटा दिया उस को	12	ख़ैर ख़ाह

ع ١٣ ٢ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13	वह नहीं जानते	उन में से बेशतर	और लेकिन	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	और ताकि जान ले

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इलहाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न ग़म खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ़ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आख़िर कार) वह उन के लिए दुश्मन और ग़म का बाइस हो, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के लशकर ख़ताकार थे। (8)

और कहा फ़िरऔन की बीवी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे क़त्ल न कर, शायद हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हक़ीक़ते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेक़रार हो गया, तहक़ीक़ क़रीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यक़ीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की वालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हक़ीक़ते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयों को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के ख़ैर ख़ाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ़ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह ग़मगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	और इल्म	हिक्मत	हम ने अ़ता किया उसे	और पूरा (तवाना) हो गया	वह पहुँचा अपनी जवानी	और जब

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ

ग़फ़्लत	वक़्त पर	शहर	और वह दाख़िल हुआ	14	नेकी करने वाले	हम बदला दिया करते हैं

مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

और वह (दूसरा)	उस की बिरादरी	से	यह (एक)	वह बाहम लड़ते हुए	दो आदमी	उस में	तो उस ने पाया	उस के लोग

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ

उस के दुश्मन से	वह जो	उस पर	उस की बिरादरी से	वह जो	तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी	उस के दुश्मन का	से

فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान का काम (हरकत)	से	यह	उस ने कहा	उस का	फिर काम तमाम कर दिया	मूसा (अ)	तो एक मुक्का मारा उस को

اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ

पस बख़्शदे मुझे	अपनी जान	मैं ने ज़ुल्म किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने अ़र्ज़ की	15	सरीह (खुला)	बहकाने वाला	दुश्मन	बेशक वह

فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

मुझ पर	तू ने इन्आ़म किया	ऐ मेरे रब जैसा कि	उस ने कहा	16	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक	तो उस ने बख़्श दिया उस को

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا

डरता हुआ	शहर में	पस सुबह हुई उस की	17	मुजरिमों का	मददगार	तो मैं हरगिज़ न हूँगा

يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ

कहा	वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है	कल	उस ने मदद मांगी थी उस से	तो यकायक वह जिस	इन्तिज़ार करता हुआ

لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ

हाथ डाले	कि	उस ने चाहा	कि	फिर जब	18	खुला	अलबत्ता गुमराह	बेशक तू	मूसा (अ)	उस को

بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ

तू क़त्ल करदे मुझे	कि	क्या तू चाहता है	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	उन दोनों का दुश्मन	वह	उस पर जो

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۢ بِالْاَمْسِ ۗ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا

ज़बरदस्ती करता	कि तू हो	मगर-सिर्फ़	तू चाहता	नहीं	कल	एक आदमी	जैसे क़त्ल किया तू ने

فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

और आया	19	सुधार करने वाले	से	तू हो	कि	और तू नहीं चाहता	सरज़मीन में

رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

सरदार	बेशक	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	शहर का दूर सिरा	से	एक आदमी

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

20	सलाहकार (जमा)	से	तेरे लिए	बेशक मैं	पस तू निकल जा	ताकि क़त्ल करडालें तुझे	तेरे बारे में	वह मश्वरा कर रहे हैं

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अ़ता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14)

और वह शहर में दाख़िल हुआ जब कि उस के लोग ग़फ़्लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की बिरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की बिरादरी से था उस ने उस (के मुक़ाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, बेशक वह दुश्मन है खुला बहकाने वाला। (15)

उस ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस मुझे बख़्शदे, तो उस ने उसे बख़्श दिया, बेशक वही बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान। (16)

उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आ़म किया है तो मैं हरगिज़ न हूँगा (कभी) मुजरिमों का मददगार। (17)

पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागहां वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है। मूसा (अ) ने उस को कहा बेशक तू गुमराह है खुला। (18)

फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे क़त्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को क़त्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। (19)

और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! बेशक सरदार तेरे बारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे क़त्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, बेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। (20)

ع ٨ ٢ ٥ فَخَرَجَ مِنۡهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىۡ مِنَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ع ﴿٢١﴾

21	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचाले	उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार	इन्तिज़ार करते हुए	डरते हुए	वहां से	पस वह निकला

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلۡقَآءَ مَدۡيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىۡۤ اَنۡ يَّهۡدِيَنِىۡ

कि मुझे दिखाए	मेरा रब	उम्मीद है	कहा	मदयन	तरफ़	उस ने रुख़ किया	और जब

سَوَآءَ السَّبِيۡلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدۡيَنَ وَجَدَ عَلَيۡهِ اُمَّةً مِّنَ

से- का	एक गिरोह	उस पर	उस ने पाया	मदयन	पानी	वह आया	और जब	22	सीधा रास्ता

النَّاسِ يَسۡقُوۡنَ ۡ وَوَجَدَ مِنۡ دُوۡنِهِمُ امۡرَاَتَيۡنِ تَذُوۡدٰنِ ۚ

रोके हुए हैं	दो औरतें	उन से अ़लाहिदा	और उस ने पाया (देखा)	पानी पिला रहे हैं	लोग

قَالَ مَا خَطۡبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسۡقِىۡ حَتّٰى يُصۡدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَاَبُوۡنَا

और हमारे अब्बा	चरवाहे	वापस ले जाएं	जब तक कि	हम पानी नहीं पिलातीं	वह दोनों बोलीं	तुम्हारा क्या हाल है	उस ने कहा

شَيۡخٌ كَبِيۡرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىۡ

बेशक मैं	ऐ मेरे रब	फिर अ़रज़ किया	साए की तरफ़	फिर वह फिर आया	उन के लिए	तो उस ने पानी पिलाया	23	बहुत बूढ़े

لِمَاۤ اَنۡزَلۡتَ اِلَىَّ مِنۡ خَيۡرٍ فَقِيۡرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتۡهُ اِحۡدٰٮهُمَا تَمۡشِىۡ

चलती हुई	उन दोनों में से एक	फिर उस के पास आई	24	मोहताज	कोई भलाई (नेमत)	मेरी तरफ़	तू उतारे	उस का जो

عَلَى اسۡتِحۡيَآءٍ ۡ قَالَتۡ اِنَّ اَبِىۡ يَدۡعُوۡكَ لِيَجۡزِيَكَ اَجۡرَ مَا سَقَيۡتَ لَنَا ؕ

हमारे लिए	जो तू ने पानी पिलाया	सिला	ताकि तुझे दें वह	तुझे बुलाते हैं	मेरे वालिद	बेशक	वह बोली	शर्म से

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيۡهِ الۡقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفۡ ٚ نَجَوۡتَ مِنَ

से	तुम बच आए	डरो नहीं	उस ने कहा	अहवाल	उस से	और बयान किया	उस के पास आया	पस जब

الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتۡ اِحۡدٰٮهُمَا يٰۤاَبَتِ اسۡتَاۡجِرۡهُ ۡ اِنَّ خَيۡرَ

बेहतर	बेशक	इसे मुलाज़िम रख लो	ऐ मेरे बाप	उन में से एक	बोली वह	25	ज़ालिमों की क़ौम

مَنِ اسۡتَاۡجَرۡتَ الۡقَوِىُّ الۡاَمِيۡنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّىۡۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اُنۡكِحَكَ

निकाह करदूँ तुझ से	कि	बेशक मैं चाहता हूँ	(बाप) ने कहा	26	अमानत दार	ताक़तवर	तुम मुलाज़िम रखो	जो- जिसे

اِحۡدَى ابۡنَتَىَّ هٰتَيۡنِ عَلٰٓى اَنۡ تَاۡجُرَنِىۡ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنۡ اَتۡمَمۡتَ

तम पूरे करो	फिर अगर	आठ (8) साल (जमा)	तुम मेरी मुलाज़िमत करो	कि	(इस शर्त) पर	यह दो (2)	अपनी दो बेटियां	एक

عَشۡرًا فَمِنۡ عِنۡدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيۡدُ اَنۡ اَشُقَّ عَلَيۡكَ ؕ سَتَجِدُنِىۡۤ

अ़नक़रीब तुम पाओगे मुझे	तुम पर	कि मैं मशक़्क़त डालूँ	चाहता मैं	और नहीं	तो तुम्हारी तरफ़ से	दस (10)

اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكَ ؕ اَيَّمَا الۡاَجَلَيۡنِ

मुद्दत दोनों में	जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	यह	उस ने कहा	27	नेक (ख़ुश मामला) लोगों में से	इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा)

ع ٧ ٣ ٦ قَضَيۡتُ فَلَا عُدۡوَانَ عَلَىَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوۡلُ وَكِيۡلٌ ع ﴿٢٨﴾

28	गवाह	जो हम कह रहे हैं	पर	और अल्लाह	मुझ पर	कोई जब्र (मुतालबा) नहीं	मैं पूरी करूँ

पस वह निकला वहां से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचाले। (21)
और जब उस ने मदयन की तरफ़ रुख़ किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22)
और जब वह मदयन के पानी (के कुंए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अ़लाहिदा (अपनी बकरियां) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोलीं हम पानी नहीं पिलातीं जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23)
तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ़ फिर आया, फिर अ़रज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक जो नेमत तू मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24)
फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, बेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम ज़ालिमों की क़ौम से बच आए हो। (25)
उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, बेशक बेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26)
(बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ़ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक़्क़त डालूँ, अगर अल्लाह ने चाहा तो अ़नक़रीब तुम मुझे ख़ुश मामला लोगों में से पाओगे। (27)
मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अ़हद) है, मैं दोनों में से जो मुद्दत पूरी करूँ मुझ पर कोई मुतालबा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ

तरफ़	से	उस ने देखी	साथ अपने घर वाली	और चला वह	मुद्दत	मूसा (अ)	पूरी कर दी	फिर जब

الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ

शायद मैं	आग	बेशक मैं ने देखी	तुम ठहरो	अपने घर वालों से	उस ने कहा	एक आग	कोहे तूर

اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	आग तापो	ताकि तुम	आग से	या चिंगारी	कोई ख़बर	उस से	मैं लाऊँ तुम्हारे लिए

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ

जगह में	दायां	मैदान	किनारे से	निदा दी गई	वह आया उस के पास	फिर जब

الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	जहानों का परवरदिगार	अल्लाह	बेशक मैं	ऐ मूसा (अ)	कि	एक दरख़्त से	बरकत वाली

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۗ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى

वह लौटा	सांप	गोया कि वह	लहराते हुए	फिर जब उस ने उसे देखा	अपना असा	डालो	और यह कि

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۗ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ اِنَّكَ مِنَ

से	बेशक तू	और डर नहीं	आगे आ	ऐ मूसा (अ)	और पीछे मुड़ कर न देखा	पीठ फेर कर

الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

से-के	रोशन सफ़ेद	वह निकलेगा	अपने गरेबान	अपना हाथ	तू डाल ले	31	अम्न पाने वाले

غَيْرِ سُوْٓءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ

दो (2) दलीलें	पस यह दोनों	ख़ौफ़ से	अपना बाजू	अपनी तरफ़	और मिला लेना	बग़ैर किसी ऐब

مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	नाफ़रमान	एक गिरोह	हैं	बेशक वह	और उसके सरदार (जमा)	फ़िरऔन	तरफ़	तेरे रब (की तरफ़) से

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

33	कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे	सो मैं डरता हूँ	एक शख़्स	उन (में) से	बेशक मैं ने मार डाला है	ऐ मेरे रब	उस ने कहा

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً

मेरे साथ मददगार	सो भेजदे उसे	ज़बान	मुझ से	ज़ियादा फ़सीह	वह	हारून (अ)	और मेरा भाई

يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ

हम अभी मज़बूत कर देंगे	फ़रमाया	34	वह झुटलाएंगे मुझे	कि	बेशक मैं डरता हूँ	वह तस्दीक़ करे मेरी

عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

पस वह न पहुँचेंगे	ग़लबा	तुम्हारे लिए	और हम अता करेंगे	तेरे भाई से	तेरा बाजू

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَآ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	ग़ालिब रहोगे	पैरवी करे तुम्हारी	और जो	तुम दोनों	हमारी निशानियों के सबब	तुम तक

معانقة ١١ عند المتأخرين

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (बीवी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ़ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, बेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई ख़बर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)
फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख़्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का परवरदिगार। (30)
और यह कि तू अपना असा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अम्न पाने वालों में से है। (31)
तू अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐब के बग़ैर, फिर अपना बाज़ू ख़ौफ़ (दूर होने की ग़रज़) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (असा और यदे बैज़ा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, बेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)
और मेरे भाई हारून (अ) ज़बान (के एतिबार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तस्दीक़ करे, बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)
(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अता करेंगे ग़ल्बा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

एक जादू	मगर	नहीं है यह	वह बोले	खुली-वाज़ेह	हमारी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	आया उन के पास	फिर जब

مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ٣٦ وَقَالَ

और कहा	36	अपने अगले बाप दादा	में	यह-ऐसी बात	और नहीं सुनी है हम ने	इफ़्तिरा किया हुआ

مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ

होगा-है	और जिस	उस के पास से	हिदायत	लाया	उस को जो	खूब जानता है	मेरा रब	मूसा (अ)

لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ٣٧ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	और कहा	37	ज़ालिम (जमा)	नहीं फ़लाह पाएंगे	बेशक वह	आख़िरत का अच्छा घर	उस के लिए

يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ

पस आग जला मेरे लिए	अपने सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए	नहीं जानता मैं	ऐ सरदारो

يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى

तरफ़	मैं झांकूँ	ताकि मैं	एक बुलन्द महल	फिर मेरे लिए बना (तैयार कर)	मिट्टी पर	ऐ हामान

اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ٣٨ وَاسْتَكْبَرَ

और मग़रूर हो गया	38	झूटे	से	अलबत्ता समझता हूँ उसे	और बेशक मैं	मूसा (अ)	माबूद

هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا

हमारी तरफ़	कि वह	और वह समझ बैठे	नाहक़	ज़मीन (दुनिया) में	और उस का लशकर	वह

لَا يُرْجَعُوْنَ ٣٩ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ

दर्या में	फिर हम ने फेंक दिया उन्हें	और उस का लशकर	तो हम ने पकड़ा उसे	39	नहीं लौटाए जाएंगे

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ٤٠ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً

सरदार	और हम ने बनाया उन्हें	40	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो

يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ٤١

41	वह मदद न दिए जाएंगे	और रोज़े क़ियामत	जहन्नम की तरफ़	वह बुलाते हैं

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ

वह	और रोज़े क़ियामत	लानत	इस दुनिया	में	और हम ने लगादी उन के पीछे

ع ١٤ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ٤٢ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने अ़ता की	42	बदहाल लोग (जमा)	से

مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ

(जमा) बसीरत	पहली	उम्मतें	कि हलाक कीं हम ने	उस के बाद

لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ٤٣

43	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़्तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को खूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, बेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फ़िरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झांकूँ, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूँ। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक़ मग़रूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े क़ियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोज़े क़ियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मतें हलाक कीं, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ

हुक्म (वहि)	मूसा (अ) की तरफ़	हम ने भेजा	जब	मग़रिबी जानिब	और आप (स) न थे

وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ

उनकी, उन पर	तवील हो गई	बहुत सी उम्मतें	हम ने पैदा की	और लेकिन हम ने	44	देखने वाले	से	और आप (स) न थे

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ

हमारी आयात	उन पर	तुम पढ़ते	अहले मदयन	में	रहने वाले	और आप (स) न थे	मुद्दत

وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا

जब हम ने पुकारा	तूर	किनारा	और आप (स) न थे	45	रसूल बनाकर भेजने वाले	हम थे	और लेकिन हम

وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ

डराने वाला	कोई	नहीं आया उन के पास	वह क़ौम	ताकि डर सुनाओ	अपने रब से	रहमत	और लेकिन

مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ

कि पहुँचे उन्हें	और एसा न हो	46	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) से पहले

مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ

भेजा तू ने	क्यों न	ऐ हमारे रब	तो वह कहते	उन के हाथ (उन के आमाल)	उस के सबब जो भेजा	कोई मुसीबत

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا

फिर जब	47	ईमान लाने वाले	से	और हम होते	तेरे अहकाम	पस पैरवी करते हम	कोई रसूल	हमारी तरफ़

جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ

जैसा	क्यों न दिया गया	कहने लगे	हमारी तरफ़ से	हक़	आया उन के पास

مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ

इस से क़ब्ल	मूसा (अ)	उस का जो दिया गया	इन्कार किया उन्हों ने	क्या नहीं	मूसा (अ)	जो दिया गया

قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	इन्कार करने वाले	हर एक का	हम बेशक	और उन्हों ने कहा	एक दूसरे के पुश्त पनाह	वह दोनों जादू	उन्हों ने कहा

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ

मैं पैरवी करूँ उस की	इन दोनो से	ज़ियादा हिदायत	वह	अल्लाह के पास	से	कोई किताब	पस लाओ	फ़रमा दें

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا

कि सिर्फ़	तो जान लो	तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात)	वह क़ुबूल न करें	फिर अगर	49	सच्चे (जमा)	अगर तुम हो

يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى

हिदायत के बग़ैर	अपनी ख़्वाहिश	उस से जिस ने पैरवी की	ज़ियादा गुमराह	और कौन	अपनी ख़्वाहिशात	वह पैरवी करते हैं

مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٨

50	ज़ालिम लोग (जमा)	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	अल्लाह से (मिन जानिब अल्लाह)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़्रिबी जानिब न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाक़े के) देखने वालों में से न थे। (44)
और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मतें पैदा कीं, फिर तवील हो गई उन की मुद्दत, और आप (स) अहले मदयन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45)
और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अ़ता हुई) ताकि आप (स) इस क़ौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46)
और एसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहतेः ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47)
फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (मुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्हों ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ब्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्हों ने कहा वह दोनों जादू हैं, वह दोनों एक दूसरे के पुश्त पनाह हैं, और उन्हों ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48)
आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (क़ुरआन और तौरेत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49)
फिर अगर वह आप (स) की बात क़ुबूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी ख़्वाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِيْنَ

वह लोग जो	51	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	(अपना) कलाम	उन के लिए	और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

पढ़ा जाता है उन पर (सामने)	और जब	52	ईमान लाते हैं	वह इस (कुरआन) पर	इस से क़ब्ल	जिन्हें हम ने किताब दी

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	फ़रमांबरदार	इस के पहले ही	बेशक हम थे	हमारे रब (की तरफ़) से	हक़	बेशक यह	हम ईमान लाए इस पर	वह कहते हैं

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ

और वह दूर करते हैं	इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया	दोहरा	उन का अजर	दिया जाएगा उन्हें	यही लोग

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا

वह सुनते हैं	और जब	54	वह ख़र्च करते हैं	हम ने दिया उन्हें	और उस से जो	बुराई को	भलाई से

اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۫

तुम्हारे अ़मल (जमा)	और तुम्हारे लिए	हमारे लिए हमारे अ़मल	और कहते हैं	उस से	वह किनारा करते हैं	बेहूदा बात

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۫ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ

हिदायत नहीं दे सकते	बेशक तुम	55	जाहिल (जमा)	हम नहीं चाहते	तुम पर	सलाम

مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ

ख़ूब जानता है	और वह	जिस को वह चाहता है	हिदायत देता है	और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	जिस को चाहो

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ

हम उचक लिए जाएंगे	तुम्हारे साथ	हिदायत	अगर हम पैरवी करें	और वह कहते हैं	56	हिदायत पाने वालों को

مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

फल	उस की तरफ़	खिंचे चले आते हैं	हुर्मत वाला मुक़ामे अम्न	उन्हें	दिया ठिकाना हम ने	क्या नहीं	अपनी सरज़मीन से

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	हमारी तरफ़ से	बतौर रिज़्क़	हर शै (क़िस्म)

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ

उन के मस्कन	सो, यह	अपनी मईशत	इतराती	बस्तियां	हलाक कर दीं हम ने	और कितनी

لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	वारिस (जमा)	हम	और हुए हम	क़लील	मगर	उन के बाद	न आबाद हुए

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا

वह पढ़े	कोई रसूल	उस की बड़ी बस्ती में	भेज दे	जब तक	बस्तियां	हलाक करने वाला	तुम्हारा रब	और नहीं है

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	ज़ालिम (जमा)	उन के रहने वाले	मगर (जब तक)	बस्तियां	हलाक करने वाले	और हम नहीं	हमारी आयात	उन पर

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51)
जिन लोगों को हम ने उस से क़ब्ल किताब दी वह इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। (52)
और जब उन के सामने (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, बेशक हम थे पहले से फ़रमांबरदार। (53)
यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया वह उस में से ख़र्च करते हैं। (54)
और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अ़मल तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55)
बेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह ख़ूब जानता है। (56)
और वह कहते है अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हें हुर्मत वाले मुक़ामे अम्न में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ़ खिंचे चले आते हैं फल हर क़िस्म के, हमारी तरफ़ से बतौर रिज़्क़, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57)
और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दीं जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थीं, सो यह हैं उन के मस्कन, न आबाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस। (58)
और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ़) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाक़ी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? (60)
सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख़्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े क़ियामत (गिरफ़्तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। (61)
और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां हैं? मेरे शरीक जिन्हें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। (62)
(फिर) कहेंगे वह जिन पर हुक्मे अ़ज़ाब साबित हो गया कि ऐ हमारे रब! यह हैं वह जिन्हें हम ने बहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) बहकाया जैसे हम (ख़ुद) बहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। (63)
और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अ़ज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत याफ़्ता होते। (64)
और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65)
पस उन को कोई बात न सूझेगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। (66)
सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। (67)
और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। (68)
और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। (69)
और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (70)

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا

और जो	और उस की ज़ीनत	दुनियां	ज़िन्दगी	सो सामान	कोई चीज़	और जो दी गई तुम्हें

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ ع ٦ ٩

हम ने वादा किया उस से	सो क्या जो	60	सो क्या तुम समझते नहीं?	बाक़ी रहने वाला - तादेर	बेहतर	अल्लाह के पास

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ

वह	फिर	दुनिया की ज़िन्दगी	सामान	हम ने दिया उसे	उस की तरह जिसे	पाने वाला उस को	फिर वह	वादा अच्छा

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ

कहां	पस कहेगा वह	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	61	हाज़िर किए जाने वाले	से	रोज़े क़ियामत

شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गया	वह जो	कहेंगे	62	तुम गुमान करते थे	वह जिन्हें	मेरे शरीक

الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

हम बेज़ारी करते हैं	हम बहके	जैसे	हम ने बहकाया उन्हें	हम ने बहकाया	वह जिन्हें	यह हैं	ऐ हमारे रब	हुक्मे (अ़ज़ाब)

اِلَيْكَ ۡ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

अपने शरीकों को	तुम पुकारो	और कहा जाएगा	63	बन्दगी करते	सिर्फ़ हमारी	वह न थे	तेरी तरफ़ (सामने)

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ

काश वह	अ़ज़ाब	और वह देखेंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	सो वह उन्हें पुकारेंगे

كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ

तुम ने जवाब दिया	क्या	तो फ़रमाएगा	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	64	वह हिदायत याफ़्ता होते

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ

पस वह	उस दिन	ख़बरें (बातें)	उन को	पस न सूझेगी	65	पैग़म्बर (जमा)

لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى

तो उम्मीद है	और उस ने अ़मल किए अच्छे	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की	सो - लेकिन	66	आपस में सवाल न करेंगे

اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۭ

और वह पसंद करता है	जो वह चाहता है	पैदा करता है	और तुम्हारा रब	67	कामयाबी पाने वाले	से	कि वह हो

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ

जानता है	और तुम्हारा रब	68	उस से जो वह शरीक करते हैं	और बरतर	अल्लाह पाक है	इख़्तियार	उन के लिए	नहीं है

مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और वही अल्लाह	69	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	उन के सीने	छुपा है	जो

لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	और उसी के लिए फ़रमां रवाई	और आख़िरत	दुनिया में	उसी के लिए तमाम तारीफ़ें

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	रात	तुम पर	कर दे (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾

71	तो क्या तुम सुनते नहीं?	रोशनी	ले आए तुम्हारे पास	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى

तक	हमेशा	दिन	तुम पर	बनाए (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फ़रमा दें

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ

उस में	तुम आराम करो	रात	ले आए तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत

اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम आराम करो	और दिन	रात	उस ने तुम्हारे लिए बनाया	और अपनी रहमत से	72	तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	73	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल (रोज़ी)	और ताकि तुम तलाश करो	उस में

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	तुम गुमान करते थे	वह जो	मेरे शरीक	कहां?	तो वह कहेगा	वह पुकारेगा उन्हें

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ

अपनी दलील	तुम लाओ (पेश करो)	फिर हम कहेंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	और हम निकाल कर लाएंगे

ع ١٥ ١٠ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ ع

75	जो वह घड़ते थे	उन से	और गुम हो जाएंगी	सच्ची बात अल्लाह की	कि	सो वह जान लेंगे

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ

और हम ने दिए थे उस को	उन पर	सो उस ने ज़ियादती की	मूसा (अ) की क़ौम	से	था	क़ारून	बेशक

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ

ज़ोर आवर	एक जमाअ़त पर	भारी होतीं	उस की कुन्जियां	इतने कि	ख़ज़ानों से

اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

76	ख़ुश होने (इतराने) वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	न ख़ुश हो (न इतरा)	उस की क़ौम	उस को	जब कहा

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ

अपना हिस्सा	और न भूल तू	आख़िरत का घर	तुझे दिया अल्लाह ने	उस से जो	और तलब कर

مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ

और न चाह	तेरी तरफ़ (साथ)	अल्लाह ने एहसान किया	जैसे	और नेकी कर	दुनिया	से

الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

77	फ़साद करने वाले	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	ज़मीन में	फ़साद

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? (71)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? (72)

और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहां हैं वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। (74)

और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे, फिर हम कहेंगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएंगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। (75)

बेशक क़ारून था मूसा (अ) की क़ौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर (भी) भारी होतीं थीं, जब उस को उस की क़ौम ने कहा, इतरा नहीं बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। (76)

और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर (आख़िरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (77)

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	वह जानता	क्या नहीं	मेरे पास	एक इल्म की वजह से	मुझे दिया गया है	यह तो	कहने लगा

قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ

और ज़ियादा	कुव्वत में	उस से	वह ज़ियादा सख़्त	जो	जमाअ़तें	से (कितनी)	उस से क़ब्ल	बिला शुबाह हलाक कर दिया है

جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۷۸﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पर (सामने)	फिर वह निकला	78	मुजरिम (जमा)	उन के गुनाह	से (बाबत)	और न सवाल किया जाएगा	जमियत

فِىْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ

हमारे पास होता ऐसा	ऐ काश	दुनिया की ज़िन्दगी	चाहते थे (तालिब थे)	वह लोग जो	कहा	अपनी ज़ेब ओ ज़ीनत	में (साथ)

مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿۷۹﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और कहा	79	बड़ा	नसीब वाला	बेशक वह	क़ारून	जो दिया गया

اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

अच्छा	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया	उस के लिए जो	बेहतर	अल्लाह का सवाब	अफ़्सोस तुम पर	दिया गया था इल्म

وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫

ज़मीन	और उस के घर को	उस को	फिर हम ने धंसा दिया	80	सब्र करने वाले	सिवाए	और वह नसीब नहीं होता

فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ

से	और न हुआ वह	अल्लाह के सिवा	मदद करती उस की	कोई जमाअ़त	उस के लिए	सो न हुई

الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

कहने लगे	कल	उस का मुक़ाम	तमन्ना करते थे	जो लोग	और सुबह के वक़्त	81	बदला लेने वाले

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ

और तंग कर देता है	अपने बन्दे	से	जिस के लिए चाहे	रिज़्क़	फ़राख़ कर देता है	अल्लाह	हाए शामत

لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

फ़लाह नहीं पाते	हाए शामत	अलबत्ता हमें धंसा देता	हम पर	एहसान करता अल्लाह	यह कि	अगर न

الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۲﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ ع ۸ ۱۱

उन लोगों के लिए जो	हम करते हैं उसे	आख़िरत का घर	यह	82	काफ़िर (जमा)

لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۸۳﴾

83	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम (नेक)	और न फ़साद	ज़मीन में	बड़ाई	वह नहीं चाहते

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

बुराई के साथ	आया	और जो	उस से बेहतर	तो उस के लिए	नेकी के साथ	जो आया

فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

84	वह करते थे	जो	मगर-सिवा	उन्हों ने बुरे काम किए	उन लोगों को जिन्हों ने	तो बदला न मिलेगा

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से क़ब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअ़तों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख़्त थीं कुव्वत में, और ज़ियादा थीं जमियत में, उन के गुनाहों की बाबत सवाल न किया जाएगा मुजरिमों से। (78)

फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ज़ेब ओ ज़ीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो क़ारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, बेशक वह बड़ा नसीब वाला है। (79)

और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्हों ने कहा अफ़्सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाब (अजर) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अ़मल किया और वह सब्र करने वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। (80)

फिर हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (ख़ुद) हुआ बदला लेने वालों में से। (81)

और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुबह के वक़्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दों में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफ़िर फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते। (82)

यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते ज़मीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है। (83)

जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुरे अ़मल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। (84)

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ

सब से अच्छी लौटने की जगह	ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें	कुरआन	तुम पर	लाज़िम किया	वह (अल्लाह) जिस ने	बेशक

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی وَمَنْ هُوَ فِیْ

में	और वह कौन	हिदायत के साथ	आया	कौन	खूब जानता है	मेरा रब	फ़रमादें

ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۸۵﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ یُّلْقٰۤی اِلَیْكَ الْكِتٰبُ

किताब	तुम्हारी तरफ़	कि उतारी जाएगी	उम्मीद रखते	और तुम न थे	85	खुली गुमराही

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۶﴾ ز

86	काफ़िरों के लिए	मददगार	सो तुम हरगिज़ न होना	तुम्हारा रब	से	रहमत	मगर

وَلَا یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ

तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किए गए	जबकि	बाद	अल्लाह के अहकाम	से	और वह तुम्हें हरगिज़ न रोकें

وَادْعُ اِلٰی رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۸۷﴾ ج وَلَا تَدْعُ

और न पुकारो तुम	87	मुश्रिकीन	से	और तुम हरगिज़ न होना	अपने रब की तरफ़	और आप बुलाएं

وقف لازم

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا

सिवा	फ़ना होने वाली	हर चीज़	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के सिवा

ع ٦ / ١٢ الثلثة

وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾ ع

88	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	हुक्म	उसी के लिए-का	उस की ज़ात

آیَاتُهَا ٦٩ ❀ (٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकुआत 7	(29) सूरतुल अ़न्कबूत मकड़ी	आयात 69

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ع اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ

और वह	हम ईमान लाए	उन्हों ने कह दिया	कि	कि वह छोड़ दिए जाएंगे	लोग	क्या गुमान किया है	1	अलिफ़ लाम मीम

لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ

तो ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	उन से पहले	वह लोग जो	और अलबत्ता हम ने आज़माया	2	वह न आज़माए जाएंगे

الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ

वह लोग जो	क्या गुमान किया है	3	झूटे	और वह ज़रूर मालूम करलेगा	सच्चे हैं	वह लोग जो

یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ مَنْ

जो	4	जो वह फ़ैसला कर रहे हैं	बुरा है	वह हम से बाहर बच निकलेंगे	कि	बुरे काम	करते हैं

كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۵﴾

5	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	ज़रूर आने वाला	अल्लाह का वादा	तो बेशक	अल्लाह से मुलाक़ात की	वह उम्मीद रखता है

बेशक जिस अल्लाह ने तुम पर
कुरआन (पर अ़मल और तब्लीग़)
को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर
सब से अच्छी लौटने की जगह
फेर लाएगा, आप (स) फ़रमा दें
मेरा रब खूब जानता है कि कौन
हिदायत के साथ आया और कौन
खुली गुमराही में है। (85)
और तुम न थे उम्मीद रखते कि
तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी
जाएगी, मगर तुम्हारे रब की
रहमत से (नुज़ूल हुआ), सो तुम
हरगिज़ हरगिज़ न होना काफ़िरों के
लिए मददगार। (86)
और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के
अहकाम से न रोकें, उस के बाद
जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी
तरफ़, और आप (स) अपने रब की
तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़
मुश्रिकों में से न होना। (87)
और अल्लाह के साथ न पुकारो
कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा
कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के
सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है,
उसी का हुक्म है और उसी की
तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
क्या लोगों ने गुमान कर लिया
है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए
जाएंगे कि उन्हों ने कह दिया कि
हम ईमान ले आए हैं, और वह न
आज़माए जाएंगे। (2)
और अलबत्ता हम ने उन से पहले
लोगों को आज़माया, तो अल्लाह
ज़रूर मालूम कर लेगा उन लोगों
को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम
कर लेगा झूटों को। (3)
जो लोग बुरे काम करते हैं क्या
उन्हों ने गुमान किया है कि वह हम
से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो
वह फ़ैसला (ख़याल) कर रहे हैं। (4)
जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात
(मिलने) की उम्मीद रखता है तो
बेशक अल्लाह का वादा ज़रूर
आने वाला है और वह सुनने वाला,
जानने वाला। (5)

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। (6)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। (7)

और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊँगा वह जो तुम करते थे। (8)

और जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाख़िल करेंगे। (9)

और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्हों ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अ़ज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं बेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह खूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। (10)

और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ों को। (11)

और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहा: तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, बेशक वह झूटे हैं। (12)

और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और क़ियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के बारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। (13)

وَمَنْ جٰهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِىٌّ عَنِ

और जो	कोशिश करता है	तो सिर्फ़	कोशिश करता है वह	अपनी ज़ात के लिए	बेशक अल्लाह	अलबत्ता बेनियाज़	से

الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ

जहान वाले	6	और जो लोग	ईमान लाए	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧

उन से	उन की बुराइयां	और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें	ज़ियादा बेहतर	वह जो	वह करते थे	7

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ

और हम ने हुक्म दिया	इन्सान	माँ बाप से	हुस्ने सुलूक का	और अगर	तुझ से कोशिश करें

لِتُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ

कि तू शरीक ठहराए मेरा	जिस का नहीं	तुझे	उस का कोई इल्म	तो कहा न मान उन का

اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मेरी तरफ़ तुम्हें लौट कर आना	तो मैं ज़रूर बतलाऊँगा तुम्हें	वह जो	तुम करते थे	8	और जो लोग	वह ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِى الصّٰلِحِيْنَ ۝٩ وَمِنَ

और उन्हों ने अ़मल किए	अच्छे	हम उन्हें ज़रूर दाख़िल करेंगे	नेक बन्दों में	9	और से - कुछ

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِىَ فِى اللّٰهِ جَعَلَ

लोग	जो कहते हैं	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	फिर जब	सताए गए	अल्लाह की (राह) में	बना लिया

فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

सताना	लोग	जैसे अ़ज़ाब अल्लाह का	और अगर	आए	कोई मदद	तुम्हारे रब से

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِىْ صُدُوْرِ

तो वह ज़रूर कहते हैं	बेशक हम थे	तुम्हारे साथ	क्या नहीं है अल्लाह	खूब जानने वाला	वह जो	सीनों (दिल) में

الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

जहान वाले	10	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	वह लोग जो	ईमान लाए	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा

الْمُنٰفِقِيْنَ ۝١١ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا

मुनाफ़िक़ (जमा)	11	और कहा	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	उन लोगों को जो ईमान लाए	तुम चलो

سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ

हमारी राह	और हम उठा लेंगे	तुम्हारे गुनाह	हालांकि वह नहीं	उठाने वाले	से	उन के गुनाह

مِّنْ شَىْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٢ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ

कुछ	बेशक वह	अलबत्ता झूटे	12	और वह अलबत्ता ज़रूर उठायेंगे	अपने बोझ	और बहुत से बोझ	साथ

اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣ ع ١٣/١

अपने बोझ	और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी	क़ियामत के दिन	उस से जो	वह झूट घड़ते थे	13

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ

हज़ार साल	उन में	तो वह रहे	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ) को	और बेशक हम ने भेजा

اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

14	ज़ालिम थे	और वह	तूफ़ान	फिर उन्हें आ पकड़ा	साल	पचास	मगर कम

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

15	जहान वालों के लिए	एक निशानी	और उसे बनाया	और कश्ती वालों को	फिर हम ने उसे बचा लिया

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ

यह	और उस से डरो	तुम इबादत करो अल्लाह की	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	और इब्राहीम (अ)

خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

से	तुम परस्तिश करते हो	इस के सिवा नहीं	16	तुम जानते हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए

دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ

परस्तिश करते हो	वह जिन की तुम	बेशक	झूट	और तुम घड़ते हो	बुतों की	अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

पस तुम तलाश करो	रिज़्क़ के	तुम्हारे लिए	वह मालिक नहीं	अल्लाह के सिवा

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	उस का	और शुक्र करो	और उस की इबादत करो	रिज़्क़	अल्लाह के पास

تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ

बहुत सी उम्मतें	तो झुटला चुकी हैं	तुम झुटलाओगे	और अगर	17	तुम्हें लौट कर जाना है

مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

18	साफ़ तौर पर	पहुँचा देना	मगर	रसूल	पर (ज़िम्मे)	और नहीं	तुम से पहली

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ

फिर दोबारा पैदा करेगा उस को	पैदाइश	इब्तिदा करता है अल्लाह	कैसे	देखा उन्हों ने	क्या नहीं

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	चलो फिरो	फ़रमा दें	19	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक

فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ

उठाएगा	अल्लाह	फिर	पैदाइश	कैसे इब्तिदा की	फिर देखो तुम

النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ ع

20	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक अल्लाह	आख़री (दूसरी)	उठान

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

21	तुम लौटाए जाओगे	और उसी की तरफ़	जिस पर चाहे	और रहम फ़रमाता है	जिस को चाहे	वह अज़ाब देता है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (क़ौमे नूह अ को) तूफ़ान ने आ पकड़ा, और वह ज़ालिम थे। (14)
फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)
और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी क़ौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)
इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, बेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़्क़ तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)
और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)
क्या उन्हों ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इब्तिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, बेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)
आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसी पैदाइश की इब्तिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (20)
वह जिस को चाहे अज़ाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। (22) और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (23) सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (24) और इब्राहीम (अ) ने कहाः बेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। (25) पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), बेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (26) और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अ़ता फ़रमाए इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और बेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। (27) और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी क़ौम को, बेशक तुम बेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले जहान वालों में से किसी ने नहीं किया। (28)

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۡ وَمَا

और नहीं	आस्मान में	और न	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले	और न हो तुम

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ ع ٢ ١٤

और वह लोग जिन्हों ने	22	कोई मददगार	और न	कोई हिमायती	अल्लाह के सिवा	तुम्हारे लिए

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ

मेरी रहमत से	वह नाउम्मीद हुए	यही हैं	और उस की मुलाक़ात	अल्लाह की निशानियों का	इन्कार किया

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

उस की क़ौम	जवाब	सो न था	23	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	और यही हैं

اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

आग से	सो बचा लिया उस को अल्लाह	जला दो उस को	या	क़त्ल करो उस को	उन्हों ने कहा	सिवाए यह कि

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ

तुम ने बना लिए	और (इब्राहीम अ ने) कहा इस के सिवा नहीं	24	जो ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	इस में	बेशक

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया की ज़िन्दगी में	अपने दरमियान (आपस में)	दोस्ती	बुत (जमा)	अल्लाह के सिवा

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	काफ़िर (मुख़ालिफ़) हो जाएगा	क़ियामत के दिन	फिर

وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	बाज़ (दूसरे) का	तुम में से बाज़ (एक)	और लानत करेगा

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ۖ ق فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ وقف لازم

हिज्रत करने वाला	बेशक मैं	और उस ने कहा	लूत (अ)	उस पर	पस ईमान लाया	25	कोई मददगार

اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ

इस्हाक़ (अ)	उस को	और हम ने अ़ता फ़रमाए	26	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त ग़ालिब	वह	बेशक वह	अपने रब की तरफ़

وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ

और किताब	नुबुव्वत	उस की औलाद में	और हम ने रखी	और याक़ूब (अ)

وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और बेशक वह	दुनिया में	उस का अजर	और हम ने दिया उस को

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तुम करते हो	बेशक तुम	अपनी क़ौम को	(याद करो) जब उस ने कहा	और लूत (अ)	27	अलबत्ता नेकोकारों में से

الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	जहान वाले	से	किसी ने	उस को	नहीं पहले किया तुम से	बेहयाई

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ

और तुम करते हो	राह	और मारते हो	मर्द (जमा)	अलबत्ता तुम करते हो	क्या तुम वाक़ई

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا

उन्हों ने कहा	कि	सिवाए	उस की क़ौम का जवाब	सो न था	नाशाइस्ता हरकात	अपनी महफ़िलों में

ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	कहा	29	सच्चे लोग	से	अगर तू है	अल्लाह का अ़ज़ाब	ले आ हम पर

ع ٣ ٨ ١٥

انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ

हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	आए	और जब	30	मुफ़्सिद (जमा)	क़ौम-लोग	पर	मेरी मदद फ़रमा

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

उस बस्ती	लोग	हलाक करने वाले	बेशक हम	उन्हों ने कहा	ख़ुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا

बेशक उस में	इब्राहीम (अ) ने कहा	31	ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं	उस के लोग	बेशक

لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ

और उस के घर वाले	अलबत्ता हम बचा लेंगे उस को	उस को जो उस में	ख़ूब जानते हैं	हम	वह बोले	लूत (अ)

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ

आए	कि	और जब	32	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	उस की बीवी	सिवा

رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا

और वह बोले	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	परेशान हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते

لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ٝ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا

सिवा	और तेरे घर वाले	बेशक हम बचाने वाले हैं तुझे	और न ग़म खाओ	डरो नहीं तुम

امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰۤى اَهْلِ

लोग	पर	नाज़िल करने वाले	बेशक हम	33	पीछे रह जाने वाले	से	वह है	तेरी बीवी

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	वह बदकारी करते थे	इस वजह से कि	आस्मान से	अ़ज़ाब	इस बस्ती

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَاۤ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ

और मदयन की तरफ़	35	वह अ़क़्ल रखते हैं	लोगों के लिए	कुछ वाज़ेह निशानी	उस से	और अलबत्ता हम ने छोड़ा

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا

और उम्मीद वार रहो	तुम इबादत करो अल्लाह की	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	शुऐब (अ) को	उन का भाई

الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	फ़साद करते हुए (मचाते)	ज़मीन में	और न फिरो	आख़िरत का दिन

क्या तुम वाक़ई मर्दों से (फ़ेले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफ़िलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्हों ने कहा हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। (29)
लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ़्सिद लोगों पर मेरी मदद फ़रमा। (30)
और जब आए हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम (अ) के पास ख़ुशख़बरी ले कर, उन्हों ने कहा बेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, बेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। (31)
इब्राहीम (अ) ने कहा बेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी है), वह (फ़रिश्ते) बोले हम ख़ूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलबत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (32)
और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, बेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (33)
बेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अ़ज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। (34)
और अलबत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (बाक़ी रखे) जो अ़क़्ल रखते हैं। (35)
और मदयन (वालों) की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। (36)

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ

अपने घर में	पस वह सुबह को हो गए	ज़लज़ला	तो आ पकड़ा उन्हें	फिर उन्हों ने झुटलाया उस को

جٰثِمِیْنَ ۝۳۷ وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَیَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫

उन के रहने के मुक़ामात	तुम पर	वाज़ेह हो गए हैं	और तहक़ीक़	और समूद	और आद	37	औंधे पड़े हुए

وَزَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِیْلِ

राह	से	फिर रोक दिया उन्हें	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	और भले कर दिखाए

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِیْنَ ۝۳۸ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ

और अलबत्ता आए उन के पास	और हामान	और फ़िरऔन	और क़ारून	38	समझ बूझ वाले	हालांकि वह थे

مُّوْسٰی بِالْبَیِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِی الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

और वह न थे	ज़मीन (मुल्क) में	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	खुली निशानियों के साथ	मूसा (अ)

سٰبِقِیْنَ ۝۳۹ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَیْهِ

उस पर	हम ने भेजी	जो	तो उन में से	उस के गुनाह पर	हम ने पकड़ा	पस हर एक	39	बच कर भाग निकलने वाले

حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّیْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا

हम ने धंसा दिया	जो	और उन में से	चिंघाड़	उस को पकड़ा	जो (बाज़)	और उन में से	पत्थरों की बारिश

بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِیَظْلِمَهُمْ

ज़ुल्म करता उन पर	अल्लाह	और नहीं है	जो हम ने ग़र्क़ कर दिया	और उन में से	ज़मीन में	उस को

وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ۝۴۰ مَثَلُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا

बनाए	वह लोग जिन्हों ने	मिसाल	40	ज़ुल्म करते	खुद अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِیَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَیْتًا ؕ

एक घर	उस ने बनाया	मकड़ी	मानिंद	मददगार	अल्लाह के सिवा

وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُیُوْتِ لَبَیْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ۝۴۱ وقف لازم

41	जानते	काश होते वह	मकड़ी का	घर है	घरों में	सब से कमज़ोर	और बेशक

اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَیْءٍ ؕ وَهُوَ

और वह	कोई चीज़	उस के सिवा	से	जो वह पुकारते हैं	जानता है	बेशक अल्लाह

الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝۴۲ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ

लोगों के लिए	हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	42	हिक्मत वाला	ग़ालिब ज़बरदस्त

وَمَا یَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝۴۳ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पैदा किए अल्लाह ने	43	जानने वाले	सिवा	और नहीं समझते उन्हें

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۝۴۴ ع ٤ ١٦

44	ईमान वालों के लिए	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	हक़ के साथ	और ज़मीन

फिर उन्हों ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़लज़ले ने, पस वह सुबह को अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (37)
और (हम ने हलाक किया) आद और समूद को, और तहक़ीक़ तुम पर उन के रहने के मुक़ामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राहे (हक़) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38)
और (हम ने हलाक किया) क़ारून और फ़िरऔन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्हों ने तकब्बुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39)
पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह हैं) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज़ को हम ने ग़र्क़ कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर ज़ुल्म करता बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (40)
उन लोगों की मिसाल जिन्हों ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41)
बेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42)
और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43)
और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ, बेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)

الجزء ٢١

اُتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ

नमाज़	और क़ाइम करें	किताब से	आप (स) की तरफ़	वहि की गई	जो	आप (स) पढ़ें

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ

सब से बड़ी बात	और अलबत्ता अल्लाह की याद	और बुराई	बेहयाई	से	रोकती है	नमाज़	बेशक

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ

अहले किताब	और तुम न झगड़ो	45	जो तुम करते हो	जानता है	और अल्लाह

اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا

और तुम कहो	उन (में) से	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	सिवाए	वह बेहतर	मगर उस तरीक़े से जो

اٰمَنَّا بِالَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ

एक	और तुम्हारा माबूद	और हमारा माबूद	तुम्हारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	हम ईमान लाए उस पर जो

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ

पस जिन लोगों को	किताब	हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ़	और उसी तरह	46	फ़रमांबरदार (जमा)	उस के	और हम

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ

उस पर	बाज़ ईमान लाते हैं	और इन अहले मक्का से	उस पर	वह ईमान लाते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इस से क़ब्ल	आप (स) पढ़ते थे	और न	47	काफ़िर (जमा)	मगर (सिर्फ़)	हमारी आयतों का	और वह नहीं इन्कार करते

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	हक़ नाशनास	आलबत्ता शक करते	उस (सूरत) में	अपने दाएं हाथ से	और न उसे लिखते थे	कोई किताब

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِىْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ

और नहीं इन्कार करते	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	सीनों में	वाज़ेह आयतें	बल्कि वह

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ

आप (स) फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियां	उस पर	नाज़िल की गई	क्यों न	और वह बोले	49	ज़ालिम (जमा)	मगर	हमारी आयतों का

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا

कि हम ने नाज़िल की	क्या उन के लिए काफ़ी नहीं	50	साफ़ साफ़	डराने वाला	और इस के सिवा नहीं कि मैं	अल्लाह के पास	निशानियां	इस के सिवा नहीं

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	और नसीहत	अलबत्ता रहमत है	उस में	बेशक	उन पर	पढ़ी जाती है	किताब	आप (स) पर

ع ٥ / ١ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो	वह जानता है	गवाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	आप (स) फ़रमा दें कि काफ़ी है अल्लाह	51	वह ईमान लाते हैं

وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	वह घाटा पाने वाले	वही हैं	अल्लाह के	और वह मुन्किर हुए	बातिल पर	ईमान लाए	और जो लोग	और ज़मीन में

आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ किताब वहि की गई है, और नमाज़ क़ाइम करें, बेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई और बुराई से, और अलबत्ता अल्लाह की याद सब से बड़ी बात है, और अल्लाह जानता है जो तम करते हो। (45)

और तुम अहले किताब से न झगड़ो मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो, सिवाए उन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, और तुम कहो हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उस के फ़रमांबरदार हैं। (46)

और उसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की, पस जिन लोगों को हम ने किताब दी वह ईमान लाते हैं उस पर, और अहले मक्का में से बाज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इन्कार सिर्फ़ काफ़िर करते हैं। (47)

और आप (स) इस (नुज़ूले क़ुरआन) से क़ब्ल कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने दाएं हाथ से उसे लिखते थे। उस सूरत में अलबत्ता हक़ नाशनास शक करते। (48)

बल्कि यह वाज़ेह आयतें उन के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें इल्म दिया गया, और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ ज़ालिम करते हैं। (49)

और वह बोले उस पर उस के रब की तरफ़ से निशानियां (मोजिज़ात) क्यों न नाज़िल की गईं, आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि निशानियां (मोजिज़ात) अल्लाह के पास हैं और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (50)

क्या उन लोगों के लिए काफ़ी नहीं कि हम ने आप (स) पर किताब नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है, बेशक उस में उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत है जो ईमान लाते हैं। (51)

आप (स) फ़रमा दें अल्लाह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, वह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और वह अल्लाह के मुन्किर हुए वही लोग हैं घाटा पाने वाले। (52)

और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआ़द न होती मुक़र्रर, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)
और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)
जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अ़ज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआ़ला) कहेगा (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (55)
ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)
हर शख़्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (57)
और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के बाला ख़ानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)
जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)
और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)
और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", फिर वह कहां उलटे फिरे जाते हैं? (61)
अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (62)
और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछोः किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْ لَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ

अ़ज़ाब	तो आ चुका होता उन पर	मुक़र्रर	मीआ़द	और अगर न	अ़ज़ाब की	और वह आप (स) से जल्दी करते हैं

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿53﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ

अ़ज़ाब की	आप (स) से जल्दी करते हैं	53	उन्हें ख़बर न होगी	और वह	अचानक	और ज़रूर उन पर आएगा

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿54﴾ۙ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ

अ़ज़ाब	उन्हें ढांप लेगा	(जिस) दिन	54	काफ़िरों को	अलबत्ता घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿55﴾

55	तुम करते थे	जो	चखो तुम	और वह कहेगा	उन के पाऊँ	और नीचे से	उन के ऊपर से

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿56﴾

56	पस तुम इबादत करो	पस मेरी ही	वसीअ़	मेरी ज़मीन	बेशक	जो ईमान लाए	ऐ मेरे बन्दो

كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۣ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿57﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	57	तुम लौटाए जाओगे	फिर हमारी तरफ़	मौत	चखना	हर शख़्स

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

जारी हैं	बाला ख़ाने	जन्नत	से-के	हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿58﴾ۖ

58	काम करने वाले	(क्या ही) अच्छा अजर है	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे से

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿59﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

नहीं उठाते	जानवर जो	और बहुत से	59	वह भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर	जिन लोगों ने सब्र किया

رِزْقَهَا ڰ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ڮ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿60﴾ وَلَىِٕنْ

और अलबत्ता अगर	60	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और तुम्हें भी	उन्हें रोज़ी देता है	अल्लाह	अपनी रोज़ी

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	और काम में लगाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	किस ने बनाया	तुम पूछो उन से

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿61﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ करता है	अल्लाह	61	वह उलटे फिरे जाते हैं	फिर कहां	अल्लाह	वह ज़रूर कहेंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿62﴾ وَلَىِٕنْ

और अलबत्ता अगर	62	जानने वाला	हर चीज़ का	बेशक अल्लाह	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा कर दिया	पानी	आस्मान से	उतारा	किस ने	तुम उन से पूछो

مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿63﴾ۧ ع ۶/۱۲ ۲

63	वह अ़क़्ल से काम नहीं लेते	उन में अक्सर लोग	लेकिन	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	आप (स) कह दें	अल्लाह	अलबत्ता वह कहेंगे	उस का मरना

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

आख़िरत का घर	और बेशक	और कूद	सिवाए खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	और नहीं

وقف لازم لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ

कश्ती में	वह सवार होते हैं	फिर जब	64	वह जानते होते	काश	ज़िन्दगी	अलबत्ता वही

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ

नागहां (फ़ौरन) वह	ख़ुश्की की तरफ़	वह उन्हें नजात देता है	फिर जब	उस के लिए एतिक़ाद	ख़ालिस रख कर	अल्लाह को पुकारते हैं

يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ

पस अ़नक़रीब वह	और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं	हम ने उन्हें दिया	वह जो	ताकि नाशुक्री करें	65	शिर्क करने लगते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ

लोग	जबकि उचक लिए जाते हैं	हरम (सरज़मीने मक्का) को अम्न की जगह	कि हम ने बनाया	क्या उन्हों ने नहीं देखा	66	जान लेंगे वह

مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	नाशुक्री करते हैं	और अल्लाह की नेमत की	ईमान लाते हैं	क्या पस बातिल पर	उस के इर्द गिर्द	से

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ

या झुटलाया उस ने	झूट	अल्लाह पर	बान्धा	उस से जिस ने	बड़ा ज़ालिम	और कौन

بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह आया उस के पास	जब	हक़ को

ع ٦ ٣ وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	अलबत्ता साथ है नेकोकारों के	और बेशक अल्लाह	अपने रास्ते (जमा)	हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे	हमारी (राह) में	और जिन लोगों ने कोशिश की

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ (٣٠) سُوْرَةُ الرُّوْمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 (30) सूरतुर रोम आयात 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद	और वह	क़रीब की ज़मीन	में	2	रोमी	मग़्लूब हो गए	1	अलिफ़ लाम मीम

غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ

अल्लाह ही के लिए हुक्म	चन्द साल (जमा)	में	3	अ़नक़रीब वह ग़ालिब होंगे	अपने मग़्लूब होने

مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	अहले ईमान	ख़ुश होंगे	और उस दिन	और बाद	पहले

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

5	निहायत मेह्रबान	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	वह मदद देता है	अल्लाह की मदद से

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और बेशक आख़िरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64)

फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिक़ाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं। (65)

ताकि उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं, पस अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (66)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अम्न की जगह बनाया, जब कि उस के इर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। (67)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक़ उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68)

और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और बेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1) रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़्लूब हो गए। (2) और वह अपने मग़्लूब होने के बाद अ़नक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3)

पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से ख़ुश होंगे। (4)

वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेह्रबान है। (5)

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)
वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ़) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। (7)
क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनो के दरमियान है मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, और एक मुक़र्ररा मीआ़द के लिए, और बेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनिकर हैं। (8)
क्या उन्हों ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्हों ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्हों ने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर ज़ुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (9)
फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)
अल्लाह पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)
और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुज्रिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)
और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुन्किर हो जाएंगे। (13)
और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तित्तर बित्तर) हो जाएंगे। (14)
पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए सो वह बाग़ (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَعۡدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخۡلِفُ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	अपना वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता अल्लाह	अल्लाह का वादा है

لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶﴾ یَعۡلَمُوۡنَ ظَاهِرًا مِّنَ الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا ۖۚ وَهُمۡ عَنِ

से	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	से	ज़ाहिर को	वह जानते हैं	6	नहीं जानते

الۡاٰخِرَةِ هُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۷﴾ اَوَلَمۡ یَتَفَكَّرُوۡا فِیۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ ۟ قف مَا خَلَقَ اللّٰهُ

पैदा किया अल्लाह	नहीं	अपने जी (दिल) में	वह ग़ौर करते	क्या नहीं	7	ग़ाफ़िल हैं	वह	आख़िरत

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَیۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ

और एक मुक़र्रर मीआ़द	दुरुस्त तदबीर के साथ	मगर	उन दोनो के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों

وَاِنَّ كَثِیۡرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآیِٔ رَبِّهِمۡ لَكٰفِرُوۡنَ ﴿۸﴾ اَوَلَمۡ یَسِیۡرُوۡا

उन्हों ने सैर की	क्या नहीं	8	मुन्किर हैं	अपना रब	मुलाक़ात से	लोगों से	अक्सर	और बेशक

فِی الۡاَرۡضِ فَیَنۡظُرُوۡا كَیۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ

उन से पहले	वह लोग जो	अन्जाम	कैसा हुआ	जो वह देखते	ज़मीन में

كَانُوۡۤا اَشَدَّ مِنۡهُمۡ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الۡاَرۡضَ وَعَمَرُوۡهَاۤ اَكۡثَرَ

ज़ियादा	और उन्हों ने उस को आबाद किया	ज़मीन	और उन्हों ने बोया जोता	ताक़त (में)	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे

مِمَّا عَمَرُوۡهَا وَجَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِیَظۡلِمَهُمۡ

कि उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	पस न था	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	इन्हों ने उसे आबाद किया	उस से जो

وَلٰـكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ یَظۡلِمُوۡنَ ؕ﴿۹﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِیۡنَ

जिन लोगों ने	अन्जाम	हुआ	फिर	9	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और लेकिन

اَسَآءُوا السُّوۡٓاٰۤی اَنۡ كَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوۡا بِهَا یَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۱۰﴾ ع ۱۰ ۴

10	उस से मज़ाक़ करते	और थे वह	अल्लाह की आयतों को	कि उन्हों ने झुटलाया	बुरा	बुरे काम किए

اَللّٰهُ یَبۡدَؤُا الۡخَلۡقَ ثُمَّ یُعِیۡدُهٗ ثُمَّ اِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۱﴾ وَیَوۡمَ

और जिस दिन	11	तुम लौटाए जाओगे	फिर उस की तरफ़	फिर वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा	ख़ल्क़त	अल्लाह पहली बार पैदा करता है

تَقُوۡمُ السَّاعَةُ یُبۡلِسُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۱۲﴾ وَلَمۡ یَكُنۡ لَّهُمۡ

उन के लिए	और न होंगे	12	मुज्रिम (जमा)	नाउम्मीद रह जाएँगे	बरपा होगी क़ियामत

مِّنۡ شُرَكَآئِهِمۡ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوۡا بِشُرَكَآئِهِمۡ كٰفِرِیۡنَ ﴿۱۳﴾

13	मुन्किर	अपने शरीकों के	और वह हो जाएंगे	कोई सिफ़ारशी	उन के शरीकों में से

وَیَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ یَوۡمَئِذٍ یَّتَفَرَّقُوۡنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا

पस जो लोग ईमान लाए	14	मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे	उस दिन	क़ाइम होगी क़ियामत	और जिस दिन

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمۡ فِیۡ رَوۡضَةٍ یُّحۡبَرُوۡنَ ﴿۱۵﴾

15	खुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे	बाग़ में	सो वह	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और मुलाक़ात को	हमारी आयतों को	और झुटलाया	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

जब	अल्लाह	पस पाकीज़गी (बयान करो)	16	हाज़िर (गिरिफ़्तार) किए जाएंगे	अ़ज़ाब में	पस यही लोग

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	तमाम तारीफ़ें	और उस के लिए	17	तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त)	और जब	तुम शाम करो (शाम के वक़्त)

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَىَّ

ज़िन्दा	वह निकालता है	18	तुम ज़ुहर करते हो (ज़ुहर के वक़्त)	और जब	और बाद ज़वाल (तीसरे पहर)	और ज़मीन

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَيُحْىِ الْاَرْضَ بَعْدَ

बाद	ज़मीन	और वह ज़िन्दा करता है	ज़िन्दा से	मुर्दा	और निकालता है वह	मुर्दा से

ع ٢ ٩ ٥

مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ؑ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

से	उस ने पैदा किया तुम्हें	कि	और उस की निशानियों से	19	तुम निकाले जाओगे	और उसी तरह	उस का मरना

تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	कि	और उस की निशानियों से	20	फैले हुए	आदमी	नागहां तुम	फिर	मिट्टी

لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ

और उस ने किया	उन की तरफ़ (पास)	ताकि तुम सुकून हासिल करो	जोड़े	तुम्हारी जिन्स से	तुम्हारे लिए

بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और मेहरबानी	मुहब्बत	तुम्हारे दरमियान

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ

तुम्हारी ज़बानें	और मुख़तलिफ़ होना	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	और उस की निशानियों से

وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ

और उस की निशानियों से	22	आ़लिमों (दानिशमन्दों) के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और तुम्हारे रंग

مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ

बेशक	उस के फ़ज़्ल से	और तुम्हारा तलाश करना	और दिन	रात में	तुम्हारा सोना

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ

बिजली	वह दिखाता है तुम्हें	और उस की निशानियों से	23	वह सुनते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْىٖ بِهِ الْاَرْضَ

ज़मीन	फिर ज़िन्दा करता है उस से	पानी	आस्मान से	और वह नाज़िल करता है	और उम्मीद के लिए	ख़ौफ़

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	अ़क़्ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	इस में	बेशक	उस के मरने के बाद

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाक़ात को आख़िरत की, पस यही लोग अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किए जाएंगे। (16)
पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17)
और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और ज़ुहर के वक़्त। (18)
वह मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है, और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह ज़िन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (19)
और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)
और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी जिन्स से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, बेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (21)
और उस की निशानियों में से हैं आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का मुख़्तलिफ़ होना, बेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं। (22)
और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी), बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)
और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (24)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

और उस की निशानियों से	कि	क़ाइम हैं	आस्मान	और ज़मीन	उस के हुक्म से	फिर	जब वह तुम्हें बुलाएगा

دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ مَنْ

एक निदा	ज़मीन से	यकबारगी तुम	निकल आओगे	25	और उस के लिए	जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا

आस्मानों में	और ज़मीन में	सब उसी के लिए	फ़रमांबरदार	26	और वही है जो	पहली बार पैदा करता है

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى

ख़ल्क़त	फिर उस को दोबारा पैदा करेगा	और वह (यह)	बहुत आसान	उस पर	और उसी के लिए	शान	बुलन्द तर

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ۧ ضَرَبَ لَكُمْ ع ٣ / ٨ / ٦

आस्मानों में	और ज़मीन	और वह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	27	उस ने बयान की	तुम्हारे लिए

مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

एक मिसाल	से	तुम्हारी जानें (हाल)	क्या तुम्हारे लिए	से	जो मालिक हुए	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)

مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ

कोई शरीक	में	जो हम ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	सो (ताकि) तुम	उस में	बराबर	(क्या) तुम उन से डरते हो

كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

जैसे तुम डरते हो	अपनी जानें (अपनों से)	उसी तरह	हम खोल कर बयान करते हैं	निशानियां	अक़्ल वालों के लिए	28

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ

बल्कि	पैरवी की	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	अपनी ख़ाहिशात	इल्म के बग़ैर (बेजाने)	तो कौन हिदायत देगा

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

जिसे	गुमराह करे अल्लाह	और नहीं	उन के लिए	कोई	मददगार	29	पस सीधा रखो तुम	अपना चेहरा

لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ

दीन के लिए	यक रुख़ हो कर	फ़ित्रत अल्लाह की	जो (जिस)	लोगों को पैदा किया उस ने	उस पर

لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ

तबदीली नहीं	अल्लाह की ख़ल्क़ में	यह	दीन सीधा	और लेकिन

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا

अक्सर लोग	वह जानते नहीं	30	रुजूअ करने वाले	उस की तरफ़	और तुम डरो उस से	और क़ाइम रखो तुम

الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا

नमाज़	और न हो तुम	से	शिर्क करने वाले	31	(उन में) से	जिन्हों ने	टुकड़े टुकड़े कर लिया

دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

अपना दीन	और हो गए	फ़िर्क़े फ़िर्क़े	सब गिरोह	उस पर	उन के पास	ख़ुश हैं	32

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान क़ाइम हैं। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम यकबारगी निकल आओगे। (25)
और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। (26)
और वही है जो पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (27)
उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे ग़ुलामों में से) उस रिज़्क़ में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अक़्ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। (28)
बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी ख़ाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं हैं उन के लिए कोई मददगार। (29)
पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) यक रुख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्रत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़ल्क़ (बनाई हुई फ़ित्रत) में कोई तबदीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (30)
सब उस की तरफ़ रुजूअ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम क़ाइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। (31)
उन में से जिन्हों ने अपना दीन टुकड़े टुकड़े कर लिया, फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। सब के सब गिरोह उस पर ख़ुश हैं जो उन के पास है। (32)

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ

फिर जब	उस की तरफ़	रुजूअ़ करते हैं	अपने रब को	वह पुकारते हैं	कोई तक्लीफ़	पहुँचती है लोगों को	और जब

اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا

कि नाशुक्री करें	33	शरीक करने लगते हैं	अपने रब के साथ	उन में से	एक गिरोह	नागहां	रहमत	अपनी तरफ़ से	वह उन को चखा देता है

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

कोई सनद	उन पर	क्या हम ने नाज़िल की	34	तुम जान लोगे	फिर अ़नक़रीब	सो फ़ाइदा उठा लो तुम	उस की जो हम ने दिया

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब	35	शरीक करते हैं	उस के साथ	हैं	वह जो	कि वह बतलाती है

فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	मायूस हो जाते हैं	नागहां वह	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	तो वह खुश हों उस से

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ

बेशक	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़	कुशादा करता है	कि अल्लाह	क्या उन्हों ने नहीं देखा

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ

उस का हक़	क़राबत दार	पस दो तुम	37	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	अलबत्ता निशानियां	इस में

وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	उन लोगों के लिए जो	बेहतर	यह	और मुसाफ़िर	और मिसकीन

وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟

ताकि बढ़े	सूद	से	तुम दो	और जो	38	फ़लाह पाने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह की रज़ा

فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

ज़कात	से	और जो तुम दो	अल्लाह के हां	तो नहीं बढ़ता	लोग (जमा)	माल (जमा)	में

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

अल्लाह है जिस ने	39	चन्द दर चन्द करने वाले	वह	तो वही लोग	अल्लाह की रज़ा	चाहते हुए

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

से	क्या	वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	फिर वह तुम्हें मौत देता है	फिर उस ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	पैदा किया तुम्हें

شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	कुछ भी	इन (कामों) में से	करे	जो	तुम्हारे शरीक (जमा)

ع ١٣ يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ

कमाया	उस से जो	और दर्या (तरी)	ख़ुश्की में	फ़साद	ज़ाहिर हो गया	40	वह शरीक ठहराते हैं

اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

41	बाज़ आ जाएं वह	शायद वह	उन्हों ने किया (आमाल)	बाज़	ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए	लोगों के हाथ

और जब लोगों को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ़ करते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखा देता है तो नागहां एक गिरोह (के लोग) उन में से अपने रब के साथ शरीक करने लगते हैं। (33) कि वह उसकी नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़) फ़ाइदा उठा लो, फिर अ़नक़रीब (तुम उसका अन्जाम) जान लोगे। (34) क्या हम ने उन पर कोई सनद नाज़िल की? कि वह बतलाती है जो उस के साथ यह शरीक करते हैं। (35) और जब हम चखाएं लोगों को (रहमत का मज़ा) तो उस से खुश हों, और अगर उन्हें उस के सबब कोई बुराई पुहँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है (और जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, बेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निशानियां हैं। (37) पस तुम क़राबतदारों को उस का हक़ दो और मोहताज और मुसाफ़िर को, यह उन के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही लोग फ़लाह (दो जहानों की कामयाबी) पाने वाले हैं। (38) और जो तुम सूद दो कि लोगों के माल बढ़ें (इज़ाफ़ा हो) तो (यह) अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और जो तुम अल्लाह की रज़ा चाहते हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं (अपना माल और अजर) चन्द दर चन्द करने वाले। (39) अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई है) जो उन कामों मे से कुछ भी करे? वह पाक है और बरतर उस से जो वह शरीक ठहराते हैं। (40) फ़साद ख़ुश्की और तरी में ज़ाहिर हो गया (फैल गया) उस से जो कमाया लोगों के हाथों ने (उन के आमाल के सबब) ताकि वह उन के बाज़ आमाल का मज़ा उन्हें चखाए, शायद वह बाज़ आ जाएं। (41)

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर तुम देखो	ज़मीन	में	तुम चलो फिरो	आप (स) फ़रमा दें

مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

अपना चेहरा	पस सीधा रखो	42	शिर्क करने वाले	उन के अक्सर	थे	पहले (थे)

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	अल्लाह से	उस के लिए (जिस को)	टलना नहीं	वह दिन	आ जाए	कि	इस से क़ब्ल	दीने रास्त के लिए (तरफ़)

يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे अ़मल	और जिस ने किए	उस का कुफ़्र	तो उसी पर	जिस ने कुफ़्र किया	43	जुदा जुदा हो जाएंगे

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे वह	44	सामान कर रहे हैं	तो वह अपने लिए

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ

और उस की निशानियों से	45	काफ़िर (जमा)	पसंद नहीं करता	बेशक वह	अपना फ़ज़्ल	से

اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِىَ

और ताकि चलें	से (का) अपनी रहमत	और ताकि वह तुम्हें चखाए	खुशख़बरी देने वाली	हवाएं	कि वह भेजता है

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	कश्तियां

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ

पस वह उन के पास आए	उन की क़ौमें	तरफ़	बहुत से रसूल	आप (स) से पहले	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا

हक़ (ज़िम्मे)	और है	वह जिन्हों ने जुर्म किया (मुज्रिम)	से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	खुली निशानियों के साथ

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	जो भेजता है	अल्लाह	47	मोमिनीन	मदद	हम पर (हमारा)

فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِى السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ

और वह उसे कर देता है	वह चाहता है	जैसे	आस्मान में	फिर वह (बादल) फैलाता है	बादल	तो वह उभारती हैं

كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ

वह उसे पहुँचा देता है	फिर जब	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश की बूंद	फिर तू देखे	टुकड़े टुकड़े

مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا

थे	और अगरचे	48	खुशियां मनाने लगते हैं	अचानक वह	अपने बन्दों	से	जिसे वह चाहता है

مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता मायूस (जमा)	पहले (ही) से	उन पर	कि वह नाज़िल हो	उस से क़ब्ल

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अन्जाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। (42)

पस अपना चेहरा दीने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ़) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। (43)

जिस ने कुफ़्र किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़्र (का वबाल), और जिस ने अच्छे अ़मल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44)

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, बेशक अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। (45)

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं खुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कश्तियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) और ताकि तुम शुक्र करो। (46)

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की क़ौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुज्रिमों से इन्तिक़ाम लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनों की मदद करना। (47)

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती हैं, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक खुशियां मनाने लगते हैं। (48)

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। (49)

فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

उस के मरने के बाद	ज़मीन	वह कैसे ज़िन्दा करता है	अल्लाह की रहमत	आसार	तरफ़	पस देख तो

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ

और अगर	50	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	मुर्दे	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला	वही	बेशक

اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ

पस बेशक आप (स)	51	नाशुक्री करने वाले	उस के बाद	ज़रूर हो जाएं	ज़र्द शुदा	फिर वह उसे देखें	हवा	हम भेजें

لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	पीठ दे कर	जब वह फिर जाएं	आवाज़	बहरों	सुना सकते	और नहीं	मुर्दों	नहीं सुना सकते

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ

जो ईमान लाता है	मगर	आप नहीं सुना सकते	उस की गुमराही से	अन्धा	हिदायत देने वाले	और आप (स) नहीं

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ

कमज़ोरी	से (में)	वह जिस ने तुम्हें पैदा किया	अल्लाह	53	फ़रमांबरदार (जमा)	पस वह	हमारी आयतों पर

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ

कुव्वत	बाद	फिर उस ने कर दिया	कुव्वत	कमज़ोरी	बाद	उस ने बनाया-दी	फिर

ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾

54	कुदरत वाला	इल्म वाला	और वह	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ

एक घड़ी से ज़ियादा	वह नहीं रहे	मुज्रिम (जमा)	क़सम खाएंगे	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन

كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	और कहा-कहेंगे	55	औन्धे जाते	वह थे	उसी तरह

وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا

पस यह है	जी उठने का दिन	तक	में (मुताबिक़) नविश्ताए इलाही	यक़ीनन तुम रहे हो	और ईमान

يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ

नफ़ा न देगी	पस उस दिन	56	न जानते थे	तुम	और लेकिन	जी उठने का दिन

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं	57	राज़ी करना चाहा जाएगा	और न वह	उन की माज़िरत	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो

لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ

तुम लाओ उन के पास कोई निशानी	और अगर	मिसालें	हर क़िस्म	इस क़ुरआन	में	लोगों के लिए

لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	झूट बनाते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम नहीं हो	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो ज़रूर कहेंगे

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है! बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (50)

और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51)

पस बेशक आप (स) न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52)

आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फ़रमांबरदार हैं। (53)

अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला कुदरत वाला है। (54)

और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी क़सम खाएंगे मुज्रिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55)

और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गयाः यक़ीनन तुम किताबे ईलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56)

पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़्र ख़्वाही) जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57)

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

قرأ حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختارة ١٢

ع ٥ ١٣ ٨

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ٥٩

59	समझ नहीं रखते	जो लोग	दिल (जमा)	पर	अल्लाह मुहर लगा देता है	उसी तरह

ع ٦ / ٩

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ٦٠

60	यक़ीन नहीं रखते	जो लोग	और वह हरगिज़ हलका न पाएं आप को	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप सब्र करें

اٰيَاتُهَا ٣٤ ❀ سُوْرَةُ لُقْمٰنَ (٣١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4	(31) सूरह लुक़मान	आयात 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ٢ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ٣

3	नेकोकारों के लिए	और रहमत	हिदायत	2	पुर हिक्मत किताब	आयतें	यह	1	अलिफ़ लाम मीम

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	और वह	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ٤ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥

5	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग	अपने रब से	हिदायत	पर	यही लोग	4	वह यक़ीन रखते हैं

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करे	खेल की (बेहूदा) बातें	ख़रीदता है	जो	लोग	और से

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ٦

6	ज़िल्लत वाला अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	और वह उसे ठहराते हैं	बे समझे

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ

गोया	उस ने उसे सुना नहीं	गोया	तकब्बुर करते हुए	वह मुँह मोड़ लेता है	हमारी आयतें	पढ़ी जाती हैं उस पर	और जब

فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अमल किए	ईमान लाए	बेशक जो लोग	7	दर्दनाक	अज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	गिरानी	उस के कानों में

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ٨ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ

सच्चा	अल्लाह का वादा	उस में	हमेशा रहेंगे	8	नेमतों के बाग़ात	उन के लिए	अच्छे

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٩ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى

और उस ने डाले	तुम उन्हें देखते हो	बग़ैर सुतून	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह

فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۭ

जानवर	हर क़िस्म	उस में	और फैलाए	झुक (न) जाए तुम्हारे साथ	कि	पहाड़ (जमा)	ज़मीन में

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ١٠

10	उम्दा	जोड़े	हर क़िस्म	उस में	फिर हम ने उगाए	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)
आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यक़ीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)
यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)
हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)
जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)
यही लोग अपने रब (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)
और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है। (6)
और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तकब्बुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (7)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, उन के लिए नेमतों के बाग़ात हैं। (8)
उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)
उस ने सुतून के बग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर क़िस्म के उम्दा जोड़े। (10)

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ

बल्कि	उस के सिवा	वह जो	पैदा किया	क्या	पस तुम मुझे दिखाओ	ख़ल्क़त (बनाया हुआ) अल्लाह का	यह

ع ۱۱ ۱۰
الظّٰلِمُوْنَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۱﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ

तुम शुक्र करो	कि	हिक्मत	लुक़मान	और अलबत्ता हम ने दी	11	खुली गुमराही	में	ज़ालिम (जमा)

لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ

बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	और जिस ने नाशुक्री की	अपने लिए	वह शुक्र करता है	तो इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	शुक्र करता है	और जो	अल्लाह का

وقف النبي ﷺ ۱۲
حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ

अल्लाह के साथ	तू न शरीक ठहरा	ऐ मेरे बेटे	उसे नसीहत कर रहा था	और वह	अपने बेटे को	लुक़मान	कहा	और जब	12	तारीफ़ों के साथ

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ

उसे पेट में रखा	उस के माँ बाप के बारे में	इन्सान	और हम ने ताकीद कर दी	13	अलबत्ता ज़ुल्मे अज़ीम	बेशक शिर्क

اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِىْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِىْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ

और अपने माँ बाप का	कि तू मेरा शुक्र कर	दो साल में	और उस का दूध छुड़ाना	पर कमज़ोरी	कमज़ोरी	उस की माँ

النصف
اِلَىَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ لَكَ

तुझे	जिस का नहीं	मेरा	कि तू शरीक ठहराए	पर (की)	वह तेरे साथ कोशिश करें	और अगर	14	लौट कर आना	मेरी तरफ़

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ

और तू पैरवी कर	अच्छे तरीक़े से	दुनिया में	और उन के साथ बसर कर	तू उन दोनों का कहा न मान	कोई इल्म	उस का

سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَىَّ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

जो कुछ	सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	मेरी तरफ़	रुजूअ करे	जो	रास्ता

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ يٰبُنَىَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

राई	से (के)	वज़न (बराबर) दाना	अगर हो	बेशक वह	ऐ मेरे बेटे	15	तुम करते थे

فَتَكُنْ فِىْ صَخْرَةٍ اَوْ فِى السَّمٰوٰتِ اَوْ فِى الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا

ले आएगा उसे	ज़मीन में	या	आस्मानों में	या	सख़्त पत्थर	में	फिर वह हो

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۶﴾ يٰبُنَىَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

और हुक्म दे	क़ाइम कर नमाज़	ऐ मेरे बेटे	16	ख़बरदार	बारीक बीन	बेशक अल्लाह	अल्लाह

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ

जो तुझ पर पहुँचे	पर	और सब्र कर	बुरी बात	से	और रोक तू	अच्छे काम

اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

लोगों से	अपना रुख़सार	और तू टेढ़ा न कर	17	बड़ी हिम्मत के काम	से	बेशक यह

وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿۱۸﴾

18	ख़ुद पसंद	इतराने वाले	हर किसी	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	इतराता	ज़मीन में	और न चल तू

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस
तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया
उन्हों ने जो उस के सिवा हैं, बल्कि
ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (11)
और अलबत्ता हम ने दी लुक़मान को
हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम
अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र
करता है तो वह सिर्फ़ अपने (ही
भले के) लिए करता है, और जिस
ने नाशुक्री की तो बेशक अल्लाह
बेनियाज़, तारीफ़ों के साथ है। (12)
और (याद करो) जब लुक़मान
ने अपने बेटे को कहा और वह
उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे
बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक
न ठहरा, बेशक शिर्क एक ज़ुल्मे
अज़ीम है। (13)
और हम ने इन्सान को ताकीद की
उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने
सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी
पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट
में रखा, और दो साल में उस का
दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर
और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ़
(ही) लौट कर आना है। (14)
और अगर वह दोनों तेरे साथ
कोशिश करें कि तू मेरा शरीक
ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म
(सनद) नहीं तो उन का कहा न
मान, और दुनिया (के मामलात) में
उन के साथ अच्छे तरीक़े से बसर
कर, और उस के रास्ते की पैरवी
कर जो रुजूअ करे मेरी तरफ़, फिर
तुम्हें मेरी तरफ़ ही लौट कर आना
है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो
कुछ तुम करते थे। (15)
ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज़) एक
राई के दाने के बराबर (भी) हो,
फिर वह किसी सख़्त पत्थर (चटान)
में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में,
या ज़मीन में (पोशीदा) हो,
अल्लाह उसे ले आएगा
(हाज़िर कर देगा), बेशक अल्लाह
बारीक बीन, बाख़बर है। (16)
ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ाइम कर,
और अच्छे कामों का हुक्म दे, और
तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर
जो (उफ़ताद) पहुँचे उस पर सब्र
कर, बेशक यह बड़ी हिम्मत के
कामों में से है। (17)
और तू लोगों से (बात करते हुए)
अपना रुख़सार न टेढ़ा कर, और
ज़मीन में इतराता हुआ न चल,
बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी
इतराने वाले, ख़ुद पसंद को। (18)

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ

आवाज़ें	सब से नापसंदीदा	बेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त कर	अपनी रफ़्तार में	और मियाना रवी कर

لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝١٩ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا　ع ٢ ٨ ١١

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तुम ने नहीं देखा	19	गधा	आवाज़

فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۭ وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और बाज़	और पोशीदा	ज़ाहिर	अपनी नेमतें	तुम पर (तुम्हें)	और भरपूर दें	ज़मीन में

مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٢٠

20	और बग़ैर किताबे रोशन	और बग़ैर हिदायत	इल्म	बग़ैर	अल्लाह (के बारे में)	झगड़ता है	जो

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا

जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह	जो	तुम पैरवी करो	उन से	कहा जाए	और जब

عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٢١

21	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	उन को बुलाता	शैतान	हो	क्या अगर	अपने बाप दादा	उस पर

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

तो बेशक उस ने थामा	नेकोकार	और वह	अल्लाह की तरफ़	अपना चेहरा	झुका दे	और जो

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۭ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٢٢ وَمَنْ كَفَرَ

और जो कुफ़्र करे	22	तमाम काम (जमा)	इन्तिहा	और अल्लाह की तरफ़	हल्क़ा मज़बूत

فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۭ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	वह करते थे	फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे वह जो	उन का लौटना	हमारी तरफ़	उस का कुफ़्र	तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٢٣ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى

तरफ़	फिर हम उन्हें खींच लाएंगे	थोड़ा	हम उन्हें फ़ाइदा देंगे	23	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला

عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝٢٤ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मानों (को)	किस ने पैदा किया	तुम उन से पूछो	और अगर	24	सख़्त	अ़ज़ाब

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٢٥ لِلّٰهِ مَا

अल्लाह के लिए जो कुछ	25	जानते नहीं	बल्कि उन के अक्सर	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	तो वह यक़ीनन कहेंगे “अल्लाह”

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٦ وَلَوْ اَنَّمَا

यह हो कि जो	और अगर	26	तारीफ़ों के क़ाबिल	बेनियाज़	वह	बेशक अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों में

فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	उस की सियाही	और समन्दर	क़लमें	दरख़्त	से - कोई	ज़मीन	में

سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٧

27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह की बातें	तो भी ख़तम न हों	समन्दर (जमा)	सात

और अपनी रफ़्तार में मियाना रवी
(इख़्तियार) कर, और अपनी
आवाज़ को पस्त रख, बेशक
आवाज़ों में सब से नापसंदीदा
आवाज़ गधे की है। (19)
क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह
ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है
जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ
ज़मीन में है, और उस ने तुम्हें
अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें
भरपूर दीं, और लोगों में बाज़ (ऐसे
हैं) जो अल्लाह के बारे में झगड़ते
हैं बग़ैर इल्म, बग़ैर हिदायत और
बग़ैर रोशन किताब के। (20)
और जब उन से कहा जाए, जो
अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम
उस की पैरवी करो तो वह कहते
हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे
जिस पर हम ने अपने बाप दादा
को पाया है, क्या (उस सूरत में भी
कि) अगर शैतान उन को दोज़ख़ के
अ़ज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21)
और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम
ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और
वह नेकोकार हो, तो बेशक उस ने
मज़बूत हल्क़ा (दस्त आवेज़) थाम
लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही)
तमाम कामों की इन्तिहा है। (22)
और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र
आप (स) को ग़मगीन न कर दे,
उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है,
फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो
वह करते थे, बेशक अल्लाह दिलों
के भेद जानने वाला है। (23)
हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा)
फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे
सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़। (24)
और अगर तुम उन से पूछोः किस
ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा
किया? तो वह यक़ीनन कहेंगे
“अल्लाह”। आप (स) फ़रमा दें तमाम
तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि
उन के अक्सर नहीं जानते। (25)
अल्लाह ही के लिए है जो कुछ
आस्मानों और ज़मीन में है, बेशक
अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के
क़ाबिल। (26)
और अगर यह हो कि ज़मीन में जो
भी दरख़्त हैं क़लम बन जाएं और
समन्दर उस की सियाही (बन जाएं)
और उस के बाद सात समन्दर
(और हों) तो भी अल्लाह की
बातें ख़तम न हों, बेशक अल्लाह
ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾

28	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	जैसे एक शख़्स	मगर	और नहीं तुम्हारा जी उठाना	नहीं तुम सब का पैदा करना

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ

रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْۤ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	मुक़र्ररा	मुद्दत	तरफ़	चलता रहेगा	हर एक	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۹﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ

वह परस्तिश करते हैं	जो-जिस	और यह कि	वही बरहक़	इस लिए कि अल्लाह	यह	29	ख़बरदार	उस से जो कुछ तुम करते हो

ع ۳ ۱۱ ۱۲ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

कि	क्या तू ने नहीं देखा	30	बड़ाई वाला	बुलन्द मरतबा	वही	और यह कि अल्लाह	बातिल	उस के सिवा

الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ

बेशक	उस की निशानियां	ताकि वह तुम्हें दिखा दे	अल्लाह की नेमतों के साथ	दर्या में	चलती है	कश्ती

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ

साइबानों की तरह	मौज	उन पर छा जाती है	और जब	31	बड़े शुक्र गुज़ार	बड़े सब्र वाले	वास्ते हर	अलबत्ता निशानियां	उस में

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ

ख़ुश्की की तरफ़	उस ने उन्हें बचा लिया	फिर जब	उस के लिए दीन (इबादत)	ख़ालिस कर के	वह अल्लाह को पुकारते हैं

فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

32	नाशुक्रा	अ़हद शिकन	हर	सिवाए	हमारी आयतों का	और इन्कार नहीं करता	मियाना रो	तो उन में कोई

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ

कोई बाप	न काम आएगा	वह दिन	और ख़ौफ़ करो	अपना परवरदिगार	तुम डरो	लोगो	ऐ

عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	कुछ	से (के) बाप	काम आएगा	वह	और न कोई बेटा	अपने बेटे	से-के

حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ

अल्लाह से	और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे	दुनिया की ज़िन्दगी	सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले	सच्चा

الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ

बारिश	और वह नाज़िल करता है	क़ियामत का इल्म	उस के पास	बेशक अल्लाह	33	धोका देने वाला

وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ

कल	वह करेगा	क्या	कोई शख़्स	जानता	और नहीं	(हामिला के) रहम में	जो	और वह जानता है

ع ٤ ۱۳ وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۳۴﴾

34	ख़बरदार	इल्म वाला	बेशक अल्लाह	वह मरेगा	ज़मीन	किस	कोई शख़्स	और नहीं जानता

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख़्स (का पैदा करना), बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाख़िल करता है रात को दिन में, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुक़र्ररा (रोज़े क़ियामत) तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है। (29) यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परस्तिश करते हैं सब बातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ाई वाला है। (30) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कश्ती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियां दिखा दे, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (31) और जब मौज उन पर साइबानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लिया तो उन में कोई मियाना रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अ़हद शिकन नाशुक्रे के। (32) ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का ख़ौफ़ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोका न दे। (33) बेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही बारिश नाज़िल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रहम में है, और नहीं जानता कोई शख़्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ख़बरदार है। (34)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ (٣٢) سُوْرَةُ السَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआ़त 3 | (32) सूरतुस सजदा | आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
इस में कोई शक नहीं कि इस किताब (कु़रआन) का नाज़िल करना तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है। (2)
क्या वह कहते हैं कि यह उस ने घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है ताकि तुम उस क़ौम को डराओ जिस के पास कोई डराने वाला नहीं आया तुम से पहले, ताकि वह हिदायत पा लें। (3)
अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है छः (6) दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार किया, तुम्हारे लिए उस के सिवा नहीं कोई मददगार, और न सिफ़ारिश करने वाला, सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (4)
वह हर काम की तदबीर करता है आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह काम) उस की तरफ़ रुजूअ़ करेगा एक दिन में, जिस की मिक़्दार एक हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो तुम शुमार करते हो। (5)
वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, मेह्रबान। (6)
वह जिस ने हर शै बहुत खूब बनाई जो उस ने पैदा की और इन्सान की पैदाइश की इब्तिदा मिट्टी से की। (7)
फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी के खुलासे से बनाया। (8)
फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक किया, और उस में फूंकी अपनी (तरफ़ से) अपनी रूह, और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र करते हो। (9)
और उन्हों ने कहा: क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि वह अपने रब की मुलक़ात से मुन्किर हैं। (10)

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾

2	परवरदिगार तमाम जहानों का	से	इस में	कोई शक नहीं	किताब	नाज़िल करना	1	अलिफ़ लाम मीम

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

उस क़ौम को	ताकि तुम डराओ	तुम्हारा रब	से	हक़	यह	बल्कि	यह उस ने घड़ लिया है	वह कहते हैं	क्या

مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	3	हिदायत पालें	ताकि वह	तुम से पहले	से	डराने वाला	कोई	उन के पास नहीं आया

الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों को	पैदा किया	वह जिस ने

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ

और न सिफ़ारिश करने वाला	मददगार	से - कोई	उस के सिवा	तुम्हारे लिए नहीं	अ़र्श पर	उस ने क़रार किया	फिर

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ

फिर	ज़मीन तक	आस्मान	से	तमाम काम	वह तदबीर करता है	4	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते

يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

5	तुम शुमार करते हो	उस से जो	एक हज़ार साल	उस की मिक़्दार	है	एक दिन में	उस की तरफ़	(उस का रिपोर्ट) चढ़ता है

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِىْٓ اَحْسَنَ

बहुत खूब बनाई	वह जिस ने	6	मेह्रबान	ग़ालिब	और ज़ाहिर	जानने वाला पोशीदा	वह

كُلَّ شَىْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

बनाया	फिर	7	मिट्टी	से	इन्सान	पैदाइश	और इब्तिदा की	जो उस ने पैदा की	हर शै

نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ

से	उस में	और फूंकी	फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया	8	हक़ीर (बेक़द्र) पानी	से	खुलासे से	उस की नस्ल

رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और बनाए	अपनी रूह

تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِى الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِىْ

तो - में	क्या हम	ज़मीन में	हम गुम हो जाएंगे	क्या जब	और उन्हों ने कहा	9	तुम शुक्र करते हो

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

10	मुन्किर (जमा)	अपना रब	मुलाक़ात से	वह	बल्कि	नई पैदाइश

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तुम पर	वह जो कि मुक़र्रर किया गया है	मौत का फ़रिश्ता	तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है	फ़रमा दें

ع ١١/١٤ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط

अपने रब के सामने	अपने सर	झुकाए होंगे	मुज्रिम (जमा)	जब	तुम देखो	और अगर	11	लौटाए जाओगे

رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

12	यक़ीन करने वाले	बेशक हम	अच्छे अ़मल	हम करेंगे	पस हमें लौटा दे	और हम ने सुन लिया	हम ने देख लिया	ऐ हमारे रब

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ

मेरी तरफ़ से	बात	साबित हो चुकी है	और लेकिन	उस की हिदायत	हर शख़्स	हम ज़रूर देते	हम चाहते	और अगर

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا

वह जो	पस चखो तुम	13	इकटठे	और इन्सान	जिन्नों	से	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूँगा जहन्नम

نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ج اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا

उस का बदला जो	हमेशा का अ़ज़ाब	और चखो तुम	बेशक हम ने तुम्हें भुला दिया	इस	अपने दिन	मुलाक़ात	तुम ने भुला दिया था

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا

वह	याद दिलाई जाती हैं	जब	वह जो	हमारी आयतों पर	ईमान लाते हैं	इस के सिवा नहीं	14	तुम करते थे

السجدة ٩ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ السجدة تَتَجَافٰى

अलग रहते हैं	15	तकब्बुर नहीं करते	और वह	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	गिर पड़ते हैं सिज्दे में

جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا

और उस से जो	और उम्मीद	डर	अपना रब	वह पुकारते हैं	ख़्वाबगाहों (बिस्तरों)	से	उन के पहलू

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ

से	उन के लिए	छुपा रखा गया	जो	कोई शख़्स	सो नहीं जानता	16	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

हो	उस के मानिन्द जो	मोमिन	हो	तो क्या जो	17	जो वह करते थे	उस का	जज़ा	आँखों की ठंडक

وقف غفران فَاسِقًا ط لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ

तो उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	रहे	18	वह बराबर नहीं होते	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)

جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ز نُزُلًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

नाफ़रमानी की	वह जिन्हों ने	और रहे	19	वह करते थे	उस के (सिले में) जो	मेहमानी	बाग़ात रहने के

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ط كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا

उस में	लौटा दिए जाएंगे	उस से	कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	जहन्नम	तो उन का ठिकाना

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तुम चखो	उन्हें	और कहा जाएगा

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)
और अगर तुम देखो जब मुज्रिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अ़मल करेंगे, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (12)
और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख़्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) बात साबित हो चुकी है मेरी तरफ़ से कि मैं अलबत्ता जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा, इकटठे जिन्नों और इन्सानों से। (13)
पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाक़ात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)
इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती हैं तो सिज्दे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)
उन के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह ख़र्च करते हैं। (16)
सो कोई शख़्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)
तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)
रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए तो उन के लिए रहने के बाग़ात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)
और रहे वह जिन्हों ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहन्नम है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ

अ़ज़ाब	सिवाए (पहले)	नज़्दीक	अ़ज़ाब	कुछ	और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

उसे नसीहत की गई	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	21	लौट आएं	शायद वह	बड़ा

بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۭ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ع ۲ ۱۱ ۱۵

22	इन्तिक़ाम लेने वाले	मुज्रिम (जमा)	से	बेशक हम	उस से	उस ने मुँह फेर लिया	फिर	उस के रब की आयात से

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ

शक में	तो तुम न रहो	किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी

مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۳﴾

23	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे	उस का मिलना	से- मुतअ़ल्लिक़

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۣۭ

उन्हों ने सब्र किया	जब	हमारे हुक्म से	वह रहनुमाई करते	इमाम (पेश्वा)	उन से	और हम ने बनाया

وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	वह	तुम्हारा रब	बेशक	24	यक़ीन करते	हमारी आयतों पर	और वह थे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

उन के लिए	क्या हिदायत न हुई	25	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ

उन के घर (जमा)	में	वह चलते हैं	उम्मतें	से	उन से क़ब्ल	हम ने कितनी हलाक कीं

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ۭ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ

कि हम चलाते हैं	क्या उन्हों ने नहीं देखा	26	तो क्या वह सुनते नहीं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक

الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ

उस से	खाते हैं	फिर हम निकालते हैं उस से खेती	ख़ुश्क	ज़मीन	तरफ़	पानी

اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ۭ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى الثلثة

कब	और वह कहते हैं	27	देखते नहीं वह	तो क्या	और वह खुद	उन के मवेशी

هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ

नफ़ा न देगा	फ़तह (फ़ैसले) के दिन	फ़रमा दें	28	सच्चे	तुम हो	अगर	फ़तह (फ़ैसला)	यह

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَعْرِضْ

पस मुँह फेर लो	29	मोहलत दिए जाएंगे	वह	और न	उन का ईमान	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع ۳ ۸ ۱۶

	30	मुन्तज़िर हैं	बेशक वह	और तुम इन्तिज़ार करो	उन से	

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अ़ज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आख़िरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले, शायद वह लौट आएं। (21)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुज्रीमों से इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेश्वा बनाए, वह हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे, जब उन्हों ने सब्र किया और वह हमारी आयतों पर यक़ीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन के दरमियान फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हक़ीक़त) मोजिबे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़ब्ल कितनी (ही) उम्मतें हलाक कीं, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि हम ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह खुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28)

आप (स) फ़रमा दें, फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

آيَاتُهَا ٧٣ ❀ سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ (٣٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9	(33) सुरतुल अहज़ाब लशकर	आयात 73

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ط

और मुनाफ़िक़ों	काफ़िरों	और कहा न मानें	अल्लाह से डरते रहें	ऐ नबी (स)

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١ لا وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ط

आप के रब (की तरफ़) से	आप की तरफ़	जो वहि किया जाता है	और पैरवी करें आप	1	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝٢ لا وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ

और काफ़ी है अल्लाह	अल्लाह पर	और भरोसा रखें आप (स)	2	ख़बरदार	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह

وَكِيْلًا ۝٣ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ج وَمَا جَعَلَ

और नहीं बनाया	उस के सीने में	दो दिल	किसी आदमी के लिए	नहीं बनाए अल्लाह ने	3	कार साज़

اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ج وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ

तुम्हारे मुँह बोले बेटे	और नहीं बनाया	तुम्हारी माएं	उन से- उन्हें	तुम माँ कह बैठते हो	वह जिन्हें	तुम्हारी बीवियां

اَبْنَآءَكُمْ ط ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ط وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	फ़रमाता है	और अल्लाह	अपने मुँह (जमा)	तुम्हारा कहना	यह तुम	तुम्हारे बेटे

يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝٤ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ج

अल्लाह के नज़्दीक	ज़ियादा इंसाफ़	यह	उनके बापों की तरफ़	उन्हें पुकारो	4	रास्ता	हिदायत देता है

فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ط

और तुम्हारे रफ़ीक़	दीन में (दीनी)	तो वह तुम्हारे भाई	उन के बापों को	तुम न जानते हो	फिर अगर

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ط

अपने दिल	जो इरादे से	और लेकिन	उस से	उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी	कोई गुनाह	तुम पर	और नहीं

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

से	मोमिनों के	ज़ियादा (हक़दार)	नबी (स)	5	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ط وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

नज़्दीक तर	उन में से बाज़	और क़राबतदार	उन की माएं	और उस की बीवियां	उन की जानें

بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ

मगर यह कि	और मुहाजिरों	मोमिनों	से	अल्लाह की किताब	में	बाज़ (दूसरों) से

تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ط كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٦

6	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	हुस्ने सुलूक	अपने दोस्त (जमा)	तरफ़ (साथ)	तुम करो

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1)
और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक अल्लाह उस से बा ख़बर है जो तुम करते हो। (2)
और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3)
अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4)
उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मन्सूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (5)
नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हक़दार हैं और आप (नबी स) की बीवीयां उन (मोमिनों) की माँएं हैं, और क़राबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजिरों की बनिस्बत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अ़हद, और तुम से (भी लिया) और वह नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख़्ता अ़हद लिया। (7)

ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है। (8)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लशकर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लशकर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9)

जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ़) से, और जब आँखें चुन्धिया गईं, और दिल गलों में (कलेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10)

यहां (इस मौक़े पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11)

और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12)

और जब एक गिरोह ने कहा उन में से, ऐ मदीने वालों! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर बेशक ग़ैर महफ़ूज़ हैं, हालांकि वह ग़ैर महफ़ूज़ नहीं हैं, वह तो सिर्फ़ फ़िरार चाहते हैं। (13)

और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसें) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मन्ज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14)

हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अ़हद पूछा जाने वाला है। (15)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ

और इब्राहीम (अ)	और नूह (अ) से	और तुम से	उन का अ़हद	नबियों	से	हम ने लिया	और जब

وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ ﴿۷﴾

7	पुख़्ता	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	और मरयम के बेटे ईसा (अ)	और मूसा (अ)

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ ع ع ٨ ١٧

8	दर्दनाक	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उस ने तैयार किया	उन की सच्चाई	से	सच्चे	ताकि वह सवाल करे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ

लशकर (जमा)	जब तुम पर (चढ़) आए	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	याद करो	ईमान वालो	ऐ

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

तुम करते हो	उसे जो	अल्लाह	और है	तुम ने उन्हें न देखा	और लशकर	आँधी	उन पर	हम ने भेजी

بَصِيْرًا ﴿۹﴾ ۚ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ

और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर	से	वह तुम पर आए	जब	9	देखने वाला

زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान करते थे	गले	दिल (जमा)	और पहुँच गए	कज हुईं (चुन्धिया गईं) आँखें

الظُّنُوْنَا ﴿۱۰﴾ ؕ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۱﴾

11	शदीद	हिलाया जाना	और वह हिलाए गए	मोमिन (जमा)	आज़माए गए	यहां	10	बहुत से गुमान

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا

जो हम से वादा किया	रोग	दिलों में	और वह जिन के	मुनाफ़िक़ (जमा)	कहने लगे	और जब

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ

ऐ यसरिब (मदीने) वालो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब	12	धोका देना	मगर (सिर्फ़)	अल्लाह और उस का रसूल

لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ

नबी से	उन में से	एक गिरोह	और इजाज़त मांगता था	लिहाज़ा तुम लौट चलो	तुम्हारे लिए	कोई जगह नहीं

يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا صح ١٠ عند المتقدمين ١٢

मगर (सिर्फ़)	वह नहीं चाहते	ग़ैर महफ़ूज़	हालांकि वह नहीं	ग़ैर महफ़ूज़	हमारे घर	बेशक	वह कहते थे

فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ

फ़साद	उन से चाहा जाए	फिर	उस (मदीने) के अतराफ़	से	उन पर	दाख़िल हो जाएं	और अगर	13	फ़िरार

لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ

अल्लाह	हालांकि वह अ़हद कर चुके थे	14	थोड़ी सी	मगर (सिर्फ़)	उस में	और न देर लगाएंगे	तो वह ज़रूर उसे देंगे

مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾

15	पूछा जाने वाला	अल्लाह का अ़हद	और है	पीठ	फेरेंगे	न	इस से पहले

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا

और उस सूरत में	क़त्ल	या	मौत से	तुम भागे	अगर	फ़िरार	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा	फ़रमा दें

لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह से	वह जो तुम्हें बचाए	कौन जो	फ़रमा दें	16	थोड़ा	मगर (सिर्फ़)	न फ़ाइदा दिए जाओगे

اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और वह न पाएंगे	मेह्रबानी	चाहे तुम से	या	बुराई	वह चाहे तुम से

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ

और कहने वाले	तुम में से	रोकने वाले	अल्लाह	खूब जानता है	17	और न मददगार	कोई दोस्त

لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ۙ اَشِحَّةً

बुख़्ल करते हुए	18	बहुत कम	मगर	लड़ाई	और नहीं आते	हमारी तरफ़	आजाओ	अपने भाइयों से

عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ

घूम रही हैं	तुम्हारी तरफ़	वह देखने लगते हैं	तुम देखोगे उन्हें	ख़ौफ़	फिर जब आए	तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़

اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِىْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ

ख़ौफ़	चला जाए	फिर जब	मौत से	उस पर	ग़शी आती है	उस शख़्स की तरह	उन की आँखें

سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا

नहीं ईमान लाए	यह लोग	माल पर	बख़ीली (लालच) करते हुए	तेज़	ज़बानों से	तुम्हें ताने देने लगें

فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ

वह गुमान करते हैं	19	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	उन के अ़मल	तो अकारत कर दिए अल्लाह ने

الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

कि काश वह	वह तमन्ना करें	लशकर	और अगर आएं	नहीं गए हैं	लशकर (जमा)

بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

तुम्हारे दरमियान	हों	और अगर	तुम्हारी ख़बरें	से	पूछते रहते	देहातियों में	बाहर निकले हुए होते

٢ ع ١٢ ١٨ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ؒ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

अच्छा बेहतरीन	मिसाल (नमूना)	अल्लाह का रसूल (स)	में	तुम्हारे लिए	अलबत्ता है यक़ीनन	20	बहुत कम	मगर	जंग न करें

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ؕ وَلَمَّا

और जब	21	कसरत से	और अल्लाह को याद करता है	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह	उम्मीद रखता है	उस के लिए जो

رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह	जो हम को वादा दिया	यह है	वह कहने लगे	लशकरों को	मोमिनों ने देखा

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾ؕ

22	और फ़रमांबरदारी	ईमान	मगर	उन का ज़ियादा किया	और न	और उस का रसूल	अल्लाह	और सच कहा था

आप (स) फ़रमा दें: फ़िरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या क़त्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फ़ाइदा दिए जाओगे। (16)

आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेह्रबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17)

अल्लाह खूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18)

तुम्हारा साथ देने में बख़ीली करते हैं, फिर जब ख़ौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख़्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब ख़ौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगें तेज़ ज़बानों से, माल पर बख़ीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अ़मल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19)

वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आएं तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20)

यक़ीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकस्रत याद करता है। (21)

और जब मोमिनों ने लशकरों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरते हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का जज़्बा)। (22)

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ

सो उन में से	उस पर	उन्हों ने अ़हद किया अल्लाह से	जो	उन्हों ने सच कर दिखाया	ऐसे आदमी	मोमिन (जमा)	से (में)

مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ لِّيَجْزِيَ

ताकि जज़ा दे	23	कुछ भी तबदीली	और उन्हों ने तबदीली नहीं की	इन्तिज़ार में है	जो	और उन में से	नज़र अपनी	पूरा कर चुका	जो

اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ

या	अगर वह चाहे	मुनाफ़िक़ों	और वह अ़ज़ाब दे	उन की सच्चाई की	सच्चे लोग	अल्लाह

يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ

और लौटा दिया अल्लाह ने	24	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ

जंग	मोमिनीन	और काफ़ी है अल्लाह	कोई भलाई	उन्हों ने न पाई	उन के गुस्से में भरे हुऐ	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	जिन्हों ने उन की मदद की	उन लागों को	और उतार दिया	25	ग़ालिब	तवाना	अल्लाह	और है

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا

एक गिरोह	रुअ़ब	उन के दिल	में	और डाल दिया	उन के क़िलए	से

تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

और उन के घर (जमा)	उन की ज़मीन	और तुम्हें वारिस बना दिया	26	एक गिरोह	और तुम क़ैद करते हो	तुम क़त्ल करते हो

وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾ ع ۳ ۱۹

27	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	अल्लाह	और है	तुम ने वहां क़दम नहीं रखा	और वह ज़मीन	और उन के माल (जमा)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	चाहती हो	तुम हो	अगर	अपनी बीवियों से	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾

28	अच्छी	रुख़सत करना	और तुम्हें रुख़सत कर दूँ	मैं तुम्हें कुछ देदूँ	तो आओ	और उस की ज़ीनत

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

और आख़िरत का घर	और उस का रसूल	चाहती हो अल्लाह	तुम	और अगर

فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

29	अजरे अ़ज़ीम	तुम में से	नेकी करने वालियों के लिए	तैयार किया है	पस बेशक अल्लाह

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ

बढ़ाया जाएगा	खुली	बेहूदगी के साथ	तुम में से	लाए (मुर्तकिब हो)	जो कोई	ऐ नबी की बीवियो

لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	दो चन्द	अ़ज़ाब	उस के लिए

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्हों ने अल्लाह से जो अ़हद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्हों ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23)
(यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब दे या वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (24)
और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्हों ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25)
और अहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुअ़ब डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो और एक गिरोह को क़ैद करते हो। (26)
और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (27)
ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रुख़सत कर दूँ अच्छी तरह रुख़सत। (28)
और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अ़ज़ीम तैयार कर रखा है। (29)
ऐ नबी (स) की बीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहूदगी की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अ़ज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

الجزء ٢٢

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

नेक	और अ़मल करे	अल्लाह और उस के रसूल (स) की	तुम में से	इताअ़त करे	और जो

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

31	इ़ज़्ज़त का रिज़्क़	उस के लिए	और हम ने तैयार किया	दोहरा	उस का अजर	हम देंगे उस को

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ

तो मुलाइमत न करो	तुम परहेज़गारी करो	अगर	औरतों में से	किसी एक की तरह	तुम नहीं हो	ऐ नबी (स) की बीवियो!

بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ ع

32	अच्छी (माकूल)	बात	और बात करो तुम	रोग (खोट)	उस के दिल में	वह जो	कि लालच करे	गुफ़्तगू में

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

अगला	(ज़माना-ए) जाहिलियत	बनाव सिंगार	और बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो	अपने घरों में	और क़रार पकड़ो

وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

अल्लाह और उस का रसूल	और इताअ़त करो	ज़कात	और देती रहो	नमाज़	और क़ाइम करो

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ

ऐ अहले बैत	आलूदगी	तुम से	कि दूर फ़रमा दे	अल्लाह चाहता है	इस के सिवा नहीं

وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ ع وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

तुम्हारे घर (जमा)	में	जो पढ़ा जाता है	और तुम याद रखो	33	खूब पाक	और तुम्हें पाक और साफ़ रखे

ع ٧ / ١

مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ ع

34	बाख़बर	बारीक बीन	है	बेशक अल्लाह	और हिक्मत	अल्लाह की आयतें	से

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द	और मुसलमान औरतें	मुसलमान मर्द	बेशक

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ

और सब्र करने वाले मर्द	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो मर्द	और फ़रमांबरदार औरतें	और फ़रमांबरदार मर्द

وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ

और सदक़ा करने वाले मर्द	और आजिज़ी करने वाली औरतें	और आजिज़ी करने वाले मर्द	और सब्र करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द	और रोज़ा रखने वाली औरतें	और रोज़ा रखने वाले मर्द	और सदक़ा करने वाली औरतें

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

बकसरत	अल्लाह	और याद करने वाले	और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें	अपनी शर्मगाहें

وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

35	और अजरे अ़ज़ीम	बख़्शिश	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	और याद करने वाली औरतें

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करे और नेक अ़मल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इ़ज़्ज़त का रिज़्क़ तैयार किया है। (31)

ऐ नबी (स) की बीवियो! औ़रतों में से तुम किसी एक की तरह (आ़म) नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो तो गुफ़्तगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (ख़याले फ़ासिद) करे और तुम बात करो माकूल बात। (32)

और अपने घरों में क़रार पकड़ो, और अगले ज़माना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो, और नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, बेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फ़रमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें खूब (हर तरह से) पाक और साफ़ रखे। (33)

और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (34)

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाले मर्द और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औ़रतें, और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है बख़्शिश और अजरे अ़ज़ीम। (35)

और (गुन्जाइश) नहीं है किसी मोमिन
मर्द और न किसी मोमिन औरत के
लिए कि जब फ़ैसला कर दें अल्लाह
और उस के रसूल (स) किसी मामले
का, कि उन के लिए उस मामले में
कोई इख़्तियार बाक़ी हो, और जो
नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह और उस
के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह
सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36)
और याद करो जब आप (स) उस
शख़्स [ज़ैद رض बिन हारिसा] को
फ़रमाते थे जिस पर अल्लाह ने
इनआम किया और आप (स) ने भी
उस पर इनआम किया कि अपनी
बीवी [ज़ैनब رض] को अपने पास
रोके रख और अल्लाह से डर, और
आप (स) छुपाते थे अपने दिल में
वह (बात) जिसे अल्लाह ज़ाहिर
करने वाला था और आप (स)
लोगों (के तअन) से डरते थे और
अल्लाह ज़ियादा हक़दार है कि तुम
उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस
[ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी
कर ली तो हम ने उसे आप (स)
के निकाह में दे दिया, ताकि
मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने
ले पालकों की बीवियों (से निकाह
करने में) जब वह उन से अपनी
हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें)
और अल्लाह का हुक्म
(पूरा हो कर) रहने वाला है। (37)
नबी पर उस काम में कोई हरज
(तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस
के लिए मुक़र्रर किया, अल्लाह का
(यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो
पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का
हुक्म (सहीह) अन्दाज़े से मुक़र्रर
किया हुआ है। (38)
वह जो अल्लाह के पैग़ामात
पहुँचाते हैं और वह उस से डरते
हैं और अल्लाह के सिवा किसी से
नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है
हिसाब लेने वाला। (39)
मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी
के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह
के रसूल और (सब) नबियों पर मुहर
(आख़री नबी) हैं और अल्लाह हर शै
का जानने वाला है। (40)
ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को
याद करो बकसरत। (41)
और सुब्ह और शाम उस की
पाकीज़गी बयान करो। (42)
वही है जो तुम पर रहमत भेजता
है और उस के फ़रिश्ते (भी) ताकि
वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़
निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों
पर मेहरबान है। (43)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا

किसी काम का	अल्लाह और उस का रसूल	फ़ैसला कर दें	जब	और न किसी मोमिन औरत के लिए	किसी मोमिन मर्द के लिए	और नहीं है

اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	नाफ़रमानी करेगा	और जो	उन के काम में	कोई इख़्तियार	उन के लिए	कि (बाक़ी) हो

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

उस पर	अल्लाह ने इनआम किया	उस शख़्स को	और (याद करो) जब आप (स) फ़रमाते थे	36	सरीह	गुमराही	तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा

وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ

अपने दिल में	और आप (स) छुपाते थे	और डर अल्लाह से	अपनी बीवी	अपने पास	रोके रख	उस पर	और आप (स) ने इनआम किया

مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰهُ ؕ فَلَمَّا

फिर जब	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	और अल्लाह	लोग	और आप (स) डरते थे	उस को ज़ाहिर करने वाला	जो अल्लाह

قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों	पर	न रहे	ताकि	हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया	अपनी हाजत	उस से	ज़ैद	पूरी कर ली

حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ

और है	अपनी हाजत	उन से	पूरी कर चुकें	जब वह	अपने ले पालक	बीवियों में	कोई तंगी

اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ

उस के लिए	मुक़र्रर किया अल्लाह ने	उस में जो	कोई हरज	नबी पर	नहीं है	37	हो कर रहने वाला	अल्लाह का हुक्म

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا ﴿٣٨﴾ ز لا

38	अन्दाज़े से	मुक़र्रर किया हुआ	अल्लाह का हुक्म	और है	पहले	गुज़रे	वह जो	में	अल्लाह का दस्तूर

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ

अल्लाह के सिवा	किसी से	वह नहीं डरते	और उस से डरते हैं	अल्लाह के पैग़ामात	पहुँचाते हैं	वह जो

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

तुम्हारे मर्दों में से	किसी के	बाप	मुहम्मद (स)	नहीं हैं	39	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी है

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	अल्लाह	और है	नबियों	और मुहर	अल्लाह के रसूल	और लेकिन

عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤١﴾ ع ٦ ٢

41	बकसरत	याद	अल्लाह	याद करो तुम	ईमान वालो	ऐ	40	जानने वाला

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

और उस के फ़रिश्ते	तुम पर	भेजता है	वही जो	42	और शाम	सुबह	और पाकीज़गी बयान करो उस की

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

43	मेहरबान	मोमिनों पर	और है	नूर की तरफ़	अन्धेरों	से	ताकि वह तुम्हें निकाले

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

44	बड़ा अच्छा	अजर	उन के लिए	और तैयार किया उस ने	सलाम	वह मिलेंगे उस को	जिस दिन	उन की दुआ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ وَّدَاعِيًا

और बुलाने वाला	45	और डर सुनाने वाला	और खुश ख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा	ऐ नबी (स)

اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	यह कि	मोमिनों (जमा)	और खुशख़बरी दें	46	रोशन	और चिराग़	उस के हुक्म से	अल्लाह की तरफ़

مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ

उन का ईज़ा देना	और परवा न करें	और मुनाफ़िक़ (जमा)	काफ़िर (जमा)	और कहा न मानें	47	बड़ा	फ़ज़्ल	अल्लाह (की तरफ़) से

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

जब	ईमान वालो	ऐ	48	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	अल्लाह पर	और भरोसा करें

نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	फिर	मोमिन औरतें	तुम निकाह करो

فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ

पस तुम उन्हें कुछ मताअ़ दो	कि पूरी कराओ तुम उस से	कोई इद्दत	उन पर	तो नहीं तुम्हारे लिए

وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا

हम ने हलाल कीं	ऐ नबी (स)!	49	अच्छी तरह	रुख़सत	और उन्हें रुख़सत कर दो

لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

तुम्हारा दायां हाथ	मालिक हुआ	और जो	उन का मेहर	तुम ने दे दिया	वह जो कि	तुम्हारी बीवियां	तुम्हारे लिए

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

और तुम्हारी फुफियों की बेटियां	और तुम्हारे चचाओं की बेटियां	तुम्हारे	अल्लाह ने हाथ लगा दीं	उन से जो

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً

और औरत	तुम्हारे साथ	उन्हों ने हिज्रत की	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां	और तुम्हारे मामूओं की बेटियां

مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ

कि	चाहे नबी (स)	अगर	नबी (स) के लिए	अपने आप को	वह बख़्शदे (नज़्र कर दे)	अगर	मोमिना

يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا

अलबत्ता हमें मालूम है	मोमिनों	अ़लावा	तुम्हारे लिए	ख़ास	उसे निकाह में लेले

مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीज़ें)	और जो	उन की औरतें	में	उन पर	जो हम ने फ़र्ज़ किया

لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

50	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	कोई तंगी	तुम पर	ताकि न रहे

उन का इस्तिक़बाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे "सलाम" से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44)

ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45)

और उस के हुक्म से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला, और रोशन चिराग़। (46)

और आप (स) मोमिनों को यह खुशख़बरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (47)

और आप (स) कहा न मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का, और आप (स) उन के ईज़ा देने का ख़याल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (48)

ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक़) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रुख़सत कर दो अच्छी तरह रुख़सत। (49)

ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल कीं तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दीं और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, वह जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिज्रत की, और वह मोमिन औरत जो अपने आप को नबी (स) की नज़्र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह आ़म मोमिनों के अ़लावा ख़ास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औरतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (50)

تُرْجِىْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِىْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

आप (स) तलब करें	और जिस को	जिसे आप (स) चाहें	अपने पास	और पास रखें	उन में से	जिस को आप (स) चाहें	दूर रखें

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ

उन की आँखें	कि ठंडी रहें	यह ज़ियादा क़रीब है	आप (स) पर	तो कोई तंगी नहीं	दूर कर दिया था आप ने	उन में से जो

وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا

जो	जानता है	और अल्लाह	वह सब की सब	उस पर जो आप (स) ने उन्हें दीं	और वह राज़ी रहें	और वह आज़ुर्दा न हों

فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿۵۱﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ

औरतें	आप के लिए	हलाल नहीं	51	बुर्दबार	जानने वाला	अल्लाह	और है	तुम्हारे दिलों में

مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ

आप (स) को अच्छा लगे	अगरचे	औरतें	से (और)	उन से	यह कि बदल लें	और न	उस के बाद

حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

हर शै	पर	अल्लाह	और है	जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़ें)	सिवाए	उन का हुस्न

رَّقِيْبًا ﴿۵۲﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِىِّ ع ٦ ١٢ ٣

नबी (स)	घर (जमा)	तुम दाख़िल न हो	ईमान वालो	ऐ	52	निगहबान

اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا

जब	और लेकिन	उस का पकना	न राह तको	खाना	तरफ़ (लिए)	तुम्हारे लिए	इजाज़त दी जाए	सिवाए यह कि

دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ

और न जी लगा कर बैठे रहो	तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो	तुम खालो	फिर जब	तो तुम दाख़िल हो	तुम्हें बुलाया जाए

لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِى النَّبِىَّ فَيَسْتَحْىٖ مِنْكُمْ ز

तुम से	पस वह शर्माते हैं	नबी (स)	ईज़ा देती है	यह तुम्हारी बात	बेशक	बातों के लिए

وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْىٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا

कोई शै	तुम उन से मांगो	और जब	हक़ (बात) से	नहीं शर्माता	और अल्लाह

فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ

और उन के दिल	तुम्हारे दिलों के लिए	ज़ियादा पाकीज़गी	तुम्हारी यह बात	पर्दे के पीछे से	तो उन से मांगो

وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ

उस की बीवियाँ	यह कि तुम निकाह करो	और न	अल्लाह का रसूल (स)	कि तुम ईज़ा दो	तुम्हारे लिए	और (जाइज़) नहीं

مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿۵۳﴾

53	बड़ा	अल्लाह के नज़्दीक	है	तुम्हारी यह बात	बेशक	कभी	उन के बाद

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿۵۴﴾

54	जानने वाला	हर शै	है	तो बेशक अल्लाह	या उसे छुपाओ	कोई बात	अगर तुम ज़ाहिर करो

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और उन में से जिस को आप (स) ने दूर कर दिया था आप (फिर) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा क़रीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आज़ुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दबार है। (51)
हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़ें, और अल्लाह हर शै पर निगहबान है। (52)
ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाख़िल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाख़िल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। बेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फ़रमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की बीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीआ है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न यह (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की बीवियों से तुम निकाह करो, बेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। (53)
अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (54)

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ

और न अपने भाई	अपने बेटों	और न	अपने बाप	में	औरतों पर	गुनाह नहीं

وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا

और न	अपनी औरतें	और न	अपनी बहनों के बेटे	और न	अपने भाइयों के बेटे	और न

مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

पर	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरती रहो	जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीज़ें)

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝٥٥ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	नबी (स) पर	दरूद भेजते हैं	और उस के फ़रिश्ते	बेशक अल्लाह	55	गवाह (मौजूद)	हर शै

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	56	खूब सलाम	और सलाम भेजो	उस पर	दरूद भेजो	ईमान वालो

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ

और तैयार किया उस ने	और आख़िरत	दुनिया में	उन पर लानत की अल्लाह ने	अल्लाह और उस का रसूल (स)	ईज़ा देते हैं

لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝٥٧ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	मोमिन मर्द (जमा)	ईज़ा देते हैं	और जो लोग	57	रुस्वा करने वाला अज़ाब	उन के लिए

بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝٥٨ ع ٦

58	सरीह	और गुनाह	बुहतान	अलबत्ता उन्हों ने उठाया	कि उन्हों ने कमाया (किया)	बग़ैर

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ

डाल लिया करें	मोमिनों	और औरतों को	और बेटियों को	अपनी बीवियों को	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۭ

तो उन्हें न सताया जाए	उन की पहचान हो जाए	कि	क़रीब तर	यह	अपनी चादरें	से	अपने ऊपर

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥٩ لَىِٕنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	बाज़ न आए	अगर	59	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह है

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ

मदीना	में	और झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले	रोग	उन के दिलों में	और वह जो

لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦٠ مَّلْعُوْنِيْنَ ۛ

फिटकारे हुए	60	चन्द दिन	सिवाए	इस (शहर) में	तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह	फिर	उन के	हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे

اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۝٦١ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ

उन लोगों में जो	अल्लाह का दस्तूर	61	बुरी तरह मारा जाना	और मारे जाएंगे	पकड़े जाएंगे	वह पाए जाएंगे	जहां कहीं

خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٦٢

62	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इन से पहले	गुज़रे

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

الربع

औरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने भाइयों के बेटों, और न अपनी बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीज़ों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55)
बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56)
बेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57)
और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्हों ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्हों ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58)
ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनों की औरतों को फ़रमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूंघट निकाल लिया करें) यह (उस से) क़रीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (59)
अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60)
फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61)
अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इन से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

يَسْــَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا

और क्या	अल्लाह के पास	उस का इल्म	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	क़ियामत	से (मुतअ़ल्लिक़)	लोग	आप से सवाल करते हैं

يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों पर	लानत की	बेशक अल्लाह	63	क़रीब	हो	क़ियामत	शायद	तुम्हें ख़बर

وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا

और न	कोई दोस्त	वह न पाएंगे	हमेशा	उस में	हमाशा रहेंगे	64	भड़कती हुई आग	उन के लिए	और तैयार किया उस ने

نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا

हम ने इताअ़त की होती	ऐ काश हम	वह कहेंगे	आग में	उन के चेहरे	उलट पुलट किए जाएंगे	जिस दिन	65	कोई मददगार

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا

और अपने बड़ों	अपने सरदार	हम ने इताअ़त की	बेशक हम	ऐ हमारे रब	और वह कहेंगे	66	और इताअ़त की होती रसूल	अल्लाह

فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ

और लानत कर उन पर	अ़ज़ाब	दुगना	दे उन्हें	ऐ हमारे रब	67	रास्ता	तो उन्हों ने भटकाया हमें

لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا ع ٨ ١٠ ٥

उन्हों ने सताया	उन लोगों की तरह	तुम न होना	ईमान वालो	ऐ	68	बड़ी	लानत

مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

69	बाआबरू	अल्लाह के नज़्दीक	और वह थे	उन्हों ने कहा	उस से जो	अल्लाह	तो बरी कर दिया उस को	मूसा (अ)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ

वह संवार देगा	70	सीधी	बात	और कहो	अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ

لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त की	और जो- जिस	तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह	और बख़्श देगा	तुम्हारे अ़मल (जमा)	तुम्हारे लिए

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पर	अमानत	हम ने पेश किया	बेशक हम	71	बड़ी मुराद	तो वह मुराद को पहुँचा

وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

उस से	और वह डर गए	कि वह उसे उठाएं	तो उन्हों ने इन्कार किया	और पहाड़	और ज़मीन

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ

ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे	72	बड़ा नादान	ज़ालिम	था	बेशक वह	इन्सान ने	और उसे उठा लिया

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ

और तौबा क़ुबूल करे	और मुश्रिक औरतों	और मुश्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों

اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع ٩ ٥ ٦

73	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	पर- की	अल्लाह

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत क़रीब (ही) हो। (63)
बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहन्नम की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64)
वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)
जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताअ़त की होती अल्लाह की, और इताअ़त की होती रसूल (स) की। (66)
और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! बेशक हम ने इताअ़त की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्हों ने हमें रास्ते से भटकाया। (67)
ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)
ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्हों ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्हों ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)
ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो। (70)
वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)
बेशक हम ने अपनी अमानत (ज़िम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर, तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)
ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को, और अल्लाह तौबा क़ुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों की, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (73)

اٰیَاتُهَا ٥٤ ❀ (٣٤) سُوۡرَةُ سَبَاٍ ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 | (34) सूरतुस सबा | आयात 54

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِیۡ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ وَلَهُ

और उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जिस के लिए	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الۡحَمۡدُ فِی الۡاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الۡحَكِیۡمُ الۡخَبِیۡرُ ﴿۱﴾ یَعۡلَمُ مَا یَلِجُ

जो दाख़िल होता है	वह जानता है	1	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	आख़िरत में	हर तारीफ़

فِی الۡاَرۡضِ وَمَا یَخۡرُجُ مِنۡهَا وَمَا یَنۡزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعۡرُجُ

चढ़ता है	और जो	आस्मान से	नाज़िल होता है	और जो	उस से	निकलता है	और जो	ज़मनि में

فِیۡهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیۡمُ الۡغَفُوۡرُ ﴿۲﴾ وَقَالَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا لَا تَاۡتِیۡنَا

हम पर नहीं आएगी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	2	बख़्शने वाला	मेहरबान	और वह	उस में

السَّاعَةُ ؕ قُلۡ بَلٰی وَرَبِّیۡ لَتَاۡتِیَنَّكُمۡ ۙ عٰلِمِ الۡغَیۡبِ ۚ لَا یَعۡزُبُ عَنۡهُ

उस से	पोशीदा नहीं	ग़ैब	जानने वाला	अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी	क़सम मेरे रब की	हाँ	फ़रमा दें	क़ियामत

مِثۡقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَلَا فِی الۡاَرۡضِ وَلَاۤ اَصۡغَرُ مِنۡ ذٰلِكَ

उस से	छोटा	और न	ज़मीन में	और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर

وَلَاۤ اَكۡبَرُ اِلَّا فِیۡ كِتٰبٍ مُّبِیۡنٍ ﴿۳﴾ لِّیَجۡزِیَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अमल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे	3	रोशन किताब	में	मगर	बड़ा	और न

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ كَرِیۡمٌ ﴿۴﴾ وَالَّذِیۡنَ

और वह लोग जो	4	और इज़्ज़त की रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक

سَعَوۡ فِیۡۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیۡنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مِّنۡ رِّجۡزٍ اَلِیۡمٌ ﴿۵﴾

5	सख़्त दर्दनाक	से	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हराने के लिए	हमारी आयतों में	उन्हों ने कोशिश की

وَیَرَی الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	वह जो कि	इल्म	दिया गया	वह लोग जिन्हें	और वह देखते हैं

هُوَ الۡحَقَّ ۙ وَیَهۡدِیۡۤ اِلٰی صِرَاطِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَمِیۡدِ ﴿۶﴾

6	सज़ावारे तारीफ़	ग़ालिब	रास्ता	तरफ़	और वह रहनुमाई करता है	वह हक़

وَقَالَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا هَلۡ نَدُلُّكُمۡ عَلٰی رَجُلٍ یُّنَبِّئُكُمۡ

वह ख़बर देता है तुम्हें	ऐसा आदमी	पर	हम बतलाएं तुम्हें	क्या	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)

اِذَا مُزِّقۡتُمۡ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمۡ لَفِیۡ خَلۡقٍ جَدِیۡدٍ ﴿۷﴾ ۚ

7	ज़िन्दगी नई	अलबत्ता में	बेशक तुम	पूरी तरह रेज़ा रेज़ा	तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आख़िरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1) वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरबान है बख़्शने वाला। (2) और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हाँ! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3) ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने अमल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अज़ाब है। (5) और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावारे तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6) और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएं ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अ़ज़ाब और दूर की (शदीद) गुमराही में हैं। (8)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? उस की तरफ़ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उस में निशानी है हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए। (9)
और तहक़ीक़ हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल अ़ता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्बीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)
कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अ़मल करो, तुम जो कुछ करते हो बेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)
और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्ख़र) किया और उस की सुबह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (बाज़) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कजी करेगा हम उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)
वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िलए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देगें, ऐ ख़ानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अ़मल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (13)
फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का अ़सा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हक़ीक़त खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अ़ज़ाब में। (14)

اَفۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمۡ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	बल्कि	जुनून	उसे	या	झूट	अल्लाह पर	उस ने बान्धा

بِالۡاٰخِرَةِ فِى الۡعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الۡبَعِيۡدِ ﴿۸﴾ اَفَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰى مَا

जो	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	8	दूर	और गुमराही	अ़ज़ाब में	आख़िरत पर

بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنۡ نَّشَاۡ

अगर हम चाहें	और ज़मीन	आस्मान से	उन के पीछे	और जो	उन के आगे

نَخۡسِفۡ بِهِمُ الۡاَرۡضَ اَوۡ نُسۡقِطۡ عَلَيۡهِمۡ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ

बेशक	आस्मान से	टुकड़ा	उन पर	या गिरा दें	ज़मीन	उन्हें धंसा दें हम

فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ﴿۹﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضۡلًا ؕ ع

फ़ज़्ल	अपनी तरफ़ से	दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दिया	9	रुजूअ़ करने वाला	बन्दा	लिए- हर	अलबत्ता निशानी	इस में

يٰجِبَالُ اَوِّبِىۡ مَعَهٗ وَالطَّيۡرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الۡحَدِيۡدَ ﴿۱۰﴾ اَنِ اعۡمَلۡ

बनाओ	कि	10	लोहा	उस के लिए	और हम ने नर्म कर दिया	और परिन्दे	उस के साथ	तस्बीह करो	ऐ पहाड़ो

سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرۡ فِى السَّرۡدِ وَاعۡمَلُوۡا صَالِحًا ؕ اِنِّىۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

तुम जो कुछ करते हो उस को	बेशक	अच्छे	और अ़मल करो	(कड़ियों के) जोड़ने में	और अन्दाज़ा रखो	कुशादह ज़िरहें

بَصِيۡرٌ ﴿۱۱﴾ وَلِسُلَيۡمٰنَ الرِّيۡحَ غُدُوُّهَا شَهۡرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهۡرٌ ۚ

एक माह	और शाम की मन्ज़िल	एक माह	उस की सुबह की मन्ज़िल	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	11	देख रहा हूँ

وَاَسَلۡنَا لَهٗ عَيۡنَ الۡقِطۡرِ ؕ وَمِنَ الۡجِنِّ مَنۡ يَّعۡمَلُ بَيۡنَ يَدَيۡهِ بِاِذۡنِ

इज़्न (हुक्म) से	उस के सामने	वह काम करते	जिन्न	और से	तांबे का चश्मा	और हम ने बहाया उस के लिए

رَبِّهٖ ؕ وَمَنۡ يَّزِغۡ مِنۡهُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡهُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِيۡرِ ﴿۱۲﴾

12	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	से- का	हम उस को चखाएंगे	हमारे हुक्म से	उन में से	कजी करेगा	और जो	उस के रब के

يَعۡمَلُوۡنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِيۡبَ وَتَمَاثِيۡلَ وَجِفَانٍ كَالۡجَوَابِ

हौज़ जैसे	और लगन	और तस्वीरें	बड़ी इमारतें (क़िलए)	से	जो वह चाहते	उस के लिए	वह बनाते

وَقُدُوۡرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكۡرًا ؕ وَقَلِيۡلٌ مِّنۡ عِبَادِىَ

मेरे बन्दे	से	और थोड़े	शुक्र बजा ला कर	ऐ ख़ानदाने दाऊद	तुम अ़मल करो	एक जगह जमी हुई	और देगें

الشَّكُوۡرُ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا قَضَيۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَوۡتَ مَا دَلَّهُمۡ عَلٰى مَوۡتِهٖۤ

उस की मौत का	उन्हें पता न दिया	मौत	उस पर	हुक्म जारी किया	फिर जब हम ने	13	शुक्र गुज़ार

اِلَّا دَآبَّةُ الۡاَرۡضِ تَاۡكُلُ مِنۡسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الۡجِنُّ

जिन्न	हक़ीक़त खुली	वह गिर पड़ा	फिर जब	उस का अ़सा	वह खाता था	घुन का कीड़ा	मगर

اَنۡ لَّوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ الۡغَيۡبَ مَا لَبِثُوۡا فِى الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿۱۴﴾

14	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	में	वह न रहते	ग़ैब	वह जानते होते	अगर

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ

और बाएं	दाएं से	दो बाग़	एक निशानी	उन की आबादी	में	(क़ौम) सबा के लिए	अलबत्ता थी

كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبٌّ

और रब	पाकीज़ा	शहर	उस का	और शुक्र अदा करो	अपने रब का रिज़्क़	से	तुम खाओ

غَفُورٌ ﴿١٥﴾ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ

और हम ने उन्हें बदल दिए	सैलाब बन्द से (रुका हुआ)	उन पर	तो हम ने भेजा	फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया	15	बख़्शने वाला

بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثْلٍ وَشَيْءٍ مِنْ سِدْرٍ

बेरियां	और कुछ	और झाड़	बदमज़ा	मेवा	वाले	दो बाग़	उन के दो बाग़ों के बदले

قَلِيلٍ ﴿١٦﴾ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۖ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ﴿١٧﴾

17	नाशुक्रा	मगर- सिर्फ़	हम सज़ा देते	और नहीं	उन्हों ने नाशुक्री की	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी	यह	16	थोड़ी

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً

एक दूसरे से मुत्तसिल	बस्तियां	उस में	हम ने बरकत दी	वह जिन्हें	बस्तियां	और दरमियान	उन के दरमियान	और हम ने (आबाद) कर दिए

وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا آمِنِينَ ﴿١٨﴾

18	अम्न से (बेख़ौफ़ ओ ख़तर)	और दिन (जमा)	रातों	उन में	तुम चलो (फिरो)	उन में आमद ओ रफ़्त	और हम ने मुक़र्रर कर दिया

فَقَالُوا رَبَّنَا بَاعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ

तो हम ने बना दिया उन्हें	अपनी जानों पर	और उन्हों ने ज़ुल्म किया	हमारे सफ़रों के दरमियान	दूरी पैदा कर दे	ऐ हमारे रब	वह कहने लगे

أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	पूरी तरह परागन्दा	और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया	अफ़्साने

لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ

पस उन्हों ने उस की पैरवी की	अपना गुमान	इब्लीस	उन पर	सच कर दिखाया	और अलबत्ता	19	शुक्र गुज़ार	हर सब्र करने वाले

إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ

कोई ग़ल्बा	उन पर	उसे (इब्लीस को)	और न था	20	मोमिनीन	से- का	एक गिरोह	सिवाए

إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۗ

शक में	उस से	वह	उस से जो	आख़िरत पर	जो ईमान रखता है	ताकि हम मालूम कर लें	मगर

ع ٢ ١٢ ٨ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ

गुमान करते हो	उन को जिन्हें	पुकारो	फ़रमा दें	21	निगहबान	हर शै	पर	और तेरा रब

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا

और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	वह मालिक नहीं हैं	अल्लाह के सिवा

فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

22	कोई मददगार	उन में से	और नहीं उस (अल्लाह) का	उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा	उन का	और नहीं	ज़मीन में

अलबत्ता क़ौमे सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग़ दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क़ से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला। (15)
फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) ज़ोर का सैलाब भेजा और उन दो बाग़ों के बदले (दूसरे) दो बाग़ दिए बदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी बेरियाँ। (16)
यह हम ने उन्हें सज़ा दी इस लिए कि उन्हों ने नाशुक्री की और हम सिर्फ़ नाशुक्रे को सज़ा देते हैं। (17)
और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दीं, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेख़ौफ़ ओ ख़तर। (18)
वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़्साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार के लिए नशानियां हैं। (19)
और अलबत्ता इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्हों ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनों के। (20)
और इब्लीस को उन पर कोई ग़ल्बा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शै पर निगहबान है। (21)
आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक ज़र्रा बराबर चीज़ के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और ज़मीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

وَلَا تَنۡفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا لِمَنۡ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ

और नफ़ा नहीं देती	शफ़ाअ़त	उस के पास	सिवाए	जिसे वह इजाज़त दे	उस को	यहां तक	जब	दूर कर दी जाती है

عَنۡ قُلُوۡبِهِمۡ قَالُوۡا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمۡ ؕ قَالُوا الۡحَقَّ ۚ وَهُوَ الۡعَلِىُّ

उन के दिलों से	कहते हैं	क्या	फ़रमाया	तुम्हारे रब ने	वह कहते हैं	हक़	और वह	बुलन्द मरतबा

الۡكَبِيۡرُ ﴿۲۳﴾ قُلۡ مَنۡ يَّرۡزُقُكُمۡ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ

बुज़ुर्ग क़द्र	23	फ़रमा दें	कौन	तुम को रिज़्क़ देता है	आस्मानों से	और ज़मीन	फ़रमा दें अल्लाह

وَاِنَّاۤ اَوۡ اِيَّاكُمۡ لَعَلٰى هُدًى اَوۡ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۲۴﴾ قُلۡ لَّا تُسۡـَٔلُوۡنَ

और बेशक हम	या	तुम ही	अलबत्ता हिदायत पर	या	गुमराही में	खुली	24	फ़रमादें	तुम से न पूछा जाएगा

عَمَّاۤ اَجۡرَمۡنَا وَلَا نُسۡـَٔلُ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۲۵﴾ قُلۡ يَجۡمَعُ بَيۡنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ

उसकी बाबत	जो हम ने गुनाह किया	और न हम से पूछा जाएगा	उसकी बाबत	जो तुम करते हो	25	फ़रमा दें आप (स)	वह जमा करेगा	हम सब को	हमारा रब	फिर

يَفۡتَحُ بَيۡنَنَا بِالۡحَقِّ ؕ وَهُوَ الۡفَتَّاحُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۲۶﴾ قُلۡ اَرُوۡنِىَ الَّذِيۡنَ اَلۡحَقۡتُمۡ

फ़ैसला करेगा	हमारे दरमियान	ठीक ठीक	और वह	फ़ैसला करने वाला	जानने वाला	26	फ़रमा दें	मुझे दिखाओ	वह जिन्हें	तुम ने साथ मिला दिया है

بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلۡ هُوَ اللّٰهُ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ

उस के साथ	शरीक	हरगिज़ नहीं	बल्कि	वह अल्लाह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	27	और नहीं	आप (स) को हम ने भेजा

اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا وَّلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸﴾

मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए	खुशख़बरी देने वाला	और डर सुनाने वाला	और लेकिन	अक्सर लोग	नहीं जानते	28

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۹﴾ قُلۡ لَّكُمۡ مِّيۡعَادُ يَوۡمٍ

और वह कहते हैं	कब	यह वादा (क़ियामत)	अगर	तुम हो	सच्चे	29	फ़रमा दें	तुम्हारे लिए	वादा	एक दिन

لَّا تَسۡتَاۡخِرُوۡنَ عَنۡهُ سَاعَةً وَّلَا تَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ع النصف ٣ ٩

न तुम पीछे हट सकते हो	उस से	एक घड़ी	और न	तुम आगे बढ़ सकते हो	30	और कहते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

لَنۡ نُّؤۡمِنَ بِهٰذَا الۡقُرۡاٰنِ وَلَا بِالَّذِىۡ بَيۡنَ يَدَيۡهِ ؕ وَلَوۡ تَرٰۤى

हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे	इस क़ुरआन पर	और न	उस पर जो	इस से पहले	और काश तुम देखो

اِذِ الظّٰلِمُوۡنَ مَوۡقُوۡفُوۡنَ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ۖۚ يَرۡجِعُ بَعۡضُهُمۡ اِلٰى بَعۡضِ

जब	ज़ालिम (जमा)	खड़े किए जाएंगे	अपने रब के सामने	लौटाएगा (रद करेगा)	उन में से एक	तरफ़	दूसरे

اِۨلۡقَوۡلَ ۚ يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡا لِلَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا لَوۡلَاۤ اَنۡتُمۡ

बात	कहेंगे	जो कमज़ोर किए गए	उन लोगों को जो	तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	अगर न तुम होते

لَكُنَّا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡۤا اَنَحۡنُ

ज़रूर हम होते	ईमान लाने वाले	31	कहेंगे	जो लोग तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	उन से जो कमज़ोर किए गए	क्या हम

صَدَدۡنٰكُمۡ عَنِ الۡهُدٰى بَعۡدَ اِذۡ جَآءَكُمۡ بَلۡ كُنۡتُمۡ مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿۳۲﴾

हम ने रोका तुम्हें	से	हिदायत	उस के बाद	जब आ गई तुम्हारे पास	बल्कि	तुम थे	मुजरिम (जमा)	32

और शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिशी) कहते हैं कि हक़ (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा बुज़ुर्ग क़द्र है। (23)
आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें "अल्लाह"। बेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर है या खुली गुमराही में है। (24)
आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुज्रिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की बाबत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस बाबत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25)
फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26)
आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)
और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इनसानी के लिए खुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (28)
और वह कहते हैं यह वादाए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29)
आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30)
और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम दखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31)
और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (खुद) मुज्रिम थे। (32)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

रात और दिन	चाल	बल्कि	उन लोगों से जो तकब्बुर करते थे (बड़े)	कमज़ोर किए गए	वह लोग जो	और कहेंगे

اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا

और वह छुपाएंगे	शरीक (जमा)	उस के लिए	और हम ठहराएं	अल्लाह का	कि हम इन्कार करें	जब तुम हुक्म देते थे हमें

النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ

गर्दनों में	तौक़	और हम डालेंगे	अ़ज़ाब	जब वह देखेंगे	शर्मिन्दगी

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

किसी बस्ती में	और हम ने नहीं भेजा	33	वह करते थे	जो	मगर	वह सज़ा न दिए जाएंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	मुन्किर हैं	उस के	तुम जो दे कर भेजे गए हो	बेशक हम	उस के खुशहाल लोग	कहा	मगर	कोई डराने वाला

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	अ़ज़ाब दिए जाने वाले	हम	और नहीं	और औलाद में	माल में	ज़ियादा	हम	और उन्हों ने कहा

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	और तंग कर देता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें

ع ٦ ١٠ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ

तुम्हें नज़्दीक करदे	वह जो कि	तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे माल	और नहीं	36	नहीं जानते

عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	और उस ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाया	जो	मगर	दर्जा	हमारे नज़्दीक

جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	अम्न से होंगे	बालाख़ानों में	और वह	उस के बदले जो उन्हों ने किया	दुगनी	जज़ा

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

अ़ज़ाब में	यही लोग	आ़जिज़ करने (हराने) वाले	हमारी आयतों में	कोशिश करते हैं	और जो लोग

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	38	हाज़िर किए जाएंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ

तो वह	कोई शै	तुम ख़र्च करोगे	और जो	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

सब	वह जमा करेगा उन को	और जिस दिन	39	रिज़्क़ देने वाला	बेहतरीन	और वह	उस का इवज़ देगा

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

40	परस्तिश करते थे	तुम्हारी ही	क्या यह लोग	फ़रिश्तों को	फिर फ़रमाएगा

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों को: (नहीं) बल्कि (हमें रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अ़ज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक़ डालेंगे काफ़िरों की गर्दनों में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33)

और हम ने नहीं भेजा किसी बस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा: जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34)

और उन्हों ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अ़ज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अ़ज़ाब न होगा)। (35)

आप (स) फ़रमा दें बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36)

और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्हों ने किया, और वह बालाख़ानों में अम्न से होंगे। (37)

और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अ़ज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38)

आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम ख़र्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (39)

और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	बल्कि	उन के सिवाए (न कि वह)	हमारा कारसाज़	तू	तू पाक है	वह कहेंगे

الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ

तुम में से बाज़ (एक)	इख़्तियार नहीं रखता	सो आज	41	एतिक़ाद रखते थे	उन पर	इन में से अक्सर	जिन्न (जमा)

لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ

आग (जहन्नम) का अ़ज़ाब	तुम चखो	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों को	और हम कहेंगे	और न नुक़्सान का	नफ़ा का	बाज़ (दूसरे) के लिए

الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	42	तुम झुटलाते थे	उस को	तुम थे	वह जिस

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا

उस से जिस	कि रोके तुम्हें	वह चाहता है	एक आदमी	मगर सिर्फ़	नहीं है यह	वह कहते हैं	वाज़ेह

كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ

और कहा	झूट घड़ा हुआ	मगर	नहीं यह	और वह कहते हैं	तुम्हारे बाप दादा	परस्तिश करते थे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾

43	जादू खुला	मगर	यह नहीं	जब वह आया उन के पास	हक़ के बारे में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

आप (स) से पहले	उन की तरफ़	भेजा हम ने	और न	कि उन्हें पढ़ें	किताबें	दीं हम ने उन्हें	और न

مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ ؕ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ

दसवां हिस्सा	और यह न पहुँचे	इन से पहले	उन्हों ने जो	और झुटलाया	44	कोई डराने वाला

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ ع قُلْ ع ٥ ٩ ١١

फ़रमा दें	45	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा	मेरे रसूलों को	सो उन्हों ने झुटलाया	जो हम ने उन्हें दिया

اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى

और अकेले अकेले	दो, दो	तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते	कि	एक बात की	मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ

तुम्हें	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कोई जुनून	क्या तुम्हारे साथी को	फिर तुम ग़ौर करो

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

कोई अजर	जो मैं ने मांगा हो तुम से	फ़रमा दें	46	सख़्त अ़ज़ाब	आगे (आने से पहले)

فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर-की	और वह	अल्लाह के ज़िम्मे	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	तुम्हारा है	तो वह

شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

48	सब ग़ैबों का जानने वाला	हक़ को	डालता (ऊपर से उतारता है)	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	47	इत्तिलाअ़ रखने वाला

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिक़ाद रखते थे। (41)

सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख़्तियार रखता है और न नुक़्सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने ज़ुल्म (शिर्क) किया: तुम जहन्नम के अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (क़ुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43)

और हम ने उन्हें (मुश्रिकीने अरब को) किताबें नहीं दीं कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44)

और जो उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया, और यह (मुश्रिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (45)

फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम ग़ौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अ़ज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46)

आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाअ़ रखने वाला (गवाह) है। (47)

आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ

अगर	फ़रमा दें	49	और न लौटाएगा	बातिल	और न पैदा करेगा	हक़ आ गया	फ़रमा दें

ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِىْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِىْٓ

वह वहि करता है	तो उस की बदौलत	मैं हिदायत पर हूँ	और अगर	अपनी जान पर (अपने नुक़्सान को)	मैं बहका हूँ	तो इस के सिवा नहीं	मैं बहका हूँ

اِلَىَّ رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ

और न बच सकेंगे	वह घबराएंगे	जब	ऐ काश तुम देखो	50	क़रीब	सुनने वाला	बेशक वह	मेरा रब	मेरी तरफ़

وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ لا وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ

पकड़ना (हाथ आना)	उन के लिए	और कहां	उस पर	हम ईमान लाए	और वह कहेंगे	51	क़रीब जगह (पास)	से	और पकड़ लिए जाएंगे

مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ ج وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ

और वह फेंकते हैं	इस से क़ब्ल	उस से	और तहक़ीक़ उन्हों ने कुफ़्र किया	52	दूर (दारुलजज़ा)	जगह	से

بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ

जो वह चाहते थे	और दरमियान	उन के दरमियान	और आड़ कर दी गई	53	दूर जगह	से	बिन देखे

ع ٦ ٩ ١٢ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِىْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾ ع

54	तरद्दुद में डालने वाले	शक	में	वह थे	बेशक वह	इस से क़ब्ल	उन के हम जिन्सों के साथ	किया गया	जैसे

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٣٥) سُوْرَةُ فَاطِرٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकुआत 5 — (35) सूरह फ़ातिर / पैदा करने वाला — आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا

पैग़म्बर	फ़रिश्ते	बनाने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

اُولِىْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	जो वह चाहे	पैदाइश में	ज़ियादा कर देता है	और चार चार	और तीन तीन	दो दो	परों वाले

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ

तो बन्द करने वाला नहीं	रहमत से	लोगों के लिए	खोल दे अल्लाह	जो	1	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर

لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उस के बाद	उस का	तो कोई भेजने वाला नहीं	और जो वह बन्द कर दे	उस का

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	कोई पैदा करने वाला	क्या	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ लोगो

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾

3	उलटे फिरे जाते हो तुम	तो कहां	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान से	वह तुम्हें रिज़्क़ देता है

आप (स) फ़रमा दें: हक़ आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा बातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)

आप (स) फ़रमा दें अगर मैं बहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुक़्सान को बहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, बेशक वह सुनने वाला, क़रीब है। (50)

ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)

और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहां (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)

और तहक़ीक़ उन्हों ने इस से क़ब्ल उस से कुफ़्र किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पच्चू बातें करते हैं)। (53)

जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से क़ब्ल किया गया, बेशक वह तरद्दुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फ़रिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह ज़ियादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1)

अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़्क़ देता है और ज़मीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहां तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

وَاِنۡ يُّكَذِّبُوۡكَ فَقَدۡ كُذِّبَتۡ رُسُلٌ مِّنۡ قَبۡلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	तुम से पहले	रसूल (जमा)	तो तहक़ीक़ झुटलाए गए	वह तुझे झुटलाएं	और अगर

الۡاُمُوۡرُ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	ऐ लोगो	4	तमाम काम

الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ٙ وَلَا يَغُرَّنَّكُمۡ بِاللّٰهِ الۡغَرُوۡرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ لَكُمۡ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारे लिए	बेशक शैतान	5	धोके बाज़	अल्लाह से	और तुम्हें धोके में न डाल दे	दुनिया की ज़िन्दगी

فَاتَّخِذُوۡهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدۡعُوۡا حِزۡبَهٗ لِيَكُوۡنُوۡا مِنۡ اَصۡحٰبِ السَّعِيۡرِ ﴿٦﴾ؕ

6	जहन्नम वाले	से	ताकि वह हों	अपने गिरोह को	वह तो बुलाता है	दुश्मन	पस उसे समझो

اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ

उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	और जो लोग ईमान लाए	सख़्त अ़ज़ाब	उन के लिए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया

مَّغۡفِرَةٌ وَّاَجۡرٌ كَبِيۡرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنۡ زُيِّنَ لَهٗ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ ع ١ / ١٣

अच्छा	फिर उस ने देखा उसे	उस का बुरा अ़मल	उस के लिए	आरास्ता किया गया	सो क्या जिस	7	बड़ा	और अजर	बख़्शिश

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَهۡدِيۡ مَنۡ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذۡهَبۡ نَفۡسُكَ

तुम्हारी जान	पस न जाती रहे	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	गुमराह ठहराता है	पस बेशक अल्लाह

عَلَيۡهِمۡ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌۢ بِمَا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِىۡۤ اَرۡسَلَ

भेजा	वह जिस ने	और अल्लाह	8	वह करते हैं	उसे जो	जानने वाला	बेशक अल्लाह	हस्रत कर के	उन पर

الرِّيٰحَ فَتُثِيۡرُ سَحَابًا فَسُقۡنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحۡيَيۡنَا بِهِ الۡاَرۡضَ

ज़मीन	उस से	फिर हम ने ज़िन्दा किया	मुर्दा शहर	तरफ़	फिर हम उसे ले गए	बादल	फिर वह उठाती हैं	हवाएं

بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوۡرُ ﴿٩﴾ مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ الۡعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الۡعِزَّةُ

तो अल्लाह के लिए इज़्ज़त	इज़्ज़त	चाहता है	जो कोई	9	जी उठना	इसी तरह	उस के मरने के बाद

جَمِيۡعًا ؕ اِلَيۡهِ يَصۡعَدُ الۡكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالۡعَمَلُ الصَّالِحُ يَرۡفَعُهٗ ؕ

वह उस को बुलन्द करता है	अच्छा	और अ़मल	पाकीज़ा कलाम	चढ़ता है	उस की तरफ़	तमाम तर

وَالَّذِيۡنَ يَمۡكُرُوۡنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ وَمَكۡرُ اُولٰٓئِكَ

उन लोगों	और तदबीर	अ़ज़ाब सख़्त	उन के लिए	बुरी	तदबीरें करते हैं	और जो लोग

هُوَ يَبُوۡرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمۡ

फिर उस ने तुम्हें बनाया	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	उस ने पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	10	वह अकारत जाएगी

اَزۡوَاجًا ؕ وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ

उम्र पाता	और नहीं	उस के इल्म में है	मगर	और न वह जनती है	कोई औरत	हामिला होती है	और न	जोड़े जोड़े

مِنۡ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنۡقَصُ مِنۡ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ﴿١١﴾

11	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक	किताब में	मगर	उस की उम्र से	और न कमी की जाती है	कोई बड़ी उम्र वाला

और अगर वह तुझे झुटलाएं तो तहक़ीक़ झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की बाज़गश्त (लौटना) अल्लाह की तरफ़ है। (4)
ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके बाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)
बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहन्नम वालों से हों। (6)
जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)
सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अ़मल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा) (क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस बेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हस्रत कर के, बेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)
और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शहर की तरफ़ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हश्र) जी उठना है। (9)
जो कोई इज़्ज़त चाहता है तो तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह के लिए है। उस की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अ़मल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदबीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और उन लोगों की तदबीर अकारत जाएगी। (10)
और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औ़रत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह बेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

आसान उस का पीना	शीरीं प्यास बुझाने वाला	यह	दोनों दर्या	और बराबर नहीं

وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۭ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

और तुम निकालते हो	ताज़ा	गोश्त	तुम खाते हो	और हर एक से	शोर तल्ख़	और यह

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا

ताकि तुम तलाश करो	चीरती हैं पानी को	उस में	कश्तियां	और तू देखता है	जिस को पहनते हो तुम	ज़ेवर

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

और दाख़िल करता है दिन को	दिन में	वह दाख़िल करता है रात	12	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी)

فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ

मुक़र्ररा	एक वक़्त	हर एक चलता है	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात में

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह

مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ

और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर	13	खजूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं

سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۭ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۭ

तुम्हारे शिर्क करने का	वह इन्कार करेंगे	और रोज़े क़ियामत	तुम्हारी	वह हाजत पूरी न कर सकेंगे	वह सुन लें

ع ٢ ١٤ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

मोहताज	तुम	ऐ लोगो!	14	ख़बर देने वाला	मानिंद	और तुझ को ख़बर न देगा

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	15	सज़ावारे हम्द	बेनियाज़	वह	और अल्लाह	अल्लाह के

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾

17	दुशवार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	16	नई ख़ल्क़त	और ले आए वह

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا

तरफ़ (लिए) अपना बोझ	कोई बोझ से लदा हुआ	बुलाए	और अगर	बोझ दूसरे का	कोई उठाने वाला	और नहीं उठाएगा

لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۭ اِنَّمَا تُنْذِرُ

आप (स) डराते हैं	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	क़राबतदार	अगरचे हों	कुछ	उस से	न उठाएगा वह

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭ

नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं	वह लोग जो

وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

18	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	ख़ुद अपने लिए	वह पाक साफ़ होता है	तो सिर्फ़	पाक होता है	और जो

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह (एक) शीरीं है प्यास बुझाने वाला, उस का पीना भी आसान, और यह (दूसरा) शोर तल्ख़ है, और हर एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो, और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिस को तुम पहनते हो, और तू उस में कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती (हुई चलती हैं) ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। **(12)**
और रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। **(13)**
और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े क़ियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई ख़बर न देगा। **(14)**
ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह ही बेनियाज़ सज़ावारे हम्द ओ सना है। **(15)**
अगर वह चाहे तो (सब को) ले जाए (नाबूद कर दे) और नई ख़ल्क़त ले आए। **(16)**
और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ) दुशवार। **(17)**
और कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार किसी को) अपना बोझ (उठाने) के लिए बुलाए तो वह उस से कुछ न उठाएगा, अगरचे उस का क़राबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़ उनको डरा सकते हैं जो अपने रब से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और जो पाक होता है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़ होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है। **(18)**

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। **(19)**
और न अन्धेरे और न नूर (रोशनी), (बराबर हैं)। **(20)**
और न साया और न झुलसती हवा। **(21)**
और बराबर नहीं ज़िन्दे (आलिम) और न मुर्दे (जाहिल), बेशक अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़ब्रों में हैं। **(22)**
बल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। **(23)**
बेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो। **(24)**
और अगर वह तुम्हें झुटलाएं तो तहक़ीक़ उन के अगले लोगों ने भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल (निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। **(25)**
फिर जिन लोगों ने कुफ़्र किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब? **(26)**
क्या तू ने नहीं देखा? बेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियां) हैं सफ़ेद और सुर्ख़, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। **(27)**
और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले बन्दे (ही) डरते हैं, बेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। **(28)**
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़ घाटा नहीं। **(29)**

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

20	और न रोशनी	और न अन्धेरे	19	और आँखों वाला	अन्धा	और बराबर नहीं

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ

मुर्दे	और न	ज़िन्दे	और नहीं बराबर	21	और न झुलसती हवा	और न साया

اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ

जो	सुनाने वाले	और तुम नहीं	जिस को वह चाहता है	सुना देता है	बेशक अल्लाह

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	हम ने आप (स) को भेजा	बेशक हम	23	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	तुम नहीं	22	क़ब्रों में

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۭ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

24	डराने वाला	उस में	मगर गुज़रा	कोई उम्मत	और नहीं	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	इन से अगले	वह लोग जो	तो तहक़ीक़ झुटलाया	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ

फिर	25	रोशन	और किताबों के साथ	और सहीफ़ों के साथ	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल

اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ ع ١٢ ٣ ١٥

बेशक अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	26	मेरा अज़ाब	हुआ	फिर कैसा	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	मैं ने पकड़ा

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

मुख़्तलिफ़	फल (जमा)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान से	उतारा

اَلْوَانُهَا ۭ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

मुख़्तलिफ़	और सुर्ख़	क़त्आत सफ़ेद	और पहाड़ों से-में	उन के रंग

اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

और जानवर (जमा)	और लोगों से-में	27	सियाह	गहरे रंग	उन के रंग

وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۭ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

अल्लाह	डरते हैं	इस के सिवा नहीं	उसी तरह	उन के रंग	मुख़्तलिफ़	और चौपाए

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बेशक	28	बख़्शने वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	इल्म वाले	उस के बन्दे	से

يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا

उस से जो	और वह ख़र्च करते हैं	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	अल्लाह की किताब	जो पढ़ते हैं

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

29	हरगिज़ घाटा नहीं	ऐसी तिजारत	वह उम्मीद रखते हैं	और खुले तौर पर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	बेशक वह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	उन के अजर	ताकि वह पूरे पूरे दे दे

شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا

तस्दीक़ करने वाली	हक़	वह	किताब से	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि भेजी है	और वह जो	30	क़द्रदान

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا

हम ने वारिस बनाया	फिर	31	देखने वाला	अलबत्ता बाख़बर	अपने बन्दों से	बेशक अल्लाह	उन के पास	उस की जो

الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ

अपनी जान पर	ज़ुल्म करने वाला	पस उन से (कोई)	अपने बन्दे	से-को	हम ने चुना	वह जिन्हें	किताब

وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

यह	हुक्म से अल्लाह के	नेकियों में	सबक़त ले जाने वाला	और उन से (कोई)	बीच का रास्ता चलने वाला	और उन से (कोई)

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे	वह उन में दाख़िल होंगे	बाग़ात हमेशगी के	32	फ़ज़्ल बड़ा	वह (यही)

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोना	से	कंगन (जमा)	से-का	उन में

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا

हमारा रब	बेशक	ग़म	हम से	दूर कर दिया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और वह कहेंगे

لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

अपना फ़ज़्ल	से	हमेशा रहने का घर	हमें उतारा	वह जिस	34	क़द्र दान	अलबत्ता बख़्शने वाला

لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह जिन लोगों ने	35	थकावट	उस में	और न हमें छुएगी	कोई तक्लीफ़	उस में	न हमें छुएगी

لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ

और न हल्का किया जाएगा	कि वह मर जाएं	उन पर	न क़ज़ा आएगी	जहन्नम की आग	उन के लिए

عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ

और वह	36	हर नाशुक्रे	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह	उस का अ़ज़ाब	से-कुछ	उन से

يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ

बर अ़क्स	नेक	हम अ़मल करें	हमें निकाल ले	ऐ हमारे परवरदिगार	उस (दोज़ख़) में	चिल्लाएंगे

الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ

जो-जिस	उस में	कि नसीहत पकड़ लेता वह	क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी	हम करते थे	उस के जो

ع ١١ ١٦ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

37	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	पस नहीं	सो चखो तुम	डराने वाला	और आया तुम्हारे पास	नसीहत पकड़ता

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फ़ज़्ल से, बेशक वह बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला है, और उन में से कोई बीच की रास है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है बड़ा फ़ज़्ल। (32)

हमेशगी के बाग़ात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फ़ज़्ल से, न इस में हमें कोई तक्लीफ़ छुएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छुएगी। (35)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए जहन्नम की आग है, न उन पर क़ज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अ़ज़ाब, इसी तरह हर नाशुक्रे को अ़ज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अ़मल करें, उस के बरअ़क्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चखो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

बाख़बर	बेशक वह	और ज़मीन	आस्मानों की पोशीदा बातें	जानने वाला	बेशक अल्लाह

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ

सो जिस ने कुफ़्र किया	ज़मीन में	जांनशीन	तुम्हें बनाया	जिस ने	वही	38	सीनों (दिलों) के भेदों से

فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا

सिवाए	उन का रब	नज़्दीक	उन का कुफ़्र	काफ़िर (जमा)	और नहीं बढ़ाता	उस का कुफ़्र	तो उसी पर

مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

किया तुम ने देखा	फ़रमा दें	39	ख़सारा	सिवाए	उन का कुफ़्र	काफ़िर (जमा)	और नहीं बढ़ाता	नाराज़ी (ग़ज़ब)

شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا

उन्हों ने पैदा किया	क्या	तुम मुझे दिखाओ	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	अपने शरीक

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

कोई किताब	हम ने दी उन्हें	या	आस्मानों में	साझा	उन के लिए	या	ज़मीन	से

فَهُمْ عَلٰي بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ

उन के बाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	वादे करते	नहीं	बल्कि	उस से - की	दलील (सनद) पर	पस (कि) वह

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	थाम रखा है	बेशक अल्लाह	40	धोका	सिवाए	बाज़ (दूसरे) से

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ

उस के बाद	कोई भी	थामेगा उन्हें	न	टल जाएं	और अगर वह	टल जाएं वह	कि

اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ

अपनी सख़्त क़स्में	अल्लाह की	और उन्हों ने क़सम खाई	41	बख़्शने वाला	हिल्म वाला	है	बेशक वह

لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰي مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ

उम्मत (जमा)	हर एक से	ज़ियादा हिदायत पाने वाले	अलबत्ता वह ज़रूर होंगे	कोई डराने वाला	उन के पास आए	अगर

فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ﴿٤٢﴾ ۙ اِسْتِكْبَارًا

अपने को बड़ा समझने के सबब	42	बिदकना	मगर- सिवाए	न उन (में) ज़ियादा हुआ	एक नज़ीर	उन के पास आया	फिर जब

فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا

सिर्फ़	बुरी	चाल	और नहीं उठता (उलटा पड़ता)	बुरी	और चाल	ज़मीन (दुनिया) में

بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ

सो तुम हरगिज़ न पाओगे	पहले	दस्तूर	मगर सिर्फ़	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	तो क्या	उस के करने वाले पर

لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

43	कोई तग़य्युर	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में

बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, बेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)
वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जांनशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर है उस के कुफ़्र (का वबाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़्दीक उन का कुफ़्र सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़्र सिवाए ख़सारे के। (39)
आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)
बेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, बेशक वह (अल्लाह) हिल्म वाला, बख़्शने वाला है। (41)
और उन्हों (मुश्रिकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त क़स्में खाईं कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर ज़ियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नज़ीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)
दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का वबाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इंतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

आक़िबत (अन्जाम)	हुआ	कैसा	सो वह देखते	ज़मीन (दुनिया) में	क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا

और नहीं	कुव्वत में	उन से	बहुत ज़ियादा	और वह थे	उन से पहले	उन लोगों का जो

كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ

ज़मीन में	और न	आस्मानों में	कोई शै	कि उसे आजिज़ कर दे	अल्लाह	है

اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

लोग	अल्लाह पकड़ करे	और अगर	44	बड़ी कुदरत वाला	इल्म वाला	है	बेशक वह

بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰي ظَهْرِهَا مِنْ دَاۗبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	कोई चलने फिरने वाला	उस की पुश्त	पर	वह न छोड़े	उन के आमाल के सबब

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ

उन की अजल	आ जाएगी	फिर जब	एक मुद्दते मुअय्यन	तक	वह उन्हें ढील देता है

ع ٨ ١٧
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ ع

	45	देखने वाला	अपने बन्दों को	है	तो बेशक अल्लाह	

اٰيَاتُهَا ٨٣ ❀ سُوْرَةُ يٰسٓ (٣٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 (36) सूरह या सीन आयात 83

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰسۗ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾ عَلٰي صِرَاطٍ

रास्ता	पर	3	रसूलों में से	बेशक आप (स)	2	बाहिक्मत	कसम है कुरआन	1	या सीन

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ

नहीं डराए गए	वह क़ौम	ताकि आप (स) डराएं	5	मेहरबान	ग़ालिब	नाज़िल किया	4	सीधा

اٰبَاۗؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓي اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	पर	बात	तहक़ीक़ साबित हो गई	6	ग़ाफ़िल (जमा)	पस वह	उन के बाप (दादा)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِىَ اِلَى

तक	फिर वह	तौक़	उन की गरदनें	में	बेशक हम ने किए (डाले)	7	ईमान न लाएंगे

الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

उन के आगे	से	और हम ने कर दी	8	सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं)	तो वह	ठोड़ियाँ

سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾

9	देखते नहीं	पस वह	फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया	एक दीवार	और उन के पीछे	एक दीवार

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ! और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में उस को आजिज़ कर दे और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44) और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रुए ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मुद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

या सीन। (1) क़सम है बाहिक्मत कुरआन की। (2) बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3) सीधे रास्ते पर हैं। (4) नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेह्रबान का। (5) ताकि आप (स) उस क़ौम को डराएं जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6) तहक़ीक़ उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) बात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7) बेशक हम ने उन की गर्दनों में डाले हैं तौक़, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8) और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنۡذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنۡذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٠﴾

10	वह ईमान न लाएंगे	तुम उन्हें न डराओ	या	ख़ाह तुम उन्हें डराओ	उन पर- उन के लिए	और बराबर

اِنَّمَا تُنۡذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكۡرَ وَخَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ ۚ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	और डरे	किताबे नसीहत	पैरवी करे	जो	तुम डराते हो	इस के सिवा नहीं

فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ الۡمَوۡتٰى

मुर्दे	ज़िन्दा करते हैं	बेशक हम	11	अच्छा	और अजर	बख़्शिश की	पस उसे ख़ुशख़बरी दें

وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ فِىۡۤ وقف غفران

में	हम ने उसे शुमार कर रखा है	और हर शै	और उन के असर (निशानात)	जो उन्हों ने आगे भेजा (अ़मल)	और हम लिखते हैं

اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿١٢﴾ ع وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ ۘ اِذۡ ع ١٢/١٨ وقف لازم

जब	बस्ती वाले	मिसाल (क़िस्सा)	उन के लिए	और बयान करें आप (स)	12	किताबे रोशन

جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٣﴾ ۚ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا

तो उन्हों ने झुटलाया उन्हें	दो (2)	उन की तरफ़	हम ने भेजे	जब	13	रसूल (जमा)	उन के पास आए

فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿١٤﴾ قَالُوۡا

वह बोले	14	भेजे गए	तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	पस उन्हों ने कहा	तीसरे से	फिर हम ने तक़्वियत दी

مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَىۡءٍ ۙ

कुछ	रहमान (अल्लाह)	उतारा	और नहीं	हम जैसे	आदमी	मगर- महज़	तुम नहीं हो

اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٥﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	जानता है	हमारा परवरदिगार	उन्हों ने कहा	15	झूट बोलते हो	मगर- महज़	तुम	नहीं

لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿١٧﴾ قَالُوۡۤا

वह कहने लगे	17	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर	हम पर	और नहीं	16	अलबत्ता भेजे गए

اِنَّا تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ

और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें	ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें	तुम बाज़ न आए	अगर	तुम्हें	हम ने मनहूस पाया

مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ ؕ اَئِنۡ

क्या	तुम्हारे साथ	तुम्हारी नहूसत	उन्हों ने कहा	18	दर्दनाक	अ़ज़ाब	हम से

ذُكِّرۡتُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنۡ اَقۡصَا

परला सिरा	से	और आया	19	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम समझाए गए

الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٢٠﴾ ۙ

20	रसूलों की	तुम पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	एक आदमी	शहर

اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـَٔلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٢١﴾

21	हिदायत याफ़्ता	और वह	कोई अजर	तुम से नहीं मांगते	जो	तुम पैरवी करो

और बराबर है उन के लिए ख़ाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। **(10)**
इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो किताबे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख़्शिश और अच्छे अजर की ख़ुशख़बरी दें। **(11)**
बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अ़मल जो उन्हों ने आगे भेजे और जो उन्हों ने पीछे (आसार) छोड़े। और हर शै को हम ने किताबे रोशन में शुमार कर रखा है। **(12)**
और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का क़िस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। **(13)**
जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्हों ने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़्वियत दी, पस उन्हों ने कहाः बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। **(14)**
वह बोलेः तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। **(15)**
उन्हों ने कहाः हमारा परवरदिगार जानता है, बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। **(16)**
और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। **(17)**
वह कहने लगेः हम ने बेशक मनहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अ़ज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। **(18)**
उन्हों ने कहाः तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। **(19)**
और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। **(20)**
तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़्ता हैं। **(21)**

الجزء ٢٣

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾

22	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	पैदा किया मुझे	वह जिस ने	मैं न इबादत करूँ	मुझे	और क्या हुआ

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ

न काम आए मेरे	कोई नुक़्सान	रहमान-अल्लाह	वह चाहे	अगर	ऐसे माबूद	उस के सिवा	क्या मैं बना लूँ

شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْٓ

बेशक मैं	24	खुली	अलबत्ता गुमराही में	उस वक़्त	बेशक मैं	23	और न छुड़ा सकें वह मुझे	कुछ भी	उन की सिफ़ारिश

اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ

मेरी क़ौम	ऐ काश	उस ने कहा	जन्नत	तू दाख़िल हो जा	इरशाद हुआ	25	पस तुम मेरी सुनो	तुम्हारे रब पर	मैं ईमान लाया

يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27	नवाज़े हुए लोग	से	और उस ने किया मुझे	मेरा रब	वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे	26	वह जानती

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰي قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	उतारने वाले	और न थे हम	आस्मान	से	कोई लशकर	उस के बाद	उस की क़ौम	पर	और नहीं उतारा हम ने

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً

हाए हस्रत	29	बुझ कर रह गए	वह	पस अचानक	एक	चिंघाड़	मगर	न थी

وقف غفران

عَلَي الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا

क्या उन्हों ने नहीं देखा	30	हँसी उड़ाते	उस से	वह थे	मगर	कोई रसूल	नहीं आया उन के पास	बन्दों पर

كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاِنْ

और नहीं	31	लौट कर नहीं आएंगे वह	उन की तरफ़	कि वह	नसलों से	उन से क़ब्ल	हलाक कीं हम ने	कितनी

ع ٢٠ ٢ ١

كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ

मुर्दा	ज़मीन	उन के लिए	एक निशानी	32	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे रूबरू	सब के सब	मगर	सब

اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ

बाग़ात	उस में	और बनाए हम ने	33	वह खाते हैं	पस उस से	अनाज	उस से	और निकाला हम ने	हम ने ज़िन्दा किया उसे

مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا

ताकि वह खाएं	34	चश्मे	से	उस में	और जारी किए हम ने	और अंगूर	खजूर	से- के

مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ

पैदा किए	वह ज़ात जिस ने	पाक	35	तो क्या वह शुक्र न करेंगे	उन के हाथों	बनाया उसे	और नहीं	उस के फलों से

الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	वह नहीं जानते	और उस से जो	और उन की जानों से	ज़मीन	उगाती है	उस से जो	हर चीज़	जोड़े

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	अन्धेरे में रह जाते हैं	वह	तो अचानक	दिन	उस से	हम खींचते हैं	रात	उन के लिए	और एक निशानी

और मुझे क्या हुआ (मेरे पास क्या उज़्र है) कि मैं उस की इबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया, और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (22)
क्या मैं उस के सिवा ऐसे माबूद बनालूँ? अगर अल्लाह मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे काम न आए कुछ भी, और न वह मुझे छुड़ा सकें। (23)
बेशक मैं उस वक़्त खुली गुमराही में हूँगा। (24)
बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया, पस तुम मेरी सुनो। (25)
(उस शहीद को) इरशाद हुआ कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा, उस ने कहा: ऐ काश! मेरी क़ौम जानती। (26)
वह बात जिस की वजह से मुझे बख़्श दिया मेरे रब ने और उस ने मुझे (अपने) नवाज़े हुए लोगों में से किया। (27)
और हम ने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लशकर नहीं उतारा आस्मान से, और न हम उतारने वाले थे (भेजने की हाजत थी)। (28)
(उन की सज़ा) न थी मगर एक चिंघाड़, पस वह अचानक बुझ कर रह गए। (29)
हाए हस्रत बन्दों पर! कि उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस की हँसी उड़ाते थे। (30)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी नसलें हलाक कीं कि वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (31)
और कोई एसा (नहीं) मगर सब के सब हमारे रूबरू हाज़िर किए जाएंगे। (32)
और मुर्दा ज़मीन उन के लिए एक निशानी है, हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस से अनाज निकाला, पस वह उस से खाते हैं। (33)
और हम ने उस में बाग़ात बनाए (लगाए) खजूर और अंगूर के, और हम ने उस में चश्मे जारी किए। (34)
ताकि वह उस के फलों से खाएं और उसे नहीं बनाया उन के हाथों ने, तो क्या वह शुक्र न करेंगे? (35)
पाक है वह ज़ात जिस ने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए उस (क़बील) से जो ज़मीन उगाती है (नबातात) और ख़ुद उनकी जानों (इन्सानों में से) और उन में से जिन्हें वह (ख़ुद भी) नहीं जानते। (36)
और उन के लिए रात एक निशानी है, हम दिन को उस से खींचते (निकालते) हैं तो वह अचानक अन्धेरे में रह जाते हैं। (37)

और सूरज अपने मुक़र्ररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह ग़ालिब और दाना का निज़ाम (मुक़र्रर करदह) है। (38)
और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है (पहली का बारीक सा चाँद)। (39)
न सूरज की मजाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मजाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)
और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)
और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं। (42)
और अगर हम चाहें तो हम उन्हें ग़र्क़ कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)
मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक़्ते मुअ़य्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)
और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)
और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)
और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से ख़र्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएं? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)
और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाए (क़ियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)
वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह बाहम झगड़ रहे होंगे। (49)
फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)
और (दोबारा) फूंका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)
वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

وَالشَّمۡسُ تَجۡرِىۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ﴿٣٨﴾ وَالۡقَمَرَ

और चाँद	38	जानने वाला (दाना)	ग़ालिब	निज़ाम	यह	अपने	ठिकाने (मुक़र्ररा रास्ते)	चलता रहता है	और सूरज

قَدَّرۡنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالۡعُرۡجُوۡنِ الۡقَدِيۡمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمۡسُ يَنۡۢبَغِىۡ

लाइक़ (मजाल)	सूरज	न	39	पुरानी	खजूर की शाख़ की तरह	हो जाता है	यहाँ तक कि	मनज़िलें	हम ने मुक़र्रर कीं उस को

لَهَاۤ اَنۡ تُدۡرِكَ الۡقَمَرَ وَلَا الَّيۡلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ

दाइरे में	और सब	दिन	पहले आ सके	रात	और न	चाँद	जा पकड़े वह	कि	उस के लिए

يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمۡ اَنَّا حَمَلۡنَا ذُرِّيَّتَهُمۡ فِى الۡفُلۡكِ الۡمَشۡحُوۡنِ ﴿٤١﴾ۙ

41	भरी हुई	कश्ती में	उन की औलाद	हम ने सवार किया	कि हम	उन के लिए	और एक निशानी	40	तैरते (गर्दिश करते) हैं

وَخَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ مَا يَرۡكَبُوۡنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنۡ نَّشَاۡ نُغۡرِقۡهُمۡ فَلَا صَرِيۡخَ

तो न फ़र्याद रस	हम ग़र्क़ कर दें उन्हें	हम चाहें	और अगर	42	वह सवार होते हैं	जो-जिस	उस (कश्ती) जैसी	उन के लिए	और हम ने पैदा किया

لَهُمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡقَذُوۡنَ ﴿٤٣﴾ۙ اِلَّا رَحۡمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيۡنٍ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا

और जब	44	एक वक़्ते मुअ़य्यन तक	और फ़ाइदा देना	हमारी तरफ़ से	रहमत	मगर	43	छुड़ाए जाएं	और न वह	उन के लिए

قِيۡلَ لَهُمُ اتَّقُوۡا مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡكُمۡ وَمَا خَلۡفَكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا

और नहीं	45	तुम पर रहम किया जाए	शायद तुम	तुम्हारे पीछे	और जो	तुम्हारे सामने	जो	तुम डरो	उन से	कहा जाए

تَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ مِّنۡ اٰيٰتِ رَبِّهِمۡ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا

और जब	46	रूगर्दानी करते	उस से	वह हैं	मगर	उन का रब	निशानियों में से	कोई निशानी	उन के पास

قِيۡلَ لَهُمۡ اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا

उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन)	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	कहते हैं	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	ख़र्च करो तुम	उन से	कहा जाए

اَنُطۡعِمُ مَنۡ لَّوۡ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطۡعَمَهٗۤ ۖ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٤٧﴾

47	खुली	गुमराही	में	मगर-सिर्फ़	तुम	नहीं	उसे खाने को देता	अगर अल्लाह चाहता	(उस को) जिसे	क्या हम खिलाएं

وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنۡظُرُوۡنَ

वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं	48	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा	कब	और वह कहते हैं

اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً تَاۡخُذُهُمۡ وَهُمۡ يَخِصِّمُوۡنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ

फिर न कर सकेंगे	49	बाहम झगड़ रहे होंगे	और वह	वह उन्हें आ पकड़ेगी	एक	चिंघाड़	मगर

تَوۡصِيَةً وَّلَاۤ اِلٰٓى اَهۡلِهِمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَاِذَا هُمۡ ع ١٨ ٣ ٢

तो यकायक वह	सूर में	और फूंका जाएगा	50	वह लौट सकेंगे	अपने घर वाले	तरफ़	और न	वसीयत करना

مِّنَ الۡاَجۡدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمۡ يَنۡسِلُوۡنَ ﴿٥١﴾ قَالُوۡا يٰوَيۡلَنَا مَنۢ بَعَثَنَا

किस ने उठा दिया हमें	ऐ वाए हम पर	वह कहेंगे	51	दौड़ेंगे	अपने रब की तरफ़	क़ब्रें	से

مِنۡ مَّرۡقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحۡمٰنُ وَصَدَقَ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿٥٢﴾ وقف لازم وقف منزل وقف غفران

52	रसूलों	और सच कहा था	रहमान-अल्लाह	जो वादा किया	यह	हमारी क़ब्रें	से

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

53	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे सामने	सब	वह	पस यकायक	एक	चिंघाड़	मगर	होगी	न

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ

बेशक	54	करते थे	जो तुम	मगर-बस	और न तुम बदला पाओगे	कुछ	किसी शख़्स	न ज़ुल्म किया जाएगा	पस आज

أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ

सायों में	और उन की बीवियां	वह	55	बातें (मज़े करने में)	एक शुग़्ल में	आज	अहले जन्नत

عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾

57	जो वह चाहेंगे	और उन के लिए	मेवा	उस में	उन के लिए	56	तकिया लगाए हुए	तख़्तों पर

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

59	मुज्रिमो (जमा)	ऐ	आज	और अलग हो जाओ तुम	58	मेह्रबान परवरदिगार	से	फ़रमाया जाएगा	सलाम

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	परस्तिश न करना	ऐ औलादे आदम	तुम्हारी तरफ़	क्या मैं ने हुक्म नहीं भेजा था

وقف غفران

مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَّأَنِ اعْبُدُونِي هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ

और तहक़ीक़ गुमराह कर दिया	61	सीधा	रास्ता	यही	और यह कि तुम मेरी इबादत करना	60	खुला

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

वह जिस का	जहन्नम	यह है	62	सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते?	बहुत सी	मख़्लूक़	तुम में से

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ

आज	64	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो	आज	उस में दाख़िल हो जाओ	63	तुम से वादा किया गया था

نَخْتِمُ عَلٰٓى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا

वह थे	उस की जो	उन के पाऊँ	और गवाही देंगे	उन के हाथ	और हम से बोलेंगे	उन के मुँह	पर	हम मुहर लगा देंगे

يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى

तो कहां	रास्ता	फिर वह सबक़त करें	उन की आँखें	पर	तो मिटा दें (मिलयामेट करदें)	और अगर हम चाहें	65	कमाते (करते थे)

يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا

फिर न कर सकें	उन की जगहें	पर-में	हम मस्ख़ कर दें उन्हें	और अगर हम चाहें	66	वह देख सकेंगे

ع ١٧ ٣

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ

ख़ल्क़त (पैदाइश) में	औन्धा कर देते हैं	हम उम्र दराज़ कर देते हैं	और जिस	67	और न वह लौटें	चलना

أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ

नसीहत	मगर	वह (यह)	नहीं	उस के लिए	और नहीं शायान	शेर	और हम ने नहीं सिखाया उस को	68	तो क्या वह समझते नहीं?

وَّقُرْاٰنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٧٠﴾

70	काफ़िर (जमा)	पर	बात (हुज्जत)	और साबित हो जाए	ज़िन्दा	हो	जो	ताकि (आप स) डराएं	69	और क़ुरआन वाज़ेह

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53)
पस आज ज़ुल्म न किया जाएगा किसी शख़्स पर कुछ (भी) और जो तुम करते थे पस उसी का बदला पाओगे। (54)
बेशक आज अहले जन्नत एक शुग़्ल में ख़ुश होते होंगे। (55)
वह और उन की बीवियां सायों में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56)
उन के लिए उस (जन्नत) में हर क़िस्म का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57)
मेह्रबान परवरदिगार की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (58)
और ऐ मुज्रिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59)
क्या मैं ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परस्तिश न करना शैतान की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60)
और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61)
और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो किया तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते थे? (62)
यह है वह जहन्नम जिस का तुम से वादा किया गया था। (63)
तुम जो कुफ़्र करते थे उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (64)
आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65)
और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ़ सबक़त करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66)
और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मस्ख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67)
और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औन्धा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68)
और हम ने उस (आप स) को शेर नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह क़ुरआन। (69)
ताकि आप (स) (उस को) डराएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए। (70)

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

71	मालिक हैं	उन के	पस वह	चौपाए	बनाया अपने हाथों (क़ुदरत) से	उस से जो	उन के लिए	हम ने पैदा किया	या क्या वह नहीं देखते?

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

फ़ाइदे	उन में	और उन के लिए	72	वह खाते हैं	और उन से	उन की सवारी	पस उन से	उन के लिए	और हम ने फ़रमांबरदार किया उन्हें

وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ

शायद वह	और माबूद	अल्लाह के सिवा	और उन्हों ने बना लिए	73	क्या फिर वह शुक्र नहीं करते?	और पीने की चीज़ें

يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	हाज़िर किए जाएंगे	लशकर	उन के लिए	और वह	उन की मदद	वह नहीं कर सकते	74	मदद किए जाएं

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ وقف لازم

इन्सान	क्या नहीं देखा	76	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	बेशक हम जानते हैं	उन की बात	पस आप (स) को मग़मूम न करे

اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا

एक मिसाल	हमारे लिए	और उस ने बयान की	77	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुत्फ़े से	कि हम ने पैदा किया उस को

وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ

वह जिस ने	उसे ज़िन्दा करेगा	फ़रमा दें	78	गल गई	जब कि वह	हड्डियां	कौन ज़िन्दा करेगा	कहने लगा	अपनी पैदाइश	और भूल गया

اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	79	जानने वाला	पैदा करना	हर तरह	और वह	पहली बार	उसे पैदा किया

الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ

वह जिस ने	क्या नहीं	80	सुलगाते हो	उस से	तुम	पस अब	आग	सब्ज़	दरख़्त

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ بَلٰي ۤ وَهُوَ وقف غفران ١٢

और वह	हाँ	उन जैसा	वह पैदा करे	कि	पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया

الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

82	तो वह हो जाती है	हो जा	उस को	वह कहता है	कि	वह इरादा करे किसी शै का	जब	उस का काम	इस के सिवा नहीं	81	दाना	बड़ा पैदा करने वाला

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع ١٦

83	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	हर शै	बादशाहत	उस के हाथ में	वह जिस	सो पाक है

آیاتُها ١٨٢ ❀ سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ (٣٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 — (37) सूरतुस साफ़्फ़ात — सफ़ बांधने वाले — आयात 182

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾ المنزل ٦

3	ज़िक्र (क़ुरआन)	फिर तिलावत करने वाले	2	झिड़क कर	फिर डांटने वाले	1	परा जमा कर	क़सम सफ़ बान्धने वाले

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी क़ुदरत से बनाईं, उन से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। (71) और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी हैं और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। (72) और उन में उन के लिए (बहुत से) फ़ाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? (73) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के सिवा और माबूद (इस ख़याले बातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। (74) वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुजरिम) लशकर (की शक्ल में) हाज़िर किए जाएंगे। (75) पस आप (स) को उनकी बात मग़मूम न करे। बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (76) क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। (77) और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गई होंगी। (78) आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। (79) जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। (80) वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हाँ (क्यों नहीं)! वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। (81) उस का काम उस के सिवा नहीं कि वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। (82) सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की बादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (83)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिश्तों) की। (1) फिर झिड़क कर डांटने वालों की। (2) फिर क़ुरआन तिलावत करने वालों की। (3)

إِنَّ إِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝٤ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

और रब	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	4	अलबत्ता एक	तुम्हारा माबूद	बेशक

الْمَشَارِقِ ۝٥ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ٱلْكَوَاكِبِ ۝٦ وَحِفْظًا

और महफ़ूज़ किया	6	सितारे	ज़ीनत से	आस्माने दुनिया	बेशक हम ने मुज़ैयन किया	5	मश्रिक़ों

مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧ لَا يَسَّمَّعُوْنَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

और मारे जाते हैं	मलाए आला	तरफ़	कान नहीं लगा सकते	7	सरकश	हर शैतान	से

مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝٨ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝٩ إِلَّا مَنْ خَطِفَ

ले भागा	जो	सिवाए	9	अ़ज़ाबे दाइमी	और उन के लिए	भगाने को	8	हर तरफ़	से

الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ

या	ज़ियादा मुश्किल पैदा करना	क्या उन	पस उन से पूछें	10	एक अंगारा दहकता हुआ	तो उस के पीछे लगा	उचक कर

مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝١٢

12	और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं	आप (स) ने तअ़ज्जुब किया	बल्कि	11	मिट्टी चिपकती हुई	से	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हम ने पैदा किया	जो

وَإِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝١٣ وَإِذَا رَأَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝١٤ وَقَالُوْا إِنْ

नहीं	और उन्हों ने कहा	14	वह हँसी में उड़ा देते हैं	वह देखते हैं कोई निशानी	और जब	13	वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते	नसीहत की जाए	और जब

هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝١٦

16	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हम हो गए	हम मर गए	क्या जब	15	जादू खुला	मगर-सिर्फ़	यह

أَوَ اٰبَاؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ۝١٧ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ۝١٨ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ

ललकार	पस इस के सिवा नहीं वह	18	ज़लील ओ ख़्वार	और तुम	हाँ	फ़रमा दें	17	हमारे बाप दादा पहले	क्या

وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝١٩ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝٢٠ هٰذَا

यह	20	बदले का दिन	यह	हाए हमारी ख़राबी	और वह कहेंगे	19	देखने लगेंगे	वह	पस नागहां	एक

ع ٢١ ٥
يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢١ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	तुम जमा करो	21	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जिस	फ़ैसले का दिन

وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝٢٢ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ إِلٰى صِرَاطِ

रास्ता	तरफ़	पस तुम उन को दिखाओ	अल्लाह के सिवा	22	वह परस्तिश करते थे	और जिस	और उन के जोड़े (साथी)

الربع
الْجَحِيْمِ ۝٢٣ وَقِفُوْهُمْ إِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ۝٢٤ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝٢٥

25	तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते	क्या हुआ तुम्हें	24	उन से पुर्सिश होगी	बेशक वह	और ठहराओ उन को	23	जहन्नम

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝٢٦ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاءَلُوْنَ ۝٢٧

27	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर दूसरे की तरफ़	उन में से बाज़ (एक)	और रुख़ करेगा	26	सर झुकाए फ़रमांबरदार	आज	बल्कि वह

قَالُوْا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝٢٨ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٢٩

29	ईमान लाने वाले	तुम न थे	बल्कि	वह कहेंगे	28	दाएं तरफ़ से	तुम हम पर आए थे	बेशक तुम	वह कहेंगे

बेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। (4) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, और परवरदिगार है मश्रिक़ों (मुक़ामाते तुलूअ़) का। (5) बेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6) और हर सरकश शैतान से महफ़ूज़ किया। (7) और मलाए आला (ऊपर की मज्लिस) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते हैं। (8) भगाने को और उन के लिए दाइमी अ़ज़ाब है। (9) सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा तो उस के पीछे एक दहकता हुआ अंगारा लगा। (10) पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन का पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है या जो (मख़्लूक़) हम ने पैदा की? बेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11) बल्कि आप ने (उन की हालत पर) तअ़ज्जुब किया और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12) और जब उन्हें नसीहत की जाए तो वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (13) और जब कोई निशानी देखते हैं तो वह हँसी में उड़ा देते हैं। (14) और उन्हों ने कहा यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (15) क्या जब हम मर गए और हम मिट्टी और हड्डियां हो गए? क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (16) क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17) आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम ज़लील ओ ख़्वार होगे। (18) पस इस के सिवा नहीं कि वह एक ललकार होगी, पस नागहां वह देखने लगेंगे। (19) और वह कहेंगे, हाए हमारी ख़राबी! यह बदले का दिन है। (20) यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (21) तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के साथियों को और जिस की वह परस्तिश करते थे। (22) अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को जहन्नम का रास्ता दिखाओ। (23) और उन को ठहराओ, बेशक उन से पुर्सिश होगी। (24) तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमांबरदार (अपने आप को पकड़वाते) हैं। (26) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (27) वह कहेंगे बेशक तुम हम पर दाएं तरफ़ से (बड़े ज़ोर से) आते थे। (28) वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान लाने वाले न थे। (29)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

और न	था	हमारा	तुम पर	कोई ज़ोर	बल्कि	तुम थे	एक क़ौम	सरकश	30	पस साबित हो गई	हम पर

قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ

बात	हमारा रब	बेशक हम	अलबत्ता चखने वाले	31	पस हम ने बहकाया तुम्हें	बेशक हम थे	गुमराह	32	पस बेशक वह

يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

उस दिन	अज़ाब में	मुश्तरिक (शरीक)	33	बेशक हम	इसी तरह	करते हैं	मुजरिमों के साथ	34

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

बेशक वह	वह थे	जब	कहा जाता	उन को	नहीं कोई माबूद	अल्लाह के सिवा	वह तकब्बुर करते थे	35	और वह कहते हैं

اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ

क्या हम	छोड़ देने वाले	अपने माबूद	एक शायर की ख़ातिर	दीवाना	36	बल्कि	वह आए	हक़ के साथ	और तस्दीक़ की

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

रसूलों की	37	बेशक तुम	ज़रूर चखने वाले	अज़ाब	दर्दनाक	38	और तुम्हें बदला न दिया जाएगा	मगर जो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

तुम करते थे	39	मगर	अल्लाह के बन्दे	ख़ास किए हुए	40	यही लोग	उन के लिए

رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى

रिज़्क़ मालूम	41	मेवे	और वह	एज़ाज़ वाले होंगे	42	में	नेमत के बाग़ात	43	पर

سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

तख़्त आमने सामने (जमा)	44	दौरा होगा	उन पर- उन के आगे	जाम	से- का	बहता हुआ शराब	45	सफ़ेद	लज़्ज़त

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

पीने वालों के लिए	46	न उस में	ख़राबी (दर्द सर)	और न वह	उस से	बहकी बातें करेंगे	47	और उन के पास

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

नीची निगाहों वालियां	बड़ी आँखों वालियां	48	गोया वह	अंडे	पोशीदा रखे हुए	49	पस रुख़ करेगा	उन में से बाज़ (एक)

عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾

बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	बाहम सवाल करते हुए	50	कहेगा	एक कहने वाला	उन में से	बेशक मैं	था	मेरा	एक हमनशीन	51

يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

वह कहता था	क्या तू	से	सच्चे जानने वाले	52	क्या जब	हम मर गए	और हो गए	मिट्टी	और हड्डियां

ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ

क्या हम	अलबत्ता बदला दिए जाएंगे	53	वह कहने लगा	क्या	तुम	झांकने वाले हो	54	तो वह झांकेगा

فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

तो उसे देखेगा	में	दरमियान	दोज़ख़	55	वह कहेगा	अल्लाह की क़सम	तो क़रीब था	कि तू मुझे हलाक कर डाले	56

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था,
बल्कि तुम एक सरकश क़ौम थे। (30)
पस हम पर हमारे रब की बात
साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता
(मज़ा) चखने वाले हैं। (31)
पस हम ने तुम्हें बहकाया, बेशक
हम (ख़ुद) गुमराह थे। (32)
पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में
(भी) शरीक रहेंगे। (33)
बेशक हम इसी तरह करते हैं
मुजरिमों के साथ। (34)
बेशक जब उन से कहा जाता था कि
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं
(तो) वह तकब्बुर करते थे। (35)
और वह कहते हैं: क्या हम अपने
माबूदों को छोड़ दें? एक शायर
दीवाने की ख़ातिर। (36)
बल्कि वह (स) हक़ के साथ आए
हैं और वह (स) तस्दीक़ करते हैं
रसूलों की। (37)
बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर
चखने वाले हो। (38)
और तुम्हें बदला न दिया जाएगा
मगर (उस के मुताबिक़) जो तुम
करते थे। (39)
(हाँ) मगर अल्लाह के ख़ास किए
हुए (चुने हुए) बन्दे। (40)
उन के लिए रिज़्क़ मालूम (मुक़र्रर)
है। (41)
(यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले
होंगे। (42)
नेमत के बाग़ात में। (43)
तख़्तों पर आमने सामने। (44)
दौरा होगा उन के आगे बहते हुए
(साफ़) मश्रूब के जाम का। (45)
सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए
लज़्ज़त (देने वाला)। (46)
न उस में दर्देसर होगा और न वह उस
से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47)
और उन के पास होंगी नीची निगाहों
वालियां, बड़ी बड़ी आँखों वालियां। (48)
गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49)
फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम
सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (50)
उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक
(दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51)
वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत
को) सच मानने वालों में से है? (52)
क्या जब हम मर गए और हम
हो गए मिट्टी और हड्डियां, क्या
हमें बदला दिया जाएगा? (53)
वह कहेगा क्या तुम झांकने वाले हो
(दोज़ख़ी को झाँक कर देख सकते
हो?) (54)
तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा
दोज़ख़ के दरमियान में। (55)
वह कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब
था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَلَوۡ لَا نِعۡمَةُ رَبِّىۡ لَـكُنۡتُ مِنَ الۡمُحۡضَرِيۡنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحۡنُ

क्या पस नहीं हम	57	हाज़िर किए जाने वाले	से	तो मैं ज़रूर होता	मेरा रब	नेमत	और अगर न

بِمَيِّتِيۡنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوۡتَتَـنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُعَذَّبِيۡنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ

बेशक	59	अज़ाब दिए जाने वालों में से	हम	और नहीं	पहली	हमारी मौत	सिवाए	58	मरने वालों में से

هٰذَا لَهُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثۡلِ هٰذَا فَلۡيَعۡمَلِ الۡعٰمِلُوۡنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

क्या यह	61	अमल करने वाले	पस चाहिए ज़रूर अमल करें	इस जैसी (नेमत) के लिए	60	कामयाबी अज़ीम	अलबत्ता वह	यह

خَيۡرٌ نُّزُلًا اَمۡ شَجَرَةُ الزَّقُّوۡمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهَا فِتۡنَةً لِّلظّٰلِمِيۡنَ ﴿٦٣﴾

63	ज़ालिमों के लिए	एक आज़माइश	हम ने उस को बनाया	बेशक हम	62	थोहर का दरख़्त	या	ज़ियाफ़त	बेहतर

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخۡرُجُ فِىۡۤ اَصۡلِ الۡجَحِيۡمِ ﴿٦٤﴾ طَلۡعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوۡسُ

सर (जमा)	गोया कि वह	उस का ख़ोशा	64	जहन्नम	जड़	में	वह निकलता है	एक दरख़्त	बेशक वह

الشَّيٰطِيۡنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمۡ لَاٰكِلُوۡنَ مِنۡهَا فَمَالِـُٔوۡنَ مِنۡهَا الۡبُطُوۡنَ ﴿٦٦﴾

66	पेट (जमा)	उस से	सो भरने वाले	उस से	खाने वाले हैं	पस बेशक वह	65	शैतानों

ثُمَّ اِنَّ لَهُمۡ عَلَيۡهَا لَشَوۡبًا مِّنۡ حَمِيۡمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرۡجِعَهُمۡ لَاِ۟لَى

अलबत्ता तरफ़	उन की वापसी	बेशक	फिर	67	खौलता हुआ पानी	से	मिला मिला कर	उस पर	उन के लिए	बेशक	फिर

الۡجَحِيۡمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمۡ اَلۡفَوۡا اٰبَآءَهُمۡ ضَآلِّيۡنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمۡ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ

उन के नक़्शे क़दम पर	सो वह	69	गुमराह (जमा)	अपने बाप दादा	उन्हों ने पाया	बेशक वह	68	जहन्नम

يُهۡرَعُوۡنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدۡ ضَلَّ قَبۡلَهُمۡ اَكۡثَرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٧١﴾

71	अगलों में से अक्सर	उन से पहले	और तहक़ीक़ गुमराह हुए	70	दौड़ते जाते थे

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا فِيۡهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखें	72	डराने वाले	उन में	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

ع ٢ ٥٣ ٦
الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدۡ نَادٰٮنَا نُوۡحٌ

नूह (अ)	और तहक़ीक़ हमें पुकारा	74	ख़ास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	73	जिन्हें डराया गया

فَلَنِعۡمَ الۡمُجِيۡبُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيۡنٰهُ وَاَهۡلَهٗ مِنَ الۡكَرۡبِ الۡعَظِيۡمِ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	मुसीबत	से	और उस के घर वाले	और हम ने नजात दी उसे	75	दुआ कुबूल करने वाले	सो हम अलबत्ता खूब

وَجَعَلۡنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الۡبٰقِيۡنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكۡنَا عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿٧٨﴾

78	बाद में आने वाले	में	उस पर- उस का	और हम ने छोड़ा	77	बाक़ी रहने वाली	वह	उस की औलाद	और हम ने किया

سَلٰمٌ عَلٰى نُوۡحٍ فِى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٨٠﴾

80	नेकोकारों	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	बेशक हम	79	सारे जहानों में	नूह (अ)	पर	सलाम हो

اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغۡرَقۡنَا الۡاٰخَرِيۡنَ ﴿٨٢﴾

82	दूसरे	हम ने ग़र्क़ कर दिया	फिर	81	मोमिन (जमा)	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं ज़रूर (अज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57)
तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58)
सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अज़ाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59)
बेशक यही है अज़ीम कामयाबी। (60)
पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि ज़रूर अमल करें अमल करने वाले। (61)
क्या यह बेहतर ज़ियाफ़त है या थोहर का दरख़्त? (62)
बेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63)
बेशक वह एक दरख़्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64)
उस का ख़ोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) हैं। (65)
बेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66)
फिर बेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67)
फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68)
बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69)
सो वह उन के नक़्शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70)
और तहक़ीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के) अगलों में से अक्सर। (71)
तहक़ीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72)
सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73)
मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे (बन्दगाने ख़ास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74)
और तहक़ीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम खूब दुआ कुबूल करने वाले हैं। (75)
और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76)
और हम ने किया उस की औलाद को बाक़ी रहने वाली। (77)
और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78)
नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81)
फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (82)

وقف لازم

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

84	साफ़	दिल के साथ	अपना रब	जब वह आया	83	अलबत्ता इब्राहीम (अ)	उस के तरीक़े पर चलने वाले	से	और बेशक

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	माबूद	क्या झूट मूट के	85	तुम परस्तिश करते हो	किस चीज़	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	जब उस ने कहा

تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

88	सितारे	में - को	एक नज़र	फिर उस ने देखा	87	तमाम जहानों	रब के बारे में	तुम्हारा गुमान	सो क्या	86	तुम चाहते हो

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ

उन के माबूदों	तरफ़ - में	फिर पोशीदा घुस गया	90	पीठ फेर कर	उस से	पस वह फिर गए	89	बीमार हूँ	बेशक मैं	तो उस ने कहा

فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

उन पर	फिर जा पड़ा वह	92	तुम बोलते नहीं	क्या हुआ तुम्हें?	91	क्या तुम नहीं खाते	फिर कहने लगा

ضَرْبًاۢ بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ

क्या तुम परस्तिश करते हो	उस ने फ़रमाया	94	दौड़ते हुए	उस की तरफ़	फिर वह मुतवज्जुह हुए	93	अपने दाएं हाथ (क़ुदरत) से	मारता हुआ

مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

एक इमारत	उस के लिए	बनाओ	उन्हों ने कहा	96	तुम करते हो	और जो	उस ने पैदा किया तुम्हें	हालांकि अल्लाह	95	जो तुम तराशते हो

فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	नीचा	तो हम ने कर दिया उन्हें	दाओ	उस पर	फिर उन्हों ने चाहा	97	आग में	फिर डाल दो उसे

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ

से	मुझे अ़ता फ़रमा	ऐ मेरे रब	99	अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा	अपने रब की तरफ़	जाने वाला हूँ	बेशक मैं	और उस (इब्राहीम) ने कहा

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ

दौड़ने	उस के साथ	वह पहुँचा	फिर जब	101	बुर्दबार	एक लड़का	पस बशारत दी हम ने उसे	100	नेक सालेह (जमा)

قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى

तेरी राए	क्या	अब तू देख	तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ	कि मैं	ख़्वाब	में	बेशक मैं देखता हूँ	ए मेरे बेटे	उस ने कहा

قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ

से	अल्लाह ने चाहा	अगर	आप जल्द ही मुझे पाएंगे	जो हुक्म आप को किया जाता है	आप करें	ऐ मेरे अब्बा जान	उस ने कहा

الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104	ऐ इब्राहीम (अ)	कि	और हम ने उस को पुकारा	103	पेशानी के बल	(बाप ने बेटे को) लिटाया	दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया	पस जब	102	सब्र करने वाले

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	105	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	ख़्वाब	तहक़ीक़ तू ने सच कर दिखाया

لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107	बड़ा	एक ज़बीहा	और हम ने उस का फ़िदया दिया	106	खुली	आज़माइश	अलबत्ता वह

और बेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीक़े पर चलने वालों में से थे। (83) जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84) (याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा: तुम किस (वाहियात) चीज़ की परस्तिश करते हो? (85) क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के माबूद चाहते हो? (86) सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87) फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88) तो उस ने कहा बेशक मैं बीमार हूँ। (89) पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90) फिर वह उन के माबूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौरे तमस्ख़ुर) कहने लगा: क्या तुम नहीं खाते? (91) क्या हुआ तुम्हें? तमु बोलते नहीं? (92) फिर वह पूरी कुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93) फिर वह (बुत परस्त) मुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94) उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परस्तिश करते हो? जो तुम खुद तराशते हो। (95) हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96) उन्हों ने (एक दूसरे को) कहा: उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97) फिर उन्हों ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98) और इब्राहीम (अ) ने कहा: मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझे अ़ता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100) पस हम ने उसे एक बुर्दबार लड़के की बशारत दी। (101) फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! बेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ! अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सब्र करने वालों में से। (102) पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103) और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104) तहक़ीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105) बेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इम्तिहान था)। (106) और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (क़ुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	109	इब्राहीम (अ)	पर	सलाम	108	बाद में आने वालों में	उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

और हम ने उसे बशारत दी	111	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह	110	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ

इस्हाक़ (अ)	और पर	उस पर- उस को	और हम ने बरकत नाज़िल की	112	सालेहीन	से	एक नबी	इस्हाक़ (अ) की

ع ٣ ٣٩ ٧

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और हम ने एहसान किया	और तहक़ीक़ अलबत्ता	113	सरीह	अपनी जान पर	और ज़ुल्म करने वाला	नेकोकार	उन दोनों की औलाद	और से- में

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

115	बड़ा	ग़म	से	और उन की क़ौम	और उन दोनों को नजात दी	114	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

117	वाज़ेह	किताब	और हम ने उन दोनों को दी	116	ग़ालिब (जमा)	वही	तो वह रहे	और हम ने मदद की उन की

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर (उन का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा	118	सीधा	रास्ता	और हम ने उन दोनों को हिदायत दी

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम जज़ा देते हैं	बेशक हम इसी तरह	120	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर	सलाम	119	बाद में आने वालों में

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

इल्यास (अ)	और बेशक	122	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह दोनों	121	नेकोकारों

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

क्या तुम पुकारते हो	124	क्या तुम नहीं डरते	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	123	रसूलों	अलबत्ता- से

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	अल्लाह	125	पैदा करने वाला (जमा)	सब से बेहतर	और तुम छोड़ देते हो	बअ़ल

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

अल्लाह के बन्दे	सिवाए	127	वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे	तो बेशक वह	पस उन्हों ने झुटलाया	126	पहले

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى

पर	सलाम	129	बाद में आने वालों में	और हम ने बाक़ी रखा उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	128	मुख़्लिस (जमा)

اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक वह	131	नेकोकारों	जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	130	इलयासीन (इल्यास अ)

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133	रसूल (जमा)	अलबत्ता- से	लूत (अ)	और बेशक	132	मोमिनीन	हमारे बन्दे

और हम ने उसका ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (108) सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109) इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111) और हम ने उसे बशारत दी इस्हाक़ (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112) और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इस्हाक़ (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाले (भी)। (113) और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114) और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को बड़े ग़म (फ़िरऔन के मज़ालिम) से नजात दी। (115) और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116) और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117) और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118) और हम ने उन दोनों का ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (119) सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120) बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122) और बेशक इल्यास (अ) रसूलों में से थे। (123) (याद करो) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124) क्या तुम बअ़ल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125) (यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126) पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो बेशक वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127) अल्लाह के मुख़्लिस (ख़ास बन्दों) के सिवा। (128) और हम ने उस का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा बाद में आने वालों में। (129) सलाम हो इल्यास (अ) पर। (130) बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132) और बेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे और उस के सब घर वालों को। (134) पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135) फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136) और बेशक तुम सुब्ह होते और रात में उन पर (उन की बस्तियों से) गुज़रते हो। (137) तो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते? (138) और बेशक यूनुस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139) जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए। (140) तो उन्हों ने कुरआ़ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141) फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142) फिर अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते। (143) तो वह उस के पेट में क़ियामत के दिन तक रहते। (144) फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह बीमार थे। (145) और हम ने उगाया उस पर एक बेलदार दरख़्त। (146) और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147) सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक के लिए फ़ाइदा उठाने दिया। (148) पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149) क्या हम ने फ़रिश्तों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150) याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151) (कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152) क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153) तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (154) तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155) क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156) तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157) और उन्हों ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहक़ीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अ़ज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़्तार) किए जाएंगे। (158) अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ

जब	हम ने उसे नजात दी	और उस के घर वाले	सब	134	सिवाए	एक बुढ़िया	में	पीछे रह जाने वाले	135	फिर

دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّيْلِ

हम ने हलाक किया	औरों को	136	और बेशक तुम	अलबत्ता गुज़रते हो	उन पर	सुबह करते हुए (सुबह होते)	137	और रात में

ع ٢٥ / ٨

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى

तो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते	138	और बेशक	यूनुस (अ)	अलबत्ता-से	रसूलों	139	जब	भाग गए वह	तरफ़

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾

कश्ती	भरी हुई	140	तो कुरआ़ डाला	सो वह हुआ	से	धकेले गए	141

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾

फिर उसे निगल लिया	मछली	और वह	मलामत करने वाला	142	फिर अगर न	यह कि वह	होता	से	तस्बीह करने वाले	143

النصف

لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

अलबत्ता रहता	उस के पेट में	तक	दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हश्र)	144	फिर हम ने उसे फेंक दिया	चटयल मैदान में	और वह

سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى

बीमार	145	और हम ने उगाया	उस पर	दरख़्त	से	बेलदार	146	और हम ने भेजा उस को	तरफ़

مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

एक लाख	या	उस से ज़ियादा	147	सो वह ईमान लाए	तो हम ने उन्हें फ़ाइदा उठाने दिया	एक मुद्दत तक	148

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ

पस पूछें उन से	क्या तेरे रब के लिए	बेटियां	और उन के लिए	बेटे	149	क्या	हम ने पैदा किया	फ़रिश्ते

اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

औरत	और वह	देख रहे थे	150	याद रखो	बेशक वह	से	अपनी बुहतान तराज़ी	अलबत्ता कहते हैं	151

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

अल्लाह साहिबे औलाद	और बेशक वह	झूटे	152	क्या उस ने पसंद किया	बेटियां	बेटों पर	153

مَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

तुम्हें क्या हो गया	कैसा	तुम फ़ैसला करते हो	154	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	155	क्या	तुम्हारे पास	कोई सनद

مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ

खुली	156	तो ले आओ	अपनी किताब	अगर	तुम हो	सच्चे	157	और उन्हों ने ठहराया	उस के दरमियान

وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۭ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

और दरमियान	जिन्नात	एक रिश्ता	और तहक़ीक़ जान लिया	जिन्नात	बेशक वह	हाज़िर किए जाएंगे	158

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾

पाक है अल्लाह	उस से जो	वह बयान करते हैं	159	मगर	अल्लाह के बन्दे	ख़ास किए हुए (चुने हुए)	160

فَاِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُوۡنَ ۝١٦١ مَاۤ اَنۡتُمۡ عَلَيۡهِ بِفٰتِنِيۡنَ ۝١٦٢ اِلَّا مَنۡ هُوَ

जो-वह	सिवाए	162	उस के ख़िलाफ़ बहकाने वाले	नहीं हो तुम	161	तुम परस्तिश करते हो	और जो	तो बेशक तुम

صَالِ الۡجَحِيۡمِ ۝١٦٣ وَمَا مِنَّاۤ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعۡلُوۡمٌ ۝١٦٤ وَّاِنَّا لَنَحۡنُ

अलबत्ता हम	और बेशक हम	164	एक मुअय्यन दर्जा	मगर उस के लिए	हम में से	और नहीं	163	जहन्नम	जाने वाला

الصَّآفُّوۡنَ ۝١٦٥ وَاِنَّا لَنَحۡنُ الۡمُسَبِّحُوۡنَ ۝١٦٦ وَاِنۡ كَانُوۡا لَيَقُوۡلُوۡنَ ۝١٦٧

167	कहा करते	वह थे	और बेशक	166	तस्बीह करने वाले	अलबत्ता हम	और बेशक हम	165	सफ़ बस्ता होने वाले

لَوۡ اَنَّ عِنۡدَنَا ذِكۡرًا مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝١٦٨ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ۝١٦٩

169	ख़ास किए (मुंतख़िब)	अल्लाह के बन्दे	ज़रूर हम होते	168	पहले लोग	से	कोई नसीहत हमारे पास	अगर होती

فَكَفَرُوۡا بِهٖ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ۝١٧٠ وَلَقَدۡ سَبَقَتۡ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا

अपने बन्दों के लिए	हमारा वादा	और पहले सादिर हो चुका है	170	वह जान लेंगे	तो अनक़रीब	उस का	फिर उन्हों ने इन्कार किया

الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۝١٧١ اِنَّهُمۡ لَهُمُ الۡمَنۡصُوۡرُوۡنَ ۝١٧٢ وَاِنَّ جُنۡدَنَا لَهُمُ

अलबत्ता वही	हमारा लशकर	और बेशक	172	फ़तहमन्द	अलबत्ता वही	बेशक वह	171	रसूलों

الۡغٰلِبُوۡنَ ۝١٧٣ فَتَوَلَّ عَنۡهُمۡ حَتّٰى حِيۡنٍ ۝١٧٤ وَّاَبۡصِرۡهُمۡ فَسَوۡفَ يُبۡصِرُوۡنَ ۝١٧٥

175	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और उन्हें देखते रहें	174	एक वक़्त तक	तक	उन से	पस एराज़ करें	173	ग़ालिब (जमा)

اَفَبِعَذَابِنَا يَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝١٧٦ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمۡ فَسَآءَ صَبَاحُ

सुबह	तो बुरी	उन के मैदान में	वह नाज़िल होगा	तो जब	176	वह जल्दी कर रहे हैं	तो क्या हमारे अ़ज़ाब के लिए

الۡمُنۡذَرِيۡنَ ۝١٧٧ وَتَوَلَّ عَنۡهُمۡ حَتّٰى حِيۡنٍ ۝١٧٨ وَّاَبۡصِرۡ فَسَوۡفَ يُبۡصِرُوۡنَ ۝١٧٩

179	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और देखते रहें	178	एक मुद्दत	तक	उन से	और एराज़ करें	177	जिन को डराया जा चुका है

سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۝١٨٠ وَسَلٰمٌ عَلَى

पर	और सलाम	180	वह बयान करते हैं	उस से जो	इज़्ज़त वाला रब	तुम्हारा रब	पाक है

ع ٥ ٤٩ ٩ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۝١٨١ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝١٨٢

182	तमाम जहानों का रब	और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	181	रसूलों

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٣٨) سُوۡرَةُ صٓ ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 — (38) सूरह साद — आयात 88

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِ ۝١ بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝٢

2	और मुख़ालिफ़त	घमंड में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बल्कि	1	नसीहत देने वाला	क़ुरआन की क़सम	साद

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ۝٣

3	छुटकारा	वक़्त	और न था	तो वह फ़र्याद करने लगे	उम्मतें	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही

तो बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के ख़िलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहन्नम में जाने वाला है। (163) और (फ़रिश्तों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और बेशक हम ही सफ़ बस्ता रहने वाले हैं। (165) और बेशक हम ही तस्बीह करने वाले हैं। (166) और बेशक वह (कुफ़्फ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतख़िब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्हों ने उस का इन्कार किया तो वह अनक़रीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) बेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और बेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक़्त तक (थोड़ा अ़र्सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अ़नक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अ़ज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुद्दत तक (थोड़ा अ़र्सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अ़नक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इज़्ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

साद। नसीहत देने वाले क़ुरआन की क़सम! (1) (आप की दावत बर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दीं तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۡ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

यह जादूगर	काफ़िर (जमा)	और कहा	उन में से	एक डराने वाला	उन के पास आया	कि	और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया

كَذَّابٌ ۝٤ ۚ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥

5	बड़ी अ़जीब	एक शै (बात)	बेशक यह	एक	माबूद	सारे माबूदों	क्या उस ने बना दिया	4	झूटा

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚۖ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	अपने माबूदों पर	और जमे रहो	चलो	कि	उन के	सरदार	और चल पड़े

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝٦ ۚ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ اِنْ هٰذَآ اِلَّا

मगर-महज़	यह	नहीं	पिछला	मज़हब	में	ऐसी	हम ने नहीं सुना	6	इरादा की हुई (मतलब की)	कोई शै (बात)

اخْتِلَاقٌ ۝٧ ۚۖ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ

शक में	वह	बल्कि	हम में से	ज़िक्र (कलाम)	उस पर	क्या नाज़िल किया गया	7	मन घड़त

مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ ۭ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىِٕنُ

ख़ज़ाने	उन के पास	क्या	8	मेरा अ़ज़ाब	चखा उन्हों ने	नहीं	बल्कि	मेरी नसीहत से

رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩ ۚ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	क्या उन के लिए	9	बहुत अ़ता करने वाला	ग़ालिब	तुम्हारे रब की रहमत

وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ

शिकस्त ख़ुर्दा	यहां	जो	एक लशकर	10	रस्सियों में (रस्सियां तान कर)	तो वह चढ़ जाएं	और जो उन दोनों के दरमियान

مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢ ۙ

12	कीलों वाला	और फ़िरऔन	और आद	क़ौमे नूह	उन से पहले	झुटलाया	11	गिरोहों में से

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۭ اُولٰٓىِٕكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ

नहीं	13	गिरोह	वह थे	और अयका वाले	और क़ौमे लूत	और समूद

كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ ۧ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ ١ ع ١٤ ١٠

यह लोग	और इन्तिज़ार नहीं करते	14	अ़ज़ाब	पस आ पड़ा	रसूलों	झुटलाया	मगर	सब

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَقَالُوْا رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	और उन्हों ने कहा	15	ढील	कोई	जिस के लिए नहीं	एक	चिंघाड़	मगर

عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦ اِصْبِرْ عَلٰى

उस पर	आप (स) सब्र करें	16	रोज़े हिसाब	पहले	हमारा हिस्सा	हमें	जल्दी दे

مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝١٧

17	ख़ूब रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	कुव्वत वाला	दाऊद (अ)	हमारे बन्दे	और याद करें	जो वह कहते हैं

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ۝١٨ ۙ

18	और सुबह के वक़्त	शाम के वक़्त	वह तस्बीह करते थे	उस के साथ	पहाड़	बेशक हम ने मुसख़्ख़र कर दिए

और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहाः यह जादूगर है, झूटा है। **(4)**
क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, बेशक यह तो एक बड़ी अ़जीब बात है। **(5)**
और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, बेशक यह सोची समझी स्कीम है। **(6)**
हम ने पिछले मज़हब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। **(7)**
क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया?
(हाँ) बल्कि वह शक में हैं मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्हों ने मेरा अ़ज़ाब नहीं चखा। **(8)**
क्या तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अ़ता करने वाला है। **(9)**
क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएं रस्सियां तान कर। **(10)**
शिकस्त ख़ुर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। **(11)**
उन से पहले झुटलाया क़ौमे नूह (अ) ने और आ़द और मीख़ों वाले फ़िरऔन ने। **(12)**
और समूद और क़ौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। **(13)**
उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अ़ज़ाब आ पड़ा। **(14)**
और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। **(15)**
और उन्हों ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रबः हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले। **(16)**
जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, बेशक वह ख़ूब रुजूअ़ करने वाला था। **(17)**
बेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्ख़र कर दिए थे, वह सुबह ओ शाम तस्बीह करते थे। **(18)**

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ

हिक्मत	और हम ने उस को दी	उस की बादशाहत	और हम ने मज़बूत की	19	रुजूअ़ करने वाले	सब उस की तरफ़	इकट्ठे किए हुए	और परिन्दे

وقف لازم

وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ ۙ

21	मेहराब	वह दीवार फांद कर आए	जब	ख़बर झगड़ने वाले	आप के पास आई (पहुँची)	और क्या	20	ख़िताब	और फ़ैसला कुन

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى

ज़्यादती की	हम दो झगड़ने वाले	ख़ौफ़ न खाओ	उन्हों ने कहा	उन से	तो वह घबराया	दाऊद (अ)	पर-पास	जब वह दाख़िल हुए

بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ اِلٰى

तरफ़	और हमारी रहनुमाई करें	और ज़ियादती (बेइन्साफ़ी न) करें	हक़ के साथ	हमारे दरमियान	तो आप फ़ैसला कर दें	दूसरे पर	हम में से एक

سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ هٰذَاۤ اَخِىْ ۗ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِىَ

और मेरे पास	दुंबियां	निन्यानवे (99)	उस के पास	मेरा भाई	बेशक यह	22	रास्ता	सीधा

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۗ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ

(दाऊद अ ने) कहा	23	गुफ़्तगू में	और उस ने मुझे दबाया	वह मेरे हवाले कर दे	पस उस ने कहा	एक	दुंबी

لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

भागीदार	से	अक्सर	और बेशक	अपनी दुंबियां	तरफ़-साथ	तेरी दुंबी	मांगने से	यक़ीनन उस ने ज़ुल्म किया

لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए दुरुस्त	जो ईमान लाए	सिवाए	बाज़	पर	उन में से बाज़	ज़ियादती किया करते हैं

وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ؕ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا

झुक कर	और गिर गया	अपना रब	तो उस ने मग़्फ़िरत तलब की	हम ने उसे आज़माया है	कि कुछ	दाऊद (अ)	और ख़याल किया	वह-ऐसे	और बहुत कम

السجدة ١٠

وَّاَنَابَ ﴿۲۴﴾ السجدة فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ

और अच्छा	अलबत्ता क़ुर्ब	हमारे पास	उस के लिए	और बेशक	यह	उस की	पस हम ने बख़्श दी	24	और उस ने रुजूअ़ किया

مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ

सो तू फ़ैसला कर	ज़मीन में	नाइब	हम ने तुझे बनाया	बेशक हम ने	ऐ दाऊद (अ)	25	ठिकाना

بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह का रास्ता	से	कि वह तुझे भटका दे	ख़ाहिश	और न पैरवी कर	हक़ के साथ	लोगों के दरमियान

اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا

उन्हों ने भुला दिया	उस पर कि	शदीद	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	भटकते हैं	जो लोग	बेशक

ع ٢ ١٢ ١١

يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾ ع وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ

बातिल	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान	और नहीं पैदा किया हम ने	26	रोज़े हिसाब

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾ ؕ

27	आग	से	उन के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस ख़राबी है	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	गुमान	यह

और इकट्ठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्ख़र थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले थे। (19)
और हम ने उस की बादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फ़ैसला कुन ख़िताब। (20)
और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की ख़बर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए। (21)
जब वह दाख़िल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबरागए। उन लोगों ने कहाः डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फ़ैसला कर दें हक़ के साथ, और बेइन्साफ़ी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22)
बेशक मेरे इस भाई के पास निन्यानवे (99) दुंबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ़्तगू में दबाया है। (23)
दाऊद (अ) ने कहाः सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर ज़ुल्म किया है (कि) अपनी दुंबियों के साथ मिलाले, और बेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने ख़याल किया कि हम ने कुछ उसे आज़माया है तो उस ने अपने रब से मग़्फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिज्दे में) गिर गया। (24)
पस हम ने बख़्श दी उस की यह (लग़्ज़िश), और बेशक उस के लिए हमारे पास क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (25)
ऐ दाऊद (अ)! बेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइब, सो तू लोगों के दरमियान हक़ (इंसाफ़) के साथ फ़ैसला कर और (अपनी) ख़ाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अ़ज़ाब है इस लिए कि उन्हों ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26)
और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है बातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्हों ने कुफ़्र किया, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	क्या हम कर देंगे

اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ

मुबारक	आप (स) की तरफ़	हम ने उसे नाज़िल किया	एक किताब	28	बदकिरदारों की तरह	परहेज़गारों	हम कर देंगे	क्या

لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ

सुलेमान (अ)	दाऊद (अ) को	और हम ने अ़ता किया	29	अ़क्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उस की आयात	ताकि वह ग़ौर करें

نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ ؕ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ

असील घोड़े	शाम के वक़्त	उस पर- सामने	पेश किए गए	जब	30	रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	बहुत अच्छा बन्दा

الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ ۙ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى

यहां तक कि	अपने रब की याद	से	माल की मुहब्बत	मैं ने दोस्त रखा	बेशक मैं	तो उस ने कहा	31	उम्दा

تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًاۢ بِالسُّوْقِ

पिंडलियों पर	हाथ फेरना	फिर शुरु किया	मेरे सामने	फेर लाओ उन्हें	32	पर्दे में	छुप गए

وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا

एक धड़	उस के तख़्त पर	और हम ने डाला	सुलेमान	और अलबत्ता हम ने आज़माइश की	33	और गर्दनों

ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ

किसी को	न सज़ा वार हो	ऐसी सलतनत	और अ़ता फ़रमा दे मुझे	मुझे बख़्शदे तू	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	34	फिर उस ने रुजूअ़ किया

مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ

उस के हुक्म से	वह चलती थी	हवा	फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए	35	अ़ता फ़रमाने वाला	तू	बेशक तू	मेरे बाद

رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ ۙ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ ۙ وَّاٰخَرِيْنَ

और दूसरे	37	और ग़ोता मारने वाले	इमारत बनाने वाले	तमाम	और देव (जिन्नात)	36	वह पहुँचना चाहता	जहां	नर्मी से

مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ

बग़ैर	रोक रख	या	अब तू एहसान कर	हमारा अ़तिया	यह	38	ज़न्जीरों में	जकड़े हुए

حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ ع ٣ ١٢

हमारा बन्दा	और आप (स) याद करें	40	ठिकाना	और अच्छा	अलबत्ता कुर्ब	हमारे पास	और बेशक उस के लिए	39	हिसाब

اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ وقف لازم

41	और दुख	ईज़ा	शैतान	मुझे पहुँचाया	बेशक मैं	अपना रब	जब उस ने पुकारा	अय्यूब (अ)

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	42	और पीने के लिए	ठंडा	गुस्ल के लिए	यह	अपना पाऊँ	(ज़मीन पर) मार

اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

43	अ़क्ल वालों के लिए	और नसीहत	हमारी (तरफ़) से	रहमत	उन के साथ	और उन जैसे	उस के अहले ख़ाना

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन लोगों की तरह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? **(28)**
हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की ताकि वह उस की आयात पर ग़ौर करें, और ताकि अ़क्ल वाले नसीहत पकड़ें। **(29)**
और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अ़ता किया, बहुत अच्छा बन्दा, बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला था। **(30)**
(वह वक़्त याद करो) जब शाम के वक़्त उस के सामने पेश किए गए असील, उम्दा घोड़े। **(31)**
तो उस ने कहा: बेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े) छुप गए (दूरी के) परदे में। **(32)**
उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। **(33)**
और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आज़माइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया। **(34)**
उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अ़ता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, बेशक तू ही अ़ता करने वाला है। **(35)**
फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती। **(36)**
और तमाम जिन्नात (ताबे कर दिए) इमारत बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले। **(37)**
और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए। **(38)**
यह हमारा अ़तिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। **(39)**
और बेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता कुर्ब और अच्छा ठिकाना है। **(40)**
और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। **(41)**
(हम ने फ़रमाया) ज़मीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) गुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरीं पानी)। **(42)**
और हम ने उस के अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अ़ता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अ़क्ल वालों के लिए नसीहत। **(43)**

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ۗ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۗ

साबिर	हम ने उसे पाया	बेशक हम	और क़सम न तोड़	और उस से मार उस को	झाड़ू	अपने हाथ में	और तू ले

نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याकूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	हमारे बन्दों	और याद करें	44	बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला	अच्छा बन्दा

اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ج

46	घर (आख़िरत का)	याद	ख़ास सिफ़त	हम ने उन्हें मुम्ताज़ किया	बेशक हम	45	और आँखों वाले	हाथों वाले

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ط وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ

इस्माईल (अ)	और याद करें	47	सब से अच्छे	चुने हुए	अलबत्ता- से	हमारे नज़्दीक	और बेशक वह

وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ط هٰذَا ذِكْرٌ ۗ وَاِنَّ

और बेशक	यह एक नसीहत	48	सब से अच्छे लोग	से	और यह तमाम	और ज़ुलकिफ़्ल (अ)	और अलयसअ़ (अ)

لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ لا جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ج

50	दरवाज़े	उन के लिए	खुले हुए	हमेशा रहने के	बाग़ात	49	ठिकाना	अलबत्ता अच्छा	परहेज़गारों के लिए

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

51	और शराब (मशरूबात)	बहुत से	मेवे	उन में	मंगवाएंगे	उन में	तकिया लगाए हुए वह

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

वादा किया जाता है तुम से	जो- जिस	यह	52	हम उम्र	निगाह	नीचे रखने वालियां	और उन के पास

لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ الثلثة اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ ج صلے هٰذَا ۗ وَاِنَّ

और बेशक	यह	54	ख़तम होना	उसके लिए - उस को नहीं	यक़ीनन हमारा रिज़्क़	यह	बेशक	53	रोज़े हिसाब के लिए

لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ لا جَهَنَّمَ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا لا

यह	56	बिछौना	सो बुरा	वह उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	55	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	सरकशों के लिए

فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ لا وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ ط هٰذَا

यह	58	कई क़िस्में	उस की शक्ल की	और उस के अ़लावा	57	और पीप	खौलता हुआ पानी	पस उस को चखो तुम

فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ج لَا مَرْحَبًا ۢ بِهِمْ ط اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا

वह कहेंगे	59	दाख़िल होने वाले जहन्नम में	बेशक वह	उन्हें	न हो कोई फ़राख़ी	तुम्हारे साथ	घुस रहे हैं	एक जमाअ़त

بَلْ اَنْتُمْ قف لَا مَرْحَبًا ۢ بِكُمْ ط اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ج فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

60	ठिकाना	सो बुरा	हमारे लिए	तुम ही यह आगे लाए	बेशक तुम	तुम्हें	कोई मरहबा न हो	बल्कि तुम

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾

61	जहन्नम में	दो चंद	अ़ज़ाब	तू ज़ियादा कर दे	यह	हमारे लिए	जो आगे लाया	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ ط

62	अशरार (बहुत बुरे)	से	हम शुमार करते थे उन्हें	वह लोग	हम नहीं देखते	क्या हुआ हमें	और वह कहेंगे

और अपने हाथ में झाड़ू ले और
तू उस से (अपनी बीवी को) मार,
और क़सम न तोड़, बेशक हम
ने उसे साबिर पाया (और) अच्छा
बन्दा, बेशक अल्लाह की तरफ़
रुजूअ़ करने वाला। (44)
और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ)
और इस्हाक़ (अ) और याकूब (अ)
को याद करें जो हाथों वाले और
आँखों वाले (इल्म ओ अ़क़्ल की
कुव्वतों वाले) थे। (45)
हम ने उन्हें एक ख़ास सिफ़त से
मुम्ताज़ किया (और वह है) याद
आख़िरत के घर की। (46)
और बेशक वह हमारे नज़्दीक चुने हुए
सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)
और आप (स) याद करें इस्माईल (अ)
और अलयसअ़ (अ) और ज़ुलकिफ़्ल (अ)
को, और यह तमाम ही सब से
अच्छे लोगों में से थे। (48)
यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के
लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)
हमेशा रहने के बाग़ात, जिन के
दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)
उन में तकिया लगाए हुए होंगे,
और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से
और मशरूबात। (51)
और उन के पास नीची निगाह
रखने वाली (बा हया) हम उम्र
(औरतें) होंगी। (52)
यह है जिस का तुम से वादा किया
जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)
बेशक यह हमारा रिज़्क़ है, उस
को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)
यह है (जज़ा)। और बेशक सरकशों के
लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)
(यानी) जहन्नम, जिस में वह
दाख़िल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन
की आरामगाह)। (56)
यह खौलता हुआ पानी और पीप है,
पस तुम उस को चखो। (57)
और उस के अ़लावा उस की शक्ल
की कई क़िस्में होंगी। (58)
यह एक जमाअ़त है जो तुम्हारे साथ
(जहन्नम में) दाख़िल हो रही है, उन्हें
कोई फ़राख़ी न हो, बेशक वह जहन्नम
में दाख़िल होने वाले हैं। (59)
वह कहेंगेः बल्कि तुम्हें कोई
फ़राख़ी न हो, बेशक तुम ही हमारे
लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो,
सो बुरा है ठिकाना। (60)
वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे
लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है
तू जहन्नम में (उस के लिए)
अ़ज़ाब दो चन्द कर दे। (61)
और वह कहेंगे हमें क्या हुआ?
हम (दोज़ख़ में) उन लोगों को
नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में
शुमार करते थे। (62)

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई हैं उन से (हमारी) आँखें? (63) बेशक अहले दोज़ख़ का बाहम यह झगड़ना बिलकुल सच है। (64) आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। (65) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़्शने वाला। (66) आप फ़रमा दें यह एक बड़ी ख़बर है। (67) तुम उस से बेपरवाह हो। (68) मुझे कुछ ख़बर न थी आलमे बाला (बुलन्द क़द्र फ़रिश्तों) की जब वह बाहम झगड़ते थे। (69) मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (70) (याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक बशर पैदा करने वाला हूँ। (71) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। (72) पस सब फ़रिश्तों ने इकटठे सिज्दा किया। (73) सिवाए इब्लीस के, उस ने तकब्बुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। (74) (अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकब्बुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? (75) उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। (76) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया: पस यहां से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। (77) और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े क़ियामत तक। (78) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। (79) (अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। (80) उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। (81) उस ने कहा मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूँगा। (82)

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

बिलकुल सच	बेशक यह	63	आँखें	उन से	कज हो गई हैं	या	ठठे में	क्या हम ने उन्हें पकड़ा था

تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ع ٤ ١٣

अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	और नहीं	डराने वाला	कि मैं	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	64	अहले दोज़ख़	बाहम झगड़ना

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	रब	65	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)

الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	मुँह फेरने वाले (बेपरवाह हो)	उस से	तुम	67	एक ख़बर बड़ी	वह-यह	फ़रमादें	66	बड़ा बख़्शने वाला

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۢ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى

नहीं वहि की जाती	69	वह बाहम झगड़ते थे	जब	आलमे बाला की	कुछ ख़बर	मेरे पास (मुझे)	न था

اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰۗئِكَةِ اِنِّىْ

कि मैं	फ़रिश्तों को	तुम्हारा रब	जब कहा	70	साफ़ साफ़	मैं डराने वाला	यह कि	सिवाए	मेरी तरफ़

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِىْ

अपनी रूह	से	उस में	और मैं फूँकूं	मैं दुरुस्त कर दूँ उसे	फिर जब	71	मिट्टी से	एक बशर	पैदा करने वाला

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰۗئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ

सिवाए	73	इकटठे	सब	फ़रिश्ते	पस सिज्दा किया	72	सिज्दा करते हुए	उस के लिए (आगे)	तो तुम गिर पड़ो

اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ

किस ने मना किया तुझे	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	74	काफ़िरों	से	और वह हो गया	उस ने तकब्बुर किया	इब्लीस

اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

से	या तू है	क्या तू ने तकब्बुर किया	अपने हाथों से	मैं ने पैदा किया	उस को जिसे	कि तू सिज्दा करे

الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

और तू ने पैदा किया उसे	आग से	तू ने पैदा किया मुझे	उस से	बेहतर	मैं	उस ने कहा	75	बुलन्द दरजे वाले

مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	77	रांदा-ए-दरगाह	क्योंकि तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने फ़रमाया	76	मिट्टी	से

لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى

तक	पस तू मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	78	रोज़े क़ियामत	तक	मेरी लानत

يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ

दिन	तक	80	मोहलत दिए जाने वाले	से	पस बेशक तू	उस ने फ़रमाया	79	जिस दिन उठाए जाएंगे

الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	सब	मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा	सो तेरी इज़्ज़त की क़सम	उस ने कहा	81	वक़्त मुअय्यन

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾

84	मैं कहता हूँ	और सच	यह हक़ (सच)	उस ने फ़रमाया	83	मुख़्लिस (जमा)	उन में से	सिवाए तेरे बन्दे

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	85	सब	उन से	तेरे पीछे चलें	और उन से जो	तुझ से	जहन्नम	मैं ज़रूर भर दूँगा

مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنْ

नहीं	86	बनावट करने वालों से	मैं	और नहीं	कोई अजर	इस पर	मैं मांगता तुम से	नहीं

ع ٢٤/١٤

هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

88	एक वक़्त	बाद	उस का हाल	और तुम ज़रूर जान लोगे	87	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	यह मगर

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٣٩) سُورَةُ الزُّمَرِ ❀ رُكُوعَاتُهَا ٨

रुकूआत 8	(39) सूरतुज़ ज़ुमर टोलियाँ, गिरोह	आयात 75

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम ने नाज़िल की	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह की तरफ़ से	यह किताब	नाज़िल किया जाना

الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٢﴾ أَلَا لِلّٰهِ الدِّينُ

अल्लाह के लिए दीन	याद रखो	2	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	पस अल्लाह की इबादत करो	हक़ के साथ	यह किताब

وقف لازم

الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ

नहीं इबादत करते हम उन की	दोस्त	उस के सिवा	बनाते हैं	और जो लोग	ख़ालिस

إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللّٰهِ زُلْفَىٰ ۖ إِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ

उस में	वह	जिस में	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	क़ुर्ब का दर्जा	अल्लाह का	मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें

يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ أَرَادَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	अगर	3	नाशुक्रा	झूटा	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं

أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۙ سُبْحَانَهُ ۖ

वह पाक है	जिसे वह चाहता	वह पैदा करता है (मख़्लूक़)	उस से जो	अलबत्ता वह चुन लेता	औलाद	कि बनाए

هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ

हक़ (दुरुस्त तदबीर के) साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	4	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)	वही अल्लाह

يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ

सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात पर	और दिन को लपेटता है	दिन पर	रात	वह लपेटता है

وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾

5	बख़्शने वाला	वह ग़ालिब	याद रखो	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	हर एक चलता है	और चाँद

उन में से तेरे मुख़्लिस (ख़ास) बन्दों के सिवा। (83)
(अल्लाह ने) फ़रमायाः यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84)
मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85)
आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े क़ुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86)
यह (क़ुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87)
और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1)
बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2)
याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह क़ुर्ब के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उन के दरमियान उस (अम्र) में फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, बेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3)
अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, ज़बरदस्त। (4)
उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदबीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दते मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़्से वाहिद (आदम अ) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है बादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहां फिरे जाते हो? (6) अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। (7) और जब इन्सान को कोई सख़्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ़ रुजूअ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ़ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़ब्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़्र से थोड़ा, बेशक तू दोज़ख़ वालों में से है। (8) (क्या यह नाशुक्रा बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज्दा करने वाला हो कर और क़याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर हैं वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अक़्ल वाले ही नसीहत क़ुबूल करते हैं। (9) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाब पूरा पूरा दिया जाएगा। (10)

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	और उस ने भेजे	उस का जोड़ा	उस से	फिर उस ने बनाया	नफ़्से वाहिद	से	उस ने पैदा किया तुम्हें

مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا

एक कैफ़ियत	तुम्हारी माएं	पेटों में	वह पैदा करता है तुम्हें	जोड़े	आठ (8)	चौपायों से

مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	बादशाहत	उस के लिए	तुम्हारा परवरदिगार	यह तुम्हारा अल्लाह	तीन (3)	तारीकियों में	दूसरी कैफ़ियत	के बाद

اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۶﴾ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟

तुम से	बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	अगर तुम नाशुक्री करोगे	6	तुम फिरे जाते हो	तो कहां	उस के सिवा

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

कोई बोझ उठाने वाला बोझ	और नहीं उठाता	वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए	तुम शुक्र करोगे	और अगर	नाशुक्री	अपने बन्दों के लिए	और वह पसंद नहीं करता

اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

बेशक वह	तुम करते थे	वह जो	फिर वह जतला देगा तुम्हें	लौटना है तुम्हें	अपना रब	तरफ़	फिर	दूसरे का

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۷﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ

वह पुकारता है अपना रब	कोई सख़्ती	इन्सान	लगे- पहुँचे	और जब	7	सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें	जानने वाला

مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ

उस की तरफ़-लिए	वह पुकारता था	जो	वह भूल जाता है	अपनी तरफ़ से	नेमत	वह उसे दे	फिर जब	उस की तरफ़	रुजूअ कर के

مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ

फ़ाइदा उठा ले	फ़रमा दें	उस के रास्ते से	ताकि गुमराह करे	शरीक (जमा)	और वह बना लेता है अल्लाह के लिए	उस से क़ब्ल

بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿۸﴾ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

इबादत करने वाला	वह	या जो	8	आग (दोज़ख़) वाले	से	बेशक तू	थोड़ा	अपने कुफ़्र से

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

अपना रब	रहमत	और उम्मीद रखता है	आख़िरत	वह डरता है	और क़याम करने वाला	सिज्दा करने वाला	घड़ियों में रात की

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	जो इल्म नहीं रखते	और वह लोग	वह इल्म रखते हैं	वह लोग जो	बराबर हैं	क्या	फ़रमा दें

يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا ع ۱ ۹ ۱۵

तुम डरो	ईमान लाए	जो	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	9	अक़्ल वाले	नसीहत क़ुबूल करते हैं

رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

और अल्लाह की ज़मीन	भलाई	इस दुनिया	में	अच्छे काम किए	उन के लिए जिन्हों ने	अपना रब

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾

10	बेहिसाब	उन का अजर	सब्र करने वाले	पूरा बदला दिया जाएगा	इस के सिवा नहीं	वसीअ़

قُلْ اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿١١﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ

उस का	और मुझे हुक्म दिया गया	11	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करूँ	कि	बेशक मुझे हुक्म दिया गया	फ़रमा दें

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٢﴾ قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	बेशक मैं डरता हूँ	फ़रमा दें	12	फ़रमांबरदार- मुस्लिम (जमा)	पहला	कि मैं हूँ

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِىْ ﴿١٤﴾ فَاعْبُدُوْا

परस्तिश करो	14	अपना दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	फ़रमा दें	13	एक बड़ा दिन

مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप को	घाटे में डाला	वह जिन्हों ने	घाटा पाने वाले	बेशक	फ़रमा दें	उस के सिवाए	जिस की तुम चाहो

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ

उन के लिए	15	सरीह	घाटा	वह	यह	ख़ूब याद रखो	रोज़े क़ियामत	और अपने घर वाले

مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

उस से	डराता है अल्लाह	यह	सायबान (चादरें)	और उन के नीचे से	आग के	सायबान	उन के ऊपर से

عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ

कि	सरकश (शैतान)	बचते रहे	और जो लोग	16	पस मुझ से डरो	ऐ मेरे बन्दो	अपने बन्दो

يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	17	मेरे बन्दों	सो ख़ुशख़बरी दें	ख़ुशख़बरी	उन के लिए	अल्लाह की तरफ़	और उन्हों ने रुजूअ़ किया	उस की परस्तिश करें

يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ

उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने	वह जिन्हें	वही लोग	उस की अच्छी बातें	फिर पैरवी करते हैं	बात	सुनते हैं

وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ

अ़ज़ाब	हुक्म- वईद	उस पर	साबित हो गया	क्या तो- जो-जिस	18	अ़क़्ल वाले	वह	और यही लोग

اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

बाला ख़ाने	उन के लिए	अपना रब	जो लोग डरे	लेकिन	19	आग में	जो	बचा लोगे	क्या पस तुम

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ

ख़िलाफ़ नहीं करता	अल्लाह का वादा	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	बने बनाए	बाला ख़ाने	उन के ऊपर से

اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ

चश्मे	फिर चलाया उस को	पानी	आस्मान से	उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	20	वादा	अल्लाह

فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا

ज़र्द	फिर तू देखे उसे	फिर वह ख़ुश्क हो जाती है	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	खेती	उस से	वह निकालता है	फिर	ज़मीन में

ع ٢ ١٢ ١٦ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

21	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता नसीहत	इस में	बेशक	चूरा चूरा	फिर वह कर देता है उसे

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11) और मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले मैं ख़ुद मुसलिम बनों। (12) आप (स) फ़रमा दें, बेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफ़रमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (13) आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14) पस तुम जिस की चाहो परस्तिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: बेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्हों ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15) उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएबान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16) और जो लोग तागूत से बचते रहे कि उस की परस्तिश करें, और उन्हों ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है। सो आप (स) मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी दें। (17) जो (पूरी तवज्जुह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अ़क़्ल वाले। (18) तो क्या जिस पर अ़ज़ाब की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19) लेकिन जो लोग डरे अपने रब से, उन के लिए बाला ख़ाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए बाला ख़ाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख़्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अ़क़्ल वालों के लिए। (21)

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो ख़राबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़ियादा सख़्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)
अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ़ (राग़िब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)
पस क्या जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अ़ज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24)
जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया तो उन पर अ़ज़ाब आगया जहां से उन्हें ख़याल (भी) न था। (25)
पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26)
और तहक़ीक़ हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए बयान की हर क़िस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27)
क़ुरआन अ़रबी (ज़बान में), किसी (भी) कजी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28)
अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है, एक आदमी (ग़ुलाम) है, उस में कई (आक़ा) शरीक हैं जो आपस में ज़िद्दी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (ग़ुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक्सर इल्म नहीं रखते। (29)
बेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30)
फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ

सो ख़राबी	अपने रब की तरफ़ से	नूर	पर	तो वह	इस्लाम के लिए	उस का सीना	अल्लाह ने खोल दिया	क्या - पस जिस

لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	22	खुली	गुमराही	में	यही लोग	अल्लाह की याद	से	उन के दिल	उन के लिए- सख़्त

نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ

जिल्दें	उस से	बाल खड़े हो जाते हैं	दोहराई गई	मिलती जुलती (आयात वाली)	एक किताब	बेहतरीन कलाम	नाज़िल किया

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की याद	तरफ़	और उन के दिल	उन की जिल्दें	नर्म हो जाती हैं	फिर	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करता है अल्लाह	और जो- जिस	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है उस से	अल्लाह की हिदायत	यह

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۲۳﴾ اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अ़ज़ाब	अपने चेहरे से	बचाता है	क्या पस जो	23	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ

झुटलाया	24	तुम कमाते (करते) थे	जो	तुम चखो	ज़ालिमों को	और कहा जाएगा	क़ियामत के दिन

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۵﴾

25	उन्हें ख़याल न था	जहां से	अ़ज़ाब	तो उन पर आ गया	इन से पहले	जो लोग

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और अलबत्ता अ़ज़ाब	दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	पस चखाया उन्हें अल्लाह ने

اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ وقف لازم

में	लोगों के लिए	और तहक़ीक़ हम ने बयान की	26	वह जानते होते	काश	बहुत ही बड़ा

هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अ़रबी	क़ुरआन	27	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	मिसाल	हर क़िस्म की	इस क़ुरआन

غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ

उस में	एक आदमी	एक मिसाल	बयान की अल्लाह ने	28	परहेज़गारी इख़्तियार करें	ताकि वह	किसी कजी के बग़ैर

شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

मिसाल (हालत)	दोनों की बराबर है	क्या	एक आदमी के लिए	सालिम (ख़ालिस)	और एक आदमी	आपस में ज़िद्दी	कई शरीक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

और बेशक वह	मरने वाले	बेशक तुम	29	इल्म नहीं रखते	उन में अक्सर	बल्कि	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾ ع ٣ ١٧

31	तुम झगड़ोगे	अपना रब	पास	क़ियामत के दिन	बेशक तुम	फिर	30	मरने वाले

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

सच्चाई को	और उस ने झुटलाया	अल्लाह पर	झूट बान्धा	से-जिस	बड़ा ज़ालिम	पस कौन

اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِىْ جَآءَ

आया	और जो शख़्स	32	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह उस के पास आई	जब

بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ

उन के लिए	33	मुत्तक़ी (जमा)	वह	यही लोग	उस को	और उस ने उस की तस्दीक़ की	सच्चाई के साथ

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ

ताकि दूर कर दे अल्लाह	34	नेकोकारों (जमा)	जज़ा	यह	उन का रब	हाँ-पास	जो वह चाहेंगे

عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

बेहतरीन (आमाल)	उन का अजर	और उन्हें जज़ा दे	उन्हों ने किए (आमाल)	वह जो	बुराई	उन से

الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ

और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को	अपने बन्दे को	काफ़ी	अल्लाह	क्या नहीं	35	वह करते थे	वह जो

بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾ ج

36	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	उस के सिवा	उन से जो

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ

ग़ालिब	क्या नहीं अल्लाह	गुमराह करने वाला	कोई	उस के लिए	तो नहीं	अल्लाह हिदायत दे	और जिस

ذِى انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	पैदा किया	कौन-किस	तुम पूछो उन से	और अगर	37	बदला लेने वाला

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

जिन को तुम पुकारते हो	क्या पस देखा तुम ने	फ़रमा दें	अल्लाह	तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

दूर करने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई ज़र्र	चाहे मेरे लिए अल्लाह	अगर	अल्लाह के सिवा	से

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِىْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	उस की रहमत	रोकने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई रहमत	वह चाहे मेरे लिए	या	उस का ज़र्र

حَسْبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	फ़रमा दें	38	भरोसा करने वाले	भरोसा करते हैं	उस पर	काफ़ी है मेरे लिए अल्लाह

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ لا

39	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	काम करता हूँ	बेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

40	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतर आता है	रुस्वा कर दे उस को	अज़ाब	आता है उस पर	कौन

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झुटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (32)

और जो शख़्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तस्दीक़ की, यही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं। (33)

उन के लिए हैं उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)

ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)

और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं? आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, बेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (39)

कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

اِنَّـآ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالۡحَقِّ ۚ فَمَنِ اهۡتَدٰى

हिदायत पाई	पस जिस	हक़ के साथ	लोगों के लिए	किताब	आप (स) पर	बेशक हम ने नाज़िल की

فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَا ۚ وَمَاۤ اَنۡتَ عَلَيۡهِمۡ

उन पर	आप (स)	और नहीं	अपने लिए	वह गुमराह होता है	तो इस के सिवा नहीं	गुमराह हुआ	और जो	तो अपनी ज़ात के लिए

بِوَكِيۡلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الۡاَنۡفُسَ حِيۡنَ مَوۡتِهَا وَالَّتِىۡ ع

और जो	उस की मौत	वक़्त	(जमा) जान-रूह	क़ब्ज़ करता है	अल्लाह	41	निगहबान

لَمۡ تَمُتۡ فِىۡ مَنَامِهَا ۚ فَيُمۡسِكُ الَّتِىۡ قَضٰى عَلَيۡهَا الۡمَوۡتَ

मौत	उस पर	फ़ैसला किया उस ने	वह जिस	तो रोक लेता है	अपनी नींद	में	न मरे

وَيُرۡسِلُ الۡاُخۡرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ

लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	मुक़र्ररा	एक वक़्त	तक	दूसरों को	वह छोड़ देता है

يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلۡ

फ़रमा दें	शफ़ाअ़त करने वाले	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिया	क्या	42	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं

اَوَلَوۡ كَانُوۡا لَا يَمۡلِكُوۡنَ شَيۡـًٔا وَّلَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿٤٣﴾ قُلۡ لِّلّٰهِ

फ़रमा दें अल्लाह के लिए	43	और न वह समझ रखते हों	कुछ	वह न इख़्तियार रखते हों	क्या अगर

الشَّفَاعَةُ جَمِيۡعًا ؕ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ ثُمَّ اِلَيۡهِ

उस की तरफ़	फिर	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उसी के लिए	तमाम	शफ़ाअ़त

تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحۡدَهُ اشۡمَاَزَّتۡ قُلُوۡبُ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	दिल	मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं	एक-वाहिद	ज़िक्र किया जाता है अल्लाह	और जब	44	तुम लौटोगे

لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِذَا هُمۡ

वह	तो फ़ौरन	उस के सिवा	उन का जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर	ईमान नहीं रखते

يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ عٰلِمَ

और जानने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	ऐ अल्लाह	फ़रमा दें	45	ख़ुश हो जाते हैं

الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ اَنۡتَ تَحۡكُمُ بَيۡنَ عِبَادِكَ فِىۡ مَا كَانُوۡا

वह थे	उस में जो	अपने बन्दों	दरमियान	तू फ़ैसला करेगा	तू	और ज़ाहिर	पोशीदा

فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوۡ اَنَّ لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مَا فِى الۡاَرۡضِ

और जो कुछ ज़मीन में	ज़ुल्म किया	उन के लिए जिन्हों ने	हो	और अगर	46	इख़्तिलाफ़ करते	उस में

جَمِيۡعًا وَّمِثۡلَهٗ مَعَهٗ لَافۡتَدَوۡا بِهٖ مِنۡ سُوۡٓءِ الۡعَذَابِ

अ़ज़ाब	बुरे	से	उस को	बदले में दें वह	उस के साथ	और इतना ही	सब का सब

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمۡ يَكُوۡنُوۡا يَحۡتَسِبُوۡنَ ﴿٤٧﴾

47	गुमान करते	न थे वह	जो	अल्लाह (की तरफ़) से	और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर	रोज़े क़ियामत

बेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहबान (ज़िम्मेदार)। **(41)**

अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त क़ब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नींद में, जिस की मौत का फ़ैसला किया तो उस को (नींद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। **(42)**

क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? **(43)**

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअ़त, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। **(44)**

और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन ख़ुश हो जाते हैं। **(45)**

आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अमर में) फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। **(46)**

और अगर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अ़ज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। **(47)**

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लेगा	जो वह करते थे	बुरे काम	और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا

जब फिर	कोई तक्लीफ़ वह हमें पुकारता है	इन्सान	पहुँचती है	फिर जब	48	मज़ाक़ उड़ाते

خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ۭ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ

एक आज़माइश	बल्कि यह	इल्म	पर	मुझे दी गई है	यह तो	वह कहता है	अपनी तरफ़ से	कोई नेमत	हम अता करते हैं उस को

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

इन से पहले	से	जो लोग	यक़ीनन यही कहा था	49	जानते नहीं	उन में अक्सर	और लेकिन

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचें	50	वह करते थे	जो	उन से	तो वह न दूर किया

مَا كَسَبُوْا ۭ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	जल्द पहुँचेंगी इन्हें	इन में से	और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	जो उन्हों ने कमाई

مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

फ़राख़ करता है	कि अल्लाह	क्या यह नहीं जानते	51	आजिज़ करने वाले	और यह नहीं	जो इन्हों ने कमाया

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	निशानियां	इस में	बेशक	और तंग कर देता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

ع ١١/٥ ٢ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

अपनी जानें	पर	ज़ियादती की	वह जिन्हों ने	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	52	वह ईमान लाए

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ

सब	गुनाह (जमा)	बख़्श देता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह की रहमत	से	मायूस न हो तुम

اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

और फ़रमांबरदार हो जाओ उस के	अपना रब	तरफ़	और रुजूअ करो	53	मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक वह

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ

सब से बेहतर	और पैरवी करो	54	तुम मदद न किए जाओगे	फिर	अज़ाब	तुम पर आए	कि	इस से क़ब्ल

مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	कि तुम पर आए	इस से क़ब्ल	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो नाज़िल की गई

بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى

उस पर	हाए अफ़्सोस	कोई शख़्स	कि कहे	55	तुम को शऊर (ख़बर) न हो	और तुम	अचानक

مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ ۙ

56	हँसी उड़ाने वाले	अलबत्ता-से	और यह कि मैं	अल्लाह की जनाब	में	जो मैं ने कोताही की

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (48)

फिर जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत अता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49)

यक़ीनन यह उन लोगों ने (भी) कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अज़ाब को) दूर न किया। (50)

पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्हों ने कमाई थीं, और इन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्हों ने कमाई हैं, और यह नहीं हैं (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51)

किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाए। (52)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53)

और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो, और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ इस से क़ब्ल कि तम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54)

और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ़ से, इस से क़ब्ल कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55)

कि कोई शख़्स कहे, हाए अफ़्सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِیْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ۙ﴿۵۷﴾ اَوْ

या	57	परहेज़गार (जमा)	से	मैं ज़रूर होता	मुझे हिदायत देता	यह कि अल्लाह	अगर	वह कहे	या

تَقُوْلَ حِیْنَ تَرَی الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِیْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ

से	तो मैं हो जाऊँ	दोबारा	मेरे लिए	काश अगर	अ़ज़ाब	देखे	जब	वह कहे

الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۸﴾ بَلٰی قَدْ جَآءَتْكَ اٰیٰتِیْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ

और तू ने तकब्बुर किया	उन्हें	तू ने झुटलाया	मेरी आयात	तहक़ीक़ तेरे पास आईं	हाँ	58	नेकोकार (जमा)

وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۵۹﴾ وَیَوْمَ الْقِیٰمَةِ تَرَی الَّذِیْنَ كَذَبُوْا

जिन लोगों ने झूट बोला	तुम देखोगे	और क़ियामत के दिन	59	काफ़िरों	से	और तू था

عَلَی اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًی

ठिकाना	जहन्नम	में	क्या नहीं	सियाह	उन के चेहरे	अल्लाह पर

لِّلْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿۶۰﴾ وَیُنَجِّی اللّٰهُ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫

उन की कामयाबी के साथ	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की	और नजात देगा अल्लाह	60	तकब्बुर करने वाले

لَا یَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۫

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	61	ग़मगीन होंगे	और न वह	बुराई	न छुएगी उन्हें

وَّهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۶۲﴾ لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	उस के पास कुंजियां	62	निगहबान	चीज़	हर	पर	और वह

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۳﴾ قُلْ ع ١١ ٦ ٣

फ़रमा दें	63	ख़सारा पाने वाले	वह	वही लोग	अल्लाह की आयात के	मुन्किर हुए	और जो लोग

اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّیْٓ اَعْبُدُ اَیُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَقَدْ اُوْحِیَ

और यक़ीनन वहि भेजी गई है	64	जाहिलो	ऐ	मैं परस्तिश करूँ	तुम मुझे कहते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा

اِلَیْكَ وَاِلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ

तू ने शिर्क किया	अलबत्ता अगर	आप (स) से पहले	वह जो कि	और तरफ़	आप (स) की तरफ़

لَیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۶۵﴾ بَلِ اللّٰهَ

बल्कि अल्लाह	65	ख़सारा पाने वाले	से	और तू होगा ज़रूर	तेरे अ़मल	अलबत्ता अकारत जाएंगे

فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۶۶﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ

हक़	और उन्हों ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की	66	शुक्र गुज़ारो	से	और हो	पस इबादत करो

قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

और तमाम आस्मान	रोज़े क़ियामत	उस की मुट्ठी	तमाम	और ज़मीन	उस की क़द्र शनासी

مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۷﴾

67	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है	उस के दाएं हाथ में	लिपटे हुए

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57)
या जब वह अ़ज़ाब देखे तो कहे: काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58)
(अल्लाह फ़रमाएगा) हाँ! तहक़ीक़ तेरे पास मेरी आयात आईं, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59)
और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60)
और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन को कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छुएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61)
अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62)
उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63)
आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परस्तिश करूँ। (64)
और यक़ीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अ़मल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़यां कारों) में से होगे। (65)
बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66)
और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो बेहोश हो जाएगा	सूर में	और फूंक दी जाएगी

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾

68	देखने लगेंगे	खड़े	वह	तो फ़ौरन	दोबारा	फूंक मारी जाएगी उस में	फिर	चाहे अल्लाह	सिवाए जिसे

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	और लाए जाएंगे	किताब	और रख दी जाएगी	अपने रब के नूर से	ज़मीन	और चमक उठेगी

وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَوُفِّيَتْ

और पूरा पूरा दिया जाएगा	69	ज़ुल्म न किया जाएगा	और वह (उन पर)	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला किया जाएगा	और गवाह (जमा)

ع كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَسِيْقَ

और हांके जाएंगे	70	जो कुछ वह करते हैं	खूब जानता है	और वह	जो उस ने किया (उस के आमाल)	हर शख़्स

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ

खोल दिए जाएंगे	वह आएंगे वहां	यहां तक कि जब	गिरोह दर गिरोह	जहन्नम	तरफ़	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने

اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

तु में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास	उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े

يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात	और तुम्हें डराते थे	तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम)	तुम पर	वह पढ़ते थे

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۱﴾

71	काफ़िरों	पर	अ़ज़ाब	हुक्म	पूरा हो गया	और लेकिन	हाँ	वह कहेंगे	यह

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

ठिकाना	सो बुरा है	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो	कहा जाएगा

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ

गिरोह दर गिरोह	जन्नत की तरफ़	अपना रब	वह डरे	वह लोग जो	ले जाया जाएगा	72	तकब्बुर करने वाले

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े	और खोल दिए जाएंगे	वह वहां आएंगे	जब	यहां तक कि

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَقَالُوا

और वह कहेंगे	73	हमेशा रहने को	सो इस में दाख़िल हो	तुम अच्छे रहे	तुम पर	सलाम

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ

ज़मीन	और हमें वारिस बनाया	अपना वादा	हम से सच्चा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾

74	अ़मल करने वाले	अजर	सो किया ही अच्छा	हम चाहें	जहां	जन्नत	से - में	हम मुक़ाम करलें

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहन्नम की तरफ़, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाक़ात से। वह कहेंगे "हाँ" लेकिन काफ़िरों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्बुर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाज़े, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाख़िल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अ़मल करने वालों का अजर। (74)

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

तारीफ़ के साथ	पाकीज़गी बयान करते हुए	अ़र्श के गिर्द	से	हलक़ा बान्धे	फ़रिश्ते	और तुम देखोगे

رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٧٥ ع ٥ الربع

75	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और कहा जाएगा	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	अपना रब

آيَاتُهَا ٨٥ ❀ (٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 (40) सूरतुल मोमिन आयात 85

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ٢ غَافِرِ الذَّنْبِ

गुनाह (जमा)	बख़्शने वाला	2	हर चीज़ का जानने वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब (क़ुरआन)	उतारा जाना	1	हा-मीम

وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	बड़े फ़ज़्ल वाला	शदीद अ़ज़ाब वाला	तौबा	और क़ुबूल करने वाला

اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ٣ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	मगर	अल्लाह की आयात	में	वह नहीं झगड़ते	3	लौट कर जाना	उसी की तरफ़

فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ٤ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

नूह (अ) की क़ौम	इन से क़ब्ल	झुटलाया	4	शहरों में	उन का चलना फिरना	सो तुम्हें धोके में न डाल दे

وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ

अपने रसूल के मुतअ़ल्लिक़	हर उम्मत	और इरादा बान्धा	उन के बाद	और गिरोह (जमा)

لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ

तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया	हक़	उस से	ताकि नाचीज़ कर दें, दबा दें	नाहक़	और झगड़ा करें	कि वह उसे पकड़ लें

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ٥ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

पर	तुम्हारे रब की	बात	साबित हो गई	और इसी तरह	5	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	सो कैसा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ٦ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وقف لازم وقف النبی ﷺ ١٢

अ़र्श	उठाए हुए हैं	वह जो (फ़रिश्ते)	6	दोज़ख़ वाले	कि वह	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ

और मग़्फ़िरत मांगते हैं	उस पर	और ईमान लाते हैं	अपना रब	तारीफ़ के साथ	वह पाकीज़गी बयान करते हैं	और जो उस के इर्द गिर्द

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ

सो तू बख़्श दे	और इल्म	रहमत	हर शै	समो लिया है	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए	उन के लिए जो

لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ٧

7	जहन्नम	अ़ज़ाब	और तू उन्हें बचाले	तेरा रास्ता	और उन्हों ने पैरवी की	वह लोग जिन्हों ने तौबा की

और तुम देखोगे फ़रिश्तों को हलक़ा बान्धे अ़र्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें सारे जहानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

इस क़ुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज़ के जानने वाले (की तरफ़) से है। (2)

गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़ुबूल करने वाला, शदीद अ़ज़ाब वाला, बड़े फ़ज़्ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3)

नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4)

उन से क़ब्ल नूह (अ) की क़ौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के बारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक़ झगड़ा करें ताकि उस से हक़ को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (5)

और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6)

जो फ़रिश्ते अ़र्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़्फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा ले। (7)

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ

सालेह हैं	और जो	तू ने उन से वादा किया	वह जिन का	हमेशगी के बाग़ात	और उन्हें दाख़िल करना	ऐ हमारे रब

مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	तू ही	बेशक तू	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से

الْحَكِيْمُ ۝٨ۙ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ

उस दिन	बुराइयों	बचा	और जो	बुराइयों	और तू उन्हें बचाले	8	हिक्मत वाला

ع ١٩ ٦

فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ۧ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	9	अ़ज़ीम	कामयाबी	(यही) वह	और यह	तो यक़ीनन तू ने उस पर रह्म किया

يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपने तईं	तुम्हारा बेज़ार होना	से	बहुत बड़ा	अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना	वह पुकारे जाएंगे

اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا

तू ने हमें मुर्दा रखा	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	10	तो तुम कुफ़्र करते थे	ईमान की तरफ़	तुम बुलाए जाते थे	जब

اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तरफ़	तो क्या	अपने गुनाहों का	पस हम ने एतिराफ़ कर लिया	दो बार	और ज़िन्दगी बख़्शी हमें तू ने	दो बार

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ

वाहिद	पुकारा जाता अल्लाह	इस लिए कि जब	यह तुम (पर)	11	सबील	से - कोई	निकलना

كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢

12	बड़ा	बुलन्द	पस हुक्म अल्लाह के लिए	तुम मान लेते	उस का शरीक किया जाता	और अगर	तुम कुफ़्र करते

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ رِزْقًا ۭ

रिज़्क़	आस्मानों से	तुम्हारे लिए	और उतारता है	अपनी निशानियां	तुम्हें दिखाता है	जो कि	वह

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

उस के लिए	ख़ालिस करते हुए	पस पुकारो अल्लाह	13	रुजूअ़ करता है	सिवाए जो	और नहीं नसीहत कुबूल करता

الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝١٤ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ

अ़र्श का मालिक	दरजे	बुलन्द	14	काफ़िर (जमा)	बुरा मानें	अगरचे	इबादत

يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ

ताकि वह डराए	अपने बन्दों (में) से	वह चाहता है	जिस पर	अपने हुक्म से	वह डालता है रूह

يَوْمَ التَّلَاقِ ۝١٥ۙ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ڬ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	न पोशीदा होंगी	ज़ाहिर होंगे	वह	जिस दिन	15	मुलाक़ात (क़ियामत) का दिन

مِنْهُمْ شَيْءٌ ۭ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۭ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝١٦

16	ज़बरदस्त क़हर वाला	वाहिद	अल्लाह के लिए	आज	बादशाहत	किस के लिए	कोई शै	उन से - की

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाख़िल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह हैं उन के बाप दादा में से और उन की बीवियों और उन की औलाद में से, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)
और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यक़ीनन तू ने उस पर रह्म किया और यही अ़ज़ीम कामयाबी है। (9)
बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तईं बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़्र करते थे। (10)
वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़्शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)
कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)
वह जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़्क़ उतारता है, और नसीहत कुबूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करता है। (13)
पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14)
बुलन्द दरजों वाला, अ़र्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह क़ियामत के दिन से डराए। (15)
जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होंगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है बादशाहत? (एलान होगा) "अल्लाह के लिए" जो वाहिद, ज़बरदस्त क़हर वाला है। (16)

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आज	नहीं ज़ुल्म	वह जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	बदला दिया जाएगा	आज

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۷﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ

जब दिल (जमा)	क़रीब आने वाला रोज़ (क़ियामत)	और आप (स) उन्हें डराएं	17	हिसाब लेने वाला	तेज़

لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ

और न कोई सिफ़ारिश करने वाला	दोस्त	से- कोई	नहीं ज़ालिमों के लिए	ग़म से भरे हुए	गलों के नज़्दीक

يُّطَاعُ ؕ ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾

19	सीने (जमा)	छुपाते हैं	और जो कुछ	आँखों	ख़ियानत	वह जानता है	18	जिस की बात मानी जाए

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग	हक़ के साथ	फ़ैसला करता है	और अल्लाह

لَا يَقْضُوْنَ بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۲۰﴾ع اَوَلَمْ ع ١١ ٢

क्या नहीं	20	देखने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक अल्लाह	कुछ भी	नहीं फ़ैसले करते

يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	वह चले फिरे

كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا

और आसार	कुव्वत	इन से	ज़ियादा सख़्त	वह	वह थे	इन से पहले	थे

فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	उन के लिए	है	और नहीं	उन के गुनाहों के सबब	तो उन्हें पकड़ा अल्लाह	ज़मीन में

مِنْ وَّاقٍ ﴿۲۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आते थे	इस लिए कि वह	यह	21	बचाने वाला	से- कोई

فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۲﴾

22	सख़्त अज़ाब वाला	क़व्वी	बेशक वह	पस पकड़ा उन्हें अल्लाह	तो उन्हों ने कुफ़्र किया

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۳﴾ لا اِلٰى فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन की तरफ़	23	रोशन	और सनद	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा

وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

वह आए उन के पास	फिर जब	24	बड़ा झूटा	जादूगर	तो उन्हों ने कहा	और क़ारून	और हामान

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْۤا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	वह जो	उन के बेटे	तुम क़त्ल करो	उन्हों ने कहा	हमारे पास (तरफ़) से	हक़ के साथ

وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾

25	गुमराही में	सिवाए	काफ़िरों	और नहीं दाओ	उन की औरतें (बेटियां)	और ज़िन्दा रहने दो

आज हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17)

और उन्हें क़रीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएं, जब दिल ग़म से भरे गलों के नज़्दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18)

वह जानता है आँखों की ख़ियानत और जो वह सीनों में छुपाते हैं। (19)

और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, बेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20)

क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतिबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से बचाने वाला। (21)

इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियां ले कर आते थे, तो उन्हों ने कुफ़्र किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, बेशक वह क़व्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23)

फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्हों ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24)

फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्हों ने कहाः उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ

अपना रब	और उसे पुकारने दो	मूसा (अ)	मैं क़त्ल करूँ	मुझे छोड़ दो	फ़िरऔन	और कहा

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे)	या	तुम्हारा दीन	कि वह बदल दे	बेशक मैं डरता हूँ

الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ

और तुम्हारे रब से-की	अपने रब से-की	पनाह ले ली	बेशक मैं	मूसा (अ)	और कहा	26	फ़साद

ع ٣ ٨

مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ

एक मर्द	और कहा	27	रोज़े हिसाब पर	(जो) ईमान नहीं रखता	मग़रूर	हर	से

مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا

एक आदमी	क्या तुम क़त्ल करते हो	अपना ईमान	वह छुपाए हुए था	फ़िरऔन के लोग	से	मोमिन

اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	खुली निशानियों के साथ	और वह तुम्हारे पास आया है	मेरा रब अल्लाह	कि वह कहता है

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ

तुम्हें पहुँचेगा	सच्चा	और अगर है वह	उस का झूट	तो उस पर	झूटा	वह है	और अगर

بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ

हद से गुज़रने वाला	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	तुम से वादा करता है	वह जो	कुछ

كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ

ज़मीन में	ग़ालिब	आज	बादशाहत	तुम्हारे लिए	ऐ मेरी क़ौम	28	सख़्त झूटा

فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	कहा	अगर वह आ जाए हम पर	अल्लाह का अज़ाब	से	हमारी मदद करेगा	तो कौन

مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

29	भलाई	राह	मगर	और राह नहीं दिखाता तुम्हें	जो मैं देखता हूँ	मैं दिखाता (राए देता) तुम्हें मगर	नहीं

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ

मानिंद	तुम पर	मैं डरता हूँ	ऐ मेरी क़ौम	ईमान ले आया	वह शख़्स जो	और कहा

يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ

और समूद	और आद	क़ौमे नूह	हाल	जैसे	30	(साबिक़ा) गिरोहों का दिन

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

31	अपने बन्दों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	अल्लाह	और नहीं	उन के बाद	और जो लोग

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

32	दिन चीख़ ओ पुकार	तुम पर	मैं डरता हूँ	और ऐ मेरी क़ौम

और फ़िरऔन ने कहाः मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को क़त्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, बेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, बेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मग़रूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज़ इस बात पर) क़त्ल करते हो कि वह कहता है "मेरा रब अल्लाह है" और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का वबाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा है उस का कुछ (अ़ज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, बेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख़्त झूटा। (28)

ऐ मेरी क़ौम आज बादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नहीं देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर साबिक़ा गिरोहों के दिन के मानिंद (अ़ज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ क़ौमे नूह और आद और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई ज़ुल्म। (31)

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। **(33)** और तहक़ीक़ तुम्हारे पास इस से क़ब्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गए तो तुम ने कहाः उस के बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। **(34)** जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे) में झगड़ते हैं किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बहसी) सख़्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज़्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मग़रूर, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। **(35)** और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। **(36)** आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और बेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फ़िरऔन को उस के बुरे अ़मल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फ़िरऔन की तदबीर सिर्फ़ तबाही ही थी। **(37)** और जो शख़्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। **(38)** ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फ़ाइदा है, और आख़िरत बेशक हमेशा रहने का घर है। **(39)** जिस शख़्स ने बुरा अ़मल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अ़मल किया, वह ख़ाह मर्द हो या औ़रत, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाख़िल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा। **(40)**

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ

गुमराह कर दे	और जिस को	बचाने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं तुम्हारे लिए	पीठ फेर कर	तुम फिर जाओगे (भागोगे)	जिस दिन

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	यूसुफ़ (अ)	और तहक़ीक़ आए तुम्हारे पास	33	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	अल्लाह

بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

तुम ने कहा	वह फ़ौत हो गए	जब	यहां तक	आए तुम्हारे पास जिस के साथ	शक में उस से	सो तुम हमेशा रहे	(वाज़ेह) दलाइल के साथ

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ

जो वह	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई रसूल	उस के बाद	हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह

مُسْرِفٌ مُّرْتَابُۨ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ

बग़ैर किसी दलील	अल्लाह की आयतें	में	झगड़ा करते हैं	जो लोग	34	शक में रहने वाला	हद से गुज़रने वाला

اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ

मुहर लगा देता है अल्लाह	इसी तरह	ईमान लाए	उन लोगों के जो	और नज़्दीक	अल्लाह के नज़्दीक	सख़्त ना पसंद	आई उन के पास

عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ

बना दे तो	ऐ हामान	फ़िरऔन	और कहा	35	सरकश	मग़रूर	हर दिल	पर

لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ

पस झाँक लूँ	आस्मानों	रास्ते	36	रास्ते	पहुँच जाऊँ	शायद कि मैं	एक (बुलन्द) महल	मेरे लिए

اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ

फ़िरऔन को	आरास्ता दिखाए गए	और उसी तरह	झूटा	उसे अलबत्ता गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	मूसा (अ) का माबूद	तरफ़, को

سُوْۤءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع ٩

37	मगर (सिर्फ़) तबाही में	फ़िरऔन	और नहीं तदबीर	सीधा रास्ता	से	और वह रोक दिया गया	उस के बुरे अ़मल

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

38	भलाई	रास्ता	मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा	तुम मेरी पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	वह जो ईमान ले आया था	और कहा

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ

वह	आख़िरत	और बेशक	(थोड़ा) फ़ाइदा	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम

دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ

और जो-जिस	उसी जैसा	मगर	उसे बदला न दिया जाएगा	बुरा	अ़मल किया	जो-जिस	39	(हमेशा) रहने का घर

عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ

तो यही लोग	और (बशर्त यह कि) वह मोमिन	या औ़रत	मर्द	से	अच्छा	अ़मल किया

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

40	बे हिसाब	उस में	वह रिज़्क़ दिए जाएंगे	जन्नत	दाख़िल होंगे

النصف

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ط ﴿٤١﴾

41	आग (जहन्नम)	तरफ़	और बुलाते हो तुम मुझे	नजात	तरफ़	मैं बुलाता हूँ तुम्हें	क्या हुआ मुझे	और ऐ मेरी क़ौम

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز

कोई इल्म	उस का	मुझे	नहीं	जो	उस के साथ	और मैं शरीक ठहराऊँ	अल्लाह का	कि मैं इन्कार करूँ	तुम बुलाते हो मुझे

وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ

तमु बुलाते हो मुझे	यह कि	कोई शक नहीं	42	बख़्शने वाला	ग़ालिब	तरफ़	बुलाता हूँ तुम्हें	और मैं

اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ

फिर जाना है हमें	और यह कि	आख़िरत में	और न	दुनिया में	बुलाना	नहीं उस के लिए	उस की तरफ़

اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ

सो तुम जल्द याद करोगे	43	आग वाले (जहन्नमी)	वह - वही	हद से बढ़ने वाले	और यह कि	अल्लाह की तरफ़

مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ

देखने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह को	अपना काम	और मैं सौंपता हूँ	तुम्हें	जो मैं कहता हूँ

بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ

और घेर लिया	दाओ जो वह करते थे	बुराइयां	सो उसे बचा लिया अल्लाह ने	44	बन्दों को

بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ ع اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

उस पर	वह हाज़िर किए जाते हैं	आग	45	बुरा अ़ज़ाब	फ़िरऔ़न वालों को

غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ج وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ قف اَدْخِلُوْٓا

दाख़िल करो तुम	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन	और शाम	सुबह

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ

आग (जहन्नम) में	वह बाहम झगड़ेंगे	और जब	46	अ़ज़ाब	शदीद तरीन	फ़िरऔ़न वाले

فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

तुम्हारे	बेशक हम थे	वह बड़े बनते थे	उन लोगों को जो	कमज़ोर	तो कहेंगे

تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

47	आग	से - का	कुछ हिस्सा	हम से	दूर कर दोगे	तुम	तो क्या	ताबे

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ

फ़ैसला कर चुका है	बेशक अल्लाह	इस में	सब	बेशक हम	बड़े बनते थे	वह लोग जो	कहेंगे

بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ

जहन्नम	निगहबान दारोग़ा (जमा) को	आग में	वह लोग जो	और कहेंगे	48	बन्दों के दरमियान

ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

49	से - का अ़ज़ाब	एक दिन	हम से	हल्का कर दे	अपने रब से	तुम दुआ़ करो

और ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42) कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आख़िरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43) सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44) सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) बुरे दाओ से जो वह करते थे, और फ़िरऔ़न वालों को बुरे अ़ज़ाब ने घेर लिया। (45) (जहन्नम की) आग जिस पर वह सुबह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी (हुक्म होगा कि) तुम दाख़िल करो फ़िरऔ़न वालों को शदीद तरीन अ़ज़ाब में। (46) और जब वह जहन्नम में बाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थे: बेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47) वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे: बेशक हम सब इस में हैं, बेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका है। (48) और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोग़ों (जहन्नम के निगहबान फ़रिश्तों) को: अपने रब से दुआ़ करो, एक दिन का अ़ज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ

हाँ	वह कहेंगे	निशानियों के साथ	तुम्हारे रसूल	तुम्हारे पास आते	क्या नहीं थे	वह कहेंगे

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ ع ١٣ ٥ ١٠

50	गुमराही में (बेसूद)	मगर	काफ़िर (जमा)	पुकार	और न	तो तुम पुकारो	वह कहेंगे

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	में	ईमान लाए	और जो लोग	अपने रसूल (जमा)	ज़रूर मदद करते हैं	बेशक हम

وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	नफ़ा न देगी	जिस दिन	51	गवाही देने वाले	खड़े होंगे	और जिस दिन

مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	52	बुरा घर (ठिकाना)	और उन के लिए	लानत	और उन के लिए	उन की उज़्र ख़ाही

مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

53	किताब (तौरेत)	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया	हिदायत	मूसा (अ)

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप (स) सब्र करें	54	अक़्ल मन्दों के लिए	और नसीहत	हिदायत

حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करें	अपने गुनाहों के लिए	और मग़्फ़िरत तलब करें	सच्चा

بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	55	और सुबह	शाम

بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ

तकब्बुर	सिवाए	उन के सीने (दिल)	में	नहीं	उन के पास आई हो	किसी सनद	बग़ैर

مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

वही सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	पस आप (स) पनाह चाहें	उस तक पहुँचने वाले	नहीं वह

الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ

से	बहुत बड़ा	और ज़मीन	आस्मानों	यक़ीनन पैदा करना	56	देखने वाला

خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	जानते (समझते) नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	लोगों को पैदा करना

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	और बीना	नाबीना	और बराबर नहीं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो	बहुत कम	और न बदकार	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50)

बेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51)

जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र ख़ाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53)

(जो) अ़क़्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54)

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने क़ुसूरों के लिए मग़्फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं बग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकब्बुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं। पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56)

यक़ीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57)

और बराबर नहीं नाबीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

लोग	अक्सर	और लेकिन	इस में	नहीं शक	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

तुम्हारी	मैं क़ुबूल करूँगा	तुम दुआ करो मुझ से	तुम्हारे रब ने	और कहा	59	ईमान नहीं लाते

إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	अ़नक़रीब वह दाख़िल होंगे	मेरी इबादत	से	तकब्बुर करते हैं	जो लोग	बेशक

ع ٦ ١٠ ١١ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ

उस में	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाई	वह जिस ने	अल्लाह	60	ख़्वार हो कर

وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

लोगों पर	फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	दिखाने को	और दिन

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ

पैदा करने वाला	तुम्हारा रब	अल्लाह	यह है	61	शुक्र नहीं करते	अक्सर लोग	और लेकिन

كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	62	उलटे फिरे जाते हो	तो कहां तुम	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हर शै

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	63	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह की आयात से-का	थे	वह लोग जो	उलटे फिर जाते हैं

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ

और तुम्हें सूरत दी	छत	और आस्मान	क़रारगाह	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ

यह है	पाकीज़ा चीज़ें	से	और तुम्हें रिज़्क़ दिया	तुम्हें सूरत दी	तो बहुत ही हसीन

اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ

वही	64	परवरदिगार सारे जहानों का	सो बरकत वाला है अल्लाह	अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार

الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ

उस के लिए दीन	ख़ालिस कर के	पस तुम पुकारो उसे	सिवाए उस के	नहीं कोई माबूद	ज़िन्दा रहने वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

कि परस्तिश करूँ मैं	मुझे मना कर दिया गया है	बेशक मैं	आप (स) फ़रमा दें	65	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ

खुली निशानियां	वह मेरे पास आ गईं	जब	अल्लाह के सिवा	तुम पूजा करते हो	वह जिन की

مِنْ رَّبِّيْ ۫ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का	कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	मेरे रब से

बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59)
और तुम्हारे रब ने कहाः तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर (सरताबी) करते हैं अ़नक़रीब ख़्वार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60)
अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रोशन बनाया), बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61)
यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिरे जाते हो? (62)
इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63)
अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64)
वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65)
आप (स) फ़रमा दें: बेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परस्तिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गईं मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ

लोथड़े से	फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने

ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ

बूढ़े	ताकि तुम हो जाओ	फिर	अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा सा	तुम्हें निकालता है वह	फिर

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

और ताकि तुम	वक़्ते मुक़र्ररा	और ताकि तुम पहुँचो	उस से क़ब्ल	जो फ़ौत हो जाता है	और तुम में से

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا

तो इस के सिवा नहीं	किसी अमर	वह फ़ैसला करता है	फिर जब	और मारता है	ज़िन्दगी अ़ता करता है	वही है जो	67	समझो

يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ — ع ٨ ١٢

में	झगड़ते हैं	जो लोग	तरफ़	क्या नहीं देखा तुम ने	68	सो वह हो जाता है	हो जा	वह कहता है उस के लिए

اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ

औ उस को जो	किताब को	झुटलाया	जिन लोगों ने	69	फिरे जाते हैं	कहां	अल्लाह की आयात

اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾ لا اِذِ الْاَغْلٰلُ — عدد المتأخرين ١٢ معانقة ١٢

तौक़ (जमा)	जब	70	वह जान लेंगे	पस जल्द	अपने रसूल	उस के साथ	हम ने भेजा

فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ لا فِى الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ

फिर	खौलते हुए पानी में	71	वह घसीटे जाएंगे	और ज़न्जीरें	उन की गर्दनों में

فِى النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ج ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ لا

73	शरीक करते	जिन को तुम थे	कहां	उन को	कहा जाएगा	फिर	72	वह झोंक दिए जाएंगे	आग में

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا

पुकारते थे हम	नहीं	बल्कि	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे	अल्लाह के सिवा

مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا

उस का बदला जो	यह	74	काफ़िरों	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई चीज़	इस से क़ब्ल

كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾ ج

75	इतराते	तुम थे	और बदला उस का जो	नाहक़	ज़मीन में	तुम खुश होते थे

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

ठिकाना	सो बुरा	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो जाओ

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ

हम आप (स) को दिखा दें	पस अगर	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	आप सब्र करें	76	तकब्बुर करने (बड़ा बनने) वालों का

بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

77	वह लौटाए जाएंगे	पस हमारी तरफ़	हम आप (स) को वफ़ात दे दें	या	हम उन से वादा करते हैं	वह जो	बाज़ (कुछ हिस्सा)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) बच्चा सा, फिर (तुम्हें बाक़ी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फ़ौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक़्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। **(67)**

वही है जो ज़िन्दगी अ़ता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है "हो जा" सो वह हो जाता है। **(68)**

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? **(69)**

जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। **(70)**

जब उन की गर्दनों में तौक़ और ज़न्जीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। **(71)**

खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। **(72)**

फिर कहा जाएगा उन को, कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? **(73)**

वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज़ को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। **(74)**

यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। **(75)**

तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। **(76)**

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। **(77)**

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ

आप (स) पर- से	हम ने हाल बयान किया	जो- जिन	उन में से	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ

वह लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और न था	आप (स) पर- से	हम ने हाल नहीं बयान किया	जो- जिन	और उन में से

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ

और घाटे में रह गए	हक़ के साथ	फ़ैसला कर दिया गया	अल्लाह का हुक्म	आ गया	सो जब	अल्लाह के हुक्म से	मगर- बग़ैर	कोई निशानी

٨ ع ١٠ ١٣ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ

चौपाए	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस ने	अल्लाह	78	अहले बातिल	उस वक़्त

لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

बहुत से फ़ाइदे	उन में	और तुम्हारे लिए	79	तुम खाते हो	और उन से	उन से	ताकि तुम सवार हो

وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا

और उन पर	तुम्हारे सीनों (दिलों में)	हाजत	उन पर	और ताकि तुम पहुँचो

وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

81	तुम इन्कार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	तो किन किन	अपनी निशानियां	और वह दिखाता है तुम्हें	80	लदे फिरते हो	और कशतियों पर

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	पस क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً

क़ुव्वत	और बहुत ज़ियादा	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे	इन से क़ब्ल	उन लोगों का जो

وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह कमाते (करते) थे	जो	उन के	वह काम आया	सो न	ज़मीन में	और आसार

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	उन के पास	खुश हुए (इतराने लगे) उस पर जो	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	फिर जब

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने देखा	फिर जब	83	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जो वह	उन्हें	और घेर लिया

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	शरीक करते	उस के साथ	हम थे	वह जिस	और हम मुन्किर हुए	वह वाहिद	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	वह कहने लगे

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ

अल्लाह का दस्तूर	हमारा अ़ज़ाब	जब उन्हों ने देख लिया	उन का ईमान	उन को नफ़ा देता	तो न हुआ

٩ ع ٧ ١٤ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ ع

85	काफ़िर (जमा)	उस वक़्त	और घाटे में रह गए	उस के बन्दों में	गुज़र चुका है	वह जो

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़्दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुक्म आ गया, हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और अहले बातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78) अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79) और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मक़्सूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81) पस क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से क़ब्ल थे, वह तादाद और क़ुव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह ज़मीन में (इन से बढ़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82) फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (83) फिर जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84) तो (उस वक़्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए। (85)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरबान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ़) से। (2)
यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, क़ुरआन अ़रबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)
ख़ुशख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अक्सर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)
और उन्हों ने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, बेशक हम अपना काम करते हैं। (5)
आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुज़ूर और उस से मग़्फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए। (6)
वह जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)
बेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)
आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे जहानों का रब। (9)
और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर कीं, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)
फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तवज्जुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों ख़ुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥٤ ❀ (٤١) سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 | (41) सूरह हा-मीम सजदा | आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

क़ुरआन	जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गईं उस की आयतें	एक किताब	2	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	से	नाज़िल किया हुआ	1	हा-मीम

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	सो मुँह फेर लिया	और डर सुनाने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला	3	वह जानते हैं	उन लोगों के लिए	अ़रबी (ज़बान) में

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	तुम बुलाते हो हमें	उस से जो	पर्दों में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	4	वह सुनते नहीं

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾ الثلثة

5	काम करते हैं	बेशक हम	सो तुम काम करो	एक पर्दा	और तुम्हारे दरमियान	और हमारे दरमियान	बोझ-गिरानी	और हमारे कानों में

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

यकता	माबूद	तुम्हारा माबूद	यह कि	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	कि मैं एक बशर	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	6	मुश्रिकों के लिए	और ख़राबी	उस से मग़्फ़िरत मांगो	उस की तरफ़ (उस के हुज़ूर)	पस सीधे रहो

لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	बेशक	7	मुन्किर हैं	वह	आख़िरत का	और वह	ज़कात	नहीं देते

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ اَئِنَّكُمْ ع ٨ ١٥

क्या तुम	फ़रमा दें	8	ख़तम न होने वाला	अजर	उन के लिए	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ

उस के	और तुम ठहराते हो	दो (2) दिनों में	ज़मीन	पैदा किया	उस का जिस ने	इन्कार करते हो

اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

उस के ऊपर	पहाड़ (जमा)	उस में	और उस ने बनाए	9	सारे जहानों का रब	वह	शरीक (जमा)

وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً

यकसां	चार (4) दिन (जमा)	में	उन की ख़ुराकें	उस में	और मुक़र्रर कीं	उस में	और बरकत रखी

لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

तो उस ने कहा	एक धुआं	और वह	आस्मान की तरफ़	फिर उस ने तवज्जुह फ़रमाई	10	तमाम सवाल करने वालों के लिए

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾

11	ख़ुशी से	हम दोनों आए (हाज़िर हैं)	उन दोनों ने कहा	नाख़ुशी से	या	ख़ुशी से	तुम दोनों आओ	और ज़मीन से	उस से

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

फिर उस ने बनाए	सात आस्मान	दो (2) दिनों में	और वहि कर दी	में	हर आस्मान	उस का काम

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۗ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

और हम ने ज़ीनत दी	आस्मान	दुनिया	चिराग़ों (सितारों) से	और हिफ़ाज़त के लिए	यह	अन्दाज़ा (फ़ैसला)	ग़ालिब

الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ

इल्म वाला	12	फिर अगर	वह मुँह मोड़ लें	तो फ़रमा दें	मैं डराता हूँ तुम्हें	एक चिंघाड़	जैसी	चिंघाड़

عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

आ़द और समूद	13	जब आए उन के पास	रसूल	उन के आगे से	और उन के पीछे से

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۗ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً

कि तुम न इबादत करो	सिवाए अल्लाह	उन्हों ने जवाब दिया	अगर चाहता	हमारा रब	तो ज़रूर उतारता	फ़रिश्ते

فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا

पस बेशक	उस का जो	तुम भेजे गए हो	उस के साथ	मुन्किर हैं	14	फिर जो	आ़द	तो वह तकब्बुर (ग़रूर) करने लगे

فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۗ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

ज़मीन (मुल्क) में	नाहक़	और वह कहने लगे	कौन	ज़ियादा	हम से	क़ुव्वत	क्या नहीं	वह देखते	कि अल्लाह

الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

वह जिस ने	पैदा किया उन्हें	वह	बहुत ज़ियादा	उन से	क़ुव्वत	और वह थे	हमारी आयतों का	इन्कार करते	15

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ

पस हम ने भेजी	उन पर	हवा	तुन्द ओ तेज़	दिनों में	नहूसत	ताकि हम चखाएं उन्हें

عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ

अ़ज़ाब	रुस्वाई	में	दुनिया की ज़िन्दगी	और अलबत्ता अ़ज़ाब	आख़िरत	ज़ियादा रुस्वा करने वाला	और वह

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى

मदद न किए जाएंगे	16	और रहे	समूद	सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें	तो उन्हों ने पसंद किया	अन्धा रहना	हिदायत पर

فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ ع

तो उन्हें आ पकड़ा	चिंघाड़	अ़ज़ाब	ज़िल्लत	उस की सज़ा में जो	वह कमाते (करते थे)	17

ع ١٠ ٢ ١٦ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ ع وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ

और हम ने बचा लिया	वह लोग जो	ईमान लाए	और वह परहेज़गारी करते थे	18	और जिस दिन	जमा किए जाएंगे	अल्लाह के दुश्मन

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

जहन्नम की तरफ़	तो वह	गिरोह गिरोह किए जाएंगे	19	यहां तक कि	जब	वह आएंगे उस के पास	गवाही देंगे

عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

उन पर	उन के कान	और उन की आँखें	और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त)	उस पर	जो वह करते थे	20

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और ख़ूब महफ़ूज़ कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फ़ैसला है। (12)
फिर अगर वह महुँ मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आ़द ओ समूद (पर अ़ज़ाब आया था)। (13)
जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्हों ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फ़रिशते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम बेशक उस के मुन्किर हैं। (14)
फिर जो आ़द थे वह मुल्क में ग़रूर करने लगे नाहक़, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा क़ुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह क़ुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)
पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज़ हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)
और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्हों ने हिदायत (के मुक़ाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अ़ज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)
और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)
और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़सीम) कर दिए जाएंगे। (19)
यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

हमें गोयाई दी अल्लाह ने	वह जवाब देंगे	हम पर (हमारे ख़िलाफ़)	तुम ने गवाही दी	क्यों	अपनी जिल्दों (गोश्त पोस्त) से	और वह कहेंगे

الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	पहली बार	तुम्हें पैदा किया	और वह-उस	हर शै	गोया अ़ता फ़रमाया	वह जिस ने

تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ

तुम पर (तुम्हारे ख़िलाफ़)	कि गवाही देंगे	तुम छुपाते थे	और जो	21	तुम लौटाए जाओगे

سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम ने गुमान कर लिया था	और लेकिन (बल्कि)	और न तुम्हारी जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और न तुम्हारी आँखें	तुम्हारे कान

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

वह जो	तुम्हारा गुमान	और उस	22	तुम करते हो	जो	बहुत कुछ	नहीं जानता

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ

फिर अगर	23	ख़सारा पाने वाले	से	सो तुम हो गए	हलाक किया तुम्हें	अपने रब के मुतअ़ल्लिक़	तुम ने गुमान किया था

يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ

से	तो न वह	वह माफ़ी चाहें	और अगर	उन के लिए	ठिकाना	तो जहन्नम	वह सब्र करें

الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا

जो	तो उन्हों ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए	कुछ हमनशीन	उन के लिए	और हम ने मुक़र्रर किए	24	माफ़ी क़ुबूल किए जाने वाले

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ

उन उम्मतों में	क़ौल	उन पर	और पूरा हो गया	और जो उन के पीछे	उन के आगे

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ

बेशक वह	और इन्सान	जिन्नात में से-की	उन से क़ब्ल	जो गुज़र चुकीं

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ ع ٣ ٧ ١٧

इस क़ुरआन को	तुम मत सुनो	उन्हों ने कुफ़्र किया	उन लोगों ने जो	और कहा	25	ख़सारा पाने वाले थे

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस हम ज़रूर चखाएंगे	26	तुम ग़ालिब आ जाओ	शायद कि तुम	उस में	और गुल मचाओ

عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

वह जो	बदतरीन	और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे	सख़्त अ़ज़ाब

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا

उस में	उन के लिए	जहन्नम	अल्लाह के दुश्मन (जमा)	बदला	यह	27	वह करते थे (आमाल)

دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	इन्कार करते	हमारी आयतों का	वह थे	उस का जो	बदला	हमेशगी का घर

और वह अपने गोश्त पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगेः हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोश्त पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)

तुम्हारे उस गुमान (ख़याले बातिल) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए ख़सारा पाने वालों में से। (23)

फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफ़ी चाहें तो वह माफ़ी क़ुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)

और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुक़र्रर किए, तो उन्हों ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अ़ज़ाब की वईद का) क़ौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी हैं उन से क़ब्ल जिन्नात और इन्सानों की, बेशक वह ख़सारा पाने वाले थे। (25)

और उन लोगों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस क़ुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगें) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)

पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे, और अलबत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)

यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ

और कहेंगे	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	ऐ हमारे रब	हमें दिखा दे	उन्हें	जिन्हों ने गुमराह किया हमें	जिन्नात में से

وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ٢٩

और इन्सानों	हम उन दोनों को डालें	तले	अपने पाऊँ	ताकि वह हों	से	इन्तिहाई ज़लील (जमा)	29

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ

बेशक	वह जिन्हों ने	उन्हों ने कहा	हमारा रब अल्लाह	फिर	वह साबित क़दम रहे	उतरते हैं	उन पर

الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ

फ़रिश्ते	कि न तुम ख़ौफ़ खाओ	और न ग़मगीन हो	और तुम ख़ुश हो जाओ	जन्नत पर	वह जो

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٣٠ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ

तुम्हें वादा दिया जाता है	30	हम	तुम्हारे रफ़ीक़	ज़िन्दगी में	दुनिया	और आख़िरत में

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ٣١ نُزُلًا مِّنْ

और तुम्हारे लिए	उस में	जो चाहें	तुम्हारे दिल	और तुम्हारे लिए	उस में	जो	तुम मांगोगे	31	ज़ियाफ़त	से

ع ٧/١٨ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ٣٢ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ

बख़्शने वाला	रहम करने वाला	32	और किस	बेहतर	बात	उस से जो	बुलाए	अल्लाह की तरफ़	और अमल करे

صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ٣٣ وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ

अच्छे	और वह कहे	बेशक मैं	से	मुसलमानों	33	और बराबर नहीं होती	नेकी

وَلَا السَّيِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ

और न बुराई	दूर कर दें आप (स)	उस से जो	वह	बेहतरीन	तो यकायक	वह जो शख़्स	आप के दरमियान	और उस के दरमियान

عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ٣٤ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَمَا

अदावत	गोया कि वह	दोस्त	क़राबती (जिगरी)	34	और नहीं मिलती यह	मगर	वह जिन्हों ने	सब्र किया	और नहीं

يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ٣٥ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

मिलती यह	मगर	बड़े नसीब वाले	35	और अगर	तुम्हें वस्वसा आए	से	शैतान	कोई वस्वसा

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٣٦ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ

तो पनाह चाहें	अल्लाह की	बेशक वह	वही	सुनने वाला	जानने वाला	36	और से	उस की निशानियां	रात	और दिन

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ

और सूरज	और चाँद	तुम न सिज्दा करो	सूरज को	और न	चाँद को	और तुम सिज्दा करो अल्लाह को

الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ٣٧ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ

वह जिस ने	पैदा किया उन्हें	अगर	तुम हो	सिर्फ़ उस की	इबादत करते	37	पस अगर वह	तकब्बुर करें	सो वह जो

السجدة ١١ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ٣٨ السجدة

आप के रब के नज़दीक	वह तस्बीह करते हैं	उस की	रात	और दिन	और वह	नहीं उकताते	38

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्हों ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29)
बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित क़दम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम ग़मगीन हो, और तमु उस जन्नत पर ख़ुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30)
हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम मांगोगे। (31)
(यह) ज़ियाफ़त है बख़्शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32)
और उस से बेहतर किस का क़ौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अमल करे और कहे: बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33)
और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज़ से) दूर करें जो बेहतरीन हो तो यकायक वह शख़्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अदावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34)
और यह (सिफ़त) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्हों ने सब्र किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35)
और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36)
और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37)
पस अगर वह तकब्बुर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्बीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, बेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, बेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। **(39)**
बेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख़्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। **(40)**
बेशक जिन लोगों ने क़ुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अन्जाम देख लेंगे), बेशक यह ज़बरदस्त किताब है। **(41)**
उस के पास नहीं आता बातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ़) से। **(42)**
आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, बेशक आप (स) का रब बड़ी मग़फ़िरत वाला, और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। **(43)**
और अगर हम क़ुरआन को अ़जमी ज़बान का बनाते तो वह कहतेः उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गईं? क्या किताब अ़जमी और रसूल अ़रबी? आप (स) फ़रमा दें: जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। **(44)**
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और बेशक वह ज़रूर उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। **(45)**
जिस ने अच्छे अ़मल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का वबाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुतलक़ ज़ुल्म करने वाला नहीं। **(46)**

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ

पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	दबी हुई (सुनसान)	ज़मीन	तू देखता है	कि तू	और उस की निशानियों में से

اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै पर	बेशक वह	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दों को	उस को ज़िन्दा किया	वह जिस ने	बेशक	और फूलती है	वह लहलहाने लगती है

قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ

हम पर	वह पोशीदा नहीं	हमारी आयात में	कज रवी करते हैं	जो लोग	बेशक	39	कुदरत रखने वाला

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا

तुम करो	रोज़े क़ियामत	अमान के साथ	आए	या जो	बेहतर	आग में	डाला जाए	तो क्या जो

مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا

जब	ज़िक्र (क़ुरआन) का	वह जिन्हों ने इन्कार किया	बेशक	40	देखने वाला	जो तुम करते हो	बेशक वह	जो तुम चाहो

جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ

उस के सामने से	बातिल	उस के पास नहीं आता	41	ज़बरदस्त	अलबत्ता किताब है	और बेशक यह	वह आया उन के पास

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا

सिवाए	आप को	नहीं कहा जाता	42	सज़ावारे हम्द	हिक्मत वाले	से	नाज़िल किया गया	और न उस के पीछे से

مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ

और सज़ा देने वाला	बड़ी मग़फ़िरत वाला	आप (स) का रब	बेशक	आप (स) से क़ब्ल	रसूलों को	जो कहा जा चुका है

اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ

उस की आयतें	साफ़ बयान की गईं	क्यों न	तो वह कहते	अ़जमी (ज़बान का)	क़ुरआन (को)	और अगर हम बनाते उसे	43	दर्दनाक

ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

और शिफ़ा	हिदायत	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह- यह	फ़रमा दें	और अ़रबी (रसूल)	क्या अ़जमी (किताब)

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ

यह लोग	अन्धापन	उन पर	और वह-यह	गिरानी	उन के कानों में	ईमान नहीं लाए	और जो लोग

يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	44	दूर	किसी जगह	से	पुकारे जाते हैं

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

तो फ़ैसला हो चुका होता	आप (स) के रब की तरफ़ से	पहले ठहर चुकी	एक बात	और अगर न होती	उस में	तो इख़्तिलाफ़ किया गया

بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे	अ़मल किए	जो- जिस	45	तरद्दुद में डालने वाले शक में	उस से	ज़रूर शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान

فَلِنَفْسِهٖ ؕ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

46	अपने बन्दों पर	मुतलक़ ज़ुल्म करने वाला	आप (स) का रब	और नहीं	तो उस पर (उस का वबाल)	बुराई की	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

قرأ حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

ع ١٢ ١٩

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ

उस की तरफ़ लौटाया (हवाले किया) जाता है	क़ियामत का इल्म	और नहीं निकलता	कोई	फल (जमा)	से

اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ

उस के ग़िलाफ़ों (गाभों)	और नहीं हामिला होती है	कोई औरत	और न वह बच्चा जनती है	मगर	उस के इल्म में	और जिस दिन

يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ ﴿٤٧﴾

वह पुकारेगा उन्हें	कहां	मेरे शरीक	वह कहेंगे	इत्तिलाअ़ दे दी हम ने तुझे	नहीं हम से	कोई शाहिद	47

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ

और खोया गया	उन से	जो वह पुकारते थे	उस से क़ब्ल	और उन्हों ने समझ लिया	नहीं उन के लिए

مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ

कोई बचाओ (ख़लासी)	48	नहीं थकता	इन्सान	से	भलाई मांगने	और अगर	उसे लग जाए	बुराई

فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ

तो मायूस हो जाता है	नाउम्मीद	49	और अलबत्ता अगर	हम चखाएं उसे	रहमत	अपनी तरफ़ से	के बाद	किसी तक्लीफ़

مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ

जो उस को पहुँची	तो वह ज़रूर कहेगा	यह मेरे लिए	और मैं ख़याल नहीं करता	क़ियामत	क़ाइम होने वाली	और अलबत्ता अगर

رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ

मुझे लौटाया गया	अपने रब की तरफ़	बेशक	मेरे लिए	उस के पास	अलबत्ता भलाई	पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾ وَاِذَآ

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	उस से जो उन्हों ने किया (आमाल)	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें	से	एक अ़ज़ाब	सख़्त	50	और जब

اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ

हम इनआम करते हैं	इन्सान पर	वह मुँह मोड़ लेता है	और बदल लेता है	अपना पहलू	और जब	आ लगे उसे	बुराई

فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

तो दुआओं वाला	(लम्बी) चौड़ी	51	आप (स) फ़रमा दें	क्या तुम ने देखा	अगर हो	से	अल्लाह के पास

ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

फिर	तुम ने कुफ़्र किया उस से	कौन	बड़ा गुमराह	उस से जो	वह	में	ज़िद	दूर दराज़	52

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ

हम जल्द दिखा देंगे उन्हें अपनी आयात	अतराफ़े आ़लम में	और उन की ज़ात में	यहां तक	ज़ाहिर हो जाए	उन के लिए	कि यह

الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ

हक़	क्या काफ़ी नहीं	आप के रब के लिए	कि वह	पर-का	हर शै	शाहिद	53	ख़ूब याद रखो बेशक वह

ع ١٠ / ٦ / ١

فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾

शक में	मुलाक़ात से	अपना रब	याद रखो बेशक वह	हर शै पर-का	अहाता किए हुए	54

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औ़रत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगाः कहां हैं मेरे शरीक? वह कहेंगेः हम ने तुझे इत्तिलाअ़ दे दी कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं। (47) और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से क़ब्ल, और उन्हों ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं। (48) इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। (49) और अलबत्ता अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ़ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएं तो वह ज़रूर कहेगाः यह मेरे लिए है, और मैं ख़याल नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो बेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे एक अ़ज़ाब सख़्त। (50) और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। (51) आप (स) फ़रमा देंः क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह कुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़्र किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? (52) हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफ़े आ़लम में और (ख़ुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (कुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफ़ी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। (53) ख़ूब याद रखो! बेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! बेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
अ़यन-सीन-क़ाफ़। (2)
इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला। (3)
उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अ़ज़मत वाला है। (4)
क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और उन के लिए मग़्फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं, याद रखो! बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)
और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)
और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया क़ुरआन अ़रबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएं अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएं जमा होने के दिन से, कोई शक नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)
और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (9)
और जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ। (10)

آيَاتُهَا ٥٣ ❀ سُوْرَةُ الشُّوْرٰى (٤٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआ़त 5	(42) सूरतुश शूरा सलाह औ मशवरा	आयात 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۝١ عٓسٓقٓ ۝٢ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ

आप (स) से पहले	वह जो	और तरफ़	आप (स) की तरफ़	वहि फ़रमाता है	इसी तरह	2	अ़यन-सीन-क़ाफ़	1	हा-मीम

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ

और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसी के लिए	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٤ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗئِكَةُ

और फ़रिश्ते	उन के ऊपर से	फट पड़ें	आस्मानों (जमा)	क़रीब है	4	अ़ज़मत वाला	बुलन्द

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	याद रखो	ज़मीन में	उस के लिए जो	और वह मग़्फ़िरत तलब करते हैं	अपने रब की तारीफ़ के साथ	तस्बीह करते हैं

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ

अल्लाह	रफ़ीक़	उस के सिवा	ठहराते हैं	और जो लोग	5	मेहरबान	बख़्शने वाला	वह-वही

حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि किया	और उसी तरह	6	ज़िम्मेदार	उन पर	और आप (स) नहीं	निगरान उन पर (उन्हें देख रहा है)

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ

और आप (स) डराएं	उस के इर्द गिर्द	और जो	बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का)	ताकि आप (स) डराएं	अ़रबी ज़बान	क़ुरआन	आप (स) की तरफ़

يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧

7	दोज़ख़ में	और एक फ़रीक़	जन्नत में	एक फ़रीक़	उस में	नहीं शक	जमा होने का दिन

وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ

जिसे चाहता है	वह दाख़िल करता है	और लेकिन	एक उम्मत	ज़रूर बना देता उन्हें	चाहता अल्लाह	और अगर

فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨ اَمِ اتَّخَذُوْا

उन्हों ने ठहरा लिए	क्या	8	और न मददगार	कारसाज़	कोई	नहीं उन के लिए	और ज़ालिम (जमा)	अपनी रहमत में

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ

और वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और वही	वही कारसाज़	पस अल्लाह	कारसाज़ (जमा)	उस के सिवा

عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ ع ١ ٩ ٢

तो उस का फ़ैसला	किसी चीज़	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हो तुम	और जो-जिस	9	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर

اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠

10	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उस की तरफ़	भरोसा किया मैं ने	उस पर	मेरा रब	वही है अल्लाह	तरफ़-पास अल्लाह

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

जोड़े	तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से	तुम्हारे लिए	उस ने बनाए	और ज़मीन	पैदा करने वाला आस्मानों

وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ

और वह	कोई शै	उस के मिस्ल	नहीं	इस (दुनिया) में	वह फैलाता है तुम्हें	जोड़े	चौपायों	और से

السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

वह फ़राख़ करता है	और ज़मीन	आस्मानों	कुंजियां	उस के लिए (पास)	11	देखने वाला	सुनने वाला

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	उस ने मुक़र्रर किया	12	जानने वाला	हर शै का	बेशक वह	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (को)	हम ने वहि की	और वह जिस	नूह (अ)	उस का	उस ने जिस का हुक्म दिया	वही दीन

وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

दीन	कि तुम क़ाइम करो	और ईसा (अ)	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	उस का	और जिस का हुक्म दिया हम ने

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۭ اَللّٰهُ

अल्लाह	उस की तरफ़	जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं	मुश्रिकों पर	सख़्त	उस में	और तफ़र्रुक़ा न डालो तुम

يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا

और उन्हों ने तफ़र्रुक़ा न डाला	13	जो रुजूअ करता है	उस की तरफ़	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	अपनी तरफ़	चुन लेता है

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۭ وَلَوْ لَا

और अगर न	आपस की	ज़िद	इल्म	कि आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला कर दिया जाता	एक मुद्दते मुक़र्ररा	तक	आप के रब की तरफ़ से	गुज़र चुका होता	फ़ैसला

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾

14	तरद्दुद में डालने वाला	उस से	अलबत्ता वह शक में	उन के बाद	किताब के वारिस बनाए गए	जो लोग	और बेशक

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ ۚ

उन की ख़ाहिशात	और आप न चलें	जैसा कि मैं ने हुक्म दिया है आप (स) को	और क़ाइम रहें	आप बुलाएं	पस उसी के लिए

وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ

कि मैं इंसाफ़ करूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	से - हर किताब	नाज़िल की अल्लाह ने	उस पर जो	मैं ईमान ले आया	और कहें

بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ

तुम्हारे आमाल	और तुम्हारे लिए	हमारे आमाल	हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	अल्लाह	तुम्हारे दरमियान

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

15	बाज़गश्त (लौटना)	और उसी की तरफ़	हमारे दरमियान (हमें)	जमा करेगा	अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	कोई हुज्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान

आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस (दुनिया) में फैलाता है। उस के मिस्ल कोई शै नहीं, और वह सुनने वाला, देखने वाला। (11)
उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, वह रिज़्क़ फ़राख़ करता है जिस के लिए वह चाहता है (और जिस पर चाहे) तंग कर देता है, बेशक वह हर शै का जानने वाला। (12)
उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया है जिस के क़ाइम करने का उस ने हुक्म दिया था नूह (अ) को और जिस की हम ने आप (स) की तरफ़ वहि की, और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) और ईसा (अ) को दिया था कि तुम दीन क़ाइम करो और उस में तफ़र्रुक़ा न डालो, वह मुश्रिकों पर गरां गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स) उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी तरफ़ (अपने क़ुर्ब के लिए) जिस को चाहता है चुन लेता है। और जो उस की तरफ़ रुजूअ करता है उसे अपनी तरफ़ से हिदायत देता है। (13)
और उन्हों ने तफ़र्रुक़ा न डाला मगर उस के बाद कि उन के पास इल्मे (वहि) आ गया आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आप (स) के रब की तरफ़ से एक मुद्दते मुक़र्ररा तक मोहलत देने का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और बेशक जो लोग उन के बाद किताब के वारिस बनाए गए अलबत्ता वह उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (14)
पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं और (उस पर) क़ाइम रहें जैसा कि मैं ने आप को हुक्म दिया है और आप (स) उन की ख़ाहिशात पर न (चलें), और कहें कि मैं ईमान ले आया हर किताब पर जो अल्लाह ने नाज़िल की और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी की तरफ़ बाज़गश्त है। (15)

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ

उन की हुज्जत	कि क़ुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को	उस के बाद	अल्लाह के बारे में	झगड़ा करते हैं	और जो लोग

دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

16	सख़्त	अ़ज़ाब	और उन के लिए	ग़ज़ब	और उन पर	उन का रब	हां	लगू

اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ

तुझे ख़बर	और क्या	और मीज़ान	हक़ के साथ	किताब	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह

لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	उस की	वह जल्दी मचाते हैं	17	क़रीब	क़ियामत	शायद

بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ

हक़	कि यह	और वह जानते हैं	उस से	वह डरते हैं	ईमान लाए	और जो लोग	उस पर

اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾

18	दूर	अलबत्ता गुमराही में	क़ियामत के बारे में	झगड़ते हैं	बेशक जो लोग	याद रखो

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ ع ٢ ع١٠ ٣

19	ग़ालिब	क़वी	और वह	जिस को चाहे	वह रिज़्क़ देता है	अपने बन्दों पर	मेहरबान	अल्लाह

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ

और जो	खेती में उस की	हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए	आख़िरत	खेती	चाहता है	जो शख़्स

كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और नहीं उस के लिए	उस में से	हम उसे देते हैं	दुनिया की खेती	चाहता है

مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ

दीन	से - ऐसा	उन के लिए	उन्हों ने मुक़र्रर किया	कुछ शरीक (जमा)	क्या उन के लिए	20	कोई हिस्सा

مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	एक क़ौले फ़ैसल	और न अगर	अल्लाह	उस की	इजाज़त दी	जो - जिस नहीं

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों	तुम देखोगे	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	ज़ालिमों	और बेशक

مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	उन पर	वाक़े होने वाला	और वह	उस से जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	डरते होंगे

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ

उन के लिए	जन्नतों	बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

22	बड़ा	फ़ज़्ल	वह - यही	यह	उन के रब के हां	जो वह चाहेंगे

और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को क़ुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (क़ुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लगू (बेसबात) है और उन पर ग़ज़ब है, और उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (16)
अल्लाह है जिस ने किताब हक़ के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत क़रीब हो। (17)
उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक़ है, याद रखो! बेशक जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। (18)
अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है, और वह क़वी, ग़ालिब है। (19)
जो शख़्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। (20)
या उन के कुछ शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक क़ौले फ़ैसल न होता तो उन के दरमियान (यहीं) फ़ैसला हो जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (21)
तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के वबाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, वह जन्नतों के बाग़ात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़्ल। (22)

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

यही	वह जिस	अल्लाह बशारत देता है	अपने बन्दे	वह जो ईमान लाए	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए

قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ

फ़रमा दें	मैं तुम से नहीं मांगता	इस पर	कोई अजर	सिवाए	मुहब्बत	क़राबतदारी में - की	और जो	कमाएगा

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

कोई नेकी	हम बढ़ा देंगे उस के लिए	उस में	खूबी	बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला	क़द्र दान	23	क्या	वह कहते हैं

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ

उस ने बाँधा	अल्लाह पर	झूट	सो अगर	चाहता अल्लाह	वह मुहर लगा देता	तुम्हारे दिल पर	और मिटाता है

اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾

अल्लाह	बातिल	और साबित करता है	हक़	अपने कलिमात से	बेशक वह	जानने वाला	दिलों की बातों को	24

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

और वही	जो क़ुबूल फ़रमाता है	तौबा	अपने बन्दों से	और माफ़ कर देता है	से - को	बुराइयां

وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ۙ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और वह जानता है	जो तुम करते हो	25	और क़ुबूल करता है	वह जो ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए	अच्छे

وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ

और उन को ज़ियादा देता है	अपने फ़ज़्ल से	और काफ़िरों	उन के लिए	अ़ज़ाब	सख़्त	26	और अगर

بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ

कुशादा कर देता अल्लाह	रिज़्क़	अपने बन्दों के लिए	तो वह सरकशी करते	ज़मीन में	और लेकिन	वह उतारता है	अन्दाज़े से

مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ

जिस क़द्र वह चाहता है	बेशक वह	अपने बन्दों से	बाख़बर	देखने वाला	27	और वही	वह जो	नाज़िल फ़रमाता है	बारिश

مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾

बाद	जब वह मायूस हो गए	और फैलाता है	अपनी रहमत	और वही	कारसाज़	सतूदा सिफ़ात	28

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ

और से	उस की निशानियां	पैदा करना	आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उस ने फैलाए	उन के दरमियान	चौपाए

ع ٣ ١٠ ٤ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا

और वह	उन के जमा करने पर	जब वह चाहे	क़ुदरत रखने वाला	29	और जो पहुँची तुम्हें	कोई मुसीबत	तो उस के सबब जो

كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ

कमाया	तुम्हारे हाथों	और माफ़ फ़रमा देता है	बहुत से	30	और नहीं	तुम	आ़जिज़ करने वाले

فِى الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾

ज़मीन में	और नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	कोई कारसाज़	और न कोई मददगार	31

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख़्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में खूबी बढ़ा देंगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, क़द्र दान है। (23)

क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक़ को साबित करता है अपने कलिमात से, बेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24)

और वही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25)

और वह (उन की दुआएं) क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और वह उन को अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (26)

और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस क़द्र चाहता है उतारता है, बेशक वह अपने बन्दों (की ज़रुरतों) से बाख़बर देखने वाला है। (27)

और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो बारिश नाज़िल फ़रमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28)

और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर क़ुदरत रखता है। (29)

और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30)

और तुम ज़मीन में (अल्लाह तआ़ला को) आजिज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32) अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सत्ह पर वह खड़े हुए रह जाएं, बेशक उस में निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33) या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34) और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35) पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियवी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36) और जो लोग बचते है बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने क़ुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और उन का काम बाहम मश्वरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (38) और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई ज़ुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39) और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इस्लाह (दुरुस्ती) कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40) और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41) इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (42) और अलबत्ता जिस ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمِنۡ اٰيٰتِهِ الۡجَوَارِ فِى الۡبَحۡرِ كَالۡاَعۡلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنۡ يَّشَاۡ يُسۡكِنِ الرِّيۡحَ

हवा	वह ठहरा दे	अगर वह चाहे	32	पहाड़ों जैसे	समन्दर में	जहाज़	और उस की निशानियों से

فَيَظۡلَلۡنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّـكُلِّ صَبَّارٍ

हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	बेशक उस में	उस की पीठ (सतह) पर	खड़े हुए	तो वह रह जाएं

شَكُوۡرٍ ﴿٣٣﴾ اَوۡ يُوۡبِقۡهُنَّ بِمَا كَسَبُوۡا وَيَعۡفُ عَنۡ كَثِيۡرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعۡلَمَ

और जान लें	34	बहुतों को	और माफ़ कर दे	उन के आमाल के सबब	वह उन्हें हलाक कर दे	या	33	शुक्र करने वाले

الَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِىۡۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمۡ مِّنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ

पस जो कुछ दी गई तुम्हें	35	ख़लासी	कोई	नहीं उन के लिए	हमारी आयात में	झगड़ते हैं	वह लोग जो

مِّنۡ شَىۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى

और हमेशा बाक़ी रहने वाला	बेहतर	अल्लाह के पास	और जो	दुनियवी ज़िन्दगी	तो फ़ाइदा	कोई शै

لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيۡنَ يَجۡتَنِبُوۡنَ

वह बचते हैं	और जो लोग	36	वह भरोसा करते हैं	और अपने रब पर वह	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए

كَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَالۡفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوۡا هُمۡ يَغۡفِرُوۡنَ ﴿٣٧﴾

37	वह माफ़ कर देते हैं	वह गुस्से में होते हैं	और जब	और बेहयाइयां	कबीरा (बड़े) गुनाह

وَالَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۖ وَاَمۡرُهُمۡ شُوۡرٰى

मश्वरा	और उन का काम	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की	अपने रब का (फ़रमान)	क़ुबूल किया	और जिन लोगों ने

بَيۡنَهُمۡ ۖ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيۡنَ اِذَاۤ اَصَابَهُمُ

उन्हें पहुँचे	जब	और जो लोग	38	वह ख़र्च करते हैं	हम ने अ़ता किया उन्हें	और उस से जो	बाहम

الۡبَغۡىُ هُمۡ يَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿٣٩﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ

उस जैसी	बुराई	बुराई	और बदला	39	बदला लेते हैं	वह	कोई ज़ुल्म ओ तअ़द्दी

فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤٠﴾

40	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	अल्लाह पर-ज़िम्मे	तो उस का अजर	और इस्लाह कर दी	माफ़ कर दिया	सो जिस

وَلَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ ظُلۡمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيۡهِمۡ

नहीं उन पर	सो यह लोग	अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद	उस ने बदला लिया	और अलबत्ता-जिस

مِّنۡ سَبِيۡلٍ ﴿٤١﴾ اِنَّمَا السَّبِيۡلُ عَلَى الَّذِيۡنَ يَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ

लोग	वह ज़ुल्म करते हैं	वह लोग जो	पर	राह (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं	41	कोई राह

وَيَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ

उन के लिए	यही लोग	नाहक़	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنۡ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿٤٣﴾ ع ٤ ٥

43	बड़ी हिम्मत के काम	अलबत्ता-से	बेशक यह	और माफ़ कर दिया	सब्र किया	और अलबत्ता-जिस	42	दर्दनाक अ़ज़ाब

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	और तुम देखोगे	उस के बाद	कोई कारसाज़	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस को

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ

और तू देखेगा उन्हें	44	कोई राह	लौटना	तरफ़-का	क्या	वह कहेंगे	अज़ाब	वह देखेंगे	जब

يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ

गोशाए चश्म पोशीदा (नीम कुशादा)	से	वह देखते होंगे	ज़िल्लत से	आजिज़ी करते हुए	उस (दोज़ख़) पर	पेश किए जाएंगे वह

وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ

और अपना घराना	अपने आप को	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	ख़सारा पाने वाले	बेशक	जो ईमान लाए (मोमिन)	और कहेंगे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं हैं	45	हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब	में	ज़ालिम (जमा)	ख़ूब याद रखो! बेशक	रोज़े क़ियामत

مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	अल्लाह के सिवा	वह मदद दें उन्हें	कोई कारसाज़

مِنْ سَبِيْلٍ ؕ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

उस के लिए	फेरने वाला नहीं	वह दिन	कि आए	इस से क़ब्ल	अपने रब का (फ़रमान)	तुम क़ुबूल कर लो	46	कोई रास्ता

مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

वह मुँह फेर लें	फिर अगर	47	कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला)	और नहीं तुम्हारे लिए	उस दिन	पनाह	कोई	नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह से

فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا

चखाते हैं हम	जब	और बेशक	पहुँचाना	सिवा	आप पर-ज़िम्मे	नहीं	निगहबान	उन पर	हम ने भेजा तुम्हें	तो नहीं

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	उस के बदले	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	ख़ुश हो जाता है उस से	रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान

اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	अल्लाह के लिए बादशाहत	48	बड़ा नाशुक्रा	तो बेशक इन्सान	उन के हाथों

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

49	बेटे	जिस के लिए वह चाहता है	और अ़ता करता है	बेटियां	जिस के लिए वह चाहता है	वह अ़ता करता है	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

जानने वाला	बेशक वह	बाँझ	जिस को वह चाहता है	और कर देता है	और बेटियां	बेटे	जमा कर देता है उन्हें	या

قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ

पीछे से	या	मगर वहि से	कि उस से कलाम करे अल्लाह	किसी बशर को	और नहीं है	50	क़ुदरत रखने वाला

حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

51	हिक्मत वाला	बुलन्द तर	बेशक वह	जो वह चाहे	उस के हुक्म से	पस वह वहि करे	कोई फ़रिश्ता	या वह भेजे	एक पर्दा

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अ़ज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगे: क्या लौटने की कोई राह है? (44)
और तू देखेगा जब वह आजिज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख़ पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगे: ख़सारा पाने वाले वह हैं जिन्हों ने ख़सारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! ज़ालिम बेशक हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब में होंगे। (45)
और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज़ जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46)
तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़ब्ल क़ुबूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिब) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47)
फिर अगर वह मुँह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के ज़िम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से ख़ुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48)
अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अ़ता करता है जिस को वह चाहे बेटियां, और वह अ़ता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे। (49)
या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियां, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेऔलाद) कर देता है, बेशक वह जानने वाला क़ुदरत रखने वाला है। (50)
और किसी बशर की (मजाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या पर्दे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), बेशक वह बुलन्द तर, हिक्मत वाला है। (51)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ अपने हुक्म से क़ुरआन को वहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफ़सील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और बेशक आप (स) ज़रूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ़। **(52)**
(यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, याद रखें! तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। **(53)**
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। **(1)**
क़सम है वाज़ेह किताब की। **(2)**
बेशक हम ने उसे बनाया अरबी ज़बान में क़ुरआन, ताकि तुम समझो। **(3)**
और बेशक वह (क़ुरआन) हमारे पास लौहे महफ़ूज़ में है, बुलन्द मरतबा, बाहिक्मत। **(4)**
क्या हम यह नसीहत तुम से एराज़ कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। **(5)**
और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। **(6)**
और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे। **(7)**
पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुज़र चुकी है पहले लोगों की मिसाल। **(8)**
और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "उन्हें पैदा किया है ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने"। **(9)**
वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। **(10)**
और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से ज़िन्दा किया मुर्दा ज़मीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। **(11)**

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ط مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ

क्या है किताब	तुम न जानते थे	अपने हुक्म से	क़ुरआन	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	और उसी तरह

وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ط

अपने बन्दों में से	जिस को हम चाहते हैं	हम हिदायत देते हैं उस से	नूर	हम ने बना दिया उसे	और लेकिन	और न ईमान

وَاِنَّكَ لَتَهْدِىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾ لا صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا

जो कुछ	वह जिस के लिए	रास्ता अल्लाह का	52	सीधा	रास्ता	तरफ़	ज़रूर रहनुमाई करते हो	और बेशक तुम

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ط اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾ ع ع ٦

53	तमाम काम	बाज़गश्त	अल्लाह की तरफ़	याद रखें	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

آيَاتُهَا ٨٩ ❀ سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ (٤٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 | (43) सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़ चमक-दमक | आयात 89

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ ج وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ لا اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ عدد المتقدمين ١٢ ع ١١

ताकि तुम	अरबी ज़बान	क़ुरआन	हम ने इसे बनाया	बेशक हम	2	वाज़ेह	क़सम है किताब	1	हा-मीम

تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾ ج وَاِنَّهٗ فِىْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِىٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾ ط اَفَنَضْرِبُ

क्या हम हटा लें	4	बाहिक्मत	बुलन्द मरतबा	हमारे पास	असल किताब (लौहे महफ़ूज़)	में	और बेशक वह	3	समझो

عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا

और कितने ही भेजे हम ने	5	हद से गुज़रने वाले	लोग	तुम हो	कि	एराज़ कर के	नसीहत	तुम से

مِنْ نَّبِىٍّ فِى الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِىٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

उस से	वह थे	मगर	कोई नबी	और नहीं आया उन के पास	6	पहले लोगों में	नबी

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ

मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़	उन से	सख़्त	पस हम ने हलाक किया	7	मज़ाक़ करते

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ

तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	किस	तुम उन से पूछो	और अगर	8	पहले लोग

خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٩﴾ لا الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا

फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस	9	इल्म वाला	ग़ालिब	उन्हें पैदा किया

وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ ج وَالَّذِىْ نَزَّلَ

उतारा	और वह जिस	10	तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते-सबील	उस में	तुम्हारे लिए	और बनाए

مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ج فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ج كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١١﴾

11	तुम निकाले जाओगे	उसी तरह	मुर्दा ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया हम ने	एक अंदाज़े से	पानी	आस्मान से

وَالَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ

और चौपाए	कश्तियां	तुम्हारे लिए	और बनाई	उन सब के	जोड़े	पैदा किए	और वह जिस

مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا

जब	अपना रब	नेमत	तुम याद करो	फिर	उन की पीठों पर	ताकि तुम ठीक बैठो	12	तुम सवार होते हो	जिस

اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا

और न थे हम	इस	मुसख़्ख़र किया हमारे लिए	वह ज़ात जिस	पाक है	और तुम कहो	उस पर	तुम ठीक बैठ जाओ

لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ

उस के लिए	उन्हों ने बना लिया	14	ज़रूर लौट कर जाने वाले	अपना रब	तरफ़	और बेशक हम	13	क़ाबू में लाने वाले	इस को

ع ۱۵ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ

उस से जो उस ने पैदा किया	क्या उस ने बना लीं	15	खुले तौर पर	नाशुक्रा	बेशक इन्सान	हिस्सा (लख़्ते जिगर)	उस के बन्दों में से

بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿۱۶﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ

उस ने बयान की	उस की जो	उन में से एक	ख़ुशख़बरी दी जाए	और जब	16	बेटों के साथ	और तुम्हें मख़सूस किया	बेटियां

لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا

पर्वरिश पाए	किया जो	17	ग़मगीन	और वह	सियाह	हो जाता है उस का चेहरा	मिसाल	रहमान (अल्लाह) के लिए

فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿۱۸﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ

फ़रिश्ते	और उन्हों ने ठहरा लिया	18	ग़ैर वाज़ेह	झगड़े (बहस मुबाहसा) में	और वह	ज़ेवर में

الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ

अभी लिख लिया जाएगा	उन की पैदाइश	क्या तुम मौजूद थे	औरतें	रहमान (अल्लाह के) बन्दे	वह	वह जो

شَهَادَتُهُمْ وَيُسْــَٔلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ

हम न इबादत करते उन की	रहमान (अल्लाह)	अगर चाहता	और वह कहते हैं	19	और उन से पूछा जाएगा	उन की गवाही (दावा)

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

हम ने दी उन्हें	क्या	20	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कुछ इल्म	उस का	उन्हें नहीं

كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿۲۱﴾ بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ

बेशक हम ने पाया	वह कहते हैं	बल्कि	21	थामे हुए हैं	सो वह उस को	इस से क़ब्ल	कोई किताब

اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ

और उसी तरह	22	राह पाने वाले (चल रहे हैं)	उन के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा

مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ

उस के ख़ुशहाल	कहा	मगर	कोई डर सुनाने वाला	किसी बस्ती में	इस से पहले	नहीं भेजा हम ने

اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿۲۳﴾

23	पैरवी करते हैं	उन के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा	बेशक हम ने पाया

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं कश्तियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)
ताकि तुम उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहोः पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया और हम इस को क़ाबू में लाने वाले न थे। (13)
और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले हैं। (14)
और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज़ (लख़्ते जिगर), बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। (15)
क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मख़सूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)
और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की ख़ुशख़बरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह ग़म से भर जाता है। (17)
क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुबाहसा में ग़ैर वाज़ेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)
और उन्हों ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के वक़्त) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और क़ियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)
और वह कहते हैंः अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20)
क्या हम ने उन्हें उस से क़ब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिद्लाल करते हैं)। (21)
बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)
और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी बस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के ख़ुशहाल लोगों ने कहा, बेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا

बेशक हम	वह बोले	अपने बाप दादा	उस पर	तुम ने पाया	उस से जिस	बेहतर राह बताने वाला	क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	(नबी ने) कहा

بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

हुआ	कैसा	सो देखो	उन से	तो हम ने बदला लिया	24	इन्कार करने वाले	जिस के साथ तुम भेजे गए	उस पर

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِىْ ع ٢ ٨ النصف

बेशक मैं	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	25	झुटलाने वालों का	अन्जाम

بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ لا اِلَّا الَّذِىْ فَطَرَنِىْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

27	जल्द मुझे हिदायत देगा	तो बेशक वह	मुझे पैदा किया	मगर वह जिस ने	26	उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो	बेज़ार

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

बल्कि मैं ने सामाने ज़ीस्त दिया	28	रुजूअ़ करते रहें	ताकि वह	अपनी नस्ल में	बाक़ी रहने वाली	बात	और उस ने किया उस को

هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا

और जब	29	साफ़ साफ़ बयान करने वाला	और रसूल	हक़ (क़ुरआन)	आ गया उन के पास	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	उन को

جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا

और वह बोले	30	इन्कार करने वाले	इस का	और बेशक हम	जादू	यह	वह कहने लगे	हक़	आ गया उन के पास

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ

क्या वह	31	बड़े	दो बस्तियां	से	किसी आदमी पर	यह क़ुरआन	क्यों न उतारा गया

يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	उन की रोज़ी	उन के दरमियान	हम ने तक़सीम की	हम	तुम्हारा रब	रहमत	तक़सीम करते हैं

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में से बाज़ (एक) दूसरे को	ताकि बनाए	दरजे	बाज़ (दूसरे) पर	उन में से बाज़ (एक)	और हम ने बुलन्द किए

سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْ لَا

और अगर (यह) न होता	32	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और तुम्हारे रब की रहमत	ख़िदमतगार

اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ

रहमान (अल्लाह) का	उनके लिए जो कुफ़्र करते हैं	तो हम बनाते	एक उम्मत (तरीक़ा)	तमाम लोग	कि हो जाएंगे

لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ لا وَلِبُيُوْتِهِمْ

उन के घरों के लिए	33	वह चढ़ते	जिन पर	और सीढ़ियां	चाँदी से-की	छत	उनके घरों के लिए

اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ لا وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا

मगर	यह सब	और नहीं	और आराइश करते	34	वह तकिया लगाते	जिन पर	और तख़्त	दरवाज़े

مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾ ع ع ٣ ٩

35	परहेज़गारों के लिए	तुम्हारे रब के नज़दीक	और आख़िरत	दुनिया की ज़िन्दगी	पूंजी

नबी (स) ने कहाः क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक़ लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया? वह बोलेः बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। **(24)**
तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? **(25)**
और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी क़ौम को कहाः बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस की तुम परस्तिश करते हो, **(26)**
मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो बेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। **(27)**
और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाक़ी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूअ़ करते रहें। **(28)**
बल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़ीस्त दिया, यहां तक कि उन के पास क़ुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। **(29)**
और जब उन के पास हक़ आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और बेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। **(30)**
और वह बोले कि यह क़ुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बस्तियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? **(31)**
क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तक़सीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तक़सीम की है, और हम ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को ख़िदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। **(32)**
और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीक़े पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़्र करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियां जिन पर वह चढ़ते हैं **(33)**
और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। **(34)**
और (ख़ूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक आख़िरत परहेज़गारों के लिए है। **(35)**

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

36	साथी	उस का	तो वह	एक शैतान	हम मुक़र्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए	रहमान (अल्लाह) की याद	से	ग़फ़लत करे	और जो

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	हिदायत याफ़्ता	कि वह	और वह गुमान करते हैं	रास्ते से	अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें	और बेशक वह

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ

मश्रिक़ ओ मग़्रिब	दूरी	और तेरे दरमियान	मेरे दरमियान	ऐ काश	वह कहेगा	वह आएंगे हमारे पास	जब	यहां तक कि

فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

अ़ज़ाब में	यह कि तुम	जब ज़ुल्म कर चुके तुम ने	आज	और हरगिज़ नफ़ा न देगा तुम्हें	38	साथी	तू बुरा

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ

और जो हो	अँधों	या राह दिखाएंगे	बहरों	सुनाएंगे	तो क्या आप (स)	39	मुशतरिक हो

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

41	इन्तिक़ाम लेने वाले	उन से	तो बेशक हम	आप (स) को	ले जाएं	फिर अगर	40	सरीह गुमराही	में

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ

पस आप (स) मज़बूती से थाम लें	42	क़ुदरत रखने वाले (क़ादिर) हैं	उन पर	तो बेशक हम	हम ने वादा किया उन से	वह जो	या हम दिखादें तुम्हें

بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ

नसीहत (नामा)	और बेशक यह	43	सीधा	रास्ता	पर	बेशक आप (स)	आप (स) की तरफ़	वहि किया गया	वह जो

لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	जो	और पूछ लें	44	तुम से पूछा जाएगा	और अ़नक़रीब	और आप (स) की क़ौम के लिए	आप (स) के लिए

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

कोई माबूद	रहमान (अल्लाह) के सिवा	से	क्या हम ने मुक़र्रर किए	हमारे रसूलों में से	आप (स) से पहले

ع ١٠ / ١٠

يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन	तरफ़	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	45	उन की इबादत के लिए

فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ

वह	नागहां	हमारी निशानियों के साथ	वह आया	फिर जब	46	तमाम जहानों का परवरदिगार	बेशक मैं रसूल	तो उस ने कहा

مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا

उस की बहन (दूसरी निशानी)	से	बड़ी	मगर वह	कोई निशानी	और हम उन्हें दिखाते थे	47	उस से (उन निशानियों पर) हँसने लगे

وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ

ऐ	और उन्हों ने कहा	48	वह रुजूअ़ करें	ताकि वह	अ़ज़ाब में	और हम ने गिरफ़्तार किया उन्हें

السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता हिदायत पाने वाले	बेशक हम	तेरे पास	उस अ़हद के सबब जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	जादूगर

और जो कोई अल्लाह की याद से ग़फ़लत करे, हम मुसल्लत कर देते हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह उस का साथी हो जाता है। (36)
और बेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते से रोकते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह हिदायत याफ़्ता हैं। (37)
यहां तक कि जब वह हमारे पास आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी से) कहेगा: ऐ काश मेरे और तेरे दरमियान मश्रिक़ ओ मग़्रिब की दूरी होती, तू बुरा साथी निकला। (38)
और जब कि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज तुम्हें यह हरगिज़ नफ़ा न देगा कि तुम अ़ज़ाब में मुशतरिक हो। (39)
तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस को जो सरीह गुमराही में हो। (40)
फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया से) ले जाएं तो बेशक हम (फिर भी) उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (41)
या हम आप (स) को दिखा दें वह जो हम ने उन से वादा किया है तो बेशक हम उन पर क़ादिर हैं। (42)
पस आप (स) वह मज़बूती से थाम लें जो आप (स) की तरफ़ वहि किया गया है, बेशक आप (स) सीधे रास्ते पर हैं। (43)
और बेशक यह (क़ुरआन) एक नसीहत नामा है आप (स) के लिए और आप (स) की क़ौम के लिए। और अ़नक़रीब तुम से पूछा जाएगा। (44)
आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें जो हम ने आप से पहले भेजे: क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई माबूद मुक़र्रर किए थे जिन की इबादत की जाए। (45)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, तो उस ने कहा: बेशक मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ। (46)
फिर जब वह हमारी निशानियों के साथ उन के पास आया तो नागहां वह उन निशानियों पर हँसने लगे। (47)
और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी से बड़ी होती, हम ने उन्हें अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि वह (हक़ की तरफ़) रुजूअ़ करें। (48)
और उन्हों ने कहा: ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो तेरे पास है, बेशक हम हिदायत पाने वाले हैं (हिदायत पा लेंगे)। (49)

فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُمُ الۡعَذَابَ اِذَا هُمۡ يَنۡكُثُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرۡعَوۡنُ

फ़िरऔन	और पुकारा	50	अहद तोड़ गए	नागहां वह	अज़ाब	उन से	हम ने खोला (हटा दिया)	फिर जब

فِىۡ قَوۡمِهٖ قَالَ يٰقَوۡمِ اَلَيۡسَ لِىۡ مُلۡكُ مِصۡرَ وَهٰذِهِ الۡاَنۡهٰرُ

नहरें	और यह	मिस्र की बादशाहत	क्या नहीं मेरे लिए	उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम	में

تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِىۡ ۚ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿٥١﴾ اَمۡ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ هُوَ

वह	वह जो	उस से	बेहतर	क्या- बल्कि मैं	51	देखते तुम	तो क्या नहीं	मेरे नीचे से	जारी हैं

مَهِيۡنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيۡنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوۡلَاۤ اُلۡقِىَ عَلَيۡهِ اَسۡوِرَةٌ مِّنۡ ذَهَبٍ

सोने के	कंगन	उस पर	डाले गए	तो क्यों न	52	साफ़ गुफ़्तगू करता	और वह मालूम नहीं होता	कम क़द्र

اَوۡ جَآءَ مَعَهُ الۡمَلٰٓئِكَةُ مُقۡتَرِنِيۡنَ ﴿٥٣﴾ فَاسۡتَخَفَّ قَوۡمَهٗ فَاَطَاعُوۡهُ ؕ

तो उन्हों ने उस की इताअत की	अपनी क़ौम	पस उस ने बेअक़्ल कर दिया	53	परा बान्ध कर	फ़रिश्ते	उस के साथ	या आए

اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوۡنَا انۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ

पस हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	उन से	हम ने इन्तिक़ाम लिया	उन्हों ने गुस्सा दिलाया हमें	फिर जब	54	नाफ़रमान	लोग	थे	बेशक वह

اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٥٥﴾ ۙ فَجَعَلۡنٰهُمۡ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلۡاٰخِرِيۡنَ ﴿٥٦﴾ ع وَلَمَّا ضُرِبَ ع ١١ / ١١

बयान की गई	और जब	56	बाद में आने वाले	पेश रो (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान)	तो हम ने कर दिया उन्हें	55	सब

ابۡنُ مَرۡيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوۡمُكَ مِنۡهُ يَصِدُّوۡنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوۡۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيۡرٌ

बेहतर	क्या हमारे माबूद	और वह बोले	57	उस से (ख़ुशी से) चिल्लाने लगते हैं	यका यक तुम्हारी क़ौम	मिसाल	ईसा इब्ने मरयम

اَمۡ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوۡهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٌ خَصِمُوۡنَ ﴿٥٨﴾ اِنۡ هُوَ

नहीं वह (ईसा अ)	58	झगड़ालू	लोग	बल्कि वह	मगर (सिर्फ़) झगड़ने को	तुम्हारे लिए	नहीं वह बयान करते उस को	या वह

اِلَّا عَبۡدٌ اَنۡعَمۡنَا عَلَيۡهِ وَجَعَلۡنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿٥٩﴾ ؕ وَلَوۡ نَشَآءُ

और अगर हम चाहते	59	बनी इस्राईल के लिए	एक मिसाल	और हम ने बनाया उस को	उस पर	हम ने इन्आम क्या	एक बन्दा	सिर्फ़

لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِى الۡاَرۡضِ يَخۡلُفُوۡنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ

एक निशानी	और बेशक वह	60	वह (तुम्हारे) जांनशीन होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	तुम में से	अलबत्ता हम करते

لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦١﴾

61	सीधा	रास्ता	यह	और मेरी पैरवी करो	उस में	तो हरगिज़ शक न करो तुम	क़ियामत की

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا

और जब	62	दुश्मन खुला	तुम्हारे लिए	बेशक वह	शैतान	और रोक न दे तुम्हें

جَآءَ عِيۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ

और इस लिए कि बयान कर दूँ	हिक्मत के साथ	तहक़ीक़ मैं आया हूँ तुमहारे पास	उस ने कहा	खुली निशानियों के साथ	ईसा (अ)	आए

لَكُمۡ بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿٦٣﴾

63	और मेरी इताअत करो	सो डरो अल्लाह से	उस में	तुम इख़्तिलाफ़ करते हो	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए

फिर जब हम ने उन से अज़ाब हटा दिया तो नागहां वह अहद तोड़ गए। (50)

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51)

बल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम क़द्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52)

तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फ़रिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53)

पस उस ने अपनी क़ौम को बेअक़्ल कर दिया, तो उन्हों ने उस की इताअत की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54)

फिर जब उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (55)

तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56)

और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी क़ौम उस से ख़ुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57)

वह बोलेः क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि वह तो हैं ही झगड़ालू। (58)

ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे हैं, हम ने इन्आम किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59)

और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जांनशीन होते। (60)

और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61)

और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62)

और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्हों ने कहाः तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह बाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (63)

إِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

64	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	वह	बेशक अल्लाह

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों के लिए	सो ख़राबी	आपस में	गिरोह (जमा)	फिर इख़्तिलाफ़ डाल लिया

مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

वह उन पर आ जाए	कि	क़ियामत	सिर्फ़	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	65	दिन दुख देने वाला	अ़ज़ाब से

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

बाज़ से (एक)	उन के बाज़ (दूसरे)	उस दिन	तमाम दोस्त	66	शऊर न रखते हूँ	और वह	अचानक

ع ٦ ١١ ١٢

عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ

और न तुम	आज	तुम पर	कोई ख़ौफ़ नहीं	ऐ मेरे बन्दो	67	परहेज़गारों	सिवा	दुश्मन

تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا

तुम दाख़िल हो जाओ	69	मुसलिम (जमा)	और वह थे	हमारी आयात पर	जो ईमान लाए	68	ग़मगीन होंगे

الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ

रिकाबियां	उन पर	लिए फिरेंगे	70	तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे	और तुम्हारी बीवियां	तुम	जन्नत

مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ

और लज़्ज़त होगी	जी (जमा)	वह जो चाहेंगे	और उस में	और आबख़ोरे	सोने की

الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا

तुम वारिस बनाए गए उस के	वह जिस	जन्नत	और यह	71	हमेशा रहोगे	उस में	और तुम	आँखों

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ

बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	72	जो तुम करते थे	उस के बदले

مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	हमेशा रहेंगे	अ़ज़ाबे जहन्नम	में	मुज्रिम (जमा)	बेशक	73	तुम खाते हो	उस से

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ

और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	75	नाउम्मीद पड़े रहेंगे	और वह उस में	उन से	हल्का न किया जाएगा

وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا

अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी)	ऐ मालिक	और वह पुकारेंगे	76	ज़ालिम (जमा)	वह	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

رَبُّكَ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ

लेकिन	हक़ के साथ	तहक़ीक़ हम आए तुम्हारे पास	77	हमेशा रहने वाले	बेशक तुम	वह कहेगा	तेरा रब

اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ठहराने वाले	तो बेशक हम	कोई बात	उन्हों ने ठहरा ली	क्या	78	नापसंद करने वाले	हक़ से - को	तुम में से अक्सर

बेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64)
फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए ख़राबी है जिन्हों ने ज़ुल्म किया, अ़ज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65)
क्या वह सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हूँ। (66)
परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67)
ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज के दिन और न तुम ग़मगीन होंगे। (68)
जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे। (69)
तुम दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां जन्नत में, तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे। (70)
उन पर सोने की रिकाबियां और आबख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़्ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71)
और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72)
तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73)
बेशक मुज्रिम जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74)
उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75)
और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76)
और वह पुकारेंगे ए मालिक (दारोग़ाए जहन्नम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगाः बेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77)
तहक़ीक़ हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसंद करने वाले थे। (78)
क्या उन्हों ने कोई बात ठहरा ली है तो बेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। **(80)**
आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। **(81)**
आस्मानों और ज़मीन का रब, अ़र्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। **(82)**
पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। **(83)**
और वही जो आस्मानों में माबूद है और ज़मीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। **(84)**
और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है क़ियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(85)**
और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। **(86)**
और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने" तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? **(87)**
क़सम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। **(88)**
तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अन्जाम) जान लेंगे। **(89)**
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। **(1)**
क़सम है वाज़ेह किताब की। **(2)**
बेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, बेशक हम ही हैं डराने वाले। **(3)**
उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। **(4)**

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ

उन के पास	और हमारे फ़रिश्ते	हाँ	और उन की सरगोशियां	उन की पोशीदा बातें	हम नहीं सुनते	कि हम	क्या वह गुमान करते हैं

يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

81	इबादत करने वाला	पहला	तो मैं	कोई बेटा	रहमान (अल्लाह का)	अगर होता	फ़रमा दें	80	लिखते हैं

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह बयान करते हैं	उस से जो	अ़र्श का रब	और ज़मीन	आस्मानों का रब	पाक है

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

83	उन को वादा किया जाता है	वह जिस	उस दिन को	वह पा लें	यहां तक	और खेलें	वह बेहूदा बातें करें	पस छोड़ दें उन को

وَهُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِى الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ

हिक्मत वाला	और वही	माबूद	और ज़मीन में	माबूद	आस्मानों में	वह जो	और वही

الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उस के लिए	वह जो	और बड़ी बरकत वाला	84	इल्म वाला

وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ

वह जिन को	और इख़्तियार नहीं रखते	85	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	क़ियामत का इल्म	और उस के पास

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

और वह	हक़ की	जिस ने गवाही दी	सिवाए	शफ़ाअ़त	उस के सिवा	वह पुकारते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى

तो किधर	तो वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह	पैदा किया उन्हें	किस	आप (स) उन से पूछें	और अगर	86	जानते हैं

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	ईमान नहीं लाएंगे	लोग	यह	बेशक	ऐ मेरे रब	क़सम उस के कहने की	87	वह उलटे फिरे जाते हैं

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा	सलाम	और कहें	उन से	तो आप (स) मुँह फेर लें

وقف لازم

ع ٢٢ / ١٣

آيَاتُهَا ٥٩ ❀ سُوْرَةُ الدُّخَانِ (٤٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 | (44) सूरतुद दुख़ान धुवाँ | आयात 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

एक मुबारक रात	में	बेशक हम ने नाज़िल किया इसे	2	वाज़ेह	क़सम किताब	1	हा-मीम

اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	हर अम्र	फ़ैसल किया जाता है	उस में	3	डराने वाले	बेशक हम हैं

عند المتقدمين ١٢ ، صع ١٢

اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرۡسِلِيۡنَ ۚ﴿۵﴾ رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ

तुम्हारा रब	से	रहमत	5	भेजने वाले	बेशक हम हैं	हमारे पास से	हुक्म हो कर

وقف لازم

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۙ﴿۶﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ

उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	रब है आस्मानों	6	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक वही

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ﴿۷﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآٮِٕكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	वह जान डालता है और जान निकालता है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	7	यक़ीन करने वाले	अगर तुम हो

الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸﴾ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۹﴾ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ

आस्मान लाए	उस दिन	तो तुम इन्तिज़ार करो	9	खेलते हैं	शक में	बल्कि वह	8	पहले

بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۙ﴿۱۰﴾ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۱﴾ رَبَّنَا اكۡشِفۡ

खोल (दूर) कर दे	ऐ हमारे रब	11	अज़ाब दर्दनाक	यह	लोगों	वह ढांप लेगा	10	ज़ाहिर	धुआँ

عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۲﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ

और तहक़ीक़ आ चुका उन के पास	नसीहत	उन को	कहां	12	ईमान ले आएंगे	बेशक हम	अज़ाब	हम से

وقف لازم

رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۱۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ۘ﴿۱۴﴾ اِنَّا

बेशक हम	14	दीवाना	सिखाया हुआ	और कहने लगे	उस से	वह फिर गए	फिर	13	रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला

وقف لازم

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآٮِٕدُوۡنَ ۘ﴿۱۵﴾ يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ

पकड़	हम पकड़ेंगे	जिस दिन	15	तुम बेशक (पिछली) हालत पर लौट आने वाले हो	थोड़ा	अज़ाब	खोलने वाले

الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَجَآءَهُمۡ

और आया उन के पास	क़ौमे फ़िरऔन	इन से क़ब्ल	और हम आज़मा चुके हैं	16	इन्तिक़ाम लेने वाले	बेशक हम	बड़ी (सख़्त)

رَسُوۡلٌ كَرِيۡمٌ ۙ﴿۱۷﴾ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ۙ﴿۱۸﴾

18	एक रसूल अमीन	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	बन्दे अल्लाह के	मेरे	कि हवाले कर दो	17	करीम (आली क़द्र)	एक रसूल

وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۚ﴿۱۹﴾ وَاِنِّىۡ

और बेशक मैं	19	वाज़ेह	दलील के साथ	आया हूँ तुम्हारे पास	बेशक मैं	अल्लाह पर (के मुक़ाबिल)	तुम सरकशी न करो	और यह कि

عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ۚ﴿۲۰﴾ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿۲۱﴾

21	तो एक किनारे हो जाओ मुझ से	मुझ पर	तुम ईमान नहीं लाते	और अगर	20	तुम मुझे संगसार कर दो	कि	और तुम्हारा रब	अपने रब की	पनाह चाहता हूँ

الثلثة

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمٌ مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا

रात में	तो तू ले जा मेरे बन्दों को	22	मुजरिम लोग	यह	कि	तो उस ने दुआ की अपने रब से

اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ۙ﴿۲۳﴾ وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۴﴾

24	डूबने वाले	एक लशकर	बेशक वह	ठहरा हुआ	दर्या	और छोड़ जाओ	23	पीछा किए जाओगे	बेशक तुम

كَمۡ تَرَكُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۙ﴿۲۵﴾ وَّزُرُوۡعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيۡمٍ ۙ﴿۲۶﴾

26	और मकान नफ़ीस	और खेतियां	25	और चश्मे	बाग़ात	से	वह कितने (ही) छोड़ गए

हुक्म हो कर हमारे पास से। बेशक
हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5)
रहमत आप (स) के रब की तरफ़
से, बेशक वही है सुनने वाला
जानने वाला। (6)
रब है आस्मानों का और ज़मीन का
और जो उन के दरमियान है, अगर
तुम हो यक़ीन करने वाले। (7)
उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही
जान डालता है, वही जान निकालता
है, और (वही) रब है तुम्हारा और
तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8)
बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9)
तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि
आस्मान ज़ाहिर धुआँ लाएगा, (10)
और ढांप लेगा (छा जाएगा) लोगों
पर, यह है दर्दनाक अज़ाब। (11)
(अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम
से अज़ाब दूर कर दे, बेशक हम
ईमान ले आएंगे। (12)
उन को नसीहत कहां याद आएगी?
उन के पास तो खोल खोल कर बयान
करने वाला रसूल आ चुका है। (13)
फिर वह उस से फिर गए और
कहने लगेः (यह तो) सिखाया हुआ
दीवाना है। (14)
बेशक हम थोड़ा अज़ाब खोलने वाले
हैं (मगर) तुम बेशक फिर बाग़ियाना
हालत पर लौट आने वाले हो। (15)
जिस दिन हम सख़्त पकड़ पकड़ेंगे।
बेशक हम इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (16)
और हम उन से पहले क़ौमे
फ़िरऔन को आज़मा चुके हैं, और उन के
पास एक आली क़द्र रसूल आया। (17)
कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले
कर दो, बेशक मैं तुम्हारे लिए एक
रसूल अमीन हूँ। (18)
और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल
सरकशी न करो, बेशक मैं तुम्हारे पास
वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19)
और बेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने
रब की और तुम्हारे रब की (उस से)
कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20)
और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते
तो मुझ से एक किनारे हो जाओ। (21)
तो उस ने अपने रब से दुआ की
कि यह मुजरिम लोग हैं। (22)
(इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे
बन्दों को ले जाओ रातों रात, बेशक
तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23)
और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला)
हुआ, बेशक वह एक लशकर हैं
डूबने वाले। (24)
और वह छोड़ गए कितने ही
बाग़ात, और चश्मे, (25)
और खेतियां, और नफ़ीस मकान, (26)

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। (27)
उसी तरह (हुआ उन का अन्जाम), और हम ने दूसरी क़ौम को उन का वारिस बनाया। (28)
सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोगों में)। (29)
और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से नजात दी, (30)
(यानी) फ़िरऔ़न से, बेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। (31)
और अलबत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। (32)
और हम ने उन्हें खुली निशानियां दीं, जिन में खुली आज़माइश थी। (33)
बेशक यह लोग कहते हैं, (34)
यह हमारा मरना तो सिर्फ़ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। (35)
अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। (36)
क्या वह बेहतर हैं या तुब्बअ़ की क़ौम? और जो लोग उन से क़ब्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया, बेशक वह मुज्रिम लोग थे। (37)
और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। (38)
हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (39)
बेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े क़ियामत) उन सब का वक़्ते मुक़र्रर (मीआ़द) है। (40)
जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। (41)
मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, बेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। (42)
बेशक थोहर का दरख़्त। (43)
गुनाहगारों का खाना है। (44)
(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। (45)
जैसे खौलता हुआ गर्म पानी। (46)
उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। (47)
फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अ़ज़ाब से। (48)

وَنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾

28	दूसरे	क़ौम	और हम ने वारिस बनाया उन का	उसी तरह	27	मज़े उड़ाते	उस में	वह थे	और नेमतें

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ٢٩ ١٤

29	ढील दिए गए	और न हुए वह	और ज़मीन	आस्मान	उन पर	सो न रोए

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔ़न	से	30	अ़ज़ाब ज़िल्लत वाला	से	बनी इस्राईल	और तहक़ीक़ हम ने नजात दी

اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ

दानिस्ता	और अलबत्ता हम ने उन्हें पसंद किया	31	हद से बढ़ जाने वालों में से	सरकश	था	बेशक वह

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

बेशक यह लोग	33	खुली	आज़माइश	वह जिन में	निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	32	तमाम जहान वालों पर

لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	दोबारा उठाए जाने वाले	और हम नहीं	पहली (एक ही) बार	हमारा मरना	मगर-सिर्फ़	नहीं यह	34	अलबत्ता कहते हैं

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ

क़ौमे तुब्बअ़	या	बेहतर	क्या वह	36	सच्चे	अगर तुम हो	हमारे बाप दादा	तो ले आओ

وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ اَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	37	मुज्रिम (जमा)	थे	बेशक वह	हम ने हलाक किया उन्हें	उन से क़ब्ल	और जो लोग

خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا

मगर	हम ने नहीं पैदा किया उन्हें	38	खेलते हुए	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया

بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ

फ़ैसले का दिन	बेशक	39	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	हक़ के साथ (ठीक तौर पर)

مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا

कुछ	किसी साथी के	कोई साथी	न काम आएगा	जिस दिन	40	सब	उन सब का वक़्ते मेक़र्रर

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾ ع ١٣ ٢ ١٥

42	रहम करने वाला	वह ग़ालिब	बेशक वह	रहम किया अल्लाह ने	जिस	मगर	41	मदद किए जाएंगे	और न वह

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

खौलता है	पिघले हुए तांबे की तरह	44	खाना गुनाहगारों का	43	थोहर का दरख़्त	बेशक

فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى

तक	फिर खींचो उसे	तुम पकड़ लो उसे	46	गर्म पानी	जैसे खौलता हुआ	45	पेटों में

سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾

48	अ़ज़ाब खौलता हुआ पानी	से	उस का सर	पर-ऊपर	फिर डालो	47	बीचों बीच जहन्नम

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

उस में	जो तुम थे	बेशक यह	49	इज़्ज़त वाला	ज़ोर आवर	तू	बेशक तू	चख

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

52	और चश्मे	बाग़ात	में	51	अम्न का मुक़ाम	में	बेशक मुत्तक़ीन (अल्लाह से डरने वाले)	50	शक करते

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَزَوَّجْنٰهُمْ

और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए	इसी तरह	53	एक दूसरे के आमने सामने	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से-के	पहने हुए

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

वह न चखेंगे	55	इत्मीनान से	हर क़िस्म का मेवा	उस में	वह मांगेंगे	54	खूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

56	जहन्नम का अ़ज़ाब	और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें	पहली मौत	सिवाए	मौत	वहाँ

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ

हम ने इसे आसान कर दिया	इस के सिवा नहीं	57	कामयाबी बड़ी	यही	यह	तुम्हारा रब	से-के	फ़ज़्ल से

٣ ع ١٧ ١٦ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	इन्तिज़ार में हैं	बेशक वह	पस आप (स) इन्तिज़ार करें	58	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) की ज़बान में

آيَاتُهَا ٣٧ ❀ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ (٤٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (45) सूरतुल जासिया / गिरी हुई — आयात 37

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

आसमानों में	बेशक	2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह (की तरफ़) से	नाज़िल की हुई किताब	1	हा-मीम

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

जो जानवर	वह फैलाता है	और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	3	अहले ईमान के लिए	अलबत्ता निशानियां	और ज़मीन

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह ने उतारा	और जो	और दिन	रात	और तबदीली	4	यक़ीन करने वाले लोगों के लिए	निशानियां

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

उस के मरने (खुश्क होने) के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	रिज़्क़	आस्मान से

وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

हम वह पढ़ते हैं	अल्लाह के अहकाम	यह	5	अ़क्ल (सलीम) वालों के लिए	निशानियां	हवाएं	और गर्दिश

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

6	वह ईमान लाएंगे	और उसकी आयात	अल्लाह के बाद	बात	पस किस	हक़ के साथ	आप (स) पर

चख, बेशक ज़ोर आवर, इज़्ज़त वाला है तू। (49) बेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे। (50) बेशक मुत्तक़ी अम्न के मुक़ाम में होंगे। (51) बाग़ात और चश्मों में। (52) पहने हुए बारीक और दबीज़ रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53) उसी तरह हम खूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे। (54) वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर क़िस्म का मेवा। (55) वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइक़ा न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया। (56) तुम्हारे रब का फ़ज़्ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57) बेशक हम ने इस (क़ुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़बान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58) पस आप (स) इन्तिज़ार करें, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (59)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1) यह नाज़िल की हुई किताब है, ग़ालिब हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से। (2) बेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3) और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यक़ीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4) और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़्क़ (बारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से ज़िन्दा किया ज़मीन को उस के खुश्क होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अ़क़्ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5) यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक़ के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

وَيۡلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيۡمٍ ﴿۷﴾ يَّسۡمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتۡلٰى عَلَيۡهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسۡتَكۡبِرًا

तकब्बुर करता हुआ	फिर अड़ा रहता है	पढ़ी जाती हैं उस पर	अल्लाह की आयात	वह सुनता है	7	गुनाहगार	हर झूट बान्धने वाले के लिए	ख़राबी

كَاَنۡ لَّمۡ يَسۡمَعۡهَا ۚ فَبَشِّرۡهُ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿۸﴾ وَاِذَا عَلِمَ مِنۡ اٰيٰتِنَا شَيۡـًٔا

किसी शै	हमारी आयात में से	और जब वह वाक़िफ़ हो	8	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	उस ने नहीं सुना उसे	गोया कि

اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۹﴾ ؕ مِنۡ وَّرَآئِهِمۡ جَهَنَّمُ

जहन्नम	उन की दूसरी तरफ़ (आगे)	9	अ़ज़ाब रुस्वा करने वाला	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	वह उस को पकड़ता है

وَلَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ مَّا كَسَبُوۡا شَيۡـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَوۡلِيَآءَ ۚ

कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और न जो उन्हों ने ठहराया	कुछ	जो उन्हों ने कमाया	और न काम आएगा उन के

وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۰﴾ ؕ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمۡ لَهُمۡ

उन के लिए	अपना रब	आयात को	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (न माना)	यह (क़ुरआन) हिदायत	10	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए

عَذَابٌ مِّنۡ رِّجۡزٍ اَلِيۡمٌ ﴿۱۱﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِىۡ سَخَّرَ لَكُمُ الۡبَحۡرَ لِتَجۡرِىَ الۡفُلۡكُ ع ١١ ١٧

कश्तियां	ताकि चलें	दर्या	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	अल्लाह वह जिस	11	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	एक अ़ज़ाब

فِيۡهِ بِاَمۡرِهٖ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲﴾ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمۡ مَّا

जो	और उस ने मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए	12	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से	और कि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	उस में

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا مِّنۡهُ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	अपने हुक्म से	सब	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۱۳﴾ قُلۡ لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يَغۡفِرُوۡا لِلَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ

उम्मीद नहीं रखते	उन लोगों से जो	दरगुज़र करें	ईमान लाए	उन लोगों को जो	फ़रमा दें	13	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए

اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجۡزِىَ قَوۡمًا ۢ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۱۴﴾ مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا

अ़मल किया नेक	जिस	14	वह कमाते थे (आमाल)	उस का जो	उन लोगों को	ताकि वह बदला दे	अल्लाह के अय्याम

فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ اَسَآءَ فَعَلَيۡهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۵﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	15	तुम लौटाए जाओगे	तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तो उस पर	बुरा किया	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ الۡكِتٰبَ وَالۡحُكۡمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	और हम ने अ़ता कीं उन्हें	और नबूव्वत	और हुक्म	किताब	बनी इस्राईल

وَفَضَّلۡنٰهُمۡ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۶﴾ ۚ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا

तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	अम्र से (दीन के बारे में)	वाज़ेह निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	16	जहान वालों पर	और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हें

اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡيًا ۢ بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

बेशक तुम्हारा रब	आपस की	ज़िद से	इल्म	जब आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۷﴾

17	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा

ख़राबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7)
वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती हैं, फिर तकब्बुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस न सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (8)
और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाक़िफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है। (9)
उन के आगे जहन्नम है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्हों ने कमाया और वह न जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहराया, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (10)
यह (क़ुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब में से एक बड़ा अ़ज़ाब होगा। (11)
अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि चलें उस में उस के हुक्म से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12)
और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुक्म से मुसख़्ख़र किया सब को जो आस्मानों में और ज़मीन में हैं, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)
आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14)
जिस ने नेक अ़मल किया अपनी ज़ात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का वबाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15)
और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरेत) और हकूमत और नुबूव्वत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अ़ता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16)
और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की ज़िद की वजह से, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा क़ियामत के दिन जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (17)

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ

ख़ाहिशात	और न पैरवी करें	तो आप (स) उस की पैरवी करें	दीन से-के	शरीअ़त (ख़ास तरीक़ा) पर	हम ने कर दिया आप को	फिर

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह से (के सामने)	आप (स) के	हरगिज़ काम न आएंगे	बेशक वह	18	इल्म नहीं रखते	उन लोगों की जो

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

19	परहेज़गारों	रफ़ीक़	और अल्लाह	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए	दानाई की बातें	यह

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	कि हम कर देंगे उन्हें	बुराइयां	कमाईं (कीं)	वह जिन्हों ने	क्या गुमान करते हैं

٢ ع ١٠ ١٨ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

21	जो वह हुक्म लगाते हैं	बुरा	और उन का मरना	उन का जीना	बराबर	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

उस का जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	और ताकि बदला दिया जाए	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	और पैदा किया अल्लाह ने

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ

और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	बना लिया	जो-जिस	क्या तुम ने देखा	22	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह

عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ

तो कौन	पर्दा	उस की आँख पर	और कर दिया (डाल दिया)	और उस का दिल	उस के कान	और उस ने मुहर लगा दी	इल्म पर (के बावजूद)

يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا

हमारी ज़िन्दगी	सिर्फ़	नहीं यह	और उन्हों ने कहा	23	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	अल्लाह के बाद	उसे हिदायत देगा

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ

उस का	उन्हें	और नहीं	ज़माना	मगर-सिर्फ़	और नहीं हलाक करता हमें	और हम जीते हैं	हम मरते हैं	दुनिया

مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	24	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	से-कोई इल्म

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	हमारे बाप दादा को	तुम ले आओ	वह कहते हैं	सिवा यह कि	उन की हुज्जत	नहीं होती

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى

तरफ़	वह फिर तुम्हें जमा करेगा	वह फिर तुम्हें मौत देगा	अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है	फ़रमा दें	25	सच्चे

٣ ع ٥ ١٩ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع

26	जानते नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	उस में	कोई शक नहीं	क़ियामत का दिन

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18) बेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक़ है। (19) यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए। (20) क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्हों ने बुराइयां कीं कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुक्म लगाते हैं। (21) और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (22) क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुहर लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23) और उन्हों ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ़ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ़ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (24) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप फ़रमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (26)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّخْسَرُ

और अल्लाह के लिए बादशाहत	आस्मानों	और ज़मीन	और जिस दिन	क़ाइम होगी	क़ियामत	उस दिन	ख़सारा पाएंगे

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۣ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ

बातिल परस्त	27	और तुम देखोगे	हर उम्मत	घुटनों के बल गिरी हुई	हर	उम्मत	पुकारी जाएगी	अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

आज	तुम्हें बदला दिया जाएगा	जो	तुम करते थे	28	यह हमारी किताब (तहरीर)	बोलती है	तुम पर (तुम्हारे बारे में)

بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

हक़ के साथ	बेशक हम	लिखाते थे	जो	तुम करते थे	29	पस जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

और उन्हों ने अ़मल किए नेक	तो वह दाख़िल करेगा उन्हें	उन का रब	अपनी रहमत में	यह	वह (यही)	कामयाबी

الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

खुली	30	और वह लोग जिन्हों ने	कुफ़्र किया	सो क्या न थीं	मेरी आयात	पढ़ी जाती	तुम पर

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

तो तुम ने तकब्बुर किया	और तुम थे	लोग	मुज्रिम (जमा)	31	और जब	कहा जाता था बेशक	अल्लाह का वादा

حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ

सच	और क़ियामत	कोई शक नहीं	उस में	तुम ने कहा	हम नहीं जानते	क्या है क़ियामत

اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

नहीं हम गुमान करते	मगर-सिर्फ़	अटकल जैसा	और नहीं	हम	यक़ीन करने वाले	32	और खुल गईं	उन पर	बुराइयां

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ

जो उन्हों ने किया (आमाल)	और घेर लिया	उन्हें	जिस का वह थे	उस का	वह मज़ाक़ उड़ाते	33	और कहा जाएगा	आज

نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

हम ने भुला दिया तुम्हें	जैसे	तुम ने भुला दिया	मिलना	अपना दिन	इस	और तुम्हारा ठिकाना	जहन्नम	और नहीं तुम्हारे लिए

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ

कोई मददगार (जमा)	34	यह	इस लिए कि तुम	तुम ने बना लिया	अल्लाह की आयात	एक मज़ाक़	और फ़रेब दिया तुम्हें

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

दुनिया की ज़िन्दगी	सो आज	वह न निकाले जाएंगे	उस से	और न उन्हें	रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा	35

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें	आस्मानों का रब	और ज़मीन का रब	तमाम जहानों का रब	36

وَلَهُ الْكِبْرِيَاۗءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۠ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع ٤ ٢١ ٢٠

और उस के लिए	किबरियाई	आस्मानों में	और ज़मीन	और वह	ग़ालिब	हिक्मत वाला	37

और अल्लाह (ही) के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम (बपा) होगी उस दिन बातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)

और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)

यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, बेशक हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही है खुली कामयाबी। (30)

और वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थीं? तो तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुज्रिम लोग थे। (31)

और जब (तुम से) कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहाः हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है! हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)

और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)

और कहा जाएगाः हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)

यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)

पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम जहानों का। (36)

और उसी के लिए है किबरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

آيَاتُهَا ٣٥ ❀ (٤٦) سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआ़त 4 — (46) सूरतुल अहक़ाफ़ — रेगिस्तान — आयात 35

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब	नाज़िल करना	1	हा-मीम

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	मगर	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	नहीं पैदा किया हम ने

وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो	फ़रमा दें	3	रूगर्दानी करने वाले	वह डराए जाते हैं	जिस से	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और एक मीआ़द मुक़र्ररा

مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उन्हों ने पैदा किया	क्या	दिखाओ मुझे तुम	अल्लाह के सिवा	जिन को तुम पुकारते हो

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِىْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ

या	इस	से पहले	कोई किताब	ले आओ मेरे पास	आस्मानों में	कुछ साझा	उन के लिए	या

اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا

उस से जो वह पुकारता है	बड़ा गुमराह	और कौन	4	सच्चे	तुम हो	अगर	इल्म से-की	आसार

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ

से	और वह	क़ियामत का दिन	तक	उस को	जवाब न देगा	जो	अल्लाह के सिवा

دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً

दुश्मन	उन के	वह होंगे	जमा किए जाएंगे लोग	और जब	5	बेख़बर हैं	उन का पुकारना

وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	6	मुन्किर (जमा)	उन की इबादत से	और वह होंगे

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ؕ ﴿٧﴾

7	खुला	यह जादू	उन के पास आ गया वह	जब	हक़ का	जिन लोगों ने इन्कार किया	कहते हैं वह

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ

तो तुम इख़्तियार नहीं रखते	मैं ने ख़ुद बना लिया है इसे	अगर	फ़रमा दें	उस ने ख़ुद बना लिया है इसे	वह कहते हैं	क्या

لِىْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ

वह काफ़ी है इस का	इस में	तुम बातें बनाते हो	वह जो	वह ख़ूब जानता है	कुछ भी	अल्लाह से	मेरे लिए

شَهِيْدًاۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٨﴾

8	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)
किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)
हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मीआ़द (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)
आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)
और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) बेख़बर हैं। (5)
और जब लोग (मैदाने हश्र) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुन्किर होंगे। (6)
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं जिन्हों ने इन्कार किया हक़ के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)
क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे ख़ुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे ख़ुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह ख़ूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफ़ी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रहम करने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। (9) आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (10) और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्हों ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। (11) और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तस्दीक़ करने वाली अ़रबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और ख़ुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। (12) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) क़ाइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (13) यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अ़मल करते थे। (14) और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उस की माँ उसे तक्लीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उस का हम्ल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अ़र्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इनआ़म फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अ़मल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर दे (नेक बना दे), बेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और बेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। (15)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلَا بِكُمْ ؕ

और न तुम्हारे साथ	मेरे साथ	क्या किया जाएगा	और नहीं जानता मैं	रसूलों में से	नया	नहीं हूँ मैं	फ़रमा दें

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो तो	फ़रमा दें	9	डर सुनाने वाला साफ़ साफ़	मगर- सिर्फ़	और नहीं हूँ मैं	मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	सिवाए- सिर्फ़	नहीं पैरवी करता

اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ

से	एक गवाह	और गवाही दी	इस का	और तुम ने इन्कार किया	अल्लाह के पास से	है	अगर

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	और तुम ने तकब्बुर किया	फिर वह ईमान ले आया	इस जैसी (एक किताब) पर	बनी इस्राईल

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا ع ١

बेहतर	अगर होता	उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	10	ज़ालिम (जमा)

مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿١١﴾

11	पुराना	झूट	यह	तो अब कहेंगे	इस से	न हिदायत पाई उन्हों ने	और जब	इस की तरफ़	न वह पहल करते हम पर

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करने वाली	किताब	और यह	और रहमत	रहनुमा- इमाम	मूसा (अ)	किताब	और इस से पहले

لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ

बेशक	12	नेकोकारों के लिए	और ख़ुशख़बरी	उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	ताकि वह डराए	अ़रबी	ज़बान

الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	वह क़ाइम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	जिन लोगों ने कहा

يَحْزَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ج اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا

उस की जो	जज़ा	उस में	हमेशा रहेंगे	अहले जन्नत	यही लोग	13	ग़मगीन होंगे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ

उस की माँ	वह उस को उठाए रही	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप के साथ	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया	14	वह अ़मल करते थे

كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ

वह पहुँचा	जब	यहां तक	तीस (30) महीने	और उस का दूध छुड़ाना	और उस का हम्ल	और उस ने उस को जना तक्लीफ़ के साथ	तक्लीफ़ के साथ

اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

तेरी नेमत	कि मैं शुक्र करूँ	तौफ़ीक़ दे मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने अ़र्ज़ की	साल	चालीस (40)	और वह पहुँचा (हुआ)	अपने ज़ोर (जवानी) को

الَّتِىْٓ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ

तू पसंद करे उसे	नेक अ़मल	और यह कि मैं अ़मल करूँ	और मेरे माँ बाप पर	तू ने इनआ़म फ़रमाई मुझ पर	वह जो

وَاَصْلِحْ لِىْ فِىْ ذُرِّيَّتِىْ ۚ اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾

15	मुसलमानों (फ़रमांबरदारों)	से	और बेशक मैं	तेरी तरफ़	बेशक मैं ने तौबा की	मेरी औलाद में	मेरे लिए	और इस्लाह कर दे

اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ نَتَقَبَّلُ عَنۡهُمۡ اَحۡسَنَ مَا عَمِلُوۡا وَنَتَجَاوَزُ عَنۡ سَيِّاٰتِهِمۡ

उन की बुराइयां	से	और हम दरगुज़र करते हैं	उन्हों ने किए	जो	बेहतरीन (अ़मल)	उन से	हम कुबूल करते हैं	वह जो कि	यही लोग

فِىۡۤ اَصۡحٰبِ الۡجَـنَّةِ‌ؕ وَعۡدَ الصِّدۡقِ الَّذِىۡ كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِىۡ

और वह जिस	16	उन्हें वादा दिया जाता था	वह जो	सच्चा वादा	अहले जन्नत	में

قَالَ لِوَالِدَيۡهِ اُفٍّ لَّـكُمَاۤ اَتَعِدٰنِنِىۡۤ اَنۡ اُخۡرَجَ وَقَدۡ خَلَتِ الۡقُرُوۡنُ

(बहुत से) गिरोह	हालांकि गुज़र चुके	मैं निकाला जाऊँगा	क्या तुम मुझे वादा (ख़बर) देते हो	तुम्हारे लिए-पर	तुफ़	अपने माँ बाप के लिए	उस ने कहा

مِنۡ قَبۡلِىۡ‌ۚ وَهُمَا يَسۡتَغِيۡثٰنِ اللّٰهَ وَيۡلَكَ اٰمِنۡ‌ۖ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ‌ ۖ

सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	तू ईमान ले आ	तेरा बुरा हो	फ़र्याद करते हैं अल्लाह से	और वह दोनों	मुझ से पहले

فَيَقُوۡلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ

उन पर	साबित हो गई	वह जो	यही लोग	17	पहलों	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	तो वह कहता है

الۡقَوۡلُ فِىۡۤ اُمَمٍ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ‌ؕ اِنَّهُمۡ

बेशक वह	जिन्नात और इन्सान (जमा)	से	इन से क़ब्ल	गुज़र चुकीं	उम्मतों में	बात (अ़ज़ाब)

كَانُوۡا خٰسِرِيۡنَ ﴿۱۸﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوۡا‌ ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمۡ اَعۡمَالَهُمۡ

उन के आमाल	और ताकि वह पूरा दे उन को	उस से जो उन्हों ने किया	दरजे	और हर एक के लिए	18	ख़सारा पाने वाले	थे

وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ‌ؕ

आग के सामने	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	लाए जाएंगे	और जिस दिन	19	उन पर न ज़ुल्म किया जाएगा	और वह-उन

اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا وَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا‌ ۚ فَالۡيَوۡمَ

पस आज	उन का	और तुम फ़ाइदा उठा चुके	अपनी दुनिया की ज़िन्दगी	में	अपनी नेमतें	तुम ले गए (हासिल कर चुके)

تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ الۡهُوۡنِ بِمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ

तुम तकब्बुर करते थे	इस लिए कि	रुस्वाई का अ़ज़ाब	नहीं बदला दिया जाएगा

ع ٢ ١٠ ٢ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَـقِّ وَبِمَا كُنۡتُمۡ تَفۡسُقُوۡنَ ﴿۲۰﴾ وَاذۡكُرۡ

और याद कर	20	तुम नाफ़रमानियां करते थे	और इस लिए कि	नाहक़	ज़मीन में

اَخَا عَادٍ‌ؕ اِذۡ اَنۡذَرَ قَوۡمَهٗ بِالۡاَحۡقَافِ وَقَدۡ خَلَتِ النُّذُرُ

डराने वाले	और गुज़र चुके	अहक़ाफ़ में	अपनी क़ौम	उस ने डराया	जब	आ़द के भाई

مِنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖۤ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰهَ‌ؕ اِنِّىۡۤ اَخَافُ

बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह के सिवा	कि तुम इबादत न करो	और उस के बाद	उस से पहले

عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۲۱﴾ قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا لِتَاۡفِكَنَا

क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें	वह बोले	21	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर

عَنۡ اٰلِهَتِنَا‌ ۚ فَاۡتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۲۲﴾

22	सच्चे (जमा)	से	तू है	अगर	जो कुछ तू वादा करता है हम से	पस ले आ हम पर	हमारे माबूद	से

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अ़मल हम कुबूल करते हैं जो उन्हों ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुज़र करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। (16)

और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहाः तुम पर तुफ़! क्या तुम मुझे यह ख़बर देते हो कि मैं (रोज़े हश्र) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फ़र्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ़ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। (17)

यही लोग हैं जिन पर अ़ज़ाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से क़ब्ल गुज़र चुकीं जिन्नात में से और इन्सानों में से, बेशक वह ख़सारा पाने वालों में से थे। (18)

और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक़) जो उन्हों ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (19)

और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अ़ज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। (20)

और क़ौमे आ़द के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी क़ौम को (सर ज़मीने) अहक़ाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (21)

वह बोलेः क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (22)

उस ने कहाः इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। (23)
फिर जब उन्हों ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोलेः यह हम पर बारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्धी जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब है। (24)
वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुज्‍रिम लोगों को बदला दिया करते हैं। (25)
और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस क़द्र क़ुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस क़द्र क़ुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (26)
और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दीं तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियां, और हम ने बार बार अपनी निशानियां दिखाईं ताकि वह लौट आएं। (27)
फिर क्यों न उन की मदद की उन्हों ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) क़ुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से ग़ाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़्तिरा करते (घड़ते थे)। (28)
और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअ़त फेर लाए, वह क़ुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। (29)

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّیْۤ

और लेकिन मैं	जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ	और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें	अल्लाह के पास	इल्म	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा

اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِیَتِهِمْ ۙ

उन की वादियां	सामने (चला) आ रहा है	एक अब्र	फिर जब देखा उन्हों ने उस को	23	तुम जहालत करते हो	गिरोह-लोग	देखता हूँ तुम्हें

قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ

उस की	तुम जल्दी करते थे	जिस	बल्कि वह	हम पर बारिश बरसाने वाला	एक बादल	यह	वह बोले

رِیْحٌ فِیْهَا عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا

अपना रब	हुक्म से	शै	हर	वह तहस नहस कर देगी	24	दर्दनाक अ़ज़ाब	उस में	एक हवा (आन्धी)

فَاَصْبَحُوْا لَا یُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی

हम बदला देते हैं	इसी तरह	उन के मकान	सिवाए	न दिखाई देता था	पस वह रह गए

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِیْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِیْهِ

उस में-पर	नहीं हम ने क़ुदरत दी तुम्हें	उस में	और अलबत्ता हम ने उनको क़ुदरत दी थी	25	मुज्‍रिम लोग

وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ٘ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ

काम आए उन के	तो न	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	उन्हें	और हम ने बना दिए

سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ

जब	कुछ भी	और न दिल उन के	और न उन की आँखें	उन के कान

كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	उन को	और उस ने घेर लिया	अल्लाह की आयात का	वह इन्कार करते थे

یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى ع ٦ ٣

बस्तियां	से	जो तुम्हारे इर्द गिर्द	और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दिया	26	वह मज़ाक़ उड़ाते

وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ

मदद की उन की	फिर क्यों न	27	लौट आईं	ताकि वह	और हम ने बार बार दिखाईं अपनी निशानियां

الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ

बल्कि	माबूद	क़ुर्ब हासिल करने को	अल्लाह के सिवा	जिन्हें बना लिया उन्हों ने

ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ صَرَفْنَاۤ

हम फेर लाए	और जब	28	वह इफ़्तिरा करते थे	और जो	उन का बुहतान	और यह	वह गुम (ग़ाइब) हो गए उन से

اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ

वह हाज़िर हुए उस के पास	पस जब	क़ुरआन	वह सुनते थे	जिन्नात की	एक जमाअ़त	आप (स) की तरफ़

قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ﴿٢٩﴾

29	डर सुनाते हुए	अपनी क़ौम	तरफ़	वह लौटे	(पढ़ना) तमाम हुआ	फिर जब	चुप रहो	उन्हों ने कहा

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا

तस्दीक़ करने वाली	मूसा (अ)	बाद	नाज़िल की गई	एक किताब	बेशक हम ने सुनी	ऐ हमारी क़ौम	उन्हों ने कहा

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ

ऐ हमारी क़ौम	30	रास्त	राह	और तरफ़	हक़ की तरफ़	वह रहनुमाई करती है	उस (अपने) से पहले	उस की जो

اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ

और वह पनाह देगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से	बख़्श देगा तुम्हें	उस पर	और ईमान ले आओ	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	क़ुबूल कर लो

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ

आजिज़ करने वाला	तो नहीं	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	न क़ुबूल करेगा	और जो	31	दर्दनाक अ़ज़ाब	से

فِى الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

32	गुमराही खुली	में	यही लोग	हिमायती	उस के सिवा	उस के लिए	और नहीं	ज़मीन में

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ

और वह थका नहीं	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	वह जिस ने	कि अल्लाह	क्या नहीं देखा उन्हों ने

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक वह	हाँ	मुर्दे	कि वह ज़िन्दा करे	पर	वह क़ादिर है	उन के पैदा करने से

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

वह कहेंगे	हक़	यह	क्या नहीं	आग के सामने	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पेश किए जाएंगे	और जिस दिन

بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

पस आप (स) सब्र करें	34	तुम इन्कार करते थे	वह जिस	अ़ज़ाब	पस तुम चखो	वह फ़रमाएगा	हमारे रब की क़सम	हाँ

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

गोया कि वह	उन के लिए	और जल्दी न करें	रसूलों	से	ऊलुल अ़ज़्म	सब्र किया	जैसे

يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ

दिन की	एक घड़ी	मगर-सिर्फ़	वह नहीं ठहरे	जिस का वादा किया जाता है उन से	जिस दिन देखेंगे वह

ع ٩ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	नाफ़रमान लोग	मगर	पस नहीं हलाक होंगे	पहुँचाना

اٰيَاتُهَا ٣٨ ❀ (٤٧) سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (47) सूरह मुहम्मद — आयात 38

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾

1	उन के आमाल	अकारत कर दिए	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका	काफ़िर हुए	जो लोग

उन्हों ने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक़ की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) क़ुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से पनाह देगा। (31) और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32) क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! बेशक वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (33) और जिस दिन काफ़िर आग (जहन्नम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक़ (अम्रे वाक़ई) नहीं? वह कहेंगेः हमारे रब की क़सम, हाँ (यह हक़ है), अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगाः पस तुम अ़ज़ाब चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34) पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलुलअ़ज़्म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अ़ज़ाब की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अ़ज़ाब) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो लोग काफ़िर हुए और उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)
यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हों ने बातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्हों ने अपने रब की तरफ़ से हक़ की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)
फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दनें मारो, यहां तक कि जब उन की ख़ूब ख़ूं रेज़ी कर चुको तो उन की क़ैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (बिला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से ख़ुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4)
वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5)
और वह उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)
ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए तबाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अ़मल ज़ाया कर दिए। (8)
यह इस लिए कि उन्हों ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अ़मल अकारत कर दिए। (9)
क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)
यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

और जो लोग	ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए	अच्छे	और वह ईमान लाए	उस पर जो नाज़िल किया गया	मुहम्मद (स) पर

وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢

और वह	हक़	से	उन का रब	उस ने दूर कर दिए	उन से	उन की बुराइयां (गुनाह)	और दुरुस्त कर दिया	उन का हाल	2

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

यह इस लिए कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	उन्हों ने पैरवी की	बातिल	और यह कि	जो लोग	ईमान लाए

اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

उन्हों ने पैरवी की	हक़	अपने रब (की तरफ़) से	इसी तरह	अल्लाह बयान करता है	लोगों के लिए	उन की मिसालें	3

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

फिर जब तुम	भिड़ जाओ	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो मारो तुम	गर्दनें	यहां तक कि	जब	ख़ूब ख़ून रेज़ी कर चुको उन की

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّا ۢ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ

तो मज़बूत कर लो	क़ैद	पस या	एहसान करो	उस के बाद	और या	मुआवज़ा	यहां तक कि	रख दे लड़ाई (लड़ने वाले)

اَوْزَارَهَا ۛ ۚ ذٰلِكَ ۛ ؕ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا

अपने हथियार	यह	और अगर	अल्लाह चाहता	ज़रूर इन्तिक़ाम लेता	उन से	और लेकिन	ताकि आज़माए

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤

तुम से बाज़ को	बाज़ (दूसरे) से	और जो लोग	मारे गए	में	अल्लाह का रास्ता	तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा	उन के आमाल	4

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥ ۚ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦

वह जल्द उन को हिदायत देगा	और संवारेगा	उन का हाल	5	और दाख़िल करेगा उन्हें	जन्नत	उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें	6

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	अगर	तुम मदद करोगे अल्लाह की	वह मदद करेगा तुम्हारी	और जमा देगा

اَقْدَامَكُمْ ۝٧ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨

तुम्हारे क़दम	7	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	तो तबाही है	उन के लिए	और उस ने ज़ाया कर दिए	उन के अ़मल	8

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩

यह	इस लिए कि उन्हों ने नापसंद किया	जो	नाज़िल किया अल्लाह ने	तो अकारत कर दिए	उन के अ़मल	9

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

क्या वह चले फिरे नहीं	ज़मीन में	तो वह देख लेते	कैसा	हुआ	अन्जाम	उन लोगों का जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ

उन से पहले	तबाही डाल दी अल्लाह ने	उन पर	और काफ़िरों के लिए	उन की मानिंद	10	यह

بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١ ع

इस लिए कि अल्लाह	कारसाज़	उन लोगों का जो ईमान लाए	और यह कि	काफ़िरों	कोई कारसाज़ नहीं	उन के लिए	11

صح ١٣ عند المتقدمين ١٢

وقد بينا بقوله ذٰلك ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذٰلك ١٢

ع ١ ٥

اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ

बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने नेक अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करता है	बेशक अल्लाह

مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَتَمَتَّعُوۡنَ وَيَاۡكُلُوۡنَ كَمَا

जैसे	और वह खाते हैं	वह फ़ाइदा उठाते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	नहरें	उन के नीचे

تَاۡكُلُ الۡاَنۡعَامُ وَالنَّارُ مَثۡوًى لَّهُمۡ ﴿۱۲﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ هِىَ اَشَدُّ

बहुत ही सख़्त	वह	बस्तियां	और बहुत सी	12	उन के लिए	ठिकाना	और आग	चौपाए	खाते हैं

قُوَّةً مِّنۡ قَرۡيَتِكَ الَّتِىۡۤ اَخۡرَجَتۡكَۚ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ فَلَا نَاصِرَ لَهُمۡ ﴿۱۳﴾

13	उन के लिए	तो कोई न मदद करने वाला	हम ने हलाक कर दिया उन्हें	आप (स) को निकाल दिया	वह जिस	आप (स) की बस्ती से	कुव्वत में

اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ كَمَنۡ زُيِّنَ لَهٗ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ

उस के बुरे अ़मल	आरास्ता दिखाए गए उसको	उस की तरह	अपने रब से-के	रोशन (रास्ता)	पर	है	पस क्या जो

وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿۱۴﴾ مَثَلُ الۡجَنَّةِ الَّتِىۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَؕ فِيۡهَاۤ

उस में	परहेज़गारों	वह जो वादा की गई	जन्नत	मिसाल (कैफ़ियत)	14	अपनी ख़ाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

اَنۡهٰرٌ مِّنۡ مَّآءٍ غَيۡرِ اٰسِنٍۚ وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ لَّبَنٍ لَّمۡ يَتَغَيَّرۡ طَعۡمُهٗۚ وَاَنۡهٰرٌ

और नहरें	उस का ज़ाइक़ा	बदलने वाला	न	दूध की	और नहरें	बदबू न करने वाला	पानी	से-की	नहरें

مِّنۡ خَمۡرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيۡنَۚ وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ عَسَلٍ مُّصَفًّىؕ وَلَهُمۡ فِيۡهَا

उस में	और उन के लिए	मुसफ़्फ़ा	शहद की	और नहरें	पीने वालों के लिए	सरासर लज़्ज़त	शराब की

مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغۡفِرَةٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡؕ كَمَنۡ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ

हमेशा रहने वाला आग में	वह	उस की तरह जो	उन के रब से	और बख़्शिश	हर क़िस्म के फल

وَسُقُوۡا مَآءً حَمِيۡمًا فَقَطَّعَ اَمۡعَآءَهُمۡ ﴿۱۵﴾ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّسۡتَمِعُ

सुनते हैं	जो	और उन में से	15	उन की अंतड़ियां	टुकड़े टुकड़े कर डालेगा	गर्म पानी	और उन्हें पिलाया जाएगा

اِلَيۡكَۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوۡا مِنۡ عِنۡدِكَ قَالُوۡا لِلَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ

इल्म दिया गया (अहले इल्म)	उन लोगों से जिन्हें	वह कहते हैं	आप (स) के पास से	वह निकलते हैं	जब	यहां तक कि	आप (स) की तरफ़

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا قف اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ

उन के दिलों पर	मुहर कर दी अल्लाह ने	वह जो	यही लोग	अभी	उस ने कहा	क्या

وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيۡنَ اهۡتَدَوۡا زَادَهُمۡ هُدًى وَّاٰتٰٮهُمۡ

और उन्हें अ़ता की	हिदायत	और ज़ियादा दी उन्हें	और वह लोग जिन्हों ने हिदायत पाई	16	अपनी ख़ाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

تَقۡوٰٮهُمۡ ﴿۱۷﴾ فَهَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةًۚ

अचानक	आ जाए उन पर	कि	क़ियामत	मगर	मुन्तज़िर	पस नहीं वह	17	उन की परहेज़गारी

فَقَدۡ جَآءَ اَشۡرَاطُهَاۚ فَاَنّٰى لَهُمۡ اِذَا جَآءَتۡهُمۡ ذِكۡرٰٮهُمۡ ﴿۱۸﴾

18	उन का नसीहत (क़ुबूल करना)	वह आगई उन के पास	जब	उन के लिए-को	तो कहां	उस की अ़लामात	सो आ चुकी हैं

बेशक अल्लाह दाख़िल करता है
उन लोगों को जो ईमान लाए और
उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में
जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और
जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह फ़ाइदा
उठाते हैं और (उसी तरह) खाते
हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग
(जहन्नम) उन का ठिकाना है। (12)
और बहुत सी बस्तियां (थीं), वह
बहुत ही सख़्त थीं कुव्वत में आप (स)
की बस्ती से जिस के रहने वालों ने
आप (स) को निकाल दिया, हम ने
उन्हें हलाक कर दिया तो कोई उन
की मदद करने वाला न हुआ। (13)
पस क्या जो अपने परवरदिगार के
रोशन रास्ते पर हो उस की तरह
है जिसे उस के बुरे अ़मल आरास्ता
कर दिखाए गए, और उन्हों ने अपनी
ख़ाहिशात की पैरवी की। (14)
जन्नत की कैफ़ियत जो परहेज़गारों
को वादा की गई, (यह है) कि उस
में नहरें हैं बदबू न करने वाले
पानी की, नहरें हैं दूध की जिस का
ज़ाइक़ा बदलने वाला नहीं, और
नहरें हैं शराब की जो पीने वालों
के लिए सरासर लज़्ज़त है, और
नहरें हैं मुसफ़्फ़ा (साफ़ किए हुए)
शहद की, और उस में उन के लिए
हर क़िस्म के फल हैं, और उन के
रब (की तरफ़ से) बख़्शिश, (क्या
वह) उस की तरह है? जो हमेशा
आग में रहने वाला है, और उन्हें
गर्म (खौलता हुआ) पानी पिलाया
जाएगा जो उन की अंतड़ियां टुकड़े
टुकड़े कर देगा। (15)
और उन में से बाज़ ऐसे हैं जो
आप (स) की तरफ़ (कान लगा कर)
सुनते हैं, फिर जब वह आप (स) के
पास से निकलते हैं तो वह अहले इल्म
से कहते हैं कि उस (हज़रत स) ने
अभी क्या कहा है? यही वह लोग हैं
जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर
कर दी है, और उन्हों ने अपनी
ख़ाहिशात की पैरवी की। (16)
और जिन लोगों ने हिदायत पाई
(अल्लाह ने) उन्हें और ज़ियादा
हिदायत दी और उन्हें अ़ता की उन
की परहेज़गारी। (17)
पस वह मुन्तज़िर नहीं मगर क़ियामत
(की आमद) के, कि उन पर अचानक
आ जाए, सो उस की अ़लामात तो
आ चुकी हैं, जब वह उन के पास
आ गई तो उन्हें नसीहत क़ुबूल करना
कहां (नसीब) होगा। (18)

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

और मोमिन मर्दों के लिए	अपने कुसूर के लिए	और बख़्शिश मांगें आप (स)	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	यह कि	सो जान लो

ع ٨ ٦

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह जो लोग ईमान लाए	और वह कहते हैं	19	और तुम्हारे रहने सहने का मुक़ाम	तुम्हारा चलना फिरना	जानता है	और अल्लाह	और मोमिन औरतों

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا

उस में	और ज़िक्र किया जाता है	फ़ैसला कुन सूरत	उतारी जाती है	सो जब	एक सूरत	क्यों न उतारी गई

الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ

देखना	आप (स) की तरफ़	वह देखते हैं	बीमारी	उन के दिलों में	वह लोग	तुम देखोगे	जंग

الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫

मअ़रूफ़	और बात	इताअ़त	20	सो ख़राबी उन के लिए	मौत की	उस पर	बेहोशी तारी हो गई

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ

सो तुम इस के नज़्दीक	21	अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए	पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ	पुख़्ता हो जाए काम	फिर जब

اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

22	अपने रिश्ते	और तुम काटो (तोड़ डालो)	ज़मीन में	कि तुम फ़साद मचाओ	तुम वाली (हाकिम) हो जाओ	अगर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

23	उन की आँखें	और अन्धा कर दिया	फिर उन को बहरा कर दिया	अल्लाह ने लानत की	वह लोग जिन पर	यही हैं

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا

पलट गए	जो लोग	बेशक	24	उन के ताले	दिलों पर	क्या	कुरआन	तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?

عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ

उन के लिए	आरास्ता कर दिखाया	शैतान	हिदायत	उन के लिए	जब वाज़ेह हो गई	इस के बाद	अपनी पुश्त पर

وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ

अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे	जो नाज़िल किया अल्लाह ने	उन्हों ने नापसंद किया	उन लोगों से जिन्हों	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	25	उन को	और ढील दी गई

فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ

जब उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे	पस क्या	26	उन की ख़ुफ़िया बातें	जानता है	और अल्लाह	काम	बाज़	में

الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا

पैरवी की	यह इस लिए कि उन्हों ने	27	और उन की पीठों	उन के चेहरों	वह मारते होंगे	फ़रिश्ते

ع ٩ ٣ ٧

مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ

क्या गुमान करते हैं?	28	उन के आमाल	तो उस ने अकारत कर दिए	उस की रज़ा	और उन्हों ने पसंद न किया	अल्लाह को नाराज़ किया	जो- जिस

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

29	उन के दिल की अ़दावतें	हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह	कि	मरज़-रोग	उन के दिलों में	(वह लोग) जिन

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) बख़्शिश मांगें अपने कुसूरों के लिए, मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के मुक़ाम को। (19) और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ़ साफ़ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और ज़िक्र किया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख़्स के) देखने की तरह बेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। (20) (सहीह तो यह था कि वह) इताअ़त करते और माकूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। (21) सो तुम इस के नज़्दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। (22) यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। (23) तो क्या वह कुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? (24) बेशक जो लोग अपनी पुश्त फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। (25) यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की ख़ुफ़िया बातों को जानता है। (26) पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। (27) यह इस लिए होगा कि उन्हों ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्हों ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। (28) क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। (29)

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ

में-से	और तुम ज़रूर पहचान लोगे उन्हें	उन के चेहरों से	सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो	तो तुम्हें दिखा दें वह लोग	और अगर हम चाहें

لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

मुजाहिदों	हम मालूम कर लें	यहां तक कि	और हम ज़रूर आज़माएंगे तुम्हें	30	तुम्हारे आमाल	जानता है	और अल्लाह	तरज़े कलाम

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۠ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	31	तुम्हारी ख़बरें (हालात)	और हम जाँच लें	और सब्र करने वाले	तुम में से

وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	रसूल	और उन्हों ने मुख़ालिफ़त की	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

32	उन के आमाल	और वह जल्द अकारत कर देगा	कुछ भी	और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का	हिदायत	उन पर	जब वाज़ेह हो गई

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

और बातिल न करो	और इताअ़त करो रसूल की	इताअ़त करो अल्लाह की	जो लोग ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ

फिर	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	33	अपने आमाल

مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى

तरफ़	और न बुलाओ	पस तुम सुस्ती न करो	34	उन को	तो हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	काफ़िर (ही)	और वह	मर गए

السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

35	तुम्हारे आमाल	और वह हरगिज़ कमी न करेगा	तुम्हारे साथ	और अल्लाह	ग़ालिब	और तुम ही	सुलह

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ

वह तुम्हें देगा	और तक़्वा इख़्तियार करो	ईमान ले आओ	और अगर	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	इस के सिवा नहीं

اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا

तुम बुख़्ल करो	फिर तुम से चिमट जाए	वह तुम से (माल) तलब करे	अगर	36	तुम्हारे माल	और न तलब करेगा तुम से	तुम्हारे अजर (जमा)

وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ

में	कि तुम ख़र्च करो	तुम्हें पुकारा जाता है	हाँ! वह लोग	यह तुम हो	37	तुम्हारे खोट	और ज़ाहिर हो जाएं

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ

अपने आप से	तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़्ल करता है	बुख़्ल करता है	और जो	कोई ऐसा है कि बुख़्ल करता है	फिर तुम में से	अल्लाह का रास्ता

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ

वह बदल देगा	तुम रूगर्दानी करोगे	और अगर	मोहताज (जमा)	और तुम	बेनियाज़	और अल्लाह

ع ١٠ ٨ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

38	तुम्हारे जैसे	वह न होंगे	फिर	दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरज़े कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन हैं) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्हों ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, और अपने आमाल बातिल न करलो। (33) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़्र की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज़ न बख़्शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (ख़ुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़्ल करो, और ज़ाहिर हो जाएं तुम्हारे खोट। (37) हाँ! तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़्ल करता है, और जो बुख़्ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
बेशक हम ने आप (स) को खुली फ़तह दी, (1)
ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियों को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। (2)
और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। (3)
वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। (4)
ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को उन बाग़ात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। (5)
और वह अ़ज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहन्नम तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। (6)
और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (7)
बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और ख़ुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। (8)
ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्बीह (पाकीज़गी बयान) करो सुब्ह ओ शाम। (9)

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (48) सूरतुल फ़तह — जीत — आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ

आप (स) के कुसूर	से	जो पहले गुज़रे	अल्लाह	आप के लिए	ताकि बख़्शदे	1	खुली	फ़तह	आप (स) को	बेशक हम ने फ़तह दी

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾

2	सीधा	रास्ता	और आप (स) की रहनुमाई करे	आप (स) पर	अपनी नेमत	और वह मुकम्मल करदे	और जो पीछे हुए

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ

में	सकीना (तसल्ली)	उतारी	वह जिस	वही	3	ज़बरदस्त	नुस्रत	और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह

قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ

और अल्लाह के लिए लशकर (जमा)	उन का ईमान	साथ	ईमान	ताकि वह बढ़ाए	मोमिनों	दिल (जमा)

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ

ताकि वह दाख़िल करे	4	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	जन्नत	और मोमिन औ़रतें	मोमिन मर्दों

فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٥﴾

5	बड़ी कामयाबी	अल्लाह के नज़्दीक	यह	और है	उन की बुराइयां	उन से	और दूर कर देगा	उन में

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ

और मुश्रिक औ़रतों	और मुश्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औ़रतों	मुनाफ़िक़ मर्दों	और वह अ़ज़ाब देगा

الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ

बुरी	दायरा (गर्दिश)	उन पर	गुमान बुरे	अल्लाह के साथ	गुमान करने वाले

وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾

6	ठिकाना	और बुरा है	जहन्नम	और तैयार किया उन के लिए	और उन पर लानत की	उन पर	और अल्लाह का ग़ज़ब

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

7	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	और ज़मीन	और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ताकि तुम ईमान लाओ	8	और डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा

وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾

9	और शाम	सुबह	और उस (अल्लाह) की तस्बीह करो	और उस की ताज़ीम करो	और उस की मदद करो	और उस का रसूल (स)

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ

उन के हाथों के ऊपर	अल्लाह का हाथ	वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं	इस के सिवा नहीं कि	आप से बैअ़त कर रहे हैं	बेशक जो लोग

فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ

अल्लाह पर-से	जो उस ने अ़हद किया	पूरा किया	और जिस	अपनी ज़ात पर	उस ने तोड़ दिया	तो इस के सिवा नहीं	फिर जिस ने तोड़ दिया अ़हद

ع ١٠/٩ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

से	पीछे रह जाने वाले	आप (स) से	अब कहेंगे	10	अजरे अ़ज़ीम	तो वह अ़नक़रीब उसे देगा

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए	और हमारे घर वाले	हमारे मालों	हमें मशग़ूल रखा	देहाती

بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सामने	तुम्हारे लिए	इख़्तियार रखता है	तो कौन	फ़रमा दें	उन के दिलों में	जो नहीं	अपनी ज़बानों से

شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ

है अल्लाह	बल्कि	कोई फ़ाइदा	चाहे तुम्हें	या	कोई नुक़्सान	तुम्हें	अगर वह चाहे	किसी चीज़ का

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

और मोमिन (जमा)	रसूल (स)	हरगिज़ वापस न लौटेंगे	कि	तुम ने गुमान किया	बल्कि	11	ख़बरदार	उस से जो तुम करते हो

اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ

बुरा गुमान	और तुम ने गुमान किया	तुम्हारे दिलों में-को	यह	और भली लगी	कभी	अपने अहले ख़ाना	तरफ़

وَكُنْتُمْ قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान नहीं लाता	और जो	12	हलाक होने वाली क़ौम	और तुम थे-हो गए

فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	और अल्लाह के लिए आस्मानों की बादशाहत	13	दहकती आग	काफ़िरों के लिए	तो बेशक हम ने तैयार की

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾

14	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	जिस को वह चाहे	और अ़ज़ाब दे	जिस को वह चाहे	वह बख़्शदे

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا

कि तुम उन्हें ले लो	ग़नीमतों की तरफ़	तुम चलोगे	जब	पीछे बैठ रहने वाले	अ़नक़रीब कहेंगे

ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	अल्लाह का फ़रमान	कि वह बदल डालें	वह चाहते हैं	हम तुम्हारे पीछे चलें	हमें छोड़ दो (इजाज़त दो)

لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

फिर अब वह कहेंगे	इस से क़ब्ल	कहा अल्लाह ने	इसी तरह	तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾

15	मगर थोड़ा	वह समझते नहीं हैं	बल्कि-जबकि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि

बेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअ़त कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अ़हद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज़ात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अ़हद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अ़नक़रीब देगा अजरे अ़ज़ीम। (10)
अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। (11)
बल्कि तुम ने गुमाने (बातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज़ अपने अहले ख़ाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। (12)
और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (13)
और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और ज़मीन की बादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (14)
अ़नक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) ग़नीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें लेलो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते हैं कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़ब्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हक़ीक़त यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। (15)

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अजर देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़ब्ल फिर गए थे तो वह तुम्हें अ़ज़ाब देगा अ़ज़ाब दर्दनाक। (16)

नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न बीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करेगा वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब देगा। (17)

तहक़ीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़ुलूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें क़रीब ही एक फ़तह अ़ता की। (18)

और बहुत सी ग़नीमतें उन्हों ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19)

और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कस्रत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20)

और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर क़ाबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (21)

और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22)

अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़ब्ल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ

सख़्त लड़ने वाली (जंगजू)	एक क़ौम की तरफ़	अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे	देहातियों	से	पीछे बैठ रहने वालों को	फ़रमा दें

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا

अजर	तुम्हें देगा अल्लाह	तुम इताअ़त करोगे	अगर	या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें	तुम उन से लड़ते रहो

حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾

16	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वह तुम्हें अ़ज़ाब देगा	इस से क़ब्ल	जैसे तुम फिर गए थे	तुम फिर गए	और अगर	अच्छा

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ

मरीज़ पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और नहीं	कोई तंगी (गुनाह)	अँधे पर	नहीं

حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	वह दाख़िल करेगा उसे	और उस के रसूल की	इताअ़त करेगा अल्लाह की	और जो	कोई गुनाह

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾ ع لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ

النصف ع ٢ ١٠

तहक़ीक़ राज़ी हुआ अल्लाह	17	अ़ज़ाब दर्दनाक	वह अ़ज़ाब देगा उसे	फिर जाएगा	और जो	नहरें

عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ

जो उन के दिलों में	सो उस ने मालूम कर लिया	दरख़्त	नीचे	वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे	जब	मोमिनों से

فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ لا وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً

बहुत सी	और ग़नीमतें	18	एक फ़तह क़रीब	और बदले में दी उन्हें	उन पर	सकीना (तसल्ली)	तो उस ने उतारी

يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ

ग़नीमतें	वादा किया अल्लाह ने	19	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	उन्हों ने वह हासिल कीं

كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ

लोग	हाथ	और रोक दिए	यह	तुम्हें	तो जल्द दे दी उस ने	तुम लोगे उन्हें	कस्रत से

عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾

20	सीधा	रास्ता	और वह हिदायत दे तुम्हें	मोमिनों के लिए	एक निशानी	और ताकि हो	तुम से

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उस को	घेर रखा है अल्लाह	उस पर	तुम ने क़ाबू नहीं पाया	और एक और (फ़तह)

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا

अलबत्ता वह फेरते	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम से लड़ते	और अगर	21	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर

الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ

वह जो	अल्लाह का दस्तूर	22	और न कोई मददगार	कोई दोस्त	वह न पाते	फिर	पीठ (जमा)

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

23	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इस से क़ब्ल	गुज़र चुका

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ

दरमियान (वादी-ए) मक्का में	उन से	और तुम्हारे हाथ	तुम से	उन के हाथ	जिस ने रोका	और वह

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

24	देखने वाला	तुम जो कुछ करते हो उसे	और है अल्लाह	उन पर	कि फ़तह मन्द किया तुम्हें	उस के बाद

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

और क़ुर्बानी के जानवर	मस्जिदे हराम	से	और तुम्हें रोका	जिन्हों ने कुफ़्र किया	वह-यह

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۭ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَاۗءٌ مُّؤْمِنٰتٌ

और मोमिन औरतें	मोमिन (जमा)	मर्द	और अगर न	अपना मुक़ाम	कि वह पहुँचे	रुके हुए

لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ

नादानिस्ता	सदमा-नुक़्सान	उन से	पस तुम्हें पहुँच जाता	तुम उनको पामाल करदेते	कि	तुम नहीं जानते उन्हें

لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ

उन लोगों को	अलबत्ता हम अज़ाब देते	अगर वह जुदा हो जाते	जिसे वह चाहे	अपनी रहमत में	ताकि दाख़िल करे अल्लाह

كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	की	जब	25	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	जो काफ़िर हुए

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तसल्ली	तो अल्लाह ने उतारी	ज़मानाए जाहिलियत	ज़िद	ज़िद	अपने दिलों में

عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَعَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى

तक़्वे की बात	और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया	और मोमिनों पर	अपने रसूल (स) पर

وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾ ع ٣ ٩ ١١

26	जानने वाला	हर शै का	और है अल्लाह	और उस के अहल	ज़ियादा हक़दार उस के	और वह थे

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

मस्जिदे हराम	अलबत्ता तुम ज़रूर दाख़िल होगे	हक़ीक़त के मुताबिक़	ख़ाब	अपने रसूल (स) को	सच्चा दिखाया अल्लाह ने	यक़ीनन

اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ

और (बाल) कटवाओगे	अपने सर	मुंडवाओगे	अम्न ओ अमान के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर

لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ

इस	उस से वरे (पहले)	पस कर दी उस ने	जो तुम नहीं जानते	पस उस ने मालूम कर लिया	तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा

فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

हक़	और दीन	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	जिस ने भेजा	वह	27	एक क़रीबी फ़तह

لِيُظْهِرَهٗ عَلَي الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

28	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	तमाम	दीन	पर	ताकि उसे ग़ालिब कर दे

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फ़तह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24)

यह वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका, और रुके हुए क़ुरबानी के जानवरों को उन के मुक़ाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़िताल की इजाज़त देते) अगर (शहरे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नक़्सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25)

जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) ज़मानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (क़ाइम रखा) तक़्वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26)

यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़ाब हक़ीक़त के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अम्न ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फ़त्हे मक्का) से पहले ही एक क़रीबी फ़तह। (27)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (28)

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ

आपस में	रहम दिल	काफ़िरों पर	बड़े सख़्त	उन के साथ	और जो लोग	अल्लाह के रसूल	मुहम्मद (स)

تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ

उन की अ़लामत	और रज़ा मन्दी	अल्लाह से-का	फ़ज़्ल	वह तलाश करते हैं	सिज्दा रेज़ होते	रुकूअ़ करते	तू उन्हें देखेगा

فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ڔ وَمَثَلُهُمْ معانقة ١٥ عند المتأخرين ١٢

और उन की मिसाल (सिफ़त)	तौरेत में	उन की मिसाल (सिफ़त)	यह	सिज्दों का असर	से	उन के चेहरों में-पर

فِي الْاِنْجِيْلِ ڗ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى

फिर वह खड़ी हो गई	फिर वह मोटी हुई	फिर उसे क़वी किया	अपनी सुई	उस ने निकाली	जैसे एक खेती	इन्जील में

عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

उन से जो	वादा किया अल्लाह ने	काफ़िरों	उन से	ताकि गुस्से में लाए	किसान (जमा)	वह भली लगती है	अपनी जड़ (नाल) पर

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ع ﴿٢٩﴾ ع ٣ ١٢

29	अ़ज़ीम	और अजर	मग़फ़िरत	उन में से	और उन्हों ने आमाल किए अच्छे	ईमान लाए

آيَاتُهَا ١٨ ❀ سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ (٤٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2 — (49) सूरतुल हुजुरात (कमरे) — आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह के सामने-आगे	न आगे बढ़ो तुम	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا

न ऊँची करो	मोमिनो	ऐ	1	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

जैसे बुलन्द आवाज़	गुफ़्तगू में	उस के सामने	और न ज़ोर से बोलो	नबी (स) की आवाज़	ऊपर-पर	अपनी आवाज़ें

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ

बेशक	2	न जानते (ख़बर भी न) हो	और तुम	तुम्हारे अ़मल	अकारत हो जाएं	कहीं	बाज़ (दूसरे) से	तुम्हारे बाज़ (एक)

الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ

जो-जिन	यह वह लोग	अल्लाह का रसूल (स)	नज़्दीक	अपनी आवाज़ें	पस्त रखते हैं	जो लोग

امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٣﴾ اِنَّ

बेशक	3	अ़ज़ीम	और अजर	मग़फ़िरत	उन के लिए	परहेज़गारी के लिए	उन के दिल	आज़माया है अल्लाह ने

الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُـجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾

4	अ़क़्ल नहीं रखते	उन में से अक्सर	हुजरों	बाहर से	आप (स) को पुकारते हैं	जो लोग

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों पर बड़े सख़्त हैं, आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते, सिज्दा रेज़ होते, वह तलाश करते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिज्दों के असर (निशानात) हैं, यह उन की सिफ़त तौरेत में (मज़्कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्जील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे क़वी किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरों को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, मग़फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम का। **(29)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(1)** ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से बुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। **(2)** बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़्दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग़फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम है। **(3)** बेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हुजरों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। **(4)**

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

और अगर	अलबत्ता वह	सब्र करते	यहां तक कि	आप (स) निकल आते	उन के पास	अलबत्ता होता	बेहतर	उन के लिए	और अल्लाह	बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ

मेह्रबान	5	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	अगर	आए तुम्हारे पास	कोई फ़ासिक़ बद किर्दार	ख़बर ले कर	तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो	कहीं

تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦ وَاعْلَمُوْٓا

तुम ज़रर पहुँचाओ	किसी क़ौम को	नादानी से	फिर हो तुम	पर	जो तुम ने किया (अपना किया)	नादिम (जमा)	6	और जान रखो

اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

कि	तुम्हारे दरमियान	अल्लाह का रसूल (स)	अगर वह तुम्हारा कहा मानें	में	अक्सर	कामों से-में	अलबत्ता तुम मुशकिल में पड़ो

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ

और लेकिन अल्लाह	मुहब्बत दी	तुम्हें	ईमान की	और उसे आरास्ता कर दिया	तुम्हारे दिलों में	और नापसंदीदा कर दिया	तुम्हारे सामने

الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ۙ فَضْلًا

कुफ़्र	और गुनाह	और नाफ़रमानी	यही लोग	वह	हिदायत पाने वाले	7	फ़ज़्ल

مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ

अल्लाह से-के	और नेमत	और अल्लाह	जानने वाला	हिक्मत वाला	8	और अगर	दो गिरोह	से-के

الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا

मोमिन (जमा)	बाहम लड़ पड़ें	तो सुलह करा दो तुम	उन दोनों के दरमियान	फिर अगर ज़ियादती करे	उन दोनों में से एक

عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ

दूसरे पर	तो तुम लड़ो	उस से जो	ज़ियादती करता है	यहां तक कि	रुजूअ़ करे	तरफ़	हुक्मे इलाही	फिर अगर जब वह रुजूअ़ कर ले

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

तो सुलह करा दो तुम	उन दोनों के दरमियान	अ़दल के साथ	और तुम इंसाफ़ किया करो	बेशक अल्लाह	दोस्त रखता है	इंसाफ़ करने वाले	9

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

इस के सिवा नहीं	मोमिन (जमा)	भाई	पस सुलह करा दो	दरमियान	अपने भाई	और डरो अल्लाह से	ताकि तुम पर

ع ١٠ / ١٣ الثلثة

تُرْحَمُوْنَ ۝١٠ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى

रहम किया जाए	10	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	न मज़ाक़ उड़ाए	एक गिरोह	(दूसरे) गिरोह का	क्या अ़जब

اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاۗءٌ مِّنْ نِّسَاۗءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا

कि वह हों	बेहतर	उन से	और न औरतें	औरतों से-का	क्या अ़जब	कि वह हों	बेहतर

مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ

उन से	और न ऐब लगाओ	बाहम (एक दूसरे)	और बाहम न चिड़ाओ	बुरे अल्क़ाब से	बुरा नाम

الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١١

फ़िस्क़	ईमान के बाद	और जो-जिस	तौबा न की (बाज़ न आया)	तो यही लोग	वह ज़ालिम (जमा)	11

और अगर वह सब्र करते यहां तक कि आप (स) (ख़ुद) उन के पास निकल आते तो उन के लिए अल्बत्ता बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (5)
ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास कोई बदकार आए ख़बर ले कर तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं नादानी से तुम किसी क़ौम को ज़रर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर नादिम होना पड़े। (6)
और जान रखो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह के रसूल (स) हैं, अगर वह अक्सर कामों में तुम्हारा कहा मानें तो तुम (ख़ुद ही) मुशकिलात में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में) नापसंदीदा कर दिया कुफ़्र ओ फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को, यही लोग (राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7)
अल्लाह के तरफ़ से फ़ज़्ल और नेमत, और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (8)
और अगर मोमिनों के दो गिरोह बाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनो के दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर ज़ियादती करे उन दोनों में से एक दूसरे पर, तो तुम उस से लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रुजूअ़ कर ले, फिर जब वह रुजूअ़ कर ले तो तुम उन दोनों के दरमियान अ़दल के साथ सुलह करा दो और तुम इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (9)
इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (10)
ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह (मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दों) का मज़ाक़ न उड़ाएं, क्या अ़जब कि वह उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़) उड़ाएं, क्या अ़जब कि वह उन से बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐब न लगाओ, और बाहम बुरे अल्क़ाब से न चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान के बाद फ़िस्क़ में नाम कमाना बुरा है, और जो बाज़ न आया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की ग़ीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (12)
ऐ लोगो! बेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और क़बीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह बेशक जानने वाला, ख़बरदार है। (13)
देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाख़िल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (14)
इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्हों ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)
आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16)
वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)
बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ

बाज़ गुमान	बेशक	गुमानों से	बहुत से	बचो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ

कि वह खाए	तुम में से कोई	क्या पसंद करता है?	बाज़ (दूसरे) की	तुम में से (एक)	और ग़ीबत न करे	और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की	गुनाह

لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾

12	निहायत मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो तुम	तो उस से तुम घिन करोगे	मुर्दा	अपने भाई का गोश्त

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ

और क़बीले	ज़ातें	और बनाया तुम्हें	और एक औ़रत	एक मर्द से	बेशक हम ने पैदा किया तुम्हें	ऐ लोगो!

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

13	बाख़बर	जानने वाला	बेशक अल्लाह	तुम में सब से बड़ा परहेज़गार	अल्लाह के नज़्दीक	बेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला	ताकि तुम एक दूसरे की शनाख़्त करो

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

और अभी नहीं	हम इस्लाम लाए हैं	तुम कहो	और लेकिन	तुम ईमान नहीं लाए	फ़रमा दें	हम ईमान लाए	देहाती	कहते हैं

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ

तुम्हें कमी न करेगा	अल्लाह और उस का रसूल (स)	तुम इताअ़त करोगे	और अगर	तुम्हारे दिलों में	ईमान	दाख़िल हुआ

مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	14	मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ भी	तुम्हारे आमाल	से

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ

अपने मालों से	और उन्हों ने जिहाद किया	न पड़े शक में वह	फिर	और उस का रसूल (स)	अल्लाह पर	ईमान लाए

وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ

फ़रमा दें	15	सच्चे	वह	यही लोग	अल्लाह की राह	में	और अपनी जानों से

اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	जानता है	और अल्लाह	अपना दीन	क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को?

فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ

वह इस्लाम लाए	कि	आप (स) पर	वह एहसान रखते हैं	16	जानने वाला	चीज़	हर एक	और अल्लाह	ज़मीन में

قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ

तुम पर	एहसान रखता है	बल्कि अल्लाह	अपने इस्लाम लाने का	मुझ पर	न एहसान रखो तुम	फ़रमा दें

اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

वह जानता है	बेशक अल्लाह	17	सच्चे	तुम हो	अगर	ईमान की तरफ़	कि उस ने हिदायत दी तुम्हें

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ ع ٢ ٨ ١٤

18	तुम करते हो	वह जो	देखने वाला	और अल्लाह	और ज़मीन	पोशीदा बातें आस्मानों की

المنزل ٧

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٥٠) سُوْرَةُ قٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 45 (50) सूरह क़ाफ़ रुकूआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक डर सुनाने वाला	उन के पास आया	कि	उन्हों ने तअज्जुब किया	बल्कि	1	मजीद	क़सम है क़ुरआन	क़ाफ़

فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

मिट्टी	और हो गए	क्या जब हम मर गए	2	अजीब	शै	यह	काफ़िरों	तो कहा

ذٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا

और हमारे पास	उन में से	ज़मीन	जो कुछ कम करती है	तहक़ीक़ हम जानते हैं	3	दूर	दोबारा लौटना	यह

كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾

5	उलझी हुई	एक बात में	पस वह	जब वह आया उन के पास	हक़ को	बल्कि उन्हों ने झुटलाया	4	महफ़ूज़ रखने वाली किताब

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

और उस में नहीं	और उस को आरास्ता किया	बनाया उस को	कैसे	उन के ऊपर	आस्मान की तरफ़	तो क्या वह नहीं देखते?

مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا

और उगाए	पहाड़ (जमा)	उस में	और डाले (जमाए)	हम ने फैलाया	और ज़मीन	6	शिगाफ़	कोई

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾

8	रुजूअ करने वाला बन्दा	लिए-हर	और नसीहत	ज़रीआए बीनाई	7	खुशनुमा	हर क़िस्म	से-के	उस में

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ﴿٩﴾

9	काटने (खेती)	और दाना (ग़ल्ला)	बाग़ात	उस से	फिर हम ने उगाए	बाबरकत	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ

उस से	और हम ने ज़िन्दा किया	बन्दों के लिए	रिज़्क़	10	तह ब तह	ख़ोशे	जिन के	बुलन्द ओ बाला	और खजूर के दरख़्त

بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

नूह (अ) की क़ौम	इन से क़ब्ल	झुटलाया	11	निकलना	इसी तरह	मुर्दा	शहर (ज़मीन)

وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾

13	लूत (अ)	और भाई (जमा)	और फ़िरऔन	और आद	12	और समूद	और अहले रस

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

14	वादाए अज़ाब	पस साबित हो गया	रसूलों	सब ने झुटलाया	और क़ौमे तुब्बअ	और अहले अयका (बन के रहने वाले)

ع ١٥/١ ١٥

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾

15	पैदा करना अज़ सरे नौ	से	शक में	बल्कि वह	पहली बार	पैदा करने से	तो क्या हम थक गए

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़ाफ़ - क़सम है क़ुरआन मजीद की। (1)

बल्कि उन्हों ने तअज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)

क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़्ल) है। (3)

तहक़ीक़ हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अजसाम) में से ज़मीन और हमारे पास महफ़ूज़ रखने वाली किताब है। (4)

बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)

तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)

और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाईं हर क़िस्म की खुशनुमा (चीज़ें)। (7)

हर रुजूअ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)

और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बाग़ात उगाए और खेती का ग़ल्ला। (9)

और बुलन्द ओ बाला खजूर के दरख़्त, जिन के तह ब तह (खूब गुंधे हुए) ख़ोशे हैं। (10)

रिज़्क़ बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (क़ब्र से) निकलना होगा। (11)

इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम और अहले रस और समूद ने। (12)

आद और फ़िरऔन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)

और बन के रहने वालों ने और क़ौमे तुब्बअ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

और तहक़ीक़ हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वस्वसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा क़रीब हैं। (16)
जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)
और वह कोई बात (ज़बान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहबान तैयार बैठा है। (18)
और हक़ के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू बिदकता था। (19)
और सूर फूंका गया, यह वईद का दिन है। (20)
और हर शख़्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)
तहक़ीक़ तू इस से ग़फ़्लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (ग़फ़्लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)
और कहेगा उस का हम नशीन (फ़रिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाज़िर है। (23)
(हुक्म होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24)
भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)
जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में। (26)
उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)
(अल्लाह) फ़रमाएगाः तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ़ पहले वादाए अज़ाब भेज चुका हूँ। (28)
मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं ज़ुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)
जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगीः क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)
और जन्नत परहेज़गारों के नज़्दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)
यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रुजूअ़ करने वाले, निगहदाश्त करने वाले के लिए। (32)
जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रुजूअ़ करने वाले दिल के साथ आया। (33)
(हम फ़रमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ

बहुत क़रीब	और हम	उस का जी	उस के	जो वस्वसे गुज़रते हैं	और हम जानते हैं	इन्सान	और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया

اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ

दाएं से	दो (2) लेने (लिख लेने) वाले	जब लेते (लिख लेते) हैं	16	रगे गर्दन (शह रग)	से	उस के

وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

18	तैयार बैठा हुआ	एक निगहबान	उस के पास	मगर	कोई बात	और नहीं निकालता	17	बैठा हुआ	और बाएं से

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ

और फूंका गया	19	भागता (बिदकता)	उस से	जिस से तू था	यह	हक़ के साथ	मौत की बेहोशी	और आ गई

فِى الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

एक चलाने वाला	उस के साथ	हर शख़्स	और आएगा (हाज़िर होगा)	20	वईद का दिन	यह	सूर में

وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ

तेरा पर्दा	तुझ से	तो हम ने हटा दिया	इस से	ग़फ़्लत में	तहक़ीक़ तू था	21	और गवाही देने वाला

فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيْدٌ ؕ ﴿٢٣﴾

23	हाज़िर	जो मेरे पास	यह	उस का हम नशीन	और कहेगा	22	बड़ी तेज़	आज	पस तेरी नज़र

اَلْقِيَا فِىْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ۙ﴿٢٥﴾

25	शुबहात डालने वाला	हद से गुज़रने वाला	माल के लिए	मना करने वाला	24	सरकश	हर नाशुक्रा	जहन्नम में	तुम दोनों डाल दो

اِلَّذِىْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

26	सख़्त	अज़ाब में	पस उसे डाल दो तुम	दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	ठहराया	वह जिस

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ

फ़रमाएगा	27	परले दरजे की	गुमराही में	था	और लेकिन वह	मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया	ऐ हमारे रब	उस का हम नशीन	कहेगा

لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ

बात	नहीं बदली जाती	28	वादा-ए-अज़ाब	तुम्हारी तरफ़	और मैं पहले भेज चुका हूँ	मेरे पास-सामने	तुम न झगड़ो

لَدَىَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ ع ٢ ١٤ ١٦

क्या तू भर गई?	जहन्नम से	हम कहेंगे	जिस दिन	29	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	और नहीं मैं	मेरे पास (हाँ)

وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾

31	दूर	न	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़्दीक कर दी जाएगी	30	मज़ीद है	से-कुछ	क्या	और वह कहेगी

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِىَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	डरा	जो	32	निगहदाश्त करने वाला	हर रुजूअ़ करने वाले के लिए	यह जो तुम से वादा किया जाता था

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۙ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

34	हमेशा रहने का दिन	यह	सलामती के साथ	तुम उस में दाख़िल हो जाओ	33	रुजूअ़ करने वाले दिल के साथ	और आया

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

इन से क़ब्ल	और कितनी हलाक कीं हम ने	35	और भी ज़ियादा	और हमारे पास	उस में	जो वह चाहेंगे	उन के लिए

مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

36	भागने की जगह	से (कहीं)	क्या	पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में	पकड़ में	इन से	वह ज़ियादा सख़्त	उम्मतें

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ

और वह	डाले (लगाए) कान	या	दिल	उस का	हो	उस के लिए जो	नसीहत	इस	में	बेशक

شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ

छः (6) दिन में	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया	और तहक़ीक़	37	मुतवज्जेह

وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

और पाकीज़गी बयान करो	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करो तुम	38	किसी तकान ने	और नहीं छुआ हमें

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

और रात में	39	और गुरूब होने से क़ब्ल	सूरज का तुलूअ	क़ब्ल	अपने रब की तारीफ़ के साथ

فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ

से	पुकारने वाला पुकारेगा	जिस दिन	और सुनो तुम	40	सिज्दों (नमाज़)	और बाद	पस उसकी पाकीज़गी बयान करो

مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

42	बाहर निकलने का दिन	यह	हक़ के साथ	चीख़	वह सुनेंगे	जिस दिन	41	जगह क़रीब

اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ

उन से	ज़मीन	जिस दिन शक़ हो जाएगी	43	फिर लौट कर आना है	और हमारी तरफ़	और मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	बेशक हम

سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	वह जो	हम खूब जानते हैं	44	आसान	हमारे लिए	हश्र	यह	जल्दी करते हुए

ع ٣ ١٦ ١٧ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

45	मेरी वईद	वह डरता है	जो	कुरआन से	पस नसीहत करें	जबर करने वाले	उन पर	और नहीं आप (स)

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ (٥١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

आयात 60 — (51) सूरतुज़ ज़ारियात, बिखेरने वालियाँ — रुकूआत 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ

फिर तक़सीम करने वाले	3	नर्मी से	फिर चलने वाली	2	बोझ	फिर उठाने वाली	1	उड़ा कर	क़सम है परागन्दा करने वाली (हवाओं)

اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

6	अलबत्ता वाक़े होने वाली	जज़ा ओ सज़ा	और बेशक	5	अलबत्ता सच है	तुम्हें वादा दिया जाता है	इस के सिवा नहीं	4	हुक्म से

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ियादा है। (35)
और हम ने इन (अहले मक्का) से क़ब्ल कितनी (ही) हलाक कीं उम्मतें, वह पकड़ (कुव्वत) में इन से ज़ियादा सख़्त थीं, पस उन्हों ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36)
बेशक उस में नसीहत (बड़ी इब्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मुतवज्जेह हो। (37)
और तहक़ीक़ हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं छुआ। (38)
पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सब्र करो, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ और गुरूब से क़ब्ल। (39)
और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40)
और सुनो, जिस दिन पुकराने वाला क़रीब जगह से पुकारेगा। (41)
जिस दिन वह ठीक ठीक चीख़ सुनेंगे, यह (क़ब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42)
बेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (43)
जिस दिन ज़मीन शक़ हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हश्र हमारे लिए आसान है। (44)
जो वह कहते हैं हम खूब जानते हैं, और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) कुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अ़ज़ाब) से डरता है। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है (ख़ाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1)
फिर (बारिश का) बोझ उठाने वाली हवाओं की, (2)
फिर नर्मी से चलने वाली (कश्तियों) की, (3)
फिर हुक्म से तक़सीम करने वाले (फ़रिश्तों) की, (4)
इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5)
और बेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाक़े होने वाली है। (6)

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾ اِنَّكُمْ لَفِىْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ

उस से	फेरा जाता है	8	मुख़्तलिफ़	बात	अलबत्ता में	बेशक तुम	7	रास्तों वाले	और क़सम है आस्मान की

مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾

11	भूले हुए हैं	ग़फ़लत में	वह	वह जो	10	अटकल दौड़ाने वाले	मारे गए	9	जो फेरा जाता है

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ذُوْقُوْا

तुम चखो	13	उलटे सीधे पड़ेंगे	आग पर	वह	उस दिन	12	जज़ा औ सज़ा का दिन	कब?	वह पूछते हैं

فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ

बाग़ात में	मुत्तक़ी (नेक चलन)	बेशक	14	जल्दी करते	तुम थे उस की	वह जो	यह	अपनी शरारत

وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

इस	क़ब्ल	थे	बेशक वह	उन का रब	जो दिया उन्हें	लेने वाले	15	और चश्मे

مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ

वह	और वक़्ते सुबह	17	वह सोते	रात से-में	थोड़ा	वह थे	16	नेकोकार

يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾ وَفِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

19	और तंगदस्त (ग़ैर सवाली)	सवाली के लिए	हक़	उन के माल (जमा)	और में	18	असतग़फ़ार करते

وَفِى الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَفِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَفِى

और में	21	तो क्या तुम देखते नहीं?	और तुम्हारी ज़ात में	20	यक़ीन करने वालों के लिए	निशानियां	और ज़मीन में

السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ

हक़ है	बेशक यह	और ज़मीन	आस्मानों	क़सम है रब की	22	और जो तुम से वादा किया जाता है	तुम्हारा रिज़्क़	आस्मानों

مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	मेहमान	बात (ख़बर)	आई तुम्हारे पास	क्या	23	बोलते हो	जो तुम	जैसे

ع ٢٣ ١٨

الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

وقف لازم

25	नाशनासा	लोग	सलाम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस के पास	वह आए	जब	24	इज़्ज़तदार

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ

कहा	उन के	फिर वह सामने रखा	26	मोटा ताज़ा बछड़ा	पस लाया	अपने अहले ख़ाना की तरफ़	फिर वह मुतवज्जेह हुआ

اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ

एक बेटे की	और उन्हों ने बशारत दी	तुम डरो नहीं	वह बोले	कुछ डर	उन से	तो उस ने महसूस किया	27	क्या तुम खाते नहीं?

عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِىْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ

बुढ़िया	और बोली	अपना चेहरा	उस ने हाथ मारा	हैरत से बोलती हुई	उस की बीवी	फिर आगे आई	28	दानिशमन्द

عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

30	जानने वाला	हिक्मत वाला	वह	बेशक	तेरा रब	फ़रमाया	यूँ ही	उन्हों ने कहा	29	बांझ

और क़सम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)
बेशक तुम अलबत्ता मुख़्तलिफ़ बात में हो। (8)
उस (क़ुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)
अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)
जो वह ग़फ़्लत में भूले हुए हैं। (11)
वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)
(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)
(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और चश्मों में होंगे। (15)
लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, बेशक वह इस से क़ब्ल नेकोकार थे। (16)
वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)
और वक़्ते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़्शिश मांगते) थे। (18)
और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)
और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)
और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)
और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)
क़सम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, बेशक यह (क़ुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)
क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की? (24)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने “सलाम” कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग नाशनासा थे। (25)
फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)
फिर उन के सामने रखा (और) कहाः क्या तुम खाते नहीं? (27)
तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्हों ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की बशारत दी। (28)
फिर उस की बीवी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर (हाथ) मारा और बोलीः (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)
उन्हों ने कहाः ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, बेशक वह हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

الجزء ٢٧

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

बेशक हम भेजे गए हैं	उन्हों ने जवाब दिया	31	भेजे हुए (फ़रिश्तो)	ऐ	मक़सद तुम्हारा	तो क्या	उस ने कहा

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً

निशान किए हुए	33	पकी हुई मिट्टी से	पत्थर	उन पर	ताकि हम भेजें (बरसाएं)	32	मुज्रिम क़ौम (मुज्रिमों की क़ौम)	तरफ़

عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	ईमान वाले	से	उस में	जो था	पस हम ने निकाल लिया	34	हद से गुज़र जाने वालों के लिए	तुम्हारे रब के हां

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً

एक निशानी	उस में	और हम ने छोड़ दी	36	मुसलमानों	से-का	एक घर के सिवा	उस में	पस हम ने न पाया

لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾ وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ

जब हम ने उसे भेजा	और मूसा (अ) में	37	दर्दनाक अ़ज़ाब	जो डरते हैं	उन लोगों के लिए

اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

39	या दीवाना	जादूगर	और कहा	अपनी क़ुव्वत के साथ	तो उस ने सरताबी की	38	रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ	फ़िरऔ़न की तरफ़

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ

और आद में	40	मलामत ज़दा	और वह	दर्या में	फिर हम ने उन्हें फेंक दिया	और उस का लश्कर	पस हम ने उसे पकड़ा

اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ

आती	किसी शै को	वह न छोड़ती थी	41	नामुबारक आन्धी	उन पर	जब हम ने भेजी

عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا

फ़ाइदा उठा लो	उन को	जब कहा गया	और समूद में	42	गली सड़ी हड्डी की तरह	मगर उसे कर देती	जिस पर

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

बिजली की कड़क	पस उन्हें पकड़ा	अपने रब का हुक्म	से	तो उन्हों ने सरकशी की	43	एक मुद्दत तक

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

45	ख़ुद अपनी मदद करने वाले	और वह न थे	खड़ा होने की	पस उन में सकत न रही	44	देखते थे	और वह

ع ٢ ٢٣ ١

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

46	लोग नाफ़रमान	थे	बेशक वह	उस से क़ब्ल	और नूह (अ) की क़ौम

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا

हम ने फ़र्श बनाया उसे	और ज़मीन	47	वसीउ़ल क़ुदरत हैं	और बेशक हम	हाथ (क़ुव्वत) से	हम ने उसे बनाया	और आस्मान

فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	दो जोड़े (क़िस्म)	हम ने पैदा किए	हर शै	और से	48	पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

50	वाज़ेह	डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह की तरफ़	पस तुम दौड़ो	49	नसीहत पकड़ो

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो! तुम्हारा मक़सद क्या है? (31) उन्हों ने जवाब दिया: बेशक हम मुज्रिमों की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर (संगरेज़े) बरसाएं। (33) तुम्हारे रब के हां हद से गुज़र जाने वालों के लिए निशान किए हुए। (34) पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35) पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36) और हम ने छोड़ दी दर्दनाक अ़ज़ाब से डरने वालों के लिए उस शहर में एक निशानी। (37) और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है, जब हम ने उसे फ़िरऔ़न की तरफ़ भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38) तो उस (फ़िरऔ़न) ने अपनी क़ुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ सरताबी की और कहा कि यह जादूगर या दीवाना है। (39) पस हम ने उसे और उस के लश्कर को पकड़ा, फिर हम ने उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह मलामत ज़दा (रह गया)। (40) और (तुम्हारे लिए निशानी है) आद में, जब हम ने उन पर नामुबारक आन्धी भेजी। (41) वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस पर वह आती मगर उसे एक गली सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42) और समूद में (भी एक निशानी है) जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी) मुद्दत और फ़ाइदा उठा लो। (43) तो उन्हों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें बिजली की कड़क ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44) पस उन में खड़ा होने की सकत न रही और न ख़ुद अपनी मदद कर सकते थे। (45) और नूह (अ) की क़ौम को उस से क़ब्ल (हम ने हलाक किया), बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (46) और हम ने आस्मान को बनाया अपने ज़ोर से और बेशक हम उस की क़ुदरत रखते हैं। (47) और हम ने ज़मीन को (बतौर) फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं। (48) और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा कीं ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49) पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं बेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51)
इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्हों ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52)
क्या उन्हों ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग हैं। (53)
पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54)
और आप (स) समझाएं, बेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55)
और मैं ने पैदा किए जिन्न और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमांबरदारी) करें। (56)
मैं उन से कोई रिज़्क़ नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57)
बेशक अल्लाह ही राज़िक़ है, क़ुव्वत वाला, निहायत क़ुदरत वाला। (58)
पस बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए (अ़ज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59)
सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्हों ने उस दिन का इन्कार किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है तूरे सीना की। (1)
और लिखी हुई किताब की, (2)
खुले औराक़ में। (3)
और बैते मअ़मूर (फ़रिश्तों के कअ़बाए आस्मानी) की। (4)
और बुलन्द छत की। (5)
और जोश मारते दर्या की। (6)
बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7)
उसे कोई टालने वाला नहीं। (8)
जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9)
और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे)। (10)
सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11)
वह जो मशग़ले में (बेहूदगी से) खेलते हैं। (12)
जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13)
यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	51	वाज़ेह डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	और तुम न ठहराओ

مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾ قف

52	या दीवाना	जादूगर	उन्हों ने कहा	मगर	कोई रसूल	इन से पहले	वह जो	नहीं आया

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

54	कोई इल्ज़ाम	तो नहीं आप (स)	पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से	53	सरकश	लोग	बल्कि वह	क्या उन्हों ने एक दूसरे को वसीयत की उस की

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ

और इन्सान	जिन्न	और नहीं पैदा किया मैं ने	55	ईमान लाने वाले	नफ़ा देता है	समझाना	तो बेशक	आप (स) समझाएं

اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ

कि	और मैं नहीं चाहता	कोई रिज़्क़	उन से	मैं नहीं मांगता	56	इस लिए कि वह मेरी इबादत करें	मगर-सिर्फ़

يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾ فَاِنَّ

पस बेशक	58	निहायत क़ुदरत वाला	क़ुव्वत वाला	राज़िक़	वह	बेशक अल्लाह	57	वह मुझे खिलाएं

لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

59	पस वह जल्दी न करें	उन के साथी	पैमाने	जैसे	डोल (पैमाने)	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٣ ١٤ ٢

60	उन से वादा किया जाता है	वह जिस	उन का दिन	से-का	उन लोगों के लिए जिन्हों ने इन्कार किया	सो बरबादी

اٰيَاتُهَا ٤٩ ❀ سُوْرَةُ الطُّوْرِ (٥٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 49 — (52) सूरतुत तूर पहाड़ — रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِىْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾

4	और बैते मअ़मूर	3	खुले	औराक़ में	2	लिखी हुई	और किताब	1	क़सम तूरे (सीना)

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾

7	ज़रूर वाक़े होने वाला	तेरे रब का अ़ज़ाब	बेशक	6	और दर्या जोश मारता	5	बुलन्द	और छत

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾

10	चलने की तरह	पहाड़	और चलेंगे	9	थरथरा कर	आस्मान	जिस दिन थरथराएगा	8	कोई टालने वाला	नहीं उस को

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ — وقف لازم

जिस दिन	12	खेलते हैं	मशग़ला में	वह	वह जो	11	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	सो बरबादी

يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِىْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾

14	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह आग जो	यह है	13	धक्के दे कर	जहन्नम की आग	तरफ़	वह धक्के जाएंगे

اَفَسِحۡرٌ هٰذَاۤ اَمۡ اَنۡتُمۡ لَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۵﴾ اِصۡلَوۡهَا فَاصۡبِرُوۡۤا اَوۡ لَا تَصۡبِرُوۡا ۚ

न सब्र करो	या	फिर तुम सब्र करो	उस में दाख़िल हो जाओ	15	दिखाई नहीं देता तुम्हें	या तुम	यह	तो क्या जादू

سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ ؕ اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ

बेशक मुत्तक़ी (जमा)	16	जो तुम करते थे	सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा	तुम पर	बराबर

فِىۡ جَنّٰتٍ وَّنَعِيۡمٍ ﴿۱۷﴾ فٰكِهِيۡنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمۡ رَبُّهُمۡ ۚ وَوَقٰهُمۡ

और बचाया उन्हें	उन के रब ने	उस के साथ जो दिया उन्हें	ख़ुश होंगे	17	और नेमतों	बाग़ों में

رَبُّهُمۡ عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۸﴾ كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓــًٔا ۢ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۹﴾

19	जो तुम करते थे	उस के बदले में	रचते पचते	और तुम पियो	तुम खाओ	18	दोज़ख़	अ़ज़ाब	उन के रब ने

مُتَّكِـِٕيۡنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصۡفُوۡفَةٍ ۚ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيۡنَ

और जो लोग	20	बड़ी आँखों वाली हूरें	और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने	सफ़ बस्ता	तख़्तों पर	तकिया लगाए हुए

اٰمَنُوۡا وَاتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُمۡ بِاِيۡمَانٍ اَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَمَاۤ

और	उन की औलाद	उन के साथ	हम ने मिला दिया	ईमान के साथ	उन की औलाद	और उन्हों ने पैरवी की	ईमान लाए

اَلَتۡنٰهُمۡ مِّنۡ عَمَلِهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ كُلُّ امۡرِیًٔۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيۡنٌ ﴿۲۱﴾

21	रहन	उस ने कमाया (आमाल)	उस में जो	हर आदमी	कोई चीज़ (कुछ)	उन के अ़मल से	कमी नहीं की हम ने

وَاَمۡدَدۡنٰهُمۡ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحۡمٍ مِّمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۲۲﴾ يَتَنَازَعُوۡنَ فِيۡهَا

उस में	लपक लपक कर ले रहे होंगे	22	जो उन का जी चाहेगा	उस से	और गोश्त	फलों के साथ	और हम उन की मदद करेंगे

كَاۡسًا لَّا لَغۡوٌ فِيۡهَا وَلَا تَاۡثِيۡمٌ ﴿۲۳﴾ وَيَطُوۡفُ عَلَيۡهِمۡ غِلۡمَانٌ لَّهُمۡ

उन के लिए	ख़िद्मतगार लड़के	उन पर- के	और इर्द गिर्द फिरेंगे	23	और न गुनाह की बात	उस में	न बकवास	प्याला

كَاَنَّهُمۡ لُـؤۡلُـؤٌ مَّكۡنُوۡنٌ ﴿۲۴﴾ وَاَقۡبَلَ بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ

बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	उन में से बाज़ (एक)	और मुतवज्जेह होगा	24	छुपा कर रखे हुए	मोती	गोया वह

يَّتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۲۵﴾ قَالُوۡۤا اِنَّا كُنَّا قَبۡلُ فِىۡۤ اَهۡلِنَا مُشۡفِقِيۡنَ ﴿۲۶﴾

26	डरते थे	अपने अहले ख़ाना में	पहले	बेशक हम थे	वह कहेंगे	25	आपस में पूछते हुए

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيۡنَا وَوَقٰٮنَا عَذَابَ السَّمُوۡمِ ﴿۲۷﴾ اِنَّا كُنَّا مِنۡ قَبۡلُ

इस से क़ब्ल	बेशक हम थे	27	गर्म हवा (लू)	अ़ज़ाब	और हमें बचा लिया	हम पर	तो एहसान किया अल्लाह ने

ع ۱ ۲۸ ۳ نَدۡعُوۡهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡبَرُّ الرَّحِيۡمُ ﴿۲۸﴾ فَذَكِّرۡ فَمَاۤ اَنۡتَ بِنِعۡمَتِ رَبِّكَ

अपना रब	फ़ज़्ल से	तो आप (स) नहीं	पस आप (स) नसीहत करें	28	रहम करने वाला	एहसान करने वाला	वही	बेशक वह	हम उस को पुकारते

بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجۡنُوۡنٍ ﴿۲۹﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ

उस के साथ	हम मुन्तज़िर हैं	शायर	वह कहते हैं	क्या	29	दीवाना	और न	काहिन

رَيۡبَ الۡمَنُوۡنِ ﴿۳۰﴾ قُلۡ تَرَبَّصُوۡا فَاِنِّىۡ مَعَكُمۡ مِّنَ الۡمُتَرَبِّصِيۡنَ ﴿۳۱﴾

31	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	तुम इन्तिज़ार करो	फ़रमा दें	30	ज़माना	हवादिस

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15) उस में दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16) बेशक मुत्तक़ी (बहिश्त के) बाग़ों और नेमतों में होंगे। (17) उस के साथ ख़ुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया। (18) तुम खाओ और पियो मज़े से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19) तख़्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20) और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अ़मल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21) और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22) वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न बकवास होगी न गुनाह की बात। (23) और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे ख़िद्मतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25) वह कहेंगे बेशक हम इस से पहले अहले ख़ाना में डरते थे। (26) तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अ़ज़ाब से। (27) बेशक इस से क़ब्ल हम उस को पुकारते थे, बेशक वही एहसान करने वाला, रहम करने वाला है। (28) पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29) क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिसे ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30) आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

क्या उन की अ़क़्लें उन्हें यही सिखाती हैं? या वह सरकश लोग हैं। (32) क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (क़ुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33) तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएं अगर वह सच्चे हैं। (34) क्या वह पैदा किए गए हैं बग़ैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (ख़ुद) पैदा करने वाले हैं। (35) क्या उन्हों ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यक़ीन नहीं रखते। (36) क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के ख़ज़ाने हैं? या वह दारोग़े हैं? (37) क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38) क्या उस के बेटियां और तुम्हारे लिए बेटे? (39) क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (40) क्या उन के पास (इल्मे) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41) क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया वही दाओ में गिरफ़्तार होंगे। (42) क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43) और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44) पस तुम उन को छोड़ दो यहां तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45) जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46) और बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए उस के अ़लावा अ़ज़ाब है। लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (47) और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48) और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (ग़ाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ

इस ने उसे घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं?	32	सरकश लोग	या वह	यही	उन की अ़क़्लें	क्या हुक्म देती (सिखाती) हैं उन्हें

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	सच्चे	अगर वह हैं	इस जैसी	एक बात	तो चाहिए कि वह ले आएं	33	वह ईमान नहीं लाते	बल्कि

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا

क्या उन्हों ने पैदा किए?	35	पैदा करने वाले	या वह	बग़ैर किसी शै	से	क्या वह पैदा किए गए हैं

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ

तेरा रब	ख़ज़ाने	क्या उन के पास	36	वह यक़ीन नहीं रखते	बल्कि	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ

तो चाहिए कि लाए	उस में-पर	वह सुनते हैं	कोई सीढ़ी	क्या उन के लिए-पास	37	दारोग़े	या वह

مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

39	बेटे	और तुम्हारे लिए	बेटियां	क्या उस के लिए	38	खुली	कोई सनद	उन का सुनने वाला

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

ग़ैब	क्या उन के पास	40	दबे जाते हैं	तावान से	तो वह	कोई अजर	क्या तुम उन से मांगते हो

فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۭ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ

वही	तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया	किसी दाओ	क्या वह इरादा रखते हैं	41	पस वह लिख लेते हैं

الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	उस से जो शिर्क करते हैं	पाक है अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	क्या उन के लिए	42	दाओ में गिरफ़्तार होंगे

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾

44	तह ब तह (जमा हुआ)	बादल	वह कहते हैं	गिरता हुआ	आस्मान से	कोई टुकड़ा	वह देखें	और अगर

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ

जिस दिन	45	बेहोश कर दिए जाएंगे	उस में	वह जो	अपना दिन	वह मिलें	यहां तक कि	पस छोड़ दो उन को

لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ

और बेशक	46	मदद किए जाएंगे	और न वह	कुछ भी	उन का दाओ	उन से-का	न काम आएगा

لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

47	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	वरे-अ़लावा उस	अ़ज़ाब	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

और आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ	हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में	बेशक आप (स)	अपने रब के हुक्म पर	और आप (स) सब्र करें

حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾ ع ٢ ٢١

49	सितारों	और पीठ फेरते	पस उस की पाकीज़गी बयान करें	रात	और से (में)	48	आप (स) उठें	जिस वक़्त

آیَاتُهَا ٦٢ ❀ سُوْرَةُ النَّجْمِ (٥٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(53) सूरतुन नज्म सितारा	आयात 62

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۙ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۚ﴿۲﴾ وَمَا یَنْطِقُ عَنِ

से	और वह नहीं बात करते	2	वह भटके	और न	तुम्हारे रफ़ीक़	न बहके	1	वह ग़ाइब होने लगे	जब	सितारे की क़सम

الْهَوٰى ؕ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ یُّوْحٰى ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِیْدُ الْقُوٰى ۙ﴿۵﴾

5	सख़्त क़ुव्वतों वाला	उस ने उसे सिखाया	4	भेजी जाती है	वहि	वह सिर्फ़	नहीं	3	ख़्वाहिश

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ﴿۶﴾ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ﴿۸﴾

8	फिर और नज़्दीक हुआ	फिर वह नज़्दीक हुआ	7	सब से बुलन्द	किनारे पर	और वह	6	फिर सामने आया	ताक़तों वाला

فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ؕ﴿۱۰﴾

10	जो उस ने वहि की	अपना बन्दा	तरफ़	तो उस ने वहि की	9	या उस से कम	दो किनारे	कमान	तो वह था (रह गई)

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا یَرٰى ﴿۱۲﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ

और तहक़ीक़ उस ने देखा उसे	12	जो उस ने देखा	पर	तो क्या तुम झगड़ते हो उस से	11	जो उस ने देखा	दिल	न झूट कहा

نَزْلَةً اُخْرٰى ۙ﴿۱۳﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿۱۴﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ؕ﴿۱۵﴾

15	जन्नतुल मावा	उस के नज़्दीक	14	सिदरतुल मुन्तहा	नज़्दीक	13	दूसरी मरतबा

اِذْ یَغْشَى السِّدْرَةَ مَا یَغْشٰى ۙ﴿۱۶﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿۱۷﴾

17	और न हद से बढ़ी	आँख	न कजी की	16	जो छा रहा था	सिदरह	जब छा रहा था

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿۱۸﴾ اَفَرَءَیْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۙ﴿۱۹﴾

19	और उज़्ज़ा	लात	तो क्या तुम ने देखा?	18	बड़ी	अपना रब	निशानियां	से	तहक़ीक़ उस ने देखी

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿۲۰﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿۲۱﴾

21	औरतें	और उस के लिए	मर्द	क्या तुम्हारे लिए	20	तीसरी एक और	और मनात

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِیْزٰى ﴿۲۲﴾ اِنْ هِیَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ

तुम	तुम ने वह नाम रख लिए हैं	मगर-सिर्फ़ नाम	यह	नहीं	22	बेढंगी	यह बांट तक़्सीम	यह

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ یَّتَّبِعُوْنَ

वह नहीं पैरवी करते	सनद	कोई	उस की	नहीं उतारी अल्लाह ने	और तुम्हारे बाप दादा

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ

उन के रब से	और (हालांकि) पहुँच चुकी उन के पास	नफ़्स (जमा)	और जो ख़्वाहिश	मगर-सिर्फ़ गुमान

ع ۱ ۲۵ ۵ الْهُدٰى ؕ﴿۲۳﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۖ﴿۲۴﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۚ﴿۲۵﴾

25	और दुनिया	पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत	24	जिस की वह तमन्ना करे	इन्सान के लिए	क्या	23	हिदायत

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

सितारे की क़सम! जब वह ग़ाइब होने लगे। (1)
तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) न बहके और न वह भटके। (2)
और वह अपनी ख़्वाहिश से बात नहीं करते। (3)
वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4)
उस को सिखाया उस सख़्त क़ुव्वत वाले, ताक़तों वाले (फ़रिश्ते) ने। (5)
फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6)
और वह बुलन्द किनारे पर था। (7)
फिर वह नज़्दीक हुआ, फिर और नज़्दीक हुआ। (8)
तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9)
तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10)
जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तस्दीक़ की। (11)
क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12)
और तहक़ीक़ उस ने उसे दूसरी मरतबा देखा। (13)
सिदरतुल मुन्तहा के नज़्दीक। (14)
उस के नज़्दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15)
जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16)
आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17)
तहक़ीक़ उस ने अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं। (18)
क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19)
और तीसरी एक और मनात को? (20)
क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियां)? (21)
यह बांट तक़्सीम बेढंगी है। (22)
यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और ख़्वाहिशे नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23)
क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24)
पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत और दुनिया। (25)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا

मगर	कुछ	उन की सिफ़ारिश	नफ़ा नहीं देती	आस्मानों में	फ़रिश्तों से	और कितने

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	बेशक	26	और वह पसंद फ़रमाए	जिस के लिए चाहे वह	इजाज़त दे अल्लाह	कि	उस के बाद

بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

उस का	और नहीं उन्हें	27	औरतों जैसा	नाम	फ़रिश्तों	अलबत्ता वह रखते हैं नाम	आख़िरत पर

مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ

यक़ीन से - मुक़ाबला	नफ़ा नहीं देता	और बेशक गुमान	मगर-सिर्फ़ गुमान	वह पैरवी करते	नहीं	कोई इल्म

شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ۚ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا

सिवाए	और वह न चाहता हो	हमारी याद से	रूगर्दां हुआ	जो	से	पस मुँह फेर लें	28	कुछ

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

वह ख़ूब जानता है	तेरा रब	बेशक	इल्म की	उन की रसाई	यह	29	दुनिया की ज़िन्दगी

بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى

में	और अल्लाह के लिए जो	30	हिदायत पाई	उसे-जिस	ख़ूब जानता है	और वह	उस के रास्ते से	गुमराह हुआ	उसे जो

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا

उस की जो उन्हों ने किए (आमाल)	बुराई की	उन्हें जिन्हों ने	ताकि वह बदला दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों

وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ۚ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ

कबीरा (बड़े) गुनाहों से	वह बचते हैं	जो लोग	31	भलाई के साथ	नेकी की	उन लोगों को जिन्हों ने	और जज़ा दे

وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ

जब	तुम्हें	और ख़ूब जानता है वह	वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	छोटे गुनाह	मगर-सिवाए	और बेहयाइयों

اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا

पस पाकीज़ा न समझो	अपनी माँएं	पेट (जमा)	में	बच्चे	तुम	और जब	ज़मीन से	उस ने पैदा किया तुम्हें

اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾ۧ اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ۙ وَاَعْطٰى ع ٢ ٦

और उस ने दिया	33	जिस ने रूगर्दानी की	तो क्या तू ने देखा	32	परहेज़गारी की	उसे जो-जिस	वह ख़ूब जानता है	अपने आप

قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ

वह ख़बर नहीं दिया गया	क्या	35	तो वह देख रहा है	इल्मे ग़ैब	क्या उस के पास	34	और उस ने बन्द कर दिया	थोड़ा सा

بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ۙ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ۙ اَلَّا تَزِرُ

कि नहीं उठाता	37	वफ़ा किया	वह जो-जिस	और इब्राहीम (अ)	36	मूसा (अ)	सहीफ़े	में	वह जो

وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ۙ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾ۙ

39	जो उस ने कोशिश की	मगर	किसी इन्सान के लिए	नहीं	और यह कि	38	किसी दूसरे का बोझ	कोई बोझ उठाने वाला

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26)
बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (27)
और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28)
पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दां हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29)
यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30)
और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जज़ा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31)
जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा रब वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32)
तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33)
और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34)
क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35)
क्या वह ख़बर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नहीं) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36)
और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना क़ौल) पूरा किया। (37)
कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38)
और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَاَنَّ سَعۡيَهٗ سَوۡفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجۡزٰٮهُ الۡجَزَآءَ الۡاَوۡفٰى ﴿٤١﴾ وَاَنَّ اِلٰى

और यह कि तरफ़	41	बदला पूरा पूरा	उसे बदला दिया जाएगा	फिर	40	अनक़रीब देखी जाएगी	उस की कोशिश	और यह कि

رَبِّكَ الۡمُنۡتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضۡحَكَ وَاَبۡكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ

वही मारता है	और बेशक वह	43	और वह रुलाता है	वही हँसाता है	और बेशक	42	इन्तिहा	तुम्हारा रब

وَاَحۡيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوۡجَيۡنِ الذَّكَرَ وَالۡاُنۡثٰى ﴿٤٥﴾ مِنۡ نُّطۡفَةٍ

नुत्फ़े से	45	और औरत	मर्द	जोड़े	उस ने पैदा किए	और बेशक वह	44	और जिलाता है

اِذَا تُمۡنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيۡهِ النَّشۡاَةَ الۡاُخۡرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغۡنٰى

उस ने ग़नी किया	वही	और बेशक वह	47	दोबारा	(जी) उठाना	उसी पर	और यह कि	46	जब वह डाला जाता

وَاَقۡنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعۡرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗۤ اَهۡلَكَ عَادَا ۨالۡاُوۡلٰى ﴿٥٠﴾

50	आद पहली (क़दीम)	उस ने हलाक किया	और बेशक वह	49	शिअ़रा (सितारे) का रब	और बेशक वही	48	और सरमायादार किया

وَثَمُوۡدَا۟ فَمَاۤ اَبۡقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا هُمۡ اَظۡلَمَ

बड़े ज़ालिम	वह	वह थे	बेशक वह	उस से क़ब्ल	और क़ौमे नूह (अ)	51	पस उस ने बाक़ी न छोड़ा	और समूद

وَاَطۡغٰى ﴿٥٢﴾ وَالۡمُؤۡتَفِكَةَ اَهۡوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰٮهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ

नेमत	पस किस	54	जिस ने ढांप लिया	तो उस को ढांप लिया	53	दे मारा	और उलटने वाली बस्तियां	52	और बहुत सरकश

رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا نَذِيۡرٌ مِّنَ النُّذُرِ الۡاُوۡلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ

क़रीब आ गई	56	पहले डराने वाले	से	एक डराने वाला	यह	55	तू शक करेगा	अपना रब

الۡاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيۡسَ لَهَا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنۡ

तो क्या-से	58	कोई खोलने वाला	अल्लाह के सिवा	उस के लिए उस का	नहीं	57	क़रीब आने वाली

هٰذَا الۡحَدِيۡثِ تَعۡجَبُوۡنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضۡحَكُوۡنَ وَلَا تَبۡكُوۡنَ ﴿٦٠﴾

60	और तुम नहीं रोते	और तुम हँसते हो	59	तुम तअ़ज्जुब करते हो	इस बात

ع ٣/١٠ السجدة ١٢

وَاَنۡتُمۡ سٰمِدُوۡنَ ﴿٦١﴾ فَاسۡجُدُوۡا لِلّٰهِ وَاعۡبُدُوۡا ﴿٦٢﴾ السجدة

62	अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो	पस तुम सिज्दा करो	61	ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो	और तुम

اٰيَاتُهَا ٥٥ ❀ (٥٤) سُوۡرَةُ الۡقَمَرِ ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٣

आयात 55 — (54) सूरतुल क़मर / चाँद — रुकूआत 3

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقۡتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانۡشَقَّ الۡقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنۡ يَّرَوۡا اٰيَةً يُّعۡرِضُوۡا وَيَقُوۡلُوۡا

और वह कहते हैं	वह मुँह फेर लेते हैं	कोई निशानी	और अगर वह देखते हैं	1	चाँद	और शक़ हो गया	क़ियामत	क़रीब आ गई

سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوۡا وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ وَكُلُّ اَمۡرٍ مُّسۡتَقِرٌّ ﴿٣﴾

3	वक़्त मुक़र्रर	और हर काम	अपनी ख़्वाहिशात	और पैरवी की	और उन्हों ने झुटलाया	2	(हमेशा) से होता चला आया	जादू

और यह कि उस की कोशिश अनक़रीब देखी जाएगी। (40)
फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (41)
और यह कि तुम्हारे रब (ही) की तरफ़ इन्तिहा है। (42)
और बेशक वही हँसाता और रुलाता है। (43)
और बेशक वही मारता और जिलाता है। (44)
और बेशक वही जिस ने मर्द और औरत के जोड़े पैदा किए। (45)
नुत्फ़े से, जब वह (रहम में) डाला जाता है, (46)
और यह कि उसी पर (उसी के ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47)
और बेशक उस ने ग़नी किया और सरमायादार किया। (48)
और बेशक वही शिअ़रा सितारे का रब है। (49)
और बेशक उस ने क़दीम आ़द को हलाक किया, (50)
और समूद को, पस उस ने बाक़ी न छोड़ा। (51)
और क़ौमे नूह (अ) को उस से क़ब्ल, बेशक वह बड़े ज़ालिम और बहुत सरकश थे। (52)
और (क़ौमे लूत अ की) उलटने वाली बस्तियों को दे मारा। (53)
तो उस को ढांप लिया जिस ने ढांप लिया। (54)
पस तू अपने रब की किस किस नेमत में शक करेगा! (55)
यह पहले डराने वालों में से एक डराने वाला। (56)
क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई। (57)
अल्लाह के सिवा उस का कोई खोलने वाला नहीं। (58)
तो क्या तुम उस बात से तअ़ज्जुब करते हो? (59)
और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं। (60)
और गा बजा कर टालते हो। (61)
पस तुम अल्लाह के आगे सिज्दा करो और तुम उस की इबादत करो। (62)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद शक़ हो गया। (1)
और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह) हमेशा से होता चला आया जादू है। (2)
और उन्हों ने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की, और हर काम के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ

हिक्मते बालिग़ा (कामिल दानिशमन्दी)	4	डांट (इब्रत)	जिस में	ख़बरें (जमा)	से	और तहक़ीक़ आ गई उन के पास

فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَیْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾ وقف لازم

6	शै नागवार	तरफ़	बुलाएगा एक बुलाने वाला	जिस दिन	उन से	सो तुम मुँह फेर लो	5	डराने वाले	तो न फ़ाइदा दिया

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ﴿٧﴾

7	परागन्दा	टिड्डियां	गोया कि वह	क़ब्रों से	वह निकलेंगे	उन की आँखें	झुकी हुई

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	8	बड़ा सख़्त दिन	यह	काफ़िर (जमा)	कहेंगे	पुकारने वाले की तरफ़	लपकते हुए

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

9	और डराया धमकाया गया	दीवाना	और उन्हों ने कहा	हमारे बन्दे	तो उन्हों ने झुटलाया	क़ौमे नूह	इन से क़ब्ल

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ

आस्मान के दरवाज़े	तो हम ने खोल दिए	10	पस मेरी मदद कर	मग़लूब	कि मैं	अपना रब	पस उस ने पुकारा

بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾

12	(जो) मुक़र्रर हो चुका था	उस काम पर	पानी	पस मिल गया	चश्मे	ज़मीन	और हम ने जारी कर दिए	11	कसरत से बरसने वाले पानी से

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِیْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ

उस के लिए जिस	बदला	हमारी आँखों के सामने	चलती थी	13	और कीलों वाली	तख़्तों वाली	पर	और हम ने सवार किया उसे

كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِیْ

मेरा अज़ाब	पस कैसा हुआ	15	कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो क्या है	एक निशानी	और तहक़ीक़ हम ने उसे रहने दिया	14	नाक़द्री की गई

وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	17	कोई नसीहत पकड़ने वाला?	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और तहक़ीक़ हम ने आसान किया	16	और मेरा डराना

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

तेज़	हवा	उन पर	बेशक हम ने भेजी	18	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	आ़द

فِیْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ

तने	गोया कि वह	लोग	वह उखाड़ देती (फेंकती)	19	चलती ही गई	नहूसत के दिन	में

نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِیْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ

और अलबत्ता तहक़ीक़	21	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब	हुआ	सो कैसा	20	जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ ع ٢٢ ١ ٨

23	डराने वालों को	झुटलाया समूद ने	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	हम ने आसान कर दिया क़ुरआन

فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِیْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से	क्या एक बशर	पस उन्हों ने कहा

और तहक़ीक़ उन के पास आ गईं (वह) ख़बरें जिन में इब्रत है। (4)
कामिल दानिशमन्दी की बातें, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5)
सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शै की तरफ़। (6)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियां हैं। (7)
पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहेंगेः यह बड़ा सख़्त दिन है। (8)
झुटलाया इन से क़ब्ल क़ौमे नूह (अ) ने, पस उन्हों ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्हों ने कहा: दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9)
पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10)
तो हम ने कसरत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11)
और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इल्मे इलाही में) मुक़र्रर हो चुका था (क़ौमे नूह अ की ग़रक़ाबी के लिए)। (12)
और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कश्ती पर) सवार किया। (13)
हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़द्री की गई। (14)
और तहक़ीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15)
पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना। (16)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17)
आ़द ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (18)
हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19)
वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं। (20)
सो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (21)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22)
समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23)
पस उन्हों ने कहा: क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ

वह जल्द जान लेंगे	25	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	बल्कि वह	हमारे दरमियान (हम में से)	उस पर	क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वहि)

غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ

उन के लिए	आज़माइश	ऊँटनी	भेजने वाले	बेशक हम	26	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	कौन	कल

فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	तक़्सीम कर दिया गया	कि पानी	और उन्हें ख़बर दे	27	और सब्र कर	सो तू इन्तिज़ार कर उन का

كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29	और कूंचें काट दीं	सो उस ने दस्त दराज़ी की	अपने साथी को	तो उन्हों ने पुकारा	28	हाज़िर किया गया (हाज़िर होना)	पीने की बारी	हर

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

चिंघाड़	उन पर	बेशक हम ने भेजी	30	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा

وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

नसीहत के लिए	हम ने आसान किया क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़	31	तरह सूखी रौन्दी हुई बाड़, बाड़ लगाने वाला	सो वह हो गए	एक

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजी	बेशक हम	33	डराने वाले (रसूल)	लूत (अ) की क़ौम ने	झुटलाया	32	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है

عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपनी तरफ़ से	फ़ज़्ल फ़रमा कर	34	सुबह सवेरे	हम ने बचा लिया उन्हें	सिवाए लूत के अहले ख़ाना	पत्थर बरसाने वाली आन्धी	उन पर

كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا

तो वह झगड़ने लगे	हमारी पकड़ से	और तहक़ीक़ (लूत अ ने) उन्हें डराया	35	जो शुक्र करे	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह

بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	उन की आँखें	तो हम ने मिटा दीं	उस के मेहमान	से	और अलबत्ता तहक़ीक़ उन्हों ने (लूत अ से) लेना चाहा	36	डराने में

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	38	ठहरने वाली (दाइमी)	अ़ज़ाब	सवेरे	सुबह आन पड़ा उन पर	और तहक़ीक़	37	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

ع ١٨ ٢ ٩ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

40	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़ हम ने आसान किया	39	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

तमाम	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	41	डराने वाले (रसूल)	फ़िरऔन वाले	और तहक़ीक़ आए

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ

उन से	बेहतर	क्या तुम्हारे काफ़िर	42	साहिबे क़ुदरत	ग़ालिब	पकड़	पस हम ने उन्हें आ पकड़ा

اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44	अपना बचाव कर लेने वाले	जमाअ़त	हम	वह कहते हैं	क्या	43	सहीफ़ों में	या तुम्हारे लिए नजात (माफ़ी नामा)

क्या हमारे दरमियान उस पर वहि
नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह
बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (25)
वह कल (जल्द ही) जान लेंगे कि
कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (26)
(ऐ सालेह अ) बेशक हम भेजने
वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश
के लिए, सो तू उन का (अनजाम
देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और
सब्र कर। (27)
और उन्हें ख़बर दे कि पानी उन के
दरमियान तक़्सीम कर दिया गया है
और हर एक को (अपनी) पीने की
बारी पर हाज़िर होना है। (28)
तो उन्हों ने अपने साथी को पुकारा,
सो उस ने दस्त दराज़ी की और
(ऊँटनी) की कूंचें काट दीं। (29)
तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा
डराना? (30)
बेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़
भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की
सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए
क़ुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है
कोई नसीहत हासिल करने वाला? (32)
लूत (अ) की क़ौम ने रसूलों को
झुटलाया। (33)
(तो) बेशक हम ने उन पर पत्थर
बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ)
के अहले ख़ाना के सिवा कि हम ने
बचा लिया उन्हें सुबह सवेरे, (34)
अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल फ़रमा कर,
इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस
को) जो शुक्र करे। (35)
और तहक़ीक़ (लूत अ) ने उन्हें
हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने
में झगड़ने (शक करने) लगे। (36)
और तहक़ीक़ उन्हों ने लूत (अ) से उन
के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना
चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दीं
(चौपट कर दीं), पस मेरे अ़ज़ाब और
मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37)
और तहक़ीक़ सुबह सवेरे उन पर
दाइमी अ़ज़ाब आ पड़ा। (38)
पस मेरे अ़ज़ाब और डराने (का
मज़ा) चखो। (39)
और तहक़ीक़ हम ने क़ुरआन को
आसान किया है नसीहत के लिए,
तो क्या है कोई नसीहत हासिल
करने वाला। (40)
और तहक़ीक़ क़ौमे फ़िरऔन के
पास रसूल आए। (41)
उन्हों ने हमारी आयतों (अहकाम और
निशानियों) को झुटलाया तमाम (की
तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा
एक ग़ालिब और साहिबे क़ुदरत की
पकड़ (की सूरत में)। (42)
क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर
हैं? या तुम्हारे लिए माफ़ी नामा है
(क़दीम) सहीफ़ों में? (43)
क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअ़त
अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ

और क़ियामत	वादागाह उन की	बल्कि क़ियामत	45	पीठ	और वह फेर लेंगे (भागेंगे)	जमाअ़त	अ़नक़रीब शिकस्त खाएगी

اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ

وقف لازم

वह घसीटे जाएंगे	जिस दिन	47	और जहालत	गुमराही में	बेशक मुज्रिम (जमा)	46	और बड़ी तल्ख़	वह सख़्त

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ط ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ

हम ने उसे पैदा किया	शै	बेशक हम हर	48	जहन्नम	लगना	तुम चखो	अपने मुँह (जमा)	पर-बल	जहन्नम में

بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ

और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं	50	आँख का	जैसे झपकना	एक	मगर-सिर्फ़	और नहीं हमारा हुक्म	49	एक अन्दाज़े के मुताबिक़

اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

52	सहीफ़ों में	जो उन्हों ने की	और हर बात	51	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	तुम जैसे

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ لا

54	और नहरें	बाग़ात में	बेशक मुत्तक़ी (जमा)	53	लिखी हुई	और बड़ी	छोटी	और हर

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع

ع ١٥ ٣ ١٠

55	साहिबे क़ुदरत	बादशाह	नज़्दीक	सच्चाई का मुक़ाम	में

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआ़त 3 — (55) सूरतुर रहमान — आयात 78

बेहद मेहरबान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

4	उस ने उसे सिखाया बात करना	3	उस ने पैदा किया इन्सान	2	उस ने सिखाया क़ुरआन	1	रहमान (अल्लाह)

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ

और आस्मान	6	वह सिज्दा में (सर बसजूद हैं)	और दरख़्त	और झाड़ियां-तारे	5	एक हिसाब से	और चाँद	सूरज

رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا

और क़ाइम करो	8	तराज़ू (तोल) में	हद से तजावुज़ करो	कि न	7	तराज़ू	और रखी	उस ने उसे बुलन्द किया

الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

उस ने उस को रखा (बिछाया)	और ज़मीन	9	तोल	और न घटाओ	इंसाफ़ से	वज़न (तोल)

لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ

और ग़ल्ला	11	ग़िलाफ़ वाले	और खजूरें	मेवे	उस में	10	मख़्लूक़ के लिए

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

13	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	12	और ख़ुशबू के फूल	भूसे वाला

अ़नक़रीब यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45)
बल्कि क़ियामत उन की वादागाह है, और क़ियामत (की घड़ी) बहुत सख़्त और बड़ी तल्ख़ होगी। (46)
बेशक मुज्रिम गुमराही और जहालत में हैं। (47)
उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगाः) तुम जहन्नम (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48)
बेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक़ पैदा किया। (49)
और हमारा हुक्म सिर्फ़ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50)
और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51)
और जो कुछ उन्हों ने किया सहीफ़ों में है। (52)
और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और नहरों में होंगे। (54)
साहिबे क़ुदरत बादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
रहमान (अल्लाह)। (1)
उस ने क़ुरआन सिखाया। (2)
उस ने इन्सान को पैदा किया। (3)
उस ने उसे बात करना सिखाया। (4)
सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में हैं)। (5)
और तारे और दरख़्त सर बसजूद हैं। (6)
और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराज़ू रखी। (7)
कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो। (8)
और तोल इंसाफ़ से क़ाइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9)
और उस ने ज़मीन को मख़्लूक़ के लिए बिछाया। (10)
उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11)
और ग़ल्ला भूसे वाला, और ख़ुशबू के फूल। (12)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ

शोला मारने वाली	जिन्नात	और उस ने पैदा किया	14	ठिकरी जैसी	खंखांती मिट्टी	से	उस ने पैदा किया इन्सान

مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ

दोनों मश्रिक़ों	रब	16	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	15	आग से

وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

दो दर्या	उस ने बहाए	18	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	17	दोनों मग़्रिब	और रब

يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

21	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	20	वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते)	एक आड़	उन दोनों के दरमियान	19	एक दूसरे से मिले हुए

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

23	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	22	और मूंगे	मोती	उन दोनों से	निकलते हैं

النصف
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَاٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	24	पहाड़ों की तरह	दर्या में	चलने वाली	कश्तियां	और उस के लिए

ع ٢٥ ١١ ١
تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ

साहिबे अ़ज़मत	तेरा रब	चेहरा (ज़ात)	और बाक़ी रहेगा	26	फ़ना होने वाला	जो इस (ज़मीन) पर	हर कोई	25	तुम झुटलाओगे

وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कोई	उस से मांगता है	28	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	27	एहसान करने वाला

وَالْاَرْضِ ۭ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

30	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	29	किसी न किसी काम में	वह	हर रोज़	और ज़मीन में

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ

ऐ गिरोह	32	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	31	ऐ जिन ओ इन्स	तुम्हारी तरफ़	हम जल्द फ़ारिग़ (मुतवज्जुह) होते हैं

الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों के किनारे	से	तुम निकल भागो	कि	तुम से हो सके	अगर	और इन्स	जिन्न

وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	33	लेकिन ज़ोर से	तुम नहीं निकल सकोगे	तो निकल भागो	और ज़मीन

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ

और धुआँ	आग से	एक शोला	तुम पर	भेज दिया जाएगा	34	तुम झुटलाओगे	अपने रब

فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ

आस्मान	फट जाएगा	फिर जब	36	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	35	तो मुक़ाबला न कर सकोगे

فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

38	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	37	जैसे सुर्ख़ चमड़ा	गुलाबी	तो वह होगा

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखंनाती मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14) और जिन्नात को शोले वाली आग से पैदा किया। (15) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (16) रब है दोनों मश्रिक़ों और दोनों मग़्रिबों का। (17) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (18) उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से मिले हुए। (19) उन दोनों के दरमियान एक आड़ है, वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (21) उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे। (22) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (23) और उसी के लिए हैं चलने वाली कश्तियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (25) ज़मीन पर जो कोई है फ़ना होने वाला है। (26) और बाक़ी रहेगी साहिबे अ़ज़मत एहसान करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (28) जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है, वह उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न किसी काम (नए हाल) में है। (29) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (30) ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फ़ारिग़ हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जुह होते हैं। (31) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (32) ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम से हो सके निकल भागने आस्मानों और ज़मीन के किनारों से तो निकल भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (34) तुम पर भेज दिया जाएगा एक शोला आग से, और धुआँ, तो मुक़ाबला न कर सकोगे। (35) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (36) फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह सुर्ख़ चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (38)

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	39	और न जिन्न	किसी इन्सान	उस के गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़	न पूछा जाएगा	पस उस दिन

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

पेशानियों से	फिर वह पकड़े जाएंगे	अपनी पेशानी से	मुज्रिम (जमा)	पहचाने जाएंगे	40	तुम झुटलाओगे

وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ

झुटलाते हैं	वह जिसे	जहन्नम	यह	42	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	41	और क़दमों

بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	44	खौलते हुए	गर्म पानी	और दरमियान	उस के दरमियान	वह फिरेंगे	43	उसे मुज्रिम (जमा) गुनाहगार

وقف لازم

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	46	दो बाग़	अपने रब के हुज़ूर खड़ा होना	जो डरा	और उस के लिए	45	तुम झुटलाओगे	अपने रब

ع ٢ ١٢

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا

उन दोनों में	49	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	48	बहुत सी शाख़ों वाले	47	तुम झुटलाओगे	अपने रब

عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ

हर	से - की	उन दोनों में	51	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	50	जारी हैं	दो चश्मे

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ

फ़र्शों पर	तकिया लगाए हुए	53	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	52	दो क़िस्में	मेवे

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	54	नज़्दीक	दोनों बाग़	और मेवे	रेशम के	उन के असतर

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	इन्सान ने	उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी	निगाहें	बन्द (नीचे) रखने वाली	उन में	55	तुम झुटलाओगे

وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

58	और मूंगे	याकूत	गोया कि	57	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	56	और न किसी जिन्न

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا

सिवा	एहसान	क्या बदला	59	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

और उन दोनों के अ़लावा	61	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	60	एहसान

جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾

64	निहायत गहरे सब्ज़ रंग के	63	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	62	दो बाग़

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

66	बशिद्दत जोश मारने वाले	दो चश्मे	उन दोनों में	65	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न जिन्न से। (39)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40)
मुज्रिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और क़दमों से पकड़े जाएंगे। (41)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42)
यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43)
वह उस के और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45)
और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (46)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47)
बहुत सी शाख़ों वाले। (48)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49)
(उन बाग़ों में) दो चश्मे जारी हैं। (50)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51)
उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो, दो क़िस्में हैं। (52)
तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53)
फ़र्शों पर तकिया (लगाए होंगे) जिन के असतर रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के मेवे नज़्दीक होंगे। (54)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55)
उन में निगाहें नीची रखने वालियां हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़ब्ल और न किसी जिन्न ने। (56)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57)
गोया वह याक़ूत और मूंगे हैं। (58)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59)
एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61)
और उन दोनों के अ़लावा दो बाग़ और भी हैं। (62)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63)
निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65)
उन दोनों (बाग़ात) में दो चश्मे हैं फ़ौवारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِیۡهِمَا فَاکِهَةٌ وَّنَخۡلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

68	और अनार	खजूर के दरख़्त	मेवे	उन दोनों में	67	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِیۡهِنَّ خَیۡرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	70	ख़ूबसूरत	ख़ूब सीरत	उन में	69	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوۡرٌ مَّقۡصُوۡرٰتٌ فِی الۡخِیَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	72	ख़ेमों में	रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन)	हूरें	71	तुम झुटलाओगे	अपने रब

تُکَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمۡ یَطۡمِثۡهُنَّ اِنۡسٌ قَبۡلَهُمۡ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	74	और न किसी जिन्न	उन से क़ब्ल	किसी इन्सान	उन्हें हाथ नहीं लगाया	73	तुम झुटलाओगे

تُکَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّکِـِٕیۡنَ عَلٰی رَفۡرَفٍ خُضۡرٍ وَّعَبۡقَرِیٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

76	नफ़ीस	और ख़ूबसूरत	सब्ज़	मस्नदों पर	तकिया लगाए हुए	75	तुम झुटलाओगे

ع ٣ ١٣
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَکَ اسۡمُ رَبِّکَ ذِی الۡجَلٰلِ وَالۡاِکۡرَامِ ﴿٧٨﴾

78	और एहसान करने वाला	साहिबे जलाल	तुम्हारा रब	नाम	बरकत वाला	77	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

آیَاتُهَا ٩٦ ❀ سُوۡرَةُ الۡوَاقِعَةِ (٥٦) ❀ رُکُوۡعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (56) सूरतुल वाक़िआ वाक़े होनेवाली — आयात 96

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم
اِذَا وَقَعَتِ الۡوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَیۡسَ لِوَقۡعَتِهَا کَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ

पस्त करने वाली	2	कुछ झूट	उस के वाक़े होने में	नहीं	1	वाक़े होने वाली	वाक़े हो जाएगी	जब

رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الۡاَرۡضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الۡجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

5	और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर	4	सख़्त ज़ल्ज़ला	ज़मीन	लरज़ने लगेगी	जब	3	बुलन्द करने वाली

فَکَانَتۡ هَبَآءً مُّنۡۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّکُنۡتُمۡ اَزۡوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصۡحٰبُ الۡمَیۡمَنَةِ

तो दाएं हाथ वाले	7	तीन	जोड़े (गिरोह)	और तुम हो जाओगे	6	परागन्दा	ग़ुबार	फिर हो जाएंगे

مَآ اَصۡحٰبُ الۡمَیۡمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ مَآ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿٩﴾

9	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	8	दाएं हाथ वाले	क्या

وَالسّٰبِقُوۡنَ السّٰبِقُوۡنَ ﴿١٠﴾ اُولٰٓـئِکَ الۡمُقَرَّبُوۡنَ ﴿١١﴾ فِیۡ جَنّٰتِ

बाग़ात	में	11	मुक़र्रब (जमा)	यही हैं	10	सबक़त ले जाने वाले हैं	और सबक़त ले जाने वाले

النَّعِیۡمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِیۡلٌ مِّنَ الۡاٰخِرِیۡنَ ﴿١٤﴾

14	पिछलों से-में	और थोड़े	13	पहलों से-में	बड़ी जमाअत	12	नेमत

عَلٰی سُرُرٍ مَّوۡضُوۡنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّکِـِٕیۡنَ عَلَیۡهَا مُتَقٰبِلِیۡنَ ﴿١٦﴾

16	आमने सामने	उस पर	तकिया लगाए हुए	15	सोने के तारों से बुने हुए	तख़्तों पर

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67) उन दोनों (बाग़ात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69) उन में ख़ूब सीरत, ख़ूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71) ख़ेमों में पर्दा नशीन हूरें। (72) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73) और उन से क़ब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75) सब्ज़, ख़ूबसूरत, नफ़ीस मस्नदों पर तकिया लगाए हुए। (76) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77) तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब वाक़े हो जाएगी वाक़े होने वाली (क़ियामत)। (1) उस के वाक़े होने में कुछ झूट नहीं। (2) (किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3) जब ज़मीन सख़्त ज़ल्ज़ले से लरज़ने लगेगी। (4) और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5) फिर परागन्दा ग़ुबार हो जाएंगे। (6) और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7) तो दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8) और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9) और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10) यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11) नेमतों वाले बाग़ात में। (12) बड़ी जमाअत पहलों में से। (13) और थोड़े पिछलों में से। (14) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15) तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरेंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17) आबख़ोरों और सुराहियों के साथ और साफ़ शराब के पियालों (के साथ)। (18) न उस से उन्हें दर्द सर होगा और न उन की अ़क़्ल में फ़ुतूर आएगा। (19) और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20) और परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे। (21) और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22) जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23) उस की जज़ा जो वह करते थे। (24) वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25) मगर "सलाम सलाम", मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26) और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27) बेरियों में बेख़ार वाली। (28) और तह दर तह केले। (29) और दराज़ साया। (30) और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31) और कसीर मेवे। (32) न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33) और ऊँचे ऊँचे फ़र्श। (34) बेशक हम ने उन्हें ख़ूब उठान दी। (35) पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36) महबूब, हम उम्र। (37) दाएं हाथ वालों के लिए। (38) बहुत से अगलों मे से, (39) और बहुत से पिछलों में से। (40) और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41) गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42) और धुएँ के साए में। (43) न कोई ठंडक और न कोई फ़र्हत। (44) बेशक वह उस से क़ब्ल नेमत में पले हुए थे। (45) और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46) और वह कहते थे: क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47) क्या हमारे बाप दादा भी? (48) आप (स) कह दें: बेशक पहले और पिछले। (49) ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (50) फिर बेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ

और पियाले	और सुराहियां	कटोरों के साथ	17	हमेशा रहने वाले	लड़के	उन के	इर्द गिर्द फिरेंगे

مِّن مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا

उस से जो	और मेवे	19	और न उन की अ़क़्ल में फ़ुतूर आएगा	उस से	न उन्हें दर्द सर होगा	18	साफ़ शराब	से - के

يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ

जैसे	22	और बड़ी आँखों वाली हूरें	21	वह चाहेंगे	वह जो	और परिन्दों का गोश्त	20	वह पसंद करेंगे

اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا

उस में	वह न सुनेंगे	24	जो वह करते थे	उस की	जज़ा	23	(सीपी में) छुपे हुए	मोती

لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۙ مَا

क्या	और दाएं हाथ वाले	26	सलाम सलाम	कलाम	मगर	25	और न गुनाह की बात	बेहूदा बात

أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾

30	लमबा - दराज़	और साया	29	तह दर तह	और केले	28	बेख़ार वाली	बेरियों में	27	दाएं हाथ वाले

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

33	और न कोई रोक टोक	न ख़तम होने वाला	32	कसीर	और मेवे	31	गिरता हुआ	और पानी

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

36	कुंवारी (जमा)	पस हम ने उन्हें बनाया	35	ख़ूब उठान	उन्हें उठान दी	बेशक हम	34	ऊँचे	और फ़र्श (जमा)

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ ع ٣٨ ١٤

और बहुत से	39	अगलों में से	बहुत से	38	दाएं हाथ वालों के लिए	37	महबूब हम उम्र

مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۙ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِي سَمُومٍ

गर्म हवा	में	41	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	40	पिछलों में से

وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾ وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ

इस से क़ब्ल	थे	बेशक वह	44	और न फ़र्हत	न कोई ठंडक	43	धुआँ	से - के	और साया	42	और खौलता हुआ पानी

مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾

46	गुनाह भारी	पर	अड़े हुए	और वह थे	45	नेमत में पले हुए

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۙ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾ أَوَآبَاؤُنَا

और क्या हमारे बाप दादा	47	ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	और वह कहते थे

الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوعُونَ ۙ إِلَىٰ

तरफ़ - पर	ज़रूर जमा किए जाएंगे	49	और पिछले	पहले	बेशक	आप (स) कह दें	48	पहले

مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾

51	झुटलाने वाले	गुमराह लोग	ऐ	बेशक तुम	फिर	50	एक मुक़र्ररा दिन	वक़्त

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِــُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	पेट (जमा)	उस से	फिर भरना होगा	52	थोहर का	दरख़्त	से	अलबत्ता खाने वाले

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

55	प्यासे ऊँट की तरह पीना	सो पीना होगा	54	खौलता हुआ पानी	से	उस पर	सो पीना होगा

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	तुम तस्दीक़ करते	सो क्यों नहीं	हम ने पैदा किया	56	रोज़े जज़ा	उन की मेहमानी	यह

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	पैदा करने वाले	हम	या	तुम उसे पैदा करते हो	क्या तुम	58	जो तुम डालते हो	भला तुम देखो तो

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى

पर	60	उस से आजिज़	और नहीं हम	मौत	तुम्हारे दरमियान	हम ने मुक़र्रर किया	हम

اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

और यक़ीनन तुम जान चुके हो	61	तुम नहीं जानते	जो	में	और हम पैदा कर दें तुम्हें	तुम जैसे	कि हम बदल दें

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	63	जो तुम बोते हो	भला तुम देखो तो	62	तुम ग़ौर करते	तो क्यों नहीं	पैदाइश पहली

تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

रेज़ा रेज़ा	अलबत्ता हम उसे कर दें	अगर हम चाहें	64	काश्त करने वाले	हम	या	उस की काश्त करते हो

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	महरूम रह जाने वाले	हम	बल्कि	66	तावान पड़ जाने वाले	बेशक हम	65	बातें बनाते	फिर तुम हो जाओ

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ

से	तुम ने उसे उतारा	क्या तुम	68	तुम पीते हो	जो	पानी	भला तुम देखो तो

الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا

कड़वा	हम कर दें उसे	हम चाहें	अगर	69	उतारने वाले	या हम	बादल

فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	71	तुम सुलगाते हो	जो	आग	भला तुम देखो तो	70	तो क्यों तुम शुक्र नहीं करते

اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِــُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً

नसीहत	हम ने उसे बनाया	हम	72	पैदा करने वाले	या हम	उस के दरख़्त	तुम ने पैदा किए

ع ٢ ٣٦ ١٥ الثلثة وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

74	अज़मत वाला	अपने रब	नाम से-की	पस तू पाकीज़गी बयान कर	73	हाजत मंदों के लिए	और सामान

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	अगर तुम जानो (ग़ौर करो)	एक क़सम है	और बेशक यह	75	सितारे (जमा)	मुक़ाम की	सो मैं क़सम खाता हूँ

अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52)
पस उस से पेट भरना होगा। (53)
सो उस पर पीना होगा खौलता हुआ पानी। (54)
सो पीना होगा प्यासे ऊँट की तरह। (55)
रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56)
हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तस्दीक़ नहीं करते? (57)
भला देखो तो! जो (नुत्फ़ा) तुम (औरतों के रह्म में) डालते हो। (58)
क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले? (59)
हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)
कि हम बदल दें तुम्हारी शक्लें और हम पैदा करदें तुम्हें (ऐसे आ़लम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61)
और यक़ीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62)
भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63)
क्या तुम उस की काश्त करते हो या हम हैं काश्त करने वाले? (64)
अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (65)
(कि) बेशक हम तावान पड़ जाने वाले हो गए। (66)
बल्कि हम महरूम रह जाने वाले हैं। (67)
भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68)
क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69)
अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70)
भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71)
क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72)
हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73)
पस तू अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74)
सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75)
और बेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	सिवाए पाक	उसे हाथ नहीं लगाते	78	पोशीदा	एक किताब	में	77	कुरआन है गिरामी क़द्र	बेशक यह

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾

81	यूँ ही टालने वाले	तुम	बात	तो क्या इस	80	तमाम जहानों	रब	से	उतारा हुआ

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾

83	हलक़ को	पहुँचती है	जब	फिर क्यों नहीं	82	झुटलाते हो	कि तुम	अपना रिज़्क़ (वज़ीफ़ा)	और तुम बनाते हो

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ

और लेकिन	तुम से	उस के	ज़ियादा क़रीब	और हम	84	तकते हो	उस वक़्त	और तुम

لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ

तुम उसे लौटा लो	86	किसी के क़हर में न आने वाले (ख़ुद मुख़्तार)	अगर तुम	तो क्यों नहीं	85	तुम नहीं देखते

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ

तो राहत	88	मुक़र्रब लोग	से	अगर हो	पस जो	87	सच्चे (जमा)	अगर तुम

وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

90	दाएं हाथ वाले	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	89	नेमतों के	और बाग़	और ख़ुशबूदार फूल

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

झुटलाने वालों	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	91	दाएं हाथ वालों	से	तेरे लिए	तो सलामती

الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ

बेशक	94	दोज़ख़	और उसे डाल देना	93	खौलता हुआ पानी	से	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)

هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾ ع ٣ ٢٢ ١٦

96	अज़मत वाला	अपने रब	पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें नाम की	95	यक़ीनी बात	अलबत्ता वह	यह

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ (٥٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

आयात 29 — (57) सूरतुल हदीद लोहा — रुकूआत 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ

उस के लिए बादशाहत	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾

2	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	और मौत देता है	वह ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾

3	ख़ूब जानने वाला	हर शै को	और वह	और बातिन	और ज़ाहिर	और आख़िर	अव्वल	वही

बेशक यह कुरआन है गिरामी क़द्र। (77) यह एक पोशीदा किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (78) उसे हाथ नहीं लगाते सिवाए पाक लोग। (79) तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (80) पस क्या तुम इस बात को यूँ ही टालने वाले? (81) और तुम बनाते हो झुटलाने को अपना वज़ीफ़ा। (82) फिर क्यों नहीं जब (किसी की जान) पहुँचती है हलक़ को, (83) और उस वक़्त तुम तकते हो। (84) और हम तुम से भी ज़ियादा उस के क़रीब (होते हैं) लेकिन तुम नहीं देखते। (85) अगर तुम ख़ुद मुख़्तार हो तो क्यों नहीं? (86) तुम उसे (निकलती जान को) लौटा लेते अगर तुम सच्चे हो। (87) पस जो (मरने वाला) अगर मुक़र्रब लोगों में से हो। (88) तो (उस के लिए) राहत और ख़ुशबूदार फूल और नेमतों के बाग़ हैं। (89) और अलबत्ता अगर वह दाएं हाथ वालों में से हो। (90) पस तेरे लिए सलामती कि तू दाएं हाथ वालों से है। (91) और अगर गुमराह, झुटलाने वालों में से हो। (92) तो (उस की) मेहमानी खौलता हुआ पानी है, (93) और दोज़ख़ में झोंका जाना। (94) बेशक यह अलबत्ता यक़ीनी बात है। (95) पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (96)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (1) उसी के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (2) वही अव्वल और (वही) आख़िर, और ज़ाहिर और बातिन, और वह हर शै को ख़ूब जानने वाला। (3)

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

फिर उस ने क़रार पकड़ा	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	जिस ने	वही

عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

और जो उतरता है	उस से	और जो निकलता है	ज़मीन	में	जो दाख़िल होता है	वह जानता है	अ़र्श पर

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

उसे जो	और अल्लाह	तुम हो	जहां कहीं	तुम्हारे साथ	और वह	उस में	और जो चढ़ता है	आस्मानों से

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	उसी के लिए	4	देखने वाला	तुम करते हो

الْاُمُوْرُ ﴿٥﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ

और वह	रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	वह दाख़िल करता है	5	तमाम काम

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٦﴾ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا

उस से जो	और ख़र्च करो	और उस के रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	6	दिलों की बात को	जानने वाला

جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا

और उन्हों ने ख़र्च किया	तुम में से	वह ईमान लाए	पस जो लोग	उस में	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया

لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाते हैं	और रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान नहीं लाते	और क्या (हो गया है) तुम्हें	7	बड़ा अजर	उन के लिए

لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

8	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम से अ़हद	और यक़ीनन वह ले चुका है	अपने रब पर	कि तुम ईमान लाओ

هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ

से	ताकि वह तुम्हें निकाले	वाज़ेह आयात	अपना बन्दा	पर	नाज़िल फ़रमाता है	वही है जो

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩﴾

9	निहायत मेहरबान	शफ़क़त करने वाला	तुम पर	और बेशक अल्लाह	रोशनी की तरफ़	अन्धेरों से

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास	अल्लाह का रास्ता	में	तुम ख़र्च नहीं करते	और क्या (हो गया है) तुम्हें

وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ

और क़िताल किया	फ़तह	पहले	जिस ने ख़र्च किया	तुम में से	बराबर नहीं	और ज़मीन

اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ

और उन्हों ने क़िताल किया	बाद में	जिन्हों ने ख़र्च किया	से	दरजे	बड़े	यह लोग

ع ١ ١٠ ١٧ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٠﴾

10	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	अच्छा	वादा किया अल्लाह ने	और हर एक

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। **(4)**

उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। **(5)**

वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह है ख़ूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। **(6)**

तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से ख़र्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांनशीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। **(7)**

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यक़ीनन तुम से अ़हद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। **(8)**

वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और बेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। **(9)**

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ख़र्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाक़ी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने ख़र्च किया और क़िताल किया फ़त्हे (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में ख़र्च किया और उन्हों ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(10)**

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ

और उस के लिए	उस को	पस बढ़ादे वह उस को दोगुना	क़र्ज़ हसना	क़र्ज़ दे अल्लाह को	कौन है जो

اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾ یَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰى نُوْرُهُمْ

उन का नूर	दौड़ता होगा	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	तुम देखोगे	जिस दिन	11	अजर बड़ा उम्दा

بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَبِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	आज	ख़ुशख़बरी तुम्हें	और उन के दाएं	उन के सामने

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾ یَوْمَ یَقُوْلُ

जिस दिन कहेंगे	12	कामयाबी बड़ी	वह-यह	यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

से	हम हासिल कर लें	हमारी तरफ़ निगाह करो	वह ईमान लाए	उन लोगों को जो	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

نُّوْرِكُمْ ۚ قِیْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ

उन के दरमियान	फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी	नूर	फिर तुम तलाश करो	अपने पीछे	लौट जाओ तुम	कहा जाएगा	तुम्हारा नूर

بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ؕ ﴿۱۳﴾

13	अज़ाब	उस की तरफ़ से	और उस के बाहर	रहमत	उस में	उस के अन्दर	एक दरवाज़ा	उस का	एक दीवार

یُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपनी जानों को	तुम ने फ़ित्ने में डाला	और लेकिन तुम	हाँ	वह कहेंगे	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे	वह उन्हें पुकारेंगे

وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِیُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह का हुक्म	आ गया	यहां तक कि	तुम्हारी झूटी आर्ज़ूएं	और तुम्हें धोके में डाला	और तुम शक करते थे	और तुम इन्तिज़ार करते

وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْیَةٌ وَّلَا مِنَ

से	और न	कोई फ़िदया	तुम से	न लिया जाएगा	सो आज	14	धोका देने वाला	अल्लाह के बारे में	और तुम्हें धोके में डाला

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِیَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۵﴾

15	लौटने की जगह	और बुरी	तुम्हारी मौला	यह	जहन्नम	ठिकाना तुम्हारा	कुफ़्र किया	वह लोग जिन्हों ने

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

और जो नाज़िल हुआ	अल्लाह की याद के लिए	उन के दिल	झुक जाएं	कि	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	क्या नज़्दीक (वक़्त) नहीं आया

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا یَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

तो दराज़ हो गई	इस से क़ब्ल	जिन्हें किताब दी गई	उन लोगों की तरह	और वह न हो जाएं	हक़	से

عَلَیْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِیْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम जान लो	16	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	उन में से	और कसीर	उन के दिल	फिर सख़्त हो गए	मुद्दत	उन पर

یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

17	समझो	ताकि तुम	निशानियां	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ हम ने बयान कर दी	उस के मरने के बाद	ज़मीन	ज़िन्दा करता है

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़), पस वह उस को दोगुना बढ़ादे और उस के लिए बड़ा अम्दा अजर है। (11) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, तुम्हें आज ख़ुशख़बरी है बाग़ात की जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12) जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन लोगों को जो ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ) हासिल कर लें, कहा जाएगाः अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां) नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा, उस के अन्दर रहमत और उस के बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) वह (मुनाफ़िक़) उन (मुसलमानों) को पुकारेंगेः क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वह कहेंगेः हाँ (क्यों नहीं!) लेकिन तुम ने अपनी जानों को फ़ित्ने में डाला, और तुम इन्तिज़ार करते और शक करते थे और तुम्हें तुम्हारी झूटी आर्ज़ूओं ने धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और अल्लाह के बारे में तुम्हें धोका देने वाले (शैतान) ने धोके में डाला। (14) सो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी ख़बर गीरी करने वाली और बुरी लौटने की जगह है। (15) क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं आया? कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिए झुक जाएं और (उस के लिए) जो हक़ तआला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (16) (ख़ूब) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ

वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए	हसना (अच्छा)	क़र्ज़	और जिन्हों ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को	और ख़ैरात करने वाली औरतें	ख़ैरात करने वाले मर्द	बेशक

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ

वही	यही लोग	और उस के रसूल (जमा)	अल्लाह पर	ईमान लाए	और जो लोग	18	बड़ा उम्दा	अजर	और उन के लिए

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ

और उन का नूर	उन का अजर	उन के लिए	नज़्दीक अपने रब के	और शहीद (जमा)	सिद्दीक़ (जमा)

ع ٢ ٩ ١٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

इस के सिवा नहीं	तुम जान लो	19	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और झुटलाया	और जिन्हों ने कुफ़्र किया

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

और कस्रत की ख़ाहिश	बाहम	और फ़ख़्र करना	और ज़ीनत	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी

فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

फिर वह ज़ोर पकड़ती है	उस की पैदावार	काश्तकार	भली लगी	बारिश की तरह	और औलाद	मालों में

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

और मग़्फ़िरत	सख़्त अज़ाब	और आख़िरत में	चूरा चूरा	वह हो जाती है	फिर	ज़र्द	सो तू उस को देखता है

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

20	धोके का सामान	मगर- सिर्फ़	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	और रज़ा मन्दी	अल्लाह की तरफ़ से

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ

आस्मान	जैसी चौड़ाई (वुस्अ़त)	उस की चौड़ाई (वुस्अ़त)	और जन्नत	अपने रब की तरफ़ से	मग़्फ़िरत	तरफ़	तुम दौड़ो

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	यह	और उस के रसूलों	अल्लाह पर	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह तैयार की गई	और ज़मीन

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ

कोई मुसीबत	नहीं पहुँचती	21	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे वह चाहे	वह उस को देता है

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ

बेशक	कि हम पैदा करें उस को	उस से क़ब्ल	किताब में	मगर	तुम्हारी जानों में	और न	ज़मीन में

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

और न तुम ख़ुश हो	जो तुम से जाती रहे	पर	ताकि तुम ग़म न खाओ	22	आसान	अल्लाह पर	यह

بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

बुख़्ल करते हैं	जो लोग	23	फ़ख़्र करने वाले	इतराने वाले	हर एक (किसी)	पसंद नहीं करता	और अल्लाह	उस पर जो उस ने तुम्हें दिया

وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

24	सज़ावारे हम्द	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	मुँह फेर ले	और जो	बुख़्ल का	लोग	और हुक्म (तरग़ीब) देते हैं

बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्हों ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा उम्दा अजर है। (18)
और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19)
तुम (ख़ूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और बाहम फ़ख़्र (ख़ुद सताई) करना और कस्रत की ख़ाहिश करना मालों में और औलाद में, बारिश की तरह कि काश्तकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग़्फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20)
तुम दौड़ो मग़्फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की वुस्अ़त आस्मानों और ज़मीन की वुस्अ़त जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (21)
कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22)
ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न ख़ुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23)
जो लोग बुख़्ल करते हैं और तरग़ीब देते हैं लोगों को बुख़्ल की, और जो मुँह फेर ले तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

तहक़ीक़ हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अ़दल ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ाइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, बेशक अल्लाह क़वी, ग़ालिब है। **(25)** और तहक़ीक़ हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़्ता हैं, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। **(26)** फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नर्मी और मुहब्बत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) ख़ुद उन्हों ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्हों ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निबाहा (जैसे) उस के निबाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक्सर उन में से नाफ़रमान हैं। **(27)** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह बख़्श देगा तुम्हें, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। **(28)** ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी शै पर क़ुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(29)**

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

किताब	उन के साथ	और हम ने उतारी	वाज़ेह दलाइल के साथ	अपने रसूलों	तहक़ीक़ हम ने भेजा

وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ

उस में	लोहा	और हम ने उतारा	इंसाफ़ पर	लोग	ताकि क़ाइम रहें	और मीज़ाने (अ़दल)

بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ

मदद करता है उस की	कौन	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के लिए	और फ़ायदा	लड़ाई (ख़तरा) सख़्त

وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا ع ٣ ١٩

नूह (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	25	ग़ालिब	क़वी	बेशक अल्लाह	बिन देखे	और उस के रसूल

وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ

हिदायत याफ़्ता	सो उन में से कुछ	और किताब	नुबुव्वत	उन की औलाद में	और हम ने रखी	और इब्राहीम (अ)

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا

और हम उन के पीछे लाए	अपने रसूल	उन के क़दमों के निशानात पर	हम उन के पीछे लाए	फिर	26	नाफ़रमान	उन में से	और अक्सर

بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हों ने	दिलों में	और हम ने डाल दी	इंजील	और हम ने उसे दी	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)

اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا

हम ने वाजिब नहीं की	जो उन्हों ने ख़ुद निकाली	और तरके दुनिया	और रहमत	नर्मी	उस की पैरवी की

عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ

उस को निबाहने का हक़	उस को निबाहा	तो न	अल्लाह की रज़ा	चाहना	मगर	उन पर

فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	नाफ़रमान	उन में से	और अक्सर	उन का अजर	उन में से	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए	तो हम ने दिया

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ

वह तुम्हें अ़ता करेगा	उस के रसूलों पर	और ईमान लाओ	डरो अल्लाह से तुम	जो लोग ईमान लाए	ऐ

كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

तुम्हें	और वह बख़्शदेगा	उस के साथ	तुम चलोगे	ऐसा नूर	तुम्हारे लिए	और कर देगा	अपनी रहमत	से	दो हिस्से

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ

कि वह क़ुदरत नहीं रखते	अहले किताब	ताकि जान लें	28	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह

عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

वह देता है उसे	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़्ल	और यह कि	अल्लाह का फ़ज़्ल	से	किसी शै पर

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ ع ٤ ٢٠

29	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिस को वह चाहता है

آيَاتُهَا ٢٢ ❀ سُوۡرَةُ الۡمُجَادِلَةِ (٥٨) ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(58) सूरतुल मुजादिला इख़्तिलाफ़ करने वाली	आयात 22

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قَدۡ سَمِعَ اللّٰهُ قَوۡلَ الَّتِيۡ تُجَادِلُكَ فِيۡ زَوۡجِهَا

अपने ख़ावन्द के बारे में	आप (स) से बहस करती थी	वह औरत जो	बात	सुन ली अल्लाह ने	यक़ीनन

وَتَشۡتَكِيۡۤ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسۡمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌۢ بَصِيۡرٌ ﴿۱﴾

1	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	तुम दोनों की गुफ़्तगू	सुनता था	और अल्लाह	अल्लाह	के पास	और शिकायत करती थी

اَلَّذِيۡنَ يُظٰهِرُوۡنَ مِنۡكُمۡ مِّنۡ نِّسَآئِهِمۡ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمۡ ؕ اِنۡ اُمَّهٰتُهُمۡ

उन की माँएं	नहीं	उन की माँएं	वह नहीं	अपनी बीवियों से	तुम में से	ज़िहार करते हैं	जो लोग

اِلَّا الّٰٓـئِيۡ وَلَدۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّهُمۡ لَيَقُوۡلُوۡنَ مُنۡكَرًا مِّنَ الۡقَوۡلِ وَزُوۡرًا ؕ

और झूट	बात से	नामाकूल	अलबत्ता कहते हैं	और बेशक वह	जिन्हों ने जना है उन्हें	सिर्फ़ वह औरतें

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوۡرٌ ﴿۲﴾ وَالَّذِيۡنَ يُظٰهِرُوۡنَ مِنۡ نِّسَآئِهِمۡ ثُمَّ

फिर	अपनी बीवियों से	ज़िहार करते हैं	और जो लोग	2	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	और बेशक अल्लाह

يَعُوۡدُوۡنَ لِمَا قَالُوۡا فَتَحۡرِيۡرُ رَقَبَةٍ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمۡ

यह	कि एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	एक ग़ुलाम	तो आज़ाद करना लाज़िम है	उस से जो उन्हों ने कहा (क़ौल)	वह रुजूअ करलें

تُوۡعَظُوۡنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ﴿۳﴾ فَمَنۡ لَّمۡ يَجِدۡ فَصِيَامُ

तो रोज़े	न पाए	तो जो कोई	3	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	उस से - की	तुम्हें नसीहत की जाती है

شَهۡرَيۡنِ مُتَتَابِعَيۡنِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنۡ لَّمۡ يَسۡتَطِعۡ فَاِطۡعَامُ

तो खाना खिलाए	उसे मक़्दूर न हो	फिर - जिस	कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	लगातार	दो महीने

سِتِّيۡنَ مِسۡكِيۡنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ وَتِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की हदें	और यह	और उस का रसूल	अल्लाह पर	यह इस लिए कि तुम ईमान रखो	मसाकीन को	साठ (60)

وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۴﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يُحَآدُّوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	वह मुख़ालिफ़त करते हैं	जो लोग	बेशक	4	दर्दनाक अज़ाब	और न मानने वालों के लिए

كُبِتُوۡا كَمَا كُبِتَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ وَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ

वाज़ेह आयतें	और यक़ीनन हम ने नाज़िल कीं	उन से पहले	वह लोग जो	जैसे ज़लील किए गए	वह ज़लील किए जाएंगे

وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۵﴾ يَوۡمَ يَبۡعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيۡعًا فَيُنَبِّئُهُمۡ

तो वह उन्हें आगाह करेगा	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	5	ज़िल्लत का	अज़ाब	और काफ़िरों के लिए

ع ١ بِمَا عَمِلُوۡا ؕ اَحۡصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوۡهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيۡءٍ شَهِيۡدٌ ﴿۶﴾

6	निगरान	हर शै पर	और अल्लाह	और वह उसे भूल गए थे	उसे गिन रखा था अल्लाह ने	वह जो उन्हों ने किया

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन अल्लाह ने उस औरत (ख़ौलह रज़ि.) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बहस करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुनता था। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएं नहीं (हो जातीं), उन की माँएं वही हैं जिन्हों ने उन्हें जना है, और बेशक वह एक नामाकूल बात और झूट कहते हैं, और बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2)

और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) फिर वह अपने क़ौल से रुजूअ कर लें तो (उन पर) लाज़िम है आज़ाद करना एक ग़ुलाम, इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (बाहम इख़्तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (3)

जो कोई (ग़ुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (इख़्तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक़्दूर न हो तो साठ (60) मिस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (4)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील किए जाएंगे जैसे ज़लील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यक़ीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (5)

जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्हों ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफ़ूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ

कोई	नहीं होती	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जानता है	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं देखा

نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى

और न (ख़ाह) कम	उन में छटा	मगर वह	पाँच की	और न	उन में चौथा	मगर वह	तीन लोगों में	सरगोशी

مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا

जो कुछ उन्हों ने किया	वह उन्हें बतला देगा	फिर	वह हों	जहां कहीं	उन के साथ	मगर वह	और न ज़ियादा	उस	से

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

वह जिन्हें मना किया गया	तरफ़- को	क्या तुम ने नहीं देखा	7	जानने वाला	तमाम-हर शै का	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ

और सरकशी	गुनाह से- की	वह बाहम सरगोशी करते हैं	उस से	जिस से मना किया गया उन्हें	वह (वही) करते हैं	फिर	सरगोशी से

وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ

उस (लफ़्ज़) से अल्लाह ने	आप को दुआ नहीं दी	जिस से	आप को सलाम दुआ देते हैं	वह आते है आप (स) के पास	और जब	रसूल	और नाफ़रमानी

وَيَقُوْلُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ

जहन्नम	उन के लिए काफ़ी है	उस की जो हम कहते हैं	हमें अ़ज़ाब देता अल्लाह	क्यों नहीं	अपने दिलों में	वह कहते है

يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ

तुम बाहम सरगोशी करो	जब	ईमान वालो	ऐ	8	ठिकाना	सो बुरा	वह डाले जाएंगे उस में

فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا

और सरगोशी करो	रसूल (स)	और नाफ़रमानी	और सरकशी	गुनाह की	तो सरगोशी न करो

بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩﴾ اِنَّمَا النَّجْوٰى

सरगोशी	इस के सिवा नहीं	9	तुम जमा किए जाओगे	उस की तरफ़-पास	वह जो	और अल्लाह से डरो	और परहेज़गारी	नेकी की

مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا

बग़ैर	कुछ	वह उन का बिगाड़ सकता	और नहीं	ईमान लाए	उन लोगों को जो	ताकि वह ग़मगीन करे	शैतान से

بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

मोमिनों!	ऐ	10	मोमिन (जमा)	तो भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म के

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ

कुशादगी बख़्शेगा अल्लाह	तो तुम खुल कर बैठ जाया करो	मजलिसों में	तुम खुल कर बैठो	तुम्हें	जब कहा जाए

لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बुलन्द कर देगा अल्लाह	तो उठ जाया करो	तुम उठ खड़े हो	और जब कहा जाए	तुम्हें

مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11	बाख़बर	तुम करते हो	उस से	और अल्लाह	दरजे	इल्म अ़ता किया गया	और जिन लोगों को	तुम में से

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और ख़ाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहां कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा क़ियामत के दिन जो कुछ उन्हों ने किया, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)
क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) बाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफ़ी है जहन्नम, वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8)
ऐ ईमान वालो! जब तुम बाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9)
इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को ग़मगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनों को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10)
ऐ मोमिनों! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मजलिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़्शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अ़ता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ

पहले	तो तुम दे दो	रसूल (स)	तुम कान में बात करो	जब	मोमिनो	ऐ

نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	तुम न पाओ	फिर अगर	और ज़ियादा पाकीज़ा	बेहतर तुम्हारे लिए	यह	कुछ सदक़ा	अपनी सरगोशी

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ

अपनी सरगोशी	पहले	कि तुम दे दो	क्या तुम डर गए	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	तो क़ाइम करो तुम	तुम पर	और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने	तुम न कर सके	सो जब	सदक़ात

ع ٢ ٢ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	अल्लाह और उसका रसूल (स)	और तुम इताअ़त करो	और अदा करो ज़कात

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا

और न	तुम में से	न वह	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	उन लोगों से	जो लोग दोस्ती करते हैं	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा

مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	उनके लिए	तैयार किया अल्लाह ने	14	जानते हैं	हालांकि वह	झूट पर	और वह क़सम खा जाते हैं	उन में से

شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

ढाल	अपनी क़समें	उन्हों ने बना लिया	15	वह करते थे	जो कुछ	बुरा	बेशक वह	सख़्त

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ

उन से-को	हरगिज़ न बचा सकेंगे	16	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	तो उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	पस उन्हों ने रोक दिया

اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ

दोज़ख़ वाले - जहन्नमी	यही लोग	कुछ-ज़रा	अल्लाह से	उन की औलाद	और न	उन के माल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ

उस के लिए	तो वह क़समें खाएंगे	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	17	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَىْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ

वही	बेशक वह	याद रखो	किसी शै पर	कि वह	और वह गुमान करते हैं	तुम्हारे लिए-सामने	वह क़समें खाते हैं	जैसे

الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की याद	तो उस ने उन्हें भुलादी	शैतान	उन पर	ग़ालिब आ गया	18	झूटे

اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	घाटा पाने वाले	वही	शैतान का गिरोह	बेशक	याद रखो	शैतान का गिरोह	यही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

20	ज़लील तरीन लोग	में	यही लोग	और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की	जो लोग	बेशक

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदक़ा दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़्दूर) न पाओ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर क़सम खा जाते हैं। (14)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, बेशक वह बुरे काम करते थे। (15)

उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया, पस उन्हों ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (16)

उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज़ ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)

जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) क़समें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! बेशक वही झूटे हैं। (18)

ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह हैं, ख़ूब याद रखो, बेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

क़ौम (लोग)	तुम न पाओगे	21	ग़ालिब	क़वी	बेशक अल्लाह	और मेरे रसूल	मैं	मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा	लिख दिया (फ़ैसला कर दिया) अल्लाह

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَاۗدُّوْنَ مَنْ حَاۗدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	जो-जिस	और दोस्ती रखते हों	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	वह ईमान रखते हैं

وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَاۗءَهُمْ اَوْ اَبْنَاۗءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ

यही लोग	उन का घराना	या	उन के भाई	या	उन के बेटे	या	उन के बाप दादा	वह हों	ख़ाह

كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	और वह दाख़िल करेगा उन्हें	अपने से	रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज़ से)	और उन की मदद की	ईमान	लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٣ ٩ ٣

22	कामयाब होने वाले	वही	अल्लाह का गिरोह	ख़ूब याद रखो कि बेशक	अल्लाह का गिरोह	यही लोग	उस से

آيَاتُهَا ٢٤ ❀ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकुआत 3 — (59) सूरतुल हश्र — जमा करना या होना — आयात 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ

وقف النبي ﷺ

उन के घरों	से	अहले किताब	से-के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	निकाला	वही है जिस ने

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ڼ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ

उन के क़िले	उन्हें बचा लेंगे	कि वह	और वह ख़याल करते थे	कि वह निकलेंगे	तुम्हें गुमान न था	पहले इज्तिमाए (लश्कर) पर

مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ وَقَذَفَ

और उस ने डाला	उन्हें गुमान न था	जहां से	तो उन पर आया अल्लाह	अल्लाह से

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ

मोमिनों	और हाथों	अपने हाथों से	अपने घर	वह बरबाद करने लगे	रोब	उन के दिलों में

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

उन पर	अल्लाह ने लिख रखा होता	यह कि	और अगर न	2	ऐ आँखों वालो	तो तुम इब्रत पकड़ो

الْجَلَاۗءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾

3	जहन्नम का अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	दुनिया में	तो वह उन्हें अज़ाब देता	जिला वतन होना

फ़ैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, बेशक अल्लाह क़वी (तवाना) ग़ालिब है। (21)
तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर कि वह उन से दोस्ती रखते हों जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, ख़ाह वह उन के बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंबे वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राज़ी, यही लोग हैं अल्लाह का गिरोह, ख़ूब याद रखो! अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो जहान में) कामयाब होने वाले हैं। (22)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)
वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही इज्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह ख़याल करते थे कि उन के क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरबाद करने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। (2)
और अगर अल्लाह ने उन पर जिला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अज़ाब देता, और उन के लिए आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब है। (3)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की	और जो	और उस का रसूल (स)	उन्हों ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	इस लिए कि वह	यह

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ④ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً

खड़ा	तुम ने उस को छोड़ दिया	या	दरख़्त के तने	से	जो तुम ने काट डाले	4	सज़ा देने वाला	सख़्त

عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ

दिलवाया अल्लाह ने	और जो	5	नाफ़रमानों	और ताकि वह रुसवा करे	तो अल्लाह के हुक्म से	उस की जड़ों पर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ

और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	ऊंट	और न	घोड़े	उन पर	तुम ने दौड़ाए थे	तो न	उन से	अपने रसूल (स) को

يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑥

6	कुदरत रखता है	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस पर वह चाहता है	पर	अपने रसूलों	मुसल्लत फ़रमा देता है

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ

तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए	बस्तियों वाले	से	अपने रसूल (स) को	जो दिलवादे अल्लाह

وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ

ताकि	और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए

لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً ۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ

तो वह ले लो	रसूल (स)	तुम्हें अ़ता फ़रमाए	और जो	तुम में से - तुम्हारे	मालदारों	दरमियान	हाथों हाथ लेना (गर्दिश)	न रहे

وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑦

وقف لازم

7	सख़्त सज़ा देने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	तो तुम बाज़ रहो	उस से	तुम्हें मना करे	और जिस

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ

और अपने मालों	अपने घरों से	वह जो निकाले गए	मुहाजिरों	मोहताजों के लिए

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और उस का रसूल	और वह मदद करते हैं अल्लाह की	और रज़ा	अल्लाह का - से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ⑧ ۚ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

और ईमान	इस घर	मुक़ीम रहे	और जो लोग	8	सच्चे	वह	और यही लोग

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ

अपने सीनों (दिलों)	में	और वह नहीं पाते	उन की तरफ़	हिज्रत की	जिस	वह मुहब्बत करते हैं	उन से क़ब्ल

حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

उन्हें	और ख़्वाह हो	अपनी जानों	पर	और वह तरजीह देते हैं	दिया गया उन्हें	उस की	कोई हाजत

خَصَاصَةٌ ۛؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑨ ۚ

9	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी ज़ात	बुख़्ल	बचाया	और जो - जिस	तंगी

यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उस को) सख़्त सज़ा देने वाला है। (4)
जो तुम ने दरख़्तों के तने काट डाले या उन्हें उन की जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक्म से था और ताकि वह नाफ़रमानों को रुसवा कर दे। (5)
और अल्लाह ने अपने रसूल (स) को उन (बनू नज़ीर) से जो (माल) दिलवाया तो न तुम ने उन पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है। (6)
अल्लाह ने बस्तियों वालों से जो (माल) अपने रसूल (स) को दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल (स) के लिए और (रसूल स के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमो और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए ताकि (दौलत) न रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही) गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स) जो अ़ता फ़रमाएं वह ले लो, और वह तुम्हें जिस से मना करें उस से तुम बाज़ रहो, और तुम अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)
मोहताज मुहाजिरों के लिए (ख़ास तौर पर) जो निकाले गए अपने घरों से और अपने मालों से (महरुम किए गए) वह अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा चाहते हैं और वह मदद करते है अल्लाह और उस के रसूल (स) की, यही लोग सच्चे हैं। (8)
और जो लोग (अन्सार) ईमान ला कर इस घर (दारुलहिज्रत मदीना) में उन से क़ब्ल मुक़ीम हैं वह (उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्हों ने उनकी तरफ़ हिज्रत की, और जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया गया अपने दिलों में उस की कोई हाजत नहीं पाते। और वह उन्हें तरजीह देते हैं अपनी जानों पर ख़्वाह (खुद) उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस ने अपनी ज़ात को बुख़्ल से बचाया तो यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

और हमारे भाइयों को	हमें बख़्शदे	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	उन के बाद	वह आए	और जो लोग

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ

उन लोगों के लिए जो	कोई कीना	हमारे दिलों में	और न होने दे	ईमान में	हम से सबक़त की	वह जिन्हों ने

اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ع ١٠ ١ ٢ الربع

वह लोग जिन्हों ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक़)	तरफ़-को	क्या आप ने नहीं देखा	10	रहम करने वाला	शफ़क़त करने वाला	बेशक तू	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए

يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ

अलबत्ता अगर	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अपने भाइयों को	वह कहते हैं

اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًاۙ وَّاِنْ

और अगर	कभी	किसी का	तुम्हारे बारे में	और हम न मानेंगे	तुम्हारे साथ	तो हम ज़रूर निकल जाएंगे	तुम निकाले गए

قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا

वह जिला वतन किए गए	अगर	11	अलबत्ता झूटे हैं	बेशक वह	गवाही देता है	और अल्लाह	तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे	तुम से लड़ाई हुई

لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ

वह उन की मदद करेंगे	और अगर	वह उन की मदद न करेंगे	उन से लड़ाई हुई	और अगर	उन के साथ	वह न निकलेंगे

لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۟ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً

डर	बहुत ज़ियादा	यक़ीनन तुम-तुम्हारा	12	वह मदद न किए जाएंगे	फिर	पीठ (जमा)	तो वह यक़ीनन फेरेंगे

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

13	कि वह समझते नहीं	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अल्लाह से	उन के सीनों (दिलों) में

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ

पीछे से	या	क़िला बन्द	बस्तियों में	मगर	इकट्ठे सब मिल कर	वह तुम से न लड़ेंगे

جُدُرٍؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ

हालांकि उन के दिल	तुम गुमान करते हो उन्हें इकट्ठे	बहुत सख़्त	उन के आपस में	उन की लड़ाई	दीवारें

شَتّٰىؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ

जो लोग	हाल जैसा	14	वह अ़क़्ल नहीं रखते	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अलग अलग

مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

अ़ज़ाब	और उन के लिए	अपने काम	वबाल	उन्हों ने चख लिया	क़रीबी ज़माना	इन से क़ब्ल

اَلِيْمٌۚ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْۚ فَلَمَّا كَفَرَ

तो जब उस ने कुफ़्र किया	तू कुफ़्र इख़्तियार कर	इन्सान से	उस ने कहा	जब	शैतान	हाल जैसा	15	दर्दनाक

قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

16	तमाम जहानों	रब	अल्लाह	तहक़ीक़ मैं डरता हूँ	तुझ से	लातअ़ल्लुक़	बेशक मैं	उस ने कहा

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख़्श दे वह जिन्हों ने ईमान लाने में हम से सबक़त की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! बेशक तू शफ़क़त करने वाला, रहम करने वाला। **(10)**

क्या आप (स) ने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफ़िर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह झूटे हैं। **(11)**

और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निकलेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यक़ीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। **(12)**

यक़ीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। **(13)**

वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर बस्तियों में क़िला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उन की लड़ाई बहुत सख़्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अ़क़्ल नहीं रखते। **(14)**

इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़ब्ल हुए, उन्हों ने अपने काम का वबाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। **(15)**

शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़्र इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़्र किया तो उस ने कहा: बेशक मैं तुझ से लातअ़ल्लुक़ हूँ, तहक़ीक़ मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। **(16)**

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ

और यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	आग में	बेशक वह दोनों	उन दोनों का अन्जाम	पस हुआ

ع ٢ ٧ ٥ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ

और चाहिए कि देखे	तुम अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ	17	ज़ालिमों	जज़ा-सज़ा

نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ

बाख़बर	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	कल के लिए	क्या उस ने आगे भेजा	हर शख़्स

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें	जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया	उन लोगों की तरह	और न हो जाओ तुम	18	उस से जो तुम करते हो

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِیْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ

दोज़ख़ वाले	बराबर नहीं	19	नाफ़रमान (जमा)	वह	यही लोग	ख़ुद उन्हें

وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वही हैं	जन्नत वाले	और जन्नत वाले

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰی جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

दबा हुआ	तो तुम देखते उस को	पहाड़ पर	क़ुरआन	यह	अगर हम नाज़िल करते

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا

हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	अल्लाह का ख़ौफ़	से	टुकड़े टुकड़े हुआ

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह	21	ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۲۲﴾

22	रहम करने वाला	वह बड़ा मेहरबान	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा का	उस के सिवा

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ

सलामती वाला	निहायत पाक	बादशाह	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह

الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

पाक है अल्लाह	बड़ाई वाला	जब्बार	ग़ालिब	निगहबान	अम्न देने वाला

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

ईजाद करने वाला	ख़ालिक़	वह अल्लाह	23	वह शरीक करते हैं	उस से जो

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

उस की	पाकीज़गी बयान करता है	अच्छे	नाम (जमा)	उस के लिए	सूरतें बनाने वाला

ع ٣ ٧ ٦ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾

24	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख़्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है! और तुम अल्लाह से डरो, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18)

और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्हों ने ख़ुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19)

बराबर नहीं दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

अगर हम नाज़िल करते यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (21)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हक़ीक़ी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है। सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23)

वह अल्लाह है - ख़ालिक़, इजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (24)

آيَاتُهَا ١٣ ❀ سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ (٦٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 13 — (60) सूरतुल मुमतहिना — रुकूआत 2

जिस (औरत) की जाँच करनी है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ

तुम पैग़ाम भेजते हो	दोस्त	और अपने दुश्मन	मेरा दुश्मन	तुम न बनाओ	ईमान वालो	ऐ

اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ

वह निकालते (जिला वतन करते) हैं रसूल (स) को	हक़ से	उस के जो तुम्हारे पास आया	और वह मुन्किर हो चुके हैं	दोस्ती से-का	उन की तरफ़

وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ

मेरे रास्ते में	जिहाद के लिए	तुम निकलते हो	अगर	तुम्हारा रब	अल्लाह पर	कि तुम ईमान लाते हो	और तुम्हें भी

وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ

और जो	तुम छुपाते हो	वह जो	और मैं खूब जानता हूँ	दोस्ती का पैग़ाम	उन की तरफ़	तुम छुपा कर (भेजते हो)	मेरी रज़ा	और चाहने के लिए

اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١﴾ اِنْ

अगर	1	रास्ता	सीधा	वह भटक गया	तो तहक़ीक़	तुम में से	यह करेगा	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो

يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ

और अपनी ज़बानें	अपने हाथ	तुम पर	और वह खोलें	दुश्मन	तुम्हारे	वह हो जाएं	वह तुम्हें पाएं

بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ ﴿٢﴾ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ

तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे रिश्ते	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे	2	काश तुम काफ़िर हो जाओ	और वह चाहते हैं	बुराई के साथ

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣﴾ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक है	3	देखता है	जो तुम करते हो	और अल्लाह	वह (अल्लाह) फ़ैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान	क़ियामत के दिन

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ

अपनी क़ौम को	जब उन्हों ने कहा	उस के साथ	और जो	इब्राहीम (अ)	में	चाल (नमूना) बेहतरीन

اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا

हमारे दरमियान	और ज़ाहिर हो गई	तुम्हारे	हम मुन्किर हैं	अल्लाह के सिवा	तुम बन्दगी करते हो	और उन से जिन की	तुम से	बेशक हम लातअल्लुक़

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ

वाहिद	अल्लाह पर	तुम ईमान ले आओ	यहां तक कि	हमेशा के लिए	और बुग़्ज़ (दुश्मनी)	अदावत	और तुम्हारे दरमियान

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से-के आगे	तुम्हारे लिए	मैं इख़्तियार रखता	और नहीं	तुम्हारे लिए	अलबत्ता मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा	अपने बाप से	इब्राहीम (अ)	मगर कहना

مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٤﴾

4	वापसी	और तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ किया	और तेरी तरफ़	हम ने भरोसा किया	तुझ पर	ऐ हमारे रब	कुछ भी

معانقة ١٦ عند المتأخرين ١٢
السماع الوقف على القيمة ١٢

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ़ दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक़ आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला वतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ़ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैग़ाम), और मैं खूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहक़ीक़ वह सीधे रास्ते से भटक गया। (1)

अगर वह तुम्हें पाएं (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़बानें (दस्तदराज़ी और ज़बान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। (2)

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। (3)

बेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्हों ने अपनी क़ौम को कहा: बेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अ़दावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। (4)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

तू ही	बेशक तू	ऐ हमारे रब	हमें	और बख़्श दे	कुफ़्र किया (काफ़िर)	उन के लिए जिन्हों ने	आज़माइश (तख़्तए मश्क़)	हमें न बना	ऐ हमारे रब

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا

उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	बेहतरीन	चाल (नमूना)	उन में	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ (यक़ीनन) है	5	हिक्मत वाला	ग़ालिब

ع ٦/٢ اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦﴾

6	सतौदा सिफ़ात	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	रूगर्दानी करेगा	और जो-जिस	और आख़िरत का दिन	अल्लाह

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ

दोस्ती	उन से	तुम अ़दावत रखते हो	उन लोगों के	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	वह कर दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧﴾ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ

जो लोग	से	तहक़ीक़ मना नहीं करता अल्लाह	7	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	क़ुदरत रखने वाला	और अल्लाह

لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ

कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे घर (जमा)	से	और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला	दीन में	तुम से नहीं लड़ते

وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

से	तुम्हें मना करता है अल्लाह	इस के सिवा नहीं	8	इंसाफ़ करने वाले	महबूब रखता है	बेशक अल्लाह	उन से	और तुम इंसाफ़ करो

الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا

और उन्हों ने मदद की	तुम्हारे घर	से	और उन्हों ने तुम्हें निकाला	दीन में	तुम से लड़ें	जो लोग

عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾

9	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	और जो उन से दोस्ती रखेगा	कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे निकालने पर

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ

तो उन का इम्तिहान कर लिया करो	मुहाजिर औरतें	मोमिन औरतें	जब तुम्हारे पास आएं	ईमान वालो	ऐ

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ

तो तुम उन्हें वापस न करो	मोमिन औरतें	तुम उन्हें जान लो	पस अगर	उन के ईमान को	अल्लाह खूब जानता है

اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ

तुम उन को देदो	उन औरतों के लिए	वह हलाल हैं	और न वह मर्द	उन के लिए	हलाल	वह औरतें नहीं	काफ़िरों	तरफ़

مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो	तुम पर	और कोई गुनाह नहीं	जो उन्हों ने ख़र्च किया

وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْئَلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْئَلُوْا

और चाहिए कि वह मांग लें	जो तुम ने ख़र्च किया	और तुम मांग लो	काफ़िर औरतें	शादी की रिश्ता	और तुम न क़ब्ज़ा रखो

مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

10	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दरमियान	वह फ़ैसला करता है	अल्लाह का हुक्म	यह	जो उन्हों ने ख़र्च किया

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ित्ना काफ़िरों के लिए और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब! बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)
यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूगर्दानी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)
क़रीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (7)
अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़े और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)
इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे) में लड़े और उन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (9)
ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएं तो उन का इम्तिहान कर लिया करो, अल्लाह खूब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं हैं उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औ़रतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफ़िर शौहरों) को देदो जो उन्हों ने ख़र्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औ़रतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औ़रतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़्फ़ार से) मांग लो जो तुम ने ख़र्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

पस दो	तो उन (कुफ़्फ़ार) को सज़ा दो	कुफ़्फ़ार की तरफ़	तुम्हारी बीवियां	से	कोई	तुम्हारे हाथ से निकल जाए	और अगर

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

वह जिस	और डरो अल्लाह से	जो उन्हों ने ख़र्च किया	उस क़द्र	उन की औरतें	जाती रहीं	उन को जिन की

اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ

आप से बैअ़त करने के लिए	मोमिन औरतें	आप के पास आएं	जब	ऐ नबी (स)	11	ईमान रखते हो	उस पर	तुम

عَلٰٓي اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ

और न ज़िना करेंगी	और न चोरी करेंगी	किसी शै को	अल्लाह के साथ	वह शरीक न करेंगी	इस पर कि

وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ

जो उन्हों ने गढ़ा हो	बुहतान से	और न लाएंगी	अपनी औलाद	और न वह क़त्ल करेंगी

بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें	नेक कामों में	और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी	और अपने पाऊँ	अपने हाथों के दरमियान

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान वालो	ऐ	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह से	और मग़्फ़िरत मांगें

لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا مِنَ

से	वह ना उम्मीद हो चुके	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	वह लोग	तुम दोस्ती न रखो

الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع — النصف ع ٢ ٨

13	क़ब्रों वाले (मुर्दे)	से	काफ़िर (जमा)	मायूस हैं	जैसे	आख़िरत

آيَاتُهَا ١٤ ❀ سُوْرَةُ الصَّفِّ (٦١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (61) सूरतुस सफ़ / सफ़ (मोरचा बंदी) — आयात 14

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا

नापसंदीदा	बड़ी	2	तुम करते नहीं	जो	तुम कहते हो	क्यों	ईमान वालो	ऐ

عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	3	तुम करते नहीं	जो	तुम कहो	कि	अल्लाह के नज़्दीक

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾

4	सीसा पिलाई हुई	एक इमारत	गोया कि वह	सफ़ बस्ता हो कर	उस के रास्ते में	जो लोग लड़ते हैं

और अगर कुफ़्फ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुफ़्फ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आगईं उन के मेहर वापस देने के बजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रहीं, जिस क़द्र उन्हों ने ख़र्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएं मोमिन औरतें इस पर बैअ़त करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शै को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्हों ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2)

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। (3)

बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत हैं सीसा पिलाई हुई। (4)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّىْ

कि मैं	और यक़ीनन तुम जान चुके हो	तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	उन के दिल	अल्लाह ने कज कर दिए	उन्हों ने कज रवी की	पस जब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۵﴾ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ

बेशक मैं	ऐ बनी इस्राईल	मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	और जब	5	नाफ़रमान (जमा)	लोग

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ

और ख़ुशख़बरी देने वाला	तौरेत	से	मुझ से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वाज़ेह दलाइल के साथ	वह आए उन के पास	फिर जब	अहमद	उस का नाम	मेरे बाद	वह आएगा	एक रसूल की

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۶﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ

और वह	झूट	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	6	खुला जादू	यह

يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۷﴾ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	7	ज़ालिम लोगों	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	इस्लाम की तरफ़	बुलाया जाता है

لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸﴾

8	काफ़िर नाख़ुश हों	और ख़ाह	अपना नूर	पूरा करने वाला	और अल्लाह	अपने फूंकों से	अल्लाह का नूर	कि बुझादें

هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

दीन पर	ताकि वह उसे ग़ालिब करदे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	वही जिस ने भेजा

ع ۱ ۹ ۹ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۹﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ

तिजारत पर	मैं तुम्हें बतलाऊँ	क्या	ईमान वालो	ऐ	9	मुश्रिक (जमा)	और ख़ाह नाख़ुश हों	तमाम

تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۱۰﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ

और तुम जिहाद करो	और उसका रसूल (स)	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	10	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	तुम्हें नजात दे

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	यह	और अपनी जानों	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे से	जारी हैं	बाग़ात	और वह तुम्हें दाख़िल करेगा	तुम्हारे गुनाह	तुम्हें	वह बख़्श देगा	11	तुम जानते हो

الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾

12	बड़ी	कामयाबी	यह	हमेशा	बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	नहरें

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

13	और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दें	क़रीब	और फ़तह	अल्लाह से	मदद	तुम उसे बहुत चाहते हो	और एक और

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यक़ीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्हों ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5)
और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तस्दीक़ करने वाला जो मुझ से पहले तौरेत (आई) और एक रसूल (स) की ख़ुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्हों ने कहा यह तो खुला जादू है। (6)
और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7)
वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूंकों से बुझादें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है ख़ाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8)
वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और ख़ाह मुश्रिक नाख़ुश हों। (9)
ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से नजात दे। (10)
तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11)
वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बाग़ात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12)
और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और क़रीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को ख़ुशख़बरी दीजिए। (13)

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ) के बेटे इसा (अ) ने हवारिय्यों को कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरा मददगार? तो कहा हवारिय्यों ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और कुफ़्र किया एक गिरोह ने, तो हम ने उन के दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद की, सो वह ग़ालिब हो गए। **(14)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है, जो बादशाह हक़ीक़ी, कमाल दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(1)**

वही है जिस ने अनपढ़ों में एक रसूल (स) उन ही में से भेजा, वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से) पाक करता है और उन्हें सिखाता है किताब और दानिश्मन्दी की बातें, और बेशक यह लोग उस से पहले खुली गुमराही में थे। **(2)**

और उन के अ़लावा (उन को भी) जो अभी उन से नहीं मिले, वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(3)**

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिस को चाहता है उसे देता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। **(4)**

उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरेत लादी (उतारी) गई, फिर उन्हों ने उसे उठाया गधे की तरह जो किताबें लादे हुए है (उस पर कारबन्द न हुए), उन लोगों की हालत बुरी है जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। **(5)**

आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के अ़लावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो। **(6)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	जैसे	अल्लाह के मददगार	तुम हो जाओ	ईमान वालो	ऐ

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

अल्लाह के मददगार	हम	हवारिय्यों	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरा मददगार	कौन	हवारिय्यों को

فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ

एक गिरोह	और कुफ़्र किया	बनी इस्राईल	से-का	एक गिरोह	तो ईमान लाया

فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع ٢ ١٠

14	ग़ालिब	सो वह हो गए	उन के दुश्मनों पर	ईमान वाले	तो हम ने मदद की

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ (٦٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (62) सूरतुल जुमुअ़ह जुमा — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	कमाल पाक	बादशाह हक़ीक़ी	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो कुछ	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ

उस की आयतें	उन्हें	पढ़ कर सुनाता है	उन में से	एक रसूल (स)	अनपढ़ों में	उठाया (भेजा)	वही जिस ने	1	हिक्मत वाला

وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

अलबत्ता गुमराही में	इस से क़ब्ल	और तहक़ीक़ वह थे	हिक्मत (दानिश्मन्दी की बातें)	किताब	और उन्हें सिखाता है	और वह उन्हें पाक करता है

مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ لا وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ

यह	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उन से	कि वह अभी नहीं मिले	उन के	और अ़लावा	2	खुली

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ

मिसाल	4	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	वह चाहता है	जिस को	वह देता है उसे	अल्लाह का फ़ज़्ल

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ

किताबें	वह लादे हुए है	गधा	मिसाल की तरह	उन्हों ने न उठाया उसे	फिर	तौरात	उन पर लादी गई	जिन लोगों पर

بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	अल्लाह की आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	जिन्हों ने	वह लोग	मिसाल (हालत)	बुरी

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ

कि तुम	तुम्हें ज़अ़्म (घमंड) है	अगर	यहूदियो	ऐ	आप (स) फ़रमा दें	5	ज़ालिम लोगों

اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾

6	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम तमन्ना करो	दूसरे लोगों के अ़लावा	से	अल्लाह के लिए	दोस्त

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾

7	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के हाथों ने	भेजा आगे	उसके सबब जो	कभी भी	और वह उस की तमन्ना न करेंगे

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

तुम लौटाए जाओगे	फिर	तुम्हें मिलने वाली	तो बेशक वह	उस से	तुम भागते हो	जिस से	बेशक मौत	आप (स) फ़रमादें

ع ٨ / ١١ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	8	तुम करते थे	उस से जो	फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा	और ज़ाहिर	तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى

तरफ़	तो तुम लपको	जुमा का दिन	से-की	नमाज़ के लिए	पुकारा जाए	जब	ईमान वालो

ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا

फिर जब	9	तुम जानते हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	ख़रीद ओ फ़रोख़्त	और तुम छोड़ दो	अल्लाह की याद

قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	से	और तुम तलाश करो	ज़मीन में	तो तुम फैल जाओ	नमाज़	पूरी हो चुके

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً

तिजारत	वह देखते हैं	और जब	10	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकस्रत	और तुम याद करो अल्लाह को

اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	जो	फ़रमा दें	खड़ा	और आप (स) को छोड़ जाते हैं	उस की तरफ़	वह दौड़ जाते हैं	खेल तमाशा	या

ع ٢ / ١٢ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

11	रिज़्क़ देने वाला	बेहतर	और अल्लाह	तिजारत	और से	खेल तमाशा	से	बेहतर

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ (٦٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (63) सूरतुल मुनाफ़िक़ून — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

वह जानता है	और अल्लाह	अलबत्ता अल्लाह के रसूल	बेशक आप (स)	हम गवाही देते हैं	वह कहते हैं	मुनाफ़िक़	जब आप (स) के पास आते हैं

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْٓا

उन्हों ने पकड़ा (बना लिया)	1	अलबत्ता झूटे	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	गवाही देता है	और अल्लाह	अलबत्ता उसके रसूल (स)	यक़ीनन आप (स)

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾

2	वह करते हैं	बुरा जो	बेशक वह	अल्लाह का रास्ता	से	पस वह रोकते हैं	ढाल	अपनी क़समों को

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾

3	नहीं समझते	पस वह	उन के दिल	पर	तो मुहर लगादी गई	फिर उन्हों ने कुफ़्र किया	ईमान लाए	इस लिए कि वह	यह

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (7)
आप (स) फ़रमा दें: बेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यक़ीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8)
ऐ ईमान वालो! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़े (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और ख़रीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9)
फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10)
और जब वह देखते हैं तिजारत या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशे से और तिजारत से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (11)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1)
उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2)
यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्हों ने कुफ़्र किया तो मुहर लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

गोया कि वह	उन की बातें	आप सुनें	और अगर वह बात करें	उन के जिस्म	तो आप को ख़ुशनुमा मालूम हों	आप (स) उन्हें देखें	और जब

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ

पस आप (स) उन से बचें	दुश्मन	वह	अपने ऊपर	हर बुलन्द आवाज़	वह गुमान करते हैं	दीवार से लगाई हुई	लकड़ियां

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ؗ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बख़्शिश की दुआ करें	तुम आओ	कहा जाए उन से	और जब	4	वह फिरे जाते हैं	कहां	उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह

رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾

5	बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं	और वह	वह रुकते हैं	और आप (स) उन्हें देखें	अपने सरों को	वह फेर लेते हैं	अल्लाह के रसूल

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ

उन को	हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	उन के लिए	आप (स) न बख़्शिश मांगें	या	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	उन पर	बराबर

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا

न ख़र्च करो तुम	वह कहते हैं	वह लोग जो	वही	6	नाफ़रमान लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए ख़ज़ाने	वह मुन्तशिर हो जाएं	यहां तक कि	अल्लाह के रसूल	पास	जो	पर

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ

अगर हम लौट कर गए	वह कहते हैं	7	वह नहीं समझते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और ज़मीन

اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ

और उसके रसूल (स) के लिए	और अल्लाह के लिए इज़्ज़त	निहायत ज़लील	वहां से	इज़्ज़तदार	ज़रूर निकाल देगा	मदीने की तरफ़

وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ١ ٨ ١٣

ईमान वालो	ऐ	8	नहीं जानते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और मोमिनों के लिए

لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करेगा	और जो	अल्लाह की याद	से	और न तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	जो हम ने तुम्हें दिया	से	और तुम ख़र्च करो	9	ख़सारा पाने वाले	वह	तो वही लोग

اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰٓى

तक	तू ने मुझे मोहलत दी	क्यों न	ऐ मेरे रब	तो वह कहे	मौत	तुम में से किसी को	कि आजाए

اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ

और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह	10	नेकोकारों	से	और मैं होता	तो मैं सदक़ा करता	एक क़रीब की मुद्दत

نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ٢ ٣ ١٤

11	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	और अल्लाह	उस की अजल	जब आगई	किसी को

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को ख़ुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (ग़ौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)

और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरों को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं। (5)

उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शीश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)

वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)

वह कहते हैंः अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़्ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)

और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से ख़र्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक क़रीबी मुद्दत तक मोहलत न दी? तो मैं सदक़ा करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)

और जब उस की अजल आगई तो अल्लाह हरगिज़ किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

آيَاتُهَا ١٨ ❀ (٦٤) سُوْرَةُ التَّغَابُنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (64) सूरतुत तग़ाबुन — हार जीत — आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

और उसी के लिए	बादशाही	उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

तुम्हें पैदा किया	वही जिस ने	1	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	तमाम तारीफ़ें

فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾

2	देखने वाला	तुम करते हो	उस को जो	और अल्लाह	कोई मोमिन	और तुम में से	कोई काफ़िर	तो तुम में से

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

तुम्हें सूरतें दीं	तो बहुत अच्छी	और तुम्हें सूरतें दीं	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ

और जानता है	और ज़मीन	आस्मानो में	जो	वह जानता है	3	वापसी	और उसी की तरफ़

مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾

4	दिलों के भेद	जानने वाला	और अल्लाह	और जो तुम ज़ाहिर करते हो	जो तुम छुपाते हो

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ

अपने काम	वबाल	तो उन्हों ने चख लिया	इस से क़ब्ल	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	ख़बर	क्या नहीं आई तुम्हारे पास

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

उन के रसूल	आते थे उनके पास	इस लिए कि वह	यह	5	अ़ज़ाब दर्दनाक	और उन के लिए

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

और बेनियाज़ी फ़रमाई	और वह फिर गए	तो उन्हों ने कुफ़्र किया	वह हिदायत देते हैं हमें	क्या बशर	तो वह कहते	वाज़ेह निशानियों के साथ

اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ

वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे	कि	वह काफ़िर हुए	उन लोगों ने जो	दावा किया	6	सतौदा सिफ़ात	बेनियाज़	और अल्लाह	अल्लाह

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ

जो तुम करते थे	फिर अलबत्ता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा	अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे	मेरे रब की क़सम	हाँ	फ़रमा दें

وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧﴾ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस के रसूल (स)	अल्लाह पर	पस तुम ईमान लाओ	7	आसान	अल्लाह पर	और यह

وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾

8	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	हम ने नाज़िल किया	वह जो	और नूर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है बादशाही और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (1) वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2) उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3) वह जानता है जो कुछ आस्मानो में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्हों ने इस से पहले कुफ़्र किया, तो उन्हों ने वबाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5) यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थे: क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्हों ने कुफ़्र किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हम्द) है। (6) उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7) पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (8)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

जिस दिन	वह जमा करेगा तुम्हें	जमा होने (क़ियामत) के दिन	यह	खोने या पाने (हार जीत) का दिन	और जो	वह ईमान लाए	अल्लाह पर

وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

और वह काम करे	अच्छे	वह दूर कर देगा	उस से	उस की बुराइयां	और वह उसे दाख़िल करेगा	बाग़ात	जारी हैं

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٩

उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उन में	हमेशा	यह	बड़ी कामयाबी	9

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और उन्हों ने झुटलाया	हमारी आयतों को	यही लोग	दोज़ख़ वाले	हमेशा रहेंगे	उस में

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٠ ۧ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ ع ١٥ الثلثة

और बुरी	पलटने की जगह (ठिकाना)	10	नहीं पहुँची	कोई मुसीबत	मगर	अल्लाह के इज़्न से	और जो

يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ١١ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

वह ईमान लाता है	अल्लाह पर	हिदायत देता है	उस का दिल	और अल्लाह	हर शै को	जानने वाला	11	और तुम इताअ़त करो अल्लाह की

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ١٢

और इताअ़त करो रसूल (स) की	फिर अगर	फिर गए तुम	तो इस के सिवा नहीं	हमारे रसूल (स) पर-ज़िम्मे	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	12

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ١٣ يٰٓاَيُّهَا

अल्लाह	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	और अल्लाह पर	पस भरोसा करना चाहिए	ईमान वाले	13	ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ

ईमान वालो	बेशक	से	तुम्हारी बीवियां	और तुम्हारी औलाद	दुश्मन	तुम्हारे लिए	पस तुम उन से बचो

وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٤ اِنَّمَآ

और अगर	तुम माफ़ कर दो	और तुम दरगुज़र करो	और तुम बख़्श दो	तो बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	14	इस के सिवा नहीं

اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ١٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

तुम्हारे माल	और तुम्हारी औलाद	आज़माइश	और अल्लाह	उस के पास	बड़ा अजर	15	पस तुम डरो अल्लाह से

مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ

जहां तक तुम से हो सके	और तुम सुनो	और तुम इताअ़त करो	और तुम ख़र्च करो	बेहतर	तुम्हारे हक़ में

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ١٦ اِنْ

और जो	बचा लिया गया	बख़ीली	अपनी जान	तो यही लोग	वह	फ़लाह पाने वाले	16	अगर

تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ

तुम क़र्ज़ दोगे अल्लाह को	क़र्ज़े हस्ना	वह उसे दो चन्द करेगा	तुम्हारे लिए	और वह तुम्हें बख़्श देगा	और अल्लाह

شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ١٧ ۙ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ١٨ ۧ ع ٢ ٨ ١٦

क़द्र शनास	बुर्दबार	17	ग़ैब का जानने वाला	और ज़ाहिर	ग़ालिब	हिक्मत वाला	18

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)

कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज़्न से, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (11)

और तुम अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)

अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)

ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ बीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)

पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताअ़त करो और ख़र्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की बख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)

अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें बख़्शदेगा, और अल्लाह क़द्र शनास, बुर्दबार है। (17)

(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

آيَاتُهَا ١٢ ❀ (٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (65) सूरतुत तलाक़ | आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

और तुम शुमार रखो	उन की इद्दत के लिए	तो उन्हें तलाक़ दो	औरतों	तुम तलाक़ दो	जब	ऐ नबी (स)

الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

और न वह (ख़ुद) निकलें	उन के घरों	से	तुम न निकालो उन्हें	तुम्हारा रब	और तुम डरो अल्लाह से	इद्दत

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ

आगे निकलेगा	और जो	अल्लाह की हुदूद	और यह	खुली	बेहयाई	यह कि वह करें	मगर

حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद	वह पैदा कर दे	मुम्किन है कि अल्लाह	तुम्हें ख़बर नहीं	अपनी जान	तो तहक़ीक़ उस ने ज़ुल्म किया	अल्लाह की हुदूद

اَمْرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ

तुम उन्हें जुदा कर दो	या	अच्छे तरीक़े से	तो उन को रोक लो	अपनी मीआद	वह पहुँच जाएं	फिर जब	1	कोई और बात

بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ

यही है	गवाही अल्लाह के लिए	और तुम क़ाइम करो	अपने में से	दो (2) इंसाफ़ पसंद	और तुम गवाह कर लो	अच्छे तरीक़े से

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ۙ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

वह अल्लाह से डरता है	और जो	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	जो ईमान रखता है	जिस की नसीहत की जाती है

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ

वह भरोसा करता है	और जो	उसे गुमान नहीं होता	जहां से	और वह उसे रिज़्क़ देता है	2	नजात की राह	वह उस के लिए निकाल देता है

عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾

3	अन्दाज़ा	हर बात के लिए	बेशक कर रखा है अल्लाह	अपना काम	पहुँचने (पूरा करने) वाला	बेशक अल्लाह	उस के लिए काफ़ी है	तो वह	अल्लाह पर

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ

तो उन की इद्दत	अगर तुम्हें शुबाह हो	तुम्हारी बीवियां	से	हैज़	से	ना उम्मीद हो गईं हों	और जो औरतें

ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ

कि वज़अ़ हो जाएं	उन की इद्दत	और हम्ल वालियां	उन्हें हैज़ नहीं आया	और जो	महीने	तीन

حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿٤﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के हुक्म	यह	4	आसानी	उस के काम में	उस के लिए	वह कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	उन के हम्ल

اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ﴿٥﴾

5	अजर	उस को	और बड़ा देगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	तुम्हारी तरफ़	उस ने यह उतारा है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इद्दत के लिए तलाक़ दो और तुम इद्दत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह ख़ुद निकलें, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुरतकिब हों, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहक़ीक़ उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम्हें ख़बर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुजूअ़ की) कोई और बात (सबील) पैदा कर दे। (1) फिर जब वह पहुँच जाएं अपनी मीआद तो उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से जुदा (रुख़्सत) कर दो, और अपने में से दो (2) इंसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख़्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़्लिसी) की राह निकाल देता है। (2) और वह उसे रिज़्क़ देता है जहां से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर बात के लिए अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है। (3) और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गई हों तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और (यही हुक्म कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हम्ल वालियों की इद्दत उन के वज़अ़ हम्ल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4) यह अल्लाह के हुक्म हैं, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

اَسۡكِنُوۡهُنَّ مِنۡ حَيۡثُ سَكَنۡتُمۡ مِّنۡ وُّجۡدِكُمۡ وَلَا تُضَآرُّوۡهُنَّ لِتُضَيِّقُوۡا

कि तुम तंग करो	और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ	अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़	तुम रहते हो	जहां	तुम उन्हें रखो

عَلَيۡهِنَّ ؕ وَاِنۡ كُنَّ اُولَاتِ حَمۡلٍ فَاَنۡفِقُوۡا عَلَيۡهِنَّ حَتّٰى يَضَعۡنَ حَمۡلَهُنَّ ۚ

उन के हम्ल	यहां तक कि वज़अ़ हो जाएं	उन पर	तो ख़र्च करो तुम	हम्ल वालियां (हम्ल से)	वह हों	और अगर	उन्हें

فَاِنۡ اَرۡضَعۡنَ لَكُمۡ فَاٰتُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ ۚ وَاۡتَمِرُوۡا بَيۡنَكُمۡ بِمَعۡرُوۡفٍ ۚ وَاِنۡ

और अगर	माकूल तरीक़े से	और तुम बाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में	उन की उज्रत	तो तुम उन्हें दो	तुम्हारे लिए	वह दूध पिलाएं	फिर अगर

تَعَاسَرۡتُمۡ فَسَتُرۡضِعُ لَهٗۤ اُخۡرٰى ؕ ﴿٦﴾ لِيُنۡفِقۡ ذُوۡ سَعَةٍ مِّنۡ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنۡ

और जो	अपनी वस्अ़त	से- मुताबिक़	वस्अ़त वाला	चाहिए कि ख़र्च करे	6	कोई दूसरी	उस को	तो दूध पिलादेगी	तुम बाहम कश्मकश करोगे

قُدِرَ عَلَيۡهِ رِزۡقُهٗ فَلۡيُنۡفِقۡ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ

जिस क़द्र उस ने उसे दिया	मगर	किसी को	तकलीफ़ नहीं देता अल्लाह	उसे अल्लाह ने दिया	उस में से जो	तो उसे ख़र्च करना चाहिए	उस का रिज़्क़	उस पर	तंग कर दिया गया

سَيَجۡعَلُ اللّٰهُ بَعۡدَ عُسۡرٍ يُّسۡرًا ﴿٧﴾ ع وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ عَتَتۡ عَنۡ ع ١٧

से	उन्हों ने सरकशी की	बस्तियां	और कई	7	आसानी	तंगी के बदले	जल्द कर देगा अल्लाह

اَمۡرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبۡنٰهَا حِسَابًا شَدِيۡدًا ۙ وَّعَذَّبۡنٰهَا عَذَابًا نُّكۡرًا ﴿٨﴾

8	बहुत बड़ी	अ़ज़ाब	और हम ने उन्हें अ़ज़ाब दिया	सख़्ती से	हिसाब	तो हम ने उन का हिसाब लिया	और उस के रसूलों	अपने रब के हुक्म

فَذَاقَتۡ وَبَالَ اَمۡرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمۡرِهَا خُسۡرًا ﴿٩﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ

उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया है	9	ख़सारा	उन का काम	अन्जाम	और हुआ	अपना काम	वबाल	फिर उन्हों ने चखा

عَذَابًا شَدِيۡدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الۡاَلۡبَابِ ۛۚ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۛ ع ١٤ عند المتقدمين ١٢

ईमान वालो	ऐ अ़क़्ल वालो	पस तुम डरो अल्लाह से	सख़्त	अ़ज़ाब

قَدۡ اَنۡزَلَ اللّٰهُ اِلَيۡكُمۡ ذِكۡرًا ۙ ﴿١٠﴾ رَّسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ

रोशन	अल्लाह की आयतें	तुम पर	वह पढ़ता है	रसूल	10	नसीहत (किताब)	तुम्हारी तरफ़	तहक़ीक़ नाज़िल की अल्लाह ने

لِّيُخۡرِجَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ؕ وَمَنۡ

और जो	नूर की तरफ़	तारीकियों से	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	जो ईमान लाए	ताकि वह निकाले

يُّؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ وَيَعۡمَلۡ صَالِحًا يُّدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ

नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	अच्छे	और वह अ़मल करेगा	अल्लाह पर	ईमान लाएगा

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدۡ اَحۡسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزۡقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ

पैदा किए	अल्लाह वह जिस ने	11	रोज़ी	उस के लिए	बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने	हमेशा हमेशा	उन में	वह हमेशा रहेंगे

سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الۡاَرۡضِ مِثۡلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الۡاَمۡرُ بَيۡنَهُنَّ لِتَعۡلَمُوۡۤا

ताकि वह जान लें	उन के दरमियान	हुक्म	उतरता है	उन की तरह	और ज़मीन से (भी)	सात आस्मान

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عِلۡمًا ﴿١٢﴾ ع ع ٥ ٢ ١٨

12	इल्म से	हर शै	अहाता किया हुआ है	और यह कि अल्लाह	क़ुदरत रखता है	हर शै पर	कि अल्लाह

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए ज़रर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हम्ल से हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि वज़अ़ हम्ल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी ख़ातिर) दूध पिलाएं तो उन्हें उन की उज्रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीक़े से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम बाहम कश्मकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। (6) चाहिए कि वस्अ़त वाला अपनी वस्अ़त के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़्क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से ख़र्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द्र) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। (7) और कित्नी ही बस्तियां हैं जिन्हों ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अ़ज़ाब दिया। (8) फिर उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। (9) अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अ़क़्ल वालो - ईमान वालो! तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। (10) और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा तो वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। (11) अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। (12)

آيَاتُهَا ١٢ ❀ سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ (٦٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2	(66) सूरतुत तहरीम हराम करना	आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ

खुशनूदी	चाहते हुए	तुम्हारे लिए	जो अल्लाह ने हलाल किया	तुम क्यों हराम ठहराते हो?	ऐ नबी (स)

اَزْوَاجِكَؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ

खोलना (कफ़्फ़ारा)	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने	1	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	अपनी बीवियां

اَيْمَانِكُمْۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾ وَاِذْ

और जब	2	हिक्मत वाला	जानने वाला	और वह	तुम्हारा कारसाज़	और अल्लाह	तुम्हारी क़समें

اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًاۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ

और उस को ज़ाहिर कर दिया	उस ने ख़बर कर दी उस बात की	फिर जब	एक बात	अपनी बीवी	बाज़ (एक)	तक- से	नबी (स) ने राज़ की बात कही

اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

वह बात	उस (बीवी) को जतलाई	फिर जब	बाज़ से	और एराज़ किया	उस का कुछ	उस (नबी) ने ख़बर दी	उस पर	अल्लाह

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَاؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٣﴾ اِنْ تَتُوْبَآ

अगर तुम दोनों तौबा करो	3	ख़बर रखने वाला	इल्म वाला	मुझे ख़बर दी	फ़रमाया	इस	किस ने आप (स) को ख़बर दी	वह बोली

اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَاۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उस पर	तुम एक दूसरी की मदद करोगी	और अगर	तुम्हारे दिल	तो यक़ीनन कज हो गए	अल्लाह के सामने

هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद (उन के अ़लावा)	और फ़रिश्ते	मोमिन (जमा)	और नेक	और जिब्राईल (अ)	उस का रफ़ीक़	वह

ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا

बेहतर	बीवियां	कि उन के लिए बदल दे	अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें	उन का रब	क़रीब है	4	मददगार

مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ

रोज़ेदार	इबादत गुज़ार	तौबा करने वालियां	फ़रमांबरदारी करने वालियां	ईमान वालियां	इताअ़त गुज़ार	तुम से

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ

और अपने घर वालों को	अपने आप को	तुम बचाओ	ईमान वालो	ऐ	5	और कुंवारियां	शौहर दीदा

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

ज़ोर आवर	दुरुश्त ख़ू	फ़रिश्ते	उस पर	और पत्थर	आदमी	उस का ईंधन	आग

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٦﴾

6	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह करते हैं	वह हुक्म देता है उन्हें	जो	वह नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (1) तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। (2) और जब नबी (स) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी स) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा बीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस बीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमाया: मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। (3) (ऐ बीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यक़ीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) की (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो बेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अ़लावा मददगार हैं। (4) अगर वह तुम्हें तलाक़ देदें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियां बदल दे तुम से बेहतर इताअ़त गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांबरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। (5) ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त ख़ू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअ़य्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक्म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (6)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ط اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا

इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो	आज	तुम उज़्र न करो	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	ऐ

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ط ع ٧ ١٩

ख़ालिस	तौबा	अल्लाह के आगे	तुम तौबा करो	ईमान वालो	ऐ	7	तुम करते थे

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

जारी हैं	बाग़ात	और वह दाख़िल करेगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां (गुनाह)	तुम से	कि वह दूर कर देगा	तुम्हारा रब	उम्मीद है

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لا يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ج

उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए	नबी (स)	रुस्वा न करेगा अल्लाह	उस दिन	नहरें	उन के नीचे

نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

पूरा कर दे हमारे लिए	ऐ हमारे रब	वह कहते (दुआ करते) होंगे	और उन के दाहिने	उन के सामने	दौड़ता होगा	उन का नूर

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ج اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ

जिहाद कीजिए	ऐ नबी (स)	8	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक तू	और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमादे	हमारा नूर

الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ

और बुरी	जहन्नम	और उन का ठिकाना	उन पर	और सख़्ती कीजिए	और मुनाफ़िक़ों	काफ़िरों

الْمَصِيْرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ

नूह (अ) की बीवी	काफ़िरों के लिए	मिसाल	बयान की अल्लाह ने	9	जगह

وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ط كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ

दो सालेह	हमारे बन्दे	से	दो बन्दे	मातहत	दोनों थें	और लूत (अ) की बीवी

فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ

तुम दोनों दाख़िल हो जाओ जहन्नम	और कहा गया	कुछ	अल्लाह से-आगे	उन के	तो उन दोनों के काम न आया	सो उन्हों ने उन दोनों से ख़ियानत की

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿١٠﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ م وقف لازم

फ़िरऔन की बीवी	मोमिनों के लिए	मिसाल	और बयान की अल्लाह ने	10	दाख़िल होने वाले	साथ

اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ

से	और मुझे बचा ले	जन्नत में	एक घर	अपने पास	मेरे लिए बना दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	जब

فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾ لا وَمَرْيَمَ

और मरयम	11	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचा ले	और उस का अ़मल	फ़िरऔन

ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

अपनी रूह से	उस में	सो हम ने फूंकी	अपनी शर्मगाह	हिफ़ाज़त की	वह जिस ने	इमरान की बेटी

وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾ع ع ٢/٥ ٢٠

12	फ़रमांबरदारी करने वालियां	से	और वह थी	और उस की किताबों	अपना रब	बातों की	और उस ने तसदीक़ की

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो ख़ालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगे: ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (8)

ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर सख़्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9)

बयान की अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह (अ) की बीवी और लूत (अ) की बीवी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्हों ने अपने शौहरों से ख़ियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (10)

और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल पेश की, जब उस (बीवी) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िरऔन और उस के अ़मल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचा ले। (11)

और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफ़ाज़त की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रुह फूंकी, और उस ने तसदीक़ की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमांबरदारी करने वालियों में से थी। (12)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُلْكِ (٦٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 30 — (67) सूरतुल मुल्क — बादशाही — रुकुआ़त 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ

हर शै	पर	और वह	बादशाही	उस के हाथ में	वह जिस	बड़ी बरकत वाला

قَدِيْرُ ۙ ① الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ

सब से बेहतर	तुम में से कौन	ताकि वह आज़माए तुम्हें	और ज़िन्दगी	मौत	पैदा किया	वह जिस	1	क़ुदरत रखने वाला

عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ② الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ

एक के ऊपर एक	सात आस्मान	जिस ने बनाए	2	बख़्शने वाला	ग़ालिब	और वह	अ़मल में

مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ

निगाह	फिर लौटा	कोई फ़र्क़	रहमान (अल्लाह)	बनाना (तख़्लीक़)	में	तू न देखेगा

هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ

तेरी तरफ़	वह लौट आएगी	दोबारा	निगाह	तू दोबारा लौटा	फिर	3	कोई शिगाफ़	क्या तू देखता है?

الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

आस्माने दुनिया	और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया	4	थकी मान्दा	और वह	ख़्वार हो कर	निगाह

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

उन के लिए	और हम ने तैयार किया	शैतानों के लिए	मारने का औज़ार	और हम ने उसे बनाया	चिराग़ों से

عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ

जहन्नम का अ़ज़ाब	उन के रब की तरफ़ से	जिन्हों ने कुफ़्र किया	और उन लोगों के लिए	5	दहकती आग (जहन्नम) का अ़ज़ाब

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ

और वह	चीख़ना चिल्लाना	उस का	वह सुनेंगे	उस में	जब वह डाले जाएंगे	6	लौटने की जगह	और बुरी

تَفُوْرُ ۙ ⑦ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِىَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ

वह उन से पूछेंगे	कोई गिरोह	डाला जाएगा उस में	जब भी	ग़ज़ब से	क़रीब है कि फट पड़े	7	जोश मार रही होगी

خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ⑧ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

सो हम ने झुटलाया	डराने वाला	ज़रूर आया हमारे पास	हाँ	वह कहेंगे	8	कोई डराने वाला	क्या नहीं आया तुम्हारे पास	उस के दारोग़ा

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَىْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨

9	बड़ी	गुमराही में	मगर (सिर्फ़)	नहीं तुम	कुछ	नहीं नाज़िल की अल्लाह ने	और हम ने कहा

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِىْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩

10	दोज़ख़ियों	में	हम न होते	या हम समझते	हम सुनते	अगर	और वह कहेंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला। (1) वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन है अ़मल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2) जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़्लीक़ में कोई फ़र्क़ न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3) फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ ख़्वार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4) और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिराग़ों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब तैयार किया है। (5) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के रब की तरफ़ से जहन्नम का अ़ज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6) जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीख़ना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7) क़रीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उस के दारोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8) वह कहेंगेः हां (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9) और वह कहेंगेः अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़ख़ियों में न होते। (10)

सो उन्हों ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़ख़ियों के लिए। (11) बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12) और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह बेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13) क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह बारीक बीन बड़ा बाख़बर है। (14) वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्ख़र ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15) क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16) क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की बारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17) और ज़रूर उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब! (18) क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, बेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19) भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में हैं। (20) भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर वह अपना रिज़्क़ रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए हैं। (21) पस जो शख़्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़्ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	11	दोज़ख़ियों के लिए	तो दूरी (लानत)	अपने गुनाहों का	सो उन्हों ने एतिराफ़ कर लिया

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

और तुम छुपाओ	12	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ

क्या नहीं जानेगा	13	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला	बेशक वह	उस को	या बुलन्द आवाज़ से कहो	अपनी बात

مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ۧ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ ع ١٤

तुम्हारे लिए	वह जिस ने किया	वही	14	बड़ा बाख़बर	बारीक बीन	और वह	जिस ने पैदा किया

الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	उस के रिज़्क़ से	सो तुम खाओ	उस के रास्तों में	ताकि तुम चलो	मुसख़्ख़र	ज़मीन

النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ

तुम्हें	कि वह धंसा दे	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	15	जी उठ कर जाना

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ۙ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاۗءِ اَنْ

कि	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	16	वह जुम्बिश करे	तो नागहां	ज़मीन

يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۭ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

और पक्का झुटलाया	17	मेरा डराना	कैसा	सो तुम जल्द जान लोगे	पत्थरों की बारिश	तुम पर	वह भेजे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا

क्या नहीं देखा उन्हों ने	18	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	इन से क़ब्ल	से	वह लोग जो

اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰۗفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ڼ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۭ وقف لازم وقف غفران وقف منزل

रहमान (अल्लाह)	सिवा	नहीं थाम सकता उन्हें	और सुकेड़ते	पर फैलाते	अपने ऊपर	परिन्दों को

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ

तुम्हारा	लशकर	वह	जो	भला कौन है वह?	19	देखने वाला	हर शै को	बेशक वह

يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۭ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ۚ

20	धोके में	मगर	काफ़िर (जमा)	नहीं	अल्लाह के सिवा	से	वह मदद करे तुम्हारी

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

बल्कि जमे हुए	अपना रिज़्क़	वह रोक ले	अगर	वह जो रिज़्क़ दे तुम्हें	भला कौन है

فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰي وَجْهِهٖٓ

अपने मुँह के बल	गिरता हुआ	वह चलता है	पस क्या जो	21	और भागते हैं	सरकशी

اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22	सीधा रास्ता	पर	बराबर (सीधा)	चलता है	या वह जो	ज़ियादा हिदायत याफ़्ता

قُلْ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

फ़रमा दें वही	वह जिस ने पैदा किया तुम्हें	और उस ने बनाए	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ

और दिल (जमा)	बहुत कम	जो तुम शुक्र करते हो	23	फ़रमा दें	वही	वह जिस ने फैलाया तुम्हें

فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

ज़मीन में	और उसी की तरफ़	तुम उठाए जाओगे	24	और वह कहते हैं	कब	यह वादा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ اَنَا

अगर	तुम हो	सच्चे	25	फ़रमा दें	इस के सिवा नहीं कि इल्म	अल्लाह के पास	और इस के सिवा नहीं	मैं

نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

डराने वाला	साफ़ साफ़	26	फिर जब	वह उसे देखेंगे	नज़्दीक आता	बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

और कहा जाएगा	यह	वह जो	तुम थे	उस को	तुम मांगते	27	फ़रमा दें	किया तुम ने देखा

اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

अगर	मुझे हलाक कर दे अल्लाह	और जो	मेरे साथ	या वह रहम फ़रमाए हम पर	तो कौन	पनाह देगा	काफ़िरों

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ

से	दर्दनाक अज़ाब	28	फ़रमा दें	वही रहमान	हम ईमान लाए	उस पर	और उसी पर

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ

हम ने भरोसा किया	सो तुम जल्द जान लोगे	कौन वह	में	खुली गुमराही	29	फ़रमा दें

ع ١٦ ٢ ٢ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ع

क्या तुम ने देखा (भला देखो)	अगर हो जाए	तुम्हारा पानी	नीचे उतरा हुआ	तो कौन	ले आएगा तुम्हारे पास	रवां पानी	30

آياتها ٥٢ ❀ (٦٨) سُوْرَةُ الْقَلَمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 52 (68) सूरतुल क़लम रुकुआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून क़सम है क़लम की	और जो	वह लिखते हैं	1	नहीं आप (स)	नेमत (फ़ज़्ल) से	अपना रब

بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى

मजनून	2	और बेशक आप के लिए	अलबत्ता अजर	ख़तम न होने वाला	3	और बेशक आप (स)	यक़ीनन-पर

خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

अख़्लाक़ का ऊंचा मुक़ाम	4	आप (स) जल्द देख लेंगे	और वह भी देख लेंगे	5	तुम में से कौन?	दीवाना	6

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24)

और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा?) अगर तुम सच्चे हो। (25)

आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)

फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे। (27)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ हैं या हम पर रहम फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28)

आप (स) फ़रमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)

आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (ख़ुश्क) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

नून। क़सम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)

आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हैं। (2)

और बेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)

और बेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊंचे मुक़ाम पर हैं। (4)

पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5)

(कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ

और वह खूब जानता है	उस की राह से	वह गुमराह हुआ	उस को जो	वह खूब जानता है	बेशक आप (स) का रब

بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ

काश आप नर्मी करें	वह चाहते हैं	8	झुटलाने वालों	पस आप (स) कहा न मानें	7	हिदायत याफ़्ता लोगों को

فَيُدْهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ

फिरने वाला	ऐब निकालने वाला	10	बे वक़्अत	बात बात पर क़समें खाने वाला	और आप (स) कहा न मानें	9	तो वह भी नर्मी करें

بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

13	उस के बाद बद असल	सख़्त खू	12	गुनाहगार	हद से बढ़ने वाला	माल में	रोकने (बुख़्ल करने) वाला	11	चुग़ली लिए

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ

वह कहता है	हमारी आयतें	पढ़ कर सुनाई जाती हैं उसे	जब	14	और औलाद वाला	माल वाला	इस लिए कि वह है

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾ إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا

जैसे	बेशक हम ने आज़माया उन्हें	16	सून्ड (नाक) पर	हम जल्द दाग़ देंगे उस को	15	अगले लोग	कहानियां

بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

17	सुबह होते	हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल	जब उन्हों ने क़सम खाई	बाग़ वालों को	हम ने आज़माया

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

19	सोए हुए थे	और वह	तेरे रब की तरफ़ से	एक फिरने वाला (अज़ाब)	उस पर	पस फिर गया	18	और उन्हों ने इन्शा अल्लाह न कहा

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ

पर	सुबह सवेरे चलो	21	सुबह होते	तो एक दूसरे को पुकारने लगे	20	जैसे कटा हुआ खेत	तो वह सुबह को रह गया

حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾

23	आपस में चुपके चुपके कहते थे	और वह	फिर वह चले	22	काटने वाले	अगर तुम हो	अपने खेत

أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ

बख़ीली पर	और वह सुबह सवेरे चले	24	कोई मिस्कीन	तुम पर	आज	वहां दाख़िल न होने पाए	कि

قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

बल्कि हम	26	बेशक हम राह भूल गए हैं	वह बोले	उन्हों ने उसे देखा	फिर जब	25	वह क़ादिर हैं

مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

28	तुम तस्बीह क्यों नहीं करते	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	उन का सब से अच्छा	कहा	27	महरूम हो गए हैं

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

उन का बाज़ (एक)	पस अपनाया	29	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	हमारा रब	पाक है	वह बोले

عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾

31	सरकश (जमा)	बेशक हम थे	हाए हमारी ख़राबी	वह बोले	30	एक दूसरे को मलामत करते हुए	बाज़ (दूसरे) पर

बेशक आप (स) का रब उस को
खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस
की राह से और वह खूब जानता है
हिदायत याफ़्ता लोगों को। (7)
पस आप (स) झुटलाने वालों का
कहा न मानें। (8)
वह चाहते हैं कि काश आप (स)
नर्मी करें तो वह (भी) नर्मी करें। (9)
और आप (स) बेवक़्अत बात बात पर
क़समें खाने वाले का कहा न मानें। (10)
ऐब निकालने वाला चुग़लियां लगाते
फिरने वाला। (11)
माल में बुख़्ल करने वाला, हद से
बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)
सख़्त खू, उस के बाद बद असल। (13)
इस लिए कि वह माल वाला और
औलाद वाला है। (14)
जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर
सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह
अगले लोगों की कहानियां है। (15)
हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक
पर। (16)
बेशक हम ने उन्हें आज़माया जैसे हम
ने आज़माया था बाग़ वालों को, जब
उन्हों ने क़सम खाई कि हम सुबह होते
उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)
और उन्हों ने "इन्शा अल्लाह" न
कहा। (18)
पस उस (बाग़) पर तेरे रब की
तरफ़ से एक अज़ाब फिर गया और
वह सोए हुए थे। (19)
तो वह (बाग़) सुबह को रह गया
जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)
तो वह सुबह होते एक दूसरे को
पुकारने लगे। (21)
कि सुबह सवेरे अपने खेत पर चलो
अगर तुम काटने वाले हो (अगर
तुम्हें खेती काटनी है)। (22)
फिर वह चले और वह आपस में
चुपके चुपके कहते थे। (23)
कि आज वहां तुम पर कोई
मिस्कीन दाख़िल न होने पाए। (24)
और वह सुबह सवेरे चले (इस
ज़अ़म के साथ) कि वह बख़ीली पर
क़ादिर हैं। (25)
फिर जब उन्हों ने उसे देखा तो वह बोले
कि बेशक हम राह भूल गए हैं। (26)
बल्कि हम महरूम (बद नसीब)
हो गए हैं। (27)
कहा उन के बेहतरीन आदमी ने:
क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि
तुम तस्बीह क्यों नहीं करते? (28)
वह बोले: पाक है हमारा रब,
बेशक हम ज़ालिम थे। (29)
पस एक दूसरे को अपनाया बाज़
पर बाज़ मलामत करते हुए। (30)
वह बोले हाए हमारी ख़राबी!
बेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ٣٢

32	राग़िब (रुजूअ़ करने वाले)	अपने रब की तरफ़	बेशक हम	इस से	बेहतर	हमें बदले में दे	कि	हमारा रब	उम्मीद है

وقف لازم

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ

काश!	सब से बड़ा	अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब	यूँ होता है

ع ٣/٣ ٣

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٣٣ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ٣٤

34	नेमतों के बाग़ात	उन के रब के पास	परहेज़गारों के लिए	बेशक	33	वह जानते होते

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ٣٥ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ٣٦

36	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	क्या हुआ तुम्हें	35	मुजरिमों की तरह	मुसलमानों	तो क्या हम करदेंगे

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ٣٧ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ٣٨

38	अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो	उस में	तुम्हारे लिए	बेशक	37	तुम पढ़ते हो	उस में	कोई किताब	क्या तुम्हारे पास

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक	क़ियामत के दिन	तक	पहुँचने वाला	हम पर (हमारे ज़िम्मे)	कोई पुख़्ता अ़हद	क्या तुम्हारे लिए

منــع ١٥ عدد المتقدمين ١٢

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ٣٩ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ٤٠ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ

शरीक (जमा)	या उन के	40	ज़ामिन (ज़िम्मेदार)	इस का	उन में से कौन	तू उन से पूछ	39	तुम फ़ैसला करते हो	अलबत्ता जो

فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ٤١ يَوْمَ يُكْشَفُ

खोल दिया जाएगा	जिस दिन	41	सच्चे	वह हैं	अगर	अपने शरीकों	तो चाहिए कि वह लाएं

عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ٤٢

42	तो वह न कर सकेंगे	सिज्दों के लिए	और वह बुलाए जाएंगे	पिंडली	से

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ

बुलाए जाते थे	और तहक़ीक़	ज़िल्लत	उन पर छाई हुई	उन की आँखें	झुकी हुई

اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ٤٣ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ

और वह जो झुटलाता है	पस मुझे छोड़ दो तुम	43	सही सालिम (जमा)	जब कि वह	सिज्दे के लिए

بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ٤٤ وَاُمْلِيْ

और मैं ढील देता हूँ	44	वह जानते न होंगे	इस तरह	जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे	इस बात को

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ٤٥ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ

तावान	से	कि वह	कोई अजर	क्या आप (स) मांगते हैं उन से	45	बड़ी क़वी	मेरी ख़ुफ़िया तदबीर	बेशक	उन को

مُّثْقَلُوْنَ ٤٦ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ٤٧ فَاصْبِرْ

पस आप (स) सब्र करें	47	लिख लेते हैं	कि वह	इल्मे ग़ैब	उन के पास	या	46	बोझल (दबे जाते) हैं

وقف لازم

لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ٤٨

48	ग़म से भरा हुआ	और वह	जब उस ने पुकारा	मछली वाले (यूनुस अ) की तरह	और न हों आप (स)	अपना रब	हुक्म के लिए

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस से बेहतर बदले में दे, बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले हैं। (32)
यूँ होता है अ़ज़ाब! और आख़िरत का अ़ज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा है। काश! वह जानते होते। (33)
बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के हां नेमतों के बाग़ात हैं। (34)
तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को मुजरिमों की तरह (महरूम)? (35)
तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (36)
क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37)
कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम पसंद करते हो। (38)
क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई पुख़्ता अ़हद है क़ियामत के दिन तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम फ़ैसला करो। (39)
तू उन से पूछ कि उन में से कौन इस का ज़ामिन है? (40)
या उन के शरीक हैं (जिन्हों ने इस का ज़िम्मा लिया है)? तो चाहिए कि वह अपने शरीकों को लाएं अगर वह सच्चे हैं। (41)
जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा और वह सिज्दों के लिए बुलाए जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और इस से क़ब्ल वह सिज्दों के लिए बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)
पस जो इस बात को झुटलाता है तुम उस को मुझ पर छोड़ दो। हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न होंगे। (44)
और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बड़ी क़वी है। (45)
क्या आप (स) उन से कोई अजर मांगते हैं? कि वह (उस) तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (46)
या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (47)
पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें और आप (स) यूनुस (अ) की तरह न हो जाएं, जब उस ने (अल्लाह तआ़ला को) पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

49	मलामत ज़दा (अब्तर हाल)	और वह	अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में	उस के रब का	नेमत	अगर न उस को पाया (संभाला) होता

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ

और तहक़ीक़ क़रीब है	50	नेकोकारों से	पस उस को कर लिया	उस का रब	पस उस को बरगुज़ीदा किया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	(किताब) नसीहत	वह सुनते हैं	जब	अपनी निगाहों से	कि वह आप (स) को फुसला देंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	हालांकि यह नहीं	51	दीवाना अलबत्ता	बेशक यह

وقف لازم　ع ١٩ الربع

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 　 (69) सूरतुल हाक़्क़ा — ज़रूर होने वाली (क़ियामत) 　 आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

3	क्या है क़ियामत?	तुम समझे	और क्या	2	क्या है क़ियामत?	1	सचमुच होने वाली (क़ियामत)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا

वह हलाक किए गए	समूद	पस जो	4	खड़खड़ाने वाली को	और आद	समूद	झुटलाया

بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

6	हद से ज़ियादा बढ़ी हुई	तुन्द ओ तेज़	हवा से	तो वह हलाक किए गए	आद	और जो	5	बड़ी ज़ोर की आवाज़ से

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا

लगातार	दिन	और आठ	सात रात	उन पर	उस ने उस को मुसख़्ख़र किया

فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

7	खोखले	खजूर	तने	गोया वह	उस में गिरी हुई	फिर तू देखता उस क़ौम को

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

और उस के पहले लोग	फ़िरऔन	और आया	8	कोई बक़िया	उन का	तो क्या तू देखता है

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ

अपने रब के रसूल की	सो उन्हों ने नाफ़रमानी की	9	ख़ताओं के साथ	और उलटी हुई बस्तियों वाले

فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें सवार किया	पानी	तुग़्यानी पर आया	बेशक जब	10	सख़्त	गिरिफ़्त	तो उन्हें पकड़ा

فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

12	याद रखने वाला	कान	और उसे याद रखे	यादगार	तुम्हारे लिए	ताकि हम उस को बनाएं	11	कश्ती में

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49)
पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50)
और तहक़ीक़ क़रीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51)
हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ़ और सिर्फ़) नसीहत। (52)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
सचमुच होने वाली क़ियामत! (1)
क्या है क़ियामत? (2)
और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3)
समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4)
पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5)
और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6)
उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस क़ौम को उस में (यूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने हैं। (7)
तो क्या तू उन का कोई बक़िया देखता है? (8)
और फ़िरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई बस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9)
सो उन्हों ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10)
बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11)
ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	और उठाई जाएगी	13	यकबारगी	फूंक	सूर में	पस जब फूंकी जाएगी

وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

15	वह होने वाली	हो पड़ेगी	पस उस दिन	14	यकबारगी	रेज़ा रेज़ा	पस रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे	और पहाड़

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا

उस के किनारों	पर	और फ़रिश्ते	16	बिलकुल कमज़ोर	उस दिन	पस वह	आस्मान	और फट जाएगा

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

जिस दिन	17	आठ	उस दिन	अपने ऊपर	तुम्हारे रब का अर्श	और वह उठाएंगे

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ

दिया गया	पस जिस को	18	(कोई चीज़) पोशीदा	तुम से (तुम्हारी)	न पोशीदा रहेगी	तुम पेश किए जाओगे

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّىْ ظَنَنْتُ

मैं बेशक समझता था	19	मेरा आमाल नामा	लो पढ़ो	तो वह कहेगा	उस के दाएं हाथ में	उस की किताब (आमाल नामा)

اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

21	पसंदीदा ज़िन्दगी	में	पस वह	20	अपने हिसाब से	कि मैं मिलूँगा

فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

और तुम पियो	तुम खाओ	23	क़रीब	जिस के मेवे	22	बहिश्ते बरीं	में

هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो- जिस	और रहा	24	गुज़रे हुए अय्याम	में	उस के बदले जो तुम ने भेजा	मज़े से

اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾

25	मेरा आमाल नामा	मुझे न दिया जाता	ऐ काश	तो वह कहेगा	उस के बाएं हाथ में	उस का आमाल नामा दिया गया

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

27	क़िस्सा चुका देने वाली	(मौत) होती	ऐ काश	26	क्या है मेरा हिसाब	और मैं न जानता

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ

तुम उस को पकड़ो	29	मेरी बादशाही	मुझ से	जाती रही	28	मेरा माल	मेरे	काम न आया

فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا

जिस की पैमाइश	एक ज़न्जीर में	फिर	31	उसे डाल दो	जहन्नम	फिर	30	पस उसे तौक़ पहनाओ

سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ

ईमान नहीं लाता था	बेशक वह	32	पस तुम उस को जकड़ दो	हाथ	सत्तर (70)

بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾

34	मोहताज	खिलाना	पर	और वह रग़बत न दिलाता था	33	बुज़ुर्ग ओ बरतर	अल्लाह पर

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकबारगी फूंक। (13)
और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकबारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14)
पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15)
और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन बिलकुल कमज़ोर होगा। (16)
और फ़रिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अर्श उठाए हुए होंगे। (17)
जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18)
पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगाः लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19)
बेशक मैं यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूँगा। (20)
पस वह पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21)
आली मुक़ाम जन्नत में, (22)
जिस के मेवे क़रीब (झुके हुए) हैं। (23)
तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24)
और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25)
और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26)
ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27)
मेरा माल मेरे काम न आया। (28)
मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29)
(फ़रिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक़ पहनाओ, (30)
फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31)
फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32)
बेशक वह अल्लाह बुज़ुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33)
और वह (दूसरों को भी) रग़बत न दिलाता था मिस्कीन को खिलाने की। (34)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ

से	मगर-सिवा	और न खाना	35	कोई दोस्त	यहां	आज	पस नहीं उस का

غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخٰطِئُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ ع ٣٧ ٥

पस मैं क़सम खाता हूँ	37	ख़ताकारों	सिवा	उसे न खाएगा	36	पीप

بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ

अलबत्ता कलाम	बेशक यह	39	तुम नहीं देखते	और जो	38	उस की जो तुम देखते हो

رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम ईमान लाते हो	बहुत कम	किसी शायर का कलाम	और यह नहीं	40	रसूले करीम

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ

से	उतारा हुआ	42	तुम नसीहत पकड़ते हो	बहुत कम	किसी काहिन का	और न क़ौल है

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

44	बातें (अक़्वाल)	कुछ	हम पर	बना कर लाता	और अगर	43	तमाम जहानों का रब

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا

सो नहीं	46	रगे (गर्दन)	उस की	हम अलबत्ता काट देते	फिर	45	दायां हाथ	उस का	तो यक़ीनन हम पकड़ लेते

مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता एक नसीहत	और बेशक यह	47	रोकने वाला	उस से	कोई भी	तुम में से

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

50	काफ़िरों पर	हस्रत	और बेशक यह	49	झुटलाने वाले	तुम में से	कि	अलबत्ता जानते हैं	और बेशक हम

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ٢ ع ١٥ ٦

52	अज़मत वाला	अपना रब	नाम के साथ	पस पाकीज़गी बयान करो	51	यक़ीनी हक़	और बेशक यह

آيَاتُهَا ٤٤ ❀ سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ (٧٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (70) सूरतुल मआ़रिज, ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ — आयात 44

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ

नहीं उसे	काफ़िरों के लिए	1	अ़ज़ाब वाक़े होने वाला	एक मांगने वाला	मांगा

دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़रिश्ते	चढ़ते हैं	3	सीढ़ियों (दरजात) का मालिक	अल्लाह की तरफ़ से	2	कोई दफ़ा करने वाला

وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

4	साल	पचास हज़ार (50000)	जिस की मिक़्दार	एक दिन में	उस की तरफ़	और रूहुल अमीन

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35) और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36) उसे ख़ताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37) पस मैं उस की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38) और जो तुम नहीं देखते। (39) बेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41) और न क़ौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42) तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (43) और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44) तो यक़ीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45) फिर अलबत्ता हम उस की रगे गर्दन काट देते। (46) सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47) और बेशक यह (कुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48) और बेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49) और बेशक यह हस्रत है काफ़िरों पर। (50) और बेशक यह यक़ीनी हक़ है। (51) पस पाकीज़गी बयान करो अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

एक मांगने वाले (मुन्किरे अ़ज़ाब ने) अ़ज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1) काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं, (2) दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3) उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार बरस की है। (4)

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَّنَرٰىهُ

और हम उसे देखते हैं	6	दूर	उसे देख रहे हैं	बेशक वह	5	सब्रे जमील	पस आप (स) सब्र करें

قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	8	पिघले हुए तांबे की तरह	आस्मान	जिस दिन होगा	7	क़रीब

كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ

ख़्वाहिश करेगा	वह देख रहे होंगे उन्हें	10	किसी दोस्त	कोई दोस्त	और न पूछेगा	9	जैसे रंगीन ऊन

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾

11	अपने बेटों को	उस दिन	अ़ज़ाब से	काश वह फ़िदये में देदे	मुज्रिम

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾ وَمَنْ

और जो	13	उस को जगह देता था	वह जो	और अपने कुंबे को	12	और अपने भाई को	और अपनी बीवी को

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾ كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً

उधेड़ने वाली	15	भड़कती हुई आग	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	14	यह उसे बचाले	फिर	सब को	ज़मीन में

لِّلشَّوٰى ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾

18	फिर उसे बन्द रखा	और (माल) जमा किया	17	और मुँह फेर लिया	पीठ फेरी	जिस ने	वह बुलाती है	16	खाल को

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ﴿١٩﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢٠﴾ وَّاِذَا

और जब	20	घबरा उठने वाला	उसे बुराई पहुँचे	जब	19	पैदा किया गया बड़ा बेसब्रा	बेशक इन्सान

مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢١﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٢﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़	पर	वह	वह जो	22	नमाज़ियों	सिवाए	21	बुख़्ल करने वाला	उसे आसाइश पहुँचे

دَآئِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِيْنَ فِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٤﴾

24	मालूम (मुक़र्रर)	हक़	उन के मालों में	और वह जो	23	हमेशा (पाबन्दी) करते हैं

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾

26	रोज़े जज़ा को	सच मानते हैं	और वह जो	25	और महरूम (न मांगने वाले)	मांगने वालो के लिए

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ

उन के रब का अ़ज़ाब	बेशक	27	डरने वाले	अपने रब के अ़ज़ाब से	वह	और वह जो

غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और वह जो	28	बे ख़ौफ़ होने की बात नहीं

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٣٠﴾

30	कोई मलामत नहीं	पस वह बेशक	उन के दाएं हाथ की मिल्क (बान्दीयां)	जो	या	अपनी बीवीयों से	सिवाए

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿٣١﴾

31	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही लोग	उस के सिवा	फिर जो चाहे

पस आप (स) (उन बातों पर) सब्र करें सब्रे जमील। (5)
बेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6)
और हम उसे क़रीब देखते हैं। (7)
जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8)
और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9)
और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10)
हालांकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुज्रिम (गुनाहगार) ख़्वाहिश करेगा कि काश वह फ़िदये में देदे उस दिन के अ़ज़ाब (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11)
अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12)
और अपने कुंबे को जो उस को जगह देता था। (13)
और जो ज़मीन में हैं सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14)
हरगिज़ नहीं, बेशक यह भड़कती हुई आग है। (15)
खाल उधेड़ने वाली। (16)
वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17)
और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18)
बेशक इन्सान बड़ा बेसब्र (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19)
जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20)
और उसे आसाइश पहुँचे तो बुख़्ल करने वाला है। (21)
उन नमाज़ियों के सिवा। (22)
जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23)
और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक़) मुक़र्रर है। (24)
मांगने वालों और महरूम के लिए। (25)
और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26)
और वह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरने वाले हैं। (27)
बेशक उन के रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, (29)
सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस बेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30)
फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (32)
और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रहने वाले हैं। (33)
और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (34)
यही लोग (बहिश्त के) बाग़ात में मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़ होंगे। (35)
तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। (36)
दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। (37)
क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (बहिश्त की) नेमतों वाले बाग़ात में दाख़िल किया जाएगा। (38)
हरगिज़ नहीं, बेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह ख़ुद जानते हैं। (39)
पस नहीं, मैं मशरिक़ों और मग़रिबों के रब की क़सम खाता हूँ। बेशक हम अलबत्ता क़ादिर हैं। (40)
इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। (41)
पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। (42)
जिस दिन वह क़ब्रों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। (43)
झुकी होंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। (44)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि डराओ अपनी क़ौम को उस से क़ब्ल कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आजाए। (1)
उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (2)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْنَ

और वह जो	32	रिआयत (हिफ़ाज़त) करने वाले	और अपने अ़हद	अपनी अमानतों	वह	और वह जो

هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों की	वह	और वह जो	33	क़ाइम रहने वाले	वह अपनी गवाहियों पर

يُحَافِظُوْنَ ﴿٣٤﴾ اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ ع ٣٥ ٧

तो क्या हुआ	35	मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़	बाग़ात में	यही लोग	34	हिफ़ाज़त करने वाले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

और बाएं से	दाएं से	36	दौड़ते आरहे हैं	आप (स) की तरफ़	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

बाग़	कि वह दाख़िल किया जाएगा	उन में से	हर कोई	क्या तमअ़ (लालच) रखता है	37	गिरोह दर गिरोह

نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَلَآ اُقْسِمُ

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	39	वह जानते हैं	उस से जो	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हरगिज़ नहीं	38	नेमतों वाला

بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ

कि हम बदल दें	पर	40	अलबत्ता क़ादिर हैं	बेशक हम	और मग़रिबों	मशरिक़ों के रब की

خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا

बेहूदगियों में पड़े रहें	पस उन्हें छोड़ दें	41	आ़जिज़ किए जाने वाले	और नहीं हम	उन से	बेहतर

وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ

जिस दिन वह निकलेंगे	42	उन से वादा किया जाता है	वह जिस का	अपने दिन से	यहां तक कि वह मिलें	और वह खेलें

مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً

झुकी हुई	43	लपक रहे हों	निशाने की तरफ़	गोया कि वह	जल्दी जल्दी	क़ब्रों से

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٢ ٩ ٨

44	उन से वादा किया जा रहा है	वह जिस का	यह है वह दिन	ज़िल्लत	उन पर छा रही होगी	उन की आँखें

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ سُوْرَةُ نُوْحٍ (٧١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2 (71) सूरह नूह आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	अपनी क़ौम को	कि डराओ	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	बेशक हम ने भेजा

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

2	साफ़ साफ़ डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	1	दर्दनाक अ़ज़ाब	कि उन पर आए

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	वह बख़्शदेगा	3	और मेरी इताअ़त करो	और उस से डरो	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ

अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त	बेशक	वक़्ते मुक़र्ररा	तक	और तुम्हें मोहलत देगा	तुम्हारे गुनाह

اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ

وقف لازم

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	4	तुम जानते	काश	वह टलेगा नहीं	जब आजाएगा

اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىْٓ

मेरा बुलाना	तो उन में ज़ियादा न किया	5	और दिन	रात	अपनी क़ौम को	बेशक मैं ने बुलाया

اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

अपनी उंगलियां	उन्हों ने दे लीं	उन्हें	ताकि तू बख़्शदे	मैं ने उन को बुलाया	जब भी	और बेशक मैं	6	भागने के सिवा

فِىْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

और उन्हों ने तकब्बुर किया	और अड़ गए वह	उपने कपड़े	और उन्हों ने लपेट लिए	अपने कानों में

اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّىْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّىْٓ اَعْلَنْتُ

बेशक मैं ने अ़लानिया समझाया	फिर	8	बाआवाज़े बुलन्द	बेशक मैं ने बुलाया उन्हें	फिर	7	बड़ा तकब्बुर

لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۭ

अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	पस मैं ने कहा	9	छुपा कर	उन्हें	और मैं ने पोशीदा समझाया	उन्हें

اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾

11	मुसलसल बारिश	तुम पर	आस्मान	वह भेजेगा	10	है बड़ा बख़्शने वाला	बेशक वह

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा	और बेटों	मालों के साथ	और मदद देगा तुम्हें

وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

13	वक़ार	तुम एतिक़ाद नहीं रखते अल्लाह के लिए	क्या हुआ तुम्हें	12	नहरें	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ

अल्लाह ने पैदा किए	कैसे	क्या तुम नहीं देखते	14	तरह तरह	उस ने पैदा किया तुम्हें

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا

एक नूर	उन में	चाँद	और उस ने बनाया	15	एक के ऊपर एक	सात आस्मान

وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उस ने उगाया तुम्हें	और अल्लाह	16	चिराग़	सूरज	और उस ने बनाया

نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

18	निकालना (दोबारा)	और फिर तुम्हें निकालेगा	उस में	वह लौटाएगा तुम्हें	फिर	17	सब्ज़े की तरह

कि तुम अल्लाह की इबादत करो
और उस से डरो और मेरी इताअ़त
करो, (3)
वह बख़्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह
और (मौत के) वक़्ते मुक़र्ररा तक
तुम्हें मोहलत देगा। बेशक अल्लाह
का मुक़र्रर कर्दा वक़्त जब
आजाएगा तो वह टलेगा नहीं,
काश तुम जानते। (4)
उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक
मैं ने बुलाया अपनी क़ौम को रात
और दिन। (5)
तो उन में ज़ियादा न किया मेरा
बुलाना सिवाए भागने के। (6)
और बेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया
ताकि तू उन्हें बख़्शदे, उन्हों ने
अपनी उंगलियां अपने कानो में दे लीं
और उन्हों ने अपने ऊपर कपड़े
लपेट लिए और वह अड़ गए और
उन्हों ने बड़ा तकब्बुर किया। (7)
फिर बेशक मैं ने उन्हें बा आवाज़े
बुलन्द बुलाया। (8)
फिर बेशक मैं ने उन्हें अ़लानिया
(भी) समझाया और उन्हें छुपा कर
पोशीदा (भी) समझाया। (9)
पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब
से बख़्शिश मांगो, बेशक वह बड़ा
बख़्शने वाला है। (10)
वह आस्मान से तुम पर मुसलसल
बारिश भेजेगा। (11)
और तुम्हें मालों और बेटों से मदद
देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए
बाग़ात और वह बनाएगा तुम्हारे
लिए नहरें। (12)
तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह
के लिए वक़ार (अ़ज़मत) का
एतिक़ाद नहीं रखते? (13)
और यक़ीनन उस ने पैदा किया
तुम्हें तरह तरह से। (14)
क्या तुम नहीं देखते कि कैसे
अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले
बनाए? (15)
और उस ने उन में चाँद को एक
नूर बनाया और उस ने सूरज
को चिराग़ (के मानिंद रोशन)
बनाया। (16)
और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्ज़े
की तरह उगाया (पैदा किया)। (17)
फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा
और तुम्हें दोबारा (उस से)
निकालेगा। (18)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19) ताकि तुम चलो फिरो उस के कुशादा रास्तों में। (20) नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने मेरी नाफ़रमानी की और (उस की) पैरवी की जिस को उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया और न उस की औलाद ने ख़सारे के सिवा। (21) और उन्हों ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। (22) और उन्हों ने कहा कि तुम हरगिज़ न छोड़ना अपने माबूदाने (बातिल) को और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और न सुवाअ़ और न यग़ूस और यऊक़ और नस्र (बुतों) को। (23) और उन्हों ने गुमराह किया बहुतों को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा कर गुमराही के सिवा। (24) अपनी ख़ताओं के सबब वह ग़र्क़ किए गए, फिर वह आग में दाख़िल किए गए तो उन्हों ने अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाया कोई मददगार। (25) और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला। (26) बेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और न जनेंगे बदकार नाशुक्र (औलाद) के सिवा। (27) ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे माँ बाप को और उसे जो दाख़िल हुआ मेरे घर में ईमान ला कर, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को, और ज़ालिमों को हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की गई है कि जिन्नात की एक जमाअ़त ने उसे (कुरआन को) सुना तो उन्हों ने कहा कि बेशक हम ने एक अ़जीब कुरआन सुना है। (1)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا

और अल्लाह	उस ने बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन	फ़र्श	19	ताकि तुम चलो	उस के	रास्ते

فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ ع ٢٠ ٩

कुशादा	20	कहा	नूह (अ)	ऐ मेरे रब	बेशक उन्हों ने	मेरी नाफ़रमानी की	और उन्हों ने पैरवी की	जो-जिस

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ۚ ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۚ ﴿٢٢﴾

नहीं ज़ियादा किया	उस का माल	और उस की औलाद	सिवा ख़सारा	21	और उन्हों ने चालें चलीं	चालें	बड़ी बड़ी	22

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ

और उन्हों ने कहा	तुम हरगिज़ न छोड़ना	अपने माबूद	और हरगिज़ न छोड़ना	वद	और न सुवाअ़

وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ۚ ﴿٢٣﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

और न यग़ूस	और यऊक़	और नस्र	23	और तहक़ीक़ उन्हों ने गुमराह किया	बहुत	और न ज़ियादा कर

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓــٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا

ज़ालिमों	गुमराही के सिवा	24	ब सबब	अपनी ख़ताएं	वह ग़र्क़ किए गए	फिर वह दाख़िल किए गए

نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ

आग	तो न	उन्हों ने पाया	अपने लिए	अल्लाह के सिवा	कोई मददगार	25	और कहा

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

नूह (अ)	ऐ मेरे रब	तू न छोड़	ज़मीन पर	काफ़िरों में से	कोई बसने वाला	26

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

बेशक तू	अगर	उन्हें छोड़ दिया	वह गुमराह करेंगे	तेरे बन्दे	और न जनेंगे	सिवाए	बदकार

كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

नाशुक्रे	27	ऐ मेरे रब	मुझे बख़्शदे	और मेरे माँ बाप को	और उसे जो	दाख़िल हुआ

بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

मेरे घर	ईमान ला कर	और मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों	और न बढ़ा	ज़ालिमों

اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾ النصف ع ٢ ٨ ١٠

हलाकत के सिवा	28

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ سُوْرَةُ الْجِنِّ (٧٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 28 (72) सूरतुल जिन्न रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ ﴿١﴾

आप कह दें कि मुझे वहि की गई	मेरी तरफ़	कि इसे सुना	एक जमाअ़त जिन्नात की	तो उन्हों ने कहा	बेशक हम ने सुना	कुरआन	एक अ़जीब	1

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾

2	किसी को	और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ	उस पर	तो हम ईमान लाए	हिदायत की तरफ़	वह रहनुमाई करता है

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾

3	और न औलाद	बीवी	उस ने नहीं बनाया	हमारा रब	शान	बड़ी बुलंद	और यह कि

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ

और यह कि हम ने गुमान किया	4	ख़िलाफ़े हक़ बातें	अल्लाह पर	हम में से बेवक़ूफ़	कहते थे	और यह कि

اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ

थे	और यह कि	5	झूट	अल्लाह पर	और जिन्न	इन्सान	हरगिज़ न कहेंगे	कि

رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ

तो उन्हों ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया	जिन्नात से	लोगों से	पनाह लेते (थे)	इन्सानों में से	कुछ आदमी

رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾

7	किसी को	रसूल बना कर भेजेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	जैसे तुम ने गुमान किया था	उन्हों ने गुमान किया	और यह कि वह	6	तकब्बुर

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا

सख़्त	पहरेदार	भरा हुआ	तो हम ने उसे पाया	आस्मान	और यह कि हम ने छुआ (टटोला)

وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ

पस जो	सुनने के लिए	ठिकाने	उस के	हम बैठा करते थे	और यह कि	8	और शोले

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ

नहीं जानते	और यह कि हम	9	घात लगाया हुआ	शोला	वह पाता है अपने लिए	अब	सुनता है

اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ

उन का रब	उन से	या इरादा फ़रमाया है	जो ज़मीन में	उन के साथ	इरादा किया गया	आया बुराई

رَشَدًا ﴿۱۰﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا

हम थे	उस के अ़लावा	और हम में से	नेकोकार (जमा)	हम में से	और यह कि	10	हिदायत

طَرَاۗئِقَ قِدَدًا ﴿۱۱﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	हरा सकेंगे अल्लाह को	कि हम हरगिज़ न	हम समझते थे	और यह कि	11	मुख़्तलिफ़	राहें

وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿۱۲﴾ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ

हम ईमान ले आए उस पर	हिदायत	जब हम ने सुनी	और यह कि	12	भाग कर	और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे

فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿۱۳﴾ وَّاَنَّا مِنَّا

हम में से	और यह कि	13	और न किसी ज़ुल्म	किसी नुक़्सान	तो उसे ख़ौफ़ न होगा	अपने रब पर ईमान लाए	सो जो

الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾

14	भलाई	उन्हों ने क़स्द किया	तो वही हैं	पस जो इस्लाम लाया	गुनाहगार	और हम में से	मुसलमान (जमा)

वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ़, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2)
और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीवी और न औलाद। (3)
और यह कि हम में से बेवक़ूफ़ कहते थे अल्लाह पर ख़िलाफ़े हक़ बातें। (4)
और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और जिन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5)
और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्हों ने जिन्नात का तकब्बुर और बढ़ा दिया। (6)
और उन्हों ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भेजेगा। (7)
और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8)
और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9)
और यह कि हम नहीं जानते कि जो ज़मीन में हैं आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फ़रमाया है। (10)
और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार हैं और हम में से (कुछ) उस के अ़लावा हैं, हम मुख़्तलिफ़ राहों पर हैं। (11)
और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे ज़मीन में और न हरगिज़ हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12)
और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक़्सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी ज़ुल्म का। (13)
और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमांबरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही हैं जिन्हों ने भलाई का क़स्द किया। (14)

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا

और रहे	गुनाहगार (जमा)	तो वह हुए	जहन्नम का	ईंधन	15	और यह कि अगर	वह क़ाइम रहते

عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ

(सीधे) रास्ते पर	तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते	पानी	वाफ़िर	16	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उस में

وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

और जो	रूगर्दानी करेगा	से	अपने रब की याद	वह उसे दाख़िल करेगा	अज़ाब	सख़्त	17

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ

और यह कि	मसजिदें अल्लाह के लिए	तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो)	अल्लाह के साथ	किसी की	18	और यह कि

لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١١

जब खड़ा हुआ	अल्लाह का बन्दा	कि वह उस की इबादत करे	क़रीब था	वह हो जाएं	उस पर	हल्क़ा दर हल्क़ा	19

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ

फ़रमा दें इस के सिवा नहीं	सिर्फ़ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ	और मैं शरीक नहीं करता	उस के साथ किसी को	20	फ़रमा दें	बेशक मैं	इख़्तियार नहीं रखता

لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ

तुम्हारे लिए	किसी ज़र्र	और न किसी भलाई	21	फ़रमा दें	बेशक मुझे	मुझे हरगिज़ पनाह न देगा	अल्लाह से

اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا

कोई	और मैं हरगिज़ न पाऊँगा	उस के सिवा	कोई जाए पनाह	22	मगर (पैग़ाम) पहुँचाना

مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ

अल्लाह की तरफ़ से	और उस के पैग़ामात	और जो	नाफ़रमानी करे अल्लाह की	और उस के रसूल की	तो बेशक उस के लिए

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا

जहन्नम की आग	हमेशा रहेंगे	उस में	हमेशा हमेशा	23	यहां तक कि	जब वह देखेंगे

مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

जो उन्हें वादा दिया जाता है	तो वह अ़नक़रीब जान लेंगे	किस	कमज़ोर तरीन	मददगार	और कम तर	तादाद में	24

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ

फ़रमा दें	नहीं	मैं जानता	आया क़रीब है	जो तुम्हें वादा दिया जाता है	या कर देगा

لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ

उस के लिए	मेरा रब	मुद्दत	25	ग़ैब का जानने वाला	वह ज़ाहिर नहीं करता	अपने ग़ैब पर

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

किसी को	26	सिवाए	जिस को	वह पसंद करता है	रसूलों में से	तो बेशक वह

يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

चलाता है	उस के आगे से	और उस के पीछे से	मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते)	27

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। **(15)** और (मुझे वहि की गई है) कि अगर वह क़ाइम रहते सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफ़िर पानी पिलाते। **(16)** ताकि हम उन्हें उस में आज़माएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करेगा। **(17)** और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। **(18)** और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो क़रीब था कि वह उस पर हल्क़ा दर हल्क़ा हो जाएं। **(19)** आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। **(20)** आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मैं तुम्हारे लिए इख़्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। **(21)** आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मुझे हरगिज़ पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। **(22)** मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैग़ाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो बेशक उस के लिए जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। **(23)** यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। **(24)** आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया क़रीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या उस के लिए मेरा रब कोई मुद्दत (दराज़) मुक़र्रर कर देगा। **(25)** (वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, **(26)** सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर बेशक उस के आगे और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, **(27)**

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ

जो उन के पास	और उस ने अहाता किया हुआ है	अपने रब के	पैग़ामात	उन्हों ने तहक़ीक़ पहुँचा दिए	कि	ता कि वह मालूम कर ले

ع ٢ ٩ ١٢

وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۲۸

28	गिनती में	हर शै	और उस ने शुमार कर रखी है	

آيَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ (٧٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (73) सूरतुल मुज़म्मिल — कपड़ों में लिपटने वाले — आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۱ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۲ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ

कम कर लें	या	उस का निस्फ़	2	थोड़ा	मगर	रात में क़ियाम करें	1	ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद (स))

مِنْهُ قَلِيْلًا ۳ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۴

4	तरतील के साथ	क़ुरआन	और ठहर ठहर कर पढ़ें	उस पर-से	या ज़ियादा कर लें	3	थोड़ा	उस में से

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۵ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ

रात	उठना	बेशक	5	एक भारी कलाम	आप (स)	बेशक हम अनक़रीब डाल देंगे

هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۶ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا

शुग़्ल	दिन में	बेशक आप (स) के लिए	6	बात/ तिलावत	और ज़ियादा दुरुस्त	यह सख़्त (नफ़्स को) रोन्दने वाला

طَوِيْلًا ۷ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۸

8	(सब से) छूट कर	उस की तरफ़	और छूट जाएं	अपने रब का नाम	और आप (स) याद करें	7	तवील

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۹

9	कारसाज़	पस पकड़ लो (बना लो) उस को	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और मग़्रिब	रब मश्रिक़ का

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۱۰

10	अच्छी तरह	किनारा कश हो कर	और उन्हें छोड़ दें	जो वह कहते हैं	पर	और आप (स) सब्र करें

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۱۱ اِنَّ

बेशक	11	थोड़ी	और उन को मोहलत दें	ख़ुशहाल लोगों	और झुटलाने वालों	और मुझे छोड़ दो

لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۱۲ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۱۳ يَوْمَ

जिस दिन	13	दर्दनाक	और अ़ज़ाब	गले में अटक जाने वाला	और खाना	12	और दहकती आग	अ़ज़ाब	हमारे हां

تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۱۴ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ

बेशक हम ने भेजा	14	रेज़ा रेज़ा	रेत के तोदे	पहाड़	और हो जाएंगे	और पहाड़	ज़मीन	कांपेगी

اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ۱۵

15	एक रसूल	फ़िरऔन की तरफ़	जैसे हम ने भेजा	तुम पर	गवाही देने वाला	एक रसूल	तुम्हारी तरफ़

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्हों ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैग़ामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज़ को गिनती में शुमार कर रखा है। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मुज़म्मिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद (स))! (1)
रात में क़ियाम करें मगर थोड़ा। (2)
उस (रात) का निस्फ़ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3)
या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और क़ुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4)
बेशक हम आप (स) पर अनक़रीब एक भारी कलाम (क़ुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5)
बेशक रात का उठना नफ़्स को रोन्दने वाला है और (क़ुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6)
बेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम हैं। (7)
और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8)
(वह) मश्रिक़ ओ मग़्रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनालें। (9)
और आप (स) सब्र करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10)
और मुझे और झुटलाने वाले ख़ुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें। (11)
बेशक हमारे हां अ़ज़ाब है और दहकती आग। (12)
और खाना है गले में अटक जाने वाला और अ़ज़ाब है दर्दनाक। (13)
जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोदे हो जाएंगे। (14)
बेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

पस फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फ़िरऔन को) बड़े वबाल की पकड़ में पकड़ लिया। (16)
अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17)
उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। (18)
बेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख़्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। (19)
बेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब क़ियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअ़त (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निबाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़्लास से क़र्ज़ हस्ना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हां बेहतर और अजर में अ़ज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। (20)

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾

16	बड़े वबाल	पकड़	तो हम ने उसे पकड़ लिया	रसूल	फ़िरऔन	पस कहा न माना

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ

बच्चों को	कर देगا	उस दिन	अगर तुम ने कुफ़्र किया	तुम बचोगे	तो कैसे

شِيْبَا ﴿١٧﴾ ۣۙ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

18	पूरा हो कर रहने वाला	उस का वादा	है	उस से	फट जाएगा	आस्मान	17	बूढ़ा

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١٣

19	राह	अपने रब की तरफ़	इख़्तियार कर ले	चाहे	तो जो	नसीहत	बेशक यह

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ

दो तिहाई (2/3) रात के	क़रीब	क़ियाम करते हैं	कि आप (स)	वह जानता है	बेशक आप (स) का रब

وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	जो आप (स) के साथ	से	और एक जमाअ़त	और उस का तिहाई (1/3)	और आधी (1/2) रात

يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

तो उस ने तुम पर इनायत की	कि तुम हरगिज़ (वक़्त का) शुमार न कर सकोगे	उस ने जाना	रात और दिन	अन्दाज़ा फ़रमाता है

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

कि अलबत्ता होंगे	उस ने जाना	कुरआन से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	तो तुम पढ़ा करो

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	वह सफ़र करेंगे	और दूसरे	बीमार	तुम में से कोई

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

अल्लाह की राह में	वह जिहाद करेंगे	और कई दूसरे	अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी)	से	तलाश करते हुए

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और क़ाइम करो	उस से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	पस पढ़ लिया करो

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا

तुम आगे भेजोगे	और जो	क़र्ज़ हस्ना (इख़्लास से)	और अल्लाह को क़र्ज़ दो	और अदा करते रहो ज़कात

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا

वह बेहतर	अल्लाह के हां	तुम उसे पाओगे	कोई नेकी	अपने लिए

وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से	अजर में	और अ़ज़ीम तर

رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع ٢٠ ١٤

20	निहायत रहम करने वाला

آيَاتُهَا ٥٦ ❀ (٧٤) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (74) सूरतुल मुद्दस्सिर — कपड़े में लिपटे हुए | आयात 56

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ

और अपने कपड़े	3	और अपने रब की बड़ाई बयान करो	2	फिर डराओ	खड़े हो जाओ	1	ऐ कपड़े में लिपटे हुए (मुहम्मद (स))

فَطَهِّرْ ﴿٤﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾

6	ज़ियादा लेने (की ग़रज़ से)	और एहसान न रखो	5	सो दूर रहो	और पलीदी	4	सो पाक करो

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾ فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ ﴿٨﴾ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	तो वह	8	सूर में	फिर जब फूंका जाएगा	7	सब्र करो	और अपने रब के लिए

يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿٩﴾ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِىْ وَمَنْ

और जिसे	मुझे छोड़ दो	10	न आसान	काफ़िरों पर	9	बड़ा दुश्वार	दिन

خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿١٢﴾ وَّبَنِيْنَ

और बेटे	12	बहुत सारा माल	उसे	और मैं ने दिया	11	अकेला	मैं ने पैदा किया

شُهُوْدًا ﴿١٣﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ

वह तमअ़ करता है	फिर	14	खूब हमवार	उस के लिए	और हमवार किया	13	सामने हाज़िर रहने वाले

اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٦﴾ سَاُرْهِقُهٗ

अब उस से चढ़वाऊँगा	16	इनाद रखने वाला (मुख़ालिफ़)	हमारी आयात का	बेशक वह है	हरगिज़ नहीं	15	कि (और) ज़ियादा दूँ

صَعُوْدًا ﴿١٧﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

19	उस ने अन्दाज़ा किया	कैसा	सो वह मारा जाए	18	और उस ने अन्दाज़ा किया	बेशक उस ने सोचा	17	बड़ी चढ़ाई

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

22	और मुँह बिगाड़ लिया	फिर उस ने तेवरी चढ़ाई	21	फिर उस ने देखा	20	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया	फिर वह मारा जाए

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

मगर (सिर्फ़) जादू	नहीं यह	तो उस ने कहा	23	और उस ने तकब्बुर किया	फिर उस ने पीठ फेर ली

يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَاُصْلِيْهِ

अ़नक़रीब उसे डाल दूंगा	25	आदमी का कलाम	मगर (सिर्फ़)	नहीं यह	24	अगलों से नक़ल किया जाता है

سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِىْ

वह न बाक़ी रखेगी	27	सक़र क्या है	और तुम क्या समझे?	26	सक़र (जहन्नम)

وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

30	उस पर हैं उन्नीस (19) दारोग़ा	29	आदमी को	झुलस देने वाली	28	और न छोड़ेगी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ कपड़ों में लिपटे हुए (मुहम्मद (स))! (1)
खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)
और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)
और अपने कपड़े पाक रखो, (4)
और पलीदी से दूर रहो। (5)
और ज़ियादा लेने की ग़र्ज़ से एहसान न रखो, (6)
और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)
फिर जब सूर फूंका जाएगा। (8)
तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)
काफ़िरों पर आसान न होगा। (10)
मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)
और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)
और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)
और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)
फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)
हरगिज़ नहीं, बेशक वह हमारी आयात का मुख़ालिफ़ है। (16)
अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। (17)
बेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)
सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)
फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)
फिर उस ने देखा, (21)
फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया, (22)
फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकब्बुर किया। (23)
पस उस ने कहा: यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)
यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)
अ़नक़रीब मैं उसे सक़र में डाल दूंगा। (26)
और तुम क्या जानो कि सक़र क्या है? (27)
(वह है आग) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)
आदमी को झुलस देने वाली है, (29)
उस पर उन्नीस (19) दारोग़ा (मुक़र्रर) हैं। (30)

और हम ने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल (बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को ख़ुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। **(31)**
नहीं नहीं! क़सम है चाँद की, **(32)**
और रात की जब वह पीठ फेरे। **(33)**
और सुबह की जब वह रोशन हो। **(34)**
बेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, **(35)**
लोगों को डराने वाली। **(36)**
तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। **(37)**
हर शख़्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। **(38)**
मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। **(39)**
बाग़ात में (होंगे), वह पूछेंगे। **(40)**
गुनाहगारों से, **(41)**
तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? **(42)**
वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। **(43)**
और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। **(44)**
और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंस्ते रहते थे, **(45)**
और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। **(46)**
यहां तक कि हमें मौत आ गई। **(47)**
सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। **(48)**
तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? **(49)**

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

उन की तादाद	और हम ने नहीं रखी	फ़रिश्ते	मगर (सिर्फ़)	दोज़ख़ के दारोग़े	और हम ने नहीं बनाए

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

किताब दी गई (अहले किताब)	वह लोग जिन्हें	ताकि वह यक़ीन कर लें	काफ़िर हुए	उन लोगों के लिए जो	मगर (सिर्फ़) आज़माइश

وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और शक न करें	ईमान	जो लोग ईमान लाए	और ज़ियादा हो

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

रोग	जिन के दिलों में	वह लोग	और ताकि वह कहें	और मोमिन (जमा)	किताब दी गई

وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

अल्लाह गुमराह करता है	इसी तरह	मिसाल	इस	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	और काफ़िर (जमा)

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ

लशकरों	और नहीं जानता	जिसे वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है

رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ ع ٣١ ١٥

32	क़सम है चाँद की	नहीं नहीं	31	आदमी के लिए	मगर नसीहत	और नहीं यह	सिवाए वह (ख़ुद)	तेरे रब के

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى

एक है	बेशक यह	34	जब वह रोशन हो	और सुबह	33	जब वह पीठ फेरे	और रात

الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ

कि वह आगे बढ़े	तुम में से	और जो कोई चाहे	36	लोगों को	डराने वाली	35	बड़ी (आफ़त)

اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ

मगर	38	गिरवी	उस ने कमाया (आमाल)	उस के बदले जो	हर शख़्स	37	या पीछे रहे

اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ع ١٦ عدد المتقدمين ١٢

41	गुनाहगारों	से	40	वह पूछेंगे	बाग़ात में	39	दाहिनी तरफ़ वाले

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾

43	नमाज़ पढ़ने वाले	से	हम न थे	वह कहेंगे	42	जहन्नम में	क्या (चीज़) तुम्हें ले गई

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾

45	बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले	और हम धंस्ते रहते थे (बेहूदा बातों में)	44	मोहताजों	हम खाना खिलाते	और न थे हम

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا تَنْفَعُهُمْ

और उन्हें नफ़ा न दिया	47	मौत	हमें आ गई	यहां तक कि	46	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	और हम झुटलाते थे

شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	मुँह फेरते हैं	नसीहत	से	तो उन्हें क्या हुआ	48	सिफ़रिश करने वाले	सिफ़ारिश

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ

चाहता है	बल्कि	51	शेर से	भागे जाते हैं	50	भागे हुए	गधे	गोया कि वह

كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ

बल्कि	हरगिज़ नहीं	52	खुले हुए	सहीफ़े	कि वह दिए जाएं	उन में से	हर आदमी

لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ

सो जो चाहे	54	नसीहत	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	53	आख़िरत	वह नहीं डरते

ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ

वही	अल्लाह चाहे	मगर यह कि	और वह याद न रखेंगे	55	इसे याद रखे

اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

	56	और मग़्फ़िरत करने के लाइक़	डरने के लाइक़	

ع ٢٥ / ١٦ / ٢ الثلثة

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ (٧٥) سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (75) सूरतुल क़ियामह (क़ियामत) — आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

2	मलामत करने वाला (ज़मीर)	नफ़्स की	और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	1	क़ियामत के दिन की	नहीं, मैं क़सम खाता हूँ

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ

क्यों नहीं, हम क़ादिर हैं	3	उस की हड्डियां	कि हम जमा न कर सकेंगे	इन्सान	क्या गुमान करता है

عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ

कि गुनाह करता रहे	इन्सान	बल्कि चाहता है	4	उस के पोर पोर	कि हम दुरुस्त करें	पर

اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ يَسْئَلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ فَاِذَا

पस जब	6	रोज़े क़ियामत	कब?	और पूछता है	5	अपने आगे को भी

بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾

9	सूरज और चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	8	चाँद	और गरहन लग जाएगा	7	चुंधिया जाएंगी आँखें

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾

11	नहीं कोई बचाओ	हरगिज़ नहीं	10	कहां भागने की जगह	आज के दिन	इन्सान	कहेगा

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨالْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۢ

आज के दिन	इन्सान	वह जतला दिया जाएगा	12	ठिकाना	आज के दिन	तेरे रब की तरफ़

بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿١٤﴾

14	बाख़बर	अपनी जान (हालत) पर	बल्कि इन्सान	13	और उस ने पीछे छोड़ा	वह जो उस ने आगे भेजा

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50) भागे जाते हैं शेर से। (51) बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफ़े खुले हुए। (52) हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आख़िरत से नहीं डरते। (53) हरगिज़ नहीं, बेशक यह नसीहत है। (54) सो जो चाहे इसे याद रखे। (55) और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक़ और मग़्फ़िरत करने के लाइक़। (56)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ। (1) और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ। (2) क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज़ जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियां। (3) क्यों नहीं? कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5) वह पूछता है कि रोज़े क़ियामत कब होगा? (6) पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7) और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9) इन्सान कहेगा कि कहां है आज के दिन भागने की जगह? (10) हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11) आज के दिन तेरे रब की तरफ़ ठिकाना है। (12) जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा। (13) बल्कि इन्सान अपनी जान पर बाख़बर है। (14)

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾

16	कि जल्द (याद कर लें) उस को	अपनी ज़बान को	आप (स) हरकत न दें इस (क़ुरआन) के साथ	15	अपने उज़्र	अगरचे ला डाले

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

तो आप (स) पैरवी करें	पस जब हम उसे पढ़ें	17	और उस का पढ़ाना	उस का जमा करना	बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)

قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ

तुम मुहब्बत रखते हो	हरगिज़ नहीं बल्कि	19	उस का बयान	फिर बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)	18	उस के पढ़ने को

الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

22	ताज़ा (बारौनक़)	उस दिन	बहुत से चेहरे	21	आख़िरत	और तुम छोड़ देते हो	20	जल्दी हासिल होने वाली चीज़

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ

ख़याल करते होंगे	24	बिगड़े हुए	उस दिन	और बहुत से चेहरे	23	देखते	अपने रब की तरफ़

اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

26	हंसुली तक	पहुँच जाए	हाँ हाँ जब	25	कमर तोड़ने वाला	उन से किया जाएगा	कि

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ

और लिपट जाए	28	जुदाई	और वह गुमान करे कि यह	27	कौन झाड़ फूंक करने वाला	और कहा जाए

السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ ِالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع ١ ٣٠ ١٧

30	चलना	उस दिन	अपने रब की तरफ़	29	दूसरी पिंडली से	एक पिंडली

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

32	और मुँह मोड़ा	झुटलाया	और लेकिन (बल्कि)	31	और न उस ने नमाज़ पढ़ी	न उस ने तस्दीक़ की

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

34	पस अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	33	अकड़ता	अपने घर वालों की तरफ़	फिर चला गया वह

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

कि वह छोड़ दिया जाएगा	इनसान	क्या वह गुमान करता है?	35	फिर अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	फिर

سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

37	टपकाया गया	मनी	से-का	नुतफ़ा	क्या न था?	36	मुहमिल (यूं ही)

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ

दो जोड़े (क़िस्में)	उस से	फिर बनाए	38	फिर उसे दुरुस्त कर दिया	फिर उस ने पैदा किया	जमा हुआ ख़ून	फिर वह हुआ

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	क्या नहीं	39	मर्द और औरत

اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع ٢ ١٠ ١٨

40	मुर्दे (जमा)	कि वह ज़िन्दा करे

अगरचे अपने उज़्र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)
आप (स) क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)
बेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)
पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की ज़बानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)
फिर बेशक उस का बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (19)
हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)
और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)
उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक़ होंगे, (22)
अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)
और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)
वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)
हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)
और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)
और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)
और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)
उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)
न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तस्दीक़ की और न उस ने नमाज़ पढ़ी। (31)
बल्कि उस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (32)
फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)
अफ़्सोस है तुझ पर अफ़्सोस। (34)
फिर अफ़्सोस है तुझ पर फिर अफ़्सोस। (35)
क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूंही छोड़ दिया जाएगा। (36)
क्या वह मनी का एक नुतफ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)
फिर वह जमा हुआ ख़ून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)
फिर उस से मर्द और औरत की दो क़िस्में बनाईं। (39)
क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40)

آیَاتُهَا ٣١ ❀ سُوْرَةُ الدَّهْرِ (٧٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 31	(76) सूरतुद दहर ज़माना	रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ١

1	काबिले ज़िक्र	न था कुछ	ज़माना से (में)	एक वक़्त	इन्सान पर	यक़ीनन आया (गुज़रा)

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ

तो हम ने उसे बनाया	हम उसे आज़माएं	मख़्लूत	नुत्फ़े से	इन्सान	बेशक हम ने पैदा किया

سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ٢ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا

और ख़्वाह	ख़्वाह शुक्र करने वाला	राह	बेशक हम ने उसे दिखाई	2	सुनता देखता

كَفُوْرًا ٣ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ٤

4	और दहकती आग	और तौक़	ज़न्जीरें	काफ़िरों के लिए	बेशक हम ने तैयार किया	3	नाशुक्रा

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ٥

5	काफूर की	उस में मिलावट होगी	प्याले से	पिएंगे	नेक बन्दे	बेशक

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ٦ يُوْفُوْنَ

वह पूरी करते हैं	6	नालियां	उस से जारी करते हैं	अल्लाह के बन्दे	उस से पीते हैं	एक चश्मा

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ٧ وَيُطْعِمُوْنَ

और वह खिलाते हैं	7	फैली हुई	उस की बुराई	होगी	उस दिन से	और वह डरते हैं	अपनी (नज़्रें)

الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ٨ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

हम तुम्हें खिलाते हैं	इस के सिवा नहीं	8	और क़ैदी	और यतीम	मिस्कीन	उस की मुहब्बत पर	खाना

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ٩ اِنَّا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	9	और न शुक्रिया	कोई जज़ा	तुम से	हम नहीं चाहते	रज़ाए इलाही के लिए

مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ١٠ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

उस दिन	बुराई	पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने	10	निहायत सख़्त	मुंह बिगाड़ने वाला	दिन	अपने रब से

وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ١١ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ١٢

12	और रेशमी लिबास	जन्नत	उन के सब्र पर	और उन्हें बदला दिया	11	और खुश दिली	ताज़गी	और उन्हें अता की

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ١٣

13	और न सर्दी	धूप	उस में	वह न देखेंगे	तख़्तों पर	उस में	तकिया लगाए होंगे

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ١٤

14	झुका कर	उस के गुच्छे	और नज़्दीक कर दिए गए होंगे	उन के साए	उन पर	और नज़्दीक हो रहे होंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) क़ाबिले ज़िक्र न था। (1)
बेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मख़्लूत नुत्फ़े से (कि) हम उसे आज़माएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2)
बेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) ख़्वाह शुक्र करने वाला बने ख़्वाह नाशुक्रा। (3)
बेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4)
बेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (5)
एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6)
वह पूरी करते हैं अपनी नज़्रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आम) होगी। (7)
और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और क़ैदी को। (8)
(और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं। हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9)
बेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुँह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10)
पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अता की और खुश दिली। (11)
और उन्हें बदला दिया उन के सब्र पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12)
उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सर्दी (की शिद्दत)। (13)
उन पर उस के साए नज़्दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़्दीक कर दिए गए होंगे। (14)

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साक़ियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सबील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ बारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) बेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मक़्बूल हुई। (22) बेशक हम ने आप (स) पर क़ुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें, और आप (स) कहा ना मानें उन में से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुब्ह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) बेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े क़ियामत को) अपने पीछे (पसे पुश्त) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएं। (28) बेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَاۡ ١٥

15	शीशे के	होंगे	और प्याले	चाँदी के	बरतनों का	उन पर	और दौर होगा

قَوَارِيْرَاۡ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ١٦ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا

ऐसा जाम	उस में	और उन्हें पिलाया जाएगा	16	मुनासिब अन्दाज़ा	उन्हों ने उन का अन्दाज़ा किया होगा	चाँदी के	शीशे

كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ١٧ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ١٨ وَيَطُوْفُ

और गर्दिश करेंगे	18	सल्सबील	नाम होगा जिस का	एक चश्मा उस में	17	अदरक	उस की मिलावट	होगी

عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا

मोती	तू उन्हें समझे	जब तू उन्हें देखे	हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले	लड़के	उन पर

مَّنْثُوْرًا ١٩ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ٢٠

20	और बड़ी सल्तनत	बड़ी नेमत	तू देखेगा	वहां	और जब तू देखेगा	19	बिखरे हुए

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۡ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ

कंगन	और उन्हें पहनाए जाएंगे	और दबीज़ रेशम (अतलस)	सब्ज़	बारीक रेशम	उन के ऊपर की पोशाक

مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ٢١ اِنَّ هٰذَا كَانَ

है	बेशक यह	21	नियाहत पाक	एक शराब (मशरूब)	उन का रब	और उन्हें पिलाएगा	चाँदी के

لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ٢٢ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ

आप (स) पर	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	22	मशकूर (मक़्बूल)	तुम्हारी कोशिश	और हुई	जज़ा	तुम्हारे लिए

ع ٢٢ ١٩

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ٢٣ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا

किसी गुनाहगार	उन में से	और आप (स) कहा न मानें	अपने रब के हुक्म के लिए	पस सब्र करें	23	बतदरीज	कुरआन

اَوْ كَفُوْرًا ٢٤ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ٢٥ وَمِنَ الَّيْلِ

और रात के (किसी हिस्से में)	25	और शाम	सुबह	अपने रब का नाम	और आप (स) ज़िक्र करें	24	या नाशुक्रे का

فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ٢٦ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ

मुहब्बत रखते हैं	बेशक यह (मुन्किर) लोग	26	और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा	उस को	पस आप (स) सिज्दा करें

الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ٢٧ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

हम ने उन्हें पैदा किया	27	भारी	एक दिन	अपने पीछे	और छोड़ देते हैं	दुनिया

وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ٢٨

28	बदल कर	उन जैसे लोग	हम बदल दें	और जब हम चाहें	उन के जोड़	और हम ने मज़बूत किए

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ٢٩

29	राह	अपने रब की तरफ़	इख़्तियार करे	पस जो चाहे	नसीहत	बेशक यह

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ٣٠

30	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह चाहे	जो	सिवाए	और तुम नहीं चाहोगे

قرأ حفص بغير الالف في الوصل فيهما - ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

ع ٢ ٩ ٢٠

يُدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ

उस ने तैयार किया है उन के लिए	और (रहे) ज़ालिम	अपनी रहमत में	वह जिसे चाहे	वह दाख़िल करता है

عَذَابًا اَلِيْمًا ۧ ٣١

	31	दर्दनाक अज़ाब	

آيَاتُهَا ٥٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ (٧٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (77) सूरतुल मुर्सलात — भेजी जाने वालियाँ — आयात 50

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ ١ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ ٢ وَّالنّٰشِرٰتِ

बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की क़सम	2	शिद्दत से	फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम	1	दिल ख़ुश करने वाली	हवाओं की क़सम

نَشْرًا ۙ ٣ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ ٤ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ ٥ عُذْرًا

हुज्जत तमाम करने को	5	ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद)	फिर डालने वाली हवाओं की क़सम	4	बांट कर	फिर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम	3	फैलाने वाली

اَوْ نُذْرًا ۙ ٦ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۭ ٧ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ ٨

8	सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं)	पस जब	7	ज़रूर होने वाला	तुम्हें वादा दिया जाता है	बेशक जो	6	या डराने को

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ ٩ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ ١٠ وَاِذَا الرُّسُلُ

और जब रसूल (जमा)	10	उड़ते फिरें	और जब पहाड़	9	फट जाए	और जब आस्मान

اُقِّتَتْ ۭ ١١ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۭ ١٢ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ ١٣ وَمَآ اَدْرٰىكَ

और तुम क्या समझे?	13	फ़ैसले का दिन	12	मुल्तवी रखा गया है	किस दिन के लिए	11	वक़्त पर जमा किए जाएंगे

مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۭ ١٤ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ١٥ اَلَمْ نُهْلِكِ

क्या हम ने हलाक नहीं किया?	15	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	14	क्या है फ़ैसले का दिन?

الْاَوَّلِيْنَ ۭ ١٦ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ١٧ كَذٰلِكَ

इसी तरह	17	पिछलों को	हम उन के पीछे चलाते हैं	फिर	16	पहले लोगों को?

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ١٨ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ١٩

19	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	18	मुजरिमों के साथ	हम करते हैं

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۙ ٢٠ فَجَعَلْنٰهُ فِىْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۙ ٢١

21	एक महफ़ूज़ जगह	में	फिर हम ने उसे रखा	20	हक़ीर	पानी से	क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۙ ٢٢ فَقَدَرْنَا ڰ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ٢٣ وَيْلٌ

ख़राबी	23	अन्दाज़ा करने वाले	तो कैसा अच्छा	फिर हम ने अन्दाज़ा किया	22	उस क़द्र जो मालूम है	तक

يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ٢٤ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۙ ٢٥

25	समेटने वाली	ज़मीन	क्या हम ने नहीं बनाया	24	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (31)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

दिल ख़ुश करने वाली हवाओं की क़सम, (1)
फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम, (2)
बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की क़सम, (3)
फिर बांट कर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम, (4)
फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की क़सम। (5)
हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6)
बेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7)
फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8)
और जब आस्मान फट जाए। (9)
और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर)। (10)
और जब सारे रसूल वक़्ते (मुअय्यन) पर जमा किए जाएं। (11)
(उन का मामला) किस दिन के लिए मुल्तवी रखा गया है? (12)
फ़ैसले के दिन के लिए। (13)
और तुम क्या समझे कि फ़ैसले का दिन क्या है? (14)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (15)
क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16)
फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17)
इसी तरह हम मुजरिमों के साथ करते हैं। (18)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (19)
क्या हम ने तुम्हें हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (20)
फिर हम ने उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (21)
एक वक़्ते मुअय्यन तक। (22)
फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (24)
क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। **(26)**
और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा पानी पिलाया। **(27)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(28)**
(हुक्म होगा) तुम चलो उस की तरफ़ जिस को तुम झुटलाते थे। **(29)**
तुम चलो तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। **(30)**
न गहरा साया और न वह तपिश से बचाए। **(31)**
बेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले फेंकती है, **(32)**
गोया कि वह ऊँट हैं ज़र्द। **(33)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(34)**
उस दिन न वह बोल सकेंगे, **(35)**
और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़्र ख़ाही करें। **(36)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(37)**
यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें जमा किया और पहले लोगों को। **(38)**
फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ है तो मुझ पर दाओ करो। **(39)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(40)**
बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। **(41)**
और मेवों में जो वह चाहेंगे। **(42)**
(हम फ़रमाएंगे) तुम खाओ और पियो मज़े से (बाफ़राग़त) उस के बदले जो तुम करते थे। **(43)**
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। **(44)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(45)**
तुम खाओ और फ़ाइदा उठा लो थोड़ा (किसी क़द्र) बेशक तुम मुजरिम हो। **(46)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(47)**
और जब उन से कहा जाता है कि तुम रुकूअ करो तो वह रुकूअ नहीं करते। **(48)**
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। **(49)**
तो इस के बाद वह कौन सी बात पर ईमान लाएंगे? **(50)**

اَحۡيَآءً وَّاَمۡوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ شٰمِخٰتٍ

ऊँचे ऊँचे	पहाड़ (जमा)	उस में	और हम ने रखे	26	और मुर्दों को	ज़िन्दों को

وَّاَسۡقَيۡنٰكُمۡ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	27	पानी मीठा	और हम ने पिलाया तुम्हें

اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تُكَذِّبُوۡنَ ﴿٢٩﴾ اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى ظِلٍّ

साए की तरफ़	तुम चलो	29	तुम झुटलाते	जिस को तुम थे	तरफ़	तो तुम चलो

ذِىۡ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيۡلٍ وَّلَا يُغۡنِىۡ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

31	शोला (तपिश)	से	और न वह बचाए	न गहरा साया	30	शाख़ें	तीन	वाला

اِنَّهَا تَرۡمِىۡ بِشَرَرٍ كَالۡقَصۡرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفۡرٌ ﴿٣٣﴾ وَيۡلٌ

ख़राबी	33	ज़र्द	ऊँट (जमा)	गोया कि	32	महल जैसे	शोले	फेंकती	बेशक वह

يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوۡمُ لَا يَنۡطِقُوۡنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤۡذَنُ

और न इजाज़त दी जाएगी	35	वह न बोल सकेंगे	उस दिन	34	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

لَهُمۡ فَيَعۡتَذِرُوۡنَ ﴿٣٦﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٣٧﴾

37	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	36	कि वह उज़्र ख़ाही करें	उन्हें

هٰذَا يَوۡمُ الۡفَصۡلِ ۚ جَمَعۡنٰكُمۡ وَالۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنۡ كَانَ لَكُمۡ

है तुम्हारे पास	फिर अगर	38	और पहले लोगों को	हम ने जमा किया तुम्हें	फ़ैसले का दिन	यह

كَيۡدٌ فَكِيۡدُوۡنِ ﴿٣٩﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٠﴾ ع ١ ٢١

40	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	39	तो तुम मुझ पर दाओ कर लो	कोई दाओ

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ ظِلٰلٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿٤٢﴾

42	वह चाहेंगे	जो	और मेवे	41	और चश्मों	सायों	में	बेशक परहेज़गार (जमा)

كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓــًٔا بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

बेशक हम इसी तरह	43	करते थे	उस के बदले जो तुम	मज़े से	औत तुम पियो	तुम खाओ

نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٤٤﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوۡا

तुम खाओ	45	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	44	नेकोकारों को	जज़ा देते हैं

وَتَمَتَّعُوۡا قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ

उस दिन	ख़राबी	46	मुजरिम (जमा)	बेशक तुम	थोड़ा	और तुम फ़ाइदा उठाओ

لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ ارۡكَعُوۡا لَا يَرۡكَعُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَيۡلٌ

ख़राबी	48	वह रुकूअ नहीं करते	तुम रुकूअ करो	उन से	कहा जाए	और जब	47	झुटलाने वालों के लिए

يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَىِّ حَدِيۡثٍۢ بَعۡدَهٗ يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٥٠﴾ ع ٢ ٢٢

50	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	तो कौन सी	49	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

الجزء ٣٠

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ (٧٨) سُوْرَةُ النَّبَاِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2	(78) सूरतुन नबा ख़बर	आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ٢ الَّذِىْ هُمْ

वह	जो-जिस	2	बड़ी ख़बर (क़ियामत)	से (बाबत)	1	आपस में पूछते हैं	क्या-किस

فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٥ اَلَمْ

क्या नहीं	5	अ़नक़रीब जान लेंगे	फिर हरगिज़ नहीं	4	अ़नक़रीब जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	3	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में

نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ٧ وَّخَلَقْنٰكُمْ

और हम ने तुम्हें पैदा किया	7	कीलें	और पहाड़	6	बिछोना	ज़मीन	हम ने बनाया

اَزْوَاجًا ٨ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ١٠

10	ओढ़ना (पर्दा)	रात	और हम ने बनाया	9	आराम (राहत)	तुम्हारी नींद	और हम ने बनाया	8	जोड़े जोड़े

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ١١ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ١٢

12	मज़बूत (आस्मान)	सात	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बनाए	11	कमाने का वक़्त	दिन	और हम ने बनाया

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ

पानी भरी बदलियां	से	और हम ने उतारी	13	चमकता हुआ	चिराग़	और हम ने बनाया

مَآءً ثَجَّاجًا ١٤ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ١٥ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ١٦ اِنَّ

बेशक	16	और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए	15	और सब्ज़ी	दाना (अनाज)	उस से	ताकि हम निकाले	14	बारिश मूसलाधार

يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ

सूर में	फूंका जाएगा	दिन	17	मुक़र्रर वक़्त	है	फ़ैसले का दिन

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ١٨ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ١٩

19	दरवाज़े	तो हो जाएंगे	आस्मान	और खोला जाएगा	18	गिरोह दर गिरोह	फिर तुम चले आओगे

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ

है	दोज़ख़	बेशक	20	सराब	तो हो जाएंगे	पहाड़	और चलाए जाएंगे

مِّرْصَادًا ٢١ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ٢٢ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ٢٣

23	मुद्दतों	उस में	वह रहेंगे	22	ठिकाना	सरकशों के लिए	21	घात

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ٢٤ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ٢٥

25	और बहती पीप	गर्म पानी	मगर	24	पीने की चीज़	और न	ठन्डक	उस में	न चखेंगे

جَزَآءً وِّفَاقًا ٢٦ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ٢٧

27	हिसाब	तवक़्क़ो नहीं रखते थे	बेशक वह	26	पूरा	बदला

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1)
बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में, (2)
जिस में वह इख़्तिलाफ़ कर रहें हैं। (3)
हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे, (4)
फिर हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (5)
क्या हम ने ज़मीन को नहीं बनाया बिछोना (फ़र्श)? (6)
और पहाड़ों को कीलें, (7)
और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8)
और तुम्हारे लिए नींद को बनाया आराम (राहत), (9)
और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10)
और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11)
और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आस्मान), (12)
और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़्ताब) बनाया, (13)
और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14)
ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15)
और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग़। (16)
बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17)
जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18)
और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19)
और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20)
बेशक दोज़ख़ घात है। (21)
सरकशों का ठिकाना, (22)
और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23)
न उस में ठन्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24)
मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25)
(यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26)
बेशक वह हिसाब की तवक़्क़ो न रखते थे, (27)

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

29	लिख कर	हम ने गिन रखी है	और हर चीज़	28	झूट जान कर	हमारी आयतें	और झुठलाते थे

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ ع ١

31	कामयाबी	परहेज़गारों के लिए	बेशक	30	अ़ज़ाब	मगर	बढ़ाते जाएंगे	हरगिज़ नहीं	अब मज़ा चखो

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

34	छलकते हुए	और प्याले	33	हम उम्र	और नौजवान औरतें	32	और अंगूर	बाग़ात

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

इन्आ़म	तुम्हारा रब	से	यह बदला	35	और न झूट (ख़ुराफ़ात)	बेहूदा	उस में	न सुनेंगे

حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ

बहुत मेहरबान	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	36	हिसाब से (काफ़ी)

لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	खड़े होंगे रूह	दिन	37	बात करना	उस से	वह क़ुदरत नहीं रखते

صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38	ठीक बात	और बोलेगा	रहमान	उस को	इजाज़त दी	जो - जिस	मगर	न बोल सकेंगे	सफ़ बान्धे

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39	ठिकाना	अपने रब के पास	बनाए	चाहे	पस जो	बरहक़	दिन	यह

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا

जो	आदमी	देख लेगा	जिस दिन	क़रीब के	अ़ज़ाब	बेशक हम ने डरा दिया तुम्हें

قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ ع ٢

40	मिट्टी	होता	काश मैं	काफ़िर	और कहेगा	आगे भेजा उस के हाथ

آيَاتُهَا ٤٦ ❀ سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ (٧٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2 — (79) सूरतुन नाज़िआ़त / खींचने वाले — आयात 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

3	तेज़ी से	और तैरने वाले	2	खोल कर	और छुड़ाने वाले	1	डूब कर	क़सम है खींचने वाले

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿٥﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ وقف لازم

कांपे	दिन	5	हुक्म के मुताबिक़	फिर तदबीर करने वाले	4	दौड़ कर	फिर आगे बढ़ने वाले

الرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ﴿٨﴾

8	धड़कने वाले	उस दिन	कितने दिल	7	पीछे आने वाली	उस के पीछे आए	6	कांपने वाली

और हमारी आयतों को झुठलाते थे झूट जान कर। (28) और हम ने हर चीज़ गिन कर लिख रखी है, (29) अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज़ न बढ़ाते जाएंगे मगर अ़ज़ाब। (30) बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, (31) बाग़ात और अंगूर, (32) और नौजवान औरतें हम उम्र, (33) और छलकते हुए प्याले। (34) वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा बात और न झूट (ख़ुराफ़ात)। (35) यह बदला है तुम्हारे रब का इन्आ़म हिसाब से (काफ़ी), (36) रब आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है, बहुत मेहरबान, वह उस से बात करने की क़ुदरत नहीं रखते। (37) जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और फ़रिश्ते सफ़ बान्धे खड़े होंगे, न बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान ने इजाज़त दी और बोलेगा ठीक बात। (38) यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाए। (39) बेशक हम ने तुम्हें क़रीब आने वाले अ़ज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता। (40)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है डूब कर खींचने वाले (फ़रिश्तों) की, (1) और खोल कर छुड़ाने वालों की, (2) और तेज़ी से तैरने वालों की, (3) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की, (4) फिर हुक्म के मुताबिक़ तदबीर करने वालों की। (5) जिस दिन कांपने वाली कांपे, (6) और उस के पीछे आए पीछे आने वाली। (7) कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे, (8)

وقف لازم

اَبۡصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ ٩ يَقُوۡلُوۡنَ ءَاِنَّا لَمَرۡدُوۡدُوۡنَ فِى الۡحَافِرَةِ ؕ ١٠

10	पहली हालत	में	लौटाए जाएंगे	क्या हम	वह कहते हैं	9	झुकी हुई	उन की निगाहें

وقف لازم

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ ١١ قَالُوۡا تِلۡكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ ١٢

12	ख़सारे वाली	वापसी	फिर	यह	वह बोले	11	खोखली	हड्डियां	हम होंगे	क्या जब

فَاِنَّمَا هِىَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ ١٣ فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ؕ ١٤ هَلۡ اَتٰٮكَ

पहुँची तेरे पास	क्या	14	मैदान में	वह	फिर उस वक़्त	13	एक	डांट	वह	फिर तो सिर्फ़

وقف لازم

حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ۘ ١٥ اِذۡ نَادٰٮهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ۚ ١٦

16	तुवा	मुक़द्दस	वादी	उस का रब	जब पुकारा उसे	15	मूसा (अ)	बात

اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ ١٧ فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰٓى اَنۡ

कि	तरफ़	तुझ को	क्या	पस कहो	17	बेशक उस ने सरकशी की	फ़िरऔन	तरफ़, पास	जाओ

تَزَكّٰى ۙ ١٨ وَاَهۡدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخۡشٰى ۚ ١٩ فَاَرٰٮهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰى ۖ ٢٠

20	बड़ी निशानी	उस को दिखाई	19	कि तू डरे	तेरा रब	तरफ़	और तुझे राह दिखाऊँ	18	तू संवर जाए

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ ٢١ ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰى ۖ ٢٢ فَحَشَرَ ۟

फिर जमा किया	22	जी तोड़ कोशिश किया	फिर पीठ फेर लिया	21	और नाफ़रमानी की	उस ने झुटलाया

فَنَادٰى ۖ ٢٣ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰى ۖ ٢٤ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ

सज़ा	तो उस को पकड़ा अल्लाह ने	24	तुम्हारा रब सब से बड़ा	मैं	फिर उस ने कहा	23	फिर पुकारा

ع ٢٦ ٣

الۡاٰخِرَةِ وَالۡاُوۡلٰى ؕ ٢٥ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ؕ ٢٦ ءَاَنۡتُمۡ

क्या तुम	26	डरे	उस के लिए जो	इब्रत	इस	में	बेशक	25	और दुनिया	आख़िरत

اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰٮهَا ۟ ٢٧ رَفَعَ سَمۡكَهَا فَسَوّٰٮهَا ۙ ٢٨

28	फिर उस को दुरुस्त किया	उस की छत	बुलन्द किया	27	उस ने बनाया	आसमान	या	बनाना	ज़ियादा मुश्किल

وَاَغۡطَشَ لَيۡلَهَا وَاَخۡرَجَ ضُحٰٮهَا ۖ ٢٩ وَالۡاَرۡضَ بَعۡدَ ذٰلِكَ

उस	बाद	और ज़मीन	29	दिन की रोशनी	और निकाली	उस की रात	तारीक कर दिया

دَحٰٮهَا ؕ ٣٠ اَخۡرَجَ مِنۡهَا مَآءَهَا وَمَرۡعٰٮهَا ۖ ٣١ وَالۡجِبَالَ اَرۡسٰٮهَا ۙ ٣٢

32	क़ाइम किया उस को	और पहाड़	31	और उस का चारा	उस का पानी	उस से	निकाला	30	उस को बिछाया

مَتَاعًا لَّكُمۡ وَلِاَنۡعَامِكُمۡ ؕ ٣٣ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الۡكُبۡرٰى ۖ ٣٤

34	बड़ा	हंगामा	वह आए	फिर जब	33	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा

يَوۡمَ يَتَذَكَّرُ الۡاِنۡسَانُ مَا سَعٰى ۙ ٣٥ وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ

जहन्नम	ज़ाहिर कर दी जाएगी	35	उस ने कमाया	जो	इन्सान	याद करेगा	दिन

لِمَنۡ يَّرٰى ٣٦ فَاَمَّا مَنۡ طَغٰى ۙ ٣٧ وَاٰثَرَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ۙ ٣٨

38	दुनिया	ज़िन्दगी	तरजीह दी	37	सरकशी की	जो-जिस	पस	36	देखे	उस के लिए जो

उन की निगाहें झुकी हुई। (9)
वह कहते हैं: क्या हम पहली हालत
में लौटाए जाएंगे? (10)
क्या जब हम खोखली हड्डियां
हो चुके होंगे? (11)
वह बोले कि यह फिर ख़सारे वाली
वापसी है। (12)
फिर वह तो सिर्फ़ एक डांट है। (13)
फिर वह उस वक़्त मैदान में
(मौजूद होंगे)। (14)
क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात
पहुँची? (15)
जब उस को उस के रब ने पुकारा
तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16)
के फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक
उस ने सरकशी की है, (17)
पस कहो: क्या तुझ को (ख़्वाहिश है)
कि तू संवर जाए, (18)
और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह
दिखाऊँ कि तू डरे। (19)
(मूसा अ ने) उस को दिखाई बड़ी
निशानी। (20)
उस ने झुटलाया और नाफ़रमानी
की, (21)
फिर पीठ फेर कर (हक़ के ख़िलाफ़)
जी तोड़ कोशिश किया। (22)
फिर (लोगों को) जमा किया, फिर
पुकारा। (23)
फिर कहा कि मैं तुम्हारा सब से
बड़ा रब हूँ। (24)
तो अल्लाह ने उस को दुनिया और
आख़िरत की सज़ा में पकड़ा। (25)
बेशक इस में उस के लिए इब्रत
है जो डरे। (26)
क्या तुम्हारा बनाना ज़ियादा
मुश्किल है या आस्मान का, उस
ने उस को बनाया। (27)
उस की छत को बुलन्द किया फिर
उस को दुरुस्त किया, (28)
और उस की रात को तारीक कर दिया
और निकाली दिन की रोशनी, (29)
और उस के बाद ज़मीन को
बिछाया। (30)
उस से उस का पानी निकाला और
उस का चारा। (31)
और पहाड़ों को क़ाइम किया। (32)
तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के
फ़ाइदे के लिए। (33)
फिर जब बड़ा हंगामा आएगा
(क़ियामत), (34)
उस दिन इन्सान याद करेगा जो उस
ने कमाया (अपने आमाल)। (35)
और जहन्नम हर उस के लिए
ज़ाहिर कर दी जाएगी जो देखे। (36)
पस जिस ने सरकशी की। (37)
और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह
दी। (38)

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ

अपने रब	खड़ा होना	डरा	जो	और जो	39	ठिकाना	वह	जहन्नम	तो यक़ीनन

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

41	ठिकाना	वह	जन्नत	यक़ीनन	40	ख़ाहिश	से	जी, दिल	और रोका

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾ فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

43	उस का ज़िक्र	से	तू	क्या	42	उस का ठहरना (क़ियाम)	कब	क़ियामत	से (बाबत)	वह आप (स) से पूछते हैं

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

45	उस से डरे	जो	डराने वाले	आप (स)	सिर्फ़	44	उस की इन्तिहा	तुम्हारा रब	तरफ़

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾ ع ٢

46	उस की सुबह	या	एक शाम	मगर	ठहरे वह	नहीं	देखेंगे उस को	दिन	गोया वह

آيَاتُهَا ٤٢ ❀ سُورَةُ عَبَسَ (٨٠) ❀ رُكُوعُهَا ١

रुकूअ 1 — (80) सूरह अ़बासा / तेवरी चढ़ाई — आयात 42

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١﴾ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ

शायद वह	ख़बर आप (स) को	और क्या	2	एक अंधा	आया उस के पास	कि	1	और मुँह मोड़ लिया	तेवरी चढ़ाई

يَزَّكَّىٰ ﴿٣﴾ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٤﴾ أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾

5	बेपरवाई की	जिस	जो	4	नसीहत करना	उसे नफ़ा पहुँचाता	नसीहत मानता	या	3	संवर जाता

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ

जो	और जो	7	वह संवरे	अगर न	आप (स) पर	और नहीं	6	फ़िक्र करते हैं	उस के लिए	तो आप (स)

جَاءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾ فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾ كَلَّا

हरगिज़ नहीं	10	तग़ाफ़ुल करते हैं	उस से	तो आप	9	डरता है	और वह	8	दौड़ता	आया आप के पास

إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿١٢﴾ فِي صُحُفٍ مُكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ وقف لازم

13	बाइज़्ज़त	सहीफ़े (औराक़)	में	12	इस से नसीहत कुबूल करे	चाहे	सो जो	11	नसीहत	यह तो

مَرْفُوعَةٍ مُطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

16	नेकोकार	बुज़ुर्ग	15	लिखने वाले	हाथों में	14	इन्तिहाई पाकीज़ा	बुलन्द मरतबा

قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ﴿١٧﴾ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ﴿١٨﴾

18	उसे पैदा किया	चीज़	किस	से	17	कैसा नाशुक्रा	इन्सान	मारा जाए

مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ﴿٢٠﴾

20	उस को आसान कर दिया	राह	फिर	19	फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की	उसको पैदा किया	नुत्फ़ा	से

तो यक़ीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39)
और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को ख़ाहिश से, (40)
तो यक़ीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41)
वह आप (स) से पूछते हैं क़ियामत के बाबत कि कब (होगा) उस का क़ियाम? (42)
तुम्हें क्या काम उस के ज़िक्र से? (43)
तुम्हारे रब की तरफ़ है उस की इन्तिहा। (44)
आप (स) सिर्फ़ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45)
गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुबह। (46)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1)
कि उस के पास एक अंधा आया। (2)
और आप (स) को क्या ख़बर कि शायद वह संवर जाता, (3)
या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4)
और जिस ने बेपरवाई की। (5)
आप (स) उस के लिए फ़िक्र करते हैं। (6)
और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7)
और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8)
और वह डरता है, (9)
तो आप (स) उस से तग़ाफ़ुल करते हैं। (10)
हरगिज़ नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11)
सो जो चाहे इस से नसीहत कुबूल करे। (12)
बाइज़्ज़त औराक़ में, (13)
बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14)
लिखने वाले हाथों में, (15)
बुज़ुर्ग नेकोकार। (16)
इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17)
उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18)
एक नुत्फ़े से उस को पैदा किया, फिर उस की तक़दीर मुक़र्रर की, (19)
फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ

जो	पूरा किया	अभी तक	हरगिज़ नहीं	22	उसे निकाला	चाहा	जब	फिर	21	फिर उसे क़ब्र में पहुंचाया	उसे मुर्दा किया	फिर

اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ

पानी	ऊपर से डाला	कि हम	24	अपना खाना	तरफ़ (को)	इन्सान	पस चाहिए कि देखे	23	उस को हुक्म दिया

صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

27	ग़ल्ला	उस में	फिर हम ने उगाया	26	फाड़ कर	ज़मीन	फाड़ा (चीरा)	फिर	25	गिरता हुआ

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً

मेवा	30	घने	और बाग़ात	29	और खजूर	और ज़ैतून	28	और तरकारी	और अंगूर

وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

33	कान फोड़ने वाली	आए	फिर जब	32	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	सामान (खाना)	31	और चारा

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

और अपनी बीवी	35	और अपना बाप	और अपनी माँ	34	अपना भाई	से	आदमी	भागेगा	जिस दिन

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

37	उसे काफ़ी होगी	हालत (फ़िक्र)	उस दिन	उन से	आदमी	वास्ते हर एक	36	और अपने बेटे

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوْهٌ

और बहुत चेहरे	39	ख़ुशियां मनाते	हँसते	38	चमकते	उस दिन	बहुत चेहरे

يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ

वह	यही लोग	41	सियाही	छाई हुई	40	ग़ुबार	उन पर	उस दिन

ع ١ ٤٢ ٥ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

	42	गुनाहगार	काफ़िर	

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٨١) سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1	(81) सूरतुत तक्वीर लपेटना	आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

पहाड़	और जब	2	मांद पड़ जाएंगे	सितारे	और जब	1	लपेट दिया जाएगा	सूरज	जब

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ

वहशी जानवर	और जब	4	छुटी फिरेंगी	दस माह की गाभन ऊँटनियां	और जब	3	चलाए जाएंगे

حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

7	जोड़दी जाएंगी	जानें	और जब	6	भड़काए जाएंगे	दर्या	और जब	5	इकट्ठे किए जाएंगे

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे
क़ब्र में पहुंचाया। (21)
फिर जब चाहा उसे दोबारा
उठा खड़ा करे, (22)
उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो
(अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23)
पस चाहिए कि इन्सान देख ले
अपने खाने को, (24)
हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी
डाला, (25)
फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26)
फिर हम ने उस में उगाया
ग़ल्ला, (27)
और अंगूर और तरकारी। (28)
और ज़ैतून और खजूर। (29)
और बाग़ात घने, (30)
और मेवा और चारा, (31)
खोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों
के लिए। (32)
फिर जब आए कान फोड़ने
वाली। (33)
उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई
से, (34)
और अपनी माँ और अपने बाप, (35)
और अपनी बीवी और अपने बेटे
से। (36)
उस दिन उन में से हर एक आदमी
को (अपनी) फ़िक्र दूसरो से बेपरवा
कर देगी। (37)
उस दिन बहुत से चेहरे चमकते
होंगे, (38)
हँसते और ख़ुशियां मनाते। (39)
और उस दिन बहुत से चेहरों पर
ग़ुबार होगा। (40)
सियाही छाई हुई (होगी)। (41)
यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1)
और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2)
और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3)
और जब दस माह की गाभन
ऊँटनियां छुटी फिरेंगी, (4)
और जब वहशी जानवर इकट्ठे
किए जाएंगे, (5)
और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6)
और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी
जाएंगी, (7)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8) वह किस गुनाह में मारी गई? (9) और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10) और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11) और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12) और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी, (13) हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14) सो मैं क़सम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15) सीधे चलने वाले, छुप जाने वाले, (16) और रात की जब वह फैल जाए, (17) और सुबह की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18) बेशक यह (क़ुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले क़ासिद (फ़रिश्ते) का, (19) क़ुव्वत वाला, अ़र्श के मालिक के नज़्दीक बुलन्द मरतबा। (20) सब उस की इताअ़त करते हैं, फिर अमानतदार है। (21) और तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22) और उस (मुहम्मद स) ने उस (फ़रिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23) और वह (स) ग़ैब पर बुख़्ल करने वाले नहीं। (24) और यह (क़ुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25) फिर तुम किधर जा रहे हो? (26) यह नहीं है मगर (किताबे) नसीहत तमाम जहानों के लिए, (27) तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम जहानों का रब। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1) और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2) और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3) और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4) हर शख़्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

आमाल नामे	और जब	9	मारी गई	गुनाह	किस	8	पूछा जाएगा	ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की	और जब

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

12	भड़काई जाएगी	जहन्नम	और जब	11	खाल खींच ली जाएगी	आस्मान	और जब	10	खोले जाएंगे

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

14	वह लाया	जो कुछ	हर शख़्स	जान लेगा	13	क़रीब लाई जाएगी	जन्नत	और जब

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

17	फैल जाए	जब	और रात	16	छुप जाने वाले	सीधे चलने वाले	15	पीछे हट जाने वाले	सो मैं क़सम खाता हूँ

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾ ذِیْ قُوَّةٍ

क़ुव्वत वाला	19	इज़्ज़त वाला	क़ासिद	कलाम	बेशक यह	18	दम भरे	जब	और सुबह

عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

21	वहां का अमानतदार	सब का माना हुआ	20	बुलन्द मरतबा	अ़र्श के मालिक	नज़्दीक

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

23	खुला	उफ़ुक़ (किनारे) पर	और उस ने उस को देखा है	22	दीवाना	तुम्हारा रफ़ीक़	और नहीं

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ

शैतान	कहा हुआ	और नहीं	24	बुख़्ल करने वाला	ग़ैब पर	और नहीं वह

رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	नहीं यह	26	तुम जा रहे हो	फिर किधर	25	मर्दूद

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ

मगर	और तुम न चाहोगे	28	सीधा चले	कि	तुम से	चाहे	लिए-जो

اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ١ ٢٩ ٦

29	तमाम जहान	रब	अल्लाह	चाहे	यह कि

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ (٨٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (82) सूरतुल इंफ़ितार — फट जाना — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ

दर्या	और जब	2	झड़ पड़ेंगे	सितारे	और जब	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾

5	और पीछे छोड़ा	उस ने आगे भेजा	क्या	हर शख़्स	जान लेगा	4	कुरेदी जाएंगी	क़ब्रें	और जब	3	उबल पड़ेंगे (बह निकलेंगे)

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾ الَّذِىْ خَلَقَكَ

तुझे पैदा किया	जिस ने	6	करीम	अपने रब से	किस चीज़ ने तुझे धोका दिया	इन्सान	ऐ

فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِىْٓ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ

हरगिज़ नहीं बल्कि	8	तुझे जोड़ दिया	चाहा	जिस सूरत	में	7	फिर बराबर किया	फिर तुझे ठीक किया

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كٰتِبِيْنَ ﴿١١﴾

11	लिखने वाले	इज़्ज़त वाले	10	निगहबान	तुम पर	और बेशक	9	जज़ा ओ सज़ा का दिन	तुम झुटलाते हो

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾ وَّاِنَّ

और बेशक	13	जन्नत	में	नेक लोग	बेशक	12	जो तुम करते हो	वह जानते हैं

الْفُجَّارَ لَفِىْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ

और वह नहीं	15	रोज़े जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत)	डाले जाएंगे उस में	14	जहन्नम	में	गुनाहगार

عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ

क्या	फिर	17	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	और तुम्हें क्या ख़बर	16	ग़ाइब होने वाले	उस से

اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	कोई शख़्स	मालिक न होगा	जिस दिन	18	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	तुम्हें ख़बर

ع ١٩ ٧ الربع

شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

19	अल्लाह के लिए	उस दिन	और हुक्म	कुछ

آيَاتُهَا ٣٦ ❀ سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ (٨٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (83) सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन — आयात 36

नाप तोल में कमी करने वाले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

2	पूरा भरलें	लोग	पर (से)	जब माप कर लें	वह जो कि	1	कमी करने वालों के लिए	ख़राबी

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

कि वह	यह लोग	ख़याल करते	क्या नहीं	3	घटा कर दें	तोल कर दें	या	माप कर दें वह	और जब

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ

रब के सामने	लोग	खड़े होंगे	दिन	5	बड़ा	एक दिन	4	उठाए जाने वाले हैं

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِىْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

ख़बर है तुझे	और क्या	7	सिज्जीन	अलबत्ता में	बदकार	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं, बेशक	6	तमाम जहान

مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾

10	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	9	लिखी हुई	एक किताब	8	क्या है सिज्जीन

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्बे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया। (6)
जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)
जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)
और बेशक तुम पर निगहबान (मुक़र्रर) हैं, (10)
इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)
जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)
बेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)
और बेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)
उस में जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)
और वह उस से ग़ाइब न हो सकेंगे। (16)
और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)
फिर तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (18)
जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ख़राबी है कमी करने वालों के लिए, (1)
जो (लोगों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)
और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)
क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)
एक बड़े दिन, (5)
जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)
हरगिज़ नहीं, बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)
और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)
एक लिखी हुई किताब। (9)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए, (10)

जो लोग झुटलाते हैं रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11)
और उसे नहीं झुटलाता मगर हद से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12)
जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी आयतें तो कहेः यह पहलों की कहानियां हैं। (13)
हरगिज़ नहीं, बल्कि ज़ंग पकड़ गया है उन के दिलों पर (उस के सबब) जो वह कमाते थे। (14)
हरगिज़ नहीं, वह उस दिन अपने रब की दीद से रोक दिए जाएंगे। (15)
फिर बेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (16)
फिर कहा जाएगा कि यह वही है जिस को तुम झुटलाते थे। (17)
हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमाल नामा "इल्लियीन" में है। (18)
और तुझे क्या ख़बर कि इल्लियोन क्या है? (19)
एक किताब है लिखी हुई। (20)
(उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब (नज़्दीक वाले)। (21)
बेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22)
तख़्तों (मुसनदों) पर (बैठे) देखते होंगे, (23)
तू उन के चेहरों पर नेमत की तरोताज़गी पाएगा। (24)
उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब मुहर बन्द, (25)
उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई (से लगी हुई), और चाहिए कि बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने वाले इस में बाज़ी ले जाने की कोशिश करें। (26)
और उस में मिलावट है तस्नीम की, (27)
यह एक चश्मा है जिस से मुक़र्रब पीते हैं। (28)
बेशक जिन लोगों ने जुर्म किया (गुनाहगार) वह मोमिनों पर हँसते थे। (29)
और जब उन से हो कर गुज़रते तो आँख मारते। (30)
और जब अपने घर वालों की तरफ़ लौटते तो हँसते (बातें बनाते) लौटते। (31)
और जब उन्हें देखते तो कहतेः बेशक यह लोग गुमराह हैं, (32)
और वह उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ

हर	मगर	उस को	और नहीं झुटलाता	11	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	झुटलाते हैं	जो लोग

مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

कहानियां	कहे	हमारी आयतें	उस पर	पढ़ी जाती	जब	12	गुनाहगार	हद से बढ़ जाने वाला

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14	वह कमाते थे	जो	ज़ंग पकड़ गया है उन के दिल पर	बलकि	हरगिज़ नहीं	13	पहलों

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ

बेशक वह	फिर	15	देखने से महरूम रखे जाएंगे	उस दिन	अपना रब	से	बेशक वह	हरगिज़ नहीं

لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो कि	यह	कहा जाएगा	फिर	16	जहन्नम	दाख़िल होने वाले

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19	क्या इल्लियोन	तुझे ख़बर	और क्या	18	इल्लियीन	अलबत्ता में	नेक लोग	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं बेशक

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22	अल्बत्ता नेमत (आराम) में	नेक बन्दे	बेशक	21	नज़्दीक वाले	देखते हैं	20	लिखी हुई	एक किताब

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ

उन के चेहरे	में	तू पहचान लेगा	23	देखते होंगे	तख़्त (जमा)	पर

نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ

उस की मुहर	25	मुहर लगी हुई	ख़ालिस शराब	से	उन्हें पिलाई जाती है	24	तर ओ ताज़गी नेमत की

مِسْكٌ ۭ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	रग़बत करने वाले	चाहिए कि रग़बत (कोशिश) करें	उस	और में	मुश्क

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	मुक़र्रब	उस से	पीते हैं	एक चश्मा	27	तस्नीम	से	उस की आमेज़िश

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	हँसते	जो ईमान लाए (मोमिन)	से (पर)	थे	जुर्म किया उन्हों ने	वह लोग जो	बेशक

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى

तरफ़	वह लौटते	और जब	30	आँख मारते	उन से	गुज़रते	और जब

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ

बेशक	कहते	उन्हें देखते	और जब	31	हँसते (बातें बनाते)	लौटते	अपने घर वाले

هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

33	निगहबान	उन पर	और नहीं भेजे गए	32	गुमराह (जमा)	यह लोग

ع ٣٦ ٨

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى

पर	34	हँसते हैं	काफ़िर (जमा)	से (पर)	ईमान वाले	पस आज

الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	जो वह करते थे	काफ़िर (जमा)	सवाब मिल गया	क्या	35	देखते हैं	तख़्त

آيَاتُهَا ٢٥ ❀ (٨٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (84) सूरतुल इंशिक़ाक़ फट जाना — आयात 25

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह़म करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا

और जब	2	और इसी लाइक़ है	अपने रब का	और सुन लेगा	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ

और सुन लेगा	4	और ख़ाली हो जाएगी	जो उस में	और निकाल डालेगी	3	फैलादी जाएगी	ज़मीन

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

अपने रब की तरफ़	आगे बढ़ने वाला	बेशक तू	इन्सान	ऐ	5	और इसी लाइक़ है	अपने रब का

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

7	उस के दाएं हाथ में	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	पस	6	फिर उस को मिलना है	मशक़्क़त

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ

अपने लोग	तरफ़	और लौटेगा	8	आसान	हिसाब	हिसाब लिया जाएगा	पस अ़नक़रीब

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

पस अ़नक़रीब	10	उस की पुश्त	पीछे	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	और वह	9	ख़ुश ख़ुश

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ

अपने लोग	में	था	बेशक वह	12	आग	और दाख़िल होगा	11	मौत	मांगेगा

معانقة ١٨ عند المتأخرين ١٢

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰۤى اِنَّ رَبَّهٗ

बेशक उस का रब	क्यों नहीं	14	हरगिज़ न लौटेगा	कि	गुमान किया	बेशक वह	13	ख़ुश ओ ख़ुर्रम

كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا

और जो	और रात	16	शाम की सुर्ख़ी	सो मैं क़सम खाता हूँ	15	देखने वाला	उस को	था

وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا

सो क्या	19	दर्जा	से	एक दर्जा	तुम को ज़रूर चढ़ना है	18	वह मुकम्मल हो जाए	जब	और चाँद	17	सिमट आती है

السجدة ١٣

لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह सिजदा नहीं करते	क़ुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	20	वह ईमान नहीं लाते	उन्हें

पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते हैं। (34)
तख़्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35)
क्या मिल गया काफ़िरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह़म करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1)
और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक़ है, (2)
और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3)
और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और ख़ाली हो जाएगी, (4)
और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक़ है। (5)
ऐ इन्सान, बेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ़ मशक़्क़त उठाते, फिर उस को मिलना है। (6)
पस जिस को उस का आमाल नामा दाएं हाथ में दिया गया, (7)
पस उस से अ़नक़रीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8)
और वह अपने लोगों की तरफ़ ख़ुश ख़ुश लौटेगा। (9)
और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10)
वह अ़नक़रीब मौत मांगेगा, (11)
और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12)
बेशक वह अपने लोगों में ख़ुश ओ ख़ुर्रम था। (13)
उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14)
क्यों नहीं? उस का रब बेशक उसे देखता था। (15)
सो मैं क़सम खाता हूँ शाम की सुर्ख़ी की, (16)
और रात की और जो सिमट आती है। (17)
और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18)
तुम को दर्जा ब दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19)
सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20)
और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिजदा नहीं करते। (21)

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

23	भर रखते हैं	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	22	झुटलाते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर)	बल्कि

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उन्हों ने काम किए	जो लोग ईमान लाए	सिवाए	24	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	सो उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾ ع ٢٥ ٩

25	न ख़तम होने वाला	अजर	उन के लिए	अच्छे

اٰيَاتُهَا ٢٢ ❀ (٨٥) سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (85) सूरतुल बुरूज — तारे और सय्यारे | आयात 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

और देखने वाले	2	वादा किए हुए	और दिन की	1	बुर्जों वाला	क़सम आस्मान की

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

5	ईंधन वाली	आग	4	गढ़े वाले	हलाक कर दिए गए	3	और देखी जाने वाली

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

वह करते थे	जो	पर	और वह	6	बैठे थे	उस पर	जब वह

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	वह ईमान लाए	कि	मगर	उन से	और नहीं बदला लिया	7	देखते	मोमिनों के साथ

الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस के लिए	वह जो कि	8	तारीफ़ों वाला	ग़ालिब

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिन मर्द (जमा)	तक्लीफ़ें दीं	वह जो	बेशक	9	सामने (बाख़बर)	चीज़	हर	पर	और अल्लाह

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

अ़ज़ाब	और उन के लिए	जहन्नम	अ़ज़ाब	तो उन के लिए	उन्हों ने तौबा न की	फिर	और मोमिन औरतें

الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

बाग़ात	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	10	जलना

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾ اِنَّ

बेशक	11	बड़ी	कामयाबी	यह	नहरें	उन के नीचे	से	जारी हैं

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾

13	और लौटाता है	पहली बार पैदा करता है	वही	बेशक वह	12	बड़ी सख़्त	तुम्हारा रब	पकड़

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22) और अल्लाह खूब जानता है जो वह (दिलों में) भर रखते हैं, (23) सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना। (24) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किए, उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (25)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बुर्जों वाले आस्मान की क़सम, (1) और वादा किए हुए दिन की, (2) और देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की। (3) हलाक कर दिए गए ख़न्दक़ों वाले, (4) (उन ख़न्दक़ों वाले) जिन में ईंधन की आग थी, (5) जब वह उस पर बैठे थे, (6) और जो मोमिनों के साथ करते थे (अपनी आँखों से) देखते थे। (7) और उन्हों ने (मोमिनों से) बदला नहीं लिया मगर इस बात का कि वह ईमान लाए अल्लाह पर जो ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8) जिस की बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर बाख़बर है। (9) बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को तक्लीफ़ें दीं, फिर उन्हों ने तौबा न की तो उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिए जलने का अ़ज़ाब है, (10) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी है। (11) बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12) बेशक वही पहली बार पैदा करता है और (वही) लौटाता है। (13)

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا

जो	कर डालने वाला	15	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	अ़र्श वाला (मालिक)	14	मुहब्बत वाला	बख़्शने वाला	और वह

يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾

18	और समूद	फ़िरऔ़न	17	लशकर (जमा)	बात	तुझ को आई (पहुँची)	क्या	16	वह चाहे

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾

20	घेरे हुए	उन को हर तरफ़	से	और अल्लाह	19	झुटलाना	में	उन्हो ने कुफ़्र किया	वह जो कि	बल्कि

ع ٢٢ ١٠

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

22	महफ़ूज़	लौहे	में	21	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	कुरआन	यह	बल्कि

اٰيَاتُهَا ١٧ ❀ سُوْرَةُ الطَّارِقِ (٨٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (86) सूरतुत तारिक़ चमकता हुआ सितारा — आयात 17

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾

2	क्या है तारिक़	और तुम ने क्या समझा	1	और रात को आने वाली की	क़सम है आस्मान की

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

4	निगहबान	उस पर	मगर	जान	कोई	नहीं	3	चमकता हुआ	सितारा

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

6	उछलता हुआ	पानी	से	पैदा किया गया	5	पैदा किया गया है	किस चीज़ से	इन्सान	चाहिए कि देखे

يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ

उस को दोबारा लौटाना	पर	बेशक वह	7	और सीना	पीठ	दरमियान	से	निकलता है

لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ

कुव्वत	से	तो न उस के लिए	9	राज़	जांचे जाएंगे	दिन	8	क़ादिर

وَّلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन की	11	बारिश वाला	क़सम आस्मान की	10	मददगार	और न

ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

14	बेहूदा बात	यह	और नहीं	13	फ़ैसला कर देने वाला	कलाम	बेशक यह	12	फट जाने वाली

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िर (जमा)	पस ढील दो	16	एक तदबीर	और मैं तदबीर करता हूँ	15	तदबीर	तदबीर करते है	बेशक वह

ع ١٧ ١١

اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

17	थोड़ी	ढील दो उन्हें

और वही बख़्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14)
अ़र्श का मालिक बड़ी बुज़ुर्गी वाला, (15)
जो चाहे कर डालने वाला। (16)
क्या तुम्हारे पास लशकरों की बात (ख़बर) पहुँची, (17)
फ़िरऔ़न और समूद की। (18)
बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19)
और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20)
बल्कि यह कुरआन बड़ी बुज़ुर्गी वाला है, (21)
लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ)। (22)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है आस्मान की और "तारिक़" (रात को आने वाले) की। (1)
और तुम ने क्या समझा कि "तारिक़" क्या है? (2)
चमकता हुआ सितारा। (3)
कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहबान न हो। (4)
और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5)
वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6)
जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7)
बेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर क़ादिर है। (8)
जिस दिन (लोगों के) राज़ जांचे जाएंगे। (9)
तो न उसे (इन्सान को) कोई कुव्वत होगी और न मददगार। (10)
क़सम आस्मान की, बारिश वाला। (11)
और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12)
बेशक यह कलाम है फ़ैसला कर देने वाला, (13)
और यह हंसी मज़ाक़ नहीं। (14)
बेशक वह (उल्टी उल्टी) तदबीरें करते हैं, (15)
और मैं (भी) एक तदबीर करता हूँ। (16)
पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1)
जिस ने पैदा किया फिर ठीक किया, (2)
और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3)
और जिस ने चारा उगाया, (4)
फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया। (5)
हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6)
मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7)
और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8)
पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9)
जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10)
और उस से बदबख़्त पहलू तही करेगा, (11)
जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12)
फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13)
यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14)
और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15)
बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16)
और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (17)
बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18)
इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क़ियामत) की बात पहुँची। (1)
कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2)
अ़मल करने वाले, मुशक़्क़त उठाने वाले। (3)
दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4)
खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5)
न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6)
जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاَعْلٰى (٨٧) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (87) सूरतुल आला — सब से बुलन्द — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ ١ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ ٢ وَالَّذِىْ قَدَّرَ

और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया	2	फिर ठीक किया	पैदा किया	जिस ने	1	सब से बुलन्द	अपना रब	नाम	पाकीज़गी बयान कर

فَهَدٰى ۙ ٣ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ ٤ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ؕ ٥

5	सियाह	ख़ुश्क	फिर उसे कर दिया	4	चारा	निकाला (उगाया)	और जिस ने	3	फिर राह दिखाई

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ ٦ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

और जो	ज़ाहिर	जानता है	बेशक वह	अल्लाह चाहे	जो	मगर	6	फिर न भूलेंगे आप	हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को

يَخْفٰى ؕ ٧ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ ۖ ٨ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ ٩ سَيَذَّكَّرُ

जल्द समझ जाएगा	9	समझाना	नफ़ा दे	अगर	पस समझा दें	8	आसान तरीक़ा	और हम आप (स) को सहूलत देंगे	7	पोशीदा

مَنْ يَّخْشٰى ۙ ١٠ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ ١١ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ١٢

12	बहुत बड़ी	आग	दाख़िल होगा	जो	11	बद बख़्त	और पहलू तही करेगा उस से	10	डरता है	जो

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ؕ ١٣ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ ١٤ وَذَكَرَ اسْمَ

नाम	और याद किया	14	पाक हुआ	जो	यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई	13	और न जिएगा	उस में	न मरेगा वह	फिर

رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ ١٥ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ ١٦ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

बेहतर	और आख़िरत	16	दुनिया	ज़िन्दगी	बढ़ाते हो (तरजीह)	बल्कि	15	फिर नमाज़ पढ़ी	अपना रब

وَّاَبْقٰى ؕ ١٧ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ ١٨ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۧ ١٩ ع ١٩ / ١٢

19	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	सहीफ़े	18	पहले सहीफ़े	में	बेशक यह	17	और बाक़ी रहने वाली

آيَاتُهَا ٢٦ ❀ سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ (٨٨) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (88) सूरतुल ग़ाशिया — छा जाने वाली — आयात 26

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ؕ ١ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۙ ٢ عَامِلَةٌ

अ़मल करने वाले	2	ज़लील ओ आजिज़	उस दिन	कितने मुँह	1	ढांपने वाली	बात	क्या तुम्हारे पास आई

نَّاصِبَةٌ ۙ ٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ ٤ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ ٥ لَيْسَ

नहीं	5	खौलता हुआ	चश्मा	से	पिलाए जाएंगे	4	दहकती हुई	आग	दाख़िल होंगे	3	मुशक़्क़त उठाने वाले

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ ٦ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ؕ ٧

7	भूक	से	न बेनियाज़ करेगी	न मोटा करेगी	6	ख़ारदार घास	से	मगर	खाना	उन के लिए

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ

बाग़	में	9	खुश खुश	अपनी कोशिश से	8	तर ओ ताज़ा	उस दिन	कितने मुँह

وقف لازم

عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا

उस में	12	बहता हुआ	चश्मा	उस में	11	बेहूदा बकवास	उस में	वह न सुनेंगे	10	बुलन्द

سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ

और गद्दे	14	चुने हुए	और कटोरे	13	ऊँचे ऊँचे	तख़्त

مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ

ऊँट	तरफ़	क्या वह नहीं देखते?	16	बिखरे हुए	और क़ालीन	15	तरतीब से लगे हुए

كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ

पहाड़ (जमा)	और तरफ़	18	बुलन्द किया गया	कैसे	आस्मान	और तरफ़	17	वह पैदा किया गया	कैसे

كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

20	बिछाई गई	कैसे	ज़मीन	और तरफ़	19	खड़े किए गए	कैसे

فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

22	दारोग़ा	उन पर	नहीं आप	21	समझाने वाले	आप	सिर्फ़	पस समझाते रहें

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

24	बड़ा	अ़ज़ाब	पस उसे अ़ज़ाब देगा अल्लाह	23	और कुफ़्र किया	मुँह मोड़ा	जो- जिस	मगर

ع ٢٦ النصف ١٣

اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

26	उन का हिसाब	हम पर	बेशक	फिर	25	उन का लौटना	हमारी तरफ़	बेशक

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ الْفَجْرِ (٨٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (89) सूरतुल फ़ज्र — सुबह सवेरा — आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا

जब	और रात की	3	और ताक़ की	और जुफ़्त की	2	दस	और रातों की	1	क़सम फ़ज्र की

يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ

मामला किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा	5	हर अ़क़्लमन्द के नज़्दीक	क़सम	इस	में	क्या	4	चले

رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا

उस जैसा	नहीं पैदा किया गया	वह जो	7	सुतूनों वाले	इरम	6	आ़द के साथ	तुम्हारा रब

فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

9	वादी में	काटे (तराशे) सख़्त पत्थर	जिन्हों ने	और समूद	8	शहरों में

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से खुश खुश, (9) बुलन्द बाग़ में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख़्त हैं, (13) और आबख़ोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और क़ालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ़ कि वह कैसे पैदा किए गए। (17) और आस्मान की तरफ़ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे बिछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ़ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोग़ा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़्र किया (मुन्किर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अ़ज़ाब देगा बहुत बड़ा अ़ज़ाब। (24) बेशक उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, (25) फिर बेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम फ़ज्र की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ़्त और ताक़ की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) क़सम हर अ़क़्लमन्द के नज़्दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आ़द के साथ, (6) इरम के सुतूनों वाले, (7) उस जैसी क़ौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई। (8) और समूद के साथ जिन्हों ने वादी में सख़्त पत्थर तराशे, (9)

और कीलों वाले फ़िरऔ़न के साथ, (10)
जिन्हों ने शहरों में सरकशी की, (11)
फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। (12)
पस उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। (13)
बेशक तुम्हारा रब घात में है। (14)
पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इ़ज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी। (15)
और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। (16)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते, (17)
और रग़बत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, (18)
और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, (19)
और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। (20)
हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, (21)
और आए तुम्हारा रब और (आएं) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। (22)
और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? (23)
कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अ़मल) भेजा होता। (24)
पस उस दिन उस जैसा अ़ज़ाब कोई न देगा, (25)
न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। (26)
ऐ रूहे मुत्मइन (इत्मीनान वाली)। (27)
लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, (28)
पस दाखि़ल हो जा मेरे बन्दों में। (29)
और दाखि़ल हो जा मेरी जन्नत में। (30)

وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ١٠ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ١١

11	शहरों में	सरकशी की	वह जिन्हों ने	10	कीलों वाला	और फ़िरऔ़न

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ١٢ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

कोड़ा	तुम्हारा रब	उन पर	पस बरसा दिया	12	फ़साद	उस में	बहुत किया

عَذَابٍ ١٣ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ١٤ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا

जब	इन्सान	पस जो	14	घात में	तुम्हारा रब	बेशक	13	अ़ज़ाब

مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَكْرَمَنِ ١٥

15	मुझे इ़ज़्ज़त दी	मेरा रब	तो वह कहे	और उसे नेमत दे	उस को इ़ज़्ज़त दे	उस का रब	उस को आज़माए

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ

मेरा रब	तो वह कहे	उस का रिज़्क़	उस पर	अन्दाज़े से देता है	उसे आज़माए	और जब

اَهَانَنِ ١٦ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ١٧ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ

और रग़बत नहीं देते	17	यतीम	इ़ज़्ज़त नहीं करते	हरगिज़ नहीं, बल्कि	16	मुझे ज़लील किया

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ١٨ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ١٩

19	खाना समेट कर	माले मीरास	और तुम खाते हो	18	मिस्कीन	खाना	पर

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ٢٠ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	पस्त कर दी जाएगी	हरगिज़ नहीं जब	20	बहुत	मुहब्बत	माल	और मुहब्बत करते हो

دَكًّا دَكًّا ٢١ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ٢٢ وَجِايْٓءَ

और लाई जाए	22	क़तार दर क़तार	और (आएं) फ़रिश्ते	तुम्हारा रब	और आएगा	21	कूट कूट कर

يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ

उस के लिए	और कहां	इन्सान	सोचेगा	उस दिन	जहन्नम में	उस दिन

الذِّكْرٰى ٢٣ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِىْ ٢٤ فَيَوْمَئِذٍ

पस उस दिन	24	अपनी ज़िन्दगी के लिए	मैं ने पहले भेजा होता	ऐ काश	वह कहेगा	23	सोचना

لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ٢٥ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ

उस का बान्धना	और न बान्ध कर रखे	25	कोई	उस का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब न देगा

اَحَدٌ ٢٦ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ٢٧ ارْجِعِىْٓ اِلٰى

तरफ़	लौट चल	27	मुत्मइन	नफ़्स	ऐ	26	कोई

رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ٢٨ فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ٢٩

29	मेरे बन्दे	में	पस दाखि़ल हो	28	वह तुझ से राज़ी	राज़ी	अपने रब

وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ٣٠ ع ١ / ١٤

	30	मेरी जन्नत	और दाखि़ल हो	

آيَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْبَلَدِ (٩٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1	(90) सूरतुल बलद शहर	आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ

और वालिद की	2	शहर	इस	हलाल कर लिया गया	और आप (स)	1	शहर	इस	नहीं-मैं क़सम खाता हूँ

وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِىْ كَبَدٍ ﴿٤﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ

हरगिज़ बस नहीं चलेगा	कि	क्या वह गुमान करता है	4	मुशक़्क़त में	इन्सान	तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	3	और औलाद

وقف لازم
عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ

उस को नहीं देखा	कि	क्या वह गुमान करता है	6	ढेरों	माल	उड़ा दिया	वह कहता है	5	किसी	उस पर

اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ

और हम ने उसे दिखाए	9	और दो होंट	और ज़बान	8	दो आँखें	उस के लिए	हम ने बनाया	क्या नहीं	7	किसी

النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ

छुड़ाना	12	अक़्बा	क्या	तुम समझे	और क्या	11	घाटी	पस न दाख़िल हुआ वह	10	दो रास्ते

رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِىْ يَوْمٍ ذِىْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

15	क़राबतदार	यतीम	14	भूक वाले	दिन	में	खाना खिलाना	या	13	गर्दन (असीर)

اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا

और बाहम वसीयत की	जो ईमान लाए	से	हो	फिर	16	ख़ाक नशीन	मिस्कीन	या

بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

18	सीधे हाथ वाले (ख़ुश नसीब)	वह (यही) लोग	17	रहम खाने की	और बाहम नसीहत की	सब्र की

ع ١/٢٠ ١٥
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

20	मुंदी (बन्द) की हुई	आग	उन पर	19	बाएं हाथ वाले (बद बख़्त)	वह	हमारी आयात	और जिन लोगों ने इन्कार किया

آيَاتُهَا ١٥ ❀ سُوْرَةُ الشَّمْسِ (٩١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1	(91) सूरतुश शम्स सूरज	आयात 15

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا

जब	और दिन की	2	उस के पीछे निकले	जब	और चाँद की	1	और उस की रोशनी	सूरज की क़सम

جَلّٰىهَا ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

5	उसे बनाया	और जिस	और आस्मान की	4	उसे ढांप दे	जब	और रात की	3	वह रोशन करदे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

नहीं, मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ, (1)
और आप (स) को इस शहर में हलाल कर लिया गया है, (2)
और (क़सम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3)
तहक़ीक़ हम ने इन्सान को मुशक़्क़त में (गिरफ़्तार) पैदा किया। (4)
क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ किसी का बस नहीं चलेगा? (5)
वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6)
क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7)
क्या हम ने नहीं बनाईं? उस की दो आँखें, (8)
और ज़बान और दो होंट, (9)
और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10)
पस वह दाख़िल न हुआ "अक़्बा" (घाटी) में। (11)
और तुम क्या मझे कि "अक़्बा" क्या है? (12)
गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13)
या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14)
क़राबतदार (रिश्तेदार) यतीम को, (15)
या ख़ाक नशीन मिस्कीन को। (16)
फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्हों ने बाहम वसीयत की सब्र की और बाहम रहम खाने की। (17)
यही लोग हैं ख़ुश नसीब। (18)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख़्त लोग हैं। (19)
उन पर आग मुंदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1)
और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2)
और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)
और रात की जब वह उसे ढांप ले, (4)
और क़सम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿٦﴾ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿٧﴾ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا

उस का गुनाह	उस के दिल में डाली	7	उसे दुरुस्त किया	और जिस	और नफ़्स (इन्सान) की	6	उसे फैलाया	और जिस	और ज़मीन की

وَتَقْوٰىهَا ﴿٨﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ﴿٩﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾

10	उसे ख़ाक में मिलाया	जो	और तहक़ीक़ नामुराद हुआ	9	उस को पाक किया	जो	कामयाब हुआ	8	और उस की परहेज़गारी

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ

उन से	तो कहा	12	उस का बद बख़्त	उठ खड़ा हुआ	जब	11	अपनी सरकशी	समूद	झुटलाया

رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ۬ فَدَمْدَمَ

फिर हलाकत डाली	फिर उस की कूंचे काट डालीं	फिर उस को झुटलाया	13	और उस की पानी की बारी	अल्लाह की ऊँटनी	अल्लाह का रसूल

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾ ع ١٥ ١٦

15	उस का अन्जाम	और वह नहीं डरता	14	फिर उन्हें बराबर कर दिया	उन के गुनाह के सबब	उन का रब	उन पर

آيَاتُهَا ٢١ ❀ (٩٢) سُوْرَةُ الَّيْلِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1	(92) सूरतुल लैल रात	आयात 21

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ﴿٢﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

नर	और जो उस ने पैदा किया	2	जब वह रोशन हो	और दिन की	1	वह ढांप ले	जब	रात की क़सम

وَالْاُنْثٰٓى ﴿٣﴾ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ﴿٤﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿٥﴾

5	और परहेज़गारी इख़्तियार की	दिया	जिस	सो जो	4	मुख़्तलिफ़	तुम्हारी कोशिश	बेशक	3	और मादा

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿٦﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا

और जो	7	आसानी	पस अ़नक़रीब उसे आसान कर देंगे	6	अच्छी बात को	और सच जाना

مَنْ ۢبَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿٨﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ﴿٩﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ

पस अनक़रीब उसे आसान कर देंगे	9	अच्छी बात को	और झुटलाया	8	और बेपरवाह रहा	जिस ने बुख़्ल किया

لِلْعُسْرٰى ﴿١٠﴾ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ﴿١١﴾ اِنَّ عَلَيْنَا

बेशक हम पर (हमारा ज़िम्मा)	11	जब नीचे गिरेगा वह	उस का माल	उस को	और न फ़ाइदा देगा	10	दुश्वारी-सख़्ती

لَلْهُدٰى ﴿١٢﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٣﴾ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا

आग	पस मैं तुम्हें डराता हूँ	13	और दुनिया	आख़िरत	हमारे लिए	और बेशक	12	अलबत्ता राह दिखाना

تَلَظّٰى ﴿١٤﴾ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٥﴾ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٦﴾

16	और मुँह मोड़ा	जिस ने झुटलाया	15	इन्तिहाई बद बख़्त	मगर	न दाख़िल होगा उस में	14	भड़कती हुई

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾

18	पाक करने को	अपना माल	देता है	जो	17	बड़ा परहेज़गार	और अ़नक़रीब उस से बचा लिया जाएगा

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6) और इन्सान की और जिस ने उसे दुरुस्त किया, (7) फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8) तहक़ीक़ कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9) और तहक़ीक़ नामुराद हुआ जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया। (10) समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11) जब उन का बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। (12) तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहा: (ख़बरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13) फिर उन्हों ने उस को झुटलाया और उस की कूंचे काट डालीं, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14) और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

रात की क़सम जब वह ढांप ले, (1) और दिन की जब वह रोशन हो, (2) और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3) बेशक तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं। (4) सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की, (5) और अच्छी बात को सच जाना, (6) पस हम अ़नक़रीब उस के लिए आसानी (की तौफ़ीक़) कर देंगे। (7) और जिस ने बुख़्ल किया और बेपरवाह रहा। (8) और झुटलाया अच्छी बात को, (9) पस हम अ़नक़रीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे। (10) और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11) बेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12) और बेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13) पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़कती हुई आग से। (14) उस में सिर्फ़ बदबख़्त दाख़िल होगा, (15) जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16) और अ़नक़रीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17) जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿١٩﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ

रज़ा	चाहता है	सिर्फ़	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर	और नहीं किसी के लिए

ع ١ ٢١ ١٧ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

	21	राज़ी होगा	और अनक़रीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब	

آيَاتُهَا ١١ ❀ (٩٣) سُوْرَةُ الضُّحٰى ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (93) सूरतुध धुहा — रोज़े रोशन — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

3	बेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब	और रात की	1	क़सम है धूप चढ़ने की (आफ़ताब)

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

आप का रब	आप (स) को अ़ता करेगा	और अनक़रीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	बेहतर	और आख़िरत

فَتَرْضٰى ﴿٥﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

बेख़बर	और आप (स) को पाया	6	पस ठिकाना दिया	यतीम	आप (स) को पाया	क्या नहीं	5	आप राज़ी हो जाएंगे

فَهَدٰى ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

9	तो क़हर न करें	यतीम	पस जो	8	तो ग़नी कर दिया	मुफ़लिस	और आप (स) को पाया	7	तो हिदायत दी

ع ١ ١١ ١٨ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

11	सो इज़हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला	और जो

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٤) سُوْرَةُ الشَّرْحِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (94) सूरतुश शर्ह — खोलना — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾

2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	खोल दिया	क्या नहीं

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَاِنَّ مَعَ

साथ	पस बेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुश्त	तोड़ दी	जो-जिस

الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾

7	मेहनत करें	आप (स) फ़ारिग़ हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	बेशक	5	आसानी	दुश्वारी

ع ١ ٨ ١٩ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾

	8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ़	

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अ़नक़रीब राज़ी होगा। (21)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है आफ़ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न बेज़ार हुआ। (3) और आख़िरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अ़नक़रीब आप (स) को आप का रब अ़ता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर क़हर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़हार करें। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग़ हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की, (1)
और तूरे सीना की, (2)
और इस अम्न वाले शहर की, (3)
अलबत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त में पैदा किया। (4)
फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (6)
पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोज़े जज़ा ओ सज़ा के मामले में? (7)
क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)
इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया, (2)
पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)
जिस ने क़लम से सिखाया, (4)
इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)
हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)
इस वजह से कि वह अपने आप को बे नियाज़ देखता है। (7)
बेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)
क्या तुम ने उसे देखा जो रोक्ता है। (9)
एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े। (10)
भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)
या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)
भला देखो, अगर (यह रोक्ने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)
क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)
हरगिज़ नहीं, अगर बाज़ न आया तो पेशानी के बालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)
झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)
तो बुला ले अपनी मज्लिस (जत्थे) को, (17)

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ التِّيْنِ (٩٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (95) सूरतुत तीन — अंजीर — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿٣﴾

3	अम्न वाला	शहर	और इस	2	और तूरे सीना की	1	और ज़ैतून की	क़सम है अंजीर की

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿٤﴾ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

सब से नीचा	हम ने उसे लौटा दिया	फिर	4	सांचा (साख़्त)	बेहतरीन	में	इन्सान	अलबत्ता हम ने पैदा किया

سٰفِلِيْنَ ﴿٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٦﴾

6	ख़तम होने वाला	न	अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल किए	ईमान लाए	सिवाए जो लोग	5	नीचों वाला

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ﴿٧﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨﴾ ع ٨/٢٠

8	तमाम हाकिम	सब से बड़ा हाकिम	क्या नहीं अल्लाह	7	दीन के मामले में	इस के बाद	पस कौन आप (स) को झुटलाएगा

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْعَلَقِ (٩٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (96) सूरतुल अ़लक़ — जमा हुआ खून — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾

2	जमा हुआ खून	से	इन्सान	पैदा किया	1	पैदा किया	जिस ने	अपना रब	नाम से	पढ़िए

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ

इन्सान	सिखाया	4	क़लम से	सिखाया	वह जिस ने	3	बड़ा करीम	और आप का रब	पढ़िए

مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ﴿٦﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿٧﴾ اِنَّ

बेशक	7	बे नियाज़	कि अपने तईं देखे	6	सरकशी करता है	इन्सान	हरगिज़ नहीं बेशक	5	वह जानता था	जो न

اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿٨﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿١٠﴾

10	वह नमाज़ पढ़े	जब	एक बन्दा	9	रोकता है	वह जो	क्या आप ने देखा	8	लौटना है	अपना रब	तरफ़

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ

अगर	भला देखो	12	परहेज़गारी का	या हुक्म देता	11	हिदायत	पर	हो	अगर	भला देखो

كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ

न बाज़ आया	अगर	हरगिज़ नहीं	14	देख रहा है	कि अल्लाह	क्या न जाना	13	और मुँह मोड़ता	झुटलाता

لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾

17	अपनी मज्लिस	तो वह बुला ले	16	गुनाहगार	झूटी	पेशानी	15	पेशानी के बालों से	हम ज़रूर घसीटेंगे

ع ١٩ السجدة ١٤ ٢١

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۭ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾ ۩

19	और नज़दीक हो	और सिजदा कर तू	उस की बात न मान	नहीं नहीं	18	प्यादे	हम बुलाते हैं

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18) नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज़्दीकी हासिल करें। (19)

آيَاتُهَا ٥ ❀ (٩٧) سُوْرَةُ الْقَدْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(97) सूरतुल क़द्र ताक़त, बा इज़्ज़त	आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

2	लैलतुलक़द्र	क्या	आप ने समझा	और क्या	1	लैलतुलक़द्र (इज़्ज़त वाली रात)	में	हम ने यह उतारा	बेशक

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

وقف النبي ﷺ

उस में	और रूह	फ़रिश्ते	उतरते हैं	3	हज़ार महीने	से	बेहतर	लैलतुलक़द्र

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

ع ٥ ٢٢ الثالثة

معانقة ١٨ عند المتاخرين ١٢

5	फ़ज्र (सुबह)	तुलूअ़ होना	जब तक	वह	सलामती	4	काम	हर	से	उन का रब	हुक्म से

बेशक हम ने यह (क़ुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1) और आप क्या जानें कि "लैलतुलक़द्र" क्या है? (2) लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, (3) इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4) तुलूअ़ फ़ज्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(98) सूरतुल बैय्यिना खुली दलील	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

बाज़ आने वाले	और मुश्रिकीन	अहले किताब	से	कुफ़्र किया	वह जो	न थे

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

2	पाक	सहीफ़े	पढ़ता हुआ	अल्लाह (की तरफ़) से	रसूल	1	खुली दलील	आए उन के पास	यहां तक कि

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

मगर	वह जो कि किताब दिए गए (अहले किताब)	फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हुए	और न	3	लिखे हुए मज़्बूत (तहरीर)	उस में

مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ

यह कि इबादत करें अल्लाह की	मगर	हुक्म दिया गया	और न	4	खुली दलील	जब उन के पास आगई	उस के बाद

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करें	नमाज़	और क़ाइम करें	यक रुख़	दीन	उस के लिए	ख़ालिस करते हुए

وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	5	निहायत मज़्बूत	दीन	और यह

وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾

6	मख़्लूक़	बदतरीन	वह	यही लोग	उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम	आग	में	और मुश्रिकीन

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, बाज़ आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1) अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े पढ़ता हुआ, (2) जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3) और अहले किताब फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4) और उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक रुख़ हो कर, और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़्बूत दीन है। (5) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वह जहन्नम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़्लूक़ हैं। (6)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾

7	मख़्लूक़	बेहतरीन	वह	यही लोग	और उन्हों ने अ़मल किए नेक	जो लोग ईमान लाए	बेशक

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	हमेशा रहने वाले	बाग़ात	उन का रब	पास	उन की जज़ा

فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهٗ ﴿٨﴾ ع ٨ ٢٣

8	अपना रब	डरे	उस के लिए जो	यह	उस से	और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	हमेशा हमेशा	उस में

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ (٩٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 8 — (99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल, भौंचाल, ज़लज़ला — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾

2	अपने बोझ	ज़मीन	और बाहर निकाल डाले	1	उस का ज़ल्ज़ला	ज़मीन	हिला डाली जाए	जब

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ

क्यों कि	4	अपनी ख़बरें (हालात)	बयान करेगी	उस दिन	3	इसे क्या हो गया?	इन्सान	और कहेगा

رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا

ताकि दिखाए	मुख़्तलिफ़ गिरोहों	लोग	बाहर निकलेंगे	उस दिन	5	उस को	हुक्म भेजा	तेरा रब

اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾

7	उस को देखेगा	नेकी	एक ज़र्रा	बराबर	की होगी	पस जिस ने	6	उन के आमाल

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾ ع ٨ ٢٤

8	उस को देखेगा	बुराई	एक ज़र्रा	बराबर	की होगी	और जिस ने

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ (١٠٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 11 — (100) सूरतुल आ़दियात, दौड़ने वाले घोड़े — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿٣﴾

3	सुबह को	ग़ारतगिरी करने वाले	2	(सुम) झाड़ कर	चिंगारियां उड़ाने वाले	1	हांपने वाले	क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿٥﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

अपने रब का	इन्सान	बेशक	5	मज्मा	उस से	फिर जा घुसें	4	गर्द	उस से	फिर उड़ाएं

لَكَنُوْدٌ ﴿٦﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿٧﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿٨﴾

8	अलबत्ता सख़्त	माल ओ दौलत	मुहब्बत में	और बेशक वह	7	गवाह	और बेशक वह उस पर	6	नाशुक्रा

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। (7) उन की जज़ा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब ज़मीन ज़ल्ज़ले से हिला दी जाएगी, (1)
और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)
और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)
उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)
क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)
उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आमाल उन्हें दिखाए जाएं। (6)
पस जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर नेकी वह उसे देख लेगा। (7)
और जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर बुराई वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)
(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)
सुबह के वक़्त (शब खून मार कर) ग़ारतगिरी करने वालों की, (3)
फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)
फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)
बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)
और बेशक वह उस पर गवाह है। (7)
और बेशक वह माल की मुहब्बत में सख़्त है। (8)

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ﴿١٠﴾

10	सीने (दिल)	में	जो	और सामने आजाएगा	9	क़ब्रों	में	जो	उठाए जाएंगे	जब	वह जानता	पस क्या नहीं

ع ١١ ١ ٢٥ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَىٕذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11	ख़ूब बाख़बर	उस दिन	उन से	उन का रब	बेशक

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ (١٠١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(101) सूरतुल क़ारिआ़ खड़खड़ाने वाली	आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾

3	क्या है खड़खड़ाने वाली	तुम समझे	और क्या	2	क्या है खड़खड़ाने वाली	1	खड़खड़ाने वाली

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	4	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	होंगे	जिस दिन

كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٦﴾

6	उस के वज़न	भारी हुए	जो	पस जो	5	धुन्की हुई	रंगीन ऊन की मानिंद

فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٨﴾

8	उस के वज़न	हल्के हुए	जो	और जो	7	पसंदीदा	ऐश ओ आराम	में	सो वह

ع ١١ ١ ٢٦ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

11	दहकती हुई	आग	10	क्या है वह?	और तुम क्या समझे	9	हाविया	तो उस का ठिकाना

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ (١٠٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(102) सूरतुत तकासुर कस्रत की ख़्वाहिश	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ

अ़नक़रीब	हरगिज़ नहीं	2	क़ब्रें	तुम ने ज़ियारत की	यहां तक कि	1	कस्रत की ख़्वाहिश	तुम्हें ग़फ़्लत में रखा

تَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

काश तुम जानते	हरगिज़ नहीं	4	तुम जान लोगे	जल्द	हरगिज़ नहीं	फिर	3	तुम जान लोगे

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿٧﴾

7	यक़ीन की आँख	ज़रूर उसे देखोगे	फिर	6	जहन्नम	तुम ज़रूर देखोगे	5	इल्मे यक़ीन

ع ٨ ١ ٢٧ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

8	नेमतें	से (बाबत)	उस दिन	तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो क़ब्रों में हैं? (9) और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10) बेशक उन का रब उस दिन उन से ख़ूब बाख़बर होगा। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

खड़खड़ाने वाली, (1) क्या है खड़खड़ाने वाली? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3) जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4) और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5) पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6) सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7) और जिस के वज़न हल्के हुए, (8) तो उस का ठिकाना "हाविया" होगा। (9) और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10) वह आग है दहकती हुई। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तुम्हें हुसूले कस्रत की ख़्वाहिश ने ग़फ़्लत में रखा, (1) यहां तक कि तुम क़ब्रों तक पहुंच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3) फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4) हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यक़ीन से जानते होते। (5) तुम ज़रूर देखोगे जहन्नम को। (6) फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँख से देखोगे। (7) फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बाबत। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ज़माने की क़सम, (1)
बेशक इन्सान ख़सारे में है, (2)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ख़राबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1)
जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2)
वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3)
हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर "हुत्मा" में डाला जाएगा। (4)
और तुम क्या समझे कि "हुत्मा" क्या है? (5)
अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6)
जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7)
बेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8)
लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1)
क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2)
और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3)
वह उन पर कंकरियां फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4)
पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْعَصْرِ (١٠٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (103) सूरतुल अ़स्र / ज़माना — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعَصْرِ ۙ ﴿١﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ ﴿٢﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	ख़सारा	में	इन्सान	बेशक	1	ज़माने की क़सम

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾ ع ٣/١ ٢٨

3	सब्र की	और वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

آيَاتُهَا ٩ ❀ سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ (١٠٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (104) सूरतुल हुमाज़ा / ताना ज़न — आयात 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ﴿١﴾ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ﴿٢﴾

2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	ख़राबी

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۚ ﴿٣﴾ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۖ ﴿٤﴾ وَمَآ

और क्या	4	"हुत्मा"	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि	वह गुमान करता है

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ؕ ﴿٥﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ﴿٦﴾ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى

पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	"हुत्मा" क्या है?	तुम समझे

الْاَفْـِٕدَةِ ؕ ﴿٧﴾ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ ﴿٨﴾ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾ ع ٩/١ ٢٩

9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	बेशक वह	7	दिल (जमा)

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ الْفِيْلِ (١٠٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (105) सूरतुल फ़ील / हाथी — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ؕ ﴿١﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ

कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ ﴿٢﴾ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ﴿٣﴾

3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (बेकार)	उन का दाओ

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿٥﴾ ع ٥/١ ٣٠

5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे

آيَاتُهَا ٤ ❀ سُوْرَةُ قُرَيْشٍ (١٠٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(106) सूरह कुरैश कुरैश का कबीला	आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

2	और गर्मी	सर्दी	सफ़र	उन का मानूस करना	1	कुरैश	मानूस करने के सबब

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ

भूक	से - में	उन्हें खाना दिया	जो - जिस	3	घर	इस	रब	पस चाहिए कि वह इबादत करें

ع ١ ٣١ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

4	ख़ौफ़	से - में	और उन्हें अम्न दिया

آيَاتُهَا ٧ ❀ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ (١٠٧) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(107) सूरतुल माऊन रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें	आयात 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

2	यतीम	धक्के देता है	जो कि	यही है वह	1	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	झुटलाता है	वह जो कि	क्या तुम ने देखा

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

4	नमाज़ियों के लिए	पस ख़राबी	3	मिस्कीन	खाना	पर	रग़बत दिलाता	और नहीं

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥ الَّذِيْنَ هُمْ

वह	जो कि	5	ग़ाफ़िल (जमा)	अपनी नमाज़	से	वह	जो कि

ع ١ ٣٢ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

7	आम ज़रूरत की चीज़	रोकते हैं (नहीं देते)	6	दिखावा करते हैं

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ (١٠٨) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(108) सूरतुल कौसर बे शुमार भलाइयाँ	आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़ें	1	कौसर	हम ने आप (स) को अ़ता किया	बेशक हम

ع ١ ٣٣ وَانْحَرْ ۝٢ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

3	दुम कटा - नामुराद - बे नस्ल	वह	आप (स) का दुश्मन	बेशक	2	और कुरबानी दें

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
कुरैश को मानूस करने के सबब, (1)
उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2)
पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3)
जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अम्न दिया ख़ौफ़ में। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1)
वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2)
और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3)
पस ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4)
जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह हैं, (5)
जो दिखावा करते हैं, (6)
और आ़म ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
बेशक हम ने आप (स) को "कौसर" अ़ता किया। (1)
पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और कुरबानी दें। (2)
बेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

آيَاتُهَا ٦ ❀ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ (١٠٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 6 — (109) सूरतुल काफ़िरून — कुफ़्र करने वाले — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿١﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٢﴾

2	जिस की तुम इबादत करते हो	मैं इबादत नहीं करता	1	काफ़िरो	ऐ	कह दीजिए

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿٣﴾ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿٤﴾

4	जिस की तुम ने इबादत की	मैं इबादत करने वाला	और न	3	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	तुम	और न

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿٥﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾ ع ٦ ٣٤

6	मेरा दीन	और मेरे लिए	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	5	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न तुम

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ النَّصْرِ (١١٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 3 — (110) सूरतुन नस्र — मदद — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿١﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ

में	दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	1	और फ़तह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब

دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ وقف النبی ﷺ

और बख़्शिश तलब कीजिए उस से	अपना रब	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें	2	फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह का दीन

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾ ع ١ ٣٥

3	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है	बेशक वह

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ تَبَّتْ (١١١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 5 — (111) सूरह तब्बत — आग की लपट, शोला — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ﴿١﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

और जो	उस का माल	उस के	काम आया	न	1	और वह हलाक हुआ	अबू लहब	दोनों हाथ	टूट गए

كَسَبَ ؕ﴿٢﴾ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۙ﴿٣﴾ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

लादने वाली	और उस की बीवी	3	शोले मारती	आग	अ़नक़रीब दाख़िल होगा	2	उस ने कमाया

الْحَطَبِ ۚ﴿٤﴾ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ﴿٥﴾ ع ٥ ٣٦

5	खजूर	से	रस्सी	उस की गर्दन	में	4	लकड़ी (ईंधन)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

कह दीजिएः ऐ काफ़िरो! (1) मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (3) और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन। (6)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)। (1) और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज। (2) पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1) उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2) अ़नक़रीब दाख़िल होगा शोले मारती हुई आग में। (3) और उस की बीवी लादने वाली ईंधन, (4) उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)

آيَاتُهَا ٤ ❀ (١١٢) سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (112) सूरतुल इख़्लास — आयात 4

ख़ालिस

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ

न उस ने जना	2	बेनियाज़	अल्लाह	1	एक	अल्लाह	वह	कह दीजिए

١ ع٤ ٣٨ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿٣﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

4	कोई	हमसर	उस का	है	और नहीं	3	और न वह जना गया

آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١٣) سُوْرَةُ الْفَلَقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (113) सूरतुल फ़लक़ — आयात 5

सुबह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿٢﴾

2	जो उस ने पैदा किया	शर	से	1	सुबह	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

फूंके मारने वालियां	शर	और से	3	छा जाए	जब	अन्धेरा	शर	और से

١ ع٥ ٣٨ فِى الْعُقَدِ ۙ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

5	वह हसद करे	जब	हसद करने वाले	और शर से	4	गिरहें	में

آيَاتُهَا ٦ ❀ (١١٤) سُوْرَةُ النَّاسِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (114) सूरतुन नास — आयात 6

लोग

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ ﴿٣﴾

3	लोग	माबूद	2	लोग	बादशाह	1	लोग	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۬ۙ الْخَنَّاسِ ۙ ﴿٤﴾ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ

में	वस्वसा डालता है	जो	4	छुप कर हमला करने वाले	वस्वसा डालने वाले	शर	से

١ ع٦ ٣٩ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

6	और इन्सान	जिन्न (जमा)	से	5	लोग	सीने (दिल)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

कह दीजिए: वह अल्लाह एक है, (1) अल्लाह बेनियाज़ है, (2) न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3) और उस का कोई हमसर नहीं। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ सुब्ह के रब की, (1) उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2) और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3) और गिरोहों में फूंके मारने वालियों के शर से, (4) और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की, (1) लोगों के बादशाह की, (2) लोगों के माबूद की, (3) वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4) जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5) जिन्नों में से और इन्सानों में से। (6)

पवित्र

क़ुरआन

सुगम हिन्दी अनुवाद

1 सूरह फातेहा

मक्का में नाज़िल हुई और इस की 7 आयतें हैं

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है (1)

सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है (2)

और सारे जहाँन का पालने वाला बड़ा मेहरबान रहम वाला है (3)

रोजे़ जज़ा का मालिक है (4)

अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं (5)

तो हमको सीधी राह पर साबित क़दम रख (6)

उनकी राह पर जिन्हें तूने (अपनी) नेअमत अता की है न उनकी राह जिन पर तेरा ग़ज़ब ढाया गया और न गुमराहों की (7)

2 सूरह बक़रा

सूरह बक़रा (गाय) मदीना में नाज़िल हुई और इसमें दो सौ छियासी आयतें और चालीस रूकू हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम (1)

(ये) वह किताब है। जिस (के किताबे ख़ुदा होने) में कुछ भी शक नहीं (ये) परहेज़गारों की रहनुमा है (2)

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और (पाबन्दी से) नमाज़ अदा करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं (3)

और जो कुछ तुम पर (ऐ रसूल) और तुम से पहले नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं और वही आख़िरत का यक़ीन भी रखते हैं (4)

यही लोग अपने परवरदिगारन की हिदायत पर (आमिल) हैं और यही लोग अपनी दिली मुरादें पाएँगे (5)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़तेयार किया उनके लिए बराबर है (ऐ रसूल) ख़्वाह (चाहे) तुम उन्हें डराओ या न डराओ वह ईमान न लाएँगे (6)

उनके दिलों पर और उनके कानों पर (नज़र करके) ख़ुदा ने तसदीक़ कर दी है (कि ये ईमान न लाएँगे) और उनकी आँखों पर परदा (पड़ा हुआ) है और उन्हीं के लिए (बहुत) बड़ा अज़ाब है (7)

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो (ज़बान से तो) कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और क़यामत पर ईमान लाए हालाँकि वह दिल से ईमान नहीं लाए (8)

ख़ुदा को और उन लोगों को जो ईमान लाए धोखा देते हैं हालाँकि वह अपने आपको धोखा देते हैं और कुछ शऊर नहीं रखते हैं (9)

उनके दिलों में मर्ज़ था ही अब ख़ुदा ने उनके मर्ज़ को और बढ़ा दिया और चूँकि वह लोग झूठ बोला करते थे इसलिए उन पर तकलीफ देह अज़ाब है (10)

और जब उनसे कहा जाता है कि मुल्क में फ़साद न करते फिरो (तो) कहते हैं कि हम तो सिर्फ इसलाह करते हैं (11)

ख़बरदार हो जाओ बेशक यही लोग फ़सादी हैं लेकिन समझते नहीं (12)

और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान लाए हैं तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह और बेवक़ूफ़ लोग ईमान लाए, ख़बरदार हो जाओ यही लोग बेवक़ूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके तो कहते हैं हम तो ईमान ला चुके और जब अपने शैतानों के साथ तनहा रह जाते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं हम तो (मुसलमानों को) बनाते हैं (14)

(वह क्या बनाएँगे) ख़ुदा उनको बनाता है और उनको ढील देता है कि वह अपनी सरकशी में ग़लत पेचाँ (उलझे) रहें (15)

यही वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली, फिर न उनकी तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न उन लोगों ने हिदायत ही पाई (16)

उन लोगों की मिसाल (तो) उस शख़्स की सी है जिसने (रात के वक़्त मजमे में) भड़कती हुयी आग रौशन की फिर जब आग (के शोले) ने उसके गिर्दो पेश (चारों ओर) ख़ूब उजाला कर दिया तो ख़ुदा ने उनकी रौशनी ले ली और उनको घटाटोप अँधेरे में छोड़ दिया (17)

कि अब उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता ये लोग बहरे गूँगे अन्धे हैं कि फिर अपनी गुमराही से बाज़ नहीं आ सकते (18)

या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमानी बारिश जिसमें तारिकियाँ गरजदार बिजली हो मौत के खौफ़ से कड़क के मारे अपने कानों में उंगलियाँ दे लेते हैं हालाँकि ख़ुदा काफ़िरों को (इस तरह) घेरे हुए है (कि हिल नहीं सकते) (19)

क़रीब है कि बिजली उनकी आँखों को चौन्धिया दे जब उनके आगे बिजली चमकी तो उस रौशनी में

चल खड़े हुए और जब उन पर अँधेरा छा गया तो (ठिठक के) खड़े हो गए और ख़ुदा चाहता तो यूँ भी उनके देखने और सुनने की कुव्वतें छीन लेता बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (20)

ऐ लोगों अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुम से पहले थे पैदा किया है अजब नहीं तुम परहेज़गार बन जाओ (21)

जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी बरसाया फिर उसी ने तुम्हारे खाने के लिए बाज़ फल पैदा किए पस किसी को ख़ुदा का हमसर (शरीक) न बनाओ हालाँकि तुम ख़ूब जानते हो (22)

और अगर तुम लोग इस कलाम से जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर नाज़िल किया है शक में पड़े हो पस अगर तुम सच्चे हो तो तुम (भी इस जैसी) एक सूरा बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जो भी तुम्हारे मददगार हों उनको भी बुला लो (23)

पस अगर तुम ये नहीं कर सकते हो और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और काफ़िरों के लिए तैयार की गई है (24)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनको (ऐ पैग़म्बर) खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए (बहिश्त के) वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं जब उन्हें इन बाग़ात का कोई मेवा खाने को मिलेगा तो कहेंगे ये तो वही (मेवा है जो पहले भी हमें खाने को मिल चुका है) (क्योंकि) उन्हें मिलती जुलती सूरत व रंग के (मेवे) मिला करेंगे और बहिश्त में उनके लिए साफ़ सुथरी बीवियाँ होगी और ये लोग उस बाग़ में हमेशा रहेंगे (25)

बेशक ख़ुदा मच्छर या उससे भी बढ़कर (हक़ीर चीज़) की कोई मिसाल बयान करने में नहीं झेंपता पस जो लोग ईमान ला चुके हैं वह तो ये यक़ीन जानते हैं कि ये (मिसाल) बिल्कुल ठीक है और ये परवरदिगार की तरफ़ से है (अब रहे) वह लोग जो काफ़िर हैं पस वह बोल उठते हैं कि ख़ुदा का उस मिसाल से क्या मतलब है, ऐसी मिसाल से अल्लाह बहुतेरों की हिदायत करता है मगर गुमराही में छोड़ता भी है तो ऐसे बदकारों को (26)

जो लोग ख़ुदा के एहदो पैमान को मज़बूत हो जाने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (ताल्लुक़ात) का ख़ुदा ने हुक्म दिया है उनको क़तआ कर देते हैं और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं, यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (27)

(हाँए) क्यों कर तुम ख़ुदा का इन्कार कर सकते हो हालाँकि तुम (माओं के पेट में) बेजान थे तो

उसी ने तुमको ज़िन्दा किया फिर वही तुमको मार डालेगा, फिर वही तुमको (दोबारा क़यामत में) ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे (28)

वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने तुम्हारे (नफ़े) के ज़मीन की कुल चीज़ों को पैदा किया फिर आसमान (के बनाने) की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ तो सात आसमान हमवार (व मुसतहकम) बना दिए और वह (ख़ुदा) हर चीज़ से (ख़ूब) वाक़िफ़ है (29)

और (ऐ रसूल) उस वक़्त को याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं (अपना) एक नाएब ज़मीन में बनानेवाला हूँ (फरिश्ते ताज्जुब से) कहने लगे क्या तू ज़मीन पर ऐसे शख़्स को पैदा करेगा जो ज़मीन में फ़साद और ख़ूनरेज़ियाँ करता फिरे हालाँकि (अगर) ख़लीफ़ा बनाना है (तो हमारा ज़्यादा हक़ है) क्योंकि हम तेरी तारीफ़ व तसबीह करते हैं और तेरी पाकीज़गी साबित करते हैं तब ख़ुदा ने फ़रमाया इसमें तो शक ही नहीं कि जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते (30)

और (आदम की हक़ीक़त ज़ाहिर करने की ग़रज़ से) आदम को सब चीज़ों के नाम सिखा दिए फिर उनको फरिश्तों के सामने पेश किया और फ़रमाया कि अगर तुम अपने दावे में कि हम मुस्तहके़ ख़िलाफ़त हैं। सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ (31)

तब फ़रिश्तों ने (आजिज़ी से) अर्ज़ की तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है हम तो जो कुछ तूने बताया है उसके सिवा कुछ नहीं जानते तू बड़ा जानने वाला, मसलहतों का पहचानने वाला है (32)

(उस वक़्त ख़ुदा ने आदम को) हुक्म दिया कि ऐ आदम तुम इन फ़रिश्तों को उन सब चीज़ों के नाम बता दो बस जब आदम ने फ़रिश्तों को उन चीज़ों के नाम बता दिए तो ख़ुदा ने फरिश्तों की तरफ ख़िताब करके फ़रमाया क्यों, मैं तुमसे न कहता था कि मैं आसमानों और ज़मीनों के छिपे हुए राज़ को जानता हूँ, और जो कुछ तुम अब ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छिपाते थे (वह सब) जानता हूँ (33)

और (उस वक़्त को याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक गए मगर शैतान ने इन्कार किया और ग़ुरूर में आ गया और काफ़िर हो गया (34)

और हमने आदम से कहा ऐ आदम तुम अपनी बीवी समैत बहिश्त में रहा सहा करो और जहाँ से तुम्हारा जी चाहे उसमें से ब फ़राग़त खाओ (पियो) मगर उस दरख़्त के पास भी न जाना (वरना) फिर तुम अपना आप नुक़सान करोगे (35)

तब शैतान ने आदम व हौव्वा को (धोखा देकर) वहाँ से डगमगाया और आख़िर कार उनको जिस (ऐश व राहत) में थे उनसे निकाल फेंका और हमने कहा (ऐ आदम व हौव्वा) तुम (ज़मीन पर)

उतर पड़ो तुममें से एक का एक दुशमन होगा और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक ख़ास वक़्त (क़यामत) तक ठहराव और ठिकाना है (36)

फिर आदम ने अपने परवरदिगार से (माज़रत के चन्द अल्फाज़) सीखे पस ख़ुदा ने उन अल्फाज़ की बरकत से आदम की तौबा क़ुबूल कर ली बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला मेहरबान है (37)

(और जब आदम को) ये हुक्म दिया था कि यहाँ से उतर पड़ो (तो भी कह दिया था कि) अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो (उसकी पैरवी करना क्योंकि) जो लोग मेरी हिदायत पर चलेंगे उन पर (क़यामत) में न कोई ख़ौफ़ होगा (38)

और न वह रंजीदा होगे और (ये भी याद रखो) जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो वही जहन्नुमी हैं और हमेशा दोज़ख़ में पड़े रहेगे (39)

ऐ बनी इसराईल (याकू़ब की औलाद) मेरे उन एहसानात को याद करो जो तुम पर पहले कर चुके हैं और तुम मेरे एहद व इक़रार (ईमान) को पूरा करो तो मैं तुम्हारे एहद (सवाब) को पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरते रहो (40)

और जो (क़ुरान) मैंने नाज़िल किया वह उस किताब (तौरेत) की (भी) तसदीक़ करता हूँ जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे चले उसके इन्कार पर मौजूद न हो जाओ और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत (दुनयावी फायदा) न लो और मुझ ही से डरते रहो (41)

और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और हक़ बात को न छिपाओ हालाँकि तुम जानते हो और पाबन्दी से नमाज़ अदा करो (42)

और ज़कात दिया करो और जो लोग (हमारे सामने) इबादत के लिए झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो (43)

और तुम लोगों से नेकी करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते हालाँकि तुम किताबे ख़ुदा को (बराबर) रटा करते हो तो तुम क्या इतना भी नहीं समझते (44)

और (मुसीबत के वक़्त) सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो और अलबत्ता नमाज़ दूभर तो है मगर उन ख़ाक़सारों पर (नहीं) जो बख़ूबी जानते हैं (45)

कि वह अपने परवरदिगार की बारगाह में हाज़िर होंगे और ज़रूर उसकी तरफ लौट जाएँगे (46)

ऐ बनी इसराइल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंने पहले तुम्हें दी और ये (भी तो सोचो) कि हमने तुमको सारे जहाँन के लोगों से बढ़ा दिया (47)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख़्स किसी की तरफ से न फिदिया दे सकेगा और न उसकी तरफ से कोई सिफारिश मानी जाएगी और न उसका कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न वह मदद पहुँचाए जाएँगे (48)

और (उस वक्त को याद करो) जब हमने तुम्हें (तुम्हारे बुर्ज़गो को) फ़िरऔन (के पन्जे) से छुड़ाया जो तुम्हें बड़े-बड़े दुख दे के सताते थे तुम्हारे लड़कों पर छुरी फेरते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी ख़िदमत के लिए) ज़िन्दा रहने देते थे और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारे सब्र की) सख़्त आज़माइश थी (49)

और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को टुकड़े-टुकड़े किया फिर हमने तुमको छुटकारा दिया (50)

और फ़िरऔन के आदमियों को तुम्हारे देखते-देखते डुबो दिया और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने मूसा से चालीस रातों का वायदा किया था और तुम लोगों ने उनके जाने के बाद एक बछड़े को (परसतिश के लिए ख़ुदा) बना लिया (51)

हालाँकि तुम अपने ऊपर ज़ुल्म जोत रहे थे फिर हमने उसके बाद भी दरगुज़र की ताकि तुम शुक्र करो (52)

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा को (तौरेत) अता की और हक़ और बातिल को जुदा करनेवाला क़ानून (इनायत किया) ताके तुम हिदायत पाओ
(53)

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुमने बछड़े को (अल्लाह) बना के अपने ऊपर बड़ा सख़्त ज़ुल्म किया तो अब (इसके सिवा कोई चारा नहीं कि) तुम अपने ख़ालिक की बारगाह में तौबा करो और वह ये है कि अपने को क़त्ल कर डालो तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है, फिर जब तुमने ऐसा किया तो ख़ुदा ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली बेशक वह बड़ा मेहरबान माफ़ करने वाला है (54)

और (वह वक्त भी याद करो) जब तुमने मूसा से कहा था कि ऐ मूसा हम तुम पर उस वक्त

तक ईमान न लाएँगे जब तक हम ख़ुदा को ज़ाहिर बज़ाहिर न देख ले उस पर तुम्हें बिजली ने ले डाला, और तुम तकते ही रह गए (55)

फिर तुम्हें तुम्हारे मरने के बाद हमने जिला उठाया ताकि तुम शुक्र करो (56)

और हमने तुम पर अब्र का साया किया और तुम पर मन व सलवा उतारा और (ये भी तो कह दिया था कि) जो साफ़ सुथरी व नफीस रोज़िया तुम्हें दी हैं उन्हें शौक़ से खाओ, और उन लोगों ने हमारा तो कुछ बिगड़ा नहीं मगर अपनी जानों पर सितम ढाते रहे (57)

और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुमसे कहा कि इस गाँव (अरीहा) में जाओ और इसमें जहाँ चाहो फरागत से खाओ (पियो) और दरवाज़े पर सजदा करते हुए और ज़बान से हित्ता बख़्शिश कहते हुए आओ तो हम तुम्हारी ख़ता ये बख़्श देगे और हम नेकी करने वालों की नेकी (सवाब) बढ़ा देगें (58)

तो जो बात उनसे कही गई थी उसे शरीरों ने बदलकर दूसरी बात कहनी शुरू कर दी तब हमने उन लोगों पर जिन्होंने शरारत की थी उनकी बदकारी की वजह से आसमानी बला नाज़िल की (59)

और (वह वक्त भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा (ऐ मूसा) अपनी लाठी पत्थर पर मारो (लाठी मारते ही) उसमें से बारह चश्में फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट बखूबी जान लिया और हमने आम इजाज़त दे दी कि ख़ुदा की दी हुयी रोज़ी से खाओ पियो और मुल्क में फ़साद न करते फिरो (60)

(और वह वक्त भी याद करो) जब तुमने मूसा से कहा कि ऐ मूसा हमसे एक ही खाने पर न रहा जाएगा तो आप हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि जो चीज़े ज़मीन से उगती है जैसे साग पात तरकारी और ककड़ी और गेहूँ या (लहसुन) और मसूर और प्याज़ (मन व सलवा) की जगह पैदा करें (मूसा ने) कहा क्या तुम ऐसी चीज़ को जो हर तरह से बेहतर है अदना चीज़ से बदलन चाहते हो तो किसी शहर में उतर पड़ो फिर तुम्हारे लिए जो तुमने माँगा है सब मौजूद है और उन पर रूसवाई और मोहताजी की मार पड़ी और उन लोगों ने क़हरे ख़ुदा की तरफ पलटा खाया, ये सब इस सबब से हुआ कि वह लोग ख़ुदा की निशानियों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक शहीद करते थे, और इस वजह से (भी) कि वह नाफ़रमानी और सरकशी किया करते थे (61)

बेशक मुसलमानों और यहूदियों और नसरानियों और लामज़हबों में से जो कोई ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर इमान लाए और अच्छे-अच्छे काम करता रहे तो उन्हीं के लिए उनका अज्र व सवाब

उनके ख़ुदा के पास है और न (क़यामत में) उन पर किसी का ख़ौफ होगा न वह रंजीदा दिल होंगे (62)

और (वह वक़्त याद करो) जब हमने (तामीले तौरेत) का तुमसे एक़रार कर लिया और हमने तुम्हारे सर पर तूर से (पहाड़ को) लाकर लटकाया और कह दिया कि तौरेत जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूत पकड़े रहो और जो कुछ उसमें है उसको याद रखो (63)

ताकि तुम परहेज़गार बनो फिर उसके बाद तुम (अपने एहदो पैमान से) फिर गए पस अगर तुम पर ख़ुदा का फज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती तो तुमने सख़्त घाटा उठाया होता (64)

और अपनी क़ौम से उन लोगों की हालत तो तुम बख़ूबी जानते हो जो शम्बे (सनीचर) के दिन अपनी हद से गुज़र गए (कि बावजूद मुमानिअत शिकार खेलने निकले) तो हमने उन से कहा कि तुम राइन्दे गए बन्दर बन जाओ (और वह बन्दर हो गए) (65)

पस हमने इस वाक़ये से उन लोगों के वास्ते जिन के सामने हुआ था और जो उसके बाद आनेवाले थे अज़ाब क़रार दिया, और परहेज़गारों के लिए नसीहत (66)

और (वह वक़्त याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा तुम लोगों को ताकीदी हुक्म करता है कि तुम एक गाय ज़बह (हलाल) करो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमसे दिल्लगी करते हो मूसा ने कहा मैं ख़ुदा से पनाह माँगता हूँ कि मैं जाहिल बनूँ (67)

(तब वह लोग कहने लगे कि (अच्छा) तुम अपने ख़ुदा से दुआ करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो मूसा ने कहा बेशक ख़ुदा ने फरमाता है कि वह गाय न तो बहुत बूढ़ी हो और न बछिया बल्कि उनमें से औसत दरजे की हो, ग़रज़ जो तुमको हुक्म दिया गया उसको बजा लाओ (68)

वह कहने लगे (वाह) तुम अपने ख़ुदा से दुआ करो कि हमें ये बता दे कि उसका रंग आख़िर क्या हो मूसा ने कहा बेशक ख़ुदा फरमाता है कि वह गाय ख़ूब गहरे ज़र्द रंग की हो देखने वाले उसे देखकर ख़ुश हो जाए (69)

तब कहने लगे कि तुम अपने ख़ुदा से दुआ करो कि हमें ज़रा ये तो बता दे कि वह (गाय) और कैसी हो (वह) गाय तो और गायों में मिल जुल गई और ख़ुदा ने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) पता लगा लेगे (70)

मूसा ने कहा ख़ुदा ज़रूर फरमाता है कि वह गाय न तो इतनी सधाई हो कि ज़मीन जोते न खेती सीचें भली चंगी एक रंग की कि उसमें कोई धब्बा तक न हो, वह बोले अब (जा के) ठीक-ठीक

बयान किया, ग़रज़ उन लोगों ने वह गाय हलाल की हालाँकि उनसे उम्मीद न थी वह कि वह ऐसा करेंगे (71)

और जब एक शख़्स को मार डाला और तुममें उसकी बाबत फूट पड़ गई एक दूसरे को क़ातिल बताने लगा जो तुम छिपाते थे (72)

ख़ुदा को उसका ज़ाहिर करना मंज़ूर था पस हमने कहा कि उस गाय को कोई टुकड़ा लेकर इस (की लाश) पर मारो यूँ ख़ुदा मुर्दे को ज़िन्दा करता है और तुम को अपनी क़ुदरत की निशानियाँ दिखा देता है (73)

ताकि तुम समझो फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये पस वह मिसल पत्थर के (सख़्त) थे या उससे भी ज़्यादा करख़्त क्योंकि पत्थरों में बाज़ तो ऐसे होते हैं कि उनसे नहरें जारी हो जाती हैं और बाज़ ऐसे होते हैं कि उनमें दरार पड़ जाती है और उनमें से पानी निकल पड़ता है और बाज़ पत्थर तो ऐसे होते हैं कि ख़ुदा के ख़ौफ से गिर पड़ते हैं और जो कुछ तुम कर रहे हो उससे ख़ुदा ग़ाफिल नहीं है (74)

(मुसलमानों) क्या तुम ये लालच रखते हो कि वह तुम्हारा (सा) ईमान लाएँगें हालाँकि उनमें का एक गिरोह (साबिक़ में) ऐसा था कि ख़ुदा का कलाम सुनाता था और अच्छी तरह समझने के बाद उलट फेर कर देता था हालाँकि वह ख़ूब जानते थे और जब उन लोगों से मुलाक़ात करते हैं (75)

जो ईमान लाए तो कह देते हैं कि हम तो ईमान ला चुके और जब उनसे बाज़-बाज़ के साथ तख़लिया करते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ ख़ुदा ने तुम पर (तौरेत) में ज़ाहिर कर दिया है क्या तुम (मुसलमानों को) बता दोगे ताकि उसके सबब से कल तुम्हारे ख़ुदा के पास तुम पर हुज्जत लाएँ क्या तुम इतना भी नहीं समझते (76)

लेकिन क्या वह लोग (इतना भी) नहीं जानते कि वह लोग जो कुछ छिपाते हैं या ज़ाहिर करते हैं ख़ुदा सब कुछ जानता है (77)

और कुछ उनमें से ऐसे अनपढ़ हैं कि वह किताबे ख़ुदा को अपने मतलब की बातों के सिवा कुछ नहीं समझते और वह फक़त ख़्याली बातें किया करते हैं, (78)

पस वाए हो उन लोगों पर जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं फिर (लोगों से कहते फिरते) हैं कि ये ख़ुदा के यहाँ से (आई) है ताकि उसके ज़रिये से थोड़ी सी क़ीमत (दुनयावी फ़ायदा) हासिल करें पस अफसोस है उन पर कि उनके हाथों ने लिखा और फिर अफसोस है उनपर कि वह ऐसी कमाई करते हैं (79)

और कहते हैं कि गिनती के चन्द दिनों के सिवा हमें आग छुएगी भी तो नहीं (ऐ रसूल) इन लोगों से कहो कि क्या तुमने ख़ुदा से कोई इक़रार ले लिया है कि फिर वह किसी तरह अपने इक़रार के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करेगा या बे समझे बूझे ख़ुदा पर बोहतान जोड़ते हो (80)

हाँ (सच तो यह है) कि जिसने बुराई हासिल की और उसके गुनाहों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया है वही लोग तो दोज़ख़ी हैं और वही (तो) उसमें हमेशा रहेंगे (81)

और जो लोग ईमानदार हैं और उन्होंने अच्छे काम किए हैं वही लोग जन्नती हैं कि हमेशा जन्नत में रहेंगे (82)

और (वह वक्त याद करो) जब हमने बनी ईसराइल से (जो तुम्हारे बुज़ुर्ग थे) अहद व पैमान लिया था कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ अच्छे सुलूक करना और लोगों के साथ अच्छी तरह (नरमी) से बातें करना और बराबर नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना फिर तुममें से थोड़े आदिमियों के सिवा (सब के सब) फिर गए और तुम लोग हो ही इक़रार से मुँह फेरने वाले (83)

और (वह वक्त याद करो) जब हमने तुम (तुम्हारे बुज़ुर्गों) से अहद लिया था कि आपस में ख़ूरेज़ियाँ न करना और न अपने लोगों को शहर बदर करना तो तुम (तुम्हारे बुज़ुर्गों) ने इक़रार किया था और तुम भी उसकी गवाही देते हो (84)

(कि हाँ ऐसा हुआ था) फिर वही लोग तो तुम हो कि आपस में एक दूसरे को क़त्ल करते हो और अपनों से एक जत्थे के नाहक़ और ज़बरदस्ती हिमायती बनकर दूसरे को शहर बदर करते हो (और लुत्फ़ तो ये है कि) अगर वही लोग क़ैदी बनकर तम्हारे पास (मदद माँगने) आए तो उनको फ़िदया देकर छुड़ा लेते हो हालाँकि उनका निकालना ही तुम पर हराम किया गया था तो फिर क्या तुम (किताबे ख़ुदा की) बाज़ बातों पर ईमान रखते हो और बाज़ से इन्कार करते हो पस तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि ज़िन्दगी भर की रूसवाई हो और (आख़िरकार) क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ लौटा दिये जाए और जो कुछ तुम लोग करते हो ख़ुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं है (85)

यही वह लोग हैं जिन्होंने आख़ेरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद लिया है पस न उनके अज़ाब ही में तख़्फ़ीफ़ (कमी) की जाएगी और न वह लोग किसी तरह की मदद दिए जाएँगे (86)

और ये हक़ीक़ी बात है कि हमने मूसा को किताब (तौरेत) दी और उनके बाद बहुत से पैग़म्बरों को उनके क़दम ब क़दम ले चलें और मरियम के बेटे ईसा को (भी बहुत से) वाज़ेए व रौशन मौजिजे

दिए और पाक रूह जिबरील के ज़रिये से उनकी मदद की क्या तुम उस क़दर बददिमाग़ हो गए हो कि जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारी ख़्वाहिशे नफ़सानी के ख़िलाफ कोई हुक्म लेकर आया तो तुम अकड़ बैठे फिर तुमने बाज़ पैग़म्बरों को तो झुठलाया और बाज़ को जान से मार डाला (87)

और कहने लगे कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ चढ़ा हुआ है (ऐसा नहीं) बल्कि उनके कुफ्र की वजह से ख़ुदा ने उनपर लानत की है पस कम ही लोग ईमान लाते हैं (88)

और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से किताब (क़ुरान आई और वह उस किताब तौरेत) की जो उन के पास तसदीक़ भी करती है। और उससे पहले (इसकी उम्मीद पर) काफ़िरों पर फतेहयाब होने की दुआएँ माँगते थे पस जब उनके पास वह चीज़ जिसे पहचानते थे आ गई तो लगे इन्कार करने पस काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत है (89)

क्या ही बुरा है वह काम जिसके मुक़ाबले में (इतनी बात पर) वह लोग अपनी जानें बेच बैठे हैं कि ख़ुदा अपने बन्दों से जिस पर चाहे अपनी इनायत से किताब नाज़िल किया करे इस रश्क से जो कुछ ख़ुदा ने नाज़िल किया है सबका इन्कार कर बैठे पस उन पर ग़ज़ब पर ग़ज़ब टूट पड़ा और काफ़िरों के लिए (बड़ी) रूसवाई का अज़ाब है (90)

और जब उनसे कहा गया कि (जो क़ुरान) ख़ुदा ने नाज़िल किया है उस पर ईमान लाओ तो कहने लगे कि हम तो उसी किताब (तौरेत) पर ईमान लाए हैं जो हम पर नाज़िल की गई थी और उस किताब (क़ुरान) को जो उसके बाद आई है नहीं मानते हैं हालाँकि वह (क़ुरान) हक़ है और उस किताब (तौरेत) की जो उनके पास है तसदीक़ भी करती है मगर उस किताब क़ुरान का जो उसके बाद आई है इन्कार करते हैं (ऐ रसूल) उनसे ये तो पूछो कि तुम (तुम्हारे बुर्ज़ुग) अगर ईमानदार थे तो फिर क्यों ख़ुदा के पैग़म्बरों का साबिक़ क़त्ल करते थे (91)

और तुम्हारे पास मूसा तो वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आ ही चुके थे फिर भी तुमने उनके बाद बछड़े को ख़ुदा बना ही लिया और उससे तुम अपने ही ऊपर ज़ुल्म करने वाले थे (92)

और (वह वक्त याद करो) जब हमने तुमसे अहद लिया और (क़ोहे) तूर को (तुम्हारी उदूले हुक्मी से) तुम्हारे सर पर लटकाया और (हमने कहा कि ये किताब तौरेत) जो हमने दी है मज़बूती से लिए रहो और (जो कुछ उसमें है) सुनो तो कहने लगे सुना तो (सही लेकिन) हम इसको मानते नहीं और उनकी बेईमानी की वजह से (गोया) बछड़े की उलफ़त घोल के उनके दिलों में पिला दी गई (ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि अगर तुम ईमानदार थे तो तुमको तुम्हारा ईमान क्या ही बुरा हुक्म करता था (93)

(ऐ रसूल) इन लोगों से कह दो कि अगर ख़ुदा के नज़दीक आख़ेरत का घर (बहिश्त) ख़ास तुम्हारे वास्ते है और लोगों के वासते नहीं है पस अगर तुम सच्चे हो तो मौत की आरज़ू करो (94)

(ताकि जल्दी बेहिश्त में जाओ) लेकिन वह उन आमाले बद की वजह से जिनको उनके हाथों ने पहले से आगे भेजा है हरगिज़ मौत की आरज़ू न करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है (95)

और (ऐ रसूल) तुम उन ही को ज़िन्दगी का सबसे ज़्यादा हरीस पाओगे और मुशरिक़ों में से हर एक शख़्स चाहता है कि काश उसको हज़ार बरस की उम्र दी जाती हालाँकि अगर इतनी तूलानी उम्र भी दी जाए तो वह अल्लाह के अज़ाब से छुटकारा देने वाली नहीं, और जो कुछ वह लोग करते हैं ख़ुदा उसे देख रहा है (96)

(ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि जो जिबरील का दुशमन है (उसका ख़ुदा दुशमन है) क्योंकि उस फ़रिश्ते ने ख़ुदा के हुक्म से (इस क़ुरान को) तुम्हारे दिल पर डाला है और वह उन किताबों की भी तसदीक करता है जो (पहले नाज़िल हो चुकी हैं और सब) उसके सामने मौजूद हैं और ईमानदारों के वास्ते ख़ुशख़बरी है (97)

जो शख़्स अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसके रसूलों और (ख़ासकर) जिबराईल व मीकाइल का दुशमन हो तो बेशक ख़ुदा भी (ऐसे) काफ़िरों का दुश्मन है (98)

और (ऐ रसूल) हमने तुम पर ऐसी निशानियाँ नाज़िल की हैं जो वाजेए और रौशन हैं और ऐसे नाफरमानों के सिवा उनका कोई इन्कार नहीं कर सकता (99)

और उनकी ये हालत है कि जब कभी कोई अहद किया तो उनमें से एक फरीक़ ने तोड़ डाला बल्कि उनमें से अक्सर तो ईमान ही नहीं रखते (100)

और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ से रसूल (मुहम्मद) आया और उस किताब (तौरेत) की जो उनके पास है तसदीक़ भी करता है तो उन अहले किताब के एक गिरोह ने किताबे ख़ुदा को अपने पसे पुश्त फेंक दिया गोया वह लोग कुछ जानते ही नहीं और उस मंत्र के पीछे पड़ गए (101)

जिसको सुलेमान के ज़माने की सलतनत में शयातीन जपा करते थे हालाँकि सुलेमान ने कुफ्र नहीं इख़तेयार किया लेकिन शैतानों ने कुफ्र एख़तेयार किया कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे और वह चीज़ें जो हारूत और मारूत दोनों फ़रिश्तों पर बाइबिल में नाज़िल की गई थी हालाँकि ये दोनों फ़रिश्ते किसी को सिखाते न थे जब तक ये न कह देते थे कि हम दोनों तो फ़क़त (ज़रियाए

आज़्माइश) है पस तो (इस पर अमल करके) बेइमान न हो जाना उस पर भी उनसे वह (टोटके) सीखते थे जिनकी वजह से मिया बीवी में तफ़रक़ा डालते हालाँकि बग़ैर अज़्ने ख़ुदा बन्दी वह अपनी इन बातों से किसी को ज़रर नहीं पहुँचा सकते थे और ये लोग ऐसी बातें सीखते थे जो ख़ुद उन्हें नुक़सान पहुँचाती थी और कुछ (नफ़ा) पहुँचाती थी बावजूद कि वह यक़ीनन जान चुके थे कि जो शख़्स इन (बुराईयों) का ख़रीदार हुआ वह आख़िरत में बेनसीब हैं और बेशुबह (मुआवज़ा) बहुत ही बड़ा है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेचा काश (उसे कुछ) सोचे समझे होते (102)

और अगर वह ईमान लाते और जादू वग़ैरह से बचकर परहेज़गार बनते तो ख़ुदा की दरगाह से जो सवाब मिलता वह उससे कहीं बेहतर होता काश ये लोग (इतना तो) समझते (103)

ऐ ईमानवालों तुम (रसूल को अपनी तरफ मुतावज्जे करना चाहो तो) रआना (हमारी रिआयत कर) न कहा करो बल्कि उनज़ुरना (हम पर नज़रे तवज्जो रख) कहा करो और (जी लगाकर) सुनते रहो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (104)

ऐ रसूल अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया वह और मुशरेकीन ये नहीं चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से भलाई (वही) नाज़िल की जाए और (उनका तो इसमें कुछ इजारा नहीं) ख़ुदा जिसको चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़ा फज़ल (करने) वाला है (105)

(ऐ रसूल) हम जब कोई आयत मन्सूख़ करते हैं या तुम्हारे ज़ेहन से मिटा देते हैं तो उससे बेहतर या वैसी ही (और) नाज़िल भी कर देते हैं क्या तुम नहीं जानते कि बेशुबहा ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (106)

क्या तुम नहीं जानते कि आसमान की सलतनत बेशुबहा ख़ास ख़ुदा ही के लिए है और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा न कोई सरपरस्त है न मददगार (107)

(मुसलमानों) क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल से वैसै ही (बेढंगे) सवालात करो जिस तरह साबिक़ (पहले) ज़माने में मूसा से (बेतुके) सवालात किए गए थे और जिस शख़्स ने इमान के बदले कुफ्र एख़्तेयार किया वह तो यक़ीनी सीधे रास्ते से भटक गया (108)

(मुसलमानों) अहले किताब में से अक्सर लोग अपने दिली हसद की वजह से ये ख़्वाहिश रखते हैं कि तुमको ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर बना दें (और लुत्फ तो ये है कि) उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है उसके बाद भी (ये तमन्ना बाक़ी है) पस तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक कि ख़ुदा अपना (कोई और) हुक्म भेजे बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (109)

और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात दिये जाओ और जो कुछ भलाई अपने लिए (ख़ुदा के यहाँ) पहले से भेज दोगे उस (के सवाब) को मौजूद पाआगे जो कुछ तुम करते हो उसे ख़ुदा ज़रूर देख रहा है (110)

और (यहूद) कहते हैं कि यहूद (के सिवा) और (नुसैरा कहते हैं कि) नुसैरा के सिवा कोई बहिश्त में जाने ही न पाएगा ये उनके ख़्याली पुलाव है (ऐ रसूल) तुम उन से कहो कि भला अगर तुम सच्चे हो कि हम ही बहिश्त में जाएँगे तो अपनी दलील पेश करो (111)

हाँ अलबत्ता जिस शख़्स ने ख़ुदा के आगे अपना सर झुका दिया और अच्छे काम भी करता है तो उसके लिए उसके परवरदिगार के यहाँ उसका बदला (मौजूद) है और (आख़ेरत में) ऐसे लोगों पर न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न ऐसे लोग ग़मग़ीन होगे (112)

और यहूद कहते हैं कि नुसैरा का मज़हब कुछ (ठीक) नहीं और नुसैरा कहते हैं कि यहूद का मज़हब कुछ (ठीक) नहीं हालाँकि ये दोनों फरीक़ किताबे (ख़ुदा) पढ़ते रहते हैं इसी तरह उन्हीं जैसी बातें वह (मुशरेकीन अरब) भी किया करते हैं जो (ख़ुदा के एहकाम) कुछ नहीं जानते तो जिस बात में ये लोग पड़े झगड़ते हैं (दुनिया में तो तय न होगा) क़यामत के दिन ख़ुदा उनके दरम्यिान ठीक फैसला कर देगा (113)

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा की मसजिदों में उसका नाम लिए जाने से (लोगों को) रोके और उनकी बरबादी के दर पे हो, ऐसों ही को उसमें जाना मुनासिब नहीं मगर सहमे हुए ऐसे ही लोगों के लिए दुनिया में रूसवाई है और ऐसे ही लोगों के लिए आख़ेरत में बड़ा भारी अज़ाब है (114)

(तुम्हारे मसजिद में रोकने से क्या होता है क्योंकि सारी ज़मीन) ख़ुदा ही की है (क्या) पूरब (क्या) पश्छिम बस जहाँ कहीं क़िब्ले की तरफ रूख़ करो वही ख़ुदा का सामना है बेशक ख़ुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और ख़ूब वाक़िफ है (115)

और यहूद कहने लगे कि ख़ुदा औलाद रखता है हालाँकि वह (इस बखेड़े से) पाक है बल्कि जो कुछ ज़मीन व आसमान में है सब उसी का है और सब उसकी के फरमाबरदार हैं (116)

(वही) आसमान व ज़मीन का मोजिद है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो उसकी निसबत सिर्फ कह देता है कि "हो जा" पस वह (ख़ुद ब ख़ुद) हो जाता है (117)

और जो (मुशरेकीन) कुछ नहीं जानते कहते हैं कि ख़ुदा हमसे (ख़ुद) कलाम क्यों नहीं करता, या

हमारे पास (ख़ुद) कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह उन्हीं की सी बाते वह कर चुके हैं जो उनसे पहले थे उन सब के दिल आपस में मिलते जुलते हैं जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो अपनी निशानियाँ क्यों साफतौर पर दिखा चुके (118)

(ऐ रसूल) हमने तुमको दीने हक़ के साथ (बहिशत की) ख़ुशख़बरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला बनाकर भेजा है और दोज़ख़ियों के बारे में तुमसे कुछ न पूछा जाएगा (119)

और (ऐ रसूल) न तो यहूदी कभी तुमसे रज़ामंद होगे न नुसैरा यहाँ तक कि तुम उनके मज़हब की पैरवी करो (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि बस ख़ुदा ही की हिदायत तो हिदायत है (बाक़ी ढकोसला है) और अगर तुम इसके बाद भी कि तुम्हारे पास इल्म (क़ुरान) आ चुका है उनकी ख़्वाहिशों पर चले तो (याद रहे कि फिर) तुमको ख़ुदा (के ग़ज़ब) से बचाने वाला न कोई सरपरस्त होगा न मददगार (120)

जिन लोगों को हमने किताब (क़ुरान) दी है वह लोग उसे इस तरह पढ़ते रहते हैं जो उसके पढ़ने का हक़ है यही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जो उससे इनकार करते हैं वही लोग घाटे में हैं (121)

बनी इसराईल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंनं तुम को दी हैं और ये कि मैंने तुमको सारे जहाँन पर फज़ीलत दी (122)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी की तरफ से न फिदया हो सकेगा और न उसकी तरफ से कोई मुआवेज़ा क़ुबूल किया जाएगा और न कोई सिफारिश ही फायदा पहुचाँ सकेगी, और न लोग मदद दिए जाएँगे (123)

(ऐ रसूल) बनी इसराईल को वह वक़्त भी याद दिलाओ जब इबराहीम को उनके परवरदिगार ने चन्द बातों में आज़माया और उन्होंने पूरा कर दिया तो ख़ुदा ने फरमाया मैं तुमको (लोगों का) पेशवा बनाने वाला हूँ (हज़रत इबराहीम ने) अर्ज़ की और मेरी औलाद में से फरमाया (हाँ मगर) मेरे इस अहद पर ज़ालिमों में से कोई शख़्स फ़ायज़ नहीं हो सकता (124)

(ऐ रसूल वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब हमने ख़ानए काबा को लोगों के सवाब और पनाह की जगह क़रार दी और हुक्म दिया गया कि इबराहीम की (इस) जगह को नमाज़ की जगह बनाओ और इबराहीम व इसमाइल से अहद व पैमान लिया कि मेरे (उस) घर को तवाफ़ और एतकाफ़ और रूकू और सजदा करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखो (125)

और (ऐ रसूल वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब इबराहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार इस

(शहर) को पनाह व अमन का शहर बना, और उसके रहने वालों में से जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए उसको तरह-तरह के फल खाने को दें ख़ुदा ने फरमाया (अच्छा मगर) वो कुफ्र इख़्तेयार करेगा उसकी दुनिया में चन्द रोज़ (उन चीज़ो से) फ़ायदा उठाने दूँगा फिर (आख़ेरत में) उसको मजबूर करके दोज़ख़ की तरफ खींच ले जाऊँगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है (126)

और (वह वक्त याद दिलाओ) जब इबराहीम व इसमाईल ख़ानाए काबा की बुनियादें बुलन्द कर रहे थे (और दुआ) माँगते जाते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार हमारी (ये ख़िदमत) क़ुबूल कर बेशक तू ही (दूआ का) सुनने वाला (और उसका) जानने वाला है (127)

(और) ऐ हमारे पालने वाले तू हमें अपना फरमाबरदार बन्दा बना हमारी औलाद से एक गिरोह (पैदा कर) जो तेरा फरमाबरदार हो, और हमको हमारे हज की जगहों दिखा दे और हमारी तौबा क़ुबूल कर, बेशक तू ही बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है (128)

(और) ऐ हमारे पालने वाले मक्के वालों में उन्हीं में से एक रसूल को भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और आसमानी किताब और अक्ल की बातें सिखाए और उन (के नफ़स) के पाकीज़ा कर दें बेशक तू ही ग़ालिब और साहिबे तदबीर है (129)

और कौन है जो इबराहीम के तरीक़े से नफरत करे मगर जो अपने को अहमक़ बनाए और बेशक हमने उनको दुनिया में भी मुन्तिख़ब कर लिया और वह ज़रूर आख़ेरत में भी अच्छों ही में से होगे (130)

जब उनसे उनके परवरदिगार ने कहा इस्लाम क़ुबूल करो तो अर्ज़ में सारे जहाँ के परवरदिगार पर इस्लाम लाया (131)

और इसी तरीक़े की इबराहीम ने अपनी औलाद से वसीयत की और याक़ूब ने (भी) कि ऐ फरज़न्दों ख़ुदा ने तुम्हारे वास्ते इस दीन (इस्लाम) को पसन्द फरमाया है पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान ही होकर (132)

(ऐ यहूद) क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब याक़ूब के सर पर मौत आ खड़ी हुई उस वक्त उन्होंने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद किसी की इबादत करोगे कहने लगे हम आप के माबूद और आप के बाप दादाओं इबराहीम व इस्माइल व इसहाक़ के माबूद व यकता ख़ुदा की इबादत करेंगे और हम उसके फरमाबरदार हैं (133)

(ऐ यहूद) वह लोग थे जो चल बसे जो उन्होंने कमाया उनके आगे आया और जो तुम कमाओगे तुम्हारे आगे आएगा और जो कुछ भी वह करते थे उसकी पूछगछ तुमसे नहीं होगी (134)

(यहूदी ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूद या नुसरैनी हो जाओ तो राहे रास्त पर आ जाओगे (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि हम इबराहीम के तरीक़े पर हैं जो बातिल से कतरा कर चलते थे और मुशरेकीन से न थे (135)

(और ऐ मुसलमानों तुम ये) कहो कि हम तो ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया (क़ुरान) और जो सहीफ़े इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व याक़ूब और औलादे याक़ूब पर नाज़िल हुए थे (उन पर) और जो किताब मूसा व ईसा को दी गई (उस पर) और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से उन्हें दिया गया (उस पर) हम तो उनमें से किसी (एक) में भी तफरीक़ नहीं करते और हम तो ख़ुदा ही के फरमाबरदार हैं (136)

पस अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लाए हैं जिस तरह तुम तो अलबत्ता राहे रास्त पर आ गए और अगर वह इस तरीक़े से मुँह फेर लें तो बस वह सिर्फ तुम्हारी ही ज़िद पर है तो (ऐ रसूल) उन (के शर) से (बचाने को) तुम्हारे लिए ख़ुदा काफ़ी होगा और वह (सबकी हालत) ख़ूब जानता (और) सुनता है (137)

(मुसलमानों से कहो कि) रंग तो ख़ुदा ही का रंग है जिसमें तुम रंगे गए और खुदाई रंग से बेहतर कौन रंग होगा और हम तो उसी की इबादत करते हैं (138)

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो कि क्या तुम हम से ख़ुदा के बारे झगड़ते हो हालाँकि वही हमारा (भी) परवरदिगार है (वही) तुम्हारा भी (परवरदिगार है) हमारे लिए है हमारी कारगुज़ारियाँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारसतानियाँ और हम तो निरेखरे उसी में हैं (139)

क्या तुम कहते हो कि इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व आलौदें याक़ूब सब के सब यहूदी या नुसैरनी थे (ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि तुम ज़्यादा वाकिफ़ हो या ख़ुदा और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जिसके पास ख़ुदा की तरफ से गवाही (मौजूद) हो (कि वह यहूदी न थे) और फिर वह छिपाए और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं (140)

ये वह लोग थे जो सिधार चुके जो कुछ कमा गए उनके लिए था और जो कुछ तुम कमाओगे तुम्हारे लिए होगा और जो कुछ वह कर गुज़रे उसकी पूछगछ तुमसे न होगी (141)

बाज़ अहमक़ लोग ये कह बैठेगें कि मुसलमान जिस क़िबले बैतुल मुक़द्दस की तरफ पहले से सजदा करते थे उस से दूसरे क़िबले की तरफ मुड़ जाने का बाइस हुआ। ऐ रसूल तुम उनके जवाब में कहो कि पूरब पच्छिम सब अल्लाहका है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ हिदायत करता है (142)

और जिस तरह तुम्हारे क़िबले के बारे में हिदायत की उसी तरह तुम को आदिल उम्मत बनाया ताकि और लोगों के मुक़ाबले में तुम गवाह बनो और रसूल मोहम्मद तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बनें और (ऐ रसूल) जिस क़िबले की तरफ़ तुम पहले सज्दा करते थे हम ने उसको को सिर्फ इस वजह से क़िबला क़रार दिया था कि जब क़िबला बदला जाए तो हम उन लोगों को जो रसूल की पैरवी करते हैं हम उन लोगों से अलग देख लें जो उलटे पाव फिरते हैं अगरचे ये उलट फेर सिवा उन लोगों के जिन की अल्लाह ने हिदायत की है सब पर शाक़ ज़रुर है और अल्लाह ऐसा नहीं है कि तुम्हारे ईमान नमाज़ को जो बैतुलमुक़द्दस की तरफ पढ़ चुके हो बरबाद कर दे बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा ही रफ़ीक व मेहरबान है। (143)

ऐ रसूल क़िबला बदलने के वास्ते बेशक तुम्हारा बार बार आसमान की तरफ मुँह करना हम देख रहे हैं तो हम ज़रुर तुम को ऐसे क़िबले की तरफ फेर देगें कि तुम निहाल हो जाओ अच्छा तो नमाज़ ही में तुम मस्जिदे मोहतरम काबे की तरफ मुँह कर लो और ऐ मुसलमानों तुम जहाँ कही भी हो उसी की तरफ़ अपना मुँह कर लिया करो और जिन लोगों को किताब तौरेत वग़ैरह दी गयी है वह बख़ूबी जानते हैं कि ये तबदील क़िबले बहुत बजा व दुरुस्त है और उस के परवरदिगार की तरफ़ से है और जो कुछ वह लोग करते हैं उस से अल्लाह बेख़बर नही (144)

और अगर एहले किताब के सामने दुनिया की सारी दलीले पेश कर दोगे तो भी वह तुम्हारे क़िबले को न मानेंगें और न तुम ही उनके क़िबले को मानने वाले हो और ख़ुद एहले किताब भी एक दूसरे के क़िबले को नहीं मानते और जो इल्म क़ुरान तुम्हारे पास आ चुका है उसके बाद भी अगर तुम उनकी ख़्वाहिश पर चले तो अलबत्ता तुम नाफ़रमान हो जाओगे (145)

जिन लोगों को हमने किताब (तौरैत वग़ैरह) दी है वह जिस तरह अपने बेटों को पहचानते है उसी तरह तरह वह उस पैग़म्बर को भी पहचानते हैं और उन में कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो दीदए व दानिस्ता {जान बुझकर} हक़ बात को छिपाते हैं (146)

ऐ रसूल तबदीले क़िबला तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ है पस तुम कहीं शक करने वालों में से न हो जाना (147)

और हर फरीक़ के वास्ते एक सिम्त है उसी की तरफ वह नमाज़ में अपना मुँह कर लेता है पस तुम ऐ मुसलमानों झगड़े को छोड़ दो और नेकियों मे उन से लपक के आगे बढ़ जाओ तुम जहाँ कहीं होगे अल्लाह तुम सबको अपनी तरफ ले आऐगा बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (148)

और (ऐ रसूल) तुम जहाँ से जाओ (यहाँ तक मक्का से) तो भी नमाज़ मे तुम अपना मुँह मस्जिदे

मोहतरम (काबा) की तरफ़ कर लिया करो और बेशक ये नया क़िबला तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ है (149)

और तुम्हारे कामों से अल्लाह ग़ाफिल नही है और (ऐ रसूल) तुम जहाँ से जाओ (यहाँ तक के मक्का से तो भी) तुम (नमाज़ में) अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करो और (ऐ रसूल) तुम जहाँ कही हुआ करो तो नमाज़ में अपना मुँह उसी काबा की तरफ़ कर लिया करो (बार बार हुक्म देने का एक फायदा ये है ताकि लोागों का इल्ज़ाम तुम पर न आने पाए मगर उन में से जो लोग नाहक़ हठधर्मी करते हैं वह तो ज़रुर इल्ज़ाम देगें) तो तुम लोग उनसे डरो नहीं और सिर्फ़ मुझसे डरो और (दूसरा फ़ायदा ये है) ताकि तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ (150)

और तीसरा फायदा ये है ताकि तुम हिदायत पाओ मुसलमानों ये एहसान भी वैसा ही है जैसे हम ने तुम में तुम ही में का एक रसूल भेजा जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए और तुम्हारे नफ़्स को पाकीज़ा करे और तुम्हें किताब क़ुरान और अक्ल की बातें सिखाए और तुम को वह बातें बतांए जिन की तुम्हें पहले से खबर भी न थी (151)

पस तुम हमारी याद रखो तो मै भी तुम्हारा ज़िक्र (ख़ैर) किया करुगाँ और मेरा शुक्रिया अदा करते रहो और नाशुक्री न करो (152)

ऐ ईमानदारों मुसीबत के वक्त सब्र और नमाज़ के ज़रिए से अल्लाह की मदद माँगों बेशक अल्लाह सब्र करने वालों ही का साथी है (153)

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें कभी मुर्दा न कहना बल्कि वह लोग ज़िन्दा हैं मगर तुम उनकी ज़िन्दगी की हक़ीकत का कुछ भी शऊर नहीं रखते (154)

और हम तुम्हें कुछ खौफ़ और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से ज़रुर आज़माएगें और (ऐ रसूल) ऐसे सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो (155)

कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो वह (बेसाख़्ता) बोल उठे हम तो अल्लाह ही के हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं (156)

उन्हीं लोगों पर उनके परवरदिगार की तरफ से इनायतें हैं और रहमत और यही लोग हिदायत याफ़्ता है (157)

बेशक (कोहे) सफ़ा और (कोह) मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं पस जो शख़्स ख़ानए काबा का हज या उमरा करे उस पर उन दोनो के (दरमियान) तवाफ़ (आमद ओ रफ्त) करने में कुछ

गुनाह नहीं (बल्कि सवाब है) और जो शख़्स खुश खुश नेक काम करे तो फिर अल्लाह भी क़दरदाँ (और) वाकि़फ़कार है (158)

बेशक जो लोग हमारी इन रौशन दलीलों और हिदायतों को जिन्हें हमने नाजि़ल किया उसके बाद छिपाते हैं जबकि हम किताब तौरैत में लोगों के सामने साफ़ साफ़ बयान कर चुके हैं तो यही लोग हैं जिन पर अल्लाह भी लानत करता है और लानत करने वाले भी लानत करते हैं (159)

मगर जिन लोगों ने (हक़ छिपाने से) तौबा की और अपनी ख़राबी की इसलाह कर ली और जो किताबे अल्लाह में है साफ़ साफ़ बयान कर दिया पस उन की तौबा मै क़ुबूल करता हूँ और मै तो बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान हूँ (160)

बेशक जिन लोगों नें कुफ्र एख़्तेयार किया और कुफ्ऱ ही की हालत में मर गए उन्ही पर अल्लाह की और फरिश्तों की और तमाम लोगों की लानत है हमेशा उसी फटकार में रहेंगे (161)

न तो उनके अज़ाब ही में तख़्फ़ीफ़ {कमी} की जाएगी (162)

और न उनको अज़ाब से मोहलत दी जाएगी और तुम्हारा माबूद तो वही यकता अल्लाह है उस के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है (163)

बेशक आसमान व ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के रद्दो बदल में और क़श्तियों जहाज़ों में जो लोगों के नफ़े की चीजे़ (माले तिजारत वग़ैरह दरिया) में ले कर चलते हैं और पानी में जो अल्लाह ने आसमान से बरसाया फिर उस से ज़मीन को मुर्दा (बेकार) होने के बाद जिला दिया (शादाब कर दिया) और उस में हर कि़स्म के जानवर फैला दिये और हवाओं के चलाने में और अब्र में जो आसमान व ज़मीन के दरमियान अल्लाह के हुक्म से घिरा रहता है (इन सब बातों में) अक्ल वालों के लिए बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं (164)

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो ख़ुदा के सिवा औरों को भी अल्लाह का मिसल व शरीक बनाते हैं (और) जैसी मोहब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए वैसी ही उन से रखते हैं और जो लोग ईमानदार हैं वह उन से कहीं बढ़ कर अल्लाह की उलफ़त रखते हैं और काश ज़ालिमों को (इस वक्त) वह बात सूझती जो अज़ाब देखने के बाद सूझेगी कि यक़ीनन हर तरह की क़ूवत अल्लाह ही को है और ये कि बेशक अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (165)

(वह क्या सख़्त वक्त होगा) जब पेशवा लोग अपने पैरवो से अपना पीछा छुड़ाएगे और (ब चश्में ख़ुद) अज़ाब को देखेगें और उनके बाहमी ताल्लुक़ात टूट जाएँगे (166)

और पैरव कहने लगेंगे कि अगर हमें कहीं फिर (दुनिया में) पलटना मिले तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जायेंगे जिस तरह ऐन वक़्त पर ये लोग हम से अलग हो गए यूँ ही अल्लाह उन के आमाल को दिखाएगा जो उन्हें (सर तापा पास ही) पास दिखाई देंगें और फिर भला कब वह दोज़ख़ से निकल सकतें हैं (167)

ऐ लोगों जो कुछ ज़मीन में हैं उस में से हलाल व पाकीज़ा चीज़ (शौक़ से) खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तो तुम्हारा ज़ाहिर ब ज़ाहिर दुश्मन है (168)

वह तो तुम्हें बुराई और बदकारी ही का हुक्म करेगा और ये चाहेगा कि तुम बे जाने बूझे अल्लाह पर बोहतान बाँधों (169)

और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म अल्लाह की तरफ से नाज़िल हुआ है उस को मानो तो कहते हैं कि नहीं बल्कि हम तो उसी तरीक़े पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी न समझते हों और न राहे रास्त ही पर चलते रहे हों (170)

और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उन की मिसाल तो उस शख़्स की मिसाल है जो ऐसे जानवर को पुकार के अपना हलक़ फाड़े जो आवाज़ और पुकार के सिवा सुनता (समझता ख़ाक) न हो ये लोग बहरे गूँगे अन्धें हैं कि ख़ाक नहीं समझते (171)

ऐ ईमानदारों जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से सुथरी चीजें (शौक़ से) खाओं और अगर अल्लाह ही की इबादत करते हो तो उसी का शुक्र करो (172)

उसने तो तुम पर बस मुर्दा जानवर और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर ज़बह के वक़्त अल्लाह के सिवा और किसी का नाम लिया गया हो हराम किया है पस जो शख़्स मजबूर हो और सरकशी करने वाला और ज़्यादती करने वाला न हो (और उनमे से कोई चीज़ खा ले) तो उसपर गुनाह नहीं है बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (173)

बेशक जो लोग इन बातों को जो अल्लाह ने किताब में नाज़िल की है छिपाते हैं और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत (दुनयावी नफ़ा) ले लेतें है ये लोग बस अँगारों से अपने पेट भरते हैं और क़यामत के दिन अल्लाह उन से बात तक तो करेगा नहीं और न उन्हें (गुनाहों से) पाक करेगा और उन्हीं के लिए दर्दनाक अज़ाब है (174)

यही लोग वह हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश (अल्लाह) के बदले अज़ाब पस वह लोग दोज़ख़ की आग के क्योंकर बरदाश्त करेंगे (175)

ये इसलिए कि अल्लाह ने बरहक़ किताब नाज़िल की और बेशक जिन लोगों ने किताबे अल्लाह में रद्दो बदल की वह लोग बड़े पल्ले दरजे की मुख़ालेफत में हैं (176)
नेकी कुछ यही थोड़ी है कि नमाज़ में अपने मुँह पूरब या पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी तो उसकी है जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत और फ़रिश्तों और अल्लाह की किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और उसकी उलफ़त में अपना माल क़राबत दारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों और माँगने वालों और लौन्डी ग़ुलाम (के गुलू खलासी) में सर्फ करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात देता रहे और जब कोई एहद किया तो अपने क़ौल के पूरे हो और फ़क्र व फाक़ा रन्ज और घुटन के वक्त साबित क़दम रहे यही लोग वह हैं जो दावए ईमान में सच्चे निकले और यही लोग परहेज़गार है (177)

ऐ मोमिनों जो लोग (नाहक़) मार डाले जाएँ उनके बदले में तुम को जान के बदले जान लेने का हुक्म दिया जाता है आज़ाद के बदले आज़ाद और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत पस जिस (क़ातिल) को उसके ईमानी भाई तालिबे क़ेसास की तरफ से कुछ माफ़ कर दिया जाये तो उसे भी उसके क़दम ब क़दम नेकी करना और ख़ुश मआमलती से (ख़ून बहा) अदा कर देना चाहिए ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ आसानी और मेहरबानी है फिर उसके बाद जो ज़्यादती करे तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है (178)

और ऐ अक़लमनदों क़सास (के क़वाएद मुक़र्रर कर देने) में तुम्हारी ज़िन्दगी है (और इसीलिए जारी किया गया है ताकि तुम ख़ूँरेज़ी से) परहेज़ करो (179)

(मुसलमानों) तुम को हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो बशर्ते कि वह कुछ माल छोड़ जाएं तो माँ बाप और क़राबतदारों के लिए अच्छी वसीयत करें जो अल्लाह से डरते हैं उन पर ये एक हक़ है (180)

फिर जो सुन चुका उसके बाद उसे कुछ का कुछ कर दे तो उस का गुनाह उन्हीं लोगों की गरदन पर है जो उसे बदल डालें बेशक अल्लाह सब कुछ जानता और सुनता है (181)

(हाँ अलबत्ता) जो शख़्स वसीयत करने वाले से बेजा तरफ़दारी या बे इन्साफी का ख़ौफ रखता है और उन वारिसों में सुलह करा दे तो उस पर बदलने का कुछ गुनाह नहीं है बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (182)

ऐ ईमानदारों रोज़ा रखना जिस तरह तुम से पहले के लोगों पर फर्ज़ था उसी तरफ तुम पर भी फर्ज़ किया गया ताकि तुम उस की वजह से बहुत से गुनाहों से बचो (183)

(वह भी हमेशा नहीं बल्कि) गिनती के चन्द रोज़ इस पर भी (रोज़े के दिनों में) जो शख़्स तुम में से बीमार हो या सफर में हो तो और दिनों में जितने क़ज़ा हुए हो) गिन के रख ले और जिन्हें रोज़ा रखने की क़ूवत है और न रखें तो उन पर उस का बदला एक मोहताज को खाना खिला देना है और जो शख़्स अपनी ख़ुशी से भलाई करे तो ये उस के लिए ज़्यादा बेहतर है और अगर तुम समझदार हो तो (समझ लो कि फिदये से) रोज़ा रखना तुम्हारे हक़ में बहरहाल अच्छा है (184)

(रोज़ों का) महीना रमज़ान है जिस में क़ुरान नाज़िल किया गया जो लोगों का रहनुमा है और उसमें रहनुमाई और (हक़ व बातिल के) तमीज़ की रौशन निशानियाँ हैं (मुसलमानों) तुम में से जो शख़्स इस महीनें में अपनी जगह पर हो तो उसको चाहिए कि रोज़ा रखे और जो शख़्स बीमार हो या फिर सफ़र में हो तो और दिनों में रोज़े की गिनती पूरी करे अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती करनी नहीं चाहता और (शुमार का हुक्म इस लिए दिया है) ताकि तुम (रोज़ो की) गिनती पूरी करो और ताकि अल्लाह ने जो तुम को राह पर लगा दिया है उस नेअमत पर उस की बड़ाई करो और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो (185)

(ऐ रसूल) जब मेरे बन्दे मेरा हाल तुमसे पूछे तो (कह दो कि) मै उन के पास ही हूँ और जब मुझसे कोई दुआ माँगता है तो मै हर दुआ करने वालों की दुआ (सुन लेता हूँ और जो मुनासिब हो तो) क़ुबूल करता हूँ पस उन्हें चाहिए कि मेरा भी कहना माने) और मुझ पर ईमान लाएँ (186)

ताकि वह सीधी राह पर आ जाए (मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना हलाल कर दिया गया औरतें (गोया) तुम्हारी चोली हैं और तुम (गोया उन के दामन हो) अल्लाह ने देखा कि तुम (गुनाह) करके अपना नुकसान करते (कि आँख बचा के अपनी बीबी के पास चले जाते थे) तो उसने तुम्हारी तौबा क़ुबूल की और तुम्हारी ख़ता से दर गुज़र किया पस तुम अब उनसे हम बिस्तरी करो और (औलाद) जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए (तक़दीर में) लिख दिया है उसे माँगों और खाओ और पियो यहाँ तक कि सुबह की सफेद धारी (रात की) काली धारी से आसमान पर पूरब की तरफ़ तक तुम्हें साफ नज़र आने लगे फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और हाँ जब तुम मस्ज़िदों में एतेकाफ़ करने बैठो तो उन से (रात को भी) हम बिस्तरी न करो ये अल्लाह की (मुअय्युन की हुयी) हदे हैं तो तुम उनके पास भी न जाना यूँ खुल्लम खुल्ला अल्लाह अपने एहकाम लोगों के सामने बयान करता है ताकि वह लोग (नाफ़रमानी से) बचें (187)

और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न माल को (रिश्वत में) हुक्काम के यहाँ

झोंक दो ताकि लोगों के माल में से (जो) कुछ हाथ लगे नाहक़ ख़ुर्द बुर्द कर जाओ हालाकि तुम जानते हो (188)

(ऐ रसूल) तुम से लोग चाँद के बारे में पूछते हैं (कि क्यो घटता बढ़ता है) तुम कह दो कि उससे लोगों के (दुनयावी) अम्र और हज के अवक़ात मालूम होते है और ये कोई भली बात नही है कि घरो में पिछवाड़े से फाँद के) आओ बल्कि नेकी उसकी है जो परहेज़गारी करे और घरों में आना हो तो) उनके दरवाज़ों की तरफ से आओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम मुराद को पहुँचो (189)

और जो लोग तुम से लड़े तुम (भी) अल्लाह की राह में उनसे लड़ो और ज़्यादती न करो (क्योंकि) अल्लाह ज़्यादती करने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (190)

और तुम उन (मुशरिकों) को जहाँ पाओ मार ही डालो और उन लोगों ने जहाँ (मक्का) से तुम्हें शहर बदर किया है तुम भी उन्हें निकाल बाहर करो और फितना परदाज़ी (शिर्क) ख़ूँरेज़ी से भी बढ़ के है और जब तक वह लोग (कुफ़्फ़ार) मस्जिद हराम (काबा) के पास तुम से न लड़े तुम भी उन से उस जगह न लड़ों पस अगर वह तुम से लड़े तो बेखटके तुम भी उन को क़त्ल करो काफ़िरों की यही सज़ा है (191)

फिर अगर वह लोग बाज़ रहें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (192)

और उन से लड़े जाओ यहाँ तक कि फ़साद बाक़ी न रहे और सिर्फ़ अल्लाह ही का दीन रह जाए फिर अगर वह लोग बाज़ रहे तो उन पर ज़्यादती न करो क्योंकि ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती (अच्छी) नहीं (193)

हुरमत वाला महीना हुरमत वाले महीने के बराबर है (और कुछ महीने की खुसूसियत नहीं) सब हुरमत वाली चीज़े एक दूसरे के बराबर हैं पस जो शख़्स तुम पर ज़्यादती करे तो जैसी ज़्यादती उसने तुम पर की है वैसी ही ज़्यादती तुम भी उस पर करो और अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब समझ लो कि अल्लाह परहेज़गारों का साथी है (194)

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथ जान हलाकत मे न डालो और नेकी करो बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (195)

और सिर्फ़ अल्लाह ही के वास्ते हज और उमरा को पूरा करो अगर तुम बीमारी वग़ैरह की वजह से मजबूर हो जाओ तो फिर जैसी क़ुरबानी मयस्सर आये (कर दो) और जब तक क़ुरबानी अपनी जगह पर न पहुँच जाये अपने सर न मुँडवाओ फिर जब तुम में से कोई बीमार हो या उसके सर में कोई

तकलीफ हो तो (सर मुँडवाने का बदला) रोज़े या ख़ैरात या क़ुरबानी है पस जब मुतमइन रहों तो जो शख़्स हज तमत्तो का उमरा करे तो उसको जो क़ुरबानी मयस्सर आये करनी होगी और जिस से क़ुरबानी ना मुमकिन हो तो तीन रोज़े ज़ामानए हज में (रखने होंगे) और सात रोज़े जब तुम वापस आओ ये पूरा दहाई है ये हुक्म उस शख़्स के वास्ते है जिस के लड़के बाले मस्जिदुल हराम (मक्का) के बाशिन्दे न हो और अल्लाह से डरो और समझ लो कि अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (196)

हज के महीने तो (अब सब को) मालूम हैं (शव्वाल, ज़ीक़ादा, जिलहज) पस जो शख़्स उन महीनों में अपने ऊपर हज लाज़िम करे तो (एहराम से आख़िर हज तक) न औरत के पास जाए न कोई और गुनाह करे और न झगड़े और नेकी का कोई सा काम भी करों तो अल्लाह उस को ख़ूब जानता है और (रास्ते के लिए) ज़ाद राह मुहिय्या करो और सब मे बेहतर ज़ाद राह परहेज़गारी है और ऐ अक़्लमन्दों मुझ से डरते रहो (197)

इस में कोई इल्ज़ाम नहीं है कि (हज के साथ) तुम अपने परवरदिगार के फज़ल (नफ़ा तिजारत) की ख़्वाहिश करो और फिर जब तुम अरफात से चल खड़े हो तो मशअरुल हराम के पास अल्लाह का जिक्र करो और उस की याद भी करो तो जिस तरह तुम्हे बताया है अगरचे तुम इसके पहले तो गुमराहो से थे (198)

फिर जहाँ से लोग चल खड़े हों वहीं से तुम भी चल खड़े हो और उससे मग़फिरत की दुआ माँगों बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (199)

फिर जब तुम अरक़ाने हज बजा ला चुको तो तुम इस तरह ज़िक्रे अल्लाह करो जिस तरह तुम अपने बाप दादाओं का ज़िक्र करते हो बल्कि उससे बढ़ कर के फिर बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ मेरे परवरदिगार हमको जो (देना है) दुनिया ही में दे दे हालाकि (फिर) आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं (200)

और बाज़ बन्दे ऐसे हैं कि जो दुआ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले मुझे दुनिया में नेअमत दे और आख़िरत में सवाब दे और दोज़ख़ की बाग से बचा (201)

यही वह लोग हैं जिनके लिए अपनी कमाई का हिस्सा चैन है (202)

और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (निस्फ़) और इन गिनती के चन्द दिनों तक (तो) अल्लाह का ज़िक्र करो फिर जो शख़्स जल्दी कर बैठै और (मिना) से और दो ही दिन में चल ख़ड़ा हो तो उस पर भी गुनाह नहीं है और जो (तीसरे दिन तक) ठहरा रहे उस पर भी कुछ गुनाह

नही लेकिन यह रियायत उसके वास्ते है जो परहेज़गार हो, और ख़ुदा से डरते रहो और यक़ीन जानो कि एक दिन तुम सब के सब उसकी तरफ क़ब्रों से उठाए जाओगे (203)

ऐ रसूल बाज़ लोग मुनाफिक़ीन से ऐसे भी हैं जिनकी चिकनी चुपड़ी बातें (इस ज़रा सी) दुनयावी ज़िन्दगी में तुम्हें बहुत भाती है और वह अपनी दिली मोहब्बत पर अल्लाह को गवाह मुक़र्रर करते हैं हालॉकि वह तुम्हारे दुश्मनों में सबसे ज़्यादा झगड़ालू हैं (204)

और जहाँ तुम्हारी मोहब्बत से मुँह फेरा तो इधर उधर दौड़ धूप करने लगा ताकि मुल्क में फ़साद फैलाए और ज़राअत {खेती बाड़ी} और मवेशी का सत्यानास करे और अल्लाह फसाद को अच्छा नहीं समझता (205)

और जब कहा जाता है कि अल्लाह से डरो तो उसे ग़ुरुर गुनाह पर उभारता है बस ऐसे कम्बख़्त के लिए जहन्नुम ही काफ़ी है और बहुत ही बुरा ठिकाना है (206)

और लोगों में से अल्लाह के बन्दे कुछ ऐसे हैं जो ख़ुदा की (ख़ुशनूदी) हासिल करने की ग़रज़ से अपनी जान तक बेच डालते हैं और अल्लाह ऐसे बन्दों पर बड़ा ही शफ़्क़क़त वाला है (207)

ईमान वालों तुम सबके सब एक बार इस्लाम में (पूरी तरह) दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तुम्हारा यक़ीनी ज़ाहिर ब ज़ाहिर दुश्मन है (208)

फिर जब तुम्हारे पास रौशन दलीले आ चुकी उसके बाद भी डगमगा गए तो अच्छी तरह समझ लो कि अल्लाह (हर तरह) ग़ालिब और तदबीर वाला है (209)

क्या वह लोग इसी के मुन्तज़िर हैं कि सफेद बादल के साय बानो की आड़ में अज़ाबे अल्लाह और अज़ाब के फ़रिश्ते उन पर ही आ जाए और सब झगड़े चुक ही जाते हालॉकि आख़िर कुल उमुर ख़ुदा ही की तरफ रुजू किए जाएँगे (210)

(ऐ रसूल) बनी इसराइल से पूछो कि हम ने उन को कैसी कैसी रौशन निशानियाँ दी और जब किसी शख़्स के पास अल्लाह की नेअमत (किताब) आ चुकी उस के बाद भी उस को बदल डाले तो बेशक़ अल्लाह सख़्त अज़ाब वाला है (211)

जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया उन के लिये दुनिया की ज़रा सी ज़िन्दगी ख़ूब अच्छी दिखायी गयी है और इमानदारों से मसखरापन करते हैं हालॉकि क़यामत के दिन परहेज़गारों का दरजा उनसे (कहीं) बढ़ चढ़ के होगा और अल्लाह जिस को चाहता है बे हिसाब रोज़ी अता फरमाता है (212)

(पहले) सब लोग एक ही दीन रखते थे (फिर आपस में झगड़ने लगे तब) अल्लाह ने नजात से ख़ुश ख़बरी देने वाले और अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बरों को भेजा और इन पैग़म्बरों के साथ बरहक़ किताब भी नाज़िल की ताकि जिन बातों में लोग झगड़ते थे किताबे ख़ुदा (उसका) फ़ैसला कर दे और फिर अफ़सोस तो ये है कि इस हुक्म से इख़्तेलाफ किया भी तो उन्हीं लोगों ने जिन को किताब दी गयी थी और वह भी जब उन के पास अल्लाह के साफ एहकाम आ चुके उसके बाद और वह भी आपस की शरारत से तब अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से (ख़ालिस) ईमानदारों को वह राहे हक़ दिखा दी जिस में उन लोगों ने इख़्तेलाफ डाल रखा था और ख़ुदा जिस को चाहे राहे रास्त की हिदायत करता है (213)

क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि बेहश्त में पहुँच ही जाओगे हालाँकि अभी तक तुम्हे अगले ज़माने वालों की सी हालत नहीं पेश आयी कि उन्हें तरह तरह की तक़लीफों (फाक़ा कशी मोहताजी) और बीमारी ने घेर लिया था और ज़लज़ले में इस क़दर झिंझोड़े गए कि आख़िर (आजिज़ हो के) पैग़म्बर और ईमान वाले जो उन के साथ थे कहने लगे देखिए अल्लाह की मदद कब (होती) है देखो (घबराओ नहीं) ख़ुदा की मदद यक़ीनन बहुत क़रीब है (214)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग पूछते हैं कि हम अल्लाह की राह में क्या खर्च करें (तो तुम उन्हें) जवाब दो कि तुम अपनी नेक कमाई से जो कुछ खर्च करो तो (वह तुम्हारे माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों का हक़ है और तुम कोई नेक सा काम करो ख़ुदा उसको ज़रुर जानता है (215)

(मुसलमानों) तुम पर जिहाद फर्ज़ किया गया अगरचे तुम पर शाक़ ज़रुर है और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ (जिहाद) को नापसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को पसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह (तो) जानता ही है मगर तुम नही जानते हो (216)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग हुरमत वाले महीनों की निस्बत पूछते हैं कि (आया) जिहाद उनमें जायज़ है तो तुम उन्हें जवाब दो कि इन महीनों में जेहाद बड़ा गुनाह है और ये भी याद रहे कि ख़ुदा की राह से रोकना और अल्लाह से इन्कार और मस्जिदुल हराम (काबा) से रोकना और जो उस के एहल है उनका मस्जिद से निकाल बाहर करना (ये सब) अल्लाह के नज़दीक इस से भी बढ़कर गुनाह है और फ़ितना परदाज़ी कुश्ती ख़ून से भी बढ़ कर है और ये कुफ़्फ़ार हमेशा तुम से लड़ते ही चले जाएँगें यहाँ तक कि अगर उन का बस चले तो तुम को तुम्हारे दीन से फिरा दे और तुम में जो शख़्स अपने दीन से फिरा और कुफ्ऱ की हालत में मर गया तो ऐसों ही का किया कराया सब कुछ दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में अकारत है और यही लोग जहन्नुमी हैं (और) वह उसी में हमेशा रहेंगें (217)

बेशक जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अल्लाह की राह में हिजरत की और जिहाद किया यही लोग रहमते अल्लाह के उम्मीदवार हैं और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (218)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग शराब और जुए के बारे में पूछते हैं तो तुम उन से कह दो कि इन दोनो में बड़ा गुनाह है और कुछ फायदे भी हैं और उन के फायदे से उन का गुनाह बढ़ के है और तुम से लोग पूछते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करे तुम उनसे कह दो कि जो तुम्हारे ज़ुरुरत से बचे यूँ अल्लाह अपने एहकाम तुम से साफ़ साफ़ बयान करता है (219)

ताकि तुम दुनिया और आख़िरत (के मामलात) में ग़ौर करो और तुम से लोग यतीमों के बारे में पूछते हैं तुम (उन से) कह दो कि उनकी (इसलाह दुरुस्ती) बेहतर है और अगर तुम उन से मिलजुल कर रहो तो (कुछ हर्ज) नहीं आख़िर वह तुम्हारें भाई ही तो हैं और अल्लाह फ़सादी को ख़ैर ख़्वाह से (अलग ख़ूब) जानता है और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को मुसीबत में डाल देता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (220)

और (मुसलमानों) तुम मुशरिक औरतों से जब तक ईमान न लाएँ निकाह न करो क्योंकि मुशरिका औरत तुम्हें अपने हुस्नो जमाल में कैसी ही अच्छी क्यों न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़ुरुर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह में न दो और मुशरिक तुम्हे कैसा ही अच्छा क्यो न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़ुरुर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह में न दो और मुशरिक तुम्हें क्या ही अच्छा क्यों न मालूम हो मगर फिर भी बन्दा मोमिन उनसे ज़ुरुर अच्छा है ये (मुशरिक मर्द या औरत) लोगों को दोज़ख़ की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह अपनी इनायत से बेहिश्त और बख़्शिश की तरफ बुलाता है और अपने एहकाम लोगों से साफ साफ बयान करता है ताकि ये लोग चेते (221)

(ऐ रसूल) तुम से लोग हैज़ के बारे में पूछते हैं तुम उनसे कह दो कि ये गन्दगी और घिन की बीमारी है तो (अय्यामे हैज़) में तुम औरतों से अलग रहो और जब तक वह पाक न हो जाएँ उनके पास न जाओ पस जब वह पाक हो जाएँ तो जिधर से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है उन के पास जाओ बेशक अल्लाह तौबा करने वालो और सुथरे लोगों को पसन्द करता है तुम्हारी बीवियाँ (गोया) तुम्हारी खेती हैं (222)

तो तुम अपनी खेती में जिस तरह चाहो आओ और अपनी आइन्दा की भलाई के वास्ते (आमाल साके) पेशगी भेजो और अल्लाह से डरते रहो और ये भी समझ रखो कि एक दिन तुमको उसके सामने जाना है और ऐ रसूल इमानदारों को नजात की ख़ुश ख़बरी दे दो (223)

और (मुसलमानों) तुम अपनी क़समों (के हीले) से अल्लाह (के नाम) को लोगों के साथ सुलूक करने और अल्लाह से डरने और लोगों के दरमियान सुलह करवा देने का मानेअ न ठहराव और अल्लाह सबकी सुनता और सब को जानता है (224)

तुम्हारी लग़ो {बेकार} क़समों पर जो बेइख़्तेयार ज़बान से निकल जाए अल्लाह तुम से गिरफ़्तार नहीं करने का मगर उन कसमों पर ज़रुर तुम्हारी गिरफ़्त करेगा जो तुमने क़सदन {जान कर} दिल से खायीं हो और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है (225)

जो लोग अपनी बीवियों के पास जाने से क़सम खायें उन के लिए चार महीने की मोहलत है पस अगर (वह अपनी क़सम से उस मुद्दत में बाज़ आए) और उनकी तरफ तवज्जो करें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (226)

और अगर तलाक़ ही की ठान ले तो (भी) बेशक अल्लाह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है (227)

और जिन औरतों को तलाक़ दी गयी है वह अपने आपको तलाक़ के बाद तीन हैज़ के ख़त्म हो जाने तक निकाह सानी से रोके और अगर वह औरतें अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर इमान लायीं हैं तो उनके लिए जाएज़ नहीं है कि जो कुछ भी अल्लाह ने उनके रहम (पेट) में पैदा किया है उसको छिपाएँ और अगर उन के शौहर मेल जोल करना चाहें तो वह (मुद्दत मज़कूरा) में उन के वापस बुला लेने के ज़्यादा हक़दार हैं और शरीयत मुवाफिक़ औरतों का (मर्दों पर) वही सब कुछ हक़ है जो मर्दों का औरतों पर है हाँ अलबत्ता मर्दों को (फ़ज़ीलत में) औरतों पर फौक़ियत ज़रुर है और अल्लाह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (228)

तलाक़ रजअई जिसके बाद रुजू हो सकती है दो ही मरतबा है उसके बाद या तो शरीयत के मवाफिक़ रोक ही लेना चाहिए या हुस्न सुलूक से (तीसरी दफ़ा) बिल्कुल रूख़सत और तुम को ये जायज़ नहीं कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उस में से फिर कुछ वापस लो मगर जब दोनों को इसका ख़ौफ़ हो कि अल्लाह ने जो हदें मुक़र्रर कर दी हैं उन को दोनो मिया बीवी क़ायम न रख सकेंगे फिर अगर तुम्हे (ऐ मुसलमानो) ये ख़ौफ़ हो कि यह दोनो अल्लाह की मुकर्रर की हुयी हदो पर क़ायम न रहेंगे तो अगर औरत मर्द को कुछ देकर अपना पीछा छुड़ाए (खुला कराए) तो इसमें उन दोनों पर कुछ गुनाह नहीं है ये अल्लाह की मुक़र्रर की हुयी हदें हैं बस उन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की मुक़र्रर की हुयी हदों से आगे बढ़ते हैं वह ही लोग तो ज़ालिम हैं (229)

फिर अगर तीसरी बार भी औरत को तलाक़ (बाइन) दे तो उसके बाद जब तक दूसरे मर्द से निकाह न कर ले उस के लिए हलाल नही हाँ अगर दूसरा शौहर निकाह के बाद उसको तलाक़ दे दे तब

अलबत्ता उन मिया बीबी पर बाहम मेल कर लेने में कुछ गुनाह नहीं है अगर उन दोनों को यह गुमान हो कि अल्लाह हदों को क़ायम रख सकेंगें और ये अल्लाह की (मुक़र्रर की हुयी) हदें हैं जो समझदार लोगों के वास्ते साफ साफ बयान करता है (230)

और जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो और उनकी मुद्दत पूरी होने को आए तो अच्छे उनवान से उन को रोक लो या हुस्ने सुलूक से बिल्कुल रुख़सत ही कर दो और उन्हें तकलीफ पहुँचाने के लिए न रोको ताकि (फिर उन पर) ज़्यादती करने लगो और जो ऐसा करेगा तो यक़ीनन अपने ही पर ज़ुल्म करेगा और अल्लाह के एहकाम को कुछ हँसी ठट्टा न समझो और अल्लाह ने जो तुम्हें नेअमतें दी हैं उन्हें याद करो और जो किताब और अक्ल की बातें तुम पर नाज़िल की उनसे तुम्हारी नसीहत करता है और अल्लाह से डरते रहो और समझ रखो कि अल्लाह हर चीज़ को ज़रुर जानता है (231)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी मुद्दत (इद्दत) पूरी कर लें तो उन्हें अपने शौहरो के साथ निकाह करने से न रोकों जब आपस में दोनों मिया बीवी शरीयत के मुवाफिक़ अच्छी तरह मिल जुल जाएँ ये उसी शख़्स को नसीहत की जाती है जो तुम में से अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान ला चुका हो यही तुम्हारे हक़ में बड़ी पाकीज़ा और सफ़ाई की बात है और उसकी ख़ूबी अल्लाह खूब जानता है और तुम (वैसा) नहीं जानते हो (232)

और (तलाक़ देने के बाद) जो शख़्स अपनी औलाद को पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे तो उसकी ख़ातिर से माएँ अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ और जिसका वह लड़का है (बाप) उस पर माओं का खाना कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ लाज़िम है किसी शख़्स को ज़हमत नहीं दी जाती मगर उसकी गुन्जाइश भर न माँ का उस के बच्चे की वजह से नुक़सान गवारा किया जाए और न जिस का लड़का है (बाप) उसका (बल्कि दस्तूर के मुताबिक़ दिया जाए) और अगर बाप न हो तो दूध पिलाने का हक़ उसी तरह वारिस पर लाज़िम है फिर अगर दो बरस के क़ब्ल माँ बाप दोनों अपनी मरज़ी और मशवरे से दूध बढ़ाई करना चाहें तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी अन्ना से) दूध पिलवाना चाहो तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं है बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ मुक़र्रर किया है उन के हवाले कर दो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह ज़रुर देखता है (233)

और तुममें से जो लोग बीवियाँ छोड़ के मर जाएँ तो ये औरतें चार महीने दस रोज़ (इद्दा भर) अपने को रोके (और दूसरा निकाह न करें) फिर जब (इद्दे की मुद्दत) पूरी कर ले तो शरीयत के मुताबिक़ जो कुछ अपने हक़ में करें इस बारे में तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है (234)

और अगर तुम (उस ख़ौफ से कि शायद कोई दूसरा निकाह कर ले) उन औरतों से इशारतन निकाह

की (कैद इद्दा) ख़ास्तगारी {उम्मीदवारी} करो या अपने दिलो में छिपाए रखो तो उसमें भी कुछ तुम पर इल्ज़ाम नहीं हैं (क्योंकि) अल्लाह को मालूम है कि (तुम से सब्र न हो सकेगा और) उन औरतों से निकाह करने का ख़्याल आएगा लेकिन चोरी छिपे से निकाह का वायदा न करना मगर ये कि उन से अच्छी बात कह गुज़रों (तो मज़ाएका नहीं) और जब तक मुक़र्रर मियाद गुज़र न जाए निकाह का क़सद {इरादा} भी न करना और समझ रखो कि जो कुछ तुम्हारी दिल में है अल्लाह उस को ज़रुर जानता है तो उस से डरते रहो और (ये भी) जान लो कि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है (235)

और अगर तुम ने अपनी बीवियों को हाथ तक न लगाया हो और न महर मुअय्युन किया हो और उसके क़ब्ल ही तुम उनको तलाक़ दे दो (तो इस में भी) तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है हाँ उन औरतों के साथ (दस्तूर के मुताबिक़) मालदार पर अपनी हैसियत के मुआफिक़ और ग़रीब पर अपनी हैसियत के मुवाफिक़ (कपड़े रुपए वग़ैरह से) कुछ सुलूक करना लाज़िम है नेकी करने वालों पर ये भी एक हक़ है (236)

और अगर तुम उन औरतों का मेहर तो मुअय्यन कर चुके हो मगर हाथ लगाने के क़ब्ल ही तलाक़ दे दो तो उन औरतों को मेहर मुअय्यन का आधा दे दो मगर ये कि ये औरतें ख़ुद माफ कर दें या उन का वली जिसके हाथ में उनके निकाह का एख़्तेयार हो माफ़ कर दे (तब कुछ नही) और अगर तुम ही सारा मेहर बख़्श दो तो परहेज़गारी से बहुत ही क़रीब है और आपस की बुर्ज़ुगी तो मत भूलो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह ज़रुर देख रहा है (237)

और (मुसलमानों) तुम तमाम नमाज़ों की और ख़ुसूसन बीच वाली नमाज़ सुबह या ज़ोहर या अस्र की पाबन्दी करो और ख़ास अल्लाह ही वास्ते नमाज़ में क़ुनूत पढ़ने वाले हो कर खड़े हो फिर अगर तुम ख़ौफ की हालत में हो (238)

और पूरी नमाज़ न पढ़ सको तो सवार या पैदल जिस तरह बन पड़े पढ़ लो फिर जब तुम्हें इत्मेनान हो तो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें (अपने रसूल की मआरफत इन बातों को सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे (239)

उसी तरह अल्लाह को याद करो और तुम में से जो लोग अपनी बीवियों को छोड़ कर मर जाएँ उन पर अपनी बीबियों के हक़ में साल भर तक के नान व नुफ्क़े {रोटी कपड़ा} और (घर से) न निकलने की वसीयत करनी (लाज़िम) है पस अगर औरतें ख़ुद निकल खड़ी हो तो जायज़ बातों (निकाह वग़ैरह) से कुछ अपने हक़ में करे उसका तुम पर कुछ इल्ज़ाम नही है और अल्लाह हर शै पर ग़ालिब और हिक़मत वाला है (240)

और जिन औरतों को ताअय्युन मेहर और हाथ लगाए बग़ैर तलाक़ दे दी जाए उनके साथ जोड़े रुपए वग़ैरह से सुलूक करना लाज़िम है (241)

(ये भी) परहेज़गारों पर एक हक़ है उसी तरह ख़ुदा तुम लोगों की हिदायत के वास्ते अपने एहकाम साफ़ साफ़ बयान फरमाता है (242)

ताकि तुम समझो (ऐ रसूल) क्या तुम ने उन लोगों के हाल पर नज़र नही की जो मौत के डर के मारे अपने घरों से निकल भागे और वह हज़ारो आदमी थे तो ख़ुदा ने उन से फरमाया कि सब के सब मर जाओ (और वह मर गए) फिर ख़ुदा न उन्हें जिन्दा किया बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान है मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं करते (243)
और मुसलमानों ख़ुदा की राह मे जिहाद करो और जान रखो कि ख़ुदा ज़रुर सब कुछ सुनता (और) जानता है (244)

है कोई जो ख़ुदा को क़र्ज़े हुस्ना दे ताकि ख़ुदा उसके माल को इस के लिए कई गुना बढ़ा दे और अल्लाह ही तंगदस्त करता है और वही कशायश देता है और उसकी तरफ सब के सब लौटा दिये जाओगे (245)

(ऐ रसूल) क्या तुमने मूसा के बाद बनी इसराइल के सरदारों की हालत पर नज़र नही की जब उन्होंने अपने नबी (शमूयेल) से कहा कि हमारे वास्ते एक बादशाह मुक़र्रर कीजिए ताकि हम राहे ख़ुदा में जिहाद करें (पैग़म्बर ने) फ़रमाया कहीं ऐसा तो न हो कि जब तुम पर जिहाद वाजिब किया जाए तो तुम न लड़ो कहने लगे जब हम अपने घरों और अपने बाल बच्चों से निकाले जा चुके तो फिर हमे कौन सा उज्ऱ बाक़ी है कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें फिर जब उन पर जिहाद वाजिब किया गया तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा सब के सब ने लड़ने से मुँह फेरा और ख़ुदा तो ज़ालिमों को खूब जानता है (246)

और उनके नबी ने उनसे कहा कि बेशक ख़ुदा ने तुम्हारी दरख़्वास्त के (मुताबिक़ तालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया (तब) कहने लगे उस की हुकूमत हम पर क्यों कर हो सकती है हालाकि सल्तनत के हक़दार उससे ज़्यादा तो हम हैं क्योंकि उसे तो माल के एतबार से भी फ़ारगुल बाली {ख़ुशहाली} तक नसीब नहीं (नबी ने) कहा अल्लाह ने उसे तुम पर फज़ीलत दी है और माल में न सही मगर इल्म और जिस्म का फैलाव तो उस का अल्लाह ने ज़्यादा फरमाया हे और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहें दे और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला और वाक़िफ़कार है (247)

और उन के नबी ने उनसे ये भी कहा इस के (मुनाजानिब अल्लाह) बादशाह होने की ये पहचान है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा जिसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तसकीन दे चीज़ें और

उन तब्बुरक़ात से बचा खुचा होगा जो मूसा और हारुन की औलाद यादगार छोड़ गयी है और उस सन्दूक को फरिश्ते उठाए होगें अगर तुम ईमान रखते हो तो बेशक उसमें तुम्हारे वास्ते पूरी निशानी है (248)

फिर जब तालूत लशकर समैत (शहर ऐलिया से) रवाना हुआ तो अपने साथियों से कहा देखो आगे एक नहर मिलेगी इस से यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे सब्र की आज़माइश करेगा पस जो शख़्स उस का पानी पीयेगा मुझे (कुछ वास्ता) नही रखता और जो उस को नही चखेगा वह बेशक मुझ से होगा मगर हाँ जो अपने हाथ से एक (आधा चुल्लू भर के पी) ले तो कुछ हर्ज नही पस उन लोगों ने न माना और चन्द आदमियों के सिवा सब ने उस का पानी पिया ख़ैर जब तालूत और जो मोमिनीन उन के साथ थे नहर से पास हो गए तो (ख़ास मोमिनों के सिवा) सब के सब कहने लगे कि हम में तो आज भी जालूत और उसकी फौज से लड़ने की सकत नहीं मगर वह लोग जिनको यक़ीन है कि एक दिन अल्लाह को मुँह दिखाना है बेधड़क बोल उठे कि ऐसा बहुत हुआ कि अल्लाह के हुक्म से छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ गयी है और अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है (249)

(ग़रज़) जब ये लोग जालूत और उसकी फौज के मुक़ाबले को निकले तो दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार हमें कामिल सब्र अता फरमा और मैदाने जंग में हमारे क़दम जमाए रख और हमें काफिरों पर फतेह इनायत कर (250)

फिर तो उन लोगों ने ख़ुदा के हुक्म से दुशमनों को शिकस्त दी और दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया और ख़ुदा ने उनको सल्तनत व तदबीर तम्द्दुन अता की और इल्म व हुनर जो चाहा उन्हें गोया घोल के पिला दिया और अगर अल्लाह बाज़ लोगों के ज़रिए से बाज़ का दफाए (शर) न करता तो तमाम रुए ज़मीन पर फ़साद फैल जाता मगर ख़ुदा तो सारे जहाँन के लोगों पर फज़्ल व रहम करता है (251)

ऐ रसूल ये अल्लाह की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम को ठीक ठीक पढ़के सुनाते हैं और बेशक तुम ज़रुर रसूलों में से हो (252)

यह सब रसूल (जो हमने भेजे) उनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जिनसे खुद अल्लाह ने बात की उनमें से बाज़ के (और तरह पर) दर्जे बुलन्द किये और मरियम के बेटे ईसा को (कैसे कैसे रौशन मौजिज़े अता किये) और रूहुलकुदस (जिबरईल) के ज़रिये से उनकी मदद की और अगर अल्लाह चाहता तो लोग इन (पैग़म्बरों) के बाद हुये वह अपने पास रौशन मौजिज़े आ चुकने पर आपस में न लड़ मरते मगर उनमें फूट पड़ गई पस उनमें से बाज़ तो ईमान लाये और बाज़ काफ़िर हो गये और अगर अल्लाह चाहता तो यह लोग आपस में लड़ते मगर अल्लाह वही करता है जो चाहता है (253)

ऐ ईमानदारों जो कुछ हमने तुमको दिया है उस दिन के आने से पहले (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो जिसमें न तो ख़रीदो फरोख़्त होगी और न यारी (और न आशनाई) और न सिफ़ारिश (ही काम आयेगी) और कुफ्ऱ करने वाले ही तो ज़ुल्म ढाते हैं (254)

अल्लाह ही वो ज़ाते पाक है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वह) ज़िन्दा है (और) सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानो में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है कौन ऐसा है जो बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके पास किसी की सिफ़ारिश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है (वह) और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (अल्लाह सबको) जानता है और लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जिसे जितना चाहे (सिखा दे) उसकी कुर्सी सब आसमानों और ज़मीनों को घेरे हुये है और उन दोनों (आसमान व ज़मीन) की निगेहदाश्त उसपर कुछ भी मुश्किल नहीं और वह आलीशान बुज़ुर्ग मरतबा है (255)

दीन में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं क्योंकि हिदायत गुमराही से (अलग) ज़ाहिर हो चुकी तो जिस शख़्स ने झूठे खुदाओं बुतों से इंकार किया और अल्लाह ही पर ईमान लाया तो उसने वो मज़बूत रस्सी पकड़ी है जो टूट ही नहीं सकती और अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है (256)

अल्लाह उन लोगों का सरपरस्त है जो ईमान ला चुके कि उन्हें (गुमराही की) तारीकि़यों से निकाल कर (हिदायत की) रौशनी में लाता है और जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया उनके सरपरस्त शैतान हैं कि उनको (ईमान की) रौशनी से निकाल कर (कुफ्ऱ की) तारीकियों में डाल देते हैं यही लोग तो जहन्नुमी हैं (और) यही उसमें हमेशा रहेंगे (257)

(ऐ रसूल) क्या तुम ने उस शख़्स (के हाल) पर नज़र नहीं की जो सिर्फ़ इस बिरते पर कि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी इब्राहीम से उनके परवरदिगार के बारे में उलझ पड़ा कि जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा परवरदिगार तो वह है जो (लोगों को) जिलाता और मारता है तो वो भी (शेख़ी में) आकर कहने लगा मैं भी जिलाता और मारता हूँ (तुम्हारे अल्लाह ही में कौन सा कमाल है) इब्राहीम ने कहा (अच्छा) अल्लाह तो आफ़ताब को पूरब से निकालता है भला तुम उसको पश्चिम से निकालो इस पर वह काफि़र हक्का बक्का हो कर रह गया (मगर ईमान न लाया) और अल्लाह ज़ालिमों को मंजि़ले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (258)

(ऐ रसूल तुमने) मसलन उस (बन्दे के हाल पर भी नज़र की जो एक गॉव पर से होकर गुज़रा और वो ऐसा उजड़ा था कि अपनी छतों पर से ढह के गिर पड़ा था ये देखकर वह बन्दा (कहने लगा) अल्लाह अब इस गॉव को ऐसी वीरानी के बाद क्योंकर आबाद करेगा इस पर अल्लाह ने उसको (मार डाला) सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसको जिला उठाया (तब) पूँछा तुम कितनी देर पड़े रहे

अर्ज़ की एक दिन पड़ा रहा एक दिन से भी कम फ़रमाया नहीं तुम (इसी हालत में) सौ बरस पड़े रहे अब ज़रा अपने खाने पीने (की चीज़ों) को देखो कि बुसा तक नहीं और ज़रा अपने गधे (सवारी) को तो देखो कि उसकी हड्डियाँ ढेर पड़ी हैं और सब इस वास्ते किया है ताकि लोगों के लिये तुम्हें कुदरत का नमूना बनाये और अच्छा अब (इस गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र करो कि हम क्योंकर जोड़ जाड़ कर ढाँचा बनाते हैं फिर उनपर गोश्त चढ़ाते हैं पस जब ये उनपर ज़ाहिर हुआ तो बेसाख़्ता बोल उठे कि (अब) मैं ये यक़ीने कामिल जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (259)

और (ऐ रसूल) वह वाक़ेया भी याद करो जब इबराहीम ने (अल्लाह से) दरख़्वास्त की कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मुझे भी तो दिखा दे कि तू मुर्दो को क्योंकर ज़िन्दा करता है ख़ुदा ने फ़रमाया क्या तुम्हें (इसका) यक़ीन नहीं इबराहीम ने अर्ज़ की (क्यों नहीं) यक़ीन तो है मगर आँख से देखना इसलिए चाहता हूँ कि मेरे दिल को पूरा इत्मिनान हो जाए फ़रमाया (अगर ये चाहते हो) तो चार परिन्दे लो और उनको अपने पास मॅगवा लो और टुकड़े टुकड़े कर डालो फिर हर पहाड़ पर उनका एक एक टुकड़ा रख दो उसके बाद उनको बुलाओ (फिर देखो तो क्यों कर वह सब के सब तुम्हारे पास दौड़े हुए आते हैं और समझ रखो कि अल्लाह बेशक ग़ालिब और हिकमत वाला है (260)

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनके (खर्च) की मिसाल उस दाने की सी मिसाल है जिसकी सात बालियॉ निकलें (और) हर बाली में सौ (सौ) दाने हों और अल्लाह जिसके लिये चाहता है दूना कर देता है और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला (हर चीज़ से) वाक़िफ़ है (261)

जो लोग अपने माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं और फिर ख़र्च करने के बाद किसी तरह का एहसान नहीं जताते हैं और न जिनपर एहसान किया है उनको सताते हैं उनका अज्र (व सवाब) उनके परवरदिगार के पास है और न आख़ेरत में उनपर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे (262)

(सायल को) नरमी से जवाब दे देना और (उसके इसरार पर न झिड़कना बल्कि) उससे दरगुज़र करना उस ख़ैरात से कहीं बेहतर है जिसके बाद (सायल को) ईज़ा पहुँचे और अल्लाह हर शै से बेपरवा (और) बुर्दबार है (263)

ऐ इमानदारों आपनी ख़ैरात को एहसान जताने और (सायल को) ईज़ा {तकलीफ} देने की वजह से उस शख़्स की तरह अकारत मत करो जो अपना माल महज़ लोगों को दिखाने के वास्ते ख़र्च करता है और अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान नहीं रखता तो उसकी ख़ैरात की मिसाल उस चिकनी चट्टान की सी है जिसपर कुछ ख़ाक (पड़ी हुयी) हो फिर उसपर ज़ोर शोर का (बड़े बड़े क़तरों से) मेंह बरसे और उसको (मिट्टी को बहाके) चिकना चुपड़ा छोड़ जाए (इसी तरह) रियाकार अपनी उस ख़ैरात या उसके सवाब में से जो उन्होंने की है किसी चीज़ पर क़ब्ज़ा न पाएंगे (न दुनिया में

न आख़ेरत में) और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत करके मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (264)

और जो लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए और अपने दिली एतक़ाद से अपने माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस (हरे भरे) बाग़ की सी है जो किसी टीले या टीकरे पर लगा हो और उस पर ज़ोर शोर से पानी बरसा तो अपने दुगने फल लाया और अगर उस पर बड़े धड़ल्ले का पानी न भी बरसे तो उसके लिये हल्की फुआर (ही काफ़ी) है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी देखभाल करता रहता है (265)

भला तुम में कोई भी इसको पसन्द करेगा कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो उसके नीचे नहरें जारी हों और उसके लिए उसमें तरह तरह के मेवे हों और (अब) उसको बुढ़ापे ने घेर लिया है और उसके (छोटे छोटे) नातवॉ कमज़ोर बच्चे हैं कि एकबारगी उस बाग़ पर ऐसा बगोला आ पड़ा जिसमें आग (भरी) थी कि वह बाग़ जल भुन कर रह गया अल्लाह अपने एहकाम को तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो (266)

ऐ ईमान वालों अपनी पाक कमाई और उन चीज़ों में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हैं (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो और बुरे माल को (अल्लाह की राह में) देने का क़सद भी न करो हालॉकि अगर ऐसा माल कोई तुमको देना चाहे तो तुम अपनी ख़ुशी से उसके लेने वाले नहीं हो मगर ये कि उस (के लेने) में (अमदन) ऑख चुराओ और जाने रहो कि अल्लाह बेशक बेनियाज़ (और) सज़ावारे हम्द है (267)

शैतान तमुको तंगदस्ती से डराता है और बुरी बात (बुख्ल) का तुमको हुक्म करता है और अल्लाह तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़ल (व करम) का वायदा करता है और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला और सब बातों का जानने वाला है (268)

वह जिसको चाहता है हिकमत अता फ़रमाता है और जिसको (अल्लाह की तरफ) से हिकमत अता की गई तो इसमें शक नहीं कि उसे ख़ूबियों से बड़ी दौलत हाथ लगी और अक्लमन्दों के सिवा कोई नसीहत मानता ही नहीं (269)

और तुम जो कुछ भी ख़र्च करो या कोई मन्नत मानो अल्लाह उसको ज़रूर जानता है और (ये भी याद रहे) कि ज़ालिमों का (जो) अल्लाह का हक़ मार कर औरों की नज्ऱ करते हैं (क़यामत में) कोई मददगार न होगा (270)

अगर ख़ैरात को ज़ाहिर में दो तो यह (ज़ाहिर करके देना) भी अच्छा है और अगर उसको छिपाओ और हाजतमन्दों को दो तो ये छिपा कर देना तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है और ऐसे देने को

अल्लाह तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (271)

ऐ रसूल उनका मंज़िले मक़सूद तक पहुँचाना तुम्हारा काम नहीं (तुम्हारा काम सिर्फ़ रास्ता दिखाना है) मगर हॉ अल्लाह जिसको चाहे मंज़िले मक़सूद तक पहुँचा दे और (लोगों) तुम जो कुछ नेक काम में ख़र्च करोगे तो अपने लिए और तुम अल्लाह की ख़ुशनूदी के सिवा और काम में ख़र्च करते ही नहीं हो (और जो कुछ तुम नेक काम में ख़र्च करोगे) (क़यामत में) तुमको भरपूर वापस मिलेगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा (272)

(यह ख़ैरात) ख़ास उन हाजतमन्दों के लिए है जो अल्लाह की राह में घिर गये हो (और) रूए ज़मीन पर (जाना चाहें तो) चल नहीं सकते नावाक़िफ़ उनको सवाल न करने की वजह से अमीर समझते हैं (लेकिन) तू (ऐ मुख़ातिब अगर उनको देखे) तो उनकी सूरत से ताड़ जाये (कि ये मोहताज हैं अगरचे) लोगों से चिमट के सवाल नहीं करते और जो कुछ भी तुम नेक काम में ख़र्च करते हो अल्लाह उसको ज़रूर जानता है (273)

जो लोग रात को या दिन को छिपा कर या दिखा कर (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं तो उनके लिए उनका अज्र व सवाब उनके परवरदिगार के पास है और (क़यामत में) न उन पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे (274)

जो लोग सूद खाते हैं वह (क़यामत में) खड़े न हो सकेंगे मगर उस शख़्स की तरह खड़े होंगे जिस को शैतान ने लिपट कर मख़बूतुल हवास {पागल} बना दिया है ये इस वजह से कि वह उसके क़ायल हो गए कि जैसा बिक्री का मामला वैसा ही सूद का मामला हालॉकि बिक्री को तो अल्लाह ने हलाल और सूद को हराम कर दिया बस जिस शख़्स के पास उसके परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत (मुमानियत) आये और वह बाज़ आ गया तो इस हुक्म के नाज़िल होने से पहले जो सूद ले चुका वह तो उस का हो चुका और उसका अम्र (मामला) अल्लाह के हवाले है और जो मनाही के बाद फिर सूद ले (या बिक्री के माले को यकसा बताए जाए) तो ऐसे ही लोग जहन्नुम में रहेंगे (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है और जितने नाशुक्रे गुनाहगार हैं अल्लाह उन्हें दोस्त नहीं रखता (276)

(हॉ) जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ी और ज़कात दिया किये उनके लिए अलबत्ता उनका अज्र व (सवाब) उनके परवरदिगार के पास है और (क़यामत में) न तो उन पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह रन्जीदा दिल होंगे (277)

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरो और जो सूद लोगों के ज़िम्मे बाक़ी रह गया है अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो छोड़ दो (278)

और अगर तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार रहो और अगर तुमने तौबा की है तो तुम्हारे लिए तुम्हारा असल माल है न तुम किसी का ज़बरदस्ती नुकसान करो न तुम पर ज़बरदस्ती की जाएगी (279)

और अगर कोई तंगदस्त तुम्हारा (क़र्ज़दार हो) तो उसे ख़ुशहाली तक मोहल्लत (दो) और सदक़ा करो और अगर तुम समझो तो तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है कि असल भी बख़्श दो (280)

और उस दिन से डरो जिस दिन तुम सब के सब अल्लाह की तरफ़ लौटाये जाओगे फिर जो कुछ जिस शख़्स ने किया है उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी ज़रा भी हक़ तलफ़ी न होगी (281)

ऐ ईमानदारों जब एक मियादे मुक़र्ररा तक के लिए आपस में क़र्ज़ का लेन देन करो तो उसे लिखा पढ़ी कर लिया करो और लिखने वाले को चाहिये कि तुम्हारे दरम्यान तुम्हारे क़ौल व क़रार को, इन्साफ़ से ठीक ठीक लिखे और लिखने वाले को लिखने से इन्कार न करना चाहिये (बल्कि) जिस तरह अल्लाह ने उसे (लिखना पढ़ना) सिखाया है उसी तरह उसको भी वे उज्ऱ (बहाना) लिख देना चाहिये और जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ आयद होता है उसी को चाहिए कि (तमस्सुक) की इबारत बताता जाये और अल्लाह से डरे जो उसका सच्चा पालने वाला है डरता रहे और (बताने में) और क़र्ज़ देने वाले के हुक़ूक़ में कुछ कमी न करे अगर क़र्ज़ लेने वाला कम अक्ल या माज़ूर या ख़ुद (तमस्सुक) का मतलब लिखवा न सकता हो तो उसका सरपरस्त ठीक ठीक इन्साफ़ से लिखवा दे और अपने लोगों में से जिन लोगों को तुम गवाही लेने के लिये पसन्द करो (कम से कम) दो मर्दों की गवाही कर लिया करो फिर अगर दो मर्द न हो तो (कम से कम) एक मर्द और दो औरतें (क्योंकि) उन दोनों में से अगर एक भूल जाएगी तो एक दूसरी को याद दिला देगी, और जब गवाह हुक्काम के सामने (गवाही के लिए) बुलाया जाऍ तो हाज़िर होने से इन्कार न करे और क़र्ज़ का मामला ख़्वाह छोटा हो या उसकी मियाद मुअय्युन तक की (दस्तावेज़) लिखवाने में काहिली न करो, अल्लाह के नज़दीक ये लिखा पढ़ी बहुत ही मुन्सिफ़ाना कारवाई है और गवाही के लिए भी बहुत मज़बूती है और बहुत क़रीन (क़यास) है कि तुम आईन्दा किसी तरह के शक व शुबहा में न पड़ो मगर जब नक़द सौदा हो जो तुम लोग आपस में उलट फेर किया करते हो तो उसकी (दस्तावेज) के न लिखने में तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है (हॉ) और जब उसी तरह की ख़रीद (फ़रोख़्त) हो तो गवाह कर लिया करो और क़ातिब (दस्तावेज़) और गवाह को ज़रर न पहुँचाया जाए और अगर तुम ऐसा कर बैठे तो ये ज़रूर तुम्हारी शरारत है और अल्लाह से डरो अल्लाह तुमको मामले की सफ़ाई सिखाता है और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है (282)

और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न मिले (और क़र्ज़ देना हो) तो रहन या कब्ज़ा रख लो और अगर तुममें एक का एक को एतबार हो तो (यूँ ही क़र्ज़ दे सकता है मगर) फिर जिस शख़्स पर एतबार किया गया है (क़र्ज़ लेने वाला) उसको चाहिये क़र्ज़ देने वाले की अमानत (क़र्ज़) पूरी पूरी अदा कर दे और अपने पालने वाले अल्लाह से डरे (मुसलमानो) तुम गवाही को न छिपाओ और जो छिपाएगा तो बेशक उसका दिल गुनाहगार है और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता है (283)

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़) सब कुछ अल्लाह ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में हे ख़्वाह तुम उसको ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर जिस को चाहे बख़्श दे और जिस पर चाहे अज़ाब करे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (284)
हमारे पैग़म्बर (मोहम्मद) जो कुछ उनपर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उनके (साथ) मोमिनीन भी (सबके) सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए (और कहते हैं कि) हम अल्लाह के पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते और कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार हमने (तेरा इरशाद) सुना (285)

और मान लिया परवरदिगार हमें तेरी ही मग़फ़िरत की (ख़्वाहिश है) और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है अल्लाह किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता उसने अच्छा काम किया तो अपने नफ़े के लिए और बुरा काम किया तो (उसका वबाल) उसी पर पड़ेगा ऐ हमारे परवरदिगार अगर हम भूल जाऐं या ग़लती करें तो हमारी गिरफ़्त न कर ऐ हमारे परवरदिगार हम पर वैसा बोझ न डाल जैसा हमसे अगले लोगों पर बोझा डाला था, और ऐ हमारे परवरदिगार इतना बोझ जिसके उठाने की हमें ताक़त न हो हमसे न उठवा और हमारे क़ुसूरों से दरगुज़र कर और हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा तू ही हमारा मालिक है तू ही काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर (286)

3 सूरह आले इमरान

सूरह आले इमरान मदीना में नाज़िल हुआ और इसमे दो सौ (200) आयते और बीस रूकुअ है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम अल्लाह ही वह (अल्लाह) है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं है (1)

वही ज़िन्दा (और) सारे जहान का सॅभालने वाला है (2)

(ऐ रसूल) उसी ने तुम पर बरहक़ किताब नाज़िल की जो (आसमानी किताबें पहले से) उसके सामने
मौजूद हैं उनकी तसदीक़ करती है और उसी ने उससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते तौरेत व
इन्जील नाज़िल की (3)

और हक़ व बातिल में तमीज़ देने वाली किताब (क़ुरान) नाज़िल की बेशक जिन लोगों ने अल्लाह
की आयतों को न माना उनके लिए सख़्त अज़ाब है और अल्लाह हर चीज़ पर ग़ालिब बदला लेने
वाला है (4)

बेशक अल्लाह पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं है (न) ज़मीन में न आसमान में (5)

वही तो वह अल्लाह है जो माँ के पेट में तुम्हारी सूरत जैसी चाहता है बनाता हे उसके सिवा कोई
माबूद नहीं (6)

वही (हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (ए रसूल) वही (वह अल्लाह) है जिसने तुमपर किताब
नाज़िल की उसमें की बाज़ आयतें तो मोहकम (बहुत सरीह) हैं वही (अमल करने के लिए) असल
(व बुनियाद) किताब है और कुछ (आयतें) मुतशाबेह (मिलती जुलती) (गोल गोल जिसके मायने में
से पहलू निकल सकते हैं) पस जिन लोगों के दिलों में कज़ी है वह उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते
हैं जो मुतशाबेह हैं ताकि फ़साद बरपा करें और इस ख़्याल से कि उन्हें मतलब पर ढाले लें
हालाँकि अल्लाह और उन लोगों के सिवा जो इल्म से बड़े पाए पर फ़ायज़ हैं उनका असली मतलब
कोई नहीं जानता वह लोग (ये भी) कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए (यह) सब (मोहकम हो
या मुतशाबेह) हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और अक्ल वाले ही समझते हैं (7)

(और दुआ करते हैं) ऐ हमारे पालने वाले हमारे दिल को हिदायत करने के बाद डॉवाडोल न कर
और अपनी बारगाह से हमें रहमत अता फ़रमा इसमें तो शक ही नहीं कि तू बड़ा देने वाला है (8)

ऐ हमारे परवरदिगार बेशक तू एक न एक दिन जिसके आने में शुबह नहीं लोगों को इक्ट्ठा करेगा (तो हम पर नज़रे इनायत रहे) बेशक अल्लाह अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया इख़्तेयार किया उनको अल्लाह (के अज़ाब) से न उनके माल ही कुछ बचाएंगे, न उनकी औलाद (कुछ काम आएगी) और यही लोग जहन्नुम के ईधन होंगे (10)

(उनकी भी) क़ौमे फ़िरऔन और उनसे पहले वालों की सी हालत है कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों की पादाश {सज़ा} में ले डाला और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है (11)

(ऐ रसूल) जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनसे कह दो कि बहुत जल्द तुम (मुसलमानो के मुक़ाबले में) मग़लूब {हारे हुए} होंगे और जहन्नुम में इकट्ठे किये जाओगे और वह (क्या) बुरा ठिकाना है (12)

बेशक तुम्हारे (समझाने के) वास्ते उन दो (मुख़ालिफ़ गिरोहों में जो (बद्र की लड़ाई में) एक दूसरे के साथ गुथ गए (रसूल की सच्चाई की) बड़ी भारी निशानी है कि एक गिरोह अल्लाह की राह में जेहाद करता था और दूसरा काफ़िरों का जिनको मुसलमान अपनी ऑख से दुगना देख रहे थे (मगर अल्लाह ने क़लील ही को फ़तह दी) और अल्लाह अपनी मदद से जिस की चाहता है ताईद करता है बेशक ऑख वालों के वास्ते इस वाक़ये में बड़ी इबरत है (13)

दुनिया में लोगों को उनकी मरग़ूब चीज़े (मसलन) बीवियों और बेटों और सोने चॉदी के बड़े बड़े लगे हुए ढेरों और उम्दा उम्दा घोड़ों और मवेशियों ओर खेती के साथ उलफ़त भली करके दिखा दी गई है ये सब दुनयावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फ़ायदे हैं और (हमेशा का) अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के यहॉ है (14)

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि क्या मैं तुमको उन सब चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूॅ (अच्छा सुनो) जिन लोगों ने परहेज़गारी इख़्तेयार की उनके लिए उनके परवरदिगार के यहॉ (बेहिश्त) के वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं (और वह) हमेशा उसमें रहेंगे और उसके अलावा उनके लिए साफ सुथरी बीवियॉ हैं और (सबसे बढ़कर) अल्लाह की ख़ुशनूदी है और अल्लाह (अपने) उन बन्दों को खूब देख रहा हे जो दुआऐं मॉगा करते हैं (15)

कि हमारे पालने वाले हम तो (बेताम्मुल) इमान लाए हैं पस तू भी हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा (16)

(यही लोग हैं) सब्र करने वाले और सच बोलने वाले और (अल्लाह के) फ़रमाबरदार और (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने वाले और पिछली रातों में (अल्लाह से तौबा) इस्तग़फ़ार करने वाले (17)

ज़रूर अल्लाह और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने गवाही दी है कि उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं है और वह अल्लाह अद्ल व इन्साफ़ के साथ (कारख़ानाए आलम का) सॅभालने वाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (सच्चा) दीन तो अल्लाह के नज़दीक यक़ीनन (बस यही) इस्लाम है (18)

और अहले किताब ने जो उस दीने हक़ से इख़्तेलाफ़ किया तो महज़ आपस की शरारत और असली (अम्र) मालूम हो जाने के बाद (ही क्या है) और जिस शख़्स ने अल्लाह की निशानियों से इन्कार किया तो (वह समझ ले कि यक़ीनन अल्लाह (उससे) बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है (19)

(ऐ रसूल) पस अगर ये लोग तुमसे (ख़्वाह मा ख़्वाह) हुज्जत करे तो कह दो मैंने अल्लाह के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म कर दिया है और जो मेरे ताबे है (उन्होंने) भी) और ऐ रसूल तुम एहले किताब और जाहिलों से पूँछो कि क्या तुम भी इस्लाम लाए हो (या नही) पस अगर इस्लाम लाए हैं तो बेख़टके राहे रास्त पर आ गए और अगर मुँह फेरे तो (ऐ रसूल) तुम पर सिर्फ़ पैग़ाम (इस्लाम) पहुँचा देना फ़र्ज़ है (बस) और अल्लाह (अपने बन्दों) को देख रहा है (20)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं और नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते हैं और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते हैं जो (उन्हें) इन्साफ़ करने का हुक्म करते हैं तो (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो (21)

यही वह (बदनसीब) लोग हैं जिनका सारा किया कराया दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में अकारत गया और कोई उनका मददगार नहीं (22)

(ऐ रसूल) क्या तुमने (उलमाए यहूद) के हाल पर नज़र नहीं की जिनको किताब (तौरेत) का एक हिस्सा दिया गया था (अब) उनको किताबे अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वही (किताब) उनके झगड़ें का फैसला कर दे इस पर भी उनमें का एक गिरोह मुँह फेर लेता है और यही लोग रूगरदानी {मुँह फेरने} करने वाले हैं (23)

ये इस वजह से है कि वह लोग कहते हैं कि हमें गिनती के चन्द दिनों के सिवा जहन्नुम की आग हरगिज़ छुएगी भी तो नहीं जो इफ़तेरा परदाज़ी ये लोग बराबर करते आए हैं उसी ने उन्हें उनके दीन में भी धोखा दिया है (24)

फ़िर उनकी क्या गत होगी जब हम उनको एक दिन (क़ियामत) जिसके आने में कोई शुबहा नहीं इक्ट्ठा करेंगे और हर शख़्स को उसके किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी (25)

(ऐ रसूल) तुम तो यह दुआ माँगों कि ऐ अल्लाह तमाम आलम के मालिक तू ही जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ में है बेशक तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है (26)

तू ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाख़िल कर देता है (तो) रात बढ़ जाती है और तू ही दिन को (बढ़ा के) रात में दाख़िल करता है (तो दिन बढ़ जाता है) तू ही बेजान (अन्डा नुत्फ़ा वग़ैरह) से जानदार को पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान नुत्फ़ा (वग़ैरहा) निकालता है और तू ही जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है (27)

मोमिनीन मोमिनीन को छोड़ के काफ़िरों को अपना सरपरस्त न बनाऐं और जो ऐसा करेगा तो उससे अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं मगर (इस क़िस्म की तदबीरों से) किसी तरह उन (के शर) से बचना चाहो तो (ख़ैर) और अल्लाह तुमको अपने ही से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है (28)

ऐ रसूल तुम उन (लोगों से) कह दो किजो कुछ तुम्हारे दिलों में है तो ख़्वाह उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो (बहरहाल) अल्लाह तो उसे जानता है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में वह (सब कुछ) जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (29)

(और उस दिन को याद रखो) जिस दिन हर शख़्स जो कुछ उसने (दुनिया में) नेकी की है और जो कुछ बुराई की है उसको मौजूद पाएगा (और) आरज़ू करेगा कि काश उस की बदी और उसके दरमियान में ज़मानए दराज़ (हाएल) हो जाता और अल्लाह तुमको अपने ही से डराता है और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़ीक़ और (मेहरबान भी) है (30)

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो कि अल्लाह (भी) तुमको दोस्त रखेगा और तुमको तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (31)

(ऐ रसूल) कह दो कि अल्लाह और रसूल की फ़रमाबरदारी करो फिर अगर यह लोग उससे सरताबी करें तो (समझ लें कि) अल्लाह काफ़िरों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (32)

बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और ख़ानदाने इबराहीम और खानदाने इमरान को सारे जहान से बरगुज़ीदा किया है (33)

बाज़ की औलाद को बाज़ से और अल्लाह (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है (34)

(ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब इमरान की बीवी ने (अल्लाह से) अर्ज़ की कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे पेट में जो बच्चा है (उसको मैं दुनिया के काम से) आज़ाद करके तेरी नज्र करती हूँ तू मेरी तरफ़ से (ये नज्र कुबूल फ़रमा तू बेशक बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है (35)

फिर जब वह बेटी जन चुकी तो (हैरत से) कहने लगी ऐ मेरे परवरदिगार (मैं क्या करूँ) मैं तो ये लड़की जनी हूँ और लड़का लड़की के ऐसा (गया गुज़रा) नहीं होता हालाँकि उसे कहने की ज़रूरत क्या थी जो वे जनी थी अल्लाह उस (की शान व मरतबा) से खूब वाकिफ़ था और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को शैतान मरदूद (के फ़रेब) से तेरी पनाह में देती हूँ (36)

तो उसके परवरदिगार ने (उनकी नज्र) मरियम को ख़ुशी से क़ुबूल फ़रमाया और उसकी नशो व नुमा {परवरिश} अच्छी तरह की और ज़करिया को उनका कफ़ील बनाया जब किसी वक्त जक़रिया उनके पास (उनके) इबादत के हुजरे में जाते तो मरियम के पास कुछ न कुछ खाने को मौजूद पाते तो पूँछते कि ऐ मरियम ये (खाना) तुम्हारे पास कहाँ से आया है तो मरियम ये कह देती थी कि यह अल्लाह के यहाँ से (आया) है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है (37)

(ये माजरा देखते ही) उसी वक्त ज़करिया ने अपने परवरदिगार से दुआ कि और अर्ज़ की ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको (भी) अपनी बारगाह से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है (38)

अभी ज़करिया हुजरे में खड़े (ये) दुआ कर ही रहे थे कि फ़रिश्तों ने उनको आवाज़ दी कि अल्लाह तुमको यहया (के पैदा होने) की खुशख़बरी देता है जो जो कलेमतुल्लाह (ईसा) की तस्दीक़ करेगा और (लोगों का) सरदार होगा और औरतों की तरफ़ रग़बत न करेगा और नेको कार नबी होगा (39)

ज़करिया ने अर्ज़ की परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर हो सकता है हालाँकि मेरा बुढ़ापा आ पहुँचा और (उसपर) मेरी बीवी बाँझ है (अल्लाह ने) फ़रमाया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है (40)

ज़करिया ने अर्ज़ की परवरदिगार मेरे इत्मेनान के लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा इरशाद हुआ तुम्हारी निशानी ये है तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और (उसके शुक्रिये में) अपने परवरदिगार की अक्सर याद करो और रात को और सुबह तड़के (हमारी) तसबीह किया करो (41)

और वह वाक़िया भी याद करो जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा, ऐ मरियम तुमको अल्लाह ने बरगुज़ीदा किया और (तमाम) गुनाहों और बुराइयों से पाक साफ़ रखा और सारे दुनिया जहॉन की औरतों में से तुमको मुन्तख़िब किया है (42)

(तो) ऐ मरियम इसके शुक्र से मैं अपने परवरदिगार की फ़रमाबदारी करूँ सजदा और रूकूउ करने वालों के साथ रूकूउ करती रहूँ (43)

(ऐ रसूल) ये ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजते हैं (ऐ रसूल) तुम तो उन सरपरस्ताने मरियम के पास मौजूद न थे जब वह लोग अपना अपना क़लम दरिया में बतौर क़ुरआ के डाल रहे थे (देखें) कौन मरियम का कफ़ील बनता है और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे (44)

(वह वाक़िया भी याद करो) जब फ़रिश्तों ने (मरियम) से कहा ऐ मरियम अल्लाह तुमको सिर्फ़ अपने हुक्म से एक लड़के के पैदा होने की खुशख़बरी देता है जिसका नाम ईसा मसीह इब्ने मरियम होगा (और) दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में बाइज़्ज़त (आबरू) और अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों में होगा (45)

और (बचपन में) जब झूले में पड़ा होगा और बड़ी उम्र का होकर (दोनों हालतों में यकसॉ) लोगों से बाते करेगा और नेको कारों में से होगा (46)

(ये सुनकर मरियम ताज्जुब से) कहने लगी परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर होगा हालॉकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं इरशाद हुआ इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस कह देता है 'हो जा' तो वह हो जाता है (47)

और (ऐ मरयिम) अल्लाह उसको (तमाम) किताबे आसमानी और अक़्ल की बातें और (ख़ासकर) तौरेत व इन्जील सिखा देगा (48)

और बनी इसराइल का रसूल (क़रार देगा और वह उनसे यूँ कहेगा कि) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) यह निशानी लेकर आया हूँ कि मैं गुँधीं हुई मिट्टी से एक परिन्दे की सूरत बनाऊँगा फ़िर उस पर (कुछ) दम करूँगा तो वो अल्लाह के हुक्म से उड़ने

लगेगा और मैं अल्लाह ही के हुक्म से मादरज़ाद {पैदायशी} अँधे और कोढ़ी को अच्छा करूँगा और मुर्दो को ज़िन्दा करूँगा और जो कुछ तुम खाते हो और अपने घरों में जमा करते हो मैं (सब) तुमको बता दूँगा अगर तुम ईमानदार हो तो बेशक तुम्हारे लिये इन बातों में (मेरी नबूवत की) बड़ी निशानी है (49)

और तौरेत जो मेरे सामने मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करता हूँ और (मेरे आने की) एक ग़रज़ यह (भी) है कि जो चीज़े तुम पर हराम है उनमें से बाज़ को (हुक्मे अल्लाह से) हलाल कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) निशानी लेकर तुम्हारे पास आया हूँ (50)

पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है (51)

पस उसकी इबादत करो (क्योंकि) यही नजात का सीधा रास्ता है फिर जब ईसा ने (इतनी बातों के बाद भी) उनका कुफ़्र (पर अड़े रहना) देखा तो (आख़िर) कहने लगे कौन ऐसा है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरा मददगार बने (ये सुनकर) हवारियों ने कहा हम अल्लाह के तरफ़दार हैं और हम अल्लाह पर ईमान लाए (52)

और (ईसा से कहा) आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाबरदार हैं (53)

और अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ की कि ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ तूने नाज़िल किया हम उसपर ईमान लाए और हमने तेरे रसूल (ईसा) की पैरवी इख़्तेयार की पस तू हमें (अपने रसूल के) गवाहों के दफ़्तर में लिख ले (54)

और यहूदियों (ने ईसा से) मक्कारी की और अल्लाह ने उसके दफ़ईया की तदबीर की और अल्लाह सब से बेहतर तदबीर करने वाला है (वह वक़्त भी याद करो) जब ईसा से अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं ज़रूर तुम्हारी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी करके तुमको अपनी तरफ़ उठा लूँगा और काफ़िरों (की ज़िन्दगी) से तुमको पाक व पाकीज़ा रखूँगा और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की उनको क़यामत तक काफ़िरों पर ग़ालिब रखूँगा फिर तुम सबको मेरी तरफ़ लौटकर आना है (55)

तब (उस दिन) जिन बातों में तुम (दुनिया) में झगड़े करते थे (उनका) तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूँगा पस जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनपर दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख़्त अज़ाब करूँगा और उनका कोई मददगार न होगा (56)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए तो अल्लाह उनको उनका पूरा अज्र व सवाब देगा और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (57)

(ऐ रसूल) ये जो हम तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं क़ुदरते अल्लाह की निशानियॉ और हिकमत से भरे हुये तज़किरे हैं (58)
अल्लाह के नज़दीक तो जैसे ईसा की हालत वैसी ही आदम की हालत कि उनको को मिट्टी का पुतला बनाकर कहा कि 'हो जा' पस (फ़ौरन ही) वह (इन्सान) हो गया (59)

(ऐ रसूल ये है) हक़ बात (जो) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (बताई जाती है) तो तुम शक करने वालों में से न हो जाना (60)

फिर जब तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका उसके बाद भी अगर तुम से कोई (नसरानी) ईसा के बारे में हुज्जत करें तो कहो कि (अच्छा मैदान में) आओ हम अपने बेटों को बुलाएँ तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को (बुलाएँ) और तुम अपनी औरतों को और हम अपनी जानों को बुलाएँ ओर तुम अपनी जानों को (61)

उसके बाद हम सब मिलकर (अल्लाह की बारगाह में) गिड़गिड़ाएं और झूठों पर अल्लाह की लानत करें (ऐ रसूल) ये सब यक़ीनी सच्चे वाक़यात हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद (क़ाबिले परसतिश) नहीं है (62)

और बेशक अल्लाह ही सब पर ग़ालिब और हिकमत वाला है (63)

फिर अगर इससे भी मुँह फेरें तो (कुछ) परवाह (नहीं) अल्लाह फ़सादी लोगों को खूब जानता है (ऐ रसूल) तुम (उनसे) कहो कि ऐ एहले किताब तुम ऐसी (ठिकाने की) बात पर तो आओ जो हमारे और तुम्हारे दरम्यिान यकसॉ है कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाएँ और अल्लाह के सिवा हममें से कोई किसी को अपना परवरदिगार न बनाए अगर इससे भी मुँह मोड़ें तो तुम गवाह रहना हम (अल्लाह के) फ़रमाबरदार हैं (64)

ऐ एहले किताब तुम इबराहीम के बारे में (ख़्वाह मा ख़्वाह) क्यों झगड़ते हो कि कोई उनको नसरानी कहता है कोई यहूदी हालॉकि तौरेत व इन्जील (जिनसे यहूद व नसारा की इब्तेदा है वह) तो उनके बाद ही नाज़िल हुई (65)

तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते? (ऐ लो अरे) तुम वही एहमक़ लोग हो कि जिस का तुम्हें कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ा कर चुके (ख़ैर) फिर तब उसमें क्या (ख़्वाह मा ख़्वाह) झगड़ने बैठे हो जिसकी (सिरे से) तुम्हें कुछ ख़बर नहीं और (हक़ीक़ते हाल तो) अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (66)

इबराहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी बल्कि निरे खरे हक़ पर थे (और) फ़रमाबरदार (बन्दे) थे और मुशरिकों से भी न थे (67)

इबराहीम से ज़्यादा ख़ुसूसियत तो उन लोगों को थी जो ख़ास उनकी पैरवी करते थे और उस पैग़म्बर और ईमानदारों को (भी) है और मोमिनीन का अल्लाह मालिक है (68)

(मुसलमानो) एहले किताब से एक गिरोह ने बहुत चाहा कि किसी तरह तुमको राहेरास्त से भटका दे हालाँकि वह (अपनी तदबीरों से तुमको तो नहीं मगर) अपने ही को भटकाते हैं (69)

और उसको समझते (भी) नहीं ऐ एहले किताब तुम अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम ख़ुद गवाह बन सकते हो (70)

ऐ एहले किताब तुम क्यो हक़ व बातिल को गड़बड़ करते और हक़ को छुपाते हो हालाँकि तुम जानते हो (71)

और एहले किताब से एक गिरोह ने (अपने लोगों से) कहा कि मुसलमानों पर जो किताब नाज़िल हुयी है उसपर सुबह सवेरे ईमान लाओ और आख़िर वक्त इन्कार कर दिया करो शायद मुसलमान (इसी तदबीर से अपने दीन से) फिर जाए (72)

और तुम्हारे दीन की पैरवरी करे उसके सिवा किसी दूसरे की बात का ऐतबार न करो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बस अल्लाह ही की हिदायत तो हिदायत है (यहूदी बाहम ये भी कहते हैं कि) उसको भी न (मानना) कि जैसा (उम्दा दीन) तुमको दिया गया है, वैसा किसी और को दिया जाय या तुमसे कोई ७शख़्स अल्लाह के यहाँ झगड़ा करे (ऐ रसूल तुम उनसे) कह दो कि (ये क्या ग़लत ख़्याल है) फ़ज़्ल (व करम) अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुन्जाईश वाला है (और हर शै को) जानता है (73)

जिसको चाहे अपनी रहमत के लिये ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्लों करम वाला हे (74)

और एहले किताब कुछ ऐसे भी हैं कि अगर उनके पास रूपए की ढेर अमानत रख दो तो भी उसे (जब चाहो) वैसे ही तुम्हारे हवाले कर देंगे और बाज़ ऐसे हें कि अगर एक अशर्फ़ी भी अमानत रखो तो जब तक तुम बराबर (उनके सर) पर खड़े न रहोगे तुम्हें वापस न देंगे ये (बदमुआम लगी) इस वजह से है कि उन का तो ये क़ौल है कि (अरब के) जाहिलो (का हक़ मार लेने) में हम पर कोई इल्ज़ाम की राह ही नहीं और जान बूझ कर अल्लाह पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं (75)

हाँ (अलबत्ता) जो शख़्स अपने एहद को पूरा करे और परहेज़गारी इख़्तेयार करे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है (76)

बेशक जो लोग अपने एहद और (क़समे) जो अल्लाह (से किया था उसके) बदले थोड़ा (दुनयावी) मुआवेज़ा ले लेते हैं उन ही लोगों के वास्ते आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन अल्लाह उनसे बात तक तो करेगा नहीं ओर उनकी तरफ़ नज़र (रहमत) ही करेगा और न उनको (गुनाहों की गन्दगी से) पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाम अज़ाब है (77)

और एहले किताब से बाज़ ऐसे ज़रूर हैं कि किताब (तौरेत) में अपनी ज़बाने मरोड़ मरोड़ के (कुछ का कुछ) पढ़ जाते हैं ताकि तुम ये समझो कि ये किताब का जुज़ है हालॉकि वह किताब का जुज़ नहीं और कहते हैं कि ये (जो हम पढ़ते हैं) अल्लाह के यहॉ से (उतरा) है हालॉकि वह अल्लाह के यहॉ से नहीं (उतरा) और जानबूझ कर अल्लाह पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं (78)

किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि अल्लाह तो उसे (अपनी) किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फिरे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो (हमेशा) किताबे अल्लाह (दूसरो) को पढ़ाते रहते हो और तुम ख़ुद भी सदा पढ़ते रहे हो (79)

और वह तुमसे ये तो (कभी) न कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को अल्लाह बना लो भला (कहीं ऐसा हो सकता है कि) तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद तुम्हें कुफ्ऱ का हुक्म करेगा (80)

(और ऐ रसूल वह वक्त भी याद दिलाओ) जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से इक़रार लिया कि हम तुमको जो कुछ किताब और हिकमत (वग़ैरह) दे उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल आए और जो किताब तुम्हारे पास उसकी तसदीक़ करे तो (देखो) तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना, और ज़रूर उसकी मदद करना (और) अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुमने इक़रार लिया तुमने मेरे (एहद का) बोझ उठा लिया सबने अर्ज़ की हमने इक़रार किया इरशाद हुआ (अच्छा) तो आज के क़ौल व (क़रार के) आपस में एक दूसरे के गवाह रहना (81)

और तुम्हारे साथ मैं भी एक गवाह हूँ फिर उसके बाद जो शख़्स (अपने क़ौल से) मुँह फेरे तो वही लोग बदचलन हैं (82)

तो क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) ढूँढते हैं हालॉकि जो (फ़रिश्ते) आसमानों में हैं और जो (लोग) ज़मीन में हैं सबने ख़ुशी ख़ुशी या ज़बरदस्ती उसके सामने अपनी गर्दन डाल दी है और (आख़िर सब) उसकी तरफ़ लौट कर जाएंगे (83)

(ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुयी और जो (सहीफ़े) इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और औलादे याक़ूब पर नाज़िल हुये और मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो (जो किताब) उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुयी (सब पर इमान लाए) हम तो उनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते (84)

और हम तो उसी (यकता अल्लाह) के फ़रमाबरदार हैं और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की ख़्वाहिश करे तो उसका वह दीन हरगिज़ कुबूल ही न किया जाएगा और वह आख़िरत में सख़्त घाटे में रहेगा (85)

भला अल्लाह ऐसे लोगों की क्योंकर हिदायत करेगा जो इमाने लाने के बाद फिर काफ़िर हो गए हालॉकि वह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर (आख़िरूज़ज़मा) बरहक़ हैं और उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े भी आ चुके थे और अल्लाह ऐसी हठधर्मी करने वाले लोगों की हिदायत नहीं करता (86)

ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और (दुनिया जहॉन के) सब लोगों की फिटकार हैं (87) और वह हमेशा उसी फिटकार में रहेंगे न तो उनके अज़ाब ही में तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत दी जाएगी (88)

मगर (हॉ) जिन लोगों ने इसके बाद तौबा कर ली और अपनी (ख़राबी की) इस्लाह कर ली तो अलबत्ता अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (89)

जो अपने ईमान के बाद काफ़िर हो बैठे फ़िर (रोज़ बरोज़ अपना) कुफ़्र बढ़ाते चले गये तो उनकी तौबा हरगिज़ न क़ुबूल की जाएगी और यही लोग (पल्ले दरजे के) गुमराह हैं (90)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और कुफ़्र की हालत में मर गये तो अगरचे इतना सोना भी किसी की गुलू ख़लासी {छुटकारा पाने} में दिया जाए कि ज़मीन भर जाए तो भी हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा और उनका कोई मददगार भी न होगा (91)

(लोगों) जब तक तुम अपनी पसन्दीदा चीज़ों में से कुछ राहे अल्लाह में ख़र्च न करोगे हरगिज़ नेकी के दरजे पर फ़ायज़ नहीं हो सकते और तुम कोई (92)

सी चीज़ भी ख़र्च करो अल्लाह तो उसको ज़रूर जानता है तौरैत के नाज़िल होने के क़ब्ल याक़ूब

ने जो जो चीज़े अपने ऊपर हराम कर ली थीं उनके सिवा बनी इसराइल के लिए सब खाने हलाल थे (ऐ रसूल उन यहूद से) कह दो कि अगर तुम (अपने दावे में सच्चे हो तो तौरेत ले आओ (93) और उसको (हमारे सामने) पढ़ो फिर उसके बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठ तूफ़ान जोड़े तो (समझ लो) कि यही लोग ज़ालिम (हठधर्म) हैं (94)
(ऐ रसूल) कह दो कि अल्लाह ने सच फ़रमाया तो अब तुम मिल्लते इबराहीम (इस्लाम) की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे (95)

लोगों (की इबादत) के वास्ते जो घर सबसे पहले बनाया गया वह तो यक़ीनन यही (काबा) है जो मक्के में है बड़ी (ख़ैर व बरकत) वाला और सारे जहॉन के लोगों का रहनुमा (96)

इसमें (हुरमत की) बहुत सी वाज़े और रौशन निशानियॉ हैं (उनमें से) मुक़ाम इबराहीम है (जहॉ आपके क़दमों का पत्थर पर निशान है) और जो इस घर में दाख़िल हुआ अमन में आ गया और लोगों पर वाजिब है कि महज़ अल्लाह के लिए ख़ानाए काबा का हज करें जिन्हे वहां तक पहुँचने की इस्तेताअत है और जिसने बावजूद क़ुदरत हज से इन्कार किया तो (याद रखे) कि अल्लाह सारे जहॉन से बेपरवा है (97)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ एहले किताब अल्लाह की आयतो से क्यो मुन्किर हुए जाते हो हालॉकि जो काम काज तुम करते हो ख़ुदा को उसकी (पूरी) पूरी इततिला है (98)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ एहले किताब दीदए दानिस्ता अल्लाह की (सीधी) राह में (नाहक़ की) कज़ी ढूँढो (ढूँढ) के ईमान लाने वालों को उससे क्यों रोकते हो ओर जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं है (99)

ऐ ईमान वालों अगर तुमने एहले किताब के किसी फ़िरक़े का भी कहना माना तो (याद रखो कि) वह तुमको ईमान लाने के बाद (भी) फिर दुबारा काफ़िर बना छोड़ेंगे (100)

और (भला) तुम क्योंकर काफ़िर बन जाओगे हालॉकि तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें (बराबर) पढ़ी जाती हैं और उसके रसूल (मोहम्मद) भी तुममें (मौजूद) हैं और जो शख़्स अल्लाह से वाबस्ता हो वह (तो) जरूर सीधी राह पर लगा दिया गया (101)

ऐ इमान वालों अल्लाह से डरो जितना उससे डरने का हक़ है और तुम (दीन) इस्लाम के सिवा किसी और दीन पर हरगिज़ न मरना (102)

और तुम सब के सब (मिलकर) अल्लाह की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में (एक दूसरे) के फूट न डालो और अपने हाल (ज़ार) पर अल्लाह के एहसान को तो याद करो जब तुम आपस

में (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में (एक दूसरे की) उलफ़त पैदा कर दी तो तुम उसके फ़ज़ल से आपस में भाई भाई हो गए और तुम गोया सुलगती हुयी आग की भट्टी (दोज़ख) के लब पर (खड़े) थे गिरना ही चाहते थे कि अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया तो अल्लाह अपने एहकाम यूँ वाज़ेए करके बयान करता है ताकि तुम राहे रास्त पर आ जाओ (103)

और तुमसे एक गिरोह ऐसे (लोगों का भी) तो होना चाहिये जो (लोगों को) नेकी की तरफ़ बुलाए अच्छे काम का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और ऐसे ही लोग (आख़ेरत में) अपनी दिली मुरादें पायेंगे (104)

और तुम (कहीं) उन लोगों के ऐसे न हो जाना जो आपस में फूट डाल कर बैठ रहे और रौशन (दलील) आने के बाद भी एक मुँह एक ज़बान न रहे और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा (भारी) अज़ाब है (105)

(उस दिन से डरो) जिस दिन कुछ लोगों के चेहरे तो सफ़ैद नूरानी होंगे और कुछ (लोगो) के चेहरे सियाह जिन लोगों के मुहॅ में कालिक होगी (उनसे कहा जायेगा) हाए क्यों तुम तो इमान लाने के बाद काफ़िर हो गए थे अच्छा तो (लो) (अब) अपने कुफ़्र की सज़ा में अज़ाब (के मज़े) चखो (106)

और जिनके चेहरे पर नूर बरसता होगा वह तो अल्लाह की रहमत (बहिश्त) में होंगे (और) उसी में सदा रहेंगे (107)

(ऐ रसूल) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको ठीक (ठीक) पढ़ के सुनाते हैं और अल्लाह सारे जहॉन के लोगों (से किसी) पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता (108)

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही का है और (आख़िर) सब कामों की रूजु़ अल्लाह ही की तरफ़ है (109)

तुम क्या अच्छे गिरोह हो कि (लोगों की) हिदायत के वास्ते पैदा किये गए हो तुम (लोगों को) अच्छे काम का हुक्म करते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर एहले किताब भी (इसी तरह) ईमान लाते तो उनके हक़ में बहुत अच्छा होता उनमें से कुछ ही तो इमानदार हैं और अक्सर बदकार (110)

(मुसलमानों) ये लोग मामूली अज़ीयत के सिवा तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहुॅचा सकते और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उन्हें तुम्हारी तरफ़ पीठ ही करनी होगी और फिर उनकी कहीं से मदद भी नहीं पहुॅचेगी (111)

और जहाँ कहीं हत्ते चढ़े उनपर रूसवाई की मार पड़ी मगर अल्लाह के एहद (या) और लोगों के एहद के ज़रिये से (उनको कहीं पनाह मिल गयी) और फिर हेरफेर के अल्लाह के गज़ब में पड़ गए और उनपर मोहताजी की मार (अलग) पड़ी ये (क्यों) इस सबब से कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करते थे ये सज़ा उसकी है कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से गुज़र गए थे (112)

और ये लोग भी सबके सब यकसाँ नहीं हैं (बल्कि) एहले किताब से कुछ लोग तो ऐसे हैं कि (अल्लाह के दीन पर) इस तरह साबित क़दम हैं कि रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ा करते हैं और वह बराबर सजदे किया करते हैं (113)

अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान रखते हैं और अच्छे काम का तो हुक्म करते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही लोग तो नेक बन्दों से हैं (114) और वह जो कुछ नेकी करेंगे उसकी हरगिज़ नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब वाक़िफ़ है (115)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने में हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएंगे न उनकी औलाद और यही लोग जहन्नुमी हैं और हमेशा उसी में रहेंगे (116)

दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में ये लोग जो कुछ (ख़िलाफ़ शरा) ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल अन्धड़ की मिसाल है जिसमें बहुत पाला हो और वह उन लोगों के खेत पर जा पड़े जिन्होंने (कुफ़्र की वजह से) अपनी जानों पर सितम ढाया हो और फिर पाला उसे मार के (नास कर दे) और अल्लाह ने उनपर जुल्म कुछ नहीं किया बल्कि उन्होंने आप अपने ऊपर ज़ुल्म किया (117)

ऐ ईमानदारों अपने (मोमिनीन) के सिवा (ग़ैरो को) अपना राज़दार न बनाओ (क्योंकि) ये ग़ैर लोग तुम्हारी बरबादी में कुछ उठा नहीं रखेंगे (बल्कि जितना ज़्यादा तकलीफ़) में पड़ोगे उतना ही ये लोग खुश होंगे दुश्मनी तो उनके मुँह से टपकती है और जो (बुग़ज़ व हसद) उनके दिलों में भरा है वह कहीं उससे बढ़कर है हमने तुमसे (अपने) एहकाम साफ़ साफ़ बयान कर दिये अगर तुम समझ रखते हो (118)

ऐ लोगों तुम ऐसे (सीधे) हो कि तुम उनसे उलफ़त रखतो हो और वह तुम्हें (ज़रा भी) नहीं चाहते और तुम तो पूरी किताब (अल्लाह) पर ईमान रखते हो और वह ऐसे नहीं हैं (मगर) जब तुमसे मिलते हैं तो कहने लगते हैं कि हम भी ईमान लाए और जब अकेले में होते हैं तो तुम पर गुस्से के मारे उँगलियाँ काटते हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (काटना क्या) तुम अपने गुस्से में जल मरो जो बातें तुम्हारे दिलों में हैं बेशक अल्लाह ज़रूर जानता है (119)

(ऐ ईमानदारों) अगर तुमको भलाई छू भी गयी तो उनको बुरा मालूम होता है और जब तुमपर कोई भी मुसीबत पड़ती है तो वह ख़ुश हो जाते हैं और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी इख़्तेयार करो तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहुँचाएगा (क्योंकि) अल्लाह तो उनकी कारस्तानियों पर हावी है (120)

और (ऐ रसूल) एक वक्त वो भी था जब तुम अपने बाल बच्चों से तड़के ही निकल खड़े हुए और मोमिनीन को लड़ाई के मोर्चों पर बिठा रहे थे और अल्लाह सब कुछ जानता और सुनता है (121)

ये उस वक्त का वाक़या है जब तुममें से दो गिरोहों ने ठान लिया था कि पसपाई करें और फिर (सॅभल गए) क्योंकि अल्लाह तो उनका सरपरस्त था और मोमिनीन को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये (122)

यक़ीनन अल्लाह ने जंगे बदर में तुम्हारी मदद की (बावजूद के) तुम (दुश्मन के मुक़ाबले में) बिल्कुल बे हक़ीक़त थे (फिर भी) अल्लाह ने फतेह दी (123)

पस तुम अल्लाह से डरते रहो ताकि (उनके) शुक्रगुज़ार बनो (ऐ रसूल) उस वक्त तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते आसमान से भेजकर तुम्हारी मदद करे हॉ (ज़रूर काफ़ी है) (124)

बल्कि अगर तुम साबित क़दम रहो और (रसूल की मुख़ालेफ़त से) बचो और कुफ़्फ़ार अपने (जोश में) तुमपर चढ़ भी आये तो तुम्हारा परवरदिगार ऐसे पॉच हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा जो निशाने जंग लगाए हुए डटे होंगे और अल्लाह ने ये मदद सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशी के लिए की है (125)

और ताकि इससे तुम्हारे दिल की ढारस हो और (ये तो ज़ाहिर है कि) मदद जब होती है तो अल्लाह ही की तरफ़ से जो सब पर ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (126)

(और यह मदद की भी तो) इसलिए कि काफ़िरों के एक गिरोह को कम कर दे या ऐसा चौपट कर दे कि (अपना सा) मुँह लेकर नामुराद अपने घर वापस चले जायें (127)

(ऐ रसूल) तुम्हारा तो इसमें कुछ बस नहीं चाहे अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करे या उनको सज़ा दे क्योंकि वह ज़ालिम तो ज़रूर हैं (128)

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे बख़्शे और जिसको चाहे सज़ा करे और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबार है (129)

ऐ ईमानदारों सूद दूनादून खाते न चले जाओ और अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ (130)

और जहन्नुम की उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है (131)

और अल्लाह और रसूल की फ़रमाबरदारी करो ताकि तुम पर रहम किया जाए (132)

और अपने परवरदिगार के (सबब) बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ दौड़ पड़ो जिसकी (वुसअत सारे) आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो परहेज़गारों के लिये मुहय्या की गयी है (133)

जो ख़ुशहाली और कठिन वक्त में भी (अल्लाह की राह पर) ख़र्च करते हैं और गुस्से को रोकते हैं और लोगों (की ख़ता) से दरगुज़र करते हैं और नेकी करने वालों से अल्लाह उलफ़त रखता है (134)

और लोग इत्तिफ़ाक़ से कोई बदकारी कर बैठते हैं या आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी मॉगते हैं और अल्लाह के सिवा गुनाहों का बख़्शने वाला और कौन है और जो (क़ूसूर) वह (नागहानी) कर बैठे तो जानबूझ कर उसपर हट नहीं करते (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उनके परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश है और वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं कि वह उनमें हमेशा रहेंगे और (अच्छे) चलन वालों की (भी) ख़ूब खरी मज़दूरी है (136)

तुमसे पहले बहुत से वाक़यात गुज़र चुके हैं पस ज़रा रूए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (अपने अपने वक्त के पैग़म्बरों को) झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ (137)

ये (जो हमने कहा) आम लोगों के लिए तो सिर्फ़ बयान (वाक़या) है मगर और परहेज़गारों के लिए हिदायत व नसीहत है (138)

और मुसलमानों काहिली न करो और (इस) इत्तफ़ाक़ी शिकस्त (ओहद से) कुढ़ो नहीं (क्योंकि) अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो तुम ही ग़ालिब और वर रहोगे (139)

अगर (जंगे ओहद में) तुमको ज़ख़्म लगा है तो उसी तरह (बदर में) तुम्हारे फ़रीक़ (कुफ़्फ़ार को) भी ज़ख़्म लग चुका है (उस पर उनकी हिम्मत तो न टूटी) ये इत्तफ़ाक़ाते ज़माना हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी उलट फेर किया करते हैं और ये (इत्तफ़ाक़ी शिकस्त इसलिए थी) ताकि अल्लाह सच्चे ईमानदारों को (ज़ाहिरी) मुसलमानों से अलग देख लें और तुममें से बाज़ को दरजाए शहादत पर फ़ायज़ करें और अल्लाह (हुक्मे रसूल से) सरताबी करने वालों को दोस्त नहीं रखता (140)

और ये (भी मंज़ूर था) कि सच्चे ईमानदारों को (साबित क़दमी की वजह से) निरा खरा अलग कर ले और नाफ़रमानों (भागने वालों) का मटियामेट कर दे (141)

(मुसलमानों) क्या तुम ये समझते हो कि सब के सब बहिश्त में चले ही जाओगे और क्या अल्लाह ने अभी तक तुममें से उन लोगों को भी नहीं पहचाना जिन्होंने जेहाद किया और न साबित क़दम रहने वालों को ही पहचाना (142)

तुम तो मौत के आने से पहले (लड़ाई में) मरने की तमन्ना करते थे बस अब तुमने उसको अपनी ऑख से देख लिया और तुम अब भी देख रहे हो (143)

(फिर लड़ाई से जी क्यों चुराते हो) और मोहम्मद तो सिर्फ रसूल हैं (अल्लाह नहीं) इनसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर गुज़र चुके हैं फिर क्या अगर मोहम्मद अपनी मौत से मर जॉए या मार डाले जाएँ तो तुम उलटे पॉव (अपने कुफ़्र की तरफ़) पलट जाओगे और जो उलटे पॉव फिरेगा (भी) तो (समझ लो) हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा और अनक़रीब अल्लाह का शुक्र करने वालों को अच्छा बदला देगा (144)

और बग़ैर हुक्मे अल्लाह के तो कोई ७शख़्स मर ही नहीं सकता वक़्ते मुअय्यन तक हर एक की मौत लिखी हुयी है और जो शख़्स (अपने किए का) बदला दुनिया में चाहे तो हम उसको इसमें से दे देते हैं और जो शख़्स आख़ेरत का बदला चाहे उसे उसी में से देंगे और (नेअमत ईमान के) शुक्र करने वालों को बहुत जल्द हम जज़ाए ख़ैर देंगे (145)

और (मुसलमानों तुम ही नहीं) ऐसे पैग़म्बर बहुत से गुज़र चुके हैं जिनके साथ बहुतेरे अल्लाह वालों ने (राहे अल्लाह में) जेहाद किया और फिर उनको अल्लाह की राह में जो मुसीबत पड़ी है न तो उन्होंने हिम्मत हारी न बोदापन किया (और न दुशमन के सामने) गिड़गिड़ाने लगे और साबित क़दम रहने वालों से अल्लाह उलफ़त रखता है (146)

और लुत्फ़ ये है कि उनका क़ौल इसके सिवा कुछ न था कि दुआएँ मॉगने लगें कि ऐ हमारे पालने

वाले हमारे गुनाह और अपने कामों में हमारी ज़्यादतियॉ माफ़ कर और दुश्मनों के मुक़ाबले में हमको साबित क़दम रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको फ़तेह दे (147)

तो अल्लाह ने उनको दुनिया में बदला (दिया) और आख़िरत में अच्छा बदला ईनायत फ़रमाया और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता (ही) है (148)

ऐ ईमानदारों अगर तुम लोगों ने काफ़िरों की पैरवी कर ली तो (याद रखो) वह तुमको उलटे पॉव (कुफ्ऱ की तरफ़) फेर कर ले जाएंगे फिर उलटे तुम ही घाटे में आ जाओगे (149)

(तुम किसी की मदद के मोहताज नहीं) बल्कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है और वह सब मददगारों से बेहतर है (150)

(तुम घबराओ नहीं) हम अनक़रीब तुम्हारा रोब काफ़िरों के दिलों में जमा देंगे इसलिए कि उन लोगों ने अल्लाह का शरीक बनाया (भी तो) इस चीज़ बुत को जिसे अल्लाह ने किसी क़िस्म की हुकूमत नहीं दी और (आख़िरकार) उनका ठिकाना दौज़ख़ है और ज़ालिमों का (भी क्या) बुरा ठिकाना है (151)

बेशक अल्लाह ने (जंगे ओहद में भी) अपना (फतेह का) वायदा सच्चा कर दिखाया था जब तुम उसके हुक्म से (पहले ही हमले में) उन (कुफ़्फ़ार) को ख़ूब क़त्ल कर रहे थे यहॉ तक की तुम्हारे पसन्द की चीज़ (फ़तेह) तुम्हें दिखा दी उसके बाद भी तुमने (माले ग़नीमत देखकर) बुज़दिलापन किया और हुक्में रसूल (मोर्चे पर जमे रहने) झगड़ा किया और रसूल की नाफ़रमानी की तुममें से कुछ तो तालिबे दुनिया हैं (कि माले ग़नीमत की तरफ़) से झुक पड़े और कुछ तालिबे आख़िरत (कि रसूल पर अपनी जान फ़िदा कर दी) फिर (बुज़दिलेपन ने) तुम्हें उन (कुफ़्फ़ार) की की तरफ से फेर दिया (और तुम भाग खड़े हुए) उससे अल्लाह को तुम्हारा (इमान अख़लासी) आज़माना मंज़ूर था और (उसपर भी) अल्लाह ने तुमसे दरगुज़र की और अल्लाह मोमिनीन पर बड़ा फ़ज़ल करने वाला है (152)

(मुसलमानों तुम) उस वक़्त को याद करके शर्माओ जब तुम (बदहवास) भागे पहाड़ पर चले जाते थे पस (चूँकि) रसूल को तुमने (आज़ारदा) किया अल्लाह ने भी तुमको (इस) रंज की सज़ा में (शिकस्त का) रंज दिया ताकि जब कभी तुम्हारी कोई चीज़ हाथ से जाती रहे या कोई मुसीबत पड़े तो तुम रंज न करो और सब्र करना सीखो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (153)

फिर अल्लाह ने इस रंज के बाद तुमपर इत्मिनान की हालत तारी की कि तुममें से एक गिरोह का (जो सच्चे इमानदार थे) ख़ूब गहरी नींद आ गयी और एक गिरोह जिनको उस वक्त भी (भागने की

शर्म से) जान के लाले पड़े थे अल्लाह के साथ (ख़्वाह मख़्वाह) ज़मानाए जिहालत की ऐसी बदगुमानियॉ करने लगे और कहने लगे भला क्या ये अम्र (फ़तेह) कुछ भी हमारे इख़्तियार में है (ऐ रसूल) कह दो कि हर अम्र का इख़्तियार अल्लाह ही को है (ज़बान से तो कहते ही है नहीं) ये अपने दिलों में ऐसी बातें छिपाए हुए हैं जो तुमसे ज़ाहिर नहीं करते (अब सुनो) कहते हैं कि इस अम्र (फ़तेह) में हमारा कुछ इख़्तायार होता तो हम यहॉ मारे न जाते (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि तुम अपने घरों में रहते तो जिन जिन की तकदीर में लड़के मर जाना लिखा था वह अपने (घरो से) निकल निकल के अपने मरने की जगह ज़रूर आ जाते और (ये इस वास्ते किया गया) ताकि जो कुछ तुम्हारे दिल में है उसका इम्तिहान कर दे और अल्लाह तो दिलों के राज़ ख़ूब जानता है (154)

बेशक जिस दिन (जंगे औहद में) दो जमाअतें आपस में गुथ गयीं उस दिन जो लोग तुम (मुसलमानों) में से भाग खड़े हुए (उसकी वजह ये थी कि) उनके बाज़ गुनाहों (मुख़ालफ़ते रसूल) की वजह से शैतान ने बहका के उनके पॉव उखाड़ दिए और (उसी वक्त तो) अल्लाह ने ज़रूर उनसे दरगुज़र की बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दवार है (155)

ऐ ईमानदारों उन लोगों के ऐसे न बनो जो काफ़िर हो गए भाई बन्द उनके परदेस में निकले हैं या जेहाद करने गए हैं (और वहॉ) मर (गए) तो उनके बारे में कहने लगे कि वह हमारे पास रहते तो न मरते ओर न मारे जाते (और ये इस वजह से कहते हैं) ताकि अल्लाह (इस ख़्याल को) उनके दिलों में (बाइसे) हसरत बना दे और (यूँ तो) अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या (अपनी मौत से) मर जाओ तो बे८ाक अल्लाह की बख़्शिश और रहमत इस (माल व दौलत) से जिसको तुम जमा करते हो ज़रूर बेहतर है (157) और अगर तुम (अपनी मौत से) मरो या मारे जाओ (आख़िरकार) अल्लाह ही की तरफ़ (क़ब्रों से) उठाए जाओगे (158)

(तो ऐ रसूल ये भी) अल्लाह की एक मेहरबानी है कि तुम (सा) नरमदिल (सरदार) उनको मिला और तुम अगर बदमिज़ाज और सख़्त दिल होते तब तो ये लोग (अल्लाह जाने कब के) तुम्हारे गिर्द से तितर बितर हो गए होते पस (अब भी) तुम उनसे दरगुज़र करो और उनके लिए मग़फ़ेरत की दुआ मॉगो और (साबिक़ दस्तूरे ज़ाहिरा) उनसे काम काज में मशवरा कर लिया करो (मगर) इस पर भी जब किसी काम को ठान लो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो (क्योंकि जो लोग अल्लाह पर भरोसा रखते हैं अल्लाह उनको ज़रूर दोस्त रखता है (159)

(मुसलमानों याद रखो) अगर अल्लाह ने तुम्हारी मदद की तो फिर कोई तुमपर ग़ालिब नहीं आ

सकता और अगर अल्लाह तुमको छोड़ दे तो फिर कौन ऐसा है जो उसके बाद तुम्हारी मदद को खड़ा हो और मोमिनीन को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें (160)

और (तुम्हारा गुमान बिल्कुल ग़लत है) किसी नबी की (हरगिज़) ये शान नहीं कि ख़्यानत करे और ख़्यानत करेगा तो जो चीज़ ख़्यानत की है क़यामत के दिन वही चीज़ (बिलकुल वैसा ही) अल्लाह के सामने लाना होगा फिर हर शख़्स अपने किए का पूरा पूरा बदला पाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी (161)

भला जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशनूदी का पाबन्द हो क्या वह उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो अल्लाह के गज़ब में गिरफ़्तार हो और जिसका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है (162)

वह लोग अल्लाह के यहॉ मुख़्तलिफ़ दरजों के हैं और जो कुछ वह करते हैं अल्लाह देख रहा है (163)

अल्लाह ने तो ईमानदारों पर बड़ा एहसान किया कि उनके वास्ते उन्हीं की क़ौम का एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें पढ़ पढ़ के सुनाता है और उनकी तबीयत को पाकीज़ा करता है और उन्हें किताबे (अल्लाह) और अक़्ल की बातें सिखाता है अगरचे वह पहले खुली हुयी गुमराही में पड़े थे (164)

मुसलमानों क्या जब तुमपर (जंगे ओहद) में वह मुसीबत पड़ी जिसकी दूनी मुसीबत तुम (कुफ़्फ़ार पर) डाल चुके थे तो (घबरा के) कहने लगे ये (आफ़त) कहॉ से आ गयी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये तो खुद तुम्हारी ही तरफ़ से है (न रसूल की मुख़ालेफ़त करते न सज़ा होती) बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (165)

और जिस दिन दो जमाअतें आपस में गुंथ गयीं उस दिन तुम पर जो मुसीबत पड़ी वह तुम्हारी शरारत की वजह से (अल्लाह के इजाजत की वजह से आयी) और ताकि अल्लाह सच्चे ईमान वालों को देख ले (166)

और मुनाफ़िक़ों को देख ले (कि कौन है) और मुनाफ़िक़ों से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में जेहाद करो या (ये न सही अपने दुशमन को) हटा दो तो कहने लगे (हाए क्या कहीं) अगर हम लड़ना जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते ये लोग उस दिन बनिस्बते ईमान के कुफ़्र के ज़्यादा क़रीब थे अपने मुँह से वह बातें कह देते हैं जो उनके दिल में (ख़ाक) नहीं होतीं और जिसे वह छिपाते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है (167)

(ये वही लोग हैं) जो (आप चैन से घरों में बैठे रहते है और अपने शहीद) भाईयों के बारे में कहने लगे काश हमारी पैरवी करते तो न मारे जाते (ऐ रसूल) उनसे कहो (अच्छा) अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा अपनी जान से मौत को टाल दो (168)

और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किए गए उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझना बल्कि वह लोग जीते जागते मौजूद हैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से वह (तरह तरह की) रोज़ी पाते हैं (169)

और अल्लाह ने जो फ़ज़्ल व करम उन पर किया है उसकी (ख़ुशी) से फूले नहीं समाते और जो लोग उनसे पीछे रह गए और उनमें आकर शामिल नहीं हुए उनकी निस्बत ये (ख़्याल करके) ख़ुशियॉ मनाते हैं कि (ये भी शहीद हों तो) उनपर न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे (170)

अल्लाह नेअमत और उसके फ़ज़्ल (व करम) और इस बात की ख़ुशख़बरी पाकर कि अल्लाह मोमिनीन के सवाब को बरबाद नहीं करता (171)

निहाल हो रहे हैं (जंगे ओहद में) जिन लोगों ने जख़्म खाने के बाद भी अल्लाह और रसूल का कहना माना उनमें से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की (सब के लिये नहीं सिर्फ) उनके लिये बड़ा सवाब है (172)

यह वह हैं कि जब उनसे लोगों ने आकर कहना शुरू किया कि (दुशमन) लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के) वास्ते (बड़ा लश्कर) जमा किया है पस उनसे डरते (तो बजाए ख़ौफ़ के) उनका ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे (होगा भी) अल्लाह हमारे वास्ते काफ़ी है (173)

और वह क्या अच्छा कारसाज़ है फिर (या तो हिम्मत करके गए मगर जब लड़ाई न हुयी तो) ये लोग अल्लाह की नेअमत और फ़ज़्ल के साथ (अपने घर) वापस आए और उन्हें कोई बुराई छू भी नहीं गयी और अल्लाह की ख़ुशनूदी के पाबन्द रहे और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है (174)

यह (मुख़्बिर) बस शैतान था जो सिर्फ़ अपने दोस्तों को (रसूल का साथ देने से) डराता है पस तुम उनसे तो डरो नहीं अगर सच्चे मोमिन हो तो मुझ ही से डरते रहो (175)

और (ऐ रसूल) जो लोग कुफ्ऱ की (मदद) में पेश क़दमी कर जाते हैं उनकी वजह से तुम रन्ज न करो क्योंकि ये लोग अल्लाह को कुछ ज़रर नहीं पहुँचा सकते (बल्कि) अल्लाह तो ये चाहता है कि आख़ेरत में उनका हिस्सा न क़रार दे और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अज़ाब है (176)

बेशक जिन लोगों ने इमान के एवज़ कुफ़्र ख़रीद किया वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे (बल्कि आप अपना) और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वह हरगिज़ ये न ख़्याल करें कि हमने जो उनको मोहलत व बेफिक्री दे रखी है वह उनके हक़ में बेहतर है (हालॉकि) हमने मोहल्लत व बेफिक्री सिर्फ इस वजह से दी है ताकि वह और ख़ूब गुनाह कर लें और (आख़िर तो) उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है (178)

(मुनाफ़िक़ो) अल्लाह ऐसा नहीं कि बुरे भले की तमीज़ किए बगैर जिस हालत पर तुम हो उसी हालत पर मोमिनों को भी छोड़ दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की बातें बता दे मगर (हॉ) अल्लाह अपने रसूलों में जिसे चाहता है (ग़ैब बताने के वास्ते) चुन लेता है पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम्हारे वास्ते बड़ी जज़ाए ख़ैर है (179)

और जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (व करम) से कुछ दिया है (और फिर) बुख़्ल करते हैं वह हरगिज़ इस ख़्याल में न रहें कि ये उनके लिए (कुछ) बेहतर होगा बल्कि ये उनके हक़ में बदतर है क्योंकि जिस (माल) का बुख़्ल करते हैं अनक़रीब ही क़यामत के दिन उसका तौक़ बनाकर उनके गले में पहनाया जाएगा और सारे आसमान व ज़मीन की मीरास अल्लाह ही की है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (180)

जो लोग (यहूद) ये कहते हैं कि अल्लाह तो कंगाल है और हम बड़े मालदार हैं अल्लाह ने उनकी ये बकवास सुनी उन लोगों ने जो कुछ किया उसको और उनका पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करना हम अभी से लिख लेते हैं और (आज तो जो जी में कहें मगर क़यामत के दिन) हम कहेंगे कि अच्छा तो लो (अपनी शरारत के एवज़ में) जलाने वाले अज़ाब का मज़ा चखो ((181)

ये उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुम्हारे हाथों ने (ज़ादे आख़ेरत बना कर) पहले से भेजा है वरना अल्लाह तो कभी अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं (182)

(यह वही लोग हैं) जो कहते हैं कि अल्लाह ने तो हमसे वायदा किया है कि जब तक कोई रसूल हमें ये (मौजिज़ा) न दिखा दे कि वह कुरबानी करे और उसको (आसमानी) आग आकर चट कर जाए उस वक़्त तक हम ईमान न लाएंगें (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (भला) ये तो बताओ बहुतेरे पैग़म्बर मुझसे क़ब्ल तुम्हारे पास वाज़े व रौशन मौजिज़ात और जिस चीज़ की तुमने (उस वक़्त) फ़रमाइश की है (वह भी) लेकर आए फिर तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे तो तुमने क्यों क़त्ल किया (183)

(ऐ रसूल) अगर वह इस पर भी तुम्हें झुठलाएं तो (तुम आज़ुर्दा न हो क्योंकि) तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और नूरानी किताब लेकर आ चुके हैं (मगर) फिर भी लोगों ने आख़िर झुठला ही छोड़ा (184)

हर जान एक न एक (दिन) मौत का मज़ा चखेगी और तुम लोग क़यामत के दिन (अपने किए का) पूरा पूरा बदला भर पाओगे पस जो शख़्स जहन्नुम से हटा दिया गया और बहिश्त में पहुँचा दिया गया पस वही कामयाब हुआ और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी धोखे की टट्टी के सिवा कुछ नहीं (185)

(मुसलमानों) तुम्हारे मालों और जानों का तुमसे ज़रूर इम्तेहान लिया जाएगा और जिन लोगो को तुम से पहले किताबे अल्लाह दी जा चुकी है (यहूद व नसारा) उनसे और मुशरेकीन से बहुत ही दुख दर्द की बातें तुम्हें ज़रूर सुननी पड़ेंगी और अगर तुम (उन मुसीबतों को) झेल जाओगे और परहेज़गारी करते रहोगे तो बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है (186)

और (ऐ रसूल) इनको वह वक़्त तो याद दिलाओ जब अल्लाह ने एहले किताब से एहद व पैमान लिया था कि तुम किताबे अल्लाह को साफ़ साफ़ बयान कर देना और (ख़बरदार) उसकी कोई बात छुपाना नहीं मगर इन लोगों ने (ज़रा भी ख़्याल न किया) और उनको पसे पुश्त फेंक दिया और उसके बदले में (बस) थोड़ी सी क़ीमत हासिल कर ली पस ये क्या ही बुरा (सौदा) है जो ये लोग ख़रीद रहे हैं (187)

(ऐ रसूल) तुम उन्हें ख़्याल में भी न लाना जो अपनी कारस्तानी पर इतराए जाते हैं और किया कराया ख़ाक नहीं (मगर) तारीफ़ के ख़ास्तगार {चाहते} हैं पस तुम हरगिज़ ये ख़्याल न करना कि इनको अज़ाब से छुटकारा है बल्कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (188)

और आसमान व ज़मीन सब अल्लाह ही का मुल्क है और अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है (189)

इसमें तो शक ही नहीं कि आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के फेर बदल में अक़्लमन्दों के लिए (क़ुदरत अल्लाह की) बहुत सी निशानियॉ हैं (190)

जो लोग उठते बैठते करवट लेते (अलगरज़ हर हाल में) अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और आसमानों और ज़मीन की बनावट में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं और (बेसाख़्ता) कह उठते हैं कि अल्लाहवन्दा तूने इसको बेकार पैदा नहीं किया तू (फेले अबस से) पाक व पाकीज़ा है बस हमको दोज़क के अज़ाब से बचा (191)

ऐ हमारे पालने वाले जिसको तूने दोज़ख़ में डाला तो यक़ीनन उसे रूसवा कर डाला और ज़ुल्म करने वाले का कोई मददगार नहीं (192)

ऐ हमारे पालने वाले (जब) हमने एक आवाज़ लगाने वाले (पैग़म्बर) को सुना कि वह (ईमान के वास्ते यूँ पुकारता था) कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए पस ऐ हमारे पालने वाले हमें हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयों को हमसे दूर करे दे और हमें नेकों के साथ (दुनिया से) उठा ले (193)

और ऐ पालने वाले अपने रसूलों की मार्फत जो कुछ हमसे वायदा किया है हमें दे और हमें क़यामत के दिन रूसवा न कर तू तो वायदा ख़िलाफ़ी करता ही नहीं (194)

तो उनके परवरदिगार ने दुआ क़ुबूल कर ली और (फ़रमाया) कि हम तुममें से किसी काम करने वाले के काम को अकारत नहीं करते मर्द हो या औरत (उस में कुछ किसी की ख़ुसूसियत नहीं क्योंकि) तुम एक दूसरे (की जिन्स) से हो जो लोग (हमारे लिए वतन आवारा हुए) और शहर बदर किए गए और उन्होंने हमारी राह में अज़ीयतें उठायीं और (कुफ़्फ़ार से) जंग की और शहीद हुए मैं उनकी बुराईयों से ज़रूर दरगुज़र करूँगा और उन्हें बेहिश्त के उन बाग़ों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं अल्लाह के यहाँ ये उनके किये का बदला है और अल्लाह (ऐसा ही है कि उस) के यहाँ तो अच्छा ही बदला है (195)

(ऐ रसूल) काफ़िरों का शहरों८शहरो चैन करते फिरना तुम्हे धोखे में न डाले (196)

ये चन्द रोज़ा फ़ायदा हैं फिर तो (आख़िरकार) उनका ठिकाना जहन्नुम ही है और क्या ही बुरा ठिकाना है (197)

मगर जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की परहेज़गारी (इख़्तेयार की उनके लिए बेहिश्त के) वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह हमेशा उसी में रहेंगे ये अल्लाह की तरफ़ से उनकी (दावत है और जो साज़ो सामान) अल्लाह के यहाँ है वह नेको कारों के वास्ते दुनिया से कहीं बेहतर है (198)
और एहले किताब में से कुछ लोग तो ऐसे ज़रूर हैं जो अल्लाह पर और जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुयी और जो (किताब) उनपर नाज़िल हुयी (सब पर) ईमान रखते हैं अल्लाह के आगे सर झुकाए हुए हैं और अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत (दुनियावी फ़ायदे) नहीं लेते ऐसे ही लोगों के वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अच्छा बदला है बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है (199)

ऐ ईमानदारों (दीन की तकलीफ़ों को) और दूसरों को बर्दाश्त की तालीम दो और (जिहाद के लिए) कमरें कस लो और अल्लाह ही से डरो ताकि तुम अपनी दिली मुराद पाओ (200)

4 सूरह निसा

सूरह निसा मदीना में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ सत्तर (170) आयते है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ लोगों अपने पालने वाले से डरो जिसने तुम सबको (सिर्फ) एक शख़्स से पैदा किया और (वह इस तरह कि पहले) उनकी बाकी मिट्टी से उनकी बीवी (हव्वा) को पैदा किया और (सिर्फ़) उन्हीं दो (मियॉ बीवी) से बहुत से मर्द और औरतें दुनिया में फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिसके वसीले से आपस में एक दूसरे से सवाल करते हो और क़तए रहम से भी डरो बेशक अल्लाह तुम्हारी देखभाल करने वाला है (1)

और यतीमों को उनके माल दे दो और बुरी चीज़ (माले हराम) को भली चीज़ (माले हलाल) के बदले में न लो और उनके माल अपने मालों में मिलाकर न चख जाओ क्योंकि ये बहुत बड़ा गुनाह है (2)

और अगर तुमको अन्देशा हो कि (निकाह करके) तुम यतीम लड़कियों (की रखरखाव) में इन्साफ न कर सकोगे तो और औरतों में अपनी मर्ज़ी के मवाफ़िक दो दो और तीन तीन और चार चार निकाह करो (फिर अगर तुम्हें इसका) अन्देशा हो कि (मुततइद) बीवियों में (भी) इन्साफ न कर सकोगे तो एक ही पर इक्तेफ़ा करो या जो (लोंडी) तुम्हारी ज़र ख़रीद हो (उसी पर क़नाअत करो) ये तदबीर बेइन्साफ़ी न करने की बहुत क़रीने क़यास है (3)

और औरतों को उनके महर ख़ुशी ख़ुशी दे डालो फिर अगर वह ख़ुशी ख़ुशी तुम्हें कुछ छोड़ दे तो शौक़ से नौशे जान खाओ पियो (4)

और अपने वह माल जिनपर अल्लाह ने तुम्हारी गुज़र न क़रार दी है बेवकूफ़ों (ना समझ यतीम) को न दे बैठो हॉ उसमें से उन्हें खिलाओ और उनको पहनाओ (तो मज़ाएक़ा नहीं) और उनसे (शौक़ से) अच्छी तरह बात करो (5)

और यतीमों को कारोबार में लगाए रहो यहॉ तक के ब्याहने के क़ाबिल हों फिर उस वक़्त तुम उन्हे (एक महीने का ख़र्च) उनके हाथ से कराके अगर होशियार पाओ तो उनका माल उनके हवाले कर दो और (ख़बरदार) ऐसा न करना कि इस ख़ौफ़ से कि कहीं ये बड़े हो जाएंगे फ़ुज़ूल ख़र्ची करके झटपट उनका माल चट कर जाओ और जो (जो वली या सरपरस्त) दौलतमन्द हो तो वह (माले यतीम अपने ख़र्च में लाने से) बचता रहे और (हॉ) जो मोहताज हो वह अलबत्ता (वाजिबी)

दस्तूर के मुताबिक़ खा सकता है पस जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो लोगों को उनका गवाह बना लो और (यूँ तो) हिसाब लेने को अल्लाह काफ़ी ही है (6)

माँ बाप और क़राबतदारों के तर्के में कुछ हिस्सा ख़ास मर्दों का है और उसी तरह माँ बाप और क़राबतदारो के तरके में कुछ हिस्सा ख़ास औरतों का भी है ख़्वाह तर्क कम हो या ज़्यादा (हर शख़्स का) हिस्सा (हमारी तरफ़ से) मुक़र्रर किया हुआ है (7)

और जब (तर्क की) तक़सीम के वक़्त (वह) क़राबतदार (जिनका कोई हिस्सा नहीं) और यतीम बच्चे और मोहताज लोग आ जाएं तो उन्हे भी कुछ उसमें से दे दो और उसे अच्छी तरह (उनवाने शाइस्ता से) बात करो (8)

और उन लोगों को डरना (और ख़्याल करना चाहिये) कि अगर वह लोग ख़ुद अपने बाद (नन्हे नन्हे) नातवाँ बच्चे छोड़ जाते तो उन पर (किस क़दर) तरस आता पस उनको (ग़रीब बच्चों पर सख़्ती करने में) अल्लाह से डरना चाहिये और उनसे सीधी तरह बात करना चाहिए (9)

जो यतीमों के माल नाहक़ चट कर जाया करते हैं वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और अनक़रीब जहन्नुम वासिल होंगे (10)

(मुसलमानों) अल्लाह तुम्हारी औलाद के हक़ में तुमसे वसीयत करता है कि लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है और अगर (मय्यत की) औलाद में सिर्फ लड़कियाँ ही हों (दो) या (दो) से ज़्यादा तो उनका (मक़र्रर हिस्सा) कुल तर्के का दो तिहाई है और अगर एक लड़की हो तो उसका आधा है और मय्यत के बाप माँ हर एक का अगर मय्यत की कोई औलाद मौजूद न हो तो माल मुस्तरद का में से मुअय्यन (ख़ास चीज़ों में) छटा हिस्सा है और अगर मय्यत के कोई औलाद न हो और उसके सिर्फ माँ बाप ही वारिस हों तो माँ का मुअय्यन (ख़ास चीज़ों में) एक तिहाई हिस्सा तय है और बाक़ी बाप का लेकिन अगर मय्यत के (हक़ीक़ी और सौतेले) भाई भी मौजूद हों तो (अगरचे उन्हें कुछ न मिले) उस वक़्त माँ का हिस्सा छठा ही होगा (और वह भी) मय्यत नें जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तालीम और (अदाए) क़र्ज़ के बाद तुम्हारे बाप हों या बेटे तुम तो यह नहीं जानते हों कि उसमें कौन तुम्हारी नाफ़रमानी में ज़्यादा क़रीब है (फिर तुम क्या दख़ल दे सकते हो) हिस्सा तो सिर्फ अल्लाह की तरफ़ से मुअय्यन होता है क्योंकि अल्लाह तो ज़रूर हर चीज़ को जानता और तदबीर वाला है (11)

और जो कुछ तुम्हारी बीवियां छोड़ कर (मर) जाएँ पस अगर उनके कोई औलाद न हो तो तुम्हारा आधा है और अगर उनके कोई औलाद हो तो जो कुछ वह तरका छोड़े उसमें से बाज़ चीज़ों में चौथाई तुम्हारा है (और वह भी) औरत ने जिसकी वसीयत की हो और (अदाए) क़र्ज़ के बाद अगर तुम्हारे कोई औलाद न हो तो तुम्हारे तरके में से तुम्हारी बीवियों का बाज़ चीज़ों में चौथाई है और

अगर तुम्हारी कोई औलाद हो तो तुम्हारे तर्के में से उनका ख़ास चीज़ों में आठवॉ हिस्सा है (और वह भी) तुमने जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तामील और (अदाए) क़र्ज़ के बाद और अगर कोई मर्द या औरत अपनी मादरजिलों (ख़्याली) भाई या बहन को वारिस छोड़े तो उनमें से हर एक का ख़ास चीजों में छठा हिस्सा है और अगर उससे ज़्यादा हो तो सबके सब एक ख़ास तिहाई में शरीक़ रहेंगे और (ये सब) मय्यत ने जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तामील और (अदाए) क़र्ज़ के बाद मगर हॉ वह वसीयत (वारिसों को ख़्वाह मख़्वाह) नुक्सान पहुँचाने वाली न हो (तब) ये वसीयत अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह तो हर चीज़ का जानने वाला और बुर्दबार है (12)

यह अल्लाह की (मुक़र्रर की हुयी) हदें हैं और अल्लाह और रसूल की इताअत करे उसको अल्लाह आख़ेरत में ऐसे (हर भरे) बाग़ों में पहुँचा देगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी और वह उनमें हमेशा (चैन से) रहेंगे और यही तो बड़ी कामयाबी है (13)

और जिस शख़्स से अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी की और उसकी हदों से गुज़र गया तो बस अल्लाह उसको जहन्नुम में दाख़िल करेगा (14)

और वह उसमें हमेशा अपना किया भुगतता रहेगा और उसके लिए बड़ी रूसवाई का अज़ाब है और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी करें तो उनकी बदकारी पर अपने लोगों में से चार गवाही लो और फिर अगर चारों गवाह उसकी तसदीक़ करें तो (उसकी सज़ा ये है कि) उनको घरों में बन्द रखो यहॉ तक कि मौत आ जाए या अल्लाह उनकी कोई (दूसरी) राह निकाले (15)

और तुम लोगों में से जिनसे बदकारी सरज़द हुयी हो उनको मारो पीटो फिर अगर वह दोनों (अपनी हरकत से) तौबा करें और इस्लाह कर लें तो उनको छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है (16)

मगर अल्लाह की बारगाह में तौबा तो सिर्फ उन्हीं लोगों की (ठीक) है जो नादानिस्ता बुरी हरकत कर बैठे (और) फिर जल्दी से तौबा कर ले तो अल्लाह भी ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल कर लेता है और अल्लाह तो बड़ा जानने वाला हकीम है (17)

और तौबा उन लोगों के लिये (मुफ़ीद) नहीं है जो (उम्र भर) तो बुरे काम करते रहे यहॉ तक कि जब उनमें से किसी के सर पर मौत आ खड़ी हुयी तो कहने लगे अब मैंने तौबा की और (इसी तरह) उन लोगों के लिए (भी तौबा) मुफ़ीद नहीं है जो कुफ़्र ही की हालत में मर गये ऐसे ही लोगों के वास्ते हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (18)

ऐ ईमानदारों तुमको ये जायज़ नहीं कि (अपने मुरिस की) औरतों से (निकाह कर) के (ख़्वाह मा ख़्वाह) ज़बरदस्ती वारिस बन जाओ और जो कुछ तुमने उन्हें (शौहर के तर्के से) दिया है उसमें से

कुछ (आपस से कुछ वापस लेने की नीयत से) उन्हें दूसरे के साथ (निकाह करने से) न रोको हॉ जब वह खुल्लम खुल्ला कोई बदकारी करें तो अलबत्ता रोकने में (मज़ाएक़ा {हर्ज}नहीं) और बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करते रहो और अगर तुम किसी वजह से उन्हें नापसन्द करो (तो भी सब्र करो क्योंकि) अजब नहीं कि किसी चीज़ को तुम नापसन्द करते हो और अल्लाह तुम्हारे लिए उसमें बहुत बेहतरी कर दे (19)

और अगर तुम एक बीवी (को तलाक़ देकर उस) की जगह दूसरी बीवी (निकाह करके) तबदील करना चाहो तो अगरचे तुम उनमें से एक को (जिसे तलाक़ देना चहाते हो) बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उनमें से कुछ (वापस न लो) क्या तुम्हारी यही ग़ैरत है कि (ख़्वाह मा ख़्वाह) बोहतान बॉधकर या सरीही जुर्म लगाकर वापस ले लो (20)

और क्या तुम उसको (वापस लोगे हालॉकि तुममें से) एक दूसरे के साथ ख़िलवत कर चुका है और बीवियॉ तुमसे (निकाह के वक्त नुक़्फ़ा वग़ैरह का) पक्का क़रार ले चुकी हैं (21)

और जिन औरतों से तुम्हारे बाप दादाओं से (निकाह) जमाअ (अगरचे ज़िना) किया हो तुम उनसे निकाह न करो मगर जो हो चुका (वह तो हो चुका) वह बदकारी और अल्लाह की नाख़ुशी की बात ज़रूर थी और बहुत बुरा तरीक़ा था (22)

(मुसलमानों हसबे ज़ेल) औरतें तुम पर हराम की गयी हैं तुम्हारी माएँ (दादी नानी वग़ैरह सब) और तुम्हारी बेटियॉ (पोतियॉ) नवासियॉ (वग़ैरह) और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फुफियॉ और तुम्हारी ख़ालाएँ और भतीजियॉ और भंजियॉ और तुम्हारी वह माएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया है और तुम्हारी रज़ाई (दूध शरीक) बहनें और तुम्हारी बीवीयों की माँए और वह (मादर ज़िलो) लड़कियां जो तुम्हारी गोद में परवरिश पा चुकी हो और उन औरतों (के पेट) से (पैदा हुयी) हैं जिनसे तुम हमबिस्तरी कर चुके हो हाँ अगर तुमने उन बीवियों से (सिर्फ निकाह किया हो) हमबिस्तरी न की तो अलबत्ता उन मादरज़िलों (लड़कियों से) निकाह (करने में) तुम पर कुछ गुनाह नहीं है और तुम्हारे सुलबी लड़को (पोतों नवासों वग़ैरह) की बीवियॉ (बहुएँ) और दो बहनों से एक साथ निकाह करना मगर जो हो चुका (वह माफ़ है) बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (23)

और शौहरदार औरतें मगर वह औरतें जो (जिहाद में कुफ़्फ़ार से) तुम्हारे कब्ज़े में आ जाएँ हराम नहीं (ये) अल्लाह का तहरीरी हुक्म (है जो) तुमपर (फ़र्ज़ किया गया) है और उन औरतों के सिवा (और औरतें) तुम्हारे लिए जायज़ हैं बशर्ते कि बदकारी व ज़िना नहीं बल्कि तुम इफ़्फ़त या पाकदामिनी की ग़रज़ से अपने माल (व मेहर) के बदले (निकाह करना) चाहो हॉ जिन औरतों से तुमने मुताअ किया हो तो उन्हें जो मेहर मुअय्यन किया है दे दो और मेहर के मुक़र्रर होने के बाद अगर आपस में (कम व बेश पर) राज़ी हो जाओ तो उसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं है बेशक अल्लाह (हर चीज़ से) वाक़िफ़ और मसलेहतों का पहचानने वाला है (24)

और तुममें से जो शख़्स आज़ाद इफ़्फ़तदार औरतों से निकाह करने की माली हैसियत से क़ुदरत न रखता हो तो वह तुम्हारी उन मोमिना लौन्डियों से जो तुम्हारे कब्ज़े में हैं निकाह कर सकता है और अल्लाह तुम्हारे ईमान से ख़ूब वाक़िफ़ है (ईमान की हैसियत से तो) तुममें एक दूसरे का हमजिन्स है पस (बे ताम्मुल) उनके मालिकों की इजाज़त से लौन्डियों से निकाह करो और उनका मेहर हुस्ने सुलूक से दे दो मगर उन्हीं (लौन्डियो) से निकाह करो जो इफ़्फ़त के साथ तुम्हारी पाबन्द रहें न तो खुले आम ज़िना करना चाहें और न चोरी छिपे से आशनाई फिर जब तुम्हारी पाबन्द हो चुकी उसके बाद कोई बदकारी करे तो जो सज़ा आज़ाद बीवियों को दी जाती है उसकी आधी (सज़ा) लौन्डियों को दी जाएगी (और लौन्डियों) से निकाह कर भी सकता है तो वह शख़्स जिसको ज़िना में मुब्तिला हो जाने का ख़ौफ़ हो और सब्र करे तो तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (25)

अल्लाह तो ये चाहता है कि (अपने) एहकाम तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान कर दे और जो (अच्छे) लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनके तरीक़े पर चला दे और तुम्हारी तौबा क़ुबूल करे और अल्लाह तो (हर चीज़ से) वाक़िफ़ और हिकमत वाला है (26)

और ख़ुदा तो चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़ुबूल (27)

करे और जो लोग नफ़सियानी ख़्वाहिश के पीछे पड़े हैं वह ये चाहते हैं कि तुम लोग (राहे हक़ से) बहुत दूर हट जाओ और अल्लाह चाहता है कि तुमसे बार में तख़फ़ीफ़ कर दें क्योंकि आदमी तो बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है (28)

ए ईमानवालों आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खा जाया करो लेकिन (हॉ) तुम लोगों की बाहमी रज़ामन्दी से तिजारत हो (और उसमें एक दूसरे का माल हो तो मुज़ाएक़ा नहीं) और अपना गला आप घूँट के अपनी जान न दो (क्योंकि) अल्लाह तो ज़रूर तुम्हारे हाल पर मेहरबान है (29)

और जो शख़्स जोरो ज़ुल्म से नाहक़ ऐसा करेगा (ख़ुदकुशी करेगा) तो (याद रहे कि) हम बहुत जल्द उसको जहन्नुम की आग में झोंक देंगे यह अल्लाह के लिये आसान है (30)

जिन कामों की तुम्हें मनाही की जाती है अगर उनमें से तुम गुनाहे कबीरा से बचते रहे तो हम तुम्हारे (सग़ीरा) गुनाहों से भी दरगुज़र करेंगे और तुमको बहुत अच्छी इज़्ज़त की जगह पहुँचा देंगे (31)

और अल्लाह ने जो तुममें से एक दूसरे पर तरजीह दी है उसकी हवस न करो (क्योंकि फ़ज़ीलत तो आमाल से है) मर्दो को अपने किए का हिस्सा है और औरतों को अपने किए का हिस्सा और ये

और बात है कि तुम अल्लाह से उसके फज़्ल व करम की ख़्वाहिश करो अल्लाह तो हर चीज़े से वाक़िफ़ है (32)

और माँ बाप (या) और क़राबतदार (ग़रज़) तो शख़्स जो तरका छोड़ जाए हमने हर एक का (वाली) वारिस मुक़र्रर कर दिया है और जिन लोगों से तुमने मुस्तहकम {पक्का} एहद किया है उनका मुक़र्रर हिस्सा भी तुम दे दो बेशक अल्लाह तो हर चीज़ पर गवाह है (33)

मर्दो का औरतों पर क़ाबू है क्योंकि (एक तो) अल्लाह ने बाज़ आदमियों (मर्द) को बाज़ अदमियों (औरत) पर फ़ज़ीलत दी है और (इसके अलावा) चूँकि मर्दो ने औरतों पर अपना माल ख़र्च किया है पस नेक बख़्त बीवियाँ तो शौहरों की ताबेदारी करती हैं (और) उनके पीठ पीछे जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त की वह भी (हर चीज़ की) हिफ़ाज़त करती है और वह औरतें जिनके नाफ़रमान सरकश होने का तुम्हें अन्देशा हो तो पहले उन्हें समझाओ और (उसपर न माने तो) तुम उनके साथ सोना छोड़ दो और (इससे भी न माने तो) मारो मगर इतना कि ख़ून न निकले और कोई अज़ो न (टूटे) पस अगर वह तुम्हारी मुतीइ हो जाएँ तो तुम भी उनके नुक़सान की राह न ढूँढो अल्लाह तो ज़रूर सबसे बरतर बुज़ुर्ग है (34)

और ऐ हुक्काम (वक्त) अगर तुम्हें मियाँ बीवी की पूरी नाइत्तेफ़ाक़ी का तरफ़ैन से अन्देशा हो तो एक सालिस (पन्च) मर्द के कुनबे में से एक और सालिस औरत के कुनबे में मुक़र्रर करो अगर ये दोनों सालिस दोनों में मेल करा देना चाहें तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान उसका अच्छा बन्दोबस्त कर देगा अल्लाह तो बेशक वाक़िफ़ व ख़बरदार है (35)

और अल्लाह ही की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न बनाओ और माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू में बैठने वाले मुसाहिबों और पड़ोसियों और ज़र ख़रीद लौन्डी और गुलाम के साथ एहसान करो बेशक अल्लाह अकड़ के चलने वालों और शेख़ीबाज़ों को दोस्त नहीं रखता (36)

ये वह लोग हैं जो ख़ुद तो बुख़्ल करते ही हैं और लोगों को भी बुख़्ल का हुक्म देते हैं और जो माल अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व (करम) से उन्हें दिया है उसे छिपाते हैं और हमने तो कुफ़राने नेअमत करने वालों के वास्ते सख़्त ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (37)

और जो लोग महज़ लोगों को दिखाने के वास्ते अपने माल ख़र्च करते हैं और न अल्लाह ही पर ईमान रखते हैं और न रोज़े आख़ेरत पर अल्लाह भी उनके साथ नहीं क्योंकि उनका साथी तो शैतान है और जिसका साथी शैतान हो तो क्या ही बुरा साथी है (38)

अगर ये लोग अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है

उसमें से राहे अल्लाह में ख़र्च करते तो उन पर क्या आफ़त आ जाती और अल्लाह तो उनसे ख़ूब वाक़िफ़ है (39)

अल्लाह तो हरगिज़ ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता बल्कि अगर ज़र्रा बराबर भी किसी की कोई नेकी हो तो उसको दूना करता है और अपनी तरफ़ से बड़ा सवाब अता फ़रमाता है (40)

(ख़ैर दुनिया में तो जो चाहे करें) भला उस वक्त क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह तलब करेंगे और (मोहम्मद) तुमको उन सब पर गवाह की हैसियत में तलब करेंगे (41)

उस दिन जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया और रसूल की नाफ़रमानी की ये आरज़ू करेंगे कि काश (वह पेवन्दे ख़ाक हो जाते) और उनके ऊपर से ज़मीन बराबर कर दी जाती और अफ़सोस ये लोग अल्लाह से कोई बात उस दिन छुपा भी न सकेंगे (42)

ऐ ईमानदारों तुम नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ ताकि तुम जो कुछ मुँह से कहो समझो भी तो और न जिनाबत की हालत में यहाँ तक कि ग़ुस्ल कर लो मगर राह गुज़र में हो (और ग़ुस्ल मुमकिन नहीं है तो अलबत्ता ज़रूरत नहीं) बल्कि अगर तुम मरीज़ हो और पानी नुक़सान करे या सफ़र में हो तुममें से किसी का पैख़ाना निकल आए या औरतों से सोहबत की हो और तुमको पानी न मयस्सर हो (कि तहारत करो) तो पाक मिट्टी पर तैमूम कर लो और (उस का तरीक़ा ये है कि) अपने मुँह और हाथों पर मिट्टी भरा हाथ फेरो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला है (और) बख़्श ने वाला है (43)

(ऐ रसूल) क्या तूमने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जिन्हें किताबे अल्लाह का कुछ हिस्सा दिया गया था (मगर) वह लोग (हिदायत के बदले) गुमराही ख़रीदने लगे उनकी ऐन मुराद यह है कि तुम भी राहे रास्त से बहक जाओ (44)

और अल्लाह तुम्हारे दुशमनों से ख़ूब वाक़िफ़ है और दोस्ती के लिए बस अल्लाह काफ़ी है और हिमायत के वास्ते भी अल्लाह ही काफ़ी है (45)

(ऐ रसूल) यहूद से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बातों में उनके महल व मौक़े से हेर फेर डाल देते हैं और अपनी ज़बानों को मरोड़कर और दीन पर ताना़ज़नी की राह से तुमसे समेअना व असैना (हमने सुना और नाफ़रमानी की) और वसमअ ग़ैरा मुसमइन (तुम मेरी सुनो अल्लाह तुमको न सुनवाए) राअना मेरा ख़्याल करो मेरे चरवाहे कहा करते हैं और अगर वह इसके बदले समेअना व अताअना (हमने सुना और माना) और इसमाआ (मेरी सुनो) और (राअना) के एवज़ उनज़ुरना (हमपर निगाह रख) कहते तो उनके हक़ में कहीं बेहतर होता और बिल्कुल सीधी बात थी मगर उनपर तो उनके कुफ्ऱ की वजह से अल्लाह की फ़िटकार है (46)

पस उनमें से चन्द लोगों के सिवा और लोग ईमान ही न लाएंगे ऐ एहले किताब जो (किताब) हमने नाज़िल की है और उस (किताब) की भी तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है उस पर इमान लाओ मगर क़ब्ल इसके कि हम कुछ लोगों के चेहरे बिगाड़कर उनके पुश्त की तरफ़ फेर दें या जिस तरह हमने असहाबे सबत (हफ़्ते वालों) पर फिटकार बरसायी वैसी ही फिटकार उनपर भी करें (47)

और अल्लाह का हुक्म किया कराया हुआ काम समझो अल्लाह उस जुर्म को तो अलबत्ता नहीं माफ़ करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए हॉ उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने (किसी को) अल्लाह का शरीक बनाया तो उसने बड़े गुनाह का तूफ़ान बॉधा (48)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जो आप बड़े मुक़द्दस बनते हैं (मगर उससे क्या होता है) बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और ज़ुल्म तो किसी पर धागे के बराबर हो ही गा नहीं (49)

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो ये लोग अल्लाह पर कैसे कैसे झूठ तूफ़ान जोड़ते हैं और खुल्लम खुल्ला गुनाह के वास्ते तो यही काफ़ी है (50)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के (हाल पर) नज़र नहीं की जिन्हें किताबे अल्लाह का कुछ हिस्सा दिया गया था और (फिर) शैतान और बुतों का कलमा पढ़ने लगे और जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया है उनकी निस्बत कहने लगे कि ये तो इमान लाने वालों से ज़्यादा राहे रास्त पर हैं (51)
(ऐ रसूल) यही वह लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह ने लानत की है तुम उनका मददगार हरगिज़ किसी को न पाओगे (52)

क्या (दुनिया) की सल्तनत में कुछ उनका भी हिस्सा है कि इस वजह से लोगों को भूसी भर भी न देंगे (53)

या अल्लाह ने जो अपने फ़ज़ल से (तुम) लोगों को (क़ुरान) अता फ़रमाया है इसके रश्क पर चले जाते हैं (तो उसका क्या इलाज है) हमने तो इबराहीम की औलाद को किताब और अक्ल की बातें अता फ़रमायी हैं और उनको बहुत बड़ी सल्तनत भी दी (54)

फिर कुछ लोग तो इस (किताब) पर ईमान लाए और कुछ लोगों ने उससे इन्कार किया और इसकी सज़ा के लिए जहन्नुम की दहकती हुयी आग काफ़ी है (55)

(याद रहे) कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया उन्हें ज़रूर अनक़रीब जहन्नुम की आग में झोंक देंगे (और जब उनकी खालें जल कर) जल जाएंगी तो हम उनके लिए दूसरी खालें बदल

कर पैदा करे देंगे ताकि वह अच्छी तरह अज़ाब का मज़ा चखें बेशक अल्लाह हरचीज़ पर ग़ालिब और हिकमत वाला है (56)

और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए हम उनको अनक़रीब ही (बेहिश्त के) ऐसे ऐसे (हरे भरे) बाग़ों में जा पहुँचाएंगे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और उनमें हमेशा रहेंगे वहां उनकी साफ़ सुथरी बीवियाँ होंगी और उन्हे घनी छाँव में ले जाकर रखेंगे (57)

ऐ ईमानदारों अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि लोगों की अमानतें अमानत रखने वालों के हवाले कर दो और जब लोगों के बाहमी झगड़ों का फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो (अल्लाह तुमको) इसकी क्या ही अच्छी नसीहत करता है इसमें तो शक नहीं कि अल्लाह सबकी सुनता है (और सब कुछ) देखता है (58)

ऐ ईमानदारों अल्लाह की इताअत करो और रसूल की और जो तुममें से साहेबाने हुकूमत हों उनकी इताअत करो और अगर तुम किसी बात में झगड़ा करो पस अगर तुम अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर इमान रखते हो तो इस अम्र में अल्लाह और रसूल की तरफ़ रूजू करो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अन्जाम की राह से बहुत अच्छा है (59)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों की (हालत) पर नज़र नहीं की जो ये ख़्याली पुलाओ पकाते हैं कि जो किताब तुझ पर नाज़िल की गयी और जो किताबें तुम से पहले नाज़िल की गयी (सब पर ईमान है) लाए और दिली तमन्ना ये है कि सरकशों को अपना हाकिम बनाएँ हालाँकि उनको हुक्म दिया गया कि उसकी बात न मानें और शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें बहका के बहुत दूर ले जाए (60)

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो किताब नाज़िल की है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रूजू करो तो तुम मुनाफ़िक़ीन को देखते हो कि तुमसे किस तरह मुँह फेर लेते हैं (61)
कि जब उनपर उनके करतूत की वजह से कोई मुसीबत पड़ती है तो क्योंकर तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हमारा मतलब नेकी और मेल मिलाप के सिवा कुछ न था ये वह लोग हैं कि कुछ अल्लाह ही उनके दिल की हालत ख़ूब जानता है (62)

पस तुम उनसे दरगुज़र करो और उनको नसीहत करो और उनसे उनके दिल में असर करने वाली बात कहो और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इस वास्ते कि अल्लाह के हुक्म से लोग उसकी इताअत करें (63)

और (रसूल) जब उन लोगों ने (नाफ़रमानी करके) अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर तुम्हारे पास

चले आते और अल्लाह से माफ़ी माँगते और रसूल (तुम) भी उनकी मग़फ़िरत चाहते तो बेशक वह लोग अल्लाह को बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान पाते (64)

पस (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम ये लोग सच्चे मोमिन न होंगे तावक़्ते कि अपने बाहमी झगड़ों में तुमको अपना हाकिम (न) बनाएँ फिर (यही नहीं बल्कि) जो कुछ तुम फ़ैसला करो उससे किसी तरह दिलतंग भी न हों बल्कि ख़ुशी ख़ुशी उसको मान लें (65)

(इस्लामी शरीयत में तो उनका ये हाल है) और अगर हम बनी इसराइल की तरह उनपर ये हुक्म जारी कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल कर डालो या शहर बदर हो जाओ तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा ये लोग तो उसको न करते और अगर ये लोग इस बात पर अमल करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके हक़ में बहुत बेहतर होता (66)

और (दीन में भी) बहुत साबित क़दमी से जमे रहते और इस सूरत में हम भी अपनी तरफ़ से ज़रूर बड़ा अच्छा बदला देते (67)

और उनको राहे रास्त की भी ज़रूर हिदायत करते (68)

और जिस ७शख़्स ने अल्लाह और रसूल की इताअत की तो ऐसे लोग उन (मक़बूल) बन्दों के साथ होंगे जिन्हें अल्लाह ने अपनी नेअमतें दी हैं यानि अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालेहीन और ये लोग क्या ही अच्छे रफ़ीक़ हैं (69)

ये अल्लाह का फ़ज़्ल (व करम) है और अल्लाह तो वाक़िफ़कारी में बस है (70)

ऐ ईमानवालों (जिहाद के वक़्त) अपनी हिफ़ाज़त के (ज़राए) अच्छी तरह देखभाल लो फिर तुम्हें इख़्तेयार है ख़्वाह दस्ता दस्ता निकलो या सबके सब इकट्ठे होकर निकल खड़े हो (71)

और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (जेहाद से) ज़रूर पीछे रहेंगे फिर अगर इत्तेफ़ाक़न तुमपर कोई मुसीबत आ पड़ी तो कहने लगे अल्लाह ने हमपर बड़ा फ़ज़्ल किया कि उनमें (मुसलमानों) के साथ मौजूद न हुआ (72)

और अगर तुमपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया (और दुश्मन पर ग़ालिब आए) तो इस तरह अजनबी बनके कि गोया तुममें उसमें कभी मोहब्बत ही न थी यूँ कहने लगा कि ऐ काश उनके साथ होता तो मैं भी बड़ी कामयाबी हासिल करता (73)

पस जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी (जान तक) आख़ेरत के वास्ते दे डालने को मौजूद हैं उनको

अल्लाह की राह में जेहाद करना चाहिए और जिसने अल्लाह की राह में जेहाद किया फिर शहीद हुआ तो गोया ग़ालिब आया तो (बहरहाल) हम तो अनक़रीब ही उसको बड़ा अज्र अता फ़रमायेंगे (74)

(और मुसलमानों) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में उन कमज़ोर और बेबस मर्दो और औरतों और बच्चों (को कुफ़्फ़ार के पंजे से छुड़ाने) के वास्ते जेहाद नहीं करते जो (हालते मजबूरी में) अल्लाह से दुआएँ माँग रहे हैं कि ऐ हमारे पालने वाले किसी तरह इस बस्ती (मक्का) से जिसके बाशिन्दे बड़े ज़ालिम हैं हमें निकाल और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा सरपरस्त बना और तू ख़ुद ही किसी को अपनी तरफ़ से हमारा मददगार बना (75)

(पस देखो) ईमानवाले तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और कुफ़्फ़ार शैतान की राह में लड़ते मरते हैं पस (मुसलमानों) तुम शैतान के हवा ख़्वाहों से लड़ो और (कुछ परवाह न करो) क्योंकि शैतान का दाओ तो बहुत ही बोदा है (76)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों (के हाल) पर नज़र नहीं की जिनको (जेहाद की आरज़ू थी) और उनको हुक्म दिया गया था कि (अभी) अपने हाथ रोके रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात दिए जाओ मगर जब जिहाद (उनपर वाजिब किया गया तो) उनमें से कुछ लोग (बोदेपन में) लोगों से इस तरह डरने लगे जैसे कोई अल्लाह से डरे बल्कि उससे कहीं ज़्यादा और (घबराकर) कहने लगे अल्लाहया तूने हमपर जेहाद क्यों वाजिब कर दिया हमको कुछ दिनों की और मोहलत क्यों न दी (ऐ रसूल) उनसे कह दो कि दुनिया की आसाइश बहुत थोड़ा सा है और जो (अल्लाह से) डरता है उसकी आख़ेरत उससे कहीं बेहतर है (77)

और वहां तो रेशा (बाल) बराबर भी तुम लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा तुम चाहे जहाँ हो मौत तो तुमको ले डालेगी अगरचे तुम कैसे ही मज़बूत पक्के गुम्बदों में जा छुपो और उनको अगर कोई भलाई पहुँचती है तो कहने लगते हैं कि ये अल्लाह की तरफ़ से है और अगर उनको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो (शरारत से) कहने लगते हैं कि (ऐ रसूल) ये तुम्हारी बदौलत है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सब अल्लाह की तरफ़ से है पस उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात ही नहीं समझते (78)

हालाँकि (सच तो यूँ है कि) जब तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो (समझो कि) अल्लाह की तरफ़ से है और जब तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो (समझो कि) ख़ुद तुम्हारी बदौलत है और (ऐ रसूल) हमने तुमको लोगों के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा है और (इसके लिए) अल्लाह की गवाही काफ़ी है (79)
जिसने रसूल की इताअत की तो उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने रूगरदानी की तो तुम कुछ ख़्याल न करो (क्योंकि) हमने तुम को पासबान (मुक़र्रर) करके तो भेजा नहीं है (80)

(ये लोग तुम्हारे सामने) तो कह देते हैं कि हम (आपके) फ़रमाबरदार हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर निकले तो उनमें से कुछ लोग जो कुछ तुमसे कह चुके थे उसके ख़िलाफ़ रातों को मशवरा करते हैं हालाँकि (ये नहीं समझते) ये लोग रातों को जो कुछ भी मशवरा करते हैं उसे अल्लाह लिखता जाता है पास तुम उन लोगों की कुछ परवाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह कारसाज़ी के लिए काफ़ी है (81)

तो क्या ये लोग क़ुरान में भी ग़ौर नहीं करते और (ये नहीं ख़्याल करते कि) अगर अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से (आया) होता तो ज़रूर उसमें बड़ा इख़्तेलाफ़ पाते (82)

और जब उनके (मुसलमानों के) पास अमन या ख़ौफ़ की ख़बर आयी तो उसे फ़ौरन मशहूर कर देते हैं हालाँकि अगर वह उसकी ख़बर को रसूल (या) और ईमानदारो में से जो साहबाने हुकूमत तक पहुँचाते तो बेशक जो लोग उनमें से उसकी तहक़ीक़ करने वाले हैं (पैग़म्बर या वली) उसको समझ लेते कि (मशहूर करने की ज़रूरत है या नहीं) और (मुसलमानों) अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो चन्द आदमियों के सिवा तुम सबके सब शैतान की पैरवी करने लगते (83)

पस (ऐ रसूल) तुम अल्लाह की राह में जिहाद करो और तुम अपनी ज़ात के सिवा किसी और के ज़िम्मेदार नहीं हो और ईमानदारों को (जेहाद की) तरग़ीब दो और अनक़रीब अल्लाह काफ़िरों की हैबत रोक देगा और अल्लाह की हैबत सबसे ज़्यादा है और उसकी सज़ा बहुत सख़्त है (84)

जो शख़्स अच्छे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उस काम के सवाब से कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुरे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उसी काम की सज़ा का कुछ हिस्सा मिलेगा और अल्लाह तो हर चीज़ पर निगेहबान है (85)

और जब कोई शख़्स सलाम करे तो तुम भी उसके जवाब में उससे बेहतर तरीक़े से सलाम करो या वही लफ़्ज़ जवाब में कह दो बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है (86)

अल्लाह तो वही परवरदिगार है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं वह तुमको क़यामत के दिन जिसमें ज़रा भी शक नहीं ज़रूर इकट्ठा करेगा और अल्लाह से बढ़कर बात में सच्चा कौन होगा (87)

(मुसलमानों) फिर तुमको क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए हो (एक मुवाफ़िक़ एक मुख़ालिफ़) हालाँकि ख़ुद अल्लाह ने उनके करतूतों की बदौलत उनकी अक़्लों को उलट पुलट दिया है क्या तुम ये चाहते हो कि जिसको अल्लाह ने गुमराही में छोड़ दिया है तुम उसे राहे

रास्त पर ले आओ हालॉकि अल्लाह ने जिसको गुमराही में छोड़ दिया है उसके लिए तुममें से कोई शख़्स रास्ता निकाल ही नहीं सकता (88)
उन लोगों की ख़्वाहिश तो ये है कि जिस तरह वह काफ़िर हो गए तुम भी काफ़िर हो जाओ ताकि तुम उनके बराबर हो जाओ पस जब तक वह अल्लाह की राह में हिजरत न करें तो उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ फिर अगर वह उससे भी मुँह मोड़ें तो उन्हें गिरफ़्तार करो और जहॉ पाओ उनको क़त्ल करो और उनमें से किसी को न अपना दोस्त बनाओ न मददगार (89)

मगर जो लोग किसी ऐसी क़ौम से जा मिलें कि तुममें और उनमें (सुलह का) एहद व पैमान हो चुका है या तुमसे जंग करने या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से दिलतंग होकर तुम्हारे पास आए हों (तो उन्हें आज़ार न पहुँचाओ) और अगर अल्लाह चाहता तो उनको तुमपर ग़लबा देता तो वह तुमसे ज़रूर लड़ पड़ते पस अगर वह तुमसे किनारा कशी करे और तुमसे न लड़े और तुम्हारे पास सुलाह का पैग़ाम दे तो तुम्हारे लिए उन लोगों पर आज़ार पहुँचाने की अल्लाह ने कोई सबील नहीं निकाली (90)

अनक़रीब तुम कुछ ऐसे और लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें (मगर) जब कभी झगड़े की तरफ़ बुलाए गए तो उसमें औंधे मुँह के बल गिर पड़े पस अगर वह तुमसे न किनारा कशी करें और न तुम्हें सुलह का पैग़ाम दें और न लड़ाई से अपने हाथ रोकें पस उनको पकड़ों और जहॉ पाओ उनको क़त्ल करो और यही वह लोग हैं जिनपर हमने तुम्हें सरीही ग़लबा अता फ़रमाया (91)

और किसी ईमानदार को ये जायज़ नहीं कि किसी मोमिन को जान से मार डाले मगर धोखे से (क़त्ल किया हो तो दूसरी बात है) और जो शख़्स किसी मोमिन को धोखे से (भी) मार डाले तो (उसपर) एक ईमानदार ग़ुलाम का आज़ाद करना और मक़तूल के क़राबतदारों को ख़ूंन बहा देना (लाज़िम) है मगर जब वह लोग माफ़ करें फिर अगर मक़तूल उन लोगों में से हो वह जो तुम्हारे दुशमन (काफ़िर हरबी) हैं और ख़ुद क़ातिल मोमिन है तो (सिर्फ़) एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना और अगर मक़तूल उन (काफ़िर) लोगों में का हो जिनसे तुम से एहद व पैमान हो चुका है तो (क़ातिल पर) वारिसे मक़तूल को ख़ून बहा देना और एक बन्दए मोमिन का आज़ाद करना (वाजिब) है फ़िर जो शख़्स (ग़ुलाम आज़ाद करने को) न पाये तो उसका कुफ़्फ़ारा अल्लाह की तरफ़ से लगातार दो महीने के रोज़े हैं और अल्लाह ख़ूब वाकिफ़कार (और) हिकमत वाला है (92)

और जो शख़्स किसी मोमिन को जानबूझ के मार डाले (ग़ुलाम की आज़ादी वग़ैरह उसका कुफ़्फ़ारा नहीं बल्कि) उसकी सज़ा दोज़क है और वह उसमें हमेशा रहेगा उसपर अल्लाह ने (अपना) ग़ज़ब ढाया है और उसपर लानत की है और उसके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है (93)

ऐ ईमानदारों जब तुम अल्लाह की राह में (जेहाद करने को) सफ़र करो तो (किसी के क़त्ल करने

में जल्दी न करो बल्कि) अच्छी तरह जॉच कर लिया करो और जो शख़्स (इज़हारे इस्लाम की ग़रज़ से) तुम्हे सलाम करे तो तुम बे सोचे समझे न कह दिया करो कि तू ईमानदार नहीं है (इससे ज़ाहिर होता है) कि तुम (फ़क्त) दुनियावी आसाइश की तमन्ना रखते हो मगर इसी बहाने क़त्ल करके लूट लो और ये नहीं समझते कि (अगर यही है) तो अल्लाह के यहॉ बहुत से ग़नीमतें हैं (मुसलमानों) पहले तुम ख़ुद भी तो ऐसे ही थे फिर अल्लाह ने तुमपर एहसान किया (कि बेखटके मुसलमान हो गए) ग़रज़ ख़ूब छानबीन कर लिया करो बेशक अल्लाह तुम्हारे हर काम से ख़बरदार है (94)

माज़ूर लोगों के सिवा जेहाद से मुँह छिपा के घर में बैठने वाले और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद करने वाले हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते (बल्कि) अपने जान व माल से जिहाद करने वालों को घर बैठे रहने वालें पर अल्लाह ने दरजे के एतबार से बड़ी फ़ज़ीलत दी है (अगरचे) अल्लाह ने सब इमानदारों से (ख़्वाह जिहाद करें या न करें) भलाई का वायदा कर लिया है मगर ग़ाज़ियों को खाना नशीनों पर अज़ीम सवाब के एतबार से अल्लाह ने बड़ी फ़ज़ीलत दी है (95)

(यानी उन्हें) अपनी तरफ़ से बड़े बड़े दरजे और बख़्शिश और रहमत (अता फ़रमाएगा) और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (96)

बेशक जिन लोगों की क़ब्ज़े रूह फ़रिश्ते ने उस वक़्त की है कि (दारूल हरब में पड़े) अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे और फ़रिश्ते कब्ज़े रूह के बाद हैरत से कहते हैं तुम किस (हालत) ग़फ़लत में थे तो वह (माज़ेरत के लहजे में) कहते है कि हम तो रूए ज़मीन में बेकस थे तो फ़रिश्ते कहते हैं कि अल्लाह की (ऐसी लम्बी चौड़ी) ज़मीन में इतनी सी गुन्जाइश न थी कि तुम (कहीं) हिजरत करके चले जाते पस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और वह बुरा ठिकाना है (97)

मगर जो मर्द और औरतें और बच्चे इस क़दर बेबस हैं कि न तो (दारूल हरब से निकलने की) काई तदबीर कर सकते हैं और उनकी रिहाई की कोई राह दिखाई देती है (98)

तो उम्मीद है कि अल्लाह ऐसे लोगों से दरगुज़रे और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला और बख्शने वाला है (99)

और जो शख़्स अल्लाह की राह में हिजरत करेगा तो वह रूए ज़मीन में बा फ़राग़त (चैन से रहने सहने के) बहुत से कुशादा मक़ाम पाएगा और जो शख़्स अपने घर से जिलावतन होके अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ निकल ख़ड़ा हुआ फिर उसे (मंज़िले मक़सूद) तक पहुँचने से पहले मौत आ जाए तो अल्लाह पर उसका सवाब लाज़िम हो गया और अल्लाह तो बड़ा बख़्श ने वाला मेहरबान है ही (100)

(मुसलमानों जब तुम रूए ज़मीन पर सफ़र करो) और तुमको इस अम्र का ख़ौफ़ हो कि कुफ़्फ़ार (असनाए नमाज़ में) तुमसे फ़साद करेंगे तो उसमें तुम्हारे वास्ते कुछ मुज़ाएक़ा नहीं कि नमाज़ में कुछ कम कर दिया करो बेशक कुफ़्फ़ार तो तुम्हारे ख़ुल्लम ख़ुल्ला दुश्मन हैं (101)

और (ऐ रसूल) तुम मुसलमानों में मौजूद हो और (लड़ाई हो रही हो) कि तुम उनको नमाज़ पढ़ाने लगो तो (दो गिरोह करके) एक को लड़ाई के वास्ते छोड़ दो (और) उनमें से एक जमाअत तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपने हरबे तैयार अपने साथ लिए रहे फिर जब (पहली रकअत के) सजदे कर (दूसरी रकअत फ़ुरादा पढ़) ले तो तुम्हारे पीछे पुश्त पनाह बनें और दूसरी जमाअत जो (लड़ रही थी और) जब तक नमाज़ नहीं पढ़ने पायी है और (तुम्हारी दूसरी रकअत में) तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपनी हिफ़ाज़त की चीज़े और अपने हथियार (नमाज़ में साथ) लिए रहे कुफ़्फ़ार तो ये चाहते ही हैं कि काश अपने हथियारों और अपने साज़ व सामान से ज़रा भी ग़फ़लत करो तो एक बारगी सबके सब तुम पर टूट पड़ें हॉ अलबत्ता उसमें कुछ मुज़ाएक़ा नहीं कि (इत्तेफ़ाक़न) तुमको बारिश के सबब से कुछ तकलीफ़ पहुँचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार (नमाज़ में) उतार के रख दो और अपनी हिफ़ाज़त करते रहो और अल्लाह ने तो काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (102)

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो उठते बैठते लेटते (ग़रज़ हर हाल में) अल्लाह को याद करो फिर जब तुम (दुश्मनों से) मुतमईन हो जाओ तो (अपने मअमूल) के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ा करो क्योंकि नमाज़ तो इमानदारों पर वक़्त मुय्यन करके फ़र्ज़ की गयी है (103)

और (मुसलमानों) दुशमनों के पीछा करने में सुस्ती न करो अगर लड़ाई में तुमको तकलीफ़ पहुॅचती है तो जैसी तुमको तकलीफ़ पहुॅचती है उनको भी वैसी ही अज़ीयत होती है और (तुमको) ये भी (उम्मीद है कि) तुम अल्लाह से वह वह उम्मीदें रखते हो जो (उनको) नसीब नहीं और अल्लाह तो सबसे वाक़िफ़ (और) हिकमत वाला है (104)

(ऐ रसूल) हमने तुमपर बरहक़ किताब इसलिए नाज़िल की है कि अल्लाह ने तुम्हारी हिदायत की है उसी तरह लोगों के दरमियान फ़ैसला करो और ख़्यानत करने वालों के तरफ़दार न बनो (105)
और (अपनी उम्मत के लिये) अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ मॉगों बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (106)

और (ऐ रसूल) तुम (उन बदमाशों) की तरफ़ होकर (लोगों से) न लड़ो जो अपने ही (लोगों) से दग़ाबाज़ी करते हैं बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को दोस्त नहीं रखता जो दग़ाबाज़ गुनाहगार हो (107)

लोगों से तो अपनी शरारत छुपाते हैं और (अल्लाह से नहीं छुपा सकते) हालॉकि वह तो उस वक़्त

भी उनके साथ साथ है जब वह लोग रातों को (बैठकर) उन बातों के मशवरे करते हैं जिनसे अल्लाह राज़ी नहीं और अल्लाह तो उनकी सब करतूतों को (इल्म के अहाते में) घेरे हुए है (108)

(मुसलमानों) ख़बरदार हो जाओ भला दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी में तो तुम उनकी तरफ़ होकर लड़ने खड़े हो गए (मगर ये तो बताओ) फिर क़यामत के दिन उनका तरफ़दार बनकर अल्लाह से कौन लड़ेगा या कौन उनका वकील होगा (109)

और जो शख़्स कोई बुरा काम करे या (किसी तरह) अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करे उसके बाद अल्लाह से अपनी मग़फ़िरत की दुआ माँगे तो अल्लाह को बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा (110)

और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो उससे कुछ अपना ही नुक़सान करता है और अल्लाह तो (हर चीज़ से) वाक़िफ़ (और) बड़ी तदबीर वाला है (111)

और जो शख़्स कोई ख़ता या गुनाह करे फिर उसे किसी बेक़सूर के सर थोपे तो उसने एक बड़े (इफ़तेरा) और सरीही गुनाह को अपने ऊपर लाद लिया (112)

और (ऐ रसूल) अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो उन (बदमाशों) में से एक गिरोह तुमको गुमराह करने का ज़रूर क़सद करता हालॉकि वह लोग बस अपने आप को गुमराह कर रहे हैं और यह लोग तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहुँचा सकते और अल्लाह ही ने तो (मेहरबानी की कि) तुमपर अपनी किताब और हिकमत नाज़िल की और जो बातें तुम नहीं जानते थे तुम्हें सिखा दी और तुम पर तो अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है (113)

(ऐ रसूल) उनके राज़ की बातों में अक्सर में भलाई (का तो नाम तक) नहीं मगर (हॉ) जो ७शख़्स किसी को सदक़ा देने या अच्छे काम करे या लोगों के दरमियान मेल मिलाप कराने का हुक्म दे (तो अलबत्ता एक बात है) और जो शख़्स (महज़) अल्लाह की ख़ुशनूदी की ख़्वाहिश में ऐसे काम करेगा तो हम अनक़रीब ही उसे बड़ा अच्छा बदला अता फरमाएंगे (114)

और जो शख़्स राहे रास्त के ज़ाहिर होने के बाद रसूल से सरकशी करे और मोमिनीन के तरीक़े के सिवा किसी और राह पर चले तो जिधर वह फिर गया है हम भी उधर ही फेर देंगे और (आख़िर) उसे जहन्नुम में झोंक देंगे और वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना (115)

अल्लाह बेशक उसको तो नहीं बख़्शता कि उसका कोई और शरीक बनाया जाए हॉ उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे बख़्श दे और (माज़ अल्लाह) जिसने किसी को अल्लाह का शरीक बनाया तो वह बस भटक के बहुत दूर जा पड़ा (116)

मुशरेकीन अल्लाह को छोड़कर बस औरतों ही की परसतिश करते हैं (यानी बुतों की जो उनके) ख़्याल में औरतें हैं (दर हक़ीक़त) ये लोग सरकश शैतान की परसतिश करते हैं (117)
जिसपर अल्लाह ने लानत की है और जिसने (इब्तिदा ही में) कहा था कि (अल्लाहवन्दा) मैं तेरे बन्दों में से कुछ ख़ास लोगों को (अपनी तरफ) ज़रूर ले लूंगा (118)

और फिर उन्हें ज़रूर गुमराह करूँगा और उन्हें बड़ी बड़ी उम्मीदें भी ज़रूर दिलाऊँगा और यक़ीनन उन्हें सिखा दूंगा फिर वो (बुतों के वास्ते) जानवरों के काम ज़रूर चीर फाड़ करेंगे और अलबत्ता उनसे कह दूंगा बस फिर वो (मेरी तालीम के मुवाफ़िक़) अल्लाह की बनाई हुयी सूरत को ज़रूर बदल डालेंगे और (ये याद रहे कि) जिसने अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना सरपरस्त बनाया तो उसने खुल्लम खुल्ला सख़्त घाटा उठाया (119)

शैतान उनसे अच्छे अच्छे वायदे भी करता है (और बड़ी बड़ी) उम्मीदें भी दिलाता है और शैतान उनसे जो कुछ वायदे भी करता है वह बस निरा धोखा (ही धोखा) है (120)

यही तो वह लोग हैं जिनका ठिकाना बस जहन्नुम है और वहॉ से भागने की जगह भी न पाएंगे (121)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें हम अनक़रीब ही (बेहिश्त के) उन (हरे भरे) बाग़ों में जा पहुँचाएगें जिनके (दरख़्तों के) नीचे नहरें जारी होंगी और ये लोग उसमें हमेशा आबादुल आबाद तक रहेंगे (ये उनसे) अल्लाह का पक्का वायदा है और अल्लाह से ज़्यादा (अपनी) बात में सच्चा कौन होगा (122)

न तुम लोगों की आरज़ू से (कुछ काम चल सकता है) न एहले किताब की तमन्ना से कुछ हासिल हो सकता है बल्कि (जैसा काम वैसा दाम) जो बुरा काम करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा और फिर अल्लाह के सिवा किसी को न तो अपना सरपरस्त पाएगा और न मददगार (123)

और जो शख़्स अच्छे अच्छे काम करेगा (ख़्वाह) मर्द हो या औरत और ईमानदार (भी) हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में (बेखटके) जा पहुँचेंगे और उनपर तिल भी ज़ुल्म न किया जाएगा (124)

और उस शख़्स से दीन में बेहतर कौन होगा जिसने अल्लाह के सामने अपना सरे तसलीम झुका दिया और नेको कार भी है और इबराहीम के तरीके पर चलता है जो बातिल से कतरा कर चलते थे और अल्लाह ने इब्राहिम को तो अपना ख़लिस दोस्त बना लिया (125)

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ही का है और अल्लाह ही सब चीज़ को (अपनी) क़ुदरत से घेरे हुए है (126)

(ऐ रसूल) ये लोग तुमसे (यतीम लड़कियों) से निकाह के बारे में फ़तवा तलब करते हैं तुम उनसे कह दो कि अल्लाह तुम्हें उनसे (निकाह करने) की इजाज़त देता है और जो हुक्म मनाही का क़ुरान में तुम्हें (पहले) सुनाया जा चुका है वह हक़ीक़तन उन यतीम लड़कियों के वास्ते था जिन्हें तुम उनका मुअय्यन किया हुआ हक़ नहीं देते और चाहते हो (कि यूँ ही) उनसे निकाह कर लो और उन कमज़ोर नातवॉ {कमजोर} बच्चों के बारे में हुक्म फ़रमाता है और (वो) ये है कि तुम यतीमों के हुक़ूक़ के बारे में इन्साफ पर क़ायम रहो और (यक़ीन रखो कि) जो कुछ तुम नेकी करोगे तो अल्लाह ज़रूर वाक़िफ़कार है (127)

और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़्यादती व बेतवज्जोही से (तलाक़ का) ख़ौफ़ रखती हो तो मियॉ बीवी के बाहम किसी तरह मिलाप कर लेने में दोनों (में से किसी पर) कुछ गुनाह नहीं है और सुलह तो (बहरहाल) बेहतर है और बुख़्ल से तो क़रीब क़रीब हर तबियत के हम पहलू है और अगर तुम नेकी करो और परहेजदारी करो तो अल्लाह तुम्हारे हर काम से ख़बरदार है (वही तुमको अज्र देगा) (128)

और अगरचे तुम बहुतेरा चाहो (लेकिन) तुममें इतनी सकत तो हरगिज़ नहीं है कि अपनी कई बीवियों में (पूरा पूरा) इन्साफ़ कर सको (मगर) ऐसा भी तो न करो कि (एक ही की तरफ़) हमातन माएल हो जाओ कि (दूसरी को अधड़ में) लटकी हुयी छोड़ दो और अगर बाहम मेल कर लो और (ज़्यादती से) बचे रहो तो अल्लाह यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (129)

और अगर दोनों मियॉ बीवी एक दूसरे से बाज़रिए तलाक़ जुदा हो जाएँ तो अल्लाह अपने वसी ख़ज़ाने से (फ़रागुल बाली अता फ़रमाकर) दोनों को (एक दूसरे से) बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह तो बड़ी गुन्जाइश और तदबीर वाला है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज सब कुछ) अल्लाह ही का है (130)

और जिन लोगों को तुमसे पहले किताबे अल्लाह अता की गयी है उनको और तुमको भी उसकी हमने वसीयत की थी कि (अल्लाह) (की नाफ़रमानी) से डरते रहो और अगर (कहीं) तुमने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया तो (याद रहे कि) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज सब कुछ) अल्लाह ही का है (जो चाहे कर सकता है) और अल्लाह तो सबसे बेपरवा और (हमा सिफ़त) मौसूफ़ हर हम्द वाला है (131)

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज सब कुछ) ख़ास अल्लाह ही का है और अल्लाह तो कारसाज़ी के लिये काफ़ी है (132)

ऐ लोगों अगर अल्लाह चाहे तो तुमको (दुनिया के परदे से) बिल्कुल उठा ले और (तुम्हारे बदले) दूसरों को ला (बसाए) और अल्लाह तो इसपर क़ादिर व तवाना है (133)

और जो शख़्स (अपने आमाल का) बदला दुनिया ही में चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत दोनों का अज्र मौजूद है और अल्लाह तो हर शख़्स की सुनता और सबको देखता है (134)

ऐ ईमानवालों मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अल्लाह के लये गवाही दो अगरचे (ये गवाही) ख़ुद तुम्हारे या तुम्हारे मॉ बाप या क़राबतदारों के लिए खिलाफ़ (ही क्यो) न हो ख़्वाह मालदार हो या मोहताज (क्योंकि) अल्लाह तो (तुम्हारी बनिस्बत) उनपर ज़्यादा मेहरबान है तो तुम (हक़ से) कतराने में ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और अगर घुमा फिरा के गवाही दोगे या बिल्कुल इन्कार करोगे तो (याद रहे जैसी करनी वैसी भरनी क्योंकि) जो कुछ तुम करते हो ख़ुद उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (135)

ऐ ईमानवालों अल्लाह और उसके रसूल (मोहम्मद) पर और उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल (मोहम्मद) पर नाज़िल की है और उस किताब पर जो उसने पहले नाज़िल की ईमान लाओ और (ये भी याद रहे कि) जो शख़्स अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और रोज़े आख़िरत का मुन्किर हुआ तो वह राहे रास्त से भटक के जूर जा पड़ा (136)

बेशक जो लोग ईमान लाए उसके बाद फ़िर काफ़िर हो गए फिर ईमान लाए और फिर उसके बाद काफ़िर हो गये और कुफ़्र में बढ़ते चले गए तो अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करेगा और न उन्हें राहे रास्त की हिदायत ही करेगा (137)

(ऐ रसूल) मुनाफ़िक़ों को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए ज़रूर दर्दनाक अज़ाब है (138)

जो लोग मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को अपना सरपरस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज़्ज़त (व आबरू) की तलाश करते हैं इज़्ज़त सारी बस अल्लाह ही के लिए ख़ास है (139)

(मुसलमानों) हालॉकि अल्लाह तुम पर अपनी किताब क़ुरान में ये हुक्म नाज़िल कर चुका है कि जब तुम सुन लो कि अल्लाह की आयतों से ईन्कार किया जाता है और उससे मसख़रापन किया जाता है तो तुम उन (कुफ़्फ़ार) के साथ मत बैठो यहॉ तक कि वह किसी दूसरी बात में ग़ौर करने लगें

वरना तुम भी उस वक़्त उनके बराबर हो जाओगे उसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को (एक न एक दिन) जहन्नुम में जमा ही करेगा (140)

(वो मुनाफ़ेक़ीन) जो तुम्हारे मुन्तज़िर है (कि देखिए फ़तेह होती है या शिकस्त) तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें फ़तेह हुयी तो कहने लगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर (फ़तेह का) हिस्सा काफ़िरों को मिला तो (काफ़िरों के तरफ़दार बनकर) कहते हैं क्या हम तुमपर ग़ालिब न आ गए थे (मगर क़सदन तुमको छोड़ दिया) और तुमको मोमिनीन (के हाथों) से हमने बचाया नहीं था (मुनाफ़िक़ों) क़यामत के दिन तो अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा और अल्लाह ने काफ़िरों को मोमिनीन पर वर {ऊँचा} रहने की हरगिज़ कोई राह नहीं क़रार दी है (141)

बेशक मुनाफ़िक़ीन (अपने ख़्याल में) अल्लाह को फरेब देते हैं हालाँकि अल्लाह ख़ुद उन्हें धोखा देता है और ये लोग जब नमाज़ पढ़ने खड़े होते हैं तो (बे दिल से) अलकसाए हुए खड़े होते हैं और सिर्फ लोगों को दिखाते हैं और दिल से तो अल्लाह को कुछ यूँ ही सा याद करते हैं (142)

इस कुफ़्र व इमान के बीच अधड़ में पड़े झूल रहे हैं न उन (मुसलमानों) की तरफ़ न उन काफ़िरों की तरफ़ और (ऐ रसूल) जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे उसकी (हिदायत की) तुम हरगिज़ सबील नहीं कर सकते (143)

ऐ ईमान वालों मोमिनीन को छोड़कर काफ़िरों को (अपना) सरपरस्त न बनाओ क्या ये तुम चाहते हो कि अल्लाह का सरीही इल्ज़ाम अपने सर क़ायम कर लो (144)

इसमें तो शक ही नहीं कि मुनाफ़िक़ जहन्नुम के सबसे नीचे तबक़े में होंगे और (ऐ रसूल) तुम वहाँ किसी को उनका हिमायती भी न पाओगे (145)

मगर (हाँ) जिन लोगों ने (निफ़ाक़ से) तौबा कर ली और अपनी हालत दुरूस्त कर ली और अल्लाह से लगे लिपटे रहे और अपने दीन को महज़ अल्लाह के वास्ते निरा खरा कर लिया तो ये लोग मोमिनीन के साथ (बेहिश्त में) होंगे और मोमिनीन को अल्लाह अनक़रीब ही बड़ा (अच्छा) बदला अता फ़रमाएगा (146)

अगर तुमने अल्लाह का शुक्र किया और उसपर ईमान लाए तो अल्लाह तुम पर अज़ाब करके क्या करेगा बल्कि अल्लाह तो (ख़ुद शुक्र करने वालों का) क़दरदाँ और वाक़िफ़कार है (147)

अल्लाह (किसी को) हाँक पुकार कर बुरा कहने को पसन्द नहीं करता मगर मज़लूम (ज़ालिम की बुराई बयान कर सकता है) और अल्लाह तो (सबकी) सुनता है (और हर एक को) जानता है (148)

अगर खुल्लम खुल्ला नेकी करते हो या छिपा कर या किसी की बुराई से दरगुज़र करते हो तो तो अल्लाह भी बड़ा दरगुज़र करने वाला (और) क़ादिर है (149)

बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों से इन्कार करते हैं और अल्लाह और उसके रसूलों में तफ़रक़ा डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ (पैग़म्बरों) पर ईमान लाए हैं और बाज़ का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि इस (कुफ़्र व इमान) के दरमियान एक दूसरी राह निकलें (150)

यही लोग हक़ीक़तन काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते तो ऐसे ही लोगों को अल्लाह बहुत जल्द उनका अज्र अता फ़रमाएगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (152)

(ऐ रसूल) एहले किताब (यहूदी) जो तुमसे (ये) दरख़्वास्त करते हैं कि तुम उनपर एक किताब आसमान से उतरवा दो (तुम उसका ख़्याल न करो क्योंकि) ये लोग मूसा से तो इससे कहीं बढ़ (बढ़) के दरख़्वास्त कर चुके हैं चुनान्चे कहने लगे कि हमें अल्लाह को खुल्लम खुल्ला दिखा दो तब उनकी शरारत की वजह से बिजली ने ले डाला फिर (बावजूद के) उन लोगों के पास तौहीद की वाज़ेए और रौशन (दलीलें) आ चुकी थी उसके बाद भी उन लोगों ने बछड़े को (अल्लाह) बना लिया फिर हमने उससे भी दरगुज़र किया और मूसा को हमने सरीही ग़लबा अता किया (153)

और हमने उनके एहद व पैमान की वजह से उनके (सर) पर (कोहे) तूर को लटका दिया और हमने उनसे कहा कि (शहर के) दरवाज़े में सजदा करते हुए दाख़िल हो और हमने (ये भी) कहा कि तुम हफ़्ते के दिन (हमारे हुक्म से) तजावुज़ न करना और हमने उनसे बहुत मज़बूत एहदो पैमान ले लिया (154)

फिर उनके अपने एहद तोड़ डालने और एहकामे अल्लाह से इन्कार करने और नाहक़ अम्बिया को क़त्ल करने और इतरा कर ये कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़े हुए हैं (ये तो नहीं) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र की वजह से उनके दिलों पर मोहर कर दी है तो चन्द आदमियों के सिवा ये लोग ईमान नहीं लाते (155)

और उनके काफ़िर होने और मरियम पर बहुत बड़ा बोहतान बाँधने कि वजह से (156)

और उनके यह कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा (स.) अल्लाह के रसूल को क़त्ल

कर डाला हालाँकि न तो उन लोगों ने उसे क़त्ल ही किया न सूली ही दी उनके लिए (एक दूसरा शख़्स ईसा) से मुशाबेह कर दिया गया और जो लोग इस बारे में इख़्तेलाफ़ करते हैं यक़ीनन वह लोग (उसके हालत) की तरफ़ से धोखे में (आ पड़े) हैं उनको उस (वाक़िये) की ख़बर ही नहीं मगर फ़क्त अटकल के पीछे (पड़े) हैं और ईसा को उन लोगों ने यक़ीनन क़त्ल नहीं किया (157)

बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त तदबीर वाला है (158)
और (जब ईसा मेहदी मौऊद के ज़हूर के वक्त आसमान से उतरेंगे तो) एहले किताब में से कोई शख़्स ऐसा न होगा जो उनपर उनके मरने के क़ब्ल ईमान न लाए और ख़ुद ईसा क़यामत के दिन उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे (159)

ग़रज़ यहूदयों की (उन सब) शरारतों और गुनाह की वजह से हमने उनपर वह साफ़ सुथरी चीज़ें जो उनके लिए हलाल की गयी थीं हराम कर दी और उनके अल्लाह की राह से बहुत से लोगों को रोकने कि वजह से भी (160)

और बावजूद मुमानिअत सूद खा लेने और नाहक़ ज़बरदस्ती लोगों के माल खाने की वजह से उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनके वास्ते हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (161)

लेकिन (ऐ रसूल) उनमें से जो लोग इल्म (दीन) में बड़े मज़बूत पाए पर फ़ायज़ हैं वह और ईमान वाले तो जो (किताब) तुमपर नाज़िल हुयी है (सब पर ईमान रखते हैं) और से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और रोज़े आख़ेरत का यक़ीन रखते हैं ऐसे ही लोगों को हम अनक़रीब बहुत बड़ा अज्र अता फ़रमाएँगे (162)

(ऐ रसूल) हमने तुम्हारे पास (भी) तो इसी तरह 'वही' भेजी जिस तरह नूह और उसके बाद वाले पैग़म्बरों पर भेजी थी और जिस तरह इबराहीम और इस्माइल और इसहाक़ और याक़ूब और औलादे याक़ूब व ईसा व अय्यूब व युनुस व हारून व सुलेमान के पास 'वही' भेजी थी और हमने दाऊद को ज़ुबूर अता की (163)

जिनका हाल हमने तुमसे पहले ही बयान कर दिया और बहुत से ऐसे रसूल (भेजे) जिनका हाल तुमसे बयान नहीं किया और अल्लाह ने मूसा से (बहुत सी) बातें भी कीं (164)

और हमने नेक लोगों को बेहिश्त की ख़ुशख़बरी देने वाले और बुरे लोगों को अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बर (भेजे) ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों की अल्लाह पर कोई हुज्जत बाक़ी न रह जाए और अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त हकीम है (ये कुफ़्फ़ार नहीं मानते न मानें) (165)

मगर अल्लाह तो इस पर गवाही देता है जो कुछ तुम पर नाज़िल किया है ख़ूब समझ बूझ कर नाज़िल किया है (बल्कि) उसकी गवाही तो फ़रिश्ते तक देते हैं हालॉकि अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है (166)

बेशक जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया और अल्लाह की राह से (लोगों) को रोका वह राहे रास्त से भटक के बहुत दूर जा पड़े (167)

बेशक जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तेयार किया और (उस पर) ज़ुल्म (भी) करते रहे न तो अल्लाह उनको बख़्शेगा ही और न ही उन्हें किसी तरीके़ की हिदायत करेगा (168)

मगर (हॉ) जहन्नुम का रास्ता (दिखा देगा) जिसमें ये लोग हमेशा (पड़े) रहेंगे और ये तो अल्लाह के वास्ते बहुत ही आसान बात है (169)

ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रसूल (मोहम्मद) दीने हक़ के साथ आ चुके हैं ईमान लाओ (यही) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर इन्कार करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ ज़मीन और आसमानों में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह बड़ा वाकि़फ़कार हकीम है (170)

ऐ एहले किताब अपने दीन में हद (एतदाल) से तजावुज़ न करो और अल्लाह की शान में सच के सिवा (कोई दूसरी बात) न कहो मरियम के बेटे ईसा मसीह (न अल्लाह थे न अल्लाह के बेटे) पस अल्लाह के एक रसूल और उसके कलमे (हुक्म) थे जिसे अल्लाह ने मरियम के पास भेज दिया था (कि हामला हो जा) और अल्लाह की तरफ़ से एक जान थे पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन (अल्लाह) के क़ायल न बनो (तसलीस से) बाज़ रहो (और) अपनी भलाई (तौहीद) का क़सद करो अल्लाह तो बस यक्ता माबूद है वह उस (नुक्स) से पाक व पाकीज़ा है उसका कोई लड़का हो (उसे लड़के की हाजत ही क्या है) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब तो उसी का है और अल्लाह तो कारसाज़ी में काफ़ी है (171)

न तो मसीह ही अल्लाह का बन्दा होने से हरगिज़ इन्कार कर सकते हैं और न (अल्लाह के) मुक़र्रर फ़रिश्ते और (याद रहे) जो शख़्स उसके बन्दा होने से इन्कार करेगा और शेख़ी करेगा तो अनक़रीब ही अल्लाह उन सबको अपनी तरफ़ उठा लेगा (और हर एक को उसके काम की सज़ा देगा) (172)

पस जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया है और अच्छे (अच्छे) काम किए हैं उनका उन्हें सवाब पूरा पूरा भर देगा बल्कि अपने फ़ज़्ल (व करम) से कुछ और ज़्यादा ही देगा और लोग उसका बन्दा होने से इन्कार करते थे और शेख़ी करते थे उन्हें तो दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला करेगा (173)

और लुत्फ़ ये है कि वह लोग अल्लाह के सिवा न अपना सरपरस्त ही पाएँगे और न मददगार (174)

ऐ लोगों इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (दीने हक़ की) दलील आ चुकी और हम तुम्हारे पास एक चमकता हुआ नूर नाज़िल कर चुके हैं (175)

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसी से लगे लिपटे रहे तो अल्लाह भी उन्हें अनक़रीब ही अपनी रहमत व फ़ज़्ल के सादाब बाग़ो में पहुँचा देगा और उन्हे अपने हुज़ूरी का सीधा रास्ता दिखा देगा (176)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग फ़तवा तलब करते हैं तुम कह दो कि कलाला (भाई बहन) के बारे में अल्लाह तो ख़ुद तुम्हे फ़तवा देता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स मर जाए कि उसके न कोई लड़का बाला हो (न माँ बाप) और उसके (सिर्फ) एक बहन हो तो उसका तर्के से आधा होगा (और अगर ये बहन मर जाए) और उसके कोई औलाद न हो (न माँ बाप) तो उसका वारिस बस यही भाई होगा और अगर दो बहनें (ज़्यादा) हों तो उनको (भाई के) तर्के से दो तिहाई मिलेगा और अगर किसी के वारिस भाई बहन दोनों (मिले जुले) हों तो मर्द को औरत के हिस्से का दुगना मिलेगा तुम लोगों के भटकने के ख़्याल से अल्लाह अपने एहकाम वाज़ेए करके बयान फ़रमाता है और अल्लाह तो हर चीज़ से वाक़िफ़ है (177)

5 सूरह अल माएदह (ख़्वान)

सूरह अल माएदह (ख़्वान) मदीना में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ बीस आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ईमानदारों (अपने) इक़रारों को पूरा करो (देखो) तुम्हारे वास्ते चौपाए जानवर हलाल कर दिये गये उन के सिवा जो तुमको पढ़ कर सुनाए जाऍगे हलाल कर दिए गए मगर जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार को हलाल न समझना बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है (1)

ऐ ईमानदारों (देखो) न अल्लाह की निशानियों की बेतौक़ीरी करो और न हुरमत वाले महिने की और न क़ुरबानी की और न पट्टे वाले जानवरों की (जो नज़रे अल्लाह के लिए निशान देकर मिना में ले जाते हैं) और न ख़ानाए काबा की तवाफ़ (व ज़ियारत) का क़स्द करने वालों की जो अपने परवरदिगार की ख़ुशनूदी और फ़ज़ल (व करम) के जोयाँ हैं और जब तुम (एहराम) खोल दो तो शिकार कर सकते हो और किसी क़बीले की यह अदावत कि तुम्हें उन लोगों ने ख़ानाए काबा (में जाने) से रोका था इस जुर्म में न फॅसवा दे कि तुम उनपर ज़्यादती करने लगो और (तुम्हारा तो फ़र्ज यह है कि) नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़्यादती में बाहम किसी की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो (क्योंकि) अल्लाह तो यक़ीनन बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (2)

(लोगों) मरा हुआ जानवर और ख़ून और सुअर का गो८त और जिस (जानवर) पर (ज़िबाह) के वक्त अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया जाए और गर्दन मरोड़ा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और जो कुऍ (वग़ैरह) में गिरकर मर जाए और जो सींग से मार डाला गया हो और जिसको दरिन्दे ने फाड़ खाया हो मगर जिसे तुमने मरने के क़ब्ल ज़िबाह कर लो और (जो जानवर) बुतों (के थान) पर चढ़ा कर ज़िबाह किया जाए और जिसे तुम (पाँसे) के तीरों से बाहम हिस्सा बॉटो (ग़रज़ यह सब चीज़ें) तुम पर हराम की गयी हैं ये गुनाह की बात है (मुसलमानों) अब तो कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन से (फिर जाने से) मायूस हो गए तो तुम उनसे तो डरो ही नहीं बल्कि सिर्फ मुझी से डरो आज मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे (इस) दीने इस्लाम को पसन्द किया पस जो शख़्स भूख़ में मजबूर हो जाए और गुनाह की तरफ़ माएल भी न हो (और कोई चीज़ खा ले) तो अल्लाह बेशक बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है (3)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग पूँछते हैं कि कौन (कौन) चीज़ उनके लिए हलाल की गयी है तुम (उनसे) कह दो कि तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीजें हलाल की गयीं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के

लिए सधा रखें है और जो (तरीके़) अल्लाह ने तुम्हें बताये हैं उनमें के कुछ तुमने उन जानवरों को भी सिखाया हो तो ये शिकारी जानवर जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसको (बेताम्मुल) खाओ और (जानवर को छोंड़ते वक्त) अल्लाह का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो (क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (4)

आज तमाम पाकीज़ा चीजे़ं तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयी हैं और एहले किताब की ख़ुश्क चीजे़ं गेहूँ (वगैरह) तुम्हारे लिए हलाल हैं और तुम्हारी ख़ुश्क चीजे़ं गेहूँ (वगैरह) उनके लिए हलाल हैं और आज़ाद पाक दामन औरतें और उन लोगों में की आज़ाद पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है जब तुम उनको उनके मेहर दे दो (और) पाक दामिनी का इरादा करो न तो खुल्लम खुल्ला ज़िनाकारी का और न चोरी छिपे से आशनाई का और जिस शख़्स ने ईमान से इन्कार किया तो उसका सब किया (धरा) अकारत हो गया और (तुल्फ़ तो ये है कि) आख़ेरत में भी वही घाटे में रहेगा (5)

ऐ इमानदारों जब तुम नमाज़ के लिये आमादा हो तो अपने मुँह और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और अपने सरों का और टखनों तक पॉवों का मसाह कर लिया करो और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो तुम तहारत (ग़ुस्ल) कर लो (हॉ) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से किसी को पैख़ाना निकल आए या औरतों से हमबिस्तरी की हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक ख़ाक से तैमूम कर लो यानि (दोनों हाथ मारकर) उससे अपने मुँह और अपने हाथों का मसा कर लो (देखो तो अल्लाह ने कैसी आसानी कर दी) अल्लाह तो ये चाहता ही नहीं कि तुम पर किसी तरह की तंगी करे बल्कि वो ये चाहता है कि पाक व पाकीज़ा कर दे और तुमपर अपनी नेअमते पूरी कर दे ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ (6)

और जो एहसानात अल्लाह ने तुमपर किए हैं उनको और उस (एहद व पैमान) को याद करो जिसका तुमसे पक्का इक़रार ले चुका है जब तुमने कहा था कि हमने (एहकामे अल्लाह को) सुना और दिल से मान लिया और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अल्लाह दिलों के राज़ से भी बाख़बर है (7)

ऐ ईमानदारों अल्लाह (की ख़ुशनूदी) के लिए इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए तैयार रहो और तुम्हें किसी क़बीले की अदावत इस जुर्म में न फॅसवा दे कि तुम नाइन्साफी करने लगो (ख़बरदार बल्कि) तुम (हर हाल में) इन्साफ़ करो यही परहेज़गारी से बहुत क़रीब है और अल्लाह से डरो क्योंकि जो कुछ तुम करते हो (अच्छा या बुरा) अल्लाह उसे ज़रूर जानता है (8)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए अल्लाह ने वायदा किया है कि उनके लिए (आख़िरत में) मग़फ़ेरत और बड़ा सवाब है (9)

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नुमी हैं ((10)
ऐ इमानदारों अल्लाह ने जो एहसानात तुमपर किए हैं उनको याद करो और ख़ूसूसन जब एक क़बीले ने तुम पर दस्त दराज़ी का इरादा किया था तो अल्लाह ने उनके हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मोमिनीन को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (11)

और इसमें भी शक नहीं कि अल्लाह ने बनी इसराईल से (भी ईमान का) एहद व पैमान ले लिया था और हम (अल्लाह) ने इनमें के बारह सरदार उनपर मुक़र्रर किए और अल्लाह ने बनी इसराईल से फ़रमाया था कि मैं तो यक़ीनन तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम भी पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और हमारे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनकी मदद करते रहो और अल्लाह (की ख़ुशनूदी के वास्ते लोगों को) क़र्जे हसना देते रहो तो मैं भी तुम्हारे गुनाह तुमसे ज़रूर दूर करूंगा और तुमको बेहिश्त के उन (हरे भरे) बाग़ों में जा पहुँचाऊँगा जिनके (दरख़्तों के) नीचे नहरें जारी हैं फिर तुममें से जो शख़्स इसके बाद भी इन्कार करे तो यक़ीनन वह राहे रास्त से भटक गया (12)

पस हमने उनकी एहद शिकनी की वजह से उनपर लानत की और उनके दिलों को (गोया) हमने ख़ुद सख़्त बना दिया कि (हमारे) कलमात को उनके असली मायनों से बदल कर दूसरे मायनो में इस्तेमाल करते हैं और जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा भुला बैठे और (ऐ रसूल) अब तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा एक न एक की ख़्यानत पर बराबर मुत्तेला होते रहते हो तो तुम उन (के क़सूर) को माफ़ कर दो और (उनसे) दरगुज़र करो (क्योंकि) अल्लाह एहसान करने वालों को ज़रूर दोस्त रखता है (13)

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी हैं उनसे (भी) हमने इमान का एहद (व पैमान) लिया था मगर जब जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा (रिसालत) भुला बैठे तो हमने भी (उसकी सज़ा में) क़यामत तक उनमें बाहम अदावत व दुशमनी की बुनियाद डाल दी और अल्लाह उन्हें बहुत जल्द (क़यामत के दिन) बता देगा कि वह क्या क्या करते थे (14)

ऐ एहले किताब तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर (मोहम्मद स0) आ चुका जो किताबे अल्लाह की उन बातों में से जिन्हें तुम छुपाया करते थे बहुतेरी तो साफ़ साफ़ बयान कर देगा और बहुतेरी से (अमदन) दरगुज़र करेगा तुम्हरे पास तो अल्लाह की तरफ़ से एक (चमकता हुआ) नूर और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब (क़ुरान) आ चुकी है (15)

जो लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी के पाबन्द हैं उनको तो उसके ज़रिए से राहे निजात की हिदायत करता है और अपने हुक्म से (कुफ़्र की) तारीकी से निकालकर (ईमान की) रौशनी में लाता है और राहे रास्त पर पहुँचा देता है (16)

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे मसीह बस अल्लाह हैं वह ज़रूर काफ़िर हो गए (ऐ रसूल) उनसे पूँछो तो कि भला अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह और उनकी मॉ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहे तो कौन ऐसा है जिसका अल्लाह से भी ज़ोर चले (और रोक दे) और सारे आसमान और ज़मीन में और जो कुछ भी उनके दरम्यिान में है सब अल्लाह ही की सल्तनत है जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है (17)

और नसरानी और यहूदी तो कहते हैं कि हम ही अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं (ऐ रसूल) उनसे तुम कह दो (कि अगर ऐसा है) तो फिर तुम्हें तुम्हारे गुनाहों की सज़ा क्यों देता है (तुम्हारा ख़्याल लग़ो है) बल्कि तुम भी उसकी मख़लूक़ात से एक बशर हो अल्लाह जिसे चाहेगा बख़ देगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के दरम्यिान में है सब अल्लाह ही का मुल्क है और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (18)

ऐ एहले किताब जब पैग़म्बरों की आमद में बहुत रूकावट हुयी तो हमारा रसूल तुम्हारे पास आया जो एहकामे अल्लाह को साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम कहीं ये न कह बैठो कि हमारे पास तो न कोई ख़ुशख़बरी देने वाला (पैग़म्बर) आया न (अज़ाब से) डराने वाला अब तो (ये नहीं कह सकते क्योंकि) यक़ीनन तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला पैग़म्बर आ गया और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (19)

ऐ रसूल उनको वह वक्त याद (दिलाओ) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम जो नेअमते अल्लाह ने तुमको दी है उसको याद करो इसलिए कि उसने तुम्हीं लोगों से बहुतेरे पैग़म्बर बनाए और तुम ही लोगों को बादशाह (भी) बनाया और तुम्हें वह नेअमतें दी हैं जो सारी अल्लाहयी में किसी एक को न दीं (20)

ऐ मेरी क़ौम (शाम) की उस मुक़द्दस ज़मीन में जाओ जहॉ अल्लाह ने तुम्हारी तक़दीर में (हुकूमत) लिख दी है और दुशमन के मुक़ाबले पीठ न फेरो (क्योंकि) इसमें तो तुम ख़ुद उलटा घाटा उठाओगे (21)

वह लोग कहने लगे कि ऐ मूसा इस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त (सरकश) लोग रहते हैं और जब तक वह लोग इसमें से निकल न जाएँ हम तो उसमें कभी पॉव भी न रखेंगे हॉ अगर वह लोग ख़ुद इसमें से निकल जाएँ तो अलबत्ता हम ज़रूर जाएँगे (22)

(मगर) वह आदमी (यूशा कालिब) जो अल्लाह का ख़ौफ़ रखते थे और जिनपर अल्लाह ने ख़ास अपना फ़ज़ल (करम) किया था बेधड़क बोल उठे कि (अरे) उनपर हमला करके (बैतुल मुक़दस के फाटक में तो घुस पड़ो फिर देखो तो यह ऐसे बोदे हैं कि) इधर तुम फाटक में घुसे और (ये सब

भाग खड़े हुए और) तुम्हारी जीत हो गयी और अगर सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो (23)
वह कहने लगे एक मूसा (चाहे जो कुछ हो) जब तक वह लोग इसमें हैं हम तो उसमें हरगिज़ (लाख बरस) पॉव न रखेंगे हॉ तुम जाओ और तुम्हारा अल्लाह जाए ओर दोनों (जाकर) लड़ो हम तो यहीं जमे बैठे हैं (24)

तब मूसा ने अर्ज़ की अल्लाहवन्दा तू ख़ूब वाकि़फ़ है कि अपनी ज़ाते ख़ास और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा क़ाबू नहीं बस अब हमारे और उन नाफ़रमान लोगों के दरमियान जुदाई डाल दे (25)

हमारा उनका साथ नहीं हो सकता (अल्लाह ने फ़रमाया) (अच्छा) तो उनकी सज़ा यह है कि उनको चालीस बरस तक की हुकूमत नसीब न होगा (और उस मुद्दते दराज़ तक) यह लोग (मिस्र के) जंगल में सरगरदॉ रहेंगे तो फिर तुम इन बदचलन बन्दों पर अफ़सोस न करना (26)

(ऐ रसूल) तुम इन लोगों से आदम के दो बेटों (हाबील, क़ाबील) का सच्चा क़स्द बयान कर दो कि जब उन दोनों ने अल्लाह की दरगाह में नियाज़ें चढ़ाई तो (उनमें से) एक (हाबील) की (नज़्र तो) क़ुबूल हुयी और दूसरे (क़ाबील) की नज़्र न क़ुबूल हुयी तो (मारे हसद के) हाबील से कहने लगा मैं तो तुझे ज़रूर मार डालूंगा उसने जवाब दिया कि (भाई इसमें अपना क्या बस है) अल्लाह तो सिर्फ परहेज़गारों की नज़्र क़ुबूल करता है (27)

अगर तुम मेरे क़त्ल के इरादे से मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाओगे (तो ख़ैर बढ़ाओ) (मगर) मैं तो तुम्हारे क़त्ल के ख़्याल से अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं (क्योंकि) मैं तो उस अल्लाह से जो सारे जहॉन का पालने वाला है ज़रूर डरता हूँ (28)

मैं तो ज़रूर ये चाहता हूँ कि मेरे गुनाह और तेरे गुनाह दोनों तेरे सर हो जॉए तो तू (अच्छा ख़ासा) जहन्नुमी बन जाए और ज़ालिमों की तो यही सज़ा है (29)

फिर तो उसके नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर उसे भड़का ही दिया आख़िर उस (कम्बख़्त ने) उसको मार ही डाला तो घाटा उठाने वालों में से हो गया (30)

(तब उसे फ़िक्र हुयी कि लाश को क्या करे) तो अल्लाह ने एक कौवे को भेजा कि वह ज़मीन को कुरेदने लगा ताकि उसे (क़ाबील) को दिखा दे कि उसे अपने भाई की लाश क्योंकर छुपानी चाहिए (ये देखकर) वह कहने लगा हाए अफ़सोस क्या मैं उस से भी आजिज़ हूँ कि उस कौवे की बराबरी कर सकूँ कि (बला से यह भी होता) तो अपने भाई की लाश छुपा देता अलगरज़ वह (अपनी हरकत से) बहुत पछताया (31)

इसी सबब से तो हमने बनी इसराईल पर वाजिब कर दिया था कि जो ७शख़्स किसी को न जान के बदले में और न मुल्क में फ़साद फैलाने की सज़ा में (बल्कि नाहक़) क़त्ल कर डालेगा तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक आदमी को जिला दिया तो गोया उसने सब लोगों को जिला लिया और उन (बनी इसराईल) के पास तो हमारे पैग़म्बर (कैसे कैसे) रौशन मौजिज़े लेकर आ चुके हैं (मगर) फिर उसके बाद भी यक़ीनन उसमें से बहुतेरे ज़मीन पर ज़्यादतियॉ करते रहे (32)

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते भिड़ते हैं (और एहकाम को नहीं मानते) और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्को (मुल्को) दौड़ते फिरते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि (चुन चुनकर) या तो मार डाले जाएँ या उन्हें सूली दे दी जाए या उनके हाथ पॉव हेर फेर कर एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पॉव काट डाले जाएँ या उन्हें (अपने वतन की) सरज़मीन से शहर बदर कर दिया जाए यह रूसवाई तो उनकी दुनिया में हुयी और फिर आख़ेरत में तो उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब ही है (33)

मगर (हॉ) जिन लोगों ने इससे पहले कि तुम इनपर क़ाबू पाओ तौबा कर ली तो उनका गुनाह बख़्शा दिया जाएगा क्योंकि समझ लो कि अल्लाह बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (34)

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरते रहो और उसके (तक़र्रब {क़रीब होने} के) ज़रिये की जुस्तजू में रहो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ (35)

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया अगर उनके पास ज़मीन में जो कुछ (माल ख़ज़ाना) है (वह) सब बल्कि उतना और भी उसके साथ हो कि रोज़े क़यामत के अज़ाब का मुआवेज़ा दे दे (और ख़ुद बच जाए) तब भी (उसका ये मुआवेज़ा) क़ुबूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (36)

वह लोग तो चाहेंगे कि किसी तरह जहन्नुम की आग से निकल भागे मगर वहॉ से तो वह निकल ही नहीं सकते और उनके लिए तो दाएमी अज़ाब है (37)

और चोर ख़्वाह मर्द हो या औरत तुम उनके करतूत की सज़ा में उनका (दाहिना) हाथ काट डालो ये (उनकी सज़ा) अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह (तो) बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है (38)

हॉ जो अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले और अपने चाल चलन दुरूस्त कर लें तो बेशक अल्लाह भी तौबा क़ुबूल कर लेता है क्योंकि अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (39)

ऐ शख़्स क्या तू नहीं जानता कि सारे आसमान व ज़मीन (ग़रज़ दुनिया जहान) में ख़ास अल्लाह की हुकूमत है जिसे चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे माफ़ कर दे और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है (40)
ऐ रसूल जो लोग कुफ़्र की तरफ़ लपक के चले जाते हैं तुम उनका ग़म न खाओ उनमें बाज़ तो ऐसे हैं कि अपने मुँह से बे तकल्लुफ़ कह देते हैं कि हम ईमान लाए हालाँकि उनके दिल बेईमान हैं और बाज़ यहूदी ऐसे हैं कि (जासूसी की ग़रज़ से) झूठी बातें बहुत (शौक से) सुनते हैं ताकि कुफ़्फ़ार के दूसरे गिरोह को जो (अभी तक) तुम्हारे पास नहीं आए हैं सुनाएँ ये लोग (तौरैत के) अल्फ़ाज़ की उनके असली मायने (मालूम होने) के बाद भी तहरीफ़ करते हैं (और लोगों से) कहते हैं कि (ये तौरैत का हुक्म है) अगर मोहम्मद की तरफ़ से (भी) तुम्हें यही हुक्म दिया जाय तो उसे मान लेना और अगर यह हुक्म तुमको न दिया जाए तो उससे अलग ही रहना और (ऐ रसूल) जिसको अल्लाह ख़राब करना चाहता है तो उसके वास्ते अल्लाह से तुम्हारा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता यह लोग तो वही हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने (गुनाहों से) पाक करने का इरादा ही नहीं किया (बल्कि) उनके लिए तो दुनिया में भी रूसवाई है और आख़ेरत में भी (उनके लिए) बड़ा (भारी) अज़ाब होगा (41)

ये (कम्बख़्त) झूठी बातों को बड़े शौक़ से सुनने वाले और बड़े ही हरामख़ोर हैं तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हारे पास (कोई मामला लेकर) आए तो तुमको इख़्तेयार है ख़्वाह उनके दरम्यिान फ़ैसला कर दो या उनसे किनाराकशी करो और अगर तुम किनाराकश रहोगे तो (कुछ ख़्याल न करो) ये लोग तुम्हारा हरगिज़ कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर उनमें फ़ैसला करो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (42)

और जब ख़ुद उनके पास तौरेत है और उसमें अल्लाह का हुक्म (मौजूद) है तो फिर तुम्हारे पास फैसला कराने को क्यों आते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) इसके बाद फिर (तुम्हारे हुक्म से) फिर जाते हैं ओर सच तो यह है कि यह लोग ईमानदार ही नहीं हैं (43)

बेशक हम ने तौरेत नाज़िल की जिसमें (लोगों की) हिदायत और नूर (ईमान) है उसी के मुताबिक़ अल्लाह के फ़रमाबरदार बन्दे (अम्बियाए बनी इसराईल) यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाह वाले और उलेमाए (यहूद) भी किताबे अल्लाह से (हुक्म देते थे) जिसके वह मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वह उसके गवाह भी थे पस (ऐ मुसलमानों) तुम लोगों से (ज़रा भी) न डरो (बल्कि) मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले में (दुनिया की दौलत जो दर हक़ीक़त बहुत थोड़ी क़ीमत है) न लो और (समझ लो कि) जो ७शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं (44)

और हम ने तौरेत में यहूदियों पर यह हुक्म फर्ज़ कर दिया था कि जान के बदले जान और ऑख

के बदले ऑख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और जख़्म के बदले (वैसा ही) बराबर का बदला (जख़्म) है फिर जो (मज़लूम ज़ालिम की) ख़ता माफ़ कर दे तो ये उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और जो शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी (किताब) के मुवाफ़िक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं (45)
और हम ने उन्हीं पैग़म्बरों के क़दम ब क़दम मरियम के बेटे ईसा को चलाया और वह इस किताब तौरैत की भी तस्दीक़ करते थे जो उनके सामने (पहले से) मौजूद थी और हमने उनको इन्जील (भी) अता की जिसमें (लोगों के लिए हर तरह की) हिदायत थी और नूर (ईमान) और वह इस किताब तौरेत की जो वक़्ते नुज़ूले इन्जील (पहले से) मौजूद थी तसदीक़ करने वाली और परहेज़गारों की हिदायत व नसीहत थी (46)

और इन्जील वालों (नसारा) को जो कुछ अल्लाह ने (उसमें) नाज़िल किया है उसके मुताबिक़ हुक्म करना चाहिए और जो शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी (किताब के मुआफ़िक़) हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग बदकार हैं (47)

और (ऐ रसूल) हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब (उसके पहले से) उसके वक़्त में मौजूद है उसकी तसदीक़ करती है और उसकी निगेहबान (भी) है जो कुछ तुम पर अल्लाह ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात अल्लाह की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते (हस्बे मसलेहते वक़्त) एक एक शरीयत और ख़ास तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब के सब को एक ही (शरीयत की) उम्मत बना देता मगर (मुख़तलिफ़ शरीयतों से) अल्लाह का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इमतेहान करे बस तुम नेकी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और (यक़ीन जानो कि) तुम सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है (48)

तब (उस वक़्त) जिन बातों में तुम इख़्तेलाफ़ करते वह तुम्हें बता देगा और (ऐ रसूल) हम फिर कहते हैं कि जो एहकाम अल्लाह नाज़िल किए हैं तुम उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो और उनकी (बेजा) ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो (बल्कि) तुम उनसे बचे रहो (ऐसा न हो) कि किसी हुक्म से जो अल्लाह ने तुम पर नाज़िल किया है तुमको ये लोग भटका दें फिर अगर ये लोग तुम्हारे हुक्म से मुँह मोड़ें तो समझ लो कि (गोया) अल्लाह ही की मरज़ी है कि उनके बाज़ गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबत में फॅसा दे और इसमें तो शक ही नहीं कि बहुतेरे लोग बदचलन हैं (49)

क्या ये लोग (ज़मानाए) जाहिलीयत के हुक्म की (तुमसे भी) तमन्ना रखते हैं हालाँकि यक़ीन करने वाले लोगों के वास्ते हुक्मे अल्लाह से बेहतर कौन होगा (50)

ऐ ईमानदारों यहूदियों और नसरानियों को अपना सरपरस्त न बनाओ (क्योंकि) ये लोग (तुम्हारे मुख़ालिफ़ हैं मगर) बाहम एक दूसरे के दोस्त हैं और (याद रहे कि) तुममें से जिसने उनको अपना सरपरस्त बनाया पस फिर वह भी उन्हीं लोगों में से हो गया बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राहे रास्त पर नहीं लाता (51)
तो (ऐ रसूल) जिन लोगों के दिलों में (नेफ़ाक़ की) बीमारी है तुम उन्हें देखोगे कि उनमें दौड़ दौड़ के मिले जाते हैं और तुमसे उसकी वजह यह बयान करते हैं कि हम तो इससे डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो उनके न (मिलने से) ज़माने की गर्दिश में न मुब्तिला हो जाएँ तो अनक़रीब ही अल्लाह (मुसलमानों की) फ़तेह या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर कर देगा तब यह लोग इस बदगुमानी पर जो अपने जी में छिपाते थे शर्माएंगे ((52)

और मोमिनीन (जब उन पर नेफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाएगा तो) कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो सख़्त से सख़्त क़समें खाकर (हमसे) कहते थे कि हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं उनका सारा किया धरा अकारत हुआ और सख़्त घाटे में आ गए (53)

ऐ ईमानदारों तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो (कुछ परवाह नहीं फिर जाए) अनक़रीब ही अल्लाह ऐसे लोगों को ज़ाहिर कर देगा जिन्हें अल्लाह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे ईमानदारों के साथ नर्म और मुन्किर (और) काफ़िरों के साथ सख़्त अल्लाह की राह में जेहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की कुछ परवाह न करेंगे ये अल्लाह का फ़ज़्ल (व करम) है वह जिसे चाहता हे देता है और अल्लाह तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाक़िफ़कार है (54)

(ऐ ईमानदारों) तुम्हारे मालिक सरपरस्त तो बस यही हैं अल्लाह और उसका रसूल और वह मोमिनीन जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और हालत रूकूउ में ज़कात देते हैं (55)

और जिस शख़्स ने अल्लाह और रसूल और (उन्हीं) ईमानदारों को अपना सरपरस्त बनाया तो (अल्लाह के लशकर में आ गया और) इसमें तो शक नहीं कि अल्लाह ही का लशकर वर {ग़ालिब} रहता है (56)

ऐ ईमानदारों जिन लोगों (यहूद व नसारा) को तुम से पहले किताबे (अल्लाह तौरेत, इन्जील) दी जा चुकी है उनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हॅसी खेल बना रखा है उनको और कुफ़्फ़ार को अपना सरपरस्त न बनाओ और अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह ही से डरते रहो (57)

और (उनकी शरारत यहाँ तक पहुँची) कि जब तुम (अज़ान देकर) नमाज़ के वास्ते (लोगों को)

बुलाते हो ये लोग नमाज़ को हँसी खेल बनाते हैं ये इस वजह से कि (लोग बिल्कुल बे अक्ल हैं) और कुछ नहीं समझते (58)

(ऐ रसूल एहले किताब से कहो कि) आख़िर तुम हमसे इसके सिवा और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम अल्लाह पर और जो (किताब) हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी ईमान लाए हैं और ये तुममें के अक्सर बदकार हैं (59)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तुम्हें अल्लाह के नज़दीक सज़ा में इससे कहीं बदतर ऐब बता दूँ (अच्छा लो सुनो) जिसपर अल्लाह ने लानत की हो और उस पर ग़ज़ब ढाया हो और उनमें से किसी को (मसख़ करके) बन्दर और (किसी को) सूअर बना दिया हो और (अल्लाह को छोड़कर) शैतान की परस्तिश की हो पस ये लोग दरजे में कहीं बदतर और राहे रास्त से भटक के सबसे ज़्यादा दूर जा पहुँचे हैं (60)

और (मुसलमानों) जब ये लोग तुम्हारे पास आ जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो ईमान लाए हैं हालाँकि वह कुफ़्र ही को साथ लेकर आए और फिर निकले भी तो साथ लिए हुए और जो नेफ़ाक़ वह छुपाए हुए थे अल्लाह उसे ख़ूब जानता है (61)

(ऐ रसूल) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह और सरकशी और हरामख़ोरी की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं जो काम ये लोग करते थे वह यक़ीनन बहुत बुरा है (62)

उनको अल्लाह वाले और उलेमा झूठ बोलने और हरामख़ोरी से क्यों नहीं रोकते जो (दरगुज़र) ये लोग करते हैं यक़ीनन बहुत ही बुरी है (63)

और यहूदी कहने लगे कि अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है (बख़ील हो गया) उन्हीं के हाथ बाँध दिए जाएँ और उनके (इस) कहने पर (अल्लाह की) फिटकार बरसे (अल्लाह का हाथ बँधने क्यों लगा) बल्कि उसके दोनों हाथ कुशादा हैं जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है और जो (किताब) तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है (उनका शक व हसद) उनमें से बहुतेरों को कुफ़्र व सरकशी को और बढ़ा देगा और (गोया) हमने ख़ुद उनके आपस में रोज़े क़यामत तक अदावत और कीने की बुनियाद डाल दी जब ये लोग लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसको बुझा देता है और रूए ज़मीन में फ़साद फेलाने के लिए दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता (64)

और अगर एहले किताब ईमान लाते और (हमसे) डरते तो हम ज़रूर उनके गुनाहों से दरगुज़र करते और उनको नेअमत व आराम (बेहिशत के बाग़ों में) पहुँचा देते (65)

और अगर यह लोग तौरैत और इन्जील और (सहीफ़े) उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ़ से

नाज़िल किये गए थे (उनके एहकाम को) क़ायम रखते तो ज़रूर (उनके) ऊपर से भी (रिज़क़ बरस पड़ता) और पॉवों के नीचे से भी उबल आता और (ये ख़ूब चैन से) खाते उनमें से कुछ लोग तो एतदाल पर हैं (मगर) उनमें से बहुतेरे जो कुछ करते हैं बुरा ही करते हैं (66)

ऐ रसूल जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो (समझ लो कि) तुमने उसका कोई पैग़ाम ही नहीं पहुँचाया और (तुम डरो नहीं) अल्लाह तुमको लोगों के ७शर से महफ़ूज़ रखेगा अल्लाह हरगिज़ काफ़िरों की क़ौम को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता (67)
(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ एहले किताब जब तक तुम तौरेत और इन्जील और जो (सहीफ़े) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं उनके (एहकाम) को क़ायम न रखोगे उस वक्त तक तुम्हारा मज़बह कुछ भी नहीं और (ऐ रसूल) जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से भेजी गयी है (उसका) रश्क (हसद) उनमें से बहुतेरों की सरकशी व कुफ़्र को और बढ़ा देगा तुम काफ़िरों के गिरोह पर अफ़सोस न करना (68)

इसमें तो शक ही नहीं कि मुसलमान हो या यहूदी हकीमाना ख़्याल के पाबन्द हों ख़्वाह नसरानी (गरज़ कुछ भी हो) जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान लाएगा और अच्छे (अच्छे) काम करेगा उन पर अलबत्ता न तो कोई ख़ौफ़ होगा न वह लोग आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे (69)

हमने बनी इसराईल से एहद व पैमान ले लिया था और उनके पास बहुत रसूल भी भेजे थे (इस पर भी) जब उनके पास कोई रसूल उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुक्म लेकर आया तो इन (कम्बख़्त) लोगों ने किसी को झुठला दिया और किसी को क़त्ल ही कर डाला (70)

और समझ लिया कि (इसमें हमारे लिए) कोई ख़राबी न होगी पस (गोया) वह लोग (अम्र हक़ से) अंधे और बहरे बन गए (मगर बावजूद इसक) जब इन लोगों ने तौबा की तो फिर अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली (मगर) फिर (इस पर भी) उनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे बन गए और जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह तो देखता है (71)

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे ईसा मसीह अल्लाह हैं वह सब काफ़िर हैं हालॉकि मसीह ने ख़ुद यूँ कह दिया था कि ऐ बनी इसराईल सिर्फ उसी अल्लाह की इबादत करो जो हमारा और तुम्हारा पालने वाला है क्योंकि (याद रखो) जिसने अल्लाह का शरीक बनाया उस पर अल्लाह ने बेहिश्त को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नुम है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (72)

जो लोग इसके क़ायल हैं कि अल्लाह तीन में का (तीसरा) है वह यक़ीनन काफ़िर हो गए (याद रखो कि) अल्लाहए यक्ता के सिवा कोई माबूद नहीं और (अल्लाह के बारे में) ये लोग जो कुछ

बका करते हैं अगर उससे बाज़ न आए तो (समझ रखो कि) जो लोग उसमें से (काफ़िर के) काफ़िर रह गए उन पर ज़रूर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल होगा (73)

तो ये लोग अल्लाह की बारगाह में तौबा क्यों नहीं करते और अपने (क़सूरों की) माफ़ी क्यों नहीं मॉगते हालॉकि अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (74)

मरियम के बेटे मसीह तो बस एक रसूल हैं और उनके क़ब्ल (और भी) बहुतेरे रसूल गुज़र चुके हैं और उनकी मॉ भी (अल्लाह की) एक सच्ची बन्दी थी (और आदमियों की तरह) ये दोनों (के दोनों भी) खाना खाते थे (ऐ रसूल) ग़ौर तो करो हम अपने एहकाम इनसे कैसा साफ़ साफ़ बयान करते हैं (75)

फिर देखो तो कि (उसपर भी उलटे) ये लोग कहॉ भटके जा रहे हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम अल्लाह (जैसे क़ादिर व तवाना) को छोड़कर (ऐसी ज़लील) चीज़ की इबादत करते हो जिसको न तो नुक़सान ही इख़्तेयार है और न नफ़े का और अल्लाह तो (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है (76)

ऐ रसूल तुम कह दो कि ऐ एहले किताब तुम अपने दीन में नाहक़ ज़्यादती न करो और न उन लोगों (अपने बुज़ुर्गों) की नफ़सियानी ख़्वाहिशों पर चलो जो पहले ख़ुद ही गुमराह हो चुके और (अपने साथ और भी) बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा और राहे रास्त से (दूर) भटक गए (77)

बनी इसराईल में से जो लोग काफ़िर थे उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की ज़बानी लानत की गयी ये (लानत उन पर पड़ी तो सिर्फ़) इस वजह से कि (एक तो) उन लोगों ने नाफ़रमानी की और (फिर हर मामले में) हद से बढ़ जाते थे (78)

और किसी बुरे काम से जिसको उन लोगों ने किया बाज़ न आते थे (बल्कि उस पर बावजूद नसीहत अड़े रहते) जो काम ये लोग करते थे क्या ही बुरा था (79)

(ऐ रसूल) तुम उन (यहूदियों) में से बहुतेरों को देखोगे कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती रखते हैं जो सामान पहले से उन लोगों ने ख़ुद अपने वास्ते दुरूस्त किया है किस क़दर बुरा है (जिसका नतीजा ये है) कि (दुनिया में भी) अल्लाह उन पर गज़बनाक हुआ और (आख़ेरत में भी) हमेशा अज़ाब ही में रहेंगे (80)

और अगर ये लोग अल्लाह और रसूल पर और जो कुछ उनपर नाज़िल किया गया है इमान रखते हैं तो हरगिज़ (उनको अपना) दोस्त न बनाते मगर उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं (81)

(ऐ रसूल) ईमान लाने वालों का दुशमन सबसे बढ़के यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमानदारों का दोस्ती में सबसे बढ़के क़रीब उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं क्योंकि इन (नसारा) में से यक़ीनी बहुत से आमिल और आबिद हैं और इस सबब से (भी) कि ये लोग हरगिज़ शेख़ी नहीं करते (82)

और तू देखता है कि जब यह लोग (इस क़ुरान) को सुनते हैं जो हमारे रसूल पर नाज़िल किया गया है तो उनकी आँखों से बेसाख़्ता (छलक कर) आँसू जारी हो जातें है क्योंकि उन्होंने (अम्र) हक़ को पहचान लिया है (और) अर्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे पालने वाले हम तो ईमान ला चुके तो (रसूल की) तसदीक़ करने वालों के साथ हमें भी लिख रख (83)

और हमको क्या हो गया है कि हम अल्लाह और जो हक़ बात हमारे पास आ चुकी है उस पर तो ईमान न लाएँ और (फिर) अल्लाह से उम्मीद रखें कि वह अपने नेक बन्दों के साथ हमें (बेहिश्त में) पहुँचा ही देगा (84)

तो अल्लाह ने उन्हें उनके (सदक़ दिल से) अर्ज़ करने के सिले में उन्हें वह (हरे भरे) बाग़ात अता फरमाए जिनके (दरख़्तों के) नीचे नहरें जारी हैं (और) वह उसमें हमेशा रहेंगे और (सदक़ दिल से) नेकी करने वालों का यही ऐवज़ है (85)

और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया यही लोग जहन्नुमी हैं (86)

ऐ ईमानदार जो पाक चीज़े अल्लाह ने तुम्हारे वास्ते हलाल कर दी हैं उनको अपने ऊपर हराम न करो और हद से न बढ़ो क्यों कि अल्लाह हद से बढ़ जाने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (87)

और जो हलाल साफ सुथरी चीज़ें अल्लाह ने तुम्हें दी हैं उनको (शौक से) खाओ और जिस अल्लाह पर तुम ईमान लाए हो उससे डरते रहो (88)

अल्लाह तुम्हारे बेकार (बेकार) क़समों (के खाने) पर तो ख़ैर गिरफ्तार न करेगा मगर बाक़सद {सच्ची} पक्की क़सम खाने और उसके ख़िलाफ करने पर तो ज़रुर तुम्हारी ले दे करेगा (लो सुनो) उसका जुर्माना जैसा तुम ख़ुद अपने एहलोअयाल को खिलाते हो उसी क़िस्म का औसत दर्जे का दस मोहताजों को खाना खिलाना या उनको कपड़े पहनाना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना है फिर जिससे यह सब न हो सके तो मैं तीन दिन के रोज़े (रखना) ये (तो) तुम्हारी क़समों का जुर्माना है जब तुम क़सम खाओ (और पूरी न करो) और अपनी क़समों (के पूरा न करने) का ख़्याल रखो अल्लाह अपने एहकाम को तुम्हारे वास्ते यूँ साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो (89)

ऐ ईमानदारों शराब, जुआ और बुत और पाँसे तो बस नापाक (बुरे) शैतानी काम हैं तो तुम लोग इससे बचे रहो ताकि तुम फलाह पाओ (90)

शैतान की तो बस यही तमन्ना है कि शराब और जुए की बदौलत तुममें बाहम अदावत व दुशमनी डलवा दे और अल्लाह की याद और नमाज़ से बाज़ रखे तो क्या तुम उससे बाज़ आने वाले हो (91)
और अल्लाह का हुक्म मानों और रसूल का हुक्म मानों और (नाफ़रमानी) से बचे रहो इस पर भी अगर तुमने (हुक्म अल्लाह से) मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज़ है (92)
(फिर करो चाहे न करो तुम मुख़तार हो) जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए हैं उन पर जो कुछ खा (पी) चुके उसमें कुछ गुनाह नहीं जब उन्होंने परहेज़गारी की और ईमान ले आए और अच्छे (अच्छे) काम किए फिर परहेज़गारी की और नेकियाँ कीं और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (93)

ऐ ईमानदारों कुछ शिकार से जिन तक तुम्हारे हाथ और नैज़ें पहुँच सकते हैं अल्लाह ज़रुर इम्तेहान करेगा ताकि अल्लाह देख ले कि उससे बे देखे भाले कौन डरता है फिर उसके बाद भी जो ज़्यादती करेगा तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है (94)

(ऐ ईमानदारों जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार न मारो और तुममें से जो कोई जान बूझ कर शिकार मारेगा तो जिस (जानवर) को मारा है चौपायों में से उसका मसल तुममें से जो दो मुन्सिफ आदमी तजवीज़ कर दें उसका बदला (देना) होगा (और) काबा तक पहुँचा कर कुर्बानी की जाए या (उसका) जुर्माना (उसकी क़ीमत से) मोहताजों को खाना खिलाना या उसके बराबर रोज़े रखना (यह जुर्माना इसलिए है) ताकि अपने किए की सज़ा का मज़ा चखो जो हो चुका उससे तो अल्लाह ने दरगुज़र की और जो फिर ऐसी हरकत करेगा तो अल्लाह उसकी सज़ा देगा और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है (95)

तुम्हारे और काफ़िले के वास्ते दरियाई शिकार और उसका खाना तो (हर हालत में) तुम्हारे वास्ते जायज़ कर दिया है मगर खुश्की का शिकार जब तक तुम हालते एहराम में रहो तुम पर हराम है और उस अल्लाह से डरते रहो जिसकी तरफ (मरने के बाद) उठाए जाओगे (96)

अल्लाह ने काबा को जो (उसका) मोहतरम घर है और हुरमत दार महीनों को और कुरबानी को और उस जानवर को जिसके गले में (कुर्बानी के वास्ते) पट्टे डाल दिए गए हों लोगों के अमन क़ायम रखने का सबब क़रार दिया यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जो कुछ आसमानों में

है और जो कुछ ज़मीन में है यक़ीनन (सब) जानता है और ये भी (समझ लो) कि बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ है (97)

जान लो कि यक़ीनन अल्लाह बड़ा अज़ाब वाला है और ये (भी) कि बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (98)

(हमारे) रसूल पर पैग़ाम पहुँचा देने के सिवा (और) कुछ (फर्ज़) नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर बा ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपा कर करते हो अल्लाह सब जानता है (99)

(ऐ रसूल) कह दो कि नापाक (हराम) और पाक (हलाल) बराबर नहीं हो सकता अगरचे नापाक की कसरत तुम्हें भला क्यों न मालूम हो तो ऐसे अक्लमन्दों अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब रहो (100)

ऐ ईमान वालों ऐसी चीज़ों के बारे में (रसूल से) न पूछा करो कि अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम्हें बुरी मालूम हो और अगर उनके बारे में क़ुरान नाज़िल होने के वक्त पूछ बैठोगे तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएगी (मगर तुमको बुरा लगेगा जो सवालात तुम कर चुके) अल्लाह ने उनसे दरगुज़र की और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है (101)

तुमसे पहले भी लोगों ने इस किस्म की बातें (अपने वक्त के पैग़म्बरों से) पूछी थीं (102)

फिर (जब बरदाश्त न हो सका तो) उसके मुन्किर हो गए अल्लाह ने न तो कोई बहीरा (कान फटी ऊँटनी) मुक़र्रर किया है न सायवा (साँढ़) न वसीला (जुडवा बच्चे) न हाम (बुढ़ा साँढ़) मुक़र्रर किया है मगर कुफ़्फ़ार अल्लाह पर ख़्वाह मा ख़्वाह झूठ (मूठ) बोहतान बाँधते हैं और उनमें के अक्सर नहीं समझते (103)

और जब उनसे कहा जाता है कि जो (क़ुरान) अल्लाह ने नाज़िल फरमाया है उसकी तरफ और रसूल की आओ (और जो कुछ कहे उसे मानों तो कहते हैं कि हमने जिस (रंग) में अपने बाप दादा को पाया वही हमारे लिए काफी है क्या (ये लोग लकीर के फकीर ही रहेंगे) अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जानते ही हों न हिदायत ही पायी हो (104)

ऐ ईमान वालों तुम अपनी ख़बर लो जब तुम राहे रास्त पर हो तो कोई गुमराह हुआ करे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता तुम सबके सबको अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है तब (उस वक्त नेक व बद) जो कुछ (दुनिया में) करते थे तुम्हें बता देगा (105)

ऐ ईमान वालों जब तुममें से किसी (के सर) पर मौत खड़ी हो तो वसीयत के वक्त तुम (मोमिन)

में से दो आदिलों की गवाही होनी ज़रुरी है और जब तुम इत्तेफाक़न कहीं का सफर करो और (सफर ही में) तुमको मौत की मुसीबत का सामना हो तो (भी) दो गवाह ग़ैर (मोमिन) सही (और) अगर तुम्हें शक हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो फिर वह दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम इस (गवाही) के (ऐवज़ कुछ दाम नहीं लेंगे अगरचे हम जिसकी गवाही देते हैं हमारा अज़ीज़ ही क्यों न) हो और हम अल्लाह लगती गवाही न छुपाएँगे अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनाहगार हैं (106)

अगर इस पर मालूम हो जाए कि वह दोनों (दरोग़ हलफ़ी {झूठी कसम} से) गुनाह के मुस्तहक़ हो गए तो दूसरे दो आदमी उन लोगों में से जिनका हक़ दबाया गया है और (मय्यत) के ज़्यादा क़राबतदार हैं (उनकी तरवीद में) उनकी जगह खड़े हो जाएँ फिर दो नए गवाह अल्लाह की क़सम खाएँ कि पहले दो गवाहों की निस्बत हमारी गवाही ज़्यादा सच्ची है और हमने (हक़) नहीं छुपाया और अगर ऐसा किया हो तो उस वक़्त बेशक हम ज़ालिम हैं (107)

ये ज़्यादा क़रीन क़यास है कि इस तरह पर (आख़ेरत के डर से) ठीक ठीक गवाही दें या (दुनिया की रूसवाई का) अन्देशा हो कि कहीं हमारी क़समें दूसरे फरीक़ की क़समों के बाद रद न कर दी जाएँ मुसलमानों अल्लाह से डरो और (जी लगा कर) सुन लो और अल्लाह बदचलन लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता (108)

(उस वक़्त को याद करो) जिस दिन अल्लाह अपने पैग़म्बरों को जमा करके पूछेगा कि (तुम्हारी उममत की तरफ से तबलीग़े एहकाम का) क्या जवाब दिया गया तो अर्ज़ करेगें कि हम तो (चन्द ज़ाहिरी बातों के सिवा) कुछ नहीं जानते तू तो खुद बड़ा ग़ैब वॉ है (109)

(वह वक़्त याद करो) जब अल्लाह फरमाएगा कि ये मरियम के बेटे ईसा हमने जो एहसानात तुम पर और तुम्हारी माँ पर किये उन्हे याद करो जब हमने रूहुलक़ुदूस (जिबरील) से तुम्हारी ताईद की कि तुम झूले में (पड़े पड़े) और अधेड़ होकर (यक सा बातें) करने लगे और जब हमने तुम्हें लिखना और अक़ल व दानाई की बातें और (तौरेत व इन्जील (ये सब चीज़े) सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया की मूरत बनाते फिर उस पर कुछ दम कर देते तो वह मेरे हुक्म से (सचमुच) चिड़िया बन जाती थी और मेरे हुक्म से मादरज़ाद {पैदायशी} अँधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दो को ज़िन्दा (करके क़ब्रों से) निकाल खड़ा करते थे और जिस वक़्त तुम बनी इसराईल के पास मौजिज़े लेकर आए और उस वक़्त मैने उनको तुम (पर दस्त दराज़ी करने) से रोका तो उनमें से बाज़ कुफ़्फ़ार कहने लगे ये तो बस खुला हुआ जादू है (110)

और जब मैने हवारियों से इलहाम किया कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो अर्ज़ करने लगे हम ईमान लाए और तू गवाह रहना कि हम तेरे फरमाबरदार बन्दे हैं (111)

(वह वक्त याद करो) जब हवारियों ने ईसा से अर्ज़ की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या आप का अल्लाह उस पर क़ादिर है कि हम पर आसमान से (नेअमत की) एक ख़्वान नाज़िल फरमाए ईसा ने कहा अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह से डरो (ऐसी फरमाइश जिसमें इम्तेहान मालूम हो न करो) (112)

वह अर्ज़ करने लगे हम तो फक़त ये चाहते है कि इसमें से (बरतकन) कुछ खाएँ और हमारे दिल को (आपकी रिसालत का पूरा पूरा) इत्मेनान हो जाए और यक़ीन कर लें कि आपने हमसे (जो कुछ कहा था) सच फरमाया था और हम लोग इस पर गवाह रहें (113)

(तब) मरियम के बेटे ईसा ने (बारगाहे अल्लाह में) अर्ज़ की अल्लाह वन्दा ऐ हमारे पालने वाले हम पर आसमान से एक ख्वान (नेअमत) नाज़िल फरमा कि वह दिन हम लोगों के लिए हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए ईद का करार पाए (और हमारे हक़ में) तेरी तरफ से एक बड़ी निशानी हो और तू हमें रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालो से बेहतर है (114)

ख़ुदा ने फरमाया मै ख्वान तो तुम पर ज़ुरुर नाज़िल करुगाँ (मगर याद रहे कि) फिर तुममें से जो भी शख़्स उसके बाद काफ़िर हुआ तो मै उसको यक़ीन ऐसे सख़्त अज़ाब की सज़ा दूँगा कि सारी अल्लाहयी में किसी एक पर भी वैसा (सख़्त) अज़ाब न करुगाँ (115)

और (वह वक्त भी याद करो) जब क़यामत में ईसा से अल्लाह फरमाएग कि (क्यों) ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से ये कह दिया था कि अल्लाह को छोड़कर मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह बना लो ईसा अर्ज़ करेगें सुबहान अल्लाह मेरी तो ये मजाल न थी कि मै ऐसी बात मुँह से निकालूँ जिसका मुझे कोई हक़ न हो (अच्छा) अगर मैने कहा होगा तो तुझको ज़ुरुर मालूम ही होगा क्योंकि तू मेरे दिल की (सब बात) जानता है हाँ अलबत्ता मै तेरे जी की बात नहीं जानता
(क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि तू ही ग़ैब की बातें ख़ूब जानता है (116)

तूने मुझे जो कुछ हुक्म दिया उसके सिवा तो मैने उनसे कुछ भी नहीं कहा यही कि अल्लाह ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सबका पालने वाला है और जब तक मैं उनमें रहा उन की देखभाल करता रहा फिर जब तूने मुझे (दुनिया से) उठा लिया तो तू ही उनका निगेहबान था और तू तो ख़ुद हर चीज़ का गवाह (मौजूद) है (117)

तू अगर उन पर अज़ाब करेगा तो (तू मालिक है) ये तेरे बन्दे हैं और अगर उन्हें बख़्श देगा तो (कोई तेरा हाथ नहीं पकड़ सकता क्योंकि) बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है (118)

अल्लाह फरमाएगा कि ये वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई (आज) काम आएगी उनके लिए (हरे भरे बेहिश्त के) वह बाग़ात है जिनके (दरख़्तो के) नीचे नहरे जारी हैं (और) वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से खुश यही बहुत बड़ी कामयाबी है (119)

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब अल्लाह ही की सल्तनत है और वह हर चीज़ पर क़ादिर (व तवाना) है (120)

6 सूरह अनआम

सूरह अनआम मक्के में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ छियासठ (165) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सब तारीफ अल्लाह ही को (सज़ावार) है जिसने वहुतेरे आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मुख़्तलिफ क़िस्मों की तारीकी रोशनी बनाई फिर (बावजूद उसके) कुफ्फार (औरों को) अपने परवरदिगार के बराबर करते हैं (1)

वह तो वही अल्लाह है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर (फिर तुम्हारे मरने का) एक वक्त मुक़र्रर कर दिया और (अगरचे तुमको मालूम नहीं मगर) उसके नज़दीक (क़यामत) का वक्त मुक़र्रर है (2)

फिर (यही) तुम शक करते हो और वही तो आसमानों में (भी) और ज़मीन में (भी) अल्लाह है वही तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन से (भी) ख़बरदार है और वही जो कुछ भी तुम करते हो जानता है (3)

और उन (लोगों का) अजब हाल है कि उनके पास अल्लाह की आयत में से जब कोई आयत आती तो बस ये लोग ज़रुर उससे मुँह फेर लेते थे (4)

चुनान्चे जब उनके पास (क़ुरान बरहक़) आया तो उसको भी झुठलाया तो ये लोग जिसके साथ मसख़रापन कर रहे है उनकी हक़ीक़त उन्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगी (5)

क्या उन्हें सूझता नहीं कि हमने उनसे पहले कितने गिरोह (के गिरोह) हलाक कर डाले जिनको हमने रुए ज़मीन मे वह (क़ूवत) क़ुदरत अता की थी जो अभी तक तुमको नहीं दी और हमने आसमान तो उन पर मूसलाधार पानी बरसता छोड़ दिया था और उनके (मकानात के) नीचे बहती हुयी नहरें बना दी थी (मगर) फिर भी उनके गुनाहों की वजह से उनको मार डाला और उनके बाद एक दूसरे गिरोह को पैदा कर दिया (6)

और (ऐ रसूल) अगर हम कागज़ पर (लिखी लिखाई) किताब (भी) तुम पर नाज़िल करते और ये लोग उसे अपने हाथों से छू भी लेते फिर भी कुफ्फार (न मानते और) कहते कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (7)

और (ये भी) कहते कि उस (नबी) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं नाज़िल किया गया (जो साथ साथ रहता) हालॉकि अगर हम फरिश्ता भेज देते तो (उनका) काम ही तमाम हो जाता (और) फिर उन्हें मोहलत भी न दी जाती (8)

और अगर हम फरिश्ते को नबी बनाते तो (आख़िर) उसको भी मर्द सूरत बनाते और जो शुबहे ये लोग कर रहे हैं वही शुबहे (गोया) हम ख़ुद उन पर (उस वक्त भी) उठा देते (9)

(ऐ रसूल तुम दिल तंग न हो) तुम से पहले (भी) पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया गया है पस जो लोग मसख़रापन करते थे उनको उस अज़ाब ने जिसके ये लोग हॅसी उड़ाते थे घेर लिया (10)

(ऐ रसूल उनसे) कहो कि ज़रुर रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (अम्बिया के) झुठलाने वालो का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ (11)

(ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि (भला) जो कुछ आसमान और ज़मीन में है किसका है (वह जवाब देगें) तुम ख़ुद कह दो कि ख़ास अल्लाह का है उसने अपनी ज़ात पर मेहरबानी लाज़िम कर ली है वह तुम सब के सब को क़यामत के दिन जिसके आने मे कुछ शक नहीं ज़रुर जमा करेगा (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो (क़यामत पर) ईमान न लाएँगें (12)

हालॉकि (ये नहीं समझते कि) जो कुछ रात को और दिन को (रुए ज़मीन पर) रहता (सहता) है (सब) ख़ास उसी का है और वही (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है (13)

ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या अल्लाह को जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है छोड़ कर दूसरे को (अपना) सरपरस्त बनाओ और वही (सब को) रोज़ी देता है और उसको कोई रोज़ी नहीं देता (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला मैं हूँ और (ये भी कि ख़बरदार) मुशरेकीन से न होना (14)

(ऐ रसूल) तुम कहो कि अगर मैं नाफरमानी करुँ तो बेशक एक बड़े (सख़्त) दिल के अज़ाब से डरता हूँ (15)

उस दिन जिस (के सर) से अज़ाब टल गया तो (समझो कि) अल्लाह ने उस पर (बड़ा) रहम किया और यही तो सरीही कामयाबी है (16)

और अगर अल्लाह तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ पहुचाए तो उसके सिवा कोई उसका दफा

करने वाला नहीं है और अगर तुम्हें कुछ फायदा) पहुॅचाए तो भी (कोई रोक नहीं सकता क्योंकि) वह हर चीज़ पर क़ादिर है (17)
वही अपने तमाम बन्दों पर ग़ालिब है और वह वाक़िफ़कार हकीम है (18)

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि गवाही में सबसे बढ़के कौन चीज़ है तुम खुद ही कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरम्यिान अल्लाह गवाह है और मेरे पास ये क़ुरान वही के तौर पर इसलिए नाज़िल किया गया ताकि मैं तुम्हें और जिसे (उसकी) ख़बर पहुँचे उसके ज़रिए से डराओ क्या तुम यक़ीनन यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ और दूसरे माबूद भी हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै तो उसकी गवाही नहीं देता (तुम दिया करो) तुम (उन लोगों से) कहो कि वह तो बस एक ही अल्लाह है और जिन चीज़ों को तुम (अल्लाह का) शरीक बनाते हो (19)

मै तो उनसे बेज़र हूँ जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है (यहूद व नसारा) वह तो जिस तरह अपने बाल बच्चों को पहचानते है उसी तरह उस नबी (मोहम्मद) को भी पहचानते हैं (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो (किसी तरह) इमान न लाएँगें (20)

और जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बॉधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़के ज़ालिम कौन होगा और ज़ालिमों को हरगिज़ नजात न होगी (21)

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर जिन लोगों ने शिर्क किया उनसे पूछेगें कि जिनको तुम (अल्लाह का) शरीक ख़्याल करते थे कहाँ हैं (22)

फिर उनकी कोई शरारत (बाक़ी) न रहेगी बल्कि वह तो ये कहेगें क़सम है उस अल्लाह की जो हमारा पालने वाला है हम किसी को उसका शरीक नहीं बनाते थे (23)

(ऐ रसूल भला) देखो तो ये लोग अपने ही ऊपर आप किस तरह झूठ बोलने लगे और ये लोग (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़ी (झूठी बातें) करते थे (24)

वह सब ग़ायब हो गयी और बाज़ उनमें के ऐसे भी हैं जो तुम्हारी (बातों की) तरफ कान लगाए रहते हैं और (उनकी हठ धर्मी इस हद को पहुँची है कि गोया हमने ख़ुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं और उनके कानों में बहरापन पैदा कर दिया है कि उसे समझ न सकें और अगर वह सारी (ख़ुदाई के) मौजिज़े भी देखे लें तब भी ईमान न लाएँगें यहाँ तक (हठ धर्मी पहुची) कि जब तुम्हारे पास तुम से उलझे हुए आ निकलते हैं तो कुफ़्फ़ार (क़ुरान लेकर) कहा बैठे है (कि भला इसमें रखा ही क्या है) ये तो अगलों की कहानियों के सिवा कुछ भी नहीं (25)

और ये लोग (दूसरों को भी) उस के (सुनने से) से रोकते हैं और ख़ुद तो अलग थलग रहते ही हैं और (इन बातों से) बस आप ही अपने को हलाक करते हैं और (अफसोस) समझते नहीं (26)

(ऐ रसूल) अगर तुम उन लोगों को उस वक्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब जहन्नुम (के किनारे) पर लाकर खड़े किए जाओगे तो (उसे देखकर) कहेगें ऐ काश हम (दुनिया में) फिर (दुबारा) लौटा भी दिए जाते और अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनीन से होते (मगर उनकी आरज़ू पूरी न होगी) (27)

बल्कि जो (बेइमानी) पहले से छिपाते थे आज (उसकी हक़ीक़त) उन पर खुल गयी और (हम जानते हैं कि) अगर ये लोग (दुनिया में) लौटा भी दिए जाएँ तो भी जिस चीज़ की मनाही की गयी है उसे करें और ज़रुर करें और इसमें शक नहीं कि ये लोग ज़रुर झूठे हैं (28)

और कुफ्फार ये भी तो कहते हैं कि हमारी इस दुनिया ज़िन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं और (क़यामत वग़ैरह सब ढकोसला है) हम (मरने के बाद) भी उठाए ही न जायेंगे (29)

और (ऐ रसूल) अगर तुम उनको उस वक्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब वे लोग अल्लाह के सामने खड़े किए जाएँगें और अल्लाह उनसे पूछेगा कि क्या ये (क़यामत का दिन) अब भी सही नहीं है वह (जवाब में) कहेगें कि (दुनिया में) इससे इन्कार करते थे (30)

उसकी सज़ा में अज़ाब (के मज़े) चखो बेशक जिन लोगों ने क़यामत के दिन ख़ुदा की हुज़ूरी को झुठलाया वह बड़े घाटे में हैं यहाँ तक कि जब उनके सर पर क़यामत नागहा (एक दम आ) पहुँचेगी तो कहने लगेगें ऐ है अफसोस हम ने तो इसमें बड़ी कोताही की (ये कहते जाएगे) और अपने गुनाहों का पुश्तारा अपनी अपनी पीठ पर लादते जाएँगे देखो तो (ये) क्या बुरा बोझ है जिसको ये लादे (लादे फिर रहे) हैं (31)

और (ये) दुनियावी ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं और ये तो ज़ाहिर है कि आख़िरत का घर (बेहिश्त) परहेज़गारो के लिए उसके बदर वहाॅ (कई गुना) बेहतर है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते (32)

हम खूब जानते हैं कि उन लोगों की बकबक तुम को सदमा पहुँचाती है तो (तुम को समझना चाहिए कि) ये लोग तुम को नहीं झुठलाते बल्कि (ये) ज़ालिम (हक़ीक़तन) अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं (33)

और (कुछ तुम ही पर नहीं) तुमसे पहले भी बहुतेरे रसूल झुठलाए जा चुके हैं तो उन्होनें अपने

झुठलाए जाने और अज़ीयत (व तकलीफ) पर सब्र किया यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आयी और (क्यों न आती) अल्लाह की बातों का कोई बदलने वाला नहीं है और पैग़म्बर के हालात तो तुम्हारे पास पहुँच ही चुके हैं (34)

अगरचे उन लोगों की रदगिरदानी (मुँह फेरना) तुम पर शाक ज़रुर है (लेकिन) अगर तुम्हारा बस चले तो ज़मीन के अन्दर कोई सुरगं ढूँढ निकालो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उन्हें कोई मौजिज़ा ला दिखाओ (तो ये भी कर देखो) अगर अल्लाह चाहता तो उन सब को राहे रास्त पर इकट्ठा कर देता (मगर वह तो इम्तिहान करता है) बस (देखो) तुम हरगिज़ ज़ाहिलों में (शामिल) न होना (35)

(तुम्हारा कहना तो) सिर्फ वही लोग मानते हैं जो (दिल से) सुनते हैं और मुर्दो को तो अल्लाह क़यामत ही में उठाएगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाएँगें (36)

और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि (आख़िर) उस नबी पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई मौजिज़ा क्यों नहीं नाज़िल होता तो तुम (उनसे) कह दो कि अल्लाह मौजिज़े के नाज़िल करने पर ज़रुर क़ादिर है मगर उनमें के अक्सर लोग (अल्लाह की मसलहतों को) नहीं जानते (37)

ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या अपने दोनों परों से उड़ने वाला परिन्दा है उनकी भी तुम्हारी तरह जमाअतें हैं और सब के सब लौह महफूज़ में मौजूद (हैं) हमने किताब (क़ुरान) में कोई बात नहीं छोड़ी है फिर सब के सब (चरिन्द हों या परिन्द) अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लाए जायेंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया गोया वह (कुफ्र के घटाटोप) अँधेरों में गूँगें बहरे (पड़े हैं) ख़ुदा जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसे चाहे उसे सीधे ढर्रे पर लगा दे (39)

(ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि क्या तुम यह समझते हो कि अगर तुम्हारे सामने अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे सामने क़यामत ही आ खड़ी मौजूद हो तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (बताओ कि मदद के वास्ते) क्या ख़ुदा को छोड़कर दूसरे को पुकारोगे (40)

(दूसरों को तो क्या) बल्कि उसी को पुकारोगे फिर अगर वह चाहेगा तो जिस के वास्ते तुमने उसको पुकारा है उसे दफा कर देगा और (उस वक़्त) तुम दूसरे माबूदों को जिन्हे तुम (अल्लाह का) शरीक समझते थे भूल जाओगे (41)

और (ऐ रसूल) जो उम्मतें तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं हम उनके पास भी बहुतेरे रसूल भेज चुके हैं फिर (जब नाफ़रमानी की) तो हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में गिरफ़्तार किया ताकि वह लोग (हमारी बारगाह में) गिड़गिड़ाए (42)

तो जब उन (के सर) पर हमारा अज़ाब आ खड़ा हुआ तो वह लोग क्यों नहीं गिड़गिड़ाए (कि हम अज़ाब दफा कर देते) मगर उनके दिल तो सख़्त हो गए थे ओर उनकी कारस्तानियों को शैतान ने आरास्ता कर दिखाया था (फिर क्योंकर गिड़गिड़ाते) (43)
फिर जिसकी उन्हें नसीहत की गयी थी जब उसको भूल गए तो हमने उन पर (ढील देने के लिए) हर तरह की (दुनियावी) नेअमतों के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जो नेअमतें उनको दी गयी थी जब उनको पाकर ख़ुश हुए तो हमने उन्हें नागाहाँ (एक दम) ले डाला तो उस वक्त वह नाउम्मीद होकर रह गए (44)

फिर ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सारे जहाँन के मालिक अल्लाह का शुक्र है (45)

(कि क़िस्सा पाक हुआ) (ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखे लें ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह के सिवा और कौन मौजूद है जो (फिर) तुम्हें ये नेअमतें (वापस) दे (ऐ रसूल) देखो तो हम किस किस तरह अपनी दलीले बयान करते हैं इस पर भी वह लोग मुँह मोड़े जाते हैं (46)

(ऐ रसूल) उनसे पूछो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर तुम्हारे सर पर अल्लाह का अज़ाब बेख़बरी में या जानकारी में आ जाए तो क्या गुनाहगारों के सिवा और लोग भी हलाक़ किए जाएँगें (हरगिज़ नहीं) (47)

और हम तो रसूलों को सिर्फ इस ग़रज़ से भेजते हैं कि (नेको को जन्नत की) खुशख़बरी दें और (बदो को अज़ाब `जहन्नुम से) डराएँ फिर जिसने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो ऐसे लोगों पर (क़यामत में) न कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मग़ीन होगें (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो चूँकि बदकारी करते थे (हमारा) अज़ाब उनको पलट जाएगा (49)

(ऐ रसूल) उनसे कह दो कि मै तो ये नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं (कि इमान लाने पर दे दूँगा) और न मै ग़ैब के (कुल हालात) जानता हूँ और न मै तुमसे ये कहता हूँ कि मै फरिश्ता हूँ मै तो बस जो (अल्लाह की तरफ से) मेरे पास वही की जाती है उसी का पाबन्द हूँ (उनसे पूछो तो) कि अन्धा और आँख वाला बराबर हो सकता है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं सोचते (50)

और इस क़ुरान के ज़रिए से तुम उन लोगों को डराओ जो इस बात का ख़ौफ रखते हैं कि वह (मरने के बाद) अपने ख़ुदा के सामने जमा किये जायेंगे (और यह समझते है कि) उनका अल्लाह के

सिवा न कोई सरपरस्त हे और न कोई सिफारिश करने वाला ताकि ये लोग परहेज़गार बन जाएँ (51)

और (ऐ रसूल) जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से उसकी ख़ुशनूदी की तमन्ना में दुआएं माँगा करते हैं- उनको अपने पास से न धुत्कारो-न उनके (हिसाब किताब की) जवाब देही कुछ उनके ज़िम्मे है ताकि तुम उन्हें (इस ख़्याल से) धुत्कार बताओ तो तुम ज़ालिम (के शुमार) में हो जाओगे (52)

और इसी तरह हमने बाज़ आदमियों को बाज़ से आज़माया ताकि वह लोग कहें कि हाएँ क्या ये लोग हममें से हैं जिन पर ख़ुदा ने अपना फ़ज़ल व करम किया है (यह तो समझते की) क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को भी नही जानता (53)

और जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तुम्हारे पास आँए तो तुम सलामुन अलैकुम (तुम पर ख़ुदा की सलामती हो) कहो तुम्हारे परवरदिगार ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम कर ली है बेशक तुम में से जो शख़्स नादानी से कोई गुनाह कर बैठे उसके बाद फिर तौबा करे और अपनी हालत की (असलाह करे अल्लाह उसका गुनाह बख़्श देगा क्योंकि) वह यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (54)

और हम (अपनी) आयतों को यूँ तफ़सील से बयान करते हैं ताकि गुनाहगारों की राह (सब पर) खुल जाए और वह इस पर न चले (55)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझसे उसकी मनाही की गई है कि मैं अल्लाह को छोड़कर उन माबूदों की इबादत करुं जिन को तुम पूजा करते हो (ये भी) कह दो कि मै तो तुम्हारी (नाफसानी) ख़्वाहिश पर चलने का नहीं (वरना) फिर तो मै गुमराह हो जाऊँगा और हिदायत याफ़ता लोगों में न रहूँगा (56)

तुम कह दो कि मै तो अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया (तो) तुम जिस की जल्दी करते हो (अज़ाब) वह कुछ मेरे पास (एख़्तियार में) तो है नहीं हुकूमत तो बस ज़रुर ख़ुदा ही के लिए है वह तो (हक़) बयान करता है और वह तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है (57)

(उन लोगों से) कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम जल्दी करते हो अगर वह मेरे पास (एख़्तियार में) होता तो मेरे और तुम्हारे दरम्यिान का फैसला कब का चुक गया होता और अल्लाह तो ज़ालिमों से खूब वाक़िफ है (58)

और उसके पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिनको उसके सिवा कोई नही जानता और जो कुछ ख़ुशकी और तरी में है उसको (भी) वही जानता है और कोई पत्ता भी नहीं खटकता मगर वह उसे ज़रुर जानता है और ज़मीन की तारिक़ियों में कोई दाना और न कोई ख़ुश्क चीज़ है मगर वह नूरानी किताब (लौहे महफूज़) में मौजूद है (59)
वह वही (अल्लाह) है जो तुम्हें रात को (नींद में एक तरह पर दुनिया से) उठा लेता हे और जो कुछ तूने दिन को किया है जानता है फिर तुम्हें दिन को उठा कर खड़ा करता है ताकि (ज़िन्दगी की) (वह) मियाद जो (उसके इल्म में) मुअय्युन है पूरी की जाए फिर (तो आख़िर) तुम सबको उसी की तरफ लौटना है फिर जो कुछ तुम (दुनिया में भला बुरा) करते हो तुम्हें बता देगा (60)

वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है वह तुम लोगों पर निगेहबान (फ़रिश्ततें तैनात करके) भेजता है-यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आए तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उसको (दुनिया से) उठा लेते हैं और वह (हमारे तामीले हुक्म में ज़रा भी) कोताही नहीं करते (61)

फिर ये लोग अपने सच्चे मालिक ख़ुदा के पास वापस बुलाए गए-आगाह रहो कि हुकूमत ख़ास उसी के लिए है और वह सबसे ज़्यादा हिसाब लेने वाला है (62)

(ऐ रसूल) उनसे पूछो कि तुम ख़ुश्की और तरी के (घटाटोप) अँधेरों से कौन छुटकारा देता है जिससे तुम गिड़ गिड़ाकर और (चुपके) दुआएँ माँगते हो कि अगर वह हमें (अब की दफ़ा) उस (बला) से छुटकारा दे तो हम ज़रुर उसके शुक्र गुज़ार (बन्दे होकर) रहेगें (63)

तुम कहो उन (मुसीबतों) से और हर बला में ख़ुदा तुम्हें नजात देता है (मगर अफसोस) उस पर भी तुम शिर्क करते ही जाते हो (64)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि वही उस पर अच्छी तरह क़ाबू रखता है कि अगर (चाहे तो) तुम पर अज़ाब तुम्हारे (सर के) ऊपर से नाज़िल करे या तुम्हारे पाँव के नीचे से (उठाकर खड़ा कर दे) या एक गिरोह को दूसरे से भिड़ा दे और तुम में से कुछ लोगों को बाज़ आदमियों की लड़ाई का मज़ा चखा दे ज़रा ग़ौर तो करो हम किस किस तरह अपनी आयतों को उलट पुलट के बयान करते हैं ताकि लोग समझे (65)

और उसी (क़ुरान) को तुम्हारी क़ौम ने झुठला दिया हालाँकि वह बरहक़ है (ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मैं तुम पर कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं हर ख़बर (के पूरा होने) का एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर है और अनक़रीब (जल्दी) ही तुम जान लोगे (66)

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में बेहूदा बहस कर रहे हैं तो उन (के पास)

से टल जाओ यहाँ तक कि वह लोग उसके सिवा किसी और बात में बहस करने लगें और अगर (हमारा ये हुक्म) तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ हरगिज़ न बैठना (67)

और ऐसे लोगों (के हिसाब किताब) का जवाब देही कुछ परहेज़गारो पर तो है नहीं मगर (सिर्फ नसीहतन) याद दिलाना (चाहिए) ताकि ये लोग भी परहेज़गार बनें (68)

और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन को धोके में डाल रखा है ऐसे लोगों को छोड़ो और क़ुरान के ज़रिए से उनको नसीहत करते रहो (ऐसा न हो कि कोई) शख़्स अपने करतूत की बदौलत मुब्तिलाए बला हो जाए (क्योंकि उस वक्त) तो अल्लाह के सिवा उसका न कोई सरपरस्त होगा न सिफारिशी और अगर वह अपने गुनाह के ऐवज़ सारे (जहाँन का) बदला भी दे तो भी उनमें से एक न लिया जाएगा जो लोग अपनी करनी की बदौलत मुब्तिलाए बला हुए है उनको पीने के लिए खौलता हुआ गर्म पानी (मिलेगा) और (उन पर) दर्दनाक अज़ाब होगा क्योंकर वह कुफ्ऱ किया करते थे (69)

(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या हम लोग ख़ुदा को छोड़कर उन (माबूदों) से मुनाज़ात (दुआ) करे जो न तो हमें नफ़ा पहुँचा सकते हैं न हमारा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं- और जब अल्लाह हमारी हिदायत कर चुका) उसके बाद उल्टे पावँ कुफ्र की तरफ उस शख़्स की तरह फिर जाएँ जिसे शैतानों ने जंगल में भटका दिया हो और वह हैरान (परेशान) हो (कि कहा जाए क्या करें) और उसके कुछ रफीक़ हो कि उसे राहे रास्त (सीधे रास्ते) की तरफ पुकारते रह जाएँ कि (उधर) हमारे पास आओ और वह एक न सुने (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हिदायत तो बस अल्लाह की हिदायत है और हमें तो हुक्म ही दिया गया है कि हम सारे जहॉन के परवरदिगार अल्लाह के फरमाबरदार हैं (70)

और ये (भी हुक्म हुआ है) कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और उसी से डरते रहो और वही तो वह (अल्लाह) है जिसके हुज़ूर में तुम सब के सब हाज़िर किए जाओगे (71)

वह तो वह (ख़ुदा है) जिसने ठीक ठीक बहुतेरे आसमान व ज़मीन पैदा किए और जिस दिन (किसी चीज़ को) कहता है कि हो जा तो (फौरन) हो जाती है (72)

उसका क़ौल सच्चा है और जिस दिन सूर फूंका जाएगा (उस दिन) ख़ास उसी की बादशाहत होगी (वही) ग़ायब हाज़िर (सब) का जानने वाला है और वही दाना वाक़िफ़कार है (73)

(ऐ रसूल) उस वक्त का याद करो) जब इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को अल्लाह मानते हो-मै तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ (74)

और (जिस तरह हमने इबराहीम को दिखाया था कि बुत क़ाबिले परसतिश (पूजने के क़ाबिल) नहीं) उसी तरह हम इबराहीम को सारे आसमान और ज़मीन की सल्तनत का (इन्तज़ाम) दिखाते रहे ताकि वह (हमारी वहदानियत का) यक़ीन करने वालों से हो जाएँ (75)
तो जब उन पर रात की तारीकी़ (अंधेरा) छा गयी तो एक सितारे को देखा तो दफ़अतन बोल उठे (हाए क्या) यही मेरा अल्लाह है फिर जब वह डूब गया तो कहने लगे ग़ुरुब (डूब) हो जाने वाली चीज़ को तो मै (अल्लाह बनाना) पसन्द नहीं करता (76)

फिर जब चाँद को जगमगाता हुआ देखा तो बोल उठे (क्या) यही मेरा अल्लाह है फिर जब वह भी ग़ुरुब हो गया तो कहने लगे कि अगर (कहीं) मेरा (असली) परवरदिगार मेरी हिदायत न करता तो मैं ज़रुर गुमराह लोगों में हो जाता (77)

फिर जब आफताब को दमकता हुआ देखा तो कहने लगे (क्या) यही मेरा ख़ुदा है ये तो सबसे बड़ा (भी) है फिर जब ये भी ग़ुरुब हो गया तो कहने लगे ऐ मेरी क़ौम जिन जिन चीज़ों को तुम लोग (अल्लाह का) शरीक बनाते हो उनसे मैं बेज़ार हूँ (78)

(ये हरगिज़ नहीं हो सकते) मैने तो बातिल से कतराकर उसकी तरफ से मुँह कर लिया है जिसने बहुतेरे आसमान और ज़मीन पैदा किए और मैं मुशरेकीन से नहीं हूँ (79)

और उनकी क़ौम के लोग उनसे हुज्जत करने लगे तो इबराहीम ने कहा था क्या तुम मुझसे ख़ुदा के बारे में हुज्जत करते हो हालॉकि वह यक़ीनी मेरी हिदायत कर चुका और तुम मे जिन बुतों को उसका शरीक मानते हो मै उनसे डरता (वरता) नहीं (वह मेरा कुछ नहीं कर सकते) मगर हॉ मेरा अल्लाह खुद (करना) चाहे तो अलबत्ता कर सकता है मेरा परवरदिगार तो बाएतबार इल्म के सब पर हावी है तो क्या उस पर भी तुम नसीहत नहीं मानते (80)

और जिन्हें तुम ख़ुदा का शरीक बताते हो मै उन से क्यों डरुँ जब तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का शरीक ऐसी चीज़ों को बनाया है जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद तुम पर नहीं नाज़िल की फिर अगर तुम जानते हो तो (भला बताओ तो सही कि) हम दोनों फरीक़ (गिरोह) में अमन क़ायम रखने का ज़्यादा हक़दार कौन है (81)

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अपने ईमान को ज़ुल्म (शिर्क) से आलूदा नहीं किया उन्हीं लोगों के लिए अमन (व इतमिनान) है और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं (82)

और ये हमारी (समझाई बुझाई) दलीलें हैं जो हमने इबराहीम को अपनी क़ौम पर (ग़ालिब आने के लिए) अता की थी हम जिसके मरतबे चाहते हैं बुलन्द करते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला बाख़बर है (83)

और हमने इबराहीम को इसहाक़ वा याक़ूब (सा बेटा पोता) अता किया हमने सबकी हिदायत की और उनसे पहले नूह को (भी) हम ही ने हिदायत की और उन्हीं (इबराहीम) को औलाद से दाऊद व सुलेमान व अय्यूब व यूसुफ व मूसा व हारुन (सब की हमने हिदायत की) और नेकों कारों को हम ऐसा ही इल्म अता फरमाते हैं (84)

और ज़करिया व यहया व ईसा व इलियास (सब की हिदायत की (और ये) सब (अल्लाह के) नेक बन्दों से हैं (85)

और इसमाइल व इलियास व युनूस व लूत (की भी हिदायत की) और सब को सारे जहाँन पर फज़ीलत अता की (86)

और (सिर्फ उन्हीं को नहीं बल्कि) उनके बाप दादाओं और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में से (बहुतेरों को) और उनके मुन्तख़िब किया और उन्हें सीधी राह की हिदायत की (87)

(देखो) ये अल्लाह की हिदायत है अपने बन्दों से जिसको चाहे उसीकी वजह से राह पर लाए और अगर उन लोगों ने शिर्क किया होता तो उनका किया (धरा) सब अकारत हो जाता (88)

(पैग़म्बर) वह लोग थे जिनको हमने (आसमानी) किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फरमाई पस अगर ये लोग उसे भी न माने तो (कुछ परवाह नहीं) हमने तो उस पर ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दिया हे जो (उनकी तरह) इन्कार करने वाले नहीं (89)

(ये अगले पैग़म्बर) वह लोग थे जिनकी अल्लाह ने हिदायत की पस तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करो (ऐ रसूल उन से) कहो कि मै तुम से इस (रिसालत) की मज़दूरी कुछ नहीं चाहता सारे जहाँन के लिए सिर्फ नसीहत है (90)

और बस और उन लोगों (यहूद) ने ख़ुदा की जैसी क़दर करनी चाहिए न की इसलिए कि उन लोगों ने (बेहूदे पन से) ये कह दिया कि ख़ुदा ने किसी बशर (इनसान) पर कुछ नाज़िल नहीं किया (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि फिर वह किताब जिसे मूसा लेकर आए थे किसने नाज़िल की जो लोगों के लिए रौशनी और (अज़्सरतापा(सर से पैर तक) हिदायत (थी जिसे तुम लोगों ने अलग-अलग करके काग़ज़ी औराक़ (कागज़ के पन्ने) बना डाला और इसमें को कुछ हिस्सा (जो तुम्हारे मतलब का है वह) तो ज़ाहिर करते हो और बहुतेरे को (जो ख़िलाफ मदआ है) छिपाते हो हालॉकि उसी किताब

के ज़रिए से तुम्हें वो बातें सिखायी गयी जिन्हें न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा (ऐ रसूल वह तो जवाब देगें नहीं) तुम ही कह दो कि अल्लाह ने (नाज़िल फरमाई) (91)

उसके बाद उन्हें छोड़ के (पड़े झक मारा करें (और) अपनी तू तू मै मै में खेलते फिरें और (क़ुरान) भी वह किताब है जिसे हमने बाबरकत नाज़िल किया और उस किताब की तसदीक़ करती है जो उसके सामने (पहले से) मौजूद है और (इस वास्ते नाज़िल किया है) ताकि तुम उसके ज़रिए से एहले मक्का और उसके एतराफ़ के रहने वालों को (ख़ौफ अल्लाह से) डराओ और जो लोग आख़िरत पर इमान रखते हैं वह तो उस पर (बे ताम्मुल) इमान लाते है और वही अपनी अपनी नमाज़ में भी पाबन्दी करते हैं (92)

और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ (मूठ) इफ़तेरा करके कहे कि हमारे पास वही आयी है हालॉकि उसके पास वही वग़ैरह कुछ भी नही आयी या वह शख़्स दावा करे कि जैसा क़ुरान ख़ुदा ने नाज़िल किया है वैसा मै भी (अभी) अनक़रीब (जल्दी) नाज़िल किए देता हूँ और (ऐ रसूल) काश तुम देखते कि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों में पड़ें हैं और फरिश्ते उनकी तरफ (जान निकाल लेने के वास्ते) हाथ लपका रहे हैं और कहते जाते हैं कि अपनी जानें निकालो आज ही तो तुम को रुसवाई के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी क्योंकि तुम अल्लाह पर नाहक़ (नाहक़) झूठ छोड़ा करते थे और उसकी आयतों को (सुनकर उन) से अकड़ा करते थे (93)

और आख़िर तुम हमारे पास इसी तरह तन्हा आए (ना) जिस तरह हमने तुम को पहली बार पैदा किया था और जो (माल व औलाद) हमने तुमको दिया था वह सब अपने पस्त पुश्त (पीछे) छोड़ आए और तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफारिश करने वालों को भी नहीं देखते जिन को तुम ख़्याल करते थे कि वह तुम्हारी (परवरिश वग़ैरह) मै (हमारे) साझेदार है अब तो तुम्हारे बाहरी ताल्लुक़ात मनक़तआ (ख़त्म) हो गए और जो कुछ ख़्याल करते थे वह सब तुम से ग़ायब हो गए (94)

ख़ुदा ही तो गुठली और दाने को चीर (करके दरख़्त ऊगाता) है वही मुर्दे में से ज़िन्दे को निकालता है और वही ज़िन्दा से मुर्दे को निकालने वाला है (लोगों) वही तुम्हारा अल्लाह है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो (95)

उसी के लिए सुबह की पौ फटी और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चाँद बनाए ये अल्लाहए ग़ालिब व दाना के मुक़र्रर किए हुए किरदा (उसूल) हैं (96)

और वह वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे (नफे के) वास्ते सितारे पैदा किए ताकि तुम जॅगलों और दरियाओं की तारिक़ियों (अंधेरों) में उनसे राह मालूम करो जो लोग वाक़िफ़कार हैं उनके लिए हमने (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ ख़ूब तफ़सील से बयान कर दी हैं (97)

और वह वही ख़ुदा है जिसने तुम लोगों को एक शख़्स से पैदा किया फिर (हर शख़्स के) क़रार की जगह (बाप की पुश्त (पीठ)) और सौंपने की जगह (माँ का पेट) मुक़र्रर है हमने समझदार लोगों के वास्ते (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ ख़ूब तफसील से बयान कर दी हैं (98)

और वह वही (क़ादिर तवाना है) जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके ज़रिए से हर चीज़ के कोए निकालें फिर हम ही ने उससे हरी भरी टहनियाँ निकालीं कि उससे हम बाहम गुत्थे दाने निकालते हैं और छुहारे के बोर (मुन्जिर) से लटके हुए गुच्छे पैदा किए और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ात जो बाहम सूरत में एक दूसरे से मिलते जुलते और (मज़े में) जुदा जुदा जब ये पिघले और पक्के तो उसके फल की तरफ ग़ौर तो करो बेशक अमन में इमानदार लोगों के लिए बहुत सी (ख़ुदा की) निशानियाँ हैं (99)

और उन (कम्बख़्तों) ने जिन्नात को अल्लाह का शरीक बनाया हालाँकि जिन्नात को भी अल्लाह ही ने पैदा किया उस पर भी उन लोगों ने बे समझे बूझे अल्लाह के लिए बेटे बेटियाँ गढ़ डालीं जो बातों में लोग (उसकी शान में) बयान करते हैं उससे वह पाक व पाकीज़ा और बरतर है (100)

सारे आसमान और ज़मीन का मवविद (बनाने वाला) है उसके कोई लड़का क्योंकर हो सकता है जब उसकी कोई बीबी ही नहीं है और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और वही हर चीज़ से खूब वाक़िफ है (101)

(लोगों) वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोइ्र माबूद नहीं वही हर चीज़ का पैदा करने वाला है तो उसी की इबादत करो और वही हर चीज़ का निगेह बान है (102)

उसको आँखें देख नहीं सकती (न दुनिया में न आख़िरत में) और वह (लोगों की) नज़रों को खूब देखता है और वह बड़ा बारीक बीन (देख़ने वाला) ख़बरदार है (103)

तुम्हारे पास तो सुझाने वाली चीज़े आ ही चुकीं फिर जो देखे (समझे) तो अपने दम के लिए और जो अन्धा बने तो (उसका ज़रर (नुकसान) भी) ख़ुद उस पर है और (ऐ रसूल उन से कह दो) कि मै तुम लोगों का कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं (104)

और हम (अपनी) आयतें यूँ उलट फेरकर बयान करते है (ताकि हुज्जत तमाम हो) और ताकि वह लोग ज़बानी भी इक़रार कर लें कि तुमने (क़ुरान उनके सामने) पढ़ दिया और ताकि जो लोग जानते है उनके लिए (क़ुरान का) खूब वाजेए करके बयान कर दें (105)

जो कुछ तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से 'वही' की जाए बस उसी पर चलो अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिको से किनारा कश रहो (106)

और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग शिर्क ही न करते और हमने तुमको उन लोगों का निगेहबान तो बनाया नहीं है और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो (107)

और ये (मुशरेकीन) जिन की अल्लाह के सिवा (अल्लाह समझ कर) इबादत करते हैं उन्हें तुम बुरा न कहा करो वरना ये लोग भी ख़ुदा को बिना समझें अदावत से बुरा (भला) कह बैठें (और लोग उनकी ख़्वाहिश नफसानी के) इस तरह पाबन्द हुए कि गोया हमने ख़ुद हर गिरोह के आमाल उनको सॅवाकर अच्छे कर दिखाए फिर उन्हें तो (आख़िरकार) अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है तब जो कुछ दुनिया में कर रहे थे ख़ुदा उन्हें बता देगा (108)

और उन लोगों ने अल्लाह की सख़्त सख़्त क़समें खायीं कि अगर उनके पास कोई मौजिज़ा आए तो वह ज़रूर उस पर इमान लाएँगे (ऐ रसूल) तुम कहो कि मौजिज़े तो बस अल्लाह ही के पास हैं और तुम्हें क्या मालूम ये यक़ीनी बात है कि जब मौजिज़ा भी आएगा तो भी ये ईमान न लाएँगे (109)

और हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट पलट कर देंगे जिस तरह ये लोग क़ुरान पर पहली मरतबा ईमान न लाए और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे कि सरगिरदाँ (परेशान) रहें (110)

और (ऐ रसूल सच तो ये है कि) हम अगर उनके पास फरिश्ते भी नाज़िल करते और उनसे मुर्दे भी बातें करने लगते और तमाम (मख़फ़ी(छुपी) चीज़ें (जैसे जन्नत व नार वग़ैरह) अगर वह गिरोह उनके सामने ला खड़े करते तो भी ये ईमान लाने वाले न थे मगर जब अल्लाह चाहे लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते (111)

कि और (ऐ रसूल जिस तरह ये कुफ़्फ़ार तुम्हारे दुश्मन हैं) उसी तरह (गोया हमने ख़ुद आज़माइश के लिए शरीर आदमियों और जिनों को हर नबी का दुश्मन बनाया वह लोग एक दूसरे को फरेब देने की ग़रज़ से चिकनी चुपड़ी बातों की सरग़ोशी करते हैं और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ये लोग) ऐसी हरकत करने न पाते (112)

तो उनको और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को छोड़ दो और ये (ये सरग़ोशियाँ इसलिए थीं) ताकि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं लाए उनके दिल उन (की शरारत) की तरफ मायल (खिंच) हो जाएँ और उन्हें पसन्द करें (113)

और ताकि जो लोग इफ़तेरा परदाज़ियाँ ये लोग ख़ुद करते हैं वह भी करने लगें (क्या तुम ये चाहते हो कि) मैं अल्लाह को छोड़ कर किसी और को सालिस तलाश करूँ हालाँकि वह वही अल्लाह है जिसने तुम्हारे पास वाज़ेए किताब नाज़िल की और जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है वह यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि ये (क़ुरान भी) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ नाज़िल किया गया है (114)

तो तुम (कहीं) शक करने वालों से न हो जाना और सच्चाई और इन्साफ में तो तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो गई कोई उसकी बातों का बदलने वाला नहीं और वही बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (115)

और (ऐ रसूल) दुनिया में तो बहुतेरे लोग ऐसे हैं कि तुम उनके कहने पर चलो तो तुमको अल्लाह की राह से बहका दें ये लोग तो सिर्फ अपने ख़्यालात की पैरवी करते हैं और ये लोग तो बस अटकल पच्चू बातें किया करते हैं (116)

(तो तुम क्या जानों) जो लोग उसकी राह से बहके हुए हैं उनको (कुछ) अल्लाह ही ख़ूब जानता है और वह तो हिदायत याफ्ता लोगों से भी ख़ूब वाक़िफ़ है (117)

तो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो तो जिस ज़ीबह पर (वक़्ते ज़िबाह) अल्लाह का नाम लिया गया हो उसी को खाओ (118)

और तुम्हें क्या हो गया है कि जिस पर ख़ुदा का नाम लिया गया हो उसमें नहीं खाते हो हालाँकि जो चीज़ें उसने तुम पर हराम कर दीं हैं वह तुमसे तफसीलन बयान कर दीं हैं मगर (हाँ) जब तुम मजबूर हो तो अलबत्ता (हराम भी खा सकते हो) और बहुतेरे तो (ख़्वाहमख़्वाह) अपनी नफसानी ख़्वाहिशों से बे समझे बूझे (लोगों को) बहका देते हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हक़ से तजाविज़ करने वालों से ख़ूब वाक़िफ़ है (119)

(ऐ लोगों) ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह (दोनों) को (बिल्कुल) छोड़ दो जो लोग गुनाह करते हैं उन्हें अपने आमाल का अनक़रीब ही बदला दिया जाएगा (120)

और जिस (ज़बीहे) पर अल्लाह का नाम न लिया गया उसमें से मत खाओ (क्योंकि) ये बेशक बदचलनी है और शयातीन तो अपने हवा ख़वाहों के दिल में वसवसा डाला ही करते हैं ताकि वह तुमसे (बेकार) झगड़े किया करें और अगर (कहीं) तुमने उनका कहना मान लिया तो (समझ रखो कि) बेशुबहा तुम भी मुशरिक हो (121)

क्या जो शख़्स (पहले) मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिए एक नूर बनाया

जिसके ज़रिए वह लोगों में (बेतकल्लुफ़) चलता फिरता है उस शख़्स का सामना हो सकता है जिसकी ये हालत है कि (हर तरफ से) अँधेरे में (फँसा हुआ है) कि वहाँ से किसी तरह निकल नहीं सकता (जिस तरह मोमिनों के वास्ते ईमान आरास्ता किया गया) उसी तरह काफिरों के वास्ते उनके आमाल (बद) आरास्ता कर दिए गए हैं (122)

(कि भला ही भला नज़र आता है) और जिस तरह मक्के में है उसी तरह हमने हर बस्ती में उनके कुसूरवारों को सरदार बनाया ताकि उनमें मक्कारी किया करें और वह लोग जो कुछ करते हैं अपने ही हक़ में (बुरा) करते हैं और समझते (तक) नहीं (123)

और जब उनके पास कोई निशानी (नबी की तसदीक़ के लिए) आई है तो कहते हैं जब तक हमको ख़ुद वैसी चीज़ (वही वग़ैरह) न दी जाएगी जो पैग़म्बराने ख़ुदा को दी गई है उस वक़्त तक तो हम ईमान न लाएँगे और ख़ुदा जहाँ (जिस दिल में) अपनी पैग़म्बरी क़रार देता है उसकी (काबलियत व सलाहियत) को ख़ूब जानता है जो लोग (उस जुर्म के) मुजरिम हैं उनको अनक़रीब उनकी मक्कारी की सज़ा में अल्लाह के यहाँ बड़ी ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब होगा (124)

तो ख़ुदा जिस शख़्स को राह रास्त दिखाना चाहता है उसके सीने को इस्लाम (की दौलियत) के वास्ते (साफ़ और) कुशादा (चौड़ा) कर देता है और जिसको गुमराही की हालत में छोड़ना चाहता है उनके सीने को तंग दुश्वार ग़ुबार कर देता है गोया (कुबूल इमान) उसके लिए आसमान पर चढ़ना है जो लोग इमान नहीं लाते अल्लाह उन पर बुराई को उसी तरह मुसल्लत कर देता है (125)

और (ऐ रसूल) ये (इस्लाम) तुम्हारे परवरदिगार का (बनाया हुआ) सीधा रास्ता है इबरत हासिल करने वालों के वास्ते हमने अपने आयात तफसीलन बयान कर दिए हैं (126)

उनके वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अमन व चैन का घर (बेहश्त) है और दुनिया में जो कारगुज़ारियाँ उन्होने की थीं उसके ऐवज़ ख़ुदा उन का सरपरस्त होगा (127)

और (ऐ रसूल वह दिन याद दिलाओ) जिस दिन ख़ुदा सब लोगों को जमा करेगा और शयातीन से फरमाएगा, ऐ गिरोह जिन्नात तुमने तो बहुतेरे आदमियों को (बहका बहका कर) अपनी जमाअत बड़ी कर ली (और) आदमियों से जो लोग (उन शयातीन के दुनिया में) दोस्त थे कहेंगे ऐ हमारे पालने वाले (दुनिया में) हमने एक दूसरे से फायदा हासिल किया और अपने किए की सज़ा पाने को, जो वक़्त तू ने हमारे लिए मुअय्युन किया था अब हम अपने उस वक़्त (क़यामत) में पहुँच गए अल्लाह उसके जवाब में, फरमाएगा तुम सब का ठिकाना जहन्नुम है और उसमें हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे (नजात दे) बेशक तेरा परवरदिगार हिकमत वाला वाक़िफकार है (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का उनके करतूतों की बदौलत सरपरस्त बनाएँगे (129)

(फिर हम पूछेंगे कि क्यों) ऐ गिरोह जिन व इन्स क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैग़म्बर नहीं आए जो तुम तुमसे हमारी आयतें बयान करें और तुम्हें तुम्हारे उस रोज़ (क़यामत) के पेश आने से डराएँ वह सब अर्ज़ करेंगे (बेशक आए थे) हम ख़ुद अपने ऊपर आप अपने (ख़िलाफ़) गवाही देते हैं (वाकई) उनको दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी ने उन्हें अँधेरे में डाल रखा और उन लोगों ने अपने ख़िलाफ़ आप गवाही दीं (130)

बेशक ये सब के सब काफिर थे और ये (पैग़म्बरों का भेजना सिर्फ़) उस वजह से है कि तुम्हारा परवरदिगार कभी बस्तियों को ज़ुल्म ज़बरदस्ती से वहाँ के बाशिन्दों के ग़फ़लत की हालत में हलाक नहीं किया करता (131)

और जिसने जैसा (भला या बुरा) किया है उसी के मुवाफ़िक़ हर एक के दरजात हैं (132)

और जो कुछ वह लोग करते हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं और तुम्हारा परवरदिगार बे परवाह रहम वाला है - अगर चाहे तो तुम सबके सबको (दुनिया से उड़ा) ले लाए और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हार जानशीन बनाए जिस तरह आख़िर तुम्हें दूसरे लोगों की औलाद से पैदा किया है (133)

बेशक जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर (एक न एक दिन) आने वाली है (134)

और तुम उसके लाने में (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते (ऐ रसूल तुम उनसे) कहो कि ऐ मेरी क़ौम तुम बजाए ख़ुद जो चाहो करो मैं (बजाए ख़ुद) अमल कर रहा हूँ फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आख़ेरत (बेहश्त) किसके लिए है (तुम्हारे लिए या हमारे लिए) ज़ालिम लोग तो हरगिज़ कामयाब न होंगे (135)

और ये लोग अल्लाह की पैदा की हुयी खेती और चौपायों में से हिस्सा क़रार देते हैं और अपने ख़्याल के मुवाफिक कहते हैं कि ये तो ख़ुदा का (हिस्सा) है और ये हमारे शरीकों का (यानि जिनको हमने ख़ुदा का शरीक बनाया) फिर जो ख़ास उनके शरीकों का है वह तो ख़ुदा तक नहीं पहुँचने का और जो हिस्सा अल्लाह का है वो उसके शरीकों तक पहुँच जाएगा ये क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं और उसी तरह बहुतेरे मुश्रकीन को उनके शरीकों ने अपने बच्चों को मार डालने को अच्छा कर दिखाया है (136)

ताकि उन्हें (बदी) हलाकत में डाल दें और उनके सच्चे दीन को उन पर मिला जुला दें और अगर अल्लाह चाहता तो लोग ऐसा काम न करते तो तुम (ऐ रसूल) और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को

(ख़ुदा पर) छोड़ दो और ये लोग अपने ख़्याल के मुवाफिक कहने लगे कि ये चौपाए और ये खेती अछूती है (137)

उनको सिवा उसके जिसे हम चाहें कोई नहीं खा सकता और (उनका ये भी ख़्याल है) कि कुछ चारपाए ऐसे हैं जिनकी पीठ पर सवारी लादना हराम किया गया और कुछ चारपाए ऐसे है जिन पर (ज़िबह के वक्त) ख़ुदा का नाम तक नहीं लेते और फिर यह ढकोसले (अल्लाह की तरफ मनसूब करते) हैं ये सब अल्लाह पर इफ़तेरा व बोहतान है अल्लाह उनके इफ़तेरा परदाज़ियों को बहुत जल्द सज़ा देगा (138)

और कुफ़्फ़ार ये भी कहते हैं कि जो बच्चा (वक्त ज़बाह) उन जानवरों के पेट में है (जिन्हें हमने बुतों के नाम कर छोड़ा और ज़िन्दा पैदा होता तो) सिर्फ हमारे मर्दों के लिए हलाल है और हमारी औरतों पर हराम है और अगर वह मरा हुआ हो तो सब के सब उसमें शरीक हैं अल्लाह अनक़रीब उनको बातें बनाने की सज़ा देगा बेशक वह हिकमत वाला बड़ा वाक़िफ़कार है (139)

बेशक जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे समझे बूझे बेवकूफी से मार डाला और जो रोज़ी अल्लाह ने उन्हें दी थी उसे अल्लाह पर इफ़तेरा (बोहतान) बाँध कर अपने ऊपर हराम कर डाला और वह सख़्त घाटे में है ये यक़ीनन राहे हक़ से भटक गाऐ और ये हिदायत पाने वाले थे भी नहीं (140)

और वह तो वही अल्लाह है जिसने बहुतेरे बाग़ पैदा किए (जिनमें मुख़्तलिफ दरख़्त हैं - कुछ तो अंगूर की तरह टट्टियों पर) चढ़ाए हुए और (कुछ) बे चढ़ाए हुए और खजूर के दरख़्त और खेती जिसमें फल मुख़्तलिफ़ किस्म के हैं और ज़ैतून और अनार बाज़ तो सूरत रंग मज़े में, मिलते जुलते और (बाज़) बेमेल (लोगों) जब ये चीज़े फलें तो उनका फल खाओ और उन चीज़ों के काटने के दिन अल्लाह का हक़ (ज़कात) दे दो और ख़बरदार फज़ूल ख़र्ची न करो - क्यों कि वह (अल्लाह) फुज़ूल ख़र्चे से हरगिज़ उलफत नहीं रखता (141)

और चारपायों में से कुछ तो बोझ उठाने वाले (बड़े बड़े) और कुछ ज़मीन से लगे हुए (छोटे छोटे) पैदा किए अल्लाह ने जो तुम्हें रोज़ी दी है उस में से खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो (142)

(क्यों कि) वह तो यक़ीनन तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (अल्लाह ने नर मादा मिलाकर) आठ (क़िस्म के) जोड़े पैदा किए हैं - भेड़ से (नर मादा) दो और बकरी से (नर मादा) दो (ऐ रसूल उन काफिरों से) पूछो तो कि अल्लाह ने (उन दोनों भेड़ बकरी के) दोनों नरों को हराम कर दिया है या उन दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो उन दोनों मादनियों के पेट से अन्दर लिए हुए हैं (143)

अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा समझ के मुझे बताओ और ऊँट के (नर मादा) दो और गाय के (नर मादा) दो (ऐ रसूल तुम उनसे) पूछो कि अल्लाह ने उन दोनों (ऊँट गाय के) नरों को हराम किया या दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो दोनों मादनियों के पेट अपने अन्दर लिये हुए है क्या जिस वक्त अल्लाह ने तुमको उसका हुक्म दिया था तुम उस वक्त़ मौजूद थे फिर जो अल्लाह पर झूठ बोताहन बाँधे उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा ताकि लोगों के वे समझे बूझे गुमराह करें अल्लाह हरगिज़ ज़ालिम क़ौम में मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुचाता (144)

(ऐ रसूल) तुम कहो कि मै तो जो (क़ुरान) मेरे पास वही के तौर पर आया है उसमें कोई चीज़ किसी खाने वाले पर जो उसको खाए हराम नहीं पाता मगर जबकि वह मुर्दा या बहता हुआ ख़ून या सूअर का गोश्त हो तो बेशक ये (चीज़े) नापाक और हराम हैं या (वह जानवर) नाफरमानी का बाएस हो कि (वक्त़े ज़िबहा) अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो फिर जो शख़्स (हर तरह) बेबस हो जाए (और) नाफरमान व सरकश न हो और इस हालत में खाए तो अलबत्ता तुम्हारा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (145)

और हमने यहूदियों पर तमाम नाख़ूनदार जानवर हराम कर दिये थे और गाय और बकरी दोनों की चरबियां भी उन पर हराम कर दी थी मगर जो चरबी उनकी दोनों पीठ या आतों पर लगी हो या हडड्ी से मिली हुयी हो (वह हलाल थी) ये हमने उन्हें उनकी सरक़शी की सज़ा दी थी और उसमें तो शक ही नहीं कि हम ज़रूर सच्चे हैं (146)

(ऐ रसूल) पर अगर वह तुम्हें झुठलाएँ तो तुम (जवाब) में कहो कि (अगरचे) तुम्हारा परवरदिगार बड़ी वसीह रहमत वाला है मगर उसका अज़ाब गुनाहगार लोगों से टलता भी नहीं (147)

अनक़रीब मुशरेकीन कहेंगें कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम लोग शिर्क करते और न हमारे बाप दादा और न हम कोई चीज़ अपने ऊपर हराम करते उसी तरह (बातें बना बना के) जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं (पैग़म्बरों को) झुठलाते रहे यहाँ तक कि उन लोगों ने हमारे अज़ाब (के मज़े) को चखा (ऐ रसूल) तुम कहो कि तुम्हारे पास कोई दलील है (अगर है) तो हमारे (दिखाने के) वास्ते उसको निकालो (दलील तो क्या) पेश करोगे तुम लोग तो सिर्फ अपने ख़्याल ख़ाम की पैरवी करते हो और सिर्फ अटकल पच्चू बातें करते हो (148)

(ऐ रसूल) तुम कहो कि (अब तुम्हारे पास कोई दलील नहीं है) अल्लाह तक पहुंचाने वाली दलील अल्लाह ही के लिए ख़ास है (149)

फिर अगर वही चाहता तो तुम सबकी हिदायत करता (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अच्छा) अपने गवाहों को लाकर हाज़िर करो जो ये गवाही दें कि ये चीज़े (जिन्हें तुम हराम मानते हो) ख़ुदा ही ने

हराम कर दी हैं फिर अगर (बिलग़रज़) वह गवाही दे भी दे तो (ऐ रसूल) कहीं तुम उनके साथ गवाही न देना और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और दूसरों को अपने परवरदिगार का हम सर बनाते है उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिशों पर न चलना (150)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि (बेबस) आओ जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर हराम की हैं वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ (वह) यह कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक़ न बनाओ और माँ बाप के साथ नेक सुलूक़ करो और मुफ़लिसी के ख़ौफ से अपनी औलाद को मार न डालना (क्योंकि) उनको और तुमको रिज़क देने वाले तो हम हैं और बदकारियों के क़रीब भी न जाओ ख़्वाह (चाहे) वह ज़ाहिर हो या पोशीदा और किसी जान वाले को जिस के क़त्ल को अल्लाह ने हराम किया है न मार डालना मगर (किसी) हक़ के ऐवज़ में वह बातें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम लोग समझो और यतीम के माल के करीब भी न जाओ (151)
लेकिन इस तरीके पर कि (उसके हक़ में) बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी की हद को पहुंच जाए और इन्साफ के साथ नाप और तौल पूरी किया करो हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से बढ़कर तकलीफ नहीं देते और (चाहे कुछ हो मगर) जब बात कहो तो इन्साफ़ से अगरचे वह (जिसके तुम ख़िलाफ न हो) तुम्हारा अज़ीज़ ही (क्यों न) हो और अल्लाह के एहद व पैग़ाम को पूरा करो यह वह बातें हैं जिनका ख़ुदा ने तुम्हे ं हुक्म दिया है कि तुम इबरत हासिल करो और ये भी (समझ लो) कि यही मेरा सीधा रास्ता है (152)

तो उसी पर चले जाओ और दूसरे रास्ते पर न चलो कि वह तुमको ख़ुदा के रास्ते से (भटकाकर) तितिर बितिर कर देगें यह वह बातें हैं जिनका अल्लाह ने तुमको हक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बनो (153)

फिर हमनें जो नेक़ी करें उस पर अपनी नेअमत पूरी करने के वास्ते मूसा को कि़ताब (तौरैत) अता फरमाई और उसमें हर चीज़ की तफ़सील (बयान कर दी) थी और (लोगों के लिए अज़सरतापा(सर से पैर तक)) हिदायत व रहमत है ताकि वह लोग अपनें परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करें (154)

और ये किताब (क़ुरान) जिसको हमने (अब नाज़िल किया है क्या है-बरक़त वाली किताब) है तो तुम लोग उसी की पैरवी करो (और अल्लाह से) डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए (155)

(और ऐ मुशरेकीन ये किताब हमने इसलिए नाज़िल की कि तुम कहीं) यह कह बैठो कि हमसे पहले किताब अल्लाह तो बस सिर्फ दो ही गिरोहों (यहूद व नसारा) पर नाज़िल हुयी थी अगरचे हम तो उनके पढ़ने (पढ़ाने) से बेखबर थे (156)

या ये कहने लगो कि अगर हम पर किताबे (ख़ुदा नाज़िल होती तो हम उन लोगों से कहीं बढ़कर राहे रास्त पर होते तो (देखो) अब तो यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास एक रौशन दलील है (किताबे ख़ुदा) और हिदायत और रहमत आ चुकी तो जो शख़्स ख़ुदा के आयात को झुठलाए और उससे मुँह फेरे उनसे बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो लोग हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं हम उनके मुँह फेरने के बदले में अनक़रीब ही बुरे अज़ाब की सज़ा देगें (ऐ रसूल) क्या ये लोग सिर्फ उसके मुन्तिज़र है कि उनके पास फरिश्ते आएं (157)

या तुम्हारा परवरदिगार खुद (तुम्हारे पास) आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियाँ आ जाएं (आख़िरकार क्योकर समझाया जाए) हालांकि जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की बाज़ निशानियाँ आ जाएंगी तो जो शख़्स पहले से ईमान नहीं लाया होगा या अपने मोमिन होने की हालत में कोई नेक काम नहीं किया होगा तो अब उसका ईमान लाना उसको कुछ भी मुफ़ीद न होगा - (ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि (अच्छा यही सही) तुम (भी) इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं (158)

बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरक़ा डाला और कई फरीक़ बन गए थे उनसे कुछ सरोकार नहीं उनका मामला तो सिर्फ अल्लाह के हवाले है फिर जो कुछ वह दुनिया में नेक या बद किया करते थे वह उन्हें बता देगा (उसकी रहमत तो देखो) (159)

जो शख़्स नेकी करेगा तो उसको दस गुना सवाब अता होगा और जो शख़्स बदी करेगा तो उसकी सज़ा उसको बस उतनी ही दी जाएगी और वह लोग (किसी तरह) सताए न जाएगें (160)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानि एक मज़बूत दीन इबराहीम के मज़हब की हिदायत फरमाई है बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे (161)

(ऐ रसूल) तुम उन लोगों से कह दो कि मेरी नमाज़ मेरी इबादत मेरा जीना मेरा मरना सब अल्लाह ही के वास्ते है जो सारे जहाँ का परवरदिगार है (162)

और उसका कोई शरीक़ नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला हूँ (163)

(ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाश करुँ हालॉकि वह तमाम चीज़ो का मालिक है और जो शख़्स कोई बुरा काम करता है उसका (वबाल) उसी पर है और कोई शख़्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता देगा (164)

और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने तुम्हें ज़मीन में (अपना) नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो (नेअमत) तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमतेहान करें उसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (165)

7 सूरह आराफ़

सूरह आराफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इसमें 206 आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम स्वाद (1)

(ऐ रसूल) ये किताब अल्लाह (क़ुरान) तुम पर इस ग़रज़ से नाज़िल की गई है ताकि तुम उसके ज़रिये से लोगों को अज़ाबे अल्लाह से डराओ और ईमानदारों के लिए नसीहत का बायस हो (2)

तुम्हारे दिल में उसकी वजह से कोई न तंगी पैदा हो (लोगों) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे (फर्ज़ी) बुतों (माबुदों) की पैरवी न करो (3)

तुम लोग बहुत ही कम नसीहत क़ुबूल करते हो और क्या (तुम्हें) ख़बर नहीं कि ऐसी बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला तो हमारा अज़ाब (ऐसे वक्त) आ पहुचा (4)

कि वह लोग या तो रात की नींद सो रहे थे या दिन को क़लीला (खाने के बाद का लेटना) कर रहे थे तब हमारा अज़ाब उन पर आ पड़ा तो उनसे सिवाए इसके और कुछ न कहते बन पड़ा कि हम बेशक ज़ालिम थे (5)

फिर हमने तो ज़रूर उन लोगों से जिनकी तरफ पैग़म्बर भेजे गये थे (हर चीज़ का) सवाल करेगें और ख़ुद पैग़म्बरों से भी ज़रूर पूछेगें (6)

फिर हम उनसे हक़ीक़त हाल ख़ूब समझ बूझ के (ज़रा ज़रा) दोहराएगें (7)

और हम कुछ ग़ायब तो थे नहीं और उस दिन (आमाल का) तौला जाना बिल्कुल ठीक है फिर तो जिनके (नेक अमाल के) पल्ले भारी होगें तो वही लोग फायज़ुलहराम (नजात पाये हुए) होगें (8)

(और जिनके नेक अमाल के) पल्ले हलके होगें तो उन्हीं लोगों ने हमारी आयत से नाफरमानी करने की वजह से यक़ीनन अपना आप नुक़सान किया (9)

और (ऐ बनीआदम) हमने तो यक़ीनन तुमको ज़मीन में क़ुदरत व इख़्तेदार दिया और उसमें तुम्हारे लिए असबाब ज़िन्दगी मुहय्या किए (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो (10)

हालाकि इसमें तो शक ही नहीं कि हमने तुम्हारे बाप आदम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरते बनायीं फिर हमनें फ़रिश्तों से कहा कि तुम सब के सब आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक पड़े मगर शैतान कि वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ। (11)

अल्लाह ने (शैतान से) फरमाया जब मैनें तुझे हुक्म दिया कि तू फिर तुझे सजदा करने से किसी ने रोका कहने लगा मैं उससे अफ़ज़ल हूँ (क्योंकि) तूने मुझे आग (ऐसे लतीफ अनसर) से पैदा किया (12)

और उसको मिटट्ी (ऐसी कशीफ़ अनसर) से पैदा किया अल्लाह ने फरमाया (तुझको ये ग़ुरूर है) तो बेहश्त से नीचे उतर जाओ क्योंकि तेरी ये मजाल नहीं कि तू यहाँ रहकर ग़ुरूर करे तो यहाँ से (बाहर) निकल बेशक तू ज़लील लोगों से है (13)

कहने लगा तो (ख़ैर) हमें उस दिन तक की (मौत से) मोहलत दे (14)

जिस दिन सारी अल्लाहई के लोग दुबारा जलाकर उठा खड़े किये जाएगें (15)

फ़रमाया (अच्छा मंजूर) तुझे ज़रूर मोहलत दी गयी कहने लगा चूँकि तूने मेरी राह मारी तो मैं भी तेरी सीधी राह पर बनी आदम को (गुमराह करने के लिए) ताक में बैठूं तो सही (16)

फिर उन लोगों से और उनके पीछे से और उनके दाहिने से और उनके बाएं से (गरज़ हर तरफ से) उन पर आ पड़ूँगां और (उनको बहकाऊँगां) और तू उन में से बहुतरों की शुक्रग़ुज़ार नहीं पायेगा (17)

अल्लाह ने फरमाया यहाँ से बुरे हाल में (राइन्दा होकर निकल) (दूर) जा उन लोगों से जो तेरा कहा मानेगा तो मैं यक़ीनन तुम (और उन) सबको जहन्नुम में भर दूंगा (18)

और (आदम से कहा) ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीबी (दोनों) बेहश्त में रहा सहा करो और जहाँ से चाहो खाओ (पियो) मगर (ख़बरदार) उस दरख़्त के करीब न जाना वरना तुम अपना आप नुक़सान करोगे (19)

फिर शैतान ने उन दोनों को वसवसा (शक) दिलाया ताकि (नाफरमानी की वजह से) उनके अस्तर

की चीज़े जो उनकी नज़र से बेहश्ती लिबास की वजह से पोशीदा थी खोल डाले कहने लगा कि तुम्हारे परवरदिगार ने दोनों को दरख़्त (के फल खाने) से सिर्फ इसलिए मना किया है (कि मुबादा) तुम दोनों फरिश्ते बन जाओ या हमेशा (ज़िन्दा) रह जाओ (20)

और उन दोनों के सामने क़समें खायीं कि मैं यक़ीनन तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूँ (21)

ग़रज़ धोखे से उन दोनों को उस (के खाने) की तरफ ले गया ग़रज़ जो ही उन दोनों ने इस दरख़्त (के फल) को चखा कि (बेहश्ती लिबास गिर गया और समझ पैदा हुयी) उन पर उनकी शर्मगाहें ज़ाहिर हो गयीं और बेहश्त के पत्ते (तोड़ जोड़ कर) अपने ऊपर ढापने लगे तब उनको परवरदिगार ने उनको आवाज़ दी कि क्यों मैंने तुम दोनों को इस दरख़्त के पास (जाने) से मना नहीं किया था और (क्या) ये न जता दिया था कि शैतान तुम्हारा यक़ीनन खुला हुआ दुश्मन है (22)

ये दोनों अर्ज़ करने लगे ऐ हमारे पालने वाले हमने अपना आप नुकसान किया और अगर तू हमें माफ न फरमाएगा और हम पर रहम न करेगा तो हम बिल्कुल घाटे में ही रहेगें (23)

हुक्म हुआ तुम (मियां बीबी शैतान) सब के सब बेहशत से नीचे उतरो तुममें से एक का एक दुश्मन है और (एक ख़ास) वक्त तक तुम्हारा ज़मीन में ठहराव (ठिकाना) और ज़िन्दगी का सामना है (24)

अल्लाह ने (ये भी) फरमाया कि तुम ज़मीन ही में जिन्दगी बसर करोगे और इसी में मरोगे (25)

और उसी में से (और) उसी में से फिर दोबारा तुम ज़िन्दा करके निकाले जाओगे ऐ आदम की औलाद हमने तुम्हारे लिए पोशाक नाज़िल की जो तुम्हारे शर्मगाहों को छिपाती है और ज़ीनत के लिए कपड़े और इसके अलावा परहेज़गारी का लिबास है और ये सब (लिबासों) से बेहतर है ये (लिबास) भी ख़ुदा (की कुदरत) की निशानियों से है (26)

ताकि लोग नसीहत व इबरत हासिल करें ऐ औलादे आदम (होशियार रहो) कहीं तुम्हें शैतान बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे बाप माँ आदम व हव्वा को बेहश्त से निकलवा छोड़ा उसी ने उन दोनों से (बेहश्ती) पोशाक उतरवाई ताकि उन दोनों को उनकी शर्मगाहें दिखा दे वह और उसका कुनबा ज़रूर तुम्हें इस तरह देखता रहता है कि तुम उन्हे नहीं देखने पाते हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का रफीक़ क़रार दिया है (27)

जो ईमान नही रखते और वह लोग जब कोई बुरा काम करते हैं कि हमने उस तरीके पर अपने बाप दादाओं को पाया और अल्लाह ने (भी) यही हुक्म दिया है (ऐ रसूल) तुम साफ कह दो कि अल्लाह ने (भी) यही हुक्म दिया है (ऐ रसूल) तुम (साफ) कह दो कि अल्लाह हरगिज़ बुरे काम

का हुक्म नहीं देता क्या तुम लोग अल्लाह पर (इफ्तिरा करके) वह बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते (28)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ का हुक्म दिया है और (ये भी क़रार दिया है कि) हर नमाज़ के वक्त अपने अपने मुँह (क़िबले की तरफ़) सीधे कर लिया करो और इसके लिए निरी खरी इबादत करके उससे दुआ मांगो जिस तरह उसने तुम्हें शुरू शुरू पैदा किया था (29)

उसी तरह फिर (दोबारा) ज़िन्दा किये जाओगे उसी ने एक फरीक़ की हिदायत की और एक गिरोह (के सर) पर गुमराही सवार हो गई उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना सरपरस्त बना लिया और बावजूद उसके गुमराह करते हैं कि वह राह रास्ते पर है (30)

ऐ औलाद आदम हर नमाज़ के वक्त बन सवर के निखर जाया करो और खाओ और पियो और फिज़ूल ख़र्ची मत करो (क्योंकि) अल्लाह फिज़ूल ख़र्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता (31)

(ऐ रसूल से) पूछो तो कि जो ज़ीनत (के साज़ों सामान) और खाने की साफ सुथरी चीजें अल्लाह ने अपने बन्दो के वास्ते पैदा की हैं किसने हराम कर दी तुम ख़ुद कह दो कि सब पाकीज़ा चीज़े क़यामत के दिन उन लोगों के लिए ख़ास हैं जो दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी में ईमान लाते थे हम यूँ अपनी आयतें समझदार लोगों के वास्ते तफसीलदार बयान करतें हैं (32)

(ऐ रसूल) तुम साफ कह दो कि हमारे परवरदिगार ने तो तमाम बदकारियों को ख़्वाह (चाहे) ज़ाहिरी हो या बातिनी और गुनाह और नाहक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और इस बात को कि तुम किसी को अल्लाह का शरीक बनाओ जिनकी उनसे कोई दलील न ही नाज़िल फरमाई और ये भी कि बे समझे बूझे ख़ुदा पर बोहतान बाँधों (33)

और हर गिरोह (के न पैदा होने) का एक ख़ास वक्त है फिर जब उनका वक्त आ पहुंचता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं (34)

ऐ औलादे आदम जब तुम में के (हमारे) पैग़म्बर तुम्हारे पास आए और तुमसे हमारे एहकाम बयान करे तो (उनकी इताअत करना क्योंकि जो शख़्स परहेज़गारी और नेक काम करेगा तो ऐसे लोगों पर न तो (क़यामत में) कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आर्ज़दा ख़ातिर (परेशान) होगें (35)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सरताबी कर बैठे वह लोग जहन्नुमी हैं कि वह उसमें हमेशा रहेगें (36)

तो जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा फिर तो वह लोग हैं जिन्हें उनकी (तक़दीर) का लिखा हिस्सा (रिज़्क) वग़ैरह मिलता रहेगा यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) उनके पास आकर उनकी रूह कब्ज़ करेगें तो (उनसे) पूछेगें कि जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते थे अब वह (कहाँ हैं तो वह कुफ्फार) जवाब देगें कि वह सब तो हमें छोड़ कर चल चंपत हुए और अपने खिलाफ आप गवाही देगें कि वह बेशक काफ़िर थे (37)

(तब अल्लाह उनसे) फरमाएगा कि जो लोग जिन व इन्स के तुम से पहले बसे हैं उन्हीं में मिलजुल कर तुम भी जहन्नुम वासिल हो जाओ (और) एहले जहन्नुम का ये हाल होगा कि जब उसमें एक गिरोह दाख़िल होगा तो अपने साथी दूसरे गिरोह पर लानत करेगा यहाँ तक कि जब सब के सब पहुंच जाएगें तो उनमें की पिछली जमात अपने से पहली जमाअत के वास्ते बदद्आ करेगी कि परवरदिगार उन्हीं लोगों ने हमें गुमराह किया था तो उन पर जहन्नुम का दोगुना अज़ाब फरमा (इस पर) अल्लाह फरमाएगा कि हर एक के वास्ते दो गुना अज़ाब है लेकिन (तुम पर) तुफ़ है तुम जानते नहीं (38)

और उनमें से पहली जमाअत पिछली जमाअत की तरफ मुख़ातिब होकर कहेगी कि अब तो तुमको हमपर कोई फज़ीलत न रही पस (हमारी तरह) तुम भी अपने करतूत की बदौलत अज़ाब (के मज़े) चखो बेशक जिन लोगों ने हमारे आयात को झुठलाया (39)

और उनसे सरताबी की न उनके लिए आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगें और वह बेहश्त ही में दाखिल होने पाएगें यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में होकर निकल जाए (यानि जिस तरह ये मुहाल है) उसी तरह उनका बेहश्त में दाखिल होना मुहाल है और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं उनके लिए जहन्नुम (की आग) का बिछौना होगा (40)

और उनके ऊपर से (आग ही का) ओढ़ना भी और हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं और जिन लोगों ने ईमान कुबुल किया (41)

और अच्छे अच्छे काम किये और हम तो किसी शख़्स को उसकी ताकत से ज़्यादा तकलीफ देते ही नहीं यहीं लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा जन्नत ही में रहा (सहा) करेगें (42)

और उन लोगों के दिल में जो कुछ (बुग़ज़ व कीना) होगा वह सब हम निकाल (बाहर कर) देगें उनके महलों के नीचे नहरें जारी होगीं और कहते होगें शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने हमें इस (मंज़िले मक़सूद) तक पहुंचाया और अगर ख़ुदा हमें यहाँ न पहुंचाता तो हम किसी तरह यहाँ न पहुंच सकते बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर दीने हक़ लेकर आये थे और उन लोगों से पुकार कर कह दिया

जाएगा कि वह बेहिश्त है जिसके तुम अपनी कारगुज़ारियों की जज़ा में वारिस व मालिक बनाए गये हो (43)

और जन्नती लोग जहन्नुमी वालों से पुकार कर कहेगें हमने तो बेशक जो हमारे परवरदिगार ने हमसे वायदा किया था ठीक ठीक पा लिया तो क्या तुमने भी जो तुमसे तम्हारे परवरदिगार ने वायदा किया था ठीक पाया (या नहीं) अहले जहन्नुम कहेगें हाँ (पाया) एक मुनादी उनके दरमियान निदा करेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है (44)

जो अल्लाह की राह से लोगों को रोकते थे और उसमें (ख़्वामख़्वाह) कज़ी (टेढ़ा पन) करना चाहते थे और वह रोज़े आख़ेरत से इन्कार करते थे (45)

और बेहश्त व दोज़ख के दरमियान एक हद फ़ासिल है और कुछ लोग आराफ़ पर होगें जो हर शख़्स को (बेहिश्ती हो या जहन्नुमी) उनकी पेशानी से पहचान लेगें और वह जन्नत वालों को आवाज़ देगें कि तुम पर सलाम हो या (आराफ़ वाले) लोग अभी दाख़िले जन्नत नहीं हुए हैं मगर वह तमन्ना ज़रूर रखते हैं (46)

और जब उनकी निगाहें पलटकर जहन्नुमी लोगों की तरफ जा पड़ेगीं (तो उनकी ख़राब हालत देखकर अल्लाह से अर्ज़ करेगें) ऐ हमारे परवरदिगार हमें ज़ालिम लोगों का साथी न बनाना (47)
और आराफ वाले कुछ (जहन्नुमी) लोगों को जिन्हें उनका चेहरा देखकर पहचान लेगें आवाज़ देगें और और कहेगें अब न तो तुम्हारा जत्था ही तुम्हारे काम आया और न तुम्हारी शेखी बाज़ी ही (सूद मन्द हुयी) (48)

जो तुम दुनिया में किया करते थे यही लोग वह हैं जिनकी निस्बत तुम कसमें खाया करते थे कि उन पर अल्लाह (अपनी) रहमत न करेगा (देखो आज वही लोग हैं जिनसे कहा गया कि बेतकल्लुफ) बेहश्त में चलो जाओ न तुम पर कोई खौफ है और न तुम किसी तरह आर्ज़ुदा ख़ातिर परेशानी होगी (49)

और दोज़ख वाले अहले बेहिश्त को (लजाजत से) आवाज़ देगें कि हम पर थोड़ा सा पानी ही उंडेल दो या जो (नेअमतों) अल्लाह ने तुम्हें दी है उसमें से कुछ (दे डालो दो तो अहले बेहिश्त जवाब में) कहेंगें कि अल्लाह ने तो जन्नत का खाना पानी काफिरों पर कतई हराम कर दिया है (50)

जिन लोगों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया था और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी ने उनको फरेब दिया था तो हम भी आज (क़यामत में) उन्हें (क़सदन) भूल जाएगें (51)

जिस तरह यह लोग (हमारी) आज की हुज़ूरी को भूलें बैठे थे और हमारी आयतों से इन्कार करते थे हालांकि हमने उनके पास (रसूल की मारफत किताब भी भेज दी है) (52)

जिसे हर तरह समझ बूझ के तफसीलदार बयान कर दिया है (और वह) ईमानदार लोगों के लिए हिदायत और रहमत है क्या ये लोग बस सिर्फ अन्जाम (क़यामत ही) के मुन्तज़िर है (हालांकि) जिस दिन उसके अन्जाम का (वक़्त) आ जाएगा तो जो लोग उसके पहले भूले बैठे थे (बेसाख़्ता) बोल उठेगें कि बेशक हमारे परवरदिगार के सब रसूल हक़ लेकर आये थे तो क्या उस वक़्त हमारी भी सिफरिश करने वाले हैं जो हमारी सिफारिश करें या हम फिर (दुनिया में) लौटाएं जाएं तो जो जो काम हम करते थे उसको छोड़कर दूसरें काम करें (53)

बेशक उन लोगों ने अपना सख़्त घाटा किया और जो इफ़तेरा परदाज़िया किया करते थे वह सब गायब़ (ग़ल्ला) हो गयीं बेशक तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह ही है जिसके (सिर्फ) 6 दिनों में आसमान और ज़मीन को पैदा किया फिर अर्श के बनाने पर आमादा हुआ वही रात को दिन का लिबास पहनाता है तो (गोया) रात दिन को पीछे पीछे तेज़ी से ढूंढती फिरती है और उसी ने आफ़ताब और माहताब और सितारों को पैदा किया कि ये सब के सब उसी के हुक्म के ताबेदार हैं (54)

देखो हुकूमत और पैदा करना बस ख़ास उसी के लिए है वह अल्लाह जो सारे जहाँन का परवरदिगार बरक़त वाला है (55)

(लोगों) अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके - चुपके दुआ करो, वह हद से तजाविज़ करने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता और ज़मीन में असलाह के बाद फसाद न करते फिरो और (अज़ाब) के ख़ौफ से और (रहमत) की आस लगा के अल्लाह से दुआ मांगो (56)

(क्योंकि) नेकी करने वालों से अल्लाह की रहमत यक़ीनन क़रीब है और वही तो (वह) अल्लाह है जो अपनी रहमत (अब्र) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाओ को भेजता है यहाँ तक कि जब हवाएं (पानी से भरे) बोझल बादलों के ले उड़े तो हम उनको किसी शहर की की तरफ (जो पानी का नायाबी (कमी) से गोया) मर चुका था हॅका दिया फिर हमने उससे पानी बरसाया, फिर हमने उससे हर तरह के फल ज़मीन से निकाले (57)

हम यूँ ही (क़यामत के दिन ज़मीन से) मुर्दो को निकालेंगें ताकि तुम लोग नसीहत व इबरत हासिल करो और उम्दा ज़मीन उसके परवरदिगार के हुक्म से उस सब्ज़ा (अच्छा ही) है और जो ज़मीन बड़ी है उसकी पैदावार ख़राब ही होती है (58)

हम यू अपनी आयतों को उलेटफेर कर शुक्रगुज़ार लोगों के वास्ते बयान करते हैं बेशक हमने नूह को

उनकी क़ौम के पास (रसूल बनाकर) भेजा तो उन्होनें (लोगों से) कहाकि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की ही इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं है और मैं तुम्हारी निस्बत (क़यामत जैसे) बड़े ख़ौफनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ (59)
तो उनकी क़ौम के चन्द सरदारों ने कहा हम तो यक़ीनन देखते हैं कि तुम खुल्लम खुल्ला गुमराही में (पड़े) हो (60)

तब नूह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही (वैग़रह) तो कुछ नहीं बल्कि मैं तो परवरदिगारे आलम की तरफ से रसूल हूँ (61)

तुम तक अपने परवरदिगार के पैग़ामात पहुचाएं देता हूँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता हूँ और अल्लाह की तरफ से जो बातें मै जानता हूँ तुम नहीं जानते (62)

क्या तुम्हें उस बात पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्ही में से एक मर्द (आदमी) के ज़रिए से तुम्हारे परवरदिगार का ज़िक्र (हुक्म) आया है ताकि वह तुम्हें (अज़ाब से) डराए और ताकि तुम परहेज़गार बनों और ताकि तुम पर रहम किया जाए (63)

इस पर भी लोगों ने उनकों झुठला दिया तब हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया और बाक़ी जितने लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था सबको डुबो मारा ये सब के सब यक़ीनन अन्धे लोग थे (64)

और (हमने) क़ौम आद की तरफ उनके भाई हूद को (रसूल बनाकर भेजा) तो उन्होनें लोगों से कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो (65)

(तो) उनकी क़ौम के चन्द सरदार जो काफिर थे कहने लगे हम तो बेशक तुमको हिमाक़त में (मुब्तिला) देखते हैं और हम यक़ीनी तुम को झूठा समझते हैं (66)

हूद ने कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें में तो हिमाक़त की कोई बात नहीं बल्कि मैं तो परवरदिगार आलम का रसूल हूँ (67)

मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार के पैग़ामात पहुँचाए देता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूँ (68)

क्या तुम्हें इस पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म तुम्हारे पास तुम्ही में एक मर्द (आदमी) के ज़रिए से (आया) कि तुम्हें (अजा़ब से) डराए और (वह वक़्त) याद करो जब उसने

तुमको क़ौम नूह के बाद ख़लीफा (व जानशीन) बनाया और तुम्हारी ख़िलाफ़त में भी बहुत ज़्यादती कर दी तो अल्लाह की नेअमतों को याद करो ताकि तुम दिली मुरादे पाओ (69)

तो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि सिर्फ ख़ुदा की तो इबादत करें और जिनको हमारे बाप दादा पूजते चले आए छोड़ बैठें पस अगर तुम सच्चे हो तो जिससे तुम हमको डराते हो हमारे पास लाओ (70)

हूद ने जवाब दिया (कि बस समझ लो) कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब नाज़िल हो चुका क्या तुम मुझसे चन्द (बुतो के फर्ज़ी) नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने (ख़्वाहमख़्वाह) गढ़ लिए हैं हालाकि अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं नाज़िल की पस तुम (अज़ाबे ख़ुदा का) इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तिज़र हूँ (71)
आख़िर हमने उनको और जो लोग उनके साथ थे उनको अपनी रहमत से नजात दी और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था हमने उनकी जड़ काट दी और वह लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं (72)

और (हमने क़ौम) समूद की तरफ उनके भाई सालेह को रसूल बनाकर भेजा तो उन्होनें (उन लोगों से कहा) ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं है तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाज़ेए और रौशन दलील आ चुकी है ये ख़ुदा की भेजी हुयी ऊँटनी तुम्हारे वास्ते एक मौजिज़ा है तो तुम लोग उसको छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में जहाँ चाहे चरती फिरे और उसे कोई तकलीफ़ ना पहुँचाओ वरना तुम दर्दनाक अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाआगे (73)

और वह वक्त याद करो जब उसने तुमको क़ौम आद के बाद (ज़मीन में) ख़लीफा (व जानशीन) बनाया और तुम्हें ज़मीन में इस तरह बसाया कि तुम हमवार व नरम ज़मीन में (बड़े-बड़े) महल उठाते हो और पहाड़ों को तराश के घर बनाते हो तो अल्लाह की नेअमतों को याद करो और रूए ज़मीन में फसाद न करते फिरो (74)

तो उसकी क़ौम के बड़े बड़े लोगों ने बेचारें ग़रीबों से उनमें से जो ईमान लाए थे कहा क्या तुम्हें मालूम है कि सालेह (हक़ीकतन) अपने परवरदिगार के सच्चे रसूल हैं - उन बेचारों ने जवाब दिया कि जिन बातों का वह पैग़ाम लाए हैं हमारा तो उस पर ईमान है (75)

तब जिन लोगों को (अपनी दौलत दुनिया पर) घमन्ड था कहने लगे हम तो जिस पर तुम ईमान लाए हो उसे नहीं मानते (76)

ग़रज़ उन लोगों ने ऊँटनी के कूचें और पैर काट डाले और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरताबी की और (बेबाकी से) कहने लगे अगर तुम सच्चे रसूल हो तो जिस (अज़ाब) से हम लोगों को डराते थे अब लाओ (77)
तब उन्हें ज़लज़ले ने ले डाला और वह लोग ज़ानू पर सर किए (जिस तरह) बैठे थे बैठे के बैठे रह गए (78)

उसके बाद सालेह उनसे टल गए और (उनसे मुख़ातिब होकर) कहा मेरी क़ौम (आह) मैनें तो अपने परवरदिगार के पैग़ाम तुम तक पहुचा दिए थे और तुम्हारे ख़ैरख़्वाही की थी (और ऊँच नीच समझा दिया था) मगर अफसोस तुम (ख़ैरख़्वाह) समझाने वालों को अपना दोस्त ही नहीं समझते (79)
और (लूत को हमने रसूल बनाकर भेजा था) जब उन्होनें अपनी क़ौम से कहा कि (अफसोस) तुम ऐसी बदकारी (अग़लाम) करते हो कि तुमसे पहले सारी ख़ुदाई में किसी ने ऐसी बदकारी नहीं की थी (80)

हाँ तुम औरतों को छोड़कर शहवत परस्ती के वास्ते मर्दों की तरफ माएल होते हो (हालाकि उसकी ज़रूरत नहीं) मगर तुम लोग कुछ हो ही बेहूदा (81)

सिर्फ करनें वालों (को नुत्फे को ज़ाए करते हो उस पर उसकी क़ौम का उसके सिवा और कुछ जवाब नहीं था कि वह आपस में कहने लगे कि उन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो क्योंकि ये तो वह लोग हैं जो पाक साफ बनना चाहते हैं) (82)

तब हमने उनको और उनके घर वालों को नजात दी मगर सिर्फ (एक) उनकी बीबी को कि वह (अपनी बदआमाली से) पीछे रह जाने वालों में थी (83)

और हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेह बरसाया-पस ज़रा ग़ौर तो करो कि गुनाहगारों का अन्जाम आखिर क्या हुआ (84)

और (हमने) मदयन (वालों के) पास उनके भाई शुएब को (रसूल बनाकर भेजा) तो उन्होंने (उन लोगों से) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं (और) तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक वाज़ेए व रौशन मौजिज़ा (भी) आ चुका तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी (ख़रीदी हुयी) चीज़ में कम न दिया करो और ज़मीन में उसकी असलाह व दुरूस्ती के बाद फसाद न करते फिरो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (85)

और तुम लोग जो रास्तों पर (बैठकर) जो ख़ुदा पर ईमान लाया है उसको डराते हो और ख़ुदा की

राह से रोकते हो और उसकी राह में (ख़्वाहमाख़्वाह) कज़ी ढूँढ निकालते हो अब न बैठा करो और उसको तो याद करो कि जब तुम (शुमार में) कम थे तो अल्लाह ही ने तुमको बढ़ाया, और ज़रा ग़ौर तो करो कि (आख़िर) फसाद फैलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ (86)

और जिन बातों का मै पैग़ाम लेकर आया हूँ अगर तुममें से एक गिरोह ने उनको मान लिया और एक गिरोह ने नहीं माना तो (कुछ परवाह नहीं) तो तुम सब्र से बैठे (देखते) रहो यहाँ तक कि अल्लाह (खुद) हमारे दरम्यिान फैसला कर दे, वह तो सबसे बेहतर फैसला करने वाला है (87)

तो उनकी क़ौम में से जिन लोगों को (अपनी हशमत(दुनिया पर) बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि ऐ शुएब हम तुम्हारे साथ इमान लाने वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर कर देगें मगर जबकि तुम भी हमारे उसी मज़हब मिल्लत में लौट कर आ जाओ (88)

हम अगरचे तुम्हारे मज़हब से नफरत ही रखते हों (तब भी लौट जाएँ माज़अल्लाह) जब तुम्हारे बातिल दीन से अल्लाह ने मुझे नजात दी उसके बाद भी अब अगर हम तुम्हारे मज़हब मे लौट जाएँ तब हमने अल्लाह पर बड़ा झूठा बोहतान बाँधा (ना) और हमारे वास्ते तो किसी तरह जायज़ नहीं कि हम तुम्हारे मज़हब की तरफ लौट जाएँ मगर हाँ जब मेरा परवरदिगार अल्लाह चाहे तो हमारा परवरदिगार तो (अपने) इल्म से तमाम (आलम की) चीज़ों को घेरे हुए है हमने तो अल्लाह ही पर भरोसा कर लिया ऐ हमारे परवरदिगार तू ही हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान ठीक ठीक फैसला कर दे और तू सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है (89)

और उनकी क़ौम के चन्द सरदार जो काफिर थे (लोगों से) कहने लगे कि अगर तुम लोगों ने शुएब की पैरवी की तो उसमें शक ही नहीं कि तुम सख़्त घाटे में रहोगे (90)

ग़रज़ उन लोगों को ज़लज़ले ने ले डाला बस तो वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए (91)

जिन लोगों ने शुएब को झुठलाया था वह (ऐसे मर मिटे कि) गोया उन बस्तियों में कभी आबाद ही न थे जिन लोगों ने शुएब को झुठलाया वही लोग घाटे में रहे (92)

तब शुएब उन लोगों के सर से टल गए और (उनसे मुख़ातिब हो के) कहा ऐ मेरी क़ौम मैं ने तो अपने परवरदिगार के पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की थी, फिर अब मैं काफिरों पर क्यों कर अफसोस करूँ (93)

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नही भेजा मगर वहाँ के रहने वालों को (कहना न मानने पर) सख़्ती और मुसीबत में मुब्तिला किया ताकि वह लोग (हमारी बारगाह में) गिड़गिड़ाएँ (94)

फिर हमने तकलीफ़ की जगह आराम को बदल दिया यहाँ तक कि वह लोग बढ़ निकले और कहने लगे कि इस तरह की तकलीफ़ व आराम तो हमारे बाप दादाओं को पहुँच चुका है तब हमने (उस बढ़ाने के की सज़ा में (अचानक उनको अज़ाब में) गिरफ्तार किया (95)

और वह बिल्कुल बेख़बर थे और अगर उन बस्तियों के रहने वाले इमान लाते और परहेज़गार बनते तो हम उन पर आसमान व ज़मीन की बरकतों (के दरवाज़े) खोल देते मगर (अफसोस) उन लोगों ने (हमारे पैग़म्बरों को) झूठलाया तो हमने भी उनके करतूतों की बदौलत उन को (अज़ाब में) गिरफ्तार किया (96)

(उन) बस्तियों के रहने वाले उस बात से बेख़ौफ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए जब कि वह पड़े बेख़बर सोते हों (97)

या उन बस्तियों वाले इससे बेख़ौफ हैं कि उन पर दिन दहाड़े हमारा अज़ाब आ पहुँचे जब वह खेल कूद (में मशग़ूल हो) (98)

तो क्या ये लोग अल्लाह की तद्बीर से ढीट हो गए हैं तो (याद रहे कि) अल्लाह के दॉव से घाटा उठाने वाले ही निडर हो बैठे हैं (99)

क्या जो लोग एहले ज़मीन के बाद ज़मीन के वारिस (व मालिक) होते हैं उन्हें ये मालूम नहीं कि अगर हम चाहते तो उनके गुनाहों की बदौलत उनको मुसीबत में फँसा देते (मगर ये लोग ऐसे नासमझ हैं कि गोया) उनके दिलों पर हम ख़ुद (मोहर कर देते हैं कि ये लोग कुछ सुनते ही नहीं (100)

(ऐ रसूल) ये चन्द बस्तियाँ हैं जिन के हालात हम तुमसे बयान करते हैं और इसमें तो शक ही नहीं कि उनके पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आए मगर ये लोग जिसके पहले झुठला चुके थे उस पर भला काहे को इमान लाने वाले थे अल्लाह यूँ काफिरों के दिलों पर अलामत मुकर्रर कर देता है (कि ये इमान न लाएँगें) (101)

और हमने तो उसमें से अक्सरों का एहद (ठीक) न पाया और हमने उनमें से अक्सरों को बदकार ही पाया (102)

फिर हमने (उन पैग़म्बरान मज़कूरीन के बाद) मूसा को फिरआऊन और उसके सरदारों के पास मौजिज़े अता करके (रसूल बनाकर) भेजा तो उन लोगों ने उन मौजिज़ात के साथ (बड़ी बड़ी) शरारतें की पस ज़रा ग़ौर तो करो कि आख़िर फसादियों का अन्जाम क्या हुआ (103)

और मूसा ने (फिरआऊन से) कहा ऐ फिरआऊन में यक़ीनन परवरदिगारे आलम का रसूल हूँ (104)

मुझ पर वाजिब है कि अल्लाह पर सच के सिवा (एक हुरमत भी झूठ) न कहूँ मै यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाजेए व रोशन मौजिज़े लेकर आया हूँ (105)

तो तू बनी ईसराइल को मेरे हमराह करे दे फिरआऊन कहने लगा अगर तुम सच्चे हो और वाक़ई कोई मौजिज़ा लेकर आए हो तो उसे दिखाओ (106)

(ये सुनते ही) मूसा ने अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दी पस वह यकायक (अच्छा खासा) ज़ाहिर बज़ाहिर अजदहा बन गई (107)

और अपना हाथ बाहर निकाला तो क्या देखते है कि वह हर शख़्स की नज़र मे जगमगा रहा है (108)

तब फिरआऊन के क़ौम के चन्द सरदारों ने कहा ये तो अलबत्ता बड़ा माहिर जादूगर है (109)

ये चाहता है कि तुम्हें तुम्हारें मुल्क से निकाल बाहर कर दे तो अब तुम लोग उसके बारे में क्या सलाह देते हो (110)

(आख़िर) सबने मुत्तफिक़ अलफाज़ (एक ज़बान होकर) कहा कि (ऐ फिरआऊन) उनको और उनके भाई (हारून) को चन्द दिन क़ैद में रखिए और (एतराफ़ के) शहरों में हरकारों को भेजिए (111)

कि तमाम बड़े बड़े जादूगरों का जमा करके अपके पास दरबार में हाज़िर करें (112)

ग़रज़ जादूगर सब फिरआऊन के पास हाज़िर होकर कहने लगे कि अगर हम (मूसा से) जीत जाएँ तो हमको बड़ा भारी इनाम ज़रुर मिलना चाहिए (113)

फिरआऊन ने कहा (हॉ इनाम ही नहीं) बल्कि फिर तो तुम हमारे दरबार के मुक़र्रेबीन में से होगें (114)

और मुक़र्रर वक्त पर सब जमा हुए तो बोल उठे कि ऐ मूसा या तो तुम्हें (अपने मुन्तसिर (मंत्र) या हम ही (अपने अपने मंत्र फेके) (115)

मूसा ने कहा (अच्छा पहले) तुम ही फेक (के अपना हौसला निकालो) तो तब जो ही उन लोगों ने

(अपनी रस्सियाँ) डाली तो लोगों की नज़र बन्दी कर दी (कि सब सापँ मालूम होने लगे) और लोगों को डरा दिया (116)
और उन लोगों ने बड़ा (भारी जादू दिखा दिया और हमने मूसा के पास वही भेजी कि (बैठे क्या हो) तुम भी अपनी छड़ी डाल दो तो क्या देखते हैं कि वह छड़ी उनके बनाए हुए (झूठे साँपों को) एक एक करके निगल रही है (117)

अल किस्सा हक़ बात तो जम के बैठी और उनकी सारी कारस्तानी मटियामेट हो गई (118)
पस फिरआऊन और उसके तरफदार सब के सब इस अखाड़े मे हारे और ज़लील व रूसवा हो के पलटे (119)

और जादूगर सब मूसा के सामने सजदे में गिर पड़े (120)

और (आजिज़ी से) बोले हम सारे जहाँन के परवरदिगार पर ईमान लाए (121)

जो मूसा व हारून का परवरदिगार है (122)

फिरआऊन ने कहा (हाए) तुम लोग मेरी इजाज़त के क़ब्ल (पहले) उस पर ईमान ले आए ये ज़रूर तुम लोगों की मक्कारी है जो तुम लोगों ने उस शहर में फैला रखी है ताकि उसके बाशिन्दों को यहाँ से निकाल कर बाहर करो पस तुम्हें अन क़रीब ही उस शरारत का मज़ा मालूम हो जाएगा (123)

मै तो यक़ीनन तुम्हारे (एक तरफ के) हाथ और दूसरी तरफ के पॉव कटवा डालूँगा फिर तुम सबके सब को सूली दे दूँगा (124)

जादूगर कहने लगे हम को तो (आख़िर एक रोज़) अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना (मर जाना) है (125)

तू हमसे उसके सिवा और काहे की अदावत रखता है कि जब हमारे पास अल्लाह की निशानियाँ आयी तो हम उन पर ईमान लाए (और अब तो हमारी ये दुआ है कि) ऐ हमारे परवरदिगार हम पर सब्र (का मेंह बरसा) (126)

और हमने अपनी फरमाबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और फिरआऊन की क़ौम के चन्द सरदारों ने (फिरआऊन) से कहा कि क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को उनकी हालत पर छोड़ देंगे कि मुल्क में फ़साद करते फिरे और आपके और आपके अल्लाहओं (की परसतिश) को छोड़ बैठें- फिरआऊन कहने लगा (तुम घबराओ नहीं) हम अनक़रीब ही उनके बेटों की क़त्ल करते हैं

और उनकी औरतों को (लौन्डियॉ बनाने के वास्ते) जिन्दा रखते हैं और हम तो उन पर हर तरह क़ाबू रखते हैं (127)
(ये सुनकर) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि (भाइयों) अल्लाह से मदद माँगों और सब्र करो सारी ज़मीन तो अल्लाह ही की है वह अपने बन्दों में जिसकी चाहे उसका वारिस (व मालिक) बनाए और ख़ातमा बिल ख़ैर तो सब परहेज़गार ही का है (128)

वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) तुम्हारे आने के क़ब्ल (पहले) ही से और तुम्हारे आने के बाद भी हम को तो बराबर तकलीफ ही पहुँच रही है (आख़िर कहाँ तक सब्र करें) मूसा ने कहा अनकरीब ही तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक़ करेगा और तुम्हें (उसका जानशीन) बनाएगा फिर देखेगा कि तुम कैसा काम करते हो (129)

और बेशक हमने फिरआऊन के लोगों को बरसों से कहत और फलों की कम पैदावार (के अज़ाब) में गिरफ्तार किया ताकि वह इबरत हासिल करें (130)

तो जब उन्हें कोई राहत मिलती तो कहने लगते कि ये तो हमारे लिए सज़ावार ही है और जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती तो मूसा और उनके साथियों की बदशुगूनी समझते देखो उनकी बदशुगूनी तो अल्लाह के हा (लिखी जा चुकी) थी मगर बहुतेरे लोग नही जानते हैं (131)

और फिरआऊन के लोग मूसा से एक मरतबा कहने लगे कि तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जितनी निशानियाँ लाओ मगर हम तुम पर किसी तरह ईमान नहीं लाएँगें (132)

तब हमने उन पर (पानी को) तूफान और टिड्डियाँ और जुएँ और मेंढ़कों और खून (का अज़ाब भेजा कि सब जुदा जुदा (हमारी कुदरत की) निशानियाँ थी उस पर भी वह लोग तकब्बुर ही करते रहें और वह लोग गुनेहगार तो थे ही (133)

(और जब उन पर अज़ाब आ पड़ता तो कहने लगते कि ऐ मूसा तुम से जो अल्लाह ने (क़बूल दुआ का) अहद किया है उसी की उम्मीद पर अपने अल्लाह से दुआ माँगों और अगर तुमने हम से अज़ाब को टाल दिया तो हम ज़रूर भेज देगें (134)

फिर जब हम उनसे उस वक्त के वास्ते जिस तक वह ज़रूर पहुँचते अज़ाब को हटा लेते तो फिर फौरन बद अहदी करने लगते (135)

तब आख़िर हमने उनसे (उनकी शरारत का) बदला लिया तो चूँकि वह लोग हमारी आयतों को झुटलाते थे और उनसे ग़ाफिल रहते थे हमने उन्हें दरिया में डुबो दिया (136)

और जिन बेचारों को ये लोग कमज़ोर समझते थे उन्हीं को (मुल्क शाम की) ज़मीन का जिसमें हमने (ज़रखेज़ होने की) बरकत दी थी उसके पूरब पच्छिम (सब) का वारिस (मालिक) बना दिया और चूँकि बनी इसराईल नें (फिरआऊन के ज़ालिमों) पर सब्र किया था इसलिए तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा (जो उसने बनी इसराइल से किया था) पूरा हो गया और जो कुछ फिरआऊन और उसकी क़ौम के लोग करते थे और जो ऊँची ऊँची इमारते बनाते थे सब हमने बरबाद कर दी (137)

और हमने बनी ईसराइल को दरिया के उस पार उतार दिया तो एक ऐसे लोगों पर से गुज़रे जो अपने (हाथों से बनाए हुए) बुतों की परसतिश पर जमा बैठे थे (तो उनको देख कर बनी ईसराइल से) कहने लगे ऐ मूसा जैसे उन लोगों के माबूद (बुत) हैं वैसे ही हमारे लिए भी एक माबूद बनाओ मूसा ने जवाब दिया कि तुम लोग जाहिल लोग हो (138)

(अरे कमबख़्तो) ये लोग जिस मज़हब पर हैं (वह यक़ीनी बरबाद होकर रहेगा) और जो अमल ये लोग कर रहे हैं (वह सब मिटिया मेट हो जाएगा) (139)

(मूसा ने ये भी) कहा क्या तुम्हारा ये मतलब है कि अल्लाह को छोड़कर मै दूसरे को तुम्हारा माबूद तलाश करू (140)

हालॉकि उसने तुमको सारी खुदाई पर फज़ीलत दी है (ऐ बनी इसराइल वह वक्त याद करो) जब हमने तुमको फिरआऊन के लोगों से नजात दी जब वह लोग तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें पहुँचाते थे तुम्हारे बेटों को तो (चुन चुन कर) क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (लौन्डियॉ बनाने के वास्ते ज़िन्दा रख छोड़ते) और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे (सब्र की) सख़्त आज़माइश थी (141)

और हमने मूसा से तौरैत देने के लिए तीस रातों का वायदा किया और हमने उसमें दस रोज़ बढ़ाकर पूरा कर दिया ग़रज़ उसके परवरदिगार का वायदा चालीस रात में पूरा हो गया और (चलते वक्त) मूसा ने अपने भाई हारून कहा कि तुम मेरी क़ौम में मेरे जानशीन रहो और उनकी इसलाह करना और फसाद करने वालों के तरीक़े पर न चलना (142)

और जब मूसा हमारा वायदा पूरा करते (कोहेतूर पर) आए और उनका परवरदिगार उनसे हम कलाम हुआ तो मूसा ने अर्ज़ किया कि अल्लाहया तू मेझे अपनी एक झलक दिखला दे कि मैं तूझे देखूँ अल्लाह ने फरमाया तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते मगर हॉ उस पहाड़ की तरफ देखो (हम उस पर अपनी तजल्ली डालते हैं) पस अगर (पहाड़) अपनी जगह पर क़ायम रहे तो समझना कि अनक़रीब मुझे भी देख लोगे (वरना नहीं) फिर जब उनके परवरदिगार ने पहाड़ पर तजल्ली डाली तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े फिर जब होश में आए तो कहने लगे

ख़ुदा वन्दा तू (देखने दिखाने से) पाक व पाकीज़ा है-मैने तेरी बारगाह में तौबा की और मै सब से पहले तेरी अदम रवायत का यक़ीन करता हूँ (143)

अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा मैने तुमको तमाम लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और हम कलामी (का दरजा देकर) बरगूज़ीदा किया है तब जो (किताब तौरैत) हमने तुमको अता की है उसे लो और शुक्रगुज़ार रहो (144)

और हमने (तौरैत की) तख़्तियों में मूसा के लिए हर तरह की नसीहत और हर चीज़ का तफसीलदार बयान लिख दिया था तो (ऐ मूसा) तुम उसे मज़बूती से तो (अमल करो) और अपनी क़ौम को हुक्म दे दो कि उसमें की अच्छी बातों पर अमल करें और बहुत जल्द तुम्हें बदकिरदारों का घर दिखा दूँगा (कि कैसे उजड़ते हैं) (145)

जो लोग (अल्लाह की) ज़मीन पर नाहक़ अकड़ते फिरते हैं उनको अपनी आयतों से बहुत जल्द फेर दूँगा और मै क्या फेरूँगा अल्लाह (उसका दिल ऐसा सख़्त है कि) अगर दुनिया जहॉन के सारे मौजिज़े भी देखते तो भी ये उन पर इमान न लाएगें और (अगर) सीधा रास्ता भी देख पाएँ तो भी अपनी राह न जाएगें और अगर गुमराही की राह देख लेगें तो झटपट उसको अपना तरीक़ा बना लेगें ये कजरवी इस सबब से हुयी कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उनसे ग़फलत करते रहे (146)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत की हुज़ूरी को झूठलाया उनका सब किया कराया अकारत हो गया, उनको बस उन्हीं आमाल की जज़ा या सज़ा दी जाएगी जो वह करते थे (147)

और मूसा की क़ौम ने (कोहेतूर पर) उनके जाने के बाद अपने ज़ेवरों को (गलाकर) एक बछड़े की मूरत बनाई (यानि) एक जिस्म जिसमें गाए की सी आवाज़ थी (अफसोस) क्या उन लोगों ने इतना भी न देखा कि वह न तो उनसे बात ही कर सकता और न किसी तरह की हिदायत ही कर सकता है (खुलासा) उन लोगों ने उसे (अपनी माबूद बना लिया) (148)

और आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे और जब वह पछताए और उन्होने अपने को यक़ीनी गुमराह देख लिया तब कहने लगे कि अगर हमारा परदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हमारा क़ुसूर न माफ़ करेगा तो हम यक़ीनी घाटा उठाने वालों में हो जाएगें (149)

और जब मूसा पलट कर अपनी क़ौम की तरफ आए तो (ये हालत देखकर) रंज व गुस्से में (अपनी क़ौम से) कहने लगे कि तुम लोगों ने मेरे बाद बहुत बुरी हरकत की-तुम लोग अपने परवरदिगार के हुक्म (मेरे आने में) किस कदर जल्दी कर बैठे और (तौरैत की) तख़्तियों को फेंक दिया और अपने भाई (हारून) के सर (के बालों को पकड़ कर अपनी तर फ खींचने लगे) उस पर हारून ने कहा

ऐ मेरे मांजाए (भाई) मै क्या करता क़ौम ने मुझे हक़ीर समझा और (मेरा कहना न माना) बल्कि क़रीब था कि मुझे मार डाले तो मुझ पर दुश्मनों को न हँसवाइए और मुझे उन ज़ालिम लोगों के साथ न करार दीजिए (150)

तब) मूसा ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाखि़ल कर और तू सबसे बढ़के रहम करने वाला है (151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को (अपना माबूद) बना लिया उन पर अनक़रीब ही उनके परवरदिगार की तरफ से अज़ाब नाज़िल होगा और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत (उसके अलावा) और हम बोहतान बॉधने वालों की ऐसी ही सज़ा करते हैं (152)

और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और इमान लाए तो बेशक तुम्हारा परवरदिगार तौबा के बाद ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है (153)

और जब मूसा का गुस्सा ठण्डा हुआ तो (तौरैत) की तख़्तियों को (ज़मीन से) उठा लिया और तौरैत के नुस्खे में जो लोग अपने परवरदिगार से डरते है उनके लिए हिदायत और रहमत है (154)

और मूसा ने अपनी क़ौम से हमारा वायदा पूरा करने को (कोहतूर पर ले जाने के वास्ते) सत्तर आदमियों को चुना फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो हज़रत मूसा ने अर्ज़ किया परवरदिगार अगर तू चाहता तो मुझको और उन सबको पहले ही हलाक़ कर डालता क्या हम में से चन्द बेवकूफ़ों की करनी की सज़ा में हमको हलाक़ करता है ये तो सिर्फ तेरी आज़माइश थी तू जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत दे तू ही हमारा मालिक है तू ही हमारे कुसूर को माफ कर और हम पर रहम कर और तू तो तमाम बख़्शने वालों से कहीं बेहतर है (155)

और तू ही इस दुनिया (फ़ानी) और आख़िरत में हमारे वास्ते भलाई के लिए लिख ले हम तेरी ही तरफ रूझू करते हैं अल्लाह ने फरमाया जिसको मैं चाहता हूँ (मुस्तहक़ समझकर) अपना अज़ाब पहुँचा देता हूँ और मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हैं मै तो उसे बहुत जल्द ख़ास उन लोगों के लिए लिख दूँगा (जो बुरी बातों से) बचते रहेंगे और ज़कात दिया करेंगे और जो हमारी बातों पर ईमान रखा करेंगें (156)

(यानि) जो लोग हमारे बनी उल उम्मी पैग़म्बर के क़दम बा क़दम चलते हैं जिस (की बशारत) को अपने हॉ तौरैत और इन्जील में लिखा हुआ पाते है (वह नबी) जो अच्छे काम का हुक्म देता है और बुरे काम से रोकता है और जो पाक व पाकीज़ा चीज़े तो उन पर हलाल और नापाक गन्दी चीज़े उन पर हराम कर देता है और (सख़्त एहकाम का) बोझ जो उनकी गर्दन पर था और वह

फन्दे जो उन पर (पड़े हुए) थे उनसे हटा देता है पस (याद रखो कि) जो लोग (नबी मोहम्मद) पर इमान लाए और उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की और उस नूर (क़ुरान) की पैरवी की जो उसके साथ नाज़िल हुआ है तो यही लोग अपनी दिली मुरादे पाएँगें (157)

(ऐ रसूल) तुम (उन लोगों से) कह दो कि लोगों में तुम सब लोगों के पास उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ जिसके लिए ख़ास सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत (हुकूमत) है उसके सिवा और कोई माबूद नहीं वही ज़िन्दा करता है वही मार डालता है पस (लोगों) अल्लाह और उसके रसूल नबी उल उम्मी पर ईमान लाओ जो (ख़ुद भी) ख़ुदा पर और उसकी बातों पर (दिल से) ईमान रखता है और उसी के क़दम बा क़दम चलो ताकि तुम हिदायत पाओ (158)

और मूसा की क़ौम के कुछ लोग ऐसे भी है जो हक़ बात की हिदायत भी करते हैं और हक़ के (मामलात में) इन्साफ़ भी करते हैं (159)

और हमने बनी ईसराइल के एक एक दादा की औलाद को जुदा जुदा बारह गिरोह बना दिए और जब मूसा की क़ौम ने उनसे पानी मॉगा तो हमने उनके पास वही भेजी कि तुम अपनी छड़ी पत्थर पर मारो (छड़ी मारना था) कि उस पत्थर से पानी के बारह चश्मे फूट निकले और ऐसे साफ साफ अलग अलग कि हर क़बीले ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया और हमने बनी ईसराइल पर अब्र (बादल) का साया किया और उन पर मन व सलवा (सी नेअमत) नाज़िल की (लोगों) जो पाक (पाकीज़ा) चीज़े तुम्हें दी हैं उन्हें (शौक़ से खाओ पियो) और उन लोगों ने (नाफरमानी करके) कुछ हमारा नहीं बिगाड़ा बल्कि अपना आप ही बिगाड़ते हैं (160)

और जब उनसे कहा गया कि उस गाँव में जाकर रहो सहो और उसके मेवों से जहाँ तुम्हारा जी चाहे (शौक़ से) खाओ (पियो) और मुँह से हुतमा कहते और सजदा करते हुए दरवाज़े में दाखिल हो तो हम तुम्हारी ख़ताए बख़्श देगें और नेकी करने वालों को हम कुछ ज़्यादा ही देगें (161)

तो ज़ालिमों ने जो बात उनसे कही गई थी उसे बदल कर कुछ और कहना शुरू किया तो हमने उनकी शरारतों की बदौलत उन पर आसमान से अज़ाब भेज दिया (162)

और (ऐ रसूल) उनसे ज़रा उस गाँव का हाल तो पूछो जो दरिया के किनारे वाक़ऐ था जब ये लोग उनके बुर्ज़ुग शुम्बे (सनीचर) के दिन ज़्यादती करने लगे कि जब उनका शुम्बे (वाला इबादत का) दिन होता तब तो मछलियाँ सिमट कर उनके सामने पानी पर उभर के आ जाती और जब उनका शुम्बा (वाला इबादत का) दिन न होता तो मछलियॉ उनके पास ही न फटकतीं और चूँकि ये लोग बदचलन थे उस दरजे से हम भी उनकी यूँ ही आज़माइश किया करते थे (163)

और जब उनमें से एक जमाअत ने (उन लोगों में से जो शुम्बे के दिन शिकार को मना करते थे)

कहा कि जिन्हें अल्लाह हलाक् करना या सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करना चाहता है उन्हें (बेफायदे) क्यो नसीहत करते हो तो वह कहने लगे कि फक्त तुम्हारे परवरदिगार में (अपने को) इल्ज़ाम से बचाने के लिए शायद इसलिए कि ये लोग परहेज़गारी एख़्तियार करें (164)

फिर जब वह लोग जिस चीज़ की उन्हें नसीहत की गई थी उसे भूल गए तो हमने उनको तो तजावीज़ (नजात) दे दी जो बुरे काम से लोगों को रोकते थे और जो लोग ज़ालिम थे उनको उनकी बद चलनी की वजह से बड़े अज़ाब में गिरफ्तार किया (165)

फिर जिस बात की उन्हें मुमानिअत (रोक) की गई थी जब उन लोगों ने उसमें सरकशाी की तो हमने हुक्म दिया कि तुम ज़लील और राएन्दे (धुत्कारे) हुए बन्दर बन जाओ (और वह बन गए) (166)

(ऐ रसूल वह वक्त याद दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने पुकार पुकार के (बनी ईसराइल से कह दिया था कि वह क्यामत तक उन पर ऐसे हाकिम को मुसल्लत देखेगा जो उन्हें बुरी बुरी तकलीफें देता रहे क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख़्शने वाला (मेहरबान) भी है (167)

और हमने उनको रूए ज़मीन में गिरोह गिरोह तितिर बितिर कर दिया उनमें के कुछ लोग तो नेक हैं और कुछ लोग और तरह के (बदकार) हैं और हमने उन्हें सुख और दुख (दोनो तरह) से आज़माया ताकि वह (शरारत से) बाज़ आए (168)

फिर उनके बाद कुछ जानशीन हुए जो किताब (ख़ुदा तौरैत) के तो वारिस बने (मगर लोगों के कहने से एहकामे अल्लाह को बदलकर (उसके ऐवज़) नापाक कमीनी दुनिया के सामान ले लेते हैं (और लुत्फ तो ये है) कहते हैं कि हम तो अनक़रीब बख़्श दिए जाएँगें (और जो लोग उन पर तान करते हैं) अगर उनके पास भी वैसा ही (दूसरा सामान आ जाए तो उसे ये भी न छोड़े और) ले ही लें क्या उनसे किताब (अल्लाह तौरैत) का एहदो पैमान नहीं लिया गया था कि अल्लाह पर सच के सिवा (झूठ कभी) नहीं कहेगें और जो कुछ उस किताब में है उन्होनें (अच्छी तरह) पढ़ लिया है और आख़िर का घर तो उन्हीं लोगों के वास्ते ख़ास है जो परहेज़गार हैं तो क्या तुम (इतना भी नहीं समझते) (169)

और जो लोग किताब (ख़ुदा) को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं (उन्हें उसका सवाब ज़रूर मिलेगा क्योंकि) हम हरगिज़ नेकोकारो का सवाब बरबाद नहीं करते (170)

तो (ऐ रसूल यहूद को याद दिलाओ) जब हम ने उन (के सरों) पर पहाड़ को इस तरह लटका दिया कि गोया साएबान (छप्पर) था और वह लोग समझ चुके थे कि उन पर अब गिरा और हमने

उनको हुक्म दिया कि जो कुछ हमने तुम्हें अता किया है उसे मज़बूती से पकड़ लो और जो कुछ उसमें लिखा है याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ (171)

और उसे रसूल वह वक़्त भी याद (दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम की औलाद से बस्तियों से (बाहर निकाल कर) उनकी औलाद से खुद उनके मुक़ाबले में एक़रार कर लिया (पूछा) कि क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम उसके गवाह हैं ये हमने इसलिए कहा कि ऐसा न हो कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे (172)

या ये कह बैठो कि (हम क्या करें) हमारे तो बाप दादाओं ही ने पहले शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे (कि) उनके बाद दुनिया में आए तो क्या हमें उन लोगों के जुर्म की सज़ा में हलाक करेगा जो पहले ही बातिल कर चुके (173)

और हम यूँ अपनी आयतों को तफसीलदार बयान करते हैं और ताकि वह लोग (अपनी ग़लती से) बाज़ आएँ (174)

और (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुना दो जिसे हमने अपनी आयतें अता की थी फिर वह उनसे निकल भागा तो शैतान ने उसका पीछा पकड़ा और आख़िरकार वह गुमराह हो गया (175)

और अगर हम चाहें तो हम उसे उन्हें आयतों की बदौलत बुलन्द मरतबा कर देते मगर वह तो ख़ुद ही पस्ती (नीचे) की तरफ झुक पड़ा और अपनी नफसानी ख़्वाहिश का ताबेदार बन बैठा तो उसकी मसल है कि अगर उसको धुत्कार दो तो भी ज़बान निकाले रहे और उसको छोड़ दो तो भी ज़बान निकले रहे ये मसल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (ऐ रसूल) ये क़िस्से उन लोगों से बयान कर दो ताकि ये लोग खुद भी ग़ौर करें (176)

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है उनकी भी क्या बुरी मसल है और अपनी ही जानों पर सितम ढाते रहे (177)

राह पर बस वही शख़्स है जिसकी अल्लाह हिदायत करे और जिनको गुमराही में छोड़ दे तो वही लोग घाटे में हैं (178)

और गोया हमने (अल्लाह) बहुतेरे जिन्नात और आदमियों को जहन्नुम के वास्ते पैदा किया और उनके दिल तो हैं (मगर कसदन) उन से देखते ही नहीं और उनके कान भी है (मगर) उनसे सुनने का

काम ही नहीं लेते (खुलासा) ये लोग गोया जानवर हैं बल्कि उनसे भी कहीं गए गुज़रे हुए यही लोग (अमूर हक़) से बिल्कुल बेख़बर हैं (179)

और अच्छे (अच्छे) नाम अल्लाह ही के ख़ास हैं तो उसे उन्हीं नामों में पुकारो और जो लोग उसके नामों में कुफ्र करते हैं उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दो और वह बहुत जल्द अपने करतूत की सज़ाएँ पाएँगें (180)

और हमारी मख़लूक़ात से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दीने हक़ की हिदायत करते हैं और हक़ से इन्साफ़ भी करते हैं (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया हम उन्हें बहुत जल्द इस तरह आहिस्ता आहिस्ता (जहन्नुम में) ले जाएँगें कि उन्हें ख़बर भी न होगी (182)

और मैं उन्हें (दुनिया में) ढील दूँगा बेशक मेरी तद्बीर (पुख़्ता और) मज़बूत है (183)

क्या उन लोगों ने इतना भी ख़्याल न किया कि आख़िर उनके रफीक़ (मोहम्मद) को कुछ जुनून तो नहीं वह तो बस खुल्लम खुल्ला (अज़ाबे अल्लाह से) डराने वाले हैं (184)

क्या उन लोगों ने आसमान व ज़मीन की हुकूमत और अल्लाह की पैदा की हुयी चीज़ों में ग़ौर नहीं किया और न इस बात में कि शायद उनकी मौत क़रीब आ गई हो फिर इतना समझाने के बाद (भला) किस बात पर ईमान लाएँगें (185)

जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे फिर उसका कोई राहबर नहीं और उन्हीं की सरकशी (व शरारत) में छोड़ देगा कि सरगरदाँ रहें (186)

(ऐ रसूल) तुमसे लोग क़यामत के बारे में पूछा करते हैं कि कहीं उसका कोई वक्त भी तय है तुम कह दो कि उसका इल्म बस फक़त पररवदिगार ही को है वही उसके वक्त मुअय्युन पर उसको ज़ाहिर कर देगा। वह सारे आसमान व ज़मीन में एक कठिन वक्त होगा वह तुम्हारे पास पस अचानक आ जाएगी तुमसे लोग इस तरह पूछते हैं गोया तुम उनसे बखूबी वाक़िफ हो तुम (साफ) कह दो कि उसका इल्म बस अल्लाह ही को है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते (187)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै ख़ुद अपना आप तो एख़तियार रखता ही नहीं न नफ़े का न ज़रर का मगर बस वही अल्लाह जो चाहे और अगर (बग़ैर अल्लाह के बताए) ग़ैब को जानता होता तो यक़ीनन मै अपना बहुत सा फ़ायदा कर लेता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ भी न पहुँचती मै तो सिर्फ ईमानदारों को (अज़ाब से डराने वाला) और वेहशत की खुशख़बरी देने वाला हूँ (188)

वह अल्लाह ही तो है जिसने तुमको एक शख़्स (आदम) से पैदा किया और उसकी बची हुयी मिट्टी से उसका जोड़ा भी बना डाला ताकि उसके साथ रहे सहे फिर जब इन्सान अपनी बीबी से हम बिस्तरी करता है तो बीबी एक हलके से हमल से हमला हो जाती है फिर उसे लिए चलती फिरती है फिर जब वह (ज़्यादा दिन होने से बोझल हो जाती है तो दोनो (मिया बीबी) अपने परवरदिगार अल्लाह से दुआ करने लगे कि अगर तो हमें नेक फरज़न्द अता फरमा तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार होगें (189)

फिर जब ख़ुदा ने उनको नेक (फरज़न्द) अता फ़रमा दिया तो जो (औलाद) अल्लाह ने उन्हें अता किया था लगे उसमें ख़ुदा का शरीक बनाने तो ख़ुदा (की शान) शिर्क से बहुत ऊँची है (190)

क्या वह लोग ख़ुदा का शरीक ऐसों को बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह ख़ुद (ख़ुदा के) पैदा किए हुए हैं (191)

और न उनकी मदद की कुदरत रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं (192)

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओंगे भी तो ये तुम्हारी पैरवी नहीं करने के तुम्हारे वास्ते बराबर है ख़्वाह (चाहे) तुम उनको बुलाओ या तुम चुपचाप बैठे रहो (193)

बेशक वह लोग जिनकी तुम ख़ुदा को छोड़कर हाजत करते हो वह (भी) तुम्हारी तरह (अल्लाह के) बन्दे हैं भला तुम उन्हें पुकार के देखो तो अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हारी कुछ सुन लें (194)

क्या उनके ऐसे पॉव भी हैं जिनसे चल सकें या उनके ऐसे हाथ भी हैं जिनसे (किसी चीज़ को) पकड़ सके या उनकी ऐसी ऑखे भी है जिनसे देख सकें या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुन सकें (ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि तुम अपने बनाए हुए शरीको को बुलाओ फिर सब मिलकर मुझ पर दॉव चले फिर (मुझे) मोहलत न दो (195)

(फिर देखो मेरा क्या बना सकते हो) बेशक मेरा मालिक व मुमताज़ तो बस अल्लाह है जिस ने किताब क़ुरान को नाज़िल फरमाया और वही (अपने) नेक बन्दों का हाली (मददगार) है (196)

और वह लोग (बुत) जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (अपनी मदद को) पुकारते हो न तो वह तुम्हारी मदद की कुदरत रखते हैं और न ही अपनी मदद कर सकते हैं (197)

और अगर उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएगा भी तो ये सुन ही नहीं सकते और तू तो समझता है कि वह तुझे (ऑखें खोले) देख रहे हैं हालॉकि वह देखते नहीं (198)

(ऐ रसूल) तुम दरगुज़र करना एख़्तियार करो और अच्छे काम का हुक्म दो और जाहिलों की तरफ से मुह फेर लो (199)

अगर शैतान की तरफ से तुम्हारी (उम्मत के) दिल में किसी तरह का (वसवसा (शक) पैदा हो तो अल्लाह से पनाह माँगों (क्योंकि) उसमें तो शक ही नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (200)

बेशक लोग परहेज़गार हैं जब भी उन्हें शैतान का ख़्याल छू भी गया तो चौक पड़ते हैं फिर फौरन उनकी आँखें खुल जाती हैं (201)

उन काफिरों के भाई बन्द शैतान उनको (धर पकड़) गुमराही के तरफ घसीटे जाते हैं फिर किसी तरह की कोताही (भी) नहीं करते (202)

और जब तुम उनके पास कोई (ख़ास) मौजिज़ा नहीं लाते तो कहते हैं कि तुमने उसे क्यों नहीं बना लिया (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै तो बस इसी वही का पाबन्द हूँ जो मेरे परवरदिगार की तरफ से मेरे पास आती है ये (क़ुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (हक़ीकत) की दलीलें हैं (203)

और इमानदार लोगों के वास्ते हिदायत और रहमत हैं (लोगों) जब क़ुरान पढ़ा जाए तो कान लगाकर सुनो और चुपचाप रहो ताकि (इसी बहाने) तुम पर रहम किया जाए (204)

और अपने परवरदिगार को अपने जी ही में गिड़गिड़ा के और डर के और बहुत चीख़ के नहीं (धीमी) आवाज़ से सुबह व शाम याद किया करो और (उसकी याद से) ग़ाफिल बिल्कुल न हो जाओ (205)

बेशक जो लोग (फरिशते बग़ैरह) तुम्हारे परवरदिगार के पास मुक़र्रिब हैं और वह उसकी इबादत से सर कशी नही करते और उनकी तसबीह करते हैं और उसका सजदा करते हैं (206) सजदा 1

`8 सूरह अनफ़ाल

सूरह अनफ़ाल मदीना में नाज़िल हुई और इसमें पच्हत्तर (75) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) तुम से लोग अनफाल (माले ग़नीमत) के बारे में पूछा करते हैं तुम कह दो कि अनफाल मख़सूस अल्लाह और रसूल के वास्ते है तो ख़ुदा से डरो (और) अपने बाहमी (आपसी) मामलात की असलाह करो और अगर तुम सच्चे (ईमानदार) हो तो ख़ुदा की और उसके रसूल की इताअत करो (1)

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल हिल जाते हैं और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके इमान को और भी ज़्यादा कर देती हैं और वह लोग बस अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं (2)

नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया हैं उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं (3)

यही तो सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के लिए उनके परवरदिगार के हॉ (बड़े बड़े) दरजे हैं और बख़्शिश और इज़्ज़त और आबरू के साथ रोज़ी है (ये माले ग़नीमत का झगड़ा वैसा ही है) (4)

जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें बिल्कुल ठीक (मसलहत से) तुम्हारे घर से (जंग बदर) में निकाला था और मोमिनीन का एक गिरोह (उससे) नाखुश था (5)

कि वह लोग हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी तुमसे (ख़्वाह माख़्वाह) सच्ची बात में झगड़तें थें और इस तरह (करने लगे) गोया (ज़बरदस्ती) मौत के मुँह में ढकेले जा रहे हैं (6)

और उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हैं और (ये वक्त था) जब ख़ुदा तुमसे वायदा कर रहा था कि (कुफ्फार मक्का) दो जमाअतों में से एक तुम्हारे लिए ज़रूरी हैं और तुम ये चाहते थे कि कमज़ोर जमाअत तुम्हारे हाथ लगे (ताकि बग़ैर लड़े भिड़े माले ग़नीमत हाथ आ जाए) और अल्लाह ये चाहता था कि अपनी बातों से हक़ को साबित (क़दम) करें और काफिरों की जड़ काट डाले (7)

ताकि हक़ को (हक़) साबित कर दे और बातिल का मिटियामेट कर दे अगर चे गुनाहगार (कुफ्फार उससे) नाखुश ही क्यों न हो (8)
(ये वह वक्त था) जब तुम अपने परवदिगार से फरियाद कर रहे थे उसने तुम्हारी सुन ली और जवाब दे दिया कि मैं तुम्हारी लगातार हज़ार फरिश्तों से मदद करूँगा (9)

और (ये इमदाद ग़ैबी) ख़ुदा ने सिर्फ तुम्हारी ख़ातिर (खुशी) के लिए की थी और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएँ और (याद रखो) मदद ख़ुदा के सिवा और कहीं से (कभी) नहीं होती बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (10)

ये वह वक्त था जब अपनी तरफ से इत्मिनान देने के लिए तुम पर नींद को ग़ालिब कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरस रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक (पाकीज़ा कर दे और तुम से शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और पानी से (बालू जम जाए) और तुम्हारे क़दम ब क़दम (अच्छी तरह) जमाए रहे (11)

(ऐ रसूल ये वह वक्त था) जब तुम्हारा परवरदिगार फरिश्तों से फरमा रहा था कि मै यकीनन तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो मै बहुत जल्द काफिरों के दिलों में (तुम्हारा रौब) डाल दूँगा (पस फिर क्या है अब) तो उन कुफ्फार की गर्दनों पर मारो और उनकी पोर पोर को चटिया कर दो (12)

ये (सज़ा) इसलिए है कि उन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ की और जो शख़्स (भी) ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा तो (याद रहें कि) ख़ुदा बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है (13)

(काफिरों दुनिया में तो) लो फिर उस (सज़ा का चखो और (फिर आख़िर में तो) काफिरों के वास्ते जहन्नुम का अज़ाब ही है (14)

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कुफ़्फ़ार से मैदाने जंग में मुक़ाबला हुआ तो (ख़बरदार) उनकी तरफ पीठ न करना (15)

(याद रहे कि) उस शख़्स के सिवा जो लड़ाई वास्ते कतराए या किसी जमाअत के पास (जाकर) मौक़े पाए (और) जो शख़्स भी उस दिन उन कुफ़्फ़ार की तरफ पीठ फेरेगा वह यक़ीनी (हिर फिर के) अल्लाह के ग़जब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नुम ही हैं और वह क्या बुरा ठिकाना है (16)

और (मुसलमानों) उन कुफ़्फ़ार को कुछ तुमने तो क़त्ल किया नही बल्कि उनको तो ख़ुदा ने क़त्ल किया और (ऐ रसूल) जब तुमने तीर मारा तो कुछ तुमने नही मारा बल्कि ख़ुद ख़ुदा ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मोमिनीन पर खूब एहसान करे बेशक अल्लाह (सबकी) सुनता और (सब कुछ) जानता है (17)

ये तो ये अल्लाह तो काफिरों की मक्कारी का कमज़ोर कर देने वाला है (18)

(काफ़िर) अगर तुम ये चाहते हो (कि जो हक़ पर हो उसकी) फ़तेह हो (मुसलमानों की) फ़तेह भी तुम्हारे सामने आ मौजूद हुयी अब क्या ग़ुरूर बाक़ी है और अगर तुम (अब भी मुख़तलिफ़ इस्लाम) से बाज़ रहो तो तुम्हारे वास्ते बेहतर है और अगर कहीं तुम पलट पड़े तो (याद रहे) हम भी पलट पड़ेगें (और तुम्हें तबाह कर छोड़ देगें) और तुम्हारी जमाअत अगरचे बहुत ज़्यादा भी हो हरगिज़ कुछ काम न आएगी और ख़ुदा तो यक़ीनी मामिनीन के साथ है (19)

(ऐ ईमानदारों अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न मोड़ो जब तुम समझ रहे हो (20)

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओं जो (मुँह से तो) कहते थे कि हम सुन रहे हैं हालाकि वह सुनते (सुनाते ख़ाक) न थे (21)

इसमें शक नहीं कि ज़मीन पर चलने वाले तमाम हैवानात से बदतर अल्लाह के नज़दीक वह बहरे गूँगे (कुफ्फार) हैं जो कुछ नहीं समझते (22)

और अगर ख़ुदा उनमें नेकी (की बू भी) देखता तो ज़रूर उनमें सुनने की क़ाबलियत अता करता मगर ये ऐसे हैं कि अगर उनमें सुनने की क़ाबिलयत भी देता तो मुँह फेर कर भागते। (23)

ऐ ईमानदार जब तुम को हमारा रसूल (मोहम्मद) ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम अल्लाह और रसूल के हुक्म दिल से कुबूल कर लो और जान लो कि अल्लाह वह क़ादिर मुतलिक़ है कि आदमी और उसके दिल (इरादे) के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे (24)

और उस फितने से डरते रहो जो ख़ास उन्हीं लोगों पर नही पड़ेगा जिन्होने तुम में से ज़ुल्म किया (बल्कि तुम सबके सब उसमें पड़ जाओगे) और यक़ीन मानों कि अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है (25)

(मुसलमानों वह वक्त याद करो) जब तुम सर ज़मीन (मक्के) में बहुत कम और बिल्कुल बेबस थे उससे सहमे जाते थे कि कहीं लोग तुमको उचक न ले जाए तो अल्लाह ने तुमको (मदीने में) पनाह दी और ख़ास अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और तुम्हे पाक व पाकीज़ा चीजे़ खाने को दी ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो (26)

ऐ ईमानदारों न तो ख़ुदा और रसूल की (अमानत में) ख़्यानत करो और न अपनी अमानतों में ख़्यानत करो हालाँकि समझते बूझते हो (27)

और यक़ीन जानों कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारी आज़माइश (इम्तेहान) की चीजे़ हैं कि जो उनकी मोहब्बत में भी अल्लाह को न भूले और वह दीनदार है (28)

और यक़ीनन ख़ुदा के हाँ बड़ी मज़दूरी है ऐ ईमानदारों अगर तुम ख़ुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे वास्ते इम्तियाज़ पैदा करे देगा और तुम्हारी तरफ से तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा क़रार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और ख़ुदा बड़ा साहब फज़ल (व करम) है (29)

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब कुफ़्फ़ार तुम से फरेब कर रहे थे ताकि तुमको क़ैद कर लें या तुमको मार डाले तुम्हें (घर से) निकाल बाहर करे वह तो ये तद्बीर (चालाकी) कर रहे थे और ख़ुदा भी (उनके ख़िलाफ) तद्बीर कर रहा था (30)

और ख़ुदा तो सब तद्बीर करने वालों से बेहतर है और जब उनके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो बोल उठते हैं कि हमने सुना तो लेकिन अगर हम चाहें तो यक़ीनन ऐसा ही (क़रार) हम भी कह सकते हैं-तो बस अगलों के क़िस्से है (31)

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब उन काफिरों ने दुआएँ माँगीं थी कि ख़ुदा (वन्द) अगर ये (दीन इस्लाम) हक़ है और तेरे पास से (आया है) तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब ही नाज़िल फरमा (32)

हालाँकि जब तक तुम उनके दरम्यिान मौजूद हो अल्लाह उन पर अज़ाब नहीं करेगा और अल्लाह ऐसा भी नही कि लोग तो उससे अपने गुनाहो की माफी माँग रहे हैं और ख़ुदा उन पर नाज़िल फरमाए (33)

और जब ये लोग लोगों को मस्जिदुल हराम (ख़ान ए काबा की इबादत) से रोकते है तो फिर उनके लिए कौन सी बात बाक़ी है कि उन पर अज़ाब न नाज़िल करे और ये लोग तो ख़ानाए काबा के

मुतवल्ली भी नहीं (फिर क्यों रोकते है) इसके मुतवल्ली तो सिर्फ परहेज़गार लोग हैं मगर इन काफ़िरों में से बहुतेरे नहीं जानते (34)

और ख़ानाए काबे के पास सीटियॉ तालिया बजाने के सिवा उनकी नमाज ही क्या थी तो (ऐ काफिरों) जब तुम कुफ्र किया करते थे उसकी सज़ा में (पड़े) अज़ाब के मज़े चखो (35)

इसमें शक नहीं कि ये कुफ्फार अपने माल महज़ इस वास्ते खर्च करेगें फिर उसके बाद उनकी हसरत का बाइस होगा फिर आख़िर ये लोग हार जाएँगें और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया (क़यामत में) सब के सब जहन्नुम की तरफ हाके जाएँगें (36)

ताकि ख़ुदा पाक को नापाक से जुदा कर दे और नापाक लोगों को एक दूसरे पर रखके ढेर बनाए फिर सब को जहन्नुम में झोंक दे यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (37)

(ऐ रसूल) तुम काफिरों से कह दो कि अगर वह लोग (अब भी अपनी शरारत से) बाज़ रहें तो उनके पिछले कुसूर माफ कर दिए जाऍ और अगर फिर कहीं पलटें तो यक़ीनन अगलों के तरीके़ गुज़र चुके जो, उनकी सज़ा हुयी वही इनकी भी होगी (38)

मुसलमानों काफ़िरों से लड़े जाओ यहाँ तक कि कोई फसाद (बाक़ी) न रहे और (बिल्कुल सारी ख़ुदाई में) ख़ुदा की दीन ही दीन हो जाए फिर अगर ये लोग (फ़साद से) न बाज़ आऍ तो ख़ुदा उनकी कारवाइयों को ख़ूब देखता है (39)

और अगर सरताबी करें तो (मुसलमानों) समझ लो कि ख़ुदा यक़ीनी तुम्हारा मालिक है और वह क्या अच्छा मालिक है और क्या अच्छा मददगार है (40)

और जान लो कि जो कुछ तुम (माल लड़कर) लूटो तो उनमें का पॉचवॉ हिस्सा मख़सूस ख़ुदा और रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मिस्कीनों और परदेसियों का है अगर तुम अल्लाह पर और उस (ग़ैबी इमदाद) पर ईमान ला चुके हो जो हमने ख़ास बन्दे (मोहम्मद) पर फ़ैसले के दिन (जंग बदर में) नाज़िल की थी जिस दिन (मुसलमानों और काफिरों की) दो जमाअतें बाहम गुथ गयी थी और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है (41)

(ये वह वक्त था) जब तुम (मैदाने जंग में मदीने के) क़रीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद (दूर के) के नाके पर और (काफ़िले के) सवार तुम से नशेब में थे और अगर तुम एक दूसरे से (वक्त की तक़रीर का) वायदा कर लेते हो तो और वक्त पर गड़बड़ कर देते मगर (अल्लाह ने अचानक तुम लोगों को इकट्ठा कर दिया ताकि जो बात शदनी (होनी) थी वह पूरी कर दिखाए ताकि जो शख़्स हलाक (गुमराह) हो वह (हक़ की) हुज्जत तमाम होने के बाद हलाक हो और जो

ज़िन्दा रहे वह हिदायत की हुज्जत तमाम होने के बाद ज़िन्दा रहे और अल्लाह यक़ीनी सुनने वाला ख़बरदार है (42)

(ये वह वक्त था) जब ख़ुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था और अगर उनको तुम्हें ज़्यादा करते दिखलाता तुम यक़ीनन हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में झगड़ने लगते मगर अल्लाह ने इसे (बदनामी) से बचाया इसमें तो शक ही नहीं कि वह दिली ख़्यालात से वाक़िफ़ है (43)

(ये वह वक्त था) जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो ख़ुदा ने तुम्हारी ऑखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया और उनकी ऑखों में तुमको थोड़ा कर दिया ताकि अल्लाह को जो कुछ करना मंज़ूर था वह पूरा हो जाए और कुल बातों का दारोमदार तो अल्लाह ही पर है (44)

ऐ इमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो ख़बरदार अपने क़दम जमाए रहो और अल्लाह को बहुंत याद करते रहो ताकि तुम फलाह पाओ (45)

और ख़ुदा की और उसके रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम हिम्मत हारोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और (जंग की तकलीफ़ को) झेल जाओ (क्योंकि) अल्लाह तो यक़ीनन सब्र करने वालों का साथी है (46)

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो इतराते हुए और लोगों के दिखलाने के वास्ते अपने घरों से निकल खड़े हुए और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं और जो कुछ भी वह लोग करते हैं ख़ुदा उस पर (हर तरह से) अहाता किए हुए है (47)

और जब शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया और उनके कान में फ़ूॅक दिया कि लोगों में आज कोई ऐसा नहीं जो तुम पर ग़ालिब आ सके और मै तुम्हारा मददगार हूँ फिर जब दोनों लश्कर मुकाबिल हुए तो अपने उलटे पॉव भाग निकला और कहने लगा कि मै तो तुम से अलग हूँ मै वह चीज़ें देख रहा हूँ जो तुम्हें नहीं सूझती मैं तो अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह बहुत सख़्त अज़ाब वाला है (48)

(ये वक्त था) जब मुनाफिक़ीन और जिन लोगों के दिल में (कुफ्र का) मर्ज़ है कह रहे थे कि उन मुसलमानों को उनके दीन ने धोके में डाल रखा है (कि इतराते फिरते हैं हालॉकि जो शख़्स ख़ुदा पर भरोसा करता है (वह ग़ालिब रहता है क्योंकि) ख़ुदा तो यक़ीनन ग़ालिब और हिकमत वाला है (49)

और काश (ऐ रसूल) तुम देखते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल लेते थे और रूख़ और पुश्त (पीठ) पर कोड़े मारते थे और (कहते थे कि) अज़ाब जहन्नुम के मज़े चखों (50)

ये सज़ा उसकी है जो तुम्हारे हाथों ने पहले किया कराया है और अल्लाह बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म नहीं किया करता है (51)

(उन लोगों की हालत) क़ौमे फिरआऊन और उनके लोगों की सी है जो उन से पहले थे और ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो ख़ुदा ने भी उनके गुनाहों की वजह से उन्हें ले डाला बेशक अल्लाह ज़बरदस्त और बहुत सख़्त अज़ाब देने वाला है (52)

ये सज़ा इस वजह से (दी गई) कि जब कोई नेअमत अल्लाह किसी क़ौम को देता है तो जब तक कि वह लोग खुद अपनी कलबी हालत (न) बदलें अल्लाह भी उसे नहीं बदलेगा और ख़ुदा तो यक़ीनी (सब की सुनता) और सब कुछ जानता है (53)

(उन लोगों की हालत) क़ौम फिरआऊन और उन लोगों की सी है जो उनसे पहले थे और अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाते थे तो हमने भी उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक़ कर डाला और फिरआऊन की क़ौम को डुबा मारा और (ये) सब के सब ज़ालिम थे (54)

इसमें शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक जानवरों में कुफ़्फ़ार सबसे बदतरीन तो (बावजूद इसके) फिर ईमान नहीं लाते (55)

ऐ रसूल जिन लोगों से तुम ने एहद व पैमान किया था फिर वह लोग अपने एहद को हर बार तोड़ डालते है और (फिर ख़ुदा से) नहीं डरते (56)

तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हाथे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सख़्त गोश्माली दो कि) उनके साथ साथ उन लोगों का तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हत्थे चढ़ जाएं तो (ऐसी सजा दो की) उनके साथ उन लोगों को भी तितिर बितिर कर दो जो उन के पुश्त पर हो ताकि ये इबरत हासिल करें (57)

और अगर तुम्हें किसी क़ौम की ख़्यानत (एहद शिकनी(वादा ख़िलाफी)) का ख़ौफ हो तो तुम भी बराबर उनका एहद उन्हीं की तरफ से फेंक मारो (एहदो शिकन के साथ एहद शिकनी करो ख़ुदा हरगिज़ दग़ाबाजों को दोस्त नहीं रखता (58)

और कुफ़्फ़ार ये न ख़्याल करें कि वह (मुसलमानों से) आगे बढ़ निकले (क्योंकि) वह हरगिज़ (मुसलमानों को) हरा नहीं सकते (59)

और (मुसलमानों तुम कुफ्फार के मुकाबले के) वास्ते जहाँ तक तुमसे हो सके (अपने बाज़ू के) ज़ोर से और बँधे हुए घोड़े से लड़ाई का सामान मुहय्या करो इससे ख़ुदा के दुश्मन और अपने दुश्मन

और उसके सिवा दूसरे लोगों पर भी अपनी धाक बढ़ा लेगें जिन्हें तुम नहीं जानते हो मगर अल्लाह तो उनको जानता है और अल्लाह की राह में तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगें वह तुम पूरा पूरा भर पाओगें और तुम पर किसी तरह ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (60)

और अगर ये कुफ्फार सुलह की तरफ माएल हो तो तुम भी उसकी तरफ माएल हो और अल्लाह पर भरोसा रखो (क्योंकि) वह बेशक (सब कुछ) सुनता जानता है (61)

और अगर वह लोग तुम्हें फरेब देना चाहे तो (कुछ परवा नहीं) अल्लाह तुम्हारे वास्ते यक़ीनी काफी है-(ऐ रसूल) वही तो वह (अल्लाह) है जिसने अपनी ख़ास मदद और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की (62)

और उसी ने उन मुसलमानों के दिलों में बाहम ऐसी उलफ़त पैदा कर दी कि अगर तुम जो कुछ ज़मीन में है सब का सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलो में ऐसी उलफ़त पैदा न कर सकते मगर ख़ुदा ही था जिसने बाहम उलफत पैदा की बेशक वह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (63)

ऐ रसूल तुमको बस अल्लाह और जो मोमिनीन तुम्हारे ताबेए फरमान (फरमाबरदार) है काफी है (64)

ऐ रसूल तुम मोमिनीन को जिहाद के वास्ते आमादा करो (वह घबराए नहीं अल्लाह उनसे वायदा करता है कि) अगर तुम लोगों में के साबित क़दम रहने वाले बीस भी होगें तो वह दो सौ (काफिरों) पर ग़ालिब आ जायेगे और अगर तुम लोगों में से साबित कदम रहने वालों सौ होगें तो हज़ार (काफिरों) पर ग़ालिब आ जाएँगें इस सबब से कि ये लोग ना समझ हैं (65)

अब ख़ुदा ने तुम से (अपने हुक्म की सख़्ती में) तख़फ़ीफ (कमी) कर दी और देख लिया कि तुम में यक़ीनन कमज़ोरी है तो अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वाले सौ होगें तो दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगें और अगर तुम लोगों में से (ऐसे) एक हज़ार होगें तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और (जंग की तकलीफों को) झेल जाने वालों का अल्लाह साथी है (66)

कोई नबी जब कि रूए ज़मीन पर (काफिरों का) खून न बहाए उसके यहाँ क़ैदियों का रहना मुनासिब नहीं तुम लोग तो दुनिया के साज़ो सामान के ख़्वाहॉ (चाहने वाले) हो औॅर ख़ुदा (तुम्हारे लिए) आख़िरत की (भलाई) का ख्वाहॉ है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है (67)

और अगर अल्लाह की तरफ से पहले ही (उसकी) माफी का हुक्म आ चुका होता तो तुमने जो (बदर के क़ैदियों के छोड़ देने के बदले) फिदिया लिया था (68)

उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता तो (ख़ैर जो हुआ सो हुआ) अब तुमने जो माल ग़नीमत हासिल किया है उसे खाओ (और तुम्हारे लिए) हलाल तय्यब है और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (69)

ऐ रसूल जो क़ैदी तुम्हारे कब्ज़े में है उनसे कह दो कि अगर तुम्हारे दिलों में नेकी देखेगा तो जो (माल) तुम से छीन लिया गया है उससे कहीं बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हें बख़्श भी देगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (70)

और अगर ये लोग तुमसे फरेब करना चाहते है तो ख़ुदा से पहले ही फरेब कर चुके हैं तो (उसकी सज़ा में) ख़ुदा ने उन पर तुम्हें क़ाबू दे दिया और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार हिकमत वाला है (71)

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और अपने अपने जान माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को जगह दी और हर (तरह) उनकी ख़बर गीरी (मदद) की यही लोग एक दूसरे के (बाहम) सरपरस्त दोस्त हैं और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से कुछ सरोकार नहीं-यहाँ तक कि वह हिजरत एख़्तियार करें और (हॉ) मगर दीनी अम्र में तुम से मदद के ख़्वाहॉ हो तो तुम पर (उनकी मदद करना लाज़िम व वाजिब है मगर उन लोगों के मुक़ाबले में (नहीं) जिनमें और तुममें बाहम (सुलह का) एहदो पैमान है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (सबको) देख रहा है (72)

और जो लोग काफ़िर हैं वह भी (बाहम) एक दूसरे के सरपरस्त हैं अगर तुम (इस तरह) वायदा न करोगे तो रूए ज़मीन पर फ़ितना (फ़साद) बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद होगा (73)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और ख़ुदा की राह में लड़े भिड़े और जिन लोगों ने (ऐसे नाज़ुक वक्त में मुहाजिरीन को जगह ही और उनकी हर तरह ख़बरगीरी (मदद) की यही लोग सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के वास्ते मग़फिरत और इज़्ज़त व आबरु वाली रोज़ी है (74)

और जिन लोगों ने (सुलह हुदैबिया के) बाद ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वह लोग भी तुम्हीं में से हैं और साहबाने क़राबत ख़ुदा की किताब में बाहम एक दूसरे के (बनिस्बत औरों के) ज़्यादा हक़दार हैं बेशक ख़ुदा हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ हैं (75)

9 सूरह तौबा

सूरह तौबा मदीना में नाज़िल हुई और इसमें एक सौ उनतीस (129) आयतें हैं

(ऐ मुसलमानों) जिन मुशरिकों से तुम लोगों ने सुलह का एहद किया था अब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उनसे (एक दम) बेज़ारी है (1)

तो (ऐ मुशरिकों) बस तुम चार महीने (ज़ीकादा, जिल हिज्जा, मुहर्रम रजब) तो (चैन से बेख़तर) रूए ज़मीन में सैरो सियाहत (घूम फिर) कर लो और ये समझते रहे कि तुम (किसी तरह) ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते और ये भी कि ख़ुदा काफ़िरों को ज़रूर रूसवा करके रहेगा (2)

और ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन (तुम) लोगों को मुनादी की जाती है कि ख़ुदा और उसका रसूल मुशरिकों से बेज़ार (और अलग) है तो (मुशरिकों) अगर तुम लोगों ने (अब भी) तौबा की तो तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है और अगर तुम लोगों ने (इससे भी) मुँह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग ख़ुदा को हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बरी दे दो (3)

मगर (हाँ) जिन मुशरिकों से तुमने एहदो पैमान किया था फिर उन लोगों ने भी कभी कुछ तुमसे (वफ़ा एहद में) कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो तो उनके एहद व पैमान को जितनी मुद्दत के वास्ते मुक़र्रर किया है पूरा कर दो ख़ुदा परहेज़गारों को यक़ीनन दोस्त रखता है (4)

फिर जब हुरमत के चार महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिको को जहाँ पाओ (बे ताम्मुल) कत्ल करो और उनको गिरफ्तार कर लो और उनको क़ैद करो और हर घात की जगह में उनकी ताक में बैठो फिर अगर वह लोग (अब भी शिर्क से) बाज़ आएँ और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दे तो उनकी राह छोड़ दो (उनसे ताअरूज़ न करो) बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (5)

और (ऐ रसूल) अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मागें तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह ख़ुदा का कलाम सुन ले फिर उसे उसकी अमन की जगह वापस पहुँचा दो ये इस वजह से कि ये लोग नादान हैं (6)

(जब) मुशरिकीन ने ख़ुद एहद शिकनी (तोड़ा) की तो उन का कोई एहदो पैमान ख़ुदा के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक क्योंकर (क़ायम) रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने खानाए काबा के पास मुआहेदा किया था तो वह लोग (अपनी एहदो पैमान) तुमसे क़ायम रखना चाहें तो तुम भी

उन से (अपना एहद) क़ायम रखो बेशक अल्लाह (बद एहदी से) परहेज़ करने वालों को दोस्त रखता है (7)

(उनका एहद) क्योंकर (रह सकता है) जब (उनकी ये हालत है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा जाएँ तो तुम्हारे में न तो रिश्ते नाते ही का लिहाज़ करेगें और न अपने क़ौल व क़रार का ये लोग तुम्हें अपनी ज़बानी (जमा खर्च में) खुश कर देते हैं हालाँकि उनके दिल नहीं मानते और उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं (8)

और उन लोगों ने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत (दुनियावी फायदे) हासिल करके (लोगों को) उसकी राह से रोक दिया बेशक ये लोग जो कुछ करते हैं ये बहुत ही बुरा है (9)

ये लोग किसी मोमिन के बारे में न तो रिश्ता नाता ही कर लिहाज़ करते हैं और न क़ौल का क़रार का और (वाक़ई) यही लोग ज़्यादती करते हैं (10)

तो अगर (अभी मुशरिक से) तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम अपनी आयतों को वाक़िफ़कार लोगों के वास्ते तफ़सीलन बयान करते हैं (11)

और अगर ये लोग एहद कर चुकने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तुमको ताना दें तो तुम कुफ्ऱ के सरवर आवारा लोगों से खूब लड़ाई करो उनकी क़समें का हरगिज़ कोई एतबार नहीं ताकि ये लोग (अपनी शरारत से) बाज़ आएँ (12)

(मुसलमानों) भला तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला और रसूल को निकाल बाहर करना (अपने दिल में) ठान लिया था और तुमसे पहले छेड़ भी उन्होनें ही शुरू की थी क्या तुम उनसे डरते हो तो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो ख़ुदा उनसे कहीं बढ़ कर तुम्हारे डरने के क़ाबिल है (13)

इनसे (बेख़ौफ (ख़तर) लड़ो अल्लाह तुम्हारे हाथों उनकी सज़ा करेगा और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उन पर फतेह अता करेगा और इमानदार लोगों के कलेजे ठन्डे करेगा (14)

और उन मोनिनीन के दिल की कुदरतें जो (कुफ़्फ़ार से पहुचॅती है) दफ़ा कर देगा और ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा कुबूल करे और ख़ुदा बड़ा वाक़िफ़कार (और) हिकमत वाला है (15)

क्या तुमने ये समझ लिया है कि तुम (यूँ ही) छोड़ दिए जाओगे और अभी तक तो अल्लाह ने उन लोगों को मुमताज़ किया ही नहीं जो तुम में के (राहे ख़ुदा में) जिहाद करते हैं और ख़ुदा और

उसके रसूल और मोमेनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उससे बाख़बर है (16)

मुशरेकीन का ये काम नहीं कि जब वह अपने कुफ़्र का ख़ुद इक़रार करते है तो अल्लाह की मस्जिदों को (जाकर) आबाद करे यही वह लोग हैं जिनका किया कराया सब अकारत हुआ और ये लोग हमेशा जहन्नुम में रहेंगे (17)

ख़ुदा की मस्जिदों को बस सिर्फ वहीं शख़्स (जाकर) आबाद कर सकता है जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए और नमाज़ पढ़ा करे और ज़कात देता रहे और ख़ुदा के सिवा (और) किसी से न डरो तो अनक़रीब यही लोग हिदायत याफ़्ता लोगों मे से हो जाएँगें (18)

क्या तुम लोगों ने हाजियों की सक़ाई (पानी पिलाने वाले) और मस्जिदुल हराम (ख़ानाए काबा की आबादियों को उस शख़्स के हमसर (बराबर) बना दिया है जो अल्लाह और रोज़े आख़ेरत के दिन पर ईमान लाया और अल्लाह के राह में जेहाद किया ख़ुदा के नज़दीक तो ये लोग बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिम लोगों की हिदायत नहीं करता है (19)

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और (ख़ुदा के लिए) हिजरत एख़्तियार की और अपने मालों से और अपनी जानों से ख़ुदा की राह में जिहाद किया वह लोग ख़ुदा के नज़दीक दर्जे में कही बढ़ कर हैं और यही लोग (आला दर्जे पर) फायज़ होने वाले हैं (20)

उनका परवरदिगार उनको अपनी मेहरबानी और ख़ुशनूदी और ऐसे (हरे भरे) बाग़ों की ख़ुशख़बरी देता है जिसमें उनके लिए दाइमी ऐश व (आराम) होगा (21)

और ये लोग उन बाग़ों में हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा हमेशा) तक रहेंगे बेशक अल्लाह के पास तो बड़ा बड़ा अज्र व (सवाब) है (22)

ऐ ईमानदारों अगर तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे (बहन) भाई ईमान के मुक़ाबले कुफ़्र को तरजीह देते हो तो तुम उनको (अपना) ख़ैर ख़्वाह (हमदर्द) न समझो और तुममें जो शख़्स उनसे उलफ़त रखेगा तो यही लोग ज़ालिम है (23)

(ऐ रसूल) तुम कह दो तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई बन्द और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारे कुनबे वाले और वह माल जो तुमने कमा के रख छोड़ा हैं और वह तिजारत जिसके मन्द पड़ जाने का तुम्हें अन्देशा है और वह मकानात जिन्हें तुम पसन्द करते हो अगर तुम्हें अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा अज़ीज़ है तो तुम ज़रा ठहरो

यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म (अज़ाब) मौजूद करे और अल्लाह नाफरमान लोगों की हिदायत नहीं करता (24)

(मुसलमानों) अल्लाह ने तुम्हारी बहुतेरे मक़ामात पर (ग़ैबी) इमदाद की और (ख़ासकर) जंग हुनैन के दिन जब तुम्हें अपनी क़सरत (तादाद) ने मग़रूर कर दिया था फिर वह क़सरत तुम्हें कुछ भी काम न आयी और (तुम ऐसे घबराए कि) ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के तुम पर तंग हो गई तुम पीठ कर भाग निकले (25)

तब ख़ुदा ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (रसूल की ख़ातिर से) फ़रिश्तों के लश्कर भेजे जिन्हें तुम देखते भी नहीं थे और कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल फरमाया और काफिरों की यही सज़ा है (26)

उसके बाद ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा क़ुबूल करे और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (27)

ऐ ईमानदारों मुशरेकीन तो निरे नजिस हैं तो अब वह उस साल के बाद मस्जिदुल हराम (ख़ाना ए काबा) के पास फिर न फटकने पाएँ और अगर तुम (उनसे जुदा होने में) फक़रों फाक़ा से डरते हो तो अनकरीब ही अल्लाह तुमको अगर चाहेगा तो अपने फज़ल (करम) से ग़नीकर देगा बेशक अल्लाह बड़ा वाकि़फकार हिकमत वाला है (28)

एहले किताब में से जो लोग न तो (दिल से) अल्लाह ही पर इमान रखते हैं और न रोजे़ आख़िरत पर और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुयी चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन ही को एख़्तियार करते हैं उन लोगों से लड़े जाओ यहाँ तक कि वह लोग ज़लील होकर (अपने) हाथ से जज़िया दे (29)

यहूद तो कहते हैं कि अज़ीज़ ख़ुदा के बेटे हैं और नुसैरा कहते हैं कि मसीहा (ईसा) ख़ुदा के बेटे हैं ये तो उनकी बात है और (वह ख़ुद) उन्हीं के मुँह से ये लोग भी उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं ख़ुद उनको क़त्ल (तहस नहस) करके (देखो तो) कहाँ से कहाँ भटके जा रहे हैं (30)

उन लोगों ने तो अपने ख़ुदा को छोड़कर अपनी आलिमों को और अपने ज़ाहिदों को और मरियम के बेटे मसीह को अपना परवरदिगार बना डाला हालाँकि उन्होनें सिवाए इसके और हुक्म ही नहीं दिया गया कि ख़ुदाए यकता (सिर्फ़ अल्लाह) की इबादत करें उसके सिवा (और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं) (31)

जिस चीज़ को ये लोग उसका शरीक़ बनाते हैं वह उससे पाक व पाक़ीजा है ये लोग चाहते हैं कि

अपने मुँह से (फूॅक मारकर) ख़ुदा के नूर को बुझा दें और ख़ुदा इसके सिवा कुछ मानता ही नहीं कि अपने नूर को पूरा ही करके रहे (32)

अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा माना करें वही तो (वह ख़ुदा) है कि जिसने अपने रसूल (मोहम्मद) को हिदायत और सच्चे दीन के साथ (मबऊस करके) भेजता कि उसको तमाम दीनो पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा माना करे (33)

ऐ ईमानदारों इसमें उसमें शक नहीं कि (यहूद व नसारा के) बहुतेरे आलिम ज़ाहिद लोगों के मालेनाहक़ (नाहक़) चख जाते है और (लोगों को) ख़ुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते जाते हैं और उसको ख़ुदा की राह में खर्च नहीं करते तो (ऐ रसूल) उन को दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशखबरी सुना दो (34)

(जिस दिन वह (सोना चाँदी) जहन्नुम की आग में गर्म (और लाल) किया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएॅगी (और उनसे कहा जाएगा) ये वह है जिसे तुमने अपने लिए (दुनिया में) जमा करके रखा था तो (अब) अपने जमा किए का मज़ा चखो (35)

इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया (उसी दिन से) अल्लाह के नज़दीक ख़ुदा की किताब (लौहे महफूज़) में महीनों की गिनती बारह महीने है उनमें से चार महीने (अदब व) हुरमत के हैं यही दीन सीधी राह है तो उन चार महीनों में तुम अपने ऊपर (कुश्त व ख़ून (मार काट) करके) ज़ुल्म न करो और मुशरेकीन जिस तरह तुम से सबके बस मिलकर लड़ते हैं तुम भी उसी तरह सबके सब मिलकर उन से लड़ों और ये जान लो कि ख़ुदा तो यक़ीनन परहेज़गारों के साथ है (36)

महीनों का आगे पीछे कर देना भी कुफ्ऱ ही की ज़्यादती है कि उनकी बदौलत कुफ़्फ़ार (और) बहक जाते हैं एक बरस तो उसी एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और (दूसरे) साल उसी महीने को हराम कहते हैं ताकि ख़ुदा ने जो (चार महीने) हराम किए हैं उनकी गिनती ही पूरी कर लें और अल्लाह की हराम की हुयी चीज़ को हलाल कर लें उनकी बुरी (बुरी) कारस्तानियॉ उन्हें भली कर दिखाई गई हैं और अल्लाह काफिर लोगो को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (37)

ऐ ईमानदारों तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि ख़ुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम लदधड़ (ढीले) हो कर ज़मीन की तरफ झुके पड़ते हो क्या तुम आख़िरत के बनिस्बत दुनिया की (चन्द रोज़ा) जिन्दगी को पसन्द करते थे तो (समझ लो कि) दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ो सामान (आख़िर के) ऐश व आराम के मुक़ाबले में बहुत ही थोड़ा है (38)

अगर (अब भी) तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुम पर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और (ख़ुदा कुछ

मजबरू तो है नहीं) तुम्हारे बदले किसी दूसरी क़ौम को ले आएगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (39)

अगर तुम उस रसूल की मदद न करोगे तो (कुछ परवाह् नहीं ख़ुदा मददगार है) उसने तो अपने रसूल की उस वक़्त मदद की जब उसकी कुफ़्फ़ार (मक्का) ने (घर से) निकल बाहर किया उस वक़्त सिर्फ (दो आदमी थे) दूसरे रसूल थे जब वह दोनो ग़ार (सौर) में थे जब अपने साथी को (उसकी गिरिया व ज़ारी (रोने) पर) समझा रहे थे कि घबराओ नहीं ख़ुदा यक़ीनन हमारे साथ है तो ख़ुदा ने उन पर अपनी (तरफ से) तसकीन नाज़िल फरमाई और (फ़रिश्तों के) ऐसे लश्कर से उनकी मदद की जिनको तुम लोगों ने देखा तक नहीं और अल्लाह ने काफिरों की बात नीची कर दिखाई और ख़ुदा ही का बोल बाला है और ख़ुदा तो ग़ालिब हिकमत वाला है (40)

(मुसलमानों) तुम हलके फुलके (हॅसते) हो या भारी भरकम (मसलह) बहर हाल जब तुमको हुक्म दिया जाए फौरन चल खड़े हो और अपनी जानों से अपने मालों से ख़ुदा की राह में जिहाद करो अगर तुम (कुछ जानते हो तो) समझ लो कि यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (41)

(ऐ रसूल) अगर सरे दस्त फ़ायदा और सफर आसान होता तो यक़ीनन ये लोग तुम्हारा साथ देते मगर इन पर मुसाफ़त (सफ़र) की मशक़्क़त (सख़्ती) तूलानी हो गई और अगर पीछे रह जाने की वज़ह से पूछोगे तो ये लोग फौरन ख़ुदा की क़समें खॉएगें कि अगर हम में सकत होती तो हम भी ज़रूर तुम लोगों के साथ ही चल खड़े होते ये लोग झूठी कसमें खाकर अपनी जान आप हलाक किए डालते हैं और अल्लाह तो जानता है कि ये लोग बेशक झूठे हैं (42)

(ऐ रसूल) ख़ुदा तुमसे दरगुज़र फरमाए तुमने उन्हें (पीछे रह जाने की) इजाज़त ही क्यों दी ताकि (तुम) अगर ऐसा न करते तो) तुम पर सच बोलने वाले (अलग) ज़ाहिर हो जाते और तुम झूटों को (अलग) मालूम कर लेते (43)

(ऐ रसूल) जो लोग (दिल से) ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह तो अपने माल से और अपनी जानों से जिहाद (न) करने की इजाज़त मॉगने के नहीं (बल्कि वह ख़ुद जाएँगें) और ख़ुदा परहेज़गारों से खूब वाक़िफ है (44)

(पीछे रह जाने की) इजाज़त तो बस वही लोग मॉगेंगे जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल (तरह तरह) के शक कर रहे है तो वह अपने शक में डावॉडोल हो रहे हैं (45)

(कि क्या करें क्या न करें) और अगर ये लोग (घर से) निकलने की ठान लेते तो (कुछ न कुछ सामान तो करते मगर (बात ये है) कि ख़ुदा ने उनके साथ भेजने को नापसन्द किया तो उनको

काहिल बना दिया और (गोया) उनसे कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे (मक्खी मारते) रहो (46)

अगर ये लोग तुममें (मिलकर) निकलते भी तो बस तुममे फ़साद ही बरपा कर देते और तुम्हारे हक़ में फ़ितना कराने की ग़रज़ से तुम्हारे दरम्यिान (इधर उधर) घोड़े दौड़ाते फिरते और तुममें से उनके जासूस भी हैं (जो तुम्हारी उनसे बातें बयान करते हैं) और ख़ुदा शरीरों से ख़ूब वाक़िफ़ है (47)

(ए रसूल) इसमें तो शक नहीं कि उन लोगों ने पहले ही फ़साद डालना चाहा था और तुम्हारी बहुत सी बातें उलट पुलट के यहॉ तक कि हक़ आ पहुँचा और ख़ुदा ही का हुक्म ग़ालिब रहा और उनको नागवार ही रहा (48)

उन लोगों में से बाज़ ऐसे भी हैं जो साफ कहते हैं कि मुझे तो (पीछे रह जाने की) इजाज़त दीजिए और मुझ बला में न फॅसाइए (ऐ रसूल) आगाह हो कि ये लोग खुद बला में (औंधे मुँह) गिर पड़े और जहन्नुम तो काफिरों का यक़ीनन घेरे हुए ही हैं (49)

तुमको कोई फायदा पहुँचा तो उन को बुरा मालूम होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़ती तो ये लोग कहते हैं कि (इस वजह से) हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और (ये कह कर) ख़ुश (तुम्हारे पास से उठकर) वापस लौटतें है (50)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हम पर हरगिज़ कोई मुसीबत पड़ नही सकती मगर जो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए (हमारी तक़दीर में) लिख दिया है वही हमारा मालिक है और ईमानदारों को चाहिए भी कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें (51)

(ऐ रसूल) तुम मुनाफिकों से कह दो कि तुम तो हमारे वास्ते (फतेह या शहादत) दो भलाइयों में से एक के ख़्वाह मख़्वाह मुन्तज़िर ही हो और हम तुम्हारे वास्ते उसके मुन्तज़िर हैं कि ख़ुदा तुम पर (ख़ास) अपने ही से कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से फिर (अच्छा) तुम भी इन्तेज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ (साथ) इन्तेज़ार करते हैं (52)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग ख़्वाह ख़ुशी से खर्च करो या मजबूरी से तुम्हारी ख़ैरात तो कभी क़ुबूल की नहीं जाएगी तुम यक़ीनन बदकार लोग हो (53)

और उनकी ख़ैरात के क़ुबूल किए जाने में और कोई वजह मायने नहीं मगर यही कि उन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल की नाफ़रमानी की और नमाज़ को आते भी हैं तो अलकसाए हुए और ख़ुदा की राह में खर्च करते भी हैं तो बे दिली से (54)

(ऐ रसूल) तुम को न तो उनके माल हैरत में डाले और न उनकी औलाद (क्योंकि) ख़ुदा तो ये चाहता है कि उनको आल व माल की वजह से दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी (ही) में मुबितलाए अज़ाब करे और जब उनकी जानें निकलें तब भी वह काफिर (के काफिर ही) रहें (55)

और (मुसलमानों) ये लोग अल्लाह की क़सम खाएँगें फिर वह तुममें ही के हैं हालॉकि वह लोग तुममें के नहीं हैं मगर हैं ये लोग बुज़दिल हैं (56)

कि गर कहीं ये लोग पनाह की जगह (क़िले) या (छिपने के लिए) ग़ार या घुस बैठने की कोई (और) जगह पा जाएँ तो उसी तरफ रस्सियाँ तोड़ाते हुए भाग जाएँ (57)

(ऐ रसूल) उनमें से कुछ तो ऐसे भी हैं जो तुम्हें ख़ैरात (की तक़सीम) में (ख़्वाह मा ख़्वाह) इल्ज़ाम देते हैं फिर अगर उनमे से कुछ (माकूल मिक़दार(हिस्सा)) दे दिया गया तो खुश हो गए और अगर उनकी मर्ज़ी के मुवाफिक़ उसमें से उन्हें कुछ नहीं दिया गया तो बस फौरन ही बिगड़ बैठे (58)

और जो कुछ अल्लाह ने और उसके रसूल ने उनको अता फरमाया था अगर ये लोग उस पर राज़ी रहते और कहते कि ख़ुदा हमारे वास्ते काफी है (उस वक्त नहीं तो) अनक़रीब ही अल्लाह हमें अपने फज़ल व करम से उसका रसूल दे ही देगा हम तो यक़ीनन अल्लाह ही की तरफ लौ लगाए बैठे हैं (59)

(तो उनका क्या कहना था) ख़ैरात तो बस ख़ास फकीरों का हक़ है और मोहताजों का और उस (ज़कात वग़ैरह) के कारिन्दों का और जिनकी तालीफ़ क़लब की गई है (उनका) और (जिन की) गर्दनों में (गुलामी का फन्दा पड़ा है उनका) और ग़द्दारों का (जो अल्लाह से अदा नहीं कर सकते) और अल्लाह की राह (जिहाद) में और परदेसियों की किफ़ालत में ख़र्च करना चाहिए ये हुकूक़ ख़ुदा की तरफ से मुक़र्रर किए हुए हैं और ख़ुदा बड़ा वाक़िफ़ कार हिकमत वाला है (60)

और उसमें से बाज़ ऐसे भी हैं जो (हमारे) रसूल को सताते हैं और कहते हैं कि बस ये कान ही (कान) हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (कान तो हैं मगर) तुम्हारी भलाई सुन्ने के कान हैं कि ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और मोमिनीन की (बातों) का यक़ीन रखते हैं और तुममें से जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके लिए रहमत और जो लोग रसूले ख़ुदा को सताते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं (61)

(मुसलमानों) ये लोग तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर ले हालॉकि अगर ये लोग सच्चे ईमानदार है (62)

तो अल्लाह और उसका रसूल कहीं ज़्यादा हक़दार है कि उसको राज़ी रखें क्या ये लोग ये भी नहीं जानते कि जिस शख़्स ने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालेफ़त की तो इसमें शक ही नहीं कि उसके लिए जहन्नुम की आग (तैयार रखी) है (63)

जिसमें वह हमेशा (जलता भुनता) रहेगा यही तो बड़ी रूसवाई है मुनाफ़ेक़ीन इस बात से डरतें हैं कि (कहीं ऐसा न हो) इन मुलसमानों पर (रसूल की माअरफ़त) कोई सूरा नाज़िल हो जाए जो उनको जो कुछ उन मुनाफिक़ीन के दिल में है बता दे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अच्छा) तुम मसख़रापन किए जाओ (64)

जिससे तुम डरते हो ख़ुदा उसे ज़रूर ज़ाहिर कर देगा और अगर तुम उनसे पूछो (कि ये हरकत थी) तो ज़रूर यूँ ही कहेगें कि हम तो यूँ ही बातचीत (दिल्लगी) बाज़ी ही कर रहे थे तुम कहो कि हाए क्या तुम ख़ुदा से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हँसी कर रहे थे (65)

अब बातें न बनाओं हक़ तो ये हैं कि तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो बैठे अगर हम तुममें से कुछ लोगों से दरगुज़र भी करें तो हम कुछ लोगों को सज़ा ज़रूर देगें इस वजह से कि ये लोग कुसूरवार ज़रूर हैं (66)

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें एक दूसरे के बाहम जिन्स हैं कि (लोगों को) बुरे काम का तो हुक्म करते हैं और नेक कामों से रोकते हैं और अपने हाथ (राहे अल्लाह में ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं (सच तो यह है कि) ये लोग ख़ुदा को भूल बैठे तो ख़ुदा ने भी (गोया) उन्हें भुला दिया बेशक मुनाफ़िक़ बदचलन है (67)

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें और काफिरों से ख़ुदा ने जहन्नुम की आग का वायदा तो कर लिया है कि ये लोग हमेशा उसी में रहेगें और यही उन के लिए काफ़ी है और ख़ुदा ने उन पर लानत की है और उन्हीं के लिए दाइमी (हमेशा रहने वाला) अज़ाब है (68)

(मुनाफिक़ो तुम्हारी तो) उनकी मसल है जो तुमसे पहले थे वह लोग तुमसे क़ूवत में (भी) ज़्यादा थे और औलाद में (भी) कही बढ़ कर तो वह अपने हिस्से से भी फ़ायदा उठा हो चुके तो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फायदा उठा चुके हैं इसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फायदा उठा लिया और जिस तरह वह बातिल में घुसे रहे उसी तरह तुम भी घुसे रहे ये वह लोग हैं जिन का सब किया धरा दुनिया और आख़िरत (दोनों) में अकारत हुआ और यही लोग घाटे में हैं (69)

क्या इन मुनाफिक़ों को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची है जो उनसे पहले हो गुज़रे हैं नूह की क़ौम और आद और समूद और इबराहीम की क़ौम और मदियन वाले और उलटी हुयी बस्तियों के रहने

वाले कि उनके पास उनके रसूल वाजेए (और रौशन) मौजिज़े लेकर आए तो (वह मुब्तिलाए अज़ाब हुए) और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया मगर ये लोग ख़ुद अपने ऊपर जुल्म करते थे (70)

और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरते उनमें से बाज़ के बाज़ रफीक़ है और नामज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और ख़ुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करते हैं यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा अनक़रीब रहम करेगा बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (71)

ख़ुदा ने ईमानदार मर्दों और ईमानदारा औरतों से (बेहशत के) उन बाग़ों का वायदा कर लिया है जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह उनमें हमेशा रहेगें (बेहश्त) अदन के बाग़ो में उम्दा उम्दा मकानात का (भी वायदा फरमाया) और ख़ुदा की ख़ुशनूदी उन सबसे बालातर है- यही तो बड़ी (आला दर्जे की) कामयाबी है (72)

ऐ रसूल कुफ़्फ़ार के साथ (तलवार से) और मुनाफिकों के साथ (ज़बान से) जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना तो जहन्नुम ही है और वह (क्या) बुरी जगह है (73)

ये मुनाफ़ेक़ीन ख़ुदा की क़समें खाते है कि (कोई बुरी बात) नहीं कही हालॉकि उन लोगों ने कुफ़्र का कलमा ज़रूर कहा और अपने इस्लाम के बाद काफिर हो गए और जिस बात पर क़ाबू न पा सके उसे ठान बैठे और उन लोगें ने (मुसलमानों से) सिर्फ इस वजह से अदावत की कि अपने फज़्ल व करम से ख़ुदा और उसके रसूल ने दौलत मन्द बना दिया है तो उनके लिए उसमें ख़ैर है कि ये लोग अब भी तौबा कर लें और अगर ये न मानेगें तो अल्लाह उन पर दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और तमाम दुनिया में उन का न कोई हामी होगा और न मददगार (74)

और इन (मुनाफ़ेक़ीन) में से बाज़ ऐसे भी हैं जो ख़ुदा से क़ौल क़रार कर चुके थे कि अगर हमें अपने फज़्ल (व करम) से (कुछ माल) देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेगें और नेकोकार बन्दे हो जाएँगें (75)

तो जब अल्लाह ने अपने फज़्ल (व करम) से उन्हें अता फरमाया-तो लगे उसमें बुख़्ल करने और कतराकर मुँह फेरने (76)

फिर उनसे उनके ख़ामयाज़े (बदले) में अपनी मुलाक़ात के दिन (क़यामत) तक उनके दिल में (गोया खुद) निफाक डाल दिया इस वजह से उन लोगों ने जो ख़ुदा से वायदा किया था उसके ख़िलाफ किया और इस वजह से कि झूठ बोला करते थे (77)

क्या वह लोग इतना भी न जानते थे कि अल्लाह (उनके) सारे भेद और उनकी सरगोशी (सब कुछ) जानता है और ये कि ग़ैब की बातों से ख़ूब आगाह है (78)

जो लोग दिल खोलकर ख़ैरात करने वाले मोमिनीन पर (रियाकारी का) और उन मोमिनीन पर जो सिर्फ अपनी शफ़क्क़त (मेहनत) की मज़दूरी पाते (शेख़ी का) इल्ज़ाम लगाते हैं फिर उनसे मसख़रापन करते तो ख़ुदा भी उन से मसख़रापन करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (79)

(ऐ रसूल) ख़्वाह तुम उन (मुनाफ़िक़ों) के लिए मग़फिरत की दुआ माँगों या उनके लिए मग़फिरत की दुआ न माँगों (उनके लिए बराबर है) तुम उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ मांगोगे तो भी अल्लाह उनको हरगिज़ न बख़्शेगा ये (सज़ा) इस सबब से है कि उन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया और ख़ुदा बदकार लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता (80)

(जंगे तबूक़ में) रसूले ख़ुदा के पीछे रह जाने वाले अपनी जगह बैठ रहने (और जिहाद में न जाने) से ख़ुश हुए और अपने माल और आपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करना उनको मकरू मालूम हुआ और कहने लगे (इस) गर्मी में (घर से) न निकलो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जहन्नुम की आग (जिसमें तुम चलोगे उससे कहीं ज़्यादा गर्म है (81)

अगर वह कुछ समझें जो कुछ वह किया करते थे उसके बदले उन्हें चाहिए कि वह बहुत कम हॅसें और बहुत रोएँ (82)

तो (ऐ रसूल) अगर अल्लाह तुम इन मुनाफेक़ीन के किसी गिरोह की तरफ (जिहाद से सहीसालिम) वापस लाए फिर तुमसे (जिहाद के वास्ते) निकलने की इजाज़त माँगें तो तुम साफ़ कह दो कि तुम मेरे साथ (जिहाद के वास्ते) हरगिज़ न निकलने पाओगे और न हरगिज़ दुश्मन से मेरे साथ लड़ने पाओगे जब तुमने पहली मरतबा (घर में) बैठे रहना पसन्द किया तो (अब भी) पीछे रह जाने वालों के साथ (घर में) बैठे रहो (83)

और (ऐ रसूल) उन मुनाफिक़ीन में से जो मर जाए तो कभी ना किसी पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना इन लोगों ने यक़ीनन ख़ुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और बदकारी की हालत में मर (भी) गए (84)

और उनके माल और उनकी औलाद (की कसरत) तुम्हें ताज्जुब (हैरत) में न डाले (क्योकि) अल्लाह तो बस ये चाहता है कि दुनिया में भी उनके माल और औलाद की बदौलत उनको अज़ाब में मुब्तिला करे और उनकी जान निकालने लगे तो उस वक्त भी ये काफ़िर (के काफ़िर ही) रहें (85)

और जब कोई सूरा इस बारे में नाज़िल हुआ कि ख़ुदा को मानों और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो जो उनमें से दौलत वाले हैं वह तुमसे इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं कि हमें (यहीं छोड़ दीजिए) कि हम भी (घर बैठने वालो के साथ (बैठे) रहें (86)

ये इस बात से ख़ुश हैं कि पीछे रह जाने वालों (औरतों, बच्चों, बीमारो के साथ बैठे) रहें और (गोया) उनके दिल पर मोहर कर दी गई तो ये कुछ नहीं समझतें (87)

मगर रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उन लोगों ने अपने अपने माल और अपनी अपनी जानों से जिहाद किया- यही वह लोग हैं जिनके लिए (हर तरह की) भलाइयाँ हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं (88)

ख़ुदा ने उनके वास्ते (बेहश्त) के वह (हरे भरे) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके (दरख़्तों के) नीचे नहरे जारी हैं (और ये) इसमें हमेशा रहेंगें यही तो बड़ी कामयाबी हैं (89)

और (तुम्हारे पास) कुछ हीला करने वाले गवार देहाती (भी) आ मौजदू हुए ताकि उनको भी (पीछे रह जाने की) इजाज़त दी जाए और जिन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल से झूठ कहा था वह (घर में) बैठ रहे (आए तक नहीं) उनमें से जिन लोगों ने कुफ्ऱ एख़्तेयार किया अनक़रीब ही उन पर दर्दनाक अज़ाब आ पहुँचेगा (90)

(ऐ रसूल जिहाद में न जाने का) न तो कमज़ोरों पर कुछ गुनाह है न बीमारों पर और न उन लोगों पर जो कुछ नहीं पाते कि ख़र्च करें बशर्ते कि ये लोग ख़ुदा और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही करें नेकी करने वालों पर (इल्ज़ाम की) कोई सबील नहीं और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (91)

और न उन्हीं लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उनके लिए सवारी बाहम पहुँचा दो और तुमने कहा कि मेरे पास (तो कोई सवारी) मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार करूँ तो वह लोग (मजबूरन) फिर गए और हसरत (व अफसोस) उसे उस ग़म में कि उन को ख़र्च मयस्सर न आया (92)

उनकी आँखों से आँसू जारी थे (इल्ज़ाम की) सबील तो सिर्फ उन्हीं लोगों पर है जिन्होंने बावजूद मालदार होने के तुमसे (जिहाद में) न जाने की इजाज़त चाही और उनके पीछे रह जाने वाले (औरतों,बच्चों) के साथ रहना पसन्द आया और ख़ुदा ने उनके दिलों पर (गोया) मोहर कर दी है तो ये लोग कुछ नहीं जानते (93)

जब तुम उनके पास (जिहाद से लौट कर) वापस आओगे तो ये (मुनाफिक़ीन) तुमसे (तरह तरह) की

माअज़रत करेंगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बातें न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे (क्योंकि) हमे तो ख़ुदा ने तुम्हारे हालात से आगाह कर दिया है अनक़रीब ख़ुदा और उसका रसूल तुम्हारी कारस्तानी को मुलाहज़ा फरमाएगें फिर तुम ज़ाहिर व बातिन के जानने वालों (अल्लाह) की हुज़ूरी में लौटा दिए जाओगे तो जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे (ज़र्रा ज़र्रा) बता देगा (94)

जब तुम उनके पास (जिहाद से) वापस आओगे तो तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएगें ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुँह फेर लो बेशक ये लोग नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नुम है (ये) सज़ा है उसकी जो ये (दुनिया में) किया करते थे (95)

तुम्हारे सामने ये लोग क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो (भी) जाओ तो अल्लाह बदकार लोगों से हरगिज़ कभी राज़ी नहीं होगा (96)

(ये) अरब के गॅवार देहाती कुफ्ऱ व निफाक़ में बड़े सख़्त हैं और इसी क़ाबिल हैं कि जो किताब अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई है उसके एहक़ाम न जानें और अल्लाह तो बड़ा दाना हकीम है (97)

और कुछ गॅवार देहाती (ऐसे भी हैं कि जो कुछ अल्लाह की) राह में खर्च करते हैं उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में (ज़माने की) गर्दिशों के मुन्तज़िर (इन्तेज़ार में) हैं उन्हीं पर (ज़माने की) बुरी गर्दिश पड़े और अल्लाह तो सब कुछ सुनता जानता है (98)

और कुछ देहाती तो ऐसे भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते है उसे अल्लाह की (बारगाह में) नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं आगाह रहो वाक़ई ये (ख़ैरात) ज़रूर उनके तक़र्रुब (क़रीब होने का) का बाइस है अल्लाह उन्हें बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (99)

और मुहाजिरीन व अन्सार में से (ईमान की तरफ) सबक़त (पहल) करने वाले और वह लोग जिन्होंने नेक नीयती से (कुबूले ईमान में उनका साथ दिया अल्लाह उनसे राज़ी और वह ख़ुदा से ख़ुश और उनके वास्ते ख़ुदा ने (वह हरे भरे) बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी हैं तैयार कर रखे हैं वह हमेशा अब्दआलाबाद (हमेशा) तक उनमें रहेगें यही तो बड़ी कामयाबी हैं (100)

और (मुसलमानों) तुम्हारे एतराफ़ (आस पास) के गॅवार देहातियों में से बाज़ मुनाफिक़ (भी) हैं और खुद मदीने के रहने वालों मे से भी (बाज़ मुनाफिक़ हैं) जो निफ़ाक पर अड़ गए हैं (ऐ रसूल) तुम उन को नहीं जानते (मगर) हम उनको (ख़ूब) जानते हैं अनक़रीब हम (दुनिया में) उनकी दोहरी सज़ा करेगें फिर ये लोग (क़यामत में) एक बड़े अज़ाब की तरफ लौटाए जाएँगें (101)

और कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का (तो) एकरार किया (मगर) उन लोगों ने भले काम को और कुछ बुरे काम को मिला जुला (कर गोलमाल) कर दिया क़रीब है कि ख़ुदा उनकी तौबा क़ुबूल करे (क्योंकि) ख़ुदा तो यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हैं (102)

(ऐ रसूल) तुम उनके माल की ज़कात लो (और) इसकी बदौलत उनको (गुनाहो से) पाक साफ करों और उनके वास्ते दुआएँ ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इन लोगों के हक़ में इत्मेनान (का बाइस है) और ख़ुदा तो (सब कुछ) सुनता (और) जानता है (103)

क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यक़ीनन ख़ुदा बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और वही ख़ैरातें (भी) लेता है और इसमें शक नहीं कि वही तौबा का बड़ा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है (104)

और (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम लोग अपने अपने काम किए जाओ अभी तो ख़ुदा और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे कामों को देखेगें और बहुत जल्द (क़यामत में) ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटाए जाएँगें तब वह जो कुछ भी तुम करते थे तुम्हें बता देगा (105)

और कुछ लोग हैं जो हुक्मे ख़ुदा के उम्मीदवार किए गए हैं (उसको अख़्तेयार है) ख़्वाह उन पर अज़ाब करे या उन पर मेहरबानी करे और ख़ुदा (तो) बड़ा वाकिफकार हिकमत वाला है (106)

और (वह लोग भी मुनाफिक़ हैं) जिन्होने (मुसलमानों के) नुकसान पहुँचाने और कुफ़्र करने वाले और मोमिनीन के दरम्यिान तफरक़ा (फूट) डालते और उस शख़्स की घात में बैठने के वास्ते मस्जिद बनाकर खड़ी की है जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले लड़ चुका है (और लुत्फ़ तो ये है कि) ज़रूर क़समें खाएगें कि हमने भलाई के सिवा कुछ और इरादा ही नहीं किया और ख़ुदा ख़ुद गवाही देता है (107)

ये लोग यक़ीनन झूठे है (ऐ रसूल) तुम इस (मस्जिद) में कभी खड़े भी न होना वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से परहेज़गारी पर रखी गई है वह ज़रूर उसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े होकर (नमाज़ पढ़ो क्योंकि) उसमें वह लोग हैं जो पाक व पाकीज़ा रहने को पसन्द करते हैं और अल्लाह भी पाक व पाकीज़ा रहने वालों को दोस्त रखता है (108)

क्या जिस शख़्स ने ख़ुदा के ख़ौफ और ख़ुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद डाली हो वह ज़्यादा अच्छा है या वह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद इस बोदे किनारे के लब पर रखी हो जिसमें दरार पड़ चुकी हो और अगर वह चाहता हो फिर उसे ले दे के जहन्नुम की आग में फट पड़े और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मंज़िलें मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (109)

(ये इमारत की) बुनियाद जो उन लोगों ने क़ायम की उसके सबब से उनके दिलो में हमेशा धरपकड़ रहेगी यहाँ तक कि उनके दिलों के परख़चे उड़ जाएँ और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार हकीम हैं (110)

इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल इस बात पर ख़रीद लिए हैं कि (उनकी क़ीमत) उनके लिए बेहश्त है (इसी वजह से) ये लोग ख़ुदा की राह में लड़ते हैं तो (कुफ़्फ़ार को) मारते हैं और ख़ुद (भी) मारे जाते हैं (ये) पक्का वायदा है (जिसका पूरा करना) ख़ुदा पर लाज़िम है और ऐसा पक्का है कि तौरैत और इन्जील और क़ुरान (सब) में (लिखा हुआ है) और अपने एहद का पूरा करने वाला ख़ुदा से बढ़कर कौन है तुम तो अपनी ख़रीद फरोख़्त से जो तुमने ख़ुदा से की है खुशियाँ मनाओ यही तो बड़ी कामयाबी है (111)

(ये लोग) तौबा करने वाले इबादत गुज़ार (ख़ुदा की) हम्दो सना (तारीफ़) करने वाले (उस की राह में) सफर करने वाले रूकूउ करने वाले सजदा करने वाले नेक काम का हुक्म करने वाले और बुरे काम से रोकने वाले और अल्लाह की (मुक़र्रर की हुयी) हदो को निगाह रखने वाले हैं और (ऐ रसूल) उन मोमिनीन को (बेहिश्त की) ख़ुशख़बरी दे दो (112)

नबी और मोमिनीन पर जब ज़ाहिर हो चुका कि मुशरेकीन जहन्नुमी है तो उसके बाद मुनासिब नहीं कि उनके लिए मग़फिरत की दुआएँ माँगें अगरचे वह मुशरेकीन उनके क़राबतदार हो (क्यों न) हो (113)

और इबराहीम का अपने बाप के लिए मग़फिरत की दुआ माँगना सिर्फ इस वायदे की वजह से था जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह यक़ीनी ख़ुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए, बेशक इबराहीम यक़ीनन बड़े दर्दमन्द बुर्दबार (सहन करने वाले) थे (114)

ख़ुदा की ये शान नहीं कि किसी क़ौम को जब उनकी हिदायत कर चुका हो उसके बाद बेशक ख़ुदा उन्हें गुमराह कर दे हता (यहां तक) कि वह उन्हीं चीज़ों को बता दे जिससे वह परहेज़ करें बेशक अल्लाह हर चीज़ से (वाक़िफ है) (115)

इसमें तो शक ही नहीं कि सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत ख़ुदा ही के लिए ख़ास है वही (जिसे चाहे) जिलाता है और (जिसे चाहे) मारता है और तुम लोगों का ख़ुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है न मददगार (116)

अलबत्ता ख़ुदा ने नबी और उन मुहाजिरीन अन्सार पर बड़ा फज़्ल किया जिन्होंने तंगदस्ती के वक़्त

रसूल का साथ दिया और वह भी उसके बाद कि क़रीब था कि उनमे से कुछ लोगों के दिल जगमगा जाएँ फिर अल्लाह ने उन पर (भी) फज़्ल किया इसमें शक नहीं कि वह उन लोगों पर पड़ा तरस खाने वाला मेहरबान है (117)

और उन यमीमों पर (भी फज़्ल किया) जो (जिहाद से पीछे रह गए थे और उन पर सख़्ती की गई) यहाँ तक कि ज़मीन बावजूद उस वसअत (फैलाव) के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (तक) उन पर तंग हो गई और उन लोगों ने समझ लिया कि ख़ुदा के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं फिर ख़ुदा ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह (ख़ुदा की तरफ) रूजू करें बेशक ख़ुदा ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है (118)

ऐ ईमानदारों ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ (119)

मदीने के रहने वालों और उनके गिर्दोनवॉ (आस पास) देहातियों को ये जायज़ न था कि रसूल ख़ुदा का साथ छोड़ दें और न ये (जायज़ था) कि रसूल की जान से बेपरवा होकर अपनी जानों के बचाने की फ्रिक करें ये हुक्म उसी सब्ब से था कि उन (जिहाद करने वालों) को ख़ुदा की रूह में जो तकलीफ़ प्यास की या मेहनत या भूख की शिद्दत की पहुँचती है या ऐसी राह चलते हैं जो कुफ़्फ़ार के गैज़ (ग़ज़ब का बाइस हो या किसी दुश्मन से कुछ ये लोग हासिल करते हैं तो बस उसके ऐवज़ में (उनके नामए अमल में) एक नेक काम लिख दिया जाएगा बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (व सवाब) बरबाद नहीं करता है (120)

और ये लोग (ख़ुदा की राह में) थोड़ा या बहुत माल नहीं खर्च करते और किसी मैदान को नहीं क़तआ करते मगर फौरन (उनके नामाए अमल में) उनके नाम लिख दिया जाता है ताकि अल्लाह उनकी कारगुज़ारियों का उन्हें अच्छे से अच्छा बदला अता फरमाए (121)

और ये भी मुनासिब नहीं कि मोमिननि कुल के कुल (अपने घरों में) निकल खडे़ हों उनमें से हर गिरोह की एक जमाअत (अपने घरों से) क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ पलट के आवे तो उनको (अज्र व आख़िरत से) डराए ताकि ये लोग डरें (122)

ऐ इमानदारों कुफ्फार में से जो लोग तुम्हारे आस पास के है उन से लड़ों और (इस तरह लड़ना) चाहिए कि वह लोग तुम में करारापन महसूस करें और जान रखो कि बेशुबहा अल्लाह परहेज़गारों के साथ है (123)

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उन मुनाफिक़ीन में से (एक दूसरे से) पूछता है कि भला इस सूरे ने तुममें से किसी का ईमान बढ़ा दिया तो जो लोग ईमान ला चुके हैं उनका तो इस सूरे ने ईमान बढ़ा दिया और वह वहा उसकी ख़ुशियाँ मनाते है (124)

मगर जिन लोगों के दिल में (निफाक़ की) बीमारी है तो उन (पिछली) ख़बासत पर इस सूरो ने एक ख़बासत और बढ़ा दी और ये लोग कुफ़्र ही की हालत में मर गए (125)

क्या वह लोग (इतना भी) नहीं देखते कि हर साल एक मरतबा या दो मरतबा बला में मुबितला किए जाते हैं फिर भी न तो ये लोग तौबा ही करते हैं और न नसीहत ही मानते हैं (126)

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उसमें से एक की तरफ एक देखने लगा (और ये कहकर कि) तुम को कोई मुसलमान देखता तो नहीं है फिर (अपने घर) पलट जाते हैं (ये लोग क्या पलटेगें गोया) अल्लाह ने उनके दिलों को पलट दिया है इस सबब से कि ये बिल्कुल नासमझ लोग हैं (127)

लोगों तुम ही में से (हमारा) एक रसूल तुम्हारे पास आ चुका (जिसकी शफ़क्क़त (मेहरबानी) की ये हालत है कि) उस पर शाक़ (दुख) है कि तुम तकलीफ उठाओ और उसे तुम्हारी बेहूदी का हौका है इमानदारो पर हद दर्जे शफीक़ मेहरबान हैं (128)

ऐ रसूल अगर इस पर भी ये लोग (तुम्हारे हुक्म से) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मेरे लिए अल्लाह काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैने उस पर भरोसा रखा है वही अर्श (ऐसे) बुर्जूग (मख़लूका का) मालिक है (129)

10 सूरह यूनुस

सूरह यूनुस मक्का में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ नौ (109) आयतें है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम रा (1)

ये आयतें उस किताब की हैं जो अज़सरतापा (सर से पैर तक) हिकमत से मलूउ (भरी) है (2)

क्या लोगों को इस बात से बड़ा ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं लोगों में से एक आदमी के पास वही भेजी कि (बे ईमान) लोगों को डराओ और ईमानदारो को इसकी ख़ुश ख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में बुलन्द दर्जे है (मगर) कुफ्फार (उन आयतों को सुनकर) कहने लगे कि ये (शख़्स तो यक़ीनन सरीही जादूगर) है (3)

इसमें तो शक ही नहीं कि तुमरा परवरदिगार वही अल्लाह है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श को बुलन्द किया वही हर काम का इन्तज़ाम करता है (उसके सामने) कोई (किसी का) सिफारिशी नहीं (हो सकता) मगर उसकी इजाज़त के बाद वही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो तो क्या तुम अब भी ग़ौर नही करते (4)

तुम सबको (आख़िर) उसी की तरफ लौटना है अल्लाह का वायदा सच्चा है वही यक़ीनन मख़लूक को पहली मरतबा पैदा करता है फिर (मरने के बाद) वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए (ख़ैर) अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया उन के लिए उनके कुफ्र की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा (5)

वही वह (ख़ुदाए क़ादिर) है जिसने आफ़ताब को चमकदार और महताब को रौशन बनाया और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर की ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो ख़ुदा ने उसे हिकमत व मसलहत से बनाया है वह (अपनी) आयतों का वाकिफ़कार लोगों के लिए तफ़सीलदार बयान करता है (6)

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन में बनाया है (उसमें) परहेज़गारों के वास्ते बहुतेरी निशानियाँ हैं (7)

इसमें भी शक नहीं कि जिन लोगों को (क़यामत में) हमारी (बारगाह की) हुज़ूरी का ठिकाना नहीं और दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी से निहाल हो गए और उसी पर चैन से बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं (8)

यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना उनकी करतूत की बदौलत जहन्नुम है (9)

बेशक जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें उनका परवरदिगार उनके इमान के सबब से मंज़िल मक़सूद तक पहुँचा देगा कि आराम व आसाइश के बाग़ों में (रहेगें) और उन के नीचे नहरें जारी होगी उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ अल्लाह तू पाक व पाकीज़ा है और उनमें उनकी बाहमी (आपसी) ख़ैरसलाही (मुलाक़ात) सलाम से होगी और उनका आख़िरी क़ौल ये होगा कि सब तारीफ अल्लाह ही को सज़ावार है जो सारे जहाँन का पालने वाला है (10)

और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिए जल्दी कर बैठे हैं उसी तरह अगर अल्लाह उनकी शरारतों की सज़ा में बुराई में जल्दी कर बैठता है तो उनकी मौत उनके पास कब की आ चुकी होती मगर हम तो उन लोगों को जिन्हें (मरने के बाद) हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं छोड़ देते हैं कि वह अपनी सरकशी में आप सरग़िरदा रहें (11)

और इन्सान को जब कोई नुकसान छू भी गया तो अपने पहलू पर (लेटा हो) या बैठा हो या खड़ा (गरज़ हर हालत में) हम को पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते है तो ऐसा खिसक जाता है जैसे उसने तकलीफ के (दफा करने के) लिए जो उसको पहुँचती थी हमको पुकारा ही न था जो लोग ज़्यादती करते हैं उनकी कारस्तानियाँ यूँ ही उन्हें अच्छी कर दिखाई गई हैं (12)

और तुमसे पहली उम्मत वालों को जब उन्होंने शरारत की तो हम ने उन्हें ज़रुर हलाक कर डाला हालॉकि उनके (वक्त के) रसूल वाजेए व रौशन मोजिज़ात लेकर आ चुके थे और वह लोग ईमान (न लाना था) न लाए हम गुनेहगार लोगों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं (13)

फिर हमने उनके बाद तुमको ज़मीन में (उनका) जानशीन बनाया ताकि हम (भी) देखें कि तुम किस तरह काम करते हो (14)

और जब उन लोगों के सामने हमारी रौशन आयते पढ़ीं जाती हैं तो जिन लोगों को (मरने के बाद) हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं है वह कहते है कि हमारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा (कुरान लाओ या उसका रद्दो बदल कर डालो (ऐ रसूल तुम कह दो कि मुझे ये एख़्तेयार नहीं कि मै उसे

अपने जी से बदल डालूँ मै तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरी तरफ वही की गई है मै तो अगर अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी करु तो बड़े (कठिन) दिन के अज़ाब से डरता हूँ (15)

(ऐ रसूल) कह दो कि अल्लाह चाहता तो मै न तुम्हारे सामने इसको पढ़ता और न वह तुम्हें इससे आगाह करता क्योंकि मै तो (आख़िर) तुमने इससे पहले मुद्दतों रह चुका हूँ (और कभी 'वही' का नाम भी न लिया) (16)

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते तो जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बॉधे या उसकी आयतो को झुठलाए उससे बढ़ कर और ज़ालिम कौन होगा इसमें शक नहीं कि (ऐसे) गुनाहगार कामयाब नहीं हुआ करते (17)

या लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते है जो न उनको नुकसान ही पहुँचा सकती है न नफा और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ यही लोग हमारे सिफ़ारिशी होगे (ऐ रसूल) तुम (इनसे) कहो तो क्या तुम ख़ुदा को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जिसको वह न तो आसमानों में (कहीं) पाता है और न ज़मीन में ये लोग जिस चीज़ को उसका शरीक बनाते है (18)

उससे वह पाक साफ और बरतर है और सब लोग तो (पहले) एक ही उम्मत थे और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात (क़यामत का वायदा) पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख़्तिलाफ कर रहे हैं उसका फैसला उनके दरम्यािन (कब न कब) कर दिया गया होता (19)

और कहते हैं कि उस पैग़म्बर पर कोई मोजिज़ा (हमारी ख़्वाहिश के मुवाफिक़) क्यों नहीं नाज़िल किया गया तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ग़ैब (दानी) तो सिर्फ अल्लाह के वास्ते ख़ास है तो तुम भी इन्तज़ार करो और तुम्हारे साथ मै (भी) यक़ीनन इन्तज़ार करने वालों में हूँ (20)

और लोगों को जो तकलीफ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाएक़ा चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तद्बीर में अल्लाह सब से ज़्यादा तेज़ है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) लिखते जाते हैं (21)

वह वही ख़ुदा है जो तुम्हें ख़ुश्की और दरिया में सैर कराता फिरता है यहाँ तक कि जब (कभी) तुम कश्तियों पर सवार होते हो और वह उन लोगों को बाद मुवाफिक़ (हवा के धारे) की मदद से लेकर चली और लोग उस (की रफ्तार) से ख़ुश हुए (यकायक) कश्ती पर हवा का एक झोंका आ पड़ा और (आना था कि) हर तरफ से उस पर लहरें (बढ़ी चली) आ रही हैं और उन लोगों ने समझ लिया कि अब घिर गए (और जान न बचेगी) तब अपने अक़ीदे को उसके वास्ते निरा खरा

करके अल्लाह से दुआएँ मागँने लगते हैं कि (अल्लाहया) अगर तूने इस (मुसीबत) से हमें नजात दी तो हम ज़रुर बड़े शुक्र गुज़ार होंगें (22)

फिर जब अल्लाह ने उन्हें नजात दी तो वह लोग ज़मीन पर (कदम रखते ही) फौरन नाहक़ सरकशी करने लगते हैं (ऐ लोगों तुम्हारी सरकशी का वबाल) तो तुम्हारी ही जान पर है - (ये भी) दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी का फायदा है फिर आखि़र हमारी (ही) तरफ तुमको लौटकर आना है तो (उस वक्त) हम तुमको जो कुछ (दुनिया में) करते थे बता देगे (23)

दुनियावी ज़िदगी की मसल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर ज़मीन के साग पात जिसको लोग और चौपाए खा जाते हैं (उसके साथ मिल जुलकर निकले यहाँ तक कि जब ज़मीन ने (फसल की चीज़ों से) अपना बनाओ सिंगार कर लिया और (हर तरह) आरास्ता हो गई और खेत वालों ने समझ लिया कि अब वह उस पर यक़ीनन क़ाबू पा गए (जब चाहेंगे काट लेगे) यकायक हमारा हुक्म व अज़ाब रात या दिन को आ पहुँचा तो हमने उस खेत को ऐसा साफ कटा हुआ बना दिया कि गोया कुल उसमें कुछ था ही नहीं जो लोग ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके वास्ते हम आयतों को यूँ तफसीलदार बयान करते है (24)

और अल्लाह तो आराम के घर (बेहश्त) की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है (25)

जिन लोगों ने दुनिया में भलाई की उनके लिए (आखि़रत में भी) भलाई है (बल्कि) और कुछ बढ़कर और न (गुनेहगारों की तरह) उनके चेहरों पर कालिक लगी हुयी होगी और न (उन्हें ज़िल्लत होगी यही लोग जन्नती हैं कि उसमें हमेशा रहा सहा करेंगे (26)

और जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं तो गुनाह की सज़ा उसके बराबर है और उन पर रुसवाई छाई होगी अल्लाह (के अज़ाब) से उनका कोई बचाने वाला न होगा (उनके मुँह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरे शबों यजू़र (अंधेरी रात) के टुकड़े से ढक दिए गए हैं यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये उसमें हमेशा रहेंगे (27)

(ऐ रसूल उस दिन से डराओ) जिस दिन सब को इकट्ठा करेगें-फिर मुशरेकीन से कहेंगें कि तुम और तुम्हारे (बनाए हुए अल्लाह के) शरीक ज़रा अपनी जगह ठहरो फिर हम वाहम उनमें फूट डाल देगें और उनके शरीक उनसे कहेंगे कि तुम तो हमारी परसतिश करते न थे (28)

तो (अब) हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते अल्लाह ही काफी है हम को तुम्हारी परसतिश की ख़बर ही न थी (29)

(ग़रज़) वहाँ हर शख़्स जो कुछ जिसने पहले (दुनिया में) किया है जाँच लेगा और वह सब के सब अपने सच्चे मालिक अल्लाह की बारगाह में लौटकर लाए जाएँगें और (दुनिया में) जो कुछ इफ़्तेरा परदाज़िया (झूठी बातें) करते थे सब उनके पास से चल चंपत हो जाएगें (30)

ऐ रसूल तुम उने ज़रा पूछो तो कि तुम्हें आसमान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या (तुम्हारे) कान और (तुम्हारी) आँखों का कौन मालिक है और कौन शख़्स मुर्दे से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को निकालता है और हर अम्र (काम) का बन्दोबस्त कौन करता है तो फौरन बोल उठेंगे कि अल्लाह (ऐ रसूल) तुम कहो तो क्या तुम इस पर भी (उससे) नहीं डरते हो (31)

फिर वही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा रब है फिर हक़ बात के बाद गुमराही के सिवा और क्या है फिर तुम कहाँ फिरे चले जा रहे हो (32)

ये तुम्हारे परवरदिगार की बात बदचलन लोगों पर साबित होकर रही कि ये लोग हरगिज़ इमान न लाएँगें (33)

(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि तुम ने जिन लोगों को (अल्लाह का) शरीक बनाया है कोई भी ऐसा है जो मख़लूकात को पहली बार पैदा करे फिर उन को (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा करे (तो क्या जवाब देगें) तुम्ही कहो कि अल्लाह ही पहले भी पैदा करता है फिर वही दोबारा ज़िन्दा करता है तो किधर तुम उल्टे जा रहे हो (34)

(ऐ रसूल उनसे) कहो तो कि तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तुम्हें (दीन) हक़ की राह दिखा सके तुम ही कह दो कि (अल्लाह) दीन की राह दिखाता है तो जो तुम्हे दीने हक़ की राह दिखाता है क्या वह ज़्यादा हक़दार है कि उसके हुक्म की पैरवी की जाए या वह शख़्स जो (दूसरे) की हिदायत तो दर किनार खुद ही जब तक दूसरा उसको राह न दिखाए राह नही देख पाता तो तुम लोगों को क्या हो गया है (35)

तुम कैसे हुक्म लगाते हो और उनमें के अक्सर तो बस अपने गुमान पर चलते हैं (हालाँकि) गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में हरगिज़ कुछ भी काम नहीं आ सकता बेशक वह लोग जो कुछ (भी) कर रहे हैं अल्लाह उसे खूब जानता है (36)

और ये कुरान ऐसा नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई और अपनी तरफ से झूठ मूठ बना डाले बल्कि (ये तो) जो (किताबें) पहले की उसके सामने मौजूद हैं उसकी तसदीक़ और (उन) किताबों की तफ़सील है उसमें कुछ भी शक नहीं कि ये सारे जहाँन के परवरदिगार की तरफ से है (37)

क्या ये लोग कहते हैं कि इसको रसूल ने खुद झूठ मूठ बना लिया है (ऐ रसूल) तुम कहो कि (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (भला) एक ही सूरा उसके बराबर का बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिसको तुम्हें (मदद के वास्ते) बुलाते बन पड़े बुला लो (38)

(ये लोग लाते तो क्या) बल्कि (उलटे) जिसके जानने पर उनका हाथ न पहुँचा हो लगे उसको झुठलाने हालॉकि अभी तक उनके ज़ेहन में उसके मायने नहीं आए इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे-तब ज़रा गौ़र तो करो कि (उन) ज़ालिमों का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ (39)

और उनमें से बाज़ तो ऐसे है कि इस क़ुरान पर आइन्दा ईमान लाएँगें और बाज़ ऐसे हैं जो ईमान लाएँगें ही नहीं (40)

और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार फसादियों को खूब जानता है और अगर वह तुम्हे झुठलाएँ तो तुम कह दो कि हमारे लिए हमारी कार गुजारी है और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारस्तानी जो कुछ मै करता हूँ उसके तुम ज़िम्मेदार नहीं और जो कुछ तुम करते हो उससे मै बरी हूँ (41)

और उनमें से बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी ज़बानों की तरफ कान लगाए रहते हैं तो (क्या) वह तुम्हारी सुन लेगें हरगिज़ नहीं अगरचे वह कुछ समझ भी न सकते हो (42)

तुम कही बहरों को कुछ सुना सकते हो और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ (टकटकी बाँधे) देखते हैं तो (क्या वह इमान लाएँगें हरगिज़ नहीं) अगरचे उन्हें कुछ न सूझता हो तो तुम अन्धे को राहे रास्त दिखा दोगे (43)

अल्लाह तो हरगिज़ लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं करता मगर लोग खुद अपने ऊपर (अपनी करतूत से) जुल्म किया करते है (44)

और जिस दिन ख़ुदा इन लोगों को (अपनी बारगाह में) जमा करेगा तो गोया ये लोग (समझेगें कि दुनिया में) बस घड़ी दिन भर ठहरे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने अल्लाह की बारगाह में हाज़िर होने को झुठलाया वह ज़रुर घाटे में हैं और हिदायत याफता न थे (45)

ऐ रसूल हम जिस जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा कर चुके हैं उनमें से बाज़ ख़्वाहा तुम्हें दिखा दें या तुमको (पहले ही दुनिया से) उठा ले फिर (आख़िर) तो उन सबको हमारी तरफ लौटना ही है फिर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह तो उस पर गवाह ही है (46)

और हर उम्मत का ख़ास (एक) एक रसूल हुआ है फिर जब उनका रसूल (हमारी बारगाह में) आएगा तो उनके दरम्यिान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न किया जाएगा (47)

ये लोग कहा करते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) ये (अज़ाब का वायदा) कब पूरा होगा (48)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै खुद अपने वास्ते नुकसान पर क़ादिर हूँ न नफा पर मगर जो अल्लाह चाहे हर उम्मत (के रहने) का (उसके इल्म में) एक वक्त मुक़र्रर है-जब उन का वक्त आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे हट सकती हैं और न आगे बढ़ सकते हैं (49)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम समझते हो कि अगर उसका अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाए तो (तुम क्या करोगे) फिर गुनाहगार लोग आख़िर काहे की जल्दी मचा रहे हैं (50)

फिर क्या जब (तुम पर) आ चुकेगा तब उस पर इमान लाओगे (आहा) क्या अब (इमान लाए) हालॉकि तुम तो इसकी जल्दी मचाया करते थे (51)

फिर (क़यामत के दिन) ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि (अब हमेशा के अज़ाब के मज़े चखो (दुनिया में) जैसी तुम्हारी करतूतें तुम्हें (आख़िरत में) वैसा ही बदला दिया जाएगा (52)

(ऐ रसूल) तुम से लोग पूछतें हैं कि क्या (जो कुछ तुम कहते हो) वह सब ठीक है तुम कह दो (हाँ) अपने परवरदिगार की कसम ठीक है और तुम (अल्लाह को) हरा नहीं सकते (53)

और (दुनिया में) जिस जिसने (हमारी नाफरमानी कर के) ज़ुल्म किया है (क़यामत के दिन) अगर तमाम ख़ज़ाने जो जमीन में हैं उसे मिल जाएँ तो अपने गुनाह के बदले ज़रुर फिदया दे निकले और जब वह लोग अज़ाब को देखेगें तो इज़हारे निदामत करेगें (शर्मिदा होंगें) और उनमें बाहम इन्साफ़ के साथ हुक्म दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा (बराबर ज़ुल्म न किया जाएगा (54)

आगाह रहो कि जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ही का है आग़ाह राहे कि अल्लाह का वायदा यक़ीनी ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं (55)

वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और तुम सब के सब उसी की तरफ लौटाए जाओगें (56)

लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत (किताबे ख़ुदा आ चुकी और जो (मरज़ शिर्क वग़ैरह) दिल में हैं उनकी दवा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत (57)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (ये क़ुरान) ख़ुदा के फज़ल व करम और उसकी रहमत से तुमको मिला है (ही) तो उन लोगों को इस पर खुश होना चाहिए (58)

और जो कुछ वह जमा कर रहे हैं उससे कहीं बेहतर है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम्हारा क्या ख़्याल है कि अल्लाह ने तुम पर रोज़ी नाज़िल की तो अब उसमें से बाज़ को हराम बाज़ को हलाल बनाने लगे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी है या तुम अल्लाह पर बोहतान बाँधते हो (59)

और जो लोग अल्लाह पर झूठ मूठ बोहतान बॉधा करते हैं रोजे़ क़यामत का क्या ख़्याल करते हैं उसमें शक नहीं कि ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा फज़ल व (करम) है मगर उनमें से बहुतेरे शुक्र गुज़ार नहीं हैं (60)

(और ऐ रसूल) तुम (चाहे) किसी हाल में हो और क़ुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और (लोगों) तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम (हम सर वक़्त) जब तुम उस काम में मशग़ूल होते हो तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़र्रे से छोटी है और न उससे बढ़ी चीज़ मगर वह रौशन किताब लौहे महफूज़ में ज़रुर है (61)

आगाह रहो इसमें शक नहीं कि दोस्ताने अल्लाह पर (क़यामत में) न तो कोई ख़ौफ होगा और न वह आज़ुर्दा (ग़मग़ीन) ख़ातिर होगे (62)

ये वह लोग हैं जो ईमान लाए और (ख़ुदा से) डरते थे (63)

उन्हीं लोगों के वास्ते दीन की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में (भी) ख़ुशख़बरी है ख़ुदा की बातों में अदल बदल नहीं हुआ करता यही तो बड़ी कामयाबी है (64)

और (ऐ रसूल) उन (कुफ़्फ़ार) की बातों का तुम रंज न किया करो इसमें तो शक नहीं कि सारी इज़्ज़त तो सिर्फ अल्लाह ही के लिए है वही सबकी सुनता जानता है (65)

आगाह रहो इसमें शक नहीं कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ही के लिए है और जो लोग अल्लाह को छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो

(अल्लाह के फर्ज़ी) शरीकों की राह पर भी नहीं चलते बल्कि वह तो सिर्फ अपनी अटकल पर चलते हैं और वह सिर्फ वहमी और ख़्याली बातें किया करते हैं (66)

वह वही (खुदाएँ क़ादिर तवाना) है जिसने तुम्हारे नफा के वास्ते रात को बनाया ताकि तुम इसमें चैन करो और दिन को (बनाया) कि उसकी रौशनी में देखो भालो उसमें शक नहीं जो लोग सुन लेते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत की बहुतेरी निशानियाँ हैं) (67)

लोगों ने तो कह दिया कि अल्लाह ने बेटा बना लिया-ये महज़ लगों वह तमाम नकायस से पाक व पाकीज़ा वह (हर तरह) से बेपरवाह हैं व जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसी का है (जो कुछ) तुम कहते हो(उसकी कोई दलील तो तुम्हारे पास है नहीं क्या तुम अल्लाह पर) (यूँ ही) बे जाने बूझे झूठ बोला करते हो (68)

ऐ रसूल तुम कह दो कि बेशक जो लोग झूठ मूठ ख़ुदा पर बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होगें (69)

(ये) दुनिया के (चन्द रोज़ा) फायदे हैं फिर तो आख़िर हमारी ही तरफ लौट कर आना है तब उनके कुफ्र की सज़ा में हम उनको सख़्त अज़ाब के मज़े चखाएँगें (70)

और (ऐ रसूल) तुम उनके सामने नूह का हाल पढ़ दो जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर मेरा ठहरना और ख़ुदा की आयतों का चर्चा करना तुम पर शाक़ व गरॉ (बुरा) गुज़रता है तो मैं सिर्फ ख़ुदा ही पर भरोसा रखता हूँ तो तुम और तुमहारे शरीक़ सब मिलकर अपना काम ठीक कर लो फिर तुम्हारी बात तुम (में से किसी) पर महज़ (छुपी) न रहे फिर (जो तुम्हारा जी चाहे) मेरे साथ कर गुज़रों और गुझे (दम मारने की भी) मोहलत न दो (71)

फिर भी अगर तुम ने (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ा तो मैने तुम से कुछ मज़दूरी तो न माँगी थी-मेरी मज़दूरी तो सिर्फ अल्लाह ही पर है और (उसी की तरफ से) मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उसके फरमाबरदार बन्दों में से हो जाऊँ (72)

उस पर भी उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में (सवार) थे (उनको) नजात दी और उनको (अगलों का) जानशीन बनाया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो मारा फिर ज़रा ग़ौर तो करो कि जो (अज़ाब से) डराए जा चुके थे उनका क्या (ख़राब) अन्जाम हुआ (73)

फिर हमने नूह के बाद और रसूलों को अपनी क़ौम के पास भेजा तो वह पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए (खुले हुए) व रौशन मौजिज़े लेकर आए इस पर भी जिस चीज़ को ये लोग पहले झुठला चुके थे

उस पर ईमान (न लाना था) न लाए हम यूँ ही हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर (गोया) खुद मोहर कर देते हैं (74)

फिर हमने इन पैग़म्बरों के बाद मूसा व हारुन को अपनी निशानियाँ (मौजिजे़) लेकर फिरआऊन और उस (की क़ौम) के सरदारों के पास भेजा तो वह लोग अकड़ बैठे और ये लोग थे ही क़ुसूरवार (75)

फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ बात (मौजिज़े) पहुँच गए तो कहने लगे कि ये तो यक़ीनी खुल्लम खुल्ला जादू है (76)

मूसा ने कहा क्या जब (दीन) तुम्हारे पास आया तो उसके बारे में कहते हो कि क्या ये जादू है और जादूगर लोग कभी कामयाब न होगें (77)

वह लोग कहने लगे कि (ऐ मूसा) क्यों तुम हमारे पास उस वास्ते आए हो कि जिस दीन पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया उससे तुम हमे बहका दो और सारी ज़मीन में ही दोनों की बढ़ाई हो और ये लोग तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं (78)

और फिरआऊन ने हुक्म दिया कि हमारे हुज़ूर में तमाम खिलाड़ी (वाक़िफकार) जादूगर को तो ले आओ (79)

फिर जब जादूगर लोग (मैदान में) आ मौजूद हुए तो मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ फेंकना हो फेंको (80)

फिर जब वह लोग (रस्सियों को साँप बनाकर) डाल चुके तू मूसा ने कहा जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो (वह तो सब) जादू है-इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा उसे फौरन मिटियामेट कर देगा (क्योंकर) अल्लाह तो हरगिज़ मफ़सिदों (फसाद करने वालों) का काम दुरुस्त नहीं होने देता (81) और ख़ुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को ना गॅवार हो (82)

अलग़रज़ मूसा पर उनकी क़ौम की नस्ल के चन्द आदमियों के सिवा फिरआऊन और उसके सरदारों के इस ख़ौफ से कि उन पर कोई मुसीबत डाल दे कोई ईमान न लाया और इसमें शक नहीं कि फिरआऊन रुए ज़मीन में बहुत बढ़ा चढ़ा था और इसमें शक नहीं कि वह यक़ीनन ज़्यादती करने वालों में से था (83)

और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर इमान ला चुके तो अगर तुम फरमाबरदार हो तो बस उसी पर भरोसा करो (84)

उस पर उन लोगों ने अर्ज़ की हमने तो ख़ुदा ही पर भरोसा कर लिया है और दुआ की कि ऐ हमारे पालने वाले तू हमें ज़ालिम लोगों का (ज़रिया) इम्तिहान न बना (85)

और अपनी रहमत से हमें इन काफ़िर लोगों (के नीचे) से नजात दे (86)

और हमने मूसा और उनके भाई (हारुन) के पास 'वही' भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के (रहने सहने के) लिए घर बना डालो और अपने अपने घरों ही को मस्जिदें क़रार दे लो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ों और मोमिनीन को (नजात का) खुशख़बरी दे दो (87)

और मूसा ने अर्ज़ की ऐ हमारे पालने वाले तूने फिरआऊन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में (बड़ी) आराइश और दौलत दे रखी है (क्या तूने ये सामान इस लिए अता किया है) ताकि ये लोग तेरे रास्तें से लोगों को बहकाएँ परवरदिगार तू उनके माल (दौलत) को ग़ारत (बरबाद) कर दे और उनके दिलों पर सख़्ती कर (क्योंकि) जब तक ये लोग तकलीफ देह अज़ाब न देख लेगें ईमान न लाएगें (88)

(अल्लाह ने) फरमाया तुम दोनों की दुआ क़ुबूल की गई तो तुम दोनों साबित कदम रहो और नादानों की राह पर न चलो (89)

और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार कर दिया फिर फिरआऊन और उसके लश्कर ने सरकशी की और शरारत से उनका पीछा किया-यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा कि जिस अल्लाह पर बनी इसराइल इमान लाए हैं मै भी उस पर ईमान लाता हूँ उससे सिवा कोई माबूद नहीं और मै फरमाबरदार बन्दों से हूँ (90)

अब (मरने) के वक्त ईमान लाता है हालॉकि इससे पहले तो नाफ़रमानी कर चुका और तू तो फ़सादियों में से था (91)

तो हम आज तेरी रुह को तो नहीं (मगर) तेरे बदन को (तह नशीन होने से) बचाएँगें ताकि तू अपने बाद वालों के लिए इबरत का (बाइस) हो और इसमें तो शक नहीं कि तेरे लोग हमारी निशानियों से यक़ीनन बेख़बर हैं (92)

और हमने बनी इसराइल को (मालिक शाम में) बहुत अच्छी जगह बसाया और उन्हं अच्छी अच्छी

चीज़ें खाने को दी तो उन लोगों के पास जब तक इल्म (न) आ चुका उन लोगों ने एख़्तेलाफ़ नहीं किया इसमें तो शक ही नहीं जिन बातों में ये (दुनिया में) बाहम झगड़े रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार इसमें फैसला कर देगा (93)

पस जो क़ुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है अगर उसके बारे में तुम को कुछ शक हो तो जो लोग तुम से पहले से किताब (ख़ुदा) पढ़ा करते हैं उन से पूछ के देखों तुम्हारे पास यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ किताब आ चुकी तो तू न हरगिज़ शक करने वालों से होना (94)

न उन लोगों से होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया (वरना) तुम भी घाटा उठाने वालों से हो जाओगे (95)

(ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि जिन लोगों के बारे में तुम्हारे परवरदिगार को बातें पूरी उतर चुकी हैं (कि ये मुस्तहक़े अज़ाब हैं) (96)

वह लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब देख (न) लेगें इमान न लाएँगें अगरचे इनके सामने सारी (अल्लाहई के) मौजिज़े आ मौजूद हो (97)

कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुयी कि इमान क़ुबूल करती तो उसको उसका इमान फायदे मन्द होता हाँ यूनूस की क़ौम जब (अज़ाब देख कर) इमान लाई तो हमने दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई का अज़ाब दफा कर दिया और हमने उन्हें एक ख़ास वक़्त तक चैन करने दिया (98)
और (ऐ पैग़म्बर) अगर तेरा परवरदिगार चाहता तो जितने लोग रुए ज़मीन पर हैं सबके सब इमान ले आते तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो ताकि सबके सब इमानदार हो जाएँ हालाँकि किसी शख़्स को ये एख़्तेयार नहीं (99)

कि बग़ैर ख़ुदा की इजाज़त ईमान ले आए और जो लोग (उसूले दीन में) अक़्ल से काम नहीं लेते उन्हीं लोगें पर ख़ुदा (कुफ़्र) की गन्दगी डाल देता है (100)

(ऐ रसूल) तुम कहा दो कि ज़रा देखों तो सही कि आसमानों और ज़मीन में (अल्लाह की निशानियाँ क्या) क्या कुछ हैं (मगर सच तो ये है) और जो लोग ईमान नहीं क़ुबूल करते उनको हमारी निशानियाँ और डरावे कुछ भी मुफीद नहीं (101)

तो ये लोग भी उन्हें सज़ाओं के मुन्तिज़र (इन्तजार में) हैं जो उनसे क़ब्ल (पहले) वालो ंपर गुज़र चुकी हैं (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अच्छा तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ यक़ीनन इन्तज़ार करता हूँ (102)

फिर (नुज़ूले अज़ाब के वक्त) हम अपने रसूलों को और जो लोग ईमान लाए उनको (अज़ाब से) तलूउ बचा लेते हैं यूँ ही हम पर लाज़िम है कि हम इमान लाने वालों को भी बचा लें (103)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर तुम लोग मेरे दीन के बारे में शक में पड़े हो तो (मैं भी तुमसे साफ कहें देता हूँ) ख़ुदा के सिवा तुम भी जिन लोगों की परसतिश करते हो मै तो उनकी परसतिश नहीं करने का मगर (हाँ) मै उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (अपनी कुदरत से दुनिया से) उठा लेगा और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मोमिन हूँ (104)

और (मुझे) ये भी (हुक्म है) कि (बातिल) से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ कायम रख और मुशरेकीन से हरगिज़ न होना (105)

और अल्लाह को छोड़ ऐसी चीज़ को पुकारना जो न तुझे नफा ही पहुँचा सकती हैं न नुक़सान ही पहुँचा सकती है तो अगर तुमने (कहीं ऐसा) किया तो उस वक्त तुम भी ज़ालिमों में (शुमार) होगें (106)

और (याद रखो कि) अगर अल्लाह की तरफ से तुम्हें कोई बुराई छू भी गई तो फिर उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं होगा और अगर तुम्हारे साथ भलाई का इरादा करे तो फिर उसके फज़्ल व करम का लपेटने वाला भी कोई नहीं वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे फायदा पहुँचाएँ और वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (107)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ लोगों तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक़ (क़ुरान) आ चुका फिर जो शख़्स सीधी राह पर चलेगा तो वह सिर्फ अपने ही दम के लिए हिदायत एख़्तेयार करेगा और जो गुमराही एख़्तेयार करेगा वह तो भटक कर कुछ अपना ही खोएगा और मैं कुछ तुम्हारा ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं (108)

और (ऐ रसूल) तुम्हारे पास जो 'वही' भेजी जाती है तुम बस उसी की पैरवी करो और सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे और काफिरों के दरम्यिान फैसला फरमाए और वह तो तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है (109)

11 सूरह हूद

सूरह हूद मक्का में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ तेईस (123) आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम रा - ये (क़ुरान) वह किताब है जिसकी आयते एक वाकिफ़कार हकीम की तरफ से (दलाएल से) खूब मुस्तहकिम (मज़बूत) कर दी गयीं (1)

फिर तफ़सीलदार बयान कर दी गयी हैं ये कि अल्लाह के सिवा किसी की परसतिश न करो मै तो उसकी तरफ से तुम्हें (अज़ाब से) डराने वाला और (बेहिश्त की) ख़ुशख़बरी देने वाला (रसूल) हूँ (2)

और ये भी कि अपने परवरदिगार से मग़फिरत की दुआ मॉगों फिर उसकी बारगाह में (गुनाहों से) तौबा करो वही तुम्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक अच्छे नुत्फ के फायदे उठाने देगा और वही हर साहबे बुर्ज़गी को उसकी बुर्जुगी (की दाद) अता फरमाएगा और अगर तुमने (उसके हुक्म से) मुँह मोड़ा तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े (ख़ौफनाक) दिन के अज़ाब का डर है (3)

(याद रखो) तुम सब को (आख़िरकार) ख़ुदा ही की तरफ लौटना है और वह हर चीज़ पर (अच्छी तरह) क़ादिर है (4)

(ऐ रसूल) देखो ये कुफ़्फ़ार (तुम्हारी अदावत में) अपने सीनों को (गोया) दोहरा किए डालते हैं ताकि ख़ुदा से (अपनी बातों को) छिपाए रहें (मगर) देखो जब ये लोग अपने कपड़े ख़ूब लपेटते हैं (तब भी तो) ख़ुदा (उनकी बातों को) जानता है जो छिपाकर करते हैं और खुल्लम खुल्ला करते हैं इसमें शक नहीं कि वह सीनों के भेद तक को खूब जानता है (5)

और ज़मीन पर चलने वालों में कोई ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो और अल्लाह उनके ठिकाने और (मरने के बाद) उनके सौपे जाने की जगह (क़ब्र) को भी जानता है सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में मौजूद है (6)

और वह तो वही (क़ादिरे मुत्तलिक़) है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया और (उस वक्त) उसका अर्श (फलक नहुम) पानी पर था (उसने आसमान व ज़मीन) इस ग़रज़ से बनाया ताकि तुम लोगों को आज़माए कि तुममे ज़्यादा अच्छी कार गुज़ारी वाला कौन है और (ऐ रसूल)

अगर तुम (उनसे) कहोगे कि मरने के बाद तुम सबके सब दोबारा (क़ब्रों से) उठाए जाओगे तो काफ़िर लोग ज़रुर कह बैठेगें कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (7)

और अगर हम गिनती के चन्द रोज़ो तक उन पर अज़ाब करने में देर भी करें तो ये लोग (अपनी शरारत से) बेताम्मुल ज़रुर कहने लगेगें कि (हाए) अज़ाब को कौन सी चीज़ रोक रही है सुन रखो जिस दिन इन पर अज़ाब आ पड़े तो (फिर) उनके टाले न टलेगा और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाया करते थे वह उनको हर तरह से घेर लेगा (8)

और अगर हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखाएँ फिर उसको हम उससे छीन लें तो (उस वक्त) यक़ीनन बड़ा बेआस और नाशुक्रा हो जाता है (9)

(और हमारी शिकायत करने लगता है) और अगर हम तकलीफ के बाद जो उसे पहुँचती थी राहत व आराम का जाएक़ा चखाए तो ज़रुर कहने लगता है कि अब तो सब सख़्तियाँ मुझसे दफा हो गई इसमें शक नहीं कि वह बड़ा (जल्दी खुश) होने शेख़ी बाज़ है (10)

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसे नहीं) ये वह लोग हैं जिनके वास्ते (अल्लाह की) बख़्शिश और बहुत बड़ी (खरी) मज़दूरी है (11)

तो जो चीज़ तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजी है उनमें से बाज़ को (सुनाने के वक्त) शायद तुम फक़त इस ख़्याल से छोड़ देने वाले हो और तुम तंग दिल हो कि मुबादा ये लोग कह बैठें कि उन पर खज़ाना क्यों नहीं नाज़िल किया गया या (उनके तसदीक के लिए) उनके साथ कोई फरिश्ता क्यों न आया तो तुम सिर्फ (अज़ाब से) डराने वाले हो (12)

तुम्हें उनका ख़्याल न करना चाहिए और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है क्या ये लोग कहते हैं कि उस शख़्स (तुम) ने इस (क़ुरान) को अपनी तरफ से गढ़ लिया है तो तुम (उनसे साफ साफ) कह दो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (ज़्यादा नहीं) ऐसे दस सूरे अपनी तरफ से गढ़ के ले आओं (13)

और अल्लाह के सिवा जिस जिस के तुम्हे बुलाते बन पड़े मदद के वास्ते बुला लो उस पर अगर वह तुम्हारी न सुने तो समझ ले कि (ये क़ुरान) सिर्फ ख़ुदा के इल्म से नाज़िल किया गया है और ये कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम अब भी इस्लाम लाओगे (या नहीं) (14)

नेकी करने वालों में से जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसके रिज़क़ का तालिब हो तो हम उन्हें उनकी कारगुज़ारियों का बदला दुनिया ही में पूरा पूरा भर देते हैं और ये लोग दुनिया में घाटे में नहीं रहेगें (15)

मगर (हाँ) ये वह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में (जहन्नुम की) आग के सिवा कुछ नहीं और जो कुछ दुनिया में उन लोगों ने किया धरा था सब अकारत (बर्बाद) हो गया और जो कुछ ये लोग करते थे सब मिटियामेट हो गया (16)

तो क्या जो शख़्स अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हो और उसके पीछे ही पीछे उनका एक गवाह हो और उसके क़बल मूसा की किताब (तौरैत) जो (लोगों के लिए) पेशवा और रहमत थी (उसकी तसदीक़ करती हो वह बेहतर है या कोई दूसरा) यही लोग सच्चे इमान लाने वाले और तमाम फिरक़ों में से जो शख़्स भी उसका इन्कार करे तो उसका ठिकाना बस आतिश (जहन्नुम) है तो फिर तुम कहीं उसकी तरफ से शक में न पड़े रहना, बेशक ये क़ुरान तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है मगर बहुतेरे लोग इमान नही लाते (17)

और ये जो शख़्स अल्लाह पर झूठ मूठ बोहतान बॉधे उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा ऐसे लोग अपने परवरदिगार के हुज़ूर में पेश किए जाएँगें और गवाह इज़हार करेगें कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूट (बोहतान) बाँधा था सुन रखो कि ज़ालिमों पर अल्लाह की फिटकार है (18)

जो ख़ुदा के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कज़ी (टेढ़ा पन) निकालना चाहते हैं और यही लोग आख़िरत के भी मुन्किर है (19)

ये लोग रुए ज़मीन में न ख़ुदा को हरा सकते है और न ख़ुदा के सिवा उनका कोई सरपरस्त होगा उनका अज़ाब दूना कर दिया जाएगा ये लोग (हसद के मारे) न तो (हक़ बात) सुन सकते थे न देख सकते थे (20)

ये वह लोग हैं जिन्होंने कुछ अपना ही घाटा किया और जो इफ़्तेरा परदाज़ियाँ (झूठी बातें) ये लोग करते थे (क़यामत में सब) उन्हें छोड़ के चल होगी (21)

इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में बड़े घाटा उठाने वाले होगें (22)

बेशक जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और अपने परवरदिगार के सामने आजज़ी से झुके यही लोग जन्नती हैं कि ये बेहश्त में हमेशा रहेगें (23)

(काफिर,मुसलमान) दोनों फरीक़ की मसल अन्धे और बहरे और देखने वाले और सुनने वाले की सी है क्या ये दोनो मसल में बराबर हो सकते हैं तो क्या तुम लोग ग़ौर नहीं करते और हमने नूह को ज़रुर उन की क़ौम के पास भेजा (24)

(और उन्होने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं तो तुम्हारा (अज़ाबे ख़ुदा से) सरीही धमकाने वाला हूँ (25)

(और) ये (समझता हूँ) कि तुम ख़ुदा के सिवा किसी की परसतिश न करो मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन (क़यामत) के अज़ाब से डराता हूँ (26)

तो उनके सरदार जो काफ़िर थे कहने लगे कि हम तो तुम्हें अपना ही सा एक आदमी समझते हैं और हम तो देखते हैं कि तुम्हारे पैरोकार हुए भी हैं तो बस सिर्फ हमारे चन्द रज़ील (नीच) लोग (और वह भी बे सोचे समझे सरसरी नज़र में) और हम तो अपने ऊपर तुम लोगों की कोई फज़ीलत नहीं देखते बल्कि तुम को झूठा समझते हैं (27)

(नूह ने) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमने ये समझा है कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और उसने अपनी सरकार से रहमत (नुबूवत) अता फरमाई और वह तुम्हें सुझाई नहीं देती तो क्या मैं उसको (ज़बरदस्ती) तुम्हारे गले मंढ़ सकता हूँ (28)

और तुम हो कि उसको नापसन्द किए जाते हो और ऐ मेरी क़ौम मैं तो तुमसे इसके सिले में कुछ माल का तालिब नहीं मेरी मज़दूरी तो सिर्फ ख़ुदा के ज़िम्मे है और मै तो तुम्हारे कहने से उन लोगों को जो इमान ला चुके हैं निकाल नहीं सकता (क्योंकि) ये लोग भी ज़रुर अपने परवरदिगार के हुज़ूर में हाज़िर होगें मगर मै तो देखता हूँ कि कुछ तुम ही लोग (नाहक़) जिहालत करते हो (29)

और मेरी क़ौम अगर मै इन (बेचारे ग़रीब) (ईमानदारों) को निकाल दूँ तो अल्लाह (के अज़ाब) से (बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा तो क्या तुम इतना भी ग़ौर नहीं करते (30)

और मै तो तुमसे ये नहीं कहता कि मेरे पास खुदाई ख़ज़ाने हैं और न (ये कहता हूँ कि) मै ग़ैब वॉ हूँ (ग़ैब का जानने वाला) और ये कहता हूँ कि मै फरिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नज़रों में ज़लील हैं उन्हें मै ये नहीं कहता कि अल्लाह उनके साथ हरगिज़ भलाई नहीं करेगा उन लोगों के दिलों की बात अल्लाह ही खूब जानता है और अगर मै ऐसा कहूँ तो मै भी यक़ीनन ज़ालिम हूँ (31)

वह लोग कहने लगे ऐ नूह तुम हम से यक़ीनन झगड़े और बहुत झगड़े फिर तुम सच्चे हो तो जिस (अज़ाब) की तुम हमें धमकी देते थे हम पर ला चुको (32)

नूह ने कहा अगर चाहेगा तो बस अल्लाह ही तुम पर अज़ाब लाएगा और तुम लोग किसी तरह उसे हरा नहीं सकते और अगर मै चाहूँ तो तुम्हारी (कितनी ही) ख़ैर ख़्वाही (भलाई) करुँ (33)

अगर अल्लाह को तुम्हारा बहकाना मंजूर है तो मेरी ख़ैर ख़्वाही कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आ सकती वही तुम्हारा परवरदिगार है और उसी की तरफ तुम को लौट जाना है (34)

(ऐ रसूल) क्या (कुफ़्फ़ारे मक्का भी) कहते हैं कि क़ुरान को उस (तुम) ने गढ़ लिया है तुम कह दो कि अगर मैने उसको गढ़ा है तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर होगा और तुम लोग जो (गुनाह करके) मुजरिम होते हो उससे मै बरीउल ज़िम्मा (अलग) हूँ (35)

और नूह के पास ये 'वही' भेज दी गई कि जो ईमान ला चुका उनके सिवा अब कोई शख़्स तुम्हारी क़ौम से हरगिज़ ईमान न लाएगा तो तुम ख्वाहमा ख़्वाह उनकी कारस्तानियों का (कुछ) ग़म न खाओ (36)

और (बिस्मिल्लाह करके) हमारे रुबरु और हमारे हुक्म से कश्ती बना डालो और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे सिफारिश न करना क्योंकि ये लोग ज़रुर डुबा दिए जाएँगें (37)

और नूह कश्ती बनाने लगे और जब कभी उनकी क़ौम के सरबर आवुरदा लोग उनके पास से गुज़रते थे तो उनसे मसख़रापन करते नूह (जवाब में) कहते कि अगर इस वक्त तुम हमसे मसखरापन करते हो तो जिस तरह तुम हम पर हँसते हो हम तुम पर एक वक्त हँसेगें (38)

और तुम्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है कि (दुनिया में) उसे रुसवा कर दे और किस पर (क़यामत में) दाइमी अज़ाब नाज़िल होता है (39)

यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा और तन्नूर से जोश मारने लगा तो हमने हुक्म दिया (ऐ नूह) हर किस्म के जानदारों में से (नर मादा का) जोड़ा (यानि) दो दो ले लो और जिस (की) हलाकत (तबाही) का हुक्म पहले ही हो चुका हो उसके सिवा अपने सब घर वाले और जो लोग ईमान ला चुके उन सबको कश्ती (नाँव) में बैठा लो और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लोग लाए थे (40)

और नूह ने (अपने साथियों से) कहा बिस्मिल्ला मज़रीहा मुरसाहा (अल्लाह ही के नाम से उसका बहाओ और ठहराओ है) कश्ती में सवार हो जाओ बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (41)

और कश्ती है कि पहाड़ों की सी (ऊँची) लहरों में उन लोगों को लिए हुए चली जा रही है और नूह ने अपने बेटे को जो उनसे अलग थलग एक गोशे (कोने) में था आवाज़ दी ऐ मेरे फरज़न्द हमारी कश्ती में सवार हो लो और काफिरों के साथ न रह (42)

(मुझे माफ कीजिए) मै तो अभी किसी पहाड़ का सहारा पकड़ता हूँ जो मुझे पानी (में डूबने) से बचा लेगा नूह ने (उससे) कहा (अरे कम्बख़्त) आज ख़ुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर अल्लाह ही जिस पर रहम फरमाएगा और (ये बात हो रही थी कि) यकायक दोनो बाप बेटे के दरम्यिान एक मौज हाएल हो गई और वह डूब कर रह गया (43)

और (ग़ैब अल्लाह की तरफ से) हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी जज़्ब (शोख) करे और ऐ आसमान (बरसने से) थम जा और पानी घट गया और (लोगों का) काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जो वही (पहाड़) पर जा ठहरी और (चारो तरफ) पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोगों को (अल्लाह की रहमत से) दूरी हो (44)

और (जिस वक्त नूह का बेटा ग़रक (डूब) हो रहा था तो नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और अर्ज़ की ऐ मेरे परवरदिगार इसमें तो शक नहीं कि मेरा बेटा मेरे एहल (घर वालों) में शामिल है और तूने वायदा किया था कि तेरे एहल को बचा लूँगा) और इसमें शक नहीं कि तेरा वायदा सच्चा है और तू सारे (जहान) के हाकिमों से बड़ा हाकिम है (45)

(तू मेरे बेटे को नजात दे) अल्लाह ने फरमाया ऐ नूह तुम (ये क्या कह रहे हो) हरगिज़ वह तुम्हारे एहल में शामिल नहीं वह बेशक बदचलन है (देखो जिसका तुम्हें इल्म नहीं है मुझसे उसके बारे में (दरख़्वास्त न किया करो और नादानों की सी बातें न करो) नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे परवरदिगार मै तुझ ही से पनाह मागँता हूँ कि जिस चीज़ का मुझे इल्म न हो मै उसकी दरख़्वास्त करुँ (46)

और अगर तु मुझे (मेरे कसूर न बख़्श देगा और मुझ पर रहम न खाएगा तो मैं सख़्त घाटा उठाने वालों में हो जाऊँगा (जब तूफान जाता रहा तो) हुक्म दिया गया ऐ नूह हमारी तरफ से सलामती और उन बरकतों के साथ कश्ती से उतरो (47)

जो तुम पर हैं और जो लोग तुम्हारे साथ हैं उनमें से न कुछ लोगों पर और (तुम्हारे बाद) कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें हम थोड़े ही दिन बाद बहरावर करेगें फिर हमारी तरफ से उनको दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा (48)

(ऐ रसूल) ये ग़ैब की चन्द ख़बरे हैं जिनको तुम्हारी तरफ वही के ज़रिए पहुँचाते हैं जो उसके क़ब्ल न तुम जानते थे और न तुम्हारी क़ौम ही (जानती थी) तो तुम सब्र करो इसमें शक नहीं कि आख़िरत (की खूबियाँ) परहेज़गारों ही के वास्ते हैं (49)

और (हमने) क़ौमे आद के पास उनके भाई हूद को (पैग़म्बर बनाकर भेजा और) उन्होनें अपनी क़ौम

से कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की परसतिश करों उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तुम बस निरे इफ़तेरा परदाज़ (झूठी बात बनाने वाले) हो (50)

ऐ मेरी क़ौम मै उस (समझाने पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं मॉगता मेरी मज़दूरी तो बस उस शख़्स के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते (51)

और ऐ मेरी क़ौम अपने परवरदिगार से मग़फिरत की दुआ मॉगों फिर उसकी बारगाह में अपने (गुनाहों से) तौबा करो तो वह तुम पर मूसलाधार मेह आसमान से बरसाएगा ख़ुश्क साली न होगी और तुम्हारी क़ूवत (ताक़त) में और क़ूवत बढ़ा देगा और मुजरिम बन कर उससे मुँह न मोड़ों (52)

वह लोग कहने लगे ऐ हूद तुम हमारे पास कोई दलील लेकर तो आए नहीं और तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को तो छोड़ने वाले नहीं और न हम तुम पर ईमान लाने वाले हैं (53)

हम तो बस ये कहते हैं कि हमारे अल्लाहओं में से किसने तुम्हें मजनून (दीवाना) बना दिया है (इसी वजह से तुम) बहकी बहकी बातें करते हो हूद ने जवाब दिया बेशक मै अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम ख़ुदा के सिवा (दूसरों को) उसका शरीक बनाते हो (54)

इसमे मै बेज़ार हूँ तो तुम सब के सब मेरे साथ मक्कारी करो और मुझे (दम मारने की) मोहलत भी न दो तो मुझे परवाह नहीं (55)

मै तो सिर्फ ख़ुदा पर भरोसा रखता हूँ जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है और रुए ज़मीन पर जितने चलने वाले हैं सबकी चोटी उसी के साथ है इसमें तो शक ही नहीं कि मेरा परवरदिगार (इन्साफ की) सीधी राह पर है (56)

इस पर भी अगर तुम उसके हुक्म से मुँह फेरे रहो तो जो हुक्म दे कर मैं तुम्हारे पास भेजा गया था उसे तो मैं यक़ीनन पहुँचा चुका और मेरा परवरदिगार (तुम्हारी नाफरमानी पर तुम्हें हलाक करें) तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौम को तुम्हारा जानशीन करेगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते इसमें तो शक नहीं है कि मेरा परवरदिगार हर चीज़ का निगेहबान है (57)

और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने हूद को और जो लोग उसके साथ इमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दिया और उन सबको सख़्त अज़ाब से बचा लिया (58)

(ऐ रसूल) ये हालात क़ौमे आद के हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की नाफ़रमानी की और हर सरकश (दुश्मने ख़ुदा) के हुक्म पर चलते रहें (59)

और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) देख क़ौमे आद ने अपने परवरदिगार का इन्कार किया देखो हूद की क़ौमे आद (हमारी बारगाह से) धुत्कारी पड़ी है (60)

और (हमने) क़ौमे समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर भेजा) तो उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा ही की परसतिश करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं उसी ने तुमको ज़मीन (की मिट्टी) से पैदा किया और तुमको उसमें बसाया तो उससे मग़फिरत की दुआ मॉगों फिर उसकी बारगाह में तौबा करो (बेशक मेरा परवरदिगार (हर शख़्स के) क़रीब और सबकी सुनता और दुआ क़ुबूल करता है (61)

वह लोग कहने लगे ऐ सालेह इसके पहले तो तुमसे हमारी उम्मीदें वाबस्ता थी तो क्या अब तुम जिस चीज़ की परसतिश हमारे बाप दादा करते थे उसकी परसतिश से हमें रोकते हो और जिस दीन की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम तो उसकी निस्बत ऐसे शक में पड़े हैं (62)

कि उसने हैरत में डाल दिया है सालेह ने जवाब दिया ऐ मेरी क़ौम भला देखो तो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपनी (बारगाह) मे रहमत (नबूवत) अता की है इस पर भी अगर मै उसकी नाफ़रमानी करुँ तो अल्लाह (के अज़ाब से बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा-फिर तुम सिवा नुक़सान के मेरा कुछ बढ़ा दोगे नहीं (63)

ऐ मेरी क़ौम ये अल्लाह की (भेजी हुयी) ऊँटनी है तुम्हारे वास्ते (मेरी नबूवत का) एक मौजिज़ा है तो इसको (उसके हाल पर) छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में (जहाँ चाहे) खाए और उसे कोई तकलीफ न पहुँचाओ (64)

(वरना) फिर तुम्हें फौरन ही (अल्लाह का) अज़ाब ले डालेगा इस पर भी उन लोगों ने उसकी कूँचे काटकर (मार) डाला तब सालेह ने कहा अच्छा तीन दिन तक (और) अपने अपने घर में चैन (उड़ा लो) (65)

यही ख़ुदा का वायदा है जो कभी झूठा नहीं होता फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने सालेह और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दी और उस दिन की रुसवाई से बचा लिया इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार ज़बरदस्त ग़ालिब है (66)

और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक सख़्त चिघाड़ ने ले डाला तो वह लोग अपने अपने घरों में औंधें पड़े रह गये (67)

और ऐसे मर मिटे कि गोया उनमें कभी बसे ही न थे तो देखो क़ौमे समूद ने अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी की और (सज़ा दी गई) सुन रखो कि क़ौमे समूद (उसकी बारगाह से) धुत्कारी हुई है (68)

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इबराहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने (इबराहीम को) सलाम किया (इबराहीम ने) सलाम का जवाब दिया फिर इबराहीम एक बछड़े का भुना हुआ (गोश्त) ले आए (69)

(और साथ खाने बैठें) फिर जब देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ नहीं बढ़ते तो उनकी तरफ से बदगुमान हुए और जी ही जी में डर गए (उसको वह फ़रिश्ते समझे) और कहने लगे आप डरे नहीं हम तो क़ौम लूत की तरफ (उनकी सज़ा के लिए) भेजे गए हैं (70)

और इबराहीम की बीबी (सायरा) खड़ी हुयी थी वह (ये ख़बर सुनकर) हॅस पड़ी तो हमने (उन्हें फ़रिश्तो के ज़रिए से) इसहाक़ के पैदा होने की खुशख़बरी दी और इसहाक़ के बाद याक़ूब की (71)

वह कहने लगी ऐ है क्या अब मै बच्चा जनने बैठूॅगी मैं तो बुढ़िया हूँ और ये मेरे मियॉ भी बूढ़े है ये तो एक बड़ी ताज्जुब खेज़ बात है (72)

वह फ़रिश्ते बोले (हाए) तुम अल्लाह की कुदरत से ताज्जुब करती हो ऐ एहले बैत (नबूवत) तुम पर ख़ुदा की रहमत और उसकी बरकते (नाज़िल हो) इसमें शक नहीं कि वह क़ाबिल हम्द (वासना) बुज़ुर्ग हैं (73)

फिर जब इबराहीम (के दिल) से ख़ौफ जाता रहा और उनके पास (औलाद की) खुशख़बरी भी आ चुकी तो हम से क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने लगे (74)

बेशक इबराहीम बुर्दबार नरम दिल (हर बात में अल्लाह की तरफ) रुजू (ध्यान) करने वाले थे (75)

(हमने कहा) ऐ इबराहीम इस बात में हट मत करो (इस बार में) जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार का था वह क़तअन आ चुका और इसमें शक नहीं कि उन पर ऐसा अज़ाब आने वाले वाला है (76)

जो किसी तरह टल नहीं सकता और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (लड़को की सूरत में) लूत के पास आए तो उनके ख़्याल से रंजीदा हुए और उनके आने से तंग दिल हो गए और कहने लगे कि ये (आज का दिन) सख़्त मुसीबत का दिन है (77)

और उनकी क़ौम (लड़को की आवाज़ सुनकर बुरे इरादे से) उनके पास दौड़ती हुयी आई और ये लोग उसके क़ब्ल भी बुरे काम किया करते थे लूत ने (जब उनको) आते देखा तो कहा ऐ मेरी क़ौम ये मारी क़ौम की बेटियाँ (मौजूद हैं) उनसे निकाह कर लो ये तुम्हारी वास्ते जायज़ और ज़्यादा साफ सुथरी हैं तो ख़ुदा से डरो और मुझे मेरे मेहमान के बारे में रुसवा न करो क्या तुम में से कोई भी समझदार आदमी नहीं है (78)

उन (कम्बख़्तो) न जवाब दिया तुम को खूब मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की लड़कियों की हमें कुछ हाजत (जरूरत) नही है और जो बात हम चाहते है वह तो तुम ख़ूब जानते हो (79)

लूत ने कहा काश मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की कूवत होती या मै किसी मज़बूत क़िले मे पनाह ले सकता (80)

वह फरिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे परवरतिदगार के भेजे हुए (फरिश्ते हैं तुम घबराओ नहीं) ये लोग तुम तक हरगिज़ (नहीं पहुँच सकते तो तुम कुछ रात रहे अपने लड़कों बालों समैत निकल भागो और तुममें से कोई इधर मुड़ कर भी न देखे मगर तुम्हारी बीबी कि उस पर भी यक़ीनन वह अज़ाब नाज़िल होने वाला है जो उन लोगों पर नाज़िल होगा और उन (के अज़ाब का) वायदा बस सुबह है क्या सुबह क़रीब नहीं (81)

फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने (बस्ती की ज़मीन के तबके) उलट कर उसके ऊपर के हिस्से को नीचे का बना दिया और उस पर हमने खरन्जेदार पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए (82)

जिन पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशान बनाए हुए थे और वह बस्ती (उन) ज़ालिमों (कुफ़्फ़ारे मक्का) से कुछ दूर नहीं (83)

और हमने मदयन वालों के पास उनके भाई शुएब को पैग़म्बर बना कर भेजा उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई अल्लाह नहीं और नाप और तौल में कोई कमी न किया करो मै तो तुम को आॅसूदगी (ख़ुशहाली) में देख रहा हूँ (फिर घटाने की क्या ज़रुरत है) और मै तो तुम पर उस दिन के अज़ाब से डराता हूँ जो (सबको) घेर लेगा (84)

और ऐ मेरी क़ौम पैमाने और तराज़ू इन्साफ़ के साथ पूरे पूरे रखा करो और लोगों को उनकी चीज़े कम न दिया करो और रुए ज़मीन में फसाद न फैलाते फिरो (85)

अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो अल्लाह का बक़िया तुम्हारे वास्ते कही अच्छा है और मैं तो कुछ तुम्हारा निगेहबान नहीं (86)

वह लोग कहने लगे ऐ शुएब क्या तुम्हारी नमाज़ (जिसे तुम पढ़ा करते हो) तुम्हें ये सिखाती है कि जिन (बुतों) की परसतिश हमारे बाप दादा करते आए उन्हें हम छोड़ बैठें या हम अपने मालों में जो कुछ चाहे कर बैठें तुम ही तो बस एक बुर्दबार और समझदार (रह गए) हो (87)

शुएब ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर मै अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे (हलाल) रोज़ी खाने को दी है (तो मै भी तुम्हारी तरह हराम खाने लगूँ) और मै तो ये नहीं चाहता कि जिस काम से तुम को रोकूँ तुम्हारे बर ख़िलाफ (बदले) आप उसको करने लगूं मैं तो जहाँ तक मुझे बन पड़े इसलाह (भलाई) के सिवा (कुछ और) चाहता ही नहीं और मेरी ताईद तो अल्लाह के सिवा और किसी से हो ही नहीं सकती इस पर मैने भरोसा कर लिया है और उसी की तरफ रुजू़ करता हूँ (88)

और ऐ मेरी क़ौमे मेरी ज़िद कही तुम से ऐसा जुर्म न करा दे जैसी मुसीबत क़ौम नूह या हूद या सालेह पर नाज़िल हुयी थी वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आ पड़े और लूत की क़ौम (का ज़माना) तो (कुछ ऐसा) तुमसे दूर नहीं (उन्हीं के इबरत हासिल करो (89)

और अपने परवरदिगार से अपनी मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसी की बारगाह में तौबा करो बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा मोहब्बत वाला मेहरबान है (90)

और वह लोग कहने लगे ऐ शुएब जो बाते तुम कहते हो उनमें से अक्सर तो हमारी समझ ही में नहीं आयी और इसमें तो शक नहीं कि हम तुम्हें अपने लोगों में बहुत कमज़ोर समझते है और अगर तुम्हारा क़बीला न होता तो हम तुम को (कब का) संगसार कर चुके होते और तुम तो हम पर किसी तरह ग़ालिब नहीं आ सकते (91)

शुएब ने कहा ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे कबीले का दबाव तुम पर अल्लाह से भी बढ़ कर है (कि तुम को उसका ये ख़्याल) और अल्लाह को तुम लोगों ने अपने वास्ते पीछे डाल दिया है बेशक मेरा परवरदिगार तुम्हारे सब आमाल पर अहाता किए हुए है (92)

और ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) करो मैं भी (बजाए खुद) कुछ करता हू अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है जा उसको (लोगों की नज़रों में) रुसवा कर देगा और (ये भी मालूम हो जाएगा कि) कौन झूठा है तुम भी मुन्तिज़र रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार करता हूँ (93)

और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने शुऐब और उन लोगों को जो उसके साथ इमान लाए थे अपनी मेहरबानी से बचा लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक चिंघाड़ ने ले डाला फिर तो वह सबके सब अपने घरों में औंधे पड़े रह गए (94)

(और वह ऐसे मर मिटे) कि गोया उन बस्तियों में कभी बसे ही न थे सुन रखो कि जिस तरह समूद (अल्लाह की बारगाह से) धुत्कारे गए उसी तरह एहले मदियन की भी धुत्कारी हुयी (95)

और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलील देकर (96)

फिरआऊन और उसके अम्र (सरदारों) के पास (पैग़म्बर बना कर) भेजा तो लोगों ने फिरआऊन ही का हुक्म मान लिया (और मूसा की एक न सुनी) हालाँकि फिरआऊन का हुक्म कुछ जँचा समझा हुआ न था (97)

क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे आगे चलेगा और उनको दोज़ख़ में ले जाकर झोंक देगा और ये लोग किस क़दर बड़े घाट उतारे गए (98)

और (इस दुनिया) में भी लानत उनके पीछे पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) क्या बुरा इनाम है जो उन्हें मिला (99)

(ऐ रसूल) ये चन्द बस्तियों के हालात हैं जो हम तुम से बयान करते हैं उनमें से बाज़ तो (उस वक़्त तक) क़ायम हैं और बाज़ का तहस नहस हो गया (100)

और हमने किसी तरह उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन लोगों ने आप अपने ऊपर (नाफरमानी करके) ज़ुल्म किया फिर जब तुम्हारे परवरदिगार का (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो न उसके वह माबूद ही काम आए जिन्हें अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते थें और न उन माबूदों ने हलाक करने के सिवा कुछ फायदा ही पहुँचाया बल्कि उन्हीं की परसतिश की बदौलत अज़ाब आया (101)

और (ऐ रसूल) बस्तियों के लोगों की सरकशी से जब तुम्हारा परवरदिगार अज़ाब में पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही होती है बेशक पकड़ तो दर्दनाक (और सख़्त) होती है (102)

इसमें तो शक नहीं कि उस शख़्स के वास्ते जो अज़ाब आख़िरत से डरता है (हमारी कुदरत की) एक निशानी है ये वह रोज़ होगा कि सारे (जहाँन) के लोग जमा किए जाऍगें और यही वह दिन होगा कि (हमारी बारगाह में) सब हाज़िर किए जाऍगें (103)

और हम बस एक मुअय्युन मुद्दत तक इसमें देर कर रहे है (104)

जिस दिन वह आ पहुँचेगा तो बग़ैर हुक्मे ख़ुदा कोई शख़्स बात भी तो नहीं कर सकेगा फिर कुछ लोग उनमे से बदबख़्त होगें और कुछ लोग नेक बख़्त (105)

तो जो लोग बदबख़्त है वह दोज़ख़ में होगें और उसी में उनकी हाए वाए और चीख़ पुकार होगी (106)

वह लोग जब तक आसमान और ज़मीन में है हमेशा उसी मे रहेगें मगर जब तुम्हारा परवरदिगार (नजात देना) चाहे बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है कर ही डालता है (107)

और जो लोग नेक बख़्त हैं वह तो बेहश्त में होगें (और) जब तक आसमान व ज़मीन (बाक़ी) है वह हमेशा उसी में रहेगें मगर जब तेरा परवरदिगार चाहे (सज़ा देकर आख़िर में जन्नत में ले जाए (108)

ये वह बख़्शिश है जो कभी मनक़तआ (खत्म) न होगी तो ये लोग (अल्लाह के अलावा) जिसकी परसतिश करते हैं तुम उससे शक में न पड़ना ये लोग तो बस वैसी इबादत करते हैं जैसी उनसे पहले उनके बाप दादा करते थे और हम ज़रुर (क़यामत के दिन) उनको (अज़ाब का) पूरा पूरा हिस्सा बग़ैर कम किए देगें (109)

और हमने मूसा को किताब तौरैत अता की तो उसमें (भी) झगड़े डाले गए और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हुक्म कोइ पहले ही न हो चुका होता तो उनके दरमियान (कब का) फैसला यक़ीनन हो गया होता और ये लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) भी इस (क़ुरान) की तरफ से बहुत गहरे शक में पड़े हैं (110)

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनकी कारस्तानियों का बदला भरपूर देगा (क्योंकि) जो उनकी करतूतें हैं उससे वह खूब वाक़िफ़ है (111)

तो (ऐ रसूल) जैसा तुम्हें हुक्म दिया है तुम और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ (कुफ्र से) तौबा की है ठीक साबित क़दम रहो और सरकशी न करो (क्योंकि) तुम लोग जो कुछ भी करते हो वह यक़ीनन देख रहा है (112)

और (मुसलमानों) जिन लोगों ने (हमारी नाफरमानी करके) अपने ऊपर ज़ुल्म किया है उनकी तरफ माएल (झुकना) न होना और वरना तुम तक भी (दोज़ख़) की आग आ लपटेगी और अल्लाह के सिवा और लोग तुम्हारे सरपरस्त भी नहीं हैं फिर तुम्हारी मदद कोई भी नहीं करेगा (113)

और (ऐ रसूल) दिन के दोनो किनारे और कुछ रात गए नमाज़ पढ़ा करो (क्योंकि) नेकियाँ यक़ीनन गुनाहों को दूर कर देती हैं और (हमारी) याद करने वालो के लिए ये (बातें) नसीहत व इबरत हैं (114)

और (ऐ रसूल) तुम सब्र करो क्योंकि अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र बरबाद नहीं करता (115)

फिर जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनमें कुछ लोग ऐसे अक़्ल वाले क्यों न हुए जो (लोगों को) रुए ज़मीन पर फसाद फैलाने से रोका करते (ऐसे लोग थे तो) मगर बहुत थोड़े से और ये उन्हीं लोगों से थे जिनको हमने अज़ाब से बचा लिया और जिन लोगों ने नाफरमानी की थी वह उन्हीं (लज़्ज़तों) के पीछे पड़े रहे और जो उन्हें दी गई थी और ये लोग मुजरिम थे ही (116)

और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा (बे इन्साफ) कभी न था कि बस्तियों को जबरदस्ती उजाड़ देता और वहाँ के लोग नेक चलन हों (117)

और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो बेशक तमाम लोगों को एक ही (किस्म की) उम्मत बना देता (मगर) उसने न चाहा इसी (वजह से) लोग हमेशा आपस में फूट डाला करेगें (118)

मगर जिस पर तुम्हारा परवरदिगार रहम फरमाए और इसलिए तो उसने उन लोगों को पैदा किया (और इसी वजह से तो) तुम्हारा परवरदिगार का हुक्म क़तई पूरा होकर रहा कि हम यक़ीनन जहन्नुम को तमाम जिन्नात और आदमियों से भर देगें (119)

और (ऐ रसूल) पैग़म्बरों के हालत में से हम उन तमाम क़िस्सों को तुम से बयान किए देते हैं जिनसे हम तुम्हारे दिल को मज़बूत कर देगें और उन्हीं क़िस्सों में तुम्हारे पास हक़ (क़ुरान) और मोमिनीन के लिए नसीहत और याद दहानी भी आ गई (120)

और (ऐ रसूल) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कहो कि तुम बजाए ख़ुद अमल करो हम भी कुछ (अमल) करते हैं (121)

(नतीजे का) तुम भी इन्तज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर है (122)

और सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों का इल्म ख़ास अल्लाह ही को है और उसी की तरफ हर काम हिर फिर कर लौटता है तुम उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम लोग करते हो उससे अल्लाह बेख़बर नहीं (123)

12 सूरह यूसुफ़

सूरह यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ ग्यारह (111) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम रा ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें है (1)

हमने इस किताब (क़ुरान) को अरबी में नाज़िल किया है ताकि तुम समझो (2)

(ऐ रसूल) हम तुम पर ये क़ुरान नाज़िल करके तुम से एक निहायत उम्दा क़िस्सा बयान करते हैं अगरचे तुम इसके पहले (उससे) बिल्कुल बेख़बर थे (3)

(वह वक्त याद करो) जब यूसूफ ने अपने बाप से कहा ऐ अब्बा मैने ग्यारह सितारों और सूरज चाँद को (ख़्वाब में) देखा है मैने देखा है कि ये सब मुझे सजदा कर रहे हैं (4)

याक़ूब ने कहा ऐ बेटा (देखो ख़बरदार) कहीं अपना ख़्वाब अपने भाईयों से न दोहराना (वरना) वह लोग तुम्हारे लिए मक्कारी की तदबीर करने लगेगें इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है (5)

और (जो तुमने देखा है) ऐसा ही होगा कि तुम्हारा परवरदिगार तुमको बरगुज़ीदा (इज़्जतदार) करेगा और तुम्हें ख़्वाबो की ताबीर सिखाएगा और जिस तरह इससे पहले तुम्हारे दादा परदादा इबराहीम और इसहाक़ पर अपनी नेअमत पूरी कर चुका है और इसी तरह तुम पर और याक़ूब की औलाद पर अपनी नेअमत पूरी करेगा बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ा वाक़िफ़कार हकीम है (6)

(ऐ रसूल) यूसुफ और उनके भाइयों के किस्से में पूछने वाले (यहूद) के लिए (तुम्हारी नुबूवत) की यक़ीनन बहुत सी निशानियाँ हैं (7)

कि जब (यूसूफ के भाइयों ने) कहा कि बावजूद कि हमारी बड़ी जमाअत है फिर भी यूसुफ़ और उसका हकीक़ी भाई (इब्ने यामीन) हमारे वालिद के नज़दीक बहुत ज़्यादा प्यारे हैं इसमें कुछ शक नहीं कि हमारे वालिद यक़ीनन सरीही (खुली हुयी) ग़लती में पड़े हैं (8)

(ख़ैर तो अब मुनासिब ये है कि या तो) युसूफ को मार डालो या (कम से कम) उसको किसी

जगह (चल कर) फेंक आओ तो अलबत्ता तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाएगा और उसके बाद तुम सबके सब (बाप की तवजज्जो से) भले आदमी हो जाओगें (9)

उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ को जान से तो न मारो हाँ अगर तुमको ऐसा ही करना है तो उसको किसी अन्धे कुएँ में (ले जाकर) डाल दो कोई राहगीर उसे निकालकर ले जाएगा (और तुम्हारा मतलब हासिल हो जाएगा) (10)

सब ने (याक़ूब से) कहा अब्बा जान आख़िर उसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ के बारे में हमारा ऐतबार नहीं करते (11)

हालॉकि हम लोग तो उसके ख़ैर ख़्वाह (भला चाहने वाले) हैं आप उसको कुल हमारे साथ भेज दीजिए कि ज़रा (जंगल) से फल वग़ैरह् खाए और खेले कूदे (12)

और हम लोग तो उसके निगेहबान हैं ही याक़ूब ने कहा तुम्हारा उसको ले जाना मुझे सख़्त सदमा पहुँचाना है और मै तो इससे डरता हूँ कि तुम सब के सब उससे बेख़बर हो जाओ और (मुबादा) उसे भेड़िया फाड़ खाए (13)

वह लोग कहने लगे जब हमारी बड़ी जमाअत है (इस पर भी) अगर उसको भेड़िया खा जाए तो हम लोग यक़ीनन बड़े घाटा उठाने वाले (निकलते) ठहरेगें (14)

ग़रज़ यूसुफ को जब ये लोग ले गए और इस पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया कि उसको अन्धे कुएँ में डाल दें और (आख़िर ये लोग गुज़रे तो) हमने युसुफ़ के पास 'वही' भेजी कि तुम घबराओ नहीं हम अनक़रीब तुम्हें मरतबे (उँचे मकाम) पर पहुँचाएगे (तब तुम) उनके उस फेल (बद) से तम्बीह (आग़ाह) करोगे (15)

जब उन्हें कुछ ध्यान भी न होगा और ये लोग रात को अपने बाप के पास (बनवट) से रोते पीटते हुए आए (16)

और कहने लगे ऐ अब्बा हम लोग तो जाकर दौड़ने लगे और यूसुफ को अपने असबाब के पास छोड़ दिया इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया हम लोग अगर सच्चे भी हो मगर आपको तो हमारी बात का यक़ीन आने का नहीं (17)

और ये लोग यूसुफ के कुरते पर झूठ मूठ (भेड़) का खून भी (लगा के) लाए थे, याक़ूब ने कहा (भेड़िया ने ही खाया (बल्कि) तुम्हारे दिल ने तुम्हारे बचाओ के लिए एक बात गढ़ी वरना कुर्ता फटा

हुआ ज़रुर होता फिर सब्र व शुक्र है और जो कुछ तुम बयान करते हो उस पर ख़ुदा ही से मदद माँगी जाती है (18)

और (ख़ुदा की शान देखो) एक काफ़ला (वहाँ) आकर उतरा उन लोगों ने अपने सक्के (पानी भरने वाले) को (पानी भरने) भेजा ग़रज़ उसने अपना डोल डाला ही था (कि यूसुफ उसमें बैठे और उसने ख़ीचा तो निकल आए) वह पुकारा आहा ये तो लड़का है और काफला वालो ने यूसुफ को क़ीमती सरमाया समझकर छिपा रखा हालाँकि जो कुछ ये लोग करते थे अल्लाह उससे ख़ूब वाकिफ था (19)

(जब यूसुफ के भाइयों को ख़बर लगी तो आ पहुँचे और उनको अपना ग़ुलाम बताया और उन लोगों ने यूसुफ को गिनती के खोटे चन्द दरहम (बहुत थोड़े दाम पर बेच डाला) और वह लोग तो यूसुफ से बेज़ार हो ही रहे थे (20)

(यूसुफ को लेकर मिस्र पहुँचे और वहाँ उसे बड़े नफ़े में बेच डाला) और मिस्र के लोगों से (अज़ीज़े मिस्र) जिसने (उनको ख़रीदा था अपनी बीवी (ज़ुलेख़ा) से कहने लगा इसको इज़्ज़त व आबरु से रखो अजब नहीं ये हमें कुछ नफा पहुँचाए या (शायद) इसको अपना बेटा ही बना लें और यू हमने यूसुफ को मुल्क (मिस्र) में (जगह देकर) क़ाबिज़ बनाया और ग़रज़ ये थी कि हमने उसे ख़्वाब की बातों की ताबीर सिखायी और ख़ुदा तो अपने काम पर (हर तरह के) ग़ालिब व क़ादिर है मगर बहुतेरे लोग (उसको) नहीं जानते (21)

और जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचे तो हमने उनको हुक्म (नुबूवत) और इल्म अता किया और नेकी कारों को हम यूँ ही बदला दिया करते हैं (22)

और जिस औरत ज़ुलेखा के घर में यूसुफ रहते थे उसने अपने (नाजायज़) मतलब हासिल करने के लिए खुद उनसे आरज़ू की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और (बे ताना) कहने लगी लो आओ यूसुफ ने कहा माज़अल्लाह वह (तुम्हारे मियाँ) मेरा मालिक हैं उन्होंने मुझे अच्छी तरह रखा है मै ऐसा ज़ुल्म क्यों कर सकता हूँ बेशक ऐसा ज़ुल्म करने वाले फलाह नहीं पाते (23)

ज़ुलेखा ने तो उनके साथ (बुरा) इरादा कर ही लिया था और अगर ये भी अपने परवरदिगार की दलीन न देख चुके होते तो क़स्द कर बैठते (हमने उसको यूँ बचाया) ताकि हम उससे बुराई और बदकारी को दूर रखे बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से था (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ झपट पड़े और ज़ुलेख़ा (ने पीछे से उनका कुर्ता पकड़ कर खीचा और) फाड़ डाला और दोनों ने ज़ुलेखा के ख़ाविन्द को दरवाज़े के पास खड़ा पाया ज़ुलेख़ा झट (अपने

शौहर से) कहने लगी कि जो तुम्हारी बीबी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि या तो क़ैद कर दिया जाए (25)
या दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला कर दिया जाए यूसुफ ने कहा उसने ख़ुद (मुझसे मेरी आरज़ू की थी और ज़ुलेख़ा) के कुन्बे वालों में से एक गवाही देने वाले (दूध पीते बच्चे) ने गवाही दी कि अगर उनका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो ये सच्ची और वह झूठे (26)

और अगर उनका कुर्ता पींछे से फटा हुआ हो तो ये झूठी और वह सच्चे (27)

फिर जब अज़ीज़े मिस्र ने उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो (अपनी औरत से) कहने लगा ये तुम ही लोगों के चलत्तर है उसमें शक नहीं कि तुम लोगों के चलत्तर बड़े (ग़ज़ब के) होते हैं (28)

(और यूसुफ से कहा) ऐ यूसुफ इसको जाने दो और (औरत से कहा) कि तू अपने गुनाह की माफी माँग क्योंकि बेशक तू ही सरतापा ख़तावार है (29)

और शहर (मिस्र) में औरतें चर्चा करने लगी कि अज़ीज़ (मिस्र) की बीबी अपने ग़ुलाम से (नाजायज़) मतलब हासिल करने की आरज़ू मन्द है बेशक गुलाम ने उसे उलफत में लुभाया है हम लोग तो यक़ीनन उसे सरीही ग़लती में मुब्तिला देखते हैं (30)

तो जब ज़ुलेख़ा ने उनके ताने सुने तो उस ने उन औरतों को बुला भेजा और उनके लिए एक मजलिस आरास्ता की और उसमें से हर एक के हाथ में एक छुरी और एक (नारंगी) दी (और कह दिया कि जब तुम्हारे सामने आए तो काट के एक फ़ाक उसको दे देना) और यूसुफ़ से कहा कि अब इनके सामने से निकल तो जाओ तो जब उन औरतों ने उसे देखा तो उसके बड़ा हसीन पाया तो सब के सब ने (बे खुदी में) अपने अपने हाथ काट डाले और कहने लगी हाय अल्लाह ये आदमी नहीं है ये तो हो न हो बस एक मुअज़िज़ (इज़्ज़त वाला) फ़रिश्ता है (31)

(तब ज़ुलेख़ा उन औरतों से) बोली कि बस ये वही तो है जिसकी बदौलत तुम सब मुझे मलामत (बुरा भला) करती थीं और हाँ बेशक मैं उससे अपना मतलब हासिल करने की खुद उससे आरज़ू मन्द थी मगर ये बचा रहा और जिस काम का मैं हुक्म देती हूँ अगर ये न करेगा तो ज़रुर क़ैद भी किया जाएगा और ज़लील भी होगा (ये सब बातें यूसुफ ने मेरी बारगाह में) अर्ज़ की (32)

ऐ मेरे पालने वाले जिस बात की ये औरते मुझ से ख़्वाहिश रखती हैं उसकी निस्वत (बदले में) मुझे क़ैद ख़ानों ज़्यादा पसन्द है और अगर तू इन औरतों के फ़रेब मुझसे दफा न फरमाएगा तो (शायद) मै उनकी तरफ माएल (झुक) हो जाँऊ ले तो जाओ और जाहिलों से शुमार किया जाऊँ (33)

तो उनके परवरदिगार ने उनकी सुन ली और उन औरतों के मकर को दफा कर दिया इसमें शक नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाकि़फकार है (34)
फिर (अज़ीज़ मिस्र और उसके लोगों ने) बावजूद के (यूसुफ की पाक दामिनी की) निश्आानियाँ देख ली थी उसके बाद भी उनको यही मुनासिब मालूम हुआ (35)

कि कुछ मियाद के लिए उनको कै़द ही करे दें और यूसुफ के साथ और भी दो जवान आदमी (कै़द ख़ाने) में दाखि़ल हुए (चन्द दिन के बाद) उनमें से एक ने कहा कि मैने ख़्वाब में देखा है कि मै (शराब बनाने के वास्ते अंगूर) निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा (मै ने भी ख़्वाब में) अपने को देखा कि मै अपने सर पर रोटिया उठाए हुए हूँ और चिड़ियाँ उसे खा रही हैं (यूसुफ) हमको उसकी ताबीर (मतलब) बताओ क्योंकि हम तुमको यक़ीनन नेकी कारों से समझते हैं (36)

यूसुफ ने कहा जो खाना तुम्हें (कै़द ख़ाने से) दिया जाता है वह आने भी न पाएगा कि मै उसके तुम्हारे पास आने के क़ब्ल ही तुम्हे उसकी ताबीर बताऊँगा ये ताबीरे ख़्वाब भी उन बातों के साथ है जो मेरे परवरदिगार ने मुझे तालीम फरमाई है मैं उन लोगों का मज़हब छोड़ बैठा हूँ जो अल्लाह पर इमान नहीं लाते और वह लोग आखि़रत के भी मुन्किर है (37)

और मैं तो अपने बाप दादा इबराहीम व इसहाक़ व याकू़ब के मज़हब पर चलने वाला हूँ मुनासिब नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को (उसका) शरीक बनाएँ ये भी अल्लाह की एक बड़ी मेहरबानी है हम पर भी और तमाम लोगों पर मगर बहुतेरे लोग उसका शुक्रिया (भी) अदा नहीं करते (38)

ऐ मेरे कैद ख़ाने के दोनो रफीक़ों (साथियों) (ज़रा ग़ौर तो करो कि) भला जुदा जुदा माबूद अच्छे या अल्लाहए यकता ज़बरदस्त (अफसोस) (39)

तुम लोग तो अल्लाह को छोड़कर बस उन चन्द नामों ही को परसतिश करते हो जिन को तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिया है अल्लाह ने उनके लिए कोई दलील नहीं नाजि़ल की हुकूमत तो बस अल्लाह ही के वास्ते ख़ास है उसने तो हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो यही सीधा दीन है मगर (अफसोस) बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं (40)

ऐ मेरे कै़द ख़ाने के दोनो रफीक़ो (अच्छा अब ताबीर सुनो तुममें से एक (जिसने अंगूर देखा रिहा होकर) अपने मालिक को शराब पिलाने का काम करेगा और (दूसरा) जिसने रोटियाँ सर पर (देखी हैं) तो सूली दिया जाएगा और चिड़िया उसके सर से (नोच नोच) कर खाएगी जिस अम्र को तुम दोनों दरयाफ्त करते थे (वह ये है और) फैसला हो चुका है (41)

और उन दोनों में से जिसकी निस्बत यूसुफ़ ने समझा था वह रिहा हो जाएगा उससे कहा कि अपने मालिक के पास मेरा भी तज़किरा करना (कि मैं बेजुर्म क़ैद हूँ) तो शैतान ने उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया तो यूसुफ क़ैद ख़ाने में कई बरस रहे (42)
और (इसी असना (बीच) में) बादशाह ने (भी ख़्वाब देखा और) कहा मैने देखा है कि सात मोटी ताज़ी गाए हैं उनको सात दुबली पतली गाय खाए जाती हैं और सात ताज़ी सब्ज़ बालियॉ (देखीं) और फिर (सात) सूखी बालियॉ ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों अगर तुम लोगों को ख़्वाब की ताबीर देनी आती हो तो मेरे (इस) ख़्वाब के बारे में हुक्म लगाओ (43)

उन लोगों ने अर्ज़ की कि ये तो (कुछ) ख़्वाब परेशॉ (सा) है और हम लोग ऐसे ख़्वाब (परेशॉ) की ताबीर तो नहीं जानते हैं (44)

और जिसने उन दोनों में से रिहाई पाई थी (साकी) और उसको एक ज़माने के बाद (यूसुफ का क़िस्सा) याद आया बोल उठा कि मुझे (क़ैद ख़ाने तक) जाने दीजिए तो मैं उसकी ताबीर बताए देता हूँ (45)

(ग़रज़ वह गया और यूसुफ से कहने लगा) ऐ यूसुफ ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ) ज़रा हमें ये तो बताइए कि सात मोटी ताज़ी गायों को सात पतली गाय खाए जाती है और सात बालियॉ हैं हरी कचवा और फिर (सात) सूखी मुरझाई (इसकी ताबीर क्या है) तो मैं लोगों के पास पलट कर जाऊँ (और बयान करुँ) (46)

ताकि उनको भी (तुम्हारी क़दर) मालूम हो जाए यूसुफ ने कहा (इसकी ताबीर ये है) कि तुम लोग लगातार सात बरस काश्तकारी करते रहोगे तो जो (फसल) तुम काटो उस (के दाने) को बालियों में रहने देना (छुड़ाना नहीं) मगर थोड़ा (बहुत) जो तुम खुद खाओ (47)

उसके बाद बड़े सख़्त (खुश्क साली (सूखे) के) सात बरस आऍगे कि जो कुछ तुम लोगों ने उन सातों साल के वास्ते पहले जमा कर रखा होगा सब खा जाऍगें मगर बहुत थोड़ा सा जो तुम (बीज के वास्ते) बचा रखोगे (48)

(बस) फिर उसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों के लिए खूब मेंह बरसेगी (और अंगूर भी खूब फलेगा) और लोग उस साल (उन्हें) शराब के लिए निचोड़ेगें (49)

(ये ताबीर सुनते ही) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे हुज़ूर में तो ले आओ फिर जब (शाही) चौबदार (ये हुक्म लेकर) यूसुफ के पास आया तो युसूफ़ ने कहा कि तुम अपनी सरकार के

पास पलट जाओ और उनसे पूछो कि (आप को) कुछ उन औरतों का हाल भी मालूम है जिन्होने (मुझे देख कर) अपने अपने हाथ काट डाले थे कि या मैं उनका तालिब था (50)

या वह (मेरी) इसमें तो शक ही नहीं कि मेरा परवरदिगार ही उनके मक्र से ख़ूब वाक़िफ है चुनान्चे बादशाह ने (उन औरतों को तलब किया) और पूछा कि जिस वक्त तुम लोगों ने यूसुफ से अपना मतलब हासिल करने की खुद उन से तमन्ना की थी तो हमें क्या मामला पेश आया था वह सब की सब अर्ज़ करने लगी हाशा अल्लाह हमने यूसुफ में तो किसी तरह की बुराई नहीं देखी (तब) अज़ीज़ मिस्त्र की बीबी (ज़ुलेख़ा) बोल उठी अब तू ठीक ठीक हाल सब पर ज़ाहिर हो ही गया (असल बात ये है कि) मैने खुद उससे अपना मतलब हासिल करने की तमन्ना की थी और बेशक वह यक़ीनन सच्चा है (51)

(ये वाक़िया चौबदार ने यूसुफ से बयान किया (यूसुफ ने कहा) ये क़िस्से मैने इसलिए छेड़ा) ताकि तुम्हारे बादशाह को मालूम हो जाए कि मैने अज़ीज़ की ग़ैबत में उसकी (अमानत में ख़यानत नहीं की) और ख़ुदा ख़यानत करने वालों की मक्कारी हरगिज़ चलने नहीं देता (52)

और (यूँ तो) मै भी अपने नफ्स को गुनाहो से बे लौस नहीं कहता हूँ क्योंकि (मैं भी बशर हूँ और नफ्स बराबर बुराई की तरफ उभारता ही है मगर जिस पर मेरा परवरदिगार रहम फरमाए (और गुनाह से बचाए) (53)

इसमें शक नहीं कि मेरा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है और बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ को मेरे पास ले आओ तो मैं उनको अपने ज़ाती काम के लिए ख़ास कर लूँगा फिर उसने यूसुफ से बातें की तो यूसुफ की आला क़ाबलियत साबित हुयी (और) उसने हुक्म दिया कि तुम आज (से) हमारे सरकार में यक़ीन बावक़ार (और) मुअतबर हो (54)

यूसुफ ने कहा (जब अपने मेरी क़दर की है तो) मुझे मुल्की ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कीजिए क्योंकि मैं (उसका) अमानतदार ख़ज़ान्ची (और) उसके हिसाब व किताब से भी वाक़िफ हूँ (55)

(ग़रज़ यूसुफ शाही ख़ज़ानो के अफसर मुक़र्रर हुए) और हमने यूसुफ को यूँ मुल्क (मिस्त्र) पर क़ाबिज़ बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें हम जिस पर चाहते हैं अपना फज़्ल करते हैं और हमने नेको कारो के अज्र को अकारत नहीं करते (56)

और जो लोग इमान लाए और परहेज़गारी करते रहे उनके लिए आख़िरत का अज्र उसी से कही बेहतर है (57)

(और चूँकि कनआन में भी कहत (सूखा) था इस वजह से) यूसुफ के (सौतेले भाई ग़ल्ला ख़रीदने

को मिस्र में) आए और यूसुफ के पास गए तो उनको फौरन ही पहचान लिया और वह लोग उनको न पहचान सके (58)

और जब यूसुफ ने उनके (ग़ल्ले का) सामान दुरूस्त कर दिया और वह जाने लगे तो यूसुफ़ ने (उनसे कहा) कि (अबकी आना तो) अपने सौतेले भाई को (जिसे घर छोड़ आए हो) मेरे पास लेते आना क्या तुम नहीं देखते कि मै यक़ीनन नाप भी पूरी देता हूँ और बहुत अच्छा मेहमान नवाज़ भी हूँ (59)

पस अगर तुम उसको मेरे पास न लाओगे तो तुम्हारे लिए न मेरे पास कुछ न कुछ (ग़ल्ला वग़ैरह) होगा (60)

न तुम लोग मेरे क़रीब ही चढ़ने पाओगे वह लोग कहने लगे हम उसके वालिद से उसके बारे में जाते ही दरख़्वास्त करेंगे (61)

और हम ज़रुर इस काम को पूरा करेंगें और यूसुफ ने अपने मुलाज़िमों (नौकरों) को हुक्म दिया कि उनकी (जमा) पूंजी उनके बोरो में (चूपके से) रख दो ताकि जब ये लोग अपने एहलो (अयाल) के पास लौट कर जाएँ तो अपनी पूंजी को पहचान ले (62)

(और इस लालच में) शायद फिर पलट के आएँ ग़रज़ जब ये लोग अपने वालिद के पास पलट के आए तो सब ने मिलकर अर्ज़ की ऐ अब्बा हमें (आइन्दा) गल्ले मिलने की मुमानिअत (मना) कर दी गई है तो आप हमारे साथ हमारे भाई (बिन यामीन) को भेज दीजिए (63)

ताकि हम (फिर) गल्ला लाए और हम उसकी पूरी हिफाज़त करेगें याक़ूब ने कहा मै उसके बारे में तुम्हारा ऐतबार नहीं करता मगर वैसा ही जैसा कि उससे पहले उसके मांजाए (भाई) के बारे में किया था तो खुद उसका सबसे बेहतर हिफाज़त करने वाला है और वही सब से ज़्यादा रहम करने वाला है (64)

और जब उन लोगों ने अपने अपने असबाब खोले तो अपनी अपनी पूंजी को देखा कि (वैसे ही) वापस कर दी गई है तो (अपने बाप से) कहने लगे ऐ अब्बा हमें (और) क्या चाहिए (देखिए) यह हमारी जमा पूंजी हमें वापस दे दी गयी है और (ग़ल्ला मुफ्त मिला अब इब्ने यामीन को जाने दीजिए तो) हम अपने एहलो अयाल के वास्ते ग़ल्ला लादें और अपने भाई की पूरी हिफाज़त करेगें और एक बार शतर ग़ल्ला और बढ़वा लाएँगें (65)

ये जो अबकी दफा लाए थे थोड़ा सा ग़ल्ला है याकूब ने कहा जब तक तुम लोग मेरे सामने अल्लाह से एहद न कर लोगे कि तुम उसको ज़रुर मुझ तक (सही व सालिम) ले आओगे मगर हाँ

जब तुम खुद घिर जाओ तो मजबूरी है वरना मै तुम्हारे साथ हरगिज़ उसको न भेजूँगा फिर जब उन लोगों ने उनके सामने एहद कर लिया तो याकूब ने कहा कि हम लोग जो कह रहे हैं अल्लाह उसका ज़ामिन है (66)

और याकूब ने (नसीहतन चलते वक्त बेटो से) कहा ऐ फरज़न्दों (देखो ख़बरदार) सब के सब एक ही दरवाज़े से न दाखिल होना (कि कहीं नज़र न लग जाए) और मुताफरिक़ (अलग अलग) दरवाज़ों से दाखिल होना और मै तुमसे (उस बात को जो) अल्लाह की तरफ से (आए) कुछ टाल भी नहीं सकता हुक्म तो (और असली) अल्लाह ही के वास्ते है मैने उसी पर भरोसा किया है और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए (67)

और जब ये सब भाई जिस तरह उनके वालिद ने हुक्म दिया था उसी तरह (मिस्र में) दाखिल हुए मगर जो हुक्म अल्लाह की तरफ से आने को था उसे याकूब कुछ भी टाल नहीं सकते थे मगर (हाँ) याकूब के दिल में एक तमन्ना थी जिसे उन्होंने भी यूँ पूरा कर लिया क्योंकि इसमे तो शक नहीं कि उसे चूँकि हमने तालीम दी थी साहिबे इल्म ज़रुर था मगर बहुतेरे लोग (उससे भी) वाकिफ़ नहीं (68)

और जब ये लोग यूसुफ के पास पहुँचे तो यूसुफ ने अपने हक़ीक़ी (सगे) भाई को अपने पास (बग़ल में) जगह दी और (चुपके से) उस (इब्ने यामीन) से कह दिया कि मै तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूँ तो जो कुछ (बदसुलूकियाँ) ये लोग तुम्हारे साथ करते रहे हैं उसका रंज न करो (69)

फिर जब यूसुफ ने उन का साज़ो सामान सफर ग़ल्ला (वग़ैरह) दुरुस्त करा दिया तो अपने भाई के असबाब में पानी पीने का कटोरा (यूसुफ के इशारे) से रखवा दिया फिर एक मुनादी ललकार के बोला कि ऐ क़ाफ़िले वालों (हो न हो) यक़ीनन तुम्ही लोग ज़रुर चोर हो (70)

ये सुन कर ये लोग पुकारने वालों की तरफ भिड़ पड़े और कहने लगे (आख़िर) तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है (71)

उन लोगों ने जवाब दिया कि हमें बादशाह का प्याला नहीं मिलता है और मै उसका ज़ामिन हूँ कि जो शख़्स उसको ला हाज़िर करेगा उसको एक ऊँट के बोझ बराबर (ग़ल्ला इनाम) मिलेगा (72)

तब ये लोग कहने लगे अल्लाह की क़सम तुम तो जानते हो कि (तुम्हारे) मुल्क में हम फसाद करने की ग़रज़ से नहीं आए थे और हम लोग तो कुछ चोर तो हैं नहीं (73)

तब वह मुलाज़िमीन बोले कि अगर तुम झूठे निकले तो फिर चोर की क्या सज़ा होगी (74)

(वे धड़क) बोल उठे कि उसकी सज़ा ये है कि जिसके बोरे में वह (माल) निकले तो वही उसका बदला है (तो वह माल के बदले में ग़ुलाम बना लिया जाए) (75)

हम लोग तो (अपने यहाँ) ज़ालिमों (चोरों) को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं ग़रज़ यूसुफ ने अपने भाई का थैला खोलने ने से क़ब्ल दूसरे भाइयों के थैलों से (तलाशी) शुरु की उसके बाद (आख़िर में) उस प्याले को यूसुफ ने अपने भाई के थैले से बरामद किया यूसुफ को भाई के रोकने की हमने यू तदबीर बताइ वरना (बादशाह मिस्र) के क़ानून के मुवाफिक़ अपने भाई को रोक नहीं सकते थे मगर हाँ जब अल्लाह चाहे हम जिसे चाहते हैं उसके दर्जे बुलन्द कर देते हैं और (दुनिया में) हर साहबे इल्म से बढ़कर एक और आलिम है (76)

(ग़रज़) इब्ने यामीन रोक लिए गए तो ये लोग कहने लगे अगर उसने चोरी की तो (कौन ताज्जुब है) इसके पहले इसका भाई (यूसुफ) चोरी कर चुका है तो यूसुफ ने (उसका कुछ जवाब न दिया) उसको अपने दिल में पोशीदा (छुपाये) रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया मगर ये कह दिया कि तुम लोग बड़े ख़ाना ख़राब (बुरे आदमी) हो (77)

और जो (उसके भाई की चोरी का हाल बयान करते हो अल्लाह खूब बवाक़िफ है (इस पर) उन लोगों ने कहा ऐ अज़ीज़ उस (इब्ने यामीन) के वालिद बहुत बूढ़े (आदमी) हैं (और इसको बहुत चाहते हैं) तो आप उसके ऐवज़ (बदले) हम में से किसी को ले लीजिए और उसको छोड़ दीजिए (78)

क्योंकि हम आपको बहुत नेको कार बुज़ुर्ग समझते हैं यूसुफ ने कहा माज़ अल्लाह (ये क्यों कर हो सकता है कि) हमने जिसकी पास अपनी चीज़ पाई है उसे छोड़कर दूसरे को पकड़ लें (अगर हम ऐसा करें) तो हम ज़रुर बड़े बेइन्साफ ठहरे (79)

फिर जब यूसुफ की तरफ से मायूस हुए तो बाहम मशवरा करने के लिए अलग खड़े हुए तो जो शख़्स उन सब में बड़ा था (यहूदा) कहने लगा (भाइयों) क्या तुम को मालूम नहीं कि तुम्हार वालिद ने तुम लोगों से अल्लाह का एहद करा लिया था और उससे तुम लोग यूसुफ के बारे में क्या कुछ ग़लती कर ही चुके हो तो (भाई) जब तक मेरे वालिद मुझे इजाज़त (न) दें या खुद अल्लाह मुझे कोई हुक्म (न) दे मै उस सर ज़मीन से हरगिज़ न हटूँगा और अल्लाह तो सब हुक्म देने वालो से कहीं बेहतर है (80)

तुम लोग अपने वालिद के पास पलट के जाओ और उनसे जाकर अर्ज़ करो ऐ अब्बा अपके साहबज़ादे ने चोरी की और हम लोगों ने तो अपनी समझ के मुताबिक़ (उसके ले आने का एहद किया था और हम कुछ (अर्ज़) ग़ैबी (आफत) के निगेहबान थे नहीं (81)

और आप इस बस्ती (मिस्त्र) के लोगों से जिसमें हम लोग थे दरयाफ़्त कर लीजिए और इस क़ाफले से भी जिसमें आए हैं (पूछ लीजिए) और हम यक़ीनन बिल्कुल सच्चे हैं (82)

(ग़रज़ जब उन लोगों ने जाकर बयान किया तो) याक़ूब न कहा (उसने चोरी नहीं की) बल्कि ये बात तुमने अपने दिल से गढ़ ली है तो (ख़ैर) सब्र (और अल्लाह का) शुक्र अल्लाह से तो (मुझे) उम्मीद है कि मेरे सब (लड़कों) को मेरे पास पहुँचा दे बेशक वह बड़ा वाकिफ़ कार हकीम है (83)
और याक़ूब ने उन लोगों की तरफ से मुँह फेर लिया और (रोकर) कहने लगे हाए अफसोस यूसुफ पर और (इस क़दर रोए कि) उनकी आँखें सदमे से सफेद हो गई वह तो बड़े रंज के ज़ाबित (झेलने वाले) थे (84)

(ये देखकर उनके बेटे) कहने लगे कि आप तो हमेशा यूसुफ को याद ही करते रहिएगा यहाँ तक कि बीमार हो जाएगा या जान ही दे दीजिएगा (85)

याक़ूब ने कहा (मै तुमसे कुछ नहीं कहता) मैं तो अपनी बेक़रारी व रंज की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ और अल्लाह की तरफ से जो बातें मै जानता हूँ तुम नहीं जानते हो (86)

ऐ मेरी फरज़न्द (एक बार फिर मिस्त्र) जाओ और यूसुफ और उसके भाई को (जिस तरह बने) ढूँढ के ले आओ और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो क्योंकि अल्लाह की रहमत से काफिर लोगो के सिवा और कोई ना उम्मीद नहीं हुआ करता (87)

फिर जब ये लोग यूसुफ के पास गए तो (बहुत गिड़गिड़ाकर) अर्ज़ की कि ऐ अज़ीज़ हमको और हमारे (सारे) कुनबे को कहत की वजह से बड़ी तकलीफ हो रही है और हम कुछ थोड़ी सी पूंजी लेकर आए हैं तो हम को (उसके ऐवज़ पर पूरा ग़ल्ला दिलवा दीजिए और (क़ीमत ही पर नहीं) हम को (अपना) सदक़ा ख़ैरात दीजिए इसमें तो शक नहीं कि अल्लाह सदक़ा ख़ैरात देने वालों को जजाए ख़ैर देता है (88)

(अब तो यूसुफ से न रहा गया) कहा तुम्हें कुछ मालूम है कि जब तुम जाहिल हो रहे थे तो तुम ने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या क्या सुलूक किए (89)

(उस पर वह लोग चौके) और कहने लगे (हाए) क्या तुम ही यूसुफ हो, यूसुफ ने कहा हाँ मै ही यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है बेशक अल्लाह ने मुझ पर अपना फज़ल व (करम) किया है क्या इसमें शक नहीं कि जो शख़्स (उससे) डरता है (और मुसीबत में) सब्र करे तो अल्लाह हरगिज़ (ऐसे नेको कारों का) अज्र बरबाद नहीं करता (90)

वह लोग कहने लगे अल्लाह की क़सम तुम्हें अल्लाह ने यक़ीनन हम पर फज़ीलत दी है और बेशक हम ही यक़ीनन (अज़सरतापा) ख़तावार थे (91)

यूसुफ ने कहा अब आज से तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ फरमाए वह तो सबसे ज़्यादा रहीम है ये मेरा कुर्ता ले जाओ (92)

और उसको अब्बा जान के चेहरे पर डाल देना कि वह फिर बीना हो जाएँगें (देखने लगेंगे) और तुम लोग अपने सब लड़के बालों को लेकर मेरे पास चले आओ (93)

और जो ही ये काफ़िला मिस्र से चला था कि उन लोगों के वालिद (याक़ूब) ने कहा दिया था कि अगर मुझे सठिया या हुआ न कहो तो बात कहूँ कि मुझे यूसुफ की बू मालूम हो रही है (94)

वह लोग कुनबे वाले (पोते वग़ैराह) कहने लगे आप यक़ीनन अपने पुराने ख़याल (मोहब्बत) में (पड़े हुए) हैं (95)

फिर (यूसुफ की) खुशखबरी देने वाला आया और उनके कुर्ते को उनके चेहरे पर डाल दिया तो याक़ूब फौरन फिर दोबारा आँख वाले हो गए (तब याक़ूब ने बेटों से) कहा क्यों मै तुमसे न कहता था जो बातें ख़ुदा की तरफ से मै जानता हूँ तुम नहीं जानते (96)

उन लोगों ने अर्ज़ की ऐ अब्बा हमारे गुनाहों की मग़फिरत की (अल्लाह की बारगाह में) हमारे वास्ते दुआ मॉगिए हम बेशक अज़सरतापा गुनेहगार हैं (97)

याक़ूब ने कहा मै बहुत जल्द अपने परवरदिगार से तुम्हारी मग़फिरत की दुआ करुगाँ बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (98)

(ग़रज़) जब फिर ये लोग (मय याक़ूब के) चले और यूसुफ शहर के बाहर लेने आए तो जब ये लोग यूसुफ के पास पहुँचे तो यूसुफ ने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और (उनसे) कहा कि अब इन्शा अल्लाह बड़े इतमिनान से मिस्र में चलिए (99)

(ग़रज़) पहुँचकर यूसुफ ने अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और सब के सब यूसुफ की ताज़ीम के वास्ते उनके सामने सजदे में गिर पड़े (उस वक्त) यूसुफ ने कहा ऐ अब्बा ये ताबीर है मेरे उस पहले ख़्वाब की कि मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिखाया बेशक उसने मेरे साथ एहसान किया जब उसने मुझे क़ैद ख़ाने से निकाला और बावजूद कि मुझ में और मेरे भाईयों में शैतान ने फसाद डाल दिया था उसके बाद भी आप लोगों को गाँव से (शहर में) ले आया (और मुझसे मिला दिया)

बेशक मेरा परवरदिगार जो कुछ करता है उसकी तद्बीर खूब जानता है बेशक वह बड़ा वाकिफकार हकीम है (100)

(उसके बाद यूसुफ ने दुआ की ऐ परवरदिगार तूने मुझे मुल्क भी अता फरमाया और मुझे ख्वाब की बातों की ताबीर भी सिखाई ऐ आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले तू ही मेरा मालिक सरपरस्त है दुनिया में भी और आख़िरत में भी तू मुझे (दुनिया से) मुसलमान उठाये और मुझे नेको कारों में शामिल फरमा (101)

(ऐ रसूल) ये किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारे पास वही के ज़रिए भेजते हैं (और तुम्हें मालूम होता है वरना जिस वक्त यूसुफ के भाई बाहम अपने काम का मशवरा कर रहे थे और (हलाक की) तदबीरे कर रहे थे (102)

तुम उनके पास मौजूद न थे और कितने ही चाहो मगर बहुतेरे लोग इमान लाने वाले नहीं हैं (103) हालाँकि तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत का) कोई सिला नहीं माँगते और ये (क़ुरान) तो सारे जहाँन के वास्ते नसीहत (ही नसीहत) है (104)

और आसमानों और ज़मीन में (अल्लाह की क़ुदरत की) कितनी निशानियाँ हैं जिन पर ये लोग (दिन रात) ग़ुज़ारा करते हैं और उससे मुँह फेरे रहते हैं (105)

और अक्सर लोगों की ये हालत है कि वह अल्लाह पर इमान तो नहीं लाते मगर शिर्क किए जाते हैं (106)

तो क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हो बैठें हैं कि उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पड़े जो उन पर छा जाए या उन पर अचानक क़यामत ही आ जाए और उनको कुछ ख़बर भी न हो (107)

(ऐ रसूल) उन से कह दो कि मेरा तरीका तो ये है कि मै (लोगों) को अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ मैं और मेरा पैरव (पीछे चलने वाले) (दोनों) मज़बूत दलील पर हैं और अल्लाह (हर ऐब व नुक़स से) पाक व पाकीज़ा है और मै मुशरेकीन से नहीं हूँ (108)

और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी हम गाँव ही के रहने वाले कुछ मर्दो को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा किए है कि हम उन पर वही नाज़िल करते थे तो क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि ग़ौर करते कि जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका अन्जाम क्या हुआ और जिन लोगों ने परहेज़गारी एख़्तेयार की उनके लिए आख़िरत का घर (दुनिया से) यक़ीनन कहीं ज्यादा बेहतर है क्या ये लोग नहीं समझते (109)

पहले के पैग़म्बरो ने तबलीगे़ रिसालत यहाँ वक कि जब (क़ौम के इमान लाने से) पैग़म्बर मायूस हो गए और उन लोगों ने समझ लिया कि वह झुठलाए गए तो उनके पास हमारी (ख़ास) मदद आ पहुँची तो जिसे हमने चाहा नजात दी और हमारा अज़ाब गुनेहगार लोगों के सर से तो टाला नहीं जाता (110)
इसमें शक नहीं कि उन लोगों के किस्सों में अक़लमन्दों के वास्ते (अच्छी ख़ासी) इबरत (व नसीहत) है ये (क़ुरान) कोई ऐसी बात नहीं है जो (ख्वाहामा ख्वाह) गढ़ ली जाए बल्कि (जो आसमानी किताबें) इसके पहले से मौजूद हैं उनकी तसदीक़ है और हर चीज़ की तफसील और इमानदारों के वास्ते (अज़सरतापा) हिदायत व रहमत है (111)

13 सूरह राद

सूरह राद मक्का में नाज़िल हुई और इसकी तेतालीस (43) आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम रा ये किताब (क़ुरान) की आयतें है और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ तुम्हारे पास नाज़िल किया गया है बिल्कुल ठीक है मगर बहुतेरे लोग ईमान नहीं लाते (1)

अल्लाह वही तो है जिसने आसमानों को जिन्हें तुम देखते हो बग़ैर सुतून (खम्बों) के उठाकर खड़ा कर दिया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और सूरज और चाँद को (अपना) ताबेदार बनाया कि हर एक वक्त मुक़र्ररा तक चला करते है वहीं (दुनिया के) हर एक काम का इन्तेज़ाम करता है और इसी ग़रज़ से कि तुम लोग अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करो (2)

(अपनी) आयतें तफसीलदार बयान करता है और वह वही है जिसने ज़मीन को बिछाया और उसमें (बड़े बड़े) अटल पहाड़ और दरिया बनाए और उसने हर तरह के मेवों की दो दो किस्में पैदा की (जैसे खट्टे मीठे) वही रात (के परदे) से दिन को ढाक देता है इसमें शक नहीं कि जो लोग और ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत अल्लाह की) बहुतेरी निशानियाँ हैं (3)

और खुरमों (खजूर) के दरख़्त की एक जड़ और दो शाखें और बाज़ अकेला (एक ही शाख़ का) हालाँकि सब एक ही पानी से सीचे जाते हैं और फलों में बाज़ को बाज़ पर हम तरजीह देते हैं बेशक जो लोग अक़ल वाले हैं उनके लिए इसमें (कुदरत अल्लाह की) बहुतेरी निशानियाँ हैं (4)

और अगर तुम्हें (किसी बात पर) ताज्जुब होता है तो उन कुफ्फारों को ये क़ौल ताज्जुब की बात है कि जब हम (सड़गल कर) मिट्टी हो जाएँगें तो क्या हम (फिर दोबारा) एक नई जहन्नुम में आएँगें ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार के साथ कुफ्र किया और यही वह लोग हैं जिनकी गर्दनों में (क़यामत के दिन) तौक़ पड़े होगें और यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये इसमें हमेशा रहेगें (5)

और (ऐ रसूल) ये लोग तुम से भलाई के क़ब्ल ही बुराई (अज़ाब) की जल्दी मचा रहे हैं हालाँकि उनके पहले (बहुत से लोगों की) सज़ाएँ हो चुकी हैं और इसमें शक नहीं की तुम्हारा परवरदिगार बावजूद उनकी शरारत के लोगों पर बड़ा बख़शिश (करम) वाला है और इसमें भी शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन सख़्त अज़ाब वाला है (6)

और वो लोग काफिर हैं कहते हैं कि इस शख़्स (मोहम्मद) पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई

निशानी (हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़) क्यों नहीं नाज़िल की जाती ऐ रसूल तुम तो सिर्फ (ख़ौफे ख़ुदा से) डराने वाले हो (7)

और हर क़ौम के लिए एक हिदायत करने वाला है हर मादा जो कि पेट में लिए हुए है और उसको ख़ुदा ही जानता है व बच्चा दानियों का घटना बढ़ना (भी वही जानता है) और हर चीज़ उसके नज़दीक़ एक अन्दाज़े से है (8)

(वही) बातिन (छुपे हुवे) व ज़ाहिर का जानने वाला (सब से) बड़ा और आलीशान है (9)

तुम लोगों में जो कोई चुपके से बात कहे और जो शख़्स ज़ोर से पुकार के बोले और जो शख़्स रात की तारीकी़ (अंधेरे) में छुपा बैठा हो और जो शख़्स दिन दहाड़ें चला जा रहा हो (10)

(उसके नज़दीक) सब बराबर हैं (आदमी किसी हालत में हो मगर) उस अकेले के लिए उसके आगे उसके पीछे उसके निगेहबान (फरिश्ते) मुक़र्रर हैं कि उसको हुक्म अल्लाह से हिफाज़त करते हैं जो (नेअमत) किसी क़ौम को हासिल हो बेशक वह लोग खुद अपनी नफ्सानी हालत में तग्य्युर न डालें अल्लाह हरगिज़ तग़्य्युर नहीं डाला करता और जब अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर उसका कोई टालने वाला नहीं और न उसका उसके सिवा कोई वाली और (सरपरस्त) है (11)

वह वही तो है जो तुम्हें डराने और लालच देने के वास्ते बिजली की चमक दिखाता है और पानी से भरे बोझल बादलों को पैदा करता है (12)

और ग़र्ज और फरिश्ते उसके ख़ौफ से उसकी हम्दो सना की तस्बीह किया करते हैं वही (आसमान से) बिजलियों को भेजता है फिर उसे जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और ये लोग अल्लाह के बारे में (ख़्वामाख़्वाह) झगड़े करते हैं हालॉकि वह बड़ा सख़्त क़ूवत वाला है (13)

(मुसीबत के वक्त) उसी का (पुकारना) ठीक पुकारना है और जो लोग उसे छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो उनकी कुछ सुनते तक नहीं मगर जिस तरह कोई शख़्स (बग़ैर उॅगलियाँ मिलाए) अपनी दोनों हथेलियाँ पानी की तरफ फैलाए ताकि पानी उसके मुँह में पहुँच जाए हालॉकि वह किसी तरह पहुँचने वाला नहीं और (इसी तरह) काफिरों की दुआ गुमराही में (पड़ी बहकी फिरा करती है) (14)

और आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़ात से) जो कोई भी है खुशी से या ज़बरदस्ती सब (अल्लाह के आगे सर बसजूद हैं और (इसी तरह) उनके साए भी सुबह व शाम (सजदा करते हैं) (15)
सजदा 2

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि (आख़िर) आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है (ये क्या जवाब देगें) तुम कह दो कि अल्लाह है (ये भी कह दो कि क्या तुमने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं जो अपने लिए आप न तो नफ़े पर क़ाबू रखते हैं न ज़रर (नुकसान) पर (ये भी तो) पूछो कि भला (कहीं) अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) (या कहीं) अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) इन लोगों ने ख़ुदा के कुछ शरीक़ ठहरा रखे हैं क्या उन्होनें अल्लाह ही की सी मख़लूक़ पैदा कर रखी है जिनके सबब मख़लूकात उन पर मुशतबा हो गई है (और उनकी खुदाई के क़ायल हो गए) तुम कह दो कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला और वही यकता और सिपर (सब पर) ग़ालिब है (16)

उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर अपने अपने अन्दाज़े से नाले बह निकले फिर पानी के रेले पर (जोश खाकर) फूला हुआ झाग (फेन) आ गया और उस चीज़ (धातु) से भी जिसे ये लोग ज़ेवर या कोई असबाब बनाने की ग़रज़ से आग में तपाते हैं इसी तरह फेन आ जाता है (फिर अलग हो जाता है) यूँ अल्लाह हक़ व बातिल की मसले बयान फरमाता है (कि पानी हक़ की मिसाल और फेन बातिल की) ग़रज़ फेन तो खुश्क होकर ग़ायब हो जाता है जिससे लोगों को नफा पहुँचता है (पानी) वह ज़मीन में ठहरा रहता है यूँ अल्लाह (लोगों के समझाने के वास्ते) मसले बयान फरमाता है (17)

जिन लोगों ने अपने परवरदिगार का कहना माना उनके लिए बहुत बेहतरी है और जिन लोगों ने उसका कहा न माना (क़यामत में उनकी ये हालत होगी) कि अगर उन्हें रुए ज़मीन के सब ख़ज़ाने बल्कि उसके साथ इतना और मिल जाए तो ये लोग अपनी नजात के बदले उसको (ये खुशी) दे डालें (मगर फिर भी कोई फायदा नहीं) यही लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब लिया जाएगा और आख़िर उन का ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरी जगह है (18)

(ऐ रसूल) भला वह शख़्स जो ये जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है कभी उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो मुत्तलिक़ (पूरा) अंधा है (हरगिज़ नहीं) (19)

इससे तो बस कुछ समझदार लोग ही नसीहत हासिल करते हैं वह लोग है कि अल्लाह से जो एहद किया उसे पूरा करते हैं और अपने पैमान को नहीं तोड़ते (20)

(ये) वह लोग हैं कि जिन (ताल्लुक़ात) के क़ायम रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया उन्हें क़ायम रखते हैं और अपने परवरदिगार से डरते हैं और (क़यामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिए जाने से ख़ौफ खाते हैं (21)

और (ये) वह लोग हैं जो अपने परवरदिगार की खुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से (जो मुसीबत उन पर पड़ी है) झेल गए और पाबन्दी से नमाज़ अदा की और जो कुछ हमने उन्हें रोज़ी दी थी उसमें से छिपाकर और खुल कर अल्लाह की राह में खर्च किया और ये लोग बुराई को भी भलाई स दफा करते हैं -यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत की खूबी मख़सूस है (22)

(यानि) हमेशा रहने के बाग़ जिनमें वह आप जाएँगे और उनके बाप, दादाओं, बीवियों और उनकी औलाद में से जो लोग नेको कार है (वह सब भी) और फरिश्ते बेहश्त के हर दरवाज़े से उनके पास आएगें (23)

और सलाम अलैकुम (के बाद कहेगें) कि (दुनिया में) तुमने सब्र किया (ये उसी का सिला है देखो) तो आख़िरत का घर कैसा अच्छा है (24)

और जो लोग अल्लाह से एहद व पैमान को पक्का करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (तालुकात बाहमी) के क़ायम रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया है उन्हें क़तआ (तोड़ते) करते हैं और रुए ज़मीन पर फ़साद फैलाते फिरते हैं ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए लानत है और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा घर (जहन्नुम) है (25)

और अल्लाह ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी को बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग करता है और ये लोग दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी पर बहुत निहाल हैं हालाँकि दुनियावी ज़िन्दगी (नईम) आख़िरत के मुक़ाबिल में बिल्कुल बेहकीक़त चीज़ है (26)

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया वह कहते हैं कि उस (शख़्स यानि तुम) पर हमारी ख़्वाहिश के मुवाफिक़ कोई मौजिज़ा उसके परवरदिगार की तरफ से क्यों नहीं नाज़िल होता तुम उनसे कह दो कि इसमें शक नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है (27)

और जिसने उसकी तरफ रुजू की उसे अपनी तरफ पहुँचने की राह दिखाता है (ये) वह लोग हैं जिन्होंने इमान कुबूल किया और उनके दिलों को अल्लाह की चाह से तसल्ली हुआ करती है (28)

जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनके वास्ते (बेहश्त में) तूबा (दरख़्त) और ख़ुशहाली और अच्छा अन्जाम है (29)

(ऐ रसूल जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) उसी तरह हमने तुमको उस उम्मत में भेजा है जिससे पहले और भी बहुत सी उम्मते गुज़र चुकी हैं -ताकि तुम उनके सामने जो क़ुरान हमने वही के ज़रिए से तुम्हारे पास भेजा है उन्हें पढ़ कर सुना दो और ये लोग (कुछ तुम्हारे ही नहीं बल्कि

सिरे से) अल्लाह ही के मुन्किर हैं तुम कह दो कि वही मेरा परवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मै उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी तरफ रुजू करता हूँ (30)

और अगर कोई ऐसा क़ुरान (भी नाज़िल होता) जिसकी बरकत से पहाड़ (अपनी जगह) चल खड़े होते या उसकी वजह से ज़मीन (की मुसाफ़त (दूरी) तय की जाती और उसकी बरकत से मुर्दे बोल उठते (तो भी ये लोग मानने वाले न थे) बल्कि सच यूँ है कि सब काम का एख़्तेयार अल्लाह ही को है तो क्या अभी तक इमानदारों को चैन नहीं आया कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों की हिदायत कर देता और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उन पर उनकी करतूत की सज़ा में कोई (न कोई) मुसीबत पड़ती ही रहेगी या (उन पर पड़ी) तो उनके घरों के आस पास (ग़रज़) नाज़िल होगी (ज़रुर) यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा (फतेह मक्का) पूरा हो कर रहे और इसमें शक नहीं कि अल्लाह हरगिज़ ख़िलाफ़े वायदा नहीं करता (31)

और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी बहुतेरे पैग़म्बरों की हॅसी उड़ाई जा चुकी है तो मैने (चन्द रोज़) काफिरों को मोहलत दी फिर (आख़िर कार) हमने उन्हें ले डाला फिर (तू क्या पूछता है कि) हमारा अज़ाब कैसा था (32)

क्या जो (अल्लाह) हर एक शख़्स के आमाल की ख़बर रखता है (उनको यूँ ही छोड़ देगा हरगिज़ नहीं) और उन लोगों ने अल्लाह के (दूसरे दूसरे) शरीक ठहराए (ऐ रसूल तुम उनसे कह दो कि तुम आख़िर उनके नाम तो बताओं या तुम अल्लाह को ऐसे शरीको की ख़बर देते हो जिनको वह जानता तक नहीं कि वह ज़मीन में (किधर बसते) हैं या (निरी ऊपर से बातें बनाते हैं बल्कि (असल ये है कि) काफिरों को उनकी मक्कारियाँ भली दिखाई गई है और वह (गोया) राहे रास्त से रोक दिए गए हैं और जिस शख़्स को अल्लाह गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं (33)

इन लोगों के वास्ते दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनी और बहुत सख़्त खुलने वाला है (और) (फिर) अल्लाह (के ग़ज़ब) से उनको कोई बचाने वाला (भी) नहीं (34)

जिस बाग़ (बेहश्त) का परहेज़गारों से वायदा किया गया है उसकी सिफत ये है कि उसके नीचे नहरें जारी होगी उसके मेवे सदाबहार और ऐसे ही उसकी छॉव भी ये अन्जाम है उन लोगों को जो (दुनिया में) परहेज़गार थे और काफिरों का अन्जाम (जहन्नुम की) आग है (35)

और (ए रसूल) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जो (एहकाम) तुम्हारे पास नाज़िल किए गए हैं सब ही से खुश होते हैं और बाज़ फिरके़ उसकी बातों से इन्कार करते हैं तुम (उनसे) कह दो कि (तुम मानो या न मानो) मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मै अल्लाह ही की इबादत करु

.

:और किसी को उसका शरीक न बनाऊ मै (सब को) उसी की तरफ बुलाता हूँ और हर शख़्स को हिर फिर कर उसकी तरफ जाना है (36)

और यूँ हमने उस क़ुरान को अरबी (ज़बान) का फरमान नाज़िल फरमाया और (ऐ रसूल) अगर कहीं तुमने इसके बाद को तुम्हारे पास इल्म (क़ुरान) आ चुका उन की नफसियानी ख़्वाहिशों की पैरवी कर ली तो (याद रखो कि) फिर अल्लाह की तरफ से न कोई तुम्हारा सरपरस्त होगा न कोई बचाने वाला (37)

और हमने तुमसे पहले और (भी) बहुतेरे पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीवियाँ भी दी और औलाद (भी अता की) और किसी पैग़म्बर की ये मजाल न थी कि कोई मौजिज़ा अल्लाह की इजाज़त के बगैर ला दिखाए हर एक वक्त (मौऊद) के लिए (हमारे यहाँ) एक (क़िस्म की) तहरीर (होती) है (38)

फिर इसमें से अल्लाह जिसको चाहता है मिटा देता है और (जिसको चाहता है बाक़ी रखता है और उसके पास असल किताब (लौहे महफूज़) मौजूद है (39)

और (ए रसूल) जो जो वायदे (अज़ाब वग़ैरह के) हम उन कुफ्फारों से करते हैं चाहे, उनमें से बाज़ तुम्हारे सामने पूरे कर दिखाएँ या तुम्हें उससे पहले उठा लें बहर हाल तुम पर तो सिर्फ एहकाम का पहुचा देना फर्ज़ है (40)

और उनसे हिसाब लेना हमारा काम है क्या उन लोगों ने ये बात न देखी कि हम ज़मीन को (फ़ुतुहाते इस्लाम से) उसके तमाम एतराफ (चारो ओर) से (सवाह कुफ्र में) घटाते चले आते हैं और अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है उसके हुक्म का कोई टालने वाला नहीं और बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (41)

और जो लोग उन (कुफ्फार मक्के) से पहले हो गुज़रे हैं उन लोगों ने भी पैग़म्बरों की मुख़ालफत में बड़ी बड़ी तदबीरे की तो (ख़ाक न हो सका क्योंकि) सब तदबीरे तो अल्लाह ही के हाथ में हैं जो शख़्स जो कुछ करता है वह उसे खूब जानता है और अनक़रीब कुफ्फार को भी मालूम हो जाएगा कि आख़िरत की खूबी किस के लिए है (42)

और (ऐ रसूल) काफिर लोग कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नही हो तो तुम (उनसे) कह दो कि मेरे और

तुम्हारे दरम्यिान मेरी रिसालत की गवाही के वास्ते अल्लाह और वह शख़्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है काफी है (43)

14 सूरह इबराहीम

सूरह इबराहीम मक्का में नाज़िल हुई और इसमें बावन (52) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम रा ऐ रसूल ये (क़ुरान वह) किताब है जिसकों हमने तुम्हारे पास इसलिए नाज़िल किया है कि तुम लोगों को परवरदिगार के हुक्म से (कुफ्र की) तारीकी से (इमान की) रौशनी में निकाल लाओ ग़रज़ उसकी राह पर लाओ जो सब पर ग़ालिब और सज़ावार हम्द है (1)

वह अल्लाह को कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है और (आख़िरत में) काफिरों को लिए जो सख़्त अज़ाब (मुहय्या किया गया) है अफसोस नाक है (2)

वह कुफ्फार जो दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं और (लोगों) को अल्लाह की राह (पर चलने) से रोकते हैं और इसमें ख़्वाह मा ख़्वाह कजी़ पैदा करना चाहते हैं यही लोग बड़े पल्ले दर्जे की गुमराही में हैं (3)

और हमने जब कभी कोई पैग़म्बर भेजा तो उसकी क़ौम की ज़बान में बातें करता हुआ (ताकि उसके सामने (हमारे एहक़ाम) बयान कर सके तो यही अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिस की चाहता है हिदायत करता है वही सब पर ग़ालिब हिकमत वाला है (4)

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा (और ये हुक्म दिया) कि अपनी क़ौम को (कुफ्र की) तारिकियों से (इमान की) रौशनी में निकाल लाओ और उन्हें अल्लाह के (वह) दिन याद दिलाओ (जिनमें अल्लाह की बड़ी बड़ी कुदरतें ज़ाहिर हुयी) इसमें शक नहीं इसमें तमाम सब्र शुक्र करने वालों के वास्ते (कुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (5)

और वह (वक्त याद दिलाओ) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह ने जो एहसान तुम पर किए हैं उनको याद करो जब अकेले तुमको फिरआऊन के लोगों (के ज़ुल्म) से नजात दी कि वह तुम को बहुत बड़े बड़े दुख दे के सताते थे तुम्हारा लड़कों को जबाह कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी ख़िदमत के वास्ते) जिन्दा रहने देते थे और इसमें तुम्हारा परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारा सब्र की) बड़ी (सख़्त) आज़माइश थी (6)

और (वह वक्त याद दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें जता दिया कि अगर (मेरा) शुक्र

करोगें तो मै यक़ीनन तुम पर (नेअमत की) ज़्यादती करुँगा और अगर कहीं तुमने नाशुक्री की तो (याद रखो कि) यक़ीनन मेरा अज़ाब सख़्त है (7)

और मूसा ने (अपनी क़ौम से) कह दिया कि अगर और (तुम्हारे साथ) जितने रुए ज़मीन पर हैं सब के सब (मिलकर भी अल्लाह की) नाशुक्री करो तो अल्लाह (को ज़रा भी परवाह नहीं क्योंकि वह तो बिल्कुल) बे नियाज़ है (8)

और हम्द है क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे (जैसे) नूह की क़ौम और आद व समूद और (दूसरे लोग) जो उनके बाद हुए (क्योकर ख़बर होती) उनको अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं उनके पास उनके (वक्त के) पैग़म्बर मौजिज़े लेकर आए (और समझाने लगे) तो उन लोगों ने उन पैग़म्बरों के हाथों को उनके मुँह पर उलटा मार दिया और कहने लगे कि जो (हुक्म लेकर) तुम अल्लाह की तरफ से भेजे गए हो हम तो उसको नहीं मानते और जिस (दीन) की तरफ तुम हमको बुलाते हो बड़े गहरे शक में पड़े है (9)

(तब) उनके पैग़म्बरों ने (उनसे) कहा क्या तुम को अल्लाह के बारे में शक है जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला (और) वह तुमको अपनी तरफ बुलाता भी है तो इसलिए कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और एक वक्त मुक़र्रर तक तुमको (दुनिया में चैन से) रहने दे वह लोग बोल उठे कि तुम भी बस हमारे ही से आदमी हो (अच्छा) अब समझे तुम ये चाहते हो कि जिन माबूदों की हमारे बाप दादा परसतिश करते थे तुम हमको उनसे बाज़ रखो अच्छा अगर तुम सच्चे हो तो कोई साफ खुला हुआ सरीही मौजिज़ा हमे ला दिखाओ (10)

उनके पैग़म्बरों ने उनके जवाब में कहा कि इसमें शक नहीं कि हम भी तुम्हारे ही से आदमी हैं मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहता है अपना फज़्ल (व करम) करता है (और) रिसालत अता करता है और हमारे एख़्तियार मे ये बात नही कि बे हुक्मे अल्लाह (तुम्हारी फरमाइश के मुवाफिक़) हम कोई मौजिज़ा तुम्हारे सामने ला सकें और अल्लाह ही पर सब इमानदारों को भरोसा रखना चाहिए (11)

और हमें (आख़िर) क्या है कि हम उस पर भरोसा न करें हालॉकि हमे (निजात की) आसान राहें दिखाई और जो तूने अज़ियतें हमें पहुँचाइ (उन पर हमने सब्र किया और आइन्दा भी सब्र करेगें और तवक्कल भरोसा करने वालो को अल्लाह ही पर तवक्कल करना चाहिए (12)

और जिन लोगों नें कुफ्र एख़्तियार किया था अपने (वक्त के) पैग़म्बरों से कहने लगे हम तो तुमको अपनी सरज़मीन से ज़रुर निकाल बाहर कर देगें यहाँ तक कि तुम फिर हमारे मज़हब की तरफ पलट आओ-तो उनके परवरदिगार ने उनकी तरफ वही भेजी कि तुम घबराओं नहीं हम उन सरकश लोगों को ज़रुर बर्बाद करेगें (13)

और उनकी हलाकत के बाद ज़रुर तुम्ही को इस सरज़मीन में बसाएगें ये (वायदा) महज़ उस शख़्स से जो हमारी बारगाह में (आमाल की जवाब देही में) खड़े होने से डरे (14)

और हमारे अज़ाब से ख़ौफ खाए और उन पैगम्बरों हम से अपनी फतेह की दुआ माँगी (आख़िर वह पूरी हुयी) (15)

और हर एक सरकश अदावत रखने वाला हलाक हुआ (ये तो उनकी सज़ा थी और उसके पीछे ही पीछे जहन्नुम है और उसमें) से पीप लहू भरा हुआ पानी पीने को दिया जाएगा (16)

(ज़बरदस्ती) उसे घूँट घूँट करके पीना पड़ेगा और उसे हलक़ से आसानी से न उतार सकेगा और (वह मुसीबत है कि) उसे हर तरफ से मौत ही मौत आती दिखाई देती है हालॉकि वह मारे न मर सकेगा-और फिर उसके पीछे अज़ाब सख़्त होगा (17)

जो लोग अपने परवरदिगार से काफिर हो बैठे हैं उनकी मसल ऐसी है कि उनकी कारस्तानियाँ गोया (राख का एक ढेर) है जिसे (अन्धड़ के रोज़ हवा का बड़े ज़ोरों का झोंका उड़ा लेगा जो कुछ उन लोगों ने (दुनिया में) किया कराया उसमें से कुछ भी उनके क़ाबू में न होगा यही तो पल्ले दर्जे की गुमराही है (18)

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने सारे आसमान व ज़मीन ज़रुर मसलहत से पैदा किए अगर वह चाहे तो सबको मिटाकर एक नई खिलक़त (बस्ती) ला बसाए (19)

औ ये अल्लाह पर कुछ भी दुशवार नहीं (20)

और (क़यामत के दिन) लोग सबके सब अल्लाह के सामने निकल खड़े होगें जो लोग (दुनिया में कमज़ोर थे बड़ी इज़्ज़त रखने वालो से (उस वक्त) कहेंगें कि हम तो बस तुम्हारे क़दम ब क़दम चलने वाले थे तो क्या (आज) तुम अल्लाह के अज़ाब से कुछ भी हमारे आड़े आ सकते हो वह जवाब देगें काश अल्लाह हमारी हिदायत करता तो हम भी तुम्हारी हिदायत करते हम ख़्वाह बेक़रारी करें ख़्वाह सब्र करे (दोनो) हमारे लिए बराबर है (क्योंकि अज़ाब से) हमें तो अब छुटकारा नहीं (21)

और जब (लोगों का) ख़ैर फैसला हो चुकेगा (और लोग शैतान को इल्ज़ाम देगें) तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुम से सच्चा वायदा किया था (तो वह पूरा हो गया) और मैने भी वायदा तो किया था फिर मैने वायदा ख़िलाफ़ी की और मुझे कुछ तुम पर हुकूमत तो थी नहीं मगर इतनी बात थी कि मैने तुम को (बुरे कामों की तरफ) बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब तुम मुझे

बुंरा (भला) न कहो बल्कि (अगर कहना है तो) अपने नफ़्स को बुरा कहो (आज) न तो मैं तुम्हारी फरियाद को पहुँचा सकता हूँ और न तुम मेरी फरियाद कर सकते हो मै तो उससे पहले ही बेज़ार हूँ कि तुमने मुझे (अल्लाह का) शरीक बनाया बेशक जो लोग नाफरमान हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (22)

और जिन लोगों ने (सदक़ दिल से) इमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए वह (बेहश्त के) उन बाग़ों में दाखि़ल किए जाएँगें जिनके नीचे नहरे जारी होगी और वह अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उसमें रहेगें वहाँ उन (की मुलाक़ात) का तोहफा सलाम का हो (23)

(ऐ रसूल) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने अच्छी बात (मसलन कलमा तौहीद की) वैसी अच्छी मिसाल बयान की है कि (अच्छी बात) गोया एक पाकीज़ा दरख़्त है कि उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी टहनियाँ आसमान में लगी हो (24)

अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त फला (फूला) रहता है और अल्लाह लोगों के वास्ते (इसलिए) मिसालें बयान फरमाता है ताकि लोग नसीहत व इबरत हासिल करें (25)

और गन्दी बात (जैसे कलमाए शिर्क) की मिसाल गोया एक गन्दे दरख़्त की सी है (जिसकी जड़ ऐसी कमज़ोर हो) कि ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ फेंका जाए (क्योंकि) उसको कुछ ठहराओ तो है नहीं (26)

जो लोग पक्की बात (कलमा तौहीद) पर (सदक़ दिल से इमान ला चुके उनको अल्लाह दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आखि़रत में भी साबित क़दम रखेगा (और) उन्हें सवाल व जवाब में कोई वक़्त न होगा और सरकशों को अल्लाह गुमराही में छोड़ देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है (27)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के हाल पर ग़ौर नहीं किया जिन्होंने मेरे एहसान के बदले नाशुक्री की एख़्तियार की और अपनी क़ौम को हलाकत के घरवाहे (जहन्नुम) में झोंक दिया (28)

कि सबके सब जहन्नुम वासिल होगें और वह (क्या) बुरा ठिकाना है (29)

और वह लोग दूसरो को अल्लाह का हमसर (बराबर) बनाने लगे ताकि (लोगों को) उसकी राह से बहका दे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (ख़ैर चन्द रोज़ तो) चैन कर लो फिर तो तुम्हें दोज़ख की तरफ लौट कर जाना ही है (30)

(ऐ रसूल) मेरे वह बन्दे जो इमान ला चुके उन से कह दो कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करें और जो

कुछ हमने उन्हें रोज़ी दी है उसमें से (अल्लाह की राह में) छिपाकर या दिखा कर ख़र्च किया करे उस दिन (क़यामत) के आने से पहल जिसमें न तो (ख़रीदो) फरोख़्त ही (काम आएगी) न दोस्ती मोहब्बत काम (आएगी) (31)

अल्लाह ही ऐसा (क़ादिर तवाना) है जिसने सारे आसमान व ज़मीन पैदा कर डाले और आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिए से (मुख़्तलिफ दरख़्तों से) तुम्हारी रोज़ा के वास्ते (तरह तरह) के फल पैदा किए और तुम्हारे वास्ते कश्तियाँ तुम्हारे बस में कर दी-ताकि उसके हुक्म से दरिया में चलें और तुम्हारे वास्ते नदियों को तुम्हारे एख़्तियार में कर दिया (32)

और सूरज और चाँद को तुम्हारा ताबेदार बना दिया कि सदा फेरी किया करते हैं और रात और दिन को तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया कि हमेशा हाज़िर रहते हैं (33)

(और अपनी ज़रुरत के मुवाफिक) जो कुछ तुमने उससे माँगा उसमें से (तुम्हारी ज़रूरत भर) तुम्हे दिया और तुम अल्लाह की नेमतो गिनती करना चाहते हो तो गिन नहीं सकते हो तू बड़ा बे इन्साफ नाशुक्रा है (34)

और (वह वक़्त याद करो) जब इबराहीम ने (अल्लाह से) अर्ज़ की थी कि परवरदिगार इस शहर (मक्के) को अमन व अमान की जगह बना दे और मुझे और मेरी औलाद को इस बात को बचा ले कि बुतों की परसतिश करने लगे (35)

ऐ मेरे पालने वाले इसमें शक नहीं कि इन बुतों ने बहुतेरे लोगों को गुमराह बना छोड़ा तो जो शख़्स मेरी पैरवी करे तो वह मुझ से है और जिसने मेरी नाफ़रमानी की (तो तुझे एख़्तेयार है) तू तो बड़ा बख़्शने वपला मेहरबान है) (36)

ऐ हमारे पालने वाले मैने तेरे मुअज़िज़ (इज़्ज़त वाले) घर (काबे) के पास एक बेखेती के (वीरान) बियाबान (मक्का) में अपनी कुछ औलाद को (लाकर) बसाया है ताकि ऐ हमारे पालने वाले ये लोग बराबर यहाँ नमाज़ पढ़ा करें तो तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ माएल कर (ताकि वह यहाँ आकर आबाद हों) और उन्हें तरह तरह के फलों से रोज़ी अता कर ताकि ये लोग (तेरा) शुक्र करें (37)

ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं तू (सबसे) खूब वाक़िफ है और अल्लाह से तो कोई चीज़ छिपी नहीं (न) ज़मीन में और न आसमान में उस अल्लाह का (लाख लाख) शुक्र है (38)

जिसने मुझे बुढ़ापा आने पर इस्माईल व इसहाक़ (दो फरज़न्द) अता किए इसमें तो शक नहीं कि मेरा परवरदिगार दुआ का सुनने वाला है (39)

(ऐ मेरे पालने वाले मुझे और मेरी औलाद को (भी) नमाज़ का पाबन्द बना दे और ऐ मेरे पालने वाले मेरी दुआ क़ुबूल फरमा (40)

ऐ हमारे पालने वाले जिस दिन (आमाल का) हिसाब होने लगे मुझको और मेरे माँ बाप को और सारे इमानदारों को तू बख़्श दे (41)

और जो कुछ ये कुफ़्फ़ार (कुफ़्फ़ारे मक्का) किया करते हैं उनसे अल्लाह को ग़ाफिल न समझना (और उन पर फौरन अज़ाब न करने की) सिर्फ ये वजह है कि उस दिन तक की मोहलत देता है जिस दिन लोगों की आँखों के ढेले (ख़ौफ के मारे) पथरा जाएँगें (42)

(और अपने अपने सर उठाए भागे चले जा रहे हैं (टकटकी बँधी है कि) उनकी तरफ उनकी नज़र नहीं लौटती (जिधर देख रहे हैं) और उनके दिल हवा हवा हो रहे हैं (43)

और (ऐ रसूल) लोगों को उस दिन से डराओ (जिस दिन) उन पर अज़ाब नाज़िल होगा तो जिन लोगों ने नाफरमानी की थी (गिड़गिड़ा कर) अर्ज़ करेगें कि ऐ हमारे पालने वाले हम को थोड़ी सी मोहलत और दे दे (अबकी बार) हम तेरे बुलाने पर ज़रुर उठ खड़े होगें और सब रसूलों की पैरवी करेगें (तो उनको जवाब मिलेगा) क्या तुम वह लोग नहीं हो जो उसके पहले (उस पर) क़समें खाया करते थे कि तुम को किसी तरह का ज़व्वाल (नुक्सान) नहीं (44)

(और क्या तुम वह लोग नहीं कि) जिन लोगों ने (हमारी नाफ़रमानी करके) आप अपने ऊपर जुल्म किया उन्हीं के घरों में तुम भी रहे हालॉकि तुम पर ये भी ज़ाहिर हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या (बरताओ) किया और हमने (तुम्हारे समझाने के वास्ते) मसले भी बयान कर दी थीं (45)

और वह लोग अपनी चालें चलते हैं (और कभी बाज़ न आए) हालॉकि उनकी सब हालतें अल्लाह की नज़र में थी और अगरचे उनकी मक्कारियाँ (उस गज़ब की) थीं कि उन से पहाड़ (अपनी जगह से) हट जाये (46)

तो तुम ये ख़्याल (भी) न करना कि अल्लाह अपने रसूलों से ख़िलाफ वायदा करेगा इसमें शक नहीं कि अल्लाह (सबसे) ज़बरदस्त बदला लेने वाला है (47)

(मगर कब) जिस दिन ये ज़मीन बदलकर दूसरी ज़मीन कर दी जाएगी और (इसी तरह) आसमान (भी

बदल दिए जाएँगें) और सब लोग यकता क़हार (ज़बरदस्त) अल्लाह के रुबरु (अपनी अपनी जगह से) निकल खड़े होगें (48)

और तुम उस दिन गुनेहगारों को देखोगे कि ज़ज़ीरों मे जकड़े हुए होगें (49)

उनके (बदन के) कपड़े क़तरान (तारकोल) के होगे और उनके चेहरों को आग (हर तरफ से) ढाके होगी (50)

ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके किए का बदला दे (अच्छा तो अच्छा बुरा तो बुरा) बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (51)

ये (क़ुरान) लोगों के लिए एक क़िस्म की इत्तेला (जानकारी) है ताकि लोग उसके ज़रिये से (अज़ाबे ख़ुदा से) डराए जाए और ताकि ये भी ये यक़ीन जान लें कि बस वही (अल्लाह) एक माबूद है और ताकि जो लोग अक़्ल वाले हैं नसीहत व इबरत हासिल करें (52)

15 सूरह हिज्र

सूरह हिज्र मक्का में नाज़िल हुई और इसमें निन्नान्वे (99) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम रा ये किताब (अल्लाह) और वाजेए व रौशन क़ुरान की (चन्द) आयते हैं (1)

(एक दिन वह भी आने वाला है कि) जो लोग काफ़िर हो बैठे हैं अक्सर दिल से चाहेंगें (2)

काश (हम भी) मुसलमान होते (ऐ रसूल) उन्हें उनकी हालत पर रहने दो कि खा पी लें और (दुनिया के चन्द रोज़) चैन कर लें और उनकी तमन्नाएँ उन्हें खेल तमाशे में लगाए रहीं (3)

अनक़रीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा और हमने कभी कोई बस्ती तबाह नहीं की मगर ये कि उसकी तबाही के लिए (पहले ही से) समझी बूझी मियाद मुक़र्रर लिखी हुयी थी (4)

कोई उम्मत अपने वक़्त से न आगे बढ़ सकती है न पीछे हट सकती है (5)

(ऐ रसूल कुफ़्फ़ारे मक्का तुमसे) कहते हैं कि ऐ शख़्स (जिसको ये भरम है) कि उस पर 'वही' व किताब नाज़िल हुई है तो (अच्छा ख़ासा) सिड़ी है (6)

अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं ला खड़ा करता (7)

(हालॉकि) हम फरिश्तों को खुल्लम खुल्ला (जिस अज़ाब के साथ) फैसले ही के लिए भेजा करते हैं और (अगर फरिश्ते नाज़िल हो जाए तो) फिर उनको (जान बचाने की) मोहलत भी न मिले (8)

बेशक हम ही ने क़ुरान नाज़िल किया और हम ही तो उसके निगेहबान भी हैं (9)

(ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले भी अगली उम्मतों में (और भी बहुत से) रसूल भेजे (10)

और (उनकी भी यही हालत थी कि) उनके पास कोई रसूल न आया मगर उन लोगों ने उसकी हँसी ज़रुर उड़ाई (11)

हम (गोया खुद) इसी तरह इस (गुमराही) को (उन) गुनाहगारों के दिल में डाल देते हैं (12)

ये कुफ़्फ़ार इस (क़ुरान) पर इमान न लाएँगें और (ये कुछ अनोखी बात नहीं) अगलों के तरीके़ भी (ऐसे ही) रहें है (13)

और अगर हम अपनी कुदरत से आसमान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और ये लोग दिन दहाडे़ उस दरवाजे़ से (आसमान पर) चढ़ भी जाएँ (14)

तब भी यहीं कहेगें कि हो न हो हमारी आँखें (नज़र बन्दी से) मतवाली कर दी गई हैं या नहीं तो हम लोगों पर जादू किया गया है (15)

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के वास्ते उनके (सितारों से) आरास्ता (सजाया) किया (16)

और हर शैतान मरदूद की आमद रफत (आने जाने) से उन्हें महफूज़ रखा (17)

मगर जो शैतान चोरी छिपे (वहाँ की किसी बात पर) कान लगाए तो शहाब का दहकता हुआ शोला उसके (खदेड़ने को) पीछे पड़ जाता है (18)

और ज़मीन को (भी अपने मख़लूक़ात के रहने सहने को) हम ही ने फैलाया और इसमें (कील की तरह) पहाड़ो के लंगर डाल दिए और हमने उसमें हर किस्म की मुनासिब चीजे़ उगाई (19)

और हम ही ने उन्हें तुम्हारे वास्ते जि़न्दगी के साज़ों सामान बना दिए और उन जानवरों के लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते (20)

और हमारे यहाँ तो हर चीज़ के बेशुमार खज़ाने (भरे) पड़े हैं और हम (उसमें से) एक जची तली मिक़दार भेजते रहते है (21)

और हम ही ने वह हवाएँ भेजी जो बादलों को पानी से (भरे हुए) है फिर हम ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने तुम लोगों को वह पानी पिलाया और तुम लोगों ने तो कुछ उसको जमा करके नहीं रखा था (22)

और इसमें शक नहीं कि हम ही (लोगों को) जिलाते और हम ही मार डालते हैं और (फिर) हम ही (सब के) वाली वारिस हैं (23)

और बेशक हम ही ने तुममें से उन लोगों को भी अच्छी तरह समझ लिया जो पहले हो गुज़रे और हमने उनको भी जान लिया जो बाद को आने वाले हैं (24)

और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार वही है जो उन सब को (क़यामत में कब्रों से) उठाएगा बेशक वह हिक्मत वाला वाक़िफ़कार है (25)

और बेशक हम ही ने आदमी को ख़मीर (गुंधी) दी हुई सड़ी मिट्टी से जो (सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा किया (26)

और हम ही ने जिन्नात को आदमी से (भी) पहले वे धुएँ की तेज़ आग से पैदा किया (27)

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं एक आदमी को खमीर दी हुयी मिट्टी से (जो सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा करने वाला हूँ (28)

तो जिस वक्त मै उसको हर तरह से दुरुस्त कर चुके और उसमें अपनी (तरफ से) रुह फूँक दूँ तो सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना (29)

ग़रज़ फरिश्ते तो सब के सब सर ब सजूद हो गए (30)

मगर इबलीस (मलऊन) की उसने सजदा करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार किया (31)

(इस पर अल्लाह ने) फरमाया आओ शैतान आख़िर तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों के साथ शामिल न हुआ (32)

वह (ढिठाई से) कहने लगा मैं ऐसा गया गुज़रा तो हूँ नहीं कि ऐसे आदमी को सजदा कर बैठूँ जिसे तूने सड़ी हुयी खन खन बोलने वाली मिट्टी से पैदा किया है (33)

अल्लाह ने फरमाया (नहीं तू) तो बेहश्त से निकल जा (दूर हो) कि बेशक तू मरदूद है (34)

और यक़ीनन तुझ पर रोज़े में जज़ा तक फिटकार बरसा करेगी (35)

शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार ख़ैर तू मुझे उस दिन तक की मोहलत दे जबकि (लोग दोबारा ज़िन्दा करके) उठाए जाएँगें (36)

अल्लाह ने फरमाया वक्त मुक़र्रर (37)

के दिन तक तुझे मोहलत दी गई (38)

उन शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार चूँकि तूने मुझे रास्ते से अलग किया मैं भी उनके लिए दुनिया में (साज़ व सामान को) उम्दा कर दिखाऊँगा और सबको ज़रुर बहकाऊगा (39)

मगर उनमें से तेरे निरे खुरे ख़ास बन्दे (कि वह मेरे बहकाने में न आएँगें) (40)

अल्लाह ने फरमाया कि यही राह सीधी है कि मुझ तक (पहुँचती) है (41)

जो मेरे मुख़लिस (ख़ास बन्दे) बन्दे हैं उन पर तुझसे किसी तरह की हुकूमत न होगी मगर हाँ गुमराहों में से जो तेरी पैरवी करे (उस पर तेरा वार चल जाएगा) (42)

और हाँ ये भी याद रहे कि उन सब के वास्ते (आख़िरी) वायदा बस जहन्न ुम है जिसके सात दरवाज़े होगे (43)

हर (दरवाज़े में जाने) के लिए उन गुमराहों की अलग अलग टोलियाँ होगीं (44)

और परहेज़गार तो बेहश्त के बाग़ों और चश्मों मे यक़ीनन होंगे (45)

(दाख़िले के वक्त फरिश्ते कहेगें कि) उनमें सलामती इतमिनान से चले चलो (46)

और (दुनिया की तकलीफों से) जो कुछ उनके दिल में रंज था उसको भी हम निकाल देगें और ये बाहम एक दूसरे के आमने सामने तख़्तों पर इस तरह बैठे होगें जैसे भाई भाई (47)

उनको बेहश्त में तकलीफ छुएगी भी तो नहीं और न कभी उसमें से निकाले जाएँगें (48)

(ऐ रसूल) मेरे बन्दों को आगाह करो कि बेशक मै बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ (49)

मगर साथ ही इसके (ये भी याद रहे कि) बेशक मेरा अज़ाब भी बड़ा दर्दनाक अज़ाब है (50)

और उनको इबराहीम के मेहमान का हाल सुना दो (51)

कि जब ये इबराहीम के पास आए तो (पहले) उन्होंने सलाम किया इबराहीम ने (जवाब सलाम के बाद) कहा हमको तो तुम से डर मालूम होता है (52)

उन्होंने कहा आप मुत्तलिक़ ख़ौफ न कीजिए (क्योंकि) हम तो आप को एक (दाना व बीना) फरज़न्द (के पैदाइश) की खुशख़बरी देते हैं (53)

इब्राहिम ने कहा क्या मुझे ख़ुशख़बरी (बेटा होने की) देते हो जब मुझे बुढ़ापा छा गया (54)

तो फिर अब काहे की ख़ुशख़बरी देते हो वह फरिश्ते बोले हमने आप को बिल्कुल ठीक ख़ुशख़बरी दी है तो आप (बारगाह अल्लाह बन्दी से) ना उम्मीद न हो (55)

इबराहीम ने कहा गुमराहों के सिवा और ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की रहमत से ना उम्मीद हो (56)

(फिर) इबराहीम ने कहा ऐ (अल्लाह के) भेजे हुए (फरिश्तों) तुम्हें आख़िर क्या मुहिम दर पेश है (57)

उन्होंने कहा कि हम तो एक गुनाहगार क़ौम की तरफ (अज़ाब नाज़िल करने के लिए) भेजे गए हैं (58)

मगर लूत के लड़के वाले कि हम उन सबको ज़रुर बचा लेगें मगर उनकी बीबी जिसे हमने ताक लिया है (59)

कि वह ज़रुर (अपने लड़के बालों के) पीछे (अज़ाब में) रह जाएगी (60)

ग़रज़ जब (अल्लाह के) भेजे हुए (फरिश्ते) लूत के बाल बच्चों के पास आए तो लूत ने कहा कि तुम तो (कुछ) अजनबी लोग (मालूम होते हो) (61)

फरिश्तों ने कहा (नहीं) बल्कि हम तो आपके पास वह (अज़ाब) लेकर आए हैं (62)

जिसके बारे में आपकी क़ौम के लोग शक रखते थे (63)

(कि आए न आए) और हम आप के पास (अज़ाब का) कलई (सही) हुक्म लेकर आए हैं और हम बिल्कुल सच कहते हैं (64)

बस तो आप कुछ रात रहे अपने लड़के बालों को लेकर निकल जाइए और आप सब के सब पीछे रहिएगा और उन लोगों में से कोई मुड़कर पीछे न देखे और जिधर (जाने) का हुक्म दिया गया है (शाम) उधर (सीधे) चले जाओ और हमने लूत के पास इस अम्र का क़तई फैसला कहला भेजा (65)

कि बस सुबह होते होते उन लोगों की जड़ काट डाली जाएगी (66)

और (ये बात हो रही थीं कि) शहर के लोग (मेहमानों की ख़बर सुन कर बुरी नीयत से) खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे (67)

लूत ने (उनसे कहा) कि ये लोग मेरे मेहमान है तो तुम (इन्हें सताकर) मुझे रुसवा बदनाम न करो (68)

और अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील न करो (69)

वह लोग कहने लगे क्यों जी हमने तुम को सारे जहाँन के लोगों (के आने) की मनाही नहीं कर दी थी (70)

लूत ने कहा अगर तुमको (ऐसा ही) करना है तो ये मेरी क़ौम की बेटियाँ मौजूद हैं (71)

(इनसे निकाह कर लो) ऐ रसूल तुम्हारी जान की कसम ये लोग (क़ौम लूत) अपनी मस्ती में मदहोश हो रहे थे (72)

(लूत की सुनते काहे को) ग़रज़ सूरज निकलते निकलते उनको (बड़े ज़ोरो की) चिघाड़ न ले डाला (73)

फिर हमने उसी बस्ती को उलट कर उसके ऊपर के तबके़ को नीचे का तबक़ा बना दिया और उसके ऊपर उन पर खरन्जे के पत्थर बरसा दिए इसमें शक नहीं कि इसमें (असली बात के) ताड़ जाने वालों के लिए (कुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (74)

और वह उलटी हुयी बस्ती हमेशा (की आमदरफ्त) (75)

के रास्ते पर है (76)

इसमें तो शक हीं नहीं कि इसमें ईमानदारों के वास्ते (कुदरते अल्लाह की) बहुत बड़ी निशानी है (77)

और ऐका के रहने वाले (क़ौमे शुएब की तरह बड़े सरकश थे) (78)

तो उन से भी हमने (नाफरमानी का) बदला लिया और ये दो बस्तियाँ (क़ौमे लूत व शुएब की) एक खुली हुयी शह राह पर (अभी तक मौजूद) हैं (79)

और इसी तरह हिज्र के रहने वालों (क़ौम सालेह ने भी) पैग़म्बरों को झुठलाया (80)
और (बावजूद कि) हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दी उस पर भी वह लोग उनसे रद गिरदानी करते रहे (81)

और बहुत दिल जोई से पहाड़ों को तराश कर घर बनाते रहे (82)

आख़िर उनके सुबह होते होते एक बड़ी (जोरों की) चिंघाड़ ने ले डाला (83)

फिर जो कुछ वह अपनी हिफाज़त की तदबीर किया करते थे (अज़ाब अल्लाह से बचाने में) कि कुछ भी काम न आयीं (84)

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरम्यिान में है हिकमत व मसलहत से पैदा किया है और क़यामत यक़ीनन ज़रुर आने वाली है तो तुम (ऐ रसूल) उन काफिरों से शाइस्ता उनवान (अच्छे बरताव) के साथ दर गुज़र करो (85)

इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा पैदा करने वाला है (86)

(बड़ा दाना व बीना है) और हमने तुमको सबअे मसानी (सूरे हम्द) और क़ुरान अज़ीम अता किया है (87)

और हमने जो उन कुफ्फारों में से कुछ लोगों को (दुनिया की) माल व दौलत से निहाल कर दिया है तुम उसकी तरफ हरगिज़ नज़र भी न उठाना और न उनकी (बेदीनी) पर कुछ अफसोस करना और इमानदारों से (अगरचे ग़रीब हो) झुककर मिला करो और कहा दो कि मै तो (अज़ाबे अल्लाह से) सरीही तौर से डराने वाला हूँ (88)

(ऐ रसूल) उन कुफ्फारों पर इस तरह अज़ाब नाज़िल करेगें जिस तरह हमने उन लोगों पर नाज़िल किया (89)

जिन्होंने क़ुरान को बॉट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला (90)

(बाज़ को माना बाज को नहीं) तो ऐ रसूल तुम्हारे ही परवरदिगार की (अपनी) क़सम (91)

कि हम उनसे जो कुछ ये (दुनिया में) किया करते थे (बहुत सख़्ती से) ज़रुर बाज़ पुर्स (पुछताछ) करेंगे (92)

पस जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया है उसे वाजेए करके सुना दो (93)
और मुशरेकीन की तरफ से मुँह फेर लो (94)

जो लोग तुम्हारी हँसी उड़ाते है (95)

और अल्लाह के साथ दूसरे परवरदिगार को (शरीक) ठहराते हैं हम तुम्हारी तरफ से उनके लिए काफी हैं तो अनक़रीब ही उन्हें मालूम हो जाएगा (96)

कि तुम जो इन (कुफ्फारों मुनाफिक़ीन) की बातों से दिल तंग होते हो उसको हम ज़ुरुर जानते हैं (97)

तो तुम अपने परवरदिगार की हम्दो सना से उसकी तस्बीह करो और (उसकी बारगाह में) सजदा करने वालों में हो जाओ (98)

और जब तक तुम्हारे पास मौत आए अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो (99)

16 सूरह नहल

सूरह नहल मक्का में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ अठ्ठाइस (128) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का (ख़ुदा का हुक्म (क़यामत गोया) आ पहुँचा तो (ऐ काफिरों बे फायदे) तुम इसकी जल्दी न मचाओ जिस चीज़ को ये लोग शरीक क़रार देते हैं उससे वह अल्लाह पाक व पाकीज़ा और बरतर है (1)

वही अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिसके पास चाहता है 'वहीं' देकर फ़रिश्तों को भेजता है कि लोगों को इस बात से आगाह कर दें कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मुझी से डरते रहो (2)

उसी ने सारे आसमान और ज़मीन मसलहत व हिकमत से पैदा किए तो ये लोग जिसको उसका शरीक बनाते हैं उससे कहीं बरतर है (3)

उसने इन्सान को नुत्फे से पैदा किया फिर वह यकायक (हम ही से) खुल्लम खुल्ला झगड़ने वाला हो गया (4)

उसी ने चरपायों को भी पैदा किया कि तुम्हारे लिए ऊन (ऊन की खाल और ऊन) से जाड़े का सामान है (5)

इसके अलावा और भी फायदें हैं और उनमें से बाज़ को तुम खाते हो और जब तुम उन्हें सिरे शाम चराई पर से लाते हो जब सवेरे ही सवेरे चराई पर ले जाते हो (6)

तो उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ भी है और जिन शहरों तक बग़ैर बड़ी जान ज़ोख़म में डाले बग़ैर के पहुँच न सकते थे वहाँ तक ये चौपाए भी तुम्हारे बोझे भी उठा लिए फिरते हैं इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफीक़ मेहरबान है (7)

और (उसी ने) घोड़ों ख़च्चरों और गधों को (पैदा किया) ताकि तुम उन पर सवार हो और (इसमें) ज़ीनत (भी) है (8)

(उसके अलावा) और चीज़े भी पैदा करेगा जिनको तुम नहीं जानते हो और (ख़ुश्क व तर में) सीधी राह (की हिदायत तो अल्लाह ही के ज़िम्मे हैं और बाज़ रस्ते टेढ़े हैं (9)

और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सबको मंज़िले मक़सूद तक पहुँचा देता वह वही (अल्लाह) है जिसने आसमान से पानी बरसाया जिसमें से तुम सब पीते हो और इससे दरख़्त शादाब होते हैं (10)

जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चराते हो इसी पानी से तुम्हारे वास्ते खेती और ज़ैतून और खुरमें और अंगूर उगाता है और हर तरह के फल (पैदा करता है) इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालो के वास्ते (कुदरते अल्लाह की) बहुत बड़ी निशानी है (11)

उसी ने तुम्हारे वास्ते रात को और दिन को और सूरज और चाँद को तुम्हारा ताबेए बना दिया है और सितारे भी उसी के हुक्म से (तुम्हारे) फरमाबरदार हैं कुछ शक ही नहीं कि (इसमें) समझदार लोगों के वास्ते यक़ीनन (कुदरत ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं (12)

और जो तरह तरह के रंगों की चीज़े उसमें ज़मीन में तुम्हारे नफे के वास्ते पैदा की (13)

कुछ शक नहीं कि इसमें भी इबरत व नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते (कुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानी है और वही (वह अल्लाह है जिसने दरिया को (भी तुम्हारे) क़ब्ज़े में कर दिया ताकि तुम इसमें से (मछलियों का) ताज़ा ताज़ा गोश्त खाओ और इसमें से ज़ेवर (की चीज़े मोती वगैरह) निकालो जिन को तुम पहना करते हो और तू कश्तियों को देखता है कि (आमद व रफत में) दरिया में (पानी को) चीरती फाड़ती आती है (14)

और (दरिया को तुम्हारे ताबेए) इसलिए (कर दिया) कि तुम लोग उसके फज़ल (नफा तिजारत) की तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो और उसी ने ज़मीन पर (भारी भारी) पहाड़ों को गाड़ दिया (15)

ताकि (ऐसा न हों) कि ज़मीन तुम्हें लेकर झुक जाए (और तुम्हारे क़दम न जमें) और (उसी ने) नदियाँ और रास्ते (बनाए) (16)

ताकि तुम (अपनी अपनी मंज़िले मक़सूद तक पहुँचों (उसके अलावा रास्तों में) और बहुत सी निशानियाँ (पैदा की हैं) और बहुत से लोग सितारे से भी राह मालूम करते हैं (17)

तो क्या जो (अल्लाह इतने मख़लूकात को) पैदा करता है वह उन (बुतों के बराबर हो सकता है जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनना चाहो तो (इस कसरत से हैं कि) तुम नहीं गिन सकते हो (18)

बेशक ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है कि (तुम्हारी नाफरमानी पर भी नेअमत देता है) (19)

और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो (ग़रज़) अल्लाह (सब कुछ) जानता है और (ये कुफ्फार) ख़ुदा को छोड़कर जिन लोगों को (हाजत के वक्त) पुकारते हैं वह कुछ भी पैदा नहीं कर सकते (20)

(बल्कि) वह ख़ुद दूसरों के बनाए हुए मुर्दे बेजान हैं और इतनी भी ख़बर नहीं कि कब (क़यामत) होगी और कब मुर्दे उठाए जाएगें (21)

(फिर क्या काम आएँगी) तुम्हारा परवरदिगार (यकता अल्लाह है तो जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते उनके दिल ही (इस वजह के हैं कि हर बात का) इन्कार करते हैं और वह बड़े मग़रुर हैं (22)

ये लोग जो कुछ छिपा कर करते हैं और जो कुछ ज़ाहिर बज़ाहिर करते हैं (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ज़रुर जानता है वह हरगिज़ तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता (23)

और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है तो वह कहते हैं कि (अजी कुछ भी नहीं बस) अगलो के किस्से हैं (24)

(उनको बकने दो ताकि क़यामत के दिन) अपने (गुनाहों) के पूरे बोझ और जिन लोगों को उन्होंने बे समझे बूझे गुमराह किया है उनके (गुनाहों के) बोझ भी उन्हीं को उठाने पड़ेगें ज़रा देखो तो कि ये लोग कैसा बुरा बोझ अपने ऊपर लादे चले जा रहें हैं (25)

बेशक जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी मक्कारियाँ की थीं तो (अल्लाह का हुक्म) उनके ख़्यालात की इमारत की जड़ की तरफ से आ पड़ा (पस फिर क्या था) इस ख़्याली इमारत की छत उन पर उनके ऊपर से धम से गिर पड़ी (और सब ख़्याल हवा हो गए) और जिधर से उन पर अज़ाब आ पहुँचा उसकी उनको ख़बर तक न थी (26)

(फिर उसी पर इकतिफा नहीं) उसके बाद क़यामत के दिन अल्लाह उनको रुसवा करेगा और फरमाएगा कि (अब बताओ) जिसको तुमने मेरा शरीक बना रखा था और जिनके बारे में तुम (इमानदारों से) झगड़ते थे कहाँ हैं (वह तो कुछ जवाब देगें नहीं मगर) जिन लोगों को (अल्लाह की तरफ से) इल्म दिया गया है कहेगें कि आज के दिन रुसवाई और ख़राबी (सब कुछ) काफिरों पर ही है (27)

वह लोग हैं कि जब फरिश्ते उनकी रुह क़ब्ज़ करने लगते हैं (और) ये लोग (कुफ्र करके) आप अपने ऊपर सितम ढ़ाते रहे तो इताअत पर आमादा नज़र आते हैं और (कहते हैं कि) हम तो (अपने

ख़्याल में) कोई बुराई नहीं करते थे (तो फरिश्ते कहते हैं) हाँ जो कुछ तुम्हारी करतूते थी अल्लाह उससे खूब अच्छी तरह वाकि़फ हैं (28)
(अच्छा तो लो) जहन्नुम के दरवाज़ों में दाखि़ल हो और इसमें हमेशा रहोगे ग़रज़ तकब्बुर करने वालो का भी क्या बुरा ठिकाना है (29)

और जब परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाजि़ल किया है तो बोल उठते हैं सब अच्छे से अच्छा जिन लोगों ने नेकी की उनके लिए इस दुनिया में (भी) भलाई (ही भलाई) है और आखि़रत का घर क्या उम्दा है (30)

सदा बहार (हरे भरे) बाग़ हैं जिनमें (वे तकल्लुफ) जा पहुँचेगें उनके नीचे नहरें जारी होंगी और ये लोग जो चाहेगें उनके लिए मुयय्या (मौजू़द) है यूँ अल्लाह परहेज़गारों (को उनके किए) की जज़ा अता फरमाता है (31)

(ये) वह लोग हैं जिनकी रुहें फरिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करतें हैं कि वह (नजासते कुफ्र से) पाक व पाकीज़ा होते हैं तो फरिश्ते उनसे (निहायत तपाक से) कहते है सलामुन अलैकुम जो नेकियाँ दुनिया में तुम करते थे उसके सिले में जन्नत में (बेतकल्लुफ) चले जाओ (32)

(ऐ रसूल) क्या ये (एहले मक्का) इसी बात के मुन्तिज़र है कि उनके पास फरिश्ते (क़ब्ज़े रुह को) आ ही जाएँ या (उनके हलाक करने को) तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब ही आ पहुँचे जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं वह ऐसी बातें कर चुके हैं और अल्लाह ने उन पर (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया बल्कि वह लोग खु़द कुफ्ऱ की वजह से अपने ऊपर आप जुल्म करते रहे (33)

फिर जो जो करतूतें उनकी थी उसकी सज़ा में बुरे नतीजे उनको मिले और जिस (अज़ाब) की वह हँसी उड़ाया करते थे उसने उन्हें (चारो तरफ से) घेर लिया (34)

और मुश्रकीन कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम ही उसके सिवा किसी और चीज़ की इबादत करते और न हमारे बाप दादा और न हम बग़ैर उस (की मर्ज़ी) के किसी चीज़ को हराम कर बैठते जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं वह भी ऐसे (हीला हवाले की) बातें कर चुके हैं तो (कहा करें) पैग़म्बरों पर तो उसके सिवा कि एहकाम को साफ साफ पहुँचा दे और कुछ भी नहीं (35)

और हमने तो हर उम्मत में एक (न एक) रसूल इस बात के लिए ज़रुर भेजा कि लोगों अल्लाह की इबादत करो और बुतों (की इबादत) से बचे रहो ग़रज़ उनमें से बाज़ की तो अल्लाह ने हिदायत की और बाज़ के (सर) पर गुमराही सवार हो गई तो ज़रा तुम लोग रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (पैग़म्बराने खु़दा के) झुठलाने वालों को क्या अन्जाम हुआ (36)

(ऐ रसूल) अगर तुमको इन लोगों के राहे रास्त पर जाने का हौका है (तो बे फायदा) क्योंकि अल्लाह तो हरगिज़ उस शख़्स की हिदायत नहीं करेगा जिसको (नाज़िल होने की वजह से) गुमराही में छोड़ देता है और न उनका कोई मददगार है (37)

(कि अज़ाब से बचाए) और ये कुफ्फार अल्लाह की जितनी क़समें उनके इमकान में तुम्हें खा (कर कहते) हैं कि जो शख़्स मर जाता है फिर उसको अल्लाह दोबारा ज़िन्दा नहीं करेगा (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ ज़रुर ऐसा करेगा इस पर अपने वायदे की (वफा) लाज़िम व ज़रुरी है मगर बहुतेरे आदमी नहीं जानते हैं (38)

(दोबारा ज़िन्दा करना इसलिए ज़रुरी है) कि जिन बातों पर ये लोग झगड़ा करते हैं उन्हें उनके सामने साफ वाज़ेए कर देगा और ताकि कुफ्फार ये समझ लें कि ये लोग (दुनिया में) झूठे थे (39)
हम जब किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम कह देते हैं कि 'हो जा' बस फौरन हो जाती है (तो फिर मुर्दो का जिलाना भी कोई बात है) (40)

और जिन लोगों ने (कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म पर ज़ुल्म सहने के बाद अल्लाह की खुशी के लिए घर बार छोड़ा हिजरत की हम उनको ज़रुर दुनिया में भी अच्छी जगह बिठाएँगें और आख़िरत की जज़ा तो उससे कहीं बढ़ कर है काश ये लोग जिन्होंने अल्लाह की राह में सख़्तियों पर सब्र किया (41)

और अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं (आख़िरत का सवाब) जानते होते (42)

और (ऐ रसूल) तुम से पहले आदमियों ही को पैग़म्बर बना बनाकर भेजा किए जिन की तरफ हम वहीं भेजते थे तो (तुम एहले मक्का से कहो कि) अगर तुम खुद नहीं जानते हो तो एहले ज़िक्र (आलिमों से) पूछो (और उन पैग़म्बरों को भेजा भी तो) रौशन दलीलों और किताबों के साथ (43)

और तुम्हारे पास क़ुरान नाज़िल किया है ताकि जो एहकाम लोगों के लिए नाज़िल किए गए है तुम उनसे साफ साफ बयान कर दो ताकि वह लोग खुद से कुछ ग़ौर फिक्र करें (44)

तो क्या जो लोग बड़ी बड़ी मक्कारियाँ (शिर्क वग़ैरह) करते थे (उनको इस बात का इतमिनान हो गया है (और मुत्तलिक़ ख़ौफ नहीं) कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धसा दे या ऐसी तरफ से उन पर अज़ाब आ पहुँचे कि उसकी उनको ख़बर भी न हो (45)

उनके चलते फिरते (अल्लाह का अज़ाब) उन्हें गिरफ्तार करे तो वह लोग उसे ज़ेर नहीं कर सकते (46)

या वह अज़ाब से डरते हो तो (उसी हालत में) धर पकड़ करे इसमें तो शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफीक़ रहम वाला है (47)

क्या उन लोगों ने अल्लाह की मख़लूक़ात में से कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जिसका साया (कभी) दाहिनी तरफ और कभी बायी तरफ पलटा रहता है कि (गोया) अल्लाह के सामने सर सजदा है और सब इताअत का इज़हार करते हैं (48)

और जितनी चीज़ें (चादँ सूरज वग़ैरह) आसमानों में हैं और जितने जानवर ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही के आगे सर सजूद हैं और फरिश्ते तो (है ही) और वह हुक्में अल्लाह से सरकशी नहीं करते (49)

और अपने परवरदिगार से जो उनसे (कहीं) बरतर (बड़ा) व आला है डरते हैं और जो हुक्में दिया जाता है फौरन बजा लाते हैं (50) सजदा 3

और अल्लाह ने फरमाया था कि दो दो माबूद न बनाओ माबूद तो बस वही यकता अल्लाह है सिर्फ मुझी से डरते रहो (51)

और जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं (ग़रज़) सब कुछ उसी का है और ख़ालिस फरमाबरदारी हमेशा उसी को लाज़िम (जरूरी) है तो क्या तुम लोग अल्लाह के सिवा (किसी और से भी) डरते हो (52)

और जितनी नेअमतें तुम्हारे साथ हैं (सब ही की तरफ से हैं) फिर जब तुमको तकलीफ छू भी गई तो तुम उसी के आगे फरियाद करने लगते हो (53)

फिर जब वह तुमसे तकलीफ को दूर कर देता है तो बस फौरन तुममें से कुछ लोग अपने परवरदिगार को शरीक ठहराते हैं (54)

ताकि जो (नेअमतें) हमने उनको दी है उनकी नाशुक्री करें तो (ख़ैर दुनिया में चन्द रोज़ चैन कर लो फिर तो अनक़रीब तुमको मालूम हो जाएगा (55)

और हमने जो रोज़ी उनको दी है उसमें से ये लोग उन बुतों का हिस्सा भी क़रार देते है जिनकी हक़ीकत नहीं जानते तो अल्लाह की (अपनी) क़िस्म जो इफ़्तेरा परदाज़ियाँ तुम करते थे (क़यामत में) उनकी बाज़पुर्स (पूछ गछ) तुम से ज़रुर की जाएगी (56)

और ये लोग अल्लाह के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं (सुबान अल्लाह) वह उस से पाक व पाकीज़ा है (57)

और अपने लिए (बेटे) जो मरग़ूब (दिल पसन्द) हैं और जब उसमें से किसी एक को लड़की पैदा होने की जो खुशख़बरी दीजिए रंज के मारे मुँह काला हो जाता है (58)

और वह ज़हर का सा घूँट पीकर रह जाता है (बेटी की) जिसकी खुशखबरी दी गई है अपनी क़ौम के लोगों से छिपा फिरता है (और सोचता है) कि क्या इसको ज़िल्लत उठाके ज़िन्दा रहने दे या (ज़िन्दा ही) इसको ज़मीन में गाड़ दे-देखो तुम लोग किस क़दर बुरा एहकाम (हुक्म) लगाते हैं (59)

बुरी (बुरी) बातें तो उन्हीं लोगों के लिए ज़्यादा मुनासिब हैं जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और अल्लाह की शान के लायक़ तो आला सिफते (बहुत बड़ी अच्छाइया) हैं और वही तो ग़ालिब है (60)

और अगर (कहीं) अल्लाह अपने बन्दों की नाफरमानियों की गिरफ़्त करता तो रुए ज़मीन पर किसी एक जानदार को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़र्रर वक्त तक उन सबको मोहलत देता है फिर जब उनका (वह) वक्त आ पहुँचेगा तो न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं (61)

और ये लोग खुद जिन बातों को पसन्द नहीं करते उनको अल्लाह के वास्ते क़रार देते हैं और अपनी ही ज़बान से ये झूठे दावे भी करते हैं कि (आख़िरत में भी) उन्हीं के लिए भलाई है (भलाई तो नहीं मगर) हाँ उनके लिए जहन्नुम की आग ज़रुरी है और यही लोग सबसे पहले (उसमें) झोंके जाएँगें (62)

(ऐ रसूल) अल्लाह की (अपनी) कसम तुमसे पहले उम्मतों के पास बहुतेरे पैग़म्बर भेजे तो शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया तो वही (शैतान) आज भी उन लोगों का सरपरस्त बना हुआ है हालॉकि उनके वास्ते दर्दनाक अज़ाब है (63)

और हमने तुम पर किताब (क़ुरान) तो इसी लिए नाज़िल की ताकि जिन बातों में ये लोग बाहम झगड़ा किए हैं उनको तुम साफ साफ बयान करो (और यह किताब) इमानदारों के लिए तो (अज़सरतापा) हिदायत और रहमत है (64)

और अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया तो उसके ज़रिए ज़मीन को मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा

(शादाब) (हरी भरी) किया क्या कुछ शक नहीं कि इसमें जो लोग बसते हैं उनके वास्ते (क़ुदरते अल्लाह की) बहुत बड़ी निशानी है (65)

और इसमें शक नहीं कि चौपायों में भी तुम्हारे लिए (इबरत की बात) है कि उनके पेट में ख़ाक, बला, गोबर और ख़ून (जो कुछ भरा है) उसमें से हमे तुमको ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए खुशगवार है (66)

और इसी तरह खुरमें और अंगूर के फल से (हम तुमको शीरा पिलाते हैं) जिसकी (कभी तो) तुम शराब बना लिया करते हो और कभी अच्छी रोज़ी (सिरका वग़ैरह) इसमें शक नहीं कि इसमें भी समझदार लोगों के लिए (क़ुदरत अल्लाह की) बड़ी निशानी है (67)

और (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों के दिल में ये बात डाली कि तू पहाड़ों और दरख़्तों और ऊँची ऊँची ट्ट्टियाँ (और मकानात पाट कर) बनाते हैं (68)

उनमें अपने छत्ते बना फिर हर तरह के फलों (के पूर से) (उनका अर्क़) चूस कर फिर अपने परवरदिगार की राहों में ताबेदारी के साथ चली मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) जिसके मुख़्तलिफ रंग होते हैं इसमें लोगों (के बीमारियों) की शिफ़ा (भी) है इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के वास्ते (क़ुदरते अल्लाह की बहुत बड़ी निशानी है) (69)

और अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया फिर वही तुमको (दुनिया से) उठा लेगा और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो ज़लील ज़िन्दगी (सख़्त बुढ़ापे) की तरफ लौटाए जाते हैं (बहुत कुछ) जानने के बाद (ऐसे सड़ीले हो गए कि) कुछ नहीं जान सके बेशक अल्लाह (सब कुछ) जानता और (हर तरह की) कुदरत रखता है (70)

और अल्लाह ही ने तुममें से बाज़ को बाज़ पर रिज़क (दौलत में) तरजीह दी है फिर जिन लोगों को रोज़ी ज़्यादा दी गई है वह लोग अपनी रोज़ी में से उन लोगों को जिन पर उनका दस्तरस (इख़्तेयार) है (लौन्डी ग़ुलाम वग़ैरह) देने वाला नहीं (हालॉकि इस माल में तो सब के सब मालिक गुलाम वग़ैरह) बराबर हैं तो क्या ये लोग अल्लाह की नेअमत के मुन्किर हैं (71)

और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए बीबियाँ तुम ही में से बनाई और उसी ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें पाक व पाकीज़ा रोज़ी खाने को दी तो क्या ये लोग बिल्कुल बातिल (सुल्तान बुत वग़ैरह) पर इमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमत (वहदानियत वग़ैरह से) इन्कार करते हैं (72)

और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में से उनको रिज़क़ देने का कुछ भी न एख़्तियार रखते हैं और न कुदरत हासिल कर सकते हैं (73)

तो तुम (दुनिया के लोगों पर कयास करके ख़ुद) मिसालें न गढ़ो बेशक अल्लाह (सब कुछ) जानता है और तुम नहीं जानते (74)
एक मसल अल्लाह ने बयान फरमाई कि एक ग़ुलाम है जो दूसरे के कब्ज़े में है (और) कुछ भी एख़्तियार नहीं रखता और एक शख़्स वह है कि हमने उसे अपनी बारगाह से अच्छी (खासी) रोज़ी दे रखी है तो वह उसमें से छिपा के दिखा के (ग़रज़ हर तरह अल्लाह की राह में) ख़र्च करता है क्या ये दोनो बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह (कि वह भी उसके मुक़र्रर हैं) मगर उनके बहुतेरे (इतना भी) नहीं जानते (75)

और अल्लाह एक दूसरी मसल बयान फरमाता है दो आदमी हैं कि एक उनमें से बिल्कुल गूँगा उस पर गुलाम जो कुछ भी (बात वग़ैरह की) कुदरत नहीं रखता और (इस वजह से) वह अपने मालिक को दूभर हो रहा है कि उसको जिधर भेजता है (ख़ैर से) कभी भलाई नहीं लाता क्या ऐसा ग़ुलाम और वह शख़्स जो (लोगों को) अदल व मियाना रवी का हुक्म करता है वह खुद भी ठीक सीधी राह पर क़ायम है (दोनों बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं) (76)

और सारे आसमान व ज़मीन की गैब की बातें अल्लाह ही के लिए मख़सूस हैं और अल्लाह क़यामत का वाकेए होना तो ऐसा है जैसे पलक का झपकना बल्कि इससे भी जल्दी बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत कामेला रखता है (77)

और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला (जब) तुम बिल्कुल नासमझ थे और तुम को कान दिए और आँखें (अता की) दिल (इनायत किए) ताकि तुम शुक्र करो (78)

क्या उन लोगों ने परिन्दों की तरफ ग़ौर नहीं किया जो आसमान के नीचे हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते हैं) उनको तो बस अल्लाह ही (गिरने से) रोकता है बेशक इसमें भी (कुदरते अल्लाह की) इमानदारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (79)

और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को तुम्हारा ठिकाना क़रार दिया और उसी ने तुम्हारे वास्ते चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए (हलके फुलके) डेरे (ख़ेमे) बना जिन्हें तुम हलका पाकर अपने सफर और हजर (ठहरने) में काम लाते हो और इन चारपायों की ऊन और रुई और बालो से एक वक़्त ख़ास (क़यामत तक) के लिए तुम्हारे बहुत से असबाब और अबकार आमद (काम की) चीज़े बनाई (80)

और अल्लाह ही ने तुम्हारे आराम के लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और उसी ने

तुम्हारे (छिपने बैठने) के वास्ते पहाड़ों में घरौन्दे (ग़ार वग़ैरह) बनाए और उसी ने तुम्हारे लिए कपडे़ बनाए जो तुम्हें (सर्दी) गर्मी से महफूज़ रखें और (लोहे) के कुर्ते जो तुम्हें हाथियों की ज़द (मार) से बचा लें यूँ अल्लाह अपनी नेअमत तुम पर पूरी करता है (81)

तुम उसकी फरमाबरदारी करो उस पर भी अगर ये लोग (इमान से) मुँह फेरे तो तुम्हारा फर्ज़ सिर्फ (एहकाम का) साफ पहुँचा देना है (82)
(बस) ये लोग अल्लाह की नेअमतों को पहचानते हैं फिर (जानबुझ कर) उनसे मुकर जाते हैं और इन्हीं में से बहुतेरे नाशुक्रे हैं (83)

और जिस दिन हम एक उम्मत में से (उसके पैग़म्बरों को) गवाह बनाकर क़ब्रों से उठा खड़ा करेगे फिर तो काफिरों को न (बात करने की) इजाज़त दी जाएगी और न उनका उज्र (जवाब) ही सुना जाएगा (84)

और जिन लोगों ने (दुनिया में) शरारतें की थी जब वह अज़ाब को देख लेगें तो उनके अज़ाब ही में तख़फ़ीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत ही दी जाएगी (85)

और जिन लोगों ने दुनिया में अल्लाह का शरीक (दूसरे को) ठहराया था जब अपने (उन) शरीकों को (क़यामत में) देखेंगे तो बोल उठेगें कि ऐ हमारे परवरदिगार यही तो हमारे शरीक हैं जिन्हें हम (मुसीबत) के वक्त तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे तो वह शरीक उन्हीं की तरफ बात को फेंक मारेगें कि तुम निरे झूठे हो (86)

और उस दिन अल्लाह के सामने सर झुका देंगे और जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ दुनिया में किया करते थे उनसे गायब हो जाएँगें (87)

जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया और लोगों को अल्लाह की राह से रोका उनके फ़साद वाले कामों के बदले में उनके लिए हम अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जाएँगें (88)

और वह दिन याद करो जिस दिन हम हर एक गिरोह में से उन्हीं में का एक गवाह उनके मुक़ाबिल ला खड़ा करेगें और (ऐ रसूल) तुम को उन लोगों पर (उनके) सामने गवाह बनाकर ला खड़ा करेंगें और हमने तुम पर किताब (क़ुरान) नाज़िल की जिसमें हर चीज़ का (शाफी) बयान है और मुसलमानों के लिए (सरमापा) हिदायत और रहमत और खुशख़बरी है (89)

इसमें शक नहीं कि अल्लाह इन्साफ और (लोगों के साथ) नेकी करने और क़राबतदारों को (कुछ) देने का हुक्म करता है और बदकारी और नाशाएस्ता हरकतों और सरकशी करने को मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो (90)

और जब तुम लोग बाहम क़ौल व क़रार कर लिया करो तो अल्लाह के एहदो पैमान को पूरा करो और क़समों को उनके पक्का हो जाने के बाद न तोड़ा करो हालॉकि तुम तो अल्लाह को अपना ज़ामिन बना चुके हो जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे ज़रुर जानता है (91)

और तुम लोग (क़समों के तोड़ने में) उस औरत के ऐसे न हो जो अपना सूत मज़बूत कातने के बाद टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाले कि अपने एहदो को आपस में उस बात की मक्कारी का ज़रिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से (ख़्वामख़्वाह) बढ़ जाए इससे बस अल्लाह तुमको आज़माता है (कि तुम किसी की पालाइश करते हो) और जिन बातों में तुम दुनिया में झगड़ते थे क़यामत के दिन अल्लाह खुद तुम से साफ साफ बयान कर देगा (92)

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही (किस्म के) गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसकी चाहता है हिदायत करता है और जो कुछ तुम लोग दुनिया में किया करते थे उसकी बाज़ पुर्स (पुछ गछ) तुमसे ज़रुर की जाएगी (93)

और तुम अपनी क़समों को आपस में के फसाद का सबब न बनाओ ताकि (लोगों के) क़दम जमने के बाद (इस्लाम से) उखड़ जाएँ और फिर आख़िरकार क़यामत में तुम्हें लोगों को अल्लाह की राह से रोकने की पादाश (रोकने के बदले) में अज़ाब का मज़ा चखना पड़े और तुम्हारे वास्ते बड़ा सख़्त अज़ाब हो (94)

और अल्लाह के एहदो पैमान के बदले थोड़ी क़ीमत (दुनयावी नफा) न तो अगर तुम जानते (बूझते) हो तो (समझ लो कि) जो कुछ अल्लाह के पास है वह उससे कहीं बेहतर है (95)

(क्योंकि माल दुनिया से) जो कुछ तुम्हारे पास है एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगा और (अज्र) अल्लाह के पास है वह हमेशा बाक़ी रहेगा (96)

और जिन लोगों ने दुनिया में सब्र किया था उनको (क़यामत में) उनके कामों का हम अच्छे से अच्छा अज्र व सवाब अता करेंगें (96)

मर्द हो या औरत जो शख़्स नेक काम करेगा और वह इमानदार भी हो तो हम उसे (दुनिया में भी) पाक व पाकीज़ा जिन्दगी बसर कराएँगें और (आख़िरत में भी) जो कुछ वह करते थे उसका अच्छे से अच्छा अज्र व सवाब अता फरमाएँगें (97)

और जब तुम क़ुरान पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद (के वसवसो) से अल्लाह की पनाह तलब कर लिया करो (98)

इसमें शक नहीं कि जो लोग इमानदार हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं उन पर उसका क़ाबू नहीं चलता (99)

उसका क़ाबू चलता है तो बस उन्हीं लोगों पर जो उसको दोस्त बनाते हैं और जो लोग उसको अल्लाह का शरीक बनाते हैं (100)
और (ऐ रसूल) हम जब एक आयत के बदले दूसरी आयत नाज़िल करते हैं तो हालाँकि अल्लाह जो चीज़ नाज़िल करता है उस (की मसलहतों) से खूब वाक़िफ़ है मगर ये लोग (तुम को) कहने लगते हैं कि तुम बस बिल्कुल मुज़तरी (ग़लत बयान करने वाले) हो बल्कि खुद उनमें के बहुतेरे (मसालेह को) नहीं जानते (101)

(ऐ रसूल) तुम (साफ) कह दो कि इस (क़ुरान) को तो रुहलक़ुदूस (जिबरील) ने तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ नाज़िल किया है ताकि जो लोग इमान ला चुके हैं उनको साबित क़दम रखे और मुसलमानों के लिए (अज़सरतापा) खुशखबरी है (102)

और (ऐ रसूल) हम तहक़ीक़तन जानते हैं कि ये कुफ्फार तुम्हारी निस्बत कहा करते है कि उनको (तुम को) कोई आदमी क़ुरान सिखा दिया करता है हालॉकि बिल्कुल ग़लत है क्योंकि जिस शख़्स की तरफ से ये लोग निस्बत देते हैं उसकी ज़बान तो अजमी है और ये तो साफ साफ अरबी ज़बान है (103)

इसमें तो शक ही नहीं कि जो लोग अल्लाह की आयतों पर इमान नहीं लाते अल्लाह भी उनको मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (104)

झूठ बोहतान तो बस वही लोग बॉधा करते हैं जो अल्लाह की आयतों पर इमान नहीं रखतें (105)

और हक़ीक़त अम्र ये है कि यही लोग झूठे हैं उस शख़्स के सिवा जो (कलमाए कुफ्र) पर मजबूर किया जाए और उसका दिल इमान की तरफ से मुतमइन हो जो शख़्स भी इमान लाने के बाद कुफ्र एख़्तियार करे बल्कि खूब सीना कुशादा (जी खोलकर) कुफ्र करे तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अज़ाब है (106)

ये इस वजह से कि उन लोगों ने दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह दी और इस वजह से की अल्लाह काफिरों को हरगिज़ मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (107)

ये वही लोग हैं जिनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर ख़ुदा ने अलामात मुक़र्रर कर दी है (108)

(कि इमान न लाएँगे) और यही लोग (इस सिरे के) बेखबर हैं कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में भी यक़ीनन घाटा उठाने वाले हैं (109)

फिर इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को जिन्होने मुसीबत में मुब्तिला होने क बाद घर बार छोड़े फिर (अल्लाह की राह में) जिहाद किए और तकलीफों पर सब्र किया इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इन सब बातों के बाद अलबत्ता बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है (110)

और (उस दिन को याद) करो जिस दिन हर शख़्स अपनी ज़ात के बारे में झगड़ने को आ मौजूद होगा (111)

और हर शख़्स को जो कुछ भी उसने किया था उसका पूरा पूरा बदला मिलेगा और उन पर किसी तरह का ज़ुल्म न किया जाएगा अल्लाह ने एक गाँव की मसल बयान फरमाई जिसके रहने वाले हर तरह के चैन व इत्मेनान में थे हर तरफ से बाफराग़त (बहुत ज़्यादा) उनकी रोज़ी उनके पास आई थी फिर उन लोगों ने अल्लाह की नूअमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उनकी करतूतों की बदौलत उनको मज़ा चखा दिया (112)

कि भूक और ख़ौफ को ओढ़ना (बिछौना) बना दिया और उन्हीं लोगों में का एक रसूल भी उनके पास आया तो उन्होंने उसे झुठलाया (113)

फिर अज़ाब (अल्लाह) ने उन्हें ले डाला और वह ज़ालिम थे ही तो अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें हलाल तय्यब (ताहिर) रोज़ी दी है उसको (शौक़ से) खाओ और अगर तुम अल्लाह ही की परसतिश (का दावा करते हो) (114)

उसकी नेअमत का शुक्र अदा किया करो तुम पर उसने मुरदार और खून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर (ज़बाह के वक्त) अल्लाह के सिवा (किसी) और का नाम लिया जाए हराम किया है फिर जो शख़्स (मारे भूक के) मजबूर हो अल्लाह से सरतापी (नाफरमानी) करने वाला हो और न (हद ज़रुरत से) बढ़ने वाला हो और (हराम खाए) तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है (115)

और झूट मूट जो कुछ तुम्हारी ज़बान पर आए (बे समझे बूझे) न कह बैठा करों कि ये हलाल है और हराम है ताकि इसकी बदौलत अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधने लगो इसमें शक नहीं कि जो लोग अल्लाह पर झूठ बोहतान बाधते हैं वह कभी कामयाब न होगें (116)

(दुनिया में) फायदा तो ज़रा सा है और (आख़िरत में) दर्दनाक अज़ाब है (117)

और यहूदियों पर हमने वह चीज़े हराम कर दीं थी जो तुमसे पहले बयान कर चुके हैं और हमने तो (इस की वजह से) उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया (118)

मगर वह लोग खुद अपने ऊपर सितम तोड़ रहे हैं फिर इसमे शक नहीं कि जो लोग नादानी से गुनाह कर बैठे उसके बाद सदक़ दिल से तौबा कर ली और अपने को दुरुस्त कर लिया तो (ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इसके बाद बख़्शने वाला मेहरबान है (119)

इसमें शक नहीं कि इबराहीम (लोगों के) पेशवा अल्लाह के फरमाबरदार बन्दे और बातिल से कतरा कर चलने वाले थे और मुशरेकीन से हरगिज़ न थे (120)

उसकी नेअमतों के शुक्र गुज़ार उनको अल्लाह ने मुनतख़िब कर लिया है और (अपनी) सीधी राह की उन्हें हिदायत की थी (121)

और हमने उन्हें दुनिया में भी (हर तरह की) बेहतरी अता की थी (122)

और वह आख़िरत में भी यक़ीनन नेको कारों से होगें ऐ रसूल फिर तुम्हारे पास वही भेजी कि इबराहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुश्रकीन से नहीं थे (123)

(ऐ रसूल) हफ्ते (के दिन) की ताज़ीम तो बस उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी (यहूद व नसारा इसके बारे में) एख़्तिलाफ करते थे और कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनके दरम्यिान जिस अम्र में वह झगड़ा करते थे क़यामत के दिन फैसला कर देगा (124)

(ऐ रसूल) तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की राह पर हिकमत और अच्छी अच्छी नसीहत के ज़रिए से बुलाओ और बहस व मुबाशा करो भी तो इस तरीक़े से जो लोगों के नज़दीक सबसे अच्छा हो इसमें शक नहीं कि जो लोग अल्लाह की राह से भटक गए उनको तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है (125)

और हिदायत याफ़ता लोगों से भी खूब वाक़िफ है और अगर (मुख़ालिफीन के साथ) सख़्ती करो भी तो वैसी ही सख़्ती करो जैसे सख़्ती उन लोगों ने तुम पर की थी और अगर तुम सब्र करो तो सब्र करने वालों के वास्ते बेहतर हैं (126)

और (ऐ रसूल) तुम सब्र ही करो (और अल्लाह की (मदद) बग़ैर तो तुम सब्र कर भी नहीं सकते

और उन मुख़ालिफीन के हाल पर तुम रंज न करो और जो मक्कारीयाँ ये लोग करते हैं उससे तुम तंग दिल न हो (127)

जो लोग परहेज़गार हैं और जो लोग नेको कार हैं अल्लाह उनका साथी है (128)

17 सूरह बनी इसराईल

बनी इसराईल सूरा मक्का में नाज़िल हुआ और इसकी एक सौ ग्यारह (111) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

वह अल्लाह (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है जिसने अपने बन्दों को रातों रात मस्जिदुल हराम (ख़ान ऐ काबा) से मस्जिदुल अक़सा (आसमानी मस्जिद) तक की सैर कराई जिसके चौगिर्द हमने हर किस्म की बरकत मुहय्या कर रखी हैं ताकि हम उसको (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखाए इसमें शक नहीं कि (वह सब कुछ) सुनता (और) देखता है (1)

और हमने मूसा को किताब (तौरैत) अता की और उस को बनी इसराईल की रहनुमा क़रार दिया (और हुक्म दे दिया) कि ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हम ने नूह के साथ कश्ती में सवार किया था (2)

मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना बेशक नूह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था (3)

और हमने बनी इसराईल से इसी किताब (तौरैत) में साफ साफ बयान कर दिया था कि तुम लोग रुए ज़मीन पर दो मरतबा ज़रुर फसाद फैलाओगे और बड़ी सरकशी करोगे (4)

फिर जब उन दो फसादों में पहले का वक्त आ पहुँचा तो हमने तुम पर कुछ अपने बन्दों (नजतुलनस्र) और उसकी फौज को मुसल्लत {ग़ालिब} कर दिया जो बड़े सख़्त लड़ने वाले थे तो वह लोग तुम्हारे घरों के अन्दर घुसे (और खूब क़त्ल व ग़ारत किया) और अल्लाह के अज़ाब का वायदा जो पूरा होकर रहा (5)

फिर हमने तुमको दोबारा उन पर ग़लबा देकर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया (6)

अगर तुम अच्छे काम करोगे तो अपने फायदे के लिए अच्छे काम करोगे और अगर तुम बुरे काम करोगे तो (भी) अपने ही लिए फिर जब दूसरे वक्त का वायदा आ पहुँचा तो (हमने तैतूस रोगी को तुम पर मुसल्लत किया) ताकि वह लोग (मारते मारते) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें (कि पहचाने न जाओ) और जिस तरह पहली दफा मस्जिद बैतुल मुक़द्दस में घुस गये थे उसी तरह फिर घुस पड़ें और जिस चीज़ पर क़ाबू पाए खूब अच्छी तरह बरबाद कर दी (7)

(अब भी अगर तुम चैन से रहो तो) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर तरस खाए और अगर (कहीं) वही शरारत करोगे तो हम भी फिर पकड़ेंगे और हमने तो काफिरों के लिए जहन्नुम को क़ैद खाना बना ही रखा है (8)

इसमें शक नहीं कि ये क़ुरान उस राह की हिदायत करता है जो सबसे ज़्यादा सीधी है और जो इमानदार अच्छे अच्छे काम करते हैं उनको ये खुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा अज्र और सवाब (मौजूद) है (9)

और ये भी कि बेशक जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते हैं उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (10)

और आदमी कभी (आजिज़ होकर अपने हक़ में) बुराई (अज़ाब वग़ैरह की दुआ) इस तरह माँगता है जिस तरह अपने लिए भलाई की दुआ करता है और आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ है (11)

और हमने रात और दिन को (अपनी क़ुदरत की) दो निशानियाँ क़रार दिया फिर हमने रात की निशानी (चाँद) को धुँधला बनाया और दिन की निशानी (सूरज) को रौशन बनाया (कि सब चीज़े दिखाई दें) ताकि तुम लोग अपने परवरदिगार का फज़्ल ढूँढते फिरों और ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब को जानो (बूझों) और हमने हर चीज़ को खूब अच्छी तरह तफसील से बयान कर दिया है (12)

और हमने हर आदमी के नामए अमल को उसके गले का हार बना दिया है (कि उसकी किस्मत उसके साथ रहे) और क़यामत के दिन हम उसे उसके सामने निकल के रख देगें कि वह उसको एक खुली हुयी किताब अपने रुबरु पाएगा (13)

और हम उससे कहेंगें कि अपना नामए अमल पढ़ले और आज अपने हिसाब के लिए तू आप ही काफी हैं (14)

जो शख़्स रुबरु होता है तो बस अपने फायदे के लिए शह पर आता है और जो शख़्स गुमराह होता है तो उसने भटक कर अपना आप बिगाड़ा और कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ अपने सर नहीं लेगा और हम तो जब तक रसूल को भेजकर तमाम हुज्जत न कर लें किसी पर अज़ाब नहीं किया करते (15)

और हमको जब किसी बस्ती का वीरान करना मंज़ूर होता है तो हम वहाँ के खुशहालों को (इताअत

का) हुक्म देते हैं तो वह लोग उसमें नाफरमानियाँ करने लगे तब वह बस्ती अज़ाब की मुस्तहक़ होगी उस वक्त हमने उसे अच्छी तरह तबाह व बरबाद कर दिया (16)

और नूह के बाद से (उस वक्त तक) हमने कितनी उम्मतों को हलाक कर मारा और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने के लिए काफी है (17)

(और गवाह शाहिद की ज़रुरत नहीं) और जो शख़्स दुनिया का ख़्वाहाँ हो तो हम जिसे चाहते और जो चाहते हैं उसी दुनिया में सिरदस्त {फ़ौरन} उसे अता करते हैं (मगर) फिर हमने उसके लिए तो जहन्नुम ठहरा ही रखा है कि वह उसमें बुरी हालत से रौंदा हुआ दाख़िल होगा (18)

और जो शख़्स आख़िर का मुतमइनी हो और उसके लिए खूब जैसी चाहिए कोशिश भी की और वह इमानदार भी है तो यही वह लोग हैं जिनकी कोशिश मक़बूल होगी (19)

(ऐ रसूल) उनको (ग़रज़ सबको) हम ही तुम्हारे परवरदिगार की (अपनी) बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश तो (आम है) किसी पर बन्द नहीं (20)

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो कि हमने बाज़ लोगों को बाज़ पर कैसी फज़ीलत दी है और आख़िरत के दर्जे तो यक़ीनन (यहाँ से) कहीं बढ़के है और वहाँ की फज़ीलत भी तो कैसी बढ़ कर है (21)

और देखो कहीं अल्लाह के साथ दूसरे को (उसका) शरीक न बनाना वरना तुम बुरे हाल में ज़लील रुसवा बैठै के बैठें रह जाओगे (22)

और तुम्हारे परवरदिगार ने तो हुक्म ही दिया है कि उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत न करना और माँ बाप से नेकी करना अगर उनमें से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँचे (और किसी बात पर खफा हों) तो (ख़बरदार उनके जवाब में उफ तक) न कहना और न उनको झिड़कना और जो कुछ कहना सुनना हो तो बहुत अदब से कहा करो (23)

और उनके सामने नियाज़ {रहमत} से ख़ाकसारी का पहलू झुकाए रखो और उनके हक़ में दुआ करो कि मेरे पालने वाले जिस तरह इन दोनों ने मेरे छोटेपन में मेरी मेरी परवरिश की है (24)

इसी तरह तू भी इन पर रहम फरमा तुम्हारे दिल की बात तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है अगर तुम (वाक़ई) नेक होगे और भूले से उनकी ख़ता की है तो वह तुमको बख़्शा देगा क्योंकि वह तो तौबा करने वालों का बड़ा बख़्शने वाला है (25)

और क़राबतदारों और मोहताज और परदेसी को उनका हक़ दे दो और ख़बरदार फ़ुज़ूल ख़र्ची मत किया करो (26)
क्योंकि फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले यक़ीनन शैतानों के भाई है और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुक्री करने वाला है (27)

और तुमको अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल व करम के इन्तज़ार में जिसकी तुम को उम्मीद हो (मजबूरन) उन (ग़रीबों) से मुँह मोड़ना पड़े तो नरमी से उनको समझा दो (28)

और अपने हाथ को न तो गर्दन से बँधा हुआ (बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल दो कि सब कुछ दे डालो और आख़िर तुम को मलामत ज़दा हसरत से बैठना पड़े (29)

इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फराख़ {बढ़ा} देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग रखता है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों से बहुत बाख़बर और देखभाल रखने वाला है (30)

और (लोगों) मुफलिसी {ग़रीबी} के ख़ौफ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो (क्योंकि) उनको और तुम को (सबको) तो हम ही रोज़ी देते हैं बेशक औलाद का क़त्ल करना बहुत सख़्त गुनाह है (31)
और (देखो) ज़िना के पास भी न फटकना क्योंकि बेशक वह बड़ी बेहयाई का काम है और बहुत बुरा चलन है (32)

और जिस जान का मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है उसके क़त्ल न करना मगर जायज़ तौर पर और जो शख़्स नाहक़ मारा जाए तो हमने उसके वारिस को (क़ातिल पर क़सास का क़ाबू दिया है तो उसे चाहिए कि क़त्ल {ख़ून का बदला लेने) में ज़्यादती न करे बेशक वह मदद दिया जाएगा (33)

(कि क़त्ल ही करे और माफ न करे) और यतीम जब तक जवानी को पहुँचे उसके माल के क़रीब भी न पहुँच जाना मगर हाँ इस तरह पर कि (यतीम के हक़ में) बेहतर हो और एहद को पूरा करो क्योंकि (क़यामत में) एहद की ज़रुर पूछ गछ होगी (34)

और जब नाप तौल कर देना हो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और (जब तौल कर देना हो तो) बिल्कुल ठीक तराज़ू से तौला करो (मामले में) यही (तरीक़ा) बेहतर है और अन्जाम (भी उसका) अच्छा है (35)

और जिस चीज़ का कि तुम्हें यक़ीन न हो (ख़्वाह मा ख़्वाह) उसके पीछे न पड़ा करो (क्योंकि) कान और आँख और दिल इन सबकी (क़यामत के दिना यक़ीनन बाज़पुर्स होती है (36)

और (देखो) ज़मीन पर अकड़ कर न चला करो क्योंकि तू (अपने इस धमाके की चाल से) न तो ज़मीन को हरगिज़ फाड़ डालेगा और न (तनकर चलने से) हरगिज़ लम्बाई में पहाड़ों के बराबर पहुँच सकेगा (37)

(ऐ रसूल) इन सब बातों में से जो बुरी बात है वह तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक नापसन्द है (38)

ये बात तो हिकमत की उन बातों में से जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे पास 'वही' भेजी और अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाना और न तू मलामत ज़दा राइन्द {धुत्कारा} होकर जहन्नुम में झोंक दिया जाएगा (39)

(ऐ मुशरेकीन मक्का) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें चुन चुन कर बेटे दिए हैं और खुद बेटियाँ ली हैं (यानि) फरिश्ते इसमें शक नहीं कि बड़ी (सख़्त) बात कहते हो (40)

और हमने तो इसी क़ुरान में तरह तरह से बयान कर दिया ताकि लोग किसी तरह समझें मगर उससे तो उनकी नफरत ही बढ़ती गई (41)

(ऐ रसूल उनसे) तुम कह दो कि अगर अल्लाह के साथ जैसा ये लोग कहते हैं और माबूद भी होते तो अब तक उन माबूदों ने अर्श तक (पहुँचाने की कोई न कोई राह निकाल ली होती (42)

जो बेहूदा बातें ये लोग (अल्लाह की निस्बत) कहा करते हैं वह उनसे बहुत बढ़के पाक व पाकीज़ा और बरतर है (43)

सातों आसमान और ज़मीन और जो लोग इनमें (सब) उसकी तस्बीह करते हैं और (सारे जहाँन) में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी (हम्द व सना) की तस्बीह न करती हो मगर तुम लोग उनकी तस्बीह नहीं समझते इसमें शक नहीं कि वह बड़ा बुर्दबार बख़्शने वाला है (44)

और जब तुम क़ुरान पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दरम्यान जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते एक गहरा पर्दा डाल देते हैं (45)

और (गोया) हम उनके कानों में गरानी पैदा कर देते हैं कि न सुन सकें जब तुम क़ुरान में अपने

परवरदिगार का तन्हा ज़िक्र करते हो तो कुफ्फार उलटे पावँ नफरत करके (तुम्हारे पास से) भाग खड़े होते हैं (46)

जब ये लोग तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो जो कुछ ये ग़ौर से सुनते हैं हम तो खूब जानते हैं और जब ये लोग बाहम कान में बात करते हैं तो उस वक्त ये ज़ालिम (इमानदारों से) कहते हैं कि तुम तो बस एक (दीवाने) आदमी के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है (47)

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो ये कम्बख़्त तुम्हारी निस्बत कैसी कैसी फब्तियाँ कहते हैं तो (इसी वजह से) ऐसे गुमराह हुए कि अब (हक़ की) राह किसी तरह पा ही नहीं सकते (48)

और ये लोग कहते हैं कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल कर) हड्डियाँ रह जाएँगें और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगें तो क्या नये सिरे से पैदा करके उठा खड़े किए जाएँगें (49)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम (मरने के बाद) चाहे पत्थर बन जाओ या लोहा या कोई और चीज़ जो तुम्हारे ख़्याल में बड़ी (सख़्त) हो (50)

और उसका ज़िन्दा होना दुश्वार हो वह भी ज़रुर ज़िन्दा हो गई तो ये लोग अनक़रीब ही तुम से पूछेगें भला हमें दोबारा कौन ज़िन्दा करेगा तुम कह दो कि वही (अल्लाह) जिसने तुमको पहली मरतबा पैदा किया (जब तुम कुछ न थे) इस पर ये लोग तुम्हारे सामने अपने सर मटकाएँगें और कहेगें (अच्छा अगर होगा) तो आख़िर कब तुम कह दो कि बहुत जल्द अनक़रीब ही होगा (51)

जिस दिन अल्लाह तुम्हें (इसराफील के ज़रिए से) बुलाएगा तो उसकी हम्दो सना करते हुए उसकी तामील करोगे (और क़ब्रों से निकलोगे) और तुम ख़्याल करोगे कि (मरने के बाद क़ब्रों में) बहुत ही कम ठहरे (52)

और (ऐ रसूल) मेरे (सच्चे) बन्दों (मोमिनों से कह दो कि वह (काफिरों से) बात करें तो अच्छे तरीके़ से (सख़्त कलामी न करें) क्योंकि शैतान तो (ऐसी ही) बातों से फसाद डलवाता है इसमें तो शक ही नहीं कि शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है (53)

तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे हाल से खूब वाक़िफ है अगर चाहेगा तुम पर रहम करेगा और अगर चाहेगा तुम पर अज़ाब करेगा और (ऐ रसूल) हमने तुमको कुछ उन लोगों का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा है (54)

और जो लोग आसमानों में है और ज़मीन पर हैं (सब को) तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है और

हम ने यक़ीनन बाज़ पैग़म्बरों को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ही ने दाऊद को ज़ूबूर अता की (55)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दों कि अल्लाह के सिवा और जिन लोगों को माबूद समझते हो उनको (वक्त पड़े) पुकार के तो देखो कि वह न तो तुम से तुम्हारी तकलीफ ही दफा कर सकते हैं और न उसको बदल सकते हैं (56)

ये लोग जिनको मुशरेकीन (अपना अल्लाह समझकर) इबादत करते हैं वह खुद अपने परवरदिगार की क़ुरबत के ज़रिए ढूँढते फिरते हैं कि (देखो) इनमें से कौन ज़्यादा कुरबत रखता है और उसकी रहमत की उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते हैं इसमें शक नहीं कि तेरे परवरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है (57)

और कोई बस्ती नहीं है मगर रोज़ क़यामत से पहले हम उसे तबाह व बरबाद कर छोड़ेगें या (नाफरमानी) की सज़ा में उस पर सख़्त से सख़्त अज़ाब करेगें (और) ये बात किताब (लौहे महफूज़) में लिखी जा चुकी है (58)

और हमें मौजिज़ात भेजने से किसी चीज़ ने नहीं रोका मगर इसके सिवा कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया और हमने क़ौमे समूद को (मौजिज़े से) ऊँटनी अता की जो (हमारी कुदरत की) दिखाने वाली थी तो उन लोगों ने उस पर ज़ुल्म किया यहाँ तक कि मार डाला और हम तो मौजिज़े सिर्फ डराने की ग़रज़ से भेजा करते हैं (59)

और (ऐ रसूल) वह वक्त याद करो जब तुमसे हमने कह दिया था कि तुम्हारे परवरदिगार ने लोगों को (हर तरफ से) रोक रखा है कि (तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और हमने जो ख़्वाब तुमाको दिखलाया था तो बस उसे लोगों (के इमान) की आज़माइश का ज़रिया ठहराया था और (इसी तरह) वह दरख़्त जिस पर क़ुरान में लानत की गई है और हम बावजूद कि उन लोगों को (तरह तरह) से डराते हैं मगर हमारा डराना उनकी सख़्त सरकशी को बढ़ाता ही गया (60)

और जब हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया मगर इबलीस वह (गुरुर से) कहने लगा कि क्या मै ऐसे शख़्स को सजदा करुँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है (61)

और (शेख़ी से) बोला भला देखो तो सही यही वह शख़्स है जिसको तूने मुझ पर फज़ीलत दी है अगर तू मुझ को क़यामत तक की मोहलत दे तो मैं (दावे से कहता हूँ कि) कम लोगों के सिवा इसकी नस्ल की जड़ काटता रहूँगा (62)

अल्लाह ने फरमाया चल (दूर हो) उनमें से जो शख़्स तेरी पैरवी करेगा तो (याद रहे कि) तुम सबकी सज़ा जहन्नुम है और वह भी पूरी पूरी सज़ा है (63)

और इसमें से जिस पर अपनी (चिकनी चुपड़ी) बात से क़ाबू पा सके वहाॅ और अपने (चेलों के लश्कर) सवार और पैदल (सब) से चढ़ाई कर और माल और औलाद में उनके साथ साझा करे और उनसे (खूब झूटे) वायदे कर और शैतान तो उनसे जो वायदे करता है धोखे (की टट्टी) के सिवा कुछ नहीं होता (64)

बेशक जो मेरे (ख़ास) बन्दें हैं उन पर तेरा ज़ोर नहीं चल (सकता) और कारसाज़ी में तेरा परवरदिगार काफी है (65)

लोगों) तुम्हारा परवरदिगार वह (क़ादिरे मुत्तलिक़) है जो तुम्हारे लिए समन्दर में जहाज़ों को चलाता है ताकि तुम उसके फज़्ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो इसमें शक नहीं कि वह तुम पर बड़ा मेहरबान है (66)

और जब समन्दर में कभी तुम को कोई तकलीफ पहुँचे तो जिनकी तुम इबादत किया करते थे ग़ायब हो गए मगर बस वही (एक अल्लाह याद रहता है) उस पर भी जब अल्लाह ने तुम को छुटकारा देकर खुशकी तक पहुँचा दिया तो फिर तुम इससे मुँह मोड़ बैठें और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है (67)

तो क्या तुम उसको इस का भी इतमिनान हो गया कि वह तुम्हें खुश्की की तरफ (ले जाकर) (क़ारुन की तरह) ज़मीन में धंसा दे या तुम पर (क़ौम) लूत की तरह पत्थरों का मेंह बरसा दे फिर (उस वक्त) तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओगे (68)

या तुमको इसका भी इत्मेनान हो गया कि फिर तुमको दोबारा इसी समन्दर में ले जाएगा उसके बाद हवा का एक ऐसा झोका जो (जहाज़ के) परख़चे उड़ा दे तुम पर भेजे फिर तुम्हें तुम्हारे कुफ्र की सज़ा में डुबा मारे फिर तुम किसी को (ऐसा हिमायती) न पाओगे जो हमारा पीछा करे और (तुम्हें छोड़ा जाए) (69)

और हमने यक़ीनन आदम की औलाद को इज़्ज़त दी और खुश्की और तरी में उनको (जानवरों कश्तियों के ज़रिए) लिए लिए फिरे और उन्हें अच्छी अच्छी चीजें खाने को दी और अपने बहुतेरे मख़लूक़ात पर उनको अच्छी ख़ासी फज़ीलत दी (70)

उस दिन (को याद करो) जब हम तमाम लोगों को उन पेशवाओं के साथ बुलाएँगें तो जिसका नामए

अमल उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह लोग (खुश खुश) अपना नामए अमल पढ़ने लगेगें और उन पर रेशा बराबर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (71)

और जो शख़्स इस (दुनिया) में (जान बूझकर) अंधा बना रहा तो वह आख़िरत में भी अंधा ही रहेगा और (नजात) के रास्ते से बहुत दूर भटका सा हुआ (72)
और (ऐ रसूल) हमने तो (क़ुरान) तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा अगर चे लोग तो तुम्हें इससे बहकाने ही लगे थे ताकि तुम क़ुरान के अलावा फिर (दूसरी बातों का) इफ़तेरा बाँधों और (जब तुम ये कर गुज़रते उस वक्त ये लोग तुम को अपना सच्चा दोस्त बना लेते (73)

और अगर हम तुमको साबित क़दम न रखते तो ज़रुर तुम भी ज़रा (ज़हूर) झुकने ही लगते (74)

और (अगर तुम ऐसा करते तो) उस वक्त हम तुमको ज़िन्दगी में भी और मरने पर भी दोहरे (अज़ाब) का मज़ा चखा देते और फिर तुम को हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार भी न मिलता (75)

और ये लोग तो तुम्हें (सर ज़मीन मक्के) से दिल बर्दाश्त करने ही लगे थे ताकि तुम को वहाँ से (शाम की तरफ) निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे में ये लोग चन्द रोज़ के सिवा ठहरने भी न पाते (76)

तुमसे पहले जितने रसूल हमने भेजे हैं उनका बराबर यही दस्तूर रहा है और जो दस्तूर हमारे (ठहराए हुए) हैं उनमें तुम तग़य्युर तबद्दुल {रद्दो बदल} न पाओगे (77)

(ऐ रसूल) सूरज के ढलने से रात के अँधेरे तक नमाज़े ज़ोहर, अस्र, मग़रिब, इशा पढ़ा करो और नमाज़ सुबह (भी) क्योंकि सुबह की नमाज़ पर (दिन और रात दोनों के फरिश्तों की) गवाही होती है (78)

और रात के ख़ास हिस्से में नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करो ये सुन्नत तुम्हारी खास फज़ीलत हैं क़रीब है कि क़यामत के दिन अल्लाह तुमको मक़ामे महमूद तक पहुँचा दे (79)

और ये दुआ माँगा करो कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझे (जहाँ) पहुँचा अच्छी तरह पहुँचा और मुझे (जहाँ से निकाल) तो अच्छी तरह निकाल और मुझे ख़ास अपनी बारगाह से एक हुकूमत अता फरमा जिस से (हर क़िस्म की) मदद पहुँचे (80)

और (ऐ रसूल) कह दो कि (दीन) हक़ आ गया और बातिल नेस्तनाबूद हुआ इसमें शक नहीं कि बातिल मिटने वाला ही था (81)

और हम तो क़ुरान में वही चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए (सरासर) शिफा और रहमत है (मगर) नाफरमानों को तो घाटे के सिवा कुछ बढ़ाता ही नहीं (82)

और जब हमने आदमी को नेअमत अता फरमाई तो (उल्टे) उसने (हमसे) मुँह फेरा और पहलू बचाने लगा और जब उसे कोई तकलीफ छू भी गई तो मायूस हो बैठा (83)
(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हर (एक अपने तरीके़ पर कारगुज़ारी करता है फिर तुम में से जो शख़्स बिल्कुल ठीक सीधी राह पर है तुम्हारा परवरदिगार (उससे) खूब वाकि़फ है (84)

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग रुह के बारे में सवाल करते हैं तुम (उनके जवाब में) कह दो कि रूह (भी) मेरे परदिगार के हुक्म से (पैदा हुई है) और तुमको बहुत थोड़ा सा इल्म दिया गया है (85)

(इसकी हक़ीकत नहीं समझ सकते) और (ऐ रसूल) अगर हम चाहे तो जो (क़ुरान) हमने तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए भेजा है (दुनिया से) उठा ले जाएँ फिर तुम अपने वास्ते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार न पाओगे (86)

मगर ये सिर्फ तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है (कि उसने ऐसा किया) इसमें शक नहीं कि उसका तुम पर बड़ा फज़्ल व करम है (87)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अगर सारे दुनिया जहाँन के) आदमी और जिन इस बात पर इकट्ठे हो कि उस क़ुरान का मिसल ले आएँ तो (ना मुमकिन) उसके बराबर नहीं ला सकते अगरचे (उसको कोशिश में) एक का एक मददगार भी बने (88)

और हमने तो लोगों (के समझाने) के वास्ते इस क़ुरान में हर कि़स्म की मसलें अदल बदल के बयान कर दीं उस पर भी अक्सर लोग बग़ैर नाशुक्री किए नहीं रहते (89)

(ऐ रसूल कुफ्फार मक्के ने) तुमसे कहा कि जब तक तुम हमारे वास्ते ज़मीन से चश्मा (न) बहा निकालोगे हम तो तुम पर हरगिज़ इमान न लाएँगें (90)

या (ये नहीं तो) खजूरों और अँगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो उसमें तुम बीच बीच में नहरे जारी करके दिखा दो (91)

या जैसा तुम गुमान रखते थे हम पर आसमान ही को टुकड़े (टुकड़े) करके गिराओ या अल्लाह और फरिश्तों को (अपने क़ौल की तस्दीक़) में हमारे सामने (गवाही में ला खड़ा कर दिया (92)

और जब तक तुम हम पर अल्लाह के यहाँ से एक किताब न नाज़िल करोगे कि हम उसे खुद पढ़ भी लें उस वक्त तक हम तुम्हारे (आसमान पर चढ़ने के भी) क़ायल न होगें (ऐ रसूल) तुम कह दो कि सुबहान अल्लाह मै एक आदमी (अल्लाह के) रसूल के सिवा आख़िर और क्या हूँ (93)

(जो ये बेहूदा बातें करते हो) और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो उनको इमान लाने से इसके सिवा किसी चीज़ ने न रोका कि वह कहने लगे कि क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है (94)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (बसे हुये) होते कि इत्मेनान से चलते फिरते तो हम उन लोगों के पास फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर नाज़िल करते (95)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हमारे तुम्हारे दरम्यिान गवाही के वास्ते बस अल्लाह काफी है इसमें शक नहीं कि वह अपने बन्दों के हाल से खूब वाकि़फ और देखता रहता है (96)

और अल्लाह जिसकी हिदायत करे वही हिदायत याफता है और जिसको गुमराही में छोड़ दे तो (याद रखो कि) फिर उसके सिवा किसी को उसका सरपरस्त न पाओगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों का मुँह के बल औंधे और गूँगें और बहरे क़ब्रों से उठाएँगें उनका ठिकाना जहन्नुम है कि जब कभी बुझने को होगी तो हम उन लोगों पर (उसे) और भड़का देंगे (97)

ये सज़ा उनकी इस वजह से है कि उन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगे कि जब हम (मरने के बाद सड़ गल) कर हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएँगीं तो क्या फिर हम नये सिरे से पैदा करके उठाए जाएँगें (98)

क्या उन लोगों ने इस पर भी नहीं ग़ौर किया कि वह अल्लाह जिसने सारे आसमान और ज़मीन बनाए इस पर भी (ज़रुर) क़ादिर है कि उनके ऐसे आदमी दोबारा पैदा करे और उसने उन (की मौत) की एक मियाद मुक़र्रर कर दी है जिसमें ज़रा भी शक नहीं उस पर भी ये ज़ालिम इन्कार किए बग़ैर न रहे (99)

(ऐ रसूल) इनसे कहो कि अगर मेरे परवरदिगार के रहमत के ख़ज़ाने भी तुम्हारे एख़तियार में होते तो भी तुम खर्च हो जाने के डर से (उनको) बन्द रखते और आदमी बड़ा ही तंग दिल है (100)
सजदा 4

और हमने यक़ीनन मूसा को खुले हुए नौ मौजिज़े अता किए तो (ऐ रसूल) बनी इसराईल से (यही) पूछ देखो कि जब मूसा उनके पास आए तो फिरआऊन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मै तो समझता हूँ कि किसी ने तुम पर जादू करके दीवाना बना दिया है (101)

मूसा ने कहा तुम ये ज़रुर जानते हो कि ये मौजिज़े सारे आसमान व ज़मीन के परवरदिगार ने नाज़िल किए (और वह भी लोगों की) सूझ बूझ की बातें हैं और ऐ फिरआऊन मै तो ख़्याल करता हूँ कि तुम पर शामत आई है (102)

फिर फिरआऊन ने ये ठान लिया कि बनी इसराईल को (सर ज़मीने) मिस्त्र से निकाल बाहर करे तो हमने फिरआऊन और जो लोग उसके साथ थे सब को डुबो मारा (103)

और उसके बाद हमने बनी इसराईल से कहा कि (अब तुम ही) इस मुल्क में (खूब आराम से) रहो सहो फिर जब आख़िरत का वायदा आ पहुँचेगा तो हम तुम सबको समेट कर ले आएँगें (104)

और (ऐ रसूल) हमने इस क़ुरान को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया और बिल्कुल ठीक नाज़िल हुआ और तुमको तो हमने (जन्नत की) खुशखबरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला (रसूल) बनाकर भेजा है (105)

और क़ुरान को हमने थोड़ा थोड़ा करके इसलिए नाज़िल किया कि तुम लोगों के सामने (ज़रुरत पड़ने पर) मोहलत दे देकर उसको पढ़ दिया करो (106)

और (इसी वजह से) हमने उसको रफ्ता रफ्ता नाज़िल किया तुम कह दो कि ख़्वाह तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ इसमें शक नहीं कि जिन लोगों को उसके क़ब्ल ही (आसमानी किताबों का इल्म अता किया गया है उनके सामने जब ये पढ़ा जाता है तो ठुडडियों से (मुँह के बल) सजदे में गिर पड़तें हैं (107)

और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा होना ज़रुरी था (108)

और ये लोग (सजदे के लिए) मुँह के बल गिर पड़तें हैं और रोते चले जाते हैं और ये क़ुरान उन की ख़ाकसारी के बढ़ाता जाता है (109)

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि (तुम को एख़तियार है) ख़्वाह उसे अल्लाह (कहकर) पुकारो या रहमान कह कर पुकारो (ग़रज़) जिस नाम को भी पुकारो उसके तो सब नाम अच्छे (से अच्छे) हैं

और (ऐ रसूल) न तो अपनी नमाज़ बहुत चिल्ला कर पढ़ो न और न बिल्कुल चुपके से बल्कि उसके दरम्यिान एक औसत तरीका एख़्तेयार कर लो (110)

और कहो कि हर तरह की तारीफ उसी अल्लाह को (सज़ावार) है जो न तो कोई औलाद रखता है और न (सारे जहाँन की) सल्तनत में उसका कोई साझेदार है और न उसे किसी तरह की कमज़ोरी है न कोई उसका सरपरस्त हो और उसकी बड़ाई अच्छी तरह करते रहा करो (111)

18 सूरह कहफ़

सूरह क़हफ़ मक्का में नाज़िल हुआ और इसकी एक सौ दस (110) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हर तरह की तारीफ अल्लाह ही को (सज़ावार) है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर किताब (क़ुरान) नाज़िल की और उसमें किसी तरह की कज़ी (ख़राबी) न रखी (1)

बल्कि हर तरह से सधा ताकि जो सख़्त अज़ाब अल्लाह की बारगाह से काफिरों पर नाज़िल होने वाला है उससे लोगों को डराए और जिन मोमिनीन ने अच्छे अच्छे काम किए हैं उनको इस बात की खुशख़बरी दे की उनके लिए बहुत अच्छा अज्र (व सवाब) मौजूद है (2)

जिसमें वह हमेशा (बाइत्मेनान) तमाम रहेगें (3)

और जो लोग इसके क़ाएल हैं कि अल्लाह औलाद रखता है उनको (अज़ाब से) डराओ (4)

न तो उन्हीं को उसकी कुछ खबर है और न उनके बाप दादाओं ही को थी (ये) बड़ी सख़्त बात है जो उनके मुँह से निकलती है ये लोग झूठ मूठ के सिवा (कुछ और) बोलते ही नहीं (5)

तो (ऐ रसूल) अगर ये लोग इस बात को न माने तो शायद तुम मारे अफसोस के उनके पीछे अपनी जान दे डालोगे (6)

और जो कुछ रुए ज़मीन पर है हमने उसकी ज़ीनत (रौनक़) क़रार दी ताकि हम लोगों का इम्तिहान लें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा चलन का है (7)

और (फिर) हम एक न एक दिन जो कुछ भी इस पर है (सबको मिटा करके) चटियल मैदान बना देगें (8)

(ऐ रसूल) क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि असहाब कहफ व रक़ीम (खोह) और (तख़्ती वाले) हमारी (क़ुदरत की) निशानियों में से एक अजीब (निशानी) थे (9)

कि एक बारगी कुछ जवान ग़ार में आ पहुँचे और दुआ की-ऐ हमारे परवरदिगार हमें अपनी बारगाह से रहमत अता फरमा-और हमारे वास्ते हमारे काम में कामयाबी इनायत कर (10)

तब हमने कई बरस तक ग़ार में उनके कानों पर पर्दे डाल दिए (उन्हें सुला दिया) (11)

फिर हमने उन्हें चौकाया ताकि हम देखें कि दो गिरोहों में से किसी को (ग़ार में) ठहरने की मुद्दत खूब याद है (12)

(ऐ रसूल) अब हम उनका हाल तुमसे बिल्कुल ठीक तहक़ीक़ातन {यक़ीन के साथ} बयान करते हैं वह चन्द जवान थे कि अपने (सच्चे) परवरदिगार पर इमान लाए थे और हम ने उनकी सोच समझ और ज़्यादा कर दी है (13)

और हमने उनकी दिलों पर (सब्र व इस्तेक़लाल की) गिराह लगा दी (कि जब दक़ियानूस बादशाह ने कुफ्र पर मजबूर किया) तो उठ खड़े हुए (और बे ताम्मुल {खटके}) कहने लगे हमारा परवरदिगार तो बस सारे आसमान व ज़मीन का मालिक है हम तो उसके सिवा किसी माबूद की हरगिज़ इबादत न करेगें (14)

अगर हम ऐसा करे तो यक़ीनन हमने अक़्ल से दूर की बात कही (अफसोस एक) ये हमारी क़ौम के लोग हैं कि जिन्होनें अल्लाह को छोड़कर (दूसरे) माबूद बनाए हैं (फिर) ये लोग उनके (माबूद होने) की कोई सरीही (खुली) दलील क्यों नहीं पेश करते और जो शख़्स अल्लाह पर झूट बोहतान बाँधे उससे ज़्यादा ज़ालिम और कौन होगा (15)

(फिर बाहम कहने लगे कि) जब तुमने उन लोगों से और अल्लाह के सिवा जिन माबूदों की ये लोग परसतिश करते हैं उनसे किनारा कशी करली तो चलो (फलॉ) ग़ार में जा बैठो और तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत तुम पर वसीह कर देगा और तुम्हारा काम में तुम्हारे लिए आसानी के सामान मुहय्या करेगा (16)

(ग़रज़ ये ठान कर ग़ार में जा पहुँचे) कि जब सूरज निकलता है तो देखेगा कि वह उनके ग़ार से दाहिनी तरफ झुक कर निकलता है और जब ग़ुरुब {डुबता} होता है तो उनसे बायीं तरफ कतरा जाता है और वह लोग (मज़े से) ग़ार के अन्दर एक वसीइ {बड़ी} जगह में (लेटे) हैं ये अल्लाह (की कुदरत) की निशानियों में से (एक निशानी) है जिसको हिदायत करे वही हिदायत याफ्ता है और जिस को गुमराह करे तो फिर उसका कोई सरपरस्त रहनुमा हरगिज़ न पाओगे (17)

तू उनको समझेगा कि वह जागते हैं हालॉकि वह (गहरी नींद में) सो रहे हैं और हम कभी दाहिनी तरफ और कभी बायी तरफ उनकी करवट बदलवा देते हैं और उनका कुत्ता अपने आगे के दोनो पाँव फैलाए चौखट पर डटा बैठा है (उनकी ये हालत है कि) अगर कहीं तू उनको झाक कर देखे तो उलटे पाँव ज़रुर भाग खड़े हो और तेरे दिल में दहशत समा जाए (18)

और (जिस तरह अपनी कुदरत से उनको सुलाया) उसी तरह (अपनी कुदरत से) उनको (जगा) उठाया ताकि आपस में कुछ पूछ गछ करें (ग़रज़) उनमें एक बोलने वाला बोल उठा कि (भई आख़िर इस ग़ार में) तुम कितनी मुद्दत ठहरे कहने लगे (अरे ठहरे क्या बस) एक दिन से भी कम उसके बाद कहने लगे कि जितनी देर तुम ग़ार में ठहरे उसको तुम्हारे परवरदिगार ही (कुछ तुम से) बेहतर जानता है (अच्छा) तो अब अपने में से किसी को अपना ये रुपया देकर शहर की तरफ भेजो तो वह (जाकर) देखभाल ले कि वहाँ कौन सा खाना बहुत अच्छा है फिर उसमें से (ज़रुरत भर) खाना तुम्हारे वास्ते ले आए और उसे चाहिए कि वह आहिस्ता चुपके से आ जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे (19)

इसमें शक नहीं कि अगर उन लोगों को तुम्हारी इत्तेलाअ हो गई तो बस फिर तुम को संगसार ही कर देंगें या फिर तुम को अपने दीन की तरफ फेर कर ले जाएँगे और अगर ऐसा हुआ तो फिर तुम कभी कामयाब न होगे (20)

और हमने यूँ उनकी क़ौम के लोगों को उनकी हालत पर इत्तेलाअ (ख़बर) कराई ताकि वह लोग देख लें कि अल्लाह को वायदा यक़ीनन सच्चा है और ये (भी समझ लें) कि क़यामत (के आने) में कुछ भी शुभा नहीं अब (इततिलाआ होने के बाद) उनके बारे में लोग बाहम झगड़ने लगे तो कुछ लोगों ने कहा कि उनके (ग़ार) पर (बतौर यादगार) कोई इमारत बना दो उनका परवरदिगार तो उनके हाल से खूब वाक़िफ है ही और उनके बारे में जिन (मोमिनीन) की राए ग़ालिब रही उन्होंने कहा कि हम तो उन (के ग़ार) पर एक मस्जिद बनाएँगें (21)

क़रीब है कि लोग (नुसैरे नज़रान) कहेगें कि वह तीन आदमी थे चौथा उनका कुत्ता (क़तमीर) है और कुछ लोग (आक़िब वग़ैरह) कहते हैं कि वह पाँच आदमी थे छठा उनका कुत्ता है (ये सब) ग़ैब में अटकल लगाते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि सात आदमी हैं और आठवाँ उनका कुत्ता है (ऐ रसूल) तुम कह दो की उनका सुमार मेरा परवरदिगार ही ख़ब जानता है उन (की गिनती) के थोड़े ही लोग जानते हैं तो (ऐ रसूल) तुम (उन लोगों से) असहाब कहफ के बारे में सरसरी गुफ्तगू के सिवा (ज़्यादा) न झगड़ों और उनके बारे में उन लोगों से किसी से कुछ पूछ गछ नहीं (22)

और किसी काम की निस्बत न कहा करो कि मै इसको कल करुँगा (23)

मगर इन्शा अल्लाह कह कर और अगर (इन्शा अल्लाह कहना) भूल जाओ तो (जब याद आए) अपने परवरदिगार को याद कर लो (इन्शा अल्लाह कह लो) और कहो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे ऐसी बात की हिदायत फरमाए जो रहनुमाई में उससे भी ज़्यादा क़रीब हो (24)

और असहाब कहफ अपने ग़ार में नौ ऊपर तीन सौ बरस रहे (25)

(ऐ रसूल) अगर वह लोग इस पर भी न मानें तो तुम कह दो कि अल्लाह उनके ठहरने की मुद्दत से बखूबी वाक़िफ़ है सारे आसमान और ज़मीन का ग़ैब उसी के वास्ते ख़ास है (अल्लाह हो अकबर) वो कैसा देखने वाला क्या ही सुनने वाला है उसके सिवा उन लोगों का कोई सरपरस्त नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को अपना दख़ील {शरीक} नहीं बनाता (26)

और (ऐ रसूल) जो किताब तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वही के ज़रिए से नाज़िल हुई है उसको पढ़ा करो उसकी बातों को कोई बदल नहीं सकता और तुम उसके सिवा कहीं कोई हरगिज़ पनाह की जगह (भी) न पाओगे (27)

और (ऐ रसूल) जो लोग अपने परवरदिगार को सुबह सवेरे और झटपट वक्त शाम को याद करते हैं और उसकी खुशनूदी के ख़्वाहाँ हैं उनके उनके साथ तुम खुद (भी) अपने नफस पर जब्र करो और उनकी तरफ से अपनी नज़र (तवज्जो) न फेरो कि तुम दुनिया में ज़िन्दगी की आराइश चाहने लगो और जिसके दिल को हमने (गोया खुद) अपने ज़िक्र से ग़ाफिल कर दिया है और वह अपनी ख़्वाहिशे नफसानी के पीछे पड़ा है और उसका काम सरासर ज़्यादती है उसका कहना हरगिज़ न मानना (28)

और (ऐ रसूल) तुम कह दों कि सच्ची बात (कलमए तौहीद) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (नाज़िल हो चुकी है) बस जो चाहे माने और जो चाहे न माने (मगर) हमने ज़ालिमों के लिए वह आग (दहका के) तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उन्हें घेर लेगी और अगर वह लोग दोहाई करेगें तो उनकी फरियाद रसी खौलते हुए पानी से की जाएगी जो मसलन पिघले हुए ताबें की तरह होगा (और) वह मुँह को भून डालेगा क्या बुरा पानी है और (जहन्नुम भी) क्या बुरी जगह है (29)

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम करते रहे तो हम हरगिज़ अच्छे काम वालो के अज्र को अकारत नहीं करते (30)

ये वही लोग हैं जिनके (रहने सहने के) लिए सदाबहार (बेहश्त के) बाग़ात हैं उनके (मकानात के) नीचे नहरें जारी होगीं वह उन बाग़ात में दमकते हुए कुन्दन के कंगन से सँवारे जाँएगें और उन्हें बारीक रेशम (क्रेब) और दबीज़ रेशम (वाफते)के धानी जोड़े पहनाए जाएँगें और तख़्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होगें क्या ही अच्छा बदला है और (बेहश्त भी आसाइश की) कैसी अच्छी जगह है (31)

और (ऐ रसूल) इन लोगों से उन दो शख़्सों की मिसाल बयान करो कि उनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दे रखे है और हमने चारो ओर खजूर के पेड़ लगा दिये है और उन दोनों बाग़ के दरम्यिान खेती भी लगाई है (32)

वह दोनों बाग़ खूब फल लाए और फल लाने में कुछ कमी नहीं की और हमने उन दोनों बाग़ों के दरम्यिान नहर भी जारी कर दी है (33)

और उसे फल मिला तो अपने साथी से जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा कि मै तो तुझसे माल में (भी) ज़्यादा हूँ और जत्थे में भी बढ़ कर हूँ (34)

और ये बातें करता हुआ अपने बाग़ मे भी जा पहुँचा हालॉकि उसकी आदत ये थी कि (कुफ्र की वजह से) अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहा था (ग़रज़ वह कह बैठा) कि मुझे तो इसका गुमान नहीं तो कि कभी भी ये बाग़ उजड़ जाए (35)

और मै तो ये भी नहीं ख़्याल करता कि क़यामत क़ायम होगी और (बिलग़रज़ हुयी भी तो) जब मै अपने परवरदिगार की तरफ लौटाया जाऊँगा तो यक़ीनन इससे कहीं अच्छी जगह पाऊँगा (36)
उसका साथी जो उससे बातें कर रहा था कहने लगा कि क्या तू उस परवरदिगार का मुन्किर है जिसने (पहले) तुझे मिट्टी से पैदा किया फिर नुत्फे से फिर तुझे बिल्कुल ठीक मर्द (आदमी) बना दिया (37)

हम तो (कहते हैं कि) वही अल्लाह मेरा परवरदिगार है और मै तो अपने परवरदिगार का किसी को शरीक नहीं बनाता (38)

और जब तू अपने बाग़ में आया तो (ये) क्यों न कहा कि ये सब (माशा अल्लाह अल्लाह ही के चाहने से हुआ है (मेरा कुछ भी नहीं क्योंकि) बग़ैर अल्लाह की (मदद) के (किसी में) कुछ सकत नहीं अगर माल और औलाद की राह से तू मुझे कम समझता है (39)

तो अनक़रीब ही मेरा परवरदिगार मुझे वह बाग़ अता फरमाएगा जो तेरे बाग़ से कहीं बेहतर होगा और तेरे बाग़ पर कोई ऐसी आफत आसमान से नाज़िल करे कि (ख़ाक सियाह) होकर चटियल चिकना सफ़ाचट मैदान हो जाए (40)

उसका पानी नीचे उतर (के खुश्क) हो जाए फिर तो उसको किसी तरह तलब न कर सके (41)

(चुनान्चे अज़ाब नाज़िल हुआ) और उसके (बाग़ के) फल (आफत में) घेर लिए गए तो उस माल पर जो बाग़ की तैयारी में सर्फ़ (खर्च) किया था (अफसोस से) हाथ मलने लगा और बाग़ की ये हालत थी कि अपनी टहनियों पर औंधा गिरा हुआ पड़ा था तो कहने लगा काश मै अपने परवरदिगार का किसी को शरीक न बनाता (42)

और अल्लाह के सिवा उसका कोई जत्था भी न था कि उसकी मदद करता और न वह बदला ले सकता था इसी जगह से (साबित हो गया (43)

कि सरपरस्ती ख़ास अल्लाह ही के लिए है जो सच्चा है वही बेहतर सवाब (देने) वाला है और अन्जाम के जंगल से भी वही बेहतर है (44)

और (ऐ रसूल) इनसे दुनिया की ज़िन्दगी की मसल भी बयान कर दो कि उसके हालत पानी की सी है जिसे हमने आसमान से बरसाया तो ज़मीन की उगाने की ताक़त उसमें मिल गई और (खूब फली फूली) फिर आख़िर रेज़ा रेज़ा (भूसा) हो गई कि उसको हवाएँ उड़ाए फिरती है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (45)

(ऐ रसूल) माल और औलाद (इस ज़रा सी) दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक सवाब में उससे कही ज़्यादा अच्छी हैं और तमन्नाएँ व आरजू की राह से (भी) बेहतर हैं (46)

और (उस दिन से डरो) जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगें और तुम ज़मीन को खुला मैदान (पहाड़ों से) खाली देखोगे और हम इन सभी को इकट्ठा करेगे तो उनमें से एक को न छोड़ेगें (47)

सबके सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने कतार पे क़तार पेश किए जाएँगें और (उस वक्त हम याद दिलाएँगे कि जिस तरह हमने तुमको पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) तुम लोगों को (आख़िर) हमारे पास आना पड़ा मगर तुम तो ये ख़्याल करते थे कि हम तुम्हारे (दोबारा पैदा करने के) लिए कोई वक्त ही न ठहराएँगें (48)

और लोगों के आमाल की किताब (सामने) रखी जाएँगी तो तुम गुनेहगारों को देखोगे कि जो कुछ उसमें (लिखा) है (देख देख कर) सहमे हुए हैं और कहते जाते हैं हाए हमारी शामत ये कैसी किताब है कि न छोटे ही गुनाह को बे क़लमबन्द किए छोड़ती है न बड़े गुनाह को और जो कुछ इन लोगों ने (दुनिया में) किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएँगें और तेरा परवरदिगार किसी पर (ज़र्रा बराबर) ज़ुल्म न करेगा (49)

और (वह वक्त याद करो) जब हमने फरिश्तो को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो इबलीस के सिवा सबने सजदा किया (ये इबलीस) जिन्नात से था तो अपने परवरदिगार के हुक्म से निकल भागा तो (लोगों) क्या मुझे छोड़कर उसको और उसकी औलाद को अपना दोस्त बनाते हो हालॉकि वह तुम्हारा (क़दीमी) दुश्मन हैं ज़ालिमों (ने अल्लाह के बदले शैतान को अपना दोस्त बनाया ये उन) का क्या बुरा ऐवज़ है (50)

मैने न तो आसमान व ज़मीन के पैदा करने के वक्त उनको (मदद के लिए) बुलाया था और न खुद उनके पैदा करने के वक्त और मै (ऐसा गया गुज़रा) न था कि मै गुमराह करने वालों को मददगार बनाता (51)

और (उस दिन से डरो) जिस दिन अल्लाह फरमाएगा कि अब तुम जिन लोगों को मेरा शरीक ख्याल करते थे उनको (मदद के लिए) पुकारो तो वह लोग उनको पुकारेगें मगर वह लोग उनकी कुछ न सुनेगें और हम उन दोनों के बीच में महलक {खतरनाक} आड़ बना देंगे (52)

और गुनेहगार लोग (देखकर समझ जाएँगें कि ये इसमें सोके जाएँगे और उससे गरीज़ {बचने की} की राह न पाएँगें (53)

और हमने तो इस कुरान में लोगों (के समझाने) के वास्ते हर तरह की मिसालें फेर बदल कर बयान कर दी है मगर इन्सान तो तमाम मख़लूकात से ज़्यादा झगड़ालू है (54)

और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो (फिर) उनको इमान लाने और अपने परवरदिगार से मग़फिरत की दुआ माँगने से (उसके सिवा और कौन) अम्र मायने है कि अगलों की सी रीत रस्म उनको भी पेश आई या हमारा अज़ाब उनके सामने से (मौजूद) हो (55)

और हम तो पैग़म्बरों को सिर्फ इसलिए भेजते हैं कि (अच्छों को निजात की) खुशख़बरी सुनाएँ और (बदों को अज़ाब से) डराएँ और जो लोग काफिर हैं झूटी झूटी बातों का सहारा पकड़ के झगड़ा करते है ताकि उसकी बदौलत हक़ को (उसकी जगह से उखाड़ फेकें और उन लोगों ने मेरी आयतों को जिस (अज़ाब से) ये लोग डराए गए हॅसी ठ्ठ्ठा {मज़ाक} बना रखा है (56)

और उससे बढ़कर और कौन ज़ालिम होगा जिसको अल्लाह की आयतें याद दिलाई जाए और वह उनसे रद गिरदानी {मुँह फेर ले} करे और अपने पहले करतूतों को जो उसके हाथों ने किए हैं भूल बैठे (गोया) हमने खुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वह (हक़ बात को) न समझ सकें और (गोया) उनके कानों में गिरानी पैदा कर दी है कि (सुन न सकें) और अगर तुम उनको राहे रास्त की तरफ़ बुलाओ भी तो ये हरगिज़ कभी रुबरु होने वाले नहीं हैं (57)

और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है अगर उनकी करतूतों की सज़ा में धर पकड़ करता तो फौरन (दुनिया ही में) उन पर अज़ाब नाज़िल कर देता मगर उनके लिए तो एक मियाद (मुक़र्रर) है जिससे अल्लाह के सिवा कहीं पनाह की जगह न पाएँगें (58)
और ये बस्तियाँ (जिन्हें तुम अपनी आँखों से देखते हो) जब उन लोगों ने सरकशी तो हमने उन्हें हलाक कर मारा और हमने उनकी हलाकत की मियाद मुक़र्रर कर दी थी (59)

(ऐ रसूल) वह वाक़या याद करो जब मूसा खिज्ऱ की मुलाक़ात को चले तो अपने जवान वसी यूशा से बोले कि जब तक में दोनों दरियाओं के मिलने की जगह न पहुँच जाऊँ (चलने से) बाज़ न आऊँगा (60)

ख़्वाह (अगर मुलाक़ात न हो तो) बरसों यूँ ही चलता जाऊँगा फिर जब ये दोनों उन दोनों दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे तो अपनी (भुनी हुयी) मछली छोड़ चले तो उसने दरिया में सुरंग बनाकर अपनी राह ली (61)

फिर जब कुछ और आगे बढ़ गए तो मूसा ने अपने जवान (वसी) से कहा (अजी हमारा नाश्ता तो हमें दे दो हमारे (आज के) इस सफर से तो हमको बड़ी थकन हो गई (62)

(यूशा ने) कहा क्या आप ने देखा भी कि जब हम लोग (दरिया के किनारे) उस पत्थर के पास ठहरे तो मै (उसी जगह) मछली छोड़ आया और मुझे आप से उसका ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और मछली ने अजीब तरह से दरिया में अपनी राह ली (63)

मूसा ने कहा वही तो वह (जगह) है जिसकी हम जुस्तजू {तलाश} में थे फिर दोनों अपने क़दम के निशानों पर देखते देखते उलटे पॉव फिरे (64)

तो (जहाँ मछली थी) दोनों ने हमारे बन्दों में से एक (ख़ास) बन्दा खिज्र को पाया जिसको हमने अपनी बारगाह से रहमत (विलायत) का हिस्सा अता किया था (65)

और हमने उसे इल्म लदुन्नी (अपने ख़ास इल्म) में से कुछ सिखाया था मूसा ने उन (ख़िज्र) से कहा क्या (आपकी इजाज़त है कि) मै इस ग़रज़ से आपके साथ साथ रहूँ (66)

कि जो रहनुमाई का इल्म आपको है (अल्लाह की तरफ से) सिखाया गया है उसमें से कुछ मुझे भी सिखा दीजिए खिज्र ने कहा (मै सिखा दूँगा मगर) आपसे मेरे साथ सब्र न हो सकेगा (67)

और (सच तो ये है) जो चीज़ आपके इल्मी अहाते से बाहर हो (68)

उस पर आप सब्र क्योंकर कर सकते हैं मूसा ने कहा (आप इतमिनान रखिए) अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे साबिर आदमी पाएँगें (69)

और मै आपके किसी हुक्म की नाफरमानी न करुँगा खिज्र ने कहा अच्छा तो अगर आप को मेरे साथ रहना है तो जब तक मै खुद आपसे किसी बात का ज़िक्र न छेड़ूँ (70)

आप मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछियेगा ग़रज़ ये दोनो (मिलकर) चल खड़े हुए यहाँ तक कि (एक दरिया में) जब दोनों कश्ती में सवार हुए तो ख़िज्र ने कश्ती में छेद कर दिया मूसा ने कहा (आप ने तो ग़ज़ब कर दिया) क्या कश्ती में इस ग़रज़ से सुराख़ किया है (71)

कि लोगों को डुबा दीजिए ये तो आप ने बड़ी अजीब बात की है-ख़िज्र ने कहा क्या मैने आप से (पहले ही) न कह दिया था (72)

कि आप मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगे-मूसा ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ आप मेरी गिरफत न कीजिए और मुझ पर मेरे इस मामले में इतनी सख़्ती न कीजिए (73)

(ख़ैर ये तो हो गया) फिर दोनों के दोनों आगे चले यहाँ तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो उस बन्दे अल्लाह ने उसे जान से मार डाला मूसा ने कहा (ऐ माज़ अल्लाह) क्या आपने एक मासूम शख़्स को मार डाला और वह भी किसी के (ख़ौफ के) बदले में नहीं आपने तो यक़ीनी एक अजीब हरकत की (74)

खिज्र ने कहा कि मैंने आपसे (मुक़र्रर) न कह दिया था कि आप मेरे साथ हरगिज़ नहीं सब्र कर सकेगें (75)

मूसा ने कहा (ख़ैर जो हुआ वह हुआ) अब अगर मैं आप से किसी चीज़ के बारे में पूछगछ करूँगा तो आप मुझे अपने साथ न रखियेगा बेशक आप मेरी तरफ से माज़रत (की हद को) पहुँच गए (76)

ग़रज़ (ये सब हो हुआ कर फिर) दोनों आगे चले यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों के पास पहुँचे तो वहाँ के लोगों से कुछ खाने को माँगा तो उन लोगों ने दोनों को मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया फिर उन दोनों ने उसी गाँव में एक दीवार को देखा कि गिरा ही चाहती थी तो खिज्र ने उसे सीधा खड़ा कर दिया उस पर मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो (इन लोगों से) इसकी मज़दूरी ले सकते थे (77)

(ताकि खाने का सहारा होता) खिज्र ने कहा मेरे और आपके दरम्यािन छुट्टम छुट्टा अब जिन बातों पर आप से सब्र न हो सका मैं अभी आप को उनकी असल हक़ीकत बताए देता हूँ (78)

(लीजिए सुनिये) वह कश्ती (जिसमें मैंने सुराख़ कर दिया था) तो चन्द ग़रीबों की थी जो दरिया में मेहनत करके गुज़ारा करते थे मैंने चाहा कि उसे ऐबदार बना दूँ (क्योंकि) उनके पीछे-पीछे एक (ज़ालिम) बादशाह (आता) था कि तमाम कश्तियां ज़बरदस्ती बेगार में पकड़ लेता था (79)

और वह जो लड़का जिसको मैंने मार डाला तो उसके माँ बाप दोनों (सच्चे) इमानदार हैं तो मुझको ये अन्देशा हुआ कि (ऐसा न हो कि बड़ा होकर) उनको भी अपने सरकशी और कुफ़्र में फँसा दे (80)

तो हमने चाहा कि (हम उसको मार डाले और) उनका परवरदिगार इसके बदले में ऐसा फरज़न्द अता फरमाए जो उससे पाक नफ़सी और पाक कराबत में बेहतर हो (81)

और वह जो दीवार थी (जिसे मैंने खड़ा कर दिया) तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे उन्हीं दोनों लड़कों का ख़ज़ाना (गड़ा हुआ था) और उन लड़कों का बाप एक नेक आदमी था तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचे तो तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से अपना ख़ज़ाने निकाल ले और मैंने (जो कुछ किया) कुछ अपने एख़्तियार से नहीं किया (बल्कि ख़ुदा के हुक्म से) ये हक़ीक़त है उन वाक़यात की जिन पर आपसे सब्र न हो सका (82)

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग ज़ुलक़रनैन का हाल (इम्तेहान) पूछा करते हैं तुम उनके जवाब में कह दो कि मैं भी तुम्हें उसका कुछ हाल बता देता हूँ (83)

(अल्लाह फरमाता है कि) बेशक हमने उनको ज़मीन पर क़ुदरतें हुकूमत अता की थी और हमने उसे हर चीज़ के साज़ व सामान दे रखे थे (84)

वह एक सामान (सफर के) पीछे पड़ा (85)

यहाँ तक कि जब (चलते-चलते) आफताब के ग़ुरूब होने की जगह पहुँचा तो आफताब उनको ऐसा दिखाई दिया कि (गोया) वह काली कीचड़ के चश्में में डूब रहा है और उसी चश्में के क़रीब एक क़ौम को भी आबाद पाया हमने कहा ऐ ज़ुलकरनैन (तुमको एख़्तियार है) ख़्वाह इनके कुफ्र की वजह से इनकी सज़ा करो (कि ईमान लाए) या इनके साथ हुस्ने सुलूक का शेवा एख़्तियार करो (कि ख़ुद इमान क़ुबूल करें) (86)

ज़ुलकरनैन ने अर्ज़ की जो शख़्स सरकशी करेगा तो हम उसकी फौरन सज़ा कर देगें (आख़िर) फिर वह (क़यामत में) अपने परवरदिगार के सामने लौटाकर लाया ही जाएगा और वह बुरी से बुरी सज़ा देगा (87)

और जो शख़्स ईमान क़ुबूल करेगा और अच्छे काम करेगा तो (वैसा ही) उसके लिए अच्छे से अच्छा बदला है और हम बहुत जल्द उसे अपने कामों में से आसान काम (करने) को कहेंगे (88)

फिर उस ने एक दूसरी राह एख़्तियार की (89)

यहाँ तक कि जब चलते-चलते आफताब के तूलूउ होने की जगह पहुँचा तो (आफताब) से ऐसा ही दिखाई दिया (गोया) कुछ लोगों के सर पर उस तरह तुलूउ कर रहा है जिन के लिए हमने आफताब के सामने कोई आड़ नहीं बनाया था (90)

और था भी ऐसा ही और ज़ुलक़रनैन के पास वो कुछ भी था हमको उससे पूरी वाकफ़ियत थी (91)

(ग़रज़) उसने फिर एक और राह एख़्तियार की (92)

यहाँ तक कि जब चलते-चलते रोम में एक पहाड़ के (कंगुरों के) दीवारों के बीचो बीच पहुँच गया तो उन दोनों दीवारों के इस तरफ एक क़ौम को (आबाद) पाया तो बात चीत कुछ समझ ही नहीं सकती थी (93)

उन लोगों ने मुतरज्जिम के ज़रिए से अर्ज़ की ऐ ज़ुलकरनैन (इसी घाटी के उधर याजूज माजूज की क़ौम है जो) मुल्क में फ़साद फैलाया करते हैं तो अगर आप की इजाज़त हो तो हम लोग इस ग़र्ज़ से आपसे पास चन्दा जमा करें कि आप हमारे और उनके दरम्यािन कोई दीवार बना दें (94)
ज़ुलकरनैन ने कहा कि मेरे परवरदिगार ने ख़र्च की जो क़ुदरत मुझे दे रखी है वह (तुम्हारे चन्दे से) कहीं बेहतर है (माल की ज़रूरत नहीं) तुम फक़त मुझे क़ूवत से मदद दो तो मैं तुम्हारे और उनके दरम्यािन एक रोक बना दूँ (95)

(अच्छा तो) मुझे (कहीं से) लोहे की सिले ला दो (चुनान्चे वह लोग) लाए और एक बड़ी दीवार बनाई यहाँ तक कि जब दोनो कंगूरो के दरमेयान (दीवार) को बुलन्द करके उनको बराबर कर दिया तो उनको हुक्म दिया कि इसके गिर्द आग लगाकर धौको यहां तक उसको (धौंकते-धौंकते) लाल अँगारा बना दिया (96)

तो कहा कि अब हमको ताँबा दो कि इसको पिघलाकर इस दीवार पर उँडेल दें (ग़रज़) वह ऐसी ऊँची मज़बूत दीवार बनी कि न तो याजूज व माजूज उस पर चढ़ ही सकते थे और न उसमें नक़ब लगा सकते थे (97)

ज़ुलक़रनैन ने (दीवार को देखकर) कहा ये मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है मगर जब मेरे परवरदिगार का वायदा (क़यामत) आयेगा तो इसे ढहा कर हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है (98)

और हम उस दिन (उन्हें उनकी हालत पर) छोड़ देंगे कि एक दूसरे में (टकरा के दरिया की) लहरों की तरह गुड़मुड़ हो जाएँ और सूर फूँका जाएगा तो हम सब को इकट्ठा करेंगे (99)

और उसी दिन जहन्नुम को उन काफिरों के सामने खुल्लम खुल्ला पेश करेंगे (100)

और उसी (रसूल की दुश्मनी की सच्ची बात) कुछ भी सुन ही न सकते थे (101)

तो क्या जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया इस ख़्याल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को अपना सरपरस्त बना लें (कुछ पूछगछ न होगी) (अच्छा सुनो) हमने काफिरों की मेहमानदारी के लिए जहन्नुम तैयार कर रखी है (102)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या हम उन लोगों का पता बता दें जो लोग आमाल की हैसियत से बहुत घाटे में हैं (103)

(ये) वह लोग (हैं) जिन की दुनियावी ज़िन्दगी की राई (कोशिश सब) अकारत हो गई और वह उस ख़ाम ख़्याल में हैं कि वह यक़ीनन अच्छे-अच्छे काम कर रहे हैं (104)

यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयातों से और (क़यामत के दिन) उसके सामने हाज़िर होने से इन्कार किया तो उनका सब किया कराया अकारत हुआ तो हम उसके लिए क़यामत के दिन मीजान हिसाब भी क़ायम न करेंगे (105)

(और सीधे जहन्नुम में झोंक देगें) ये जहन्नुम उनकी करतूतों का बदला है कि उन्होंने कुफ्र एख़्तियार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को हँसी ठठ्ठा बना लिया (106)

बेशक जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किये उनकी मेहमानदारी के लिए फिरदौस (बरी) के बाग़ात होंगे जिनमें वह हमेशा रहेंगे (107)

और वहाँ से हिलने की भी ख़्वाहिश न करेंगे (108)
(ऐ रसूल उन लोगों से) कहो कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) वास्ते समन्दर (का पानी) भी सियाही बन जाए तो क़ब्ल उसके कि मेरे परवरदिगार की बातें ख़त्म हों समन्दर ही ख़त्म हो जाएगा अगरचे हम वैसा ही एक समन्दर उस की मदद को लाँए (109)

(ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी तुम्हारा ही ऐसा एक आदमी हूँ (फर्क़ इतना है) कि मेरे पास ये वही आई है कि तुम्हारे माबूद यकता माबूद हैं तो वो शख़्स आरज़ूमन्द होकर अपने परवरदिगार के सामने

हाज़िर होगा तो उसे अच्छे काम करने चाहिए और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न करें (110)

19 सूरह मरियम

सूरह मरियम मक्का में नाज़िल हुआ और इसकी 98 आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

काफ़ हा या ऐन साद (1)

ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का ज़िक्र है जो (उसने) अपने ख़ास बन्दे ज़करिया के साथ की थी (2)

कि जब ज़करिया ने अपने परवरदिगार को धीमी आवाज़ से पुकारा (3)

(और) अर्ज़ की ऐ मेरे पालने वाले मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई और सर है कि बुढ़ापे की (आग से) भड़क उठा (सेफद हो गया) है और ऐ मेरे पालने वाले मैं तेरी बारगाह में दुआ कर के कभी महरूम नहीं रहा हूँ (4)

और मैं अपने (मरने के) बाद अपने वारिसों से सहम जाता हूँ (कि मुबादा दीन को बरबाद करें) और मेरी बीबी उम्मे कुलसूम बिनते इमरान बाझ है पस तू मुझको अपनी बारगाह से एक जाँनशीन फरज़न्द अता फ़रमा (5)

जो मेरी और याक़ूब की नस्ल की मीरास का मालिक हो ऐ मेरे परवरदिगार और उसको अपना पसन्दीदा बन्दा बना (6)

ख़ुदा ने फरमाया हम तुमको एक लड़के की खुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यहया होगा और हमने उससे पहले किसी को उसका हमनाम नहीं पैदा किया (7)

ज़करिया ने अर्ज़ की या इलाही (भला) मुझे लड़का क्योंकर होगा और हालत ये है कि मेरी बीवी बाँझ है और मैं ख़ुद हद से ज़्यादा बुढ़ापे को पहुँच गया हूँ (8)

(ख़ुदा ने) फ़रमाया ऐसा ही होगा तुम्हारा परवरदिगार फ़रमाता है कि ये बात हम पर (कुछ दुशवार नहीं) आसान है और (तुम अपने को तो ख़्याल करो कि) इससे पहले तुमको पैदा किया हालाँकि तुम कुछ भी न थे (9)

ज़करिया ने अर्ज़ की इलाही मेरे लिए कोई अलामत मुक़र्रर कर दें हुक्म हुआ तुम्हारी पहचान ये है कि तुम तीन रात (दिन) बराबर लोगों से बात नहीं कर सकोगे (10)

फिर ज़करिया (अपने इबादत के) हुजरे से अपनी क़ौम के पास (हिदायत देने के लिए) निकले तो उन से इशारा किया कि तुम लोग सुबह व शाम बराबर उसकी तसबीह (व तक़दीस) किया करो (11)

(ग़रज़ यहया पैदा हुए और हमने उनसे कहा) ऐ यहया किताब (तौरेत) मज़बूती के साथ लो (12)

और हमने उन्हें बचपन ही में अपनी बारगाह से नुबूवत और रहमदिली और पाक़ीज़गी अता फरमाई (13)

और वह (ख़ुद भी) परहेज़गार और अपने माँ बाप के हक़ में सआदतमन्द थे और सरकश नाफरमान न थे (14)

और (हमारी तरफ से) उन पर (बराबर) सलाम है जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन मरेंगे और जिस दिन (दोबारा) ज़िन्दा उठा खड़े किए जाएँगे (15)

और (ऐ रसूल) क़ुरान में मरियम का भी तज़किरा करो कि जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ़ वाले मकान में (ग़ुस्ल के वास्ते) जा बैठें (16)

फिर उसने उन लोगों से परदा कर लिया तो हमने अपनी रूह (जिबरील) को उन के पास भेजा तो वह अच्छे ख़ासे आदमी की सूरत बनकर उनके सामने आ खड़ा हुआ (17)

(वह उसको देखकर घबराई और) कहने लगी अगर तू परहेज़गार है तो मैं तुझ से ख़ुदा की पनाह माँगती हूँ (18)

(मेरे पास से हट जा) जिबरील ने कहा मैं तो साफ़ तुम्हारे परवरदिगार का पैग़म्बर (फ़रिश्ता) हूँ ताकि तुमको पाक व पाकीज़ा लड़का अता करूँ (19)

मरियम ने कहा मुझे लड़का क्योंकर हो सकता है हालाँकि किसी मर्द ने मुझे छुआ तक नहीं है औ मैं न बदकार हूँ (20)

जिबरील ने कहा तुमने कहा ठीक (मगर) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि ये बात (बे बाप के

लड़का पैदा करना) मुझ पर आसान है ताकि इसको (पैदा करके) लोगों के वास्ते (अपनी क़ुदरत की) निशानी क़रार दें और अपनी ख़ास रहमत का ज़रिया बनायें (21)

और ये बात फैसला शुदा है ग़रज़ लड़के के साथ वह आप ही आप हामेला हो गई फिर इसकी वजह से लोगों से अलग एक दूर के मकान में चली गई (22)

फिर (जब जनने का वक्त क़रीब आया तो दरदे ज़ह) उन्हें एक खजूर के (सूखे) दरख़्त की जड़ में ले आया और (बेकसी में शर्म से) कहने लगीं काश मैं इससे पहले मर जाती और (न पैद होकर) (23)

बिल्कुल भूली बिसरी हो जाती तब जिबरील ने मरियम के पाईन की तरफ़ से आवाज़ दी कि तुम कुढ़ों नहीं देखो तो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे क़रीब ही नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है (24)

और ख़ुरमे की जड़ (पकड़ कर) अपनी तरफ़ हिलाओ तुम पर पक्के-पक्के ताजे खुरमे झड़ पड़ेगें फिर (शौक़ से खुरमे) खाओ (25)

और (चश्मे का पानी) पियो और (लड़के से) अपनी आँख ठन्डी करो फिर अगर तुम किसी आदमी को देखो (और वह तुमसे कुछ पूछे) तो तुम इशारे से कह देना कि मैंने ख़ुदा के वास्ते रोज़े की नज़र की थी तो मैं आज हरगिज़ किसी से बात नहीं कर सकती (26)

फिर मरियम उस लड़के को अपनी गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आयीं वह लोग देखकर कहने लगे ऐ मरियम तुमने तो यक़ीनन बहुत बुरा काम किया (27)

ऐ हारून की बहन न तो तेरा बाप ही बुरा आदमी था और न तो तेरी माँ ही बदकार थी (ये तूने क्या किया) (28)

तो मरियम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया (कि जो कुछ पूछना है इससे पूछ लो) और वह लोग बोले भला हम गोद के बच्चे से क्योंकर बात करें (29)

(इस पर वह बच्चा क़ुदरते ख़ुदा से) बोल उठा कि मैं बेशक ख़ुदा का बन्दा हूँ मुझ को उसी ने किताब (इन्जील) अता फरमाई है और मुझ को नबी बनाया (30)

और मै (चाहे) कहीं रहूँ मुझ को मुबारक बनाया और मुझ को जब तक ज़िन्दा रहूँ नमाज़ पढ़ने ज़कात देने की ताकीद की है और मुझ को अपनी वालेदा का फ़रमाबरदार बनाया (31)

और (अलहमदोल्लिाह कि) मुझको सरकश नाफ़रमान नहीं बनाया (32)

और (ख़ुदा की तरफ़ से) जिस दिन मैं पैदा हुआ हूँ और जिस दिन मरूँगा मुझ पर सलाम है और जिस दिन (दोबारा) ज़िन्दा उठा कर खड़ा किया जाऊँगा (33)

ये है कि मरियम के बेटे ईसा का सच्चा (सच्चा) क़िस्सा जिसमें ये लोग (ख़्वाहमख़्वाह) शक किया करते हैं (34)

ख़ुदा कि लिए ये किसी तरह सज़ावार नहीं कि वह (किसी को) बेटा बनाए वह पाक व पकीज़ा है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसको कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाता है (35)

और इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा (ही) मेरा (भी) परवरदिगार है और तुम्हारा (भी) परवरदिगार है तो सब के सब उसी की इबादत करो यही (तौहीद) सीधा रास्ता है (36)

(और यही दीन ईसा लेकर आए थे) फिर (काफिरों के) फ़िरकों ने बहम एख़्तेलाफ किया तो जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तियार किया उनके लिए बड़े (सख़्त दिन ख़ुदा के हुज़ूर) हाज़िर होने से ख़राबी है (37)

जिस दिन ये लोग हमारे हुज़ूर में हाज़िर होंगे क्या कुछ सुनते देखते होंगे मगर आज तो नफ़रमान लोग खुल्लम खुल्ला गुमराही में हैं (38)

और (ऐ रसूल) तुम उनको हसरत (अफ़सोस) के दिन से डराओ जब क़तई फैसला कर दिया जाएगा और (इस वक़्त तो) ये लोग ग़फलत में (पड़े हैं) (39)

और इमान नहीं लाते इसमें शक नहीं कि (एक दिन) ज़मीन के और जो कुछ उस पर है (उसके) हम ही वारिस होंगे (40)

(और सब नेस्त व नाबूद हो जाएँगे) और सब के सब हमारी तरफ़ लौटाए जाएँगे और (ऐ रसूल) क़ुरान में इबराहीम का (भी) तज़किरा करो (41)

इसमें शक नहीं कि वह बड़े सच्चे नबी थे जब उन्होंने अपने चचा और मुँह बोले बाप से कहा कि ऐ अब्बा आप क्यों, ऐसी चीज़ (बुत) की परसतिश करते हैं जो ने सुन सकता है और न देख सकता है (42)

और न कुछ आपके काम ही आ सकता है ऐ मेरे अब्बा यक़ीनन मेरे पास वह इल्म आ चुका है जो आपके पास नहीं आया तो आप मेरी पैरवी कीजिए मैं आपको (दीन की) सीधी राह दिखा दूँगा (43)

ऐ अब्बा आप शैतान की परसतिश न कीजिए (क्योंकि) शैतान यक़ीनन ख़ुदा का नाफ़रमान (बन्दा) है। (44)

ऐ अब्बा मैं यक़ीनन इससे डरता हूँ कि (मुबादा) ख़ुदा की तरफ से आप पर कोई अज़ाब नाज़िल हो तो (आख़िर) आप शैतान के साथी बन जाईए (45)

(आज़र ने) कहा (क्यों) इबराहीम क्या तू मेरे माबूदों को नहीं मानता है अगर तू (इन बातों से) किसी तरह बाज़ न आएगा तो (याद रहे) मैं तुझे संगसार कर दूँगा और तू मेरे पास से हमेशा के लिए दूर हो जा (46)

इबराहीम ने कहा (अच्छा तो) मेरा सलाम लीजिए (मगर इस पर भी) मैं अपने परवरदिगार से आपकी बख़्शिश की दुआ करूँगा (47)

(क्योंकि) बेशक वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है और मैंने आप को (भी) और इन बुतों को (भी) जिन्हें आप लोग ख़ुदा को छोड़कर पूजा करते हैं (सबको) छोड़ा और अपने परवरदिगार ही की इबादत करूँगा उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार की इबादत से महरूम न रहूँगा (48)

ग़रज़ इबराहीम ने उन लोगों को और जिसे ये लोग ख़ुदा को छोड़कर परसतिश किया करते थे छोड़ा तो हमने उन्हें इसहाक़ व याक़ूब (सी औलाद) अता फ़रमाई और हर एक को नुबूवत के दर्जे पर फ़ायज़ किया (49)

और उन सबको अपनी रहमत से कुछ इनायत फ़रमाया और हमने उनके लिए आला दर्जे का ज़िक्रे ख़ैर (दुनिया में भी) क़रार दिया (50)

और (ऐ रसूल) क़ुरान में (कुछ) मूसा का (भी) तज़किरा करो इसमें शक नहीं कि वह (मेरा) बन्दा और साहिबे किताब व शरीयत नबी था (51)

और हमने उनको (कोहे तूर) की दाहिनी तरफ़ से आवाज़ दी और हमने उन्हें राज़ व नियाज़ की बातें करने के लिए अपने क़रीब बुलाया (52)

और हमने उन्हें अपनी ख़ास मेहरबानी से उनके भाई हारून को (उनका वज़ीर बनाकर) इनायत फ़रमाया (53)

(ऐ रसूल) क़ुरान में इसमाईल का (भी) तज़किरा करो इसमें शक नहीं कि वह वायदे के सच्चे थे और भेजे हुए पैग़म्बर थे (54)

और अपने घर के लोगों को नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की ताकीद किया करते थे और अपने परवरदिगार की बारगाह में पसन्दीदा थे (55)

और (ऐ रसूल) क़ुरान में इदरीस का भी तज़किरा करो इसमें शक नहीं कि वह बड़े सच्चे (बन्दे और) नबी थे (56)

और हमने उनको बहुत ऊँची जगह (बेहिश्त में) बुलन्द कर (के पहुँचा) दिया (57)

ये अम्बिया लोग जिन्हें ख़ुदा ने अपनी नेअमत दी आदमी की औलाद से हैं और उनकी नस्ल से जिन्हें हमने (तूफ़ान के वक्त) नूह के साथ (कश्ती पर) सवारकर लिया था और इबराहीम व याक़ूब की औलाद से हैं और उन लोगों में से हैं जिनकी हमने हिदायत की और मुन्तिख़ब किया जब उनके सामने ख़ुदा की (नाज़िल की हुई) आयतें पढ़ी जाती थीं तो सजदे में ज़ारोक़तार रोते हुए गिर पड़ते थे (58) सजदा 5

फिर उनके बाद कुछ नाख़लफ (उनके) जानशीन हुए जिन्होंने नमाज़ें खोयी और नफ़सानी ख़्वाहिशों के चेले बन बैठे अनक़रीब ही ये लोग (अपनी) गुमराही (के ख़ामयाज़े) से जा मिलेंगे (59)

मगर (हाँ) जिसने तौबा कर लिया और अच्छे-अच्छे काम किए तो ऐसे लोग बेहिश्त में दाख़िल होंगे और उन पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा वह सदाबहार बाग़ात में रहेंगे (60)

जिनका ख़ुदा ने अपने बन्दों से ग़ाएबाना वायदा कर लिया है बेशक उसका वायदा पूरा होने वाला है (61)

वह लोग वहाँ सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात सुनेंगे ही नहीं मगर हर तरफ से इस्लाम ही इस्लाम (की आवाज़ आएगी) और वहाँ उनका खाना सुबह व शाम (जिस वक्त चाहेंगे) उनके लिए (तैयार) रहेगा (62)

यही वह बेहिश्त है कि हमारे बन्दों में से जो परहेज़गार होगा हम उसे उसका वारिस बनायेगे (63)

और (ऐ रसूल) हम लोग फ़रिश्ते आप के परवरदिगार के हुक्म के बग़ैर (दुनिया में) नहीं नाज़िल होते जो कुछ हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीठ पीछे है और जो कुछ उनके दरमियान में है (ग़रज़ सबकुछ) उसी का है (64)

और तुम्हारा परवरदिगार कुछ भूलने वाला नहीं है सारे आसमान और ज़मीन का मालिक है और उन चीज़ों का भी जो दोनों के दरमियान में है तो तुम उसकी इबादत करो (और उसकी इबादत पर साबित) क़दम रहो भला तुम्हारे इल्म में उसका कोई हमनाम भी है (65)

और (बाज़) आदमी अबी बिन ख़लफ ताज्जुब से कहा करते हैं कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो जल्दी ही जीता जागता (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा (66)

क्या वह (आदमी) उसको नहीं याद करता कि उसको इससे पहले जब वह कुछ भी न था पैदा किया था (67)

तो वह (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार की (अपनी) क़िस्म हम उनको और शैतान को इकट्ठा करेगे फिर उन सब को जहन्नुम के गिर्दागिर्द घुटनों के बल हाज़िर करेंगे (68)

फिर हर गिरोह में से ऐसे लोगों को अलग निकाल लेंगे (जो दुनिया में) ख़ुदा से औरों की निस्बत अकड़े-अकड़े फिरते थे (69)

फिर जो लोग जहन्नुम में झोंके जाएँगे ज़्यादा सज़ावार हैं हम उनसे ख़ूब वाक़िफ़ हैं (70)

और तुममे से कोई ऐसा नहीं जो जहन्नुम पर से होकर न गुज़रे (क्योंकि पुल सिरात उसी पर है) ये तुम्हारे परवरदिगार पर हेतेमी और लाज़मी (वायदा) है (71)

फिर हम परहेज़गारों को बचाएँगे और नाफ़रमानों को घुटने के भल उसमें छोड़ देंगे (72)

और जब हमारी वाज़ेए रौशन आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया ईमानवालों से पूछते हैं भला ये तो बताओ कि हम तुम दोनों फरीक़ो में से मरतबे में कौन ज़्यादा बेहतर है और किसकी महफिल ज़्यादा अच्छी है (73)

हालाँकि हमने उनसे पहले बहुत सी जमाअतों को हलाक कर छोड़ा जो उनसे साज़ो सामान और ज़ाहिरी नमूद में कहीं बढ़ चढ़ के थी (74)

(ऐ रसूल) कह दो कि जो शख़्स गुमराही में पड़ा है तो ख़ुदा उसको ढ़ील ही देता चला जाता है

यहाँ तक कि उस चीज़ को (अपनी आँखों से) देख लेंगे जिनका उनसे वायदा किया गया है या अज़ाब या क़यामत तो उस वक़्त उन्हें मालूम हो जाएगा कि मरतबे में कौन बदतर है और लश्कर (जत्थे) में कौन कमज़ोर है (बेकस) है (75)

और जो लोग राहे रास्त पर हैं ख़ुदा उनकी हिदायत और ज़्यादा करता जाता है और बाक़ी रह जाने वाली नेकियाँ तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक सवाब की राह से भी बेहतर है और अन्जाम के ऐतबार से (भी) बेहतर है (76)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उस शख़्स पर भी नज़र की जिसने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगा कि (अगर क़यामत हुई तो भी) मुझे माल और औलाद ज़रूर मिलेगी (77)

क्या उसे ग़ैब का हाल मालूम हो गया है या उसने ख़ुदा से कोई अहद (व पैमान) ले रखा है हरग़िज नहीं (78)

जो कुछ ये बकता है (सब) हम सभी से लिखे लेते हैं और उसके लिए और ज़्यादा अज़ाब बढ़ाते हैं (79)

और वो माल व औलाद की निस्बत बक रहा है हम ही उसके मालिक हो बैठेंगे और ये हमारे पास तनहा आयेगा (80)

और उन लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर दूसरे-दूसरे माबूद बना रखे हैं ताकि वह उनकी इज़्ज़त के बाएस हों हरग़िज़ नहीं (81)

(बल्कि) वह माबूद ख़ुद उनकी इबादत से इन्कार करेंगे और (उल्टे) उनके दुशमन हो जाएँगे (82)

(ऐ रसूल) क्या तुमने इसी बात को नहीं देखा कि हमने शैतान को काफ़िरों पर छोड़ रखा है कि वह उन्हें बहकाते रहते हैं (83)

तो (ऐ रसूल) तुम उन काफिरों पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो हम तो बस उनके लिए (अज़ाब) का दिन गिन रहे हैं (84)

कि जिस दिन परहेज़गारों को (ख़ुदाए) रहमान के (अपने) सामने मेहमानों की तरह तरह जमा करेंगे (85)

और गुनेहगारों को जहन्नुम की तरफ प्यासे (जानवरो की तरह हकाँएगे (86)

(उस दिन) ये लोग सिफारिश पर भी क़ादिर न होंगे मगर (वहाँ) जिस शख़्स ने अल्लाह से (सिफारिश का) एक़रा ले लिया हो (87)

और (यहूदी) लोग कहते हैं कि ख़ुदा ने (अज़ीज़ को) बेटा बना लिया है (88)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुमने इतनी बड़ी सख़्त बात अपनी तरफ से गढ़ के की है (89)

कि क़रीब है कि आसमान उससे फट पड़े और ज़मीन शिगाफता हो जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े (90)

इस बात से कि उन लोगों ने ख़ुदा के लिए बेटा क़रार दिया (91)

हालाँकि ख़ुदा के लिए ये किसी तरह शायाँ ही नहीं कि वह (किसी को अपना) बेटा बना ले (92)

सारे आसमान व ज़मीन में जितनी चीज़े हैं सब की सब ख़ुदा के सामने बन्दा ही बनकर आने वाली हैं उसने यक़ीनन सबको अपने (इल्म) के अहाते में घेर लिया है (93)

और सबको अच्छी तरह गिन लिया है (94)

और ये सब उसके सामने क़यामत के दिन अकेले (अकेले) हाज़िर होंगे (95)

बेशक जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए अनक़रीब ही ख़ुदा उन की मोहब्बत (लोगों के दिलों में) पैदा कर देगा (96)

(ऐ रसूल) हमने उस क़ुरान को तुम्हारी (अरबी) ज़ुबान में सिर्फ इसलिए आसान कर दिया है कि तुम उसके ज़रिए से परहेज़गारों को (जन्नत की) खुशख़बरी दो और (अरब की) झगड़ालू क़ौम को (अज़ाबे ख़ुदा से) डराओ (97)

और हमने उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर डाला भला तुम उनमें से किसी को (कहीं देखते हो) उसकी कुछ भनक भी सुनते हो (98)

20 सूरह ताहा

सूरह ताहा मक्के में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ पैतीस आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ता हा (रसूलअल्लाह) (1)

हमने तुम पर क़ुरान इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम (इस क़दर) मशक़्क़त उठाओ (2)

मगर जो शख़्स ख़ुदा से डरता है उसके लिए नसीहत (क़रार दिया है) (3)

(ये) उस शख़्स की तरफ़ से नाज़िल हुआ है जिसने ज़मीन और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को पैदा किया (4)

वही रहमान है जो अर्श पर (हुक्मरानी के लिए) आमादा व मुस्तईद है (5)

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ दोनों के बीच में है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है (6)

और अगर तू पुकार कर बात करे (तो भी आहिस्ता करे तो भी) वह यक़ीनन भेद और उससे ज़्यादा पोशीदा चीज़ को जानता है (7)

अल्लाह (वह माबूद है कि) उसके सिवा कोइ माबूद नहीं है (अच्छे-अच्छे) उसी के नाम हैं (8)

और (ऐ रसूल) क्या तुम तक मूसा की ख़बर पहुँची है कि जब उन्होंने दूर से आग देखी (9)

तो अपने घर के लोगों से कहने लगे कि तुम लोग (ज़रा यहीं) ठहरो मैंने आग देखी है क्या अजब है कि मैं वहाँ (जाकर) उसमें से एक अँगारा तुम्हारे पास ले आऊँ या आग के पास किसी राह का पता पा जाऊँ (10)

फिर जब मूसा आग के पास आए तो उन्हें आवाज आई (11)
कि ऐ मूसा बेशक मैं ही तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो क्योंकि तुम (इस वक़्त) तुआ (नामी) पाक़ीज़ा चटियल मैदान में हो (12)

और मैंने तुमको पैग़म्बरी के वास्ते मुन्तख़िब किया (चुन लिया) है तो जो कुछ तुम्हारी तरफ़ वही की जाती है उसे कान लगा कर सुनो (13)

इसमें शक नहीं कि मैं ही वह अल्लाह हूँ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ बराबर पढ़ा करो (14)

(क्योंकि) क़यामत ज़रूर आने वाली है और मैं उसे लामहौला छिपाए रखूँगा ताकि हर शख़्स (उसके ख़ौफ से नेकी करे) और वैसी कोशिश की है उसका उसे बदला दिया जाए (15)

तो (कहीं) ऐसा न हो कि जो शख़्स उसे दिल से नहीं मानता और अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा वह तुम्हें इस (फिक्र) से रोक दे तो तुम तबाह हो जाओगे (16)

और ऐ मूसा ये तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या चीज़ है (17)

अर्ज़ की ये तो मेरी लाठी है मैं उस पर सहारा करता हूँ और इससे अपनी बकरियों पर (और दरख़्तों की) पत्तियाँ झाड़ता हूँ और उसमें मेरे और भी मतलब हैं (18)

फ़रमाया ऐ मूसा उसको ज़रा ज़मीन पर डाल तो दो मूसा ने उसे डाल दिया (19)

तो फ़ौरन वह साँप बनकर दौड़ने लगा (ये देखकर मूसा भागे) (20)

तो फ़रमाया कि तुम इसको पकड़ लो और डरो नहीं मैं अभी इसकी पहली सी सूरत फिर किए देता हूँ (21)

और अपने हाथ को समेंट कर अपने बग़ल में तो कर लो (फिर देखो कि) वह बग़ैर किसी बीमारी के सफ़ेद चमकता दमकता हुआ निकलेगा ये दूसरा मौजिज़ा है (22)

(ये) ताकि हम तुमको अपनी (क़ुदरत की) बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाएँ (23)

अब तुम फ़िरआऊन के पास जाओ उसने बहुत सर उठाया है (24)

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार (मैं जाता तो हूँ) (25)

मगर तू मेरे लिए मेरे सीने को कुशादा फरमा (26)

और दिलेर बना और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे और मेरी ज़बान से लुक्नत की गिरह खोल दे (27)

ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझें और (28)

मेरे कीनेवालों में से मेरे भाई हारून (29)

को मेरा वज़ीर बोझ बटाने वाला बना दे (30)

उसके ज़रिए से मेरी पुश्त मज़बूत कर दे (31)

और मेरे काम में उसको मेरा शरीक बना (32)

ताकि हम दोनों (मिलकर) कसरत से तेरी तसबीह करें (33)

और कसरत से तेरी याद करें (34)

तू तो हमारी हालत देख ही रहा है (35)

फ़रमाया ऐ मूसा तुम्हारी सब दरख़्वास्तें मंज़ूर की गई (36)

और हम तो तुम पर एक बार और एहसान कर चुके हैं (37)

जब हमने तुम्हारी माँ को इलहाम किया जो अब तुम्हें "वही" के ज़रिए से बताया जाता है (38)

कि तुम इसे (मूसा को) सन्दूक़ में रखकर सन्दूक़ को दरिया में डाल दो फिर दरिया उसे ढकेल कर किनारे डाल देगा कि मूसा को मेरा दुशमन और मूसा का दुशमन (फ़िरआऊन) उठा लेगा और मैंने तुम पर अपनी मोहब्बत को डाल दिया (39)

जो देखता (प्यार करता) ताकि तुम मेरी ख़ास निगरानी में पाले पोसे जाओ (40)

(उस वक़्त) जब तुम्हारी बहन चली (और फिर उनके घर में आकर) कहने लगी कि कहो तो मैं तुम्हें ऐसी दाया बताऊँ कि जो इसे अच्छी तरह पाले तो(इस तदबीर से) हमने फिर तुमको तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी रहें (41)

और तुम्हारी (जुदाई पर) कुढ़े नहीं और तुमने एक शख़्स (क़िबती) को मार डाला था और सख़्त परेशान थे तो हमने तुमको (इस) ग़म से नजात दी और हमने तुम्हारा अच्छी तरह इम्तिहान कर लिया फिर तुम कई बरस तक मदयन के लोगों में जाकर रहे ऐ मूसा फिर तुम (उम्र के) एक अन्दाज़े पर आ गए नबूवत के क़ायल हुए (42)

और मैंने तुमको अपनी रिसालत के वास्ते मुन्तख़िब किया (43)

तुम अपने भाई समैत हमारे मौजिज़े लेकर जाओ और (देखो) मेरी याद में सुस्ती न करना (44)

तुम दोनों फिरआऊन के पास जाओ बेशक वह बहुत सरकश हो गया है (45)

फिर उससे (जाकर) नरमी से बातें करो ताकि वह नसीहत मान ले या डर जाए (46)

दोनों ने अर्ज़ की ऐ हमारे पालने वाले हम डरते हैं कि कहीं वह हम पर ज़्यादती (न) कर बैठे या ज़्यादा सरकशी कर ले (47)

फ़रमाया तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ (48)

ग़रज़ तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के रसूल हैं तो बनी इसराइल को हमारे साथ भेज दीजिए और उन्हें सताइए नहीं हम आपके पास आपके परवरदिगार का मौजिज़ा लेकर आए हैं और जो राहे रास्त की पैरवी करे उसी के लिए सलामती है (49)

हमारे पास ख़ुदा की तरफ से ये "वही" नाज़िल हुई है कि यक़ीनन अज़ाब उसी शख़्स पर है जो (ख़ुदा की आयतों को) झुठलाए (50)

और उसके हुक्म से मुँह मोड़े (ग़रज़ गए और कहा) फ़िरआऊन ने पूछा ऐ मूसा आख़िर तुम दोनों का परवरदिगार कौन है (51)

मूसा ने कहा हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसके (मुनासिब) सूरत अता फरमाई (52)

फिर उसी ने ज़िन्दगी बसर करने के तरीक़े बताए फ़िरआऊन ने पूछा भला अगले लोगों का हाल (तो बताओ) कि क्या हुआ (53)

मूसा ने कहा इन बातों का इल्म मेरे परवरदिगार के पास एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में (लिखा हुआ) है मेरा परवरदिगार न बहकता है न भूलता है (54)

वह वही है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) वास्ते ज़मीन को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें राहें निकाली और उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर (ख़ुदा फरमाता है कि) हम ही ने उस पानी के ज़रिए से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की घासे निकाली (55)

(ताकि) तुम ख़ुद भी खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ कुछ शक नहीं कि इसमें अक्लमन्दों के वास्ते (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं (56)

हमने इसी ज़मीन से तुम को पैदा किया और (मरने के बाद) इसमें लौटा कर लाएँगे और उसी से दूसरी बार (क़यामत के दिन) तुमको निकाल खड़ा करेंगे (57)

और मैंने फ़िरआऊन को अपनी सारी निशानियाँ दिखा दी (58)

इस पर भी उसने सबको झुठला दिया और न माना (और) कहने लगा ऐ मूसा क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो (59)

कि हम को हमारे मुल्क (मिस्र से) अपने जादू के ज़ोर से निकाल बाहर करो अच्छा तो (रहो) हम भी तुम्हारे सामने ऐसा जादू पेश करते हैं फिर तुम अपने और हमारे दरमियान एक वक्त मुक़र्रर करो कि न हम उसके ख़िलाफ करे और न तुम और मुक़ाबला एक साफ़ खुले मैदान में हो (60)

मूसा ने कहा तुम्हारे (मुक़ाबले) की मीयाद ज़ीनत (ईद) का दिन है और उस रोज़ सब लोग दिन चढ़े जमा किए जाँए (61)

उसके बाद फ़िरआऊन (अपनी जगह) लौट गया फिर अपने चलत्तर (जादू के सामान) जमा करने लगा (62)

फिर (मुक़ाबले को) आ मौजूद हुआ मूसा ने (फ़िरआऊनियों से) कहा तुम्हारा नास हो ख़ुदा पर झूठी-झूठी इफ़्तेरा परदाज़ियाँ न करो वरना वह अज़ाब (नाज़िल करके) इससे तुम्हारा मलया मेट कर छोड़ेगा (63)

और (याद रखो कि) जिसने इफ़्तेरा परदाज़ियाँ न की वह यकीनन नामुराद रहा उस पर वह लोग अपने काम में बाहम झगड़ने और सरगोशियाँ करने लगे (64)

(आख़िर) वह लोग बोल उठे कि ये दोनों यक़ीनन जादूगर हैं और चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुम लोगों को तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे अच्छे ख़ासे मज़हब को मिटा छोड़ें (65)

तो तुम भी ख़ूब अपने चलत्तर (जादू वग़ैरह) दुरूस्त कर लो फिर परा (सफ़) बाँध के (उनके मुक़ाबले में) आ पड़ो और जो आज डर रहा हो वही फायज़ुलहराम रहा (66)

ग़रज़ जादूगरों ने कहा (ऐ मूसा) या तो तुम ही (अपने जादू) फेंको और या ये कि पहले जो जादू फेंके वह हम ही हों (67)

मूसा ने कहा (मैं नहीं डालूँगा) बल्कि तुम ही पहले डालो (ग़रज़ उन्होंने अपने करतब दिखाए) तो बस मूसा को उनके जादू (के ज़ोर से) ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और उनकी छड़ियाँ दौड़ रही हैं (68)

तो मूसा ने अपने दिल में कुछ दहशत सी पाई (69)

हमने कहा (मूसा) इस से डरो नहीं यक़ीनन तुम ही वर रहोगे (70)

और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसे डाल तो दो कि जो करतब उन लोगों ने की है उसे हड़प कर जाए क्योंकि उन लोगों ने जो कुछ करतब की वह एक जादूगर की करतब है और जादूगर जहाँ जाए कामयाब नहीं हो सकता (71)

(ग़रज मूसा की लाटी ने) सब हड़प कर लिया (ये देखते ही) वह सब जादूगर सजदे में गिर पड़े (और कहने लगे) कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान ले आए (72)

फिरआऊन ने उन लोगों से कहा (हाए) इससे पहले कि हम तुमको इजाज़त दें तुम उस पर ईमान ले आए इसमें शक नहीं कि ये तुम सबका बड़ा (गुरू) है जिसने तुमको जादू सिखाया है तो मैं तुम्हारा एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव ज़रूर काट डालूँगा और तुम्हें यक़ीनन खुरमे की शाख़ों पर सूली चढ़ा दूँगा और उस वक्त तुमको (अच्छी तरह) मालूम हो जाएगा कि हम (दोनों) फरीक़ों से अज़ाब में ज़्यादा बढ़ा हुआ कौन और किसको क़याम ज़्यादा है (73)

जादूगर बोले कि ऐसे वाज़ेए व रौशन मौजिज़ात जो हमारे सामने आए उन पर और जिस (ख़ुदा) ने हमको पैदा किया उस पर तो हम तुमको किसी तरह तरजीह नहीं दे सकते तो जो तुझे करना हो कर गुज़र तो बस दुनिया की (इसी ज़रा) ज़िन्दगी पर हुकूमत कर सकता है (74)

(और कहा) हम तो अपने परवरदिगार पर इसलिए ईमान लाए हैं ताकि हमारे वास्ते सारे गुनाह माफ़ कर दे और (ख़ास कर) जिस पर तूने हमें मजबूर किया था और ख़ुदा ही सबसे बेहतर है (75)

और (उसी को) सबसे ज़्यादा क़याम है इसमें शक नहीं कि जो शख़्स मुजरिम होकर अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होगा तो उसके लिए यक़ीनन जहन्नुम (धरा हुआ) है जिसमें न तो वह मरे ही गा और न ज़िन्दा ही रहेगा (76)

(सिसकता रहेगा) और जो शख़्स उसके सामने ईमानदार हो कर हाज़िर होगा और उसने अच्छे-अच्छे काम भी किए होंगे तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए बड़े-बड़े बुलन्द रूतबे हैं (77)

वह सदाबहार बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह लोग उसमें हमेशा रहेंगे और जो गुनाह से पाक व पाकीज़ा रहे उस का यही सिला है (78)

और हमने मूसा के पास "वही" भेजी (79)

कि मेरे बन्दों (बनी इसराइल) को (मिस्र से) रातों रात निकाल ले जाओ फिर दरिया में (लाठी मारकर) उनके लिए एक सूखी राह निकालो और तुमको पीछा करने का न कोई ख़ौफ रहेगा न (डूबने की) कोई दहशत (80)

ग़रज़ फ़िरआऊन ने अपने लशकर समैत उनका पीछा किया फिर दरिया (के पानी का रेला) जैसा कुछ उन पर छाया गया वह छा गया (81)

और फ़िरआऊन ने अपनी क़ौम को गुमराह (करके हलाक) कर डाला और उनकी हिदायत न की (82)

ऐ बनी इसराइल हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन (के पंजे) से छुड़ाया और तुम से (कोहेतूर) के दाहिने तरफ का वायदा किया और हम ही ने तुम पर मन व सलवा नाज़िल किया (83)

और (फ़रमाया) कि हमने जो पाक व पाकीज़ा रोज़ी तुम्हें दे रखी है उसमें से खाओ (पियो) और उसमें (किसी क़िस्म की) शरारत न करो वरना तुम पर मेरा अज़ाब नाज़िल हो जाएगा और (याद रखो कि) जिस पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो वह यक़ीनन गुमराह (हलाक) हुआ (84)

और जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और अच्छे काम करे फिर साबित क़दम रहे तो हम उसको ज़रूर बख़्शने वाले हैं (85)

फिर जब मूसा सत्तर आदमियों को लेकर चले और ख़ुद बढ़ आए तो हमने कहा कि (ऐ मूसा तुमने अपनी क़ौम से आगे चलने में क्यों जल्दी की) (86)

ग़रज़ की वह भी तो मेरे ही पीछे चले आ रहे हैं और इसी लिए मैं जल्दी करके तेरे पास इसलिए आगे बढ़ आया हूँ ताकि तू (मुझसे) ख़ुश रहे (87)

फ़रमाया तो हमने तुम्हारे (आने के बाद) तुम्हारी क़ौम का इम्तिहान लिया और सामरी ने उनको गुमराह कर छोड़ा (88)

(तो मूसा) गुस्से में भरे पछताए हुए अपनी क़ौम की तरफ पलटे (89)

और आकर कहने लगे ऐ मेरी (क़म्बख़्त) क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने एक अच्छा वायदा (तौरेत देने का) न किया था (90)

तुम्हारे वायदे में अरसा लग गया या तुमने ये चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार का ग़ज़ब टूंट पड़े कि तुमने मेरे वायदे (ख़ुदा की परसतिश) के ख़िलाफ किया (91)

वह लोग कहने लगे हमने आपके वायदे के ख़िलाफ नहीं किया बल्कि (बात ये हुई कि फिरआऊन की) क़ौम के ज़ेवर के बोझे जो (मिस्र से निकलते वक़्त) हम पर लोग गए थे उनको हम लोगों ने (सामरी के कहने से आग में) डाल दिया फिर सामरी ने भी डाल दिया (92)

फिर सामरी ने उन लोगों के लिए (उसी ज़ेवर से) एक बछड़े की मूरत बनाई जिसकी आवाज़ भी बछड़े की सी थी उस पर बाज़ लोग कहने लगे यही तुम्हारा (भी) माबूद और मूसा का (भी) माबूद है मगर वह भूल गया है (93)

भला इनको इतनी भी न सूझी कि ये बछड़ा न तो उन लोगों को पलट कर उन की बात का जवाब ही देता है और न उनका ज़रर ही उस के हाथ में है और न नफ़ा (94)

और हारून ने उनसे पहले कहा भी था कि ऐ मेरी क़ौम तुम्हारा सिर्फ़ इसके ज़रिये से इम्तिहान किया जा रहा है और इसमें शक नहीं कि तम्हारा परवरदिगार (बस ख़ुदाए रहमान है) तो तुम मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो (95)

तो वह लोग कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास पलट कर न आएँ हम तो बराबर इसकी परसतिश पर डटे बैठे रहेंगे (96)

मूसा ने हारून की तरफ ख़िताब करके कहा ऐ हारून जब तुमने उनको देख लिया था गमुराह हो गए हैं तो तुम्हें मेरी पैरवी (क़ताल) करने को किसने मना किया (97)

तो क्या तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की (98)

हारून ने कहा ऐ मेरे माँजाए (भाई) मेरी दाढ़ी न पकडिऐ और न मेरे सर (के बाल) मैं तो उससे डरा कि (कहीं) आप (वापस आकर) ये (न) कहिए कि तुमने बनी इसराईल में फूट डाल दी और मेरी बात का भी ख़्याल न रखा (99)

तब सामरी से कहने लगे कि ओ सामरी तेरा क्या हाल है (100)

उसने (जवाब में) कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो औरों को न सूझी (जिबरील घोड़े पर सवार जा रहे थे) तो मैंने जिबरील फरिश्ते (के घोड़े) के निशाने क़दम की एक मुट्ठी (ख़ाक) की उठा ली फिर मैंने (बछड़ों के क़ालिब में) डाल दी (तो वह बोलेने लगा (101)

और उस वक़्त मुझे मेरे नफ्स ने यही सुझाया मूसा ने कहा चल (दूर हो) तेरे लिए (इस दुनिया की) ज़िन्दगी में तो (ये सज़ा है) तू कहता फ़िरेगा कि मुझे न छूना (वरना बुख़ार चढ़ जाएगा) और (आख़िरत में भी) यक़ीनी तेरे लिए (अज़ाब का) वायदा है कि हरगिज़ तुझसे ख़िलाफ़ न किया जाएगा और तू अपने माबूद को तो देख जिस (की इबादत) पर तू डट बैठा था कि हम उसे यक़ीनन जलाकर (राख) कर डालेंगे फिर हम उसे तितिर बितिर करके दरिया में उड़ा देगें (102)

तुम्हारा माबूद तो बस वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई और माबूद बरहक़ नहीं कि उसका इल्म हर चीज़ पर छा गया है (103)

(ऐ रसूल) हम तुम्हारे सामने यूँ वाक़ेयात बयान करते हैं जो गुज़र चुके और हमने ही तुम्हारे पास अपनी बारगाह से क़ुरान अता किया (104)

जिसने उससे मुँह फेरा वह क़यामत के दिन यक़ीनन (अपने बुरे आमाल का) बोझ उठाएगा (105)

और उसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बुरा बोझ है क़यामत के दिन ये लोग उठाए होंगे (106)

जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम उस दिन गुनाहगारों को (उनकी) आँखें पुतली (अन्धी) करके (आमने-सामने) जमा करेंगे (107)

(और) आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि (दुनिया या क़ब्र में) हम लोग (बहुत से बहुत) नौ दस दिन ठहरे होंगे (108)

जो कुछ ये लोग (उस दिन) कहेंगे हम ख़ूब जानते हैं कि जो इनमें सबसे ज़्यादा होशियार होगा बोल उठेगा कि तुम बस (बहुत से बहुत) एक दिन ठहरे होगे (109)

(और ऐ रसूल) तुम से लोग पहाड़ों के बारे में पूछा करते हैं (कि क़यामत के रोज़ क्या होगा) (110)

तो तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार बिल्कुल रेज़ा रेज़ा करके उड़ा डालेगा और ज़मीन को एक चटियल मैदान कर छोड़ेगा (111)

कि (ऐ शख़्स) न तो उसमें मोड़ देखेगा और न ऊँच-नीच (112)

उस दिन लोग एक पुकारने वाले इसराफ़ील की आवाज़ के पीछे (इस तरह सीधे) दौड़ पड़ेगे कि उसमें कुछ भी कज़ी न होगी और आवाज़े उस दिन ख़ुदा के सामने (इस तरह) घिघियाएगें कि तू घुनघुनाहट के सिवा और कुछ न सुनेगा (113)

उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न आएगी मगर जिसको ख़ुदा ने इजाज़त दी हो और उसका बोलना पसन्द करे जो कुछ उन लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे है (114)

(ग़रज़ सब कुछ) वह जानता है और ये लोग अपने इल्म से उसपर हावी नहीं हो सकते (115)

और (क़यामत में) सारी (ख़ुदाई के) का मुँह ज़िन्दा और बाक़ी रहने वाले ख़ुदा के सामने झुक जाएँगे और जिसने ज़ुल्म का बोझ (अपने सर पर) उठाया वह यक़ीनन नाकाम रहा (116)

और जिसने अच्छे-अच्छे काम किए और वह मोमिन भी है तो उसको न किसी तरह की बेइन्साफ़ी का डर है और न किसी नुक़सान का (117)
हमने उसको उसी तरह अरबी ज़बान का क़ुरान नाज़िल फ़रमाया और उसमें अज़ाब के तरह-तरह के वायदे बयान किए ताकि ये लोग परहेज़गार बनें या उनके मिजाज़ में इबरत पैदा कर दे (118)

पस (दो जहाँ का) सच्चा बादशाह ख़ुदा बरतर व आला है और (ऐ रसूल) क़ुरान के (पढ़ने) में उससे पहले कि तुम पर उसकी "वही" पूरी कर दी जाए जल्दी न करो और दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे इल्म को और ज़्यादा फ़रमा (119)

और हमने आदम से पहले ही एहद ले लिया था कि उस दरख़्त के पास न जाना तो आदम ने उसे तर्क कर दिया (120)

और हमने उनमें साबित व इस्तक़लाल न पाया और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया मगर शैतान ने इन्कार किया (121)

तो मैंने (आदम से कहा) कि ऐ आदम ये यक़ीनी तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुशमन है तो कहीं तुम दोनों को बेहिश्त से निकलवा न छोड़े तो तुम (दुनिया की) मुसीबत में फँस जाओ (122)

कुछ शक नहीं कि (बेहिश्त में) तुम्हें ये आराम है कि न तो तुम यहाँ भूके रहोगे और न नँगे (123)

और न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप खाओगे (124)

तो शैतान ने उनके दिल में वसवसा डाला (और) कहा ऐ आदम क्या मैं तम्हें (हमेशगी की ज़िन्दगी) का दरख़्त और वह सल्तनत जो कभी ज़ाएल न हो बता दूँ (125)

चुनान्चे दोनों मियाँ बीबी ने उसी में से कुछ खाया तो उनका आगा पीछा उनपर ज़ाहिर हो गया और दोनों बेहिश्त के (दरख़्त के) पत्ते अपने आगे पीछे पर चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी की (126)

तो (राहे सवाब से) बेराह हो गए इसके बाद उनके परवरदिगार ने बर गुज़ीदा किया (127)

फिर उनकी तौबा क़ुबूल की और उनकी हिदायत की फरमाया कि तुम दोनों बेहश्त से नीचे उतर जाओ तुम में से एक का एक दुशमन है फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुँचे तो (तुम) उसकी पैरवी करना क्योंकि जो शख़्स मेरी हिदायत पर चलेगा न तो गुमराह होगा और न मुसीबत में फँसेगा (128)
और जिस शख़्स ने मेरी याद से मुँह फेरा तो उसकी ज़िन्दगी बहुत तंगी में बसर होगी और हम उसको क़यामत के दिन अंधा बना के उठाएँगे (129)

वह कहेगा इलाही मैं तो (दुनिया में) आँख वाला था तूने मुझे अन्धा करके क्यों उठाया (130)

ख़ुदा फरमाएगा ऐसा ही (होना चाहिए) हमारी आयतें भी तो तेरे पास आई तो तू उन्हें भुला बैठा और इसी तरह आज तू भी भूला दिया जाएगा (131)

और जिसने (हद से) तजाविज़ किया और अपने परवरदिगार की आयतों पर इमान न लाया उसको ऐसी ही बदला देगें और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनी बहुत सख़्त और बहुत देर पा है (132)

तो क्या उन (एहले मक्का) को उस (ख़ुदा) ने ये नहीं बता दिया था कि हमने उनके पहले कितने लोगों को हलाक कर डाला जिनके घरों में ये लोग चलते फिरते हैं इसमें शक नहीं कि उसमें अक़्लमंदों के लिए (क़ुदरते ख़ुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं (133)

और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले ही एक वायदा और अज़ाब का) एक वक़्त मुअय्युन न होता तो (उनकी हरकतों से) फ़ौरन अज़ाब का आना लाज़मी बात थी (134)

(ऐ रसूल) जो कुछ ये कुफ़्फ़ार बका करते हैं तुम उस पर सब्र करो और आफ़ताब निकलने के क़ब्ल और उसके ग़ुरूब होने के क़ब्ल अपने परवरदिगार की हम्दोसना के साथ तसबीह किया करो और कुछ रात के वक़्तों में और दिन के किनारों में तस्बीह करो ताकि तुम निहाल हो जाओ (135)

और (ऐ रसूल) जो उनमें से कुछ लोगों को दुनिया की इस ज़रा सी ज़िन्दगी की रौनक़ से निहाल कर दिया है ताकि हम उनको उसमें आज़माएँ तुम अपनी नज़रें उधर न बढ़ाओ और (इससे) तुम्हारे परवरदिगार की रोज़ी (सवाब) कहीं बेहतर और ज़्यादा पाएदार है (136)

और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और तुम ख़ुद भी उसके पाबन्द रहो हम तुम से रोज़ी तो तलब करते नहीं (बल्कि) हम तो ख़ुद तुमको रोज़ी देते हैं और परहेज़गारी ही का तो अन्जाम बख़ैर है (137)

और (एहले मक्का) कहते हैं कि अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई मौजिज़ा हमारी मर्ज़ी के मुवाफिक़ क्यों नहीं लाते तो क्या जो (पेशीव गोइयाँ) अगली किताबों (तौरेत, इन्जील) में (इसकी) गवाह हैं वह भी उनके पास नहीं पहुँची (138)

और अगर हम उनको इस रसूल से पहले अज़ाब से हलाक कर डालते तो ज़रूर कहते कि ऐ हमारे पालने वाले तूने हमारे पास (अपना) रसूल क्यों न भेजा तो हम अपने ज़लील व रूसवा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी ज़रूर करते (139)

रसूल तुम कह दो कि हर शख़्स (अपने अन्जामकार का) मुन्तिज़र है तो तुम भी इन्तिज़ार करो फिर तो तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि सीधी राह वाले कौन हैं (और कज़ी पर कौन हैं) हिदायत याफ़्ता कौन है और गुमराह कौन है। (140)

21 सूरह अम्बिया

मक्का में नाज़िल हुई और उसकी एक सौ बारह आयतें हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

लोगों के पास उनका हिसाब (उसका वक़्त) आ पहुँचा और वह है कि गफ़लत में पड़े मुँह मोड़े ही जाते हैं (1)

जब उनके परवरदिगार की तरफ से उनके पास कोई नया हुक्म आता है तो उसे सिर्फ कान लगाकर सुन लेते हैं और (फिर उसका) हँसी खेल उड़ाते हैं (2)

उनके दिल (आख़िरत के ख़्याल से) बिल्कुल बेख़बर हैं और ये ज़ालिम चुपके-चुपके कानाफूसी किया करते हैं कि ये शख़्स (मोहम्मद कुछ भी नहीं) बस तुम्हारे ही सा आदमी है तो क्या तुम दीन व दानिस्ता जादू में फँसते हो (3)

(तो उस पर) रसूल ने कहा कि मेरा परवरदिगार जितनी बातें आसमान और ज़मीन में होती हैं ख़ूब जानता है (फिर क्यों कानाफूसी करते हो) और वह तो बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (4)

(उस पर भी उन लोगों ने इक्तिफ़ा न की) बल्कि कहने लगे (ये क़ुरान तो) ख़ाबहाय परीशाँ का मजमूआ है बल्कि उसने ख़ुद अपने जी से झूट-मूट गढ़ लिया है बल्कि ये शख़्स शायर है और अगर हक़ीकतन रसूल है) तो जिस तरह अगले पैग़म्बर मौजिज़ों के साथ भेजे गए थे (5)

उसी तरह ये भी कोई मौजिज़ा (जैसा हम कहें) हमारे पास भला लाए तो सही इनसे पहले जिन बस्तियों को तबाह कर डाला (मौजिज़े भी देखकर तो) ईमान न लाए (6)

तो क्या ये लोग ईमान लाएँगे और ऐ रसूल हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को (रसूल बनाकर) भेजा था कि उनके पास "वही" भेजा करते थे तो अगर तुम लोग ख़ुद नहीं जानते हो तो आलिमों से पूँछकर देखो (7)

और हमने उन (पैग़म्बरों) के बदन ऐसे नहीं बनाए थे कि वह खाना न खाएँ और न वह (दुनिया में) हमेशा रहने सहने वाले थे (8)

फिर हमने उन्हें (अपना अज़ाब का) वायदा सच्चा कर दिखाया (और जब अज़ाब आ पहुँचा) तो हमने उन पैग़म्बरों को और जिस जिसको चाहा छुटकारा दिया और हद से बढ़ जाने वालों को हलाक कर डाला (9)

हमने तो तुम लोगों के पास वह किताब (कुरान) नाज़िल की है जिसमें तुम्हारा (भी) ज़िक्रे (ख़ैर) है तो क्या तुम लोग (इतना भी) समझते (10)

और हमने कितनी बस्तियों को जिनके रहने वाले सरकश थे बरबाद कर दिया और उनके बाद दूसरे लोगों को पैदा किया (11)

तो जब उन लोगों ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो एका एकी भागने लगे (12)

(हमने कहा) भागो नहीं और उन्हीं बस्तियों और घरों में लौट जाओ जिनमें तुम चैन करते थे ताकि तुमसे कुछ पूछगछ की जाए (13)

वह लोग कहने लगे हाए हमारी शामत बेशक हम सरकश तो ज़रूर थे (14)

ग़रज़ वह बराबर यही पड़े पुकारा किए यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी हुयी खेती की तरह बिछा के ठन्डा करके ढेर कर दिया (15)

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है बेकार लगो नहीं पैदा किया (16)

अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो बेशक हम उसे अपनी तजवीज़ से बना लेते अगर हमको करना होता (मगर हमें शायान ही न था) (17)

बल्कि हम तो हक़ को नाहक़ (के सर) पर खींच मारते हैं तो वह बिल्कुल के सर को कुचल देता है फिर वह उसी वक्त नेस्तवेनाबूद हो जाता है और तुम पर अफ़सोस है कि ऐसी-ऐसी नाहक़ बातें बनाये करते हो (18)

हालाँकि जो लोग (फरिश्ते) आसमान और ज़मीन में हैं (सब) उसी के (बन्दे) हैं और जो (फरिश्ते) उस सरकार में हैं न तो वह उसकी इबादत की शेख़ी करते हैं और न थकते हैं (19)

रात और दिन उसकी तस्बीह किया करते हैं (और) कभी काहिली नहीं करते (20)
उन लोगों जो माबूद ज़मीन में बना रखे हैं क्या वही (लोगों को) ज़िन्दा करेंगे (21)

अगर बफ़रने मुहाल) ज़मीन व आसमान में ख़ुदा कि सिवा चन्द माबूद होते तो दोनों कब के बरबाद हो गए होते तो जो बातें ये लोग अपने जी से (उसके बारे में) बनाया करते हैं ख़ुदा जो अर्श का मालिक है उन तमाम ऐबों से पाक व पाकीज़ा है (22)

जो कुछ वह करता है उसकी पूछगछ नहीं हो सकती (23)

(हाँ) और उन लोगों से बाज़पुर्स होगी क्या उन लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर कुछ और माबूद बना रखे हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि भला अपनी दलील तो पेश करो जो मेरे (ज़माने में) साथ है उनकी किताब (क़ुरान) और जो लोग मुझ से पहले थे उनकी किताबें (तौरेत वग़ैरह) ये (मौजूद) हैं (उनमें ख़ुदा का शरीक बता दो) बल्कि उनमें से अक्सर तो हक़ (बात) को तो जानते ही नहीं (24)

तो (जब हक़ का ज़िक्र आता है) ये लोग मुँह फेर लेते हैं और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल भेजा तो उसके पास "वही" भेजते रहे कि बस हमारे सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं तो मेरी इबादत किया करो (25)

और (एहले मक्का) कहते हैं कि ख़ुदा ने (फरिश्तों को) अपनी औलाद (बेटियाँ) बना रखा है (हालाँकि) वह उससे पाक व पकीज़ा है बल्कि (वह फ़रिश्ते) (ख़ुदा के) मोअज़्ज़िज़ बन्दे हैं (26)

ये लोग उसके सामने बढ़कर बोल नहीं सकते और ये लोग उसी के हुक्म पर चलते हैं (27)

जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है (ग़रज़ सब कुछ) वह (ख़ुदा) जानता है और ये लोग उस शख़्स के सिवा जिससे अल्लाह राज़ी हो किसी की सिफारिश भी नहीं करते और ये लोग ख़ुद उसके ख़ौफ से (हर वक़्त) डरते रहते हैं (28)

और उनमें से जो कोई ये कह दे कि ख़ुदा नहीं (बल्कि) मैं माबूद हूँ तो वह (मरदूद बारगाह हुआ) हम उसको जहन्नुम की सज़ा देंगे और सरकशों को हम ऐसी ही सज़ा देते हैं (29)

जो लोग काफिर हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बस्ता (बन्द) थे तो हमने दोनों को शिगाफ़ता किया (खोल दिया) और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे (30)

और हम ही ने ज़मीन पर भारी बोझल पहाड़ बनाए ताकि ज़मीन उन लोगों को लेकर किसी तरफ झुक न पड़े और हम ने ही उसमें लम्बे-चौड़े रास्ते बनाए ताकि ये लोग अपने-अपने मंज़िलें मक़सूद को जा पहुँचे (31)

और हम ही ने आसमान को छत बनाया जो हर तरह महफ़ूज़ है और ये लोग उसकी आसमानी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं (32)

और वही वह (क़ादिरे मुत्तलिक़) है जिसने रात और दिन और आफ़ताब और माहताब को पैदा किया कि सब के सब एक (एक) आसमान में पैर कर चक्मर लगा रहे हैं (33)

और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले भी किसी फ़र्दे बशर को सदा की ज़िन्दगी नहीं दी तो क्या अगर तुम मर जाओगे तो ये लोग हमेशा जिया ही करेंगे (34)

(हर शख़्स एक न एक दिन) मौत का मज़ा चखने वाला है और हम तुम्हें मुसीबत व राहत में इम्तिहान की ग़रज़ से आज़माते हैं और (आख़िकार) हमारी ही तरफ लौटाए जाओगे (35)

और (ऐ रसूल) जब तुम्हें कुफ़्फ़ार देखते हैं तो बस तुमसे मसखरापन करते हैं कि क्या यही हज़रत हैं जो तुम्हारे माबूदों को (बुरी तरह) याद करते हैं हालाँकि ये लोग ख़ुद ख़ुदा की याद से इन्कार करते हैं (तो इनकी बेवक़ूफी पर हँसना चाहिए) (36)

आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ पैदा किया गया है मैं अनक़रीब ही तुम्हें अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ दिखाऊँगा तो तुम मुझसे जल्दी की (धूम) न मचाओ (37)

और लुत्फ़ तो ये है कि कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो ये क़यामत का वायदा कब (पूरा) होगा (38)

और जो लोग काफ़िर हो बैठे काश उस वक़्त की हालत से आगाह होते (कि जहन्नुम की आग में खड़े होंगे) और न अपने चेहरों से आग को हटा सकेंगे और न अपनी पीठ से और न उनकी मदद की जाएगी (39)

(क़यामत कुछ जता कर तो आने से रही) बल्कि वह तो अचानक उन पर आ पड़ेगी और उन्हें हक्का बक्का कर देगी फिर उस वक़्त उसमें न उसके हटाने की मजाल होगी और न उन्हें ही दी जाएगी (40)

और (ऐ रसूल) कुछ तुम ही नहीं तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया जा चुका है तो उन पैग़म्बरों से मसखरापन करने वालों को उस सख़्त अज़ाब ने आ घेर लिया जिसकी वह हँसी उड़ाया करते थे (41)

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि ख़ुदा (के अज़ाब) से (बचाने में) रात को या दिन को तुम्हारा

कौन पहरा दे सकता है उस पर डरना तो दर किनार बल्कि ये लोग अपने परवरदिगार की याद से मुँह फेरते हैं (42)

क्या हमरो सिवा उनके कुछ और परवरदिगार हैं कि जो उनको (हमारे अज़ाब से) बचा सकते हैं (वह क्या बचाएँगे) ये लोग ख़ुद अपनी आप तो मदद कर ही नहीं सकते और न हमारे अज़ाब से उन्हें पनाह दी जाएगी (43)

बल्कि हम ही ने उनको और उनके बुर्ज़ुगों को आराम व चैन रहा यहाँ तक कि उनकी उम्रें बढ़ गई तो फिर क्या ये लोग नहीं देखते कि हम रूए ज़मीन को चारों तरफ से क़ब्ज़ा करते और उसको फतेह करते चले आते हैं तो क्या (अब भी यही लोग कुफ़्फ़ारे मक्का) ग़ालिब और वर हैं (44)
(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस तुम लोगों को "वही" के मुताबिक़ (अज़ाब से) डराता हूँ (मगर तुम लोग गोया बहरे हो) और बहरों को जब डराया जाता है तो वह पुकारने ही को नहीं सुनते (डरें क्या ख़ाक) (45)

और (ऐ रसूल) अगर कहीं उनको तुम्हारे परवरदिगार के अज़ाब की ज़रा सी हवा भी लग गई तो वे सख़्त! बोल उठे हाय अफसोस वाक़ई हम ही ज़ालिम थे (46)

और क़यामत के दिन तो हम (बन्दों के भले बुरे आमाल तौलने के लिए) इन्साफ़ की तराज़ू में खड़ी कर देंगे तो फिर किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का (अमल) होगा तो तुम उसे ला हाज़िर करेंगे और हम हिसाब करने के वास्ते बहुत काफ़ी है (47)

और हम ही ने यक़ीनन मूसा और हारून को (हक़ व बातिल की) जुदा करने वाली किताब (तौरेत) और परहेज़गारों के लिए अज़्सरतापा बनूँ और नसीहत अता की (48)

जो बे देखे अपने परवरदिगार से ख़ौफ खाते हैं और ये लोग रोज़े क़यामत से भी डरते हैं (49)

और ये (क़ुरान भी) एक बाबरकत तज़किरा है जिसको हमने उतारा है तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते (50)

और इसमें भी शक नहीं कि हमने इबराहीम को पहले ही से फ़हेम सलीम अता की थी और हम उन (की हालत) से ख़ूब वाक़िफ थे (51)

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा ये मूर्ते जिनकी तुम लोग मुजाबिरी करते हो आख़िर क्या (बला) है (52)

वह लोग बोले (और तो कुछ नहीं जानते मगर) अपने बड़े बूढ़ों को इनही की परसतिश करते देखा है (53)

इबराहीम ने कहा यक़ीनन तुम भी और तुम्हारे बुर्ज़ुग भी खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे (54)
वह लोग कहने लगे तो क्या तुम हमारे पास हक़ बात लेकर आए हो या तुम भी (यूँ ही) दिल्लगी करते हो (55)

इबराहीम ने कहा मज़ाक नहीं ठीक कहता हूँ कि तुम्हारे माबूद व बुत नहीं बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमान व ज़मीन का मालिक है जिसने उनको पैदा किया और मैं ख़ुद इस बात का तुम्हारे सामने गवाह हूँ (56)

और अपने जी में कहा ख़ुदा की क़सम तुम्हारे पीठ फेरने के बाद में तुम्हारे बुतों के साथ एक चाल चलूँगा (57)

चुनान्चे इबराहीम ने उन बुतों को (तोड़कर) चकनाचूर कर डाला मगर उनके बड़े बुत को (इसलिए रहने दिया) ताकि ये लोग ईद से पलटकर उसकी तरफ रूजू करें (58)

(जब कुफ़्फ़ार को मालूम हुआ) तो कहने लगे जिसने ये गुस्ताख़ी हमारे माबूदों के साथ की है उसने यक़ीनी बड़ा ज़ुल्म किया (59)

(कुछ लोग) कहने लगे हमने एक नौजवान को जिसको लोग इबराहीम कहते हैं उन बुतों का (बुरी तरह) ज़िक्र करते सुना था (60)

लोगों ने कहा तो अच्छा उसको सब लोगों के सामने (गिरफ़्तार करके) ले आओ ताकि वह (जो कुछ कहें) लोग उसके गवाह रहें (61)

(ग़रज़ इबराहीम आए) और लोगों ने उनसे पूछा कि क्यों इबराहीम क्या तुमने माबूदों के साथ ये हरकत की है (62)

इबराहीम ने कहा बल्कि ये हरकत इन बुतों (ख़ुदाओं) के बड़े (ख़ुदा) ने की है तो अगर ये बुत बोल सकते हों तो उनही से पूछ देखो (63)

इस पर उन लोगों ने अपने जी में सोचा तो (एक दूसरे से) कहने लगे बेशक तुम ही लोग ख़ुद बर सरे नाहक़ हो (64)

फिर उन लोगों के सर इसी गुमराही में झुका दिए गए (और तो कुछ बन न पड़ा मगर ये बोले) तुमको तो अच्छी तरह मालूम है कि ये बुत बोला नहीं करते (65)

(फिर इनसे क्या पूछे) इबराहीम ने कहा तो क्या तुम लोग ख़ुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ों की परसतिश करते हो जो न तुम्हें कुछ नफा ही पहुँचा सकती है और न तुम्हारा कुछ नुक़सान ही कर सकती है (66)

तफ है तुम पर उस चीज़ पर जिसे तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते (67)

(आख़िर) वह लोग (बाहम) कहने लगे कि अगर तुम कुछ कर सकते हो तो इबराहीम को आग में जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो (68)

(ग़रज़) उन लोगों ने इबराहीम को आग में डाल दिया तो हमने फ़रमाया ऐ आग तू इबराहीम पर बिल्कुल ठन्डी और सलामती का बाइस हो जा (69)
(कि उनको कोई तकलीफ़ न पहुँचे) और उन लोगों में इबराहीम के साथ चालबाज़ी करनी चाही थी तो हमने इन सब को नाकाम कर दिया (70)
और हम ने ही इबराहीम और लूत को (सरकशों से) सही व सालिम निकालकर इस सर ज़मीन (शाम बैतुलमुक़द्दस) में जा पहुँचाया जिसमें हमने सारे जहाँन के लिए तरह-तरह की बरकत अता की थी (71)
और हमने इबराहीम को इनाम में इसहाक़ (जैसा बैटा) और याक़ूब (जैसा पोता) इनायत फरमाया हमने सबको नेक बख़्त बनाया (72)

और उन सबको (लोगों का) पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से (उनकी) हिदायत करते थे और हमने उनके पास नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की "वही" भेजी थी और ये सब के सब हमारी ही इबादत करते थे (73)

और लूत को भी हम ही के फ़हमे सलीम और नबूवत अता की और हम ही ने उस बस्ती से जहाँ के लोग बदकारियाँ करते थे नजात दी इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बदकार आदमी थे (74)

और हमने लूत को अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया इसमें शक नहीं कि वह नेकोंकार बन्दों में से थे (75)

और (ऐ रसूल लूत से भी) पहले (हमने) नूह को नबूवत पर फ़ायज़ किया जब उन्होंने (हमको)

आवाज़ दी तो हमने उनकी (दुआ) सुन ली फिर उनको और उनके साथियों को (तूफ़ान की) बड़ी सख़्त मुसीबत से नजात दी (76)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनके मुक़ाबले में उनकी मदद की बेशक ये लोग (भी) बहुत बुरे लोग थे तो हमने उन सबको डुबो मारा (77)

और (ऐ रसूल इनको) दाऊद और सुलेमान का (वाक्या याद दिलाओ) जब ये दोनों एक खेती के बारे में जिसमें रात के वक्त कुछ लोगों की बकरियाँ (घुसकर) चर गई थी फैसला करने बैठे और हम उन लोगों के क़िस्से को देख रहे थे (कि बाहम इख़्तेलाफ़ हुआ) (78)

तो हमने सुलेमान को (इसका सही फ़ैसला समझा दिया) और (यूँ तो) सबको हम ही ने फहमे सलीम और इल्म अता किया और हम ही ने पहाड़ों को दाऊद का ताबेए बना दिया था कि उनके साथ (खुदा की) तस्बीह किया करते थे और परिन्दों को (भी ताबेए कर दिया था) और हम ही (ये अज़ाब) किया करते थे (79)

और हम ही ने उनको तुम्हारी जंगी पोशिश (ज़िराह) का बनाना सिखा दिया ताकि तुम्हें (एक दूसरे के) वार से बचाए तो क्या तुम (अब भी) उसके शुक्रगुज़ार बनोगे (80)

और (हम ही ने) बड़े ज़ोरों की हवा को सुलेमान का (ताबेए कर दिया था) कि वह उनके हुक्म से इस सरज़मीन (बैतुलमुक़द्दस) की तरफ चला करती थी जिसमें हमने तरह-तरह की बरकतें अता की थी और हम तो हर चीज़ से ख़ूब वाकिफ़ थे (और) है (81)

और जिन्नात में से जो लोग (समन्दर में) ग़ोता लगाकर (जवाहरात निकालने वाले) थे और उसके अलावा और काम भी करते थे (सुलेमान का ताबेए कर दिया था) और हम ही उनके निगेहबान थे (82)

(कि भाग न जाएँ) और (ऐ रसूल) अय्यूब (का क़िस्सा याद करो) जब उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (अल्लाह वन्द) बीमारी तो मेरे पीछे लग गई है और तू तो सब रहम करने वालों से (बढ़ कर है मुझ पर तरस खा) (83)

तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल की तो हमने उनका जो कुछ दर्द दुख था दफ़ा कर दिया और उन्हें उनके लड़के वाले बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी महज़ अपनी ख़ास मेहरबानी से और इबादत करने वालों की इबरत के वास्ते अता किए (84)

और (ऐ रसूल) इसमाईल और इदरीस और जुलकिफ.ल (के वाक़यात से याद करो) ये सब साबिर बन्दे थे (85)

और हमने उन सबको अपनी (ख़ास) रहमत में दाख़िल कर लिया बेशक ये लोग नेक बन्दे थे (86)

और जुन्नून (यूनुस को याद करो) जबकि गुस्से में आकर चलते हुए और ये ख़्याल न किया कि हम उन पर रोज़ी तंग न करेंगे (तो हमने उन्हें मछली के पेट में पहुँचा दिया) तो (घटाटोप) अँधेरे में (घबराकर) चिल्ला उठा कि (परवरदिगार) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक मैं कुसूरवार हूँ (87)

तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल की और उन्हें रंज से नजात दी और हम तो ईमानवालों को यूँ ही नजात दिया करते हैं (88)

और ज़करिया (को याद करो) जब उन्होंने (मायूस की हालत में) अपने परवरदिगार से दुआ की ऐ मेरे पालने वाले मुझे तन्हा (बे औलाद) न छोड़ और तू तो सब वारिसों से बेहतर है (89)

तो हमने उनकी दुआ सुन ली और उन्हें यहया सा बेटा अता किया और हमने उनके लिए उनकी बीबी को अच्छी बता दिया इसमें शक नहीं कि ये सब नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको बड़ी रग़बत और ख़ौफ के साथ पुकारा करते थे और हमारे आगे गिड़गिड़ाया करते थे (90)

और (ऐ रसूल) उस बीबी को (याद करो) जिसने अपनी अज़्मत की हिफाज़त की तो हमने उन (के पेट) में अपनी तरफ से रूह फूँक दी और उनको और उनके बेटे (ईसा) को सारे जहाँन के वास्ते (अपनी क़ुदरत की) निशानी बनाया (91)

बेशक ये तुम्हारा दीन (इस्लाम) एक ही दीन है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो मेरी ही इबादत करो (92)

और लोगों ने बाहम (इख़्तेलाफ़ करके) अपने दीन को टुकड़े -टुकड़े कर डाला (हालाँकि) वह सब के सब हिरफिर के हमारे ही पास आने वाले हैं (93)

(उस वक्त फैसला हो जाएगा कि) तो जो शख़्स अच्छे-अच्छे काम करेगा और वह ईमानवाला भी हो तो उसकी कोशिश अकारत न की जाएगी और हम उसके आमाल लिखते जाते हैं (94)

और जिस बस्ती को हमने तबाह कर डाला मुमकिन नहीं कि वह लोग क़यामत के दिन हिरफिर के से (हमारे पास) न लौटे (95)

बस इतना (तवक्कुफ़ तो ज़रूर होगा) कि जब याजूज माजूज (सद्दे सिकन्दरी) की क़ैद से खोल दिए जाएँगे और ये लोग (ज़मीन की) हर बुलन्दी से दौड़ते हुए निकल पड़े (96)

और क़यामत का सच्चा वायदा नज़दीक आ जाए तो फिर काफिरों की आँखें एक दम से पथरा दी जाएँ (और कहने लगे) हाय हमारी शामत कि हम तो इस (दिन) से ग़फ़लत ही में (पड़े) रहे बल्कि (सच तो यूँ है कि अपने ऊपर) हम आप ज़ालिम थे (97)

(उस दिन किहा जाएगा कि ऐ कुफ़्फ़ार) तुम और जिस चीज़ की तुम ख़ुदा के सिवा परसतिश करते थे यक़ीनन जहन्नुम की ईधन (जलावन) होंगे (और) तुम सबको उसमें उतरना पड़ेगा (98)

अगर ये (सच्चे) माबूद होते तो उन्हें दोज़ख़ में न जाना पड़ता और (अब तो) सबके सब उसी में हमेशा रहेंगे (99)

उन लोगों की दोज़ख़ में चिंघाड़ होगी और ये लोग (अपने शोर व ग़ुल में) किसी की बात भी न सुन सकेंगे (100)

ज़बान अलबत्ता जिन लोगों के वास्ते हमारी तरफ से पहले ही भलाई (तक़दीर में लिखी जा चुकी) वह लोग दोज़ख़ से दूर ही दूर रखे जाएँगे (101)

(यहाँ तक) कि ये लोग उसकी भनक भी न सुनेंगे और ये लोग हमेशा अपनी मनमाँगी मुरादों में (चैन से) रहेंगे (102)

और उनको (क़यामत का) बड़े से बड़ा ख़ौफ़ भी दहशत में न लाएगा और फ़रिश्ते उन से ख़ुशी-ख़ुशी मुलाक़ात करेंगे और ये ख़ुशख़बरी देंगे कि यही वह तुम्हारा (ख़ुशी का) दिन है जिसका (दुनिया में) तुमसे वायदा किया जाता था (103)

(ये) वह दिन (होगा) जब हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जिस तरह ख़तों का तूमार लपेटा जाता है जिस तरह हमने (मख़लूक़ात को) पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) दोबारा (पैदा) कर छोड़ेगें (ये वह) वायदा (है जिसका करना) हम पर (लाज़िम) है और हम उसे ज़रूर करके रहेंगे (104)

और हमने तो नसीहत (तौरेत) के बाद यक़ीनन जुबूर में लिख ही दिया था कि रूए ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे (105)

इसमें शक नहीं कि इसमें इबादत करने वालों के लिए (एहकामें ख़ुदा की) तबलीग़ है (106)

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमको सारे दुनिया जहाँन के लोगों के हक़ में अज़सरतापा रहमत बनाकर भेजा (107)

तुम कह दो कि मेरे पास तो बस यही "वही" आई है कि तुम लोगों का माबूद बस यकता ख़ुदा है तो क्या तुम (उसके) फरमाबरदार बन्दे बनते हो (108)

फिर अगर ये लोग (उस पर भी) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मैंने तुम सबको यकसाँ ख़बर कर दी है और मैं नहीं जानता कि जिस (अज़ाब) का तुमसे वायदा किया गया है क़रीब आ पहुँचा या (अभी) दूर है (109)

इसमें शक नहीं कि वह उस बात को भी जानता है जो पुकार कर कही जाती है और जिसे तुम लोग छिपाते हो उससे भी ख़ूब वाक़िफ है (110)

और मैं ये भी नहीं जानता कि शायद ये (ताख़ीरे अज़ाब तुम्हारे) वास्ते इम्तिहान हो और एक मुअय्युन मुद्दत तक (तुम्हारे लिए) चैन हो (111)

(आख़िर) रसूल ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले तू ठीक-ठीक मेरे और काफिरों के दरम्यिान फैसला कर दे और हमार परवरदिगार बड़ा मेहरबान है कि उसी से इन बातों में मदद माँगी जाती है जो तुम लोग बयान करते हो (112)

22 सूरह हज

सूरह हज मक्का में नाज़िल हुई और उसकी अठहत्तर आयते हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ लोगों अपने परवरदिगार से डरते रहो (क्योंकि) क़यामत का ज़लज़ला (कोई मामूली नहीं) एक बड़ी (सख़्त) चीज़ है (1)

जिस दिन तुम उसे देख लोगे तो हर दूध पिलाने वाली (डर के मारे) अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जायेगी और सारी हामला औरते अपने-अपने हमल (बेहिश्त से) गिरा देगी और (घबराहट में) लोग तुझे मतवाले मालूम होंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं हैं बल्कि ख़ुदा का अज़ाब बहुत सख़्त है कि लोग बदहवास हो रहे हैं (2)

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बग़ैर जाने ख़ुदा के बारे में (ख़्वाह मख़्वाह) झगड़ते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं (3)

जिन (की पेशानी) के ऊपर (ख़ते तक़दीर से) लिखा जा चुका है कि जिसने उससे दोस्ती की हो तो ये यक़ीनन उसे गुमराह करके छोड़ेगा और दोज़ख़ के अज़ाब तक पहुँचा देगा (4)

लोगों अगर तुमको (मरने के बाद) दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फ़े से उसके बाद जमे हुए ख़ून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा (सूडौल हो) या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर करें (फिर तुम्हारा दोबारा ज़िन्दा) करना क्या मुश्किल है और हम औरतों के पेट में जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर (तुम्हें पालते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो (क़ब्ल बुढ़ापे के) मर जाते हैं और तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो नाकारा ज़िन्दगी बुढ़ापे तक फेर लाए हैं जातें ताकि समझने के बाद सठिया के कुछ भी (ख़ाक) न समझ सके और तो ज़मीन को मुर्दा (बेकार उफ़तादा) देख रहा है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने और उभरने लगती है और हर तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उगती है तो ये क़ुदरत के तमाशे इसलिए दिखाते हैं ताकि तुम जानो (5)

कि बेशक ख़ुदा बरहक़ है और (ये भी कि) बेशक वही मुर्दों को जिलाता है और वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है (6)

और क़यामत यक़ीनन आने वाली है इसमें कोई शक नहीं और बेशक जो लोग क़ब्रों में हैं उनको ख़ुदा दोबारा ज़िन्दा करेगा (7)

और लोगों में से कुछ ऐसे भी है जो बेजाने बूझे बे हिदायत पाए बग़ैर रौशन किताब के (जो उसे राह बताए) ख़ुदा की आयतों से मुँह मोडे (8)

(ख़्वाहमख़्वाह) ख़ुदा के बारे में लड़ने मरने पर तैयार है ताकि (लोगों को) अल्लाह की राह बहका दे ऐसे (नाबकार) के लिए दुनिया में (भी) रूसवाई है और क़यामत के दिन (भी) हम उसे जहन्नुम के अज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे (9)

और उस वक़्त उससे कहा जाएगा कि ये उन आमाल की सज़ा है जो तेरे हाथों ने पहले से किए हैं और बेशक ख़ुदा बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म नहीं करता (10)

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो एक किनारे पर (खड़े होकर) ख़ुदा की इबादत करता है तो अगर उसको कोई फायदा पहुँच गया तो उसकी वजह से मुतमईन हो गया और अगर कहीं उस कोई मुसीबत छू भी गयी तो (फौरन) मुँह फेर के (कुफ़्र की तरफ़) पलट पड़ा उसने दुनिया और आख़ेरत (दोनों) का घाटा उठाया यही तो सरीही घाटा है (11)

ख़ुदा को छोड़कर उन चीज़ों को (हाजत के वक़्त) बुलाता है जो न उसको नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं और न कुछ नफा ही पहुँचा सकते हैं (12)

यही तो पल्ले दरने की गुमराही है और उसको अपनी हाजत रवाई के लिए पुकारता है जिस का नुक़सान उसके नफे से ज़्यादा क़रीब है बेशक ऐसा मालिक भी बुरा और ऐसा रफीक़ भी बुरा (13)

बेशक जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको (ख़ुदा बेहश्त के) उन (हरे-भरे) बाग़ात में ले जाकर दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होगीं बेशक ख़ुदा जो चाहता है करता है (14)

जो शख़्स (ग़ुस्से में) ये बदगुमानी करता है कि दुनिया और आख़ेरत में ख़ुदा उसकी हरग़िज मदद न करेगा तो उसे चाहिए कि आसमान तक रस्सी ताने (और अपने गले में फाँसी डाल दे) फिर उसे काट दे (ताकि घुट कर मर जाए) फिर देखिए कि जो चीज़ उसे गुस्से में ला रही थी उसे उसकी तद्बीर दूर दफ़ा कर देती है (15)

(या नहीं) और हमने इस क़ुरान को यूँ ही वाज़ेए व रौशन निशानियाँ (बनाकर) नाज़िल किया और बेशक ख़ुदा जिसकी चाहता है हिदायत करता है (16)

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया (मुसलमान) और यहूदी और लामज़हब लोग और नुसैरा और मजूसी (आतिशपरस्त) और मुशरेकीन (कुफ़्फ़ार) यक़ीनन ख़ुदा उन लोगों के दरमियान क़यामत के दिन (ठीक ठीक) फ़ैसला कर देगा इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ को देख रहा है (17)

क्या तुमने इसको भी नहीं देखा कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं और आफताब और माहताब और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चारपाए (ग़रज़ कुल मख़लूक़ात) और आदमियों में से बहुत से लोग सब ख़ुदा ही को सजदा करते हैं और बहुतेरे ऐसे भी हैं जिन पर नाफ़रमानी की वजह से अज़ाब का (का आना) लाज़िम हो चुका है और जिसको ख़ुदा ज़लील करे फिर उसका कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है करता है (18) सजदा 6

ये दोनों (मोमिन व काफिर) दो फरीक़ हैं आपस में अपने परवरदिगार के बारे में लड़ते हैं ग़रज़ जो लोग काफ़िर हो बैठे उनके लिए तो आग के कपड़े क़ेता किए गए हैं (वह उन्हें पहनाए जाएँगें और) उनके सरों पर खौलता हुआ पानी उँडेला जाएगा (19)

जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (आँतें वग़ैरह) और खालें सब गल जाएँगी (20)

और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे (21)

कि जब सदमें के मारे चाहेंगे कि दोज़ख़ से निकल भागें तो (गुर्ज़ मार के) फिर उसके अन्दर ढकेल दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) जलाने वाले अज़ाब के मज़े चखो (22)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम भी किए उनको ख़ुदा बेहश्त के ऐसे हरे-भरे बाग़ों में दाखि़ल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे जारी होगी उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती (के हार) से सँवारा जाएगा और उनका लिबास वहाँ रेशमी होगा (23)

और (ये इस वजह से कि दुनिया में) उन्हें अच्छी बात (कलमाए तौहीद) की हिदायत की गई और उन्हें सज़ावारे हम्द (ख़ुदा) का रास्ता दिखाया गया (24)

बेशक जो लोग काफिर हो बैठे और ख़ुदा की राह से और मस्जिदें मोहतरम (ख़ानए काबा) से जिसे हमने सब लोगों के लिए (माबद) बनाया है (और) इसमें शहरी और बेरूनी सबका हक़ बराबर है (लोगों को) रोकते हैं (उनको) और जो शख़्स इसमें शरारत से गुमराही करे उसको हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखा देंगे (25)

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब हमने इबराहीम के ज़रिये से इबरहीम के वास्ते ख़ानए काबा की जगह ज़ाहिर कर दी (और उनसे कहा कि) मेरा किसी चीज़ को शरीक न बनाना और मेरे घर को तवाफ और क़याम और रूकू सुजूद करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखना (26)

और लोगों को हज की ख़बर कर दो कि लोग तुम्हारे पास (जूक़ दर जूक़) ज़्यादा और हर तरह की दुबली (सवारियों पर जो राह दूर दराज़ तय करके आयी होगी चढ़-चढ़ के) आ पहुँचेगें (27)

ताकि अपने (दुनिया व आख़ेरत के) फायदो पर फायज़ हों और ख़ुदा ने जो जानवर चारपाए उन्हें अता फ़रमाए उनपर (ज़िबाह के वक्त) चन्द मुअय्युन दिनों में ख़ुदा का नाम लें तो तुम लोग क़ुरबानी के गोश्त ख़ुद भी खाओ और भूखे मोहताज को भी खिलाओ (28)

फिर लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी (बदन की) कसाफ़त दूर करें और अपनी नज़्रें पूरी करें और क़दीम (इबादत) ख़ानए काबा का तवाफ करें यही हुक्म है (29)

और इसके अलावा जो शख़्स ख़ुदा की हुरमत वाली चीज़ों की ताज़ीम करेगा तो ये उसके पवरदिगार के यहाँ उसके हक़ में बेहतर है और उन जानवरों के अलावा जो तुमसे बयान किए जाँएगे कुल चारपाए तुम्हारे वास्ते हलाल किए गए तो तुम नापाक बुतों से बचे रहो और लग़ो बातें गाने वग़ैरह से बचे रहो (30)

निरे खरे अल्लाह के होकर (रहो) उसका किसी को शरीक न बनाओ और जिस शख़्स ने (किसी को) ख़ुदा का शरीक बनाया तो गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा फिर उसको (या तो दरम्यिान ही से) कोई (मुरदा ख़्ववार) चिड़िया उचक ले गई या उसे हवा के झोंके ने बहुत दूर जा फेंका (31)

ये (याद रखो) और जिस शख़्स ने ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम की तो कुछ शक नहीं कि ये भी दिलों की परहेज़गारी से हासिल होती है (32)

और इन चार पायों में एक मुअय्युन मुद्दत तक तुम्हार लिये बहुत से फायदें हैं फिर उनके ज़िबाह होने की जगह क़दीम (इबादत) ख़ानए काबा है (33)

और हमने तो हर उम्मत के वास्ते क़ुरबानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है ताकि जो मवेशी चारपाए ख़ुदा ने उन्हें अता किए हैं उन पर (ज़िबाह के वक्त) ख़ुदा का नाम ले ग़रज़ तुम लोगों का माबूद (वही) यकता ख़ुदा है तो उसी के फरमाबरदार बन जाओ (34)

और (ऐ रसूल हमारे) गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को (बेहश्त की) ख़ुशख़बरी दे दो ये वह हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल सहम जाते हैं और जब उनपर कोई मुसीबत आ पड़े तो सब्र करते हैं और नमाज़ पाबन्दी से अदा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं (35)

और क़ुरबानी (मोटे गदबदे) ऊँट भी हमने तुम्हारे वास्ते ख़ुदा की निशानियों में से क़रार दिया है इसमें तुम्हारी बहुत सी भलाईयाँ हैं फिर उनका तांते का तांता बाँध कर ज़िबाह करो और उस वक़्त उन पर ख़ुदा का नाम लो फिर जब उनके दस्त व बाजू काटकर गिर पड़े तो उन्हीं से तुम ख़ुद भी खाओ और केनाअत पेशा फकीरों और माँगने वाले मोहताजों (दोनों) को भी खिलाओ हमने यूँ इन जानवरों को तुम्हारा ताबेए कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो (36)

ख़ुदा तक न तो हरगिज़ उनके गोश्त ही पहुँचेगे और न ख़ून मगर (हाँ) उस तक तुम्हारी परहेज़गारी अलबत्ता पहुँचेगी अल्लाह ने जानवरों को (इसलिए) यूँ तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है ताकि जिस तरह ख़ुदा ने तुम्हें बनाया है उसी तरह उसकी बड़ाई करो (37)

और (ऐ रसूल) नेकी करने वालों को (हमेशा की) ख़ुशख़बरी दे दो इसमें शक नहीं कि ख़ुदा ईमानवालों से कुफ़्फ़ार को दूर दफा करता रहता है ख़ुदा किसी बददयानत नाशुक्रे को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (38)

जिन (मुसलमानों) से (कुफ़्फ़ार) लड़ते थे चूँकि वह (बहुत) सताए गए उस वजह से उन्हें भी (जिहाद) की इजाज़त दे दी गई और ख़ुदा तो उन लोगों की मदद पर यक़ीनन क़ादिर (वत वाना) है (39)

ये वह (मज़लूम हैं जो बेचारे) सिर्फ इतनी बात कहने पर कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है (नाहक़) अपने-अपने घरों से निकाल दिए गये और अगर ख़ुदा लोगों को एक दूसरे से दूर दफा न करता रहता तो गिरजे और यहूदियों के इबादत ख़ाने और मजूस के इबादतख़ाने और मस्जिद जिनमें कसरत से ख़ुदा का नाम लिया जाता है कब के कब ढहा दिए गए होते और जो शख़्स ख़ुदा की मदद करेगा ख़ुदा भी अलबत्ता उसकी मदद ज़रूर करेगा बेशक ख़ुदा ज़रूर ज़बरदस्त ग़ालिब है (40)

ये वह लोग हैं कि अगर हम इन्हें रूए ज़मीन पर क़ाबू दे दे तो भी यह लोग पाबन्दी से नमाजे अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे-अच्छे काम का हुक्म करेंगे और बुरी बातों से (लोगों को) रोकेंगे और (यूँ तो) सब कामों का अन्जाम ख़ुदा ही के एख़्तेयार में है (41)

और (ऐ रसूल) अगर ये (कुफ़्फ़ार) तुमको झुठलाते हैं तो कोइ ताज्जुब की बात नहीं उनसे पहले नूह की क़ौम और (क़ौमे आद और समूद) (42)

और इबराहीम की क़ौम और लूत की क़ौम (43)
और मदियन के रहने वाले (अपने-अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा (भी) झुठलाए जा चुके हैं तो मैंने काफिरों को चन्द ढील दे दी फिर (आख़िर) उन्हें ले डाला तो तुमने देखा मेरा अज़ाब कैसा था (44)

ग़रज़ कितनी बस्तियाँ हैं कि हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और वह सरकश थीं पस वह अपनी छतों पर ढही पड़ी हैं और कितने बेकार (उजड़े कुएँ और कितने) मज़बूत बड़े-बड़े ऊँचे महल (वीरान हो गए) (45)

क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं ताकि उनके लिए ऐसे दिल होते हैं जैसे हक़ बातों को समझते या उनके ऐसे कान होते जिनके ज़रिए से (सच्ची बातों को) सुनते क्योंकि आँखें अंधी नहीं हुआ करती बल्कि दिल जो सीने में है वही अन्धे हो जाया करते हैं (46)

और (ऐ रसूल) तुम से ये लोग अज़ाब के जल्द आने की तमन्ना रखते हैं और ख़ुदा तो हरगिज़ अपने वायदे के ख़िलाफ नहीं करेगा और बेशक (क़यामत का) एक दिन तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस के बराबर है (47)

और कितनी बस्तियाँ हैं कि मैंने उन्हें (चन्द) मोहलत दी हालाँकि वह सरकश थी फिर (आख़िर) मैंने उन्हें ले डाला और (सबको) मेरी तरफ लौटना है (48)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि लोगों में तो सिर्फ तुमको खुल्लम-खुल्ला (अज़ाब से) डराने वाला हूँ (49)

पस जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए (आख़िरत में) उनके लिए बख्शिश है और बेहिश्त की बहुत उम्दा रोज़ी (50)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के झुठलाने में हमारे) आजिज़ करने के वास्ते कोशिश की यही लोग तो जहन्नुमी हैं (51)

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी भेजा तो ये ज़रूर हुआ कि जिस वक़्त उसने (तबलीग़े एहकाम की) आरज़ू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में (लोागों को बहका

कर) ख़लल डाल दिया फिर जो वस वसा शैतान डालता है ख़ुदा उसे बेट देता है फिर अपने एहकाम को मज़बूत करता है और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार दाना है (52)

और शैतान जो (वसवसा) डालता (भी) है तो इसलिए ताकि ख़ुदा उसे उन लोगों के आज़माइश (का ज़रिया) क़रार दे जिनके दिलों में (कुफ्र का) मर्ज़ है और जिनके दिल सख़्त हैं और बेशक (ये) ज़ालिम मुशरेकीन पल्ले दरजे की मुख़ालेफ़त में पड़े हैं (53)

और (इसलिए भी) ताकि जिन लोगों को (कुतूबे समावी का) इल्म अता हुआ है वह जान लें कि ये (वही) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ठीक ठीक (नाज़िल) हुई है फिर (ये ख़्याल करके) इस पर वह लोग ईमान लाए फिर उनके दिल ख़ुदा के सामने आजिज़ी करें और इसमें तो शक ही नहीं कि जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया उनकी ख़ुदा सीधी राह तक पहुँचा देता है (54)

और जो लोग काफिर हो बैठे वह तो क़ुरान की तरफ से हमेशा शक ही में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि क़यामत यकायक उनके सर पर आ मौजूद हो या (यूँ कहो कि) उनपर एक सख़्त मनहूस दिन का अज़ाब नाज़िल हुआ (55)

उस दिन की हुकूमत तो ख़ास ख़ुदा ही की होगी वह लोगों (के बाहमी एख़्तेलाफ) का फ़ैसला कर देगा तो जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे काम किए हैं वह नेअमतों के (भरे) हुए बाग़ात (बेहश्त) में रहेंगे (56)

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो यही वह (कम्बख़्त) लोग हैं (57)

जिनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में अपने देस छोड़े फिर शहीद किए गए या (आप अपनी मौत से) मर गए ख़ुदा उन्हें (आख़िरत में) ज़रूर उम्दा रोज़ी अता फ़रमाएगा (58)

और बेशक तमाम रोज़ी देने वालों में ख़ुदा ही सबसे बेहतर है वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह (बेहिश्त) पहुँचा देगा जिससे वह निहाल हो जाएँगे (59)

और ख़ुदा तो बेशक बड़ा वाक़िफ़कार बुर्दबार है यही (ठीक) है और जो शख़्स (अपने दुश्मन को) उतना ही सताए जितना ये उसके हाथों से सताया गया था उसके बाद फिर (दोबारा दुशमन की तरफ़ से) उस पर ज़्यादती की जाए तो ख़ुदा उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा (60)

बेशक ख़ुदा बड़ा माफ करने वाला बख़्शने वाला है ये (मदद) इस वजह से दी जाएगी कि ख़ुदा

(बड़ा क़ादिर है वही) तो रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और इसमें भी शक नहीं कि ख़ुदा सब कुछ जानता है (61)

(और) इस वजह से (भी) कि यक़ीनन ख़ुदा ही बरहक़ है और उसके सिवा जिनको लोग (वक़्ते मुसीबत) पुकारा करते हैं (सबके सब) बातिल हैं और (ये भी) यक़ीनी (है कि) ख़ुदा ही (सबसे) बुलन्द मर्तबा बुर्ज़ुग है (62)

अरे क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि ख़ुदा ही आसमान से पानी बरसाता है तो ज़मीन सर सब्ज़ (व शादाब) हो जाती है बेशक ख़ुदा (बन्दों के हाल पर) बड़ा मेहरबान वाक़िफ़कार है (63)

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है और इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा (सबसे) बेपरवाह (और) सज़ावार हम्द है (64)

क्या तूने उस पर भी नज़र न डाली कि जो कुछ रूए ज़मीन में है सबको ख़ुदा ही ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और कश्ती को (भी) जो उसके हुक्म से दरिया में चलती है और वही तो आसमान को रोके हुए है कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर (जब) उसका हुक्म होगा (तो गिर पड़ेगा) इसमें शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर बड़ा मेहरबान व रहमवाला है (65)

और वही तो क़ादिर मुत्तलिक़ है जिसने तुमको (पहली बार माँ के पेट में) जिला उठाया फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको दोबारा ज़िन्दगी देगा (66)

इसमें शक नहीं कि इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है (ऐ रसूल) हमने हर उम्मत के वास्ते एक तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं फिर तो उन्हें इस दीन (इस्लाम) में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ बुलाए जाओ (67)

बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो और अगर (इस पर भी) लोग तुमसे झगड़ा करें तो तुक कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ुदा उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (68)

जिन बातों में तुम बाहम झगड़ा करते थे क़यामत के दिन अल्लाह तुम लोगों के दरम्यिान (ठीक) फ़ैसला कर देगा (69)

(ऐ रसूल) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है ख़ुदा यक़ीनन जानता है उसमें तो शक नहीं कि ये सब (बातें) किताब (लौहे महफ़ूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं (70)

बेशक ये (सब कुछ) ख़ुदा पर आसान है और ये लोग ख़ुदा को छोड़कर उन लोगों की इबादत

करते हैं जिनके लिए न तो अल्लाह ही ने कोई सनद नाज़िल की है और न उस (के हक़ होने) का ख़ुद उन्हें इल्म है और क़यामत में तो ज़ालिमों का कोई मददगार भी नहीं होगा (71)

और (ऐ रसूल) जब हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें उनके सामने पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम (उन) काफिरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) देखते हो (यहाँ तक कि) क़रीब होता है कि जो लोग उनको हमारी आयातें पढ़कर सुनाते हैं उन पर ये लोग हमला कर बैठे (ऐ रसूल) तुम कह दो (कि) तो क्या मैं तुम्हें इससे भी कहीं बदतर चीज़ बता दूँ (अच्छा) तो सुन लो वह जहन्नुम है जिसमें झोंकने का वायदा ख़ुदा ने काफ़िरों से किया है (72)

और वह क्या बुरा ठिकाना है लोगों एक मसल बयान की जाती है तो उसे कान लगा के सुनो कि ख़ुदा को छोड़कर जिन लोगों को तुम पुकारते हो वह लोग अगरचे सब के सब इस काम के लिए इकट्ठे भी हो जाएँ तो भी एक मक्खी तक पैदा नहीं कर सकते और कहीं मक्खी कुछ उनसे छीन ले जाए तो उससे उसको छुड़ा नहीं सकते (अजब लुत्फ है) कि माँगने वाला (आबिद) और जिससे माँग लिया (माबूद) दोनों कमज़ोर हैं (73)

ख़ुदा की जैसे क़द्र करनी चाहिए उन लोगों ने न की इसमें शक नहीं कि ख़ुदा तो बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है (74)

ख़ुदा फरिश्तों में से बाज़ को अपने एहकाम पहुँचाने के लिए मुन्तख़िब कर लेता है (75)

और (इसी तरह) आदमियों में से भी बेशक ख़ुदा (सबकी) सुनता देखता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका है) (ख़ुदा सब कुछ) जानता है (76)

और तमाम उमूर की रूजू ख़ुदा ही की तरफ होती है ऐ ईमानवालों रूकू करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो (77) सजदा 7 *

ताकि तुम कामयाब हो और जो हक़ जिहाद करने का है ख़ुदा की राह में जिहाद करो उसी नें तुमको बरगुज़ीदा किया और उमूरे दीन में तुम पर किसी तरह की सख़्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम ने मजहब को (तुम्हारा मज़हब बना दिया उसी (ख़ुदा) ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान (फरमाबरदार बन्दे) नाम रखा और क़ुरान में भी (तो जिहाद करो) ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नामज़ पढ़ा करो और ज़कात देते रहो और ख़ुदा ही (के एहकाम) को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है तो क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है (78)

23 सूरह मोमिनून

सूरह मोमिनून मक्का में नाज़िल हुई और इसमें एक सौ अठारह आयतें और 6 रुकु हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलबत्ता वह इमान लाने वाले रस्तगार हुए (1)

जो अपनी नमाज़ों में (अल्लाह के सामने) गिड़गिड़ाते हैं (2)

और जो बेहूदा बातों से मुँह फेरे रहते हैं (3)

और जो ज़कात (अदा) किया करते हैं (4)

और जो (अपनी) शर्मगाहों को (हराम से) बचाते हैं (5)

मगर अपनी बीबियों से या अपनी ज़र ख़रीद लौनडियों से कि उन पर हरगिज़ इल्ज़ाम नहीं हो सकता (6)

पस जो शख़्स उसके सिवा किसी और तरीके़ से शहवत परस्ती की तमन्ना करे तो ऐसे ही लोग हद से बढ़ जाने वाले हैं (7)

और जो अपनी अमानतों और अपने एहद का लिहाज़ रखते हैं (8)

और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं (9)

(आदमी की औलाद में) यही लोग सच्चे वारिस है (10)

जो बेहश्त बरी का हिस्सा लेगें (और) यही लोग इसमें हमेशा (जिन्दा) रहेंगे (11)

और हमने आदमी को गीली मिट्टी के जौहर से पैदा किया (12)

फिर हमने उसको एक महफ़ूज़ जगह (औरत के रहम में) नुत्फ़ा बना कर रखा (13)

फिर हम ही ने नुतफ़े को जमा हुआ ख़ून बनाया फिर हम ही ने मुनजमिद ख़ून को गोश्त का लोथड़ा बनाया हम ही ने लोथडे़ की हड्डियाँ बनायीं फिर हम ही ने हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया फिर हम ही ने उसको (रुह डालकर) एक दूसरी सूरत में पैदा किया तो (सुबहान अल्लाह) अल्लाह बा बरकत है जो सब बनाने वालो से बेहतर है (14)

फिर इसके बाद यक़ीनन तुम सब लोगों को (एक न एक दिन) मरना है (15)

इसके बाद कयामत के दिन तुम सब के सब कब्रों से उठाए जाओगे (16)

और हम ही ने तुम्हारे ऊपर तह ब तह आसमान बनाए और हम मख़लूक़ात से बेखबर नही है (17)

और हमने आसमान से एक अन्दाजे़ के साथ पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में (हसब मसलेहत) ठहराए रखा और हम तो यक़ीनन उसके ग़ाएब कर देने पर भी क़ाबू रखते है (18)

फिर हमने उस पानी से तुम्हारे वास्ते खजूरों और अँगूरों के बाग़ात बनाए कि उनमें तुम्हारे वास्ते (तरह तरह के) बहुतेरे मेवे (पैदा होते) हैं उनमें से बाज़ को तुम खाते हो (19)

और (हम ही ने ज़ैतून का) दरख़्त (पैदा किया) जो तूरे सैना (पहाड़) में (कसरत से) पैदा होता है जिससे तेल भी निकलता है और खाने वालों के लिए सालन भी है (20)

और उसमें भी शक नहीं कि तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी इबरत की जगह है और (ख़ाक बला) जो कुछ उनके पेट में है उससे हम तुमको दूध पिलाते हैं और जानवरों में तो तुम्हारे और भी बहुत से फायदे हैं और उन्हीं में से बाज़ तुम खाते हो (21)

और उन्हें जानवरों और कश्तियों पर चढ़े चढ़े फिरते भी हो (22)

और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा तो नूह ने (उनसे) कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा ही की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तो क्या तुम (उससे) डरते नहीं हो (23)

तो उनकी क़ौम के सरदारों ने जो काफिर थे कहा कि ये भी तो बस (आख़िर) तुम्हारे ही सा आदमी है (मगर) इसकी तमन्ना ये है कि तुम पर बुर्जुगी हासिल करे और अगर ख़ुदा (पैग़म्बर ही न भेजना) चाहता तो फरिश्तों को नाज़िल करता हम ने तो (भाई) ऐसी बात अपने अगले बाप दादाओं में (भी होती) नहीं सुनी (24)

हो न हों बस ये एक आदमी है जिसे जुनून हो गया है ग़रज़ तुम लोग एक (ख़ास) वक्त तक (इसके अन्जाम का) इन्तेज़ार देखो (25)

नूह ने (ये बातें सुनकर) दुआ की ऐ मेरे पलने वाले मेरी मदद कर (26)

इस वजह से कि उन लोगों ने मुझे झुठला दिया तो हमने नूह के पास 'वही' भेजी कि तुम हमारे सामने हमारे हुक्म के मुताबिक़ कश्ती बनाना शुरु करो फिर जब कल हमारा अज़ाब आ जाए और तन्नूर (से पानी) उबलने लगे तो तुम उसमें हर किस्म (के जानवरों में) से (नर मादा) दो दो का जोड़ा और अपने लड़के बालों को बिठा लो मगर उन में से जिसकी निस्बत (ग़रक़ होने का) पहले से हमारा हुक्म हो चुका है (उन्हें छोड़ दो) और जिन लोगों ने (हमारे हुकम से) सरकशी की है उनके बारे में मुझसे कुछ कहना (सुनना) नहीं क्योंकि ये लोग यकीनन डूबने वाले है (27)

ग़रज़ जब तुम अपने हमराहियों के साथ कश्ती पर दुरुस्त बैठो तो कहो तमाम हम्दो सना की सज़ावार अल्लाह ही है जिसने हमको ज़ालिम लोगों से नजात दी (28)

और दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको (दरख़्त के पानी की) बा बरकत जगह में उतारना और तू तो सब उतारने वालो ंसे बेहतर है (29)

इसमें शक नहीं कि हसमें (हमारी क़ुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं और हमको तो बस उनका इम्तिहान लेना मंज़ूर था (30)

फिर हमने उनके बाद एक और क़ौम को (समूद) को पैदा किया (31)

और हमने उनही में से (एक आदमी सालेह को) रसूल बनाकर उन लोगों में भेजा (और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा) कि अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तो क्या तुम (उससे डरते नही हो) (32)

और उनकी क़ौम के चन्द सरदारों ने जो काफिर थे और (रोज़) आख़िरत की हाज़िरी को भी झुठलाते थे और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में हमने उन्हें शहवत भी दे रखी थी आपस में कहने लगे (अरे) ये तो बस तुम्हारा ही सा आदमी है जो चीज़े तुम खाते वही ये भी खाता है और जो चीज़े तुम पीते हो उन्हीं में से ये भी पीता है (33)

और अगर कहीं तुम लोगों ने अपने ही से आदमी की इताअत कर ली तो तुम ज़रुर घाटे में रहोगे (34)

क्या ये शख़्स तुमसे वायदा करता है कि जब तुम मर जाओगे और (मर कर) सिर्फ मिट्टी और हड्डियाँ (बनकर) रह जाओगे तो तुम दुबारा ज़िन्दा करके कब्रों से निकाले जाओगे (है है अरे) जिसका तुमसे वायदा किया जाता है (35)

बिल्कुल (अक्ल से) दूर और क़यास से बईद है (दो बार ज़िन्दा होना कैसा) बस यही तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी है (36)

कि हम मरते भी हैं और जीते भी हैं और हम तो फिर (दुबारा) उठाए नहीं जाएँगे हो न हो ये (सालेह) वह शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा है (37)

और हम तो कभी उस पर इमान लाने वाले नहीं (ये हालत देखकर) सालेह ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले चूँकि इन लोगों ने मुझे झुठला दिया (38)

तू मेरी मदद कर अल्लाह ने फरमाया (एक ज़रा ठहर जाओ) (39)

अनक़रीब ही ये लोग नादिम व परेशान हो जाएँगे (40)

ग़रज़ उन्हें यकीनन एक सख़्त चिंघाड़ ने ले डाला तो हमने उन्हें कूड़े करकट (का ढ़ेर) बना छोड़ा पस ज़ालिमों पर (अल्लाह की) लानत है (41)

फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमों को पैदा किया (42)

कोई उम्मत अपने वक्त मुक़र्रर से न आगे बढ़ सकती है न (उससे) पीछे हट सकती है (43)

फिर हमने लगातार बहुत से पैग़म्बर भेजे (मगर) जब जब किसी उम्मत का पैग़म्बर उन के पास आता तो ये लोग उसको झुठलाते थे तो हम थी (आगे पीछे) एक को दूसरे के बाद (हलाक) करते गए और हमने उन्हें (नेस्त व नाबूद करके) अफसाना बना दिया तो इमान न लाने वालो पर अल्लाह की लानत है (44)

फिर हमने मूसा और उनके भाई हारुन को अपनी निशानियों और वाज़ेए व रौशन दलील के साथ फिरआऊन और उसके दरबार के उमराओ के पास रसूल बना कर भेजा (45)

तो उन लोगो ने शेख़ी की और वह थे ही बड़े सरकश लोग (46)

आपस मे कहने लगे क्या हम अपने ही ऐसे दो आदमियों पर इमान ले आएँ हालाँकि इन दोनों की (क़ौम की) क़ौम हमारी ख़िदमत गारी करती है (47)

गरज़ उन लोगों ने इन दोनों को झुठलाया तो आख़िर ये सब के सब हलाक कर डाले गए (48)

और हमने मूसा को किताब (तौरैत) इसलिए अता की थी कि ये लोग हिदायत पाएँ (49)

और हमने मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी माँ को (अपनी कुदरत की निशानी बनाया था) और उन दोनों को हमने एक ऊँची हमवार ठहरने के क़ाबिल चश्मे वाली ज़मीन पर (रहने की) जगह दी (50)

और मेरा आम हुक्म था कि ऐ (मेरे पैग़म्बर) पाक व पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छे अच्छे काम करो (क्योंकि) तुम जो कुछ करते हो मैं उससे बख़ूबी वाक़िफ़ हूँ (51)

(लोगों ये दीन इस्लाम) तुम सबका मज़हब एक ही मज़हब है और मै तुम लोगों का परवरदिगार हूँ (52)

तो बस मुझी से डरते रहो फिर लोगों ने अपने काम (में एख़तिलाफ करके उस) को टुकड़े टुकड़े कर डाला हर गिरो जो कुछ उसके पास है उसी में निहाल निहाल है (53)

तो (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उन की ग़फलत में एक ख़ास वक़्त तक (पड़ा) छोड़ दो (54)

क्या ये लोग ये ख़्याल करते है कि हम जो उन्हें माल और औलाद में तरक़्क़ी दे रहे है तो हम उनके साथ भलाईयाँ करने में जल्दी कर रहे है (55)

(ऐसा नहीं) बल्कि ये लोग समझते नहीं (56)

उसमें शक नहीं कि जो लोग अपने परवरदिगार की वहशत से लरज़ रहे है (57)

और जो लोग अपने परवरदिगार की (क़ुदरत की) निशानियों पर इमान रखते हैं (58)

और अपने परवरदिगार का किसी को शरीक नही बनाते (59)

और जो लोग (अल्लाह की राह में) जो कुछ बन पड़ता है देते हैं और फिर उनके दिल को इस बात का खटका लगा हुआ है कि उन्हें अपने परवरदिगार के सामने लौट कर जाना है (60)

(देखिये क्या होता है) यही लोग अलबत्ता नेकियों में जल्दी करते हैं और भलाई की तरफ (दूसरों से) लपक के आगे बढ़ जाते हैं (61)

और हम तो किसी शख़्स को उसकी कूवत से बढ़के तकलीफ देते ही नहीं और हमारे पास तो (लोगों के आमाल की) किताब है जो बिल्कुल ठीक (हाल बताती है) और उन लोगों की (ज़र्रा बराबर) हक़ तलफी नहीं की जाएगी (62)

उनके दिल उसकी तरफ से ग़फलत में पड़े हैं इसके अलावा उन के बहुत से आमाल हैं जिन्हें ये (बराबर किया करते है) और बाज़ नहीं आते (63)

यहाँ तक कि जब हम उनके मालदारों को अज़ाब में गिरफ्तार करेंगे तो ये लोग वावैला करने लगेंगें (64)

(उस वक्त कहा जाएगा) आज वावैला मत करों तुमको अब हमारी तरफ से मदद नहीं मिल सकती (65)

(जब) हमारी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं तो तुम अकड़ते किस्सा कहते बकते हुए उन से उलटे पाँव फिर जाते (66)

तो क्या उन लोगों ने (हमारी) बात (कुरान) पर ग़ौर नहीं किया (67)

उनके पास कोई ऐसी नयी चीज़ आयी जो उनके अगले बाप दादाओं के पास नहीं आयी थी (68)

या उन लोगों ने अपने रसूल ही को नहीं पहचाना तो इस वजह से इन्कार कर बैठे (69)

या कहते हैं कि इसको जुनून हो गया है (हरगिज़ उसे जुनून नहीं) बल्कि वह तो उनके पास हक़ बात लेकर आया है और उनमें के अक्सर हक़ बात से नफरत रखते हैं (70)

और अगर कहीं हक़ उनकी नफसियानी ख़्वाहिश की पैरवी करता है तो सारे आसमान व ज़मीन और जो लोग उनमें हैं (सबके सब) बरबाद हो जाते बल्कि हम तो उन्हीं के तज़किरे (जिबरील के वास्ते से) उनके पास लेकर आए तो यह लोग अपने ही तज़किरे से मुँह मोड़तें हैं (71)

(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (अपनी रिसालत की) कुछ उजरत माँगतें हों तो तुम्हारे परवरदिगार की उजरत उससे कही बेहतर है और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है (72)

और तुम तो यक़ीनन उनको सीधी राह की तरफ बुलाते हो (73)

और इसमें शक नहीं कि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते वह सीधी राह से हटे हुए हैं (74)

और अगर हम उन पर तरस खायें और जो तकलीफें उनको (कुफ्र की वजह से) पहुँच रही हैं उन को दफा कर दें तो यक़ीनन ये लोग (और भी) अपनी सरकशी पर अड़ जाए और भटकते फिरें (75)

और हमने उनको अज़ाब में गिरफ्तार किया तो भी वे लोग न तो अपने परवरदिगार के सामने झुके और गिड़गिड़ाएँ (76)

यहाँ तक कि जब हमने उनके सामने एक सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया तो उस वक्त फौरन ये लोग बेआस होकर बैठ रहे (77)

हालाँकि वही वह (मेहरबान ख़ुदा) है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किये (मगर) तुम लोग हो ही बहुत कम शुक्र करने वाले (78)

और वह वही (अल्लाह) है जिसने तुम को रुए ज़मीन में (हर तरफ) फैला दिया और फिर (एक दिन) सब के सब उसी के सामने इकट्ठे किये जाओगे (79)

और वही वह (अल्लाह) है जो जिलाता और मारता है कि और रात दिन का फेर बदल भी उसी के एख़्तियार में है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते (80)

(इन बातों को समझें ख़ाक नहीं) बल्कि जो अगले लोग कहते आए वैसी ही बात ये भी कहने लगे (81)

कि जब हम मर जाएँगें और (मरकर) मिट्टी (का ढ़ेर) और हड्डियाँ हो जाएँगें तो क्या हम फिर दोबारा (क़ब्रों से ज़िन्दा करके) निकाले जाएँगे (82)

इसका वायदा तो हमसे और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं से भी (बार हा) किया जा चुका है ये तो बस सिर्फ अगले लोगों के ढकोसले हैं (83)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि भला अगर तुम लोग कुछ जानते हो (तो बताओ) ये ज़मीन और जो लोग इसमें हैं किस के हैं वह फौरन जवाब देगें अल्लाह के (84)

तुम कह दो कि तो क्या तुम अब भी ग़ौर न करोगे (85)

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि सातों आसमानों का मालिक और (इतने) बड़े अर्श का मालिक कौन है तो फौरन जवाब देगें कि (सब कुछ) ख़ुदा ही का है (86)

अब तुम कहो तो क्या तुम अब भी (उससे) नहीं डरोगे (87)

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो कि भला अगर तुम कुछ जानते हो (तो बताओ) कि वह कौन शख़्स है- जिसके एख़्तेयार में हर चीज़ की बादशाहत है वह (जिसे चाहता है) पनाह देता है और उस (के अज़ाब) से पनाह नहीं दी जा सकती (88)

तो ये लोग फौरन बोल उठेंगे कि (सब एख़्तेयार) अल्लाह ही को है- अब तुम कह दो कि तुम पर जादू कहाँ किया जाता है (89)

बात ये है कि हमने उनके पास हक़ बात पहुँचा दी और ये लोग यक़ीनन झूठे हैं (90)

न तो अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और अल्लाह है (अगर ऐसा होता) उस वक्त हर ख़ुदा अपने अपने मख़लूक़ को लिए लिए फिरता और यक़ीनन एक दूसरे पर चढ़ाई करता (91)

(और ख़ूब जंग होती) जो जो बाते ये लोग (अल्लाह की निस्बत) बयान करते हैं उस से अल्लाह पाक व पाकीज़ा है वह पोशीदा और हाज़िर (सबसे) ख़ुदा वाक़िफ है ग़रज़ वह उनके शिर्क से (बिल्कुल पाक और) बालातर है (92)

(ऐ रसूल) तुम दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले जिस (अज़ाब) का तूने उनसे वायदा किया है अगर शायद तू मुझे दिखाए (93)

तो परवरदिगार मुझे उन ज़ालिम लोगों के हमराह न करना (94)

और (ऐ रसूल) हम यक़ीनन इस पर क़ादिर हैं कि जिस (अज़ाब) का हम उनसे वायदा करते हैं तुम्हें दिखा दें (95)

और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो निहायत अच्छी हो जो कुछ ये लोग (तुम्हारी निस्बत) बयान करते हैं उससे हम ख़ूब वाक़िफ़ हैं (96)

और (ये भी) दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मै शैतान के वसवसों से तेरी पनाह माँगता हूँ (97)

और ऐ मेरे परवरदिगार इससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ कि शयातीन मेरे पास आएँ (98)

(और कुफ़्फ़ार तो मानेगें नहीं) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आयी तो कहने लगे परवरदिगार तू मुझे (एक बार) उस मुक़ाम (दुनिया) में छोड़ आया हूँ फिर वापस कर दे ताकि मै (अपकी दफ़ा) अच्छे अच्छे काम करूं (99)

(जवाब दिया जाएगा) हरगिज़ नहीं ये एक लग़ो बात है- जिसे वह बक रहा और उनके (मरने के) बाद (आलमे) बरज़ख़ है (100)

(जहाँ) क़ब्रों से उठाए जाएँगें (रहना होगा) फिर जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा तो उस दिन न लोगों में क़राबत दारियाँ रहेगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे (101)

फिर जिन (के नेकियों) के पल्लें भारी होगें तो यही लोग कामयाब होंगे (102)

और जिन (के नेकियों) के पल्लें हल्के होंगें तो यही लोग है जिन्होंने अपना नुक़सान किया कि हमेशा जहन्नुम में रहेंगे (103)

और (उनकी ये हालत होगी कि) जहन्नुम की आग उनके मुँह को झुलसा देगी और लोग मुँह बनाए हुए होगें (104)

(उस वक़्त हम पूछेंगें) क्या तुम्हारे सामने मेरी आयतें न पढ़ी गयीं थीं (ज़रुर पढ़ी गयी थीं) तो तुम उन्हें झुठलाया करते थे (105)

वह जवाब देगें ऐ हमारे परवरदिगार हमको हमारी कम्बख़्ती ने आज़माया और हम गुमराह लोग थे (106)

परवरदिगार हमको (अबकी दफा) किसी तरह इस जहन्नुम से निकाल दे फिर अगर दोबारा हम ऐसा करें तो अलबत्ता हम कुसूरवार है (107)

अल्लाह फरमाएगा दूर हो इसी में (तुम को रहना होगा) और (बस) मुझ से बात न करो (108)

मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा भी था जो (बराबर) ये दुआ करता था कि ऐ हमारे पालने वाले हम इमान लाए तो तू हमको बख़्श दे और हम पर रहम कर तू तो तमाम रहम करने वालों से बेहतर है (109)

तो तुम लोगों ने उन्हें मसखरा बना लिया-यहाँ तक कि (गोया) उन लोगों ने तुम से मेरी याद भुला दी और तुम उन पर (बराबर) हँसते रहे (110)

मैने आज उनको उनके सब्र का अच्छा बदला दिया कि यही लोग अपनी (ख़ातिरख़्वाह) मुराद को पहुँचने वाले हैं (111)

(फिर उनसे) अल्लाह पूछेगा कि (आख़िर) तुम ज़मीन पर कितने बरस रहे (112)

वह कहेंगें (बरस कैसा) हम तो बस पूरा एक दिन रहे या एक दिन से भी कम (113)

तो तुम शुमार करने वालों से पूछ लो अल्लाह फरमाएगा बेशक तुम (ज़मीन में) बहुत ही कम ठहरे काश तुम (इतनी बात भी दुनिया में) समझे होते (114)

तो क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि हमने तुमको (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हुज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे (115)

तो अल्लाह जो सच्चा बादशाह (हर चीज़ से) बरतर व आला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वहीं) अर्श बुर्जुग का मालिक है (116)

और जो शख़्स अल्लाह के साथ दूसरे माबूद की भी परसतिश करेगा उसके पास इस शिर्क की कोई दलील तो है नहीं तो बस उसका हिसाब (किताब) उसके परवरदिगार ही के पास होगा (मगर याद रहे कि कुफ़्फ़ार हरगिज़ फलॉह पाने वाले नहीं) (117)

और (ऐ रसूल) तुम कह दो परवरदिगार तू (मेरी उम्मत को) बख़्श दे और तरस खा और तू तो सब रहम करने वालों से बेहतर है (118)

24 सूरह नूर

सूरह नूर मदीना में नाज़िल हुई और उसकी चौसठ आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ये) एक सूरा है जिसे हमने नाज़िल किया है और उस (के एहकाम) को फर्ज़ कर दिया है और इसमें हमने वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल की हैं ताकि तुम (ग़ौर करके) नसीहत हासिल करो (1)

ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाले मर्द इन दोनों में से हर एक को सौ (सौ) कोड़े मारो और अगर तुम अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर इमान रखते हो तो हुक्मे अल्लाह के नाफिज़ करने में तुमको उनके बारे में किसी तरह की तरस का लिहाज़ न होने पाए और उन दोनों की सज़ा के वक्त मोमिन की एक जमाअत को मौजूद रहना चाहिए (2)

ज़िना करने वाला मर्द तो ज़िना करने वाली औरत या मुशरिका से निकाह करेगा और ज़िना करने वाली औरत भी बस ज़िना करने वाले ही मर्द या मुशरिक से निकाह करेगी और सच्चे इमानदारों पर तो इस क़िस्म के ताल्लुक़ात हराम हैं (3)

और जो लोग पाक दामन औरतों पर (ज़िना की) तोहमत लगाएँ फिर (अपने दावे पर) चार गवाह पेश न करें तो उन्हें अस्सी कोड़ें मारो और फिर (आइन्दा) कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और (याद रखो कि) ये लोग खुद बदकार हैं (4)

मगर हाँ जिन लोगों ने उसके बाद तौबा कर ली और अपनी इसलाह की तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (5)

और जो लोग अपनी बीवियों पर (ज़िना) का ऐब लगाएँ और (इसके सुबूत में) अपने सिवा उनका कोई गवाह न हो तो ऐसे लोगों में से एक की गवाही चार मरतबा इस तरह होगी कि वह (हर मरतबा) अल्लाह की क़सम खाकर बयान करे कि वह (अपने दावे में) जरुर सच्चा है (6)

और पाँचवी (मरतबा) यूँ (कहेगा) अगर वह झूट बोलता हो तो उस पर अल्लाह की लानत (7)

और औरत (के सर से) इस तरह सज़ा टल सकती है कि वह चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर बयान कर दे कि ये शख़्स (उसका शौहर अपने दावे में) ज़रुर झूठा है (8)

और पाँचवी मरतबा यूँ करेगी कि अगर ये शख़्स (अपने दावे में) सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब पड़े (9)

और अगर तुम पर अल्लाह का फज़्ल (व करम) और उसकी मेहरबानी न होती तो देखते कि तोहमत लगाने वालों का क्या हाल होता और इसमें शक ही नहीं कि अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला हकीम है (10)

बेशक जिन लोगों ने झूठी तोहमत लगायी वह तुम्ही में से एक गिरोह है तुम अपने हक़ में इस तोहमत को बड़ा न समझो बल्कि ये तुम्हारे हक़ में बेहतर है इनमें से जिस शख़्स ने जितना गुनाह समेटा वह उस (की सज़ा) को खुद भुगतेगा और उनमें से जिस शख़्स ने तोहमत का बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ी (सख़्त) सज़ा होगी (11)

और जब तुम लोगो ने उसको सुना था तो उसी वक्त इमानदार मर्दों और इमानदार औरतों ने अपने लोगों पर भलाई का गुमान क्यो न किया और ये क्यों न बोल उठे कि ये तो खुला हुआ बोहतान है (12)

और जिन लोगों ने तोहमत लगायी थी अपने दावे के सुबूत में चार गवाह क्यों न पेश किए फिर जब इन लोगों ने गवाह न पेश किये तो अल्लाह के नज़दीक यही लोग झूठे हैं (13)

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फज़्ल (व करम) और उसकी रहमत न होती तो जिस बात का तुम लोगों ने चर्चा किया था उस की वजह से तुम पर कोई बड़ा (सख़्त) अज़ाब आ पहुँचता (14)

कि तुम अपनी ज़बानों से इसको एक दूसरे से बयान करने लगे और अपने मुँह से ऐसी बात कहते थे जिसका तुम्हें इल्म व यक़ीन न था (और लुत्फ ये है कि) तुमने इसको एक आसान बात समझी थी हॉलाकि वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी सख़्त बात थी (15)

और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी तो तुमने लोगों से क्यों न कह दिया कि हमको ऐसी बात मुँह से निकालनी मुनासिब नहीं सुबहान अल्लाह ये बड़ा भारी बोहतान है (16)

अल्लाह तुम्हारी नसीहत करता है कि अगर तुम सच्चे इमानदार हो तो ख़बरदार फिर कभी ऐसा न करना (17)

और अल्लाह तुम से (अपने) एहकाम साफ साफ बयान करता है और अल्लाह तो बड़ा वाक़िफ़कार हकीम है (18)

जो लोग ये चाहते हैं कि इमानदारों में बदकारी का चर्चा फैल जाए बेशक उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है और अल्लाह (असल हाल को) ख़ूब जानता है और तुम लोग नहीं जानते हो (19)

और अगर ये बात न होती कि तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल (व करम) और उसकी रहमत से और ये कि अल्लाह (अपने बन्दों पर) बड़ा शफीक़ मेहरबान है (20)

(तो तुम देखते क्या होता) ऐ इमानदारों शैतान के क़दम ब क़दम न चलो और जो शख़्स शैतान के क़दम ब क़दम चलेगा तो वह यक़ीनन उसे बदकारी और बुरी बात (करने) का हुक्म देगा औार अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल (व करम) और उसकी रहमत न होती तो तुममें से कोई भी कभी पाक साफ न होता मगर अल्लाह तो जिसे चहता है पाक साफ कर देता है और अल्लाह बड़ा सुनने वाला वाकिफकार है (21)

और तुममें से जो लोग ज़्यादा दौलत और मुक़द्दर वालें है क़राबतदारों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को कुछ देने (लेने) से क़सम न खा बैठें बल्कि उन्हें चाहिए कि (उनकी ख़ता) माफ कर दें और दरगुज़र करें क्या तुम ये नहीं चाहते हो कि अल्लाह तुम्हारी ख़ता माफ करे और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (22)

बेशक जो लोग पाक दामन बेख़बर और इमानदार औरतों पर (ज़िना की) तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में (अल्लाह की) लानत है और उन पर बड़ा (सख़्त) अज़ाब होगा (23)

जिस दिन उनके ख़िलाफ उनकी ज़बानें और उनके हाथ उनके पावँ उनकी कारस्तानियों की गवाही देगें (24)

उस दिन अल्लाह उनको ठीक उनका पूरा पूरा बदला देगा और जान जाएँगें कि अल्लाह बिल्कुल बरहक़ और (हक़ का) ज़ाहिर करने वाला है (25)

गन्दी औरते गन्दें मर्दो के लिए (मुनासिब) हैं और गन्दे मर्द गन्दी औरतो के लिए और पाक औरतें पाक मर्दो के लिए (मौज़ूँ) हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए लोग जो कुछ उनकी निस्बत बका करते हैं उससे ये लोग बुरी उल ज़िम्मा हैं उन ही (पाक लोगों) के लिए (आख़िरत में) बख़्शिश है (26)

और इज़्ज़त की रोज़ी ऐ इमानदारों अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में (दर्राना) न चले जाओ यहाँ तक कि उनसे इजाज़त ले लो और उन घरों के रहने वालों से साहब सलामत कर लो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (27)

(ये नसीहत इसलिए है) ताकि तुम याद रखो पस अगर तुम उन घरों में किसी को न पाओ तो तावाक़फियत कि तुम को (ख़ास तौर पर) इजाज़त न हासिल हो जाए उन में न जाओ और अगर तुम से कहा जाए कि फिर जाओ तो तुम (बे ताम्मुल) फिर जाओ यही तुम्हारे वास्ते ज़्यादा सफाई की बात है और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे खूब वाकिफ़ है (28)

इसमें अलबत्ता तुम पर इल्ज़ाम नहीं कि ग़ैर आबाद मकानात में जिसमें तुम्हारा कोई असबाब हो (बे इजाज़त) चले जाओ और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हो और जो कुछ छिपाकर करते हो अल्लाह (सब कुछ) जानता है (29)

(ऐ रसूल) इमानदारों से कह दो कि अपनी नज़रों को नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें यही उनके वास्ते ज़्यादा सफाई की बात है ये लोग जो कुछ करते हैं अल्लाह उससे यक़ीनन ख़ूब वाक़िफ है (30)

और (ऐ रसूल) इमानदार औरतों से भी कह दो कि वह भी अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपने बनाव सिंगार (के मक़ामात) को (किसी पर) ज़ाहिर न होने दें मगर जो खुद ब खुद ज़ाहिर हो जाता हो (छुप न सकता हो) (उसका गुनाह नही) और अपनी ओढ़नियों को (घूँघट मारके) अपने गरेबानों (सीनों) पर डाले रहें और अपने शौहर या अपने बाप दादाओं या आपने शौहर के बाप दादाओं या अपने बेटों या अपने शौहर के बेटों या अपने भाइयों या अपने भतीजों या अपने भांजों या अपने (क़िस्म की) औरतों या अपनी या अपनी लौंडियों या (घर के) नौकर चाकर जो मर्द सूरत हैं मगर (बहुत बूढ़े होने की वजह से) औरतों से कुछ मतलब नहीं रखते या पह कमसिन लड़के जो औरतों के पर्दे की बात से आगाह नहीं हैं उनके सिवा (किसी पर) अपना बनाव सिंगार ज़ाहिर न होने दिया करें और चलने में अपने पाँव ज़मीन पर इस तरह न रखें कि लोगों को उनके पोशीदा बनाव सिंगार (झंकार वग़ैरह) की ख़बर हो जाए और ऐ इमानदारों तुम सबके सब अल्लाह की बारगाह में तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ (31)

और अपनी (क़ौम की) बेशौहर औरतों और अपने नेक बख़्त गुलामों और लौंडियों का निकाह कर दिया करो अगर ये लोग मोहताज होंगे तो अल्लाह अपने फज़्ल व (करम) से उन्हें मालदार बना देगा और अल्लाह तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाक़िफ कार है (32)

और जो लोग निकाह करने का मक़दूर नहीं रखते उनको चाहिए कि पाक दामिनी एख़्तियार करें यहाँ तक कि अल्लाह उनको अपने फज़्ल व (करम) से मालदार बना दे और तुम्हारी लौन्डी ग़ुलामों में से जो मकातबत होने (कुछ रुपए की शर्त पर आज़ादी का सरख़त लेने) की ख़्वाहिश करें तो तुम अगर उनमें कुछ सलाहियत देखो तो उनको मकातिब कर दो और अल्लाह के माल से जो उसने तुम्हें अता किया है उनका भी दो और तुम्हारी लौन्डियाँ जो पाक दामन ही रहना चाहती हैं उनको दुनियावी ज़िन्दगी के फायदे हासिल करने की ग़रज़ से हराम कारी पर मजबूर न करो और जो शख़्स

उनको मजबूर करेगा तो इसमें शक नहीं कि अल्लाह उसकी बेबसी के बाद बड़ा बख़्शने वाले मेहरबान है (33)

और (इमानदारों) हमने तो तुम्हारे पास (अपनी) वाज़ेए व रौशन आयतें और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी हालतें और परहेज़गारों के लिए नसीहत (की बाते) नाज़िल की (34)

अल्लाह तो सारे आसमान और ज़मीन का नूर है उसके नूर की मिसल (ऐसी) है जैसे एक ताक़ (सीना) है जिसमे एक रौशन चिराग़ (इल्मे शरीयत) हो और चिराग़ एक शीशे की क़न्दील (दिल) में हो (और) क़न्दील (अपनी तड़प में) गोया एक जगमगाता हुआ रौशन सितारा (वह चिराग़) ज़ैतून के मुबारक दरख़्त (के तेल) से रौशन किया जाए जो न पूरब की तरफ हो और न पच्छिम की तरफ (बल्कि बीचों बीच मैदान में) उसका तेल (ऐसा) शफ्फाफ हो कि अगरचे आग उसे छुए भी नही ताहम ऐसा मालूम हो कि आप ही आप रौशन हो जाएगा (ग़रज़ एक नूर नहीं बल्कि) नूर आला नूर (नूर की नूर पर जोत पड़ रही है) अल्लाह अपने नूर की तरफ जिसे चाहता है हिदायत करता है और अल्लाह तो हर चीज़ से खूब वाक़िफ है (35)

(वह क़न्दील) उन घरों में रौशन है जिनकी निस्बत अल्लाह ने हुक्म दिया कि उनकी ताज़ीम की जाए और उनमें उसका नाम लिया जाए जिनमें सुबह व शाम वह लोग उसकी तस्बीह किया करते हैं (36)

ऐसे लोग जिनको अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात अदा करने से न तो तिजारत ही ग़ाफिल कर सकती है न (ख़रीद फरोख़्त) (का मामला क्योंकि) वह लोग उस दिन से डरते हैं जिसमें ख़ौफ के मारे दिल और आँखें उलट जाएँगी (37)

(उसकी इबादत इसलिए करते हैं) ताकि अल्लाह उन्हें उनके आमाल का बेहतर से बेहतर बदला अता फरमाए और अपने फज़ल व करम से कुछ और ज़्यादा भी दे और अल्लाह तो जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है (38)

और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उनकी कारस्तानियाँ (ऐसी है) जैसे एक चटियल मैदान का चमकता हुआ बालू कि प्यासा उस को दूर से देखे तो पानी ख़्याल करता है यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको कुछ भी न पाया (और प्यास से तड़प कर मर गया) और अल्लाह को अपने पास मौजूद पाया तो उसने उसका हिसाब (किताब) पूरा पूरा चुका दिया और अल्लाह तो बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (39)

(या काफिरों के आमाल की मिसाल) उस बड़े गहरे दरिया की तारिकियों की सी है- जैसे एक लहर उसके ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर अब्र (तह ब तह) ढॉके हुए हो (ग़रज़) तारिकियाँ है कि एक

से ऊपर एक (उमड़ी) चली आती हैं (इसी तरह से) कि अगर कोइ शख़्स अपना हाथ निकाले तो (शिद्दत तारीकी से) उसे देख न सके और जिसे खुद अल्लाह ही ने (हिदायत की) रौशनी न दी हो तो (समझ लो कि) उसके लिए कहीं कोई रौशनी नहीं है (40)

(ऐ शख़्स) क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि जितनी मख़लूक़ात सारे आसमान और ज़मीन में हैं और परिन्दें पर फैलाए (ग़रज़ सब) उसी को तस्बीह किया करते हैं सब के सब अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह का तरीक़ा खूब जानते हैं और जो कुछ ये किया करते हैं अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (41)

और सारे आसमान व ज़मीन की सल्तनत ख़ास अल्लाह ही की है और अल्लाह ही की तरफ (सब को) लौट कर जाना है (42)

क्या तूने उस पर भी नज़र नहीं की कि यक़ीनन अल्लाह ही अब्र को चलाता है फिर वही बाहम उसे जोड़ता है-फिर वही उसे तह ब तह रखता है तब तू तो बारिश उसके दरम्यिान से निकलते हुए देखता है और आसमान में जो (जमे हुए बादलों के) पहाड़ है उनमें से वही उसे बरसाता है- फिर उन्हें जिस (के सर) पर चाहता है पहुँचा देता है- और जिस (के सर) से चाहता है टाल देता है- क़रीब है कि उसकी बिजली की कौन्द आखों की रौशनी उचके लिये जाती है (43)
अल्लाह ही रात और दिन को फेर बदल करता रहता है- बेशक इसमें आँख वालों के लिए बड़ी इबरत है (44)

और अल्लाह ही ने तमाम ज़मीन पर चलने वाले (जानवरों) को पानी से पैदा किया उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो दो पाँव पर चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो चार पावों पर चलते हैं- अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (45)

हम ही ने यक़ीनन वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल की और ख़ुदा ही जिसको चाहता है सीधी राह की हिदायत करता है (46)

और (जो लोग ऐसे भी है जो) कहते हैं कि अल्लाह पर और रसूल पर इमान लाए और हमने इताअत क़ुबूल की- फिर उसके बाद उन में से कुछ लोग (अल्लाह के हुक्म से) मुँह फेर लेते हैं और (सच यूँ है कि) ये लोग इमानदार थे ही नहीं (47)

और जब वह लोग अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाते हैं ताकि रसूल उनके आपस के झगड़े का फैसला कर दें तो उनमें का एक फरीक रदगिरदानी करता है (48)

और (असल ये है कि) अगर हक़ उनकी तरफ होता तो गर्दन झुकाए (चुपके) रसूल के पास दौड़े हुए आते (49)

क्या उन के दिल में (कुफ्र का) मर्ज़ (बाक़ी) है या शक में पड़े हैं या इस बात से डरते हैं कि (मुबादा) अल्लाह और उसका रसूल उन पर ज़ुल्म कर बैठेगा- (ये सब कुछ नहीं) बल्कि यही लोग ज़ालिम हैं (50)

इमानदारों का क़ौल तो बस ये है कि जब उनको अल्लाह और उसके रसूल के पास बुलाया जाता है ताकि उनके बाहमी झगड़ों का फैसला करो तो कहते हैं कि हमने (हुक्म) सुना और (दिल से) मान लिया और यही लोग (आख़िरत में) कामयाब होने वाले हैं (51)

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने और अल्लाह से डरे और उस (की नाफरमानी) से बचता रहेगा तो ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेगें (52)

और (ऐ रसूल) उन (मुनाफ़ेक़ीन) ने तुम्हारी इताअत की अल्लाह की सख़्त से सख़्त क़समें खाई कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो बिला उज्ऱ (घर बार छोड़कर) निकल खड़े हों- तुम कह दो कि क़समें न खाओ दस्तूर के मुवाफिक़ इताअत (इससे बेहतर) और बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (53)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो इस पर भी अगर तुम सरताबी करोगे तो बस रसूल पर इतना ही (तबलीग़) वाजिब है जिसके वह ज़िम्मेदार किए गए हैं और जिसके ज़िम्मेदार तुम बनाए गए हो तुम पर वाजिब है और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे और रसूल पर तो सिर्फ साफ तौर पर (एहकाम का) पहुँचाना फर्ज़ है (54)

(ऐ इमानदारों) तुम में से जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन से अल्लाह ने वायदा किया कि उन को (एक न एक) दिन रुए ज़मीन पर ज़रुर (अपना) नाएब मुक़र्रर करेगा जिस तरह उन लोगों को नाएब बनाया जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं और जिस दीन को उसने उनके लिए पसन्द फरमाया है (इस्लाम) उस पर उन्हें ज़रुर ज़रुर पूरी क़ुदरत देगा और उनके ख़ाएफ़ होने के बाद (उनकी हर आस को) अमन से ज़रुर बदल देगा कि वह (इत्मेनान से) मेरी ही इबादत करेंगे और किसी को हमारा शरीक न बनाएँगे और जो शख़्स इसके बाद भी नाशुक्री करे तो ऐसे ही लोग बदकार हैं (55)

और (ऐ इमानदारों) नमाज़ पाबन्दी से पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (दिल से) रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए (56)

और (ऐ रसूल) तुम ये ख़्याल न करो कि कुफ्फार (इधर उधर) ज़मीन मे (फैल कर हमें) आजिज़ कर देगें (ये ख़ुद आजिज़ हो जाएगें) और उनका ठिकाना तो जहन्नुम है और क्या बुरा ठिकाना है (57)

ऐ इमानदारों तुम्हारी लौन्डी ग़ुलाम और वह लड़के जो अभी तक बुलूग़ की हद तक नहीं पहुँचे हैं उनको भी चाहिए कि (दिन रात में) तीन मरतबा (तुम्हारे पास आने की) तुमसे इजाज़त ले लिया करें तब आएँ (एक) नमाज़ सुबह से पहले और (दूसरे) जब तुम (गर्मी से) दोपहर को (सोने के लिए मामूलन) कपड़े उतार दिया करते हो (तीसरी) नमाज़े इशा के बाद (ये) तीन (वक्त) तुम्हारे परदे के हैं इन अवक़ात के अलावा (बे अज़न आने मे) न तुम पर कोई इल्ज़ाम है-न उन पर (क्योंकि) उन अवक़ात के अलावा (ब ज़रुरत या बे ज़रुरत) लोग एक दूसरे के पास चक्कर लगाया करते हैं- यूँ अल्लाह (अपने) एहकाम तुम से साफ साफ बयान करता है और अल्लाह तो बड़ा वाकिफ़कार हकीम है (58)

और (ऐ इमानदारों) जब तुम्हारे लड़के हदे बुलूग को पहुँचें तो जिस तरह उन के कब्ल (बड़ी उम्र) वाले (घर में आने की) इजाज़त ले लिया करते थे उसी तरह ये लोग भी इजाज़त ले लिया करें-यूँ अल्लाह अपने एहकाम साफ साफ बयान करता है और अल्लाह तो बड़ा वाकिफकार हकीम है (59)

और बूढ़ी बूढ़ी औरतें जो (बुढ़ापे की वजह से) निकाह की ख़्वाहिश नही रखती वह अगर अपने कपड़े (दुपट्टे वग़ैराह) उतारकर (सर नंगा) कर डालें तो उसमें उन पर कुछ गुनाह नही है- बशर्ते कि उनको अपना बनाव सिंगार दिखाना मंज़ूर न हो और (इस से भी) बचें तो उनके लिए और बेहतर है और अल्लाह तो (सबकी सब कुछ) सुनता और जानता है (60)

इस बात में न तो अँधे आदमी के लिए मज़ाएका है और न लँगड़ें आदमी पर कुछ इल्ज़ाम है- और न बीमार पर कोई गुनाह है और न ख़ुद तुम लोगो पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बाप दादा नाना बग़ैरह के घरों से या अपनी माँ दादी नानी वग़ैरह के घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफ़ियों के घरों से या अपने मामूओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उस घर से जिसकी कुन्जियाँ तुम्हारे हाथ में है या अपने दोस्तों (के घरों) से इस में भी तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि सब के सब मिलकर खाओ या अलग अलग फिर जब तुम घर वालों में जाने लगो (और वहाँ किसी का न पाओ) तो ख़ुद अपने ही ऊपर सलाम कर लिया करो जो अल्लाह की तरफ से एक मुबारक पाक व पाकीज़ा तोहफा है- अल्लाह यूँ (अपने) एहकाम तुमसे साफ साफ बयान करता है ताकि तुम समझो (61)

सच्चे इमानदार तो सिर्फ वह लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर इमान लाए और जब किसी ऐसे काम के लिए जिसमें लोागों के जमा होने की ज़रुरत है- रसूल के पास होते हैं जब तक उससे

इजाज़त न ले ली न गए (ऐ रसूल) जो लोग तुम से (हर बात में) इजाज़त ले लेते हैं वे ही लोग (दिल से) अल्लाह और उसके रसूल पर इमान लाए हैं तो जब ये लोग अपने किसी काम के लिए तुम से इजाज़त माँगें तो तुम उनमें से जिसको (मुनासिब ख़्याल करके) चाहो इजाज़त दे दिया करो और ख़ुदा उसे उसकी बख़्शिश की दुआ भी करो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (62)

(ऐ इमानदारों) जिस तरह तुम में से एक दूसरे को (नाम ले कर) बुलाया करते हैं उस तरह आपस में रसूल का बुलाना न समझो अल्लाह उन लोगों को ख़ूब जानता है जो तुम में से आँख बचा के (पैग़म्बर के पास से) खिसक जाते हैं- तो जो लोग उसके हुक्म की मुख़ालफत करते हैं उनको इस बात से डरते रहना चाहिए कि (मुबादा) उन पर कोई मुसीबत आ पड़े या उन पर कोई दर्दनाक अज़ाब नाज़िल हो (63)

ख़बरदार जो कुछ सारे आसमान व ज़मीन में है (सब) यक़ीनन अल्लाह ही का है जिस हालत पर तुम हो अल्लाह ख़ूब जानता है और जिस दिन उसके पास ये लोग लौटा कर लाएँ जाएँगें तो जो कुछ उन लोगों ने किया कराया है बता देगा और अल्लाह तो हर चीज़ से ख़ूब वाकिफ है (64)

25 सूरह फु़रकान

सूरह फु़रकान मक्का में नाज़िल हुई और उसकी 77 आयतें और 6 रुकुउ हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(अल्लाह) बहुत बाबरकत है जिसने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर कु़रान नाज़िल किया ताकि सारे जहाॅन के लिए (अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाला हो (1)

वह खु़दा कि सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत उसी की है और उसने (किसी को) न अपना लड़का बनाया और न सल्तनत में उसका कोई शरीक है और हर चीज़ को (उसी ने पैदा किया) फिर उस अन्दाज़े से दुरुस्त किया (2)

और लोगों ने उसके सिवा दूसरे दूसरे माबूद बना रखें हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद दूसरे के पैदा किए हुए हैं और वह खुद अपने लिए भी न नुक़सान पर क़ाबू रखते हैं न नफा पर और न मौत ही पर एख्तियार रखते हैं और न ज़िन्दगी पर और न मरने बाद जी उठने पर (3)

और जो लोग काफिर हो गए बोल उठे कि ये (कु़रान) तो निरा झूठ है जिसे उस शख़्स (रसूल) ने अपने जी से गढ़ लिया और कुछ और लोगों ने इस इफतिरा परवाज़ी में उसकी मदद भी की है (4)

तो यक़ीनन खु़द उन ही लोगों ने ज़ुल्म व फरेब किया है और (ये भी) कहा कि (ये तो) अगले लोगों के ढकोसले हैं जिसे उसने किसी से लिखवा लिया है पस वही सुबह व शाम उसके सामने पढ़ा जाता है (5)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि इसको उस शख़्स ने नाज़िल किया है जो सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों को खू़ब जानता है बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (6)

और उन लोगों ने (ये भी) कहा कि ये कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है फिरता है उसके पास कोई फरिश्ता क्यों नहीं नाज़िल होता कि वह भी उसके साथ (अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाला होता (7)

(कम से कम) इसके पास ख़ज़ाना ही ख़ज़ाना ही (आसमान से) गिरा दिया जाता या (और नहीं तो)

उसके पास कोई बाग़ ही होता कि उससे खाता (पीता) और ये ज़ालिम (कुफ़्फ़ार मोमिनों से) कहते हैं कि तुम लोग तो बस ऐसे आदमी की पैरवी करते हो जिस पर जादू कर दिया गया है (8)

(ऐ रसूल) ज़रा देखो तो कि इन लोगों ने तुम्हारे वास्ते कैसी कैसी फबत्तियाँ गढ़ी हैं और गुमराह हो गए तो अब ये लोग किसी तरह राह पर आ ही नहीं सकते (9)

अल्लाह तो ऐसा बारबरकत है कि अगर चाहे तो (एक बाग़ क्या चीज़ है) इससे बेहतर बहुतेरे ऐसे बाग़ात तुम्हारे वास्ते पैदा करे जिन के नीचे नहरें जारी हों और (बाग़ात के अलावा उनमें) तुम्हारे वास्ते महल बना दे (10)

(ये सब कुछ नहीं) बल्कि (सच यूँ है कि) उन लोगों ने क़यामत ही को झूठ समझा है और जिस शख़्स ने क़यामत को झूठ समझा उसके लिए हमने जहन्नुम को (दहका के) तैयार कर रखा है (11)

जब जहन्नुम इन लोगों को दूर से दखेगी तो (जोश खाएगी और) ये लोग उसके जोश व ख़रोश की आवाज़ सुनेंगें (12)

और जब ये लोग ज़ंजीरों से जकड़कर उसकी किसी तंग जगह मे झोंक दिए जाएँगे तो उस वक़्त मौत को पुकारेंगे (13)

(उस वक़्त उनसे कहा जाएगा कि) आज एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुतेरी मौतों को पुकारो (मगर इससे भी कुछ होने वाला नहीं) (14)

(ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि जहन्नुम बेहतर है या हमेशा रहने का बाग़ (बेहश्त) जिसका परहेज़गारों से वायदा किया गया है कि वह उन (के आमाल) का सिला होगा और आख़िरी ठिकाना (15)

जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगें उनके लिए वहाँ मौजूद होगी (और) वह हमेशा (उसी हाल में) रहेंगें ये तुम्हारे परवरदिगार पर एक लाज़िमी और माँगा हुआ वायदा है (16)

और जिस दिन अल्लाह उन लोगों को और जिनकी ये लोग अल्लाह को छोड़कर परसतिश किया करते हैं (उनको) जमा करेगा और पूछेगा क्या तुम ही ने हमारे उन बन्दों को गुमराह कर दिया था या ये लोग खुद राह रास्ते से भटक गए थे (17)

(उनके माबूद) अर्ज़ करेंगें- सुबहान अल्लाह (हम तो ख़ुद तेरे बन्दे थे) हमें ये किसी तरह ज़ेबा न था कि हम तुझे छोड़कर दूसरे को अपना सरपरस्त बनाते (फिर अपने को क्यों कर माबूद बनाते)

मगर बात तो ये है कि तू ही ने इनको बाप दादाओं को चैन दिया-यहाँ तक कि इन लोगों ने (तेरी) याद भुला दी और ये ख़ुद हलाक होने वाले लोग थे (18)

तब (काफ़िरों से कहा जाएगा कि) तुम जो कुछ कह रहे हो उसमें तो तुम्हारे माबूदों ने तुम्हें झूठला दिया तो अब तुम न (हमारे अज़ाब के) टाल देने की सकत रखते हो न किसी से मदद ले सकते हो और (याद रखो) तुममें से जो ज़ुल्म करेगा हम उसको बड़े (सख़्त) अज़ाब का (मज़ा) चखाएगें (19)

और (ऐ रसूल) हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे वह सब के सब यक़ीनन बिला शक खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे और हमने तुम में से एक को एक का (ज़रिया) आज़माइश बना दिया (मुसलमानों) क्या तुम अब भी सब्र करते हो (या नहीं) और तुम्हारा परवरदिगार (सब की) देख भाल कर रहा है (20)

और जो लोग (क़यामत में) हमारी हुज़ूरी की उम्मीद नहीं रखते कहा करते हैं कि आख़िर फरिश्ते हमारे पास क्यों नहीं नाज़िल किए गए या हम अपने परवरदिगार को (क्यों नहीं) देखते उन लोगों ने अपने जी में अपने को (बहुत) बड़ा समझ लिया है और बड़ी सरकशी की (21)

जिस दिन ये लोग फरिश्तों को देखेंगे उस दिन गुनाह गारों को कुछ खुशी न होगी और फरिश्तों को देखकर कहेंगे दूर दफान (22)

और उन लोगों ने (दुनिया में) जो कुछ नेक काम किए हैं हम उसकी तरफ तवज्जों करेंगें तो हम उसको (गोया) उड़ती हुयी ख़ाक बनाकर (बरबाद कर) देगें (23)

उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर है बेहतर होगा और आरमगाह भी अच्छी से अच्छी (24)

और जिस दिन आसमान बदली के सबब से फट जाएगा और फरिश्ते कसरत से (जूक दर ज़ूक) नाज़िल किए जाएँगे (25)

उसे दिन की सल्तनल ख़ास अल्लाह ही के लिए होगी और वह दिन काफिरों पर बड़ा सख़्त होगा (26)

और जिस दिन ज़ुल्म करने वाला अपने हाथ (मारे अफ़सोस के) काटने लगेगा और कहेगा काश रसूल के साथ मैं भी (दीन का सीधा) रास्ता पकड़ता (27)

हाए अफसोस काश मै फला शख़्स को अपना दोस्त न बनाता (28)

बेशक यक़ीनन उसने हमारे पास नसीहत आने के बाद मुझे बहकाया और शैतान तो आदमी को रुसवा करने वाला ही है (29)

और (उस वक्त) रसूल (बारगाहे अल्लाह वन्दी में) अर्ज़ करेगें कि ऐ मेरे परवरदिगार मेरी क़ौम ने तो इस क़ुरान को बेकार बना दिया (30)

और हमने (गोया ख़ुद) गुनाहगारों में से हर नबी के दुश्मन बना दिए हैं और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत और मददगारी के लिए काफी है (31)

और कुफ्फार कहने लगे कि उनके ऊपर (आख़िर) क़ुरान का कुल (एक ही दफा) क्यों नहीं नाज़िल किया गया (हमने) इस तरह इसलिए (नाज़िल किया) ताकि तुम्हारे दिल को तस्कीन देते रहें और हमने इसको ठहर ठहर कर नाज़िल किया (32)

और (ये कुफ्फार) चाहे कैसी ही (अनोखी) मसल बयान करेंगे मगर हम तुम्हारे पास (उनका) बिल्कुल ठीक और निहायत उम्दा (जवाब) बयान कर देगें (33)

जो लोग (क़यामत के दिन) अपने अपने मोहसिनों के बल जहन्नुम में हकाए जाएगें वही लोग बदतर जगह में होगें और सब से ज़्यादा राह रास्त से भटकने वाले (34)

और अलबत्ता हमने मूसा को किताब (तौरैत) अता की और उनके साथ उनके भाई हारुन को (उनका) वज़ीर बनाया (35)

तो हमने कहा तुम दोनों उन लोगों के पास जा जो हमारी (कुदरत की) निशानियों को झुठलाते हैं जाओ (और समझाओ जब न माने) तो हमने उन्हें ख़ूब बरबाद कर डाला (36)

और नूह की क़ौम को जब उन लोगों ने (हमारे) पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उन्हें डुबो दिया और हमने उनको लोगों (के हैरत) की निशानी बनाया और हमने ज़ालिमों के वास्ते दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (37)

और (इसी तरह) आद और समूद और नहर वालों और उनके दरम्यिान में बहुत सी जमाअतों को (हमने हलाक कर डाला) (38)

और हमने हर एक से मिसालें बयान कर दी थीं और (खूब समझाया) मगर न माना (39)

हमने उनको ख़ूब सत्यानास कर छोड़ा और ये लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) उस बस्ती पर (हो) आए हैं जिस पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गयी तो क्या उन लोगों ने इसको देखा न होगा मगर (बात ये है कि) ये लोग मरने के बाद जी उठने की उम्मीद नहीं रखते (फिर क्यों इमान लाएँ) (40)

और (ऐ रसूल) ये लोग तुम्हें जब देखते हैं तो तुम से मसख़रा पन ही करने लगते हैं कि क्या यही वह (हज़रत) हैं जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है (माज़ अल्लाह) (41)

अगर बुतों की परसतिश पर साबित क़दम न रहते तो इस शख़्स ने हमको हमारे माबूदों से बहका दिया था और बहुत जल्द (क़यामत में) जब ये लोग अज़ाब को देखेंगें तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि राहे रास्त से कौन ज़्यादा भटका हुआ था (42)

क्या तुमने उस शख़्स को भी देखा है जिसने अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना रखा है तो क्या तुम उसके ज़िम्मेदार हो सकते हो (कि वह गुमराह न हों) (43)

क्या ये तुम्हारा ख़्याल है कि इन (कुफ़्फ़ारों) में अक्सर (बात) सुनते या समझते है (नहीं) ये तो बस बिल्कुल मिसल जानवरों के हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा राह (रास्त) से भटके हुए (44)

(ऐ रसूल) क्या तुमने अपने परवरदिगार की क़ुदरत की तरफ नज़र नहीं की कि उसने क्योंकर साये को फैला दिया अगर वह चहता तो उसे (एक ही जगह) ठहरा हुआ कर देता फिर हमने आफताब को (उसकी शिनाख़्त के वास्ते) उसका रहनुमा बना दिया (45)

फिर हमने उसको थोड़ा थोड़ा करके अपनी तरफ खीच लिया (46)

और वही तो वह (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे वास्ते रात को पर्दा बनाया और नींद को राहत और दिन को (कारोबार के लिए) उठ खड़ा होने का वक़्त बनाया (47)

और वही तो वह (अल्लाह) है जिसने अपनी रहमत (बारिश) के आगे आगे हवाओं को खुश ख़बरी देने के लिए (पेश ख़ेमा बना के) भेजा और हम ही ने आसमान से बहुत पाक और सुथरा हुआ पानी बरसाया (48)

ताकि हम उसके ज़रिए से मुर्दा (वीरान) शहर को ज़िन्दा (आबाद) कर दें और अपनी मख़लूकात में से चौपायों और बहुत से आदमियों को उससे सेराब करें (49)

और हमने पानी को उनके दरम्यिान (तरह तरह से) तक़सीम किया ताकि लोग नसीहत हासिल करें मगर अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुछ न माना (50)

और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में ज़रुर एक (अज़ाबे अल्लाह से) डराने वाला पैग़म्बर भेजते (51)

(तो ऐ रसूल) तुम काफिरों की इताअत न करना और उनसे क़ुरान के (दलाएल) से ख़ूब लड़ों (52)

और वही तो वह (अल्लाह) है जिसने दरयाओं को आपस में मिला दिया (और बावजूद कि) ये खालिस मज़ेदार मीठा है और ये बिल्कुल खारी कड़वा (मगर दोनों को मिलाया) और दोनों के दरम्यिान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी है (कि गड़बड़ न हो) (53)

और वही तो वह (अल्लाह) है जिसने पानी (मनी) से आदमी को पैदा किया फिर उसको ख़ानदान और सुसराल वाला बनाया और (ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर क़ादिर है (54)

और लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) अल्लाह को छोड़कर उस चीज़ की परसतिश करते हैं जो न उन्हें नफा ही दे सकती है और न नुक़सान ही पहुँचा सकती है और काफिर (अबूजहल) तो हर वक्त अपने परवरदिगार की मुख़ालेफत पर ज़ोर लगाए हुए है (55)

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमको बस (नेकी को जन्नत की) खुशबरी देने वाला और (बुरों को अज़ाब से) डराने वाला बनाकर भेजा है (56)

और उन लोगों से तुम कह दो कि मै इस (तबलीग़े रिसालत) पर तुमसे कुछ मज़दूरी तो माँगता नहीं हूँ मगर तमन्ना ये है कि जो चाहे अपने परवरदिगार तक पहुँचने की राह पकड़े (57)

और (ऐ रसूल) तुम उस (अल्लाह) पर भरोसा रखो जो ऐसा ज़िन्दा है कि कभी नहीं मरेगा और उसकी हम्द व सना की तस्बीह पढ़ो और वह अपने बन्दों के गुनाहों की वाक़िफ़ कारी में काफी है (वह ख़ुद समझ लेगा) (58)

जिसने सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है छहः दिन में पैदा किया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और वह बड़ा मेहरबान है तो तुम उसका हाल किसी बाख़बर ही से पूछना (59)

और जब उन कुफ्फारों से कहा जाता है कि रहमान (अल्लाह) को सजदा करो तो कहते हैं कि

रहमान क्या चीज़ है तुम जिसके लिए कहते हो हम उस का सजदा करने लगें और (इससे) उनकी नफरत और बढ़ जाती है (60) सजदा 8

बहुत बाबरकत है वह अल्लाह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उन बुर्जों में (आफ़ताब का) चिराग़ और जगमगाता चाँद बनाया (61)

और वही तो वह (अल्लाह) है जिसने रात और दिन (एक) को (एक का) जानशीन बनाया (ये) उस के (समझने के) लिए है जो नसीहत हासिल करना चाहे या शुक्र गुज़ारी का इरादा करें (62)

और (अल्लाहए) रहमान के ख़ास बन्दे तो वह हैं जो ज़मीन पर फिरौतनी के साथ चलते हैं और जब जाहिल उनसे (जिहालत) की बात करते हैं तो कहते हैं कि सलाम (तुम सलामत रहो) (63)

और वह लोग जो अपने परवरदिगार के वास्ते सज्दे और क़याम में रात काट देते हैं (64)

और वह लोग जो दुआ करते हैं कि परवरदिगारा हम से जहन्नुम का अज़ाब फेरे रहना क्योंकि उसका अज़ाब बहुत (सख़्त और पाएदार होगा) (65)

बेशक वह बहुत बुरा ठिकाना और बुरा मक़ाम है (66)

और वह लोग कि जब खर्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं और उनका ख़र्च उसके दरमेयान औसत दर्जे का रहता है (67)

और वह लोग जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूदों की परसतिश नही करते और जिस जान के मारने को अल्लाह ने हराम कर दिया है उसे नाहक़ क़त्ल नहीं करते और न ज़िना करते हैं और जो शख़्स ऐसा करेगा वह आप अपने गुनाह की सज़ा भुगतेगा (68)

कि क़यामत के दिन उसके लिए अज़ाब दूना कर दिया जाएगा और उसमें हमेशा ज़लील व ख़वार रहेगा (69)

मगर (हाँ) जिस शख़्स ने तौबा की और इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो (अलबत्ता) उन लोगों की बुराइयों को अल्लाह नेकियों से बदल देगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (70)

और जिस शख़्स ने तौबा कर ली और अच्छे अच्छे काम किए तो बेशक उसने अल्लाह की तरफ (सच्चे दिल से) हक़ीक़क़तन रुजु की (71)

और वह लोग जो फरेब के पास ही नही खड़े होते और वह लोग जब किसी बेहूदा काम के पास से गुज़रते हैं तो बुर्ज़ुगाना अन्दाज़ से गुज़र जाते हैं (72)

और वह लोग कि जब उन्हें उनके परवरदिगार की आयतें याद दिलाई जाती हैं तो बहरे अन्धें होकर गिर नहीं पड़ते बल्कि जी लगाकर सुनते हैं (73)

और वह लोग जो (हमसे) अर्ज़ करते हैं कि परवरदिगार हमें हमारी बीबियों और औलादों की तरफ से आँखों की ठन्डक अता फरमा और हमको परहेज़गारों का पेशवा बना (74)

ये वह लोग हैं जिन्हें उनकी जज़ा में (बेहश्त के) बाला ख़ाने अता किए जाएँगें और वहाँ उन्हें ताज़ीम व सलाम (का बदला) पेश किया जाएगा (75)

ये लोग उसी में हमेशा रहेंगें और वह रहने और ठहरने की अच्छी जगह है (76)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर दुआ नही किया करते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नही करता तुमने तो (उसके रसूल को) झुठलाया तो अन क़रीब ही (उसका वबाल) तुम्हारे सर पड़ेगा (77)

26 सूरह शोअरा

सूरह शोअरा मक्के में नाज़िल हुई और उसकी दौ सौ सत्ताइस आयतें और ग्यारह रुकुउ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ता सीन मीम (1)

ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें है (2)

(ऐ रसूल) शायद तुम (इस फिक्र में) अपनी जान हलाक कर डालोगे कि ये (कुफ्फार) मोमिन क्यो नहीं हो जाते (3)

अगर हम चाहें तो उन लोगों पर आसमान से कोई ऐसा मौजिज़ा नाज़िल करें कि उन लोगों की गर्दनें उसके सामने झुक जाएँ (4)

और (लोगों का क़ायदा है कि) जब उनके पास कोई कोई नसीहत की बात अल्लाह की तरफ से आयी तो ये लोग उससे मुँह फेरे बग़ैर नहीं रहे (5)

उन लोगों ने झुठलाया ज़रुर तो अनक़रीब ही (उन्हें) इस (अज़ाब) की हक़ीकत मालूम हो जाएगी जिसकी ये लोग हँसी उड़ाया करते थे (6)

क्या इन लोगों ने ज़मीन की तरफ भी (ग़ौर से) नहीं देखा कि हमने हर रंग की उम्दा उम्दा चीज़ें उसमें किस कसरत से उगायी हैं (7)

यक़ीनन इसमें (भी क़ुदरत) अल्लाह की एक बड़ी निशानी है मगर उनमें से अक्सर इमान लाने वाले ही नहीं (8)

और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार यक़ीनन (हर चीज़ पर) ग़ालिब (और) मेहरबान है (9)

(ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को आवाज़ दी कि (इन) ज़ालिमों फिरआऊन की क़ौम के पास जाओ (हिदायत करो)(10)

क्या ये लोग (मेरे ग़ज़ब से) डरते नहीं है (11)

मूसा ने अर्ज़ कि परवरदिगार मैं डरता हूँ कि (मुबादा) वह लोग मुझे झुठला दे (12)

और (उनके झुठलाने से) मेरा दम रुक जाए और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) न चले तो हारुन के पास पैग़ाम भेज दे (कि मेरा साथ दे) (13)

(और इसके अलावा) उनका मेरे सर एक जुर्म भी है (कि मैने एक शख़्स को मार डाला था) (14)

तो मैं डरता हूँ कि (शायद) मुझे ये लाग मार डालें अल्लाह ने कहा हरगिज़ नहीं अच्छा तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ हैं (15)

और (सारी गुफ्तगू) अच्छी तरह सुनते हैं ग़रज़ तुम दोनों फिरआऊन के पास जाओ और कह दो कि हम सारे जहाँन के परवरदिगार के रसूल हैं (और पैग़ाम लाएँ हैं) (16)

कि आप बनी इसराइल को हमारे साथ भेज दीजिए (17)

(चुनान्चे मूसा गए और कहा) फिरआऊन बोला (मूसा) क्या हमने तुम्हें यहाँ रख कर बचपने में तुम्हारी परवरिश नहीं की और तुम अपनी उम्र से बरसों हम मे रह सह चुके हो (18)

और तुम अपना वह काम (ख़ून क़िब्ती) जो कर गए और तुम (बड़े) नाशुक्रे हो (19)

मूसा ने कहा (हाँ) मैने उस वक्त उस काम को किया जब मै हालते ग़फ़लत में था (20)

फिर जब मै आप लोगों से डरा तो भाग खड़ा हुआ फिर (कुछ अरसे के बाद) मेरे परवरदिगार ने मुझे नुबूवत अता फरमायी और मुझे भी एक पैग़म्बर बनाया (21)

और ये भी कोई एहसान हे जिसे आप मुझ पर जता रहे है कि आप ने बनी इसराईल को ग़ुलाम बना रखा है (22)

फिरआऊन ने पूछा (अच्छा ये तो बताओ) रब्बुल आलमीन क्या चीज़ है (23)

मूसा ने कहाँ सारे आसमान व ज़मीन का और जो कुछ इन दोनों के दरम्यिान है (सबका) मालिक अगर आप लोग यक़ीन कीजिए (तो काफी है) (24)

फिरआऊन ने उन लोगो से जो उसके इर्द गिर्द (बैठे) थे कहा क्या तुम लोग नहीं सुनते हो (25)

मूसा ने कहा (वही अल्लाह जो कि) तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे बाप दादाओं का परवरदिगार है (26)

फिरआऊन ने कहा (लोगों) ये रसूल जो तुम्हारे पास भेजा गया है हो न हो दीवाना है (27)

मूसा ने कहा (वह अल्लाह जो) पूरब पच्छिम और जो कुछ इन दोनों के दरम्यिान (सबका) मालिक है अगर तुम समझते हो (तो यही काफी है) (28)

फिरआऊन ने कहा अगर तुम मेरे सिवा किसी और को (अपना) अल्लाह बनाया है तो मै ज़रुर तुम्हे क़ैदी बनाऊँगा (29)

मूसा ने कहा अगरचे मैं आपको एक वाज़ेए व रौशन मौजिज़ा भी दिखाऊ (तो भी) (30)

फिरआऊन ने कहा (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो ला दिखाओ (31)

बस (ये सुनते ही) मूसा ने अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दी फिर तो यकायक वह एक सरीही अज़दहा बन गया (32)

और (जेब से) अपना हाथ बाहर निकाला तो यकायक देखने वालों के वास्ते बहुत सफेद चमकदार था (33)

(इस पर) फिरआऊन अपने दरबारियों से जो उसके गिर्द (बैठे) थे कहने लगा (34)

कि ये तो यक़ीनी बड़ा खिलाड़ी जादूगर है ये तो चाहता है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से बाहर निकाल दे तो तुम लोग क्या हुक्म लगाते हो (35)

दरबारियों ने कहा अभी इसको और इसके भाई को (चन्द) मोहलत दीजिए (36)

और तमाम शहरों में जादूगरों के जमा करने को हरकारे रवाना कीजिए कि वह लोग तमाम बड़े बड़े खिलाड़ी जादूगरों की आपके सामने ला हाज़िर करें (37)

ग़रज़ वक्ते मुकर्रर हुआ सब जादूगर उस मुक़र्रर के वायदे पर जमा किए गए (38)

और लोगों में मुनादी करा दी गयी कि तुम लोग अब भी जमा होगे (39)
या नहीं ताकि अगर जादूगर ग़ालिब और वर है तो हम लोग उनकी पैरवी करें (40)

अलग़रज जब सब जादूगर आ गये तो जादूगरों ने फिरआऊन से कहा कि अगर हम ग़ालिब आ गए तो हमको यक़ीनन कुछ इनाम (सरकार से) मिलेगा (41)

फिरआऊन ने कहा हा (ज़रुर मिलेगा) और (इनाम क्या चीज़ है) तुम उस वक्त (मेरे) मुकररेबीन (बारगाह) से हो गए (42)

मूसा ने जादूगरों से कहा (मंत्र व तंत्र) जो कुछ तुम्हें फेंकना हो फेंको (43)

इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी छड़ियाँ (मैदान में) डाल दी और कहने लगे फिरआऊन के जलाल की क़सम हम ही ज़रुर ग़ालिब रहेंगे (44)

तब मूसा ने अपनी छड़ी डाली तो जादूगरों ने जो कुछ (शोबदे) बनाए थे उसको वह निगलने लगी (45)

ये देखते ही जादूगर लोग सजदे में (मूसा के सामने) गिर पड़े (46)

और कहने लगे हम सारे जहाँ के परवरदिगार पर इमान लाए (47)

जो मूसा और हारुन का परवरदिगार है (48)

फिरआऊन ने कहा (हाए) क़ब्ल इसके कि मै तुम्हें इजाज़त दूँ तुम इस पर इमान ले आए बेशक ये तुम्हारा बड़ा (गुरु है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है तो ख़ैर) अभी तुम लोगों को (इसका नतीजा) मालूम हो जाएगा कि हम यक़ीनन तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पाँव काट डालेगें और तुम सब के सब को सूली देगें (49)

वह बोले कुछ परवाह नही हमको तो बहरहाल अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है (50)

हम चूँकि सबसे पहले इमान लाए है इसलिए ये उम्मीद रखते हैं कि हमारा परवरदिगार हमारी ख़ताएँ माफ कर देगा (51)

और हमने मूसा के पास वही भेजी कि तुम मेरे बन्दों को लेकर रातों रात निकल जाओ क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जाएगा (52)

तब फिरआऊन ने (लश्कर जमा करने के ख़्याल से) तमाम शहरों में (धड़ा धड़) हरकारे रवाना किए (53)

(और कहा) कि ये लोग मूसा के साथ बनी इसराइल थोड़ी सी (मुट्ठी भर की) जमाअत हैं (54)

और उन लोगों ने हमें सख़्त गुस्सा दिलाया है (55)

और हम सबके सब बा साज़ों सामान हैं (56)

(तुम भी आ जाओ कि सब मिलकर ताअककुब (पीछा) करें) (57)

ग़रज़ हमने इन लोगों को (मिस्र के) बाग़ों और चश्मों और खज़ानों और इज़्ज़त की जगह से (यूँ) निकाल बाहर किया (58)

(और जो नाफरमानी करे) इसी तरह सज़ा होगी और आख़िर हमने उन्हीं चीज़ों का मालिक बनी इसराइल को बनाया (59)

ग़रज़ (मूसा) तो रात ही को चले गए (60)

और उन लोगों ने सूरज निकलते उनका पीछा किया तो जब दोनों जमाअतें (इतनी करीब हुयीं कि) एक दूसरे को देखने लगी तो मूसा के साथी (हैरान होकर) कहने लगे (61)

कि अब तो पकड़े गए मूसा ने कहा हरगिज़ नहीं क्योंकि मेरे साथ मेरा परवरदिगार है (62)

वह फौरन मुझे कोई (मुखलिसी का) रास्ता बता देगा तो हमने मूसा के पास वही भेजी कि अपनी छड़ी दरिया पर मारो (मारना था कि) फौरन दरिया फुट के टुकड़े टुकड़े हो गया तो गोया हर टुकड़ा एक बड़ा ऊँचा पहाड़ था (63)

और हमने उसी जगह दूसरे फरीक (फिरआऊन के साथी) को क़रीब कर दिया (64)

और मूसा और उसके साथियों को हमने (डूबने से) बचा लिया (65)

फिर दूसरे फरीक़ (फिरआऊन और उसके साथियों) को डुबोकर हलाक़ कर दिया (66)
बेशक इसमें यक़ीनन एक बड़ी इबरत है और उनमें अक्सर इमान लाने वाले ही न थे (67)

और इसमें तो शक ही न था कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन (सब पर) ग़ालिब और बड़ा मेहरबान है (68)

और (ऐ रसूल) उन लोगों के सामने इबराहीम का किस्सा बयान करों (69)

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा (70)

कि तुम लोग किसकी इबादत करते हो तो वह बोले हम बुतों की इबादत करते हैं और उन्हीं के मुजाविर बन जाते हैं (71)

इबराहीम ने कहा भला जब तुम लोग उन्हें पुकारते हो तो वह तुम्हारी कुछ सुनते हैं (72)

या तम्हें कुछ नफा या नुक़सान पहुँचा सकते हैं (73)

कहने लगे (कि ये सब तो कुछ नहीं) बल्कि हमने अपने बाप दादाओं को ऐसा ही करते पाया है (74)

इबराहीम ने कहा क्या तुमने देखा भी कि जिन चीज़ों की तुम परसतिश करते हो (75)

या तुम्हारे अगले बाप दादा (करते थे) ये सब मेरे यक़ीनी दुश्मन हैं (76)

मगर सारे जहाँ का पालने वाला जिसने मुझे पैदा किया (वही मेरा दोस्त है) (77)

फिर वही मेरी हिदायत करता है (78)

और वह शख़्स जो मुझे (खाना) खिलाता है और मुझे (पानी) पिलाता है (79)

और जब बीमार पड़ता हूँ तो वही मुझे शिफा इनायत फरमाता है (80)

और वह वही है जो मुझे मार डालेगा और उसके बाद (फिर) मुझे ज़िन्दा करेगा (81)

और वह वही है जिससे मै उम्मीद रखता हूँ कि क़यामत के दिन मेरी ख़ताओं को बख़्श देगा (82)

परवरदिगार मुझे इल्म व फहम अता फरमा और मुझे नेकों के साथ शामिल कर (83)

और आइन्दा आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्रे ख़ैर क़ायम रख (84)

और मुझे भी नेअमत के बाग़ (बेहश्त) के वारिसों में से बना (85)

और मेरे (मुँह बोले) बाप (चचा आज़र) को बख़्श दे क्योंकि वह गुमराहों में से है (86)

और जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएँगें मुझे रुसवा न करना (87)

जिस दिन न तो माल ही कुछ काम आएगा और न लड़के बाले (88)

मगर जो शख़्स अल्लाह के सामने (गुनाहों से) पाक दिल लिए हुए हाज़िर होगा (वह फायदे में रहेगा) (89)

और बेहश्त परहेज़ गारों के क़रीब कर दी जाएगी (90)

और दोज़ख़ गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी (91)

और उन लोगों (एहले जहन्नुम) से पूछा जाएगा कि अल्लाह को छोड़कर जिनकी तुम परसतिश करते थे (आज) वह कहाँ हैं (92)

क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं या वह ख़ुद अपनी आप बाहम मदद कर सकते हैं (93)

फिर वह (माबूद) और गुमराह लोग और शैतान का लशकर (94)

(ग़रज़ सबके सब) जहन्नुम में औधें मुँह ढकेल दिए जाएँगे (95)

और ये लोग जहन्नुम में बाहम झगड़ा करेंगे और अपने माबूद से कहेंगे (96)

अल्लाह की क़सम हम लोग तो यक़ीनन सरीही गुमराही में थे (97)

कि हम तुम को सारे जहाँन के पालने वाले (अल्लाह) के बराबर समझते रहे (98)

और हमको बस (उन) गुनाहगारों ने (जो मुझसे पहले हुए) गुमराह किया (99)

तो अब तो न कोई (साहब) मेरी सिफारिश करने वाले हैं (100)

और न कोई दिलबन्द दोस्त हैं (101)

तो काश हमें अब दुनिया में दोबारा जाने का मौक़ा मिलता तो हम (ज़रुर) इमान वालों से होते (102)

इबराहीम के इस किस्से में भी यक़ीनन एक बड़ी इबरत है और इनमें से अक्सर इमान लाने वाले थे भी नहीं (103)

और इसमे तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) ग़ालिब और बड़ा मेहरबान है (104)

(यूँ ही) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरो को झुठलाया (105)

कि जब उनसे उन के भाई नूह ने कहा कि तुम लोग (अल्लाह से) क्यों नहीं डरते मै तो तुम्हारा यक़ीनी अमानत दार पैग़म्बर हूँ (106)

तुम ख़ुदा से डरो और मेरी इताअत करो (107)

और मैं इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ उजरत तो माँगता नहीं (108)

मेरी उजरत तो बस सारे जहाँ के पालने वाले अल्लाह पर है (109)

तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो वह लोग बोले जब कमीनो मज़दूरों वग़ैरह ने (लालच से) तुम्हारी पैरवी कर ली है (110)

तो हम तुम पर क्या इमान लाएँ (111)

नूह ने कहा ये लोग जो कुछ करते थे मुझे क्या ख़बर (और क्या ग़रज़) (112)

इन लोगों का हिसाब तो मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है (113)

काश तुम (इतनी) समझ रखते और मै तो इमानदारों को अपने पास से निकालने वाला नहीं (114)

मै तो सिर्फ (अज़ाबे अल्लाह से) साफ साफ डराने वाला हूँ (115)

वह लोग कहने लगे ऐ नूह अगर तुम अपनी हरकत से बाज़ न आओगे तो ज़रुर संगसार कर दिए जाओगे (116)

नूह ने अर्ज की परवरदिगार मेरी क़ौम ने यक़ीनन मुझे झुठलाया (117)

तो अब तू मेरे और इन लोगों के दरम्यिान एक क़तई फैसला कर दे और मुझे और जो मोमिनीन मेरे साथ हें उनको नजात दे (118)

ग़रज़ हमने नूह और उनके साथियों को जो भरी हुयी कश्ती में थे नजात दी (119)

फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़रक कर दिया (120)

बेशक इसमे भी यक़ीनन बड़ी इबरत है और उनमें से बहुतेरे इमान लाने वाले ही न थे (121)

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) ग़ालिब मेहरबान है (122)

(इसी तरह क़ौम) आद ने पैग़म्बरों को झुठलाया (123)

जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि तुम अल्लाह से क्यों नही डरते (124)

मैं तो यक़ीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ (125)

तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (126)

मै तो तुम से इस (तबलीगे़ रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी उजरत तो बस सारी अल्लाहयी के पालने वाले (अल्लाह) पर है (127)

तो क्या तुम ऊँची जगह पर बेकार यादगारे बनाते फिरते हो (128)

और बड़े बड़े महल तामीर करते हो गोया तुम हमेशा (यहीं) रहोगे (129)

और जब तुम (किसी पर) हाथ डालते हो तो सरकशी से हाथ डालते हो (130)

तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (131)

और उस शख़्स से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जिन्हें तुम ख़ूब जानते हो (132)

अच्छा सुनो उसने तुम्हारे चार पायों और लड़के बालों वग़ैरह और चश्मों से मदद की (133)

मै तो यक़ीनन तुम पर (134)

एक बड़े (सख़्त) रोज़ के अज़ाब से डरता हूँ (135)

वह लोग कहने लगे ख्वाह तुम नसीहत करो या न नसीहत करो हमारे वास्ते (सब) बराबर है (136)

ये (डरावा) तो बस अगले लोगों की आदत है (137)

हालाँकि हम पर अज़ाब (वग़ैरह अब) किया नहीं जाएगा (138)

ग़रज़ उन लोगों ने हूद को झुठला दिया तो हमने भी उनको हलाक कर डाला बेशक इस वाक़िये में यक़ीनी एक बड़ी इबरत है आर उनमें से बहुतेरे इमान लाने वाले भी न थे (139)

और इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है (140)

(इसी तरह क़ौम) समूद ने पैग़म्बरों को झुठलाया (141)

जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि तुम (अल्लाह से) क्यो नहीं डरते (142)

मैं तो यक़ीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ (143)

तो ख़ुदा से डरो और मेरी इताअत करो (144)

और मै तो तुमसे इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता- मेरी मज़दूरी तो बस सारी अल्लाहई के पालने वाले (अल्लाह पर है) (145)

क्या जो चीज़ें यहाँ (दुनिया में) मौजूद है (146)

बाग़ और चश्मे और खेतिया और छुहारे जिनकी कलियाँ लतीफ़ व नाज़ुक होती है (147)

उन्हीं मे तुम लोग इतमिनान से (हमेशा के लिए) छोड़ दिए जाओगे (148)

और (इस वजह से) पूरी महारत और तकलीफ के साथ पहाड़ों को काट काट कर घर बनाते हो (149)

तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (150)

और ज़्यादती करने वालों का कहा न मानों (151)

जो रुए ज़मीन पर फ़साद फैलाया करते हैं और (ख़राबियों की) इसलाह नहीं करते (152)

वह लोग बोले कि तुम पर तो बस जादू कर दिया गया है (कि ऐसी बातें करते हो) (153)

तुम भी तो आख़िर हमारे ही ऐसे आदमी हो पस अगर तुम सच्चे हो तो कोई मौजिज़ा हमारे पास ला (दिखाओ) (154)

सालेह ने कहा- यही ऊँटनी (मौजिज़ा) है एक बारी इसके पानी पीने की है और एक मुक़र्रर दिन तुम्हारे पीने का (155)

और इसको कोई तकलीफ़ न पहुँचाना वरना एक बड़े (सख़्त) ज़ोर का अज़ाब तुम्हे ले डालेगा (156)

इस पर भी उन लोगों ने उसके पाँव काट डाले और (उसको मार डाला) फिर ख़ुद पशेमान हुए (157)

फिर उन्हें अज़ाब ने ले डाला-बेशक इसमें यक़ीनन एक बड़ी इबरत है और इनमें के बहुतेरे इमान लाने वाले भी न थे (158)

और इसमें शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) ग़ालिब और मेहरबान है (159)

इसी तरह लूत की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया (160)

जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा कि तुम (अल्लाह से) क्यों नहीं डरते (161)

मै तो यक़ीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ तो अल्लाह से डरो (162)

और मेरी इताअत करो (163)

और मै तो तुमसे इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस सारी अल्लाहयी के पालने वाले (अल्लाह) पर है (164)

क्या तुम लोग (शहवत परस्ती के लिए) सारे जहाँ के लोगों में मर्दो ही के पास जाते हो (165)

और तुम्हारे वास्ते जो बीवियाँ तुम्हारे परवरदिगार ने पैदा की है उन्हें छोड़ देते हो (ये कुछ नहीं) बल्कि तुम लोग हद से गुज़र जाने वाले आदमी हो (166)

उन लोगों ने कहा ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आओगे तो तुम ज़रुर निकल बाहर कर दिए जाओगे (167)

लूत ने कहा मै यक़ीनन तुम्हारी (नाशाइसता) हरकत से बेज़ार हूँ (168)

(और दुआ की) परवरदिगार जो कुछ ये लोग करते है उससे मुझे और मेरे लड़कों को नजात दे (169)

तो हमने उनको और उनके सब लड़कों को नजात दी (170)

मगर (लूत की) बूढ़ी औरत कि वह पीछे रह गयी (171)

(और हलाक हो गयी) फिर हमने उन लोगों को हलाक कर डाला (172)

और उन पर हमने (पत्थरों का) मेंह बरसाया तो जिन लोगों को (अज़ाबे अल्लाह से) डराया गया था (173)

उन पर क्या बड़ी बारिश हुयी इस वाक़िये में भी एक बड़ी इबरत है और इनमें से बहुतेरे इमान लाने वाले ही न थे (174)

और इसमे तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन सब पर ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है (175)

इसी तरह जंगल के रहने वालों ने (मेरे) पैग़म्बरों को झुठलाया (176)

जब शुएब ने उनसे कहा कि तुम (ख़ुदा से) क्यों नहीं डरते (177)
मै तो बिला शुबाह तुम्हारा अमानदार हूँ (178)

तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (179)

मै तो तुमसे इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस सारी अल्लाहई के पालने वाले (अल्लाह) के ज़िम्मे है (180)

तुम (जब कोई चीज़ नाप कर दो तो) पूरा पैमाना दिया करो और नुक़सान (कम देने वाले) न बनो (181)

और तुम (जब तौलो तो) ठीक तराज़ू से डन्डी सीधी रखकर तौलो (182)

और लोगों को उनकी चीज़े (जो ख़रीदें) कम न ज़्यादा करो और ज़मीन से फसाद न फैलाते फिरो (183)

और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हे और अगली ख़िलकत को पैदा किया (184)

वह लोग कहने लगे तुम पर तो बस जादू कर दिया गया है (कि ऐसी बातें करते हों) (185)

और तुम तो हमारे ही ऐसे एक आदमी हो और हम लोग तो तुमको झूठा ही समझते हैं (186)

तो अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो (187)

और शुएब ने कहा जो तुम लोग करते हो मेरा परवरदिगार ख़ूब जानता है (188)

ग़रज़ उन लोगों ने शुएब को झुठलाया तो उन्हें साएबान (अब्र) के अज़ाब ने ले डाला- इसमे शक नहीं कि ये भी एक बड़े (सख़्त) दिन का अज़ाब था (189)

इसमे भी शक नहीं कि इसमें (समझदारों के लिए) एक बड़ी इबरत है और उनमें के बहुतेरे इमान लाने वाले ही न थे (190)

और बेशक तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है (191)

और (ऐ रसूल) बेशक ये (क़ुरान) सारी ख़ुदायी के पालने वाले (ख़ुदा) का उतारा हुआ है (192)
जिसे रुहुल अमीन (जिबरील) साफ़ अरबी ज़बान में लेकर तुम्हारे दिल पर नाज़िल हुए है (193)

ताकि तुम भी और पैग़म्बरों की तरह (194)

लोगों को अज़ाबे अल्लाह से डराओ (195)

और बेशक इसकी ख़बर अगले पैग़म्बरों की किताबों मे (भी मौजूद) है (196)

क्या उनके लिए ये कोई (काफ़ी) निशानी नहीं है कि इसको उलेमा बनी इसराइल जानते हैं (197)

और अगर हम इस क़ुरान को किसी दूसरी ज़बान वाले पर नाज़िल करते (198)

और वह उन अरबो के सामने उसको पढ़ता तो भी ये लोग उस पर इमान लाने वाले न थे (199)

इसी तरह हमने (गोया ख़ुद) इस इन्कार को गुनाहगारों के दिलों में राह दी (200)

ये लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब को न देख लेगें उस पर इमान न लाएँगे (201)

कि वह यकायक इस हालत में उन पर आ पड़ेगा कि उन्हें ख़बर भी न होगी (202)

(मगर जब अज़ाब नाज़िल होगा) तो वह लोग कहेंगे कि क्या हमें (इस वक्त कुछ) मोहलत मिल सकती है (203)

तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं (204)

तो क्या तुमने ग़ौर किया कि अगर हम उनको सालो साल चैन करने दे (205)

उसके बाद जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा किया जाता है उनके पास आ पहुँचे (206)

तो जिन चीज़ों से ये लोग चैन किया करते थे कुछ भी काम न आएँगी (207)

और हमने किसी बस्ती को बग़ैर उसके हलाक़ नहीं किया कि उसके समझाने को (पहले से) डराने वाले (पैग़म्बर भेज दिए) थे (208)

और हम ज़ालिम नहीं है (209)

और इस क़ुरान को शयातीन लेकर नाज़िल नही हुए (210)

और ये काम न तो उनके लिए मुनासिब था और न वह कर सकते थे (211)

बल्कि वह तो (वही के) सुनने से महरुम हैं (212)

(ऐ रसूल) तुम ख़ुदा के साथ किसी दूसरे माबूद की इबादत न करो वरना तुम भी मुबतिलाए अज़ाब किए जाओगे (213)

और (ऐ रसूल) तुम अपने क़रीबी रिश्तेदारों को (अज़ाबे अल्लाह से) डराओ (214)

और जो मोमिनीन तुम्हारे पैरो हो गए हैं उनके सामने अपना बाज़ू झुकाओ (215)

(तो वाज़ेए करो) पस अगर लोग तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो तुम (साफ साफ) कह दो कि मैं तुम्हारे करतूतों से बरी उज़ ज़िम्मा हूँ (216)

और तुम उस (अल्लाह) पर जो सबसे (ग़ालिब और) मेहरबान है (217)

भरोसा रखो कि जब तुम (नमाज़े तहज्जुद में) खड़े होते हो (218)

और सजदा (219)

करने वालों (की जमाअत) में तुम्हारा फिरना (उठना बैठना सजदा रुकूउ वग़ैरह सब) देखता है (220)

बेशक वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है क्या मै तुम्हें बता दूँ कि शयातीन किन लोगों पर नाज़िल हुआ करते हैं (221)

(लो सुनो) ये लोग झूठे बद किरदार पर नाज़िल हुआ करते हैं (222)

जो (फरिश्तो की बातों पर कान लगाए रहते हैं) कि कुछ सुन पाएँ (223)

हालाँकि उनमें के अक्सर तो (बिल्कुल) झूठे हैं और शायरों की पैरवी तो गुमराह लोग किया करते हैं (224)

क्या तुम नहीं देखते कि ये लोग जंगल जंगल सरगिरदाँ मारे मारे फिरते हैं (225)
और ये लोग ऐसी बाते कहते हैं जो कभी करते नहीं (226)

मगर (हाँ) जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और क़सरत से ख़ुदा का ज़िक्र किया करते हैं और जब उन पर ज़ुल्म किया जा चुका उसके बाद उन्होंनें बदला लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा कि वह किस जगह लौटाए जाएँगें (227)

27 सूरह नम्ल

सूरह नम्ल मक्का में नाज़िल हुई और उसकी तिराननबे आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ता सीन ये क़ुरान वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें है (1)

(ये) उन इमानदारों के लिए (अज़सरतापा) हिदायत और (जन्नत की) ख़ुशखबरी है (2)

जो नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और ज़कात दिया करते हैं और यही लोग आख़िरत (क़यामत) का भी यक़ीन रखते हैं (3)

इसमें शक नहीं कि जो लोग आखिरत पर इमान नहीं रखते (गोया) हमने ख़ुद (उनकी कारस्तानियों को उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है (4)

तो ये लोग भटकते फिरते हैं- यही वह लोग हैं जिनके लिए (क़यामत में) बड़ा अज़ाब है और यही लोग आख़िरत में सबसे ज़्यादा घाटा उठाने वाले हैं (5)

और (ऐ रसूल) तुमको तो क़ुरान एक बड़े वाक़िफ़कार हकीम की बारगाह से अता किया जाता है (6)

(वह वाक़िया याद दिलाओ) जब मूसा ने अपने लड़के बालों से कहा कि मैने (अपनी बायीं तरफ) आग देखी है (एक ज़रा ठहरो तो) मै वहाँ से कुछ (राह की) ख़बर लाँऊ या तुम्हें एक सुलगता हुआ आग का अँगारा ला दूँ ताकि तुम तापो (7)

ग़रज़ जब मूसा इस आग के पास आए तो उनको आवाज़ आयी कि मुबारक है वह जो आग में (तजल्ली दिखाना) है और जो उसके गिर्द है और वह अल्लाह सारे जहाँ का पालने वाला है (8)

(हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है- ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मै ज़बरदस्त हिकमत वाला हूँ (9)

और (हाँ) अपनी छड़ी तो (ज़मीन पर) डाल दो तो जब मूसा ने उसको देखा कि वह इस तरह लहरा रही है गोया वह जिन्दा अज़दहा है तो पिछले पावँ भाग चले और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने कहा) ऐ मूसा डरो नहीं हमारे पास पैग़म्बर लोग डरा नहीं करते हैं (10)

(मुतमइन हो जाते है) मगर जो शख़्स गुनाह करे फिर गुनाह के बाद उसे नेकी (तौबा) से बदल दे तो अलबत्ता बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ (11)

(वहाँ) और अपना हाथ अपने गरेबॉ में तो डालो कि वह सफेद बुर्राक़ होकर बेऐब निकल आएगा (ये वह मौजिज़े) मिन जुमला नौ मोजिज़ात के हैं जो तुमको मिलेगें तुम फिरआऊन और उसकी क़ौम के पास (जाओ) क्योंकि वह बदकिरदार लोग हैं (12)

तो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले मैजिज़े आए तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है (13)

और बावजूद के उनके दिल को उन मौजिज़ात का यक़ीन था मगर फिर भी उन लोगों ने सरकशी और तकब्बुर से उनको न माना तो (ऐ रसूल) देखो कि (आखिर) मुफसिदों का अन्जाम क्या होगा (14)

और इसमें शक नहीं कि हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म अता किया और दोनों ने (ख़ुश होकर) कहा अल्लाह का शुक्र जिसने हमको अपने बहुतेरे ईमानदार बन्दों पर फज़ीलत दी (15)

और (इल्म हिकमत जाएदाद (मनकूला) ग़ैर मनकूला सब में) सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा कि लोग हम को (अल्लाह के फज़्ल से) परिन्दों की बोली भी सिखायी गयी है और हमें (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी (अल्लाह का) सरीही फज़्ल व करम है (16)

और सुलेमान के सामने उनके लशकर जिन्नात और आदमी और परिन्दे सब जमा किए जाते थे (17)

तो वह सबके सब (मसल मसल) खड़े किए जाते थे (ग़रज़ इस तरह लशकर चलता) यहाँ तक कि जब (एक दिन) चीटीयों के मैदान में आ निकले तो एक चीटीं बोली ऐ चीटीयों अपने अपने बिल में घुस जाओ- ऐसा न हो कि सुलेमान और उनका लश्कर तुम्हे रौन्द डाले और उन्हें उसकी ख़बर भी न हो (18)

तो सुलेमान इस बात से मुस्कुरा के हँस पड़ें और अर्ज़ की परवरदिगार मुझे तौफीक़ अता फरमा कि जैसी जैसी नेअमतें तूने मुझ पर और मेरे वालदैन पर नाज़िल फरमाई हैं मै (उनका) शुक्रिया अदा करुँ और मैं ऐसे नेक काम करुँ जिसे तू पसन्द फरमाए और तू अपनी ख़ास मेहरबानी से मुझे (अपने) नेकोकार बन्दों में दाखिल कर (19)

और सुलेमान ने परिन्दों (के लश्कर) की हाज़िरी ली तो कहने लगे कि क्या बात है कि मै हुदहुद को (उसकी जगह पर) नहीं देखता क्या (वाक़ई में) वह कही ग़ायब है (20)

(अगर ऐसा है तो) मै उसे सख़्त से सख़्त सज़ा दूँगा या (नहीं तो) उसे ज़बाह ही कर डालूँगा या वह (अपनी बेगुनाही की) कोई साफ दलील मेरे पास पेश करे (21)

ग़रज़ सुलेमान ने थोड़ी ही देर (तवक्कुफ़ किया था कि (हुदहुद) आ गया) तो उसने अर्ज़ की मुझे यह बात मालूम हुयी है जो अब तक हुज़ूर को भी मालूम नहीं है और आप के पास शहरे सबा से एक तहक़ीकी ख़बर लेकर आया हूँ (22)

मैने एक औरत को देखा जो वहाँ के लोगों पर सलतनत करती है और उसे (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है और उसका एक बड़ा तख़्त है (23)

मैने ख़ुद मलका को देखा और उसकी क़ौम को देखा कि वह लोग अल्लाह को छोड़कर आफताब को सजदा करते हैं शैतान ने उनकी करतूतों को (उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है और उनको राहे रास्त से रोक रखा है (24)

तो उन्हें (इतनी सी बात भी नहीं सूझती) कि वह लोग अल्लाह ही का सजदा क्यों नहीं करते जो आसमान और ज़मीन की पोशीदा बातों को ज़ाहिर कर देता है और तुम लोग जो कुछ छिपाकर या ज़ाहिर करके करते हो सब जानता है (25)

अल्लाह वह है जिससे सिवा कोई माबूद नहीं वही (इतने) बड़े अर्श का मालिक है (26) सजदा 9

(ग़रज़) सुलेमान ने कहा हम अभी देखते हैं कि तूने सच सच कहा या तू झूठा है (27)

(अच्छा) हमारा ये ख़त लेकर जा और उसको उन लोगों के सामने डाल दे फिर उन के पास से जाना फिर देखते रहना कि वह लोग अख़िर क्या जवाब देते हैं (28)

(ग़रज़) हुद हुद ने मलका के पास ख़त पहुँचा दिया तो मलका बोली ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों ये एक वाजिबुल एहतराम ख़त मेरे पास डाल दिया गया है (29)

सुलेमान की तरफ से है (ये उसका सरनामा) है बिस्मिल्लाहिररहमानिरहीम (30)

(और मज़्मून) यह है कि मुझ से सरकशी न करो और मेरे सामने फरमाबरदार बन कर हाज़िर हो (31)

तब मलका (विलक़ीस) बोली ऐ मेरे दरबार के सरदारों तुम मेरे इस मामले में मुझे राय दो (क्योंकि मेरा तो ये क़ायदा है कि) जब तक तुम लोग मेरे सामने मौजूद न हो (मशवरा न दे दो) मैं किसी अम्र में क़तई फैसला न किया करती (32)

उन लोगों ने अर्ज़ की हम बड़े ज़ोरावर बड़े लड़ने वाले हैं और (आइन्दा) हर अम्र का आप को एख़्तियार है तो जो हुक्म दे आप (खुद अच्छी) तरह इसके अन्जाम पर ग़ौर कर ले (33)

मलका ने कहा बादशाहों का क़ायदा है कि जब किसी बस्ती में (बज़ोरे फ़तेह) दाखि़ल हो जाते हैं तो उसको उजाड़ देते हैं और वहाँ के मुअज़िज़ लोगों को ज़लील व रुसवा कर देते हैं और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे (34)

और मैं उनके पास (एलचियों की माअरफ़त कुछ तोहफा भेजकर देखती हूँ कि एलची लोग क्या जवाब लाते हैं) ग़रज़ जब बिलक़ीस का एलची (तोहफा लेकर) सुलेमान के पास आया (35)

तो सुलेमान ने कहा क्या तुम लोग मुझे माल की मदद देते हो तो अल्लाह ने जो (माल दुनिया) मुझे अता किया है वह (माल) उससे जो तुम्हें बख्शा है कहीं बेहतर है (मैं तो नही) बल्कि तुम्ही लोग अपने तोहफ़े तहायफ़ से ख़ुश हुआ करो (36)

(फिर तोहफा लाने वाले ने कहा) तो उन्हीं लोगों के पास जा हम यक़ीनन ऐसे लश्कर से उन पर चढ़ाई करेंगे जिसका उससे मुक़ाबला न हो सकेगा और हम ज़रुर उन्हें वहाँ से ज़लील व रुसवा करके निकाल बाहर करेंगे (37)

(जब वह जा चुका) तो सुलेमान ने अपने एहले दरबार से कहा ऐ मेरे दरबार के सरदारो तुममें से कौन ऐसा है कि क़ब्ल इसके वह लोग मेरे सामने फरमाबरदार बनकर आयें (38)

मलिका का तख़्त मेरे पास ले आए (इस पर) जिनों में से एक दियो बोल उठा कि क़ब्ल इसके कि हुज़ूर (दरबार बरख़ास्त करके) अपनी जगह से उठे मै तख़्त आपके पास ले आऊँगा और यक़ीनन उस पर क़ाबू रखता हूँ (और) ज़िम्मेदार हूँ (39)

इस पर अभी सुलेमान कुछ कहने न पाए थे कि वह शख़्स (आसिफ़ बिन बरखि़या) जिसके पास किताबे (अल्लाह) का किस कदर इल्म था बोला कि मै आप की पलक झपकने से पहले तख़्त को आप के पास हाज़िर किए देता हूँ (बस इतने ही में आ गया) तो जब सुलेमान ने उसे अपने पास

मौजूद पाया तो कहने लगे ये महज़ मेरे परवरदिगार का फज़्ल व करम है ताकि वह मेरा इम्तेहान ले कि मै उसका शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ और जो कोई शुक्र करता है वह अपनी ही भलाई के लिए शुक्र करता है और जो शख़्स ना शुक्री करता है तो (याद रखिए) मेरा परवरदिगार यक़ीनन बेपरवा और सख़ी है (40)

(उसके बाद) सुलेमान ने कहा कि उसके तख़्त में (उसकी अक्ल के इम्तिहान के लिए) तग़य्युर तबददुल कर दो ताकि हम देखें कि फिर भी वह समझ रखती है या उन लोगों में है जो कुछ समझ नहीं रखते (41)

(चुनान्चे ऐसा ही किया गया) फिर जब बिलक़ीस (सुलेमान के पास) आयी तो पूछा गया कि तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है वह बोली गोया ये वही है (फिर कहने लगी) हमको तो उससे पहले ही (आपकी नुबूवत) मालूम हो गयी थी और हम तो आपके फ़रमाबरदार थे ही (42)

और अल्लाह के सिवा जिसे वह पूजती थी सुलेमान ने उससे उसे रोक दिया क्योंकि वह काफिर क़ौम की थी (और आफताब को पूजती थी) (43)

फिर उससे कहा गया कि आप अब महल मे चलिए तो जब उसने महल (में शीशे के फर्श) को देखा तो उसको गहरा पानी समझी (और गुज़रने के लिए इस तरह अपने पाएचे उठा लिए कि) अपनी दोनों पिन्डलियाँ खोल दी सुलेमान ने कहा (तुम डरो नहीं) ये (पानी नहीं है) महल है जो शीशे से मढ़ा हुआ है (उस वक्त तम्बीह हुयी और) अर्ज़ की परवरदिगार मैने (आफताब को पूजा कर) यक़ीनन अपने ऊपर ज़ुल्म किया (44)

और अब मैं सुलेमान के साथ सारे जहाँ के पालने वाले ख़ुदा पर ईमान लाती हूँ और हम ही ने क़ौम समूद के पास उनके भाई सालेह को पैग़म्बर बनाकर भेजा कि तुम लोग अल्लाह की इबादत करो तो वह सालेह के आते ही (मोमिन व काफिर) दो फरीक़ बनकर बाहम झगड़ने लगे (45)

सालेह ने कहा ऐ मेरी क़ौम (आख़िर) तुम लोग भलाई से पहल बुराई के वास्ते जल्दी क्यों कर रहे हो तुम लोग अल्लाह की बारगाह में तौबा व अस्तग़फार क्यों नही करते ताकि तुम पर रहम किया जाए (46)

वह लोग बोले हमने तो तुम से और तुम्हारे साथियों से बुरा शगुन पाया सालेह ने कहा तुम्हारी बदकिस्मती अल्लाह के पास है (ये सब कुछ नहीं) बल्कि तुम लोगों की आज़माइश की जा रही है (47)

और शहर में नौ आदमी थे जो मुल्क के बानीये फसाद थे और इसलाह की फिक्र न करते थे-उन लोगों ने (आपस में) कहा कि बाहम अल्लाह की क़सम खाते जाओ (48)

कि हम लोग सालेह और उसके लड़के बालो पर शब खून करे उसके बाद उसके वाली वारिस से कह देगें कि हम लोग उनके घर वालों को हलाक़ होते वक़्त मौजूद ही न थे और हम लोग तो यक़ीनन सच्चे हैं (49)

और उन लोगों ने एक तदबीर की और हमने भी एक तदबीर की और (हमारी तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुयी (50)

तो (ऐ रसूल) तुम देखो उनकी तदबीर का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ कि हमने उनको और सारी क़ौम को हलाक कर डाला (51)

ये बस उनके घर हैं कि उनकी नाफरमानियों की वज़ह से ख़ाली वीरान पड़े हैं इसमे शक नही कि उस वाक़िये में वाक़िफ कार लोगों के लिए बड़ी इबरत है (52)

और हमने उन लोगों को जो इमान लाए थे और परहेज़गार थे बचा लिया (53)

और (ऐ रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम देखभाल कर (समझ बूझ कर) ऐसी बेहयाई करते हो (54)

क्या तुम औरतों को छोड़कर शहवत से मर्दों के आते हो (ये तुम अच्छा नहीं करते) बल्कि तुम लोग बड़ी जाहिल क़ौम हो तो लूत की क़ौम का इसके सिवा कुछ जवाब न था (55)

कि वह लोग बोल उठे कि लूत के खानदान को अपनी बस्ती (सदूम) से निकाल बाहर करो ये लोग बड़े पाक साफ बनना चाहते हैं (56)

ग़रज हमने लूत को और उनके ख़ानदान को बचा लिया मगर उनकी बीवी कि हमने उसकी तक़दीर में पीछे रह जाने वालों में लिख दिया था (57)

और (फिर तो) हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेंह बरसाया तो जो लोग डराए जा चुके थे उन पर क्या बुरा मेंह बरसा (58)

(ऐ रसूल) तुम कह दो (उनके हलाक़ होने पर) ख़ुदा का शुक्र और उसके बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम भला अल्लाह बेहतर है या वह चीज़ जिसे ये लोग शरीके अल्लाह कहते हैं (59)

भला वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने पानी से दिल चस्प (ख़ुशनुमा) बाग़ उठाए तुम्हारे तो ये बस की बात न थी कि तुम उनके दरख़्तों को उगा सकते तो क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग खुद अपने जी से गढ़ के बुतो को उसके बराबर बनाते हैं (60)

भला वह कौन है जिसने ज़मीन को (लोगों के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरम्यिान जा बजा नहरें दौड़ायी और उसकी मज़बूती के वास्ते पहाड़ बनाए और (मीठे खारी) दरियाओं के दरम्यिान हदे फासिल बनाया तो क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि उनमें के अकसर कुछ जानते ही नहीं (61)

भला वह कौन है कि जब मुज़तर उसे पुकारे तो दुआ क़ुबूल करता है और मुसीबत को दूर करता है और तुम लोगों को ज़मीन में (अपना) नायब बनाता है तो क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है (हरगिज़ नहीं) उस पर भी तुम लोग बहुत कम नसीहत व इबरत हासिल करते हो (62)

भला वह कौन है जो तुम लोगों की ख़ुश्की और तरी की तारिक़ियों में राह दिखाता है और कौन उसकी बाराने रहमत के आगे आगे (बारिश की) ख़ुशख़बरी लेकर हवाओं को भेजता है-क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) ये लोग जिन चीज़ों को अल्लाह का शरीक ठहराते हैं अल्लाह उससे बालातर है (63)

भला वह कौन हैं जो ख़िलकत को नए सिरे से पैदा करता है फिर उसे दोबारा (मरने के बाद) पैदा करेगा और कौन है जो तुम लोगों को आसमान व ज़मीन से रिज़क़ देता है- तो क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) (ऐ रसूल) तुम (इन मुशरेकीन से) कहा दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो (64)

(ऐ रसूल इन से) कह दो कि जितने लोग आसमान व ज़मीन में हैं उनमे से कोई भी ग़ैब की बात के सिवा नहीं जानता और वह भी तो नहीं समझते कि क़ब्र से दोबारा कब ज़िन्दा उठ खड़े किए जाएँगें (65)

बल्कि (असल ये है कि) आख़िरत के बारे में उनके इल्म का ख़ात्मा हो गया है बल्कि उसकी तरफ से शक में पड़ें हैं बल्कि (सच ये है कि) इससे ये लोग अँधे बने हुए हैं (66)

और कुफ्फार कहने लगे कि क्या जब हम और हमारे बाप दादा (सड़ गल कर) मिट्टी हो जाएँगें तो क्या हम फिर निकाले जाएँगें (67)

उसका तो पहले भी हम से और हमारे बाप दादाओं से वायदा किया गया था (कहाँ का उठना और कैसी क़यामत) ये तो हो न हो अगले लोगों के ढकोसले हैं (68)

(ऐ रसूल) लोगों से कह दो कि रुए ज़मीन पर ज़रा चल फिर कर देखो तो गुनाहगारों का अन्जाम क्या हुआ (69)

(ऐ रसूल) तुम उनके हाल पर कुछ अफ़सोस न करो और जो चालें ये लोग (तुम्हारे ख़िलाफ) चल रहे हैं उससे तंग दिल न हो (70)

और ये (कुफ़्फ़ार मुसलमानों से) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) ये (क़यामत या अज़ाब का) वायदा कब पूरा होगा (71)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम लोग जल्दी मचा रहे हो क्या अजब है इसमे से कुछ करीब आ गया हो (72)

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों पर बड़ा फज़्ल व करम करने वाला है मगर बहुतेरे लोग (उसका) शुक्र नहीं करते (73)

और इसमें तो शक नहीं जो बातें उनके दिलों में पोशीदा हैं और जो कुछ ये एलानिया करते हैं तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनी जानता है (74)

और आसमान व ज़मीन में कोई ऐसी बात पोशीदा नहीं जो वाज़ेए व रौशन किताब (लौहे महफूज़) में (लिखी) मौजूद न हो (75)

इसमें भी शक नहीं कि ये क़ुरान बनी इसराइल पर उनकी अक्सर बातों को जिन में ये इख़्तेलाफ़ करते हैं ज़ाहिर कर देता है (76)

और इसमें भी शक नहीं कि ये क़ुरान इमानदारों के वास्ते अज़्सरतापा हिदायत व रहमत है (77)

(ऐ रसूल) बेशक तुम्हारा परवरदिगार अपने हुक्म से उनके आपस (के झगड़ों) का फैसला कर देगा और वह (सब पर) ग़ालिब और वाक़िफ़कार है (78)
तो (ऐ रसूल) तुम ख़ुदा पर भरोसा रखो बेशक तुम यक़ीनी सरीही हक़ पर हो (79)

बेशक न तो तुम मुर्दो को (अपनी बात) सुना सकते हो और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हो (ख़ासकर) जब वह पीठ फेर कर भाग खड़ें हो (80)

और न तुम अँधें को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हो तुम तो बस उन्हीं लोगों को (अपनी बात) सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर इमान रखते हैं (81)

फिर वही लोग तो मानने वाले भी हैं जब उन लोगों पर (क़यामत का) वायदा पूरा होगा तो हम उनके वास्ते ज़मीन से एक चलने वाला निकाल खड़ा करेंगे जो उनसे ये बाते करेंगा कि (फलॉ फला) लोग हमारी आयतो का यक़ीन नहीं रखते थे (82)

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत से एक ऐसे गिरोह को जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे (ज़िन्दा करके) जमा करेंगे फिर उन की टोलियाँ अलहदा अलहदा करेंगे (83)

यहाँ तक कि जब वह सब (अल्लाह के सामने) आएँगें और अल्लाह उनसे कहेगा क्या तुम ने हमारी आयतों को बगैर अच्छी तरह समझे बूझे झुठलाया-भला तुम क्या क्या करते थे और चूँकि ये लोग ज़ुल्म किया करते थे (84)

इन पर (अज़ाब का) वायदा पूरा हो गया फिर ये लोग कुछ बोल भी तो न सकेंगें (85)

क्या इन लोगों ने ये भी न देखा कि हमने रात को इसलिए बनाया कि ये लोग इसमे चैन करें और दिन को रौशन (ताकि देखभाल करे) बेशक इसमें इमान लाने वालों के लिए (क़ुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (86)

और (उस दिन याद करो) जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो जितने लोग आसमानों मे हैं और जितने लोग ज़मीन में हैं (ग़रज़ सब के सब) दहल जाएंगें मगर जिस शख़्स को अल्लाह चाहे (वो अलबत्ता मुतमइन रहेगा) और सब लोग उसकी बारगाह में ज़िल्लत व आजिज़ी की हालत में हाज़िर होगें (87)

और तुम पहाड़ों को देखकर उन्हें मज़बूर जमे हुए समझतें हो हालाकि ये (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फिरेगें (ये भी) अल्लाह की कारीगरी है कि जिसने हर चीज़ को ख़ूब मज़बूत बनाया है बेशक जो कुछ तुम लोग करते हो उससे वह ख़ूब वाक़िफ़ है (88)

जो शख़्स नेक काम करेगा उसके लिए उसकी जज़ा उससे कहीं बेहतर है ओर ये लोग उस दिन ख़ौफ व ख़तरे से महफूज़ रहेंगे (89)

और जो लोग बुरा काम करेंगे वह मुँह के बल जहन्नुम में झोक दिए जाएँगे (और उनसे कहा जाएगा कि) जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे बस उसी का जज़ा तुम्हें दी जाएगी (90)

(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मै इस शहर (मक्का) के मालिक की इबादत करुँ जिसने उसे इज़्ज़त व हुरमत दी है और हर चीज़ उसकी है और मुझे ये हुक्म दिया गया कि मै (उसके) फरमाबरदार बन्दों में से हूँ (91)

और ये कि मै क़ुरान पढ़ा करुँ फिर जो शख़्स राह पर आया तो अपनी ज़ात के नफ़े के वास्ते राह पर आया और जो गुमराह हुआ तो तुम कह दो कि मै भी एक एक डराने वाला हूँ (92)

और तुम कह दो कि अल्हमदोलिल्लाह वह अनक़रीब तुम्हें (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ दिखा देगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और जो कुछ तुम करते हो तुम्हारा परवरदिगार उससे ग़ाफिल नहीं है (93)

28 सूरह क़सस

सूरह क़सस मक्के में नाज़िल हुई और इसकी 88 आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ता सीन मीम (1)

(ऐ रसूल) ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं (2)

(जिसमें) हम तुम्हारें सामने मूसा और फिरआऊन का वाक़िया इमानदार लोगों के नफ़े के वास्ते ठीक ठीक बयान करते हैं (3)

बेशक फिरआऊन ने (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत सर उठाया था और उसने वहाँ के रहने वालों को कई गिरोह कर दिया था उनमें से एक गिरोह (बनी इसराइल) को आजिज़ कर रखा थ कि उनके बेटों को ज़बाह करवा देता था और उनकी औरतों (बेटियों) को ज़िन्दा छोड़ देता था बेशक वह भी मुफ़सिदों में था (4)

और हम तो ये चाहते हैं कि जो लोग रुए ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए हैं उनपर एहसान करे और उन्हींको (लोगों का) पेशवा बनाएँ और उन्हीं को इस (सरज़मीन) का मालिक बनाएँ (5)

और उन्हीं को रुए ज़मीन पर पूरी क़ुदरत अता करे और फिरआऊन और हामान और उन दोनों के लश्करो को उन्हीं कमज़ोरों के हाथ से वह चीज़ें दिखायें जिससे ये लोग डरते थे (6)

और हमने मूसा की माँ के पास ये वही भेजी कि तुम उसको दूध पिला लो फिर जब उसकी निस्बत तुमको कोई ख़ौफ हो तो इसको (एक सन्दूक़ में रखकर) दरिया में डाल दो और (उस पर) तुम कुछ न डरना और न कुढ़ना (तुम इतमेनान रखो) हम उसको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देगें और उसको (अपना) रसूल बनाएँगें (7)

(ग़रज़ मूसा की माँ ने दरिया में डाल दिया) वह सन्दूक़ बहते बहते फिरआऊन के महल के पास आ लगा तो फिरआऊन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि (एक दिन यही) उनका दुश्मन और उनके राज का बायस बने इसमें शक नहीं कि फिरआऊन और हामान उन दोनों के लश्कर ग़लती पर थे (8)

और (जब मूसा महल में लाए गए तो) फिरआऊन की बीबी (आसिया अपने शौहर से) बोली कि ये मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आँखों की ठन्डक है तो तुम लोग इसको क़त्ल न करो क्या अजब है कि ये हमको नफ़ा पहुँचाए या हम उसे ले पालक ही बना लें और उन्हें (उसी के हाथ से बर्बाद होने की) ख़बर न थी (9)

इधर तो ये हो रहा था और (उधर) मूसा की माँ का दिल ऐसा बेचैन हो गया कि अगर हम उसके दिल को मज़बूत कर देते तो क़रीब था कि मूसा का हाल ज़ाहिर कर देती (और हमने इसीलिए ढारस दी) ताकि वह (हमारे वायदे का) यक़ीन रखे (10)

और मूसा की माँ ने (दरिया में डालते वक़्त) उनकी बहन (कुलसूम) से कहा कि तुम इसके पीछे पीछे (अलग) चली जाओ तो वह मूसा को दूर से देखती रही और उन लोगो को उसकी ख़बर भी न हुयी (11)

और हमने मूसा पर पहले ही से और दाईयों (के दूध) को हराम कर दिया था (कि किसी की छाती से मुँह न लगाया) तब मूसा की बहन बोली भला मै तुम्हें एक घराने का पता बताऊ कि वह तुम्हारी ख़ातिर इस बच्चे की परवरिश कर देंगे और वह यक़ीनन इसके खैरख़्वाह होगे (12)

ग़रज़ (इस तरकीब से) हमने मूसा को उसकी माँ तक फिर पहुँचा दिया ताकि उसकी आँख ठन्डी हो जाए और रंज न करे और ताकि समझ ले अल्लाह का वायदा बिल्कुल ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं (13)

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचे और (हाथ पाँव निकाल के) दुरुस्त हो गए तो हमने उनको हिकमत और इल्म अता किया और नेकी करने वालों को हम यूँ जज़ाए ख़ैर देते हैं (14)

और एक दिन इत्तिफाक़न मूसा शहर में ऐसे वक़्त आए कि वहाँ के लोग (नींद की) ग़फलत में पड़े हुए थे तो देखा कि वहाँ दो आदमी आपस में लड़े मरते हैं ये (एक) तो उनकी क़ौम (बनी इसराइल) में का है और वह (दूसरा) उनके दुश्मन की क़ौम (क़िब्ती) का है तो जो शख़्स उनकी क़ौम का था उसने उस शख़्स से जो उनके दुश्मनों में था (ग़लबा हासिल करने के लिए) मूसा से मदद माँगी ये सुनते ही मूसा ने उसे एक घूसा मारा था कि उसका काम तमाम हो गया फिर (ख़्याल करके) कहने लगे ये शैतान का काम था इसमें शक नहीं कि वह दुश्मन और खुल्लम खुल्ला गुमराह करने वाला है (15)

(फिर बारगाहे अल्लाह में) अर्ज़ की परवरदिगार बेशक मैने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया (कि इस शहर में आया) तो तू मुझे (दुश्मनों से) पोशीदा रख-ग़रज़ अल्लाह ने उन्हें पोशीदा रखा (इसमें तो शक नहीं कि वह बड़ा पोशीदा रखने वाला मेहरबान है) (16)

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार चूँकि तूने मुझ पर एहसान किया है मै भी आइन्दा गुनाहगारों का हरगिज़ मदद गार न बनूगाँ (17)

ग़रज़ (रात तो जो त्यों गुज़री) सुबह को उम्मीदो बीम की हालत में मूसा शहर में गए तो क्या देखते हैं कि वही शख़्स जिसने कल उनसे मदद माँगी थी उनसे (फिर) फरियाद कर रहा है–मूसा ने उससे कहा बेशक तू यक़ीनी खुल्लम खुल्ला गुमराह है (18)

ग़रज़ जब मूसा ने चाहा कि उस शख़्स पर जो दोनों का दुश्मन था (छुड़ाने के लिए) हाथ बढ़ाएँ तो क़िब्ती कहने लगा कि ऐ मूसा जिस तरह तुमने कल एक आदमी को मार डाला (उसी तरह) मुझे भी मार डालना चाहते हो तो तुम बस ये चाहते हो कि रुए ज़मीन में सरकश बन कर रहो और मसलह (क़ौम) बनकर रहना नहीं चाहते (19)

और एक शख़्स शहर के उस किनारे से डराता हुआ आया और (मूसा से) कहने लगा मूसा (तुम ये यक़ीन जानो कि शहर के) बड़े बड़े आदमी तुम्हारे आदमी तुम्हारे बारे में मशवरा कर रहे हैं कि तुमको कत्ल कर डालें तो तुम (शहर से) निकल भागो (20)

मै तुमसे ख़ैरख़्वाहाना (भलाइ के लिए) कहता हूँ ग़रज़ मूसा वहाँ से उम्मीद व बीम की हालत में निकल खड़े हुए और (बारगाहे ख़ुदा में) अर्ज़ की परवरदिगार मुझे ज़ालिम लोगों (के हाथ) से नजात दे (21)

और जब मदियन की तरफ रुख़ किया (और रास्ता मालूम न था) तो आप ही आप बोले मुझे उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधे रास्ता दिखा दे (22)

और (आठ दिन फाक़ा करते चले) जब शहर मदियन के कुओं पर (जो शहर के बाहर था) पहुँचें तो कुओं पर लोगों की भीड़ देखी कि वह (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे हैं और उन सबके पीछे दो औरतो (हज़रत शुएब की बेटियों) को देखा कि वह (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी है मूसा ने पूछा कि तुम्हारा क्या मतलब है वह बोली जब तक सब चरवाहे (अपने जानवरों को) ख़ूब छक के पानी पिला कर फिर न जाएँ हम नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं (23)

तब मूसा ने उन की (बकरियों) के लिए (पानी खीच कर) पिला दिया फिर वहाँ से हट कर छांव में जा बैठे तो (चूँकि बहुत भूक थी) अर्ज़ की परवरदिगार (उस वक्त) जो नेअमत तू मेरे पास भेज दे मै उसका सख़्त हाजत मन्द हूँ (24)

इतने में उन्हीं दो मे से एक औरत शर्मीली चाल से आयी (और मूसा से) कहने लगी–मेरे वालिद

तुम को बुलाते हैं ताकि तुमने जो (हमारी बकरियों को) पानी पिला दिया है तुम्हें उसकी मज़दूरी दे ग़रज़ जब मूसा उनके पास आए और उनसे अपने किस्से बयान किए तो उन्होंने कहा अब कुछ अन्देशा न करो तुमने ज़ालिम लोगों के हाथ से नजात पायी (25)

(इसी असना में) उन दोनों में से एक लड़की ने कहा ऐ अब्बा इन को नौकर रख लीजिए क्योंकि आप जिसको भी नौकर रखें सब में बेहतर वह है जो मज़बूत और अमानतदार हो (26)

(और इनमें दोनों बातें पायी जाती हैं तब) शुएब ने कहा मै चाहता हूँ कि अपनी दोनों लड़कियों में से एक के साथ तुम्हारा इस (महर) पर निकाह कर दूँ कि तुम आठ बरस तक मेरी नौकरी करो और अगर तुम दस बरस पूरे कर दो तो तुम्हारा एहसान और मै तुम पर मेहनत मशक्क़त भी डालना नही चाहता और तुम मुझे इन्शा अल्लाह नेको कार आदमी पाओगे (27)

मूसा ने कहा ये मेरे और आप के दरम्यिान (मुहाएदा) है दोनों मुद्दतों मे से मै जो भी पूरी कर दूँ (मुझे एख़्तियार है) फिर मुझ पर जब्र और ज़्यादती (देने का आपको हक़) नहीं और हम आप जो कुछ कर रहे हैं (उसका) अल्लाह गवाह है (28)

ग़रज़ मूसा का छोटी लड़की से निकाह हो गया और रहने लगे फिर जब मूसा ने अपनी (दस बरस की) मुद्दत पूरी की और बीवी को लेकर चले तो अँधेरी रात जाड़ों के दिन राह भूल गए और बीबी सफ़ूरा को दर्द ज़ेह शुरु हुआ (इतने में) कोहेतूर की तरफ आग दिखायी दी तो अपने लड़के बालों से कहा तुम लोग ठहरो मैने यक़ीनन आग देखी है (मै वहाँ जाता हूँ) क्या अजब है वहाँ से (रास्ते की) कुछ ख़बर लाऊँ या आग की कोई चिंगारी (लेता आऊँ) ताकि तुम लोग तापो (29)

ग़रज़ जब मूसा आग के पास आए तो मैदान के दाहिने किनारे से इस मुबारक जगह में एक दरख़्त से उन्हें आवाज़ आयी कि ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मै ही अल्लाह सारे जहाँ का पालने वाला हूँ (30)

और यह (भी आवाज़ आयी) कि तुम आपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दो फिर जब (डाल दिया तो) देखा कि वह इस तरह बल खा रही है कि गोया वह (ज़िन्दा) अजदहा है तो पीठ फेरके भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने फरमाया) ऐ मूसा आगे आओ और डरो नहीं तुम पर हर तरह अमन व अमान में हो (31)

(अच्छा और लो) अपना हाथ गरेबान में डालो (और निकाल लो) तो सफेद बुर्राक़ होकर बेऐब निकल आया और ख़ौफ की (वजह) से अपने बाज़ू अपनी तरफ समेट लो (ताकि ख़ौफ जाता रहे) ग़रज़ ये दोनों (असा व यदे बैज़ा) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारी नुबूवत की) दो दलीलें

फिरआऊन और उसके दरबार के सरदारों के वास्ते हैं और इसमें शक नहीं कि वह बदकार लोग थे (32)

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार मैने उनमें से एक शख़्स को मार डाला था तो मै डरता हूँ कहीं (उसके बदले) मुझे न मार डालें (33)

और मेरा भाई हारुन वह मुझसे (ज़बान में ज़्यादा) फ़सीह है तो तू उसे मेरे साथ मेरा मददगार बनाकर भेज कि वह मेरी तसदीक करे क्योंकि यक़ीनन मै इस बात से डरता हूँ कि मुझे वह लोग झुठला देंगे (तो उनके जवाब के लिए गोयाइ की ज़रुरत है) (34)

फ़रमाया अच्छा हम अनक़रीब तुम्हारे भाई की वजह से तुम्हारे बाज़ू क़वी कर देगें और तुम दोनों को ऐसा ग़लबा अता करेंगें कि फिरआऊनी लोग तुम दोनों तक हमारे मौजिज़े की वजह से पहुँच भी न सकेंगे लो जाओ तुम दोनो और तुम्हारे पैरवी करने वाले ग़ालिब रहेंगे (35)

ग़रज़ जब मूसा हमारे वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर उनके पास आए तो वह लोग कहने लगे कि ये तो बस अपने दिल का गढ़ा हुआ जादू है और हमने तो अपने अगले बाप दादाओं (के ज़माने) में ऐसी बात सुनी भी नहीं (36)

और मूसा ने कहा मेरा परवरदिगार उस शख़्स से ख़ूब वाक़िफ़ है जो उसकी बारगाह से हिदायत लेकर आया है और उस शख़्स से भी जिसके लिए आख़िरत का घर है इसमें तो शक ही नहीं कि ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होते (37)

और (ये सुनकर) फिरआऊन ने कहा ऐ मेरे दरबार के सरदारों मुझ को तो अपने सिवा तुम्हारा कोई परवरदिगार मालूम नही होता (और मूसा दूसरे को ख़ुदा बताता है) तो ऐ हामान (वज़ीर फिरआऊन) तुम मेरे वास्ते मिट्टी (की ईटों) का पजावा सुलगाओ फिर मेरे वास्ते एक पुख़्ता महल तैयार कराओ ताकि मै (उस पर चढ़ कर) मूसा के अल्लाह को देखू और मै तो यक़ीनन मूसा को झूठा समझता हूँ (38)

और फिरआऊन और उसके लश्कर ने रुए ज़मीन में नाहक़ सर उठाया था और उन लोगों ने समझ लिया था कि हमारी बारगाह मे वह कभी पलट कर नही आएँगे (39)

तो हमने उसको और उसके लश्कर को ले डाला फिर उन सबको दरिया में डाल दिया तो (ऐ रसूल) ज़रा देखों तो कि ज़ालिमों का कैसा बुरा अन्जाम हुआ (40)

और हमने उनको (गुमराहों का) पेशवा बनाया कि (लोगों को) जहन्नुम की तरफ बुलाते है और क़यामत के दिन (ऐसे बेकस होगें कि) उनको किसी तरह की मदद न दी जाएगी (41)

और हमने दुनिया में भी तो लानत उन के पीछे लगा दी है और क़यामत के दिन उनके चेहरे बिगाड़ दिए जायेंगे (42)

और हमने बहुतेरी अगली उम्मतों को हलाक कर डाला उसके बाद मूसा को किताब (तौरैत) अता की जो लोगों के लिए अजसरतापा बसीरत और हिदायत और रहमत थी ताकि वह लोग इबरत व नसीहत हासिल करें (43)

और (ऐ रसूल) जिस वक्त हमने मूसा के पास अपना हुक्म भेजा था तो तुम (तूर के) मग़रिबी जानिब मौजूद न थे और न तुम उन वाक्यात को चश्मदीद देखने वालों में से थे (44)

मगर हमने (मूसा के बाद) बहुतेरी उम्मतें पैदा की फिर उन पर एक ज़माना दराज़ गुज़र गया और न तुम मदैन के लोगों में रहे थे कि उनके सामने हमारी आयते पढ़ते (और न तुम को उन के हालात मालूम होते) मगर हम तो (तुमको) पैग़म्बर बनाकर भेजने वाले थे (45)

और न तुम तूर की किसी जानिब उस वक्त मौजूद थे जब हमने (मूसा को) आवाज़ दी थी (ताकि तुम देखते) मगर ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला आया ही नहीं डराओ ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें (46)

और अगर ये नही होता कि जब उन पर उनकी अगली करतूतों की बदौलत कोई मुसीबत पड़ती तो बेसाख़्ता कह बैठते कि परवरदिगार तूने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम तेरे हुक्मों पर चलते और इमानदारों में होते (तो हम तुमको न भेजते) (47)

मगर फिर जब हमारी बारगाह से (दीन) हक़ उनके पास पहुँचा तो कहने लगे जैसे (मौजिज़े) मूसा को अता हुए थे वैसे ही इस रसूल (मोहम्मद) को क्यों नही दिए गए क्या जो मौजिज़े इससे पहले मूसा को अता हुए थे उनसे इन लोगों ने इन्कार न किया था कुफ़्फ़ार तो ये भी कह गुज़रे कि ये दोनों के दोनों (तौरैत व क़ुरान) जादू हैं कि बाहम एक दूसरे के मददगार हो गए हैं (48)

और ये भी कह चुके कि हम एब के मुनकिर हैं (ऐ रसूल) तुम (इन लोगों से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो अल्लाह की तरफ से एक ऐसी किताब जो इन दोनों से हिदायत में बेहतर हो ले आओ (49)

कि मै भी उस पर चलूँ फिर अगर ये लोग (इस पर भी) न मानें तो समझ लो कि ये लोग बस अपनी हवा व हवस की पैरवी करते है और जो शख़्स अल्लाह की हिदायत को छोड़ कर अपनी हवा व हवस की पैरवी करते है उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा बेशक ख़ुदा सरकश लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (50)

और हम यक़ीनन लगातार (अपने एहकाम भेजकर) उनकी नसीहत करते रहे ताकि वह लोग नसीहत हासिल करें (51)

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अता की है वह उस (क़ुरान) पर इमान लाते हैं (52)

और जब उनके सामने ये पढ़ा जाता है तो बोल उठते हैं कि हम तो इस पर इमान ला चुके बेशक ये ठीक है (और) हमारे परवरदिगार की तरफ से है हम तो इसको पहले ही मानते थे (53)

यही वह लोग हैं जिन्हें (इनके आमाले ख़ैर की) दोहरी जज़ा दी जाएगी-चूँकि उन लोगों ने सब्र किया और बदी को नेकी से दफ़ा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं (54)

और जब किसी से कोई बुरी बात सुनी तो उससे किनारा कश रहे और साफ कह दिया कि हमारे वास्ते हमारी कारगुज़ारियाँ हैं और तुम्हारे वास्ते तुम्हारी कारस्तानियाँ (बस दूर ही से) तुम्हें सलाम है हम जाहिलो (की सोहबत) के ख़्वाहॉ नहीं (55)

(ऐ रसूल) बेशक तुम जिसे चाहो मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचा सकते मगर हाँ जिसे ख़ुदा चाहे मंज़िल मक़सूद तक पहुचाए और वही हिदायत याफ़ता लोगों से ख़ूब वाक़िफ़ है (56)

(ऐ रसूल) कुफ़्फ़ार (मक्का) तुमसे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ दीन हक़ की पैरवी करें तो हम अपने मुल्क़ से उचक लिए जाएँ (ये क्या बकते है) क्या हमने उन्हें हरम (मक्का) में जहाँ हर तरह का अमन है जगह नहीं दी वहाँ हर किस्म के फल रोज़ी के वास्ते हमारी बारगाह से खिंचे चले जाते हैं मगर बहुतेरे लोग नहीं जाते (57)

और हमने तो बहुतेरी बस्तियाँ बरबाद कर दी जो अपनी मइशत (रोज़ी) में बहुत इतराहट से (ज़िन्दगी) बसर किया करती थीं-(तो देखो) ये उन ही के (उजड़े हुए) घर हैं जो उनके बाद फिर आबाद नहीं हुए मगर बहुत कम और (आख़िर) हम ही उनके (माल व असबाब के) वारिस हुए (58)

और तुम्हारा परवरदिगार जब तक उन गाँव के सदर मक़ाम पर अपना पैग़म्बर न भेज ले और वह

उनके सामने हमारी आयतें न पढ़ दे (उस वक्त तक) बस्तियों को बरबाद नहीं कर दिया करता-और हम तो बस्तियों को बरबाद करते ही नहीं जब तक वहाँ के लोग ज़ालिम न हों (59)

और तुम लोगों को जो कुछ अता हुआ है तो दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी आराइश है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उससे कही बेहतर और पाएदार है तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते (60)

तो क्या वह शख़्स जिससे हमने (बेहश्त का) अच्छा वायदा किया है और वह उसे पाकर रहेगा उस शख़्स के बराबर हो सकता है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फायदे अता किए हैं और फिर क़यामत के दिन (जवाब देही के वास्ते हमारे सामने) हाज़िर किए जाएँगें (61)

और जिस दिन अल्लाह उन कुफ़्फ़ार को पुकारेगा और पूछेगा कि जिनको तुम हमारा शरीक ख़्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं (ग़रज़ वह शरीक भी बुलाँए जाएँगे) (62)

वह लोग जो हमारे अज़ाब के मुस्ताजिब हो चुके हैं कह देगे कि परवरदिगार यही वह लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह किया था जिस तरह हम ख़ुद गुमराह हुए उसी तरह हमने इनको गुमराह किया-अब हम तेरी बारगाह में (उनसे) दस्तबरदार होते है-ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे (63)

और कहा जाएगा कि भला अपने उन शरीको को (जिन्हें तुम अल्लाह समझते थे) बुलाओ तो ग़रज़ वह लोग उन्हें बुलाएँगे तो वह उन्हें जवाब तक नही देगें और (अपनी आँखों से) अज़ाब को देखेंगें काश ये लोग (दुनिया में) राह पर आए होते (64)

और (वह दिन याद करो) जिस दिन अल्लाह लोगों को पुकार कर पूछेगा कि तुम लोगों ने पैग़म्बरों को (उनके समझाने पर) क्या जवाब दिया (65)

तब उस दिन उन्हें बातें न सूझ पड़ेगी (और) फिर बाहम एक दूसरे से पूछ भी न सकेगें (66)

मगर हाँ जिस शख़्स ने तौबा कर ली और इमान लाया और अच्छे अच्छे काम किए तो क़रीब है कि ये लोग अपनी मुरादें पाने वालों से होंगे (67)

और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) मुन्तख़िब करता है और ये इन्तिख़ाब लोगों के एख़्तियार में नहीं है और जिस चीज़ को ये लोग ख़ुदा का शरीक बनाते हैं उससे अल्लाह पाक और (कहीं) बरतर है (68)

और (ऐ रसूल) ये लोग जो बातें अपने दिलों में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है (69)

और वही अल्लाह है उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं दुनिया और आख़िरत में उस की तारीफ़ है और उसकी हुकूमत है और तुम लोग (मरने के बाद) उसकी तरफ लौटाए जाओगे (70)

(ऐ रसूल इन लोगों से) कहो कि भला तुमने देखा कि अगर अल्लाह हमेशा के लिए क़यामत तक तुम्हारे सरों पर रात को छाए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन अल्लाह है जो तुम्हारे पास रौशनी ले आता तो क्या तुम सुनते नहीं हो (71)

(ऐ रसूल उन से) कह दो कि भला तुमने देखा कि अगर ख़ुदा क़यामत तक बराबर तुम्हारे सरों पर दिन किए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हारे लिए रात को ले आता कि तुम लोग इसमें रात को आराम करो तो क्या तुम लोग (इतना भी) नहीं देखते (72)

और उसने अपनी मेहरबानी से तुम्हारे वास्ते रात और दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और दिन में उसके फज़्ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो (73)

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन वह उन्हें पुकार कर पूछेगा जिनको तुम लोग मेरा शरीक ख़्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं (74)

और हम हर एक उम्मत से एक गवाह (पैग़म्बर) निकाले (सामने बुलाएँगे) फिर (उस दिन मुशरेकीन से) कहेंगे कि अपनी (बराअत की) दलील पेश करो तब उन्हें मालूम हो जाएगा कि हक़ ख़ुदा ही की तरफ़ है और जो इफ़तेरा परवाज़ियाँ ये लोग किया करते थे सब उनसे ग़ायब हो जाएँगी (75)

(नाशुक्री का एक क़िस्सा सुनो) मूसा की क़ौम से एक शख़्स कारुन (नामी) था तो उसने उन पर सरकशी शुरु की और हमने उसको इस क़दर ख़ज़ाने अता किए थे कि उनकी कुन्जियाँ एक सकतदार जमाअत (की जामअत) को उठाना दूभर हो जाता था जब (एक बार) उसकी क़ौम ने उससे कहा कि (अपनी दौलत पर) इतरा मत क्योंकि अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता (76)

और जो कुछ ख़ुदा ने तूझे दे रखा है उसमें आख़िरत के घर की भी जुस्तजू कर और दुनिया से जिस क़दर तेरा हिस्सा है मत भूल जा और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ एहसान किया है तू भी औरों के साथ एहसान कर और रुए ज़मीन में फसाद का ख़्वाहा न हो-इसमें शक नहीं कि ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता (77)

तो क़ारुन कहने लगा कि ये (माल व दौलत) तो मुझे अपने इल्म (कीमिया) की वजह से हासिल होता है क्या क़ारुन ने ये भी न ख़्याल किया कि अल्लाह उसके पहले उन लोगों को हलाक़ कर चुका है जो उससे कूवत और हैसियत में कहीं बढ़ बढ़ के थे और गुनाहगारों से (उनकी सज़ा के वक़्त) उनके गुनाहों की पूछताछ नहीं हुआ करती (78)

ग़रज़ (एक दिन क़ारुन) अपनी क़ौम के सामने बड़ी आराइश और ठाठ के साथ निकला तो जो लोग दुनिया को (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी के तालिब थे (इस शान से देख कर) कहने लगे जो माल व दौलत क़ारुन को अता हुयी है काश मेरे लिए भी होती इसमें शक नहीं कि क़ारुन बड़ा नसीब वर था (79)

और जिन लोगों को (हमारी बारगाह में) इल्म अता हुआ था कहनें लगे तुम्हारा नास हो जाए (अरे) जो शख़्स इमान लाए और अच्छे काम करे उसके लिए तो अल्लाह का सवाब इससे कही बेहतर है और वह तो अब सब्र करने वालों के सिवा दूसरे नहीं पा सकते (80)

और हमने क़ारुन और उसके घर बार को ज़मीन में धंसा दिया फिर ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत ऐसी न थी कि उसकी मदद करती और न खुद आप अपनी मदद आप कर सका (81)

और जिन लोगों ने कल उसके जाह व मरतबे की तमन्ना की थी वह (आज ये तमाशा देखकर) कहने लगे अरे माज़अल्लाह ये तो ख़ुदा ही अपने बन्दों से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग कर देता है और अगर (कहीं) अल्लाह हम पर मेहरबानी न करता (और इतना माल दे देता) तो उसकी तरह हमको भी ज़रुर धँसा देता-और माज़अल्लाह (सच है) हरगिज़ कुफ्फार अपनी मुरादें न पाएँगें (82)

ये आख़िरत का घर तो हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास कर देगें जो रुए ज़मीन पर न सरकशी करना चाहते हैं और न फसाद-और (सच भी यूँ ही है कि) फिर अन्जाम तो परहेज़गारों ही का है (83)

जो शख़्स नेकी करेगा तो उसके लिए उसे कहीं बेहतर बदला है औ जो बुरे काम करेगा तो वह याद रखे कि जिन लोगों ने बुराइयाँ की हैं उनका वही बदला हे जो दुनिया में करते रहे हैं (84)

(ऐ रसूल) ख़ुदा जिसने तुम पर क़ुरान नाज़िल किया ज़रुर ठिकाने तक पहुँचा देगा (ऐ रसूल) तुम कह दो कि कौन राह पर आया और कौन सरीही गुमराही में पड़ा रहा (85)

इससे मेरा परवरदिगार ख़ूब वाकिफ़ है और तुमको तो ये उम्मीद न थी कि तुम्हारे पास ख़ुदा की

तरफ से किताब नाज़िल की जाएगी मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से नाज़िल हुयी तो तुम हरगिज़ काफिरों के पुश्त पनाह न बनना (86)

कहीं ऐसा न हो एहकामे ख़ुदा वन्दी नाज़िल होने के बाद तुमको ये लोग उनकी तबलीग़ से रोक दें और तुम अपने परवरदिगार की तरफ (लोगों को) बुलाते जाओ और ख़बरदार मुशरेकीन से हरगिज़ न होना (87)

और ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद की परसतिश न करना उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है उसकी हुकूमत है और तुम लोग उसकी तरफ़ (मरने के बाद) लौटाये जाओगे (88)

29 सूरह अनकबूत

सूरह अनकबूत मक्का में नाज़िल हुई और उसकी उन्हत्तर (69) आयतें हैं और सात रुकू हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम (1)

क्या लोगों ने ये समझ लिया है कि (सिर्फ) इतना कह देने से कि हम ईमान लाए छोड़ दिए जाएँगे और उनका इम्तेहान न लिया जाएगा (2)

और हमने तो उन लोगों का भी इम्तिहान लिया जो उनसे पहले गुज़र गए ग़रज़ अल्लाह उन लोगों को जो सच्चे (दिल से इमान लाए) हैं यक़ीनन अलहाएदा देखेगा और झूठों को भी (अलहाएदा) ज़रुर देखेगा (3)

क्या जो लोग बुरे बुरे काम करते हैं उन्होंने ये समझ लिया है कि वह हमसे (बचकर) निकल जाएँगे (अगर ऐसा है तो) ये लोग क्या ही बुरे हुक्म लगाते हैं (4)

जो शख़्स अल्लाह से मिलने (क़यामत के आने) की उम्मीद रखता है तो (समझ रखे कि) अल्लाह की (मुक़र्रर की हुयी) मीयाद ज़रुर आने वाली है और वह (सबकी) सुनता (और) जानता है (5)

और जो शख़्स (इबादत में) कोशिश करता है तो बस अपने ही वास्ते कोशिश करता है (क्योंकि) इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह सारे जहाँन (की इबादत) से बेनियाज़ है (6)

और जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए हम यक़ीनन उनके गुनाहों की तरफ से कफ्फारा क़रार देगें और ये (दुनिया में) जो आमाल करते थे हम उनके आमाल की उन्हें अच्छी से अच्छी जज़ा अता करेंगे (7)

और हमने इन्सान को अपने माँ बाप से अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया है और (ये भी कि) अगर तुझे तेरे माँ बाप इस बात पर मजबूर करें कि ऐसी चीज़ को मेरा शरीक बना जिन (के शरीक होने) का मुझे इल्म तक नहीं तो उनका कहना न मानना तुम सबको (आख़िर एक दिन) मेरी तरफ लौट कर आना है मै जो कुछ तुम लोग (दुनिया में) करते थे बता दूँगा (8)

और जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए हम उन्हें (क़यामत के दिन) ज़रुर नेको कारों में दाखि़ल करेंगे (9)

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (ज़बान से तो) कह देते हैं कि हम ख़ुदा पर इमान लाए फिर जब उनको अल्लाह के बारे में कुछ तकलीफ़ पहुँची तो वह लोगों की तकलीफ़ देही को अज़ाब के बराबर ठहराते हैं और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की मदद आ पहुँची और तुम्हें फतेह हुयी तो यही लोग कहने लगते हैं कि हम भी तो तुम्हारे साथ ही साथ थे भला जो कुछ सारे जहाँन के दिलों में है क्या अल्लाह बख़ूबी वाकि़फ नहीं (ज़रुर है) (10)

और जिन लोगों ने इमान क़ुबूल किया अल्लाह उनको यक़ीनन जानता है और मुनाफ़ेक़ीन को भी ज़रुर जानता है (11)

और कुफ्फार इमान वालों से कहने लगे कि हमारे तरीके़ पर चलो और (क़यामत में) तुम्हारे गुनाहों (के बोझ) को हम (अपने सर) ले लेंगे हालॉकि ये लोग ज़रा भी तो उनके गुनाह उठाने वाले नहीं ये लोग यक़ीनी झूठे हैं (12)

और (हाँ) ये लोग अपने (गुनाह के) बोझे तो यक़ीनी उठाएँगें ही और अपने बोझो के साथ जिन्हें गुमराह किया उनके बोझे भी उठाएँगे और जो इफ़्तिेरा परदाज़िया ये लोग करते रहे हैं क़यामत के दिन उन से ज़रुर उसकी बाज़पुर्स होगी (13)

और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा तो वह उनमें पचास कम हज़ार बरस रहे (और हिदायत किया किए और जब न माना) तो आखि़र तूफान ने उन्हें ले डाला और वह उस वक़्त भी सरकश ही थे (14)

फिर हमने नूह और कश्ती में रहने वालों को बचा लिया और हमने इस वाकि़ये को सारी ख़ुदाई के वास्ते (अपनी .क़ुदरत की) निशानी क़रार दी (15)

और इबराहीम को (याद करो) जब उन्होंने कहा कि (भाईयों) अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो अगर तुम समझते बूझते हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (16)

(मगर) तुम लोग तो अल्लाह को छोड़कर सिर्फ बुतों की परसतिश करते हैं और झूठी बातें (अपने दिल से) गढ़ते हो इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह को छोड़कर जिन लोगों की तुम परसतिश करते हो वह तुम्हारी रोज़ी का एख़्तेयार नही रखते-बस अल्लाह ही से रोज़ी भी माँगों और उसकी

इबादत भी करो उसका शुक्र करो (क्योंकि) तुम लोग (एक दिन) उसी की तरफ लौटाए जाओगे (17)

और (ऐ एहले मक्का) अगर तुमने (मेरे रसूल को) झुठलाया तो (कुछ परवाह नहीं) तुमसे पहले भी तो बहुतेरी उम्मते (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं और रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ (एहक़ाम का) पहुँचा देना है (18)

बस क्या उन लोगों ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह किस तरह मख़लूकात को पहले पहल पैदा करता है और फिर उसको दोबारा पैदा करेगा ये तो अल्लाह के नज़दीक बहुत आसान बात है (19)

(ऐ रसूल इन लोगों से) तुम कह दो कि ज़रा रुए ज़मीन पर चलफिर कर देखो तो कि अल्लाह ने किस तरह पहले पहल मख़लूक को पैदा किया फिर (उसी तरह वही) अल्लाह (क़यामत के दिन) आखिरी पैदाइश पैदा करेगा- बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (20)

जिस पर चाहे अज़ाब करे और जिस पर चाहे रहम करे और तुम लोग (सब के सब) उसी की तरफ लौटाए जाओगे (21)

और न तो तुम ज़मीन ही में अल्लाह को ज़ेर कर सकते हो और न आसमान में और अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई सरपरस्त है और न मददगार (22)

और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और (क़यामत के दिन) उसके सामने हाज़िर होने से इन्कार किया मेरी रहमत से मायूस हो गए हैं और उन्हीं लोगों के वास्ते दर्दनाक अज़ाब है (23)

ग़रज़ इबराहीम की क़ौम के पास (इन बातों का) इसके सिवा कोई जवाब न था कि बाहम कहने लगे इसको मार डालो या जला (कर ख़ाक) कर डालो (आख़िर वह कर गुज़रे) तो अल्लाह ने उनको आग से बचा लिया इसमें शक नहीं कि दुनियादार लोगों के वास्ते इस वाकिये में (कुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (24)

और इबराहीम ने (अपनी क़ौम से) कहा कि तुम लोगों ने अल्लाह को छोड़कर बुतो को सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी में बाहम मोहब्त करने की वजह से (अल्लाह) बना रखा है फिर क़यामत के दिन तुम में से एक का एक इनकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा और (आख़िर) तुम लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और (उस वक्त तुम्हारा कोई भी मददगार न होगा) (25)

तब सिर्फ लूत इबराहीम पर इमान लाए और इबराहीम ने कहा मै तो देस को छोड़कर अपने परवरदिगार की तरफ (जहाँ उसको मंज़ूर हो) निकल जाऊँगा (26)

इसमे शक नहीं कि वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है और हमने इबराहीम को इसहाक़ (सा बेटा) और याक़ूब (सा पोता) अता किया और उनकी नस्ल में पैग़म्बरी और किताब क़रार दी और हम न इबराहीम को दुनिया में भी अच्छा बदला अता किया और वह तो आख़ेरत में भी यक़ीनी नेको कारों से हैं (27)

(और ऐ रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग अजब बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले सारी ख़ुदायी के लोगों में से किसी ने नहीं किया (28)

तुम लोग (औरतों को छोड़कर कज़ाए शहवत के लिए) मर्दो की तरफ गिरते हो और (मुसाफिरों की) रहजनी करते हो और तुम लोग अपनी महफिलों में बुरी बुरी हरकते करते हो तो (इन सब बातों का) लूत की क़ौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि वह लोग कहने लगे कि भला अगर तुम सच्चे हो तो हम पर अल्लाह का अज़ाब तो ले आओ (29)

तब लूत ने दुआ की कि परवरदिगार इन मुफ़सिद लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर (30)

(उस वक़्त अज़ाब की तैयारी हुयी) और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इबराहीम के पास (बुढ़ापे में बेटे की) खुशखबरी लेकर आए तो (इबराहीम से) बोले हम लोग अनक़रीब इस गाँव के रहने वालों को हलाक करने वाले हैं (क्योंकि) इस बस्ती के रहने वाले यक़ीनी (बड़े) सरकश है (31)

(ये सुन कर) इबराहीम ने कहा कि इस बस्ती में तो लूत भी है वह फरिश्ते बोले जो लोग इस बस्ती में हैं हम लोग उनसे खूब वाक़िफ़ हैं हम तो उनको और उनके लड़के बालों को यक़ीनी बचा लेंगे मगर उनकी बीबी को वह (अलबता) पीछे रह जाने वालों में होगीं (32)

और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत के पास आए लूत उनके आने से ग़मगीन हुए और उन (की मेहमानी) से दिल तंग हुए (क्योंकि वह नौजवान ख़ूबसूरत मर्दो की सरूत में आए थे) फरिश्तों ने कहा आप ख़ौफ न करें और कुढ़े नही हम आपको और आपके लड़के बालों को बचा लेगें मगर आपकी बीबी (क्योंकि वह पीछे रह जाने वालो से होगी) (33)

हम यक़ीनन इसी बस्ती के रहने वालों पर चूँकि ये लोग बदकारियाँ करते रहे एक आसमानी अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं (34)

और हमने यक़ीनी उस (उलटी हुयी बस्ती) में से समझदार लोगों के वास्ते (इबरत की) एक वाज़ेए व रौशन निशानी बाक़ी रखी है (35)

और (हमने) मदियन के रहने वालों के पास उनके भाई शुएब को पैग़म्बर बनाकर भेजा उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो और रोज़े आख़ेरत की उम्मीद रखो और रुए ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो (36)

तो उन लोगों ने शुऐब को झुठलाया पस ज़लज़ले (भूचाल) ने उन्हें ले डाला- तो वह लोग अपने घरों में औंधे ज़ानू के बल पड़े रह गए (37)

और क़ौम आद और समूद को (भी हलाक कर डाला) और (ऐ एहले मक्का) तुम को तो उनके (उजड़े हुए) घर भी (रास्ता आते जाते) मालूम हो चुके और शैतान ने उनकी नज़र में उनके कामों को अच्छा कर दिखाया था और उन्हें (सीधी) राह (चलने) से रोक दिया था हालॉकि वह बड़े होशियार थे (38)

और (हम ही ने) क़ारुन व फिरआऊन व हामान को भी (हलाक कर डाला) हालॉकि उन लोगों के पास मूसा वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आए फिर भी ये लोग रुए ज़मीन में सरकशी करते फिरे और हमसे (निकल कर) कहीं आगे न बढ़ सके (39)

तो हमने सबको उनके गुनाह की सज़ा में ले डाला चुनांन्चे उनमे से बाज़ तो वह थे जिन पर हमने पत्थर वाली आँधी भेजी और बाज़ उनमें से वह थे जिन को एक सख़्त चिंघाड़ ने ले डाला और बाज़ उनमें से वह थे जिनको हमने ज़मीन मे धँसा दिया और बाज़ उनमें से वह थे जिन्हें हमने डुबो मारा और ये बात नहीं कि अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म किया हो बल्कि (सच यूँ है कि) ये लोग ख़ुद (ख़ुदा की नाफ़रमानी करके) आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे (40)

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं उनकी मसल उस मकड़ी की सी है जिसने (अपने ख़्याल नाक़िस में) एक घर बनाया और उसमें तो शक ही नहीं कि तमाम घरों से बोदा घर मकड़ी का होता है मगर ये लोग (इतना भी) जानते हो (41)

अल्लाह को छोड़कर ये लोग जिस चीज़ को पुकारते हैं उससे अल्लाह यक़ीनी वाक़िफ है और वह तो (सब पर) ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (42)

और हम ये मिसाले लोगों के (समझाने) के वास्ते बयान करते हैं और उन को तो बस उलमा ही समझते हैं (43)

अल्लाह ने सारे आसमान और ज़मीन को बिल्कुल ठीक पैदा किया इसमें शक नहीं कि उसमें इमानदारों के वास्ते (कुदरते अल्लाह की) यक़ीनी बड़ी निशानी है (44)

(ऐ रसूल) जो किताब तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है उसकी तिलावत करो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से बाज़ रखती है और अल्लाह की याद यक़ीनी बड़ा मरतबा रखती है और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह उससे वाक़िफ़ है (45)

और (ऐ इमानदारों) एहले किताब से मनाज़िरा न किया करो मगर उमदा और शाएस्ता अलफाज़ व उनवान से लेकिन उनमें से जिन लोगों ने तुम पर ज़ुल्म किया (उनके साथ रिआयत न करो) और साफ साफ कह दो कि जो किताब हम पर नाज़िल हुयी और जो किताब तुम पर नाज़िल हुयी है हम तो सब पर इमान ला चुके और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फरमाबरदार है (46)

और (ऐ रसूल जिस तरह अगले पैग़म्बरों पर किताबें उतारी) उसी तरह हमने तुम्हारे पास किताब नाज़िल की तो जिन लोगों को हमने (पहले) किताब अता की है वह उस पर भी इमान रखते हैं और (अरबो) में से बाज़ वह हैं जो उस पर इमान रखते हैं और हमारी आयतों के तो बस पक्के कट्टर काफिर ही मुनकिर है (47)

और (ऐ रसूल) क़ुरान से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न अपने हाथ से तुम लिखा करते थे ऐसा होता तो ये झूठे ज़रुर (तुम्हारी नबुवत में) शक करते (48)

मगर जिन लोगों को (अल्लाह की तरफ से) इल्म अता हुआ है उनके दिल में ये (क़ुरान) वाजेए व रौशन आयतें हैं और सरकशी के सिवा हमारी आयतो से कोई इन्कार नहीं करता (49)

और (कुफ़्फ़ार अरब) कहते हैं कि इस (रसूल) पर उसके परवरदिगार की तरफ से मौजिज़े क्यों नही नाज़िल होते (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि मौजिज़े तो बस अल्लाह ही के पास हैं और मै तो सिर्फ साफ साफ (अज़ाबे अल्लाह से) डराने वाला हूँ (50)

क्या उनके लिए ये काफी नहीं कि हमने तुम पर क़ुरान नाज़िल किया जो उनके सामने पढ़ा जाता है इसमें शक नहीं कि इमानदार लोगों के लिए इसमें (अल्लाह की बड़ी) मेहरबानी और (अच्छी ख़ासी) नसीहत है (51)

तुम कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरम्यिान गवाही के वास्ते अल्लाह ही काफी है जो सारे आसमान व ज़मीन की चीज़ों को जानता है-और जिन लोगों ने बातिल को माना और अल्लाह से इन्कार किया वही लोग बड़े घाटे में रहेंगे (52)

और (ऐ रसूल) तुमसे लोग अज़ाब के नाज़िल होने की जल्दी करते हैं और अगर (अज़ाब का) वक्त मुअय्यन न होता तो यक़ीनन उनके पास अब तक अज़ाब आ जाता और (आख़िर एक दिन) उन पर अचानक ज़रुर आ पड़ेगा और उनको ख़बर भी न होगी (53)

ये लोग तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं और ये यक़ीनी बात है कि दोज़ख़ काफिरों को (इस तरह) घेर कर रहेगी (कि रुक न सकेंगे) (54)

जिस दिन अज़ाब उनके सर के ऊपर से और उनके पॉव के नीचे से उनको ढॉके होगा और ख़ुदा (उनसे) फरमाएगा कि जो जो कारस्तानियॉ तुम (दुनिया में) करते थे अब उनका मज़ा चखो (55)

ऐ मेरे ईमानदार बन्दों मेरी ज़मीन तो यक़ीनन कुशादा है तो तुम मेरी ही इबादत करो (56)

हर शख़्स (एक न एक दिन) मौत का मज़ा चखने वाला है फिर तुम सब आख़िर हमारी ही तरफ लौटए जाओंगे (57)

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको हम बेहश्त के झरोखों में जगह देगें जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें वह हमेशा रहेंगे (अच्छे चलन वालो की भी क्या ख़ूब ख़री मज़दूरी है) (58)

जिन्होंने (दुनिया में मुसिबतों पर) सब्र किया और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं (59)

और ज़मीन पर चलने वालों में बहुतेरे ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी अपने ऊपर लादे नहीं फिरते ख़ुदा ही उनको भी रोज़ी देता है और तुम को भी और वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (60)

(ऐ रसूल) अगर तुम उनसे पूछो कि (भला) किसने सारे आसमान व ज़मीन को पैदा किया और चाँद और सूरज को काम में लगाया तो वह ज़रुर यही कहेंगे कि अल्लाह ने फिर वह कहाँ बहके चले जाते हैं (61)

अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है इसमें शक नहीं कि ख़ुदा ही हर चीज़ से वाक़िफ़ है (62)

और (ऐ रसूल) अगर तुम उससे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को इसके मरने (परती होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) किया तो वह ज़रुर यही कहेंगे कि अल्लाह ने (ऐ रसूल) तुम कह दो अल्हम दो लिल्लाह-मगर उनमे से बहुतेरे (इतना भी) नहीं समझते (63)

और ये दुनिया की ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं और मगर ये लोग समझें बूझें तो इसमे शक नहीं कि अबदी ज़िन्दगी (की जगह) तो बस आखे़रत का घर है (बाक़ी लग़ो) (64)

फिर जब ये लोग कश्ती में सवार होते हैं तो निहायत ख़ुलूस से उसकी इबादत करने वाले बन कर ख़ुदा से दुआ करते हैं फिर जब उन्हें ख़ुश्की में (पहुँचा कर) नजात देता है तो फौरन शिर्क करने लगते हैं (65)

ताकि जो (नेअमतें) हमने उन्हें अता की हैं उनका इन्कार कर बैठें और ताकि (दुनिया में) ख़ूब चैन कर लें तो अनक़रीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा (66)

क्या उन लोगों ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि हमने हरम (मक्का) को अमन व इत्मेनान की जगह बनाया हालॉकि उनके गिर्द व नवाह से लोग उचक ले जाते हैं तो क्या ये लोग झूठे माबूदों पर ईमान लाते हैं और ख़ुदा की नेअमत की नाशुक्री करते हैं (67)

और जो शख़्स ख़ुदा पर झूठ बोहतान बॉधे या जब उसके पास कोई सच्ची बात आए तो झुठला दे इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा क्या (इन) काफिरों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (ज़रुर है) (68)

और जिन लोगों ने हमारी राह में जिहाद किया उन्हें हम ज़रुर अपनी राह की हिदायत करेंगे और इसमें शक नही कि ख़ुदा नेकोकारों का साथी है (69)

30 सूरह रोम

सूरह रोम मक्के में नाज़िल हुई और उसकी साठ (60) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम (1)

(यहाँ से) बहुत क़रीब के मुल्क में रोमी (नसारा एहले फ़ारस आतिश परस्तों से) हार गए (2)

मगर ये लोग अनक़रीब ही अपने हार जाने के बाद चन्द सालों में फिर (एहले फ़ारस पर) ग़ालिब आ जाएँगे (3)

क्योंकि (इससे) पहले और बाद (ग़रज़ हर ज़माने में) हर अम्र का एख़्तेयार अल्लाह ही को है और उस दिन ईमानदार लोग अल्लाह की मदद से खुश हो जाएँगे (4)

वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह (सब पर) ग़ालिब रहम करने वाला है (5)

(ये) ख़ुदा का वायदा है) ख़ुदा अपने वायदे के ख़िलाफ नहीं किया करता मगर अकसर लोग नहीं जानते हैं (6)

ये लोग बस दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ाहिरी हालत को जानते हैं और ये लोग आख़ेरत से बिल्कुल ग़ाफिल हैं (7)

क्या उन लोगों ने अपने दिल में (इतना भी) ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने सारे आसमान और ज़मीन को और जो चीज़े उन दोनों के दरमेयान में हैं बस बिल्कुल ठीक और एक मुक़र्रर मियाद के वास्ते पैदा किया है और कुछ शक नहीं कि बहुतेरे लोग तो अपने परवरदिगार की (बारगाह) के हुज़ूर में (क़यामत) ही को किसी तरह नहीं मानते (8)

क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र गए उनका अन्जाम कैसा (बुरा) हुआ हालाँकि जो लोग उनसे पहले क़ूवत में भी कहीं ज़्यादा थे और जिस क़दर ज़मीन उन लोगों ने आबाद की है उससे कहीं ज़्यादा (ज़मीन की) उन लोगों ने काश्त भी की थी और उसको आबाद भी किया था और उनके पास भी उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े

लेकर आ चुके थे (मगर उन लोगों ने न माना) तो अल्लाह ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया मगर वह लोग (कुफ्र व सरकशी से) आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे (9)

फिर जिन लोगों ने बुराई की थी उनका अन्जाम बुरा ही हुआ क्योंकि उन लोगों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया था और उनके साथ मसखरा पन किया किए (10)

अल्लाह ही ने मख़लूकात को पहली बार पैदा किया फिर वही दुबारा (पैदा करेगा) फिर तुम सब लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे (11)

और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (उस दिन) गुनेहगार लोग ना उम्मीद होकर रह जाएँगे (12)

और उनके (बनाए हुए अल्लाह के) शरीकों में से कोई उनका सिफारिशी न होगा और ये लोग ख़ुद भी अपने शरीकों से इन्कार कर जाएँगे (13)

और जिस दिन क़यामत बरपा होगी उस दिन (मोमिनों से) कुफ्फ़ार जुदा हो जाएँगें (14)

फिर जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो वह बाग़े बेहश्त में निहाल कर दिए जाएँगे (15)

मगर जिन लोगों के कुफ्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों और आख़ेरत की हुज़ूरी को झुठलाया तो ये लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएँगे (16)

फिर जिस वक्त तुम लोगों की शाम हो और जिस वक्त तुम्हारी सुबह हो अल्लाह की पाकीज़गी ज़ाहिर करो (17)

और सारे आसमान व ज़मीन में तीसरे पहर को और जिस वक्त तुम लोगों की दोपहर हो जाए वही क़ाबिले तारीफ़ है (18)

वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और वही मुर्दे को जिन्दा से पैदा करता है और ज़मीन को मरने (परती होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है और इसी तरह तुम लोग भी (मरने के बाद निकाले जाओगे) (19)

और उस (की क़ुदरत) की निशानियों में ये भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर यकायक तुम आदमी बनकर (ज़मीन पर) चलने फिरने लगे (20)

और उसी की (क़ुदरत) की निशानियों में से एक ये (भी) है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी ही जिन्स की बीवियाँ पैदा की ताकि तुम उनके साथ रहकर चैन करो और तुम लोगों के दरमेयान प्यार और उलफ़त पैदा कर दी इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालों के वास्ते (क़ुदरते ख़ुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं (21)

और उस (की कुदरत) की निशानियों में आसमानो और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानो और रंगतो का एख़तेलाफ भी है यक़ीनन इसमें वाकि़फकारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (22)

और रात और दिन को तुम्हारा सोना और उसके फज़्ल व करम (रोज़ी) की तलाश करना भी उसकी (क़ुदरत की) निशानियों से है बेशक जो लोग सुनते हैं उनके लिए इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं (23)

और उसी की (क़ुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि वह तुमको डराने वाला उम्मीद लाने के वास्ते बिजली दिखाता है और आसमान से पानी बरसाता है और उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके परती होने के बाद आबाद करता है बेशक अक्लमंदों के वास्ते इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी दलीलें हैं (24)

और उसी की (क़ुदरत की) निशानियों में से एक ये भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं फिर (मरने के बाद) जिस वक़्त तुमको एक बार बुलाएगा तो तुम सबके सब ज़मीन से (ज़िन्दा हो होकर) निकल पड़ोगे (25)

और जो लोग आसमानों में है सब उसी के है और सब उसी के ताबेए फरमान हैं (26)

और वह ऐसा (क़ादिरे मुत्तलिक़ है जो मख़लूक़ात को पहली बार पैदा करता है फिर दोबारा (क़यामत के दिन) पैदा करेगा और ये उस पर बहुत आसान है और सारे आसमान व जमीन सबसे बालातर उसी की शान है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है (27)

और हमने (तुम्हारे समझाने के वास्ते) तुम्हारी ही एक मिसाल बयान की है हमने जो कुछ तुम्हे अता किया है क्या उसमें तुम्हारी लौन्डी ग़ुलामों में से कोई (भी) तुम्हारा शरीक है कि (वह और) तुम उसमें बराबर हो जाओ (और क्या) तुम उनसे ऐसा ही ख़ौफ रखते हो जितना तुम्हें अपने लोगों का (हक़ हिस्सा न देने में) ख़ौफ होता है फिर बन्दों को अल्लाह का शरीक क्यों बनाते हो) अक्ल मन्दों के वास्ते हम यूँ अपनी आयतों को तफसीलदार बयान करते हैं (28)

मगर सरकशों ने तो बग़ैर समझे बूझे अपनी नफसियानी ख़्वाहिशों की पैरवी कर ली (और ख़ुदा का

शरीक ठहरा दिया) ग़रज़ अल्लाह जिसे गुमराही में छोड़ दे (फिर) उसे कौन राहे रास्त पर ला सकता है और उनका कोई मददगार (भी) नहीं (29)

तो (ऐ रसूल) तुम बातिल से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ किए रहो यही अल्लाह की बनावट है जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है ख़ुदा की (दुरुस्त की हुयी) बनावट में तग़य्युर तबद्दुल {उलट फेर} नहीं हो सकता यही मज़बूत और (बिल्कुल सीधा) दीन है मगर बहुत से लोग नहीं जानते हैं (30)

उसी की तरफ रुजू होकर (अल्लाह की इबादत करो) और उसी से डरते रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और मुशरेकीन से न हो जाना (31)

जिन्होंने अपने (असली) दीन में तफरेक़ा परवाज़ी की और मुख़्तलिफ़ फिरक़े के बन गए जो (दीन) जिस फिरक़े के पास है उसी में निहाल है (32)

और जब लोगों को कोई मुसीबत छू भी गयी तो उसी की तरफ रुजू होकर अपने परवरदिगार को पुकारने लगते हैं फिर जब वह अपनी रहमत की लज़्ज़त चखा देता है तो उन्हीं में से कुछ लोग अपने परवरदिगार के साथ शिर्क करने लगते हैं (33)

ताकि जो (नेअमत) हमने उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें ख़ैर (दुनिया में चन्दरोज़ चैन कर लो) फिर तो बहुत जल्द (अपने किए का मज़ा) तुम्हे मालूम ही होगा (34)

क्या हमने उन लोगों पर कोई दलील नाज़िल की है जो उस (के हक़ होने) को बयान करती है जिसे ये लोग अल्लाह का शरीक ठहराते हैं (हरग़िज नहीं) (35)

और जब हमने लोगों को (अपनी रहमत की लज़्ज़त) चखा दी तो वह उससे खुश हो गए और जब उन्हें अपने हाथों की अगली कारसतानियो की बदौलत कोई मुसीबत पहुँची तो यकबारगी मायूस होकर बैठे रहते हैं (36)

क्या उन लोगों ने (इतना भी) ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ही जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जिसकी चाहता है) तंग करता है-कुछ शक नहीं कि इसमें इमानरदार लोगों के वास्ते (कुदरत अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (37)

(तो ऐ रसूल अपनी) क़राबतदार (फातिमा ज़हरा) का हक़ फिदक दे दो और मोहताज व परदेसियों का (भी) जो लोग ख़ुदा की खुशनूदी के ख़्वाहाँ हैं उन के हक़ में सब से बेहतर यही है और ऐसे ही लोग आख़ेरत में दिली मुरादे पाएँगें (38)

और तुम लोग जो सूद देते हो ताकि लोगों के माल (दौलत) में तरक्क़ी हो तो (याद रहे कि ऐसा माल) अल्लाह के यहॉ फूलता फलता नही और तुम लोग जो ख़ुदा की ख़ुशनूदी के इरादे से ज़कात देते हो तो ऐसे ही लोग (अल्लाह की बारगाह से) दूना दून लेने वाले हैं (39)

अल्लाह वह (क़ादिर तवाना है) जिसने तुमको पैदा किया फिर उसी ने रोज़ी दी फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको (दोबारा) ज़िन्दा करेगा भला तुम्हारे (बनाए हुए अल्लाह के) शरीकों में से कोई भी ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके जिसे ये लोग (उसका) शरीक बनाते हैं (40)

वह उससे पाक व पाकीज़ा और बरतर है ख़ुद लोगों ही के अपने हाथों की कारस्तानियों की बदौलत ख़ुश्क व तर में फसाद फैल गया ताकि जो कुछ ये लोग कर चुके हैं ख़ुदा उन को उनमें से बाज़ करतूतों का मज़ा चखा दे ताकि ये लोग अब भी बाज़ आएँ (41)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ज़रा रुए ज़मीन पर चल फिरकर देखो तो कि जो लोग उसके क़ब्ल गुज़र गए उनके (अफ़आल) का अंजाम क्या हुआ उनमें से बहुतेरे तो मुश्ररेक ही हैं (42)

तो (ऐ रसूल) तुम उस दिन के आने से पहले जो अल्लाह की तरफ से आकर रहेगा (और) कोई उसे रोक नहीं सकता अपना रुख़ मज़बूत (और सीधे दीन की तरफ किए रहो उस दिन लोग (परेशान होकर) अलग अलग हो जाएँगें (43)

जो काफ़िर बन बैठा उस पर उस के कुफ्र का वबाल है और जिन्होने अच्छे काम किए वह अपने ही आसाइश का सामान कर रहें है (44)

ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए उनको ख़ुदा अपने फज़्ल व (करम) से अच्छी जज़ा अता करेगा वह यक़ीनन कुफ्फ़ार से उलफ़त नहीं रखता (45)

उसी की (क़ुदरत) की निशानियों में से एक ये भी है कि वह हवाओं को (बारिश) की ख़ुशख़बरी के वास्ते (क़ब्ल से) भेज दिया करता है और ताकि तुम्हें अपनी रहमत की लज़्ज़त चखाए और इसलिए भी कि (इसकी बदौलत) कश्तियॉं उसके हुक्म से चल खड़ी हो और ताकि तुम उसके फज़्ल व करम से (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और इसलिए भी ताकि तुम शुक्र करो (46)

औ (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले और भी बहुत से पैग़म्बर उनकी क़ौमों के पास भेजे तो वह पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन लेकर आए (मगर उन लोगों ने न माना) तो उन मुजरिमों से हमने (ख़ूब) बदला लिया और हम पर तो मोमिनीन की मदद करना लाज़िम था ही (47)

अल्लाह ही (क़ादिर तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो वह बादलों को उड़ाए उड़ाए फिरती हैं फिर वही अल्लाह बादल को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और (कभी) उसको टुकड़े (टुकड़े) कर देता है फिर तुम देखते हो कि बूँदियां उसके दरमियान से निकल पड़ती हैं फिर जब ख़ुदा उन्हें अपने बन्दों में से जिस पर चहता है बरसा देता है तो वह लोग खुशियाँ माानने लगते हैं (48)

अगरचे ये लोग उन पर (बाराने रहमत) नाज़िल होने से पहले (बारिश से) शुरु ही से बिल्कुल मायूस (और मज़बूर) थे (49)

ग़रज़ अल्लाह की रहमत के आसार की तरफ देखो तो कि वह क्योकर ज़मीन को उसकी परती होने के बाद आबाद करता है बेशक यक़ीनी वही मुर्दो को ज़िन्दा करने वाला और वही हर चीज़ पर क़ादिर है (50)

और अगर हम (खेती की नुकसान देह) हवा भेजें फिर लोग खेती को (उसी हवा की वजह से) ज़र्द (परस मुर्दा) देखें तो वह लोग इसके बाद (फौरन) नाशुक्री करने लगें (51)

(ऐ रसूल) तुम तो (अपनी) आवाज़ न मुर्दो ही को सुना सकते हो और न बहरों को सुना सकते हो (ख़ुसूसन) जब वह पीठ फेरकर चले जाएँ (52)

और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से (फेरकर) राह पर ला सकते हो तो तुम तो बस उन्हीं लोगों को सुना (समझा) सकते हो जो हमारी आयतों को दिल से मानें फिर यही लोग इस्लाम लाने वाले हैं (53)

ख़ुदा ही तो है जिसने तुम्हें (एक निहायत) कमज़ोर चीज़ (नुत्फे) से पैदा किया फिर उसी ने (तुम में) बचपने की कमज़ोरी के बाद (शबाब की) क़ूवत अता की फिर उसी ने (तुममें जवानी की) क़ूवत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया वह जो चाहता पैदा करता है-और वही बड़ा वाकिफकार और (हर चीज़ पर) क़ाबू रखता है (54)

और जिस दिन क़यामत बरपा होगी तो गुनाहगार लोग कसमें खाएँगें कि वह (दुनिया में) घड़ी भर से ज़्यादा नहीं ठहरे यूँ ही लोग (दुनिया में भी) इफ़तेरा परदाज़ियाँ करते रहे (55)

और जिन लोगों को (ख़ुदा की बारगाह से) इल्म और ईमान दिया गया है जवाब देगें कि (हाए) तुम तो अल्लाह की किताब के मुताबिक़ रोज़े क़यामत तक (बराबर) ठहरे रहे फिर ये तो क़यामत का ही दिन है मगर तुम लोग तो उसका यक़ीन ही न रखते थे (56)

तो उस दिन सरकश लोगों को न उनकी उज्र माअज़ेरत कुछ काम आएगी और न उनकी सुनवाई होगी (57)

और हमने तो इस क़ुरान में (लोगों के समझाने को) हर तरह की मिसल बयान कर दी और अगर तुम उनके पास कोई सा मौजिज़ा ले आओ (58)

तो भी यक़ीनन कुफ़्फ़ार यही बोल उठेंगे कि तुम लोग निरे दग़ाबाज़ हो जो लोग समझ (और इल्म) नहीं रखते उनके दिलों पर नज़र करके ख़ुदा यू तसदीक़ करता है (कि ये ईमान न लाएँगें) (59)

तो (ऐ रसूल) तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है और (कहीं) ऐसा न हो कि जो (तुम्हारी) तसदीक़ नहीं करते तुम्हें (बहका कर) ख़फ़ीफ़ करे दें (60)

31 सूरह लुक़मान

सूरह लुक़मान मक्का में नाज़िल हुआ और इसकी चौतीस (34) आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम (1)

ये सूरा हिकमत से भरी हुयी किताबा की आयतें है (2)

जो (अज़सरतापा) उन लोगों के लिए हिदायत व रहमत है (3)

जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात देते हैं और वही लोग आख़िरत का भी यक़ीन रखते हैं (4)

यही लोग अपने परवरदिगार की हिदायत पर आमिल हैं और यही लोग (क़यामत में) अपनी दिली मुरादें पाएँगे (5)

और लोगों में बाज़ (नज़र बिन हारिस) ऐसा है जो बेहूदा क़िस्से (कहानियाँ) ख़रीदता है ताकि बग़ैर समझे बूझे (लोगों को) ख़ुदा की (सीधी) राह से भड़का दे और आयातें ख़ुदा से मसख़रापन करे ऐसे ही लोगों के लिए बड़ा रुसवा करने वाला अज़ाब है (6)

और जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो शेख़ी के मारे मुँह फेरकर (इस तरह) चल देता है गोया उसने इन आयतों को सुना ही नहीं जैसे उसके दोनो कानों में ठेठी है तो (ऐ रसूल) तुम उसको दर्दनाक अज़ाब की (अभी से) खुशख़बरी दे दे (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए नेअमत के (हरे भरे बेहश्ती) बाग़ हैं कि यो उनमें हमेशा रहेंगे (8)

ये अल्लाह का पक्का वायदा है और वह तो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है (9)

तुम उन्हें देख रहे हो कि उसी ने बग़ैर सुतून के आसमानों को बना डाला और उसी ने ज़मीन पर (भारी भारी) पहाड़ों के लंगर डाल दिए कि (मुबादा) तुम्हें लेकर किसी तरफ जुम्बिश करे और उसी

ने हर तरह चल फिर करने वाले (जानवर) ज़मीन में फैलाए और हमने आसमान से पानी बरसाया और (उसके ज़रिए से) ज़मीन में हर रंग के नफ़ीस जोड़े पैदा किए (10)

(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) ये तो ख़ुदा की ख़िलक़त है कि (भला) तुम लोग मुझे दिखाओं तो कि जो (जो माबूद) अल्लाह के सिवा तुमने बना रखे है उन्होंने क्या पैदा किया बल्कि सरकश लोग (कुफ़्फ़ार) सरीही गुमराही में (पड़े) हैं (11)

और यक़ीनन हम ने लुक़मान को हिकमत अता की (और हुक्म दिया था कि) तुम ख़ुदा का शुक्र करो और जो ख़ुदा का शुक्र करेगा-वह अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है और जिसने नाशुक्री की तो (अपना बिगाड़ा) क्योंकी ख़ुदा तो (बहरहाल) बे परवाह (और) क़ाबिल हमदो सना है (12)

और (वह वक्त याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से उसकी नसीहत करते हुए कहा ऐ बेटा (ख़बरदार कभी किसी को) ख़ुदा का शरीक न बनाना (क्योंकि) शिर्क यक़ीनी बड़ा सख़्त गुनाह है (13)

(जिस की बख़्शिश नहीं) और हमने इन्सान को जिसे उसकी माँ ने दुख पर दुख सह के पेट में रखा (इसके अलावा) दो बरस में (जाके) उसकी दूध बढ़ाई की (अपने और) उसके माँ बाप के बारे में ताक़ीद की कि मेरा भी शुक्रिया अदा करो और अपने वालदैन का (भी) और आख़िर सबको मेरी तरफ लौट कर जाना है (14)

और अगर तेरे माँ बाप तुझे इस बात पर मजबूर करें कि तू मेरा शरीक ऐसी चीज़ को क़रार दे जिसका तुझे इल्म भी नहीं तो तू (इसमें) उनकी इताअत न करो (मगर तकलीफ़ न पहुँचाना) और दुनिया (के कामों) में उनका अच्छी तरह साथ दे और उन लोगों के तरीक़े पर चल जो (हर बात में) मेरी (ही) तरफ रुजू करे फिर (तो आख़िर) तुम सबकी रुजू मेरी ही तरफ है तब (दुनिया में) जो कुछ तुम करते थे (15)

(उस वक्त उसका अन्जाम) बता दूँगा ऐ बेटा इसमें शक नहीं कि वह अमल (अच्छा हो या बुरा) अगर राई के बराबर भी हो और फिर वह किसी सख़्त पत्थर के अन्दर या आसमान में या ज़मीन मे (छुपा हुआ) हो तो भी अल्लाह उसे (क़यामत के दिन) हाज़िर कर देगा बेशक अल्लाह बड़ा बारीकबीन वाक़िफ़कार है (16)

ऐ बेटा नमाज़ पाबन्दी से पढ़ा कर और (लोगों से) अच्छा काम करने को कहो और बुरे काम से रोको और जो मुसीबत तुम पर पड़े उस पर सब्र करो (क्योंकि) बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है (17)

और लोगों के सामने (गुरुर से) अपना मुँह न फुलाना और ज़मीन पर अकड़कर न चलना क्योंकि अल्लाह किसी अकड़ने वाले और इतराने वाले को दोस्त नहीं रखता और अपनी चाल ढाल में मियाना रवी एख़्तेयार करो (18)

और दूसरो से बोलने में अपनी आवाज़ धीमी रखो क्योंकि आवाज़ों में तो सब से बुरी आवाज़ (चीख़ने की वजह से) गधों की है (19)

क्या तुम लोगों ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ही ने यक़ीनी तुम्हारा ताबेए कर दिया है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें पूरी कर दीं और बाज़ लोग (नुसर बिन हारिस वग़ैरह) ऐसे भी हैं जो (ख़्वाह मा ख़्वाह) ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं (हालाँकि उनके पास) न इल्म है और न हिदायत है और न कोई रौशन किताब है (20)

और जब उनसे कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल की है उसकी पैरवी करो तो (छूटते ही) कहते हैं कि नहीं हम तो उसी (तरीक़े से चलेंगे) जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया भला अगरचे शैतान उनके बाप दादाओं को जहन्नुम के अज़ाब की तरफ बुलाता रहा हो (तो भी उन्ही की पैरवी करेंगे) (21)

और जो शख़्स अल्लाह के आगे अपना सर (तस्लीम) ख़म करे और वह नेकोकार (भी) हो तो बेशक उसने (ईमान की) मज़बूत रस्सी पकड़ ली और (आख़िर तो) सब कामों का अन्जाम अल्लाह ही की तरफ है (22)

और (ऐ रसूल) जो काफिर बन बैठे तो तुम उसके कुफ्र से कुढ़ों नही उन सबको तो हमारी तरफ लौट कर आना है तो जो कुछ उन लोगों ने किया है (उसका नतीजा) हम बता देगें बेशक अल्लाह दिलों के राज़ से (भी) खूब वाक़िफ़ है (23)

हम उन्हें चन्द रोज़ों तक चैन करने देगें फिर उन्हें मजबूर करके सख़्त अज़ाब की तरफ खीच लाएँगें (24)

और (ऐ रसूल) तुम अगर उनसे पूछो कि सारे आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया तो ज़रुर कह देगे कि अल्लाह ने (ऐ रसूल) इस पर तुम कह दो अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें से अक्सर (इतना भी) नहीं जानते हैं (25)

जो कुछ सारे आसमान और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है बेशक अल्लाह तो (हर चीज़ से) बेपरवा (और बहरहाल) क़ाबिले हम्दो सना है (26)

और जितने दरख़्त ज़मीन में हैं सब के सब क़लम बन जाएँ और समन्दर उसकी सियाही बनें और उसके (ख़त्म होने के) बाद और सात समन्दर (सियाही हो जाएँ और अल्लाह का इल्म और उसकी बातें लिखी जाएँ) तो भी अल्लाह की बातें ख़त्म न होगीं बेशक अल्लाह सब पर ग़ालिब (और) दाना (बीना) है (27)

तुम सबका पैदा करना और फिर (मरने के बाद) जिला उठाना एक शख़्स के (पैदा करने और जिला उठाने के) बराबर है बेशक ख़ुदा (तुम सब की) सुनता और सब कुछ देख रहा है (28)

क्या तूने ये भी ख़्याल न किया कि अल्लाह ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाख़िल कर देता है (तो रात बढ़ जाती है) और दिन को (बढ़ा के) रात में दाख़िल कर देता है (तो दिन बढ़ जाता है) उसी ने आफताब व माहताब को (गोया) तुम्हारा ताबेए बना दिया है कि एक मुक़र्रर मीयाद तक (यूँ ही) चलता रहेगा और (क्या तूने ये भी ख़्याल न किया कि) जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़ूब वाकिफकार है (29)

ये (सब बातें) इस सबब से हैं कि अल्लाह ही यक़ीनी बरहक़ (माबूद) है और उस के सिवा जिसको लोग पुकारते हैं यक़ीनी बिल्कुल बातिल और इसमें शक नहीं कि अल्लाह ही आलीशान और बड़ा रुतबे वाला है (30)

क्या तूने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ही के फज़्ल से कश्ती दरिया में बहती चलती रहती है ताकि (लकड़ी में ये क़ूवत देकर) तुम लोगों को अपनी (क़ुदरत की) बाज़ निशानियाँ दिखा दे बेशक उस में भी तमाम सब्र व शुक्र करने वाले (बन्दों) के लिए (कुदरत अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ दिखा दे बेशक इसमें भी तमाम सब्र व शुक्र करने वाले (बन्दों) के लिए (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं (31)

और जब उन्हें मौज (ऊँची होकर) साएबानों की तरह (ऊपर से) ढॉक लेती है तो निरा खुरा उसी का अक़ीदा रखकर ख़ुदा को पुकारने लगते हैं फिर जब ख़ुदा उनको नजात देकर खुश्की तक पहुँचा देता है तो उनमें से बाज़ तो कुछ देर एतदाल पर रहते हैं (और बाज़ पक्के काफिर) और हमारी (क़ुदरत की) निशानियों से इन्कार तो बस बदएहद और नाशुक्रे ही लोग करते हैं (32)

लोगों अपने परवरदिगार से डरो और उस दिन का ख़ौफ रखो जब न कोई बाप अपने बेटे के काम आएगा और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आ सकेगा ख़ुदा का (क़यामत का) वायदा बिल्कुल पक्का है तो (कहीं) तुम लोगों को दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी धोखे में न डाले और न कहीं तुम्हें फरेब देने वाला (शैतान) कुछ फ़रेब दे (33)

बेशक ख़ुदा ही के पास क़यामत (के आने) का इल्म है और वही (जब मौक़ा मुनासिब देखता है) पानी बरसाता है और जो कुछ औरतों के पेट में (नर मादा) है जानता है और कोई शख़्स (इतना भी तो) नहीं जानता कि वह ख़ुद कल क्या करेगा और कोई शख़्स ये (भी) नहीं जानता है कि वह किस सर ज़मीन पर मरे (गड़े) गा बेशक ख़ुदा (सब बातों से) आगाह ख़बरदार है (34)

32 सूरह सजदा

सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई और उसकी तीस आयते हैं

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़ लाम मीम (1)

इसमे कुछ शक नहीं कि किताब कु़रान का नाज़िल करना सारे जहाँ के परवरदिगार की तरफ से है (2)

क्या ये लोग (ये कहते हैं कि इसको इस शख़्स (रसूल) ने अपनी जी से गढ़ लिया है नहीं ये बिल्कुल तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ है ताकि तुम उन लोगों को (अल्लाह के अज़ाब से) डराओ जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला आया ही नहीं ताकि ये लोग राह पर आएँ (3)

ख़ुदा ही तो है जिसने सारे आसमान और ज़मीन और जितनी चीज़े इन दोनो के दरम्यिान हैं छहः दिन में पैदा की फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ उसके सिवा न कोई तुम्हारा सरपरस्त है न कोई सिफारिशी तो क्या तुम (इससे भी) नसीहत व इबरत हासिल नहीं करते (4)

आसमान से ज़मीन तक के हर अम्र का वही मुद्‌बबिर (व मुन्तज़िम) है फिर ये बन्दोबस्त उस दिन जिस की मिक़दार तुम्हारे शुमार से हज़ार बरस से होगी उसी की बारगाह में पेश होगा (5)

वही (मुदब्बिर) पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला (सब पर) ग़ालिब मेहरबान है (6)

वह (क़ादिर) जिसने जो चीज़ बनाई (निख सुख से) ख़ूब (दुरुस्त) बनाई और इन्सान की इबतेदाई ख़िलक़त मिट्टी से की (7)

उसकी नस्ल (इन्सानी जिस्म के) खुलासा यानी (नुत्फे के से) ज़लील पानी से बनाई (8)

फिर उस (के पुतले) को दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के (सुनने के) लिए कान और (देखने के लिए) आँखें और (समझने के लिए) दिल बनाएँ (इस पर भी) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो (9)

और ये लोग कहते हैं कि जब हम ज़मीन में नापैद हो जाएँगे तो क्या हम फिर नया जन्म लेगे (क़यामत से नही) बल्कि ये लोग अपने परवरदिगार के (सामने हुज़ूरी ही) से इन्कार रखते हैं (10)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मल्कुलमौत जो तुम्हारे ऊपर तैनात है वही तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ करेगा उसके बाद तुम सबके सब अपने परवरदिगार की तरफ लौटाए जाओगे (11)

और (ऐ रसूल) तुम को बहुत अफसोस होगा अगर तुम मुजरिमों को देखोगे कि वह (हिसाब के वक्त) अपने परवरदिगार की बारगाह में अपने सर झुकाए खड़े हैं और(अर्ज़ कर रहे हैं) परवरदिगार हमने (अच्छी तरह देखा और सुन लिया तू हमें दुनिया में एक दफा फिर लौटा दे कि हम नेक काम करें (12)

और अब तो हमको (क़यामत का) पूरा पूरा यक़ीन है और (अल्लाह फरमाएगा कि) अगर हम चाहते तो दुनिया ही में हर शख़्स को (मजबूर करके) राहे रास्त पर ले आते मगर मेरी तरफ से (रोज़े अज़ा) ये बात क़रार पा चुकी है कि मै जहन्नुम को जिन्नात और आदमियों से भर दूँगा (13)

तो चूँकि तुम आज के दिन हुज़ूरी को भूले बैठे थे तो अब उसका मज़ा चखो हमने तुमको क़सदन भुला दिया और जैसी जैसी तुम्हारी करतूतें थीं (उनके बदले) अब हमेशा के अज़ाब के मज़े चखो (14)

हमारी आयतों पर इमान बस वही लोग लाते हैं कि जिस वक्त उन्हें वह (आयते) याद दिलायी गयीं तो फौरन सजदे में गिर पड़ने और अपने परवरदिगार की हम्दो सना की तस्बीह पढ़ने लगे और ये लोग तकब्बुर नही करते (15) सजदा 10

(रात) के वक्त उनके पहलू बिस्तरों से आशना नहीं होते और (अज़ाब के) ख़ौफ और (रहमत की) उम्मीद पर अपने परवरदिगार की इबादत करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें अता किया है उसमें से (अल्लाह की) राह में ख़र्च करते हैं (16)

उन लोगों की कारगुज़ारियों के बदले में कैसी कैसी आँखों की ठन्डक उनके लिए ढकी छिपी रखी है उसको कोई शख़्स जानता ही नहीं (17)

तो क्या जो शख़्स ईमानदार है उस शख़्स के बराबर हो जाएगा जो बदकार है (हरगिज़ नहीं) ये दोनों बराबर नही हो सकते (18)

लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम किए उनके लिए तो रहने सहने के लिए

(बेहश्त के) बाग़ात हैं ये सामाने ज़ियाफ़त उन कारगुज़ारियों का बदला है जो वह (दुनिया में) कर चुके थे (19)

और जिन लोगों ने बदकारी की उनका ठिकाना तो (बस) जहन्नुम है वह जब उसमें से निकल जाने का इरादा करेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिए जाएँगे और उन से कहा जाएगा कि दोज़ख़ के जिस अज़ाब को तुम झुठलाते थे अब उसके मजे़ चखो (20)

और हम यक़ीनी (क़यामत के) बडे़ अज़ाब से पहले दुनिया के (मामूली) अज़ाब का मज़ा चखाएँगें जो अनक़रीब होगा ताकि ये लोग अब भी (मेरी तरफ) रुजू़ करें (21)

और जिस शख़्स को उसके परवरदिगार की आयतें याद दिलायी जाएँ और वह उनसे मुँह फेर उससे बढ़कर और ज़ालिम कौन होगा हम गुनाहगारों से इन्तक़ाम लेगें और ज़रुर लेंगे (22)

और (ऐ रसूल) हमने तो मूसा को भी (आसमानी किताब) तौरेत अता की थी तुम भी इस किताब (कुरान) के (अल्लाह की तरफ से) मिलने में शक में न पडे़ रहो और हमने इस (तौरेत) तो तुम को भी बनी इसराईल के लिए रहनुमा क़रार दिया था (23)

और उन्ही (बनी इसराईल) में से हमने कुछ लोगों को चूँकि उन्होंने (मुसीबतों पर) सब्र किया था पेशवा बनाया जो हमारे हुक्म से (लोगो की) हिदायत करते थे और (इसके अलावा) हमारी आयतो का दिल से यक़ीन रखते थे (24)

(ऐ रसूल) हसमें शक नहीं कि जिन बातों में लोग (दुनिया में) बाहम झगड़ते रहते हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार क़तई फैसला कर देगा (25)

क्या उन लोगों को ये मालूम नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला जिन के घरों में ये लोग चल फिर रहें हैं बेशक उसमे (कुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं तो क्या ये लोग सुनते नहीं हैं (26)

क्या इन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम चटियल मैदान (इफ़तादा) ज़मीन की तरफ पानी को जारी करते हैं फिर उसके ज़रिए से हम घास पात लगाते हैं जिसे उनके जानवर और ये ख़ुद भी खाते हैं तो क्या ये लोग इतना भी नहीं देखते (27)

और ये लोग कहते है कि अगर तुम लोग सच्चे हो (कि क़यामत आएगी) तो (आख़िर) ये फैसला कब होगा (28)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फैसले के दिन कुफ़्फ़ार को उनका ईमान लाना कुछ काम न आएगा और न उनको (इसकी) मोहलत दी जाएगी (29)

ग़रज़ तुम उनकी बातों का ख़्याल छोड़ दो और तुम मुन्तज़िर रहो (आख़िर) वह लोग भी तो इन्तज़ार कर रहे हैं (30)

33 सूरह एहज़ाब

सूरह एहज़ाब मदीने में नाज़िल हुई और उसकी (73) तेहत्तर आयतें हैं।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ नबी ख़ुदा ही से डरते रहो और काफिरों और मुनाफिक़ों की बात न मानो इसमें शक नहीं कि ख़ुदा बड़ा वाक़िफ़कार हकीम है। (1)

और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास जो "वही" की जाती है (बस) उसी की पैरवी करो तुम लोग जो कुछ कर रहे हो ख़ुदा उससे यक़ीनी अच्छा तरह आगाह है। (2)

और ख़ुदा ही पर भरोसा रखो और ख़ुदा ही कारसाजी के लिए काफी है (3)

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं पैदा किये कि (एक ही वक्त दो इरादे कर सके) और न उसने तुम्हारी बीवियों को जिन से तुम ज़ेहार करते हो तुम्हारी माएँ बना दी और न उसने तुम्हारे लै पालकों को तुम्हारे बेटे बना दिये। ये तो फ़क़त तुम्हारी मुँह बोली बात (और ज़ुबानी जमा खर्च) है और (चाहे किसी को बुरी लगे या अच्छी) ख़ुदा तो सच्ची कहता है और सीधी राह दिखाता है। (4)

लै पालकों का उनके (असली) बापों के नाम से पुकारा करो यही ख़ुदा के नज़दीक बहुत ठीक है हाँ अगर तुम लोग उनके असली बापों को न जानते हो तो तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं (उन्हें भाई या दोस्त कहकर पुकारा करो) और हाँ इसमें भूल चूक जाओ तो अलबत्ता उसका तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है मगर जब तुम दिल से जानबूझ कर करो (तो ज़रूर गुनाह है) और ख़ुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है। (5)

नबी तो मोमिनीन से ख़ुद उनकी जानों से भी बढ़कर हक़ रखते हैं (क्योंकि वह गोया उम्मत के मेहरबान बाप हैं) और उनकी बीवियाँ (गोया) उनकी माएँ हैं और मोमिनीन व मुहाजिरीन में से (जो लोग बाहम) क़राबतदार हैं। किताबें ख़ुदा की रूह से (ग़ैरों की निस्बत) एक दूसरे के (तर्के के) ज्यादा हक़दार हैं मगर (जब) तुम अपने दोस्तों के साथ सुलूक करना चाहो (तो दूसरी बात है) ये तो किताबे (ख़ुदा) में लिखा हुआ (मौजूद) है (6)

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब हमने और पैग़म्बरों से और ख़ास तुमसे और नूह और

इबराहीम और मूसा और मरियम के बेटे ईसा से एहदो पैमाने लिया और उन लोगों से हमने सख़्त एहद लिया था (7)

ताकि (क़यामत के दिन) सच्चों (पैग़म्बरों) से उनकी सच्चाई तबलीगे़ रिसालत का हाल दरियाफ़्त करें और काफिरों के वास्ते तो उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार ही कर रखा है। (8)

(ऐ ईमानदारों ख़ुदा की) उन नेअमतों को याद करो जो उसने तुम पर नाज़िल की है (जंगे खन्दक में) जब तुम पर (काफिरों का) लशकर (उमड़ के) आ पड़ा तो (हमने तुम्हारी मदद की) उन पर आँधी भेजी और (इसके अलावा फरिश्तों का ऐसा लश्कर भेजा) जिसको तुमने देखा तक नहीं और तुम जो कुछ कर रहे थे ख़ुदा उसे ख़ूब देख रहा था (9)

जिस वक्त वह लोग तुम पर तुम्हारे ऊपर से आ पड़े और तुम्हारे नीचे की तरफ से भी पिल गए और जिस वक्त (उनकी कसरत से) तुम्हारी आँखें खै़रा हो गयीं थी और (ख़ौफ से) कलेजे मुँह को आ गए थे और अल्लाह पर तरह-तरह के (बुरे) ख़्याल करने लगे थे। (10)

यहाँ पर मोमिनों का इम्तिहान लिया गया था और ख़ूब अच्छी तरह झिंझोड़े गए थे। (11)

और जिस वक्त मुनाफेक़ीन और वह लोग जिनके दिलों में (कुफ्र का) मरज़ था कहने लगे थे कि ख़ुदा ने और उसके रसूल ने जो हमसे वायदे किए थे वह बस बिल्कुल धोखे की टट्टी था। (12)

और अब उनमें का एक गिरोह कहने लगा था कि ऐ मदीने वालों अब (दुश्मन के मुक़ाबलें में) तुम्हारे कहीं ठिकाना नहीं तो (बेहतर है कि अब भी) पलट चलो और उनमें से कुछ लोग रसूल से (घर लौट जाने की) इजाज़त माँगने लगे थे कि हमारे घर (मर्दो से) बिल्कुल ख़ाली (ग़ैर महफूज़) पड़े हुए हैं - हालाँकि वह ख़ाली (ग़ैर महफूज़) न थे (बल्कि) वह लोग तो (इसी बहाने से) बस भागना चाहते हैं (13)

और अगर ऐसा ही लश्कर उन लोगों पर मदीने के एतराफ से आ पड़े और उन से फसाद (ख़ाना जंगी) करने की दरख़्वास्त की जाए तो ये लोग उसके लिए (फौरन) आ मौजूद हों (14)

और (उस वक्त) अपने घरों में भी बहुत कम तवक्कुफ़ करेंगे (मगर ये तो जिहाद है) हालाँकि उन लोगों ने पहले ही ख़ुदा से एहद किया था कि हम दुश्मन के मुक़ाबले में (अपनी) पीठ न फेरेंगे और ख़ुदा के एहद की पूछगछ तो (एक न एक दिन) होकर रहेगी (15)

(ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अगर तुम मौत का क़त्ल (के ख़ौफ) से भागे भी तो (यह) भागना

तुम्हें हरगिज़ कुछ भी मुफ़ीद न होगा और अगर तुम भागकर बच भी गए तो बस यही न की दुनिया में चन्द रोज़ा और चैनकर लो (16)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा कर बैठे तो तुम्हें उसके (अज़ाब) से कौन ऐसा है जो बचाए या भलाई ही करना चाहे (तो कौन रोक सकता है) और ये लोग ख़ुदा के सिवा न तो किसी को अपना सरपरस्त पाएँगे और न मद्दगार (17)

तुममें से जो लोग (दूसरों को जिहाद से) रोकते हैं ख़ुदा उनको ख़ूब जानता है और (उनको भी ख़ूब जानता है) जो अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि हमारे पास चले भी आओ और ख़ुद भी (फक़त पीछा छुड़ाने को लड़ाई के खेत) में बस एक ज़रा सा आकर तुमसे अपनी जान चुराई (18)

और चल दिए और जब (उन पर) कोई ख़ौफ (का मौक़ा) आ पड़ा तो देखते हो कि (आस से) तुम्हारी तरफ देखते हैं (और) उनकी आँखें इस तरह घूमती हैं जैसे किसी शख्स पर मौत की बेहोशी छा जाए फिर वह ख़ौफ (का मौक़ा) जाता रहा और ईमानदारों की फतेह हुयी तो माले (ग़नीमत) पर गिरते पड़ते फौरन तुम पर अपनी तेज़ ज़बानों से ताना कसने लगे ये लोग (शुरू) से ईमान ही नहीं लाए (फक़त ज़बानी जमा ख़र्च थी) तो ख़ुदा ने भी इनका किया कराया सब अकारत कर दिया और ये तो ख़ुदा के वास्ते एक (निहायत) आसान बात थी (19)

(मदीने का मुहासेरा करने वाले चल भी दिए मगर) ये लोग अभी यही समझ रहे हैं कि (काफ़िरों के) लश्कर अभी नहीं गए और अगर कहीं (कुफ्फार का) लश्कर फिर आ पहुँचे तो ये लोग चाहेंगे कि काश वह जंगलों में गँवारों में जा बसते और (वहीं से बैठे बैठे) तुम्हारे हालात दरयाफ़्त करते रहते और अगर उनको तुम लोगों में रहना पड़ता तो फ़क़त (पीछा छुड़ाने को) ज़रा ज़हूर (कहीं) लड़ते (20)

(मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो ख़ुद रसूल अल्लाह का (ख़न्दक़ में बैठना) एक अच्छा नमूना था (मगर हाँ यह) उस शख़्स के वास्ते है जो ख़ुदा और रोज़े आख़ेरत की उम्मीद रखता हो और ख़ुदा की याद बाकसरत करता हो (21)

और जब सच्चे ईमानदारों ने (कुफ्फार के) जमघटों को देखा तो (बेतकल्लुफ़) कहने लगे कि ये वही चीज़ तो है जिसका हम से ख़ुदा ने और उसके रसूल ने वायदा किया था (इसकी परवाह क्या है) और ख़ुदा ने और उसके रसूल ने बिल्कुल ठीक कहा था और (इसके देखने से) उनका ईमानदार और उनकी इताअत और भी ज़िन्दा हो गयी (22)

ईमानदारों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं कि ख़ुदा से उन्होंने (जॉनिसारी का) जो एहद किया था उसे

पूरा कर दिखाया ग़रज़ उनमें से बाज़ वह हैं जो (मर कर) अपना वक़्त पूरा कर गए और उनमें से बाज़ (हुक्मे ख़ुदा के) मुन्तज़िर बैठे हैं और उन लोगों ने (अपनी बात) ज़रा भी नहीं बदली (23)

ये इम्तेहान इसलिए था ताकि ख़ुद सच्चे (इमानदारों) को उनकी सच्चाई की जज़ाए ख़ैर दे और अगर चाहे तो मुनाफ़ेक़ीन की सज़ा करे या (अगर वह लागे तौबा करें तो) ख़ुदा उनकी तौबा क़ुबूल फरमाए इसमें शक नहीं कि ख़ुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है (24)

और ख़ुदा ने (अपनी क़ुदरत से) काफ़िरों को मदीने से फेर दिया (और वह लोग) अपनी झुंझलाहट में (फिर गए) और इन्हें कुछ फायदे भी न हुआ और ख़ुदा ने (अपनी मेहरबानी से) मोमिनीन को लड़ने की नौबत न आने दी और ख़ुदा तो (बड़ा) ज़बरदस्त (और) ग़ालिब हैं (25)

और एहले किताब में से जिन लोगों (बनी क़ुरैज़ा) ने उन (कुफ्फार) की मदद की थी ख़ुदा उनको उनके क़िलों से (बेदख़ल करके) नीचे उतार लाया और उनके दिलों में (तुम्हारा) ऐसा रोब बैठा दिया कि तुम उनके कुछ लोगों को क़त्ल करने लगे (26)

और कुछ को क़ैदी (और ग़ुलाम) बनाने और तुम ही लोगों को उनकी ज़मीन और उनके घर और उनके माल और उस ज़मीन (ख़ैबर) का ख़ुदा ने मालिक बना दिया जिसमें तुमने क़दम तक नहीं रखा था और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर वतवाना है (27)

ऐ रसूल अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम (फक़त) दुनियावी ज़िन्दगी और उसकी आराइश व ज़ीनत की ख्वाहॉ हो तो उधर आओ मैं तुम लोगों को कुछ साज़ो सामान दे दूँ और उनवाने शाइस्ता से रूख़सत कर दूँ (28)

और अगर तुम लोग ख़ुदा और उसके रसूल और आख़ेरत के घर की ख्वाहॉ हो तो (अच्छी तरह ख्याल रखो कि) तुम लोगों में से नेकोकार औरतों के लिए ख़ुदा ने यक़ीनन् बड़ा (बड़ा) अज्र व (सवाब) मुहय्या कर रखा है (29)

ऐ पैग़म्बर की बीबियों तुममें से जो कोई किसी सरीही ना शाइस्ता हरकत की का मुरतिब हुयी तो (याद रहे कि) उसका अज़ाब भी दुगना बढ़ा दिया जाएगा और ख़ुदा के वास्ते (निहायत) आसान है (30)

और तुममें से जो (बीवी) ख़ुदा और उसके रसूल की ताबेदारी अच्छे (अच्छ) काम करेगी उसको हम उसका सवाब भी दोहरा अता करेगें और हमने उसके लिए (जन्नत में) इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है (31)

ऐ नबी की बीवियों तुम और मामूली औरतों की सी तो हो वही (बस) अगर तुम को परहेज़गारी मंज़ूर रहे तो (अजनबी आदमी से) बात करने में नरम नरम (लगी लिपटी) बात न करो ताकि जिसके दिल में (शहवते ज़िना का) मर्ज़ है वह (कुछ और) इरादा (न) करे (32)

और (साफ-साफ) उनवाने शाइस्ता से बात किया करो और अपने घरों में निचली बैठी रहो और अगले ज़माने जाहिलियत की तरह अपना बनाव सिंगार न दिखाती फिरो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और (बराबर) ज़कात दिया करो और ख़ुदा और उसके रसूल की इताअत करो ऐ (पैग़म्बर के) अहले बैत ख़ुदा तो बस ये चाहता है कि तुमको (हर तरह की) बुराई से दूर रखे और जो पाक व पाकीज़ा दिखने का हक़ है वैसा पाक व पाकीज़ा रखे (33)

और (ऐ नबी की बीबियों) तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की आयतें और (अक़ल व हिकमत की बातें) पढ़ी जाती हैं उनको याद रखो कि बेशक अल्लाह बड़ा बारीक है वाक़िफ़कार है (34)

(दिल लगा के सुनो) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें और फरमाबरदार मर्द और फरमाबरदार औरतें और रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और फिरौतनी करने वाले मर्द और फिरौतनी करने वाली औरतें और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले मर्द और हिफाज़त करने वाली औरतें और ख़ुदा की बकसरत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें बेशक इन सब लोगों के वास्ते ख़ुदा ने मग़फिरत और (बड़ा) सवाब मुहैय्या कर रखा है (35)

और न किसी ईमानदार मर्द को ये मुनासिब है और न किसी ईमानदार औरत को जब ख़ुदा और उसके रसूल किसी काम का हुक्म दें तो उनको अपने उस काम (के करने न करने) अख़्तेयार हो और (याद रहे कि) जिस शख़्स ने ख़ुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की वह यक़ीनन खुल्लम खुल्ला गुमराही में मुब्तिला हो चुका (36)

और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब तुम उस शख़्स (ज़ैद) से कह रहे थे जिस पर ख़ुदा ने एहसान (अलग) किया था और तुमने उस पर (अलग) एहसान किया था कि अपनी बीबी (ज़ैनब) को अपनी ज़ौज़ियत में रहने दे और ख़ुदा से डेर ख़ुद तुम इस बात को अपने दिल में छिपाते थे जिसको (आख़िरकार) ख़ुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे हालॉकि ख़ुदा इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उस से डरो ग़रज़ जब ज़ैद अपनी हाजत पूरी कर चुका (तलाक़ दे दी) तो हमने (हुक्म देकर) उस औरत (ज़ैनब) का निकाह तुमसे कर दिया ताकि आम मोमिनीन को अपने ले पालक लड़कों की बीवियों (से निकाह करने) में जब वह अपना मतलब उन औरतों से पूरा कर चुकें (तलाक़ दे दें) किसी तरह की तंगी न रहे और ख़ुदा का हुक्म तो किया कराया हुआ (क़तई) होता है (37)

जो हुक्म ख़ुदा ने पैग़म्बर पर फर्ज़ कर दिया (उसके करने) में उस पर कोई मुज़ाएका नहीं जो लोग (उनसे) पहले गुज़र चुके हैं उनके बारे में भी ख़ुदा का (यही) दस्तूर (जारी) रहा है (कि निकाह में तंगी न की) और ख़ुदा का हुक्म तो (ठीक अन्दाज़े से) मुक़र्रर हुआ होता है (38)

वह लोग जो ख़ुदा के पैग़ामों को (लोगों तक जूँ का तूँ) पहुँचाते थे और उससे डरते थे और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे (फिर तुम क्यों डरते हो) और हिसाब लेने के वास्ते तो ख़ुद काफ़ी है (39)

(लोगों) मोहम्मद तुम्हारे मर्दों में से (हक़ीक़तन) किसी के बाप नहीं हैं (फिर ज़ैद की बीवी क्यों हराम होने लगी) बल्कि अल्लाह के रसूल और नबियों की मोहर (यानी ख़त्म करने वाले) हैं और ख़ुदा तो हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है (40)

ऐ ईमानवालों बाकसरत ख़ुदा की याद किया करो और (41)

सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो (42)

वह वही तो है जो ख़ुद तुमपर दूरूद (दर्दो रहमत) भेजता है और उसके फ़रिश्ते ताकि तुमको (कुफ्ऱ की) तारीक़ियों से निकालकर (ईमान की) रौशनी में ले जाए और ख़ुदा ईमानवालों पर बड़ा मेहरबान है (43)

जिस दिन उसकी बारगाह में हाज़िर होंगे (उस दिन) उनकी मुरादात (उसकी तरफ से हर क़िस्म की) सलामती होगी और ख़ुदा ने तो उनके वास्ते बहुत अच्छा बदला (बेहश्त) तैयार रखा है (44)

ऐ नबी हमने तुमको (लोगों का) गवाह और (नेकों को बेहश्त की) खुशख़बरी देने वाला और बदों को अज़ाब से डराने वाला (45)

और ख़ुदा की तरफ उसी के हुक्म से बुलाने वाला और (इमान व हिदायत का) रौशन चिराग़ बनाकर भेजा (46)

और तुम मोमिनीन को खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए ख़ुदा की तरफ से बहुत बड़ी (मेहरबानी और) बख़्शिश है (47)

और (ऐ रसूल) तुम (कहीं) काफिरों और मुनाफिक़ों की इताअत न करना और उनकी ईज़ारसानी का ख़्याल छोड़ दो और ख़ुदा पर भरोसा रखो और कारसाज़ी में ख़ुदा काफ़ी है (48)

ऐ ईमानवालों जब तुम मोमिना औरतों से (बग़ैर मेहर मुक़र्रर किये) निकाह करो उसके बाद उन्हें अपने हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो फिर तुमको उनपर कोई हक़ नहीं कि (उनसे) इद्दा पूरा कराओ उनको तो कुछ (कपड़े रूपये वग़ैरह) देकर उनवाने शाइस्ता से रूख़सत कर दो (49)

ऐ नबी हमने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी उन बीवियों को हलाल कर दिया है जिनको तुम मेहर दे चुके हो और तुम्हारी उन लौंडियों को (भी) जो ख़ुदा ने तुमको (बग़ैर लड़े-भिड़े) माले ग़नीमत में अता की है और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आयी हैं (हलाल कर दी और हर ईमानवाली औरत (भी हलाल कर दी) अगर वह अपने को (बग़ैर मेहर) नबी को दे दें और नबी भी उससे निकाह करना चाहते हों मगर (ऐ रसूल) ये हुक्म सिर्फ तुम्हारे वास्ते ख़ास है और मोमिनीन के लिए नहीं और हमने जो कुछ (मेहर या क़ीमत) आम मोमिनीन पर उनकी बीवियों और उनकी लौंडियों के बारे में मुक़र्रर कर दिया है हम ख़ूब जानते हैं और (तुम्हारी रिआयत इसलिए है) ताकि तुमको (बीवियों की तरफ से) कोई दिक़्क़त न हो और ख़ुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है (50)

इनमें से जिसको (जब) चाहो अलग कर दो और जिसको (जब तक) चाहो अपने पास रखो और जिन औरतों को तुमने अलग कर दिया था अगर फिर तुम उनके ख्वाहॉ हो तो भी तुम पर कोई मज़ाएक़ा नहीं है ये (अख़तेयार जो तुमको दिया गया है) ज़रूर इस क़ाबिल है कि तुम्हारी बीवियों की आँखें ठन्डी रहे और आर्ज़ूदा ख़ातिर न हो और वो कुछ तुम उन्हें दे दो सबकी सब उस पर राज़ी रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है ख़ुदा उसको ख़ुब जानता है और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार बुर्दबार है (51)

(ऐ रसूल) अब उन (नौ) के बाद (और) औरतें तुम्हारे वास्ते हलाल नहीं और न ये जायज़ है कि उनके बदले उनमें से किसी को छोड़कर और बीबियाँ कर लो अगर चे तुमको उनका हुस्न कैसा ही भला (क्यों न) मालूम हो मगर तुम्हारी लौंडियाँ (इस के बाद भी जायज़ हैं) और ख़ुदा तो हर चीज़ का निगरॉ है (52)

ऐ ईमानदारों तुम लोग पैग़म्बर के घरों में न जाया करो मगर जब तुमको खाने के वास्ते (अन्दर आने की) इजाज़त दी जाए (लेकिन) उसके पकने का इन्तेज़ार (नबी के घर बैठकर) न करो मगर जब तुमको बुलाया जाए तो (ठीक वक़्त पर) जाओ और फिर जब खा चुको तो (फौरन अपनी अपनी जगह) चले जाया करो और बातों में न लग जाया करो क्योंकि इससे पैग़म्बर को अज़ीयत होती है तो वह तुम्हारा लैहाज़ करते हैं और ख़ुदा तो ठीक (ठीक कहने) से झेंपता नहीं और जब पैग़म्बर की बीवियों से कुछ माँगना हो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो यही तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के वास्ते बहुत सफाई की बात है और तुम्हारे वास्ते ये जायज़ नहीं कि रसूले ख़ुदा को (किसी

तरह) अज़ीयत दो और न ये जायज़ है कि तुम उसके बाद कभी उनकी बीवियों से निकाह करो बेशक ये अल्लाह के नज़दीक बड़ा (गुनाह) है (53)

चाहे किसी चीज़ को तुम ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ ख़ुदा तो (बहरहाल) हर चीज़ से यक़ीनी ख़ूब आगाह है (54)

औरतों पर न अपने बाप दादाओं (के सामने होने) में कुछ गुनाह है और न अपने बेटों के और न अपने भाईयों के और न अपने भतीजों के और अपने भांजों के और न अपनी (क़िस्म कि) औरतों के और न अपनी लौंडियों के सामने होने में कुछ गुनाह है (ऐ पैग़म्बर की बीबियों) तुम लोग ख़ुदा से डरती रहो इसमें कोई शक ही नहीं की ख़ुदा (तुम्हारे आमाल में) हर चीज़ से वाक़िफ़ है (55)

इसमें भी शक नहीं कि ख़ुदा और उसके फरिश्ते पैग़म्बर (और उनकी आल) पर दुरूद भेजते हैं तो ऐ ईमानदारों तुम भी दुरूद भेजते रहो और बराबर सलाम करते रहो (56)

बेशक जो लोग अल्लाह को और उसके रसूल को अज़ीयत देते हैं उन पर ख़ुदा ने दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में लानत की है और उनके लिए रूसवाई का अज़ाब तैयार कर रखा है (57)

और जो लोग ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतों को बग़ैर कुछ किए धरे (तोहमत देकर) अज़ीयत देते हैं तो वह एक बोहतान और सरीह गुनाह का बोझ (अपनी गर्दन पर) उठाते हैं (58)

ऐ नबी अपनी बीवियों और अपनी लड़कियों और मोमिनीन की औरतों से कह दो कि (बाहर निकलते वक़्त) अपने (चेहरों और गर्दनों) पर अपनी चादरों का घूँघट लटका लिया करें ये उनकी (शराफ़त की) पहचान के वास्ते बहुत मुनासिब है तो उन्हें कोई छेड़ेगा नहीं और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (59)

ऐ रसूल मुनाफ़ेक़ीन और वह लोग जिनके दिलों में (कुफ़्र का) मर्ज़ है और जो लोग मदीने में बुरी ख़बरें उड़ाया करते हैं- अगर ये लोग (अपनी शरारतों से) बाज़ न आएँगे तो हम तुम ही को (एक न एक दिन) उन पर मुसल्लत कर देगें फिर वह तुम्हारे पड़ोस में चन्द रोज़ों के सिवा ठहरने (ही) न पाएँगे (60)

लानत के मारे जहाँ कहीं हत्थे चढ़े पकड़े गए और फिर बुरी तरह मार डाले गए (61)

जो लोग पहले गुज़र गए उनके बारे में (भी) ख़ुदा की (यही) आदत (जारी) रही और तुम ख़ुदा की आदत में हरगिज़ तग़य्युर तबद्दुल न पाओगे (62)

(ऐ रसूल) लोग तुमसे क़यामत के बारे में पूछा करते हैं (तुम उनसे) कह दो कि उसका इल्म तो बस ख़ुदा को है और तुम क्या जानो शायद क़यामत क़रीब ही हो (63)

अल्लाह ने काफ़िरों पर यक़ीनन लानत की है और उनके लिए जहन्नुम को तैयार कर रखा है (64)

जिसमें वह हमेशा अबदल आबाद रहेंगे न किसी को अपना सरपरस्त पाएँगे न मद्दगार (65)

जिस दिन उनके मुँह जहन्नुम की तरफ फेर दिए जाएँगें तो उस दिन अफ़सोसनाक लहजे़ में कहेंगे ऐ काश हमने ख़ुदा की इताअत की होती और रसूल का कहना माना होता (66)

और कहेंगे कि परवरदिगार हमने अपने सरदारों अपने बड़ों का कहना माना तो उन्हों ही ने हमें गुमराह कर दिया (67)

परवरदिगारा (हम पर तो अज़ाब सही है मगर) उन लोगों पर दोहरा अज़ाब नाज़िल कर और उन पर बड़ी से बड़ी लानत कर (68)

ऐ ईमानवालों (ख़बरदार कहीं) तुम लोग भी उनके से न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ दी तो ख़ुदा ने उनकी तोहमतों से मूसा को बरी कर दिया और मूसा ख़ुदा के नज़दीक एक रवादार (इज़्ज़त करने वाले) (पैग़म्बर) थे (69)

ऐ ईमानवालों ख़ुदा से डरते रहो और (जब कहो तो) दुरूस्त बात कहा करो (70)

तो ख़ुदा तुम्हारी कारगुज़ारियों को दुरूस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जिस शख़्स ने ख़ुदा और उसके रसूल की इताअत की वह तो अपनी मुराद को ख़ूब अच्छी तरह पहुँच गया (71)

बेशक हमने (रोजे़ अज़ल) अपनी अमानत (इताअत इबादत) को सारे आसमान और ज़मीन पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसके (बार) उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए और आदमी ने उसे (बे ताम्मुल) उठा लिया बेशक इन्सान (अपने हक़ में) बड़ा ज़ालिम (और) नादान है (72)

इसका नतीजा यह हुआ कि ख़ुदा मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को (उनके किए की) सज़ा देगा और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों की (तक़सीर अमानत की) तौबा क़ुबूल फरमाएगा और ख़ुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है (73)

34 सूरह सबा

सूरह सबा मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (54) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हर क़िस्म की तारीफ उसी ख़ुदा के लिए (दुनिया में भी) सज़ावार है कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है और आख़ेरत में (भी हर तरफ) उसी की तारीफ है और वही वाक़िफ़कार हकीम है (1)

(जो) चीज़ें (बीज वग़ैरह) ज़मीन में दाख़िल हुयी है और जो चीज़ (दरख़्त वग़ैरह) इसमें से निकलती है और जो चीज़ (पानी वग़ैरह) आसामन से नाज़िल होती है और जो चीज़ (नज़ारात फरिश्ते वग़ैरह) उस पर चढ़ती है (सब) को जानता है और वही बड़ा बख़्शने वाला है (2)

और कुफ्फार कहने लगे कि हम पर तो क़यामत आएगी ही नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो हॉ (हॉ) मुझ को अपने उस आलेमुल ग़ैब परवरदिगार की क़सम है जिससे ज़र्रा बराबर (कोई चीज़) न आसमान में छिपी हुयी है और न ज़मीन में कि क़यामत ज़रूर आएगी और ज़र्रे से छोटी चीज़ और ज़र्रे से बडी (ग़रज़ जितनी चीज़े हैं सब) वाज़ेए व रौशन किताब लौहे महफूज़ में महफूज़ हैं (3)

ताकि जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और (अच्छे) काम किए उनको ख़ुदा जज़ाए ख़ैर दे यही वह लोग हैं जिनके लिए (गुनाहों की) मग़फ़ेरत और (बहुत ही) इज़्ज़त की रोज़ी है (4)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के तोड़) में मुक़ाबिले की दौड़-धूप की उन ही के लिए दर्दनाक अज़ाब की सज़ा होगी (5)

और (ऐ रसूल) जिन लोगों को (हमारी बारगाह से) इल्म अता किया गया है वह जानते हैं कि जो (क़ुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है और सज़ावार हम्द (व सना) ग़ालिब (ख़ुदा) की राह दिखाता है (6)

और कुफ़्फ़ार (मसख़रेपन से बाहम) कहते हैं कि कहो तो हम तुम्हें ऐसा आदमी (मोहम्मद) बता दें जो तुम से बयान करेगा कि जब तुम (मर कर सड़ गल जाओगे और) बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो तुम यक़ीनन एक नए जिस्म में आओगे (7)

क्या उस शख़्स (मोहम्मद) ने ख़ुदा पर झूठ तूफान बाँधा है या उसे जुनून (हो गया) है (न मोहम्मद

झूठा है न उसे जुनून है) बल्कि ख़ुद वह लोग जो आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते अज़ाब और पहले दरजे की गुमराही में पड़े हुए हैं (8)

तो क्या उन लोगों ने आसमान और ज़मीन की तरफ भी जो उनके आगे और उनके पीछे (सब तरफ से घेरे) हैं ग़ौर नहीं किया कि अगर हम चाहे तो उन लोगों को ज़मीन में धँसा दें या उन पर आसमान का कोई टुकड़ा ही गिरा दें इसमें शक नहीं कि इसमें हर रूजू करने वाले बन्दे के लिए यक़ीनी बड़ी इबरत है (9)

और हमने यक़ीनन दाऊद को अपनी बारगाह से बुज़ुर्गी इनायत की थी (और पहाड़ों को हुक्म दिया) कि ऐ पहाड़ों तसबीह करने में उनका साथ दो और परिन्द को (ताबेए कर दिया) और उनके वास्ते लोहे को (मोम की तरह) नरम कर दिया था (10)

कि फँराख़ व कुशादा जिरह बनाओ और (कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़े का ख़्याल रखो और तुम सब के सब अच्छे (अच्छे) काम करो वो कुछ तुम लोग करते हो मैं यक़ीनन देख रहा हूँ (11)

और हवा को सुलेमान का (ताबेइदार बना दिया था) कि उसकी सुबह की रफ़्तार एक महीने (मुसाफ़त) की थी और इसी तरह उसकी शाम की रफ़्तार एक महीने (के मुसाफत) की थी और हमने उनके लिए तांबे (को पिघलाकर) उसका चश्मा जारी कर दिया था और जिन्नात (को उनका ताबेदार कर दिया था कि उन) में कुछ लोग उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके सामने काम काज करते थे और उनमें से जिसने हमारे हुक्म से इनहराफ़ किया है उसे हम (क़यामत में) जहन्नुम के अज़ाब का मज़ा चखाँएगे (12)

ग़रज़ सुलेमान को जो बनवाना मंज़ूर होता ये जिन्नात उनके लिए बनाते थे (जैसे) मस्जिदें, महल, क़िले और (फरिश्ते अम्बिया की) तस्वीरें और हौज़ों के बराबर प्याले और (एक जगह) गड़ी हुयी (बड़ी बड़ी) देगें (कि एक हज़ार आदमी का खाना पक सके) ऐ दाऊद की औलाद शुक्र करते रहो और मेरे बन्दों में से शुक्र करने वाले (बन्दे) थोड़े से हैं (13)

फिर जब हमने सुलेमान पर मौत का हुक्म जारी किया तो (मर गए) मगर लकड़ी के सहारे खड़े थे और जिन्नात को किसी ने उनके मरने का पता न बताया मगर ज़मीन की दीमक ने कि वह सुलेमान के असा को खा रही थी फिर (जब खोखला होकर टूट गया और) सुलेमान (की लाश) गिरी तो जिन्नात ने जाना कि अगर वह लोग ग़ैब वॉ (ग़ैब के जानने वाले) होते तो (इस) ज़लील करने वाली (काम करने की) मुसीबत में न मुब्तिला रहते (14)

और (क़ौम) सबा के लिए तो यक़ीनन ख़ुद उन्हीं के घरों में (क़ुदरते ख़ुदा की) एक बड़ी निशानी थी कि उनके शहर के दोनों तरफ दाहिने बाएँ (हरे-भरे) बाग़ात थे (और उनको हुक्म था) कि अपने

परवरदिगार की दी हुयी रोज़ी खाओ (पियो) और उसका शुक्र अदा करो (दुनिया में) ऐसा पाकीज़ा शहर और (आख़ेरत में) परवरदिगार सा बख़्शने वाला (15)

इस पर भी उन लोगों ने मुँह फेर लिया (और पैग़म्बरों का कहा न माना) तो हमने (एक ही बन्द तोड़कर) उन पर बड़े ज़ोरों का सैलाब भेज दिया और (उनको तबाह करके) उनके दोनों बाग़ों के बदले ऐसे दो बाग़ दिए जिनके फल बदमज़ा थे और उनमें झाऊ था और कुछ थोड़ी सी बेरियाँ थी (16)

ये हमने उनकी नाशुक्री की सज़ा दी और हम तो बड़े नाशुक्रों ही की सज़ा किया करते हैं (17)

और हम अहले सबा और (शाम) की उन बस्तियों के दरम्यिान जिनमें हमने बरकत अता की थी और चन्द बस्तियाँ (सरे राह) आबाद की थी जो बाहम नुमाया थीं और हमने उनमें आमद व रफ्त की राह मुक़र्रर की थी कि उनमें रातों को दिनों को (जब जी चाहे) बेखटके चलो फिरो (18)

तो वह लोग ख़ुद कहने लगे परवरदिगार (क़रीब के सफर में लुत्फ नहीं) तो हमारे सफ़रों में दूरी पैदा कर दे और उन लोगों ने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया तो हमने भी उनको (तबाह करके उनके) अफसाने बना दिए - और उनकी धज्जियाँ उड़ा के उनको तितिर बितिर कर दिया बेशक उनमें हर सब्र व शुक्र करने वालों के वास्ते बड़ी इबरते हैं (19)

और शैतान ने अपने ख्याल को (जो उनके बारे में किया था) सच कर दिखाया तो उन लोगों ने उसकी पैरवी की मगर इमानवालों का एक गिरोह (न भटका) (20)

और शैतान का उन लोगों पर कुछ क़ाबू तो था नहीं मगर ये (मतलब था) कि हम उन लोगों को जो आख़ेरत का यक़ीन रखते हैं उन लोगों से अलग देख लें जो उसके बारे में शक में (पड़े) हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हर चीज़ का निगराँ है (21)

(ऐ रसूल इनसे) कह दो कि जिन लोगों को तुम ख़ुद अल्लाह के सिवा (माबूद) समझते हो पुकारो (तो मालूम हो जाएगा कि) वह लोग ज़र्रा बराबर न आसमानों में कुछ इख़्तेयार रखते हैं और न ज़मीन में और न उनकी उन दोनों में शिरकत है और न उनमें से कोई ख़ुदा का (किसी चीज़ में) मद्दगार है (22)

जिसके लिए वह ख़ुद इजाज़त अता फ़रमाए उसके सिवा कोई सिफारिश उसकी बारगाह में काम न आएगी (उसके दरबार की हैबत) यहाँ तक (है) कि जब (शिफ़ाअत का) हुक्म होता है तो शिफ़ाअत करने वाले बेहोश हो जाते हैं फिर तब उनके दिलों की घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या हुक्म दिया (23)

तो मुक़र्रिब फरिश्ते कहते हैं कि जो वाजिबी था (ऐ रसूल) तुम (इनसे) पूछो तो कि भला तुमको सारे आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है (वह क्या कहेंगे) तुम ख़ुद कह दो कि ख़ुदा और मैं या तुम (दोनों में से एक तो) ज़रूर राहे रास्त पर है (और दूसरा गुमराह) या वह सरीही गुमराही में पड़ा है (और दूसरा राहे रास्त पर) (24)

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो न हमारे गुनाहों की तुमसे पूछ गछ होगी और न तुम्हारी कारस्तानियों की हम से बाज़ पुर्स (25)

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि हमारा परवरदिगार (क़यामत में) हम सबको इकट्ठा करेगा फिर हमारे दरमियान (ठीक) फैसला कर देगा और वह तो ठीक-ठीक फैसला करने वाला वाकि़फ़कार है (26)

(ऐ रसूल तुम कह दो कि जिनको तुम ने ख़ुदा का शरीक बनाकर) ख़ुदा के साथ मिलाया है ज़रा उन्हें मुझे भी तो दिखा दो हरगिज़ (कोई शरीक नहीं) बल्कि ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (27)

(ऐ रसूल) हमने तुमको तमाम (दुनिया के) लोगों के लिए (नेकों को बेहश्त की) ख़ुशखबरी देने वाला और (बन्दों को अज़ाब से) डराने वाला (पैग़म्बर) बनाकर भेजा मगर बहुतेरे लोग (इतना भी) नहीं जानते (28)

और (उलटे) कहते हैं कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (आखि़र) ये क़यामत का वायदा कब पूरा होगा (29)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि तुम लोगों के वास्ते एक ख़ास दिन की मीयाद मुक़र्रर है कि न तुम उससे एक घड़ी पीछे रह सकते हो और न आगे ही बड़ सकते हो (30)

और जो लोग काफिर हों बैठे कहते हैं कि हम तो न इस क़ुरान पर हरगिज़ इमान लाएँगे और न उस (किताब) पर जो इससे पहले नाजि़ल हो चुकी और (ऐ रसूल तुमको बहुत ताज्जुब हो) अगर तुम देखो कि जब ये ज़ालिम क़यामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जायेंगे (और) उनमें का एक दूसरे की तरफ (अपनी) बात को फेरता होगा कि कमज़ोर अदना (दरजे के) लोग बड़े (सरकश) लोगों से कहते होगें कि अगर तुम (हमें) न (बहकाए) होते तो हम ज़रूर ईमानवाले होते (इस मुसीबत में न पड़ते) (31)

तो सरकश लोग कमज़ोरों से (मुख़ातिब होकर) कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (ख़ुदा की तरफ़ से) हिदायत आयी तो थी तो क्या उसके आने के बाद हमने तुमको (ज़बरदस्ती अम्ल करने से) रोका था (हरगिज़ नहीं) बल्कि तुम तो ख़ुद मुजरिम थे (32)

और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे (कि ज़बरदस्ती तो नहीं की मगर हम ख़ुद भी गुमराह नहीं हुए) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की फरेबदेही ने (गुमराह किया कि) तुम लोग हमको ख़ुदा न मानने और उसका शरीक ठहराने का बराबर हुक्म देते रहे (तो हम क्या करते) और जब ये लोग अज़ाब को (अपनी आँखों से) देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएँगे और जो लोग काफिर हो बैठे हम उनकी गर्दनों में तौक़ डाल देंगे जो कारस्तानियां ये लोग (दुनिया में) करते थे उसी के मुवाफिक़ तो सज़ा दी जाएगी (33)

और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं भेजा मगर वहाँ के लोग ये ज़रूर बोल उठेंगे कि जो एहकाम देकर तुम भेजे गए हो हम उनको नहीं मानते (34)

और ये भी कहने लगे कि हम तो (ईमानदारों से) माल और औलाद में कहीं ज़्यादा है और हम पर आख़ेरत में (अज़ाब) भी नहीं किया जाएगा (35)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिऐ चाहता है) तंग करता है मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते हैं (36)

और (याद रखो) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद की ये हस्ती नहीं कि तुम को हमारी बारगाह में मुक़र्रिब बना दें मगर (हाँ) जिसने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए उन लोगों के लिए तो उनकी कारगुज़ारियों की दोहरी जज़ा है और वह लोग (बेहश्त के) झरोखों में इत्मेनान से रहेंगे (37)

और जो लोग हमारी आयतों (की तोड़) में मुक़ाबले की नीयत से दौड़ धूप करते हैं वही लोग (जहन्नुम के) अज़ाब में झोक दिए जाएँगे (38)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और जो कुछ भी तुम लोग (उसकी राह में) ख़र्च करते हो वह उसका ऐवज देगा और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देनेवाला है (39)

और (वह दिन याद करो) जिस दिन सब लोगों को इकट्ठा करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी परसतिश करते थे फरिश्ते अर्ज़ करेंगे (बारे इलाहा) तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है (40)

तू ही हमारा मालिक है न ये लोग (ये लोग हमारी नहीं) बल्कि जिन्नात (खबाएस भूत-परेत) की परसतिश करते थे कि उनमें के अक्सर लोग उन्हीं पर ईमान रखते थे (41)

तब (ख़ुदा फरमाएगा) आज तो तुममें से कोई न दूसरे के फायदे ही पहुँचाने का इख़्तेयार रखता है और न ज़रर का और हम सरकशों से कहेंगे कि (आज) उस अज़ाब के मज़े चखो जिसे तुम (दुनिया में) झुठलाया करते थे (42)

और जब उनके सामने हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें पढ़ी जाती थीं तो बाहम कहते थे कि ये (रसूल) भी तो बस (हमारा ही जैसा) आदमी है ये चाहता है कि जिन चीज़ों को तुम्हारे बाप-दादा पूजते थे (उनकी परसतिश) से तुम को रोक दें और कहने लगे कि ये (क़ुरान) तो बस निरा झूठ है और अपने जी का गढ़ा हुआ है और जो लोग काफ़िर हो बैठो जब उनके पास हक़ बात आयी तो उसके बारे में कहने लगे कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (43)

और (ऐ रसूल) हमने तो उन लोगों को न (आसमानी) किताबें अता की तुम्हें जिन्हें ये लोग पढ़ते और न तुमसे पहले इन लोगों के पास कोई डरानेवाला (पैग़म्बर) भेजा (उस पर भी उन्होंने क़द्र न की) (44)

और जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया था हालॉकि हमने जितना उन लोगों को दिया था ये लोग (अभी) उसके दसवें हिस्सा को (भी) नहीं पहुँचे उस पर उन लोगों न मेरे (पैग़म्बरों को) झुठलाया था तो तुमने देखा कि मेरा (अज़ाब उन पर) कैसा सख़्त हुआ (45)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तुमसे नसीहत की बस एक बात कहता हूँ (वह) ये (है) कि तुम लोग बाज़ ख़ुदा के वास्ते एक-एक और दो-दो उठ खड़े हो और अच्छी तरह ग़ौर करो तो (देख लोगे कि) तुम्हारे रफीक़ (मोहम्मद स0) को किसी तरह का जुनून नहीं वह तो बस तुम्हें एक सख़्त अज़ाब (क़यामत) के सामने (आने) से डराने वाला है (46)

(ऐ रसूल) तुम (ये भी) कह दो कि (तबलीख़े रिसालत की) मैंने तुमसे कुछ उजरत माँगी हो तो वह तुम्हीं को (मुबारक) हो मेरी उजरत तो बस ख़ुदा पर है और वही (तुम्हारे आमाल अफ़आल) हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है (47)

(ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि मेरा बड़ा ग़ैबवाँ परवरदिगार (मेरे दिल में) दीन हक़ को बराबर ऊपर से उतारता है (48)

(अब उनसे) कह दो दीने हक़ आ गया और इतना तो भी (समझो की) बातिल (माबूद) शुरू-शुरू कुछ पैदा करता है न (मरने के बाद) दोबारा ज़िन्दा कर सकता है (49)

(ऐ रसूल) तुम ये भी कह दो कि अगर मैं गुमराह हो गया हूँ तो अपनी ही जान पर मेरी गुमराही

(का वबाल) है और अगर मैं राहे रास्त पर हूँ तो इस "वही" के तुफ़ैल से जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ भेजता है बेशक वह सुनने वाला (और बहुत) क़रीब है (50)

और (ऐ रसूल) काश तुम देखते (तो सख़्त ताज्जुब करते) जब ये कुफ्फार (मैदाने हशर में) घबराए-घबराए फिरते होंगे तो भी छुटकारा न होगा (51)

और आस ही पास से (बाआसानी) गिरफ्तार कर लिए जाएँगे और (उस वक़्त बेबसी में) कहेंगे कि अब हम रसूलों पर ईमान लाए और इतनी दूर दराज़ जगह से (ईमान पर) उनका दसतरस (पहुँचना) कहाँ मुमकिन है (52)

हालाँकि ये लोग उससे पहले ही जब उनका दसतरस था इन्कार कर चुके और (दुनिया में तमाम उम्र) बे देखे भाले (अटकल के) तके बड़ी-बड़ी दूर से चलाते रहे (53)

और अब तो उनके और उनकी तमन्नाओं के दरमियान (उसी तरह) पर्दा डाल दिया गया है जिस तरह उनसे पहले उनके हमरंग लोगों के साथ (यही बरताव) किया जा चुका इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बेचैन करने वाले शक में पड़े हुए थे (54)

35 सूरह फातिर

सूरह फातिर (पैदा करने वाला) मक्के में नाज़िल हुई और उसकी पैंतालिस (45) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हर तरह की तारीफ ख़ुदा ही के लिए (मख़सूस) है जो सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला फरिश्तों का (अपना) क़ासिद बनाने वाला है जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर होते हैं (मख़लूक़ात की) पैदाइश में जो (मुनासिब) चाहता है बढ़ा देता है बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर (व तवाना है) (1)

लोगों के वास्ते जब (अपनी) रहमत (के दरवाज़े) खोल दे तो कोई उसे जारी नहीं कर सकता और जिस चीज़ को रोक ले उसके बाद उसे कोई रोक नहीं सकता और वही हर चीज़ पर ग़ालिब और दाना व बीना हकीम है (2)

लोगों ख़ुदा के एहसानात को जो उसने तुम पर किए हैं याद करो क्या ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ालिक है जो आसमान और ज़मीन से तुम्हारी रोज़ी पहुँचाता है उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो (3)

और (ऐ रसूल) अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो (कुढ़ो नहीं) तुमसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर (लोगों के हाथों) झुठलाए जा चुके हैं और (आख़िर) कुल उमूर की रूजू तो ख़ुदा ही की तरफ है (4)

लोगों ख़ुदा का (क़यामत का) वायदा यक़ीनी बिल्कुल सच्चा है तो (कहीं) तुम्हें दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी फ़रेब में न लाए (ऐसा न हो कि शैतान) तुम्हें ख़ुदा के बारे में धोखा दे (5)

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे अपना दुशमन बनाए रहो वह तो अपने गिरोह को बस इसलिए बुलाता है कि वह लोग (सब के सब) जहन्नुमी बन जाएँ (6)

जिन लोगों ने (दुनिया में) कुफ्र इख़्तेयार किया उनके लिए (आख़ेरत में) सख़्त अज़ाब है और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनके लिए (गुनाहों की) मग़फ़ेरत और निहायत अच्छा बदला (बेहश्त) है (7)

तो भला वह शख़्स जिसे उस का बुरा काम शैतानी (अग़वॉ से) अच्छा कर दिखाया गया है औ वह उसे अच्छा समझने लगा है (कभी मोमिन नेकोकार के बराबर हो सकता है हरगिज़ नहीं) तो यक़ीनी

(बात) ये है कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है राहे रास्त पर आने (की तौफ़ीक़) देता है तो (ऐ रसूल कहीं) उन (बदबख़्तों) पर अफसोस कर करके तुम्हारे दम न निकल जाए जो कुछ ये लोग करते हैं अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (8)

और अल्लाह ही वह (क़ादिर व तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो हवाएँ बादलों को उड़ाए-उड़ाए फिरती है फिर हम उस बादल को मुर्दा (उफ़तादा) शहर की तरफ हका देते हैं फिर हम उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मर जाने के बाद शादाब कर देते हैं यूँ ही (मुर्दों को क़यामत में जी उठना होगा) (9)

जो शख़्स इज़्ज़त का ख्वाहाँ हो तो अल्लाह से माँगे क्योंकि सारी इज़्ज़त ख़ुदा ही की है उसकी बारगाह तक अच्छी बातें (बुलन्द होकर) पहुँचती हैं और अच्छे काम को वह ख़ुद बुलन्द फरमाता है और जो लोग (तुम्हारे ख़िलाफ) बुरी-बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनके लिए क़यामत में सख़्त अज़ाब है और (आख़िर) उन लोगों की तदबीर मटियामेट हो जाएगी (10)

और ख़ुदा ही ने तुम लोगों को (पहले पहल) मिट्टी से पैदा किया फिर नतफ़े से फिर तुमको जोड़ा (नर मादा) बनाया और बग़ैर उसके इल्म (इजाज़त) के न कोई औरत हमेला होती है और न जनती है और न किसी शख़्स की उम्र में ज़्यादती होती है और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर वह किताब (लौहे महफूज़) में (ज़रूर) है बेशक ये बात ख़ुदा पर बहुत ही आसान है (11)

(उसकी क़ुदरत देखो) दो समन्दर बावजूद मिल जाने के यकसाँ नहीं हो जाते ये (एक तो) मीठा ख़ुश ज़ाएका कि उसका पीना सुवारत है और ये (दूसरा) खारी कडुवा है और (इस इख़तेलाफ पर भी) तुम लोग दोनों से (मछली का) तरो ताज़ा गोश्त (यकसाँ) खाते हो और (अपने लिए ज़ेवरात (मोती वग़ैरह) निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियां दरिया में (पानी को) फाड़ती चली जाती हैं ताकि उसके फ़ज़्ल (व करम तिजारत) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो (12)

वही रात को (बढ़ा के) दिन में दाख़िल करता है (तो रात बढ़ जाती है) और वही दिन को (बढ़ा के) रात में दाख़िल करता है (तो दिन बढ़ जाता है और) उसी ने सूरज और चाँद को अपना मुतीइ बना रखा है कि हर एक अपने (अपने) मुअय्यन (तय) वक़्त पर चला करता है वही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है उसी की सलतनत है और उसे छोड़कर जिन माबूदों को तुम पुकारते हो वह छुवारों की गुठली की झिल्ली के बराबर भी तो इख़्तेयार नहीं रखते (13)

अगर तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार को सुनते नहीं अगर (बिफ़रज़े मुहाल) सुनों भी तो तुम्हारी दुआएँ नहीं क़ुबूल कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इन्कार कर बैठेंगें और वाक़िफ़कार (शख़्स की तरह कोई दूसरा उनकी पूरी हालत) तुम्हें बता नहीं सकता (14)

लोगों तुम सब के सब ख़ुदा के (हर वक्त) मोहताज हो और (सिर्फ) ख़ुदा ही (सबसे) बेपरवा सज़ावारे हम्द (व सना) है (15)

अगर वह चाहे तो तुम लोगों को (अदम के पर्दे में) ले जाए और एक नयी ख़िलक़त ला बसाए (16)

और ये कुछ ख़ुदा के वास्ते दुशवार नहीं (17)

और याद रहे कि कोई शख़्स किसी दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा और अगर कोई (अपने गुनाहों का) भारी बोझ उठाने वाला अपना बोझ उठाने के वास्ते (किसी को) बुलाएगा तो उसके बारे में से कुछ भी उठाया न जाएगा अगरचे (कोई किसी का) कराबतदार ही (क्यों न) हो (ऐ रसूल) तुम तो बस उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे भाले अपने परवरदिगार का ख़ौफ रखते हैं और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और (याद रखो कि) जो शख़्स पाक साफ रहता है वह अपने ही फ़ायदे के वास्ते पाक साफ रहता है और (आख़िरकार सबको हिरफिर के) ख़ुदा ही की तरफ जाना है (18)

और अन्धा (क़ाफिर) और आँखों वाला (मोमिन किसी तरह) बराबर नहीं हो सकते (19)

और न अंधेरा (कुफ्र) और उजाला (ईमान) बराबर है (20)

और न छाँव (बेहिश्त) और धूप (दोज़ख़ बराबर है) (21)

और न ज़िन्दे (मोमिनीन) और न मुर्दे (क़ाफिर) बराबर हो सकते हैं और ख़ुदा जिसे चाहता है अच्छी तरह सुना (समझा) देता है और (ऐ रसूल) जो (कुफ़्फ़ार मुर्दो की तरह) क़ब्रों में हैं उन्हें तुम अपनी (बातें) नहीं समझा सकते हो (22)

तुम तो बस (एक ख़ुदा से) डराने वाले हो (23)

हम ही ने तुमको यक़ीनन क़ुरान के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला (पैग़म्बर) बनाकर भेजा और कोई उम्मत (दुनिया में) (24)

ऐसी नहीं गुज़री कि उसके पास (हमारा) डराने वाला पैग़म्बर न आया हो और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो कुछ परवाह नहीं करो क्योंकि इनके अगलों ने भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया है (हालाँकि) उनके पास उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे (25)

फिर हमने उन लोगों को जो काफ़िर हो बैठे ले डाला तो (तुमने देखाकि) मेरा अज़ाब (उन पर) कैसा (सख्त हुआ (26)

अब क्या तुमने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि यक़ीनन ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम (ख़ुदा) ने उसके ज़रिए से तरह-तरह की रंगतों के फल पैदा किए और पहाड़ों में क़तआत (टुकड़े रास्ते) हैं जिनके रंग मुख़तलिफ है कुछ तो सफेद (बुर्राक़) और कुछ लाल (लाल) और कुछ बिल्कुल काले सियाह (27)

और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की भी रंगते तरह-तरह की हैं उसके बन्दों में अल्लाह का ख़ौफ करने वाले तो बस उलेमा हैं बेशक ख़ुदा (सबसे) ग़ालिब और बख़्शने वाला है (28)

बेशक जो लोग ख़ुदा की किताब पढ़ा करते हैं और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छिपा के और दिखा के (ख़ुदा की राह में) देते हैं वह यक़ीनन ऐसे व्यापार का आसरा रखते हैं (29)

जिसका कभी टाट न उलटेगा ताकि ख़ुदा उन्हें उनकी मज़दूरियाँ भरपूर अता करे बल्कि अपने फज़्ल (व करम) से उसे कुछ और बढ़ा देगा बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है (और) बड़ा क़द्रदान है (30)

और हमने जो किताब तुम्हारे पास "वही" के ज़रिए से भेजी वह बिल्कुल ठीक है और जो (किताबें इससे पहले की) उसके सामने (मौजूद) हैं उनकी तसदीक़ भी करती हैं - बेशक ख़ुदा अपने बन्दों (के हालात) से ख़ूब वाक़िफ़ है (और) देख रहा है (31)

फिर हमने अपने बन्दगान में से ख़ास उनको क़ुरान का वारिस बनाया जिन्हें (एहल समझकर) मुन्तख़िब किया क्योंकि बन्दों में से कुछ तो (नाफरमानी करके) अपनी जान पर सितम ढाते हैं और कुछ उनमें से (नेकी बदी के) दरमियान हैं और उनमें से कुछ लोग ख़ुदा के इख़तेयार से नेकों में (औरों से) गोया सबकत ले गए हैं (इन्तेख़ाब व सबक़त) तो ख़ुदा का बड़ा फज़्ल है (32)

(और उसका सिला बेहिश्त के) सदा बहार बाग़ात हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे और उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनकी (मामूली) पोशाक ख़ालिस रेशमी होगी (33)

और ये लोग (ख़ुशी के लहजे में) कहेंगे ख़ुदा का शुक्र जिसने हम से (हर क़िस्म का) रंज व ग़म दूर कर दिया बेशक हमारा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला (और) क़दरदान है (34)

जिसने हमको अपने फज़्ल (व करम) से हमेशगी के घर (बेहिश्त) में उतारा (मेहमान किया) जहाँ हमें कोई तकलीफ छुयेगी भी तो नहीं और न कोई थकान ही पहुँचेगी (35)

और जो लोग काफिर हो बैठे उनके लिए जहन्नुम की आग है न उनकी कज़ा ही आएगी कि वह मर जाए और तकलीफ से नजात मिले और न उनसे उनके अज़ाब ही में तख़फीफ की जाएगी हम हर नाशुक्रे की सज़ा यूँ ही किया करते हैं (36)

और ये लोग दोजख़ में (पड़े) चिल्लाया करेगें कि परवरदिगार अब हमको (यहाँ से) निकाल दे तो जो कुछ हम करते थे उसे छोड़कर नेक काम करेंगे (तो अल्लाह जवाब देगा कि) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्रें न दी थी कि जिनमें जिसको जो कुछ सोंचना समझना (मंजूर) हो ख़ूब सोच समझ ले और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारा) डराने वाला (पैग़म्बर) भी पहुँच गया था तो (अपने किए का मज़ा) चखो क्योंकि सरकश लोगों का कोई मद्दगार नहीं (37)

बेशक ख़ुदा सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है वह यक़ीनी दिलों के पोशीदा राज़ से बाख़बर है (38)

वह वही ख़ुदा है जिसने रूए ज़मीन में तुम लोगों को (अगलों का) जानशीन बनाया फिर जो शख़्स काफ़िर होगा तो उसके कुफ्ऱ का वबाल उसी पर पड़ेगा और काफ़िरों को उनका कुफ्ऱ उनके परवरदिगार की बारगाह में ग़ज़ब के सिवा कुछ बढ़ाएगा नहीं और कुफ्फ़ार को उनका कुफ्ऱ घाटे के सिवा कुछ नफ़ा न देगा (39)

(ऐ रसूल) तुम (उनसे) पूछो तो कि ख़ुदा के सिवा अपने जिन शरीकों की तुम क़यादत करते थे क्या तुमने उन्हें (कुछ) देखा भी मुझे भी ज़रा दिखाओ तो कि उन्होंने ज़मीन (की चीज़ों) से कौन सी चीज़ पैदा की या आसमानों में कुछ उनका आधा साझा है या हमने ख़ुद उन्हें कोई किताब दी है कि वह उसकी दलील रखते हैं (ये सब तो कुछ नहीं) बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से (धोखे और) फरेब ही का वायदा करते हैं (40)

बेशक ख़ुदा ही सारे आसमान और ज़मीन अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर (फर्ज़ करे कि) ये अपनी जगह से हट जाए तो फिर तो उसके सिवा उन्हें कोई रोक नहीं सकता बेशक वह बड़ा बुर्दबर (और) बड़ा बख़्शने वाला है (41)

और ये लोग तो ख़ुदा की बड़ी-बड़ी सख़्त क़समें खा (कर कहते) थे कि बेशक अगर उनके पास कोई डराने वाला (पैग़म्बर) आएगा तो वह ज़रूर हर एक उम्मत से ज़्यादा रूबसह होंगे फिर जब उनके पास डराने वाला (रसूल) आ पहुँचा तो (उन लोंगो को) रूए ज़मीन में सरकशी और बुरी-बुरी तद्बीरें करने की वजह से (42)

(उसके आने से) उनकी नफरत को तरक़्की ही होती गयी और बुदी तद्बीर (की बुराई) तो बुरी तद्बीर करने वाले ही पर पड़ती है तो (हो न हो) ये लोग बस अगले ही लोगों के बरताव के मुन्तज़िर हैं तो (बेहतर) तुम ख़ुदा के दसतूर में कभी तब्दीली न पाओगे और ख़ुदा की आदत में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे (43)

तो क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनके पहले थे और उनसे ज़ोर व कूवत में भी कहीं बढ़-चढ़ के थे फिर उनका (नाफ़रमानी की वजह से) क्या (ख़राब) अन्जाम हुआ और ख़ुदा ऐसा (गया गुज़रा) नहीं है कि उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके (न इतने) आसमानों में और न ज़मीन में बेशक वह बड़ा ख़बरदार (और) बड़ी (क़ाबू) कुदरत वाला है (44)

और अगर (कहीं) ख़ुदा लोगों की करतूतों की गिरफ्त करता तो (जैसी उनकी करनी है) रूए ज़मीन पर किसी जानवर को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़र्रर मियाद तक लोगों को मोहलत देता है (कि जो करना हो कर लो) फिर जब उनका (वह) वक़्त आ जाएगा तो ख़ुदा यक़ीनी तौर पर अपने बन्दों (के हाल) को देख रहा है (जो जैसा करेगा वैसा पाएगा) (45)

36 सूरह यास (यासीन)

सूरह यासीन "व इज़ा कील लहुम" आयत के सिवा पूरा सूरा मक्के में नाज़िल हुई और इसकी तेरासी (83) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

यासीन (1)

इस पुरअज़ हिकमत क़ुरान की क़सम (2)

(ऐ रसूल) तुम बिलाशक यक़ीनी पैग़म्बरों में से हो (3)

(और दीन के बिल्कुल) सीधे रास्ते पर (साबित क़दम) हो (4)

जो बड़े मेहरबान (और) ग़ालिब (ख़ुदा) का नाज़िल किया हुआ (है) (5)

ताकि तुम उन लोगों को (अज़ाबे ख़ुदा से) डराओ जिनके बाप दादा (तुमसे पहले किसी पैग़म्बर से) डराए नहीं गए (6)

तो वह दीन से बिल्कुल बेख़बर हैं उन में अक्सर तो (अज़ाब की) बातें यक़ीन्न बिल्कुल ठीक पूरी उतरे ये लोग तो ईमान लाएँगे नहीं (7)

हमने उनकी गर्दनों में (भारी-भारी लोहे के) तौक़ डाल दिए हैं और ठुड्डियों तक पहुँचे हुए हैं कि वह गर्दनें उठाए हुए हैं (सर झुका नहीं सकते) (8)

हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से उनको ढाँक दिया है तो वह कुछ देख नहीं सकते (9)

और (ऐ रसूल) उनके लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ ये (कभी) ईमान लाने वाले नहीं हैं (10)

तुम तो बस उसी शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत माने और बेदेखे भाले ख़ुदा का ख़ौफ़ रखे तो तुम उसको (गुनाहों की) माफी और एक बाइज़्ज़त (व आबरू) अज्र की ख़ुशख़बरी दे दो (11)

हम ही यक़ीन्न मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और जो कुछ लोग पहले कर चुके हैं (उनको) और उनकी (अच्छी या बुरी बाक़ी माँदा) निशानियों को लिखते जाते हैं और हमने हर चीज़ का एक सरीह व रौशन पेशवा में घेर दिया है (12)

और (ऐ रसूल) तुम (इनसे) मिसाल के तौर पर एक गाँव (अता किया) वालों का क़िस्सा बयान करो जब वहाँ (हमारे) पैग़म्बर आए (13)

इस तरह कि जब हमने उनके पास दो (पैग़म्बर योहना और यूनुस) भेजे तो उन लोगों ने दोनों को झुठलाया जब हमने एक तीसरे (पैग़म्बर शमऊन) से (उन दोनों को) मद्द दी तो इन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास ख़ुदा के भेजे हुए (आए) हैं (14)

वह लोग कहने लगे कि तुम लोग भी तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो और ख़ुदा ने कुछ नाज़िल (वाज़िल) नहीं किया है तुम सब के सब बस बिल्कुल झूठे हो (15)

तब उन पैग़म्बरों ने कहा हमारा परवरदिगार जानता है कि हम यक़ीन्न उसी के भेजे हुए (आए) हैं और (तुम मानो या न मानो) (16)

हम पर तो बस खुल्लम खुल्ला एहकामे ख़ुदा का पहुँचा देना फर्ज़ है (17)

वह बोले हमने तुम लोगों को बहुत नहस क़दम पाया कि (तुम्हारे आते ही क़हत में मुबतेला हुए) तो अगर तुम (अपनी बातों से) बाज़ न आओगे तो हम लोग तुम्हें ज़रूर संगसार कर देगें और तुमको यक़ीनी हमारा दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा (18)

पैग़म्बरों ने कहा कि तुम्हारी बद शुगूनी (तुम्हारी करनी से) तुम्हारे साथ है क्या जब नसीहत की जाती है (तो तुम उसे बदफ़ाली कहते हो नहीं) बल्कि तुम ख़ुद (अपनी) हद से बढ़ गए हो (19)

और (इतने में) शहर के उस सिरे से एक शख़्स (हबीब नज्जार) दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम (इन) पैग़म्बरों का कहना मानो (20)

ऐसे लोगों का (ज़रूर) कहना मानो जो तुमसे (तबलीख़े रिसालत की) कुछ मज़दूरी नहीं माँगते और वह लोग हिदायत याफ्ता भी हैं (21)
और मुझे क्या (ख़ब्त) हुआ है कि जिसने मुझे पैदा किया है उसकी इबादत न करूँ हालाँकि तुम सब के बस (आख़िर) उसी की तरफ लौटकर जाओगे (22)

क्या मैं उसे छोड़कर दूसरों को माबूद बना लूँ अगर ख़ुदा मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफारिश ही मेरे कुछ काम आएगी और न ये लोग मुझे (इस मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगें (23)

(अगर ऐसा करूँ) तो उस वक्त मैं यक़ीनी सरीही गुमराही में हूँ (24)

मैं तो तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान ला चुका हूँ मेरी बात सुनो और मानो ;मगर उन लोगों ने उसे संगसार कर डालाद्ध (25)

तब उसे ख़ुदा का हुक्म हुआ कि बेहिश्त में जा (उस वक्त भी उसको क़ौम का ख़्याल आया तो कहा) (26)

मेरे परवरदिगार ने जो मुझे बख़्श दिया और मुझे बुर्ज़ुग लोगों में शामिल कर दिया काश इसको मेरी क़ौम के लोग जान लेते और ईमान लाते (27)

और हमने उसके मरने के बाद उसकी क़ौम पर उनकी तबाही के लिए न तो आसमान से कोई लशकर उतारा और न हम कभी इतनी सी बात के वास्ते लशकर उतारने वाले थे (28)

वह तो सिर्फ एक चिंघाड थी (जो कर दी गयी बस) फिर तो वह फौरन चिराग़े सहरी की तरह बुझ के रह गए (29)

हाए अफसोस बन्दों के हाल पर कि कभी उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों ने उसके साथ मसख़रापन ज़रूर किया (30)

क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला और वह लोग उनके पास हरगिज़ पलट कर नहीं आ सकते (31)

(हाँ) अलबत्ता सब के सब इकट्ठा हो कर हमारी बारगाह में हाज़िर किए जाएँगे (32)

और उनके (समझने) के लिए मेरी क़ुदरत की एक निशानी मुर्दा (परती) ज़मीन है कि हमने उसको (पानी से) ज़िन्दा कर दिया और हम ही ने उससे दाना निकाला तो उसे ये लोग खाया करते हैं (33)
और हम ही ने ज़मीन में छुहारों और अँगूरों के बाग़ लगाए और हमही ने उसमें पानी के चशमें जारी किए (34)

ताकि लोग उनके फल खाएँ और कुछ उनके हाथों ने उसे नहीं बनाया (बल्कि ख़ुदा ने) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते (35)

वह (हर ऐब से) पाक साफ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और ख़ुद उन लोगों के और उन चीज़ों के जिनकी उन्हें ख़बर नहीं सबके जोड़े पैदा किए (36)

और मेरी क़ुदरत की एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते (जाएल कर देते) हैं तो उस वक़्त ये लोग अँधेरे में रह जाते हैं (37)

और (एक निशानी) आफताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है ये (सबसे) ग़ालिब वाक़िफ़ (ख़ुदा) का (बाँधा हुआ) अन्दाज़ा है (38)

और हमने चाँद के लिए मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं हैं यहाँ तक कि हिर फिर के (आख़िर माह में) खजूर की पुरानी टहनी का सा (पतला टेढ़ा) हो जाता है (39)

न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जा ले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है (चाँद, सूरज, सितारे) हर एक अपने-अपने आसमान (मदार) में चक्कर लगा रहें हैं (40)

और उनके लिए (मेरी क़ुदरत) की एक निशानी ये है कि उनके बुर्ज़ुगों को (नूह की) भरी हुयी कश्ती में सवार किया (41)

और उस कशती के मिसल उन लोगों के वास्ते भी वह चीज़े (कशतियाँ) जहाज़ पैदा कर दी (42)

जिन पर ये लोग सवार हुआ करते हैं और अगर हम चाहें तो उन सब लोगों को डुबा मारें फिर न कोई उन का फरियाद रस होगा और न वह लोग छुटकारा ही पा सकते हैं (43)

मगर हमारी मेहरबानी से और चूँकि एक (ख़ास) वक़्त तक (उनको) चैन करने देना (मंज़ूर) है (44)

और जब उन कुफ़्फ़ार से कहा जाता है कि इस (अज़ाब से) बचो (हर वक़्त तुम्हारे साथ-साथ) तुम्हारे सामने और तुम्हारे पीछे (मौजूद) है ताकि तुम पर रहम किया जाए (45)

(तो परवाह नहीं करते) और उनकी हालत ये है कि जब उनके परवरदिगार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आयी तो ये लोग मुँह मोड़े बग़ैर कभी नहीं रहे (46)

और जब उन (कुफ़्फ़ार) से कहा जाता है कि (माले दुनिया से) जो ख़ुदा ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ (ख़ुदा की राह में भी) ख़र्च करो तो (ये) कुफ़्फ़ार ईमानवालों से कहते हैं कि भला हम उस शख़्स को खिलाएँ जिसे (तुम्हारे ख़्याल के मुवाफ़िक़) ख़ुदा चाहता तो उसको ख़ुद खिलाता कि तुम लोग बस सरीही गुमराही में (पड़े हुए) हो (47)

और कहते हैं कि (भला) अगर तुम लोग (अपने दावे में सच्चे हो) तो आख़िर ये (क़यामत का) वायदा कब पूरा होगा (48)

(ऐ रसूल) ये लोग एक सख़्त चिंघाड़ (सूर) के मुनतज़िर हैं जो उन्हें (उस वक़्त) ले डालेगी (49)

जब ये लोग बाहम झगड़ रहे होगें फिर न तो ये लोग वसीयत ही करने पायेंगे और न अपने लड़के बालों ही की तरफ लौट कर जा सकेगें (50)

और फिर (जब दोबारा) सूर फूँका जाएगा तो उसी दम ये सब लोग (अपनी-अपनी) क़ब्रों से (निकल-निकल के) अपने परवरदिगार की बारगाह की तरफ चल खड़े होगे (51)

और (हैरान होकर) कहेगें हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें ख़्वाबगाह से किसने उठाया (जवाब आएगा) कि ये वही (क़यामत का) दिन है जिसका ख़ुदा ने (भी) वायदा किया था (52)

और पैग़म्बरों ने भी सच कहा था (क़यामत तो) बस एक सख़्त चिंघाड़ होगी फिर एका एकी ये लोग सब के सब हमारे हुज़ूर में हाज़िर किए जाएँगे (53)

फिर आज (क़यामत के दिन) किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा और तुम लोगों को तो उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम लोग (दुनिया में) किया करते थे (54)

बेहश्त के रहने वाले आज (रोज़े क़यामत) एक न एक मशग़ले में जी बहला रहे हैं (55)

वह अपनी बीवियों के साथ (ठन्डी) छाँव में तकिया लगाए तख़्तों पर (चैन से) बैठे हुए हैं (56)

बेहिश्त में उनके लिए (ताज़ा) मेवे (तैयार) हैं और जो वह चाहें उनके लिए (हाज़िर) है (57)

मेहरबान परवरदिगार की तरफ से सलाम का पैग़ाम आएगा (58)
और (एक आवाज़ आएगी कि) ऐ गुनाहगारों तुम लोग (इनसे) अलग हो जाओ (59)

ऐ आदम की औलाद क्या मैंने तुम्हारे पास ये हुक्म नहीं भेजा था कि (ख़बरदार) शैतान की परसतिश न करना वह यक़ीनी तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है (60)

और ये कि (देखो) सिर्फ मेरी इबादत करना यही (नजात की) सीधी राह है (61)

और (बावजूद इसके) उसने तुममें से बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते थे (62)

ये वही जहन्नुम है जिसका तुमसे वायदा किया गया था (63)

तो अब चूँकि तुम कुफ्र करते थे इस वजह से आज इसमें (चुपके से) चले जाओ (64)

आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देगें और (जो) कारसतानियाँ ये लोग दुनिया में कर रहे थे ख़ुद उनके हाथ हमको बता देगें और उनके पाँव गवाही देगें (65)

और अगर हम चाहें तो उनकी आँखों पर झाडू फेर दें तो ये लोग राह को पड़े चक्कर लगाते ढूँढते फिरें मगर कहाँ देख पाँएगे (66)

और अगर हम चाहे तो जहाँ ये हैं (वहीं) उनकी सूरतें बदल (करके) (पत्थर मिट्टी बना) दें फिर न तो उनमें आगे जाने का क़ाबू रहे और न (घर) लौट सकें (67)

और हम जिस शख़्स को (बहुत) ज़्यादा उम्र देते हैं तो उसे ख़िलक़त में उलट (कर बच्चों की तरह मजबूर कर) देते हैं तो क्या वह लोग समझते नहीं (68)

और हमने न उस (पैग़म्बर) को शेर की तालीम दी है और न शायरी उसकी शान के लायक़ है ये (किताब) तो बस (निरी) नसीहत और साफ-साफ क़ुरान है (69)

ताकि जो ज़िन्दा (दिल आक़िल) हों उसे (अज़ाब से) डराए और काफ़िरों पर (अज़ाब का) क़ौल साबित हो जाए (और हुज्जत बाक़ी न रहे) (70)

क्या उन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनके फायदे के लिए चारपाए उस चीज़ से पैदा किए जिसे हमारी ही क़ुदरत ने बनाया तो ये लोग (ख्वाहमाख्वाह) उनके मालिक बन गए (71) और हम ही ने चार पायों को उनका मुतीय बना दिया तो बाज़ उनकी सवारियां हैं और बाज़ को खाते हैं (72)

और चार पायों में उनके (और) बहुत से फायदे हैं और पीने की चीज़ (दूध) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते (73)

और लोगों ने अल्लाह को छोड़कर (फर्ज़ी माबूद बनाए हैं ताकि उन्हें उनसे कुछ मदद मिले हालाँकि वह लोग उनकी किसी तरह मदद कर ही नहीं सकते (74)

और ये कुफ़्फ़ार उन माबूदों के लशकर हैं (और क़यामत में) उन सबकी हाज़िरी ली जाएगी (75)

तो (ऐ रसूल) तुम इनकी बातों से आज़ुरदा ख़ातिर (पेरशान) न हो जो कुछ ये लोग छिपा कर करते हैं और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हैं-हम सबको यक़ीनी जानते हैं (76)

क्या आदमी ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम ही ने इसको एक ज़लील नुत्फ़े से पैदा किया फिर वह यकायक (हमारा ही) खुल्लम खुल्ला मुक़ाबिल (बना) है (77)

और हमारी निसबत बातें बनाने लगा और अपनी ख़िलक़त (की हालत) भूल गया और कहने लगा कि भला जब ये हड्डियाँ (सड़गल कर) ख़ाक हो जाएँगी तो (फिर) कौन (दोबारा) ज़िन्दा कर सकता है (78)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि उसको वही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको (जब ये कुछ न थे) पहली बार ज़िन्दा कर (रखा) (79)

और वह हर तरह की पैदाइश से वाक़िफ है जिसने तुम्हारे वास्ते (मिर्ख़ और अफ़ार के) हरे दरख़्त से आग पैदा कर दी फिर तुम उससे (और) आग सुलगा लेते हो (80)

(भला) जिस (ख़ुदा) ने सारे आसमान और ज़मीन पैदा किए क्या वह इस पर क़ाबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पैदा कर दे हाँ (ज़रूर क़ाबू रखता है) और वह तो पैदा करने वाला वाक़िफ़कार है (81)

उसकी शान तो ये है कि जब किसी चीज़ को (पैदा करना) चाहता है तो वह कह देता है कि "हो जा" तो (फौरन) हो जाती है (82)

तो वह ख़ुद (हर नफ़्स से) पाक साफ़ है जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में हर चीज़ की हिकमत है और तुम लोग उसी की तरफ लौट कर जाओगे (83)

37 सूरह साफ़्फ़ात (क़तार)

सूरह साफ़्फ़ात मक्का में नाज़िल हुई और इसकी एक सौ बयासी (182) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(इबादत या जिहाद में) पर बाँधने वालों की (क़सम) (1)

फिर (बदों को बुराई से) झिड़क कर डाँटने वाले की (क़सम) (2)

फिर क़ुरान पढ़ने वालों की क़सम है (3)

तुम्हारा माबूद (यक़ीनी) एक ही है (4)

जो सारे आसमान ज़मीन का और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है (सबका) परवरदिगार है (5)

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूउ व (ग़ुरूब) के मक़ामात का भी मालिक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता किया (6)

और (तारों को) हर सरकश शैतान से हिफ़ाज़त के वास्ते (भी पैदा किया) (7)

कि अब शैतान आलमे बाला की तरफ़ कान भी नहीं लगा सकते और (जहाँ सुन गुन लेना चाहा तो) हर तरफ़ से खदेड़ने के लिए शहाब फेके जाते हैं (8)

और उनके लिए पाएदार अज़ाब है (9)

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है (10)

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि उनका पैदा करना ज़्यादा दुश्वार है या उन (मज़कूरा) चीज़ों का जिनको हमने पैदा किया हमने तो उन लोगों को लसदार मिट्टी से पैदा किया (11)

बल्कि तुम (उन कुफ़्फ़ार के इन्कार पर) ताज्जुब करते हो और वह लोग (तुमसे) मसख़रापन करते हैं (12)

और जब उन्हें समझाया जाता है तो समझते नहीं हैं (13)

और जब किसी मौजिज़े को देखते हैं तो (उससे) मसख़रापन करते हैं (14)

और कहते हैं कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (15)

भला जब हम मर जाएँगे और ख़ाक और हड्डियाँ रह जाएँगे (16)

तो क्या हम या हमारे अगले बाप दादा फिर दोबारा क़ब्रों से उठा खड़े किए जाँएगे (17)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ (ज़रूर उठाए जाओगे) (18)

और तुम ज़लील होगे और वह (क़यामत) तो एक ललकार होगी फिर तो वह लोग फ़ौरन ही (आँखे फाड़-फाड़ के) देखने लगेंगे (19)

और कहेंगे हाए अफसोस ये तो क़यामत का दिन है (20)

(जवाब आएगा) ये वही फैसले का दिन है जिसको तुम लोग (दुनिया में) झूठ समझते थे (21)

(और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जो लोग (दुनिया में) सरकशी करते थे उनको और उनके साथियों को और ख़ुदा को छोड़कर जिनकी परसतिश करते हैं (22)

उनको (सबको) इकट्ठा करो फिर उन्हें जहन्नुम की राह दिखाओ (23)

और (हाँ ज़रा) उन्हें ठहराओ तो उनसे कुछ पूछना है (24)

(अरे कमबख़्तों) अब तुम्हें क्या होगा कि एक दूसरे की मदद नहीं करते (25)

(जवाब क्या देंगे) बल्कि वह तो आज गर्दन झुकाए हुए हैं (26)

और एक दूसरे की तरफ मुतावज्जे होकर बाहम पूछताछ करेंगे (27)

(और इन्सान शयातीन से) कहेंगे कि तुम ही तो हमारी दाहिनी तरफ से (हमें बहकाने को) चढ़ आते थे (28)
वह जवाब देगें (हम क्या जानें) तुम तो ख़ुद ईमान लाने वाले न थे (29)

और (साफ़ तो ये है कि) हमारी तुम पर कुछ हुकूमत तो थी नहीं बल्कि तुम ख़ुद सरकश लोग थे (30)

फिर अब तो लोगों पर हमारे परवरदिगार का (अज़ाब का) क़ौल पूरा हो गया कि अब हम सब यक़ीनन अज़ाब का मज़ा चखेंगे (31)

हम ख़ुद गुमराह थे तो तुम को भी गुमराह किया (32)

ग़रज़ ये लोग सब के सब उस दिन अज़ाब में शरीक होगें (33)

और हम तो गुनाहगारों के साथ यूँ ही किया करते हैं ये लोग ऐसे (शरीर) थे (34)

कि जब उनसे कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो अकड़ा करते थे (35)

और ये लोग कहते थे कि क्या एक पागल शायर के लिए हम अपने माबूदों को छोड़ बैठें (अरे कम्बख़्तों ये शायर या पागल नहीं) (36)

बल्कि ये तो हक़ बात लेकर आया है और (अगले) पैग़म्बरों की तसदीक़ करता है (37)

तुम लोग (अगर न मानोगे) तो ज़रूर दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखोगे (38)

और तुम्हें तो उसके किये का बदला दिया जाएगा जो (जो दुनिया में) करते रहे (39)

मगर ख़ुदा के बरगुजीदा बन्दे (40)

उनके वास्ते (बेहिश्त में) एक मुक़र्रर रोज़ी होगी (41)

(और वह भी ऐसी वैसी नहीं) हर क़िस्म के मेवे (42)

और वह लोग बड़ी इज़्ज़त से नेअमत के (लदे हुए) (43)

बाग़ों में तख़्तों पर (चैन से) आमने सामने बैठे होगे (44)

उनमें साफ सफेद बुर्राक़ शराब के जाम का दौर चल रहा होगा (45)

जो पीने वालों को बड़ा मज़ा देगी (46)

(और फिर) न उस शराब में ख़ुमार की वजह से) दर्द सर होगा और न वह उस (के पीने) से मतवाले होंगे (47)

और उनके पहलू में (शर्म से) नीची निगाहें करने वाली बड़ी बड़ी आँखों वाली परियाँ होगी (48)

(उनकी) गोरी-गोरी रंगतों में हल्की सी सुर्ख़ी ऐसी झलकती होगी (49)

गोया वह अन्डे हैं जो छिपाए हुए रखे हो (50)

फिर एक दूसरे की तरफ मुतावज्जे पाकर बाहम बातचीत करते करते उनमें से एक कहने वाला बोल उठेगा कि (दुनिया में) मेरा एक दोस्त था (51)

और (मुझसे) कहा करता था कि क्या तुम भी क़यामत की तसदीक़ करने वालों में हो (52)

(भला जब हम मर जाएँगे) और (सड़ गल कर) मिट्टी और हड्डी (होकर) रह जाएँगे तो क्या हमको दोबारा ज़िन्दा करके हमारे (आमाल का) बदला दिया जाएगा (53)

(फिर अपने बेहश्त के साथियों से कहेगा) (54)

तो क्या तुम लोग भी (मेरे साथ उसे झांक कर देखोगे) ग़रज़ झाँका तो उसे बीच जहन्नुम में (पड़ा हुआ) देखा (55)

(ये देख कर बेसाख़्ता) बोल उठेगा कि ख़ुदा की क़सम तुम तो मुझे भी तबाह करने ही को थे (56)

और अगर मेरे परवरदिगार का एहसान न होता तो मैं भी (इस वक़्त) तेरी तरह जहन्नुम में गिरफ़्तार किया गया होता (57)

(अब बताओ) क्या (मैं तुम से न कहता था) कि हम को इस पहली मौत के सिवा फिर मरना नहीं है (58)

और न हम पर (आख़ेरत) में अज़ाब होगा (59)
(तो तुम्हें यक़ीन न होता था) ये यक़ीनी बहुत बड़ी कामयाबी है (60)

ऐसी (ही कामयाबी) के वास्ते काम करने वालों को कारगुज़ारी करनी चाहिए (61)

भला मेहमानी के वास्ते ये (सामान) बेहतर है या थोहड़ का दरख़्त (जो जहन्नुमियों के वास्ते होगा) (62)

जिसे हमने यक़ीनन ज़ालिमों की आज़माइश के लिए बनाया है (63)

ये वह दरख़्त हैं जो जहन्नुम की तह में उगता है (64)

उसके फल ऐसे (बदनुमा) हैं गोया (हू बहू) साँप के फन जिसे छूते दिल डरे (65)

फिर ये (जहन्नुमी लोग) यक़ीनन उसमें से खाएँगे फिर उसी से अपने पेट भरेंगे (66)

फिर उसके ऊपर से उन को ख़ूब खौलता हुआ पानी (पीप वग़ैरह में) मिला मिलाकर पीने को दिया जाएगा (67)

फिर (खा पीकर) उनको जहन्नुम की तरफ यक़ीनन लौट जाना होगा (68)

उन लोगों ने अपन बाप दादा को गुमराह पाया था (69)

ये लोग भी उनके पीछे दौड़े चले जा रहे हैं (70)

और उनके क़ब्ल अगलों में से बहुतेरे गुमराह हो चुके (71)

उन लोगों के डराने वाले (पैग़म्बरों) को भेजा था (72)

ज़रा देखो तो कि जो लोग डराए जा चुके थे उनका क्या बुरा अन्जाम हुआ (73)

मगर (हाँ) ख़ुदा के निरे खरे बन्दे (महफ़ूज़ रहे) (74)

और नूह ने (अपनी क़ौम से मायूस होकर) हमें ज़रूर पुकारा था (देखो हम) क्या ख़ूब जवाब देने वाले थे (75)

और हमने उनको और उनके लड़के वालों को बड़ी (सख़्त) मुसीबत से नजात दी (76)

और हमने (उनमें वह बरकत दी कि) उनकी औलाद को (दुनिया में) बरक़रार रखा (77)

और बाद को आने वाले लोगों में उनका अच्छा चर्चा बाक़ी रखा (78)
कि सारी ख़ुदायी में (हर तरफ से) नूह पर सलाम है (79)

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर अता फरमाते हैं (80)

इसमें शक नहीं कि नूह हमारे (ख़ास) ईमानदार बन्दों से थे (81)

फिर हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया (82)

और यक़ीनन उन्हीं के तरीक़ो पर चलने वालों में इबराहीम (भी) ज़रूर थे (83)

जब वह अपने परवरदिगार (कि इबादत) की तरफ (पहलू में) ऐसा दिल लिए हुए बढ़े जो (हर ऐब से पाक था (84)

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग किस चीज़ की परसतिश करते हो (85)

क्या ख़ुदा को छोड़कर दिल से गढ़े हुए माबूदों की तमन्ना रखते हो (86)

फिर सारी ख़ुदाई के पालने वाले के साथ तुम्हारा क्या ख़्याल है (87)

फिर (एक ईद में उन लोगों ने चलने को कहा) तो इबराहीम ने सितारों की तरफ़ एक नज़र देखा (88)

और कहा कि मैं (अनक़रीब) बीमार पड़ने वाला हूँ (89)

तो वह लोग इबराहीम के पास से पीठ फेर फेर कर हट गए (90)

(बस) फिर तो इबराहीम चुपके से उनके बुतों की तरफ मुतावज्जे हुए और (तान से) कहा तुम्हारे सामने इतने चढ़ाव रखते हैं (91)

आख़िर तुम खाते क्यों नहीं (अरे तुम्हें क्या हो गया है) (92)

कि तुम बोलते तक नहीं (93)

फिर तो इबराहीम दाहिने हाथ से मारते हुए उन पर पिल पड़े (और तोड़-फोड़ कर एक बड़े बुत के गले में कुल्हाड़ी डाल दी) (94)

जब उन लोगों को ख़बर हुयी तो इबराहीम के पास दौड़ते हुए पहुँचे (95)

इबराहीम ने कहा (अफ़सोस) तुम लोग उसकी परसतिश करते हो जिसे तुम लोग ख़ुद तराश कर बनाते हो (96)

हालाँकि तुमको और जिसको तुम लोग बनाते हो (सबको) ख़ुदा ही ने पैदा किया है (ये सुनकर) वह लोग (आपस में कहने लगे) इसके लिए (भट्टी की सी) एक इमारत बनाओ (97)

और (उसमें आग सुलगा कर उसी दहकती हुयी आग में इसको डाल दो) फिर उन लोगों ने इबराहीम के साथ मक्कारी करनी चाही (98)

तो हमने (आग सर्द गुलज़ार करके) उन्हें नीचा दिखाया और जब (आज़र ने) इबराहीम को निकाल दिया तो बोले मैं अपने परवरदिगार की तरफ जाता हूँ (99)

वह अनक़रीब ही मुझे रूबरा कर देगा (फिर ग़रज की) परवरदिगार मुझे एक नेको कार (फरज़न्द) इनायत फरमा (100)

तो हमने उनको एक बड़े नरम दिले लड़के (के पैदा होने की) ख़ुशख़बरी दी (101)

फिर जब इस्माईल अपने बाप के साथ दौड़ धूप करने लगा तो (एक दफा) इबराहीम ने कहा बेटा ख़ूब मैं (वही के ज़रिये क्या) देखता हूँ कि मैं तो ख़ुद तुम्हें ज़िबाह कर रहा हूँ तो तुम भी ग़ौर करो तुम्हारी इसमें क्या राय है इसमाईल ने कहा अब्बा जान जो आपको हुक्म हुआ है उसको (बे तअम्मुल) कीजिए अगर ख़ुदा ने चाहा तो मुझे आप सब्र करने वालों में से पाएगे (102)

फिर जब दोनों ने ये ठान ली और बाप ने बेटे को (ज़िबाह करने के लिए) माथे के बल लिटाया (103)

और हमने (आमादा देखकर) आवाज़ दी ऐ इबराहीम (104)

तुमने अपने ख़्वाब को सच कर दिखाया अब तुम दोनों को बड़े मरतबे मिलेगें हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर देते हैं (105)

इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी बड़ा सख़्त और सरीही इम्तिहान था (106)

और हमने इस्माईल का फ़िदया एक ज़िबाहे अज़ीम (बड़ी क़ुर्बानी) क़रार दिया (107)

और हमने उनका अच्छा चर्चा बाद को आने वालों में बाक़ी रखा है (108)

कि (सारी ख़ुदायी में) इबराहीम पर सलाम (ही सलाम) हैं (109)

हम यूँ नेकी करने वालों को जज़ाए ख़ैर देते हैं (110)

बेशक इबराहीम हमारे (ख़ास) ईमानदार बन्दों में थे (111)

और हमने इबराहीम को इसहाक़ (के पैदा होने की) ख़ुशख़बरी दी थी (112)

जो एक नेकोसार नबी थे और हमने ख़ुद इबराहीम पर और इसहाक़ पर अपनी बरकत नाज़िल की और इन दोनों की नस्ल में बाज़ तो नेकोकार और बाज़ (नाफरमानी करके) अपनी जान पर सरीही सितम ढ़ाने वाला (113)

और हमने मूसा और हारून पर बहुत से एहसानात किए हैं (114)

और ख़ुद दोनों को और इनकी क़ौम को बड़ी (सख़्त) मुसीबत से नजात दी (115)

और (फिरऔन के मुक़ाबले में) हमने उनकी मदद की तो (आख़िर) यही लोग ग़ालिब रहे (116)

और हमने उन दोनों को एक वाज़ेए उलम तालिब किताब (तौरेत) अता की (117)

और दोनों को सीधी राह की हिदायत फ़रमाई (118)

और बाद को आने वालों में उनका ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा (119)

कि (हर जगह) मूसा और हारून पर सलाम (ही सलाम) है (120)

हम नेकी करने वालों को यूँ जज़ाए ख़ैर अता फरमाते हैं (121)

बेशक ये दोनों हमारे (ख़ालिस ईमानदार बन्दों में से थे) (122)

और इसमें शक नहीं कि इलियास यक़ीनन पैग़म्बरों में से थे (123)

जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग (अल्लाह से) क्यों नहीं डरते (124)

क्या तुम लोग बाल (बुत) की परसतिश करते हो और ख़ुदा को छोड़े बैठे हो जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है (125)

और (जो) तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का (भी) परवरदिगार है (126)

तो उसे लोगों ने झुठला दिया तो ये लोग यक़ीनन (जहन्नुम) में गिरफ्तार किए जाएँगे (127)

मगर ख़ुदा के निरे खरे बन्दे महफ़ूज़ रहेंगे (128)

और हमने उनका ज़िक्र ख़ैर बाद को आने वालों में बाक़ी रखा (129)

कि (हर तरफ से) आले यासीन पर सलाम (ही सलाम) है (130)

हम यक़ीनन नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (131)

बेशक वह हमारे (ख़ालिस) ईमानदार बन्दों में थे (132)

और इसमें भी शक नहीं कि लूत यक़ीनी पैग़म्बरों में से थे (133)

जब हमने उनको और उनके लड़के वालों सब को नजात दी (134)

मगर एक (उनकी) बूढ़ी बीबी जो पीछे रह जाने वालों ही में थीं (135)

फिर हमने बाक़ी लोगों को तबाह व बर्बाद कर दिया (136)

और ऐ एहले मक्का तुम लोग भी उन पर से (कभी) सुबह को और (कभी) शाम को (आते जाते गुज़रते हो) (137)

तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते (138)

और इसमें शक नहीं कि यूनुस (भी) पैग़म्बरों में से थे (139)

(वह वक्त याद करो) जब यूनुस भाग कर एक भरी हुयी कश्ती के पास पहुँचे (140)

तो (एहले कश्ती ने) कुरआ डाला तो (उनका ही नाम निकला) यूनुस ने ज़क उठायी (और दरिया में गिर पड़े) (141)

तो उनको एक मछली निगल गयी और यूनुस ख़ुद (अपनी) मलामत कर रहे थे (142)

फिर अगर यूनुस (ख़ुदा की) तसबीह (व ज़िक्र) न करते (143)

तो रोज़े क़यामत तक मछली के पेट में रहते (144)

फिर हमने उनको (मछली के पेट से निकाल कर) एक खुले मैदान में डाल दिया (145)

और (वह थोड़ी देर में) बीमार निढाल हो गए थे और हमने उन पर साये के लिए एक कद्दू का दरख़्त उगा दिया (146)

और (इसके बाद) हमने एक लाख बल्कि (एक हिसाब से) ज़्यादा आदमियों की तरफ (पैग़म्बर बना कर भेजा) (147)

तो वह लोग (उन पर) इमान लाए फिर हमने (भी) एक ख़ास वक्त तक उनको चैन से रखा (148)
तो (ऐ रसूल) उन कुफ़्फ़ार से पूछो कि क्या तुम्हारे परवरदिगार के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे (149)

(क्या वाक़ई) हमने फरिश्तों की औरतें बनाया है और ये लोग (उस वक्त) मौजूद थे (150)
ख़बरदार (याद रखो कि) ये लोग यक़ीनन अपने दिल से गढ़-गढ़ के कहते हैं कि ख़ुदा औलाद वाला है (151)

और ये लोग यक़ीनी झूठे हैं (152)

क्या ख़ुदा ने (अपने लिए) बेटियों को बेटों पर तरजीह दी है (153)

(अरे कम्बख्तों) तुम्हें क्या जुनून हो गया है तुम लोग (बैठे-बैठे) कैसा फैसला करते हो (154)

तो क्या तुम (इतना भी) ग़ौर नहीं करते (155)

या तुम्हारे पास (इसकी) कोई वाज़ेए व रौशन दलील है (156)

तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो अपनी किताब पेश करो (157)

और उन लोगों ने ख़ुदा और जिन्नात के दरम्यिान रिश्ता नाता मुक़र्रर किया है हालाँकि जिन्नात बख़ूबी जानते हैं कि वह लोग यक़ीनी (क़यामत में बन्दों की तरह) हाज़िर किए जाएँगे (158)

ये लोग जो बातें बनाया करते हैं इनसे ख़ुदा पाक साफ़ है (159)

मगर ख़ुदा के निरे खरे बन्दे (ऐसा नहीं कहते) (160)

ग़रज़ तुम लोग ख़ुद और तुम्हारे माबूद (161)

उसके ख़िलाफ (किसी को) बहका नहीं सकते (162)

मगर उसको जो जहन्नुम में झोंका जाने वाला है (163)

और फरिश्ते या आइम्मा तो ये कहते हैं कि मैं हर एक का एक दरजा मुक़र्रर है (164)

और हम तो यक़ीनन (उसकी इबादत के लिए) सफ बाँधे खड़े रहते हैं (165)

और हम तो यक़ीनी (उसकी) तस्बीह पढ़ा करते हैं (166)

अगरचे ये कुफ्फार (इस्लाम के क़ब्ल) कहा करते थे (167)

कि अगर हमारे पास भी अगले लोगों का तज़किरा (किसी किताबे ख़ुदा में) होता (168)

तो हम भी ख़ुदा के निरे खरे बन्दे ज़रूर हो जाते (169)

(मगर जब किताब आयी) तो उन लोगों ने उससे इन्कार किया ख़ैर अनक़रीब (उसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा (170)

और अपने ख़ास बन्दों पैग़म्बरों से हमारी बात पक्की हो चुकी है (171)

कि इन लोगों की (हमारी बारगाह से) यक़ीनी मदद की जाएगी (172)

और हमारा लश्कर तो यक़ीनन ग़ालिब रहेगा (173)

तो (ऐ रसूल) तुम उनसे एक ख़ास वक़्त तक मुँह फेरे रहो (174)

और इनको देखते रहो तो ये लोग अनक़रीब ही (अपना नतीजा) देख लेगे (175)

तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं (176)

फिर जब (अज़ाब) उनकी अंगनाई में उतर पड़ेगा तो जो लोग डराए जा चुके हैं उनकी भी क्या बुरी सुबह होगी (177)

और उन लोगों से एक ख़ास वक़्त तक मुँह फेरे रहो (178)

और देखते रहो ये लोग तो ख़ुद अनक़रीब ही अपना अन्जाम देख लेगें (179)

ये लोग जो बातें (ख़ुदा के बारे में) बनाया करते हैं उनसे तुम्हारा परवरदिगार इज़्ज़त का मालिक पाक साफ है (180)

और पैग़म्बरों पर (दुरूद) सलाम हो (181)

और कुल तारीफ ख़ुदा ही के लिए सज़ावार हैं जो सारे जहाँन का पालने वाला है (182)

38 सूरह साद

सूरह साद मक्का में नाज़िल हुई और इसकी अठ्ठासी (88) आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सआद नसीहत करने वाले क़ुरान की क़सम (तुम बरहक़ नबी हो) (1)

मगर ये कुफ़्फ़ार (ख़्वाहमख़्वाह) तकब्बुर और अदावत में (पड़े अंधे हो रहें हैं) (2)

हमने उन से पहले कितने गिरोह हलाक कर डाले तो (अज़ाब के वक्त) ये लोग चीख़ उठे मगर छुटकारे का वक्त ही न रहा था (3)

और उन लोगों ने इस बात से ताज्जुब किया कि उन्हीं में का (अज़ाबे ख़ुदा से) एक डरानेवाला (पैग़म्बर) उनके पास आया और काफिर लोग कहने लगे कि ये तो बड़ा (खिलाड़ी) जादूगर और पक्का झूठा है (4)

भला (देखो तो) उसने तमाम माबूदों को (मटियामेट करके बस) एक ही माबूद क़ायम रखा ये तो यक़ीनी बड़ी ताज्जुब ख़ेज़ बात है (5)

और उनमें से चन्द रवादार लोग (मजलिस व अज़ा से) ये (कह कर) चल खड़े हुए कि (यहाँ से) चल दो और अपने माबूदों की इबादत पर जमे रहो यक़ीनन इसमें (उसकी) कुछ ज़ाती ग़रज़ है (6)

हम लोगों ने तो ये बात पिछले दीन में कभी सुनी भी नहीं हो न हो ये उसकी मन गढ़ंत है (7)

क्या हम सब लोगों में बस (मोहम्मद ही क़ाबिल था कि) उस पर क़ुरान नाज़िल हुआ, नहीं बात ये है कि इनके (सिरे से) मेरे कलाम ही में शक है कि मेरा है या नहीं बल्कि असल ये है कि इन लोगों ने अभी तक अज़ाब के मज़े नहीं चखे (8)

(इस वजह से ये शरारत है) (ऐ रसूल) तुम्हारे ज़बरदस्त फ़य्याज़ परवरदिगार के रहमत के ख़ज़ाने इनके पास हैं (9)

या सारे आसमान व ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की सलतनत इन्हीं की ख़ास है तब इनको चाहिए कि रास्ते या सीढियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ जाएँ और इन्तेज़ाम करें (10)

(ऐ रसूल उन पैग़म्बरों के साथ झगड़ने वाले) गिरोहों में से यहाँ तुम्हारे मुक़ाबले में भी एक लशकर है जो शिकस्त खाएगा (11)

उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और फिरऔन मेंख़ों वाला (12)

और समूद और लूत की क़ौम और जंगल के रहने वाले (क़ौम शुऐब ये सब पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं यही वह गिरोह है (13)

(जो शिकस्त खा चुके) सब ही ने तो पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमारा अज़ाब ठीक आ नाज़िल हुआ (14)

और ये (काफिर) लोग बस एक चिंघाड़ (सूर के मुन्तज़िर हैं जो फिर उन्हें) चश्में ज़दन की मोहलत न देगी (15)

और ये लोग (मज़ाक से) कहते हैं कि परवरदिगार हिसाब के दिन (क़यामत के) क़ब्ल ही (जो) हमारी क़िस्मत को लिखा (हो) हमें जल्दी दे दे (16)

(ऐ रसूल) जैसी जैसी बातें ये लोग करते हैं उन पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो बड़े क़ूवत वाले थे (17)

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े रूजू करने वाले थे हमने पहाड़ों को भी ताबेदार बना दिया था कि उनके साथ सुबह और शाम (ख़ुदा की) तस्बीह करते थे (18)

और परिन्दे भी (यादे ख़ुदा के वक्त सिमट) आते और उनके फरमाबरदार थे (19)

और हमने उनकी सल्तनत को मज़बूत कर दिया और हमने उनको हिकमत और बहस के फैसले की क़ूवत अता फरमायी थी (20)

(ऐ रसूल) क्या तुम तक उन दावेदारों की भी ख़बर पहुँची है कि जब वह हुजरे (इबादत) की दीवार फाँद पड़े (21)

(और) जब दाऊद के पास आ खड़े हुए तो वह उनसे डर गए उन लोगों ने कहा कि आप डरें नहीं (हम दोनों) एक मुक़द्दमें के फ़रीक़ैन हैं कि हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप

हमारे दरम्यिान ठीक-ठीक फैसला कर दीजिए और इन्साफ से ने गुज़रिये और हमें सीधी राह दिखा दीजिए (22)

(मुराद ये हैं कि) ये (शख़्स) मेरा भाई है और उसके पास निनान्नवे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुम्बी है उस पर भी ये मुझसे कहता है कि ये दुम्बी भी मुझी को दे दें और बातचीत में मुझ पर सख़्ती करता है (23)

दाऊद ने (बग़ैर इसके कि मुदा आलैह से कुछ पूछें) कह दिया कि ये जो तेरी दुम्बी माँग कर अपनी दुम्बियों में मिलाना चाहता है तो ये तुझ पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शुरका (की) यक़ीनन (ये हालत है कि) एक दूसरे पर ज़ुल्म किया करते हैं मगर जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसा नहीं करते) और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं (ये सुनकर दोनों चल दिए) और अब दाऊद ने समझा कि हमने उनका इमितेहान लिया (और वह ना कामयाब रहे) फिर तो अपने परवरदिगार से बख़्शिश की दुआ माँगने लगे और सजदे में गिर पड़े और (मेरी) तरफ रूजू की (24) सजदा 11

तो हमने उनकी वह ग़लती माफ कर दी और इसमें शक नहीं कि हमारी बारगाह में उनका तक़र्रुब और अन्जाम अच्छा हुआ (25)

(हमने फरमाया) ऐ दाऊद हमने तुमको ज़मीन में (अपना) नाएब क़रार दिया तो तुम लोगों के दरम्यिान बिल्कुल ठीक फैसला किया करो और नफ़सियानी ख़्वाहिश की पैरवी न करो बसा ये पीरों तुम्हें अल्लाह की राह से बहका देगी इसमें शक नहीं कि जो लोग ख़ुदा की राह में भटकते हैं उनकी बड़ी सख़्त सज़ा होगी क्योंकि उन लोगों ने हिसाब के दिन (क़यामत) को भुला दिया (26)

और हमने आसमान और ज़मीन और जो चीज़ें उन दोनों के दरम्यिान हैं बेकार नहीं पैदा किया ये उन लोगों का ख़्याल है जो काफ़िर हो बैठे तो जो लोग दोज़ख़ के मुनकिर हैं उन पर अफ़सोस है (27)

क्या जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए उनको हम (उन लोगों के बराबर) कर दें जो रूए ज़मीन में फसाद फैलाया करते हैं या हम परहेज़गारों को मिसल बदकारों के बना दें (28)

(ऐ रसूल) किताब (क़ुरान) जो हमने तुम्हारे पास नाज़िल की है (बड़ी) बरकत वाली है ताकि लोग इसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले नसीहत हासिल करें (29)

और हमने दाऊद को सुलेमान (सा बेटा) अता किया (सुलेमान भी) क्या अच्छे बन्दे थे (30)

बेशक वह हमारी तरफ रूजू करने वाले थे इत्तेफाक़न एक दफ़ा तीसरे पहर को ख़ासे के असील घोड़े उनके सामने पेश किए गए (31)

तो देखने में उलझे के नवाफिल में देर हो गयी जब याद आया तो बोले कि मैंने अपने परवरदिगार की याद पर माल की उलफ़त को तरजीह दी यहाँ तक कि आफ़ताब (मग़रिब के) पर्दे में छुप गया (32)

(तो बोले अच्छा) इन घोड़ों को मेरे पास वापस लाओ (जब आए) तो (देर के कफ़्फ़ारा में) घोड़ों की टाँगों और गर्दनों पर हाथ फेर (काट) ने लगे (33)

और हमने सुलेमान का इम्तेहान लिया और उनके तख़्त पर एक बेजान धड़ लाकर गिरा दिया (34)

फिर (सुलेमान ने मेरी तरफ) रूजू की (और) कहा परवरदिगार मुझे बख़्श दे और मुझे वह मुल्क अता फरमा जो मेरे बाद किसी के वास्ते शायाँह न हो इसमें तो शक नहीं कि तू बड़ा बख़्शने वाला है (35)

तो हमने हवा को उनका ताबेए कर दिया कि जहाँ वह पहुँचना चाहते थे उनके हुक्म के मुताबिक़ धीमी चाल चलती थी (36)

और (इसी तरह) जितने शयातीन (देव) इमारत बनाने वाले और ग़ोता लगाने वाले थे (37)

सबको (ताबेए कर दिया और इसके अलावा) दूसरे देवों को भी जो ज़ंज़ीरों में जकड़े हुए थे (38)

ऐ सुलेमान ये हमारी बेहिसाब अता है पस (उसे लोगों को देकर) एहसान करो या (सब) अपने ही पास रखो (39)

और इसमें शक नहीं कि सुलेमान की हमारी बारगाह में क़ुर्ब व मज़ेलत और उमदा जगह है (40)

और (ऐ रसूल) हमारे (ख़ास) बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने अपने परवरगिार से फरियाद की कि मुझको शैतान ने बहुत अज़ीयत और तकलीफ पहुँचा रखी है (41)

तो हमने कहा कि अपने पाँव से (ज़मीन को) ठुकरा दो और चश्मा निकाला तो हमने कहा (ऐ अय्यूब) तुम्हारे नहाने और पीने के वास्ते ये ठन्डा पानी (हाज़िर) है (42)

और हमने उनको और उनके लड़के वाले और उनके साथ उतने ही और अपनी ख़ास मेहरबानी से अता किए (43)

और अक्लमंदों के लिए इबरत व नसीहत (क़रार दी) और हमने कहा ऐ अय्यूब तुम अपने हाथ से सींको का मट्ठा लो (और उससे अपनी बीवी को) मारो अपनी क़सम में झूठे न बनो हमने कहा अय्यूब को यक़ीनन साबिर पाया वह क्या अच्छे बन्दे थे (44)

बेशक वह हमारी बारगाह में बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इब्राहीम और इसहाक़ और बेशक वह (हमारी बारगाह में) बड़े झुकने वाले थे और (ऐ रसूल) हमारे बन्दों में इबराहीम और इसहाक़ और याकूब को याद करो जो कुवत और बसीरत वाले थे (45)

हमने उन लोगों को एक ख़ास सिफत आख़ेरत की याद से मुमताज़ किया था (46)

और इसमें शक नहीं कि ये लोग हमारी बारगाह में बरगुज़ीदा और नेक लोगों में हैं (47)

और (ऐ रसूल) इस्माईल और अलयसा और ज़ुलकिफ़ल को (भी) याद करो और (ये) सब नेक बन्दों में हैं (48)

ये एक नसीहत है और इसमें शक नहीं कि परहेज़गारों के लिए (आख़ेरत में) यक़ीनी अच्छी आरामगाह है (49)

(यानि) हमेशा रहने के (बेहिश्त के) सदाबहार बाग़ात जिनके दरवाज़े उनके लिए (बराबर) खुले होगें (50)

और ये लोग वहाँ तकिये लगाए हुए (चैन से बैठे) होगें वहाँ (ख़ुद्दामे बेहिश्त से) कसरत से मेवे और शराब मँगवाएँगे (51)

और उनके पहलू में नीची नज़रों वाली (शरमीली) कमसिन बीवियाँ होगी (52)

(मोमिनों) ये वह चीज़ हैं जिनका हिसाब के दिन (क़यामत) के लिए तुमसे वायदा किया जाता है (53)

बेशक ये हमारी (दी हुयी) रोज़ी है जो कभी तमाम न होगी (54)

ये परहेज़गारों का (अन्जाम) है और सरकशों का तो यक़ीनी बुरा ठिकाना है (55)

जहन्नुम जिसमें उनको जाना पड़ेगा तो वह क्या बुरा ठिकाना है (56)

ये खौलता हुआ पानी और पीप और इस तरह अनवा अक़साम की दूसरी चीज़े हैं (57)

तो ये लोग उन्हीं पड़े चखा करें (कुछ लोगों के बारे में) बड़ों से कहा जाएगा (58)

ये (तुम्हारी चेलों की) फौज भी तुम्हारे साथ ही ढूँसी जाएगी उनका भला न हो ये सब भी दोज़ख़ को जाने वाले हैं (59)

तो चेले कहेंगें (हम क्यों) बल्कि तुम (जहन्नुमी हो) तुम्हारा ही भला न हो तो तुम ही लोगों ने तो इस (बला) से हमारा सामना करा दिया तो जहन्नुम भी क्या बुरी जगह है (60)

(फिर वह) अर्ज़ करेगें परवरदिगार जिस शख़्स ने हमारा इस (बला) से सामना करा दिया तो तू उस पर हमसे बढ़कर जहन्नुम में दो गुना अज़ाब कर (61)

और (फिर) ख़ुद भी कहेगें हमें क्या हो गया है कि हम जिन लोगों को (दुनिया में) शरीर शुमार करते थे हम उनको यहाँ (दोज़ख़) में नहीं देखते (62)

क्या हम उनसे (नाहक़) मसखरापन करते थे या उनकी तरफ से (हमारी) आँखे पलट गयी हैं (63)

इसमें शक नहीं कि जहन्नुमियों का बाहम झगड़ना ये बिल्कुल यक़ीनी ठीक है (64)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस (अज़ाबे ख़ुदा से) डराने वाला हूँ और यकता क़हार ख़ुदा के सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं (65)

सारे आसमान और ज़मीन का और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान हैं (सबका) परवरदिगार ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है (66)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ये (क़यामत) एक बहुत बड़ा वाक़िया है (67)

जिससे तुम लोग (ख़्वाहमाख़्वाह) मुँह फेरते हो (68)

आलम बाला के रहने वाले (फरिश्ते) जब वाहम बहस करते थे उसकी मुझे भी ख़बर न थी (69)

मेरे पास तो बस वही की गयी है कि मैं (ख़ुदा के अज़ाब से) साफ-साफ डराने वाला हूँ (70)

(वह बहस ये थी कि) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं गीली मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूँ (71)

तो जब मैं उसको दुरूस्त कर लूँ और इसमें अपनी (पैदा) की हुयी रूह फूँक दो तो तुम सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना (72)

तो सब के सब कुल फरिश्तों ने सजदा किया (73)

मगर (एक) इबलीस ने कि वह शेख़ी में आ गया और काफिरों में हो गया (74)

अल्लाह ने (इबलीस से) फरमाया कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैंने अपनी ख़ास क़ुदरत से पैदा किया (भला) उसको सजदा करने से तुझे किसी ने रोका क्या तूने तक़ब्बुर किया या वाकई तू बड़े दरजे वालें में है (75)

इबलीस बोल उठा कि मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से पैदा किया और इसको तूने गीली मिट्टी से पैदा किया (76)

(कहाँ आग कहाँ मिट्टी) ख़ुदा ने फरमाया कि तू यहाँ से निकल (दूर हो) तू यक़ीनी मरदूद है (77)

और तुझ पर रोज़ जज़ा (क़यामत) तक मेरी फिटकार पड़ा करेगी (78)

शैतान ने अर्ज़ की परवरदिगार तू मुझे उस दिन तक की मोहलत अता कर जिसमें सब लोग (दोबारा) उठा खड़े किए जायेंगे (79)

फरमाया तुझे एक वक्त मुअय्यन के दिन तक की मोहलत दी गयी (80)

वह बोला तेरी ही इज़्ज़त व जलाल की क़सम (81)

उनमें से तेरे ख़ालिस बन्दों के सिवा सब के सब को ज़रूर गुमराह करूँगा (82)

ख़ुदा ने फरमाया तो (हम भी) हक़ बात (कहे देते हैं) (83)

और मैं तो हक़ ही कहा करता हूँ (84)

कि मैं तुझसे और जो लोग तेरी ताबेदारी करेंगे उन सब से जहन्नुम को ज़रूर भरूँगा (85)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो तुमसे न इस (तबलीग़े रिसालत) की मज़दूरी माँगता हूँ और न मैं (झूठ मूठ) बनावट करने वाला हूँ (86)

ये (क़ुरान) तो बस सारे जहाँन के लिए नसीहत है (87)

और कुछ दिनों बाद तुमको इसकी हक़ीकत मालूम हो जाएगी (88)

39 सूरह ज़ु.मर

सूरह ज़ु.मर मक्का में नाज़िल हुई और उसकी पचहत्तर (75) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(इस) किताब (क़ुरान) का नाज़िल करना उस ख़ुदा की बारगाह से है जो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है (1)

(ऐ रसूल) हमने किताब (क़ुरान) को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया है तो तुम इबादत को उसी के लिए निरा खुरा करके ख़ुदा की बन्दगी किया करो (2)

आगाह रहो कि इबादत तो ख़ास ख़ुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (औरों को अपना) सरपरस्त बना रखा है और कहते हैं कि हम तो उनकी परसतिश सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये लोग ख़ुदा की बारगाह में हमारा तक़र्रुब बढ़ा देगें इसमें शक नहीं कि जिस बात में ये लोग झगड़ते हैं (क़यामत के दिन) ख़ुदा उनके दरम्यिान इसमें फ़ैसला कर देगा बेशक ख़ुदा झूठे नाशुक्रे को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (3)

अगर ख़ुदा किसी को (अपना) बेटा बनाना चाहता तो अपने मख़लूक़ात में से जिसे चाहता मुन्तखिब कर लेता (मगर) वह तो उससे पाक व पाकीज़ा है वह तो यकता बड़ा ज़बरदस्त अल्लाह है (4)
उसी ने सारे आसमान और ज़मीन को बजा (दुरूस्त) पैदा किया वही रात को दिन पर ऊपर तले लपेटता है और वही दिन को रात पर तह ब तह लपेटता है और उसी ने आफताब और महताब को अपने बस में कर लिया है कि ये सबके सब अपने (अपने) मुक़र्रर वक़्त चलते रहेगें आगाह रहो कि वही ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है (5)

उसी ने तुम सबको एक ही शख़्स से पैदा किया फिर उस (की बाक़ी मिट्टी) से उसकी बीबी (हौव्वा) को पैदा किया और उसी ने तुम्हारे लिए आठ क़िस्म के चारपाए पैदा किए वही तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में एक क़िस्म की पैदाइश के बाद दूसरी क़िस्म (नुत्फे जमा हुआ ख़ून लोथड़ा) की पैदाइश से तेहरे तेहरे अँधेरों (पेट) रहम और झिल्ली में पैदा करता है वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की बादशाही है उसके सिवा माबूद नहीं तो तुम लोग कहाँ फिरे जाते हो (6)

अगर तुमने उसकी नाशुक्री की तो (याद रखो कि) ख़ुदा तुमसे बिल्कुल बेपरवाह है और अपने बन्दों से कुफ्र और नाशुक्री को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते पसन्द करता है और (क़यामत में) कोई किसी (के गुनाह) का बोझ (अपनी गर्दन पर) नहीं उठाएगा

फिर तुमको अपने परवरदिगार की तरफ लौटना है तो (दुनिया में) जो कुछ (भला बुरा) करते थे वह तुम्हें बता देगा वह यक़ीनन दिलों के राज़ (तक) से ख़ूब वाक़िफ़ है (7)

और आदमी (की हालत तो ये है कि) जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ रूजू करके अपने परवरदिगार से दुआ करता है (मगर) फिर जब ख़ुदा अपनी तरफ से उसे नेअमत अता फ़रमा देता है तो जिस काम के लिए पहले उससे दुआ करता था उसे भुला देता है और बल्कि ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (उस ज़रिए से और लोगों को भी) उसकी राह से गुमराह कर दे (ऐ रसूल ऐसे शख़्स से) कह दो कि थोड़े दिनों और अपने कुफ्र (की हालत) में चैन कर लो (8)

(आख़िर) तू यक़ीनी जहन्नुमियों में होगा क्या जो शख़्स रात के अवक़ात में सजदा करके और खड़े-खड़े (ख़ुदा की) इबादत करता हो और आख़ेरत से डरता हो अपने परवरदिगार की रहमत का उम्मीदवार हो (नाशुक्रे) काफिर के बराबर हो सकता है (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि भला कहीं जानने वाले और न जाननेवाले लोग बराबर हो सकते हैं (मगर) नसीहत इबरतें तो बस अक्लमन्द ही लोग मानते हैं (9)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे ईमानदार बन्दों अपने परवरदिगार (ही) से डरते रहो (क्योंकि) जिन लोगों ने इस दुनिया में नेकी की उन्हीं के लिए (आख़ेरत में) भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन तो कुशादा है (जहाँ इबादत न कर सको उसे छोड़ दो) सब्र करने वालों ही की तो उनका भरपूर बेहिसाब बदला दिया जाएगा (10)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं इबादत को उसके लिए ख़ास करके ख़ुदा ही की बन्दगी करो (11)

और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहल मुसलमान हूँ (12)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़ी (सख़्त) दिन (क़यामत) के अज़ाब से डरता हूँ (13)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं अपनी इबादत को उसी के वास्ते ख़ालिस करके ख़ुदा ही की बन्दगी करता हूँ (अब रहे तुम) तो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो (14)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फिल हक़ीक़त घाटे में वही लोग हैं जिन्होंने अपना और अपने लड़के वालों का क़यामत के दिन घाटा किया आगाह रहो कि सरीही (खुल्लम खुल्ला) घाटा यही है कि उनके लिए उनके ऊपर से आग ही के ओढ़ने होगें (15)

और उनके नीचे भी (आग ही के) बिछौने ये वह अज़ाब है जिससे ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों मुझी से डरते रहो (16)

और जो लोग बुतों से उनके पूजने से बचे रहे और अल्लाह ही की तरफ रूजु की उनके लिए (जन्नत की) ख़ुशख़बरी है (17)

तो (ऐ रसूल) तुम मेरे (ख़ास) बन्दों को ख़ुशख़बरी दे दो जो बात को जी लगाकर सुनते हैं और फिर उसमें से अच्छी बात पर अमल करते हैं यही वह लोग हैं जिनकी ख़ुदा ने हिदायत की और यही लोग अक्लमन्द हैं (18)

तो (ऐ रसूल) भला जिस शख़्स पर अज़ाब का वायदा पूरा हो चुका हो तो क्या तुम उस शख़्स की ख़लासी दे सकते हो (19)

जो आग में (पड़ा) हो मगर जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके ऊँचे-ऊँचे महल हैं (और) बाला ख़ानों पर बालाख़ाने बने हुए हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं ये ख़ुदा का वायदा है (और) वायदा ख़िलाफी नहीं किया करता (20)

क्या तुमने इस पर ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में चश्में बनाकर जारी किया फिर उसके ज़रिए से रंग बिरंग (के गल्ले) की खेती उगाता है फिर (पकने के बाद) सूख जाती है तो तुम को वह ज़र्द दिखायी देती है फिर ख़ुदा उसे चूर-चूर भूसा कर देता है बेशक इसमें अक्लमन्दों के लिए (बड़ी) इबरत व नसीहत है (21)

तो क्या वह शख़्स जिस के सीने को ख़ुदा ने (क़ुबूल) इस्लाम के लिए कुशादा कर दिया है तो वह अपने परवरदिगार (की हिदायत) की रौशनी पर (चलता) है मगर गुमराहों के बराबर हो सकता है अफसोस तो उन लोगों पर है जिनके दिल ख़ुदा की याद से (ग़ाफ़िल होकर) सख़्त हो गए हैं (22)

ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े) हैं अल्लाह ने बहुत ही अच्छा कलाम (यावी ये) किताब नाज़िल फरमाई (जिसकी आयतें) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और (एक बात कई-कई बार) दोहराई गयी है उसके सुनने से उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने परवरदिगार से डरते हैं फिर उनके जिस्म नरम हो जाते हैं और उनके दिल ख़ुदा की याद की तरफ बा इतमेनान मुतावज्जे हो जाते हैं ये ख़ुदा की हिदायत है इसी से जिसकी चाहता है हिदायत करता है और ख़ुदा जिसको गुमराही में छोड़ दे तो उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं (23)

तो क्या जो शख़्स क़यामत के दिन अपने मुँह को बड़े अज़ाब की सिपर बनाएगा (नाज़ी के बराबर हो सकता है) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि तुम (दुनिया में) जैसा कुछ करते थे अब उसके मज़े चखो (24)

जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो उन पर अज़ाब इस तरह आ पहुँचा कि उन्हें ख़बर भी न हुयी (25)

तो ख़ुदा ने उन्हें (इसी) दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई की लज़्ज़त चखा दी और आख़ेरत का अज़ाब तो यक़ीनी उससे कहीं बढ़कर है काश ये लोग ये बात जानते (26)

और हमने तो इस क़ुरान में लोगों के (समझाने के) वास्ते हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें (27)

(हम ने तो साफ और सलीस) एक अरबी क़ुरान (नाज़िल किया) जिसमें ज़रा भी कजी (पेचीदगी) नहीं (28)

ताकि ये लोग (समझकर) ख़ुदा से डरे अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है कि एक शख़्स (ग़ुलाम) है जिसमें कई झगड़ालू साझी हैं और एक ज़ालिम है कि पूरा एक शख़्स का है उन दोनों की हालत यकसाँ हो सकती हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें अक्सर इतना भी नहीं जानते (29)

(ऐ रसूल) बेशक तुम भी मरने वाले हो (30)

और ये लोग भी यक़ीनन मरने वाले हैं फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने परवरदिगार की बारगाह में बाहम झगड़ोगे (31)

तो इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ (तूफान) बाँधे और जब उसके पास सच्ची बात आए तो उसको झुठला दे क्या जहन्नुम में काफिरों का ठिकाना नहीं है (32)

(ज़रूर है) और याद रखो कि जो शख़्स (रसूल) सच्ची बात लेकर आया वह और जिसने उसकी तसदीक़ की यही लोग तो परहेज़गार हैं (33)

ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए परवर दिगार के पास (मौजूद) है, ये नेकी करने वालों की जज़ाए ख़ैर है (34)

ताकि अल्लाह उन लोगों की बुराइयों को जो उन्होने की हैं दूर कर दे और उनके अच्छे कामों के एवज़ जो वह कर चुके थे उसका अज्र (सवाब) अता फरमाए (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दों (की मदद) के लिए काफ़ी नहीं है (ज़रूर है) और (ऐ रसूल) तुमको लोग अल्लाह के सिवा (दूसरे माबूदों) से डराते हैं और अल्लाह जिसे गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं है (36)

और जिस शख़्स की हिदायत करे तो उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ज़बरदस्त और बदला लेने वाला नहीं है (ज़रूर है) (37)

और (ऐ रसूल) अगर तुम इनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो ये लोग यक़ीनन कहेंगे कि अल्लाह ने, तुम कह दो कि तो क्या तुमने ग़ौर किया है कि अल्लाह को छोड़ कर जिन लोगों की तुम इबादत करते हो अगर अल्लाह मुझे कोई तक़लीफ पहुँचाना चाहे तो क्या वह लोग उसके नुक़सान को (मुझसे) रोक सकते हैं या अगर अल्लाह मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो क्या वह लोग उसकी मेहरबानी रोक सकते हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं (38)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) अमल किए जाओ मै (39)

भी (अपनी जगह) कुछ कर रहा हूँ, फिर अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह आफत आती है जो उसको (दुनिया में) रूसवा कर देगी और (आख़िर में) उस पर दायमी अज़ाब भी नाज़िल होगा (40)

(ऐ रसूल) हमने तुम्हारे पास (ये) किताब (क़ुरान) सच्चाई के साथ लोगों (की हिदायत) के वास्ते नाज़िल की है, पस जो राह पर आया तो अपने ही (भले के) लिए और जो गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल भी उसी पर है और फिर तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार तो हो नहीं (41)

अल्लाह ही लोगों के मरने के वक्त उनकी रूहें (अपनी तरफ़) खींच बुलाता है और जो लोग नहीं मरे (उनकी रूहें) उनकी नींद में (खींच ली जाती हैं) बस जिन के बारे में अल्लाह मौत का हुक्म दे चुका है उनकी रूहों को रोक रखता है और बाक़ी (सोने वालों की रूहों) को फिर एक मुक़र्रर वक्त तक के वास्ते भेज देता है जो लोग (ग़ौर) और फिक्र करते हैं उनके लिए (क़ुदरते अल्लाह की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं (42)

क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवा (दूसरे) सिफारिशी बना रखे है (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगरचे वह लोग न कुछ एख़्तेयार रखते हों न कुछ समझते हों (43)

(तो भी सिफारिशी बनाओगे) तुम कह दो कि सारी सिफारिश तो अल्लाह के लिए ख़ास है- सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत उसी के लिए ख़ास है, फिर तुम लोगों को उसकी तरफ लौट कर जाना है (44)

और जब सिर्फ अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुतनफ़िफ़र हो जाते हैं और जब अल्लाह के सिवा और (माबूदों) का ज़िक्र किया जाता है तो बस फौरन उनकी बाछें खिल जाती हैं (45)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ अल्लाह (ऐ) सारे आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले, ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले हक़ बातों में तेरे बन्दे आपस में झगड़ रहे हैं तू ही उनके दरमियान फैसला कर देगा (46)

और अगर नाफरमानों के पास रूए ज़मीन की सारी काएनात मिल जाएग बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी हो तो क़यामत के दिन ये लोग यक़ीनन सख़्त अज़ाब का फ़िदया दे निकलें (और अपना छुटकारा कराना चाहें) और (उस वक़्त) उनके सामने अल्लाह की तरफ से वह बात पेश आएगी जिसका उन्हें वहम व गुमान भी न था (47)

और जो बदकिरदारियाँ उन लोगों ने की थीं (वह सब) उनके सामने खुल जाएँगीं और जिस (अज़ाब) पर यह लोग क़हक़हे लगाते थे वह उन्हें घेरेगा (48)

इन्सान को तो जब कोई बुराई छू गयी बस वह लगा हमसे दुआएँ माँगने, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअमत अता करते हैं तो कहने लगता है कि ये तो सिर्फ़ (मेरे) इल्म के ज़ोर से मुझे दिया गया है (ये ग़लती है) बल्कि ये तो एक आज़माइश है मगर उन में के अक्सर नहीं जानते हैं (49)

जो लोग उनसे पहले थे वह भी ऐसी बातें बका करते थे फिर (जब हमारा अज़ाब आया) तो उनकी कारस्तानियाँ उनके कुछ भी काम न आई (50)

ग़रज़ उनके आमाल के बुरे नतीजे उन्हें भुगतने पड़े और उन (कुफ़्फ़ारे मक्का) में से जिन लोगों ने नाफरमानियाँ की हैं उन्हें भी अपने अपने आमाल की सज़ाएँ भुगतनी पड़ेंगी और ये लोग (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते (51)

क्या उन लोगों को इतनी बात भी मालूम नहीं कि अल्लाह ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी फराख़ करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है इसमें शक नहीं कि क्या इसमें इमानदार लोगों के (कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं (52)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे (ईमानदार) बन्दों जिन्होने (गुनाह करके) अपनी जानों पर ज़्यादतियाँ की हैं तुम लोग अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न होना बेशक अल्लाह (तुम्हारे) कुल गुनाहों को बख़्श देगा वह बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (53)

और अपने परवरदिगार की तरफ रूजू करो और उसी के फरमाबरदार बन जाओ (मगर) उस वक्त के क़ब्ल ही कि तुम पर जब अज़ाब आ नाज़िल हो (और) फिर तुम्हारी मदद न की जा सके (54)

और जो जो अच्छी बातें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हई हैं उन पर चलो (मगर) उसके क़ब्ल कि तुम पर एक बारगी अज़ाब नाज़िल हो और तुमको उसकी ख़बर भी न हो (55)

(कहीं ऐसा न हो कि) (तुममें से) कोई शख़्स कहने लगे कि हाए अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैने अल्लाह (की बारगाह) का तक़र्रुब हासिल करने में की और मै तो बस उन बातों पर हँसता ही रहा (56)

या ये कहने लगे कि अगर अल्लाह मेरी हिदायत करता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता (57)

या जब अज़ाब को (आते) देखें तो कहने लगे कि काश मुझे (दुनिया में) फिर दोबारा जाना मिले तो मैं नेकी कारों में हो जाऊँ (58)

उस वक्त अल्लाह कहेगा (हाँ) हाँ तेरे पास मेरी आयतें पहुँची तो तूने उन्हें झुठलाया और शेख़ी कर बैठा और तू भी काफिरों में से था (अब तेरी एक न सुनी जाएगी) (59)

और जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठे बोहतान बाँधे - तुम क़यामत के दिन देखोगे उनके चेहरे सियाह होंगें क्या गुरूर करने वालों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (ज़रूर है) (60)

और जो लोग परहेज़गार हैं अल्लाह उन्हें उनकी कामयाबी (और सआदत) के सबब निजात देगा कि उन्हें तकलीफ छुएगी भी नहीं और न यह लोग (किसी तरह) रंजीदा दिल होंगे (61)

अल्लाह ही हर चीज़ का जानने वाला है और वही हर चीज़ का निगेहबान है (62)

सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास है और जो लोग उसकी आयतों से इन्कार कर बैठें वही घाटे में रहेगें (63)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि नादानों भला तुम मुझसे ये कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत करूँ (64)

और (ऐ रसूल) तुम्हारी तरफ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ जो तुमसे पहले हो चुके हैं यक़ीनन ये वही भेजी जा की है कि अगर (कहीं) शिर्क किया तो यक़ीनन तुम्हारे सारे अमल अकारत हो जाएँगे (65)

और तुम तो ज़रूर घाटे में आ जाओगे (65)

बल्कि तुम अल्लाह ही कि इबादत करो और शुक्र गुज़ारों में हो (66)

और उन लोगों ने अल्लाह की जैसी क़द्र दानी करनी चाहिए थी उसकी (कुछ भी) कद्र न की हालाँकि (वह ऐसा क़ादिर है कि) क़यामत के दिन सारी ज़मीन (गोया) उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमान (गोया) उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए हैं जिसे ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाकीज़ा और बरतर है (67)

और जब (पहली बार) सूर फूँका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगें) मगर (हाँ) जिस को अल्लाह चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा) फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौरन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगें (68)

और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और (आमाल की) किताब (लोगों के सामने) रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह ला हाज़िर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़र्रा बराबर) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (69)

और जिस शख़्स ने जैसा किया हो उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (70)

और जो लोग काफिर थे उनके ग़ोल के ग़ोल जहन्नुम की तरफ हॅकाए जाएँगे और यहाँ तक की जब जहन्नुम के पास पहुँचेगें तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएगें और उसके दरोग़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम लोगों में के पैग़म्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे परवरदिगार की आयतें

पढ़कर सुनाते और तुमको इस रोज़ (बद) के पेश आने से डराते वह लोग जवाब देगें कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अज़ाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगा (71)

(तब उनसे) कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाज़ों में धँसो और हमेशा इसी में रहो ग़रज़ तकब्बुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है (72)

और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिर्दो गिर्दा (गिरोह गिरोह) बेहिश्त की तरफ़ (एजाज़ व इकराम से) बुलाए जाएगें यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेगें और बेहिश्त के दरवाज़े खोल दिये जाएँगें और उसके निगेहबान उन से कहेंगें सलाम अलै कुम तुम अच्छे रहे, तुम बेहिश्त में हमेशा के लिए दाखि़ल हो जाओ (73)

और ये लोग कहेंगें अल्लाह का शुक्र जिसने अपना वायदा हमसे सच्चा कर दिखाया और हमें (बेहिश्त की) सरज़मीन का मालिक बनाया कि हम बेहिश्त में जहाँ चाहें रहें तो नेक चलन वालों की भी क्या ख़ूब (खरी) मज़दूरी है (74)

और (उस दिन) फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्दा गिर्द घेरे हुए डटे होंगे और अपने परवरदिगार की तारीफ की (तसबीह) कर रहे होंगे और लोगों के दरम्यािन ठीक फैसला कर दिया जाएगा और (हर तरफ से यही) सदा बुलन्द होगी अल्हमदो लिल्लाहे रबबिल आलेमीन (75)

40 सूरह मोमिन

सूरह मोमिन मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (85) पिच्चासी आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

(इस) किताब (कुरान) का नाज़िल करना (ख़ास बारगाहे) ख़ुदा से है जो (सबसे) ग़ालिब बड़ा वाक़िफ़कार है (2)

गुनाहों का बख़्शने वाला और तौबा का क़ुबूल करने वाला सख़्त अज़ाब देने वाला साहिबे फज़ल व करम है उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी की तरफ (सबको) लौट कर जाना है (3)

ख़ुदा की आयतों में बस वही लोग झगड़े पैदा करते हैं जो काफिर हैं तो (ऐ रसूल) उन लोगों का शहरों (शहरों) घूमना फिरना और माल हासिल करना (4)

तुम्हें इस धोखे में न डाले (कि उन पर आज़ाब न होगा) इन के पहले नूह की क़ौम ने और उन के बाद और उम्मतों ने (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बरों के बारे में यही ठान लिया कि उन्हें गिरफ़्तार कर (के क़त्ल कर डालें) और बेहूदा बातों की आड़ पकड़ कर लड़ने लगें - ताकि उसके ज़रिए से हक़ बात को उखाड़ फेंकें तो मैंने, उन्हें गिरफ्तार कर लिया फिर देखा कि उन पर (मेरा अज़ाब कैसा (सख़्त हुआ) (5)

और इसी तरह तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब का हुक्म (उन) काफ़िरों पर पूरा हो चुका है कि यह लोग यक़ीनी जहन्नुमी हैं (6)

जो (फ़रिश्ते) अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के गिर्दा गिर्द (तैनात) हैं (सब) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़्शिश की दुआएं माँगा करते हैं कि परवरदिगार तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ पर अहाता किए हुए हैं, तो जिन लोगों ने (सच्चे) दिल से तौबा कर ली और तेरे रास्ते पर चले उनको बख़्श दे और उनको जहन्नुम के अज़ाब से बचा ले (7)

ऐ हमारे पालने वाले इन को सदाबहार बाग़ों में जिनका तूने उन से वायदा किया है दाख़िल कर और

उनके बाप दादाओं और उनकी बीवीयों और उनकी औलाद में से जो लोग नेक हो उनको (भी बख़्श दें) बेशक तू ही ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है (8)

और उनको हर किस्म की बुराइयों से महफूज़ रख और जिसको तूने उस दिन (कयामत) के अज़ाबों से बचा लिया उस पर तूने बड़ा रहम किया और यही तो बड़ी कामयाबी है (9)

(हाँ) जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उनसे पुकार कर कह दिया जाएगा कि जितना तुम (आज) अपनी जान से बेज़ार हो उससे बढ़कर ख़ुदा तुमसे बेज़ार था जब तुम ईमान की तरफ बुलाए जाते थे तो कुफ्र करते थे (10)

वह लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार तू हमको दो बार मार चुका और दो बार ज़िन्दा कर चुका तो अब हम अपने गुनाहों का एक़रार करते हैं तो क्या (यहाँ से) निकलने की भी कोई सबील है (11)

ये इसलिए कि जब तन्हा ख़ुदा पुकारा जाता था तो तुम ईन्कार करते थे और अगर उसके साथ शिर्क किया जाता था तो तुम मान लेते थे तो (आज) ख़ुदा की हुकूमत है जो आलीशान (और) बुर्ज़ुग है (12)

वही तो है जो तुमको (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी नाज़िल करता है और नसीहत तो बस वही हासिल करता है जो (उसकी तरफ) रूजू करता है (13)

पस तुम लोग ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस करके उसी को पुकारो अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा मानें (14)

ख़ुदा तो बड़ा आली मरतबा अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से 'वही' नाज़िल करता है ताकि (लोगों को) मुलाकात (क़यामत) के दिन से डराएं (15)

जिस दिन वह लोग (क़ब्रों) से निकल पड़ेंगे (और) उनको कोई चीज़ ख़ुदा से पोशीदा नहीं रहेगी (और निदा आएगी) आज किसकी बादशाहत है (फिर ख़ुदा ख़ुद कहेगा) ख़ास ख़ुदा की जो अकेला (और) ग़ालिब है (16)

आज हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाएगा, आज किसी पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा बेशक ख़ुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (17)

(ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस दिन से डराओ जो अनक़रीब आने वाला है जब लोगों के कलेजे

घुट घुट के (मारे डर के) मुँह को आ जाएंगें (उस वक्त) न तो सरकशों का कोई सच्चा दोस्त होगा और न कोई ऐसा सिफारिशी जिसकी बात मान ली जाए (18)

ख़ुदा तो आँखों की दुज़दीदा निगाह को भी जानता है और उन बातों को भी जो (लोगों के) सीनों में पोशीदा है (19)

और ख़ुदा ठीक ठीक हुक्म देता है, और उसके सिवा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं वह तो कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते, इसमें शक नहीं कि ख़ुदा सुनने वाला देखने वाला है (20)

क्या उन लोगों ने रूए ज़मीन पर चल फिर कर नहीं देखा कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम क्या हुआ (हालाँकि) वह लोग कुवत (शान और उम्र सब) में और ज़मीन पर अपनी निशानियाँ (यादगारें इमारतें) वग़ैरह छोड़ जाने में भी उनसे कहीं बढ़ चढ़ के थे तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों की वजह से उनकी ले दे की, और ख़ुदा (के ग़ज़ब से) उनका कोई बचाने वाला भी न था (21)

ये इस सबब से कि उनके पैग़म्बरान उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े ले कर आए इस पर भी उन लोगों ने न माना तो ख़ुदा ने उन्हें ले डाला इसमें तो शक ही नहीं कि वह क़वी (और) सख़्त अज़ाब वाला है (22)

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलीलें देकर (23)

फिरआऊन और हामान और क़ारून के पास भेजा तो वह लोग कहने लगे कि (ये तो) एक बड़ा झूठा (और) जादूगर है (24)

ग़रज़ जब मूसा उन लोगों के पास हमारी तरफ से सच्चा दीन ले कर आये तो वह बोले कि जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उनके बेटों को तो मार डालों और उनकी औरतों को (लौनडिया बनाने के लिए) ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों की तद्बीरें तो बे ठिकाना होती हैं (25)

और फिरआऊन कहने लगा मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को तो क़त्ल कर डालूँ, और (मैं देखूँ) अपने परवरदिगार को तो अपनी मदद के लिए बुलालें (भाईयों) मुझे अन्देशा है कि (मुबादा) तुम्हारे दीन को उलट पुलट कर डाले या मुल्क में फसाद पैदा कर दें (26)

और मूसा ने कहा कि मैं तो हर मुताकब्बिर से जो हिसाब के दिन (क़यामत पर ईमान नहीं लाता) अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूँ (27)

और फिरआऊन के लोगों में एक ईमानदार शख़्स (हिज़कील) ने जो अपने ईमान को छिपाए रहता था (लोगों से कहा) कि क्या तुम लोग ऐसे शख़्स के क़त्ल के दरपै हो जो (सिर्फ) ये कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है) हालाँकि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास मौजिज़े लेकर आया और अगर (बिल ग़रज़) ये शख़्स झूठा है तो इसके झूठ का बवाल इसी पर पड़ेगा और अगर यह कहीं सच्चा हुआ तो जिस (अज़ाब की) तुम्हें ये धमकी देता है उसमें से कुछ तो तुम लोगों पर ज़रूर वाक़ेए होकर रहेगा बेशक ख़ुदा उस शख़्स की हिदायत नहीं करता जो हद से गुज़रने वाला (और) झूठा हो (28)

ऐ मेरी क़ौम आज तो (बेशक) तुम्हारी बादशाहत है (और) मुल्क में तुम्हारा ही बोल बाला है लेकिन (कल) अगर ख़ुदा का अज़ाब हम पर आ जाए तो हमारी कौन मदद करेगा फिरआऊन ने कहा मैं तो वही बात समझाता हूँ जो मैं ख़ुद समझता हूँ और वही राह दिखाता हूँ जिसमें भलाई है (29)

तो जो शख़्स (दर पर्दा) ईमान ला चुका था कहने लगा, भाईयों मुझे तो तुम्हारी निस्बत भी और उम्मतों की तरह रोज़ (बद) का अन्देशा है (30)

(कहीं तुम्हारा भी वही हाल न हो) जैसा कि नूह की क़ौम और आद समूद और उनके बाद वाले लोगों का हाल हुआ और ख़ुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना चाहता ही नहीं (31)

और ऐ हमारी क़ौम मुझे तो तुम्हारी निस्बत कयामत के दिन का अन्देशा है (32)

जिस दिन तुम पीठ फेर कर (जहन्नुम) की तरफ चल खड़े होगे तो ख़ुदा के (अज़ाब) से तुम्हारा बचाने वाला न होगा, और जिसको ख़ुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई रूबराह करने वाला नहीं (33)

और (इससे) पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास मौजिज़े लेकर आए थे तो जो जो लाए थे तुम लोग उसमें बराबर शक ही करते रहे यहाँ तक कि जब उन्होने वफात पायी तो तुम कहने लगे कि अब उनके बाद ख़ुदा हरगिज़ कोई रसूल नहीं भेजेगा जो हद से गुज़रने वाला और शक करने वाला है ख़ुदा उसे यू हीं गुमराही में छोड़ देता है (34)

जो लोग बग़ैर इसके कि उनके पास कोई दलील आई हो ख़ुदा की आयतों में (ख़्वाह मा ख़्वाह) झगड़े किया करते हैं वह ख़ुदा के नज़दीक और इमानदारों के नज़दीक सख़्त नफरत खेज़ हैं, यूँ ख़ुदा हर मुतकब्बिर सरकश के दिल पर अलामत मुक़र्रर कर देता है (35)

और फिरआऊन ने कहा ऐ हामान हमारे लिए एक महल बनवा दे ताकि (उस पर चढ़ कर) रसतों पर पहुँच जाऊ (36)

(यानि) आसमानों के रसतों पर फिर मूसा के ख़ुदा को झांक कर (देख) लूँ और मैं तो उसे यक़ीनी झूठा समझता हूँ, और इसी तरह फिरआऊन की बदकिरदारयाँ उसको भली करके दिखा दी गयीं थीं और वह राहे रास्ता से रोक दिया गया था, और फिरआऊन की तद्बीर तो बस बिल्कुल ग़ारत गुल ही थीं (37)

और जो शख़्स (दर पर्दा) ईमानदार था कहने लगा भाईयों मेरा कहना मानों मैं तुम्हें हिदायत के रास्ते दिख दूंगा (38)

भाईयों ये दुनियावी ज़िन्दगी तो बस (चन्द रोज़ा) फ़ायदा है और आख़ेरत ही हमेशा रहने का घर है (39)

जो बुरा काम करेगा तो उसे बदला भी वैसा ही मिलेगा, और जो नेक काम करेगा मर्द हो या औरत मगर ईमानदार हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में दाख़िल होंगे वहाँ उन्हें बेहिसाब रोज़ी मिलेगी (40)

और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुआ है कि मैं तुमको नजाद की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे दोज़ख़ की तरफ बुलाते हो (41)

तुम मुझे बुलाते हो कि मै ख़ुदा के साथ कुफ्र करूं और उस चीज़ को उसका शरीक बनाऊ जिसका मुझे इल्म में भी नहीं, और मैं तुम्हें ग़ालिब (और) बड़े बख़्शने वाले ख़ुदा की तरफ बुलाता हूँ (42)

बेशक तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझे बुलाते हो वह न तो दुनिया ही में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आख़िरत में और आख़िर में हम सबको ख़ुदा ही की तरफ लौट कर जाना है और इसमें तो शक ही नहीं कि हद से बढ़ जाने वाले जहन्नुमी हैं (43)

तो जो मैं तुमसे कहता हूँ अनक़रीब ही उसे याद करोगे और मैं तो अपना काम ख़ुदा ही को सौंपे देता हूँ कुछ शक नहीं की ख़ुदा बन्दों (के हाल) को ख़ूब देख रहा है (44)

तो ख़ुदा ने उसे उनकी तद्बीरों की बुराई से महफ़ूज़ रखा और फिरऔनियों को बड़े अज़ाब ने (हर तरफ) से घेर लिया (45)

और अब तो कब्र में दोज़ख़ की आग है कि वह लोग (हर) सुबह व शाम उसके सामने ला खड़े

किए जाते हैं और जिस दिन क़यामत बरपा होगी (हुक्म होगा) फिरआऊन के लोगों को सख़्त से सख़्त अज़ाब में झोंक दो (46)

और ये लोग जिस वक़्त जहन्नुम में बाहम झगड़ेंगें तो कम हैसियत लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम इस वक़्त (दोज़ख़ की) आग का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो (47)

तो बड़े लोग कहेंगें (अब तो) हम (तुम) सबके सब आग में पड़े हैं ख़ुदा (को) तो बन्दों के बारे में (जो कुछ) फैसला (करना था) कर चुका (48)

और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे जहन्नुम के दरोग़ाओं से दरख़्वास्त करेंगे कि अपने परवरदिगार से अर्ज़ करो कि एक दिन तो हमारे अज़ाब में तख़फ़ीफ़ कर दें (49)

वह जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर साफ व रौशन मौजिज़े लेकर नहीं आए थे वह कहेंगे (हाँ) आए तो थे, तब फरिश्ते तो कहेंगे फिर तुम ख़ुद (क्यों) न दुआ करो, हालाँकि काफ़िरों की दुआ तो बस बेकार ही है (50)

हम अपने पैग़म्बरों की और इमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी ज़रूर मदद करेंगे और जिस दिन गवाह (पैग़म्बर फरिश्ते गवाही को) उठ खड़े होंगे (51)

(उस दिन भी) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़ेरत कुछ भी फायदे न देगी और उन पर फिटकार (बरसती) होगी और उनके लिए बहुत बुरा घर (जहन्नुम) है (52)

और हम ही ने मूसा को हिदायत (की किताब तौरेत) दी और बनी इसराईल को (उस) किताब का वारिस बनाया (53)

जो अक़्लमन्दों के लिए (सरतापा) हिदायत व नसीहत है (54)

(ऐ रसूल) तुम (उनकी शरारत) पर सब्र करो बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है, और अपने (उम्मत की) गुनाहों की माफी माँगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की हम्द व सना के साथ तसबीह करते रहो (55)

जिन लोगों के पास (ख़ुदा की तरफ से) कोई दलील तो आयी नहीं और (फिर) वह ख़ुदा की आयतों में (ख़्वाह मा ख़्वाह) झगड़े निकालते हैं, उनके दिल में बुराई (की बेजां हवस) के सिवा कुछ

नहीं हालाँकि वह लोग उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं तो तुम बस ख़ुदा की पनाह माँगते रहो बेशक वह बड़ा सुनने वाला (और) देखने वाला है (56)

सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने की ये निस्बत यक़ीनी बड़ा (काम) है मगर अक्सर लोग (इतना भी) नहीं जानते (57)

और अँधा और आँख वाला (दोनों) बराबर नहीं हो सकते और न मोमिनीन जिन्होने अच्छे काम किए और न बदकार (ही) बराबर हो सकते हैं बात ये है कि तुम लोग बहुत कम ग़ौर करते हो, कयामत तो ज़रूर आने वाली है (58)

इसमें किसी तरह का शक नहीं मगर अक्सर लोग (इस पर भी) ईमान नहीं रखते (59)

और तुम्हारा परवरदिगार इरशाद फ़रमाता है कि तुम मुझसे दुआएं माँगों मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा जो लोग हमारी इबादत से अकड़ते हैं वह अनक़रीब ही ज़लील व ख़्वार हो कर यक़ीनन जहन्नुम वासिल होंगे (60)

ख़ुदा ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को रौशन (बनाया) तकि काम करो बेशक ख़ुदा लोगों परा बड़ा फज़ल व करम वाला है, मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं अदा करते (61)

यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है जो हर चीज़ का ख़ालिक़ है, और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो (62)

जो लोग ख़ुदा की आयतों से इन्कार रखते थे वह इसी तरह भटक रहे थे (63)

अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे वास्ते ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो अच्छी सूरतें बनायीं और उसी ने तुम्हें साफ सुथरी चीजें खाने को दीं यही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है तो ख़ुदा बहुत ही मुतबर्रिक है जो सारे जहाँन का पालने वाला है (64)

वही (हमेशा) ज़िन्दा है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो निरी खरी उसी की इबादत करके उसी से ये दुआ माँगो, सब तारीफ ख़ुदा ही को सज़ावार है और जो सारे जहाँन का पालने वाला है (65)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जब मेरे पास मेरे परवरदिगार की बारगाह से खुले हुए मौजिज़े आ चुके

तो मुझे इस बात की मनाही कर दी गयी है कि ख़ुदा को छोड़ कर जिनको तुम पूजते हो मैं उनकी परसतिश करूँ और मुझे तो यह हुक्म हो चुका है कि मैं सारे जहाँन के पालने वाले का फरमाबरदार बनु (66)

वही वह ख़ुदा है जिसने तुमको पहले (पहल) मिटटी से पैदा किया फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए ख़ून फिर तुमको बच्चा बनाकर (माँ के पेट) से निकलता है (ताकि बढ़ों) फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो फिर (और ज़िन्दा रखता है ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुममें से कोई ऐसा भी है जो (इससे) पहले मर जाता है ग़रज़ (तुमको उस वक़्त तक ज़िन्दा रखता है) की तुम (मौत के) मुकर्रर वक़्त तक पहुँच जाओ (67)

और ताकि तुम (उसकी क़ुदरत को समझो) वह वही (ख़ुदा) है जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उससे कह देता है कि 'हो जा' तो वह फ़ौरन हो जाता है (68)

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों (की हालत) पर ग़ौर नहीं किया जो ख़ुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं (69)

ये कहाँ भटके चले जा रहे हैं, जिन लोगों ने किताबे (ख़ुदा) और उन बातों को जो हमने पैग़म्बरों को देकर भेजा था झुठलाया तो बहुत जल्द उसका नतीजा उन्हें मालूम हो जाएगा (70)

जब (भारी भारी) तौक़ और ज़ंजीरें उनकी गर्दनों में होंगी (और पहले) खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे (71)

फिर (जहन्नुम की) आग में झोंक दिए जाएँगे (72)

फिर उनसे पूछा जाएगा कि ख़ुदा के सिवा जिनको (उसका) शरीक बनाते थे (73)

(इस वक़्त) कहाँ हैं वह कहेंगे अब तो वह हमसे जाते रहे बल्कि (सच यूँ है कि) हम तो पहले ही से (ख़ुदा के सिवा) किसी चीज़ की परसतिश न करते थे यूँ ख़ुदा काफिरों को बौखला देगा (74)

(कि कुछ समझ में न आएगा) ये उसकी सज़ा है कि तुम दुनिया में नाहक (बात पर) निहाल थे और इसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे (75)

अब जहन्नुम के दरवाज़े में दाखि़ल हो जाओ (और) हमेशा उसी में (पड़े) रहो, ग़रज़ तकब्बुर करने वालों का भी (क्या) बुरा ठिकाना है (76)

तो (ऐ रसूल) तुम सब्र करो ख़ुदा का वायदा यक़ीनी सच्चा है तो जिस (अज़ाब) की हम उन्हें धमकी देते हैं अगर हम तुमको उसमें कुछ दिखा दें या तुम ही को (इसके क़ब्ल) दुनिया से उठा लें तो (आखि़र फिर) उनको हमारी तरफ लौट कर आना है, (77)

और तुमसे पहले भी हमने बहुत से पैग़म्बर भेजे उनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमसे बयान कर दिए, और कुछ ऐसे हैं जिनके हालात तुमसे नहीं दोहराए और किसी पैग़म्बर की ये मजाल न थी कि ख़ुदा के ऐख़्तेयार दिए बग़ैर कोई मौजिज़ा दिखा सकें फिर जब ख़ुदा का हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा तो ठीक ठीक फैसला कर दिया गया और अहले बातिल ही इस घाटे में रहे, (78)

ख़ुदा ही तो वह है जिसने तुम्हारे लिए चारपाए पैदा किए ताकि तुम उनमें से किसी पर सवार होते हो और किसी को खाते हो (79)

और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) फायदे हैं और ताकि तुम उन पर (चढ़ कर) अपनी दिली मक़सद तक पहुँचो और उन पर और (नीज़) कश्तियों पर सवार फिरते हो (80)

और वह तुमको अपनी (कुदरत की) निशानियाँ दिखाता है तो तुम ख़ुदा की किन किन निशानियों को न मानोगे (81)

तो क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं, तो देखते कि जो लोग इनसे पहले थे उनका क्या अंजाम हुआ, जो उनसे (तादाद में) कहीं ज़्यादा थे और क़ूवत और ज़मीन पर (अपनी) निशानियाँ (यादगारें) छोड़ने में भी कहीं बढ़ चढ़ कर थे तो जो कुछ उन लोगों ने किया कराया था उनके कुछ भी काम न आया (82)

फिर जब उनके पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े ले कर आए तो जो इल्म (अपने ख़्याल में) उनके पास था उस पर नाज़िल हुए और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाते थे उसी ने उनको चारों तरफ से घेर लिया (83)

तो जब इन लोगों ने हमारे अज़ाब को देख लिया तो कहने लगे, हम यकता ख़ुदा पर ईमान लाए और जिस चीज़ को हम उसका शरीक बनाते थे हम उनको नहीं मानते (84)

तो जब उन लोगों ने हमारा (अज़ाब) आते देख लिया तो अब उनका ईमान लाना कुछ भी फायदेमन्द

नहीं हो सकता (ये) ख़ुदा की आदत (है) जो अपने बन्दों के बारे में (सदा से) चली आती है और काफ़िर लोग इस वक़्त घाटे मे रहे (85)

41 सूरह हा मीम सजदा

सूरह हा मीम सजदा मक्का में नाज़िल हुई और इसमें चव्वन (54) आयतें और (6) रूकू हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

(ये किताब) रहमान व रहीम ख़ुदा की तरफ से नाज़िल हुयी है ये (वह) किताब अरबी क़ुरान है (2)

जिसकी आयतें समझदार लोगें के वास्ते तफ़सील से बयान कर दी गयीं हैं (3)

(नेको कारों को) ख़ुशख़बरी देने वाली और (बदकारों को) डराने वाली है इस पर भी उनमें से अक्सर ने मुँह फेर लिया और वह सुनते ही नहीं (4)

और कहने लगे जिस चीज़ की तरफ तुम हमें बुलाते हो उससे तो हमारे दिल पर्दों में हैं (कि दिल को नहीं लगती) और हमारे कानों में गिर्दानी (बहरापन है) कि कुछ सुनायी नहीं देता और हमारे तुम्हारे दरम्यिान एक पर्दा (हायल) है तो तुम (अपना) काम करो हम (अपना) काम करते हैं (5)

(ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी बस तुम्हारा ही सा आदमी हूँ (मगर फ़र्क ये है कि) मुझ पर 'वही' आती है कि तुम्हारा माबूद बस (वही) यकता ख़ुदा है तो सीधे उसकी तरफ मुतावज्जे रहो और उसी से बख़्शिश की दुआ माँगो, और मुशरेकों पर अफसोस है (6)

जो ज़कात नहीं देते और आख़ेरत के भी क़ायल नहीं (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे और उनके लिए वह सवाब है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं (8)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम उस (ख़ुदा) से इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और तुम (औरों को) उसका हमसर बनाते हो, यही तो सारे जहाँ का सरपरस्त है (9)

और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ पैदा किए और उसी ने इसमें बरकत अता की और

उसी ने एक मुनासिब अन्दाज़ पर इसमें सामाने माईशत का बन्दोबस्त किया (ये सब कुछ) चार दिन में और तमाम तलबगारों के लिए बराबर है (10)

फिर आसमान की तरफ मुतावज्जे हुआ और (उस वक़्त) धुएँ (का सा) था उसने उससे और ज़मीन से फरमाया कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से ख़्वाह कराहत से, दोनों ने अर्ज़ की हम ख़ुशी ख़ुशी हाज़िर हैं (11)

(और हुक्म के पाबन्द हैं) फिर उसने दोनों में उस (धुएँ) के सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसके (इन्तेज़ाम) का हुक्म (कार कुनान कज़ा व क़दर के पास) भेज दिया और हमने नीचे वाले आसमान को (सितारों के) चिराग़ों से मज़य्यन किया और (शैतानों से महफ़ूज़) रखा ये वाक़िफ़कार ग़ालिब ख़ुदा के (मुक़र्रर किए हुए) अन्दाज़ हैं (12)

फिर अगर हम पर भी ये कुफ्फार मुँह फेरें तो कह दो कि मैं तुम को ऐसी बिजली गिरने (के अज़ाब से) डराता हूँ जैसी क़ौम आद व समूद की बिजली की कड़क (13)

जब उनके पास उनके आगे से और पीछे से पैग़म्बर (ये ख़बर लेकर) आए कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते नाज़िल करता और जो (बातें) देकर तुम लोग भेजे गए हो हम तो उसे नहीं मानते (14)

तो आद नाहक़ रूए ज़मीन में ग़ुरूर करने लगे और कहने लगे कि हम से बढ़ के क़ूवत में कौन है, क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर न किया कि ख़ुदा जिसने उनको पैदा किया है वह उनसे क़ूवत में कहीं बढ़ के है, ग़रज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे (15)

तो हमने भी (तो उनके) नहूसत के दिनों में उन पर बड़ी ज़ोरों की आँधी चलाई ताकि दुनिया की ज़िन्दगी में भी उनको रूसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आख़ेरत का अज़ाब तो और ज़्यादा रूसवा करने वाला ही होगा और (फिर) उनको कहीं से मदद भी न मिलेगी (16)

और रहे समूद तो हमने उनको सीधा रास्ता दिखाया, मगर उन लोगों ने हिदायत के मुक़ाबले में गुमराही को पसन्द किया तो उन की करतूतों की बदौलत ज़िल्लत के अज़ाब की बिजली ने उनको ले डाला (17)

और जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते थे उनको हमने (इस) मुसीबत से बचा लिया (18)

और जिस दिन ख़ुदा के दुशमन दोज़ख़ की तरफ हकाए जाएँगे तो ये लोग तरतीब वार खड़े किए जाएँगे (19)

यहाँ तक की जब सब के सब जहन्नुम के पास जाएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनके (गोश्त पोस्त) उनके ख़िलाफ उनके मुक़ाबले में उनकी कारस्तानियों की गवाही देगें (20)

और ये लोग अपने आज़ा से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ क्यों गवाही दी तो वह जवाब देंगे कि जिस ख़ुदा ने हर चीज़ को गोया किया उसने हमको भी (अपनी क़ुदरत से) गोया किया और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था और (आख़िर) उसी की तरफ लौट कर जाओगे (21)

और (तुम्हारी तो ये हालत थी कि) तुम लोग इस ख़्याल से (अपने गुनाहों की) पर्दा दारी भी तो नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखे और तुम्हारे आज़ा तुम्हारे बरख़िलाफ गवाही देंगे बल्कि तुम इस ख़्याल मे (भूले हुए) थे कि ख़ुदा को तुम्हारे बहुत से कामों की ख़बर ही नहीं (22)

और तुम्हारी इस बदख़्याली ने जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे तुम्हें तबाह कर छोड़ा आख़िर तुम घाटे में रहे (23)

फिर अगर ये लोग सब्र भी करें तो भी इनका ठिकाना दोज़ख़ ही है और अगर तौबा करें तो भी इनकी तौबा क़ुबूल न की जाएगी (24)

और हमने (गोया ख़ुद शैतान को) उनका हमनशीन मुक़र्रर कर दिया था तो उन्होने उनके अगले पिछले तमाम उमूर उनकी नज़रों में भले कर दिखाए तो जिन्नात और इन्सानो की उम्मतें जो उनसे पहले गुज़र चुकी थीं उनके शुमूल {साथ} में (अज़ाब का) वायदा उनके हक़ में भी पूरा हो कर रहा बेशक ये लोग अपने घाटे के दरपै थे (25)

और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि इस क़ुरान को सुनो ही नहीं और जब पढ़ें (तो) इसके (बीच) में ग़ुल मचा दिया करो ताकि (इस तरकीब से) तुम ग़ालिब आ जाओ (26)

तो हम भी काफ़िरों को सख़्त अज़ाब के मज़े चखाएँगे और इनकी कारस्तानियों की बहुत बड़ी सज़ा ये दोज़ख़ है (27)

ख़ुदा के दुशमनों का बदला है कि वह जो हमरी आयतों से इन्कार करते थे उसकी सज़ा में उनके लिए उसमें हमेशा (रहने) का घर है, (28)

और (क़यामत के दिन) कुफ़्फ़ार कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार जिनों और इन्सानों में से जिन लोगों ने हमको गुमराह किया था (एक नज़र) उनको हमें दिखा दे कि हम उनको पाँव तले (रौन्द) डालें ताकि वह ख़ूब ज़लील हों (29)

और जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) कहा कि हमारा परवरदिगार तो (बस) ख़ुदा है, फिर वह उसी पर भी क़ायम भी रहे उन पर मौत के वक़्त (रहमत के) फ़रिश्ते नाज़िल होंगे (और कहेंगे) कि कुछ ख़ौफ न करो और न ग़म खाओ और जिस बेहिश्त का तुमसे वायदा किया गया था उसकी ख़ुशियाँ मनाओ (30)

हम दुनिया की ज़िन्दगी में तुम्हारे दोस्त थे और आख़ेरत में भी तुम्हारे (रफ़ीक़) हैं और जिस चीज़ का भी तुम्हार जी चाहे बेहिश्त में तुम्हारे वास्ते मौजूद है और जो चीज़ तलब करोगे वहाँ तुम्हारे लिए (हाज़िर) होगी (31)

(ये) बख़्शने वाले मेहरबान (ख़ुदा) की तरफ़ से (तुम्हारी मेहमानी है) (32)

और इस से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) ख़ुदा की तरफ बुलाए और अच्छे अच्छे काम करे और कहे कि मैं भी यक़ीनन (ख़ुदा के) फरमाबरदार बन्दों में हूँ (33)

और भलाई बुराई (कभी) बराबर नहीं हो सकती तो (सख़्त कलामी का) ऐसे तरीके से जवाब दो जो निहायत अच्छा हो (ऐसा करोगे) तो (तुम देखोगे) जिस में और तुममें दुशमनी थी गोया वह तुम्हारा दिल सोज़ दोस्त है (34)

ये बात बस उन्हीं लोगों को हासिल हुई है जो सब्र करने वाले हैं और उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो बड़े नसीबवर हैं (35)

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ से वसवसा पैदा हो तो ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो बेशक वह (सबकी) सुनता जानता है (36)

और उसकी (कुदरत की) निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद हैं तो तुम लोग न सूरज को सजदा करो और न चाँद को, और अगर तुम ख़ुदा ही की इबादत करनी मंज़ूर रहे तो बस उसी को सजदा करो जिसने इन चीज़ों को पैदा किया है (37)

पस अगर ये लोग सरकशी करें तो (ख़ुदा को भी उनकी परवाह नहीं) वो लोग (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार की बारगाह में हैं वह रात दिन उसकी तसबीह करते रहते हैं और वह लोग उकताते भी नहीं (38) सजदा 12

उसकी क़ुदरत की निशानियों में से एक ये भी है कि तुम ज़मीन को ख़ुश्क और बेगयाह देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने लगती है और फूल जाती है जिस ख़ुदा ने

(मुर्दा) ज़मीन को ज़िन्दा किया वह यक़ीनन मुर्दो को भी जिलाएगा बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है (39)

जो लोग हमारी आयतों में हेर फेर पैदा करते हैं वह हरगिज़ हमसे पोशीदा नहीं हैं भला जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाएगा वह बेहतर है या वह शख़्स जो क़यामत के दिन बेख़ौफ व ख़तर आएगा (ख़ैर) जो चाहो सो करो (मगर) जो कुछ तुम करते हो वह (ख़ुदा) उसको देख रहा है (40)

जिन लोगों ने नसीहत को जब वह उनके पास आयी न माना (वह अपना नतीजा देख लेंगे) और ये क़ुरान तो यक़ीनी एक आली मरतबा किताब है (41)

कि झूठ न तो उसके आगे फटक सकता है और न उसके पीछे से और ख़ूबियों वाले दाना (ख़ुदा) की बारगाह से नाज़िल हुयी है (42)

(ऐ रसूल) तुमसे से भी बस वही बातें कहीं जाती हैं जो तुमसे और रसूलों से कही जा चुकी हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब वाला भी है (43)

और अगर हम इस क़ुरान को अरबी ज़बान के सिवा दूसरी ज़बान में नाज़िल करते तो ये लोग ज़रूर कह न बैठते कि इसकी आयतें (हमारी) ज़बान में क्यों तफ़सीलदार बयान नहीं की गयी क्या (ख़ूब क़ुरान तो) अजमी और (मुख़ातिब) अरबी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि इमानदारों के लिए तो ये (क़ुरान अज़सरतापा) हिदायत और (हर मर्ज़ की) शिफ़ा है और जो लोग ईमान नहीं रखते उनके कानों (के हक़) में गिरानी (बहरापन) है और वह (क़ुरान) उनके हक़ में नाबीनाई (का सबब) है तो गिरानी की वजह से गोया वह लोग बड़ी दूर की जगह से पुकारे जाते है (44)

(और नहीं सुनते) और हम ही ने मूसा को भी किताब (तौरैत) अता की थी तो उसमें भी इसमें एख़्तेलाफ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो उनमें कब का फैसला कर दिया गया होता, और ये लोग ऐसे शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें बेचैन कर दिया है (45)

जिसने अच्छे अच्छे काम किये तो अपने नफ़े के लिए और जो बुरा काम करे उसका वबाल भी उसी पर है और तुम्हारा परवरदिगार तो बन्दों पर (कभी) ज़ुल्म करने वाला नहीं (46)

क़यामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ है (यानि वही जानता है) और बग़ैर उसके इल्म व (इरादे) के न तो फल अपने पौरों से निकलते हैं और न किसी औरत को हमल रखता है और न वह बच्चा जनती है और जिस दिन (ख़ुदा) उन (मुशरेकीन) को पुकारेगा और पूछेगा कि मेरे शरीक

कहाँ हैं- वह कहेंगे हम तो तुझ से अर्ज़ कर चूके हैं कि हम में से कोई (उनसे) वाकिफ़ ही नहीं (47)

और इससे पहले जिन माबूदों की परसतिश करते थे वह ग़ायब हो गये और ये लोग समझ जाएगें कि उनके लिए अब मुख़लिसी नहीं (48)

इन्सान भलाई की दुआए मांगने से तो कभी उकताता नहीं और अगर उसको कोई तकलीफ पहुँच जाए तो (फौरन) न उम्मीद और बेआस हो जाता है (49)

और अगर उसको कोई तकलीफ पहुँच जाने के बाद हम उसको अपनी रहमत का मज़ा चखाएँ तो यक़ीनी कहने लगता है कि ये तो मेरे लिए ही है और मैं नहीं ख़याल करता कि कभी क़यामत बरपा होगी और अगर (क़यामत हो भी और) मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊँ तो भी मेरे लिए यक़ीनन उसके यहाँ भलाई ही तो है जो आमाल करते रहे हम उनको (क़यामत में) ज़रूर बता देंगें और उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएगें (50)

(वह अलग) और जब हम इन्सान पर एहसान करते हैं तो (हमारी तरफ से) मुँह फेर लेता है और मुँह बदलकर चल देता है और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो लम्बी चौड़ी दुआएँ करने लगता है (51)

(ऐ रसूल) तुम कहो कि भला देखो तो सही कि अगर ये (क़ुरान) ख़ुदा की बारगाह से (आया) हो और फिर तुम उससे इन्कार करो तो जो (ऐसे) परले दर्जे की मुख़ालेफत में (पड़ा) हो उससे बढ़कर और कौन गुमराह हो सकता है (52)

हम अनक़रीब ही अपनी (क़ुदरत) की निशानियाँ अतराफ (आलम) में और ख़ुद उनमें भी दिखा देगें यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि वही यक़ीनन हक़ है क्या तुम्हारा परवरदिगार इसके लिए काफी नहीं कि वह हर चीज़ पर क़ाबू रखता है (53)

देखो ये लोग अपने परवरदिगार के रूबरू हाज़िर होने से शक में (पड़े) हैं सुन रखो वह हर चीज़ पर हावी है (54)

42 सूरह शूरा

सूरह शूरा मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (53) तिरपन आयतें है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

ऐन सीन काफ़ (2)

(ऐ रसूल) ग़ालिब व दाना ख़ुदा तुम्हारी तरफ़ और जो (पैग़म्बर) तुमसे पहले गुज़रे उनकी तरफ यूँ ही वही भेजता रहता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है ग़रज़ सब कुछ उसी का है (3)

और वह तो (बड़ा) आलीशान (और) बुर्ज़ुग है (4)

(उनकी बातों से) क़रीब है कि सारे आसमान (उसकी हैबत के मारे) अपने ऊपर वार से फट पड़े और फ़रिश्ते तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिए (गुनाहों की) माफी माँगा करते हैं सुन रखो कि ख़ुदा ही यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (5)

और जिन लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर (और) अपने सरपरस्त बना रखे हैं ख़ुदा उनकी निगरानी कर रहा है (ऐ रसूल) तुम उनके निगेहबान नहीं हो (6)

और हमने तुम्हारे पास अरबी क़ुरान यूँ भेजा ताकि तुम मक्का वालों को और जो लोग इसके इर्द गिर्द रहते हैं उनको डराओ और (उनको) क़यामत के दिन से भी डराओ जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं (उस दिन) एक फरीक़ (मानने वाला) जन्नत में होगा और फरीक़ (सानी) दोज़ख़ में (7)

और अगर ख़ुदा चाहता तो इन सबको एक ही गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है (हिदायत करके) अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों का तो (उस दिन) न कोई यार है और न मददगार (8)

क्या उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (दूसरे) कारसाज़ बनाए हैं तो कारसाज़ बस ख़ुदा ही है और वही मुर्दो को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (9)

और तुम लोग जिस चीज़ में बाहम एख़्तेलाफ़ात रखते हो उसका फैसला अल्लाह ही के हवाले है वही अल्लाह तो मेरा परवरदिगार है मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ रूजू करता हूँ (10)

सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला (वही) है उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स के जोड़े बनाए और चारपायों के जोड़े भी (उसी ने बनाए) उस (तरफ) में तुमको फैलाता रहता है कोई चीज़ उसकी मिसल नहीं और वह हर चीज़ को सुनता देखता है (11)

सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास हैं जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फराख़ कर देता है (जिसके लिए) चाहता है तंग कर देता है बेशक वह हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है (12)

उसने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया जिस (पर चलने का) नूह को हुक्म दिया था और (ऐ रसूल) उसी की हमने तुम्हारे पास वही भेजी है और उसी का इब्राहीम और मूसा और ईसा को भी हुक्म दिया था (वह) ये (है कि) दीन को क़ायम रखना और उसमें तफ़रक़ा न डालना जिस दीन की तरफ तुम मुशरेकीन को बुलाते हो वह उन पर बहुत शाक़ ग़ुज़रता है ख़ुदा जिसको चाहता है अपनी बारगाह का बरगुज़ीदा कर लेता है और जो उसकी तरफ रूजू करे (अपनी तरफ़ (पहुँचने) का रास्ता दिखा देता है (13)

और ये लोग मुतफ़र्रिक़ हुए भी तो इल्म (हक़) आ चुकने के बाद और (वह भी) महज़ आपस की ज़िद से और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक वक़्ते मुक़र्रर तक के लिए (क़यामत का) वायदा न हो चुका होता तो उनमें कबका फैसला हो चुका होता और जो लोग उनके बाद (ख़ुदा की) किताब के वारिस हुए वह उसकी तरफ से बहुत सख़्त शुबहे में (पड़े हुए) हैं (14)

तो (ऐ रसूल) तुम (लोगों को) उसी (दीन) की तरफ बुलाते रहे जो और जैसा तुमको हुक्म हुआ है (उसी पर क़ायम रहो और उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और साफ़ साफ़ कह दो कि जो किताब ख़ुदा ने नाज़िल की है उस पर मैं ईमान रखता हूँ और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे एख़्तेलाफात के (दरमेयान) इन्साफ़ (से फ़ैसला) करूँ ख़ुदा ही हमारा भी परवरदिगार है और वही तुम्हारा भी परवरदिगार है हमारी कारगुज़ारियाँ हमारे ही लिए हैं और तुम्हारी कारस्तानियाँ तुम्हारे वास्ते हममें और तुममें तो कुछ हुज्जत (व तक़रार की ज़रूरत) नहीं ख़ुदा ही हम (क़यामत में) सबको इकट्ठा करेगा (15)

और उसी की तरफ लौट कर जाना है और जो लोग उसके मान लिए जाने के बाद अल्लाह के बारे में (ख़्वाहमख़्वाह) झगड़ा करते हैं उनके परवरदिगार के नज़दीक उनकी दलील लग़ो बातिल है और उन पर (अल्लाह का) ग़ज़ब और उनके लिए सख़्त अज़ाब है (16)

ख़ुदा ही तो है जिसने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और अदल (व इन्साफ़ भी नाज़िल किया) और तुमको क्या मालूम शायद क़यामत क़रीब ही हो (17)

(फिर ये ग़फ़लत कैसी) जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते वह तो इसके लिए जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं वह उससे डरते हैं और जानते हैं कि क़यामत यक़ीनी बरहक़ है आगाह रहो कि जो लोग क़यामत के बारे में शक किया करते हैं वह बड़े परले दर्जे की गुमराही में हैं (18)

और अल्लाह अपने बन्दों (के हाल) पर बड़ा मेहरबान है जिसको (जितनी) रोज़ी चाहता है देता है वह ज़ोर वाला ज़बरदस्त है (19)

जो शख़्स आख़ेरत की खेती का तालिब हो हम उसके लिए उसकी खेती में अफ़ज़ाइश करेंगे और दुनिया की खेती का ख़ास्तगार हो तो हम उसको उसी में से देंगे मगर आख़ेरत में फिर उसका कुछ हिस्सा न होगा (20)

क्या उन लोगों के (बनाए हुए) ऐसे शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिसकी ख़ुदा ने इजाज़त नहीं दी और अगर फ़ैसले (के दिन) का वायदा न होता तो उनमें यक़ीनी अब तक फैसला हो चुका होता और ज़ालिमों के वास्ते ज़रूर दर्दनाक अज़ाब है (21)

(क़यामत के दिन) देखोगे कि ज़ालिम लोग अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और जिन्होने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे काम किए वह बेहिश्त के बाग़ों में होंगे वह जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में (मौजूद) है यही तो (ख़ुदा का) बड़ा फज़ल है (22)

यही (ईनाम) है जिसकी ख़ुदा अपने उन बन्दों को ख़ुशख़बरी देता है जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं इस (तबलीग़े रिसालत) का अपने क़राबतदारों (एहले बैत) की मोहब्बत के सिवा तुमसे कोई सिला नहीं मांगता और जो शख़्स नेकी हासिल करेगा हम उसके लिए उसकी ख़ूबी में इज़ाफा कर देंगे बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला क़दरदान है (23)

क्या ये लोग (तुम्हारी निस्बत कहते हैं कि इस (रसूल) ने ख़ुदा पर झूठा बोहतान बाँधा है तो अगर (ऐसा) होता तो) ख़ुदा चाहता तो तुम्हारे दिल पर मोहर लगा देता (कि तुम बात ही न कर सकते)

और अल्लाह तो झूठ को नेस्तनाबूद और अपनी बातों से हक़ को साबित करता है वह यक़ीनी दिलों के राज़ से ख़ूब वाकिफ़ है (24)

और वही तो है जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और गुनाहों को माफ़ करता है और तुम लोग जो कुछ भी करते हो वह जानता है (25)

और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनकी (दुआ) क़ुबूल करता है फज़्ल व क़रम से उनको बढ़ कर देता है और काफिरों के लिए सख़्त अज़ाब है (26)

और अगर अल्लाह ने अपने बन्दों की रोज़ी में फराख़ी कर दे तो वह लोग ज़रूर (रूए) ज़मीन से सरकशी करने लगें मगर वह तो बाक़दरे मुनासिब जिसकी रोज़ी (जितनी) चाहता है नाज़िल करता है वह बेशक अपने बन्दों से ख़बरदार (और उनको) देखता है (27)

और वही तो है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद मेंह बरसाता है और अपनी रहमत (बारिश की बरकतों) को फैला देता है और वही कारसाज़ (और) हम्द व सना के लायक़ है (28)

और उसी की (क़ुदरत की) निशानियों में से सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करना और उन जानदारों का भी जो उसने आसमान व ज़मीन में फैला रखे हैं और जब चाहे उनके जमा कर लेने पर (भी) क़ादिर है (29)

और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है वह तुम्हारे अपने ही हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ माफ कर देता है (30)

और तुम लोग ज़मीन में (रह कर) तो अल्लाह को किसी तरह हरा नहीं सकते और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न मददगार (31)

और उसी की (क़ुदरत) की निशानियों में से समन्दर में (चलने वाले) (बादबानी जहाज़) है जो गोया पहाड़ हैं (32)

अगर अल्लाह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो जहाज़ भी समन्दर की सतह पर (खड़े के खड़े) रह जाएँ बेशक तमाम सब्र और शुक्र करने वालों के वास्ते इन बातों में (अल्लाह की क़ुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं (33)

(या वह चाहे तो) उनको उनके आमाल (बद) के सबब तबाह कर दे (34)

और वह बहुत कुछ माफ़ करता है और जो लोग हमारी निशानियों में (ख़्वाहमाख़्वाह) झगड़ा करते हैं वह अच्छी तरह समझ लें कि उनको किसी तरह (अज़ाब से) छुटकारा नहीं (35)

(लोगों) तुमको जो कुछ (माल) दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का (चन्द रोज़) साज़ोसामान है और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर और पायदार है (मगर ये) ख़ास उन ही लोगों के लिए है जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं (36)

और जो लोग बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से बचे रहते हैं और ग़ुस्सा आ जाता है तो माफ कर देते हैं (37)

और जो अपने परवरदिगार का हुक्म मानते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और उनके कुल काम आपस के मशवरे से होते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से (राहे अल्लाह में) ख़र्च करते हैं (38)

और (वह ऐसे हैं) कि जब उन पर किसी किस्म की ज़्यादती की जाती है तो बस वाजिबी बदला ले लेते हैं (39)

और बुराई का बदला तो वैसी ही बुराई है उस पर भी जो शख़्स माफ कर दे और (मामले की) इसलाह कर दें तो इसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है बेशक वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता (40)

और जिस पर ज़ुल्म हुआ हो अगर वह उसके बाद इन्तेक़ाम ले तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं (41)

इल्ज़ाम तो बस उन्हीं लोगों पर होगा जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और रूए ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते फिरते हैं उन्हीं लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (42)

और जो सब्र करे और कुसूर माफ़ कर दे तो बेशक ये बड़े हौसले के काम हैं (43)

और जिसको अल्लाह गुमराही में छोड़ दे तो उसके बाद उसका कोई सरपरस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब (दोज़ख़) का अज़ाब देखेंगे तो कहेंगे कि भला (दुनिया में) फिर लौट कर जाने की कोई सबील है (44)

और तुम उनको देखोगे कि दोज़ख़ के सामने लाए गये हैं (और) ज़िल्लत के मारे कटे जाते हैं

(और) कनक्खियों से देखे जाते हैं और मोमिनीन कहेंगे कि हकीक़त में वही बड़े घाटे में हैं जिन्होने क़यामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को ख़सारे में डाला देखो ज़ुल्म करने वाले दाएमी अज़ाब में रहेंगे (45)

और अल्लाह के सिवा न उनके सरपरस्त ही होंगे जो उनकी मदद को आएँ और जिसको अल्लाह गुमराही में छोड़ दे तो उसके लिए (हिदायत की) कोई राह नहीं (46)

(लोगों) उस दिन के पहले जो अल्लाह की तरफ से आयेगा और किसी तरह (टाले न टलेगा) अपने परवरदिगार का हुक्म मान लो (क्यों कि) उस दिन न तो तुमको कहीं पनाह की जगह मिलेगी और न तुमसे (गुनाह का) इन्कार ही बन पड़ेगा (47)

फिर अगर मुँह फेर लें तो (ऐ रसूल) हमने तुमको उनका निगेहबान बनाकर नहीं भेजा तुम्हारा काम तो सिर्फ (एहकाम का) पहुँचा देना है और जब हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वह उससे ख़ुश हो जाता है और अगर उनको उन्हीं के हाथों की पहली करतूतों की बदौलत कोई तकलीफ पहुँचती (सब एहसान भूल गए) बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है (48)

सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत ख़ास अल्लाह ही की है जो चाहता है पैदा करता है (और) जिसे चाहता है (फ़क़त) बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है (महज़) बेटा अता करता है (49)

या उनको बेटे बेटियाँ (औलाद की) दोनों किस्में इनायत करता है और जिसको चाहता है बांझ बना देता है बेशक वह बड़ा वाकिफ़कार क़ादिर है (50)

और किसी आदमी के लिए ये मुमकिन नहीं कि अल्लाह उससे बात करे मगर वही के ज़रिए से (जैसे) (दाऊद) परदे के पीछे से जैसे (मूसा) या कोई फ़रिश्ता भेज दे (जैसे मोहम्मद) ग़रज़ वह अपने एख़्तेयार से जो चाहता है पैग़ाम भेज देता है बेशक वह आलीशान हिकमत वाला है (51)

और इसी तरह हमने अपने हुक्म को रूह (क़ुरान) तुम्हारी तरफ 'वही' के ज़रिए से भेजे तो तुम न किताब ही को जानते थे कि क्या है और न ईमान को मगर इस (क़ुरान) को एक नूर बनाया है कि इससे हम अपने बन्दों में से जिसकी चाहते हैं हिदायत करते हैं और इसमें शक नहीं कि तुम (ऐ रसूल) सीधा ही रास्ता दिखाते हो (52)

(यानि) उसका रास्ता कि जो आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है सुन रखो सब काम अल्लाह ही की तरफ रूजू होंगे और वही फैसला करेगा (53)

43 सूरह ज़ुख़रुफ़

सूरह ज़ुख़रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और उसकी (89) नवासी आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

रौशन किताब (क़ुरान) की क़सम (2)

हमने इस किताब को अरबी ज़बान क़ुरान ज़रूर बनाया है ताकि तुम समझो (3)

और बेशक ये (क़ुरान) असली किताब (लौह महफ़ूज़) में (भी जो) मेरे पास है लिखी हुयी है (और) यक़ीनन बड़े रूतबे की (और) पुरअज़ हिकमत है (4)

भला इस वजह से कि तुम ज़्यादती करने वाले लोग हो हम तुमको नसीहत करने से मुँह मोड़ेंगे (हरगिज़ नहीं) (5)

और हमने अगले लोगों को बहुत से पैग़म्बर भेजे थे (6)

और कोई पैग़म्बर उनके पास ऐसा नहीं आया जिससे इन लोगों ने ठट्ठे नहीं किए हो (7)

तो उनमें से जो ज़्यादा ज़ोरावर थे तो उनको हमने हलाक कर मारा और (दुनिया में) अगलों के अफ़साने जारी हो गए (8)

और (ऐ रसूल) अगर तुम उनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो वह ज़रूर कह देंगे कि उनको बड़े वाक़िफ़कार ज़बरदस्त (अल्लाह ने) पैदा किया है (9)

जिसने तुम लोगों के वास्ते ज़मीन का बिछौना बनाया और (फिर) उसमें तुम्हारे नफ़े के लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो (10)

और जिसने एक (मुनासिब) अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके (ज़रिए) से मुर्दा (परती) शहर को ज़िन्दा (आबाद) किया उसी तरह तुम भी (क़यामत के दिन क़ब्रों से) निकाले जाओगे (11)

और जिसने हर किस्म की चीज़े पैदा कीं और तुम्हारे लिए कश्तियाँ बनायीं और चारपाए (पैदा किए) जिन पर तुम सवार होते हो (12)

ताकि तुम उसकी पीठ पर चढ़ो और जब उस पर (अच्छी तरह) सीधे हो बैठो तो अपने परवरदिगार का एहसान माना करो और कहो कि वह (अल्लाह हर ऐब से) पाक है जिसने इसको हमारा ताबेदार बनाया हालाँकि हम तो ऐसे (ताक़तवर) न थे कि उस पर क़ाबू पाते (13)

और हमको तो यक़ीनन अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है (14)

और उन लोगों ने उसके बन्दों में से उसके लिए औलाद क़रार दी है इसमें शक नहीं कि इन्सान खुल्लम खुल्ला बड़ा ही नाशक्रा है (15)

क्या उसने अपनी मख़लूक़ात में से ख़ुद तो बेटियाँ ली हैं और तुमको चुनकर बेटे दिए हैं (16)

हालाँकि जब उनमें किसी शख़्स को उस चीज़ (बेटी) की ख़ुशख़बरी दी जाती है जिसकी मिसल उसने अल्लाह के लिए बयान की है तो वह (ग़ुस्से के मारे) सियाह हो जाता है और ताव पेंच खाने लगता है (17)

क्या वह (औरत) जो ज़ेवरों में पाली पोसी जाए और झगड़े में (अच्छी तरह) बात तक न कर सकें (अल्लाह की बेटी हो सकती है) (18)

और उन लोगों ने फ़रिश्तों को कि वह भी अल्लाह के बन्दे हैं (अल्लाह की) बेटियाँ बनायी हैं लोग फरिश्तों की पैदाइश क्यों खड़े देख रहे थे अभी उनकी शहादत क़लम बन्द कर ली जाती है (19)

और (क़यामत) में उनसे बाज़पुर्स की जाएगी और कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो हम उनकी परसतिश न करते उनको उसकी कुछ ख़बर ही नहीं ये लोग तो बस अटकल पच्चू बातें किया करते हैं (20)

या हमने उनको उससे पहले कोई किताब दी थी कि ये लोग उसे मज़बूत थामें हुए हैं (21)

बल्कि ये लोग तो ये कहते हैं कि हमने अपने बाप दादाओं को एक तरीक़े पर पाया और हम उनको क़दम ब क़दम ठीक रास्ते पर चले जा रहें हैं (22)

और (ऐ रसूल) इसी तरह हमने तुमसे पहले किसी बस्ती में कोई डराने वाला (पैग़म्बर) नहीं भेजा

मगर वहाँ के ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हमने अपने बाप दादाओं को एक तरीक़े पर पाया, और हम यक़ीनी उनके क़दम ब क़दम चले जा रहे हैं (23)

(इस पर) उनके पैग़म्बर ने कहा भी जिस तरीक़े पर तुमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे मैं तुम्हारे पास इससे बेहतर राहे रास्त पर लाने वाला दीन लेकर आया हूँ (तो भी न मानोगे) वह बोले (कुछ हो मगर) हम तो उस दीन को जो तुम देकर भेजे गए हो मानने वाले नहीं (24)

तो हमने उनसे बदला लिया (तो ज़रा) देखो तो कि झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ (25)

(और वह वक़्त याद करो) जब इब्राहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप (आज़र) और अपनी क़ौम से कहा कि जिन चीज़ों को तुम लोग पूजते हो मैं यक़ीनन उससे बेज़ार हूँ (26)

मगर उसकी इबादत करता हूँ, जिसने मुझे पैदा किया तो वही बहुत जल्द मेरी हिदायत करेगा (27)

और उसी (ईमान) को इब्राहीम ने अपनी औलाद में हमेशा बाक़ी रहने वाली बात छोड़ गए ताकि वह (अल्लाह की तरफ रूजू) करें (28)

बल्कि मैं उनको और उनके बाप दादाओं को फायदा पहुँचाता रहा यहाँ तक कि उनके पास (दीने) हक़ और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल आ पहुँचा (29)

और जब उनके पास (दीन) हक़ आ गया तो कहने लगे ये तो जादू है और हम तो हरगिज़ इसके मानने वाले नहीं (30)

और कहने लगे कि ये क़ुरान इन दो बस्तियों (मक्के ताएफ) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं नाज़िल किया गया (31)

ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को (अपने तौर पर) बाँटते हैं हमने तो इनके दरमियान उनकी रोज़ी दुनयावी ज़िन्दगी में बाँट ही दी है और एक के दूसरे पर दर्जे बुलन्द किए हैं ताकि इनमें का एक दूसरे से ख़िदमत ले और जो माल (मतआ) ये लोग जमा करते फिरते हैं अल्लाह की रहमत (पैग़म्बर) इससे कहीं बेहतर है (32)

और अगर ये बात न होती कि (आख़िर) सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएँगे तो हम उनके लिए जो अल्लाह से इन्कार करते हैं उनके घरों की छतें और वही सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं (उतरते हैं) (33)

और उनके घरों के दरवाज़े और वह तख़्त जिन पर तकिये लगाते हैं चाँदी और सोने के बना देते (34)

ये सब साज़ो सामान, तो बस दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) साज़ो सामान हैं (जो मिट जाएँगे) और आख़ेरत (का सामान) तो तुम्हारे परवरदिगार के यहॉ ख़ास परहेज़गारों के लिए है (35)

और जो शख़्स अल्लाह की चाह से अन्धा बनता है हम (गोया ख़ुद) उसके वास्ते शैतान मुक़र्रर कर देते हैं तो वही उसका (हर दम का) साथी है (36)

और वह (शयातीन) उन लोगों को (अल्लाह की) राह से रोकते रहते हैं बावजूद इसके वह उसी ख़्याल में हैं कि वह यक़ीनी राहे रास्त पर हैं (37)

यहाँ तक कि जब (क़यामत में) हमारे पास आएगा तो (अपने साथी शैतान से) कहेगा काश मुझमें और तुममें पूरब पश्चिम का फ़ासला होता ग़रज़ (शैतान भी) क्या ही बुरा रफीक़ है (38)

और जब तुम नाफरमानियाँ कर चुके तो (शयातीन के साथ) तुम्हारा अज़ाब में शरीक होना भी आज तुमको (अज़ाब की कमी में) कोई फायदा नहीं पहुँचा सकता (39)

तो (ऐ रसूल) क्या तुम बहरों को सुना सकते हो या अन्धे को और उस शख़्स को जो सरीही गुमराही में पड़ा हो रास्ता दिखा सकते हो (हरगिज़ नहीं) (40)

तो अगर हम तुमको (दुनिया से) ले भी जाएँ तो भी हमको उनसे बदला लेना ज़रूरी है (41)

या (तुम्हारी ज़िन्दगी ही में) जिस अज़ाब का हमने उनसे वायदा किया है तुमको दिखा दें तो उन पर हर तरह क़ाबू रखते हैं (42)

तो तुम्हारे पास जो वही भेजी गयी है तुम उसे मज़बूत पकड़े रहो इसमें शक नहीं कि तुम सीधी राह पर हो (43)

और ये (क़ुरान) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है और अनक़रीब ही तुम लोगों से इसकी बाज़पुर्स की जाएगी (44)

और हमने तुमसे पहले अपने जितने पैग़म्बर भेजे हैं उन सब से दरियाफ्त कर देखो क्या हमने अल्लाह कि सिवा और माबूद बनाए थे कि उनकी इबादत की जाए (45)

और हम ही ने यक़ीनन मूसा को अपनी निशानियाँ देकर फिरआऊन और उसके दरबारियों के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था तो मूसा ने कहा कि मैं सारे जहॉन के पालने वाले (अल्लाह) का रसूल हूँ (46)

तो जब मूसा उन लोगों के पास हमारे मौजिज़े लेकर आए तो वह लोग उन मौजिज़ों की हँसी उड़ाने लगे (47)

और हम जो मौजिज़ा उन को दिखाते थे वह दूसरे से बढ़ कर होता था और आख़िर हमने उनको अज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि ये लोग बाज़ आएँ (48)

और (जब) अज़ाब में गिरफ़्तार हुए तो (मूसा से) कहने लगे ऐ जादूगर इस एहद के मुताबिक़ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुमसे किया है हमारे वास्ते दुआ कर (49)

(अगर अब की छूटे) तो हम ज़रूर ऊपर आ जाएँगे फिर जब हमने उनसे अज़ाब को हटा दिया तो वह फौरन (अपना) अहद तोड़ बैठे (50)

और फिरआऊन ने अपने लोगों में पुकार कर कहा ऐ मेरी क़ौम क्या (ये) मुल्क मिस्र हमारा नहीं और (क्या) ये नहरें जो हमारे (शाही महल के) नीचे बह रही हैं (हमारी नहीं) तो क्या तुमको इतना भी नहीं सूझता (51)

या (सूझता है कि) मैं इस शख़्स (मूसा) से जो एक ज़लील आदमी है और (हकले पन की वजह से) साफ़ गुफ़्तगू भी नहीं कर सकता (52)

कहीं बहुत बेहतर हूँ (अगर ये बेहतर है तो इसके लिए सोने के कंगन) (ख़ुदा के हॉ से) क्यों नहीं उतारे गये या उसके साथ फ़रिश्ते जमा होकर आते (53)

ग़रज़ फ़िराऊन ने (बातें बनाकर) अपनी क़ौम की अक़्ल मार दी और वह लोग उसके ताबेदार बन गये बेशक वह लोग बदकार थे ही (54)

ग़रज़ जब उन लोगों ने हमको झुंझला दिया तो हमने भी उनसे बदला लिया तो हमने उन सब (के सब) को डुबो दिया (55)

फिर हमने उनको गया गुज़रा और पिछलों के वास्ते इबरत बना दिया (56)

और(ऐ रसूल) जब मरियम के बेटे (ईसा) की मिसाल बयान की गयी तो उससे तुम्हारी क़ौम के लोग खिलखिला कर हंसने लगे (57)

और बोल उठे कि भला हमारे माबूद अच्छे हैं या वह (ईसा) उन लोगों ने जो ईसा की मिसाल तुमसे बयान की है तो सिर्फ झगड़ने को (58)

बल्कि (हक़ तो यह है कि) ये लोग हैं झगड़ालू ईसा तो बस हमारे एक बन्दे थे जिन पर हमने एहसान किया (नबी बनाया और मौजिज़े दिये) और उनको हमने बनी इसराईल के लिए (अपनी क़ुदरत का) नमूना बनाया (59)

और अगर हम चाहते तो तुम ही लोगों में से (किसी को) फ़रिश्ते बना देते जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते (60)

और वह तो यक़ीनन क़यामत की एक रौशन दलील है तुम लोग इसमें हरगिज़ शक़ न करो और मेरी पैरवी करो यही सीधा रास्ता है (61)

और (कहीं) शैतान तुम लोगों को (इससे) रोक न दे वही यक़ीनन तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है (62)

और जब ईसा वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आये तो (लोगों से) कहा मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) लेकर आया हूँ ताकि बाज़ बातें जिन में तुम लोग एख़्तेलाफ करते थे तुमको साफ-साफ बता दूँ तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो (63)

बेशक ख़ुदा ही मेरा और तुम्हार परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो यही सीधा रास्ता है (64)

तो इनमें से कई फिरक़े उनसे एख़्तेलाफ करने लगे तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन पर दर्दनांक दिन के अज़ब से अफ़सोस है (65)

क्या ये लोग बस क़यामत के ही मुन्ज़िर बैठे हैं कि अचानक ही उन पर आ जाए और उन को ख़बर तक न हो (66)

(दिली) दोस्त इस दिन (बाहम) एक दूसरे के दुशमन होगें मगर परहेज़गार कि वह दोस्त ही रहेगें (67)

और ख़ुदा उनसे कहेगा ऐ मेरे बन्दों आज न तो तुमको कोई ख़ौफ है और न तुम ग़मग़ीन होगे (68)

(यह) वह लोग हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और (हमारे) फ़रमाबरदार थे (69)

तो तुम अपनी बीवियों समैत एजाज़ व इकराम से बेहिश्त में दाखिल हो जाओ (70)

उन पर सोने की एक रिक़ाबियों और प्यालियों का दौर चलेगा और वहाँ जिस चीज़ को जी चाहे और जिससे आँखें लज़्ज़त उठाएं (सब मौजूद हैं) और तुम उसमें हमेशा रहोगे (71)

और ये जन्नत जिसके तुम वारिस (हिस्सेदार) कर दिये गये हो तुम्हारी क़ारगुज़ारियों का सिला है (72)

वहाँ तुम्हारे वास्ते बहुत से मेवे हैं जिनको तुम खाओगे (73)

(गुनाहगार कुफ़्फ़ार) तो यक़ीकन जहन्नुम के अज़ाब में हमेशा रहेगें (74)

जो उनसे कभी नाग़ा न किया जाएगा और वह इसी अज़ाब में नाउम्मीद होकर रहेंगें (75)

और हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह लोग ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं (76)

और (जहन्नुमी) पुकारेगें कि ऐ मालिक (दरोग़ा ए जहन्नुम कोई तरकीब करो) तुम्हारा परवरदिगार हमें मौत ही दे दे वह जवाब देगा कि तुमको इसी हाल में रहना है (77)

(ऐ कुफ़्फ़ार मक्का) हम तो तुम्हारे पास हक़ लेकर आयें हैं तुम मे से बहुत से हक़ (बात से चिढ़ते) हैं (78)

क्या उन लोगों ने कोई बात ठान ली है हमने भी (कुछ ठान लिया है) (79)

क्या ये लोग कुछ समझते हैं कि हम उनके भेद और उनकी सरग़ोशियों को नहीं सुनते हाॅ (ज़रूर सुनते हैं) और हमारे फ़रिश्ते उनके पास हैं और उनकी सब बातें लिखते जाते हैं (80)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर ख़ुदा की कोई औलाद होती तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत को तैयार हूँ (81)

ये लोग जो कुछ बयान करते हैं सारे आसमान व ज़मीन का मालिक अर्श का मालिक (ख़ुदा) उससे पाक व पाकीज़ा है (82)

तो तुम उन्हें छोड़ दो कि पड़े बक बक करते और खेलते रहते हैं यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वायदा किया जाता है (83)

उनके सामने आ मौजूद हो और आसमान में भी (उसी की इबादत की जाती है और वही ज़मीन में भी माबूद है और वही वाकिफ़कार हिकमत वाला है (84)

और वही बहुत बाबरकत है जिसके लिए सारे आसमान व ज़मीन और दोनों के दरमियान की हुकूमत है और क़यामत की ख़बर भी उसी को है और तुम लोग उसकी तरफ लौटाए जाओगे (85)

और अल्लाह के सिवा जिनकी ये लोग इबादत करतें हैं वह तो सिफारिश का भी एख़्तेयार नहीं रख़ते मगर (हॉ) जो लोग समझ बूझ कर हक़ बात (तौहीद) की गवाही दें (तो खैर) (86)

और अगर तुम उनसे पूछोगे कि उनको किसने पैदा किया तो ज़रूर कह देगें कि अल्लाह ने फिर (बावजूद इसके) ये कहाँ बहके जा रहे हैं (87)

और (उसी को) रसूल के उस क़ौल का भी इल्म है कि परवरदिगार ये लोग हरगिज़ ईमान न लाएँगे (88)

तो तुम उनसे मुँह फेर लो और कह दो कि तुम को सलाम तो उन्हें अनक़रीब ही (शरारत का नतीजा) मालूम हो जाएगा (89)

44 सूरह अद दुख़ान

सूरह अद दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई और इसमें (59) उनसठ आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

वाज़ेए व रौशन किताब (क़ुरान) की क़सम (2)

हमने इसको मुबारक रात (शबे क़द्र) में नाज़िल किया बेशक हम (अज़ाब से) डराने वाले थे (3)

इसी रात को तमाम दुनिया के हिक्मत व मसलेहत के (साल भर के) काम फ़ैसले किये जाते हैं (4)

यानि हमारे यहाँ से हुक्म होकर (बेशक) हम ही (पैग़म्बरों के) भेजने वाले हैं (5)

ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है, वह बेशक बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है (6)

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है सबका मालिक (7)

अगर तुममें यक़ीन करने की सलाहियत है (तो करो) उसके सिवा कोई माबूद नहीं - वही जिलाता है वही मारता है तुम्हारा मालिक और तुम्हारे (अगले) बाप दादाओं का भी मालिक है (8)

लेकिन ये लोग तो शक में पड़े खेल रहे हैं (9)

तो तुम उस दिन का इन्तेज़ार करो कि आसमान से ज़ाहिर ब ज़ाहिर धुआँ निकलेगा (10)

(और) लोगों को ढाँक लेगा ये दर्दनाक अज़ाब है (11)

कुफ़्फ़ार भी घबराकर कहेंगे कि परवरदिगार हमसे अज़ाब को दूर दफ़ा कर दे हम भी ईमान लाते हैं (12)

(उस वक़्त) भला क्या उनको नसीहत होगी जब उनके पास पैग़म्बर आ चुके जो साफ़ साफ़ बयान कर देते थे (13)

इस पर भी उन लोगों ने उससे मुँह फेरा और कहने लगे ये तो (सिखाया) पढ़ाया हुआ दीवाना है (14)

(अच्छा ख़ैर) हम थोड़े दिन के लिए अज़ाब को टाल देते हैं मगर हम जानते हैं तुम ज़रूर फिर कुफ्र करोगे (15)

हम बेशक (उनसे) पूरा बदला तो बस उस दिन लेगें जिस दिन सख़्त पकड़ पकड़ेंगे (16)

और उनसे पहले हमने क़ौमे फ़िरआऊन की आज़माइश की और उनके पास एक आली क़दर पैग़म्बर (मूसा) आए (17)

(और कहा) कि अल्लाह के बन्दों (बनी इसराईल) को मेरे हवाले कर दो मैं (अल्लाह की तरफ से) तुम्हारा एक अमानतदार पैग़म्बर हूँ (18)

और अल्लाह के सामने सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास वाज़ेए व रौशन दलीलें ले कर आया हूँ (19)

और इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो मैं अपने और तुम्हारे परवरदिगार (अल्लाह) की पनाह मांगता हूँ (20)

और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाए तो तुम मुझसे अलग हो जाओ (21)

(मगर वह सुनाने लगे) तब मूसा ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये बड़े शरीर लोग हैं (22)

तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि तुम मेरे बन्दों (बनी इसराईल) को रातों रात लेकर चले जाओ और तुम्हारा पीछा भी ज़रूर किया जाएगा (23)

और दरिया को अपनी हालत पर ठहरा हुआ छोड़ कर (पार हो) जाओ (तुम्हारे बाद) उनका सारा लशकर डुबो दिया जाएगा (24)

वह लोग (अल्लाह जाने) कितने बाग़ और चश्में और खेतियाँ (25)

और नफीस मकानात और आराम की चीज़ें (26)

जिनमें वह ऐश और चैन किया करते थे छोड़ गये यूँ ही हुआ (27)

और उन तमाम चीज़ों का दूसरे लोगों को मालिक बना दिया (28)

तो उन लोगों पर आसमान व ज़मीन को भी रोना न आया और न उन्हें मोहलत ही दी गयी (29)

और हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अज़ाब से फिरआऊन (के पन्जे) से नजात दी (30)

वह बेशक सरकश और हद से बाहर निकल गया था (31)

और हमने बनी इसराईल को समझ बूझ कर सारे जहॉन से बरगुज़ीदा किया था (32)

और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दी थीं जिनमें (उनकी) सरीही आज़माइश थी (33)

ये (कुफ़्फ़ारे मक्का) (मुसलमानों से) कहते हैं (34)

कि हमें तो सिर्फ एक बार मरना है और फिर हम दोबारा (ज़िन्दा करके) उठाए न जाएँगे (35)

तो अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को (ज़िन्दा करके) ले आओ (36)

भला ये लोग (क़ूवत में) अच्छे हैं या तुब्बा की क़ौम और वह लोग जो उनसे पहले हो चुके हमने उन सबको हलाक कर दिया (क्योंकि) वह ज़रूर गुनाहगार थे (37)

और हमने सारे आसमान व ज़मीन और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान में हैं उनको खेलते हुए नहीं बनाया (38)

इन दोनों को हमने बस ठीक (मसलहत से) पैदा किया मगर उनमें के बहुतेरे लोग नहीं जानते (39)

बेशक फ़ैसला (क़यामत) का दिन उन सब (के दोबार ज़िन्दा होने) का मुक़र्रर वक़्त है (40)

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी (41)

मगर जिन पर अल्लाह रहम फरमाए बेशक वह (अल्लाह) सब पर ग़ालिब बड़ा रहम करने वाला है (42)

(आख़ेरत में) थोहड़ का दरख़्त (43)

ज़रूर गुनेहगार का खाना होगा (44)

जैसे पिघला हुआ तांबा वह पेटों में इस तरह उबाल खाएगा (45)

जैसे खौलता हुआ पानी उबाल खाता है (46)

(फरिश्तों को हुक्म होगा) इसको पकड़ो और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों बीच में ले जाओ (47)

फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब डालो फिर उससे ताआनन कहा जाएगा अब मज़ा चखो (48)

बेशक तू तो बड़ा इज़्ज़त वाला सरदार है (49)

ये वही दोज़ख़ तो है जिसमें तुम लोग शक किया करते थे (50)

बेशक परहेज़गार लोग अमन की जगह (51)

(यानि) बाग़ों और चश्मों में होंगे (52)

रेशम की कभी बारीक़ और कभी दबीज़ पोशाकें पहने हुए एक दूसरे के आमने सामने बैठे होंगे (53)

ऐसा ही होगा और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उनके जोड़े लगा देंगे (54)

वहाँ इत्मेनान से हर किस्म के मेवे मंगवा कर खायेंगे (55)

वहाँ पहली दफ़ा की मौत के सिवा उनको मौत की तलख़ी चख़नी ही न पड़ेगी और अल्लाह उनको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा (56)

(ये) तुम्हारे परवरदिगार का फज़्ल है यही तो बड़ी कामयाबी है (57)

तो हमने इस क़ुरान को तुम्हारी ज़बान में (इसलिए) आसान कर दिया है ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें तो (58)

(नतीजे के) तुम भी मुन्तज़िर रहो ये लोग भी मुन्तज़िर हैं (59)

45 सूरह जासिया

सूरह जासिया मक्का में नाज़िल हुई और इसकी सैतीस (37) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

ये किताब (क़ुरान) अल्लाह की तरफ से नाज़िल हुई है जो ग़ालिब और दाना है (2)

बेशक आसमान और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (क़ुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (3)

और तुम्हारी पैदाइश में (भी) और जिन जानवरों को वह (ज़मीन पर) फैलाता रहता है (उनमें भी) यक़ीन करने वालों के वास्ते बहुत सी निशानियाँ हैं (4)

और रात दिन के आने जाने में और अल्लाह ने आसमान से जो (ज़रिया) रिज़्क (पानी) नाज़िल फरमाया फिर उससे ज़मीन को उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा किया (उसमें) और हवाओं फेर बदल में अक्लमन्द लोगों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (5)

ये अल्लाह की आयतें हैं जिनको हम ठीक (ठीक) तुम्हारे सामने पढ़ते हैं तो अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात होगी (6)

जिस पर ये लोग ईमान लाएंगे हर झूठे गुनाहगार पर अफसोस है (7)

कि अल्लाह की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं और वह सुनता भी है फिर ग़ुरूर से (कुफ़्र पर) अड़ा रहता है गोया उसने उन आयतों को सुना ही नहीं तो (ऐ रसूल) तुम उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो (8)

और जब हमारी आयतों में से किसी आयत पर वाक़िफ़ हो जाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है ऐसे ही लोगों के वास्ते ज़लील करने वाला अज़ाब है (9)

जहन्नुम तो उनके पीछे ही (पीछे) है और जो कुछ वह आमाल करते रहे न तो वही उनके कुछ काम आएँगे और न जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़कर (अपने) सरपरस्त बनाए थे और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अज़ाब है (10)

ये (क़ुरान) है और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया उनके लिए सख़्त किस्म का दर्दनाक अज़ाब होगा (11)

अल्लाह ही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और ताकि उसके फज़्ल (व करम) से (मआश की) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो (12)

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सबको अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया है जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए इसमें (क़ुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (13)

(ऐ रसूल) मोमिनों से कह दो कि जो लोग अल्लाह के दिनों की (जो जज़ा के लिए मुक़र्रर हैं) तवक़्क़ो नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें ताकि वह लोगों के आमाल का बदला दे (14)

जो शख़्स नेक काम करता है तो ख़ास अपने लिए और बुरा काम करेगा तो उस का वबाल उसी पर होगा फिर (आख़िर) तुम अपने परवरदिगार की तरफ लौटाए जाओगे (15)

और हमने बनी इसराईल को किताब (तौरेत) और हुकूमत और नबूवत अता की और उन्हें उम्दा उम्दा चीज़ें खाने को दीं और उनको सारे जहॉन पर फ़ज़ीलत दी (16)

और उनको दीन की खुली हुई दलीलें इनायत की तो उन लोगों ने इल्म आ चुकने के बाद बस आपस की ज़िद में एक दूसरे से एख़्तेलाफ़ किया कि ये लोग जिन बातों से एख़्तेलाफ़ कर रहें हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उनमें फैसला कर देगा (17)

फिर (ऐ रसूल) हमने तुमको दीन के खुले रास्ते पर क़ायम किया है तो इसी (रास्ते) पर चले जाओ और नादानों की ख़्वाहिशो की पैरवी न करो (18)

ये लोग अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ भी काम न आएँगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के मददगार हैं और अल्लाह तो परहेज़गारों का मददगार है (19)

ये (क़ुरान) लोगों (की) हिदायत के लिए दलीलो का मजमूआ है और बातें करने वाले लोगों के लिए (अज़सरतापा) हिदायत व रहमत है (20)

जो लोग बुरा काम किया करते हैं क्या वह ये समझते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर

देंगे जो ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम भी करते रहे और उन सब का जीना मरना एक सा होगा ये लोग (क्या) बुरे हुक्म लगाते हैं (21)

और अल्लाह ने सारे आसमान व ज़मीन को हिकमत व मसलेहत से पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किये का बदला दिया जाए और उन पर (किसी तरह का) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (22)

भला तुमने उस शख़्स को भी देखा है जिसने अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिशों को माबूद बना रखा है और (उसकी हालत) समझ बूझ कर अल्लाह ने उसे गुमराही में छोड़ दिया है और उसके कान और दिल पर अलामत मुक़र्रर कर दी है (कि ये ईमान न लाएगा) और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है फिर अल्लाह के बाद उसकी हिदायत कौन कर सकता है तो क्या तुम लोग (इतना भी) ग़ौर नहीं करते (23)

और वह लोग कहते हैं कि हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है (यहीं) मरते हैं और (यहीं) जीते हैं और हमको बस ज़माना ही (जिलाता) मारता है और उनको इसकी कुछ ख़बर तो है नहीं ये लोग तो बस अटकल की बातें करते हैं (24)

और जब उनके सामने हमारी खुली खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनकी कट हुज्जती बस यही होती है कि वह कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को (जिला कर) ले तो आओ (25)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अल्लाह ही तुमको ज़िन्दा (पैदा) करता है और वही तुमको मारता है फिर वही तुमको क़यामत के दिन जिस (के होने) में किसी तरह का शक नहीं जमा करेगा मगर अक्सर लोग नहीं जानते (26)

और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत ख़ास अल्लाह की है और जिस रोज़ क़यामत बरपा होगी उस रोज़ एहले बातिल बड़े घाटे में रहेंगे (27)

और (ऐ रसूल) तुम हर उम्मत को देखोगे कि (फ़ैसले की मुन्तज़िर अदब से) घूटनों के बल बैठी होगी और हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ बुलाइ जाएगी जो कुछ तुम लोग करते थे आज तुमको उसका बदला दिया जाएगा (28)

ये हमारी किताब (जिसमें आमाल लिखे हैं) तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक ठीक बोल रही है जो कुछ भी तुम करते थे हम लिखवाते जाते थे (29)

ग़रज़ जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किये तो उनको उनका परवरदिगार अपनी रहमत (से बेहिश्त) में दाख़िल करेगा यही तो सरीही कामयाबी है (30)

और जिन्होंने कुफ्र एख़्तेयार किया (उनसे कहा जाएगा) तो क्या तुम्हारे सामने हमारी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं (ज़रूर) तो तुमने तकब्बुर किया और तुम लोग तो गुनेहगार हो गए (31)

और जब (तुम से) कहा जाता था कि अल्लाह का वायदा सच्चा है और क़यामत (के आने) में कुछ शुबहा नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या चीज़ है हम तो बस (उसे) एक ख़्याली बात समझते हैं और हम तो (उसका) यक़ीन नहीं रखते (32)

और उनके करतूतों की बुराईयाँ उस पर ज़ाहिर हो जाएँगी और जिस (अज़ाब) की ये हँसी उड़ाया करते थे उन्हें (हर तरफ से) घेर लेगा (33)

और (उनसे) कहा जाएगा कि जिस तरह तुमने उस दिन के आने को भुला दिया था उसी तरह आज हम तुमको अपनी रहमत से अमदन भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं (34)

ये इस सबब से कि तुम लोगों ने अल्लाह की आयतों को हँसी ठट्ठा बना रखा था और दुनयावी ज़िन्दगी ने तुमको धोखे में डाल दिया था ग़रज़ ये लोग न तो आज दुनिया से निकाले जाएँगे और न उनको इसका मौका दिया जाएगा कि (तौबा करके अल्लाह को) राज़ी कर ले (35)

पस सब तारीफ अल्लाह ही के लिए सज़ावार है जो सारे आसमान का मालिक और ज़मीन का मालिक (ग़रज़) सारे जहाॅन का मालिक है (36)

और सारे आसमान व ज़मीन में उसके लिए बड़ाई है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है (37)

46 सूरह अहक़ाफ़

सूरह अहक़ाफ़ ''कुल अराऐतुम इनकाना, फ़सबिर कमा सब्र व वसीयतल इन्साना'' तीन आयतों के सिवा मक्का में नाज़िल हुई और इस की पैंतीस (35) आयतें हैं और चार रूकू हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हा मीम (1)

ये किताब ग़ालिब (व) हकीम अल्लाह की तरफ से नाज़िल हुयी है (2)

हमने तो सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है हिकमत ही से एक ख़ास वक्त तक के लिए ही पैदा किया है और कुफ़्फ़ार जिन चीज़ों से डराए जाते हैं उन से मुँह फेर लेते हैं (3)

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि अल्लाह को छोड़ कर जिनकी तुम इबादत करते हो क्या तुमने उनको देखा है मुझे भी तो दिखाओ कि उन लोगों ने ज़मीन में क्या चीज़े पैदा की हैं या आसमानों (के बनाने) में उनकी शिरकत है तो अगर तुम सच्चे हो तो उससे पहले की कोई किताब (या अगलों के) इल्म का बक़िया हो तो मेरे सामने पेश करो (4)

और उस शख़्स से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है जो अल्लाह के सिवा ऐसे शख़्स को पुकारे जो उसे क़यामत तक जवाब ही न दे और उनको उनके पुकारने की ख़बरें तक न हों (5)

और जब लोग (क़यामत) में जमा किये जाएगें तो वह (माबूद) उनके दुशमन हो जाएंगे और उनकी परसतिश से इन्कार करेंगे (6)

और जब हमारी खुली खुली आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो जो लोग काफिर हैं हक़ के बारे में जब उनके पास आ चुका तो कहते हैं ये तो सरीही जादू है (7)

क्या ये कहते हैं कि इसने इसको ख़ुद गढ़ लिया है तो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं इसको (अपने जी से) गढ़ लेता तो तुम अल्लाह के सामने मेरे कुछ भी काम न आओगे जो जो बातें तुम लोग उसके बारे में करते रहते हो वह ख़ूब जानता है मेरे और तुम्हारे दरमियान वही गवाही को काफ़ी है और वही बड़ा बख़्शने वाला है मेहरबान है (8)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं कोई नया रसूल तो आया नहीं हूँ और मैं कुछ नहीं जानता कि आइन्दा मेरे साथ क्या किया जाएगा और न (ये कि) तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा मैं तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरे पास वही आयी है और मैं तो बस एलानिया डराने वाला हूँ (9)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि भला देखो तो कि अगर ये (क़ुरान) अल्लाह की तरफ से हो और तुम उससे इन्कार कर बैठे हालॉकि (बनी इसराईल में से) एक गवाह उसके मिसल की गवाही भी दे चुका और ईमान भी ले आया और तुमने सरकशी की (तो तुम्हारे ज़ालिम होने में क्या शक है) बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को मन्ज़िल मक़सूद तक नहीं पहुँचाता (10)

और काफिर लोग मोमिनों के बारे में कहते हैं कि अगर ये (दीन) बेहतर होता तो ये लोग उसकी तरफ हमसे पहले न दौड़ पड़ते और जब क़ुरान के ज़रिए से उनकी हिदायत न हुयी तो अब भी कहेंगे ये तो एक क़दीमी झूठ है (11)

और इसके क़ब्ल मूसा की किताब पेशवा और (सरासर) रहमत थी और ये (क़ुरान) वह किताब है जो अरबी ज़बान में (उसकी) तसदीक़ करती है ताकि (इसके ज़रिए से) ज़ालिमों को डराए और नेकी कारों के लिए (अज़सरतापा) ख़ुशख़बरी है (12)

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर वह इस पर क़ायम रहे तो (क़यामत में) उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे (13)

यही तो अहले जन्नत हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे (ये) उसका सिला है जो ये लोग (दुनिया में) किया करते थे (14)

और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया (क्यों कि) उसकी माँ ने रंज ही की हालत में उसको पेट में रखा और रंज ही से उसको जना और उसका पेट में रहना और उसको दूध बढ़ाई के तीस महीने हुए यहाँ तक कि जब अपनी पूरी जवानी को पहुँचता और चालीस बरस (के सिन) को पहुँचता है तो (अल्लाह से) अर्ज़ करता है परवरदिगार तो मुझे तौफ़ीक़ अता फरमा कि तूने जो एहसानात मुझ पर और मेरे वालदैन पर किये हैं मैं उन एहसानों का शुक्रिया अदा करूँ और ये (भी तौफीक दे) कि मैं ऐसा नेक काम करूँ जिसे तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद में सुलाह व तक़वा पैदा करे तेरी तरफ रूजू करता हूँ और मैं यक़ीनन फरमाबरदारो में हूँ (15)

यही वह लोग हैं जिनके नेक अमल हम क़ुबूल फरमाएँगे और बेहिश्त (के जाने) वालों में उनके गुनाहों से दरगुज़र करेंगे (ये वह) सच्चा वायदा है जो उन से किया जाता था (16)

और जिसने अपने माँ बाप से कहा कि तुम्हारा बुरा हो, क्या तुम मुझे धमकी देते हो कि मैं दोबारा (कब्र से) निकाला जाऊँगा हालॉकि बहुत से लोग मुझसे पहले गुज़र चुके (और कोई ज़िन्दा न हुआ) और दोनों फ़रियाद कर रहे थे कि तुझ पर वाए हो ईमान ले आ अल्लाह का वायदा ज़रूर सच्चा है तो वह बोल उठा कि ये तो बस अगले लोगों के अफ़साने हैं (17)

ये वही लोग हैं कि जिन्नात और आदमियों की (दूसरी) उम्मतें जो उनसे पहले गुज़र चुकी हैं उन ही के शुमूल में उन पर भी अज़ाब का वायदा मुस्तहक़ हो चुका है ये लोग बेशक घाटा उठाने वाले थे (18)

और लोगों ने जैसे काम किये होंगे उसी के मुताबिक सबके दर्जे होंगे और ये इसलिए कि अल्लाह उनके आमाल का उनको पूरा पूरा बदला दे और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएं (19)

और जिस दिन कुफ्फार जहन्नुम के सामने लाएँ जाएँगे (तो उनसे कहा जाएगा कि) तुमने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में अपने मज़े उड़ा चुके और उसमें ख़ूब चैन कर चुके तो आज तुम पर ज़िल्लत का अज़ाब किया जाएगा इसलिए कि तुम अपनी ज़मीन में अकड़ा करते थे और इसलिए कि तुम बदकारियां करते थे (20)

और (ऐ रसूल) तुम आद को भाई (हूद) को याद करो जब उन्होंने अपनी क़ौम को (सरज़मीन) अहक़ाफ में डराया और उनके पहले और उनके बाद भी बहुत से डराने वाले पैग़म्बर गुज़र चुके थे (और हूद ने अपनी क़ौम से कहा) कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो क्योंकि तुम्हारे बारे में एक बड़े सख़्त दिन के अज़ाब से डरता हूँ (21)

वह बोले क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो तो अगर तुम सच्चे हो तो जिस अज़ाब की तुम हमें धमकी देते हो ले आओ (22)

हूद ने कहा (इसका) इल्म तो बस अल्लाह के पास है और (मैं जो एहकाम देकर भेजा गया हूँ) वह तुम्हें पहुँचाए देता हूँ मगर मैं तुमको देखता हूँ कि तुम जाहिल लोग हो (23)

तो जब उन लोगों ने इस (अज़ाब) को देखा कि वबाल की तरह उनके मैदानों की तरफ उम्ड़ा आ रहा है तो कहने लगे ये तो बादल है जो हम पर बरस कर रहेगा (नहीं) बल्कि ये वह (अज़ाब) जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे (ये) वह आँधी है जिसमें दर्दनाक (अज़ाब) है (24)

जो अपने परवरदिगार के हुक्म से हर चीज़ को तबाह व बरबाद कर देगी तो वह ऐसे (तबाह) हुए

कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र ही नहीं आता था हम गुनाहगारों की यूँ ही सज़ा किया करते हैं (25)

और हमने उनको ऐसे कामों में मक़दूर दिये थे जिनमें तुम्हें (कुछ भी) मक़दूर नहीं दिया और उन्हें कान और आँख और दिल (सब कुछ दिए थे) तो चूँकि वह लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करने लगे तो न उनके कान ही कुछ काम आए और न उनकी आँखें और न उनके दिल और जिस (अज़ाब) की ये लोग हँसी उड़ाया करते थे उसने उनको हर तरफ से घेर लिया (26)

और (ऐ अहले मक्का) हमने तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियों को हलाक कर मारा और (अपनी क़ुदरत की) बहुत सी निशानियाँ तरह तरह से दिखा दी ताकि ये लोग बाज़ आएँ (मगर कौन सुनता है) (27)

तो अल्लाह के सिवा जिन को उन लोगों ने तक़र्रुब (अल्लाह) के लिए माबूद बना रखा था उन्होंने (अज़ाब के वक़्त) उनकी क्यों न मदद की बल्कि वह तो उनसे ग़ायब हो गये और उनके झूठ और उनकी (इफ़तेरा) परदाज़ियों की ये हक़ीक़त थी (28)

और जब हमने जिनों में से कई शख़्सों को तुम्हारी तरफ मुतावज्जे किया कि वह दिल लगाकर क़ुरान सुनें तो जब उनके पास हाज़िर हुए तो एक दुसरे से कहने लगे ख़ामोश बैठे (सुनते) रहो फिर जब (पढ़ना) तमाम हुआ तो अपनी क़ौम की तरफ़ वापस गए (29)

कि (उनको अज़ाब से) डराएं तो उन से कहना शुरू किया कि ऐ भाइयों हम एक किताब सुन आए हैं जो मूसा के बाद नाज़िल हुयी है (और) जो किताबें, पहले (नाज़िल हुयीं) हैं उनकी तसदीक़ करती हैं सच्चे (दीन) और सीधी राह की हिदायत करती हैं (30)

ऐ हमारी क़ौम अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की बात मानों और अल्लाह पर ईमान लाओ वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और (क़यामत) में तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह में रखेगा (31)

और जिसने अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की बात न मानी तो (याद रहे कि) वह (अल्लाह को रूए) ज़मीन में आजिज़ नहीं कर सकता और न उस के सिवा कोई सरपरस्त होगा यही लोग गुमराही में हैं (32)

क्या इन लोगों ने ये ग़ौर नहीं किया कि जिस अल्लाह ने सारे आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से ज़रा भी थका नहीं वह इस बात पर क़ादिर है कि मुर्दो को ज़िन्दा करेगा हाँ (ज़रूर) वह हर चीज़ पर क़ादिर है (33)

जिस दिन कुफ़्फ़ार (जहन्नुम की) आग के सामने पेश किए जाएँगे (तो उन से पूछा जाएगा) क्या अब भी ये बरहक़ नहीं है वह लोग कहेंगे अपने परवरदिगार की क़सम हाँ (हक़ है) अल्लाह फ़रमाएगा तो लो अब अपने इन्कार व कुफ्ऱ के बदले अज़ाब के मज़े चखो (34)

तो (ऐ रसूल) पैग़म्बरों में से जिस तरह अव्वलुल अज़्म (आली हिम्मत), सब्र करते रहे तुम भी सब्र करो और उनके लिए (अज़ाब) की ताज़ील की ख़्वाहिश न करो जिस दिन यह लोग उस कयामत को देखेंगे जिसको उनसे वायदा किया जाता है तो (उनको मालूम होगा कि) गोया ये लोग (दुनिया में) बहुत रहे होगें तो सारे दिन में से एक घड़ी भर तो बस वही लोग हलाक होंगे जो बदकार थे (35)

47 सूरह मोहम्मद

सूरह मोहम्मद क़ाअय्यिम मिन क़रयातिन के सिवा मदीना में नाज़िल हुई (और) इसमे (38) अड़तीस आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जिन लोगों ने कुफ्ऱ इख़्तियार किया और (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए (1)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए और जो (किताब) मोहम्मद पर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल हुयी है और वह बरहक़ है उस पर ईमान लाए तो अल्लाह ने उनके गुनाह उनसे दूर कर दिए और उनकी हालत संवार दी (2)

ये इस वजह से कि काफिरों ने झूठी बात की पैरवी की और ईमान वालों ने अपने परवरदिगार का सच्चा दीन एख़्तेयार किया यूँ अल्लाह लोगों के समझाने के लिए मिसालें बयान करता है (3)

तो जब तुम काफिरों से भिड़ो तो (उनकी) गर्दनें मारो यहाँ तक कि जब तुम उन्हें ज़ख़्मों से चूर कर डालो तो उनकी मुश्कें कस लो फिर उसके बाद या तो एहसान रख (कर छोड़ दे) या मुआवेज़ा लेकर, यहाँ तक कि (दुशमन) लड़ाई के हथियार रख दे तो (याद रखो) अगर अल्लाह चाहता तो (और तरह) उनसे बदला लेता मगर उसने चाहा कि तुम्हारी आज़माइश एक दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किये गए उनकी कारगुज़ारियों को अल्लाह हरगिज़ अकारत न करेगा (4)

उन्हें अनक़रीब मंज़िले मक़सूद तक पहुँचाएगा (5)

और उनकी हालत सवार देगा और उनको उस बेहिश्त में दाख़िल करेगा जिसका उन्हें (पहले से) शेनासा कर रखा है (6)

ऐ ईमानदारों अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा (7)

और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए तो डगमगाहट है और अल्लाह (उनके) आमाल बरबाद कर देगा (8)

ये इसलिए कि अल्लाह ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमायी उसे उन्होने (नापसन्द किया) तो अल्लाह ने उनकी कारस्तानियों को अकारत कर दिया (9)

तो क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं तो देखते जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम क्या (ख़राब) हुआ कि अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह (उन) काफिरों को भी (सज़ा मिलेगी) (10)

ये इस वजह से कि ईमानदारों का अल्लाह सरपरस्त है और काफिरों का हरगिज़ कोई सरपरस्त नहीं (11)

अल्लाह उन लोगों को जो इमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे ज़रूर बेहिश्त के उन बाग़ों में जा पहुँचाएगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और जो काफ़िर हैं वह (दुनिया में) चैन करते हैं और इस तरह (बेफिक्री से खाते (पीते) हैं जैसे चारपाए खाते पीते हैं और आख़िर) उनका ठिकाना जहन्नुम है (12)

और जिस बस्ती से तुम लोगों ने निकाल दिया उससे ज़ोर में कहीं बढ़ चढ़ के बहुत सी बस्तियाँ थीं जिनको हमने तबाह बर्बाद कर दिया तो उनका कोई मददगार भी न हुआ (13)

क्या जो शख़्स अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हो उस शख़्स के बराबर हो सकता है जिसकी बदकारियाँ उसे भली कर दिखायीं गयीं हों वह अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिशों पर चलते हैं (14)

जिस बेहिश्त का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है उसकी सिफत ये है कि उसमें पानी की नहरें जिनमें ज़रा बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा तक नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज़्ज़त है और साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शहद की नहरें हैं और वहाँ उनके लिए हर किस्म के मेवे हैं और उनके परवरदिगार की तरफ से बख़्शिश है (भला ये लोग) उनके बराबर हो सकते हैं जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और उनको खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वह आँतों के टुकड़े टुकड़े कर डालेगा (15)

और (ऐ रसूल) उनमें से बाज़ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाए रहते हैं यहाँ तक कि सब सुना कर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो जिन लोगों को इल्म (क़ुरान) दिया गया है उनसे कहते हैं (क्यों भई) अभी उस शख़्स ने क्या कहा था ये वही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने (कुफ़्र की) अलामत मुक़र्रर कर दी है और ये अपनी नफसियानी ख़्वाहिशों पर चल रहे हैं (16)

और जो लोग हिदायत याफ़्ता हैं उनको अल्लाह (क़ुरान के ज़रिए से) मज़ीद हिदायत करता है और उनको परहेज़गारी अता फरमाता है (17)

तो क्या ये लोग बस क़यामत ही के मुनतज़िर हैं कि उन पर एक बारगी आ जाए तो उसकी निशानियाँ आ चुकी हैं तो जिस वक़्त क़यामत उन (के सर) पर आ पहुँचेगी फिर उन्हें नसीहत कहाँ मुफीद हो सकती है (18)

तो फिर समझ लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और (हम से) अपने और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगते रहो और अल्लाह तुम्हारे चलने फिरने और ठहरने से (ख़ूब) वाक़िफ़ है (19)

और मोमिनीन कहते हैं कि (जेहाद के बारे में) कोई सूरा क्यों नहीं नाज़िल होता लेकिन जब कोई साफ़ सरीही मायनों का सूरा नाज़िल हुआ और उसमें जेहाद का बयान हो तो जिन लोगों के दिल में (नेफ़ाक़) का मर्ज़ है तुम उनको देखोगे कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी (छायी) हो (कि उसकी आँखें पथरा जाएं) तो उन पर वाए हो (20)

(उनके लिए अच्छा काम तो) फरमाबरदारी और पसन्दीदा बात है फिर जब लड़ाई ठन जाए तो अगर ये लोग अल्लाह से सच्चे रहें तो उनके हक़ में बहुत बेहतर है (21)

(मुनाफ़िक़ों) क्या तुमसे कुछ दूर है कि अगर तुम हाकिम बनो तो रूए ज़मीन में फसाद फैलाने और अपने रिश्ते नातों को तोड़ने लगो ये वही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है (22)

और (गोया ख़ुद उसने) उन (के कानों) को बहरा और आँखों को अँधा कर दिया है (23)

तो क्या लोग क़ुरान में (ज़रा भी) ग़ौर नहीं करते या (उनके) दिलों पर ताले लगे हुए हैं (24)

बेशक जो लोग राहे हिदायत साफ़ साफ़ मालूम होने के बाद उलटे पाँव (कुफ़्र की तरफ) फिर गये शैतान ने उन्हें (बुते देकर) ढील दे रखी है और उनकी (तमन्नाओं) की रस्सियाँ दराज़ कर दी हैं (25)

यह इसलिए जो लोग अल्लाह की नाज़िल की हुई (किताब) से बेज़ार हैं ये उनसे कहते हैं कि बाज़ कामों में हम तुम्हारी ही बात मानेंगे और अल्लाह उनके पोशीदा मशवरों से वाक़िफ़ है (26)

तो जब फरिश्तें उनकी जान निकालेंगे उस वक्त उनका क्या हाल होगा कि उनके चेहरों पर और उनकी पुश्त पर मारते जाएँगे (27)

ये इस सबब से कि जिस चीज़ों से अल्लाह नाखुश है उसकी तो ये लोग पैरवी करते हैं और जिसमें अल्लाह की खुशी है उससे बेज़ार हैं तो अल्लाह ने भी उनकी कारस्तानियों को अकारत कर दिया (28)

क्या वह लोग जिनके दिलों में (नेफ़ाक़ का) मर्ज़ है ये ख़्याल करते हैं कि अल्लाह दिल के कीनों को भी न ज़ाहिर करेगा (29)

तो हम चाहते तो हम तुम्हें इन लोगों को दिखा देते तो तुम उनकी पेशानी ही से उनको पहचान लेते अगर तुम उन्हें उनके अन्दाज़े गुफ़्तगू ही से ज़रूर पहचान लोगे और अल्लाह तो तुम्हारे आमाल से वाकि़फ है (30)

और हम तुम लोगों को ज़रूर आज़माएँगे ताकि तुममें जो लोग जेहाद करने वाले और (तकलीफ़) झेलने वाले हैं उनको देख लें और तुम्हारे हालात जाँच लें (31)

बेशक जिन लोगों पर (दीन की) सीधी राह साफ़ ज़ाहिर हो गयी उसके बाद इन्कार कर बैठे और (लोगों को) अल्लाह की राह से रोका और पैग़म्बर की मुख़ालेफ़त की तो अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे और वह उनका सब किया कराया अक़ारत कर देगा (32)

ऐ ईमानदारों अल्लाह का हुक्म मानों और रसूल की फरमाँबरदारी करो और अपने आमाल को ज़ाया न करो (33)

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए और लोगों को अल्लाह की राह से रोका, फिर काफिर ही मर गए तो अल्लाह उनको हरगिज़ नहीं बख़्शेगा तो तुम हिम्मत न हारो (34)

और (दुशमनों को) सुलह की दावत न दो तुम ग़ालिब हो ही और अल्लाह तो तुम्हारे साथ है और हरगिज़ तुम्हारे आमाल (के सवाब को कम न करेगा) (35)

दुनियावी ज़िन्दगी तो बस खेल तमाशा है और अगर तुम (अल्लाह पर) ईमान रखोगे और परहेज़गारी करोगे तो वह तुमको तुम्हारे अज्र इनायत फरमाएगा और तुमसे तुम्हारे माल नहीं तलब करेगा (36)

और अगर वह तुमसे माल तलब करे और तुमसे चिमट कर माँगे भी तो तुम (ज़रूर) बुख़्ल करने लगो (37)

और अल्लाह तो तुम्हारे कीने को ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा देखो तुम लोग वही तो हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च के लिए बुलाए जाते हो तो बाज़ तुम में ऐसे भी हैं जो बुख़्ल करते हैं और (याद रहे कि) जो बुख़्ल करता है तो ख़ुद अपने ही से बुख़्ल करता है और अल्लाह तो बेनियाज़ है और तुम (उसके) मोहताज हो और अगर तुम (ख़ुदा के हुक्म से) मुँह फेरोगे तो अल्लाह (तुम्हारे सिवा) दूसरों बदल देगा और वह तुम्हारे ऐसे (बख़ील) न होंगे (38)

48 सूरह फ़तेह

सूरह फ़तेह मदीना में नाज़िल हुई और उसकी उनतीस (29) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) ये हुबैदिया की सुलह नहीं बल्कि हमने हक़ीक़तन तुमको खुल्लम खुल्ला फतेह अता की (1)

ताकि अल्लाह तुम्हारी उम्मत के अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दे और तुम पर अपनी नेअमत पूरी करे और तुम्हें सीधी राह पर साबित क़दम रखे (2)

और अल्लाह तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे (3)

वह (वही) अल्लाह तो है जिसने मोमिनीन के दिलों में तसल्ली नाज़िल फरमाई ताकि अपने (पहले) ईमान के साथ और ईमान को बढ़ाएँ और सारे आसमान व ज़मीन के लशकर तो अल्लाह ही के हैं और अल्लाह बड़ा वाक़िफ़कार हकीम है (4)

ताकि मोमिन मर्द और मोमिना औरतों को (बेहिश्त) के बाग़ों में जा पहुँचाए जिनके नीचे नहरें जारी हैं और ये वहाँ हमेशा रहेंगे और उनके गुनाहों को उनसे दूर कर दे और ये अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है (5)

और मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्द और मुशरिक औरतों पर जो अल्लाह के हक़ में बुरे बुरे ख़्याल रखते हैं अज़ाब नाज़िल करे उन पर (मुसीबत की) बड़ी गर्दिश है (और अल्लाह) उन पर ग़ज़बनाक है और उसने उस पर लानत की है और उनके लिए जहन्नुम को तैयार कर रखा है और वह (क्या) बुरी जगह है (6)

और सारे आसमान व ज़मीन के लश्कर अल्लाह ही के हैं और अल्लाह तो बड़ा वाक़िफ़कार (और) ग़ालिब है (7)

(ऐ रसूल) हमने तुमको (तमाम आलम का) गवाह और खुशख़बरी देने वाला और धमकी देने वाला (पैग़म्बर बनाकर) भेजा (8)

ताकि (मुसलमानों) तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसको बुज़ुर्ग समझो और सुबह और शाम उसी की तस्बीह करो (9)

बेशक जो लोग तुमसे बैयत करते हैं वह अल्लाह ही से बैयत करते हैं अल्लाह की क़ूवत (क़ुदरत तो बस सबकी कूवत पर) ग़ालिब है तो जो अहद को तोड़ेगा तो अपने अपने नुक़सान के लिए अहद तोड़ता है और जिसने उस बात को जिसका उसने अल्लाह से अहद किया है पूरा किया तो उसको अनक़रीब ही अज्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा (10)

जो गंवार देहाती (हुदैबिया से) पीछे रह गए अब वह तुमसे कहेंगे कि हमको हमारे माल और लड़के वालों ने रोक रखा तो आप हमारे वास्ते (अल्लाह से) मग़फ़िरत की दुआ माँगें ये लोग अपनी ज़बान से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिल में नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर अल्लाह तुम लोगों को नुक़सान पहुँचाना चाहे या तुम्हें फायदा पहुँचाने का इरादा करे तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए किसका बस चल सकता है बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (11)

(ये फ़क़त तुम्हारे हीले हैं) बात ये है कि तुम ये समझे बैठे थे कि रसूल और मोमिनीन हरगिज़ कभी अपने लड़के वालों में पलट कर आने ही के नहीं (और सब मार डाले जाएँगे) और यही बात तुम्हारे दिलों में भी खप गयी थी और इसी वजह से, तुम तरह तरह की बदगुमानियाँ करने लगे थे और (आख़िरकार) तुम लोग आप बरबाद हुए (12)

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाए तो हमने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नुम की आग तैयार कर रखी है (13)

और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे सज़ा दे और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (14)

(मुसलमानों) अब जो तुम (ख़ैबर की) ग़नीमतों के लेने को जाने लगोगे तो जो लोग (हुदैबिया से) पीछे रह गये थे तुम से कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो ये चाहते हैं कि अल्लाह के क़ौल को बदल दें तुम (साफ) कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चलने पाओगे अल्लाह ने पहले ही से ऐसा फ़रमा दिया है तो ये लोग कहेंगे कि तुम लोग तो हमसे हसद रखते हो (अल्लाह ऐसा क्या कहेगा) बात ये है कि ये लोग बहुत ही कम समझते हैं (15)

कि जो गवॉर पीछे रह गए थे उनसे कह दो कि अनक़रीब ही तुम सख़्त जंगजू क़ौम के (साथ लड़ने के लिए) बुलाए जाओगे कि तुम (या तो) उनसे लड़ते ही रहोगे या मुसलमान ही हो जाएँगे पस अगर तुम (अल्लाह का) हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुमको अच्छा बदला देगा और अगर तुमने

जिस तरह पहली दफा सरताबी की थी अब भी सरताबी करोगे तो वह तुमको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा (16)

(जेहाद से पीछे रह जाने का) न तो अन्धे ही पर कुछ गुनाह है और न लँगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानेगा तो वह उसको (बेहिश्त के) उन सदाबहार बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और जो सरताबी करेगा वह उसको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा (17)

जिस वक्त मोमिनीन तुमसे दरख़्त के नीचे (लड़ने मरने) की बैयत कर रहे थे तो अल्लाह उनसे इस (बात पर) ज़रूर ख़ुश हुआ ग़रज़ जो कुछ उनके दिलों में था अल्लाह ने उसे देख लिया फिर उन पर तस्सली नाज़िल फरमाई और उन्हें उसके एवज़ में बहुत जल्द फ़तेह इनायत की (18)

और (इसके अलावा) बहुत सी ग़नीमतें (भी) जो उन्होने हासिल की (अता फरमाई) और अल्लाह तो ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (19)

अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फरमाया था कि तुम उन पर काबिज़ हो गए तो उसने तुम्हें ये (ख़ैबर की ग़नीमत) जल्दी से दिलवा दीं और (हुबैदिया से) लोगों की दराज़ी को तुमसे रोक दिया और ग़रज़ ये थी कि मोमिनीन के लिए (क़ुदरत) का नमूना हो और अल्लाह तुमको सीधी राह पर ले चले (20)

और दूसरी (ग़नीमतें भी दी) जिन पर तुम क़ुदरत नहीं रखते थे (और) अल्लाह ही उन पर हावी था और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है (21)

(और) अगर कुफ़्फ़ार तुमसे लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाते फिर वह न (अपना) किसी को सरपरस्त ही पाते न मददगार (22)

यही अल्लाह की आदत है जो पहले ही से चली आती है और तुम अल्लाह की आदत को बदलते न देखोगे (23)

और वह वही तो है जिसने तुमको उन कुफ़्फ़ार पर फ़तेह देने के बाद मक्के की सरहद पर उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए और तुम लोग जो कुछ भी करते थे अल्लाह उसे देख रहा था (24)

ये वही लोग तो हैं जिन्होने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदुल हराम (में जाने) से रोका और क़ुरबानी के जानवरों को भी (न आने दिया) कि वह अपनी (मुक़र्रर) जगह (में) पहुँचने से रूके रहे और

अगर कुछ ऐसे ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें न होती जिनसे तुम वाक़िफ न थे कि तुम उनको (लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साथ) पामाल कर डालते पस तुमको उनकी तरफ से बेख़बरी में नुक़सान पहँुच जाता (तो उसी वक्त तुमको फतेह हुयी मगर ताख़ीर) इसलिए (हुयी) कि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे और अगर वह (ईमानदार कुफ़्फ़ार से) अलग हो जाते तो उनमें से जो लोग काफ़िर थे हम उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ज़रूर सज़ा देते (25)

(ये वह वक्त) था जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद ठान ली थी और ज़िद भी तो जाहिलियत की सी तो अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन (के दिलों) पर अपनी तरफ़ से तसकीन नाज़िल फ़रमाई और उनको परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा और ये लोग उसी के सज़ावार और एहल भी थे और अल्लाह तो हर चीज़ से ख़बरदार है (26)

बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा मुताबिक़े वाक़ेया ख़्वाब दिखाया था कि तुम लोग इन्शाअल्लाह मस्जिदुल हराम में अपने सर मुँडवा कर और अपने थोड़े से बाल कतरवा कर बहुत अमन व इत्मेनान से दाख़िल होंगे (और) किसी तरह का ख़ौफ न करोगे तो जो बात तुम नहीं जानते थे उसको मालूम थी तो उसने फ़तेह मक्का से पहले ही बहुत जल्द फतेह अता की (27)

वह वही तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब रखे और गवाही के लिए तो बस अल्लाह ही काफ़ी है (28)

मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों पर बड़े सख़्त और आपस में बड़े रहम दिल हैं तू उनको देखेगा (कि अल्लाह के सामने) झुके सर बसजूद हैं अल्लाह के फज़ल और उसकी ख़ुशनूदी के ख़्वास्तगार हैं कसरते सुजूद के असर से उनकी पेशानियों में घट्टे पड़े हुए हैं यही औसाफ़ उनके तौरेत में भी हैं और यही हालात इंजील में (भी मज़कूर) हैं गोया एक खेती है जिसने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली फिर (अजज़ा ज़मीन को ग़ेज़ा बनाकर) उसी सूई को मज़बूत किया तो वह मोटी हुयी फिर अपनी जड़ पर सीधी खड़ी हो गयी और अपनी ताज़गी से किसानों को ख़ुश करने लगी और इतनी जल्दी तरक़्क़ी इसलिए दी ताकि उनके ज़रिए काफ़िरों का जी जलाएँ जो लोग ईमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे अल्लाह ने उनसे बख़्शिश और अज्रे अज़ीम का वायदा किया है (29)

49 सूरह अल हुजोरात

सूरह अल हुजोरात मदीना में नाज़िल हुई और इसकी (18) आयतें हैं

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ईमानदारों अल्लाह और उसके रसूल के सामने किसी बात में आगे न बढ़ जाया करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है (1)

ऐ ईमानदारों (बोलने में) अपनी आवाज़े पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची न किया करो और जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से ज़ोर (ज़ोर) से बोला करते हो उनके रूबरू ज़ोर से न बोला करो (ऐसा न हो कि) तुम्हारा किया कराया सब अकारत हो जाए और तुमको ख़बर भी न हो (2)

बेशक जो लोग रसूले अल्लाह के सामने अपनी आवाज़ें धीमी कर लिया करते हैं यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है उनके लिए (आख़ेरत में) बख़्शिश और बड़ा अज्र है (3)

(ऐ रसूल) जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से आवाज़ देते हैं उनमें के अक्सर बे अक्ल हैं (4)

और अगर ये लोग इतना ताम्मुल करते कि तुम ख़ुद निकल कर उनके पास आ जाते (तब बात करते) तो ये उनके लिए बेहतर था और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (5)

ऐ ईमानदारों अगर कोई बदकिरदार तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) कि तुम किसी क़ौम को नादानी से नुक़सान पहुँचाओ फिर अपने किए पर नादिम हो (6)

और जान रखो कि तुम में अल्लाह के पैग़म्बर (मौजूद) हैं बहुत सी बातें ऐसी हैं कि अगर रसूल उनमें तुम्हारा कहा मान लिया करें तो (उलटे) तुम ही मुश्किल में पड़ जाओ लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मोहब्बत दे दी है और उसको तुम्हारे दिलों में उमदा कर दिखाया है और कुफ़्र और बदकारी और नाफ़रमानी से तुमको बेज़ार कर दिया है यही लोग अल्लाह के फ़ज़्ल व एहसान से राहे हिदायत पर हैं (7)

और अल्लाह तो बड़ा वाकिफ़कार और हिकमत वाला है (8)

और अगर मोमिनीन में से दो फिरक़े आपस में लड़ पड़े तो उन दोनों में सुलह करा दो फिर अगर उनमें से एक (फ़रीक़) दूसरे पर ज़्यादती करे तो जो (फिरक़ा) ज़्यादती करे तुम (भी) उससे लड़ो यहाँ तक वह अल्लाह के हुक्म की तरफ रूजू़ करे फिर जब रूजू़ करे तो फरीक़ैन में मसावात के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ से काम लो बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (9)

मोमिनीन तो आपस में बस भाई भाई हैं तो अपने दो भाईयों में मेल जोल करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए (10)

ऐ ईमानदारों (तुम किसी क़ौम का) कोई मर्द (दूसरी क़ौम के मर्दों की हँसी न उड़ाये मुमकिन है कि वह लोग (अल्लाह के नज़दीक) उनसे अच्छे हों और न औरते औरतों से (तमसखु़र करें) क्या अजब है कि वह उनसे अच्छी हों और तुम आपस में एक दूसरे को मिलने न दो न एक दूसरे का बुरा नाम धरो ईमान लाने के बाद बदकारी (का) नाम ही बुरा है और जो लोग बाज़ न आएँ तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं (11)

ऐ ईमानदारों बहुत से गुमान (बद) से बचे रहो क्यों कि बाज़ बदगुमानी गुनाह हैं और आपस में एक दूसरे के हाल की टोह में न रहा करो और न तुममें से एक दूसरे की ग़ीबत करे क्या तुममें से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए तो तुम उससे (ज़रूर) नफरत करोगे और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है (12)

लोगों हमने तो तुम सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हम ही ने तुम्हारे कबीले और बिरादरियाँ बनायीं ताकि एक दूसरे की शिनाख़्त करे इसमें शक नहीं कि अल्लाह के नज़दीक तुम सबमें बड़ा इज़्ज़तदार वही है जो बड़ा परहेज़गार हो बेशक अल्लाह बड़ा वाक़िफ़कार ख़बरदार है (13)

अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए बल्कि (यूँ) कह दो कि इस्लाम लाए हालॉकि ईमान का अभी तक तुम्हारे दिल में गुज़र हुआ ही नहीं और अगर तुम अल्लाह की और उसके रसूल की फरमाबरदारी करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा - बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (14)

(सच्चे मोमिन) तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने उसमें किसी तरह का शक शुबह न किया और अपने माल से और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जेहाद किया यही लोग (दावाए ईमान में) सच्चे हैं (15)

(ऐ रसूल इनसे) पूछो तो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीदारी जताते हो और अल्लाह तो जो कुछ आसमानों मे है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) जानता है और अल्लाह हर चीज़ से ख़बरदार है (16)

(ऐ रसूल) तुम पर ये लोग (इसलाम लाने का) एहसान जताते हैं तुम (साफ़) कह दो कि तुम अपने इसलाम का मुझ पर एहसान न जताओ (बल्कि) अगर तुम (दावाए ईमान में) सच्चे हो तो समझो कि, अल्लाह ने तुम पर एहसान किया कि उसने तुमको ईमान का रास्ता दिखाया (17)

बेशक अल्लाह तो सारे आसमानों और ज़मीन की छिपी हुयी बातों को जानता है और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है (18)

50 सूरह क़ाफ़

सूरह क़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (45) पैंतालीस आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

क़ाफ़ क़ुरान मजीद की क़सम (मोहम्मद पैग़म्बर हैं) (1)

लेकिन इन (काफिरों) को ताज्जुब है कि उन ही में एक (अज़ाब से) डराने वाला (पैग़म्बर) उनके पास आ गया तो कुफ़्फ़ार कहने लगे ये तो एक अजीब बात है (2)

भला जब हम मर जाएँगे और (सड़ गल कर) मिटटी हो जाएँगे तो फिर ये दोबार ज़िन्दा होना (अक़्ल से) बईद (बात है) (3)

उनके जिस्मों से ज़मीन जिस चीज़ को (खा खा कर) कम करती है वह हमको मालूम है और हमारे पास तो तहरीरी याददाश्त किताब लौहे महफूज़ मौजूद है (4)

मगर जब उनके पास दीन (हक़) आ पहुँचा तो उन्होने उसे झुठलाया तो वह लोग एक ऐसी बात में उलझे हुए हैं जिसे क़रार नहीं (5)

तो क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान की नज़र नहीं की कि हमने उसको क्यों कर बनाया और उसको कैसी ज़ीनत दी और उनसे कहीं शिगाफ़्त तक नहीं (6)

और ज़मीन को हमने फैलाया और उस पर बोझल पहाड़ रख दिये और इसमें हर तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उगाई ताकि तमाम रूजू लाने वाले (7)

(बन्दे) हिदायत और इबरत हासिल करें (8)

और हमने आसमान से बरकत वाला पानी बरसाया तो उससे बाग़ (के दरख़्त) उगाए और खेती का अनाज और लम्बी लम्बी खजूरें (9)

जिसका बौर बाहम गुथा हुआ है (10)

(ये सब कुछ) बन्दों की रोज़ी देने के लिए (पैदा किया) और पानी ही से हमने मुर्दा शहर (उफ़तादा ज़मीन) को ज़िन्दा किया (11)

इसी तरह (क़यामत में मुर्दो को) निकलना होगा उनसे पहले नूह की क़ौम और ख़न्दक़ वालों और (क़ौम) समूद ने अपने अपने पैग़म्बरों को झुठलाया (12)

और (क़ौम) आद और फिरआऊन और लूत की क़ौम (13)

और बन के रहने वालों (क़ौम शुऐब) और तुब्बा की क़ौम और (उन) सबने अपने (अपने) पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमारा (अज़ाब का) वायदा पूरा हो कर रहा (14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं (हरगिज़ नहीं) मगर ये लोग अज़ सरे नौ (दोबारा) पैदा करने की निस्बत शक में पड़े हैं (15)

और बेशक हम ही ने इन्सान को पैदा किया और जो ख़्यालात उसके दिल में गुज़रते हैं हम उनको जानते हैं और हम तो उसकी शहरग से भी ज़्यादा क़रीब हैं (16)

जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले (केरामन क़ातेबीन) जो उसके दाहिने बाएं बैठे हैं लिख लेते हैं (17)

कोई बात उसकी ज़बान पर नहीं आती मगर एक निगेहबान उसके पास तैयार रहता है (18)

मौत की बेहोशी यक़ीनन तारी होगी (जो हम बता देंगे कि) यही तो वह (हालात है) जिससे तू भागा करता था (19)

और सूर फूँका जाएगा यही (अज़ाब) के वायदे का दिन है और हर शख़्स (हमारे सामने) (इस तरह) हाज़िर होगा (20)

कि उसके साथ एक (फरिश्ता) हँका लाने वाला होगा (21)

और एक (आमाल का) गवाह उससे कहा जाएगा कि उस (दिन) से तू ग़फ़लत में पड़ा था तो अब हमने तेरे सामने से पर्दे को हटा दिया तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है (22)

और उसका साथी (फ़रिश्ता) कहेगा ये (उसका अमल) जो मेरे पास है (23)

(तब हुक्म होगा कि) तुम दोनों हर सरकश नाशुक्रे को दोज़ख़ में डाल दो (24)

जो (वाजिब हुकूक से) माल में बुख़्ल करने वाला हद से बढ़ने वाला (दीन में) शक करने वाला था (25)

जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद बना रखे थे तो अब तुम दोनों इसको सख़्त अज़ाब में डाल ही दो (26)

(उस वक्त) उसका साथी (शैतान) कहेगा परवरदिगार हमने इसको गुमराह नहीं किया था बल्कि ये तो ख़ुद सख़्त गुमराही में मुब्तिला था (27)

इस पर अल्लाह फ़रमाएगा हमारे सामने झगड़े न करो मैं तो तुम लोगों को पहले ही (अज़ाब से) डरा चुका था (28)

मेरे यहाँ बात बदला नहीं करती और न मैं बन्दों पर (ज़र्रा बराबर) ज़ुल्म करने वाला हूँ (29)

उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि तू भर चुकी और वह कहेगी क्या कुछ और भी हैं (30)

और बेहिश्त परहेज़गारों के बिलकुल करीब कर दी जाएगी (31)

यही तो वह बेहिश्त है जिसका तुममें से हर एक (अल्लाह की तरफ़) रूजू करने वाले (हुदूद की) हिफाज़त करने वाले से वायदा किया जाता है (32)

तो जो शख़्स अल्लाह से बे देखे डरता रहा और अल्लाह की तरफ़ रूजू करने वाला दिल लेकर आया (33)

(उसको हुक्म होगा कि) इसमें सही सलामत दाख़िल हो जाओ यहीं तो हमेशा रहने का दिन है (34)

इसमें ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए हाज़िर है और हमारे यहॉ तो इससे भी ज़्यादा है (35)

और हमने तो इनसे पहले कितनी उम्मतें हलाक कर डाली जो इनसे क़ूवत में कहीं बढ़ कर थीं तो उन लोगों ने (मौत के ख़ौफ से) तमाम शहरों को छान मारा कि भला कहीं भी भागने का ठिकाना है (36)

इसमें शक नहीं कि जो शख़्स (आगाह) दिल रखता है या कान लगाकर हुज़ूरे क़ल्ब से सुनता है उसके लिए इसमें (काफ़ी) नसीहत है (37)

और हमने ही यक़ीनन सारे आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के बीच में है छहः दिन में पैदा किए और थकान तो हमको छुकर भी नहीं गयी (38)

तो (ऐ रसूल) जो कुछ ये (काफ़िर) लोग किया करते हैं उस पर तुम सब्र करो और आफ़ताब के निकलने से पहले अपने परवरदिगार के हम्द की तस्बीह किया करो (39)

और थोड़ी देर रात को भी और नमाज़ के बाद भी उसकी तस्बीह करो (40)

और कान लगा कर सुन रखो कि जिस दिन पुकारने वाला (इसराफ़ील) नज़दीक ही जगह से आवाज़ देगा (41)

(कि उठो) जिस दिन लोग एक सख़्त चीख़ को बाख़ूबी सुन लेगें वही दिन (लोगों) के कब्रों से निकलने का होगा (42)

बेशक हम ही (लोगों को) ज़िन्दा करते हैं और हम ही मारते हैं (43)

और हमारी ही तरफ फिर कर आना है जिस दिन ज़मीन (उनके ऊपर से) फट जाएगी और ये झट पट निकल खड़े होंगे ये उठाना और जमा करना (44)

और हम पर बहुत आसान है (ऐ रसूल) ये लोग जो कुछ कहते हैं हम (उसे) ख़ूब जानते हैं और तुम उन पर जब्र तो देते नहीं हो तो जो हमारे (अज़ाब के) वायदे से डरे उसको तुम क़ुरान के ज़रिए नसीहत करते रहो (45)

51 सूरह ज़ारेयात

सूरह ज़ारेयात मक्का में नाज़िल हुई और उसकी साठ (60) आयते है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

उन (हवाओं की क़सम) जो (बादलों को) उड़ा कर तितर बितर कर देती हैं (1)

फिर (पानी का) बोझ उठाती हैं (2)

फिर आहिस्ता आहिस्ता चलती हैं (3)

फिर एक ज़रूरी चीज़ (बारिश) को तक़सीम करती हैं (4)

कि तुम से जो वायदा किया जाता है ज़रूर बिल्कुल सच्चा है (5)

और (आमाल की) जज़ा (सज़ा) ज़रूर होगी (6)

और आसमान की क़सम जिसमें रहते हैं (7)

कि (ऐ एहले मक्का) तुम लोग एक ऐसी मुख़्तलिफ़ बेजोड़ बात में पड़े हो (8)

कि उससे वही फेरा जाएगा (गुमराह होगा) (9)

जो (अल्लाह के इल्म में) फेरा जा चुका है अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों (10)

जो ग़फलत में भूले हुए (पड़े) हैं पूछते हैं कि जज़ा का दिन कब होगा (11)

उस दिन (होगा) (12)

जब इनको (जहन्नुम की) आग में अज़ाब दिया जाएगा (13)

(और उनसे कहा जाएगा) अपने अज़ाब का मज़ा चखो ये वही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे (14)

बेशक परहेज़गार लोग (बेहिश्त के) बाग़ों और चश्मों में (ऐश करते) होगें (15)

जो उनका परवरदिगार उन्हें अता करता है ये (ख़ुश ख़ुश) ले रहे हैं ये लोग इससे पहले (दुनिया में) नेको कार थे (16)

(इबादत की वजह से) रात को बहुत ही कम सोते थे (17)

और पिछले पहर को अपनी मग़फ़िरत की दुआएं करते थे (18)

और उनके माल में माँगने वाले और न माँगने वाले (दोनों) का हिस्सा था (19)

और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (क़ुदरते अल्लाह की) बहुत सी निशानियाँ हैं (20)

और अल्लाह तुम में भी हैं तो क्या तुम देखते नहीं (21)

और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है आसमान में है (22)

तो आसमान व ज़मीन के मालिक की क़सम ये (क़ुरान) बिल्कुल ठीक है जिस तरह तुम बातें करते हो (23)

क्या तुम्हारे पास इबराहीम के मुअज़िज़ मेहमानो (फ़रिश्तों) की भी ख़बर पहुँची है कि जब वह लोग उनके पास आए (24)

तो कहने लगे (सलामुन अलैकुम) तो इबराहीम ने भी (अलैकुम) सलाम किया (देखा तो) ऐसे लोग जिनसे न जान न पहचान (25)

फिर अपने घर जाकर जल्दी से (भुना हुआ) एक मोटा ताज़ा बछड़ा ले आए (26)

और उसे उनके आगे रख दिया (फिर) कहने लगे आप लोग तनाउल क्यों नहीं करते (27)

(इस पर भी न खाया) तो इबराहीम उनसे जो ही जी में डरे वह लोग बोले आप अन्देशा न करें और उनको एक दानिशमन्द लड़के की ख़ुशख़बरी दी (28)

तो (ये सुनते ही) इबराहीम की बीवी (सारा) चिल्लाती हुयी उनके सामने आयीं और अपना मुँह पीट लिया कहने लगीं (ऐ है) एक तो (मैं) बुढ़िया (उस पर) बांझ (29)

लड़का क्यों कर होगा फ़रिश्ते बोले तुम्हारे परवरदिगार ने यूँ ही फरमाया है वह बेशक हिकमत वाला वाक़िफ़कार है (30)

तब इबराहीम ने पूछा कि (ऐ अल्लाह के) भेजे हुए फरिश्तों आख़िर तुम्हें क्या मुहिम दर पेश है (31)

वह बोले हम तो गुनाहगारों (क़ौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं (32)

ताकि उन पर मिटटी के पथरीले खरन्जे बरसाएँ (33)

जिन पर हद से बढ़ जाने वालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशान लगा दिए गए हैं (34)

ग़रज़ वहाँ जितने लोग मोमिनीन थे उनको हमने निकाल दिया (35)

और वहाँ तो हमने एक के सिवा मुसलमानों का कोई घर पाया भी नहीं (36)

और जो लोग दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं उनके लिए वहाँ (इबरत की) निशानी छोड़ दी और मूसा (के हाल) में भी (निशानी है) (37)

जब हमने उनको फिरआऊन के पास खुला हुआ मौजिज़ा देकर भेजा (38)

तो उसने अपने लशकर के बिरते पर मुँह मोड़ लिया और कहने लगा ये तो (अच्छा ख़ासा) जादूगर या सौदाई है (39)

तो हमने उसको और उसके लशकर को ले डाला फिर उन सबको दरिया में पटक दिया (40)

और वह तो क़ाबिले मलामत काम करता ही था और आद की क़ौम (के हाल) में भी निशानी है हमने उन पर एक बे बरकत आँधी चलायी (41)

कि जिस चीज़ पर चलती उसको बोसीदा हडडी की तरह रेज़ा रेज़ा किए बग़ैर न छोड़ती (42)

और समूद (के हाल) में भी (कुदरत की निशानी) है जब उससे कहा गया कि एक ख़ास वक्त तक ख़ूब चैन कर लो (43)

तो उन्होने अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की तो उन्हें एक रोज़ कड़क और बिजली ने ले डाला और देखते ही रह गए (44)

फिर न वह उठने की ताक़त रखते थे और न बदला ही ले सकते थे (45)

और (उनसे) पहले (हम) नूह की क़ौम को (हलाक कर चुके थे) बेशक वह बदकार लोग थे (46)

और हमने आसमानों को अपने बल बूते से बनाया और बेशक हममें सब कुदरत है (47)

और ज़मीन को भी हम ही ने बिछाया तो हम कैसे अच्छे बिछाने वाले हैं (48)

और हम ही ने हर चीज़ की दो दो क़िस्में बनायीं ताकि तुम लोग नसीहत हासिल करो (49)

तो अल्लाह ही की तरफ़ भागो मैं तुमको यक़ीनन उसकी तरफ से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ (50)

और अल्लाह के साथ दूसरा माबूद न बनाओ मैं तुमको यक़ीनन उसकी तरफ से खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ (51)

इसी तरह उनसे पहले लोगों के पास जो पैग़म्बर आता तो वह उसको जादूगर कहते या सिड़ी दीवाना (बताते) (52)

ये लोग एक दूसरे को ऐसी बात की वसीयत करते आते हैं (नहीं) बल्कि ये लोग हैं ही सरकश (53)

तो (ऐ रसूल) तुम इनसे मुँह फेर लो तुम पर तो कुछ इल्ज़ाम नहीं है (54)

और नसीहत किए जाओ क्योंकि नसीहत मोमिनीन को फायदा देती है (55)

और मैने जिनों और आदमियों को इसी ग़रज़ से पैदा किया कि वह मेरी इबादत करें (56)

न तो मैं उनसे रोज़ी का तालिब हूँ और न ये चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलाएँ (57)

अल्लाह ख़ुद बड़ा रोज़ी देने वाला ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है (58)

तो (इन) ज़ालिमों के वास्ते भी अज़ाब का कुछ हिस्सा है जिस तरह उनके साथियों के लिए हिस्सा था तो इनको हम से जल्दी न करनी चाहिए (59)

तो जिस दिन का इन काफ़िरों से वायदा किया जाता है इससे इनके लिए ख़राबी है (60)

52 सूरह तूर

सूरह तूर मक्का में नाज़िल हुई और इसकी उन्चास (49) आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(कोहे) तूर की क़सम (1)

और उसकी किताब (लौहे महफूज़) की (2)

जो कुशादा औराक़ में लिखी हुयी है (3)

और बैतुल मामूर की (जो काबा के सामने फरिश्तों का क़िब्ला है) (4)

और ऊँची छत (आसमान) की (5)

और जोश व ख़रोश वाले समुन्द्र की (6)

कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब बेशक वाक़ेए होकर रहेगा (7)

(और) इसका कोई रोकने वाला नहीं (8)

जिस दिन आसमान चक्कर खाने लगेगा (9)

और पहाड़ उड़ने लगेंगे (10)

तो उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (11)

जो लोग बातिल में पड़े खेल रहे हैं (12)

जिस दिन जहन्नुम की आग की तरफ उनको ढकेल ढकेल ले जाएँगे (13)

(और उनसे कहा जाएगा) यही वह जहन्नुम है जिसे तुम झुठलाया करते थे (14)

तो क्या ये जादू है या तुमको नज़र ही नहीं आता (15)

इसी में घुसो फिर सब्र करो या बेसब्री करो (दोनों) तुम्हारे लिए यकसाँ हैं तुम्हें तो बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे (16)

बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और नेअमतों में होंगे (17)

जो (जो नेअमतें) उनके परवरदिगार ने उन्हें दी हैं उनके मज़े ले रहे हैं और उनका परवरदिगार उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाएगा (18)

जो जो कारगुज़ारियाँ तुम कर चुके हो उनके सिले में (आराम से) तख़्तों पर जो बराबर बिछे हुए हैं (19)

तकिए लगाकर ख़ूब मज़े से खाओ पियो और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूर से उनका ब्याह रचाएँगे (20)

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया तो हम उनकी औलाद को भी उनके दर्जे पहुँचा देंगे और हम उनकी कारगुज़ारियों में से कुछ भी कम न करेंगे हर शख़्स अपने आमाल के बदले में गिरवी है (21)

और जिस क़िस्म के मेवे और गोश्त को उनका जी चाहेगा हम उन्हें बढ़ाकर अता करेंगे (22)

वहाँ एक दूसरे से शराब का जाम ले लिया करेंगे जिसमें न कोई बेहूदगी है और न गुनाह (23)

(और ख़िदमत के लिए) नौजवान लड़के उनके आस पास चक्कर लगाया करेंगे वह (हुस्न व जमाल में) गोया एहतियात से रखे हुए मोती हैं (24)

और एक दूसरे की तरफ रूख़ करके (लुत्फ की) बातें करेंगे (25)

(उनमें से कुछ) कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर में (अल्लाह से बहुत) डरा करते थे (26)

तो अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान किया और हमको (जहन्नुम की) लौ के अज़ाब से बचा लिया (27)

इससे क़ब्ल हम उनसे दुआएँ किया करते थे बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है (28)

तो (ऐ रसूल) तुम नसीहत किए जाओ तो तुम अपने परवरदिगार के फज़्ल से न काहिन हो और न मजनून किया (29)

क्या (तुमको) ये लोग कहते हैं कि (ये) शायर हैं (और) हम तो उसके बारे में ज़माने के हवादिस का इन्तेज़ार कर रहे हैं (30)

तुम कह दो कि (अच्छा) तुम भी इन्तेज़ार करो मैं भी इन्तेज़ार करता हूँ (31)

क्या उनकी अक़्लें उन्हें ये (बातें) बताती हैं या ये लोग हैं ही सरकश (32)

क्या ये लोग कहते हैं कि इसने क़ुरान ख़ुद गढ़ लिया है बात ये है कि ये लोग ईमान ही नहीं रखते (33)

तो अगर ये लोग सच्चे हैं तो ऐसा ही कलाम बना तो लाएँ (34)

क्या ये लोग किसी के (पैदा किये) बग़ैर ही पैदा हो गए हैं या यही लोग (मख़लूक़ात के) पैदा करने वाले हैं (35)

या इन्होने ही ने सारे आसमान व ज़मीन पैदा किए हैं (नहीं) बल्कि ये लोग यक़ीन ही नहीं रखते (36)

क्या तुम्हारे परवरदिगार के ख़ज़ाने इन्हीं के पास हैं या यही लोग हाकिम हैं (37)

या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से) सुन आते हैं जो सुन आया करता हो तो वह कोई सरीही दलील पेश करे (38)

क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ हैं और तुम लोगों के लिए बेटे (39)

या तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत की) उजरत माँगते हो कि ये लोग कर्ज़ के बोझ से दबे जाते हैं (40)

या इन लोगों के पास ग़ैब (का इल्म) है कि वह लिख लेते हैं (41)

या ये लोग कुछ दाँव चलाना चाहते हैं तो जो लोग काफ़िर हैं वह ख़ुद अपने दांव में फँसे हैं (42)

या अल्लाह के सिवा इनका कोई (दूसरा) माबूद है जिन चीज़ों को ये लोग (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं वह उससे पाक और पाक़ीज़ा है (43)

और अगर ये लोग आसमान से कोई अज़ाब (अज़ाब का) टुकड़ा गिरते हुए देखें तो बोल उठेंगे ये तो दलदार बादल है (44)

तो (ऐ रसूल) तुम इनको इनकी हालत पर छोड़ दो यहाँ तक कि वह जिसमें ये बेहोश हो जाएँगे (45)

इनके सामने आ जाए जिस दिन न इनकी मक्कारी ही कुछ काम आएगी और न इनकी मदद ही की जाएगी (46)

और इसमें शक नहीं कि ज़ालिमों के लिए इसके अलावा और भी अज़ाब है मगर उनमें बहुतेरे नहीं जानते हैं (47)

और (ऐ रसूल) तुम अपने परवरदिगार के हुक्म से इन्तेज़ार में सब्र किए रहो तो तुम बिल्कुल हमारी निगेहदाश्त में हो तो जब तुम उठा करो तो अपने परवरदिगार की हम्द की तस्बीह किया करो (48)

और कुछ रात को भी और सितारों के ग़ुरूब होने के बाद तस्बीह किया करो (49)

53 सूरह नजम (तारा)

सूरह नजम मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बासठ (62) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

तारे की क़सम जब टूटा (1)

कि तुम्हारे रफ़ीक़ (मोहम्मद) न गुमराह हुए और न बहके (2)

और वह तो अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिश से कुछ भी नहीं कहते (3)

ये तो बस वही है जो भेजी जाती है (4)

इनको निहायत ताक़तवर (फ़रिश्ते जिबरील) ने तालीम दी है (5)

जो बड़ा ज़बरदस्त है और जब ये (आसमान के) ऊँचे (मुशरक़ो) किनारे पर था तो वह अपनी (असली सूरत में) सीधा खड़ा हुआ (6)

फिर करीब हो (और आगे) बढ़ा (7)

(फिर जिबरील व मोहम्मद में) दो कमान का फ़ासला रह गया (8)

बल्कि इससे भी क़रीब था (9)

अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ जो 'वही' भेजी सो भेजी (10)

तो जो कुछ उन्होने देखा उनके दिल ने झूठ न जाना (11)

तो क्या वह (रसूल) जो कुछ देखता है तुम लोग उसमें झगड़ते हो (12)

और उन्होने तो उस (जिबरील) को एक बार (शबे मेराज) और देखा है (13)

सिदरतुल मुनतहा के नज़दीक (14)

उसी के पास तो रहने की बेहिश्त है (15)

जब छा रहा था सिदरा पर जो छा रहा था (16)

(उस वक़्त भी) उनकी आँख न तो और तरफ़ माएल हुयी और न हद से आगे बढ़ी (17)

और उन्होने यक़ीनन अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखीं (18)

तो भला तुम लोगों ने लात व उज़्ज़ा और तीसरे पिछले मनात को देखा (19)

(भला ये अल्लाह हो सकते हैं) (20)

क्या तुम्हारे तो बेटे हैं और उसके लिए बेटियाँ (21)

ये तो बहुत बेइन्साफ़ी की तक़सीम है (22)

ये तो बस सिर्फ नाम ही नाम है जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिए हैं, अल्लाह ने तो इसकी कोई सनद नाज़िल नहीं की ये लोग तो बस अटकल और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश के पीछे चल रहे हैं हालाँकि उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ से हिदायत भी आ चुकी है (23)

क्या जिस चीज़ की इन्सान तमन्ना करे वह उसे ज़रूर मिलती है (24)

आख़ेरत और दुनिया तो ख़ास अल्लाह ही के एख़्तेयार में हैं (25)

और आसमानों में बहुत से फरिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम न आती, मगर अल्लाह जिसके लिए चाहे इजाज़त दे दे और पसन्द करे उसके बाद (सिफ़ारिश कर सकते हैं) (26)

जो लोग आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते वह फ़रिश्तों के नाम रखते हैं औरतों के से नाम हालाँकि उन्हें इसकी कुछ ख़बर नहीं (27)

वह लोग तो बस गुमान (ख़्याल) के पीछे चल रहे हैं, हालाँकि गुमान यक़ीन के बदले में कुछ भी काम नहीं आया करता, (28)

तो जो हमारी याद से रदगिरदानी करे ओर सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी ही का तालिब हो तुम भी उससे मुँह फेर लो (29)

उनके इल्म की यही इन्तिहा है तुम्हारा परवरदिगार, जो उसके रास्ते से भटक गया उसको भी ख़ूब जानता है, और जो राहे रास्त पर है उनसे भी ख़ूब वाक़िफ़ है (30)

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह ही का है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की हो उनको उनकी कारस्तानियों की सज़ा दे और जिन लोगों ने नेकी की है (उनकी नेकी की जज़ा दे) (31)

जो सग़ीरा गुनाहों के सिवा कबीरा गुनाहों से और बेहयाई की बातों से बचे रहते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ी बख्शिश वाला है वही तुमको ख़ूब जानता है जब उसने तुमको मिटटी से पैदा किया और जब तुम अपनी माँ के पेट में बच्चे थे तो (तकब्बुर) से अपने नफ़्स की पाकीज़गी न जताया करो जो परहेज़गार है उसको वह ख़ूब जानता है (32)

भला (ऐ रसूल) तुमने उस शख़्स को भी देखा जिसने रदगिरदानी की (33)

और थोड़ा सा (अल्लाह की राह में) दिया और फिर बन्द कर दिया (34)

क्या उसके पास इल्मे ग़ैब है कि वह देख रहा है (35)

क्या उसको उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों में है (36)

और इबराहीम के (सहीफ़ों में) (37)

जिन्होने (अपना हक़) (पूरा अदा) किया इन सहीफ़ों में ये है, कि कोई शख़्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा (38)

और ये कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वह कोशिश करता है (39)

और ये कि उनकी कोशिश अनक़रीब ही (क़यामत में) देखी जाएगी (40)

फिर उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा (41)

और ये कि (सबको आख़िर) तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुँचना है (42)

और ये कि वही हँसाता और रूलाता है (43)

और ये कि वही मारता और जिलाता है (44)

और ये कि वही नर और मादा दो किस्म (के हैवान) नुत्फे से जब (रहम में) डाला जाता है (45)

पैदा करता है (46)

और ये कि उसी पर (कयामत में) दोबारा उठाना लाज़िम है (47)

और ये कि वही मालदार बनाता है और सरमाया अता करता है, (48)

और ये कि वही शोअराए का मालिक है (49)

और ये कि उसी ने पहले (क़ौमे) आद को हलाक किया (50)

और समूद को भी ग़रज़ किसी को बाक़ी न छोड़ा (51)

और (उसके) पहले नूह की क़ौम को बेशक ये लोग बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश थे (52)

और उसी ने (क़ौमे लूत की) उलटी हुयी बस्तियों को दे पटका (53)

(फिर उन पर) जो छाया सो छाया (54)

तो तू (ऐ इन्सान आख़िर) अपने परवरदिगार की कौन सी नेअमत पर शक किया करेगा (55)

ये (मोहम्मद भी अगले डराने वाले पैग़म्बरों में से एक डरने वाला) पैग़म्बर है (56)

कयामत क़रीब आ गयी (57)

अल्लाह के सिवा उसे कोई टाल नहीं सकता (58)

तो क्या तुम लोग इस बात से ताज्जुब करते हो और हँसते हो (59)

और रोते नहीं हो (60)

और तुम इस क़दर ग़ाफ़िल हो तो अल्लाह के आगे सजदे किया करो (61)

और (उसी की) इबादत किया करो (62) सजदा 13

54 सूरह क़मर (चाँद)

सूरह क़मर मक्का में नाज़िल हुई और इसकी पचपन (55) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

क़यामत क़रीब आ गयी और चाँद दो टुकड़े हो गया (1)

और अगर ये कुफ़्फ़ार कोई मौजिज़ा देखते हैं, तो मुँह फेर लेते हैं, और कहते हैं कि ये तो बड़ा ज़बरदस्त जादू है (2)

और उन लोगों ने झुठलाया और अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिशों की पैरवी की, और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है (3)

और उनके पास तो वह हालात पहुँच चुके हैं जिनमें काफी तम्बीह थीं (4)

और इन्तेहा दर्जे की दानाई मगर (उनको तो) डराना कुछ फ़ायदा नहीं देता (5)

तो (ऐ रसूल) तुम भी उनसे किनाराकश रहो, जिस दिन एक बुलाने वाला (इसराफ़ील) एक अजनबी और नागवार चीज़ की तरफ़ बुलाएगा (6)

तो (निदामत से) आँखें नीचे किए हुए कब्रों से निकल पड़ेंगे गोया वह फैली हुयी टिड्डियाँ हैं (7)

(और) बुलाने वाले की तरफ गर्दनें बढ़ाए दौड़ते जाते होंगे, कुफ़्फ़ार कहेंगे ये तो बड़ा सख़्त दिन है (8)

इनसे पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया था, तो उन्होने हमारे (ख़ास) बन्दे (नूह) को झुठलाया, और कहने लगे ये तो दीवाना है (9)

और उनको झिड़कियाँ भी दी गयीं, तो उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (बारे इलाहा मैं) इनके मुक़ाबले में कमज़ोर हूँ (10)

तो अब तू ही (इनसे) बदला ले तो हमने मूसलाधार पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए (11)

और ज़मीन से चश्में जारी कर दिए, तो एक काम के लिए जो मुक़र्रर हो चुका था (दोनों) पानी मिलकर एक हो गया (12)

और हमने एक कश्ती पर जो तख़्तों और कीलों से तैयार की गयी थी सवार किया (13)

और वह हमारी निगरानी में चल रही थी (ये) उस शख़्स (नूह) का बदला लेने के लिए जिसको लोग न मानते थे (14)

और हमने उसको एक इबरत बना कर छोड़ा तो कोई है जो इबरत हासिल करे (15)

तो (उनको) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था (16)

और हमने तो क़ुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया है तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (17)

आद (की क़ौम ने) (अपने पैग़म्बर) को झुठलाया तो (उनका) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था, (18)

हमने उन पर बहुत सख़्त मनहूस दिन में बड़े ज़न्नाटे की आँधी चलायी (19)

जो लोगों को (अपनी जगह से) इस तरह उखाड़ फेकती थी गोया वह उखड़े हुए खजूर के तने हैं (20)

तो (उनको) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था (21)

और हमने तो क़ुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया, तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (22)

(क़ौम) समूद ने डराने वाले (पैग़म्बरों) को झुठलाया (23)

तो कहने लगे कि भला एक आदमी की जो हम ही में से हो उसकी पैरवीं करें ऐसा करें तो गुमराही और दीवानगी में पड़ गए (24)

क्या हम सबमें बस उसी पर वही नाज़िल हुयी है (नहीं) बल्कि ये तो बड़ा झूठा तअल्ली करने वाला है (25)

उनको अनक़रीब कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन बड़ा झूठा तकब्बुर करने वाला है (26)

(ऐ सालेह) हम उनकी आज़माइश के लिए ऊँटनी भेजने वाले हैं तो तुम उनको देखते रहो और (थोड़ा) सब्र करो (27)

और उनको ख़बर कर दो कि उनमें पानी की बारी मुक़र्रर कर दी गयी है हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर हाज़िर होना चाहिए (28)

तो उन लोगों ने अपने रफीक़ (क़ेदार) को बुलाया तो उसने पकड़ कर (ऊँटनी की) कूँचे काट डालीं (29)

तो (देखो) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था (30)

हमने उन पर एक सख़्त चिंघाड़ (का अज़ाब) भेज दिया तो वह बाड़े वालो के सूखे हुए चूर चूर भूसे की तरह हो गए (31)

और हमने क़ुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया है तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (32)

लूत की क़ौम ने भी डराने वाले (पैग़म्बरों) को झुठलाया (33)

तो हमने उन पर कंकर भरी हवा चलाई मगर लूत के लड़के बाले को हमने उनको अपने फज़ल व करम से पिछले ही को बचा लिया (34)

हम शुक्र करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (35)

और लूत ने उनको हमारी पकड़ से भी डराया था मगर उन लोगों ने डराते ही में शक किया (36)

और उनसे उनके मेहमान (फ़रिश्ते) के बारे में नाजायज़ मतलब की ख़्वाहिश की तो हमने उनकी आँखें अन्धी कर दीं तो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो (37)

और सुबह सवेरे ही उन पर अज़ाब आ गया जो किसी तरह टल ही नहीं सकता था (38)

तो मेरे अज़ाब और डराने के (पड़े) मज़े चखो (39)

और हमने तो क़ुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (40)

और फ़िरआऊन के पास भी डराने वाले (पैग़म्बर) आए (41)

तो उन लोगों ने हमारी कुल निशानियों को झुठलाया तो हमने उनको इस तरह सख़्त पकड़ा जिस तरह एक ज़बरदस्त साहिबे क़ुदरत पकड़ा करता है (42)

(ऐ एहले मक्का) क्या उन लोगों से भी तुम्हारे कुफ्फार बढ़ कर हैं या तुम्हारे वास्ते (पहली) किताबों में माफी (लिखी हुयी) है (43)

क्या ये लोग कहते हैं कि हम बहुत क़वी जमाअत हैं (44)

अनक़रीब ही ये जमाअत शिकस्त खाएगी और ये लोग पीठ फेर कर भाग जाएँगे (45)

बात ये है कि इनके वायदे का वक़्त क़यामत है और क़यामत बड़ी सख़्त और बड़ी तल्ख़ (चीज़) है (46)

बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी में (मुब्तिला) हैं (47)

उस रोज़ ये लोग अपने अपने मुँह के बल (जहन्नुम की) आग में घसीटे जाएँगे (और उनसे कहा जाएगा) अब जहन्नुम की आग का मज़ा चखो (48)

बेशक हमने हर चीज़ एक मुक़र्रर अन्दाज़ से पैदा की है (49)

और हमारा हुक्म तो बस आँख के झपकने की तरह एक बात होती है (50)

और हम तुम्हारे हम मशरबो को हलाक कर चुके हैं तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (51)

और अगर चे ये लोग जो कुछ कर चुके हैं (इनके) आमाल नामों में (दर्ज) है (52)

(यानि) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है (53)

बेशक परहेज़गार लोग (बेहिश्त के) बाग़ों और नहरों में (54)

(यानि) पसन्दीदा मक़ाम में हर तरह की कुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में (मुक़र्रिब) होंगे (55)

55 सूरह रहमान

सूरह रहमान मक्का में नाज़िल हुई और इसमें अठहातर (78) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

बड़ा मेहरबान (अल्लाह) (1)

उसी ने क़ुरान की तालीम फरमाई (2)

उसी ने इन्सान को पैदा किया (3)

उसी ने उनको (अपना मतलब) ब्यान करना सिखाया (4)

सूरज और चाँद एक मुक़र्रर हिसाब से चल रहे हैं (5)

और बूटियाँ बेलें, और दरख़्त (उसी को) सजदा करते हैं (6)

और उसी ने आसमान बुलन्द किया और तराज़ू (इन्साफ) को क़ायम किया (7)

ताकि तुम लोग तराज़ू (से तौलने) में हद से तजाउज़ न करो (8)

और ईन्साफ के साथ ठीक तौलो और तौल कम न करो (9)

और उसी ने लोगों के नफ़े के लिए ज़मीन बनायी (10)

कि उसमें मेवे और खजूर के दरख़्त हैं जिसके ख़ोशों में गि़लाफ़ होते हैं (11)

और अनाज जिसके साथ भुस होता है और ख़ुशबूदार फूल (12)

तो (ऐ गिरोह जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों को न मानोगे (13)

उसी ने इन्सान को ठीकरे की तरह खन खनाती हुयी मिटटी से पैदा किया (14)

और उसी ने जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया (15)

तो (ऐ गिरोह जिन व इन्स) तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमतों से मुकरोगे (16)

वही जाड़े गर्मी के दोनों मशरिकों का मालिक है और दोनों मग़रिबों का (भी) मालिक है (17)

तो (ऐ जिनों) और (आदमियों) तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (18)

उसी ने दरिया बहाए जो बाहम मिल जाते हैं (19)

दो के दरम्यिान एक हद्दे फ़ासिल (आड़) है जिससे तजाउज़ नहीं कर सकते (20)

तो (ऐ जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुठलाओगे (21)

इन दोनों दरियाओं से मोती और मूँगे निकलते हैं (22)

(तो जिन व इन्स) तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत को न मानोगे (23)

और जहाज़ जो दरिया में पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े रहते हैं उसी के हैं (24)

तो (ऐ जिन व इन्स) तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुठलाओगे (25)

जो (मख़लूक़) ज़मीन पर है सब फ़ना होने वाली है (26)

और सिर्फ तुम्हारे परवरदिगार की ज़ात जो अज़मत और करामत वाली है बाक़ी रहेगी (27)

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (28)

और जितने लोग सारे आसमान व ज़मीन में हैं (सब) उसी से माँगते हैं वह हर रोज़ (हर वक्त) मख़लूक के एक न एक काम में है (29)

तो तुम दोनों अपने सरपरस्त की कौन कौन सी नेअमत से मुकरोगे (30)

(ऐ दोनों गिरोहों) हम अनक़रीब ही तुम्हारी तरफ मुतावज्जे होंगे (31)

तो तुम दोनों अपने पालने वाले की किस किस नेअमत को न मानोगे (32)

ऐ गिरोह जिन व इन्स अगर तुममें क़ुदरत है कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से (होकर कहीं) निकल (कर मौत या अज़ाब से भाग) सको तो निकल जाओ (मगर) तुम तो बग़ैर क़ूवत और ग़लबे के निकल ही नहीं सकते (हालॉ कि तुममें न क़ूवत है और न ही ग़लबा) (33)

तो तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को झुठलाओगे (34)

(गुनाहगार जिनों और आदमियों जहन्नुम में) तुम दोनो पर आग का सब्ज़ शोला और सियाह धुऑं छोड़ दिया जाएगा तो तुम दोनों (किस तरह) रोक नहीं सकोगे (35)

फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (36)

फिर जब आसमान फट कर (क़यामत में) तेल की तरह लाल हो जाऐगा (37)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे (38)

तो उस दिन न तो किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा न किसी जिन से (39)

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को न मानोगे (40)

गुनाहगार लोग तो अपने चेहरों ही से पहचान लिए जाएँगे तो पेशानी के पटटे और पाँव पकड़े (जहन्नुम में डाल दिये जाएँगे) (41)

आख़िर तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (42)

(फिर उनसे कहा जाएगा) यही वह जहन्नुम है जिसे गुनाहगार लोग झुठलाया करते थे (43)

ये लोग दोज़ख़ और हद दरजा खौलते हुए पानी के दरमियान (बेक़रार दौड़ते) चक्कर लगाते फिरेंगे (44)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत को न मानोगे (45)

और जो शख़्स अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता रहा उसके लिए दो दो बाग़ हैं (46)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत से इन्कार करोगे (47)

दोनों बाग़ (दरख़्तों की) टहनियों से हरे भरे (मेवों से लदे) हुए (48)

फिर दोनों अपने सरपरस्त की किस किस नेअमतों को झुठलाओगे (49)

इन दोनों में दो चश्में जारी होंगे (50)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे (51)

इन दोनों बाग़ों में सब मेवे दो दो किस्म के होंगे (52)

तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (53)

यह लोग उन फ़र्शो पर जिनके असतर अतलस के होंगे तकिये लगाकर बैठे होंगे तो दोनों बाग़ों के मेवे (इस क़दर) क़रीब होंगे (कि अगर चाहे तो लगे हुए खालें) (54)

तो तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को न मानोगे (55)

इसमें (पाक दामन ग़ैर की तरफ आँख उठा कर न देखने वाली औरतें होंगी जिनको उन से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा) और जिन ने (56)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे (57)

(ऐसी हसीन) गोया वह (मुजस्सिम) याक़ूत व मूँगे हैं (58)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों से मुकरोगे (59)

भला नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ और भी है (60)

फिर तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत को झुठलाओगे (61)

उन दोनों बाग़ों के अलावा दो बाग़ और हैं (62)

तो तुम दोनों अपने पालने वाले की किस किस नेअमत से इन्कार करोगे (63)

दोनों निहायत गहरे सब्ज़ व शादाब (64)

तो तुम दोनों अपने सरपरस्त की किन किन नेअमतों को न मानोगे (65)

उन दोनों बाग़ों में दो चश्में जोश मारते होंगे (66)

तो तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअमत से मुकरोगे (67)

उन दोनों में मेवें हैं खुरमें और अनार (68)

तो तुम दोनों अपने मालिक की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे (69)

उन बाग़ों में खुश खुल्क और ख़ूबसूरत औरतें होंगी (70)

तो तुम दोनों अपने मालिक की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे (71)

वह हूरें हैं जो ख़ेमों में छुपी बैठी हैं (72)

फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नेअमत से इन्कार करोगे (73)

उनसे पहले उनको किसी इन्सान ने उनको छुआ तक नहीं और न जिन ने (74)

फिर तुम दोनों अपने मालिक की किस किस नेअमत से मुकरोगे (75)

ये लोग सब्ज़ कालीनों और नफीस व हसीन मसनदों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे (76)

फिर तुम अपने परवरदिगार की किन किन नेअमतों से इन्कार करोगे (77)

(ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार जो साहिबे जलाल व करामत है उसी का नाम बड़ा बाबरकत है (78)

5 सूरह वाक़ेआ

सूरह वाक़ेआ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (95) पिच्चान्नवे आयते हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जब क़यामत बरपा होगी और उसके वाक़िया होने में ज़रा झूट नहीं (1)

(उस वक़्त लोगों में फ़र्क ज़ाहिर होगा) (2)

कि किसी को पस्त करेगी किसी को बुलन्द (3)

जब ज़मीन बड़े ज़ोरों में हिलने लगेगी (4)

और पहाड़ (टकरा कर) बिल्कुल चूर चूर हो जाएँगे (5)

फिर ज़र्रे बन कर उड़ने लगेंगे (6)

और तुम लोग तीन किस्म हो जाओगे (7)

तो दाहिने हाथ (में आमाल नामा लेने) वाले (वाह) दाहिने हाथ वाले क्या (चैन में) हैं (8)

और बाएं हाथ (में आमाल नामा लेने) वाले (अफ़सोस) बाएं हाथ वाले क्या (मुसीबत में) हैं (9)

और जो आगे बढ़ जाने वाले हैं (वाह क्या कहना) वह आगे ही बढ़ने वाले थे (10)

यही लोग (अल्लाह के) मुक़र्रिब हैं (11)

आराम व आसाइश के बाग़ों में बहुत से (12)

तो अगले लोगों में से होंगे (13)

और कुछ थोडे से पिछले लोगों में से मोती (14)

और याक़ूत से जड़े हुए सोने के तारों से बने हुए (15)

तख़्ते पर एक दूसरे के सामने तकिए लगाए (बैठे) होंगे (16)

नौजवान लड़के जो (बेहिश्त में) हमेशा (लड़के ही बने) रहेंगे (17)

(शरबत वग़ैरह के) सागर और चमकदार टोंटीदार कंटर और शफ़्फ़ाफ़ शराब के जाम लिए हुए उनके पास चक्कर लगाते होंगे (18)

जिसके (पीने) से न तो उनको (ख़ुमार से) दर्दसर होगा और न वह बदहवास मदहोश होंगे (19)

और जिस क़िस्म के मेवे पसन्द करें (20)

और जिस क़िस्म के परिन्दे का गोश्त उनका जी चाहे (सब मौजूद है) (21)

और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें (22)

जैसे एहतेयात से रखे हुए मोती (23)

ये बदला है उनके (नेक) आमाल का (24)

वहाँ न तो बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात (25)

(फहश) बस उनका कलाम सलाम ही सलाम होगा (26)

और दाहिने हाथ वाले (वाह) दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है (27)

बे काँटे की बेरो और लदे गुथे हुए (28)

केलों और लम्बी लम्बी छाँव (29)

और झरनो के पानी (30)

और अनारों (31)

मेवो में होंगे (32)

जो न कभी खत्म होंगे और न उनकी कोई रोक टोक (33)

और ऊँचे ऊँचे (नरम गद्दो के) फ़र्शों में (मज़े करते) होंगे (34)

(उनको) वह हूरें मिलेंगी जिसको हमने नित नया पैदा किया है (35)

तो हमने उन्हें कुँवारियाँ प्यारी प्यारी हमजोलियाँ बनाया (36)

(ये सब सामान) (37)

दाहिने हाथ (में नामए आमाल लेने) वालों के वास्ते है (38)

(इनमें) बहुत से तो अगले लोगों में से (39)

और बहुत से पिछले लोगों में से (40)

और बाएं हाथ (में नामए आमाल लेने) वाले (अफसोस) बाएं हाथ वाले क्या (मुसीबत में) हैं (41)

(दोज़ख़ की) लौ और खौलते हुए पानी (42)

और काले सियाह धुएँ के साये में होंगे (43)

जो न ठन्डा और न ख़ुश आइन्द (44)

ये लोग इससे पहले (दुनिया में) ख़ूब ऐश उड़ा चुके थे (45)

और बड़े गुनाह (शिर्क) पर अड़े रहते थे (46)

और कहा करते थे कि भला जब हम मर जाएँगे और (सड़ गल कर) मिटटी और हडिडयाँ (ही हडिडयाँ) रह जाएँगे (47)

तो क्या हमें या हमारे अगले बाप दादाओं को फिर उठना है (48)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगले और पिछले (49)

सब के सब रोजे़ मुअय्यन की मियाद पर ज़रूर इकट्ठे किए जाएँगे (50)

फिर तुमको बेशक ऐ गुमराहों झुठलाने वालों (51)

यक़ीनन (जहन्नुम में) थोहड़ के दरख़्तों में से खाना होगा (52)

तो तुम लोगों को उसी से (अपना) पेट भरना होगा (53)

फिर उसके ऊपर खौलता हुआ पानी पीना होगा (54)

और पियोगे भी तो प्यासे ऊँट का सा (डग डगा के) पीना (55)

क़यामत के दिन यही उनकी मेहमानी होगी (56)

तुम लोगों को (पहली बार भी) हम ही ने पैदा किया है (57)

फिर तुम लोग (दोबार की) क्यों नहीं तस्दीक़ करते (58)

तो जिस नुत्फे़ को तुम (औरतों के रहम में डालते हो) क्या तुमने देख भाल लिया है क्या तुम
उससे आदमी बनाते हो या हम बनाते हैं (59)

हमने तुम लोगों में मौत को मुक़र्रर कर दिया है और हम उससे आजिज़ नहीं हैं (60)

कि तुम्हारे ऐसे और लोग बदल डालें और तुम लोगों को इस (सूरत) में पैदा करें जिसे तुम
मुत्तलक़ नहीं जानते (61)

और तुमने पैहली पैदाइश तो समझ ही ली है (कि हमने की) फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (62)
भला देखो तो कि जो कुछ तुम लोग बोते हो क्या (63)

तुम लोग उसे उगाते हो या हम उगाते हैं अगर हम चाहते (64)

तो उसे चूर चूर कर देते तो तुम बातें ही बनाते रह जाते (65)

कि (हाए) हम तो (मुफ्त) तावान में फॅसे (नहीं) (66)

हम तो बदनसीब हैं (67)

तो क्या तुमने पानी पर भी नज़र डाली जो (दिन रात) पीते हो (68)

क्या उसको बादल से तुमने बरसाया है या हम बरसाते हैं (69)

अगर हम चाहें तो उसे खारी बना दें तो तुम लोग शक्र क्यों नहीं करते (70)

तो क्या तुमने आग पर भी ग़ौर किया जिसे तुम लोग लकड़ी से निकालते हो (71)

क्या उसके दरख़्त को तुमने पैदा किया या हम पैदा करते हैं (72)

हमने आग को (जहन्नुम की) याद देहानी और मुसाफिरों के नफे के (वास्ते पैदा किया) (73)

तो (ऐ रसूल) तुम अपने बुज़ुर्ग परवरदिगार की तस्बीह करो (74)

तो मैं तारों के मनाज़िल की क़सम खाता हूँ (75)

और अगर तुम समझो तो ये बड़ी क़सम है (76)

कि बेशक ये बड़े रूतबे का क़ुरान है (77)

जो किताब (लौहे महफूज़) में (लिखा हुआ) है (78)

इसको बस वही लोग छूते हैं जो पाक हैं (79)

सारे जहाँ के परवरदिगार की तरफ से (मोहम्मद पर) नाज़िल हुआ है (80)

तो क्या तुम लोग इस कलाम से इन्कार रखते हो (81)

और तुमने अपनी रोज़ी ये करार दे ली है कि (उसको) झुठलाते हो (82)

तो क्या जब जान गले तक पहुँचती है (83)

और तुम उस वक़्त (की हालत) पड़े देखा करते हो (84)

और हम इस (मरने वाले) से तुमसे भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं लेकिन तुमको दिखाई नहीं देता (85)

तो अगर तुम किसी के दबाव में नहीं हो (86)

तो अगर (अपने दावे में) तुम सच्चे हो तो रूह को फेर क्यों नहीं देते (87)

पस अगर वह (मरने वाला अल्लाह के) मुक़र्रेबीन से है (88)

तो (उस के लिए) आराम व आसाइश है और ख़ुश्बूदार फूल और नेअमत के बाग़ (89)

और अगर वह दाहिने हाथ वालों में से है (90)

तो (उससे कहा जाएगा कि) तुम पर दाहिने हाथ वालों की तरफ़ से सलाम हो (91)

और अगर झुठलाने वाले गुमराहों में से है (92)

तो (उसकी) मेहमानी खौलता हुआ पानी है (93)

और जहन्नुम में दाखिल कर देना (94)

बेशक ये (ख़बर) यक़ीनन सही है (95)

तो (ऐ रसूल) तुम अपने बुज़ुर्ग परवरदिगार की तस्बीह करो (96)

57 सूरह हदीद (लोहा)

सूरह हदीद मदीना में नाज़िल हुई और इसकी उन्तीस (29) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जो जो चीज़ सारे आसमान व ज़मीन में है सब अल्लाह की तसबीह करती है और वही ग़ालिब हिकमत वाला है (1)

सारे आसमान व ज़मीन की बादशाही उसी की है वही जिलाता है वही मारता है और वही हर चीज़ पर कादिर है (2)

वही सबसे पहले और सबसे आख़िर है और (अपनी क़ूवतों से) सब पर ज़ाहिर और (निगाहों से) पोशीदा है और वही सब चीज़ों को जानता (3)

वह वही तो है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को छहः दिन में पैदा किए फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ जो चीज़ ज़मीन में दाखिल होती है और जो उससे निकलती है और जो चीज़ आसमान से नाज़िल होती है और जो उसकी तरफ चढ़ती है (सब) उसको मालूम है और तुम (चाहे) जहाँ कहीं रहो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है (4)

सारे आसमान व ज़मीन की बादशाही ख़ास उसी की है और अल्लाह ही की तरफ कुल उमूर की रूजू होती है (5)

वही रात को (घटा कर) दिन में दाखिल करता है तो दिन बढ़ जाता है और दिन (घटाकर) रात में दाख़िल करता है (तो रात बढ़ जाती है) और दिलों के भेदों तक से ख़ूब वाक़िफ है (6)

(लोगों) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उसने तुमको अपना नायब बनाया है उसमें से से कुछ (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो तो तुम में से जो लोग ईमान लाए और (राहे अल्लाह में) ख़र्च करते रहें उनके लिए बड़ा अज्र है (7)

और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हो हालॉकि रसूल तुम्हें बुला रहें हैं कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुमको बावर हो तो (यक़ीन करो कि) अल्लाह तुम से (इसका) इक़रार ले चुका (8)

वही तो है जो अपने बन्दे (मोहम्मद) पर वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल करता है ताकि तुम लोगों को (कुफ़्र की) तारिक़ीयों से निकाल कर (ईमान की) रौशनी में ले जाए और बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है (9)

और तुमको क्या हो गया कि (अपना माल) अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हालाँकि सारे आसमान व ज़मीन का मालिक व वारिस अल्लाह ही है तुममें से जिस शख़्स ने फतेह (मक्का) से पहले (अपना माल) ख़र्च किया और जेहाद किया (और जिसने बाद में किया) वह बराबर नहीं उनका दर्जा उन लोगों से कहीं बढ़ कर है जिन्होंने बाद में ख़र्च किया और जेहाद किया और (यूँ तो) अल्लाह ने नेकी और सवाब का वायदा तो सबसे किया है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (10)

कौन ऐसा है जो अल्लाह को ख़ालिस नियत से कर्ज़े हसना दे तो अल्लाह उसके लिए (अज्र को) दूना कर दे और उसके लिए बहुत मुअज़्ज़िज़ सिला (जन्नत) तो है ही (11)

जिस दिन तुम मोमिन मर्द और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उनके आगे आगे और दाहिने तरफ चल रहा होगा तो उनसे कहा (जाएगा) तुमको बशारत हो कि आज तुम्हारे लिए वह बाग़ है जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें हमेशा रहोगे यही तो बड़ी कामयाबी है (12)

उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमानदारों से कहेंगे एक नज़र (शफ़क़्क़त) हमारी तरफ़ भी करो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी हासिल करें तो (उनसे) कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे (दुनिया में) लौट जाओ और (वही) किसी और नूर की तलाश करो फिर उनके बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा (और) उसके अन्दर की जानिब तो रहमत है और बाहर की तरफ अज़ाब तो मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से पुकार कर कहेंगे (13)

(क्यों भाई) क्या हम कभी तुम्हारे साथ न थे तो मोमिनीन कहेंगे थे तो ज़रूर मगर तुम ने तो ख़ुद अपने आपको बला में डाला और (हमारे हक़ में गर्दिशों के) मुन्तज़िर हैं और (दीन में) शक किया किए और तुम्हें (तुम्हारी) तमन्नाओं ने धोखे में रखा यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और एक बड़े दग़ाबाज़ (शैतान) ने अल्लाह के बारे में तुमको फ़रेब दिया (14)

तो आज न तो तुमसे कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न काफ़िरों से तुम सबका ठिकाना (बस) जहन्नुम है वही तुम्हारे वास्ते सज़ावार है और (क्या) बुरी जगह है (15)

क्या ईमानदारों के लिए अभी तक इसका वक़्त नहीं आया कि अल्लाह की याद और क़ुरान के लिए जो (अल्लाह की तरफ से) नाज़िल हुआ है उनके दिल नरम हों और वह उन लोगों के से न

हो जाएँ जिनको उन से पहले किताब (तौरेत, इन्जील) दी गयी थी तो (जब) एक ज़माना दराज़ गुज़र गया तो उनके दिल सख़्त हो गए और इनमें से बहुतेरे बदकार हैं (16)

जान रखो कि अल्लाह ही ज़मीन को उसके मरने (उफ़तादा होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है हमने तुमसे अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ खोल खोल कर बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो (17)

बेशक ख़ैरात देने वाले मर्द और ख़ैरात देने वाली औरतें और (जो लोग) अल्लाह की नीयत से ख़ालिस कर्ज़ देते हैं उनको दोगुना (अज्र) दिया जाएगा और उनका बहुत मुअज़िज़ सिला (जन्नत) तो है ही (18)

और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए यही लोग अपने परवरदिगार के नज़दीक सिद्दीक़ों और शहीदों के दरजे में होंगे उनके लिए उन्ही (सिद्दीकों और शहीदों) का अज्र और उन्हीं का नूर होगा और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग जहन्नुमी हैं (19)

जान रखो कि दुनियावी ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा और ज़ाहिरी ज़ीनत (व आसाइश) और आपस में एक दूसरे पर फ़ख्र करना और माल और औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा ख़्वाहिश है (दुनयावी ज़िन्दगी की मिसाल तो) बारिश की सी मिसाल है जिस (की वजह) से किसानों की खेती (लहलहाती और) उनको ख़ुश कर देती थी फिर सूख जाती है तो तू उसको देखता है कि ज़र्द हो जाती है फिर चूर चूर हो जाती है और आख़िरत में (कुफ्फार के लिए) सख़्त अज़ाब है और (मोमिनों के लिए) अल्लाह की तरफ से बख़्शिश और ख़ुशनूदी और दुनयावी ज़िन्दगी तो बस फ़रेब का साज़ो सामान है (20)

तुम अपने परवरदिगार के (सबब) बख़्शिश की और बेहिश्त की तरफ लपक के आगे बढ़ जाओ जिसका अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ के बराबर है जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं ये अल्लाह का फज़्ल है जिसे चाहे अता करे और अल्लाह का फज़्ल (व क़रम) तो बहुत बड़ा है (21)

जितनी मुसीबतें रूए ज़मीन पर और ख़ुद तुम लोगों पर नाज़िल होती हैं (वह सब) क़ब्ल इसके कि हम उन्हें पैदा करें किताब (लौह महफूज़) में (लिखी हुयी) हैं बेशक ये अल्लाह पर आसान है (22)

ताकि जब कोई चीज़ तुमसे जाती रहे तो तुम उसका रंज न किया करो और जब कोई चीज़ (नेअमत) अल्लाह तुमको दे तो उस पर न इतराया करो और अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ी बाज़ को दोस्त नहीं रखता (23)

जो ख़ुद भी बुख़्ल करते हैं और दूसरे लोगों को भी बुख़्ल करना सिखाते हैं और जो शख़्स (इन बातों से) रूगरदानी करे तो अल्लाह भी बेपरवा सज़ावारे हम्दोसना है (24)

हमने यक़ीनन अपने पैग़म्बरों को वाज़े व रौशन मोजिज़े देकर भेजा और उनके साथ किताब और (इन्साफ़ की) तराज़ू नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहे और हम ही ने लोहे को नाज़िल किया जिसके ज़रिए से सख़्त लड़ाई और लोगों के बहुत से नफे (की बातें) हैं और ताकि अल्लाह देख ले कि बेदेखे भाले अल्लाह और उसके रसूलों की कौन मदद करता है बेशक अल्लाह बहुत ज़बरदस्त ग़ालिब है (25)

और बेशक हम ही ने नूह और इबराहीम को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा और उनही दोनों की औलाद में नबूवत और किताब मुक़र्रर की तो उनमें के बाज़ हिदायत याफ़्ता हैं और उन के बहुतेरे बदकार हैं (26)

फिर उनके पीछे ही उनके क़दम ब क़दम अपने और पैग़म्बर भेजे और उनके पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इन्जील अता की और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की उनके दिलों में शफ़क्क़त और मेहरबानी डाल दी और रहबानियत (लज़्ज़ात से किनाराकशी) उन लोगों ने ख़ुद एक नयी बात निकाली थी हमने उनको उसका हुक्म नहीं दिया था मगर (उन लोगों ने) अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से (ख़ुद ईजाद किया) तो उसको भी जैसा बनाना चाहिए था न बना सके तो जो लोग उनमें से इमान लाए उनको हमने उनका अज्र दिया उनमें के बहुतेरे तो बदकार ही हैं (27)

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरो और उसके रसूल (मोहम्मद) पर ईमान लाओ तो अल्लाह तुमको अपनी रहमत के दो हिस्से अज्र अता फरमाएगा और तुमको ऐसा नूर इनायत फ़रमाएगा जिस (की रौशनी) में तुम चलोगे और तुमको बख़्श भी देगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (28)

(ये इसलिए कहा जाता है) ताकि एहले किताब ये न समझें कि ये मोमिनीन अल्लाह के फज़्ल (व क़रम) पर कुछ भी कुदरत नहीं रखते और ये तो यक़ीनी बात है कि फज़्ल अल्लाह ही के कब्ज़े में है वह जिसको चाहे अता फरमाए और अल्लाह तो बड़े फज़्ल (व क़रम) का मालिक है (29)

58 सूरह मुजादिला

सूरह मुजादिला मक्का में नाज़िल हुई और इसकी (22) बाईस आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल जो औरत (ख़ुला) तुमसे अपने शौहर (उस) के बारे में तुमसे झगड़ती और अल्लाह से गिले शिकवे करती है अल्लाह ने उसकी बात सुन ली और अल्लाह तुम दोनों की ग़ुफ्तगू सुन रहा है बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला देखने वाला है (1)

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों के साथ ज़िहार करते हैं अपनी बीवी को माँ कहते हैं वह कुछ उनकी माएँ नहीं (हो जातीं) उनकी माएँ तो बस वही हैं जो उनको जनती हैं और वह बेशक एक नामाक़ूल और झूठी बात कहते हैं और अल्लाह बेशक माफ करने वाला और बड़ा बख़्शने वाला है (2)

और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार कर बैठे फिर अपनी बात वापस लें तो दोनों के हमबिस्तर होने से पहले (कफ़्फ़ारे में) एक ग़ुलाम का आज़ाद करना (ज़रूरी) है उसकी तुमको नसीहत की जाती है और तुम जो कुछ भी करते हो (अल्लाह) उससे आगाह है (3)

फिर जिसको ग़ुलाम न मिले तो दोनों की मुक़ारबत के क़ब्ल दो महीने के पै दर पै रोज़े रखें और जिसको इसकी भी क़ुदरत न हो साठ मोहताजों को खाना खिलाना फर्ज़ है ये (हुक्म इसलिए है) ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल की (पैरवी) तसदीक़ करो और ये अल्लाह की मुक़र्रर हदें हैं और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (4)

बेशक जो लोग अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालेफ़त करते हैं वह (उसी तरह) ज़लील किए जाएँगे जिस तरह उनके पहले लोग किए जा चुके हैं और हम तो अपनी साफ़ और सरीही आयतें नाज़िल कर चुके और काफिरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है (5)

जिस दिन अल्लाह उन सबको दोबारा उठाएगा तो उनके आमाल से उनको आगाह कर देगा ये लोग (अगरचे) उनको भूल गये हैं मगर अल्लाह ने उनको याद रखा है और अल्लाह तो हर चीज़ का गवाह है (6)

क्या तुमको मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) अल्लाह जानता है जब तीन (आदमियों) का ख़ुफिया मशवेरा होता है तो वह (ख़ुद) उनका ज़रूर

चौथा है और जब पाँच का मशवेरा होता है तो वह उनका छठा है और उससे कम हो या ज़्यादा और चाहे जहाँ कहीं हो वह उनके साथ ज़रूर होता है फिर जो कुछ वह (दुनिया में) करते रहे क़यामत के दिन उनको उससे आगाह कर देगा बेशक अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है (7)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको सरगोशियाँ करने से मना किया गया ग़रज़ जिस काम की उनको मुमानिअत की गयी थी उसी को फिर करते हैं और (लुत्फ़ तो ये है कि) गुनाह और (बेजा) ज़्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिन लफ़्ज़ों से अल्लाह ने भी तुम को सलाम नहीं किया उन लफ़्ज़ों से सलाम करते हैं और अपने जी में कहते हैं कि (अगर ये वाक़ई पैग़म्बर हैं तो) जो कुछ हम कहते हैं अल्लाह हमें उसकी सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ रसूल) उनको दोज़ख़ ही (की सज़ा) काफी है जिसमें ये दाख़िल होंगे तो वह (क्या) बुरी जगह है (8)

ऐ ईमानदारों जब तुम आपस में सरगोशी करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो बल्कि नेकीकारी और परहेज़गारी की सरगोशी करो और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने (एक दिन) जमा किए जाओगे (9)

(बरी बातों की) सरगोशी तो बस एक शैतानी काम है (और इसलिए करते हैं) ताकि ईमानदारों को उससे रंज पहुँचे हालाँकि अल्लाह की तरफ से आज़ादी दिए बग़ैर सरगोशी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती और मोमिनीन को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (10)

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कहा जाए कि मजलिस में जगह कुशादा करो वह तो कुशादा कर दिया करो अल्लाह तुमको कुशादगी अता करेगा और जब तुमसे कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो जो लोग तुमसे ईमानदार हैं और जिनको इल्म अता हुआ है अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से बेख़बर है (11)

ऐ ईमानदारों जब पैग़म्बर से कोई बात कान में कहनी चाहो तो कुछ ख़ैरात अपनी सरगोशी से पहले दे दिया करो यही तुम्हारे वास्ते बेहतर और पाकीज़ा बात है पस अगर तुमको इसका मुक़दूर न हो तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (12)

(मुसलमानों) क्या तुम इस बात से डर गए कि (रसूल के) कान में बात कहने से पहले ख़ैरात कर लो तो जब तुम लोग (इतना सा काम) न कर सके और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात देते रहो और अल्लाह उसके रसूल की इताअत करो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (13)

क्या तुमने उन लोगों की हालत पर ग़ौर नहीं किया जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर

अल्लाह ने ग़ज़ब ढाया है तो अब वह न तुम मे हैं और न उनमें ये लोग जानबूझ कर झूठी बातो पर क़समें खाते हैं और वह जानते हैं (14)

अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है इसमें शक नहीं कि ये लोग जो कुछ करते हैं बहुत ही बुरा है (15)

उन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना लिया है और (लोगों को) अल्लाह की राह से रोक दिया तो उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है (16)

अल्लाह सामने हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएँगे और न उनकी औलाद ही काम आएगी यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे (17)

जिस दिन अल्लाह उन सबको दोबार उठा खड़ा करेगा तो ये लोग जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं उसी तरह उसके सामने भी क़समें खाएँगे और ख़्याल करते हैं कि वह राहे सवाब पर हैं आगाह रहो ये लोग यक़ीनन झूठे हैं (18)

शैतान ने इन पर क़ाबू पा लिया है और अल्लाह की याद उनसे भुला दी है ये लोग शैतान के गिरोह है सुन रखो कि शैतान का गिरोह घाटा उठाने वाला है (19)

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालेफ़त करते हैं वह सब ज़लील लोगों में हैं (20)

अल्लाह ने हुक्म नातिक दे दिया है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे बेशक अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है (21)

जो लोग अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान रखते हैं तुम उनको अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या ख़ानदान ही के लोग (क्यों न हों) यही वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने इमान को साबित कर दिया है और ख़ास अपने नूर से उनकी ताईद की है और उनको (बेहिश्त में) उन (हरे भरे) बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरे जारी है (और वह) हमेश उसमें रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से खुश यही अल्लाह का गिरोह है सुन रखो कि अल्लाह के गिरोग के लोग दिली मुरादें पाएँगे (22)

59 सूरह हश्र

सूरह हश्र मक्का में नाज़िल हुई, और उसकी चौबीस (24) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) अल्लाह की तस्बीह करती हैं और वही ग़ालिब हिकमत वाला है (1)

वही तो है जिसने कुफ़्फ़ार एहले किताब (बनी नुज़ैर) को पहले हश्र (ज़िलाए वतन) में उनके घरों से निकाल बाहर किया (मुसलमानों) तुमको तो ये वहम भी न था कि वह निकल जाएँगे और वह लोग ये समझे हुये थे कि उनके क़िले उनको अल्लाह (के अज़ाब) से बचा लेंगे मगर जहाँ से उनको ख़्याल भी न था अल्लाह ने उनको आ लिया और उनके दिलों में (मुसलमानों) को रौब डाल दिया कि वह लोग खुद अपने हाथों से और मोमिनीन के हाथों से अपने घरों को उजाड़ने लगे तो ऐ आँख वालों इबरत हासिल करो (2)

और अल्लाह ने उनकी किसमत में ज़िला वतनी न लिखा होता तो उन पर दुनिया में भी (दूसरी तरह) अज़ाब करता और आख़ेरत में तो उन पर जहन्नुम का अज़ाब है ही (3)

ये इसलिए कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालेफ़त की और जिसने अल्लाह की मुख़ालेफ़त की तो (याद रहे कि) अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब देने वाला है (4)

(मोमिनों) खजूर का दरख़्त जो तुमने काट डाला या जूँ का तूँ से उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो अल्लाह ही के हुक्म से और मतलब ये था कि वह नाफरमानों को रूसवा करे (5)

(तो) जो माल अल्लाह ने अपने रसूल को उन लोगों से बे लड़े दिलवा दिया उसमें तुम्हार हक़ नहीं क्योंकि तुमने उसके लिए कुछ दौड़ धूप तो की ही नहीं, न घोड़ों से न ऊँटों से, मगर अल्लाह अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहता है ग़लबा अता फरमाता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (6)

तो जो माल अल्लाह ने अपने रसूल को देहात वालों से बे लड़े दिलवाया है वह ख़ास अल्लाह और उसके रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों और परदेसियों का है ताकि जो लोग तुममें से दौलतमन्द हैं हिर फिर कर दौलत उन्हीं में न रहे, हाँ जो तुमको रसूल दें दें वह ले

लिया करो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है (7)

(इस माल में) उन मुफलिस मुहाजिरों का हिस्सा भी है जो अपने घरों से और मालों से निकाले (और अलग किए) गए (और) अल्लाह के फ़ज़्ल व ख़ुशनूदी के तलबगार हैं और अल्लाह की और उसके रसूल की मदद करते हैं यही लोग सच्चे इमानदार हैं और (उनका भी हिस्सा है) (8)

जो लोग मोहाजेरीन से पहले (हिजरत के) घर (मदीना) में मुक़ीम हैं और ईमान में (मुसतकि़ल) रहे और जो लोग हिजरत करके उनके पास आए उनसे मोहब्बत करते हैं और जो कुछ उनको मिला उसके लिए अपने दिलों में कुछ ग़रज़ नहीं पाते और अगरचे अपने ऊपर तंगी ही क्यों न हो दूसरों को अपने नफ़्स पर तरजीह देते हैं और जो शख़्स अपने नफ्स की हिर्स से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग अपनी दिली मुरादें पाएँगे (9)

और उनका भी हिस्सा है और जो लोग उन (मोहाजेरीन) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि परवरदिगारा हमारी और उन लोगों की जो हमसे पहले ईमान ला चुके मग़फे़रत कर और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने दे परवरदिगार बेशक तू बड़ा शफीक़ निहायत रहम वाला है (10)

क्या तुमने उन मुनाफ़िक़ों की हालत पर नज़र नहीं की जो अपने काफ़िर भाइयों एहले किताब से कहा करते हैं कि अगर कहीं तुम (घरों से) निकाले गए तो यक़ीन जानों कि हम भी तुम्हारे साथ (ज़रूर) निकल खड़े होंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी की इताअत न करेंगे और अगर तुमसे लड़ाई होगी तो ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह बयान किए देता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं (11)

अगर कुफ़्फ़ार निकाले भी जाएँ तो ये मुनाफे़क़ीन उनके साथ न निकलेंगे और अगर उनसे लड़ाई हुयी तो उनकी मदद भी न करेंगे और यक़ीनन करेंगे भी तो पीठ फेर कर भाग जाएँगे (12)

फिर उनको कहीं से कुमक भी न मिलेगी (मोमिनों) तुम्हारी हैबत उनके दिलों में अल्लाह से भी बढ़कर है, ये इस वजह से कि ये लोग समझ नहीं रखते (13)

ये सब के सब मिलकर भी तुमसे नहीं लड़ सकते, मगर हर तरफ से महफूज़ बस्तियों में या (शहर पनाह की) दीवारों की आड़ में इनकी आपस में तो बड़ी धाक है कि तुम ख़्याल करोगे कि सब के सब (एक जान) हैं मगर उनके दिल एक दूसरे से फटे हुए हैं ये इस वजह से कि ये लोग बेअक़्ल हैं (14)

उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पेशतर अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (15)

(मुनाफ़िक़ों) की मिसाल शैतान की सी है कि इन्सान से कहता रहा कि काफ़िर हो जाओ, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कहने लगा मैं तुमसे बेज़ार हूँ मैं सारे जहाँ के परवरदिगार से डरता हूँ (16)

तो दोनों का नतीजा ये हुआ कि दोनों दोज़ख़ में (डाले) जाएँगे और उसमें हमेशा रहेंगे और यही तमाम ज़ालिमों की सज़ा है (17)

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरो, और हर शख़्स को ग़ौर करना चाहिए कि कल क़यामत के वास्ते उसने पहले से क्या भेजा है और अल्लाह ही से डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (18)

और उन लोगों के जैसे न हो जाओ जो अल्लाह को भुला बैठे तो अल्लाह ने उन्हें ऐसा कर दिया कि वह अपने आपको भूल गए यही लोग तो बद किरदार हैं (19)

जहन्नुमी और जन्नती किसी तरह बराबर नहीं हो सकते जन्नती लोग ही तो कामयाबी हासिल करने वाले हैं (20)

अगर हम इस क़ुरान को किसी पहाड़ पर (भी) नाज़िल करते तो तुम उसको देखते कि अल्लाह के डर से झुका और फटा जाता है ये मिसालें हम लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर करें (21)

वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वही बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है (22)

वही वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई क़ाबिले इबादत नहीं (हक़ीक़ी) बादशाह, पाक ज़ात (हर ऐब से) बरी अमन देने वाला निगेहबान, ग़ालिब ज़बरदस्त बड़ाई वाला ये लोग जिसको (उसका) शरीक ठहराते हैं (23)

उससे पाक है वही अल्लाह (तमाम चीज़ों का ख़ालिक) मुजिद सूरतों का बनाने वाला उसी के अच्छे अच्छे नाम हैं जो चीज़े सारे आसमान व ज़मीन में हैं सब उसी की तसबीह करती हैं, और वही ग़ालिब हिकमत वाला है (24)

60 सूरह मुम्तहेना

ये सूरा मदीना में नाज़िल हुई और इसकी तेरह (13) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ईमानदारों अगर तुम मेरी राह में जेहाद करने और मेरी ख़ुशनूदी की तमन्ना में (घर से) निकलते हो तो मेरे और अपने दुशमनों को दोस्त न बनाओ तुम उनके पास दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो और जो दीन हक़ तुम्हारे पास आया है उससे वह लोग इनकार करते हैं वह लोग रसूल को और तुमको इस बात पर (घर से) निकालते हैं कि तुम अपने परवरदिगार अल्लाह पर ईमान ले आए हो (और) तुम हो कि उनके पास छुप छुप के दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो हालाँकि तुम कुछ भी छुपा कर या बिल एलान करते हो मैं उससे ख़ूब वाक़िफ़ हूँ और तुममें से जो शख़्स ऐसा करे तो वह सीधी राह से यक़ीनन भटक गया (1)

अगर ये लोग तुम पर क़ाबू पा जाएँ तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और ईज़ा के लिए तुम्हारी तरफ अपने हाथ भी बढ़ाएँगे और अपनी ज़बाने भी और चाहते हैं कि काश तुम भी काफिर हो जाओ (2)

क़यामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते नाते ही कुछ काम आएँगे न तुम्हारी औलाद (उस दिन) तो वही फ़ैसला कर देगा और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है (3)

(मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो इबराहीम और उनके साथियों (के क़ौल व फेल का अच्छा नमूना मौजूद है) कि जब उन्होने अपनी क़ौम से कहा कि हम तुमसे और उन (बुतों) से जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो बेज़ार हैं हम तो तुम्हारे (दीन के) मुनकिर हैं और जब तक तुम यकता अल्लाह पर ईमान न लाओ हमारे तुम्हारे दरमियान खुल्लम खुल्ला अदावत व दुशमनी क़ायम हो गयी मगर (हाँ) इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप से ये (अलबत्ता) कहा कि मैं आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ ज़रूर करूँगा और अल्लाह के सामने तो मैं आपके वास्ते कुछ एख़्तेयार नहीं रखता ऐ हमारे पालने वाले (अल्लाह) हमने तुझी पर भरोसा कर लिया है और तेरी ही तरफ हम रूजू करते हैं (4)

और तेरी तरफ हमें लौट कर जाना है ऐ हमारे पालने वाले तू हम लोगों को काफ़िरों की आज़माइश (का ज़रिया) न क़रार दे और परवरदिगार तू हमें बख़्श दे बेशक तू ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (5)

(मुसलमानों) उन लोगों के (अफ़आल) का तुम्हारे वास्ते जो अल्लाह और रोज़े आख़ेरत की उम्मीद

रखता हो अच्छा नमूना है और जो (इससे) मुँह मोड़े तो अल्लाह भी यक़ीनन बेपरवा (और) सज़ावारे हम्द है (6)

करीब है कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से तुम्हारे दुश्मनों के दरमियान दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह तो क़ादिर है और अल्लाह बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है (7)

जो लोग तुमसे तुम्हारे दीन के बारे में नहीं लड़े भिड़े और न तुम्हें घरों से निकाले उन लोगों के साथ एहसान करने और उनके साथ इन्साफ़ से पेश आने से अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (8)

अल्लाह तो बस उन लोगों के साथ दोस्ती करने से मना करता है जिन्होने तुमसे दीन के बारे में लड़ाई की और तुमको तुम्हारे घरों से निकाल बाहर किया, और तुम्हारे निकालने में (औरों की) मदद की और जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे वह लोग ज़ालिम हैं (9)

ऐ ईमानदारों जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें वतन छोड़ कर आएँ तो तुम उनको आज़मा लो, अल्लाह तो उनके ईमान से वाकिफ़ है ही, पस अगर तुम भी उनको ईमानदार समझो तो उन्ही काफ़िरों के पास वापस न फेरो न ये औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वह कुफ़्फ़ार उन औरतों के लिए हलाल हैं और उन कुफ्फार ने जो कुछ (उन औरतों के मेहर में) ख़र्च किया हो उनको दे दो, और जब उनका महर उन्हें दे दिया करो तो इसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि तुम उससे निकाह कर लो और काफिर औरतों की आबरू (जो तुम्हारी बीवियाँ हों) अपने कब्ज़े में न रखो (छोड़ दो कि कुफ़्फ़ार से जा मिलें) और तुमने जो कुछ (उन पर) ख़र्च किया हो (कुफ़्फ़ार से) लो, और उन्होने भी जो कुछ ख़र्च किया हो तुम से माँग लें यही अल्लाह का हुक्म है जो तुम्हारे दरमियान सादिर करता है और अल्लाह वाक़िफ़कार हकीम है (10)

और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफिरों के पास चली जाए और (ख़र्च न मिले) और तुम (उन काफ़िरों से लड़ो और लूटो तो (माले ग़नीमत से) जिनकी औरतें चली गयीं हैं उनको इतना दे दो जितना उनका ख़र्च हुआ है) और जिस अल्लाह पर तुम लोग ईमान लाए हो उससे डरते रहो (11)

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें तुमसे इस बात पर बैयत करने आएँ कि वह न किसी को अल्लाह का शरीक बनाएँगी और न चोरी करेंगी और न ज़ेना करेंगी और न अपनी औलाद को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के सामने कोई बोहतान (लड़के का शौहर पर) गढ़ के लाएँगी, और न किसी नेक काम में तुम्हारी नाफ़रमानी करेंगी तो तुम उनसे बैयत ले लो और अल्लाह से उनके मग़फ़िरत की दुआ माँगो बेशक बड़ा अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (12)

ऐ ईमानदारों जिन लोगों पर अल्लाह ने अपना ग़ज़ब ढाया उनसे दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के दोबारा ज़िन्दा होने) की उम्मीद नहीं उसी तरह आख़ेरत से भी ये लोग न उम्मीद हैं (13)

61 सूरह सफ़

सूरह सफ़ मदीना में नाज़िल हुई और इसकी चौदह आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जो चीजे़ आसमानों में है और जो चीजे़ ज़मीन में हैं (सब) अल्लाह की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (1)

ऐ ईमानदारों तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो जो किया नहीं करते (2)

अल्लाह के नज़दीक ये ग़ज़ब की बात है कि तुम ऐसी बात को जो करो नहीं (3)

अल्लाह तो उन लोगों से उलफ़त रखता है जो उसकी राह में इस तरह परा बाँध के लड़ते हैं कि गोया वह सीसा पिलाई हुयी दीवारें हैं (4)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयों तुम मुझे क्यों अज़ीयत देते हो हालाँकि तुम तो जानते हो कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का (भेजा हुआ) रसूल हूँ तो जब वह टेढ़े हुए तो अल्लाह ने भी उनके दिलों को टेढ़ा ही रहने दिया और अल्लाह बदकार लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (5)

और (याद करो) जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा ऐ बनी इसराइल मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ (आया) हूँ (और जो किताब तौरेत मेरे सामने मौजूद है उसकी तसदीक़ करता हूँ और एक पैग़म्बर जिनका नाम अहमद होगा (और) मेरे बाद आएँगे उनकी ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ जो जब वह (पैग़म्बर अहमद) उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आया तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है (6)

और जो शख़्स इस्लाम की तरफ बुलाया जाए (और) वह क़ुबूल के बदले उलटा अल्लाह पर झूठ (तूफान) जोड़े उससे बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (7)

ये लोग अपने मुँह से (फूँक मारकर) अल्लाह के नूर को बुझाना चाहते हैं हालाँकि अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा ही (क्यों न) मानें (8)

वह वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे और तमाम दीनों पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा ही (क्यों न) माने (9)

ऐ ईमानदारों क्या मैं नहीं ऐसी तिजारत बता दूँ जो तुमको (आख़ेरत के) दर्दनाक अज़ाब से निजात दे (10)

(वह ये है कि) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अपने माल व जान से अल्लाह की राह में जेहाद करो अगर तुम समझो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (11)

(ऐसा करोगे) तो वह भी इसके ऐवज़ में तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और पाकीज़ा मकानात में (जगह देगा) जो जावेदानी बेहिश्त में हैं यही तो बड़ी कामयाबी है (12)

और एक चीज़ जिसके तुम दिल दादा हो (यानि तुमको) अल्लाह की तरफ से मदद (मिलेगी और अनक़रीब फतेह (होगी) और (ऐ रसूल) मोमिनीन को ख़ुशख़बरी (इसकी) दे दो (13)

ऐ ईमानदारों अल्लाह के मददगार बन जाओ जिस तरह मरियम के बेटे ईसा ने हवारियों से कहा था कि (भला) अल्लाह की तरफ (बुलाने में) मेरे मददगार कौन लोग हैं तो हवारीन बोल उठे थे कि हम अल्लाह के अनसार हैं तो बनी इसराईल में से एक गिरोह (उन पर) ईमान लाया और एक गिरोह काफिर रहा, तो जो लोग ईमान लाए हमने उनको उनके दुशमनों के मुक़ाबले में मदद दी तो आख़िर वही ग़ालिब रहे (14)

62 सूरह जुमा

सूरह जुमा मदीना में नाज़िल हुई और इसकी ग्यारह (11) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) अल्लाह की तस्बीह करती हैं जो (हक़ीक़ी) बादशाह पाक ज़ात ग़ालिब हिकमत वाला है (1)

वही तो जिसने जाहिलों में उन्हीं में का एक रसूल (मोहम्मद) भेजा जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़ते और उनको पाक करते और उनको किताब और अक्ल की बातें सिखाते हैं अगरचे इसके पहले तो ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े हुए) थे (2)

और उनमें से उन लोगों की तरफ़ (भेजा) जो अभी तक उनसे मुलहिक़ नहीं हुए और वह तो ग़ालिब हिकमत वाला है (3)

अल्लाह का फज़्ल है जिसको चाहता है अता फरमाता है और अल्लाह तो बड़े फज़्ल (व करम) का मालिक है (4)

जिन लोगों (के सरों) पर तौरेत लदवायी गयी है उन्होने उस (के बार) को न उठाया उनकी मिसाल गधे की सी है जिस पर बड़ी बड़ी किताबें लदी हों जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया उनकी भी क्या बुरी मिसाल है और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मंज़िल मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता (5)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ यहूदियों अगर तुम ये ख़्याल करते हो कि तुम ही अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो (6)

और ये लोग उन आमाल के सबब जो ये पहले कर चुके हैं कभी उसकी आरज़ू न करेंगे और अल्लाह तो ज़ालिमों को जानता है (7)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मौत जिससे तुम लोग भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हारे सामने आएगी फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटा दिए जाओगे फिर जो कुछ भी तुम करते थे वह तुम्हें बता देगा (8)

ऐ ईमानदारों जब जुमा का दिन नमाज़ (जुमा) के लिए अज़ान दी जाए तो अल्लाह की याद (नमाज़) की तरफ दौड़ पड़ो और (ख़रीद) व फरोख़्त छोड़ दो अगर तुम समझते हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (9)

फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में (जहाँ चाहो) जाओ और अल्लाह के फज़ल (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करते रहो ताकि तुम दिली मुरादें पाओ (10)

और (उनकी हालत तो ये है कि) जब ये लोग सौदा बिकता या तमाशा होता देखें तो उसकी तरफ टूट पड़े और तुमको खड़ा हुआ छोड़ दें (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जो चीज़ अल्लाह के यहाँ है वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है (11)

63 सूरह मुनाफ़िक़ून

सूरह मुनाफ़िक़ून मदीना में नाज़िल हुई और इसकी ग्यारह (11) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास मुनाफ़ेक़ीन आते हैं तो कहते हैं कि हम तो इक़रार करते हैं कि आप यक़नीन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह भी जानता है तुम यक़ीनी उसके रसूल हो मगर अल्लाह ज़ाहिर किए देता है कि ये लोग अपने (एतक़ाद के लिहाज़ से) ज़रूर झूठे हैं (1)

इन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना रखा है तो (इसी के ज़रिए से) लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं बेशक ये लोग जो काम करते हैं बुरे हैं (2)

इस सबब से कि (ज़ाहिर में) ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, तो उनके दिलों पर (गोया) मोहर लगा दी गयी है तो अब ये समझते ही नहीं (3)

और जब तुम उनको देखोगे तो तनासुबे आज़ा की वजह से उनका क़द व क़ामत तुम्हें बहुत अच्छा मालूम होगा और गुफ़्तगू करेंगे तो ऐसी कि तुम तवज्जो से सुनो (मगर अक्ल से ख़ाली) गोया दीवारों से लगायी हुयीं बेकार लकड़ियाँ हैं हर चीख़ की आवाज़ को समझते हैं कि उन्हीं पर आ पड़ी ये लोग तुम्हारे दुश्मन हैं तुम उनसे बचे रहो अल्लाह इन्हें मार डाले ये कहाँ बहके फिरते हैं (4)

और जब उनसे कहा जाता है कि आओ रसूलअल्लाह तुम्हारे वास्ते मग़फ़ेरत की दुआ करें तो वह लोग अपने सर फेर लेते हैं और तुम उनको देखोगे कि तकब्बुर करते हुए मुँह फेर लेते हैं (5)

तो तुम उनकी मग़फ़ेरत की दुआ माँगो या न माँगो उनके हक़ में बराबर है (क्यों कि) अल्लाह तो उन्हें हरगिज़ बख़्शेगा नहीं अल्लाह तो हरगिज़ बदकारों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (6)

ये वही लोग तो हैं जो (अन्सार से) कहते हैं कि जो (मुहाजिरीन) रसूले अल्लाह के पास रहते हैं उन पर ख़र्च न करो यहाँ तक कि ये लोग खुद तितर बितर हो जाएँ हालाँकि सारे आसमान और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के पास हैं मगर मुनाफ़ेक़ीन नहीं समझते (7)

ये लोग तो कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुँचे तो इज़्ज़दार लोग (ख़ुद) ज़लील (रसूल)

को ज़रूर निकाल बाहर कर देंगे हालाँकि इज़्ज़त तो ख़ास अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनीन के लिए है मगर मुनाफ़ेक़ीन नहीं जानते (8)

ऐ ईमानदारों तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करेगा तो वही लोग घाटे में रहेंगे (9)

और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से क़ब्ल इसके (अल्लाह की राह में) ख़र्च कर डालो कि तुममें से किसी की मौत आ जाए तो (इसकी नौबत न आए कि) कहने लगे कि परवरदिगार तूने मुझे थोड़ी सी मोहलत और क्यों न दी ताकि ख़ैरात करता और नेकीकारों से हो जाता (10)

और जब किसी की मौत आ जाती है तो अल्लाह उसको हरगिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (11)

64 सूरह तग़ाबुन

सूरह तग़ाबुन इसमें एख़्तेलाफ है कि मक्का में नाज़िल हुआ या मदीने में और इसकी अठारह (18) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही की तस्बीह करती है उसी की बादशाहत है और तारीफ़ उसी के लिए सज़ावार है और वही हर चीज़ पर कादिर है (1)

वही तो है जिसने तुम लोगों को पैदा किया कोई तुममें काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (2)

उसी ने सारे आसमान व ज़मीन को हिकमत व मसलेहत से पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो सबसे अच्छी सूरतें बनायीं और उसी की तरफ लौटकर जाना हैं (3)

जो कुछ सारे आसमान व ज़मीन में है वह (सब) जानता है और जो कुछ तुम छुपा कर या खुल्लम खुल्ला करते हो उससे (भी) वाकिफ़ है और अल्लाह तो दिल के भेद तक से आगाह है (4)

क्या तुम्हें उनकी ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़्र किया तो उन्होने अपने काम की सज़ा का (दुनिया में) मज़ा चखा और (आख़िरत में तो) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (5)

ये इस वजह से कि उनके पास पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आ चुके थे तो कहने लगे कि क्या आदमी हमारे हादी बनेंगें ग़रज़ ये लोग काफ़िर हो बैठे और मुँह फेर बैठे और अल्लाह ने भी (उनकी) परवाह न की और अल्लाह तो बे परवा सज़ावारे हम्द है (6)

काफ़िरों का ख़्याल ये है कि ये लोग दोबारा न उठाए जाएँगे (ऐ रसूल) तुम कह दो वहाँ अपने परवरदिगार की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर जो जो काम तुम करते रहे वह तुम्हें बता देगा और ये तो अल्लाह पर आसान है (7)

तो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर उसी नूर पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल किया है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (8)

जब वह क़यामत के दिन तुम सबको जमा करेगा फिर यही हार जीत का दिन होगा और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसको (बेहिश्त में) उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह उनमें अबादुल आबाद हमेशा रहेगा, यही तो बड़ी कामयाबी है (9)

और जो लोग काफ़िर हैं और हमारी आयतों को झुठलाते रहे यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे और वह क्या बुरा ठिकाना है (10)

जब कोई मुसीबत आती है तो अल्लाह के इज़्न से और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है तो अल्लाह उसके क़ल्ब की हिदायत करता है और अल्लाह हर चीज़ से ख़ूब आगाह है (11)

और अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो फिर अगर तुमने मुँह फेरा तो हमारे रसूल पर सिर्फ़ पैग़ाम का वाज़ेए करके पहुँचा देना फ़र्ज़ है (12)

अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोमिनो को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए (13)

ऐ ईमानदारों तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुशमन हैं तो तुम उनसे बचे रहो और अगर तुम माफ कर दो दरगुज़र करो और बख़्श दो तो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (14)

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादे बस आज़माइश है और अल्लाह के यहाँ तो बड़ा अज्र (मौजूद) है (15)

तो जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और (उसके एहकाम) सुनो और मानों और अपनी बेहतरी के वास्ते (उसकी राह में) ख़र्च करो और जो शख़्स अपने नफ़्स की हिरस से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग मुरादें पाने वाले हैं (16)

अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़े हसना दोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते दूना कर देगा और तुमको बख़्श देगा और अल्लाह तो बड़ा क़द्रदान व बुर्दबार है (17)

पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला ग़ालिब हिकमत वाला है (18)

65 सूरह तलाक़

सूरह तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई और इसकी बारह (12) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल (मुसलमानों से कह दो) जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत (पाकी) के वक़्त तलाक़ दो और इद्दा का शुमार रखो और अपने परवरदिगार अल्लाह से डरो और (इद्दे के अन्दर) उनके घर से उन्हें न निकालो और वह ख़ुद भी घर से न निकलें मगर जब वह कोई सरीही बेहयाई का काम कर बैठें (तो निकाल देने में मुज़ायका नहीं) और ये अल्लाह की (मुक़र्रर की हुयी) हदें हैं और जो अल्लाह की हदों से तजाउज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया तो तू नहीं जानता शायद अल्लाह उसके बाद कोई बात पैदा करे (जिससे मर्द पछताए और मेल हो जाए) (1)

तो जब ये अपना इद्दा पूरा करने के करीब पहुँचे तो या तुम उन्हें उनवाने शाइस्ता से रोक लो या अच्छी तरह रूख़सत ही कर दो और (तलाक़ के वक़्त) अपने लोगों में से दो आदिलों को गवाह क़रार दे लो और गवाहों तुम अल्लाह के वास्ते ठीक ठीक गवाही देना इन बातों से उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान रखता हो और जो अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उसके लिए नजात की सूरत निकाल देगा (2)

और उसको ऐसी जगह से रिज़क़ देगा जहाँ से वहम भी न हो और जिसने अल्लाह पर भरोसा किया तो वह उसके लिए काफी है बेशक अल्लाह अपने काम को पूरा करके रहता है अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है (3)

और जो औरतें हैज़ से मायूस हो चुकी अगर तुम को उनके इद्दे में शक होवे तो उनका इद्दा तीन महीने है और (अला हाज़ल क़यास) वह औरतें जिनको हैज़ हुआ ही नहीं और हामेला औरतों का इद्दा उनका बच्चा जनना है और जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके काम मे सहूलित पैदा करेगा (4)

ये अल्लाह का हुक्म है जो अल्लाह ने तुम पर नाज़िल किया है और जो अल्लाह डरता रहेगा तो वह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा दरजा देगा (5)

मुतलक़ा औरतों को (इद्दे तक) अपने मक़दूर मुताबिक दे रखो जहाँ तुम ख़ुद रहते हो और उनको तंग करने के लिए उनको तकलीफ न पहुँचाओ और अगर वह हामेला हो तो बच्चा जनने तक उनका

खर्च देते रहो फिर (जनने के बाद) अगर वह बच्चे को तुम्हारी ख़ातिर दूध पिलाए तो उन्हें उनकी (मुनासिब) उजरत दे दो और बाहम सलाहियत से दस्तूर के मुताबिक बात चीत करो और अगर तुम बाहम कश म कश करो तो बच्चे को उसके (बाप की) ख़ातिर से कोई और औरत दूध पिला देगी (6)

गुन्जाइश वाले को अपनी गुन्जाइश के मुताबिक़ ख़र्च करना चाहिए और जिसकी रोज़ी तंग हो वह जितना अल्लाह ने उसे दिया है उसमें से खर्च करे अल्लाह ने जिसको जितना दिया है बस उसी के मुताबिक़ तकलीफ़ दिया करता है अल्लाह अनकरीब ही तंगी के बाद फ़राख़ी अता करेगा (7)

और बहुत सी बस्तियों (वाले) ने अपने परवरदिगार और उसके रसूलों के हुक्म से सरकशी की तो हमने उनका बड़ी सख़्ती से हिसाब लिया और उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा दी (8)

तो उन्होने अपने काम की सज़ा का मज़ा चख लिया और उनके काम का अन्जाम घाटा ही था (9)

अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो ऐ अक्लमन्दों जो इमान ला चुके हो अल्लाह से डरते रहो अल्लाह ने तुम्हारे पास (अपनी) याद क़ुरान और अपना रसूल भेज दिया है (10)

जो तुम्हारे सामने वाज़ेए आयतें पढ़ता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनको (कुफ़्र की) तारिक़ियों से ईमान की रौशनी की तरफ़ निकाल लाए और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करे तो अल्लाह उसको (बेहिश्त के) उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे अल्लाह ने उनको अच्छी अच्छी रोज़ी दी है (11)

अल्लाह ही तो है जिसने सात आसमान पैदा किए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें अल्लाह का हुक्म नाज़िल होता रहता है - ताकि तुम लोग जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है और बेशक अल्लाह अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है (12)

66 सूरह तहरीम

सूरह तहरीम मदीना में नाज़िल हुई और इसकी बारह (12) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल जो चीज़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है तुम उससे अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी के लिए क्यों किनारा कशी करो और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (1)

अल्लाह ने तुम लोगों के लिए क़समों को तोड़ डालने का कफ्फ़ार मुक़र्रर कर दिया है और अल्लाह ही तुम्हारा कारसाज़ है और वही वाक़िफ़कार हिकमत वाला है (2)

और जब पैग़म्बर ने अपनी बाज़ बीवी (हफ़सा) से चुपके से कोई बात कही फिर जब उसने (बावजूद मुमानियत) उस बात की (आयशा को) ख़बर दे दी और अल्लाह ने इस अम्र को रसूल पर ज़ाहिर कर दिया तो रसूल ने (आय शा को) बाज़ बात (किस्सा मारिया) जता दी और बाज़ बात (किस्साए शहद) टाल दी ग़रज़ जब रसूल ने इस वाक़िये (हफ़सा के आयशाए राज़) कि उस (आयशा) को ख़बर दी तो हैरत से बोल उठीं आपको इस बात (आयशाए राज़) की किसने ख़बर दी रसूल ने कहा मुझे बड़े वाक़िफ़कार ख़बरदार (अल्लाह) ने बता दिया (3)

(तो ऐ हफ़सा व आयशा) अगर तुम दोनों (इस हरकत से) तौबा करो तो ख़ैर क्योंकि तुम दोनों के दिल टेढ़े हैं और अगर तुम दोनों रसूल की मुख़ालेफ़त में एक दूसरे की अयानत करती रहोगी तो कुछ परवा नहीं (क्यों कि) अल्लाह और जिबरील और तमाम इमानदारों में नेक शख़्स उनके मददगार हैं और उनके अलावा कुल फरिश्ते मददगार हैं (4)

अगर रसूल तुम लोगों को तलाक़ दे दे तो अनक़रीब ही उनका परवरदिगार तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ अता करे जो फ़रमाबरदार ईमानदार अल्लाह रसूल की मुतीय (गुनाहों से) तौबा करने वालियाँ इबादत गुज़ार रोज़ा रखने वालियाँ ब्याही हुयी (5)

और बिन ब्याही कुंवारियाँ हो ऐ ईमानदारों अपने आपको और अपने लड़के बालों को (जहन्नुम की) आग से बचाओ जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे उन पर वह तन्दख़ू सख़्त मिजाज़ फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं कि अल्लाह जिस बात का हुक्म देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते और जो हुक्म उन्हें मिलता है उसे बजा लाते हैं (6)

(जब कुफ़्फ़ार दोज़ख़ के सामने आएँगे तो कहा जाएगा) काफ़िरों आज बहाने न ढूँढो जो कुछ तुम करते थे तुम्हें उसकी सज़ा दी जाएगी (7)

ऐ ईमानदारों अल्लाह की बारगाह में साफ़ ख़ालिस दिल से तौबा करो तो (उसकी वजह से) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दे और तुमको (बेहिश्त के) उन बाग़ों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं उस दिन जब अल्लाह रसूल को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए हैं रूसवा नहीं करेगा (बल्कि) उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिने तरफ़ (रौशनी करता) चल रहा होगा और ये लोग ये दुआ करते होंगे परवरदिगार हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें बख़्श दे बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है (8)

ऐ रसूल काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जेहाद करो और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है (9)

अल्लाह ने काफिरों (की इबरत) के वास्ते नूह की बीवी (वाएला) और लूत की बीवी (वाहेला) की मसल बयान की है कि ये दोनो हमारे बन्दों के तसर्रुफ़ थीं तो दोनों ने अपने शौहरों से दगा की तो उनके शौहर अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ भी काम न आए और उनको हुक्म दिया गया कि और जाने वालों के साथ जहन्नुम में तुम दोनों भी दाखिल हो जाओ (10)

और अल्लाह ने मोमिनीन (की तसल्ली) के लिए फिरआऊन की बीवी (आसिया) की मिसाल बयान फ़रमायी है कि जब उसने दुआ की परवरदिगार मेरे लिए अपने यहाँ बेहिश्त में एक घर बना और मुझे फिरआऊन और उसकी कारस्तानी से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगो (के हाथ) से छुटकारा अता फ़रमा (11)

और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरियम जिसने अपनी शर्मगाह को महफूज़ रखा तो हमने उसमें रूह फूंक दी और उसने अपने परवरदिगार की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक़ की और फरमाबरदारों में थी (12)

67 सूरह मुल्क

सूरह मुल्क मक्का में नाज़िल हुई और इसकी तीस (30) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जिस (अल्लाह) के कब्ज़े में (सारे जहाँन की) बादशाहत है वह बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर कादिर है (1)

जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें आज़माए कि तुममें से काम में सबसे अच्छा कौन है और वह ग़ालिब (और) बड़ा बख़्शने वाला है (2)

जिसने सात आसमान तले ऊपर बना डाले भला तुझे अल्लाह की आफ़रिनश में कोई कसर नज़र आती है तो फिर आँख उठाकर देख भला तुझे कोई शिग़ाफ़ नज़र आता है (3)

फिर दुबारा आँख उठा कर देखो तो (हर बार तेरी) नज़र नाकाम और थक कर तेरी तरफ पलट आएगी (4)

और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को (तारों के) चिराग़ों से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लिए दहकती हुयी आग का अज़ाब तैयार कर रखा है (5)

और जो लोग अपने परवरदिगार के मुनकिर हैं उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और वह (बहुत) बुरा ठिकाना है (6)

जब ये लोग इसमें डाले जाएँगे तो उसकी बड़ी चीख़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी (7)

बल्कि गोया मारे जोश के फट पड़ेगी जब उसमें (उनका) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उनसे दारोग़ए जहन्नुम पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं आया था (8)

वह कहेंगे हॉ हमारे पास डराने वाला तो ज़रूर आया था मगर हमने उसको झुठला दिया और कहा कि अल्लाह ने तो कुछ नाज़िल ही नहीं किया तुम तो बड़ी (गहरी) गुमराही में (पड़े) हो (9)

और (ये भी) कहेंगे कि अगर (उनकी बात) सुनते या समझते तब तो (आज) दोज़ख़ियों में न होते (10)

ग़रज़ वह अपने गुनाह का इक़रार कर लेंगे तो दोज़ख़ियों को अल्लाह की रहमत से दूरी है (11)

बेशक जो लोग अपने परवरदिगार से बेदेखे भाले डरते हैं उनके लिए मग़फेरत और बड़ा भारी अज्र है (12)

और तुम अपनी बात छिपकर कहो या खुल्लम खुल्ला वह तो दिल के भेदों तक से ख़ूब वाक़िफ़ है (13)

भला जिसने पैदा किया वह तो बेख़बर और वह तो बड़ा बारीकबीन वाक़िफ़कार है (14)

वही तो है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए नरम (व हमवार) कर दिया तो उसके अतराफ़ व जवानिब में चलो फिरो और उसकी (दी हुयी) रोज़ी खाओ (15)

और फिर उसी की तरफ क़ब्र से उठ कर जाना है क्या तुम उस शख़्स से जो आसमान में (हुकूमत करता है) इस बात से बेख़ौफ़ हो कि तुमको ज़मीन में धँसा दे फिर वह एकबारगी उलट पुलट करने लगे (16)

या तुम इस बात से बेख़ौफ हो कि जो आसमान में (सल्तनत करता) है कि तुम पर पत्थर भरी आँधी चलाए तो तुम्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा है (17)

और जो लोग उनसे पहले थे उन्होने झुठलाया था तो (देखो) कि मेरी नाखुशी कैसी थी (18)

क्या उन लोगों ने अपने सरों पर चिड़ियों को उड़ते नहीं देखा जो परों को फैलाए रहती हैं और समेट लेती हैं कि अल्लाह के सिवा उन्हें कोई रोके नहीं रह सकता बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (19)

भला अल्लाह के सिवा ऐसा कौन है जो तुम्हारी फ़ौज बनकर तुम्हारी मदद करे काफ़िर लोग तो धोखे ही (धोखे) में हैं भला अल्लाह अगर अपनी (दी हुयी) रोज़ी रोक ले तो कौन ऐसा है जो तुम्हें रिज़क़ दे (20)

मगर ये कुफ़्फ़ार तो सरकशी और नफ़रत (के भँवर) में फँसे हुए हैं भला जो शख़्स औंधे मुँह के बाल चले वह ज़्यादा हिदायत याफ्ता होगा (21)

या वह शख़्स जो सीधा बराबर राहे रास्त पर चल रहा हो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अल्लाह तो वही है जिसने तुमको नित नया पैदा किया (22)

और तुम्हारे वास्ते कान और आँख और दिल बनाए (मगर) तुम तो बहुत कम शुक्र अदा करते हो (23)

कह दो कि वही तो है जिसने तुमको ज़मीन में फैला दिया और उसी के सामने जमा किए जाओगे (24)

और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) ये वायदा कब (पूरा) होगा (25)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (इसका) इल्म तो बस अल्लाह ही को है और मैं तो सिर्फ साफ़ साफ़ (अज़ाब से) डराने वाला हूँ (26)

तो जब ये लोग उसे करीब से देख लेंगे (ख़ौफ के मारे) काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएँगे और उनसे कहा जाएगा ये वही है जिसके तुम ख़्वास्तग़ार थे (27)

(ऐ रसूल) तुम कह दो भला देखो तो कि अगर अल्लाह मुझको और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम फरमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन पनाह देगा (28)

तुम कह दो कि वही (अल्लाह) बड़ा रहम करने वाला है जिस पर हम ईमान लाए हैं और हमने तो उसी पर भरोसा कर लिया है तो अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि कौन सरीही गुमराही में (पड़ा) है (29)

ऐ रसूल तुम कह दो कि भला देखो तो कि अगर तुम्हारा पानी ज़मीन के अन्दर चला जाए कौन ऐसा है जो तुम्हारे लिए पानी का चश्मा बहा लाए (30)

68 सूरह क़लम

सूरह क़लम मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बावन (52) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

नून क़लम की और उस चीज़ की जो लिखती हैं (उसकी) क़सम है (1)

कि तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल (व करम) से दीवाने नहीं हो (2)

और तुम्हारे वास्ते यक़ीनन वह अज्र है जो कभी ख़त्म ही न होगा (3)

और बेशक तुम्हारे एख़लाक़ बड़े आला दर्जे के हैं (4)

तो अनक़रीब ही तुम भी देखोगे और ये कुफ़्फ़ार भी देख लेंगे (5)

कि तुममें दीवाना कौन है (6)

बेशक तुम्हारा परवरदिगार इनसे ख़ूब वाकि़फ़ है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही हिदायत याफ़्ता लोगों को भी ख़ूब जानता है (7)

तो तुम झुठलाने वालों का कहना न मानना (8)

वह लोग ये चाहते हैं कि अगर तुम नरमी एख़्तेयार करो तो वह भी नरम हो जाएँ (9)

और तुम (कहीं) ऐसे के कहने में न आना जो बहुत क़समें खाता ज़लील औक़ात ऐबजू (10)

जो आला दर्जे का चुग़लख़ोर माल का बहुत बख़ील (11)

हद से बढ़ने वाला गुनेहगार तुन्द मिजाज़ (12)

और उसके अलावा बदज़ात (हरमज़ादा) भी है (13)

चूँकि माल बहुत से बेटे रखता है (14)

जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो बोल उठता है कि ये तो अगलों के अफ़साने हैं (15)

हम अनक़रीब इसकी नाक पर दाग़ लगाएँगे (16)

जिस तरह हमने एक बाग़ वालों का इम्तेहान लिया था उसी तरह उनका इम्तेहान लिया जब उन्होने क़समें खा खाकर कहा कि सुबह होते हम उसका मेवा ज़रूर तोड़ डालेंगे (17)

और इन्शाअल्लाह न कहा (18)

तो ये लोग पड़े सो ही रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (रातों रात) एक बला चक्कर लगा गयी (19)

तो वह (सारा बाग़ जलकर) ऐसा हो गया जैसे बहुत काली रात (20)

फिर ये लोग नूर के तड़के लगे बाहम गुल मचाने (21)

कि अगर तुमको फल तोड़ना है तो अपने बाग़ में सवेरे से चलो (22)

ग़रज़ वह लोग चले और आपस में चुपके चुपके कहते जाते थे (23)

कि आज यहाँ तुम्हारे पास कोई फ़क़ीर न आने पाए (24)

तो वह लोग रोक थाम के एहतमाम के साथ फल तोड़ने की ठाने हुए सवेरे ही जा पहुँचे (25)

फिर जब उसे (जला हुआ सियाह) देखा तो कहने लगे हम लोग भटक गए (26)

(ये हमारा बाग़ नहीं फिर ये सोचकर बोले) बात ये है कि हम लोग बड़े बदनसीब हैं (27)

जो उनमें से मुनसिफ़ मिजाज़ था कहने लगा क्यों मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग (अल्लाह की) तसबीह क्यों नहीं करते (28)

वह बोले हमारा परवरदिगार पाक है बेशक हमीं ही कुसूरवार हैं (29)

फिर लगे एक दूसरे के मुँह दर मुँह मलामत करने (30)

(आख़िर) सबने इक़रार किया कि हाए अफसोस बेशक हम ही ख़ुद सरकश थे (31)

उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमें इससे बेहतर बाग़ इनायत फ़रमाए हम अपने परवरदिगार की तरफ रूजू करते हैं (32)

(देखो) यूँ अज़ाब होता है और आख़ेरत का अज़ाब तो इससे कहीं बढ़ कर है अगर ये लोग समझते हों (33)

बेशक परहेज़गार लोग अपने परवरदिगार के यहाँ एशो आराम के बाग़ों में होंगे (34)

तो क्या हम फरमाबरदारों को नाफ़रमानो के बराबर कर देंगे (35)

(हरगिज़ नहीं) तुम्हें क्या हो गया है तुम तुम कैसा हुक्म लगाते हो (36)

या तुम्हारे पास कोई ईमानी किताब है जिसमें तुम पढ़ लेते हो (37)

कि जो चीज़ पसन्द करोगे तुम को वहाँ ज़रूर मिलेगी (38)

या तुमने हमसे क़समें ले रखी हैं जो रोज़े क़यामत तक चली जाएगी कि जो कुछ तुम हुक्म दोगे वही तुम्हारे लिए ज़रूर हाज़िर होगा (39)

उनसे पूछो तो कि उनमें इसका कौन ज़िम्मेदार है (40)

या (इस बाब में) उनके और लोग भी शरीक हैं तो अगर ये लोग सच्चे हैं तो अपने शरीकों को सामने लाएँ (41)

जिस दिन पिंडली खोल दी जाए और (काफ़िर) लोग सजदे के लिए बुलाए जाएँगे तो (सजदा) न कर सकेंगे (42)

उनकी आँखें झुकी हुयी होंगी रूसवाई उन पर छाई होगी और (दुनिया में) ये लोग सजदे के लिए बुलाए जाते और हटटे कटटे तन्दरूस्त थे (43)

तो मुझे उस कलाम के झुठलाने वाले से समझ लेने दो हम उनको आहिस्ता आहिस्ता इस तरह पकड़ लेंगे कि उनको ख़बर भी न होगी (44)

और मैं उनको मोहलत दिये जाता हूँ बेशक मेरी तदबीर मज़बूत है (45)

(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (तबलीगे़ रिसालत का) कुछ सिला माँगते हो कि उन पर तावान का बोझ पड़ रहा है (46)

या उनके इस ग़ैब (की ख़बर) है कि ये लोग लिख लिया करते हैं (47)

तो तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तेज़ार में सब्र करो और मछली (का निवाला होने) वाले (यूनुस) के ऐसे न हो जाओ कि जब वह ग़ुस्से में भरे हुए थे और अपने परवरदिगार को पुकारा (48)

अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उनकी यावरी न करती तो चटियल मैदान में डाल दिए जाते और उनका बुरा हाल होता (49)

तो उनके परवरदिगार ने उनको बरगुज़ीदा करके नेकोकारों से बना दिया (50)

और कुफ़्फ़ार जब क़ुरान को सुनते हैं तो मालूम होता है कि ये लोग तुम्हें घूर घूर कर (राह रास्त से) ज़रूर फिसला देंगे (51)

और कहते हैं कि ये तो सिड़ी हैं और ये (क़ुरान) तो सारे जहाँन की नसीहत है (52)

69 सूरह हाक़्क़ा

सूरह हाक़्क़ा मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बावन (52) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सच मुच होने वाली (क़यामत) (1)

और सच मुच होने वाली क्या चीज़ है (2)

और तुम्हें क्या मालूम कि वह सच मुच होने वाली क्या है (3)

(वही) खड़ खड़ाने वाली (जिस) को आद व समूद ने झुठलाया (4)

ग़रज़ समूद तो चिंघाड़ से हलाक कर दिए गए (5)

रहे आद तो वह बहुत शदीद तेज़ आँधी से हलाक कर दिए गए (6)

अल्लाह ने उसे सात रात और आठ दिन लगाकर उन पर चलाया तो लोगों को इस तरह ढहे (मुर्दे) पड़े देखता कि गोया वह खजूरों के खोखले तने हैं (7)

तू क्या इनमें से किसी को भी बचा खुचा देखता है (8)

और फ़िरआऊन और जो लोग उससे पहले थे और वह लोग (क़ौमे लूत) जो उलटी हुयी बस्तियों के रहने वाले थे सब गुनाह के काम करते थे (9)

तो उन लोगों ने अपने परवरदिगार के रसूल की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने भी उनकी बड़ी सख़्ती से ले दे कर डाली (10)

जब पानी चढ़ने लगा तो हमने तुमको कशती पर सवार किया (11)

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और उसे याद रखने वाले कान सुनकर याद रखें (12)

फिर जब सूर में एक (बार) फूँक मार दी जाएगी (13)

और ज़मीन और पहाड़ उठाकर एक बारगी (टकरा कर) रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएँगे तो उस रोज़ क़यामत आ ही जाएगी (14)

और आसमान फट जाएगा (15)

तो वह उस दिन बहुत फुस फुसा होगा और फ़रिश्ते उनके किनारे पर होंगे (16)

और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने सरों पर उठाए होंगे (17)

उस दिन तुम सब के सब (अल्लाह के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छुपी न रहेगी (18)

तो जिसको (उसका नामए आमाल) दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह (लोगो से) कहेगा लीजिए मेरा नामए आमाल पढ़िए (19)

तो मैं तो जानता था कि मुझे मेरा हिसाब (किताब) ज़रूर मिलेगा (20)

फिर वह दिल पसन्द ऐश में होगा (21)

बड़े आलीशान बाग़ में (22)

जिनके फल बहुत झुके हुए क़रीब होंगे (23)

जो कारगुज़ारियाँ तुम गुज़िशता अय्याम में करके आगे भेज चुके हो उसके सिले में मज़े से खाओ पियो (24)

और जिसका नामए आमाल उनके बाएँ हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा ऐ काश मुझे मेरा नामए अमल न दिया जाता (25)

और मुझे न मालूल होता कि मेरा हिसाब क्या है (26)

ऐ काश मौत ने (हमेशा के लिए मेरा) काम तमाम कर दिया होता (27)

(अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया (28)

(हाए) मेरी सल्तनत ख़ाक में मिल गयी (फिर हुक्म होगा) (29)

इसे गिरफ़्तार करके तौक़ पहना दो (30)

फिर इसे जहन्नुम में झोंक दो, (31)

फिर एक ज़ंजीर में जिसकी नाप सत्तर गज़ की है उसे ख़ूब जकड़ दो (32)

(क्यों कि) ये न तो बुर्ज़ुग अल्लाह ही पर ईमान लाता था और न मोहताज के खिलाने पर आमादा (लोगों को) करता था (33)

तो आज न उसका कोई ग़मख़्वार है (34)

और न पीप के सिवा (उसके लिए) कुछ खाना है (35)

जिसको गुनेहगारों के सिवा कोई नहीं खाएगा (36)

तो मुझे उन चीज़ों की क़सम है (37)

जो तुम्हें दिखाई देती हैं (38)

और जो तुम्हें नहीं सुझाई देती कि बेशक ये (क़ुरान) (39)

एक मोअज़िज़ फरिश्ते का लाया हुआ पैग़ाम है (40)

और ये किसी शायर की तुक बन्दी नहीं तुम लोग तो बहुत कम ईमान लाते हो (41)

और न किसी काहिन की (ख़्याली) बात है तुम लोग तो बहुत कम ग़ौर करते हो (42)

सारे जहाँन के परवरदिगार का नाज़िल किया हुआ (क़लाम) है (43)

अगर रसूल हमारी निस्बत कोई झूठ बात बना लाते (44)

तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ लेते (45)

फिर हम ज़रूर उनकी गर्दन उड़ा देते (46)

तो तुममें से कोई उनसे (मुझे रोक न सकता) (47)

ये तो परहेज़गारों के लिए नसीहत है (48)

और हम ख़ूब जानते हैं कि तुम में से कुछ लोग (इसके) झुठलाने वाले हैं (49)

और इसमें शक नहीं कि ये काफ़िरों की हसरत का बाएस है (50)

और इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनन बरहक़ है (51)

तो तुम अपने परवरदिगार की तसबीह करो (52)

70 सूरह अल मआरिज

मक्के में नाज़िल हुआ और इसकी चौवालीस (44) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

एक माँगने वाले ने काफिरों के लिए होकर रहने वाले अज़ाब को माँगा (1)

जिसको कोई टाल नहीं सकता (2)

जो दर्जे वाले अल्लाह की तरफ से (होने वाला) था (3)

जिसकी तरफ फ़रिश्ते और रूहुल अमीन चढ़ते हैं (और ये) एक दिन में इतनी मुसाफ़त तय करते हैं जिसका अन्दाज़ा पचास हज़ार बरस का होगा (4)

तो तुम अच्छी तरह इन तक़लीफों को बरदाश्त करते रहो (5)

वह (क़यामत) उनकी निगाह में बहुत दूर है (6)

और हमारी नज़र में नज़दीक है (7)

जिस दिन आसमान पिघले हुए ताँबे का सा हो जाएगा (8)

और पहाड़ धुनके हुए ऊन का सा (9)

बावजूद कि एक दूसरे को देखते होंगे (10)

कोई किसी दोस्त को न पूछेगा गुनेहगार तो आरज़ू करेगा कि काश उस दिन के अज़ाब के बदले उसके बेटों (11)

और उसकी बीवी और उसके भाई (12)

और उसके कुनबे को जिसमें वह रहता था (13)

और जितने आदमी ज़मीन पर हैं सब को ले ले और उसको छुटकारा दे दें (14)

(मगर) ये हरगिज़ न होगा (15)

जहन्नुम की वह भड़कती आग है कि खाल उधेड़ कर रख देगी (16)

(और) उन लोगों को अपनी तरफ बुलाती होगी (17)

जिन्होंने (दीन से) पीठ फेरी और मुँह मोड़ा और (माल जमा किया) (18)

और बन्द कर रखा बेशक इन्सान बड़ा लालची पैदा हुआ है (19)

जब उसे तक़लीफ छू भी गयी तो घबरा गया (20)

और जब उसे ज़रा फराग़ी हासिल हुयी तो बख़ील बन बैठा (21)

मगर जो लोग नमाज़ पढ़ते हैं (22)

जो अपनी नमाज़ का इल्तज़ाम रखते हैं (23)

और जिनके माल में माँगने वाले और न माँगने वाले के (24)

लिए एक मुक़र्रर हिस्सा है (25)

और जो लोग रोज़े जज़ा की तस्दीक़ करते हैं (26)

और जो लोग अपने परवरदिगार के अज़ाब से डरते रहते हैं (27)

बेशक उनको परवरदिगार के अज़ाब से बेख़ौफ न होना चाहिए (28)

और जो लोग अपनी शर्मगाहों को अपनी बीवियों और अपनी लौन्डियों के सिवा से हिफाज़त करते हैं (29)

तो इन लोगों की हरगिज़ मलामत न की जाएगी (30)

तो जो लोग उनके सिवा और के ख़ास्तगार हों तो यही लोग हद से बढ़ जाने वाले हैं (31)

और जो लोग अपनी अमानतों और अहदों का लेहाज़ रखते हैं (32)

और जो लोग अपनी शहादतों पर क़ायम रहते हैं (33)

और जो लोग अपनी नमाज़ो का ख़्याल रखते हैं (34)

यही लोग बेहिश्त के बाग़ों में इज़्ज़त से रहेंगे (35)

तो (ऐ रसूल) काफिरों को क्या हो गया है (36)

कि तुम्हारे पास गिरोह गिरोह दाहिने से बाएँ से दौड़े चले आ रहे हैं (37)

क्या इनमें से हर शख़्स इस का मुतमइनी है कि चैन के बाग़ (बेहिश्त) में दाख़िल होगा (38)

हरगिज़ नहीं हमने उनको जिस (गन्दी) चीज़ से पैदा किया ये लोग जानते हैं (39)

तो मैं मशरिकों और मग़रिबों के परवरदिगार की क़सम खाता हूँ कि हम ज़रूर इस बात की क़ुदरत रखते है (40)

कि उनके बदले उनसे बेहतर लोग ला (बसाएँ) और हम आजिज़ नहीं हैं (41)

तो तुम उनको छोड़ दो कि बातिल में पड़े खेलते रहें यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वायदा किया जाता है उनके सामने आ मौजूद हो (42)

उसी दिन ये लोग कब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ेंगे गोया वह किसी झन्डे की तरफ दौड़े चले जाते हैं (43)

(निदामत से) उनकी आँखें झुकी होंगी उन पर रूसवाई छाई हुयी होगी ये वही दिन है जिसका उनसे वायदा किया जाता था (44)

71 सूरह नूह

सूरह नूह मक्का में नाज़िल हुई और इसकी उन्तीस (29) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हमने नूह को उसकी क़ौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा कि क़ब्ल उसके कि उनकी क़ौम पर दर्दनाक अज़ाब आए उनको उससे डराओ (1)

तो नूह (अपनी क़ौम से) कहने लगे ऐ मेरी क़ौम मैं तो तुम्हें साफ़ साफ़ डराता (और समझाता) हूँ (2)

कि तुम लोग अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरी इताअत करो (3)

अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें (मौत के) मुक़र्रर वक़्त तक बाक़ी रखेगा, बेशक जब अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो पीछे हटाया नहीं जा सकता अगर तुम समझते होते (4)

(जब लोगों ने न माना तो) अर्ज़ की परवरदिगार मैं अपनी क़ौम को (ईमान की तरफ) बुलाता रहा (5)

लेकिन वह मेरे बुलाने से और ज़्यादा गुरेज़ ही करते रहे (6)

और मैने जब उनको बुलाया कि (ये तौबा करें और) तू उन्हें माफ कर दे तो उन्होने अपने कानों में उॅगलियाँ दे लीं और मुझसे छिपने को कपड़े ओढ़ लिए और अड़ गए और बहुत शिद्दत से अकड़ बैठे (7)

फिर मैंने उनको बिल एलान बुलाया फिर उनको ज़ाहिर ब ज़ाहिर समझाया (8)

और उनकी पोशीदा भी फ़हमाईश की कि मैंने उनसे कहा (9)

अपने परवरदिगार से मग़फ़ेरत की दुआ माँगो बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है (10)

(और) तुम पर आसमान से मूसलाधार पानी बरसाएगा (11)

और माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ बनाएगा, और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा (12)

तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की अज़मत का ज़रा भी ख़्याल नहीं करते (13)

हालॉकि उसी ने तुमको तरह तरह का पैदा किया (14)

क्या तुमने ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने सात आसमान ऊपर तलें क्यों कर बनाए (15)

और उसी ने उसमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को रौशन चिराग़ बना दिया (16)

और अल्लाह ही तुमको ज़मीन से पैदा किया (17)

फिर तुमको उसी में दोबारा ले जाएगा और (क़यामत में उसी से) निकाल कर खड़ा करेगा (18)

और अल्लाह ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया (19)

ताकि तुम उसके बड़े बड़े कुशादा रास्तों में चलो फिरो (20)

(फिर) नूह ने अर्ज़ की परवरदिगार इन लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की उस शख़्स के ताबेदार बन के जिसने उनके माल और औलाद में नुक़सान के सिवा फ़ायदा न पहुँचाया (21)

और उन्होंने (मेरे साथ) बड़ी मक्कारियाँ की (22)

और (उलटे) कहने लगे कि आपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और न वद को और सुआ को और न यगूस और यऊक़ व नस्र को छोड़ना (23)

और उन्होंने बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा (24)

और तू (उन) ज़ालिमों की गुमराही को और बढ़ा दे (25)

(आख़िर) वह अपने गुनाहों की बदौलत (पहले तो) डुबाए गए फिर जहन्नुम में झोंके गए तो उन लोगों ने अल्लाह के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया (26)

और नूह ने अर्ज़ की परवरदिगार (इन) काफ़िरों में रूए ज़मीन पर किसी को बसा हुआ न रहने दे (27)

क्योंकि अगर तू उनको छोड़ देगा तो ये (फिर) तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनकी औलाद भी गुनाहगार और कट्टी काफिर ही होगी (28)

परवरदिगार मुझको और मेरे माँ बाप को और जो मोमिन मेरे घर में आए उनको और तमाम ईमानदार मर्दो और मोमिन औरतों को बख़्श दे और (इन) ज़ालिमों की बस तबाही को और ज़्यादा कर (29)

72 सूरह जिन

सूरह जिन मक्का में नाज़िल हुई और इसकी अठाइस (28) आयतें हैं

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल लोगों से) कह दो कि मेरे पास 'वही' आयी है कि जिनों की एक जमाअत ने (क़ुरान को) जी लगाकर सुना तो कहने लगे कि हमने एक अजीब क़ुरान सुना है (1)

जो भलाई की राह दिखाता है तो हम उस पर ईमान ले आए और अब तो हम किसी को अपने परवरदिगार का शरीक न बनाएँगे (2)

और ये कि हमारे परवरदिगार की शान बहुत बड़ी है उसने न (किसी को) बीवी बनाया और न बेटा बेटी (3)

और ये कि हममें से बाज़ बेवकूफ अल्लाह के बारे में हद से ज़्यादा लग़ो बातें निकाला करते थे (4)

और ये कि हमारा तो ख़्याल था कि आदमी और जिन अल्लाह की निस्बत झूठी बात नहीं बोल सकते (5)

और ये कि आदमियों में से कुछ लोग जिन्नात में से बाज़ लोगों की पनाह पकड़ा करते थे तो (इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गयी (6)

और ये कि जैसा तुम्हारा ख़्याल है वैसा उनका भी एतक़ाद था कि अल्लाह हरगिज़ किसी को दोबारा नहीं ज़िन्दा करेगा (7)

और ये कि हमने आसमान को टटोला तो उसको भी बहुत क़वी निगेहबानों और शोलो से भरा हुआ पाया (8)

और ये कि पहले हम वहाँ बहुत से मक़ामात में (बातें) सुनने के लिए बैठा करते थे मगर अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए शोले तैयार पाएगा (9)

और ये कि हम नहीं समझते कि उससे अहले ज़मीन के हक़ में बुराई मक़सूद है या उनके परवरदिगार ने उनकी भलाई का इरादा किया है (10)

और ये कि हममें से कुछ लोग तो नेकोकार हैं और कुछ लोग और तरह के हम लोगों के भी तो कई तरह के फिरकें हैं (11)

और ये कि हम समझते थे कि हम ज़मीन में (रह कर) अल्लाह को हरगिज़ हरा नहीं सकते हैं और न भाग कर उसको आजिज़ कर सकते हैं (12)

और ये कि जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी तो उन पर ईमान लाए तो जो शख़्स अपने परवरदिगार पर ईमान लाएगा तो उसको न नुक़सान का ख़ौफ़ है और न ज़ुल्म का (13)

और ये कि हम में से कुछ लोग तो फ़रमाबरदार हैं और कुछ लोग नाफ़रमान तो जो लोग फ़रमाबरदार हैं तो वह सीधे रास्ते पर चलें और रहें (14)

नाफरमान तो वह जहन्नुम के कुन्दे बने (15)

और (ऐ रसूल तुम कह दो) कि अगर ये लोग सीधी राह पर क़ायम रहते तो हम ज़रूर उनको अलग़ारों पानी से सेराब करते (16)

ताकि उससे उनकी आज़माईश करें और जो शख़्स अपने परवरदिगार की याद से मुँह मोड़ेगा तो वह उसको सख़्त अज़ाब में झोंक देगा (17)

और ये कि मस्जिदें ख़ास अल्लाह की हैं तो लोगों अल्लाह के साथ किसी की इबादन न करना (18)

और ये कि जब उसका बन्दा (मोहम्मद) उसकी इबादत को खड़ा होता है तो लोग उसके गिर्द हुजूम करके गिर पड़ते हैं (19)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की इबादत करता हूँ और उसका किसी को शरीक नहीं बनाता (20)

(ये भी) कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में न बुराई ही का एख़्तेयार रखता हूँ और न भलाई का (21)

(ये भी) कह दो कि मुझे अल्लाह (के अज़ाब) से कोई भी पनाह नहीं दे सकता और न मैं उसके सिवा कहीं पनाह की जगह देखता हूँ (22)

अल्लाह की तरफ से (एहकाम के) पहुँचा देने और उसके पैग़ामों के सिवा (कुछ नहीं कर सकता) और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी की तो उसके लिए यक़ीनन जहन्नुम की आग है जिसमें वह हमेशा और अबादुल आबाद तक रहेगा (23)

यहाँ तक कि जब ये लोग उन चीज़ों को देख लेंगे जिनका उनसे वायदा किया जाता है तो उनको मालूम हो जाएगा कि किसके मददगार कमज़ोर और किसका शुमार कम है (24)

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं नहीं जानता कि जिस दिन का तुमसे वायदा किया जाता है क़रीब है या मेरे परवरदिगार ने उसकी मुद्दत दराज़ कर दी है (25)

(वही) ग़ैबवॉ है और अपनी ग़ैब की बाते किसी पर ज़ाहिर नहीं करता (26)

मगर जिस पैग़म्बर को पसन्द फरमाए तो उसके आगे और पीछे निगेहबान फरिश्ते मुक़र्रर कर देता है (27)

ताकि देख ले कि उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ामात पहुँचा दिए और (यूँ तो) जो कुछ उनके पास है वह सब पर हावी है और उसने तो एक एक चीज़ गिन रखी हैं (28)

73 सूरह मुज़म्मिल

सूरह मुज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बीस (20) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ (मेरे) चादर लपेटे रसूल (1)

रात को (नमाज़ के वास्ते) खड़े रहो मगर (पूरी रात नहीं) (2)

थोड़ी रात या आधी रात या इससे भी कुछ कम कर दो या उससे कुछ बढ़ा दो (3)

और क़ुरान को बाक़ायदा ठहर ठहर कर पढ़ा करो (4)

हम अनक़रीब तुम पर एक भारी हुक्म नाज़िल करेंगे इसमें शक नहीं कि रात को उठना (5)

ख़ूब (नफ़्स का) पामाल करना और बहुत ठिकाने से ज़िक्र का वक़्त है (6)

दिन को तो तुम्हारे बहुत बड़े बड़े अशग़ाल हैं (7)

तो तुम अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और सबसे टूट कर उसी के हो रहो (8)

(वही) मशरिक और मग़रिब का मालिक है उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो तुम उसी को कारसाज़ बनाओ (9)

और जो कुछ लोग बका करते हैं उस पर सब्र करो और उनसे बा उनवाने शाएस्ता अलग थलग रहो (10)

और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दौलतमन्द हैं समझ लेने दो और उनको थोड़ी सी मोहलत दे दो (11)

बेशक हमारे पास बेड़ियाँ (भी) हैं और जलाने वाली आग (भी) (12)

और गले में फँसने वाला खाना (भी) और दुख देने वाला अज़ाब (भी) (13)

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ने लगेंगे और पहाड़ रेत के टीले से भुर भुरे हो जाएँगे (14)

(ऐ मक्का वालों) हमने तुम्हारे पास (उसी तरह) एक रसूल (मोहम्मद) को भेजा जो तुम्हारे मामले में गवाही दे जिस तरह फिरआऊन के पास एक रसूल (मूसा) को भेजा था (15)

तो फिरआऊन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की तो हमने भी (उसकी सज़ा में) उसको बहुत सख़्त पकड़ा (16)

तो अगर तुम भी न मानोगे तो उस दिन (के अज़ाब) से क्यों कर बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा (17)

जिस दिन आसमान फट पड़ेगा (ये) उसका वायदा पूरा होकर रहेगा (18)

बेशक ये नसीहत है तो जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार की राह एख़्तेयार करे (19)

(ऐ रसूल) तुम्हारा परवरदिगार चाहता है कि तुम और तुम्हारे चन्द साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के करीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात (नमाज़ में) खड़े रहते हो और अल्लाह ही रात और दिन का अच्छी तरह अन्दाज़ा कर सकता है उसे मालूम है कि तुम लोग उस पर पूरी तरह से हावी नहीं हो सकते तो उसने तुम पर मेहरबानी की तो जितना आसानी से हो सके उतना (नमाज़ में) क़ुरान पढ़ लिया करो और वह जानता है कि अनक़रीब तुममें से बाज़ बीमार हो जाएँगे और बाज़ अल्लाह के फ़ज़ल की तलाश में रूए ज़मीन पर सफर एख़्तेयार करेंगे और कुछ लोग अल्लाह की राह में जेहाद करेंगे तो जितना तुम आसानी से हो सके पढ़ लिया करो और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को कर्ज़े हसना दो और जो नेक अमल अपने वास्ते (अल्लाह के सामने) पेश करोगे उसको अल्लाह के हाँ बेहतर और सिले में बुज़ुर्ग तर पाओगे और अल्लाह से मग़फ़ेरत की दुआ माँगो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (20)

74 सूरह मुद्दस्सिर

सूरह मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई और इसकी छप्पन (56) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ (मेरे) कपड़ा ओढ़ने वाले (रसूल) उठो (1)

और लोगों को (अज़ाब से) डराओ (2)

और अपने परवरदिगार की बड़ाई करो (3)

और अपने कपड़े पाक रखो (4)

और गन्दगी से अलग रहो (5)

और इसी तरह एहसान न करो कि ज़्यादा के ख़ास्तगार बनो (6)

और अपने परवरदिगार के लिए सब्र करो (7)

फिर जब सूर फूँका जाएगा (8)

तो वह दिन काफ़िरों पर सख़्त दिन होगा (9)

आसान नहीं होगा (10)

(ऐ रसूल) मुझे और उस शख़्स को छोड़ दो जिसे मैने अकेला पैदा किया (11)

और उसे बहुत सा माल दिया (12)

और नज़र के सामने रहने वाले बेटे (दिए) (13)

और उसे हर तरह के सामान से वुसअत दी (14)

फिर उस पर भी वह तमाअ रखता है कि मैं और बढ़ाऊँ (15)

ये हरगिज़ न होगा ये तो मेरी आयतों का दुश्मन था (16)

तो मैं अनक़रीब उस सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करूँगा (17)

उसने फिक्र की और ये तजवीज़ की (18)

तो ये (कम्बख़्त) मार डाला जाए (19)

उसने क्यों कर तजवीज़ की (20)

फिर ग़ौर किया (21)

फिर त्योरी चढ़ाई और मुँह बना लिया (22)

फिर पीठ फेर कर चला गया और अकड़ बैठा (23)

फिर कहने लगा ये बस जादू है जो (अगलों से) चला आता है (24)

ये तो बस आदमी का कलाम है (25)

(अल्लाह का नहीं) मैं उसे अनक़रीब जहन्नुम में झोंक दूँगा (26)

और तुम क्या जानों कि जहन्नुम क्या है (27)

वह न बाक़ी रखेगी न छोड़ देगी (28)

और बदन को जला कर सियाह कर देगी (29)

उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते मुअय्यन) हैं (30)

और हमने जहन्नुम का निगेहबान तो बस फरिश्तों को बनाया है और उनका ये शुमार भी काफिरों की आज़माइश के लिए मुक़र्रर किया ताकि एहले किताब (फौरन) यक़ीन कर लें और मोमिनो का

ईमान और ज़्यादा हो और अहले किताब और मोमिनीन (किसी तरह) शक न करें और जिन लोगों के दिल में (निफ़ाक का) मर्ज़ है (वह) और काफिर लोग कह बैठे कि इस मसल (के बयान करने) से अल्लाह का क्या मतलब है यूँ अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसे चाहता है हिदायत करता है और तुम्हारे परवरदिगार के लशकरों को उसके सिवा कोई नहीं जानता और ये तो आदमियों के लिए बस नसीहत है (31)

सुन रखो (हमें) चाँद की क़सम (32)

और रात की जब जाने लगे (33)

और सुबह की जब रौशन हो जाए (34)

कि वह (जहन्नुम) भी एक बहुत बड़ी (आफ़त) है (35)

(और) लोगों के डराने वाली है (36)

(सबके लिए नहीं बल्कि) तुममें से वह जो शख़्स (नेकी की तरफ़) आगे बढ़ना (37)

और (बुराई से) पीछे हटना चाहे हर शख़्स अपने आमाल के बदले गिर्द है (38)

मगर दाहिने हाथ (में नामए अमल लेने) वाले (39)

(बेहिश्त के) बाग़ों में गुनेहगारों से बाहम पूछ रहे होंगे (40)

कि आख़िर तुम्हें दोज़ख़ में कौन सी चीज़ (घसीट) लायी (41)

वह लोग कहेंगे (42)

कि हम न तो नमाज़ पढ़ा करते थे (43)

और न मोहताजों को खाना खिलाते थे (44)

और एहले बातिल के साथ हम भी बड़े काम में घुस पड़ते थे (45)

और रोज़ जज़ा को झुठलाया करते थे (और यूँ ही रहे) (46)

यहाँ तक कि हमें मौत आ गयी (47)

तो (उस वक़्त) उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी (48)

और उन्हें क्या हो गया है कि नसीहत से मुँह मोड़े हुए हैं (49)

गोया वह वहशी गधे हैं (50)

कि शेर से (दुम दबा कर) भागते हैं (51)

असल ये है कि उनमें से हर शख़्स इसका मुतमइनी है कि उसे खुली हुयी (आसमानी) किताबें अता की जाएँ (52)

ये तो हरगिज़ न होगा बल्कि ये तो आख़ेरत ही से नहीं डरते (53)

हाँ हाँ बेशक ये (क़ुरान सरा सर) नसीहत है (54)

तो जो चाहे उसे याद रखे (55)

और अल्लाह की मशीयत के बग़ैर ये लोग याद रखने वाले नहीं वही (बन्दों के) डराने के क़ाबिल और बख़्शिश का मालिक है (56)

75 सूरह क़यामत

सूरह क़यामत मक्के में नाज़िल हुई और इसकी चालीस (40) आयतें है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

मैं रोजे़ क़यामत की क़सम खाता हूँ (1)

(और बुराई से) मलामत करने वाले जी की क़सम खाता हूँ (कि तुम सब दोबारा) ज़रूर ज़िन्दा किए जाओगे (2)

क्या इन्सान ये ख़्याल करता है (कि हम उसकी हड्डियों को बोसीदा होने के बाद) जमा न करेंगे हाँ (ज़रूर करेंगें) (3)

हम इस पर क़ादिर हैं कि हम उसकी पोर पोर दुरूस्त करें (4)

मगर इन्सान तो ये जानता है कि अपने आगे भी (हमेशा) बुराई करता जाए (5)

पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा (6)

तो जब आँखे चकाचौन्ध में आ जाएँगी (7)

और चाँद गहन में लग जाएगा (8)

और सूरज और चाँद इकट्ठा कर दिए जाएँगे (9)

तो इन्सान कहेगा आज कहाँ भाग कर जाऊँ (10)

यक़ीन जानों कहीं पनाह नहीं (11)

उस रोज़ तुम्हारे परवरदिगार ही के पास ठिकाना है (12)

उस दिन आदमी को जो कुछ उसके आगे पीछे किया है बता दिया जाएगा (13)

बल्कि इन्सान तो अपने ऊपर आप गवाह है (14)

अगरचे वह अपने गुनाहों की उज्र व ज़रूर माज़ेरत पढ़ा करता रहे (15)

(ऐ रसूल) वही के जल्दी याद करने वास्ते अपनी ज़बान को हरकत न दो (16)

उसका जमा कर देना और पढ़वा देना तो यक़ीनी हमारे ज़िम्मे है (17)

तो जब हम उसको (जिबरील की ज़बानी) पढ़ें तो तुम भी (पूरा) सुनने के बाद इसी तरह पढ़ा करो (18)

फिर उस (के मुश्किलात का समझा देना भी हमारे ज़िम्में है) (19)

मगर (लोगों) हक़ तो ये है कि तुम लोग दुनिया को दोस्त रखते हो (20)

और आख़ेरत को छोड़े बैठे हो (21)

उस रोज़ बहुत से चेहरे तो तरो ताज़ा बशशाश होंगे (22)

(और) अपने परवरदिगार (की नेअमत) को देख रहे होंगे (23)

और बहुतेरे मुँह उस दिन उदास होंगे (24)

समझ रहें हैं कि उन पर मुसीबत पड़ने वाली है कि कमर तोड़ देगी (25)

सुन लो जब जान (बदन से खिंच के) हँसली तक आ पहुँचेगी (26)

और कहा जाएगा कि (इस वक्त) कोई झाड़ फूँक करने वाला है (27)

और मरने वाले ने समझा कि अब (सबसे) जुदाई है (28)

और (मौत की तकलीफ़ से) पिन्डली से पिन्डली लिपट जाएगी (29)

उस दिन तुमको अपने परवरदिगार की बारगाह में चलना है (30)

तो उसने (ग़फलत में) न (कलामे अल्लाह की) तसदीक़ की न नमाज़ पढ़ी (31)

मगर झुठलाया और (ईमान से) मुँह फेरा (32)

अपने घर की तरफ इतराता हुआ चला (33)

अफसोस है तुझ पर फिर अफसोस है फिर तुफ़ है (34)

तुझ पर फिर तुफ़ है (35)

क्या इन्सान ये समझता है कि वह यूँ ही छोड़ दिया जाएगा (36)

क्या वह (इब्तेदन) मनी का एक क़तरा न था जो रहम में डाली जाती है (37)

फिर लोथड़ा हुआ फिर अल्लाह ने उसे बनाया (38)

फिर उसे दुरूस्त किया फिर उसकी दो किस्में बनायीं (एक) मर्द और (एक) औरत (39)

क्या इस पर क़ादिर नहीं कि (क़यामत में) मुर्दों को ज़िन्दा कर दे (40)

76 सूरह दहर

सूरह दहर मक्का में नाज़िल हुई और इसकी इकतीस (31) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

बेशक इन्सान पर एक ऐसा वक्त आ चुका है कि वह कोई चीज़ क़ाबिले ज़िक्र न था (1)

हमने इन्सान को मख़लूत नुत्फ़े से पैदा किया कि उसे आज़माये तो हमने उसे सुनता देखता बनाया (2)

और उसको रास्ता भी दिखा दिया (अब वह) ख़्वाह शुक्र गुज़ार हो ख़्वाह न शुक्रा (3)

हमने काफ़िरों के ज़ंजीरे, तौक और दहकती हुयी आग तैयार कर रखी है (4)

बेशक नेकोकार लोग शराब के वह सागर पियेंगे जिसमें काफूर की आमेज़िश होगी ये एक चश्मा है जिसमें से अल्लाह के (ख़ास) बन्दे पियेंगे (5)

और जहाँ चाहेंगे बहा ले जाएँगे (6)

ये वह लोग हैं जो नज़रें पूरी करते हैं और उस दिन से जिनकी सख़्ती हर तरह फैली होगी डरते हैं (7)

और उसकी मोहब्बत में मोहताज और यतीम और असीर को खाना खिलाते हैं (8)

(और कहते हैं कि) हम तो तुमको बस ख़ालिस अल्लाह के लिए खिलाते हैं हम न तुम से बदले के ख़ास्तगार हैं और न शुक्र गुज़ारी के (9)

हमको तो अपने परवरदिगार से उस दिन का डर है जिसमें मुँह बन जाएँगे (और) चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती होंगी (10)

तो अल्लाह उन्हें उस दिन की तकलीफ़ से बचा लेगा और उनको ताज़गी और ख़ुशदिली अता फरमाएगा (11)

और उनके सब्र के बदले (बेहिश्त के) बाग़ और रेशम (की पोशाक) अता फ़रमाएगा (12)

वहाँ वह तख़्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे न वहाँ (आफताब की) धूप देखेंगे और न शिद्दत की सर्दी (13)

और घने दरख़्तों के साए उन पर झुके हुए होंगे और मेवों के गुच्छे उनके बहुत क़रीब हर तरह उनके एख़्तेयार में (14)

और उनके सामने चाँदी के साग़र और शीशे के निहायत शफ़्फ़ाफ़ गिलास का दौर चल रहा होगा (15)

और शीशे भी (काँच के नहीं) चाँदी के जो ठीक अन्दाज़े के मुताबिक बनाए गए हैं (16)

और वहाँ उन्हें ऐसी शराब पिलाई जाएगी जिसमें जनजबील (के पानी) की आमेज़िश होगी (17)

ये बेहश्त में एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है (18)

और उनके सामने हमेशा एक हालत पर रहने वाले नौजवाल लड़के चक्कर लगाते होंगे कि जब तुम उनको देखो तो समझो कि बिखरे हुए मोती हैं (19)

और जब तुम वहाँ निगाह उठाओगे तो हर तरह की नेअमत और अज़ीमुश शान सल्तनत देखोगे (20)

उनके ऊपर सब्ज़ क्रेब और अतलस की पोशाक होगी और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका परवरदिगार उन्हें निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएगा (21)

ये यक़ीनी तुम्हारे लिए होगा और तुम्हारी (कारगुज़ारियों के) सिले में और तुम्हारी कोशिश क़ाबिले शुक्र गुज़ारी है (22)

(ऐ रसूल) हमने तुम पर क़ुरान को रफ़्ता रफ़्ता करके नाज़िल किया (23)

तो तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तज़ार में सब्र किए रहो और उन लोगों में से गुनाहगार और नाशुक्रे की पैरवी न करना (24)

सुबह शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो (25)

और कुछ रात गए उसका सजदा करो और बड़ी रात तक उसकी तस्बीह करते रहो (26)

ये लोग यक़ीनन दुनिया को पसन्द करते हैं और बड़े भारी दिन को अपने पसे पुश्त छोड़ बैठे हैं (27)

हमने उनको पैदा किया और उनके आज़ा को मज़बूत बनाया और अगर हम चाहें तो उनके बदले उन्हीं के जैसे लोग ले आएँ (28)

बेशक ये क़ुरान सरासर नसीहत है तो जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार की राह ले (29)

और जब तक अल्लाह को मंज़ूर न हो तुम लोग कुछ भी चाह नहीं सकते बेशक अल्लाह बड़ा वाक़िफ़कार दाना है (30)

जिसको चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले और ज़ालिमों के वास्ते उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (31)

77 सूरह मुरसलात

सूरह मुरसलात मक्का में नाज़िल हुई और इसकी पचास (50) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हवाओं की क़सम जो (पहले) धीमी चलती हैं (1)

फिर ज़ोर पकड़ के आँधी हो जाती हैं (2)

और (बादलों को) उभार कर फैला देती हैं (3)

फिर (उनको) फाड़ कर जुदा कर देती हैं (4)

फिर फरिश्तों की क़सम जो वही लाते हैं (5)

ताकि हुज्जत तमाम हो और डरा दिया जाए (6)

कि जिस बात का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर होकर रहेगा (7)

फिर जब तारों की चमक जाती रहेगी (8)

और जब आसमान फट जाएगा (9)

और जब पहाड़ (रूई की तरह) उड़े उड़े फिरेंगे (10)

और जब पैग़म्बर लोग एक मुअय्यन वक़्त पर जमा किए जाएँगे (11)

(फिर) भला इन (बातों) में किस दिन के लिए ताख़ीर की गयी है (12)

फ़ैसले के दिन के लिए (13)

और तुमको क्या मालूम की फ़ैसले का दिन क्या है (14)

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी ख़राब है (15)

क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया (16)

फिर उनके पीछे पीछे पिछलों को भी चलता करेंगे (17)

हम गुनेहगारों के साथ ऐसा ही किया करते हैं (18)

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी ख़राब है (19)

क्या हमने तुमको ज़लील पानी (मनी) से पैदा नहीं किया (20)

फिर हमने उसको एक मुअय्यन वक्त तक (21)

एक महफूज़ मक़ाम (रहम) में रखा (22)

फिर (उसका) एक अन्दाज़ा मुक़र्रर किया तो हम कैसा अच्छा अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाले हैं (23)

उन दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (24)

क्या हमने ज़मीन को ज़िन्दों और मुर्दों को समेटने वाली नहीं बनाया (25)

और उसमें ऊँचे ऊँचे अटल पहाड़ रख दिए (26)

और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया (27)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (28)

जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे अब उसकी तरफ़ चलो (29)

(धुएँ के) साये की तरफ़ चलो जिसके तीन हिस्से हैं (30)

जिसमें न ठन्डक है और न जहन्नुम की लपक से बचाएगा (31)

उससे इतने बड़े बड़े अँगारे बरसते होंगे जैसे महल (32)

गोया ज़र्द रंग के ऊँट हैं (33)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (34)

ये वह दिन होगा कि लोग लब तक न हिला सकेंगे (35)

और उनको इजाज़त दी जाएगी कि कुछ उज्र माअज़ेरत कर सकें (36)

उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है (37)

यही फैसले का दिन है (जिस में) हमने तुमको और अगलों को इकट्ठा किया है (38)

तो अगर तुम्हें कोई दाँव करना हो तो आओ चल चुको (39)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (40)

बेशक परहेज़गार लोग (दरख़्तों की) घनी छाँव में होंगे (41)

और चश्मों और आदमियों में जो उन्हें मरग़ूब हो (42)

(दुनिया में) जो अमल करते थे उसके बदले में मज़े से खाओ पियो (43)

मुबारक हम नेकोकारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (44)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (45)

(झुठलाने वालों) चन्द दिन चैन से खा पी लो तुम बेशक गुनेहगार हो (46)

उस दिन झुठलाने वालों की मिट्टी ख़राब है (47)

और जब उनसे कहा जाता है कि रूकूउ करों तो रूकूउ नहीं करते (48)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (49)

अब इसके बाद ये किस बात पर ईमान लाएँगे (50)

78 सूरह नबा

सूरह नबा मक्का में नाज़िल हुई और उसकी चालीस (40) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ये लोग आपस में किस चीज़ का हाल पूछते हैं (1)

एक बड़ी ख़बर का हाल (2)

जिसमें लोग एख़्तेलाफ कर रहे हैं (3)

देखो उन्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा (4)

फिर इन्हें अनक़रीब ही ज़रूर मालूम हो जाएगा (5)

क्या हमने ज़मीन को बिछौना (6)

और पहाड़ों को (ज़मीन) की मेख़े नहीं बनाया (7)

और हमने तुम लोगों को जोड़ा जोड़ा पैदा किया (8)

और तुम्हारी नींद को आराम (का बाइस) क़रार दिया (9)

और रात को परदा बनाया (10)

और हम ही ने दिन को (कसब) मआश (का वक़्त) बनाया (11)

और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आसमान) बनाए (12)

और हम ही ने (सूरज) को रौशन चिराग़ बनाया (13)

और हम ही ने बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया (14)

ताकि उसके ज़रिए से दाने और सबज़ी (15)

और घने घने बाग़ पैदा करें (16)

बेशक फैसले का दिन मुक़र्रर है (17)

जिस दिन सूर फूँका जाएगा और तुम लोग गिरोह गिरोह हाज़िर होगे (18)

और आसमान खोल दिए जाएँगे (19)

तो (उसमें) दरवाज़े हो जाएँगे और पहाड़ (अपनी जगह से) चलाए जाएँगे तो रेत होकर रह जाएँगे (20)

बेशक जहन्नुम घात में है (21)

सरकशों का (वही) ठिकाना है (22)

उसमें मुद्दतों पड़े झींकते रहेंगें (23)

न वहाँ ठन्डक का मज़ा चखेंगे और न खौलते हुए पानी (24)

और बहती हुयी पीप के सिवा कुछ पीने को मिलेगा (25)

(ये उनकी कारस्तानियों का) पूरा पूरा बदला है (26)

बेशक ये लोग आख़ेरत के हिसाब की उम्मीद ही न रखते थे (27)

और इन लोगो हमारी आयतों को बुरी तरह झुठलाया (28)

और हमने हर चीज़ को लिख कर मनज़बत कर रखा है (29)

तो अब तुम मज़ा चखो हमतो तुम पर अज़ाब ही बढ़ाते जाएँगे (30)

बेशक परहेज़गारों के लिए बड़ी कामयाबी है (31)

(यानि बेहश्त के) बाग़ और अंगूर (32)

और वह औरतें जिनकी उठती हुयी जवानियाँ (33)

और बाहम हमजोलियाँ हैं और शराब के लबरेज़ साग़र (34)

और शराब के लबरेज़ साग़र वहाँ न बेहूदा बात सुनेंगे और न झूठ (35)

(ये) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से काफ़ी इनाम और सिला है (36)

जो सारे आसमान और ज़मीन और जो इन दोनों के बीच में है सबका मालिक है बड़ा मेहरबान लोगों को उससे बात का पूरा न होगा (37)

जिस दिन जिबरील और फरिश्ते (उसके सामने) पर बाँध कर खड़े होंगे (उस दिन) उससे कोई बात न कर सकेगा मगर जिसे अल्लाह इजाज़त दे और वह ठिकाने की बात कहे (38)

वह दिन बरहक़ है तो जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार की बारगाह में (अपना) ठिकाना बनाए (39)

हमने तुम लोगों को अनक़रीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया जिस दिन आदमी अपने हाथों पहले से भेजे हुए (आमाल) को देखेगा और काफ़िर कहेगा काश मैं ख़ाक हो जाता (40)

79 सूरह नाज़ेआत

सूरह नाज़ेआत मक्का में नाज़िल हुई और इसकी छियालीस (46) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

उन (फ़रिश्तों) की क़सम (1)

जो (कुफ़्फ़ार की रूह) डूब कर सख़्ती से खींच लेते हैं (2)

और उनकी क़सम जो (मोमिनीन की जान) आसानी से खोल देते हैं (3)

और उनकी क़सम जो (आसमान ज़मीन के दरमियान) पैरते फिरते हैं (4)

फिर एक के आगे बढ़ते हैं (5)

फिर (दुनिया के) इन्तज़ाम करते हैं (उनकी क़सम) कि क़यामत हो कर रहेगी (6)

जिस दिन ज़मीन को भूचाल आएगा फिर उसके पीछे और ज़लज़ला आएगा (7)

उस दिन दिलों को धड़कन होगी (8)

उनकी आँखें (निदामत से) झुकी हुयी होंगी (9)

कुफ़्फ़ार कहते हैं कि क्या हम उलटे पाँव (ज़िन्दगी की तरफ़) फिर लौटेंगे (10)

क्या जब हम खोखल हड्डियाँ हो जाएँगे (11)

कहते हैं कि ये लौटना तो बड़ा नुक़सान देह है (12)

वह (क़यामत) तो (गोया) बस एक सख़्त चीख़ होगी (13)

और लोग यक बारगी एक मैदान (हश्र) में मौजूद होंगे (14)

(ऐ रसूल) क्या तुम्हारे पास मूसा का किस्सा भी पहुँचा है (15)

जब उनको परवरदिगार ने तूवा के मैदान में पुकारा कि फ़िरआऊन के पास जाओ (16)

वह सरकश हो गया है (17)

(और उससे) कहो कि क्या तेरी ख़्वाहिश है कि (कुफ्र से) पाक हो जाए (18)

और मैं तुझे तेरे परवरदिगार की राह बता दूँ तो तुझको ख़ौफ (पैदा) हो (19)

ग़रज़ मूसा ने उसे (असा का बड़ा) मौजिज़ा दिखाया (20)

तो उसने झुठला दिया और न माना (21)

फिर पीठ फेर कर (ख़िलाफ़ की) तदबीर करने लगा (22)

फिर (लोगों को) जमा किया और बुलन्द आवाज़ से चिल्लाया (23)

तो कहने लगा मैं तुम लोगों का सबसे बड़ा परवरदिगार हूँ (24)

तो अल्लाह ने उसे दुनिया और आख़ेरत (दोनों) के अज़ाब में गिरफ्तार किया (25)

बेशक जो शख़्स (अल्लाह से) डरे उसके लिए इस (किस्से) में इबरत है (26)

भला तुम्हारा पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का (27)

कि उसी ने उसको बनाया उसकी छत को ख़ूब ऊँचा रखा (28)

फिर उसे दुरूस्त किया और उसकी रात को तारीक बनाया और (दिन को) उसकी धूप निकाली (29)

और उसके बाद ज़मीन को फैलाया (30)

उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला (31)

और पहाड़ों को उसमें गाड़ दिया (32)

(ये सब सामान) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के फ़ायदे के लिए है (33)

तो जब बड़ी सख़्त मुसीबत (क़यामत) आ मौजूद होगी (34)

जिस दिन इन्सान अपने कामों को कुछ याद करेगा (35)

और जहन्नुम देखने वालों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी (36)

तो जिसने (दुनिया में) सर उठाया था (37)

और दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी थी (38)

उसका ठिकाना तो यक़ीनन दोज़ख़ है (39)

मगर जो शख़्स अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को नाजायज़ ख़्वाहिशों से रोकता रहा (40)

तो उसका ठिकाना यक़ीनन बेहश्त है (41)

(ऐ रसूल) लोग तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं (42)

कि उसका कहीं थल बेड़ा भी है (43)

तो तुम उसके ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो (44)

उस (के इल्म) की इन्तेहा तुम्हारे परवरदिगार ही तक है तो तुम बस जो उससे डरे उसको डराने वाले हो (45)

जिस दिन वह लोग इसको देखेंगे तो (समझेंगे कि दुनिया में) बस एक शाम या सुबह ठहरे थे (46)

80 सूरह अबस

सूरह अबस मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बयालीस (42) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

वह अपनी बात पर चीं ब जबीं हो गया (1)

और मुँह फेर बैठा कि उसके पास नाबीना आ गया (2)

और तुमको क्या मालूम शायद वह (तालीम से) पाकीज़गी हासिल करता (3)

या वह नसीहत सुनता तो नसीहत उसके काम आती (4)

तो जो कुछ परवाह नहीं करता (5)

उसके तो तुम दरपै हो जाते हो हालॉकि अगर वह न सुधरे (6)

तो तुम ज़िम्मेदार नहीं (7)

और जो तुम्हारे पास लपकता हुआ आता है (8)

और (अल्लाह से) डरता है (9)

तो तुम उससे बेरूख़ी करते हो (10)

देखो ये (क़ुरान) तो सरासर नसीहत है (11)

तो जो चाहे इसे याद रखे (12)

(लौहे महफ़ूज़ के) बहुत मोअज़्ज़िज औराक़ में (लिखा हुआ) है (13)

बुलन्द मरतबा और पाक हैं (14)

(ऐसे) लिखने वालों के हाथों में है (15)

जो बुज़ुर्ग नेकोकार हैं (16)

इन्सान हलाक हो जाए वह क्या कैसा नाशुक्रा है (17)

(अल्लाह ने) उसे किस चीज़ से पैदा किया (18)

नुत्फे से उसे पैदा किया फिर उसका अन्दाज़ा मुक़र्रर किया (19)

फिर उसका रास्ता आसान कर दिया (20)

फिर उसे मौत दी फिर उसे कब्र में दफ़न कराया (21)

फिर जब चाहेगा उठा खड़ा करेगा (22)

सच तो यह है कि अल्लाह ने जो हुक्म उसे दिया उसने उसको पूरा न किया (23)

तो इन्सान को अपने घाटे ही तरफ ग़ौर करना चाहिए (24)

कि हम ही ने (बादल) से पानी बरसाया (25)

फिर हम ही ने ज़मीन (दरख़्त उगाकर) चीरी फाड़ी (26)

फिर हमने उसमें अनाज उगाया (27)

और अंगूर और तरकारियाँ (28)

और ज़ैतून और खजूरें (29)

और घने घने बाग़ और मेवे (30)

और चारा (ये सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे (31)

चारपायों के फायदे के लिए (बनाया) (32)

तो जब कानों के परदे फाड़ने वाली (क़यामत) आ मौजूद होगी (33)

उस दिन आदमी अपने भाई (34)

और अपनी माँ और अपने बाप (35)

और अपने लड़के बालों से भागेगा (36)

उस दिन हर शख़्स (अपनी नजात की) ऐसी फ़िक्र में होगा जो उसके (मशग़ूल होने के) लिए काफ़ी हों (37)

बहुत से चेहरे तो उस दिन चमकते होंगे (38)

ख़न्दाँ शादाँ (यही नेको कार हैं) (39)

और बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर गर्द पड़ी होगी (40)

उस पर सियाही छाई हुयी होगी (41)

यही कुफ़्फ़ार बदकार हैं (42)

81 सूरह तकवीर

सूरह तक्वीर मक्का में नाज़िल हुई और इसकी 29 आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जिस वक्त आफ़ताब की चादर को लपेट लिया जाएगा (1)

और जिस वक्त तारे गिर पड़ेगें (2)

और जब पहाड़ चलाए जाएँगें (3)

और जब अनक़रीब जनने वाली ऊँटनियाँ बेकार कर दी जाएँगी (4)

और जिस वक्त वहशी जानवर इकट्ठा किये जायेंगे (5)

और जिस वक्त दरिया आग हो जायेंगे (6)

और जिस वक्त रुहें हड्डियों से मिला दी जाएँगी (7)

और जिस वक्त ज़िन्दा दर गोर लड़की से पूछा जाएगा (8)

कि वह किस गुनाह के बदले मारी गयी (9)

और जिस वक्त (आमाल के) दफ्तर खोले जाएँ (10)

और जिस वक्त आसमान का छिलका उतारा जाएगा (11)

और जब दोज़ख़ (की आग) भड़कायी जाएगी (12)

और जब बेहिश्त क़रीब कर दी जाएगी (13)

तब हर शख़्स मालूम करेगा कि वह क्या (आमाल) लेकर आया (14)

तो मुझे उन सितारों की क़सम जो चलते चलते पीछे हट जाते (15)

और ग़ायब होते हैं (16)

और रात की क़सम जब ख़त्म होने को आए (17)

और सुबह की क़सम जब रौशन हो जाए (18)

कि बेशक यें (क़ुरान) एक मुअज़िज़ फरिश्ता (जिबरील की ज़बान का पैग़ाम है (19)

जो बड़े क़वी अर्श के मालिक की बारगाह में बुलन्द रुतबा है (20)

वहाँ (सब फरिश्तों का) सरदार अमानतदार है (21)

और (मक्के वालों) तुम्हारे साथी मोहम्मद दीवाने नहीं हैं (22)

और बेशक उन्होनें जिबरील को (आसमान के) खुले (शरक़ी) किनारे पर देखा है (23)

और वह गैब की बातों के ज़ाहिर करने में बख़ील नहीं (24)

और न यह मरदूद शैतान का क़ौल है (25)

फिर तुम कहाँ जाते हो (26)

ये सारे जहॉन के लोगों के लिए बस नसीहत है (27)

(मगर) उसी के लिए जो तुममें सीधी राह चले (28)

और तुम तो सारे जहॉन के पालने वाले अल्लाह के चाहे बग़ैर कुछ भी चाह नहीं सकते (29)

82 सूरह इनफ़ेतार

सूरह इनफ़ेतार मक्का में नाज़िल हुई और इसकी उन्नीस (19) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जब आसमान तर्ख़ जाएगा (1)

और जब तारे झड़ पड़ेंगे (2)

और जब दरिया बह (कर एक दूसरे से मिल) जाएँगे (3)

और जब कब्रें उखाड़ दी जाएँगी (4)

तब हर शख़्स को मालूम हो जाएगा कि उसने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा था (5)

ऐ इन्सान तुम अपने परवरदिगार के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया (6)

जिसने तुझे पैदा किया तो तुझे दुरूस्त बनाया और मुनासिब आज़ा दिए (7)

और जिस सूरत में उसने चाहा तेरे जोड़ बन्द मिलाए (8)

हाँ बात ये है कि तुम लोग जज़ा (के दिन) को झुठलाते हो (9)

हालाँकि तुम पर निगेहबान मुक़र्रर हैं (10)

बुज़ुर्ग लोग (फरिश्ते सब बातों को) लिखने वाले (केरामन क़ातेबीन) (11)

जो कुछ तुम करते हो वह सब जानते हैं (12)

बेशक नेको कार (बेहिश्त की) नेअमतों में होंगे (13)

और बदकार लोग यक़ीनन जहन्नुम में जज़ा के दिन (14)

उसी में झोंके जाएँगे (15)

और वह लोग उससे छुप न सकेंगे (16)

और तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन क्या है (17)

फिर तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन क्या चीज़ है (18)

उस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स की भलाई न कर सकेगा और उस दिन हुक्म सिर्फ अल्लाह ही का होगा (19)

83 सूरह मुतफ़ीफ़ीन

सूरह मुतफ़ीफ़ीन मक्का में नाज़िल हुई और इसकी छत्तीस (36) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

नाप तौल में कमी करने वालों की ख़राबी है (1)

जो औरें से नाप कर लें तो पूरा पूरा लें (2)

और जब उनकी नाप या तौल कर दें तो कम कर दें (3)

क्या ये लोग इतना भी ख़्याल नहीं करते (4)

कि एक बड़े (सख़्त) दिन (क़यामत) में उठाए जाएँगे (5)

जिस दिन तमाम लोग सारे जहाँन के परवरदिगार के सामने खड़े होंगे (6)

सुन रखो कि बदकारों के नाम ए अमाल सिज्जीन में हैं (7)

तुमको क्या मालूम सिज्जीन क्या चीज़ है (8)

एक लिखा हुआ दफ़्तर है जिसमें शयातीन के (आमाल दर्ज हैं) (9)

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (10)

जो लोग रोज़े जज़ा को झुठलाते हैं (11)

हालॉकि उसको हद से निकल जाने वाले गुनाहगार के सिवा कोई नहीं झुठलाता (12)

जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि ये तो अगलों के अफसाने हैं (13)

नहीं नहीं बात ये है कि ये लोग जो आमाल (बद) करते हैं उनका उनके दिलों पर जंग बैठ गया है (14)

बेशक ये लोग उस दिन अपने परवरदिगार (की रहमत से) रोक दिए जाएँगे (15)

फिर ये लोग ज़रूर जहन्नुम वासिल होंगे (16)

फिर उनसे कहा जाएगा कि ये वही चीज़ तो है जिसे तुम झुठलाया करते थे (17)

ये भी सुन रखो कि नेको के नाम ए अमाल इल्लीयीन में होंगे (18)

और तुमको क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या है वह एक लिखा हुआ दफ़्तर है (19)

जिसमें नेकों के आमाल दर्ज हैं (20)

उसके पास मुक़र्रिब (फ़रि श्ते) हाज़िर हैं (21)

बेशक नेक लोग नेअमतों में होंगे (22)

तख़्तों पर बैठे नज़ारे करेंगे (23)

तुम उनके चेहरों ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे (24)

उनको सर ब मोहर ख़ालिस शराब पिलायी जाएगी (25)

जिसकी मोहर मि श्क की होगी और उसकी तरफ अलबत्ता शयाक़ीन को रग़बत करनी चाहिए (26)

और उस (शराब) में तसनीम के पानी की आमेज़िश होगी (27)

वह एक च श्मा है जिसमें मुक़रेबीन पियेंगे (28)

बेशक जो गुनाहगार मोमिनों से हँसी किया करते थे (29)

और जब उनके पास से गुज़रते तो उन पर चशमक करते थे (30)

और जब अपने लड़के वालों की तरफ़ लौट कर आते थे तो इतराते हुए (31)

और जब उन मोमिनीन को देखते तो कह बैठते थे कि ये तो यक़ीनी गुमराह हैं (32)

हालॉकि ये लोग उन पर कुछ निगराँ बना के तो भेजे नहीं गए थे (33)

तो आज (क़यामत में) ईमानदार लोग काफ़िरों से हँसी करेंगे (34)

(और) तख़्तों पर बैठे नज़ारे करेंगे (35)

कि अब तो काफ़िरों को उनके किए का पूरा पूरा बदला मिल गया (36)

84 सूरह इनशिक़ाक़

सूरह इनशिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी पच्चीस (25) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जब आसमान फट जाएगा (1)

और अपने परवरदिगार का हुक्म बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है (2)

और जब ज़मीन (बराबर करके) तान दी जाएगी (3)

और जो कुछ उसमें है उगल देगी और बिल्कुल ख़ाली हो जाएगी (4)

और अपने परवरदिगार का हुक्म बजा लाएगी (5)

और उस पर लाज़िम भी यही है (तो क़यामत आ जाएगी) ऐ इन्सान तू अपने परवरदिगार की हुज़ूरी की कोशिश करता है (6)

तो तू (एक न एक दिन) उसके सामने हाज़िर होगा फिर (उस दिन) जिसका नामाए आमाल उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा (7)

उससे तो हिसाब आसान तरीक़े से लिया जाएगा (8)

और (फिर) वह अपने (मोमिनीन के) क़बीले की तरफ ख़ुश ख़ुश पलटेगा (9)

लेकिन जिस शख़्स को उसका नामए आमल उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा (10)

वह तो मौत की दुआ करेगा (11)

और जहन्नुम वासिल होगा (12)

ये शख़्स तो अपने लड़के बालों में मस्त रहता था (13)

और समझता था कि कभी (अल्लाह की तरफ) फिर कर जाएगा ही नहीं (14)

हाँ उसका परवरदिगार यक़ीनी उसको देख भाल कर रहा है (15)

तो मुझे शाम की मुर्ख़ी की क़सम (16)

और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें ये ढाँक लेती है (17)

और चाँद की जब पूरा हो जाए (18)

कि तुम लोग ज़रूर एक सख़्ती के बाद दूसरी सख़्ती में फँसोगे (19)

तो उन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं इमान नहीं लाते (20)

और जब उनके सामने क़ुरान पढ़ा जाता है तो (अल्लाह का) सजदा नहीं करते (21) सजदा 14

बल्कि काफ़िर लोग तो (और उसे) झुठलाते हैं (22)

और जो बातें ये लोग अपने दिलों में छिपाते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है (23)

तो (ऐ रसूल) उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो (24)

मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम किए उनके लिए बेइन्तिहा अज्र (व सवाब है) (25)

85 सूरह बुरूज

सूरह बुरूज मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बाइस (22) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

बुर्जो वाले आसमानों की क़सम (1)

और उस दिन की जिसका वायदा किया गया है (2)

और गवाह की और जिसकी गवाही दी जाएगी (3)

उसकी (कि कुफ़्फ़ार मक्का हलाक हुए) जिस तरह ख़न्दक़ वाले हलाक कर दिए गए (4)

जो ख़न्दकें आग की थीं (5)

जिसमें (उन्होंने मुसलमानों के लिए) ईंधन झोंक रखा था (6)

जब वह उन (ख़न्दक़ों) पर बैठे हुए और जो सुलूक ईमानदारों के साथ करते थे उसको सामने देख रहे थे (7)

और उनको मोमिनीन की यही बात बुरी मालूम हुयी कि वह लोग अल्लाह पर ईमान लाए थे जो ज़बरदस्त और सज़ावार हम्द है (8)

वह (अल्लाह) जिसकी सारे आसमान ज़मीन में बादशाहत है और अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है (9)

बेशक जिन लोगों ने ईमानदार मर्दों और औरतों को तकलीफें दीं फिर तौबा न की उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब तो है ही (इसके अलावा) जलने का भी अज़ाब होगा (10)

बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम करते रहे उनके लिए वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं यही तो बड़ी कामयाबी है (11)

बेशक तुम्हारे परवरदिगार की पकड़ बहुत सख़्त है (12)

वही पहली दफ़ा पैदा करता है और वही दोबारा (क़यामत में ज़िन्दा) करेगा (13)

और वही बड़ा बख़्शने वाला मोहब्बत करने वाला है (14)

अर्श का मालिक बड़ा आलीशान है (15)

जो चाहता है करता है (16)

क्या तुम्हारे पास लशकरों की ख़बर पहुँची है (17)

(यानि) फिरआऊन व समूद की (ज़रूर पहुँची है) (18)

मगर कुफ़्फ़ार तो झुठलाने ही (की फ़िक्र) में हैं (19)

और अल्लाह उनको पीछे से घेरे हुए है (ये झुठलाने के क़ाबिल नहीं) (20)

बल्कि ये तो क़ुरान मजीद है (21)

जो लौहे महफूज़ में लिखा हुआ है (22)

86 सूरह तारिक़

सूरह तारिक़ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी सत्तरह (17) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

आसमान और रात को आने वाले की क़सम (1)

और तुमको क्या मालूम रात को आने वाला क्या है (2)

(वह) चमकता हुआ तारा है (3)

(इस बात की क़सम) कि कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस पर निगेहबान मुक़र्रर नहीं (4)

तो इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा हुआ हैं (5)

वह उछलते हुए पानी (मनी) से पैदा हुआ है (6)

जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच में से निकलता है (7)

बेशक अल्लाह उसके दोबारा (पैदा) करने पर ज़रूर क़ुदरत रखता है (8)

जिस दिन दिलों के भेद जाँचे जाएँगे (9)

तो (उस दिन) उसका न कुछ ज़ोर चलेगा और न कोई मददगार होगा (10)

चक्कर (खाने) वाले आसमान की क़सम (11)

और फटने वाली (ज़मीन की क़सम) (12)

बेशक ये क़ुरान क़ौले फ़ैसल है (13)

और लग़ो नहीं है (14)

बेशक ये कुफ़्फ़ार अपनी तद्बीर कर रहे हैं (15)

और मैं अपनी तद्बीर कर रहा हूँ (16)

तो काफ़िरों को मोहलत दो बस उनको थोड़ी सी मोहलत दो (17)

87 सूरह आला

सूरह आला मक्का में नाज़िल हुई और इसकी उन्नीस (19) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल अपने आलीशान परवरदिगार के नाम की तस्बीह करो (1)

जिसने (हर चीज़ को) पैदा किया (2)

और दुरूस्त किया और जिसने (उसका) अन्दाज़ा मुक़र्रर किया फिर राह बतायी (3)

और जिसने (हैवानात के लिए) चारा उगाया (4)

फिर ख़ुश्क उसे सियाह रंग का कूड़ा कर दिया (5)

हम तुम्हें (ऐसा) पढ़ा देंगे कि कभी भूलो ही नहीं (6)

मगर जो अल्लाह चाहे (मन्सूख़ कर दे) बेशक वह खुली बात को भी जानता है और छुपे हुए को भी (7)

और हम तुमको आसान तरीके की तौफ़ीक़ देंगे (8)

तो जहाँ तक समझाना मुफ़ीद हो समझते रहो (9)

जो खौफ रखता हो वह तो फौरी समझ जाएगा (10)

और बदबख़्त उससे पहलू तही करेगा (11)

जो (क़यामत में) बड़ी (तेज़) आग में दाख़िल होगा (12)

फिर न वहाँ मरेगा ही न जीयेगा (13)

वह यक़ीनन दिली मुराद को पहुँचा जो (शिर्क से) पाक हो (14)

और अपने परवरदिगार का ज़िक्र करता और नमाज़ पढ़ता रहा (15)

मगर तुम लोग दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो (16)

हालॉकि आख़ोरत कहीं बेहतर और देर पा है (17)

बेशक यही बात अगले सहीफ़ों (18)

इबराहीम और मूसा के सहीफ़ों में भी है (19)

88 सूरह ग़ाशिया

सूरह ग़ाशिया मक्का में नाज़िल हुई और इसकी छब्बीस (26) आयतें है

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

भला तुमको ढाँप लेने वाली मुसीबत (क़यामत) का हाल मालुम हुआ है (1)

उस दिन बहुत से चेहरे ज़लील रूसवा होंगे (2)

(तौक़ व ज़ंजीर से) मशक़्क़त करने वाले (3)

थके माँदे दहकती हुयी आग में दाखिल होंगे (4)

उन्हें एक खौलते हुए चशमें का पानी पिलाया जाएगा (5)

ख़ारदार झाड़ी के सिवा उनके लिए कोई खाना नहीं (6)

जो मोटाई पैदा करे न भूख में कुछ काम आएगा (7)

(और) बहुत से चेहरे उस दिन तरो ताज़ा होंगे (8)

अपनी कोशिश (के नतीजे) पर शादमान (9)

एक आलीशान बाग़ में (10)

वहाँ कोई लग़ो बात सुनेंगे ही नहीं (11)

उसमें चश्में जारी होंगे (12)

उसमें ऊँचे ऊँचे तख़्त बिछे होंगे (13)

और (उनके किनारे) गिलास रखे होंगे (14)

और गाँव तकिए क़तार की क़तार लगे होंगे (15)

और नफ़ीस मसनदे बिछी हुयी (16)

तो क्या ये लोग ऊँट की तरह ग़ौर नहीं करते कि कैसा अजीब पैदा किया गया है (17)

और आसमान की तरफ कि क्या बुलन्द बनाया गया है (18)

और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह खड़े किए गए हैं (19)

और ज़मीन की तरफ कि किस तरह बिछायी गयी है (20)

तो तुम नसीहत करते रहो तुम तो बस नसीहत करने वाले हो (21)

तुम कुछ उन पर दरोग़ा तो हो नहीं (22)

हाँ जिसने मुँह फेर लिया (23)

और न माना तो अल्लाह उसको बहुत बड़े अज़ाब की सज़ा देगा (24)

बेशक उनको हमारी तरफ़ लौट कर आना है (25)

फिर उनका हिसाब हमारे ज़िम्मे है (26)

89 सूरह फ़ज्र

सूरह फज्र मक्का में नाज़िल हुई और इसकी तीस (30) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सुबह की क़सम (1)

और दस रातों की (2)

और जुफ्त व ताक़ की (3)

और रात की जब आने लगे (4)

अक़्लमन्द के वास्ते तो ज़रूर बड़ी क़सम है (कि कुफ़्फ़ार पर ज़रूर अज़ाब होगा) (5)

क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे आद के साथ क्या किया (6)

यानि इरम वाले दराज़ क़द (7)

जिनका मिसल तमाम (दुनिया के) शहरों में कोई पैदा ही नहीं किया गया (8)

और समूद के साथ (क्या किया) जो वादी (क़रा) में पत्थर तराश कर घर बनाते थे (9)

और फिरआऊन के साथ (क्या किया) जो (सज़ा के लिए) मेख़े रखता था (10)

ये लोग मुख़तलिफ़ शहरों में सरकश हो रहे थे (11)

और उनमें बहुत से फ़साद फैला रखे थे (12)

तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा लगाया (13)

बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है (14)

लेकिन इन्सान जब उसको उसका परवरदिगार (इस तरह) आज़माता है कि उसको इज़्ज़त व नेअमत देता है, तो कहता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे इज़्ज़त दी है (15)

मगर जब उसको (इस तरह) आज़माता है कि उस पर रोज़ी को तंग कर देता है बोल उठता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे ज़लील किया (16)

हरगिज़ नहीं बल्कि तुम लोग न यतीम की ख़ातिरदारी करते हो (17)

और न मोहताज को खाना खिलाने की तरग़ीब देते हो (18)

और मीरारा के माल (हलाल व हराम) को समेट कर चख जाते हो (19)

और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो (20)

सुन रखो कि जब ज़मीन कूट कूट कर रेज़ा रेज़ा कर दी जाएगी (21)

और तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म और फ़रिश्ते कतार के कतार आ जाएँगे (22)

और उस दिन जहन्नुम सामने कर दी जाएगी उस दिन इन्सान चौंकेगा मगर अब चौंकना कहाँ (फ़ायदा देगा) (23)

(उस वक्त) कहेगा कि काश मैने अपनी (इस) ज़िन्दगी के वास्ते कुछ पहले भेजा होता (24)

तो उस दिन अल्लाह ऐसा अज़ाब करेगा कि किसी ने वैसा अज़ाब न किया होगा (25)

और न कोई उसके जकड़ने की तरह जकड़ेगा (26)

(और कुछ लोगों से कहेगा) ऐ इत्मेनान पाने वाली जान (27)

अपने परवरदिगार की तरफ़ चल तू उससे ख़ुश वह तुझ से राज़ी (28)

तो मेरे (ख़ास) बन्दों में शामिल हो जा (29)

और मेरे बेहिश्त में दाख़िल हो जा (30)

90 सूरह बलद

सूरह बलद मक्का में नाज़िल हुई और इसकी बीस (20) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

मुझे इस शहर (मक्का) की कसम (1)

और तुम इसी शहर में तो रहते हो (2)

और (तुम्हारे) बाप (आदम) और उसकी औलाद की क़सम (3)

हमने इन्सान को मशक़्क़त में (रहने वाला) पैदा किया है (4)

क्या वह ये समझता है कि उस पर कोई काबू न पा सकेगा (5)

वह कहता है कि मैने अलग़ारों माल उड़ा दिया (6)

क्या वह ये ख़्याल रखता है कि उसको किसी ने देखा ही नहीं (7)

क्या हमने उसे दोनों आँखें और ज़बान (8)

और दोनों लब नहीं दिए (ज़रूर दिए) (9)
और उसको (अच्छी बुरी) दोनों राहें भी दिखा दीं (10)

फिर वह घाटी पर से होकर (क्यों) नहीं गुज़रा (11)

और तुमको क्या मालूम कि घाटी क्या है (12)

किसी (की) गर्दन का (गुलामी या कर्ज़ से) छुड़ाना (13)

या भूख के दिन रिशतेदार यतीम या ख़ाकसार (14)

मोहताज को (15)

खाना खिलाना (16)

फिर तो उन लोगों में (शामिल) हो जाता जो ईमान लाए और सब्र की नसीहत और तरस खाने की वसीयत करते रहे (17)

यही लोग ख़ुश नसीब हैं (18)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया है यही लोग बदबख़्त हैं (19)

कि उनको आग में डाल कर हर तरफ से बन्द कर दिया जाएगा (20)

91 सूरह शम्स

सूरह शम्स मक्का में नाज़िल हुई और इसकी पन्द्रह (15) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

सूरज की क़सम और उसकी रौशनी की (1)

और चाँद की जब उसके पीछे निकले (2)

और दिन की जब उसे चमका दे (3)

और रात की जब उसे ढाँक ले (4)

और आसमान की और जिसने उसे बनाया (5)

और ज़मीन की जिसने उसे बिछाया (6)

और जान की और जिसने उसे दुरूस्त किया (7)

फिर उसकी बदकारी और परहेज़गारी को उसे समझा दिया (8)

(क़सम है) जिसने उस (जान) को (गुनाह से) पाक रखा वह तो कामयाब हुआ (9)

और जिसने उसे (गुनाह करके) दबा दिया वह नामुराद रहा (10)

क़ौम मसूद ने अपनी सरकशी से (सालेह पैग़म्बर को) झुठलाया, (11)

जब उनमें का एक बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ (12)

तो अल्लाह के रसूल (सालेह) ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने से तअर्रुज़ न करना (13)

मगर उन लोगों पैग़म्बर को झुठलाया और उसकी कूँचे काट डाली तो अल्लाह ने उनके गुनाहों सबब से उन पर अज़ाब नाज़िल किया फिर (हलाक करके) बराबर कर दिया (14)

और उसको उनके बदले का कोई ख़ौफ तो है नहीं (15)

92 सूरह लैल

सूरह लैल मक्का में नाज़िल हुई और इसकी इक्कीस (21) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

रात की क़सम जब (सूरज को) छिपा ले (1)

और दिन की क़सम जब ख़ूब रौशन हो (2)

और उस (ज़ात) की जिसने नर व मादा को पैदा किया (3)

कि बेशक तुम्हारी कोशिश तरह तरह की है (4)

तो जिसने सख़ावत की और अच्छी बात (इस्लाम) की तस्दीक़ की (5)

तो हम उसके लिए राहत व आसानी (6)

(जन्नत) के असबाब मुहय्या कर देंगे (7)

और जिसने बुख़्ल किया, और बेपरवाई की (8)

और अच्छी बात को झुठलाया (9)

तो हम उसे सख़्ती (जहन्नुम) में पहुँचा देंगे, (10)

और जब वह हलाक होगा तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आएगा (11)

हमें राह दिखा देना ज़रूर है (12)

और आख़ेरत और दुनिया (दोनों) ख़ास हमारी चीज़े हैं (13)

तो हमने तुम्हें भड़कती हुयी आग से डरा दिया (14)

उसमें बस वही दाख़िल होगा जो बड़ा बदबख़्त है (15)

जिसने झुठलाया और मुँह फेर लिया और जो बड़ा परहेज़गार है (16)

वह उससे बचा लिया जाएगा (17)

जो अपना माल (अल्लाह की राह) में देता है ताकि पाक हो जाए (18)

और लुत्फ ये है कि किसी का उस पर कोई एहसान नहीं जिसका उसे बदला दिया जाता है (19)

बल्कि (वह तो) सिर्फ अपने आलीशान परवरदिगार की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए (देता है) (20)

और वह अनक़रीब भी ख़ुश हो जाएगा (21)

93 सूरह ज़ुहा

सूरह ज़ुहा मक्का में नाज़िल हुई और इसकी ग्यारह (11) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) पहर दिन चढ़े की क़सम (1)

और रात की जब (चीज़ों को) छुपा ले (2)

कि तुम्हारा परवरदिगार न तुमको छोड़ बैठा और (न तुमसे) नाराज़ हुआ (3)

और तुम्हारे वास्ते आख़ेरत दुनिया से यक़ीनी कहीं बेहतर है (4)

और तुम्हारा परवरदिगार अनक़रीब इस क़दर अता करेगा कि तुम ख़ुश हो जाओ (5)

क्या उसने तुम्हें यतीम पाकर (अबू तालिब की) पनाह न दी (ज़रूर दी) (6)

और तुमको एहकाम से नावाकिफ़ देखा तो मंज़िले मक़सूद तक पहुँचा दिया (7)

और तुमको तंगदस्त देखकर ग़नी कर दिया (8)

तो तुम भी यतीम पर सितम न करना (9)

माँगने वाले को झिड़की न देना (10)

और अपने परवरदिगार की नेअमतों का ज़िक्र करते रहना (11)

94 सूरह नशरह

सूरह नशरह मक्के में नाज़िल हुई और इसकी आठ (8) आयतें हैं

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) क्या हमने तुम्हारा सीना इल्म से कुशादा नहीं कर दिया (जरूर किया) (1)

और तुम पर से वह बोझ उतार दिया (2)

जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रखी थी (3)

और तुम्हारा ज़िक्र भी बुलन्द कर दिया (4)

तो (हाँ) पस बेशक दुशवारी के साथ ही आसानी है (5)

यक़ीनन दुशवारी के साथ आसानी है (6)

तो जब तुम फारिग़ हो जाओ तो मुक़र्रर कर दो (7)

और फिर अपने परवरदिगार की तरफ रग़बत करो (8)

95 सूरह तीन

सूरह तीन मक्का में नाज़िल हुई और इसकी आठ (8) आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

इन्जीर और ज़ैतून की क़सम (1)

और तूर सीनीन की (2)

और उस अमन वाले शहर (मक्का) की (3)

कि हमने इन्सान बहुत अच्छे कैड़े का पैदा किया (4)

फिर हमने उसे (बूढ़ा करके रफ़्ता रफ़्ता) पस्त से पस्त हालत की तरफ फेर दिया (5)

मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे उनके लिए तो बे इन्तेहा अज्र व सवाब है (6)

तो (ऐ रसूल) इन दलीलों के बाद तुमको (रोज़े) जज़ा के बारे में कौन झुठला सकता है (7)

क्या अल्लाह सबसे बड़ा हाकिम नहीं है (हाँ ज़रूर है) (8)

96 सूरह अलक़

सूरह अलक़ की पहली पांच आयतें सबसे पहले मक्का में नाज़िल हुई और इसकी उन्नीस (19) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने हर (चीज़ को) पैदा किया (1)

उस ने इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया पढ़ो (2)

और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा क़रीम है (3)

जिसने क़लम के ज़रिए तालीम दी (4)

उसी ने इन्सान को वह बातें बतायीं जिनको वह कुछ जानता ही न था (5)

सुन रखो बेशक इन्सान जो अपने को ग़नी देखता है (6)

तो सरकश हो जाता है (7)

बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ (सबको) पलटना है (8)

भला तुमने उस शख़्स को भी देखा (9)

जो एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है तो वह रोकता है (10)

भला देखो तो कि अगर ये राहे रास्त पर हो या परहेज़गारी का हुक्म करे (11)

(तो रोकना कैसा) (12)

भला देखो तो कि अगर उसने (सच्चे को) झुठला दिया और (उसने) मुँह फेरा (13)

(तो नतीजा क्या होगा) क्या उसको ये मालूम नहीं कि अल्लाह यक़ीनन देख रहा है (14)

देखो अगर वह बाज़ न आएगा तो हम परेशानी के पट्टे पकड़ के घसीटेंगे (15)

झूठे ख़तावार की पेशानी के पट्टे (16)

तो वह अपने याराने जलसा को बुलाए हम भी जल्लाद फ़रिशते को बुलाएँगे (17)

(ऐ रसूल) देखो हरगिज़ उनका कहना न मानना (18)

और सजदे करते रहो और कुर्ब हासिल करो (19) सजदा 15

97 सूरह क़द्र

सूरह क़द्र मक्का या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी पाँच (5) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हमने (इस क़ुरान) को शबे क़द्र में नाज़िल (करना शुरू) किया (1)

और तुमको क्या मालूम शबे क़द्र क्या है (2)

शबे क़द्र (मरतबा और अमल में) हज़ार महीनो से बेहतर है (3)

इस (रात) में फ़रिशते और जिबरील (साल भर की) हर बात का हुक्म लेकर अपने परवरदिगार के हुक्म से नाज़िल होते हैं (4)

ये रात सुबह के तुलूअ होने तक (अज़सरतापा) सलामती है (5)

98 सूरह बय्यनह

सूरह बय्यनह मक्का या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी आठ आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अहले किताब और मुशरिकों से जो लोग काफिर थे जब तक कि उनके पास खुली हुयी दलीलें न पहुँचे वह (अपने कुफ्र से) बाज़ आने वाले न थे (1)

(यानि) अल्लाह के रसूल जो पाक औराक़ पढ़ते हैं (आए और) (2)

उनमें (जो) पुरज़ोर और दरूस्त बातें लिखी हुयी हैं (सुनाये) (3)

अहले किताब मुताफ़र्रिक़ हुए भी तो जब उनके पास खुली हुयी दलील आ चुकी (4)

(तब) और उन्हें तो बस ये हुक्म दिया गया था कि निरा खुरा उसी का एतक़ाद रख के बातिल से कतरा के अल्लाह की इबादत करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात अदा करता रहे और यही सच्चा दीन है (5)

बेशक अहले किताब और मशरेकीन से जो लोग (अब तक) काफ़िर हैं वह दोज़ख़ की आग में (होंगे) हमेशा उसी में रहेंगे यही लोग बदतरीन ख़लाएक़ हैं (6)

बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम करते रहे यही लोग बेहतरीन ख़लाएक़ हैं (7)

उनकी जज़ा उनके परवरदिगार के यहाँ हमेशा रहने (सहने) के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह आबादुल आबाद हमेशा उसी में रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से खुश ये (जज़ा) ख़ास उस शख़्स की है जो अपने परवरदिगार से डरे (8)

99 सूरह जिलज़ाल

सूरह जिलज़ाल मक्का या मदीने में उतरा और इसकी आठ (8) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

जब ज़मीन बड़े ज़ोरों के साथ ज़लज़ले में आ जाएगी (1)

और ज़मीन अपने अन्दर के बोझे (मादनयात मुर्दे वग़ैरह) निकाल डालेगी (2)

और एक इन्सान कहेगा कि उसको क्या हो गया है (3)

उस रोज़ वह अपने सब हालात बयान कर देगी (4)

क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उसको हुक्म दिया होगा (5)

उस दिन लोग गिरोह गिरोह (अपनी कब्रों से) निकलेंगे ताकि अपने आमाल को देखे (6)

तो जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की वह उसे देख लेगा (7)

और जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर बदी की है तो उसे देख लेगा (8)

100 सूरह आदियात

सूरह आदियात मक्का में या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी ग्यारह (11) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ग़ाज़ियों के) सरपट दौड़ने वाले घोड़ो की क़सम (1)

जो नथनों से फ़रराटे लेते हैं (2)

फिर पत्थर पर टाप मारकर चिंगारियाँ निकालते हैं फिर सुबह को छापा मारते हैं (3)

(तो दौड़ धूप से) बुलन्द कर देते हैं (4)

फिर उस वक़्त (दुशमन के) दिल में घुस जाते हैं (5)

(ग़रज़ क़सम है) कि बेशक इन्सान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है (6)

और यक़ीनी अल्लाह भी उससे वाक़िफ़ है (7)

और बेशक वह माल का सख़्त हरीस है (8)

तो क्या वह ये नहीं जानता कि जब मुर्दे क़ब्रों से निकाले जाएँगे (9)

और दिलों के भेद ज़ाहिर कर दिए जाएँगे (10)

बेशक उस दिन उनका परवरदिगार उनसे ख़ूब वाक़िफ़ होगा (11)

101 सूरह क़ारिआ

सूरह क़ारिआ मक्का में नाज़िल हुई और इसकी ग्यारह (11) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

खड़खड़ाने वाली (1)

वह खड़खड़ाने वाली क्या है (2)

और तुम को क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली क्या है (3)

जिस दिन लोग (मैदाने हश्र में) टिड्डियों की तरह फैले होंगे (4)

और पहाड़ धुनकी हुयी रूई के से हो जाएँगे (5)

तो जिसके (नेक आमाल) के पल्ले भारी होंगे (6)

वह मन भाते ऐश में होंगे (7)

और जिनके आमाल के पल्ले हल्के होंगे (8)

तो उनका ठिकाना न रहा (9)

और तुमको क्या मालूम हाविया क्या है (10)

वह दहकती हुयी आग है (11)

102 सूरह तकासुर

सूरह तकासुर मक्का में नाज़िल हुई और इसमें आठ (8) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

कुल व माल की बहुतायत ने तुम लोगों को ग़ाफ़िल रखा (1)

यहाँ तक कि तुम लोगों ने क़ब्रें देखी (मर गए) (2)

देखो तुमको अनक़रीब ही मालुम हो जाएगा (3)

फिर देखो तुम्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा (4)

देखो अगर तुमको यक़ीनी तौर पर मालूम होता (तो हरगिज़ ग़ाफिल न होते) (5)

तुम लोग ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे (6)

फिर तुम लोग यक़ीनी देखोगे (7)

फिर तुमसे नेअमतों के बारें ज़रूर बाज़ पुर्स की जाएगी (8)

103 सूरह अस्र

सूरह अस्र मक्की है या मदनी है और इसमें तीन (3) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

नमाज़े अस्र की क़सम (1)

बेशक इन्सान घाटे में है (2)

मगर जो लोग ईमान लाए, और अच्छे काम करते रहे और आपस में हक़ का हुक्म और सब्र की वसीयत करते रहे (3)

104 सूरह हुमाज़ाह (वैल)

सूरह सूरह हुमाज़ाह (वैल) मक्की या मदनी है और इसमें नौ (9) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

हर ताना देने वाले चुग़लख़ोर की ख़राबी है (1)

जो माल को जमा करता है और गिन गिन कर रखता है (2)

वह समझता है कि उसका माल उसे हमेशा ज़िन्दा बाक़ी रखेगा (3)

हरगिज़ नहीं वह तो ज़रूर हुतमा में डाला जाएगा (4)

और तुमको क्या मालूम हतमा क्या है (5)

वह अल्लाह की भड़काई हुयी आग है (6)

जो (तलवे से लगी तो) दिलों तक चढ़ जाएगी (7)

ये लोग आग के लम्बे सुतूनो (8)

में डाल कर बन्द कर दिए जाएँगे (9)

105 सूरह अल फ़ील

सूरह अल फ़ील मक्का में नाज़िल हुई और इसकी पाँच आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया (1)

क्या उसने उनकी तमाम तद्बीरें ग़लत नहीं कर दीं (ज़रूर) (2)

और उन पर झुन्ड की झुन्ड चिड़ियाँ भेज दीं (3)

जो उन पर खरन्जों की कंकरियाँ फेकती थीं (4)

तो उन्हें चबाए हुए भूस की (तबाह) कर दिया (5)

106 सूरह क़ुरैश

सूरह कुरैश मक्का या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी चार (4) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

चूँकि क़ुरैश को जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस कर दिया है (1)

तो उनको मानूस कर देने की वजह से (2)

इस घर (काबा) के मालिक की इबादत करनी चाहिए (3)

जिसने उनको भूख में खाना दिया और उनको ख़ौफ़ से अमन अता किया (4)

107 सूरह माऊन

सूरह माऊन मक्की या मदनी है और इसकी सात (7) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

क्या तुमने उस शख़्स को भी देखा है जो रोज़ जज़ा को झुठलाता है (1)

ये तो वही (कम्बख़्त) है जो यतीम को धक्के देता है (2)

और मोहताजों को खिलाने के लिए (लोगों को) आमादा नहीं करता (3)

तो उन नमाज़ियों की तबाही है (4)

जो अपनी नमाज़ से ग़ाफिल रहते हैं (5)

जो दिखाने के वास्ते करते हैं (6)

और रोज़ मर्रा की मालूली चीज़ें भी आरियत नहीं देते (7)

108 सूरह कौसर

सूरह कौसर मक्का या मदीने में नाज़िर हुई और उसकी तीन (3) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) हमनें तुमको को कौसर अता किया, (1)

तो तुम अपने परवरदिगार की नमाज़ पढ़ा करो (2)

और क़ुर्बानी दिया करो बेशक तुम्हारा दुशमन बे औलाद रहेगा (3)

109 सूरह काफ़ेरून

सूरह काफ़ेरून मक्का या मदीना में नाज़िर हुई और उसकी छः (6) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ काफिरों (1)

तुम जिन चीज़ों को पूजते हो, मैं उनको नहीं पूजता (2)

और जिस (अल्लाह) की मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते (3)

और जिन्हें तुम पूजते हो मैं उनका पूजने वाला नहीं (4)

और जिसकी मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत करने वाले नहीं (5)

तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन (6)

110 सूरह नस्र

सूरह नस्र मदीना में नाज़िल हुई और इसकी तीन (3) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ऐ रसूल जब अल्लाह की मदद आ पहुँचेगी (1)

और फतेह (मक्का) हो जाएगी और तुम लोगों को देखोगे कि गोल के गोल अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं (2)

तो तुम अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करना और उसी से मग़फ़ेरत की दुआ माँगना वह बेशक बड़ा माफ़ करने वाला है (3)

111 सूरह लहब

सूरह लहब मक्की है और इसकी पाँच (5) आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अबु लहब के हाथ टूट जाएँ और वह ख़ुद सत्यानास हो जाए (1)

(आख़िर) न उसका माल ही उसके हाथ आया और (न) उसने कमाया (2)

वह बहुत भड़कती हुयी आग में दाख़िल होगा (3)

और उसकी जोरू भी जो सर पर ईंधन उठाए फिरती है (4)

और उसके गले में बटी हुयी रस्सी बँधी है (5)

112 सूरह एख़लास

सूरह अख़लास मक्का में नाज़िल हुई और इसकी 4 आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अल्लाह एक है (1)

अल्लाह बरहक़ बेनियाज़ है (2)

न उसने किसी को जना न उसको किसी ने जना, (3)

और उसका कोई हमसर नहीं (4)

113 सूरह फलक़

सूरह फलक़ मक्का या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी पाँच (5) आयतें हैं

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं सुबह के मालिक की हर चीज़ की बुराई से (1)

जो उसने पैदा की पनाह माँगता हूँ (2)

और अँधेरी रात की बुराई से जब उसका अँधेरा छा जाए (3)

और गन्डों पर फूँकने वालियों की बुराई से (4)

(जब फूँके) और हसद करने वाले की बुराई से (5)

114 सूरह नास

सूरह नास मक्का या मदीना में नाज़िल हुई और इसकी छः (6) आयतें हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ रसूल) तुम कह दो मैं लोगों के परवरदिगार (1)

लोगों के बादशाह (2)

लोगों के माबूद की (3)

(शैतानी) वसवसे की बुराई से पनाह माँगता हूँ (4)

जो (अल्लाह के नाम से) पीछे हट जाता है जो लोगों के दिलों में वसवसे डाला करता है (5)

जिन्नात में से ख़्वाह आदमियों में से (6)

teach
islam
.org